Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

6.2.42

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2451

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2451

ओ३म्

ऋग्वेद संहिता

130

महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धान केन्द्र
तिथी
पु०सं० 130
हरी पुस्तकालय

दिव्य प्रकाशन
पंतञ्जलि योगपीठ, दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट)
दिल्ली हरिद्वार रोड, बहादराबाद
हरिद्वार-२४९४०२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक : दिव्य प्रकाशन
पतञ्जलि योगपीठ, दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट)
दिल्ली हरिद्वार रोड, बहादराबाद
हरिद्वार-249402, उत्तराखण्ड
ई-मेल : divyayoga@rediffmail.com
वैबसाइट : www.divyayoga.com
दूरभाष : (01334) 244107, 240008, 246737
संस्करण : 2009
मूल्य : 550.00
मुद्रक : आर्य प्रकाशन, दिल्ली

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्ररोचना

परमपिता परमात्मा नें सृष्टि रचना के प्रारम्भ में ही मानव मात्र के कल्याण के लिए अग्नि; वायु, आदित्य एवं अंगिरा नामक ऋषियों के पवित्र अन्तःकरणों में वेदों का पवित्र ज्ञान प्रकाशित किया था। वेदों की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए महर्षि मनु ने कहा था-'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' अर्थात् समस्त धर्म का मूल वेद है। वेदों की सर्वज्ञानमयता प्रतिपादित करते हुए मनुस्मृति में कहा गया है-

यः कश्चित् कस्यचित् धर्मो मनुना प्रकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥

इसी सत्य को महाभारतकार वेदव्यास ने इस प्रकार कहा-

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।

वेद के हजारों मन्त्रों में संसार का समस्त ज्ञान-विज्ञान समाहित है। न जाने कितने ऋषिमुनियों, वेदपाठी आचार्यो वेद कण्ठस्थ करने वाले ब्राह्मणों तथा याज्ञिकों ने अनेक कष्ट सहकर वेद-निधि की रक्षा की। वेदों का ज्ञान सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। उसमें अध्यात्म, सांसारिकता के साथ-साथ मुक्ति का मार्ग प्रदर्शित करने वाला वैदिक-ज्ञान विश्व की अमूल्य निधि है। अनेक स्वनामधन्य वेद-भाष्यकारों ने वेदोदधि का मन्थन कर नाना प्रकार के अमूल्यरत्न विश्व को प्रदान किये हैं। वैदिक ज्ञान-गंगा ने न केवल भारतवासियों को अपितु सम्पूर्ण विश्व को आह्लादित किया है। लाखों, करोड़ों वर्षों बाद भी वेदमन्त्रों में एक अक्षर या मात्रा का कम अथवा अधिक न होना सिद्ध करता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेद पाठ करने वाले विप्रों ने सर्वात्मना इस ज्ञान की रक्षा की है।

कैसा था वह स्वर्णिय युग जब घर-घर में वेद की पावन ऋचाएँ गूँजती थी। शुद्ध पर्यावरण था। सर्वत्र प्रेम, सौहार्द, शान्ति का साम्राज्य था। ईश्वर विश्वासी, सत्य और सार्वभौमिक धर्म में आस्था रखने वाला, परोपकारी, देशभक्त, चरित्रवान्, वेदज्ञजनों से यह धरती स्वर्ग सम थी। किन्तु जैसे दिन के पश्चात् रात्रि और रात्रि के पश्चात् दिन, सुख के पश्चात् दुःख और दुःख के पश्चात् सुख यह सृष्टि का अनादि, अनन्त क्रम है, इसी क्रम से मध्यकाल में वेदों का अध्ययन- अध्यापन और श्रवण-श्रावण बाधित हो जाने से मानव, नाना प्रकार के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक कष्टों से घिर गया, इन बहुविध दुःखों से छुटकारा पाने के लिए युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने पुनः वेद, यज्ञ और योग का मार्ग दिखाया। वर्तमान समय में योगऋषि पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज इस वेद, यज्ञ और योग की त्रिवेणी में स्नान करा कर असंख्य मानवों को सुख,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति, प्रेम एवं नवोल्लास प्रदान कर रहे हैं।

पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के मार्गदर्शन में पतंजलि योगपीठ पुनः सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन करने हेतु कृतसंकल्प है। हम वेदालोक से विश्व को आलोकित करना चाहते हैं। वेदों की स्वतः प्रामाण्यता सर्वविदित है। चारों वेदों में अभिव्यक्त सार्वभौमिक सिद्धान्तों की प्रतिष्ठापना से संकुचित अवधारणाएं समाप्त होंगी, आध्यामित्क वातावरण का निर्माण होगा, परस्पर राग-द्वेष, शत्रुता, मनोमालिन्य का भाव समाप्त होगा।

विश्व के सभी विद्वान् इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि ऋग्वेद संसार के पुस्तकालय का सर्वप्रथम ग्रन्थ है। यह वैदिक ज्ञान गंगा का उद्गम है। ऋग्वेद के दस मण्डलों में संसार का समग्र ज्ञान, विज्ञान और अध्यात्म ओतप्रोत है। वैदिक काल में एकेश्वर की ही उपासना होती थी, स्तुतियाँ और प्रार्थनाओं के माध्यम से वैदिक ऋचाएं हमें सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं वैज्ञानिक सत्य का साक्षात्कार कराती हैं। संसार का कोई ऐसा विषय नहीं है, जिसका सूत्ररूप में या सूक्ष्मरूप में व्याख्यान ऋग्वेद के मन्त्रों में न किया गया हो। जो इनका श्रद्धा पूर्वक अध्ययन कर तदनुसार आचरण करता है, उसका जीवन आनन्द से भर जाता है। वह धन्य हो जाता है। उस परिवार में सारी प्रसन्नतायें आ जाती है।

अन्तः करण में आध्यात्मिक भावों का जागरण करने वाले समाज में प्रेम, शान्ति और आनन्द का संचार करने वाले ऋग्वेद के मन्त्रों से संपूर्ण वायुमण्डल व्याप्त हो।

अन्त में **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः**। तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का दिव्य सन्देश सर्वत्र गुंजायमान होगा। इसी भावना के साथ 'दिव्य प्रकाशन' के माध्यम से ऋग्वेद संहिता आप वेदनिष्ठ श्रद्धालुओं के करकमलों में सस्नेह समर्पित है।

सादर

वेदानुरागी

आचार्य बालकृष्ण

(आचार्य बालकृष्ण)

महामन्त्री, पतंजलि योगपीठ

हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

2451
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

ऋग्वेद-संहिता

अथ प्रथमं मण्डलम्

अथ प्रथमाष्टके प्रथमोऽध्यायः

प्रथमोऽनुवाकः

[१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३-५, ७ गायत्री; २ पिपीलिका-मध्यानिचृद्गायत्री; ६ निचृद्गायत्री; ८ यवमध्याविराड्गायत्री; ९ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥ १॥
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति॥ २॥
अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे। यशसं वीरवत्तमम्॥ ३॥
अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि। स इद्देवेषु गच्छति॥ ४॥
अग्निर्होता कविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः। देवो देवेभिरा गमत्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

यदङ्ग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत्तत् सत्यमङ्गिरः॥ ६॥
उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि॥ ७॥
राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्। वर्धमानं स्वे दमे॥ ८॥
स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये॥ ९॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—१-३ वायुः; ४-६ इन्द्रवायू; ७-९ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ३-५, ७-९ गायत्री; ६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

वायवा याहि दर्शतेमे सोमा अरंकृताः। तेषां पाहि श्रुधी हवम्॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायं उक्थेभिर्जरन्ते त्वामच्छा जरितारः। सुतसोमा अहर्विदः॥ २॥
वायो तव प्रपृञ्चती धेना जिगाति दाशुषे। उरूची सोमपीतये॥ ३॥
इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम्। इन्दवो वामुशन्ति हि॥ ४॥
वायविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू। तावा यातमुप द्रवत्॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

वायविन्द्रश्च सुन्वत आ यातमुप निष्कृतम्। मक्ष्वित्था धिया नरा॥ ६॥
मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीं साधन्ता॥ ७॥
ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा। क्रतुं बृहन्तमाशाथे॥ ८॥
कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया। दक्षं दधाते अपसम्॥ ९॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—१-३ अश्विनौ; ४-६ इन्द्रः; ७-९ विश्वेदेवाः; १०-१२ सरस्वती॥ छन्दः—१, ३, ५-१०, १२ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ४, ११ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

अश्विना यज्वरीरिषो द्रवत्पाणी शुभस्पती। पुरुभुजा चनस्यतम्॥ १॥
अश्विना पुरुदंससा नरा शवीरया धिया। धिष्ण्या वनतं गिरः॥ २॥
दस्रा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः। आ यातं रुद्रवर्तनी॥ ३॥
इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः॥ ४॥
इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः॥ ५॥
इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः॥ ६॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत। दाश्वांसो दाशुषः सुतम्॥ ७॥
विश्वे देवासो अस्रिधः सुतमा गन्त तूर्णयः। उस्राइव स्वसराणि॥ ८॥
विश्वे देवासो अस्त्रिध एहिमायासो अद्रुहः। मेधं जुषन्त वह्नयः॥ ९॥
पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ १०॥
चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती॥ ११॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना। धियो विश्वा वि राजति॥ १२॥

द्वितीयोऽनुवाकः

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४-९ गायत्री; ३ विराड्गायत्री; १० निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि॥ १॥
उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब। गोदा इद्रेवतो मदः॥ २॥
अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम्। मा नो अति ख्य आ गहि॥ ३॥
परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छा विपश्चितम्। यस्ते सखिभ्य आ वरम्॥ ४॥
उत ब्रुवन्तु नो निदो निरन्यतश्चिदारत। दधाना इन्द्र इद् दुवः॥ ५॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

उत नः सुभगाँ अरिर्वोचेयुर्दस्म कृष्टयः। स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि॥ ६॥
एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम्। पतयन्मन्दयत् सखम्॥ ७॥
अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः। प्रावो वाजेषु वाजिनम्॥ ८॥
तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयामः शतक्रतो। धनानामिन्द्र सातये॥ ९॥
यो रायोऽवनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा। तस्मा इन्द्राय गायत॥ १०॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २ आर्च्युष्णिक्; ३ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ४, १० गायत्री; ५-७, ९ निचृद्गायत्री; ८ पादनिचृद्गायत्री॥ स्वरः—१, ३-१० षड्जः; २ ऋषभः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखायः स्तोमवाहसः॥ १॥
पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम्। इन्द्रं सोमे सचा सुते॥ २॥
स घा नो योग आ भुवत्स राये स पुरन्ध्याम्। गमद् वाजेभिरा स नः॥ ३॥
यस्य संस्थे न वृण्वते हरी समत्सु शत्रवः। तस्मा इन्द्राय गायत॥ ४॥
सुतपावन्वे सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये। सोमासो दध्याशिरः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः । इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो ॥ ६ ॥
आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः । शं ते सन्तु प्रचेतसे ॥ ७ ॥
त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्था शतक्रतो । त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥ ८ ॥
अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्त्रिणम् । यस्मिन् विश्वानि पौंस्या ॥ ९ ॥
मा नो मर्ता अभि द्रुहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः । ईशानो यवया वधम् ॥ १० ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—१-३, १० इन्द्रः; ४, ६, ८, ९ मरुतः; ५, ७ मरुत इन्द्रश्च ॥ छन्दः—१, ३, ५-७, ९, १० गायत्री; २ विराड्गायत्री; ४, ८ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥ १ ॥
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥ २ ॥
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥ ३ ॥
आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे । दधाना नाम यज्ञियम् ॥ ४ ॥
वीळु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः । अविन्द उस्त्रिया अनु ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

देवयन्तो यथा मतिमच्छा विदद्वसुं गिरः । महामनूषत श्रुतम् ॥ ६ ॥
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे सञ्जग्मानो अबिभ्युषा । मन्दू समानवर्चसा ॥ ७ ॥
अनवद्यैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति । गणैरिन्द्रस्य काम्यैः ॥ ८ ॥
अतः परिज्मन्ना गहि दिवो वा रोचनादधि । सम्मस्मिन्नृञ्जते गिरः ॥ ९ ॥
इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि । इन्द्रं महो वा रजसः ॥ १० ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ५-७ गायत्री; २, ४ निचृद् गायत्री; ८, १० पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ९ पादनिचृद् गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

इन्द्रमिद् गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ १ ॥
इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ २ ॥
इन्द्रो दीर्घाय चक्षसे आ सूर्यं रोहयद् दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥ ३ ॥
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥ ४ ॥
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि। अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥ ६ ॥
तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः। न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् ॥ ७ ॥
वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा। ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥ ८ ॥
य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति। इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ ९ ॥
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः ॥ १० ॥

तृतीयोऽनुवाकः [८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ८ निचृद्गायत्री; २ विराड् गायत्री; ३, ४, ६, ७, ९ गायत्री; १० वर्धमाना गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर ॥ १ ॥
नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै। त्वोतासो न्यर्वता ॥ २ ॥
इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि। जयेम सं युधि स्पृधः ॥ ३ ॥
वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम्। सासह्याम पृतन्यतः ॥ ४ ॥
महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे। द्यौर्न प्रथिना शवः ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ। विप्रासो वा धियायवः ॥ ६ ॥
यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते। उर्वीरापो न काकुदः ॥ ७ ॥
एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही। पक्वा शाखा न दाशुषे ॥ ८ ॥
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते। सद्यश्चित् सन्ति दाशुषे ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या। इन्द्राय सोमपीतये॥ १०॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ७, १० निचृद्गायत्री; २, ४, ८, ९ गायत्री; ५, ६ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा॥ १॥
एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने। चक्रिं विश्वानि चक्रये॥ २॥
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे। सचैषु सवनेष्वा॥ ३॥
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। अजोषा वृषभं पतिम्॥ ४॥
सं चोदय चित्रमर्वाग्राध इन्द्र वरेण्यम्। असदित्ते विभु प्रभु॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

अस्मान्त्सु तत्र चोदयेन्द्र राये रभस्वतः। तुविद्युम्न यशस्वतः॥ ६॥
सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे पृथु श्रवो बृहत्। विश्वायुर्धेह्यक्षितम्॥ ७॥
अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम्। इन्द्र ता रथिनीरिषः॥ ८॥
वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम्। होम गन्तारमूतये॥ ९॥
सुतेसुते न्योकसे बृहद् बृहत एदरिः। इन्द्राय शूषमर्चति॥ १०॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३, ५ विराडनुष्टुप्; ४ भुरिगुष्णिक्; ६, ८ निचृदनुष्टुप्; ७, ९-१२ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ५-१२ गान्धारः; ४ ऋषभः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे॥ १॥
यत्सानोः सानुमारुहद् भूर्यस्पष्ट कर्त्वम्।
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति॥ २॥
युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा।
अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एहि स्तोमाँ अभि स्वराभि गृणीह्या रुव ।
ब्रह्म च नो वसो सचेन्द्र यज्ञं च वर्धय ॥ ४ ॥
उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिष्षिधे ।
शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत् सख्येषु च ॥ ५ ॥
तमित् सखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये ।
स शक्र उत नः शकदिन्द्रो वसु दयमानः ॥ ६ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

सुविवृतं सुनिरजमिन्द्र त्वादातमिद् यशः ।
गवामप व्रजं वृधि कृणुष्व राधो अद्रिवः ॥ ७ ॥
नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः ।
जेषः स्ववर्तीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि ॥ ८ ॥
आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवं नू चिद्दधिष्व मे गिरः ।
इन्द्र स्तोममिमं मम कृष्वा युजश्चिदन्तरम् ॥ ९ ॥
विद्मा हि त्वा वृषन्तमं वाजेषु हवनश्रुतम् ।
वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं सहस्रसातमाम् ॥ १० ॥
आ तू न इन्द्र कौशिक मन्दसानः सुतं पिब ।
नव्यमायुः प्र सू तिर कृधी सहस्रसामृषिम् ॥ ११ ॥
परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः ।
वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः ॥ १२ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, ८ निचृदनुष्टुप्; ४, ६ अनुष्टुप्; ५ भुरिगुष्णिक्; ७ विराडनुष्टुप् ॥
स्वरः—१-४, ६-८ गान्धारः; ५ ऋषभः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।
त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम् ॥ २ ॥
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः ।
यदी वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ॥ ३ ॥
पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ ४ ॥
त्वं वलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम् ।
त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः ॥ ५ ॥
तवाहं शूर रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन् ।
उपातिष्ठन्त गिर्वणो विदुष्टे तस्य कारवः ॥ ६ ॥
मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः ।
विदुष्टे तस्य मेधिरास्तेषां श्रवांस्युत्तिर ॥ ७ ॥
इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनूषत ।
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ॥ ८ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः [१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ७-९, ११, १२ गायत्री, ३-५ निचृद्गायत्री; ४, १० पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ६ विराड्गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥
अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्। हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥ २ ॥
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे। असि होता न ईड्यः ॥ ३ ॥
ताँ उशतो वि बोधय यदग्ने यासि दूत्यम्। देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥ ४ ॥
घृताहवन दीदिवः प्रति ष्म रिषतो दह। अग्ने त्वं रक्षस्विनः ॥ ५ ॥
अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा। हव्यवाड् जुह्वास्यः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम् ॥ ७ ॥
यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति। तस्य स्म प्राविता भव ॥ ८ ॥
यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति। तस्मै पावक मृळय ॥ ९ ॥
स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ इहा वह। उप यज्ञं हविश्च नः ॥ १० ॥
स नः स्तवान आ भर गायत्रेण नवीयसा। रयिं वीरवतीमिषम् ॥ ११ ॥
अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वाभिर्देवहूतिभिः। इमं स्तोमं जुषस्व नः ॥ १२ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—१ इध्मः समिद्धो वाऽग्निः; २ तनूनपात्; ३ नराशंसः; ४ इळः; ५ बर्हिः; ६ देवीर्द्वारः; ७ उषासानक्ता; ८ दैव्यौ होतारौ, प्रचेतसौ; ९ तिस्रो देव्यः—सरस्वतीळाभारत्यः; १० त्वष्टा; ११ वनस्पतिः; १२ स्वाहाकृतयः ॥ छन्दः—१-६, १० गायत्री; ७, ८, ११, १२ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री, ९ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

सुसमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते। होतः पावक यक्षि च ॥ १ ॥
मधुमन्तं तनूनपाद् यज्ञं देवेषु नः कवे। अद्या कृणुहि वीतये ॥ २ ॥
नराशंसमिह प्रियमस्मिन् यज्ञ उप ह्वये। मधुजिह्वं हविष्कृतम् ॥ ३ ॥
अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईळित आ वह। असि होता मनुर्हितः ॥ ४ ॥
स्तृणीत बर्हिरानुषग् घृतपृष्ठं मनीषिणः। यत्रामृतस्य चक्षणम् ॥ ५ ॥
वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्चतः। अद्या नूनं च यष्टवे ॥ ६ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

नक्तोषासा सुपेशसास्मिन् यज्ञ उप ह्वये। इदं नो बर्हिरासदे ॥ ७ ॥
ता सुजिह्वा उप ह्वये होतारा दैव्या कवी। यज्ञं नो यक्षतामिमम् ॥ ८ ॥
इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः। बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः ॥ ९ ॥
इह त्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुप ह्वये। अस्माकमस्तु केवलः ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अव सृजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः। प्र दातुरस्तु चेतनम्॥ ११॥
स्वाहा यज्ञं कृणोतनेन्द्राय यज्वनो गृहे। तत्र देवाँ उप ह्वये॥ १२॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—विश्वेदेवाः॥ छन्दः—१-६, ९ गायत्री; ७, ८ पिपीलिका-मध्यानिचृद्गायत्री; १०, ११ विराड्गायत्री; १२ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

ऐभिरग्ने दुवो गिरो विश्वेभिः सोमपीतये। देवेभिर्याहि यक्षि च॥ १॥
आ त्वा कण्वा अहूषत गृणन्ति विप्र ते धियः। देवेभिरग्न आ गहि॥ २॥
इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम्। आदित्यान् मारुतं गणम्॥ ३॥
प्र वो भ्रियन्त इन्दवो मत्सरा मादयिष्णवः। द्रप्सा मध्वश्चमूषदः॥ ४॥
ईळते त्वामवस्यवः कण्वासो वृक्तबर्हिषः। हविष्मन्तो अरङ्कृतः॥ ५॥
घृतपृष्ठा मनोयुजो ये त्वा वहन्ति वह्नयः। आ देवान्त्सोमपीतये॥ ६॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

तान् यजत्राँ ऋतावृधोऽग्ने पत्नीवतस्कृधि। मध्वः सुजिह्व पायय॥ ७॥
ये यजत्रा य ईड्यास्ते पिबन्तु जिह्वया। मधोरग्ने वषट्कृति॥ ८॥
आकीं सूर्यस्य रोचनाद् विश्वान् देवाँ उषर्बुधः। विप्रो होतेह वक्षति॥ ९॥
विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्न इन्द्रेण वायुना। पिबा मित्रस्य धामभिः॥ १०॥
त्वं होता मनुर्हितोऽग्ने यज्ञेषु सीदसि। सेमं नो अध्वरं यज॥ ११॥
युक्ष्वा ह्यरुषी रथे हरितो देव रोहितः। ताभिर्देवाँ इहा वह॥ १२॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—१, ५ इन्द्रः; २ मरुतः; ३ त्वष्टा; ४, १२ अग्निः; ६ मित्रा-वरुणौ; ७-१० द्रविणोदाः; ११ अश्विनौ॥ छन्दः—१, १२ निचृद्गायत्री; २, ४ भुरिग्गायत्री, ३, ५-१० गायत्री; ११ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

इन्द्र सोमं पिब ऋतुना त्वा विशन्त्विन्दवः। मत्सरासस्तदोकसः॥ १॥
मरुतः पिबत ऋतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन। यूयं हि ष्ठा सुदानवः॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्रावो नेष्टः पिब ऋतुना। त्वं हि रत्नधा असि॥ ३॥
अग्ने देवाँ इहा वह सादया योनिषु त्रिषु। परि भूष पिब ऋतुना॥ ४॥
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु। तवेद्धि सख्यमस्तृतम्॥ ५॥
युवं दक्षं धृतव्रत मित्रावरुण दूळभम्। ऋतुना यज्ञमाशाथे॥ ६॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावहस्तासो अध्वरे। यज्ञेषु देवमीळते॥ ७॥
द्रविणोदा ददातु नो वसूनि यानि शृण्विरे। देवेषु ता वनामहे॥ ८॥
द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत॥ ९॥
यत्त्वा तुरीयमृतुभिर्द्रविणोदो यजामहे। अध स्मा नो ददिर्भव॥ १०॥
अश्विना पिबतं मधु दीद्यग्नी शुचिव्रता। ऋतुना यज्ञवाहसा॥ ११॥
गार्हपत्येन सन्त्य ऋतुना यज्ञनीरसि। देवान् देवयते यज॥ १२॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४, ६-८ गायत्री; ३, ५ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ९ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

आ त्वा वहन्तु हरयो वृषणं सोमपीतये। इन्द्र त्वा सूरचक्षसः॥ १॥
इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः। इन्द्रं सुखतमे रथे॥ २॥
इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे। इन्द्रं सोमस्य पीतये॥ ३॥
उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः। सुते हि त्वा हवामहे॥ ४॥
सेमं नः स्तोममा गह्युपेदं सवनं सुतम्। गौरो न तृषितः पिब॥ ५॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

इमे सोमास इन्दवः सुतासो अधि बर्हिषि। ताँ इन्द्र सहसे पिब॥ ६॥
अयं ते स्तोमो अग्रियो हृदिस्पृगस्तु शन्तमः। अथा सोमं सुतं पिब॥ ७॥
विश्वमित्सवनं सुतमिन्द्रो मदाय गच्छति। वृत्रहा सोमपीतये॥ ८॥
सेमं नः काममा पृण गोभिरश्वैः शतक्रतो। स्तवाम त्वा स्वाध्यः॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ३, ७, ९ गायत्री; २ यवमध्याविराड्गायत्री; ४ पादनिचृद्गायत्री; ५ भुरिगार्चीगायत्री; ६ निचृद्गायत्री; ८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आ वृणे। ता नो मृळात ईदृशे ॥ १ ॥
गन्तारा हि स्थोऽवसे हवं विप्रस्य मावतः। धर्तारा चर्षणीनाम् ॥ २ ॥
अनुकामं तर्पयेथामिन्द्रावरुण राय आ। ता वां नेदिष्ठमीमहे ॥ ३ ॥
युवाकु हि शचीनां युवाकु सुमतीनाम्। भूयाम वाजदाव्नाम् ॥ ४ ॥
इन्द्रः सहस्त्रदाव्नां वरुणः शंस्यानाम्। क्रतुर्भवत्युक्थ्यः ॥ ५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

तयोरिदवसा वयं सनेम नि च धीमहि। स्यादुत प्ररेचनम् ॥ ६ ॥
इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्राय राधसे। अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृतम् ॥ ७ ॥
इन्द्रावरुण नू नु वां सिषासन्तीषु धीष्वा। अस्मभ्यं शर्म यच्छतम् ॥ ८ ॥
प्र वामश्नोतु सुष्टुतिरिन्द्रावरुण यां हुवे। यामृधाथे सधस्तुतिम् ॥ ९ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—१-३ ब्रह्मणस्पतिः; ४ ब्रह्मणस्पतिरिन्द्रश्च सोमश्च; ५ ब्रह्मणस्पतिसोमेन्द्रदक्षिणाः; ६-८ सदसस्पतिः; ९ सदसस्पतिर्नराशंसो वा ॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ७, ९ गायत्री; ३, ६, ८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ४ निचृद्गायत्री; ५ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

सोमानं स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः ॥ १ ॥
यो रेवान् यो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः। स नः सिषक्तु यस्तुरः ॥ २ ॥
मा नः शंसो अररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य। रक्षा णो ब्रह्मणस्पते ॥ ३ ॥
स घा वीरो न रिष्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः। सोमो हिनोति मर्त्यम् ॥ ४ ॥
त्वं तं ब्रह्मणस्पते सोम इन्द्रश्च मर्त्यम्। दक्षिणा पात्वंहसः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं मेधामयासिषम् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति॥ ७॥
आदृष्णोति हविष्कृतिं प्राञ्चं कृणोत्यध्वरम्। होत्रा देवेषु गच्छति॥ ८॥
नराशंसं सुधृष्टममपश्यं सप्रथस्तमम्। दिवो न सद्ममखसम्॥ ९॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—अग्निर्मरुतश्च॥ छन्दः—१, ३-८ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ९ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः॥ ३६॥

प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ १॥
नहि देवो न मर्त्यो महस्तव क्रतुं परः। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ २॥
ये महो रजसो विदुर्विश्वे देवासो अद्रुहः। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ ३॥
य उग्रा अर्कमानृचुरनाधृष्टास ओजसा। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ ४॥
ये शुभ्रा घोरवर्पसः सुक्षत्रासो रिशादसः। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ ५॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः॥ ३७॥

ये नाकस्याधि रोचने दिवि देवास आसते। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ ६॥
य ईङ्खयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमर्णवम्। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ ७॥
आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस्तिरः समुद्रमोजसा। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ ८॥
अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सोम्यं मधु। मरुद्भिरग्न आ गहि॥ ९॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—ऋभवः॥ छन्दः—१, २, ६, ७, गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ४ निचृद्गायत्री; ५, ८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

अयं देवाय जन्मने स्तोमो विप्रेभिरासया। अकारि रत्नधातमः॥ १॥
य इन्द्राय वचोयुजा ततक्षुर्मनसा हरी। शमीभिर्यज्ञमाशत॥ २॥
तक्षन्नासत्याभ्यां परिज्मानं सुखं रथम्। तक्षन्धेनुं सबर्दुघाम्॥ ३॥
युवाना पितरा पुनः सत्यमन्त्रा ऋजूयवः। ऋभवो विष्ट्यक्रत॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं वो॒ मदा॑सो अग्म॒तेन्द्रे॑ण च म॒रुत्व॑ता। आ॒दि॒त्येभि॑श्च राज॒भिः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

उ॒त त्यं च॑म॒सं नव॑ं त्वष्टु॒र्देव॑स्य॒ निष्कृ॑तम्। अक॑र्त॒ चतु॑रः पु॒नः॥ ६॥
ते नो॒ रत्ना॑नि धत्तन॒ त्रिरा साप्ता॑नि सुन्व॒ते। एक॑मेकं सुशस्ति॒भिः॥ ७॥
अधा॑रयन्त॒ वह्न॑योऽभ॒जन्त॑ सुकृ॒त्यया॑। भा॒गं दे॒वेषु॑ य॒ज्ञिय॑म्॥ ८॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ गायत्री; २ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ५ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

इ॒हेन्द्रा॒ग्नी उप॑ ह्वये॒ तयो॒रित्स्तोम॑मुश्मसि। ता सोम॑ं सोम॒पात॑मा॥ १॥
ता य॒ज्ञेषु॒ प्र शं॑सतेन्द्रा॒ग्नी शु॑म्भता नरः। ता गा॑य॒त्रेषु॑ गायत॥ २॥
ता मि॒त्रस्य॒ प्रश॑स्तय इन्द्रा॒ग्नी ता ह॑वामहे। सो॒म॒पा सोम॑पीतये॥ ३॥
उ॒ग्रा सन्ता॑ हवामहु॒ उपे॒दं सव॑नं सु॒तम्। इ॒न्द्रा॒ग्नी एह ग॑च्छताम्॥ ४॥
ता म॒हान्ता॒ सद॒स्पती॒ इन्द्रा॑ग्नी॒ रक्ष॑ उब्जतम्। अप्र॑जाः सन्त्व॒त्रिणः॥ ५॥
तेन॑ स॒त्येन॑ जागृतमधि॑ प्रचे॒तुने॑ प॒दे। इन्द्रा॑ग्नी॒ शर्म॑ यच्छतम्॥ ६॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—१-४ अश्विनौ; ५-८ सविता; ९, १० अग्निः; ११ देव्यः; १२ इन्द्राणीवरुणान्यग्राव्यः; १३, १४ द्यावापृथिव्यौ; १५ पृथिवी; १६ विष्णुर्देवो वा; १७-२१ विष्णुः॥ छन्दः—१-३, ८, १२, १७, १८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ४, ५, ७, ९-११, १३, १४, १६, २०, २१ गायत्री; ६, १९ निचृद् गायत्री; १५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

प्रा॒तर्यु॒जा॒ वि बो॑धयाश्विना॒वेह ग॑च्छताम्। अ॒स्य सोम॑स्य पी॒तये॑॥ १॥
या सु॒रथा॑ र॒थीत॑मो॒भा दे॒वा दि॑वि॒स्पृशा॑। अ॒श्विना॒ ता ह॑वामहे॥ २॥
या वां॑ कशा॒ मधु॑म॒त्यश्वि॑ना सू॒नृता॑वती। तया॑ य॒ज्ञं मि॑मिक्षतम्॥ ३॥
न॒हि वा॒मस्ति॑ दू॒र॒के यत्रा॒ रथे॑न॒ गच्छ॑थः। अश्वि॑ना सो॒मिनो॑ गृ॒हम्॥ ४॥
हिर॑ण्यपाणिमू॒तये॑ सवि॒तार॒मुप॑ ह्वये। स चेत्ता॑ दे॒वता॑ प॒दम्॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

अपां नपात्तमवसे सवितारमुप स्तुहि। तस्य व्रतान्युश्मसि ॥ ६ ॥
विभक्तारं हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः। सवितारं नृचक्षसम् ॥ ७ ॥
सखाय आ नि षीदत सविता स्तोम्यो नु नः। दाता राधांसि शुम्भति ॥ ८ ॥
अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप। त्वष्टारं सोमपीतये ॥ ९ ॥
आ ग्ना अग्न इहावसे होत्रां यविष्ठ भारतीम्। वरूत्रीं धिषणां वह ॥ १० ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

अभि नो देवीरवसा महः शर्मणा नृपत्नीः। अच्छिन्नपत्राः सचन्ताम् ॥ ११ ॥
इहेन्द्राणीमुप ह्वये वरुणानीं स्वस्तये। अग्नायीं सोमपीतये ॥ १२ ॥
मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः ॥ १३ ॥
तयोरिद् घृतवत्पयो विप्रा रिहन्ति धीतिभिः। गन्धर्वस्य ध्रुवे पदे ॥ १४ ॥
स्योना पृथिवि भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथः ॥ १५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्याः सप्त धामभिः ॥ १६ ॥
इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूळहमस्य पांसुरे ॥ १७ ॥
त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन् ॥ १८ ॥
विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ १९ ॥
तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ॥ २० ॥
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ २१ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—१ वायुः; २, ३ इन्द्रवायू; ४-६ मित्रावरुणौ; ७-९ इन्द्रो मरुत्वान्; १०-१२ विश्वेदेवाः; १३-१५ पूषा; १६-२२ आपः; २३, २४ अग्निः ॥ छन्दः—१-१८ गायत्री; १९ पुरउष्णिक्; २० अनुष्टुप्; २१ प्रतिष्ठागायत्री; २२-२४ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१८, २१ षड्जः; १९ ऋषभः; २०, २२-२४ गान्धारः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

तीव्राः सोमास आ गह्याशीर्वन्तः सुता इमे। वायो तान्प्रस्थितान्पिब ॥ १ ॥
उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे। अस्य सोमस्य पीतये ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रवायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये। सहस्राक्षा धियस्पती॥ ३॥
मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये। जज्ञाना पूतदक्षसा॥ ४॥
ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती। ता मित्रावरुणा हुवे॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः॥ ६॥
मरुत्वन्तं हवामहे इन्द्रमा सोमपीतये। सजूर्गणेन तृम्पतु॥ ७॥
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः। विश्वे मम श्रुता हवम्॥ ८॥
हत वृत्रं सुदानव इन्द्रेण सहसा युजा। मा नो दुःशंस ईशत॥ ९॥
विश्वान्देवान्हवामहे मरुतः सोमपीतये। उग्रा हि पृश्निमातरः॥ १०॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

जयतामिव तन्यतुर्मरुतामेति धृष्णुया। यच्छुभं याथना नरः॥ ११॥
हस्काराद्विद्युतस्पर्यतो जाता अवन्तु नः। मरुतो मृळयन्तु नः॥ १२॥
आ पूषञ्चित्रबर्हिषमाघृणे धरुणं दिवः। आजा नष्टं यथा पशुम्॥ १३॥
पूषा राजानमाघृणिरपगूळ्हं गुहा हितम्। अविन्दच्चित्रबर्हिषम्॥ १४॥
उतो स मह्यमिन्दुभिः षडयुक्ताँ अनुसेषिधत्। गोभिर्यवं न चर्कृषत्॥ १५॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

अम्बयो यन्त्यध्वभिर्जामयो अध्वरीयताम्। पृञ्चतीर्मधुना पयः॥ १६॥
अमूर्या उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह। ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्॥ १७॥
अपो देवीरुप ह्वये यत्र गावः पिबन्ति नः। सिन्धुभ्यः कर्त्वं हविः॥ १८॥
अप्स्वा१न्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये। देवा भवत वाजिनः॥ १९॥

अप्सु मे सोमो अब्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा ।
अग्निं च विश्वशंभुवमापश्च विश्वभेषजीः ॥ २०॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे३ मम ।
ज्योक् च सूर्यं दृशे ॥ २१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इदमापः प्र वहत यत्किं च दुरितं मयि ।
यद्वाहमभिदुद्रोह यद्वा शेप उतानृतम् ॥ २२ ॥
आपो अद्यान्वचारिषं रसेन समगस्महि ।
पयस्वानग्न आ गहि तं मा सं सृज वर्चसा ॥ २३ ॥
सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा ।
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात्सह ऋषिभिः ॥ २४ ॥

षष्ठोऽनुवाकः [२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः ॥ देवता—१ प्रजापतिः; २ अग्निः; ३-५ सविता भगो वा; ६-१५ वरुणः ॥ छन्दः—१, २, ६-१५ त्रिष्टुप्; ३-५ गायत्री ॥ स्वरः—१, २, ६-१५ धैवतः; ३-५ षड्जः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम ।
को नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च ॥ १ ॥
अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम ।
स नो मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च ॥ २ ॥
अभि त्वा देव सवितरीशानं वार्याणाम् । सदावन्भागमीमहे ॥ ३ ॥
यश्चिद्धि त इत्था भगः शशमानः पुरा निदः । अद्वेषो हस्तयोर्दधे ॥ ४ ॥
भगभक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा । मूर्धानं राय आरभे ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

नहि ते क्षत्रं न सहो न मन्युं वयश्चनामी पतयन्त आपुः ।
नेमा आपो अनिमिषं चरन्तीर्न ये वातस्य प्रमिनन्त्यभ्वम् ॥ ६ ॥
अबुध्ने राजा वरुणो वनस्योर्ध्वं स्तूपं ददते पूतदक्षः ।
नीचीनाः स्थुरुपरि बुध्न एषामस्मे अन्तर्निहिताः केतवः स्युः ॥ ७ ॥
उरुं हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ ।
अपदे पादा प्रतिधातवेऽकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित् ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतं ते राजन्भिषजः सहस्रमुर्वी गभीरा सुमतिष्टे अस्तु।
बाधस्व दूरे निर्ऋतिं पराचैः कृतं चिदेनः प्र मुमुग्ध्यस्मत्॥ ९॥
अमी य ऋक्षा निहितास उच्चा नक्तं ददृश्रे कुह चिद्दिवेयुः।
अदब्धानि वरुणस्य व्रतानि विचाकशच्चन्द्रमा नक्तमेति॥ १०॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः॥ ११॥
तदिन्नक्तं तद्दिवा मह्यमाहुस्तदयं केतो हृद आ वि चष्टे।
शुनःशेपो यमह्वद् गृभीतः सो अस्मान् राजा वरुणो मुमोक्तु॥ १२॥
शुनःशेपो ह्यह्वद् गृभीतस्त्रिष्वादित्यं द्रुपदेषु बद्धः।
अवैनं राजा वरुणः ससृज्याद्विद्वाँ अदब्धो वि मुमोक्तु पाशान्॥ १३॥
अव ते हेळो वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः।
क्षयन्नस्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि॥ १४॥
उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम॥ १५॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः॥ देवता—वरुणः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

यच्चिद्धि ते विशो यथा प्र देव वरुण व्रतम्। मिनीमसि द्यविद्यवि॥ १॥
मा नो वधाय हत्नवे जिहीळानस्य रीरधः। मा हृणानस्य मन्यवे॥ २॥
वि मृळीकाय ते मनो रथीरश्वं न सन्दितम्। गीर्भिर्वरुण सीमहि॥ ३॥
परा हि मे विमन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये। वयो न वसतीरुप॥ ४॥
कदा क्षत्रश्रियं नरमा वरुणं करामहे। मृळीकायोरुचक्षसम्॥ ५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

तदित्समानमाशाते वेनन्ता न प्र युच्छतः। धृतव्रताय दाशुषे॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदा॒ यो वी॒नां प॒दम॒न्तरि॑क्षेण॒ पत॑ताम्। वेद॑ ना॒वः स॑मु॒द्रिय॑: ॥ ७ ॥
वेद॑ मा॒सो धृ॒तव्र॑तो॒ द्वाद॑श प्र॒जाव॑तः। वेदा॒ य उ॑प॒जाय॑ते ॥ ८ ॥
वेद॒ वात॑स्य वर्त॒निमु॒रोर्ऋ॒ष्वस्य॑ बृ॒हतः। वेदा॒ ये अ॒ध्यास॑ते ॥ ९ ॥
नि षसाद धृतव्र॑तो॒ वरु॑णः प॒स्त्या३॑स्वा। साम्रा॑ज्याय सु॒क्रतुः॑ ॥ १० ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अत॒ो विश्वा॒न्यद्भु॒ता चि॑कि॒त्वाँ अ॒भि प॑श्यति। कृ॒तानि॒ या च॒ कर्त्वा॑ ॥ ११ ॥
स नो॑ वि॒श्वाहा॑ सु॒क्रतु॒रादि॒त्यः सु॒पथा॑ करत्। प्र ण॒ आयूं॑षि तारिषत् ॥ १२ ॥
बिभ्र॑द् द्रा॒पिं हि॑र॒ण्यय॑ं॒ वरु॑णो॒ वस्त॒ निर्णि॑जम्। परि॒ स्पशो॒ नि षे॑दिरे ॥ १३ ॥
न यं दिप्स॑न्ति दि॒प्सवो॒ न द्रुह्वा॑णो॒ जना॑नाम्। न दे॒वम॒भिमा॑तयः ॥ १४ ॥
उ॒त यो मा॑नु॒षेष्वा यशश्च॒क्रे असा॒म्या। अ॒स्माक॑मु॒दरे॒ष्वा ॥ १५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

परा॑ मे यन्ति धी॒तय॒ो गाव॒ो न गव्यू॑तीरनु। इ॒च्छन्ती॑रुरुचक्ष॒सम् ॥ १६ ॥
सं नु वो॑चावहै पुनर्य॒तो॑ मे॒ मध्वा॑भृतम्। होते॑व॒ क्षद॑से प्रि॒यम् ॥ १७ ॥
दर्शं॑ नु वि॒श्वद॑र्शतं॒ दर्शं॑ रथ॒मधि॒ क्षमि॑। एता जु॑षत मे॒ गिरः॑ ॥ १८ ॥
इ॒मं मे॑ वरुण श्रुधी॒ हव॑मद्या च॑ मृळय। त्वाम॑व॒स्युरा च॑के ॥ १९ ॥
त्वं विश्व॑स्य मेधिर दि॒वश्च॒ ग्मश्च॑ राजसि। स यामं॑नि॒ प्रति॑ श्रुधि ॥ २० ॥
उद्उ॑त्तमं मुमुग्धि नो॒ वि पाशं॑ मध्य॒मं चृ॑त। अवा॑धमानि॑ जी॒वसे॑ ॥ २१ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ८, ९ आर्चीउष्णिक्; २, ६ निचृद्गायत्री; ३ प्रतिष्ठागायत्री; ४, १० गायत्री; ५, ७ विराड् गायत्री ॥ स्वरः—१, ८, ९ ऋषभः; २-७, १० षड्जः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

वसि॑ष्वा॒ हि मि॑येध्य॒ वस्त्रा॑ण्यू॒र्जां पते। सेमं नो॑ अध्व॒रं य॑ज ॥ १ ॥
नि नो॒ होता॒ वरे॑ण्यः॒ सदा॑ यविष्ठ मन्म॒भिः। अग्ने॑ दि॒वित्म॑ता॒ वचः॑ ॥ २ ॥
आ हि ष्मा॑ सू॒नवे॑ पि॒तापि॑र्यजत्या॒पये॑। सखा॒ सख्ये॒ वरे॑ण्यः ॥ ३ ॥
आ नो॑ ब॒र्ही रि॒शाद॑सो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा। सीद॑न्तु मनु॒षो यथा ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्व्यं होतरस्य नो मन्दस्व सख्यस्य च। इमा उ षु श्रुधी गिरः॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे। त्वे इद्धूयते हविः॥ ६॥
प्रियो नो अस्तु विशपतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः। प्रियाः स्वग्नयो वयम्॥ ७॥
स्वग्नयो हि वार्यं देवासो दधिरे च नः। स्वग्नयो मनामहे॥ ८॥
अथा न उभयेषाममृत मर्त्यानाम्। मिथः सन्तु प्रशस्तयः॥ ९॥
विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः। चनो धाः सहसो यहो॥ १०॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः॥ देवता—१-१२ अग्निः; १३ विश्वेदेवाः॥ छन्दः—१-१२ गायत्री; १३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१२ षड्जः; १३ धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः। सम्राजन्तमध्वराणाम्॥ १॥
स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः। मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात्॥ २॥
स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः। पाहि सदमिद्विशायुः॥ ३॥
इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः॥ ४॥
आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु। शिक्षा वस्वो अन्तमस्य॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ। सद्यो दाशुषे क्षरसि॥ ६॥
यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः। स यन्ता शश्वतीरिषः॥ ७॥
नकिरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित्। वाजो अस्ति श्रवाय्यः॥ ८॥
स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता। विप्रेभिरस्तु सनिता॥ ९॥
जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम्॥ १०॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः। धिये वाजाय हिन्वतु॥ ११॥
स रेवाँइव विशपतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः। उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः॥ १२॥
नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान्यदि शक्नवाम मा ज्यायसः शंसमा वृक्षि देवाः॥ १३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—इन्द्रयज्ञसोमाः ॥ छन्दः—१-६ अनुष्टुप्; ७-९ गायत्री ॥ स्वरः—१-६ गान्धारः; ७-९ षड्जः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

यत्र ग्रावा पृथुबुध्न ऊर्ध्वो भवति सोतवे ।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः ॥ १ ॥
यत्र द्वाविव जघनाधिषवण्या कृता ।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः ॥ २ ॥
यत्र नार्यपच्यवमुपच्यवं च शिक्षते ।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः ॥ ३ ॥
यत्र मन्थां विबध्नते रश्मीन्यमितवाइव ।
उलूखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः ॥ ४ ॥
यच्चिद्धि त्वं गृहेगृह उलूखलक युज्यसे ।
इह द्युमत्तमं वद जयतामिव दुन्दुभिः ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

उत स्म ते वनस्पते वातो वि वात्यग्रमित् ।
अथो इन्द्राय पातवे सुनु सोममुलूखल ॥ ६ ॥
आयजी वाजसातमा ता ह्युच्चा विजर्भृतः । हरीइवान्धांसि बप्सता ॥ ७ ॥
ता नो अद्य वनस्पती ऋष्वावृष्वेभिः सोतृभिः । इन्द्राय मधुमत्सुतम् ॥ ८ ॥
उच्छिष्टं चम्वोर्भर सोमं पवित्र आ सृज । नि धेहि गोरधि त्वचि ॥ ९ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

यच्चिद्धि सत्य सोमपा अनाशस्ताइव स्मसि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ १ ॥
शिप्रिन्वाजानां पते शचीवस्तव दंसना ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि ष्वापया मिथूदृशा सस्तामबुध्यमाने ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ ३ ॥
ससन्तु त्या अरातयो बोधन्तु शूर रातयः ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ ४ ॥
समिन्द्र गर्दभं मृण नुवन्तं पापयामुया ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघं ॥ ५ ॥
पतांति कुण्डृणाच्या दूरं वातो वनादधि ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ ६ ॥
सर्वं परिक्रोशं जहि जम्भया कृकदाश्वम् ।
आ तू न इन्द्र शंसय गोष्वश्वेषु शुभ्रिषु सहस्त्रेषु तुवीमघ ॥ ७ ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—१-१६ इन्द्रः; १७-१९ अश्विनौ; २०, २१, २२ उषाः ॥ छन्दः—१-१०, १२-१५, १७-२२ गायत्री; ११ पादनिचृद्गायत्री; १६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१५, १७-२२ षड्जः; १६ धैवतः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

आ व इन्द्रं क्रिविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् । मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः ॥ १ ॥
शतं वा यः शुचीनां सहस्त्रं वा समाशिराम् । एदु निम्नं न रीयते ॥ २ ॥
सं यन्मदाय शुष्मिण एना ह्यस्योदरे । समुद्रो न व्यचो दधे ॥ ३ ॥
अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम् । वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥ ४ ॥
स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते । विभूतिरस्तु सूनृता ॥ ५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन्वाजे शतक्रतो । समन्येषु ब्रवावहै ॥ ६ ॥
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ॥ ७ ॥
आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्त्रिणीभिरूतिभिः । वाजेभिरुप नो हवम् ॥ ८ ॥
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् । यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥ ९ ॥
तं त्वा वयं विश्ववारा शास्महे पुरुहूत । सखे वसो जरितृभ्यः ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सोमपाव्नाम्। सखे वज्रिन्त्सखीनाम्॥ ११ ॥
तथा तदस्तु सोमपाः सखे वज्रिन्तथा कृणु। यथा त उश्मसीष्टये॥ १२ ॥
रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम॥ १३ ॥
आ घ त्वावान्त्मनाप्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः। ऋणोरक्षं न चक्र्योः॥ १४ ॥
आ यद्दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम्। ऋणोरक्षं न शचीभिः॥ १५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

शश्वदिन्द्रः पोप्रुथद्भिर्जिगाय नानदद्भिः शाश्वसद्भिर्धनानि।
स नौ हिरण्यरथं दंसनावान्त्स नः सनिता सनये स नोऽदात्॥ १६ ॥
आश्विनावश्वावत्येषा यातं शवीरया। गोमद्दस्रा हिरण्यवत्॥ १७ ॥
समानयोजनो हि वां रथो दस्रावमर्त्यः। समुद्रे अश्विनेयते॥ १८ ॥
न्यघ्न्यस्य मूर्धनि चक्रं रथस्य येमथुः। परि द्यामन्यदीयते॥ १९ ॥
कस्त उषः कधप्रिये भुजे मर्तो अमर्त्ये। कं नक्षसे विभावरि॥ २० ॥
वयं हि ते अमन्मह्यान्तादा पराकात्। अश्वे न चित्रे अरुषि॥ २१ ॥
त्वं त्येभिरा गहि वाजेभिर्दुहितर्दिवः। अस्मे रयिं नि धारय॥ २२ ॥

सप्तमोऽनुवाकः [३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-७, ९-१५, १७ जगती; ८, १६, १८ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-७, ९-१५, १७ निषादः; ८, १६, १८ धैवतः॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा।
तव व्रते कवयो विद्मनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः॥ १ ॥
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः कविर्देवानां परि भूषसि व्रतम्।
विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे॥ २ ॥
त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन आविर्भव सुक्रतूया विवस्वते।
अरेजेतां रोदसी होतृवूर्येऽसघ्नोर्भारमयजो महो वसो॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः पुरूरवसे सुकृते सुकृत्तरः।
श्वात्रेण यत्पित्रोर्मुच्यसे पर्या त्वा पूर्वमनयन्नापरं पुनः॥ ४॥
त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धन उद्यतस्रुचे भवसि श्रवाय्यः।
य आहुतिं परि वेदा वषट्कृतिमेकायुरग्रे विश आविवाससि॥ ५॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं नरं सक्मन्पिपर्षि विदथे विचर्षणे।
यः शूरसाता परितक्म्ये धने दभ्रेभिश्चित्समृता हंसि भूयसः॥ ६॥
त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे मर्तं दधासि श्रवसे दिवेदिवे।
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने मयः कृणोषि प्रय आ च सूरये॥ ७॥
त्वं नो अग्ने सनये धनानां यशसं कारुं कृणुहि स्तवानः।
ऋध्याम कर्मापसा नवेन देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः॥ ८॥
त्वं नो अग्ने पित्रोरुपस्थ आ देवो देवेष्वनवद्य जागृविः।
तनूकृद् बोधि प्रमतिश्च कारवे त्वं कल्याण वसु विश्वमोपिषे॥ ९॥
त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नस्त्वं वयस्कृत्तव जामयो वयम्।
सं त्वा रायः शतिनः सं सहस्त्रिणः सुवीरं यन्ति व्रतपामदाभ्य॥ १०॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः॥ ३४॥

त्वामग्ने प्रथममायुमायवे देवा अकृण्वन्नहुषस्य विश्पतिम्।
इळामकृण्वन्मनुषस्य शासनीं पितुर्यत्पुत्रो ममकस्य जायते॥ ११॥
त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषं रक्षमाणस्तव व्रते॥ १२॥
त्वमग्ने यज्यवे पायुरन्तरोऽनिषङ्गाय चतुरक्ष इध्यसे।
यो रातहव्योऽवृकाय धायसे कीरेश्चिन्मन्त्रं मनसा वनोषि तम्॥ १३॥
त्वमग्न उरुशंसाय वाघते स्पार्हं यद्रेक्णः परमं वनोषि तत्।
आध्रस्य चित्प्रमतिरुच्यसे पिता प्र पाकं शास्सि प्रदिशो विदुष्टरः॥ १४॥
त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं वर्मेव स्यूतं परि पासि विश्वतः।
स्वादुक्षद्मा यो वसतौ स्योनकृज्जीवयाजं यजते सोपमा दिवः॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

इमामग्ने शरणिं मीमृषो न इममध्वानं यमगाम दूरात् ।
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां भूमिरस्यृषिकृन्मर्त्यानाम् ॥ १६ ॥
मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरो ययातिवत्सदने पूर्ववच्छुचे ।
अच्छ याह्या वहा दैव्यं जनमा सादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम् ॥ १७ ॥
एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व शक्ती वा यत्ते चकृमा विदा वा ।
उत प्र णेष्यभि वस्यो अस्मान्त्सं नः सृज सुमत्या वाजवत्या ॥ १८ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम् ॥ १ ॥
अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष ।
वाश्राइव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः ॥ २ ॥
वृषायमाणोऽवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य ।
आ सायकं मघवादत्त वज्रमहन्नेनं प्रथमजामहीनाम् ॥ ३ ॥
यदिन्द्राहन्प्रथमजामहीनान्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः ।
आत्सूर्यं जनयन्द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से ॥ ४ ॥
अहन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्रो वज्रेण महता वधेन ।
स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्णाहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः ॥ ५ ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

अयोद्धेव दुर्मद आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम् ।
नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रुः ॥ ६ ॥
अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रमधि सानौ जघान ।
वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन्पुरुत्रा वृत्रो अशयद्व्यस्तः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदं न भिन्नममुया शयानं मनो रुहाणा अति यन्त्यापः।
याश्चिद् वृत्रो महिना पर्यतिष्ठत्तासामहिः पत्सुतःशीर्बभूव॥ ८॥
नीचावया अभवद् वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव वर्धर्जभार।
उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद्दानुः शये सहवत्सा न धेनुः॥ ९॥
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम्।
वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम आशयदिन्द्रशत्रुः॥ १०॥

अथ अष्टात्रिंशो वर्गः॥ ३८॥

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः।
अपां बिलमपिहितं यदासीद् वृत्रं जघन्वाँ अप तद्ववार॥ ११॥
अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्त्वा प्रत्यहन्देव एकः।
अजयो गा अजयः शूर सोममवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून्॥ १२॥
नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद्ध्रादुनिं च।
इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्चोतापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये॥ १३॥
अहेर्यातारं कमपश्य इन्द्र हृदि यत्ते जघ्नुषो भीरगच्छत्।
नव च यन्नवतिं च स्रवन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि॥ १४॥
इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनामरान्न नेमिः परि ता बभूव॥ १५॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४, ८, ९, १२, १३ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६, १० त्रिष्टुप्; ५, ७, ११ विराट्त्रिष्टुप्; १४, १५ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-१३ धैवतः; १४, १५ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

एतायामोप गव्यन्त इन्द्रमस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति।
अनामृणः कुविदादस्य रायो गवां केतं परमावर्जते नः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपेदहं धनदामप्रतीतं जुष्टां न श्येनो वसतिं पतामि।
इन्द्रं नमस्यन्नुपमेभिरर्कैर्यः स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन्॥ २॥
नि सर्वसेन इषुधीँरसक्त समर्यो गा अजति यस्य वष्टि।
चोष्कूयमाण इन्द्र भूरि वामं मा पणिर्भूरस्मदधि प्रवृद्ध॥ ३॥
वधीर्हि दस्युं धनिनं घनेनँ एकश्चरन्नुपशाकेभिरिन्द्र।
धनोरधि विषुणक्ते व्यायन्नयज्वानः सनकाः प्रेतिमीयुः॥ ४॥
परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्रायज्वानो यज्वभिः स्पर्धमानाः।
प्र यद्दिवो हरिवः स्थातरुग्र निरव्रताँ अधमो रोदस्योः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

अयुयुत्सन्ननवद्यस्य सेनामयातयन्त क्षितयो नवग्वाः।
वृषायुधो न वध्रयो निरष्टाः प्रवद्भिरिन्द्राच्चितयन्त आयन्॥ ६॥
त्वमेतान् रुदतो जक्षतश्चायोधयो रजस इन्द्र पारे।
अवादहो दिव आ दस्युमुच्चा प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः॥ ७॥
चक्राणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुम्भमानाः।
न हिन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्रं परि स्पशो अदधात्सूर्येण॥ ८॥
परि यदिन्द्र रोदसी उभे अबुभोजीर्महिना विश्वतः सीम्।
अमन्यमानाँ अभि मन्यमानैर्निर्ब्रह्मभिरधमो दस्युमिन्द्र॥ ९॥
न ये दिवः पृथिव्या अन्तमापुर्न मायाभिर्धनदां पर्यभूवन्।
युजं वज्रं वृषभश्चक्र इन्द्रो निर्ज्योतिषा तमसो गा अदुक्षत्॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्यावर्धत मध्य आ नाव्यानाम्।
सधीचीनेन मनसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नभि द्यून्॥ ११॥
न्याविध्यदिलीबिशस्य दृळ्हा वि शृङ्गिणमभिनच्छुष्णमिन्द्रः।
यावत्तरो मघवन्यावदोजो वज्रेण शत्रुमवधीः पृतन्युम्॥ १२॥
अभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून्वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत्।
सं वज्रेणासृजद् वृत्रमिन्द्रः प्र स्वां मतिमतिरच्छाशदानः॥ १३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवः कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन्प्रावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम्।
शफच्युतो रेणुर्नक्षत द्यामुच्छ्वैत्रेयो नृषाह्याय तस्थौ॥ १४॥
आवः शमं वृषभं तुग्र्यासु क्षेत्रजेषे मघवञ्छ्वित्र्यं गाम्।
ज्योक् चिदत्र तस्थिवांसो अक्रञ्छत्रूयतामधरा वेदनाकः॥ १५॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ६ विराड्जगती; २, ३, ७, ८ निचृज्जगती; ५, १०, ११ जगती; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३, ५-८, १०, ११ निषादः; ४, १२ धैवतः; ९ पञ्चमः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

त्रिश्चिन्नो अद्या भवतं नवेदसा विभुर्वां याम उत रातिरश्विना।
युवोर्हि यन्त्रं हिम्येव वाससोऽभ्यायंसेन्या भवतं मनीषिभिः॥ १॥
त्रयः पवयो मधुवाहने रथे सोमस्य वेनामनु विश्व इद्विदुः।
त्रयः स्कम्भासः स्कभितास आरभे त्रिर्नक्तं याथस्त्रिर्वश्विना दिवा॥ २॥
समाने अहन्त्रिरवद्यगोहना त्रिरद्य यज्ञं मधुना मिमिक्षतम्।
त्रिर्वाजवतीरिषो अश्विना युवं दोषा अस्मभ्यमुषसश्च पिन्वतम्॥ ३॥
त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते जने त्रिः सुप्राव्ये त्रेधेव शिक्षतम्।
त्रिर्नान्द्यं वहतमश्विना युवं त्रिः पृक्षो अस्मे अक्षरेव पिन्वतम्॥ ४॥
त्रिर्नो रयिं वहतमश्विना युवं त्रिर्देवताता त्रिरुतावतं धियः।
त्रिः सौभगत्वं त्रिरुत श्रवांसि नस्त्रिष्ठं वां सूरे दुहिता रुहद्रथम्॥ ५॥
त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि भेषजा त्रिः पार्थिवानि त्रिरु दत्तमद्भ्यः।
ओमानं शंयोर्ममकाय सूनवे त्रिधातु शर्म वहतं शुभस्पती॥ ६॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

त्रिर्नो अश्विना यजता दिवेदिवे परि त्रिधातु पृथिवीमशायतम्।
तिस्रो नासत्या रथ्या परावत आत्मेव वातः स्वसराणि गच्छतम्॥ ७॥
त्रिरश्विना सिन्धुभिः सप्तमातृभिस्त्रय आहावास्त्रेधा हविष्कृतम्।
तिस्रः पृथिवीरुपरि प्रवा दिवो नाकं रक्षेथे द्युभिरक्तुभिर्हितम्॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्व१ त्री चक्रा त्रिवृतो रथस्य क्व१ त्रयो वन्धुरो ये सनीळाः।
कदा योगो वाजिनो रासभस्य येन यज्ञं नासत्योपयाथः॥ ९॥
आ नासत्या गच्छतं हूयते हविर्मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिः।
युवोर्हि पूर्वं सवितोषसो रथमृताय चित्रं घृतवन्तमिष्यति॥ १०॥
आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा॥ ११॥
आ नो अश्विना त्रिवृता रथेनार्वाञ्चं रयिं वहतं सुवीरम्।
शृण्वन्ता वामवसे जोहवीमि वृधे च नो भवतं वाजसातौ॥ १२॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः॥ देवता—१ अग्निर्मित्रावरुणौ, रात्रिः, सविता; २-११ सविता॥
छन्दः—१ विराड्जगती; २, ५, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६ त्रिष्टुप्;
७, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ निचृज्जगती॥ स्वरः—१, ९ निषादः; २-६,
१०, ११ धैवतः; ७, ८ पञ्चमः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे।
ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमूतये॥ १॥
आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ २॥
याति देवः प्रवता यात्युद्वता याति शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम्।
आ देवो याति सविता परावतोऽप विश्वा दुरिता बाधमानः॥ ३॥
अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम्।
आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः॥ ४॥
वि जनाञ्छ्यावाः शितिपादो अख्यन्रथं हिरण्यप्रउगं वहन्तः।
शश्वद्विशः सवितुर्दैव्यस्योपस्थे विश्वा भुवनानि तस्थुः॥ ५॥
तिस्रो द्यावः सवितुर्द्वा उपस्थाँ एका यमस्य भुवने विराषाट्।
आणिं न रथ्यममृताधि तस्थुरिह ब्रवीतु य उ तच्चिकेतत्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यद् गभीरवेपा असुरः सुनीथः।
क्वेदानीं सूर्यः कश्चिकेत कतमां द्यां रश्मिरस्या ततान ॥ ७ ॥
अष्टौ व्यख्यत्ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून्।
हिरण्याक्षः सविता देव आगाद्दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि ॥ ८ ॥
हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते।
अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति ॥ ९ ॥
हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ्।
अपसेधन्रक्षसो यातुधानानस्थाद्देवः प्रतिदोषं गृणानः ॥ १० ॥
ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽरेणवः सुकृता अन्तरिक्षे।
तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव ॥ ११ ॥

अष्टमोऽनुवाकः [३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—घौरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, १२ भुरिगनुष्टुप्; २ निचृत्सतः पङ्क्तिः; ३, ११ निचृत् पथ्याबृहती; ४ निचृत्पङ्क्तिः; ५, १६ निचृद्बृहती; ६ भुरिग्बृहती; ७ बृहती; ८ स्वराड् बृहती; ९ निचृदुपरिष्टाद् बृहती; १०, १४ निचृद्विष्टारपङ्क्तिः; १३ उपरिष्टाद् बृहती; १५ विराट् पथ्याबृहती; १७ विराडुपरिष्टाद् बृहती; १८ विष्टारपङ्क्तिः; १९ पथ्याबृहती; २० सतः-पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, १२ गान्धारः; २, ४, १०, १४, १८, २० पञ्चमः; ३, ५-९, ११-१३, १५-१७, १९ मध्यमः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम् ।
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिरीमहे यं सीमिदन्य ईळते ॥ १ ॥
जनासो अग्निं दधिरे सहोवृधं हविष्मन्तो विधेम ते।
स त्वं नो अद्य सुमना इहाविता भवा वाजेषु सन्त्य ॥ २ ॥
प्र त्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्।
महस्ते सतो वि चरन्त्यर्चयो दिवि स्पृशन्ति भानवः ॥ ३ ॥
देवासस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा सं दूतं प्रत्नमिन्धते।
विश्वं सो अग्ने जयति त्वया धनं यस्ते ददाश मर्त्यः ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्द्रो होता गृहपतिरग्ने दूतो विशामसि।
त्वे विश्वा संगतानि व्रता ध्रुवा यानि देवा अकृण्वत ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

त्वे इदग्ने सुभगे यविष्ठ्य विश्वमा हूयते हविः ।
स त्वं नो अद्य सुमना उतापरं यक्षि देवान्त्सुवीर्यां ॥ ६ ॥
तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
होत्राभिरग्निं मनुषः समिन्धते तितिर्वांसो अति स्त्रिधः ॥ ७ ॥
घ्नन्तो वृत्रमतरन्रोदसी अप उरु क्षयाय चक्रिरे ।
भुवत्कण्वे वृषा द्युम्न्याहुतः क्रन्ददश्वो गविष्टिषु ॥ ८ ॥
सं सीदस्व महाँ असि शोचस्व देववीतमः ।
वि धूममग्ने अरुषं मियेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम् ॥ ९ ॥
यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन ।
यं कण्वो मेध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा यमुपस्तुतः ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

यमग्निं मेध्यातिथिः कण्व ईध ऋतादधि ।
तस्य प्रेषो दीदियुस्तमिमा ऋचस्तमग्निं वर्धयामसि ॥ ११ ॥
रायस्पूर्धि स्वधावोऽस्ति हि तेऽग्ने देवेष्वाप्यम् ।
त्वं वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि स नो मृळ महाँ असि ॥ १२ ॥
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥ १३ ॥
ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो नि केतुना विश्वं समत्रिणं दह ।
कृधी न ऊर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः ॥ १४ ॥
पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः ।
पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठ्य ॥ १५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

घनेव विष्वग्वि जह्यराव्ण्स्तपुर्जम्भ यो अस्मध्रुक् ।
यो मर्त्यः शिशीते अत्यक्तुभिर्मा नः स रिपुरीशत ॥ १६ ॥
अग्निर्वव्रे सुवीर्यमग्निः कण्वाय सौभगम् ।
अग्निः प्रावन्मित्रोत मेध्यातिथिमग्निः साता उपस्तुतम् ॥ १७ ॥
अग्निना तुर्वशं यदुं परावत उग्रादेवं हवामहे ।
अग्निर्नयन्नववास्त्वं बृहद्रथं तुर्वीतिं दस्यवे सहः ॥ १८ ॥
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥ १९ ॥
त्वेषासो अग्नेरमवन्तो अर्चयो भीमासो न प्रतीतये ।
रक्षस्विनः सदमिद्यातुमावतो विश्वं समत्रिणं दह ॥ २० ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ४, ६-८, १२ गायत्री; ३, ९, ११, १४ निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री; १०, १५ पिपीलिका-मध्यानिचृद्गायत्री; १३ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

क्रीळं वः शर्धो मारुतमनर्वाणं रथेशुभम् । कण्वा अभि प्र गायत ॥ १ ॥
ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिरञ्जिभिः । अजायन्त स्वभानवः ॥ २ ॥
इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान् । नि यामञ्चित्रमृञ्जते ॥ ३ ॥
प्र वः शर्धाय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय शुष्मिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत ॥ ४ ॥
प्र शंसा गोष्वघ्न्यं क्रीळं यच्छर्धो मारुतम् । जम्भे रसस्य वावृधे ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

को वो वर्षिष्ठ आ नरो दिवश्च ग्मश्च धूतयः । यत्सीमन्तं न धूनुथ ॥ ६ ॥
नि वो यामाय मानुषो दध्र उग्राय मन्यवे । जिहीत पर्वतो गिरिः ॥ ७ ॥
येषामज्मेषु पृथिवी जुजुर्वाँइव विश्पतिः । भिया यामेषु रेजते ॥ ८ ॥
स्थिरं हि जानमेषां वयो मातुर्निरेतवे । यत्सीमनु द्विता शवः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा अज्मेष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञु यातवे॥ १०॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

त्यं चिद् घा दीर्घं पृथुं मिहो नपातममृध्रम्। प्र च्यावयन्ति यामभिः॥ ११॥
मरुतो यद्ध वो बलं जनाँ अचुच्यवीतन। गिरींरचुच्यवीतन॥ १२॥
यद्ध यान्ति मरुतः सं ह ब्रुवतेऽध्वन्ना। शृणोति कश्चिदेषाम्॥ १३॥
प्र यात शीभमाशुभिः सन्ति कण्वेषु वो दुवः। तत्रो षु मादयाध्वै॥ १४॥
अस्ति हि ष्मा मदाय वः स्मसि ष्मा वयमेषाम्। विश्वं चिदायुर्जीवसे॥ १५॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ४, ८, ११, १३, १५ गायत्री; २, ६, ७, ९, १० निचृद्गायत्री; ३ पादनिचृद्गायत्री; ५, १२ पिपीलिका-मध्यानिचृद्गायत्री; १४ यवमध्याविराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

कद्ध नूनं कधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः। दधिध्वे वृक्तबर्हिषः॥ १॥
क्व नूनं कद्वो अर्थं गन्ता दिवो न पृथिव्याः। क्व वो गावो न रण्यन्ति॥ २॥
क्व वः सुम्ना नव्यांसि मरुतः क्व सुविता। क्वो३ विश्वानि सौभगा॥ ३॥
यद्यूयं पृश्निमातरो मर्तासः स्यातन। स्तोता वो अमृतः स्यात्॥ ४॥
मा वो मृगो न यवसे जरिता भूदजोष्यः। पथा यमस्य गादुप॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

मो षु णः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणा वधीत्। पदीष्ट तृष्णया सह॥ ६॥
सत्यं त्वेषा अमवन्तो धन्वञ्चिदा रुद्रियासः। मिहं कृण्वन्त्यवाताम्॥ ७॥
वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न माता सिषक्ति। यदेषां वृष्टिरसर्जि॥ ८॥
दिवा चित्तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनोदवाहेन। यत्पृथिवीं व्युन्दन्ति॥ ९॥
अध स्वनान्मरुतां विश्वमा सद्म पार्थिवम्। अरेजन्त प्र मानुषाः॥ १०॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

मरुतो वीळुपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु। यातेमखिद्रयामभिः॥ ११॥
स्थिरा वः सन्तु नेमयो रथा अश्वास एषाम्। सुसंस्कृता अभीशवः॥ १२॥
अच्छा वदा तना गिरा जरायै ब्रह्मणस्पतिम्। अग्निं मित्रं न दर्शतम्॥ १३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिमीहि श्लोकमास्ये पर्जन्यइव ततनः। गाय गायत्रमुक्थ्यम्॥ १४॥
वन्दस्व मारुतं गणं त्वेषं पनस्युमर्किणम्। अस्मे वृद्धा असन्निह॥ १५॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ५, ९ पथ्याबृहती; २, ८, १० विराट्-सतःपङ्क्तिः; ३ अनुष्टुप्; ४, ६ निचृत्सतःपङ्क्तिः; ७ उपरिष्टाद्विराड् बृहती॥
स्वरः—१, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः; ३ गान्धारः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

प्र यदित्था परावतः शोचिर्न मानमस्यथ।
कस्य क्रत्वा मरुतः कस्य वर्पसा कं याथ कं ह धूतयः॥ १॥
स्थिरा वः सन्त्वायुधा पराणुदे वीळू उत प्रतिष्कभे।
युष्माकमस्तु तविषी पनीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः॥ २॥
परा ह यत्स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु।
वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशाः पर्वतानाम्॥ ३॥
नहि वः शत्रुर्विविदे अधि द्यवि न भूम्यां रिशादसः।
युष्माकमस्तु तविषी तना युजा रुद्रासो नू चिदाधृषे॥ ४॥
प्र वेपयन्ति पर्वतान्वि विञ्चन्ति वनस्पतीन्।
प्रो आरत मरुतो दुर्मदाइव देवासः सर्वया विशा॥ ५॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं प्रष्टिर्वहति रोहितः।
आ वो यामाय पृथिवी चिदश्रोदबीभयन्त मानुषाः॥ ६॥
आ वो मक्षू तनाय कं रुद्रा अवो वृणीमहे।
गन्ता नूनं नोऽवसा यथा पुरेत्था कण्वाय बिभ्युषे॥ ७॥
युष्मेषितो मरुतो मर्त्येषित आ यो नो अभ्व ईषते।
वि तं युयोत शवसा व्योजसा वि युष्माकाभिरूतिभिः॥ ८॥
असामि हि प्रयज्यवः कण्वं ददे प्रचेतसः।
असामिभिर्मरुत आ न ऊतिभिर्गन्ता वृष्टिं न विद्युतः॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्माꣳओजो बिभृथा सुदानवोऽ सामि धूतयः शवः ।
ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इषुं न सृजत द्विषम् ॥ १० ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, २, ८ निचृदुपरिष्टाद् बृहती; ३, ७ आर्चीत्रिष्टुप्; ४, ६ सतः पङ्क्तिर्निचृत्पङ्क्तिः; ५ पथ्याबृहती ॥ स्वरः—१, २, ५, ८, मध्यमः; ३, ७ धैवतः; ४, ६ पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे ।
उप प्र यन्तु मरुतः सुदानव इन्द्र प्राशूर्भवा सचा ॥ १ ॥
त्वामिद्धि सहसस्पुत्र मर्त्य उपब्रूते धने हिते ।
सुवीर्यं मरुत आ स्वश्व्यं दधीत यो व आचके ॥ २ ॥
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥ ३ ॥
यो वाघते ददाति सूनरं वसु स धत्ते अक्षिति श्रवः ।
तस्मा इळां सुवीरामा यजामहे सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥ ४ ॥
प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम् ।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

तमिद्वोचेमा विदथेषु शम्भुवं मन्त्रं देवा अनेहसम् ।
इमां च वाचं प्रतिहर्यथा नरो विश्वेद्वामा वो अश्नवत् ॥ ६ ॥
को देवयन्तमश्नवज्जनं को वृक्तबर्हिषम् ।
प्रप्र दाश्वान्पस्त्याभिरस्थितान्तर्वावत्क्षयं दधे ॥ ७ ॥
उप क्षत्रं पृञ्चीत हन्ति राजभिर्भये चित्सुक्षितिं दधे ।
नास्य वर्ता न तरुता महाधने नार्भे अस्ति वज्रिणः ॥ ८ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—१-३, ७-९ वरुणमित्रार्यमणः; ४-६ आदित्याः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ८ गायत्री; २, ३, ६ विराड्गायत्री; ७, ९ निचृद्-गायत्री ॥ स्वरः—१-९ षड्जः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा। नू चित्स दभ्यते जनः ॥ १ ॥
यं बाहुतेव पिप्रति पान्ति मर्त्यं रिषः। अरिष्टः सर्व एधते ॥ २ ॥
वि दुर्गा वि द्विषः पुरो घ्नन्ति राजान एषाम्। नयन्ति दुरिता तिरः ॥ ३ ॥
सुगः पन्था अनृक्षर आदित्यास ऋतं यते। नात्रावखादो अस्ति वः ॥ ४ ॥
यं यज्ञं नयथा नर आदित्या ऋजुना पथा। प्र वः स धीतये नशत् ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

स रत्नं मर्त्यो वसु विश्वं तोकमुत त्मना। अच्छा गच्छत्यस्तृतः ॥ ६ ॥
कथा राधाम सखायः स्तोमं मित्रस्यार्यम्णः। महि प्सरो वरुणस्य ॥ ७ ॥
मा वो घ्नन्तं मा शपन्तं प्रति वोचे देवयन्तम्। सुम्नैरिद्व आ विवासे ॥ ८ ॥
चतुरश्रिद्ददमानाद्बिभीयादा निधातोः। न दुरुक्ताय स्पृहयेत् ॥ ९ ॥

[४२] द्वाचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, ९ निचृद्गायत्री; २, ३, ५-८, १० गायत्री; ४ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

सं पूषन्नध्वनस्तिर व्यंहो विमुचो नपात्। सक्ष्वा देव प्र णस्पुरः ॥ १ ॥
यो नः पूषन्नघो वृको दुःशेव आदिदेशति। अप स्म तं पथो जहि ॥ २ ॥
अप त्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम्। दूरमधि स्रुतेरज ॥ ३ ॥
त्वं तस्य द्वयाविनोऽघशंसस्य कस्य चित्। पदाभि तिष्ठ तपुषिम् ॥ ४ ॥
आ तत्ते दस्र मन्तुमः पूषन्नवो वृणीमहे। येन पितॄनचोदयः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अधा नो विश्वसौभग हिरण्यवाशीमत्तम। धनानि सुषणा कृधि ॥ ६ ॥
अति नः सश्चतो नय सुगा नः सुपथा कृणु। पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ७ ॥
अभि सूयवसं नय न नवज्वारो अध्वने। पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ८ ॥
शग्धि पूर्धि प्र यंसि च शिशीहि प्रास्युदरम्। पूषन्निह क्रतुं विदः ॥ ९ ॥
न पूषणं मेथामसि सूक्तैरभि गृणीमसि। वसूनि दस्ममीमहे ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वो घौरः ॥ देवता—१, २, ४-६ रुद्रः; ३ मित्रावरुणौ; ७-९ सोमः ॥ छन्दः—१-४, ७, ८ गायत्री; ५ विराड्गायत्री; ६ पादनिचृद्गायत्री; ९ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-८ षड्जः; ९ गान्धारः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

कद् रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शन्तमं हृदे ॥ १ ॥
यथा नो अदितिः करत्पश्वे नृभ्यो यथा गवे। यथा तोकाय रुद्रियम् ॥ २ ॥
यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति। यथा विश्वे सजोषसः ॥ ३ ॥
गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्। तच्छंयोः सुम्नमीमहे ॥ ४ ॥
यः शुक्रइव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते। श्रेष्ठो देवानां वसुः ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे ॥ ६ ॥
अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्। महि श्रवस्तुविनृम्णम् ॥ ७ ॥
मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त। आ न इन्दो वाजे भज ॥ ८ ॥
यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन्धामन्नृतस्य । मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ॥ ९ ॥

नवमोऽनुवाकः

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१; ५ उपरिष्टाद्विराड्बृहती; ३ निचृदुपरिष्टाद्बृहती; ७, ११ निचृत्पथ्याबृहती; १२ भुरिग्बृहती; १३ पथ्याबृहती; २, ४, ६, ८, १४ विराट्-सतःपङ्क्तिः; ९ आर्चीत्रिष्टुप्; १० विराड्विस्तारपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ११-१३ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १४ पञ्चमः; ९ धैवतः ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य । आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥ १ ॥
जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्ने रथीरध्वराणाम् । सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यमस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ २ ॥
अद्या दूतं वृणीमहे वसुमग्निं पुरुप्रियम् । धूमकेतुं भारुजीकं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम् ॥ ३ ॥
श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे । देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसमग्निमीळे व्युष्टिषु ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृत भोजन ।
अग्ने त्रातारममृतं मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन ॥ ५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

सुशंसो बोधि गृणते यविष्ठ्य मधुजिह्वः स्वाहुतः ।
प्रस्कण्वस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे नमस्या दैव्यं जनम् ॥ ६ ॥
होतारं विश्ववेदसं सं हि त्वा विश इन्धते ।
स आ वह पुरुहूत प्रचेतसोऽग्ने देवाँ इह द्रवत् ॥ ७ ॥
सवितारमुषसमश्विना भगमग्निं व्युष्टिषु क्षपः ।
कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर ॥ ८ ॥
पतिर्ह्यध्वराणामग्ने दूतो विशामसि ।
उषर्बुध आ वह सोमपीतये देवाँ अद्य स्वर्दृशः ॥ ९ ॥
अग्ने पूर्वा अनूषसो विभावसो दीदेथ विश्वदर्शतः ।
असि ग्रामेष्वविता पुरोहितोऽसि यज्ञेषु मानुषः ॥ १० ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

नि त्वा यज्ञस्य साधनमग्ने होतारमृत्विजम् ।
मनुष्वद्देव धीमहि प्रचेतसं जीरं दूतममर्त्यम् ॥ ११ ॥
यद्देवानां मित्रमहः पुरोहितोऽन्तरो यासि दूत्यम् ।
सिन्धोरिव प्रस्वनितास ऊर्मयोऽग्नेर्भ्राजन्ते अर्चयः ॥ १२ ॥
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः ।
आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम् ॥ १३ ॥
शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः सुदानवोऽग्निजिह्वा ऋक्तावृधः ।
पिबतु सोमं वरुणो धृतव्रतोऽश्विभ्यामुषसा सजूः ॥ १४ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—अग्निर्देवाः ॥ छन्दः—१ भुरिगुष्णिक्; २, ३, ७, ८ अनुष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५ उष्णिक्; ६, ९, १० विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५ ऋषभः; २-४, ६-१० गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ॥ १ ॥
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः ।
तान् रोहिदश्व गिर्वणस्त्रयस्त्रिंशतमा वह ॥ २ ॥
प्रियमेधवदत्रिवज्जातवेदो विरूपवत् ।
अङ्गिरस्वन्महिव्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् ॥ ३ ॥
महिकेरव ऊतये प्रियमेधा अहूषत ।
राजन्तमध्वराणामग्निं शुक्रेण शोचिषा ॥ ४ ॥
घृताहवन सन्त्येमा उ षु श्रुधी गिरः ।
याभिः कण्वस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा ॥ ५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

त्वां चित्रश्रवस्तम हवन्ते विक्षु जन्तवः ।
शोचिष्केशं पुरुप्रियाग्ने हव्याय वोळ्हवे ॥ ६ ॥
नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तमम् ।
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं विप्रा अग्ने दिविष्टिषु ॥ ७ ॥
आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः सुतसोमा अभि प्रयः ।
बृहद्भा बिभ्रतो हविरग्ने मर्ताय दाशुषे ॥ ८ ॥
प्रातर्याव्णः सहस्कृत सोमपेयाय सन्त्य ।
इहाद्य दैव्यं जनं बर्हिरा सादया वसो ॥ ९ ॥
अर्वाञ्चं दैव्यं जनमग्ने यक्ष्व सहूतिभिः ।
अयं सोमः सुदानवस्तं पात तिरोअह्न्यम् ॥ १० ॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, १० विराड्गायत्री; २, ४, ५, ७, ८, ९, १३, १५ निचृद्गायत्री; ३, ६, ११, १२, १४ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम्। धिया देवा वसुविदा॥ २॥
वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि। यद्वां रथो विभिष्पतात्॥ ३॥
हविषा जारो अपां पिपर्ति पपुरिर्नरा। पिता कुटस्य चर्षणिः॥ ४॥
आदारो वां मतीनां नासत्या मतवचसा। पातं सोमस्य धृष्णुया॥ ५॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः॥ ३४॥

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः। तामस्मे रासाथामिषम्॥ ६॥
आ नौ नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे। युञ्जाथामश्विना रथम्॥ ७॥
अरित्रं वां दिवस्पृथु तीर्थे सिन्धूनां रथः। धिया युयुज्र इन्दवः॥ ८॥
दिवस्कण्वास इन्दवो वसु सिन्धूनां पदे। स्वं व्रिं कुह धित्सथः॥ ९॥
अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः। व्यख्यज्जिह्वयासितः॥ १०॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

अभूदु पारमेतवे पन्था ऋतस्य साधुया। अदर्शि वि स्रुतिर्दिवः॥ ११॥
तत्तदिदश्विनोरवो जरिता प्रति भूषति। मदे सोमस्य पिप्रतोः॥ १२॥
वावसाना विवस्वति सोमस्य पीत्या गिरा। मनुष्वच्छंभू आ गतम्॥ १३॥
युवोरुषा अनु श्रियं परिज्मनोरुपाचरत्। ऋता वनथो अक्तुभिः॥ १४॥
उभा पिबतमश्विनोभा नः शर्म यच्छतम्। अविद्रियाभिरूतिभिः॥ १५॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ५ निचृत्पथ्याबृहती; २, ६, ८ निचृत्सतःपङ्क्तिः; ४, १० सतःपङ्क्तिः; ३, ७ पथ्याबृहती; ९ विराट्पथ्याबृहती॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोम ऋतावृधा।
तमश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे॥ १॥
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा रथेना यातमश्विना।
कण्वासो वां ब्रह्म कृण्वन्त्यध्वरे तेषां सु शृणुतं हवम्॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्विना मधुमत्तमं पातं सोममृतावृधा ।
अथाद्य दस्रा वसु बिभ्रता रथे दाश्वांसमुप गच्छतम् ॥ ३ ॥
त्रिषधस्थे बर्हिषि विश्ववेदसा मध्वा यज्ञं मिमिक्षतम् ।
कण्वासो वां सुतसोमा अभिद्यवो युवां हवन्ते अश्विना ॥ ४ ॥
याभिः कण्वमभिष्टिभिः प्रावतं युवमश्विना ।
ताभिः ष्वस्माँ अवतं शुभस्पती पातं सोममृतावृधा ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

सुदासे दस्रा वसु बिभ्रता रथे पृक्षो वहतमश्विना ।
रयिं समुद्रादुत वा दिवस्पर्यस्मे धत्तं पुरुस्पृहम् ॥ ६ ॥
यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अधि तुर्वशे ।
अतो रथेन सुवृता न आ गतं साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ ७ ॥
अर्वाञ्चा वां सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप ।
इषे पृञ्चन्ता सुकृते सुदानव आ बर्हिः सीदतं नरा ॥ ८ ॥
तेन नासत्या गतं रथेन सूर्यत्वचा ।
येन शश्वदूहथुर्दाशुषे वसु मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ९ ॥
उक्थेभिरर्वागवसे पुरूवसू अर्कैश्च नि ह्वयामहे ।
शश्वत्कण्वानां सदसि प्रिये हि कं सोमं पपथुरश्विना ॥ १० ॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, ३, ७, ९ विराट्पथ्याबृहती; २, १०, १६ निचृत्सतःपङ्क्तिः; ४, ६, १४ विराट्सतःपङ्क्तिः; ५, ११, १३ निचृत्पथ्याबृहती; ८ पङ्क्तिः; १२ बृहती; १५ पथ्याबृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १२, १३, १५ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १४, १६ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

सह वामेन न उषो व्युच्छा दुहितर्दिवः ।
सह द्युम्नेन बृहता विभावरि राया देवि दास्वती ॥ १ ॥
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्वसुविदो भूरि च्यवन्त वस्तवे ।
उदीरय प्रति मा सूनृता उषश्चोद राधो मघोनाम् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उवासोषा उच्छाच्च नु देवी जीरा रथानाम् ।
ये अस्या आचरणेषु दध्रिरे समुद्रे न श्रवस्यवः ॥ ३ ॥
उषो ये ते प्र यामेषु युञ्जते मनो दानाय सूरयः ।
अत्राह तत्कण्व एषां कण्वतमो नाम गृणाति नृणाम् ॥ ४ ॥
आ घा योषेव सूनर्युषा याति प्रभुञ्जती ।
जरयन्ती वृजनं पद्वदीयत उत्पातयति पक्षिणः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

वि या सृजति समनं व्यर्थिनः पदं न वेत्योदती ।
वयो नकिष्टे पप्तिवांस आसते व्युष्टौ वाजिनीवति ॥ ६ ॥
एषायुक्त परावतः सूर्यस्योदयनादधि ।
शतं रथेभिः सुभगोषा इयं वि यात्यभि मानुषान् ॥ ७ ॥
विश्वमस्या नानाम चक्षसे जगज्ज्योतिष्कृणोति सूनरी ।
अप द्वेषो मघोनी दुहिता दिव उषा उच्छदप स्त्रिधः ॥ ८ ॥
उष आ भाहि भानुना चन्द्रेण दुहितर्दिवः ।
आवहन्ती भूर्यस्मभ्यं सौभगं व्युच्छन्ती दिविष्टिषु ॥ ९ ॥
विश्वस्य हि प्राणनं जीवनं त्वे वि यदुच्छसि सूनरि ।
सा नो रथेन बृहता विभावरि श्रुधि चित्रामघे हवम् ॥ १० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उषो वाजं हि वंस्व यश्चित्रो मानुषे जने ।
तेना वह सुकृतो अध्वराँ उप ये त्वा गृणन्ति वह्नयः ॥ ११ ॥
विश्वान्देवाँ आ वह सोमपीतयेऽन्तरिक्षादुषस्त्वम् ।
सास्मासु धा गोमदश्वावदुक्थ्यमुषो वाजं सुवीर्यम् ॥ १२ ॥
यस्या रुशन्तो अर्चयः प्रति भद्रा अदृक्षत ।
सा नो रयिं विश्ववारं सुपेशसमुषा ददातु सुग्म्यम् ॥ १३ ॥
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्व ऊतये जुहूरेऽवसे महि ।
सा नः स्तोमाँ अभि गृणीहि राधसोषः शुक्रेण शोचिषा ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उषो॒ यद॒द्य भा॒नुना॒ वि द्वारा॑वृणवो॑ दि॒वः।
प्र नो॑ यच्छताद॒वृकं॑ पृ॒थु च्छ॒र्दिः प्र दे॑वि॒ गोम॑ती॒रिषः॑॥ १५॥
सं नो॑ रा॒या बृ॑ह॒ता वि॒श्वपे॑शसा मिमिक्ष्वा समि॒ळाभि॒रा।
सं द्यु॒म्नेन॑ विश्व॒तुरु॑षो महि॒ सं वाजै॑र्वाजिनीवति॥ १६॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—निचृदनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

उषो॑ भ॒द्रेभि॒रा ग॑हि दि॒वश्चि॑द्रोच॒नादधि॑।
वह॑न्त्वरु॒णप्स॑व॒ उप॑ त्वा सो॒मिनो॑ गृ॒हम्॥ १॥
सु॒पेश॑सं सु॒खं रथं॑ यम॒ध्यस्था॑ उष॒स्त्वम्।
तेना॑ सु॒श्रव॑सं॒ जनं॑ प्रावा॒द्य दु॑हितर्दिवः॥ २॥
वय॑श्चित्ते पत॒त्रिणो॑ द्वि॒पच्च॑तु॒ष्पदर्जु॑नि।
उष॒ः प्रार॑न्नृ॒तूँरनु॑ दि॒वो अन्ते॑भ्य॒स्परि॑॥ ३॥
व्यु॒च्छन्ती॒ हि र॒श्मिभि॒र्विश्व॑मा॒भासि॑ रोच॒नम्।
तां त्वामु॑षर्बुधो॒ गी॒र्भिः क॒ण्वा अ॑हूषत॥ ४॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—१, ६ निचृद्गायत्री; २, ४, ८, ९ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ३ गायत्री; ५ यवमध्याविराड्गायत्री; ७ विराड्गायत्री १०, ११ निचृदनुष्टुप्; १२, १३ अनुष्टुप्॥
स्वरः—१-९ षड्जः; १०-१३ गान्धारः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

उदु॒ त्यं जा॒तवे॑दसं दे॒वं व॑हन्ति के॒तवः॑। दृ॒शे विश्वा॑य॒ सूर्य॑म्॥ १॥
अप॒ त्ये ता॒यवो॑ यथा॒ नक्ष॑त्रा यन्त्य॒क्तुभिः॑। सूरा॑य वि॒श्वच॑क्षसे॥ २॥
अदृ॑श्रमस्य के॒तवो॒ वि र॒श्मयो॒ जना॒ँ अनु॑। भ्राज॑न्तो अ॒ग्रयो॑ यथा॥ ३॥
त॒रणि॑र्वि॒श्वद॑र्शतो ज्योति॒ष्कृद॑सि सूर्य। विश्व॒मा भा॑सि रोच॒नम्॥ ४॥
प्र॒त्यङ् दे॒वानां॑ विशः॒ प्रत्यङ्ङु॑दे॒षि॒ मानु॑षान्। प्र॒त्यङ् विश्वं॒ स्व॑र्दृ॒शे॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु। त्वं वरुण पश्यसि ॥ ६ ॥
वि द्यामेषि रजस्पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः। पश्यञ्जन्मानि सूर्य ॥ ७ ॥
सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य। शोचिष्केशं विचक्षण ॥ ८ ॥
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥ ९ ॥
उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ १० ॥
उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्।
हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय ॥ ११ ॥
शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि।
अथो हारिद्रवेषु मे हरिमाणं नि दध्मसि ॥ १२ ॥
उदगादयमादित्यो विश्वेन सहसा सह।
द्विषन्तं मह्यं रन्धयन्मो अहं द्विषते रधम् ॥ १३ ॥

दशमोऽनुवाकः [५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ९, १० जगती; २, ५, ८ विराड्जगती; ३, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६, ७ त्रिष्टुप्; ११-१३ निचृज्जगती; १४, १५ विराट्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१, २, ५, ८-१३ निषादः; ३, ४, ६, ७, १४, १५ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम्।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषा भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥ १ ॥
अभीमवन्वन्स्वभिष्टिमूतयोऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।
इन्द्रं दक्षासः ऋभवो मदच्युतं शतक्रतुं जवनी सूनृतारुहत् ॥ २ ॥
त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपोतात्रये शतदुरेषु गातुवित् ।
सप्तेन चिद्वलमदायावहो वस्वाजावद्रिं वावसानस्य नर्तयन् ॥ ३ ॥
त्वमपामपिधानावृणोरपाधारयः पर्वते दानुमद्वसु ।
वृत्रं यदिन्द्र शवसावधीरहिमादित्सूर्यं दिव्यारोहयो दृशे ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अधि शुस्रावजुह्वत।
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहत्येष्वाविथ॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

त्वं कुत्सं शुष्णहत्येष्वाविथारन्धयोऽतिथिग्वाय शम्बरम्।
महान्तं चिदर्बुदं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहत्याय जज्ञिषे॥ ६॥
त्वे विश्वा तविषी सध्र्यग्घिता तव राधः सोमपीथाय हर्षते।
तव वज्रश्चिकिते बाह्वोर्हितो वृश्चा शत्रोरव विश्वानि वृष्ण्या॥ ७॥
वि जानीह्यार्यान्ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासदव्रतान्।
शाकी भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन॥ ८॥
अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रतानाभूभिरिन्द्रः श्नथयन्ननाभुवः।
वृद्धस्य चिद्वर्धतो द्यामिनक्षतः स्तवानो वम्रो वि जघान सन्दिहः॥ ९॥
तक्षद्यत्त उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्मना बाधते शवः।
आ त्वा वातस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहन्नभि श्रवः॥ १०॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

मन्दिष्ट यदुशने काव्ये सचाँ इन्द्रो वङ्कू वङ्कुतराधि तिष्ठति।
उग्रो ययिं निरपः स्रोतसासृजद्वि शुष्णस्य दृंहिता ऐरयत्पुरः॥ ११॥
आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे।
इन्द्र यथा सुतसोमेषु चाकनोऽनर्वाणं श्लोकमा रोहसे दिवि॥ १२॥
अददा अभीं महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते।
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या॥ १३॥
इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पज्रेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः।
अश्वयुर्गव्यू रथयुर्वसूयुरिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता॥ १४॥
इदं नमो वृषभाय स्वराजे सत्यशुष्माय तवसेऽवाचि।
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीराः स्मत्सूरिभिस्तव शर्मन्त्स्याम॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ३, ४ निचृज्जगती; ५, १४ जगती; ६, ११ विराड्जगती; ७ त्रिष्टुप्; ९, १० स्वराट्त्रिष्टुप्; १२, १३, १५ निचृत् त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ७, ९, १०, १२, १३, १५ धैवतः; २-६, ११, १४ निषादः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभ्वः साकमीरते।
अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमेन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः॥ १॥
स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्रमूतिस्तविषीषु वावृधे।
इन्द्रो यद् वृत्रमवधीन्नदीवृतमुब्जन्नर्णांसि जहृषाणो अन्धसा॥ २॥
स हि द्वरो द्वरिषु वव्र ऊधनि चन्द्रबुध्नो मदवृद्धो मनीषिभिः।
इन्द्रं तमह्वे स्वपस्यया धिया मंहिष्ठरातिं स हि पप्रिरन्धसः॥ ३॥
आ यं पृणन्ति दिवि सद्मबर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः स्वा अभिष्टयः।
तं वृत्रहत्ये अनु तस्थुरूतयः शुष्मा इन्द्रमवाता अह्रुतप्सवः॥ ४॥
अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो रघ्वीरिव प्रवणे सस्रुरूतयः।
इन्द्रो यद्वज्री धृषमाणो अन्धसा भिनद् वलस्य परिधींरिव त्रितः॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

परीं घृणा चरति तित्विषे शवोऽपो वृत्वी रजसो बुध्नमाशयत्।
वृत्रस्य यत्प्रवणे दुर्गृभिश्वनो निजघन्थ हन्वोरिन्द्र तन्यतुम्॥ ६॥
हृदं न हि त्वा न्यृषन्त्यूर्मयो ब्रह्माणीन्द्र तव यानि वर्धना।
त्वष्टा चित्ते युज्यं वावृधे शवस्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम्॥ ७॥
जघन्वाँ उ हरिभिः संभृतक्रतविन्द्रं वृत्रं मनुषे गातुयन्नपः।
अयच्छथा बाह्वोर्वज्रमायसमधारयो दिव्या सूर्यं दृशे॥ ८॥
बृहत्स्वश्चन्द्रममवद्यदुक्थ्यमकृण्वत भियसा रोहणं दिवः।
यन्मानुषप्रधना इन्द्रमूतयः स्वर्नृषाचो मरुतोऽमदन्ननु॥ ९॥
द्यौश्चिदस्यामवाँ अहेः स्वनादयोयवीद्भियसा वज्र इन्द्र ते।
वृत्रस्य यद्बद्बधानस्य रोदसी मदे सुतस्य शवसाभिनच्छिरः॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

यदिन्विन्द्र पृथिवी दशभुजिरहानि विश्वा ततनन्त कृष्टयः ।
अत्राह ते मघवन्विश्रुतं सहो द्यामनु शवसा बर्हणा भुवत् ॥ ११ ॥
त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः ।
चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम् ॥ १२ ॥
त्वं भुवः प्रतिमानं पृथिव्या ऋष्ववीरस्य बृहतः पतिर्भूः ।
विश्वमाप्रा अन्तरिक्षं महित्वा सत्यमद्धा नकिरन्यस्त्वावान् ॥ १३ ॥
न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः ।
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत एको अन्यच्चकृषे विश्वमानुषक् ॥ १४ ॥
आर्चन्नत्र मरुतः सस्मिन्नाजौ विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा ।
वृत्रस्य यद्धृष्टिमता वधेन नि त्वमिन्द्र प्रत्यनं जघन्थ ॥ १५ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ निचृज्जगती; २ भुरिग्जगती; ४ जगती; ५, ७ विराड्जगती; ६, ८, ९ त्रिष्टुप्; १० भुरिक्त्रिष्टुप्; ११ सतःपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५, ७ निषादः; ६, ८-१० धैवतः; ११ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

न्यू३ षु वाचं प्र महे भरामहे गिर इन्द्राय सदने विवस्वतः ।
नू चिद्धि रत्नं ससतामिवाविदन्न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते ॥ १ ॥
दुरो अश्वस्य दुर इन्द्र गोरसि दुरो यवस्य वसुन इनस्पतिः ।
शिक्षानरः प्रदिवो अकामकर्शनः सखा सखिभ्यस्तमिदं गृणीमसि ॥ २ ॥
शचीव इन्द्र पुरुकृद् द्युमत्तम तवेदिदमभितश्चेकिते वसु ।
अतः संगृभ्याभिभूत आ भर मा त्वायतो जरितुः काममूनयीः ॥ ३ ॥
एभिर्द्युभिः सुमना एभिरिन्दुभिर्निरुन्धानो अमतिं गोभिरश्विना ।
इन्द्रेण दस्युं दरयन्त इन्दुभिर्युतद्वेषसः समिषा रभेमहि ॥ ४ ॥
समिन्द्र राया समिषा रभेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभिः ।
सं देव्या प्रमत्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावत्या रभेमहि ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

ते त्वा मदा अमदन्तानि वृष्ण्या ते सोमासो वृत्रहत्येषु सत्पते।
यत्कारवे दश वृत्राण्यप्रति बर्हिष्मते नि सहस्राणि बर्हयः ॥ ६ ॥
युधा युधमुप घेदेषि धृष्णुया पुरा पुरं समिदं हंस्योजसा।
नम्या यदिन्द्र सख्या परावति निबर्हयो नमुचिं नाम मायिनम् ॥ ७ ॥
त्वं करञ्जमुत पर्णयं वधीस्तेजिष्ठयातिथिग्वस्य वर्तनी।
त्वं शता वङ्गृदस्याभिनत्पुरोऽनानुदः परिषूता ऋजिश्वना ॥ ८ ॥
त्वमेताञ्जनराज्ञो द्विर्दशाबन्धुना सुश्रवसोपजग्मुषः ।
षष्टिं सहस्रा नवतिं नव श्रुतो नि चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ॥ ९ ॥
त्वमाविथ सुश्रवसं तवोतिभिस्तव त्रामभिरिन्द्र तूर्वयाणम्।
त्वमस्मै कुत्समतिथिग्वमायुं महे राज्ञे यूने अरन्धनायः ॥ १० ॥
य उदृचीन्द्र देवगोपाः सखायस्ते शिवतमा असाम ।
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ॥ ११ ॥

[५४] चतुःपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४, १० विराड्जगती; २, ३, ५ निचृज्जगती; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७ जगती; ८, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५, ७, १० निषादः; ६, ८, ९, ११ धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

मा नो अस्मिन्मघवन्पृत्स्वंहसि नहि ते अन्तः शवसः परीणशे।
अक्रन्दयो नद्योऽ३ रोरुवद्वना क्था न क्षोणीर्भियसा समारत ॥ १ ॥
अर्चा शक्राय शाकिने शचीवते शृण्वन्तमिन्द्रं महयन्नभि ष्टुहि।
यो धृष्णुना शवसा रोदसी उभे वृषा वृषत्वा वृषभो न्यृञ्जते ॥ २ ॥
अर्चा दिवे बृहते शूष्यं१ वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषतो धृषन्मनः।
बृहच्छ्रवा असुरो बर्हणा कृतः पुरो हरिभ्यां वृषभो रथो हि षः ॥ ३ ॥
त्वं दिवो बृहतः सानु कोपयोऽव त्मना धृषता शम्बरं भिनत्।
यन्मायिनो व्रन्दिनो मन्दिना धृषच्छितां गभस्तिमशनिं पृतन्यसि ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि यद् वृणक्षि श्वसनस्य मूर्धनि शुष्णस्य चिद् व्रन्दिनो रोरुवद्वना।
प्राचीनेन मनसा बर्हणावता यदद्या चित्कृणवः कस्त्वा परि॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

त्वमाविथ नर्यं तुर्वशं यदुं त्वं तुर्वीतिं वय्यं शतक्रतो।
त्वं रथमेतशं कृत्व्ये धने त्वं पुरो नवतिं दम्भयो नव॥ ६॥
स घा राजा सत्पतिः शूशुवज्जनो रातहव्यः प्रति यः शासमिन्वति।
उक्था वा यो अभिगृणाति राधसा दानुरस्मा उपरा पिन्वते दिवः॥ ७॥
असमं क्षत्रमसमा मनीषा प्र सोमपा अपसा सन्तु नेमे।
ये त इन्द्र ददुषो वर्धयन्ति महि क्षत्रं स्थविरं वृष्ण्यं च॥ ८॥
तुभ्येदेते बहुला अद्रिदुग्धाश्चमूषदश्चमसा इन्द्रपानाः।
व्यश्नुहि तर्पया काममेषामथा मनो वसुदेयाय कृष्व॥ ९॥
अपामतिष्ठद्धरुणाह्वरं तमोऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषु पर्वतः।
अभीमिन्द्रो नद्यो वव्रिणा हिता विश्वा अनुष्ठाः प्रवणेषु जिघ्नते॥ १०॥
स शेवृधमधि धा द्युम्नमस्मे महि क्षत्रं जनाषाळिन्द्र तव्यम्।
रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन्राये च नः स्वपत्या इषे धाः॥ ११॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४ जगती; २, ५-७ निचृज्जगती; ३, ८ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मह्ना पृथिवी चन प्रति।
भीमस्तुविष्माञ्चर्षणिभ्य आतपः शिशीते वज्रं तेजसे न वंसगः॥ १॥
सो अर्णवो न नद्यः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विश्रिता वरीमभिः।
इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते सनात्स युध्म ओजसा पनस्यते॥ २॥
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य धर्मणामिरज्यसि।
प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः॥ ३॥
स इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम्।
वृषा छन्दुर्भवति हर्यतो वृषा क्षेमेण धेनां मघवा यदिन्वति॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स इन्महानि समिथानि मज्मना कृणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः ।
अधा चन श्रद्दधति त्विषीमत इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम् ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओजसा विनाशयन् ।
ज्योतींषि कृण्वन्नवृकाणि यज्यवेऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत् ॥ ६ ॥
दानाय मनः सोमपावन्नस्तु तेऽवाञ्चा हरी वन्दनश्रुदा कृधि ।
यमिष्ठासः सारथयो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभ्नुवन्ति भूर्णयः ॥ ७ ॥
अप्रक्षितं वसु बिभर्षि हस्तयोरषाळ्हं सहस्तन्वि श्रुतो दधे ।
आवृतासोऽवतासो न कर्तृभिस्तनूषु ते क्रतव इन्द्र भूरयः ॥ ८ ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ४ निचृज्जगती; २ जगती; ५ त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५, ६ धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

एष प्र पूर्वीरव तस्य चम्रिषोऽत्यो न योषामुदयंस्त भुर्वणिः ।
दक्षं महे पाययते हिरण्ययं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वसम् ॥ १ ॥
तं गूर्तयो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।
पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा ॥ २ ॥
स तुर्वणिर्महाँ अरेणु पौंस्यै गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः ।
येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि ॥ ३ ॥
देवी यदि तविषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः ।
यो धृष्णुना शवसा बाधते तम इर्यर्ति रेणुं बृहदर्हरिष्वणिः ॥ ४ ॥
वि यत्तिरो धरुणमच्युतं रजोऽतिष्ठिपो दिव आतासु बर्हणा ।
स्वर्मीळ्हे यन्मद इन्द्र हर्ष्याहन्वृत्रं निरपामौब्जो अर्णवम् ॥ ५ ॥
त्वं दिवो धरुणं धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र सदनेषु माहिनः ।
त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाष्यारुजः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—सव्य आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४ जगती; ३ विराड्जगती; ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ निचृज्जगती॥ स्वरः—१-४, ६ निषादः; ५ धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहद्रये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे।
अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम्॥ १॥
अध ते विश्वमनु हासदिष्टय आपो निम्नेव सवना हविष्मतः।
यत्पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः श्नथिता हिरण्ययः॥ २॥
अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे।
यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे॥ ३॥
इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो।
नहि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद्वचः॥ ४॥
भूरि त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मघवन्कामम्मा पृण।
अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नेम ओजसे॥ ५॥
त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन्पर्वशश्चकर्तिथ।
अवासृजो निवृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः॥ ६॥

एकादशोऽनुवाकः [५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ५ जगती; २ विराड्जगती; ३ त्रिष्टुप्; ४ निचृज्जगती; ६, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४, ५ निषादः; ३, ६-९ धैवतः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

नू चित्सहोजा अमृतो नि तुन्दते होता यद्दूतो अभवद्विवस्वतः।
वि साधिष्ठेभिः पथिभी रजो मम आ देवताता हविषा विवासति॥ १॥
आ स्वमद्म युवमानो अजरस्तृष्वविष्यन्नतसेषु तिष्ठति।
अत्यो न पृष्ठं प्रुषितस्य रोचते दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदत्॥ २॥
क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निषत्तो रयिषाळमर्त्यः।
रथो न विक्ष्वृञ्जसान आयुषु व्यानुषग्वार्या देव ऋण्वति॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि वातजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा जुहूभिः सृण्या तुविष्वणिः।
तृषु यदग्ने वनिनो वृषायसे कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर॥ ४॥
तपुर्जम्भो वन आ वातचोदितो यूथे न साह्वाँ अव वाति वंसगः।
अभिव्रजन्नक्षितं पाजसा रजः स्थातुश्चरथं भयते पतत्रिणः॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

दधुष्टा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारुं सुहवं जनेभ्यः ।
होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं न शेवं दिव्याय जन्मने॥ ६॥
होतारं सप्त जुह्वो३ यजिष्ठं यं वाघतो वृणते अध्वरेषु।
अग्निं विश्वेषामरतिं वसूनां सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम्॥ ७॥
अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य स्तोतृभ्यो मित्रमहः शर्म यच्छ।
अग्ने गृणन्तमंहस उरुष्योर्जो नपात्पूर्भिरायसीभिः ॥ ८॥
भवा वरूथं गृणते विभावो भवा मघवन्मघवद्भ्यः शर्म ।
उरुष्याग्ने अंहसो गृणन्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ ९॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—अग्निर्वैश्वानरः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः; ५-७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४-७ धैवतः; ३ पञ्चमः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

वया इदग्ने अग्नयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते।
वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव जनाँ उपमिद्ययन्थ॥ १॥
मूर्धा दिवो नाभिरग्निः पृथिव्या अथाभवदरती रोदस्योः।
तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय॥ २॥
आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासो वैश्वानरे ददिरेऽग्ना वसूनि।
या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषेष्वसि तस्य राजा॥ ३॥
बृहतीइव सूनवे रोदसी गिरो होता मनुष्यो३ न दक्षः।
स्वर्वते सत्यशुष्माय पूर्विर्वैश्वानराय नृतमाय यह्वीः॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर प्र रिरिचे महित्वम्।
राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ॥ ५॥
प्र नू महित्वं वृषभस्य वोचं यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते।
वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वाँ अधूनोत्काष्ठा अव शम्बरं भेत्॥ ६॥
वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो विभावा।
शातवनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान्॥ ७॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५ धैवतः; २, ४ पञ्चमः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

वह्निं यशसं विदथस्य केतुं सुप्राव्यं दूतं सद्योअर्थम्।
द्विजन्मानं रयिमिव प्रशस्तं रातिं भरद् भृगवे मातरिश्वा॥ १॥
अस्य शासुरुभयासः सचन्ते हविष्मन्त उशिजो ये च मर्तीः।
दिवश्चित्पूर्वो न्यसादि होतापृच्छ्यो विश्पतिर्विक्षु वेधाः॥ २॥
तं नव्यसी हृद आ जायमानमस्मत्सुकीर्तिर्मधुजिह्वमश्याः।
यमृत्विजो वृजने मानुषासः प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त॥ ३॥
उशिक्पावको वसुर्मानुषेषु वरेण्यो होताधायि विक्षु।
दमूना गृहपतिर्दम आँ अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम्॥ ४॥
तं त्वा वयं पतिमग्ने रयीणां प्र शंसामो मतिभिर्गोतमासः।
आशुं न वाजम्भरं मर्जयन्तः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥ ५॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, १४, १६ विराट्त्रिष्टुप्; २, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, ८, १०, १२ पङ्क्तिः; ५, १५ विराट्पङ्क्तिः; ११ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ७, ९, १४, १६ धैवतः; ३-६, ८, १०-१३, १५ पञ्चमः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय।
ऋचीषमायाध्रिगव ओहमिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्मा इदु प्रयइव प्र यंसि भरांम्याङ्गूषं बाधे सुवृक्ति।
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्नाय पत्ये धियो मर्जयन्त॥ २॥
अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षां भरांम्याङ्गूषमास्येन।
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्यै॥ ३॥
अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय।
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय॥ ४॥
अस्मा इदु सप्तिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वा३ समञ्जे।
वीरं दानौकसं वन्दध्यै पुरां गूर्तश्रवसं दर्माणम्॥ ५॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद्वज्रं स्वपस्तमं स्वर्यं१ रणाय।
वृत्रस्य चिद्विदद्येन मर्म तुजन्नीशानस्तुजता किये धाः॥ ६॥
अस्येदु मातुः सवनेषु सद्यो महः पितुं पपिवाञ्चार्वन्ना।
मुषायद्विष्णुः पचतं सहीयान्विध्यद्वराहं तिरो अद्रिमस्ता॥ ७॥
अस्मा इदु ग्नाश्चिद्देवपत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः।
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि ष्टः॥ ८॥
अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात्।
स्वराळिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिरमत्रो ववक्षे रणाय॥ ९॥
अस्येदेव शवसा शुषन्तं वि वृश्चद्वज्रेण वृत्रमिन्द्रः।
गा न व्राणा अवनीरमुञ्चदभि श्रवो दावने सचेताः॥ १०॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद्वज्रेण सीमयच्छत्।
ईशानकृद्दाशुषे दशस्यन्तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः॥ ११॥
अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः किये धाः।
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेष्यन्नर्णांस्यपां चरध्यै॥ १२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः।
युधे यदिष्णान आयुधान्यृघायमाणो निरिणाति शत्रून्॥ १३॥
अस्येदु भिया गिरयश्च दृळहा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते।
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं सद्यो भुवद्वीर्याय नोधाः॥ १४॥
अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषामेको यद्वन्ने भूरेरीशानः ।
प्रैतशं सूर्ये पस्पृधानं सौवश्व्ये सुष्विमावदिन्द्रः ॥ १५॥
एवा ते हारियोजना सुवृक्तीन्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन्।
ऐषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्॥ १६॥

इति प्रथमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ६ विराडार्षीत्रिष्टुप्; २, ५, ९ निचृदार्षीत्रिष्टुप्; ३, ७, ८ भुरिगार्षीपङ्क्तिः; १०-१३ आर्षीत्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४-६, ९-१३ धैवतः; ३, ७, ८ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्र मन्महे शवसानाय शूषमाङ्गूषं गिर्वणसे अङ्गिरस्वत्।
सुवृक्तिभिः स्तुवत ऋग्मियायार्चामार्कं नरे विश्रुताय॥ १॥
प्र वो महे महि नमो भरध्वमाङ्गूष्यं शवसानाय साम।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन्॥ २॥
इन्द्रस्याङ्गिरसां चेष्टौ विदत्सरमा तनयाय धासिम् ।
बृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद् गाः समुस्रियाभिर्वावशन्त नरः॥ ३॥
स सुष्टुभा स स्तुभा सप्त विप्रैः स्वरेणाद्रिं स्वर्योऽनवग्वैः।
सरण्युभिः फलिगमिन्द्र शक्र वलं रवेण दरयो दशग्वैः॥ ४॥
गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्म वि वरुषसा सूर्येण गोभिरन्धः।
वि भूम्या अप्रथय इन्द्र सानु दिवो रज उपरमस्तभायः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

तदु प्रयक्षतममस्य कर्म दस्मस्य चारुतममस्ति दंसः।
उपह्वरे यदुपरा अपिन्वन्मध्वर्णसो नद्यश्चतस्रः ॥ ६ ॥
द्विता वि वव्रे सनजा सनीळे अयास्यः स्तवमानेभिर्वैकैः।
भगो न मेने परमे व्योमन्नधारयद्रोदसी सुदंसाः ॥ ७ ॥
सनाद्दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती स्वेभिरेवैः।
कृष्णेभिरक्तोषा रुशद्भिर्वपुर्भिरा चरतो अन्यान्या ॥ ८ ॥
सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः सूनुर्दीधार शवसा सुदंसाः।
आमासु चिद्दधिषे पक्वमन्तः पयः कृष्णासु रुशद्रोहिणीषु ॥ ९ ॥
सनात्सनीळा अवनीरवाता व्रता रक्षन्ते अमृताः सहोभिः।
पुरू सहस्रा जनयो न पत्नीर्दुवस्यन्ति स्वसारो अह्रयाणम् ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

सनायुवो नमसा नव्यो अर्कैर्वसूयवो मतयो दस्म दद्रुः।
पतिं न पत्नीरुशतीरुशन्तं स्पृशन्ति त्वा शवसावन्मनीषाः ॥ ११ ॥
सनादेव तव रायो गभस्तौ न क्षीयन्ते नोप दस्यन्ति दस्म।
द्युमाँ असि क्रतुमाँ इन्द्र धीरः शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः ॥ १२ ॥
सनायते गोतम इन्द्र नव्यमतक्षद्ब्रह्म हरियोजनाय ।
सुनीथाय नः शवसान नोधाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ १३ ॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७-९ भुरिगार्षीपङ्क्तिः; २, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ३ विराट्पङ्क्तिः; ५ भुरिगार्षीजगती; ६ स्वराडार्षीबृहती ॥ स्वरः—१, ३, ७-९ पञ्चमः; २, ४ धैवतः; ५ निषादः; ६ मध्यमः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

त्वं महाँ इन्द्र यो ह शुष्मैर्द्यावा जज्ञानः पृथिवी अमे धाः।
यद्ध ते विश्वा गिरयश्चिदभ्वा भिया दृळ्हासः किरणा नैजन् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ यद्धरी इन्द्र विव्रता वेरा ते वज्रं जरिता बाह्वोर्धात्।
येनाविहर्यतक्रतो अमित्रान्पुर इष्णासि पुरुहूत पूर्वीः ॥ २ ॥
त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेतान्त्वमृभुक्षा नर्यस्त्वं षाट् ।
त्वं शुष्णं वृजने पृक्ष आणौ यूने कुत्साय द्युमते सचाहन् ॥ ३ ॥
त्वं ह त्यदिन्द्र चोदीः सखा वृत्रं यद्वज्रिन्वृषकर्मन्नुभ्नाः।
यद्ध शूर वृषमणः पराचैर्वि दस्यूँर्योनावकृतो वृथाषाट् ॥ ४ ॥
त्वं ह त्यदिन्द्रारिषण्यन्दूळ्हस्य चिन्मतीनामजुष्टौ ।
व्य१स्मदा काष्ठा अर्वते वर्घनेव वज्रिञ्छ्नथिह्यमित्रान् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

त्वां ह त्यदिन्द्राणीसातौ स्वर्मीळ्हे नर आजा हवन्ते ।
तव स्वधाव इयमा समर्य ऊतिर्वाजेष्वतसाय्या भूत् ॥ ६ ॥
त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त युध्यन्पुरो वज्रिन्पुरुकुत्साय दर्दः ।
बर्हिर्न यत्सुदासे वृथा वर्गंहो राजन्वरिवः पूरवे कः ॥ ७ ॥
त्वं त्यां न इन्द्र देव चित्रामिषमापो न पीपयः परिज्मन् ।
यया शूर प्रत्यस्मभ्यं यंसि त्मनमूर्जं न विश्वध क्षरध्यै ॥ ८ ॥
अकारि त इन्द्र गोतमेभिर्ब्रह्माण्योक्ता नमसा हरिभ्याम् ।
सुपेशसं वाजमा भरा नः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ ९ ॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा गौतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४, ६, ९ विराड्जगती; २, ३, ५, ७, १०-१३ निचृज्जगती; ८, १४ जगती; १५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-१४ निषादः; १५ धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

वृष्णे शर्धाय सुमखाय वेधसे नोधः सुवृक्तिं प्र भरा मरुद्भ्यः।
अपो न धीरो मनसा सुहस्त्यो गिरः समञ्जे विदथेष्वाभुवः ॥ १ ॥
ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास उक्षणो रुद्रस्य मर्या असुरा अरेपसः।
पावकासः शुचयः सूर्याइव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्पसः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवानो रुद्रा अजरा अभोग्घनो ववक्षुरध्रिगावः पर्वताइव ।
दूळ्हा चिद्विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्र च्यावयन्ति दिव्यानि मज्मना ॥ ३ ॥
चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षःसु रुक्माँ अधि येतिरे शुभे ।
अंसेष्वेषां नि मिमृक्षुरृष्टयः साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः ॥ ४ ॥
ईशानकृतो धुनयो रिशादसो वातान्विद्युतस्तविषीभिरक्रत ।
दुहन्त्यूधर्दिव्यानि धूतयो भूमिं पिन्वन्ति पयसा परिज्रयः ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

पिन्वन्त्यपो मरुतः सुदानवः पयो घृतवद्विदथेष्वाभुवः ।
अत्यं न मिहे वि नयन्ति वाजिनमुत्सं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितम् ॥ ६ ॥
महिषासो मायिनश्चित्रभानवो गिरयो न स्वतवसो रघुष्यदः ।
मृगाइव हस्तिनः खादथा वना यदारुणीषु तविषीरयुग्ध्वम् ॥ ७ ॥
सिंहाइव नानदति प्रचेतसः पिशाइव सुपिशो विश्ववेदसः ।
क्षपो जिन्वन्तः पृषतीभिर्ऋष्टिभिः समित्सबाधः शवसाहिमन्यवः ॥ ८ ॥
रोदसी आ वदता गणश्रियो नृषाचः शूराः शवसाहिमन्यवः ।
आ वन्धुरेष्वमतिर्न दर्शता विद्युन्न तस्थौ मरुतो रथेषु वः ॥ ९ ॥
विश्ववेदसो रयिभिः समोकसः =संमिश्लासस्तविषीभिर्विरप्शिनः ।
अस्तार इषुं दधिरे गभस्त्योरनन्तशुष्मा वृषखादयो नरः ॥ १० ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

हिरण्ययेभिः पविभिः पयोवृध उज्जिघ्नन्त आपथ्योऽ३ न पर्वतान् ।
मखा अयासः स्वसृतो ध्रुवच्युतो दुधक्रतो मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥ ११ ॥
घृषुं पावकं वनिनं विचर्षणिं रुद्रस्य सूनुं हवसा गृणीमसि ।
रजस्तुरं तवसं मारुतं गणमृजीषिणं वृषणं सश्चत श्रिये ॥ १२ ॥
प्र नू स मर्तः शवसा जनाँ अति तस्थौ व ऊती मरुतो यमावत ।
अर्वद्भिर्वाजं भरते धना नृभिरापृच्छ्यं क्रतुमा क्षेति पुष्यति ॥ १३ ॥
चर्कृत्यं मरुतः पृत्सु दुष्टरं द्युमन्तं शुष्मं मघवत्सु धत्तन ।
धनस्पृतमुक्थ्यं विश्वचर्षणिं तोकं पुष्येम तनयं शतं हिमाः ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नू ष्ठिरं मरुतो वीरवन्तमृतीषाहं रयिमस्मासु धत्त ।
सहस्त्रिणं शतिनं शूशुवांसं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥ १५ ॥

द्वादशोऽनुवाकः [६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-३, ५ निचृत्पङ्क्तिः; ४ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

पश्वा न तायुं गुहा चतन्तं नमो युजानं नमो वहन्तम् ।
सजोषा धीराः पदैरनु ग्मन्नुप त्वा सीदन्विश्वे यजत्राः ॥ १ ॥
ऋतस्य देवा अनु व्रता गुर्भुवत्परिष्टिर्द्यौर्न भूम ।
वर्धन्तीमापः पन्वा सुशिश्विमृतस्य योना गर्भे सुजातम् ॥ २ ॥
पुष्टिर्न रण्वा क्षितिर्न पृथ्वी गिरिर्न भुज्म क्षोदो न शंभु ।
अत्यो नाज्मन्त्सर्गप्रतक्तः सिन्धुर्न क्षोदः क ईं वराते ॥ ३ ॥
जामिः सिन्धूनां भ्रातेव स्वस्त्रामिभ्यान्न राजा वनान्यत्ति ।
यद्वातजूतो वना व्यस्थादग्निर्ह दाति रोमा पृथिव्याः ॥ ४ ॥
श्वसित्यप्सु हंसो न सीदन्क्रत्वा चेतिष्ठो विशामुषर्भुत् ।
सोमो न वेधा ऋतप्रजातः पशुर्न शिश्वा विभुर्दूरेभाः ॥ ५ ॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

रयिर्न चित्रा सूरो न संदृगायुर्न प्राणो नित्यो न सूनुः ।
तक्वा न भूर्णिर्वना सिषक्ति पयो न धेनुः शुचिर्विभावा ॥ १ ॥
दाधार क्षेममोको न रण्वो यवो न पक्वो जेता जनानाम् ।
ऋषिर्न स्तुभ्वा विक्षु प्रशस्तो वाजी न प्रीतो वयो दधाति ॥ २ ॥
दुरोकशोचिः क्रतुर्न नित्यो जायेव योनावरं विश्वस्मै ।
चित्रो यदभ्राट् छ्वेतो न विक्षु रथो न रुक्मी त्वेषः समत्सु ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेनेव सृष्टामं दधात्यस्तुर्न दिद्युत्त्वेषप्रतीका ।
यमो ह जातो यमो जनित्वं जारः कनीनां पतिर्जनीनाम् ॥ ४ ॥
तं वश्चराथा वयं वसत्यास्तं न गावो नक्षन्त इद्धम् ।
सिन्धुर्न क्षोदः प्र नीचीरैनोन्नवन्त गावः स्वर्१दृशीके ॥ ५ ॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

वनेषु जायुर्मर्तेषु मित्रो वृणीते श्रुष्टिं राजेवाजुर्यम् ।
क्षेमो न साधुः क्रतुर्न भद्रो भुवत्स्वाधीर्होता हव्यवाट् ॥ १ ॥
हस्ते दधानो नृम्णा विश्वान्यमे देवान्धाद् गुहा निषीदन् ।
विदन्तीमत्र नरो धियंधा हृदा यत्तष्टान्मन्त्राँ अशंसन् ॥ २ ॥
अजो न क्षां दाधार पृथिवीं तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः ।
प्रिया पदानि पश्वो नि पाहि विश्वायुरग्ने गुहा गुहं गाः ॥ ३ ॥
य ईं चिकेत गुहा भवन्तमा यः ससाद धारामृतस्य ।
वि ये चृतन्त्यृता सपन्त आदिद्वसूनि प्र ववाचास्मै ॥ ४ ॥
वि यो वीरुत्सु रोधन्महित्वोत प्रजा उत प्रसूष्वन्तः ।
चित्तिरपां दमे विश्वायुः सद्मेव धीराः समायं चक्रुः ॥ ५ ॥

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः शाक्त्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४ निचृत्पङ्क्तिः; २, ३, ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

श्रीणन्नुप स्थाद्दिवं भुरण्युः स्थातुश्चरथमक्तून्व्यूर्णोत् ।
परि यदेषामेको विश्वेषां भुवद्देवो देवानां महित्वा ॥ १ ॥
आदित्ते विश्वे क्रतुं जुषन्त शुष्काद्यद्देव जीवो जनिष्ठाः ।
भजन्त विश्वे देवत्वं नाम ऋतं सपन्तो अमृतमेवैः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीतिर्विश्वायुर्विश्वे अपांसि चक्रुः।
यस्तुभ्यं दाशाद्यो वा ते शिक्षात्तस्मै चिकित्वान्रयिं दयस्व ॥ ३ ॥
होता निषत्तो मनोरपत्ये स चिन्वासां पती रयीणाम्।
इच्छन्त रेतो मिथस्तनूषु सं जानत स्वैर्दक्षैरमूराः ॥ ४ ॥
पितुर्न पुत्राः क्रतुं जुषन्त श्रोषन्ये अस्य शासं तुरासः।
वि राय और्णोद्दुरः पुरुक्षुः पिपेश नाकं स्तृभिर्दमूनाः ॥ ५ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः शक्तिपुत्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ विराड्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

शुक्रः शुशुक्वाँ उषो न जारः पप्रा समीची दिवो न ज्योतिः।
परि प्रजातः क्रत्वा बभूथ भुवो देवानां पिता पुत्रः सन् ॥ १ ॥
वेधा अदृप्तो अग्निर्विजानन्नूधर्न गोनां स्वाद्मा पितूनाम्।
जने न शेव आहूर्यः सन्मध्ये निषत्तो रण्वो दुरोणे ॥ २ ॥
पुत्रो न जातो रण्वो दुरोणे वाजी न प्रीतो विशो वि तारीत्।
विशो यदह्वे नृभिः सनीळा अग्निर्देवत्वा विश्वान्यश्याः ॥ ३ ॥
नकिष्ट एता व्रता मिनन्ति नृभ्यो यदेभ्यः श्रुष्टिं चकर्थ।
तत्तु ते दंसो यदहन्त्समानैर्नृभिर्यद्युक्तो विवे रपांसि ॥ ४ ॥
उषो न जारो विभावोस्रः संज्ञातरूपश्चिकेतदस्मै।
त्मना वहन्तो दुरो व्यृण्वन्नवन्त विश्वे स्व१र्दृशीके ॥ ५ ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४ विराट्पङ्क्तिः; २ पङ्क्तिः; ३, ५ निचृत्पङ्क्तिः; ६ याजुषीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

वनेम पूर्वीरर्यो मनीषा अग्निः सुशोको विश्वान्यश्याः।
आ दैव्यानि व्रता चिकित्वाना मानुषस्य जनस्य जन्म ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भो॑ यो अ॒पां गर्भो॑ वना॒नां गर्भ॑श्च स्था॒तां गर्भ॑श्चर॒थाम्।
अद्रौ॑ चिदस्मा अ॒न्तर्दु॑रो॒णे वि॒शां न विश्वो॑ अ॒मृतः॑ स्वा॒धीः॥ २॥
स हि क्षु॒पावाँ॑ अ॒ग्नी र॑यी॒णां दाश॒द्यो अ॑स्मा॒ अर॑ं सू॒क्तैः।
ए॒ता चि॑कित्वो॒ भूमा॒ नि पा॑हि दे॒वानां॑ जन्म॒ मर्ता॑श्च विद्वान्॥ ३॥
वर्धा॒न्यं पू॒र्वीः क्षु॒पो वि॒रूपाः॑ स्था॒तुश्च॒ रथ॑मृ॒तप्र॑वीतम्।
अरा॑धि॒ होता॒ स्व१॒॑र्निष॑त्तः कृ॒ण्वन्वि॒श्वान्य॒पांसि॑ स॒त्या॥ ४॥
गोषु॒ प्रश॑स्तिं॒ वने॑षु धिषे॒ भर॑न्त॒ विश्वे॑ ब॒लिं स्व॑र्णः।
वि त्वा॒ नर॑ः पु॒रु॒त्रा स॑पर्यन्पि॒तुर्न जि॒ग्रेर्वि वेदो॑ भरन्त॥ ५॥
सा॒धुर्न गृ॒ध्नुर॑स्ते॒व॒ शूरो॒ यात॑ेव भी॒मस्त्वे॒षः स॒मत्सु॑॥ ६॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ६, ७ त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ८, १० विराट्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-८, १० धैवतः; ९ पञ्चमः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

उप॒ प्र जि॑न्वन्नुश॒तीरु॑शन्तं॒ पति॑ं न नित्यं॑ जन॒यः॑ सनी॑ळाः।
स्वसा॑रः॑ श्यावी॒मरु॑षीमजु॒ष्रञ्चि॒त्रमु॒च्छन्ती॑मु॒षस॑ं न गाव॑ः॥ १॥
वी॒ळु चि॑द् दृ॒ळ्हा पि॒तरो॑ न उ॒क्थैरद्रिं॑ रुजन्नङ्गि॑रसो॒ रवे॑ण।
च॒क्रुर्दि॒वो बृ॑ह॒तो गा॒तुम॒स्मे अह्नः॑ स्व॑र्विदुः के॒तुमु॒स्राः॥ २॥
दधन्नृ॒तं ध॒नय॑न्नस्य धी॒तिमादिद॒र्यो दि॑धि॒ष्वो३॒॑ वि भृ॑त्राः।
अतृ॑ष्यन्तीर॒पसो॑ य॒न्त्यच्छा॑ दे॒वाञ्जन्म॒ प्रय॑सा व॒र्धय॑न्तीः॥ ३॥
मथी॒द्यदीं॒ विभृ॑तो मात॒रिश्वा॑ गृ॒हेगृ॑हे श्ये॒तो जे॒न्यो॑ भूत्।
आदीं॒ राज्ञे॒ न सही॑यसे॒ सचा॒ सन्ना दू॒त्यं१॑ भृगवाणो विवाय॥ ४॥
म॒हे यत्पि॒त्र ईं॒ रसं॑ दि॒वे कर॑व॒ त्सर॒त्पृश॑न्यश्चिकि॒त्वान्।
सृ॒जद॒स्ता धृ॑ष॒ता दि॒द्युम॑स्मै स्वा॒यां दे॒वो दु॑हि॒तरि॒ त्विषिं॑ धात्॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

स्व आ यस्तु॒भ्यं॒ दम॒ आ वि॒भाति॒ नमो॑ वा॒ दाशा॑दुश॒तो अनु॒ द्यून्।
वर्धो॑ अग्ने॒ वयो॑ अस्य द्विबर्ह॒ या स॑द्रा॒या स॒रथं॑ यं॒ जुना॑सि॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निं विश्वा अभि पृक्षः सचन्ते समुद्रं न स्रवतः सप्त यह्वीः।
न जामिभिर्वि चिकिते वयो नो विदा देवेषु प्रमतिं चिकित्वान्॥ ७॥
आ यदिषे नृपतिं तेज आनट् छुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीके।
अग्निः शर्धमनवद्यं युवानं स्वाध्यं जनयत्सूदयच्च ॥ ८॥
मनो न योऽध्वनः सद्य एत्येकः सत्रा सूरो वस्व ईशे ।
राजाना मित्रावरुणा सुपाणी गोषु प्रियममृतं रक्षमाणा॥ ९॥
मा नो अग्ने सख्या पित्र्याणि प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन्।
नभो न रूपं जरिमा मिनाति पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि॥ १०॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ९ विराट्त्रिष्टुप्; ४, १० त्रिष्टुप्; ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ८ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ४-७, ९, १० धैवतः; ३, ८ पञ्चमः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

नि काव्या वेधसः शश्वतस्कर्हस्ते दधानो नर्या पुरूणि।
अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणां सत्रा चक्राणो अमृतानि विश्वा॥ १॥
अस्मे वत्सं परि षन्तं न विन्दन्निच्छन्तो विश्वे अमृता अमूराः।
श्रमयुवः पदव्यो धियंधास्तस्थुः पदे परमे चार्वग्नेः॥ २॥
तिस्रो यदग्ने शरदस्त्वामिच्छुचिं घृतेन शुचयः सपर्यान्।
नामानि चिद्दधिरे यज्ञियान्यसूदयन्त तन्वः सुजाताः॥ ३॥
आ रोदसी बृहती वेविदाना: प्र रुद्रिया जभ्रिरे यज्ञियासः।
विदन्मर्तो नेमधिता चिकित्वानग्निं पदे परमे तस्थिवांसम्॥ ४॥
संजानाना उप सीदन्नभिज्ञु पत्नीवन्तो नमस्यं नमस्यन्।
रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः सखा सख्युर्निमिषि रक्षमाणाः॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

त्रिः सप्त यद् गुह्यानि त्वे इत्पदाविदन्निहिता यज्ञियासः।
तेभी रक्षन्ते अमृतं सजोषाः पशूञ्च स्थातॄञ्चरथं च पाहि॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वाँ अग्ने वयुनानि क्षितीनां व्यानुषक्छुरुधो जीवसे धाः।
अन्तर्विद्वाँ अध्वनो देवयानानतन्द्रो दूतो अभवो हविर्वाट्॥ ७॥
स्वाध्यो दिव आ सप्त यह्वी रायो दुरो व्यृतज्ञा अजानन्।
विदद् गव्यं सरमा दृळ्हमूर्वं येना नु कं मानुषी भोजते विट्॥ ८॥
आ ये विश्वा स्वपत्यानि तस्थुः कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम्।
मह्ना महद्भिः पृथिवी वि तस्थे माता पुत्रैरदितिर्धायसे वेः॥ ९॥
अधि श्रियं नि दधुश्चारुमस्मिन्दिवो यदक्षी अमृता अकृण्वन्।
अध क्षरन्ति सिन्धवो न सृष्टाः प्र नीचीरग्ने अरुषीरजानन्॥ १०॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ७, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६ त्रिष्टुप्; ८ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

रयिर्न यः पितृवित्तो वयोधाः सुप्रणीतिश्चिकितुषो न शासुः।
स्योनशीरतिथिर्न प्रीणानो होतेव सद्म विधतो वि तारीत्॥ १॥
देवो न यः सविता सत्यमन्मा क्रत्वा निपाति वृजनानि विश्वा।
पुरुप्रशस्तो अमतिर्न सत्य आत्मेव शेवो दिधिषाय्यो भूत्॥ २॥
देवो न यः पृथिवीं विश्वधाया उपक्षेति हितमित्रो न राजा।
पुरःसदः शर्मसदो न वीरा अनवद्या पतिजुष्टेव नारी॥ ३॥
तं त्वा नरो दम आ नित्यमिद्धमग्ने सचन्त क्षितिषु ध्रुवासु।
अधि द्युम्नं नि दधुर्भूर्यस्मिन्भवा विश्वायुर्धरुणो रयीणाम्॥ ४॥
वि पक्षो अग्ने मघवानो अश्युर्वि सूरयो ददतो विश्वमायुः।
सनेम वाजं समिथेष्वर्यो भागं देवेषु श्रवसे दधानाः॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः स्मदूध्नीः पीपयन्त द्युभक्ताः।
परावतः सुमतिं भिक्षमाणा वि सिन्धवः समया सस्रुरद्रिम्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वे अग्ने सुमतिं भिक्षमाणा दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियासः।
नक्ता च चक्रुरुषसा विरूपे कृष्णं च वर्णमरुणं च सं धुः॥ ७॥
यान्राये मर्तान्त्सुषूदो अग्ने ते स्याम मघवानो वयं च।
छायेव विश्वं भुवनं सिसक्ष्यापप्रिवान्रोदसी अन्तरिक्षम्॥ ८॥
अर्वद्भिरग्ने अर्वतो नृभिर्नृन्वीरैर्वीरान्वनुयामा त्वोताः।
ईशानासः पितृवित्तस्य रायो वि सूर्यः शतहिमा नो अश्युः॥ ९॥
एता ते अग्न उचथानि वेधो जुष्टानि सन्तु मनसे हृदे च।
शकेम रायः सुधुरो यमं तेऽधि श्रवो देवभक्तं दधानाः॥ १०॥

त्रयोदशोऽनुवाकः [७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ८, ९ निचृद्गायत्री; ३, ५, ६ गायत्री; ४, ७ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते॥ १॥
यः स्नीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु। अरक्षद्दाशुषे गयम्॥ २॥
उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि। धनंजयो रणेरणे॥ ३॥
यस्य दूतो असि क्षये वेषि हव्यानि वीतये। दस्मत्कृणोष्यध्वरम्॥ ४॥
तमित्सुहव्यमङ्गिरः सुदेवं सहसो यहो। जना आहुः सुबर्हिषम्॥ ५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

आ च वहासि ताँ इह देवाँ उप प्रशस्तये। हव्या सुश्चन्द्र वीतये॥ ६॥
न योरुपब्दिरश्व्यः शृण्वे रथस्य कच्चन। यदग्ने यासि दूत्यम्॥ ७॥
त्वोतो वाज्यह्नयोऽभि पूर्वस्मादपरः। प्र दाश्वाँ अग्ने अस्थात्॥ ८॥
उत द्युमत्सुवीर्यं बृहदग्ने विवाससि। देवेभ्यो देव दाशुषे॥ ९॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ गायत्री; २, ४, ५ निचृद्गायत्री; ३ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

जुषस्व सप्रथस्तमं वचो देवप्सरस्तमम्। हव्या जुह्वान आसनि॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथा ते अङ्गिरस्तमाग्ने वेधस्तम प्रियम्। वोचेम ब्रह्म सानसि॥ २॥
कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः। को ह कस्मिन्नसि श्रितः॥ ३॥
त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईड्यः॥ ४॥
यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत्। अग्ने यक्षि स्वं दमम्॥ ५॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

का त उपेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शन्तमा का मनीषा।
को वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम॥ १॥
एह्यग्न इह होता नि षीदादब्धः सु पुरएता भवा नः।
अवतां त्वा रोदसी विश्वमिन्वे यजा महे सौमनसाय देवान्॥ २॥
प्र सु विश्वाञ्रक्षसो धक्ष्यग्ने भवा यज्ञानामभिशस्तिपावा।
अथा वह सोमपतिं हरिभ्यामातिथ्यमस्मै चकृमा सुदाव्ने॥ ३॥
प्रजावता वचसा वह्निरासा च हुवे नि च सत्सीह देवैः।
वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र बोधि प्रयन्तर्जनितर्वसूनाम्॥ ४॥
यथा विप्रस्य मनुषो हविर्भिर्देवाँ अयजः कविभिः कविः सन्।
एवा होतः सत्यतर त्वमद्याग्ने मन्द्रया जुह्वा यजस्व॥ ५॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३-५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-५ धैवतः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

कथा दाशेमाग्नये कास्मै देवजुष्टोच्यते भामिने गीः।
यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा होता यजिष्ठ इत्कृणोति देवान्॥ १॥
यो अध्वरेषु शन्तम ऋतावा होता तमू नमोभिरा कृणुध्वम्।
अग्निर्यद्वेर्मर्ताय देवान्त्स चा बोधाति मनसा यजाति॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स हि क्रतुः स मर्यः स साधुर्मित्रो न भूदद्भुतस्य रथीः।
तं मेधेषु प्रथमं देवयन्तीर्विश उप ब्रुवते दस्ममारीः॥ ३॥
स नो नृणां नृतमो रिशादा अग्निर्गिरोऽवसा वेतु धीतिम्।
तना च ये मघवानः शविष्ठा वाजप्रसूता इषयन्त मन्म॥ ४॥
एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा विप्रेभिरस्तोष्ट जातवेदाः।
स एषु द्युम्नं पीपयत्स वाजं स पुष्टिं याति जोषमा चिकित्वान्॥ ५॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे। द्युम्नैरभि प्र णोनुमः॥ १॥
तमु त्वा गोतमो गिरा रायस्कामो दुवस्यति। द्युम्नैरभि प्र णोनुमः॥ २॥
तमु त्वा वाजसातममङ्गिरस्वद्धवामहे। द्युम्नैरभि प्र णोनुमः॥ ३॥
तमु त्वा वृत्रहन्तमं यो दस्यूँरवधूनुषे। द्युम्नैरभि प्र णोनुमः॥ ४॥
अवोचाम रहूगणा अग्नये मधुमद्वचः। द्युम्नैरभि प्र णोनुमः॥ ५॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ आर्ष्युष्णिक्; ५, ६ निचृदार्ष्युष्णिक्; ७, ८, १०, ११ निचृद्गायत्री; ९, १२ गायत्री॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-६ ऋषभः; ७-१२ षड्जः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

हिरण्यकेशो रजसो विसारेऽहिर्धुनिर्वातइव ध्रजीमान्।
शुचिभ्राजा उषसो नवेदा यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः॥ १॥
आ ते सुपर्णा अमिनन्तँ एवैः कृष्णो नोनाव वृषभो यदीदम्।
शिवाभिर्न स्मयमानाभिरागात्पतन्ति मिहः स्तनयन्त्यभ्रा॥ २॥
यदीमृतस्य पयसा पियानो नयन्नृतस्य पथिभी रजिष्ठैः।
अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा त्वचं पृञ्चन्त्युपरस्य योनौ॥ ३॥
अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो ।
अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः ॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स इधानो वसुष्कविरग्निरीळेन्यो गिरा। रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि॥ ५॥
क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः। स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति॥ ६॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

अवा नो अग्न ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि। विश्वासु धीषु वन्द्य॥ ७॥
आ नो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम्। विश्वासु पृत्सु दुष्टरम्॥ ८॥
आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम्। मार्डीकं धेहि जीवसे॥ ९॥
प्र पूतास्तिग्मशोचिषे वाचो गोतमाग्नये। भरस्व सुम्नयुर्गिरः॥ १०॥
यो नो अग्नेऽभिदासत्यन्ति दूरे पदीष्ट सः। अस्माकमिद् वृधे भव॥ ११॥
सहस्राक्षो विचर्षणिरग्नी रक्षांसि सेधति। होता गृणीत उक्थ्यः॥ १२॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ११ निचृदास्तारपङ्क्तिः; ५, ६, ९, १०, १३, १४ विराट्पङ्क्तिः; २-४, ७, १२, १५ भुरिग्बृहती; ८, १६ बृहती॥ स्वरः—१, ५, ६, ९-११, १३, १४ पञ्चमः; २-४, ७, ८, १२, १५, १६ मध्यमः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम्। शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ १॥
स त्वामदद् वृषा मदः सोमः श्येनाभृतः सुतः। येना वृत्रं निरद्भ्यो जघन्थ वज्रिन्नोजसार्चन्ननु स्वराज्यम्॥ २॥
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते। इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ३॥
निरिन्द्र भूम्या अधि वृत्रं जघन्थ निर्दिवः। सृजा मरुत्वतीरव जीवधन्या इमा अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ४॥
इन्द्रो वृत्रस्य दोधतः सानुं वज्रेण हीळितः। अभिक्रम्याव जिघ्नतेऽपः समीय चोदयन्नर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

अधि सानौ नि जिघ्नते वज्रेण शतपर्वणा। मन्दान इन्द्रो अन्धसः सखिभ्यो गातुमिच्छत्यर्चन्ननु स्वराज्यम्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन्वीर्यम् ।
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तमु त्वं मायया वधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ७ ॥
वि ते वज्रासो अस्थिरन्नवतिं नाव्या३ अनु ।
महत्त इन्द्र वीर्यं बाह्वोस्ते बलं हितमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ८ ॥
सहस्रं साकमर्चत परि ष्टोभत विंशतिः ।
शतैनमन्वनोनवुरिन्द्राय ब्रह्मोद्यतमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ९ ॥
इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं निरहन्त्सहसा सहः ।
महत्तदस्य पौंस्यं वृत्रं जघन्वाँ असृजदर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १० ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

इमे चित्तव मन्यवे वेपेते भियसा मही ।
यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वाँ अवधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ११ ॥
न वेपसा न तन्यतेन्द्रं वृत्रो वि बीभयत् ।
अभ्येनं वज्र आयसः सहस्रभृष्टिरायतार्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १२ ॥
यद् वृत्रं तव चाशनिं वज्रेण समयोधयः ।
अहिमिन्द्र जिघांसतो दिवि ते बद्बधे शवोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १३ ॥
अभिष्टने ते अद्रिवो यत्स्था जगच्च रेजते ।
त्वष्टा चित्तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भियार्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १४ ॥
नहि नु यादधीमसीन्द्रं को वीर्या परः ।
तस्मिन्नृम्णमुत क्रतुं देवा ओजांसि सं दधुरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १५ ॥
यामथर्वा मनुष्पिता दध्यङ् धियमत्नत ।
तस्मिन्ब्रह्माणि पूर्वथेन्द्र उक्था समग्मतार्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ १६ ॥

इति प्रथमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठोऽध्यायः

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७, ८ विराट्पङ्क्तिः; २ भुरिग्बृहती; ३-६, ९ निचृदास्तारपङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-९ पञ्चमः; २ मध्यमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः।
तमिन्महत्स्वाजिषूतेमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत्॥ १॥
असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि पराददिः।
असि दभ्रस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु॥ २॥
यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धना।
युक्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः॥ ३॥
क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ ववृधे शवः।
श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवान्दधे हस्तयोर्वज्रमायसम्॥ ४॥
आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्बधे रोचना दिवि।
न त्वावाँ इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यतेऽति विश्वं ववक्षिथ॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

यो अर्यो मर्तभोजनं परादर्दाति दाशुषे।
इन्द्रो अस्मभ्यं शिक्षतु वि भजा भूरि ते वसु भक्षीय तव राधसः॥ ६॥
मदेमदे हि नो ददिर्यूथा गवामृजुक्रतुः।
सं गृभाय पुरू शतोभयाहस्त्या वसु शिशीहि राय आ भर॥ ७॥
मादयस्व सुते सचा शवसे शूर राधसे।
विद्मा हि त्वा पुरूवसुमुप कामान्त्ससृज्महेऽथा नोऽविता भव॥ ८॥
एते त इन्द्र जन्तवो विश्वं पुष्यन्ति वार्यम्।
अन्तर्हि ख्यो जनानामर्यो वेदो अदाशुषां तेषां नो वेद आ भर॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४ निचृदास्तारपङ्क्तिः; २, ३, ५ विराडास्तारपङ्क्तिः; ६ विराड्जगती॥ स्वरः—१-५ पञ्चमः; ६ निषादः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथाइव।
यदा नः सूनृतावतः कर आदर्थयासइद्योजा न्विन्द्र ते हरी॥ १॥
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी॥ २॥
सुसंदृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि।
प्र नूनं पूर्णवन्धुरः स्तुतो याहि वशाँ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी॥ ३॥
स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम्।
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी॥ ४॥
युक्तस्ते अस्तु दक्षिण उत सव्यः शतक्रतो।
तेन जायामुप प्रियां मन्दानो याह्यन्धसो योजा न्विन्द्र ते हरी॥ ५॥
युनज्मि ते ब्रह्मणा केशिना हरी उप प्र याहि दधिषे गभस्त्योः।
उत्त्वा सुतासो रभसा अमन्दिषुः पूषण्वान्वज्रिन्त्समु पत्न्यामदः॥ ६॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ४, ५ निचृज्जगती; २ जगती; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-५ निषादः; ६ धैवतः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः।
तमित्पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः॥ १॥
आपो न देवीरुप यन्ति होत्रियमवः पश्यन्ति विततं यथा रजः।
प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वराइव॥ २॥
अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं१ वचो यतस्रुचा मिथुना या सपर्यतः।
असंयत्तो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वय इद्धाग्नयः शम्या ये सुकृत्यया।
सर्वं पणेः समविन्दन्त भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः॥ ४॥
यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि।
आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे॥ ५॥
बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय वृज्यतेऽर्को वा श्लोकमाघोषते दिवि।
ग्रावा यत्र वदति कारुरुक्थ्य१स्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रण्यति॥ ६॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३-५ निचृदनुष्टुप्; २ विराडनुष्टुप्; ६ भुरिगुष्णिक्; ७-९ उष्णिक्; १०, १२ विराडास्तारपङ्क्तिः; ११ आस्तारपङ्क्तिः; १३-१५ निचृद्गायत्री; १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १७ विराट्त्रिष्टुप्; १८ त्रिष्टुप्; १९ आर्चीत्रिष्टुप्; २० पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५ गान्धारः; ६-९ ऋषभः; १०-१२, २० पञ्चमः; १३-१५ षड्जः; १६-१९ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि ।
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः॥ १॥
इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम् ।
ऋषीणां च स्तुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम्॥ २॥
आ तिष्ठ वृत्रहन्रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी ।
अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्गुना॥ ३॥
इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन्धारा ऋतस्य सादने॥ ४॥
इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन ।
सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

नकिष्ट्वद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे ।
नकिष्ट्वानु मज्मना नकिः स्वश्व आनशे॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥ ७ ॥
कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् ।
कदा नः शुश्रवद्गिर इन्द्रो अङ्ग ॥ ८ ॥
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति ।
उग्रं तत्पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥ ९ ॥
स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यः ।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ ११ ॥
ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १२ ॥
इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः । जघान नवतीर्नव ॥ १३ ॥
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम् । तद्विदच्छर्यणावति ॥ १४ ॥
अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् । इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ १५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून् ।
आसन्निषून्हृत्स्वसो मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात् ॥ १६ ॥
क ईषते तुज्यते को बिभाय को मंसते सन्तमिन्द्रं को अन्ति ।
कस्तोकाय क इभायोत रायेऽधि ब्रवत्तन्वे३ को जनाय ॥ १७ ॥
को अग्निमीट्टे हविषा घृतेन स्रुचा यजाता ऋतुभिर्ध्रुवेभिः ।
कस्मै देवा आ वहानाशु होम को मंसते वीतिहोत्रः सुदेवः ॥ १८ ॥
त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ १९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसोऽस्मान्कदा चना दभन् ।
विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ ॥ २० ॥

चतुर्दशोनुवाकः [८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ६, ११ जगती; ३, ७, ८ निचृज्जगती; ४, ९, १० विराड्जगती; ५ विराट्त्रिष्टुप्; १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६-११ निषादः; ५, १२ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

प्र ये शुम्भन्ते जनयो न सप्तयो यामन्रुद्रस्य सूनवः सुदंससः ।
रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे मदन्ति वीरा विदथेषु घृष्वयः ॥ १ ॥
त उक्षितासो महिमानमाशत दिवि रुद्रासो अधि चक्रिरे सदः ।
अर्चन्तो अर्कं जनयन्त इन्द्रियमधि श्रियो दधिरे पृश्निमातरः ॥ २ ॥
गोमातरो यच्छुभयन्ते अञ्जिभिस्तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मतः ।
बाधन्ते विश्वमभिमातिनमप वर्त्मान्येषामनु रीयते घृतम् ॥ ३ ॥
वि ये भ्राजन्ते सुमखास ऋष्टिभिः प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजसा ।
मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्वा वृषव्रातासः पृषतीरयुग्ध्वम् ॥ ४ ॥
प्र यद्रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं वाजे अद्रिं मरुतो रंहयन्तः ।
उतारुषस्य वि ष्यन्ति धाराश्चर्मेवोदभिर्व्युन्दन्ति भूम ॥ ५ ॥
आ वो वहन्तु सप्तयो रघुष्यदो रघुपत्वानः प्र जिगात बाहुभिः ।
सीदता बर्हिरुरु वः सदस्कृतं मादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः ॥ ६ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

तेऽवर्धन्त स्वतवसो महित्वना नाकं तस्थुरुरु चक्रिरे सदः ।
विष्णुर्यद्धावद् वृषणं मदच्युतं वयो न सीदन्नधि बर्हिषि प्रिये ॥ ७ ॥
शूराइवेद्युयुधयो न जग्मयः श्रवस्यवो न पृतनासु येतिरे ।
भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो राजानइव त्वेषसंदृशो नरः ॥ ८ ॥
त्वष्टा यद्वज्रं सुकृतं हिरण्ययं सहस्रभृष्टिं स्वपा अवर्तयत् ।
धत्त इन्द्रो नर्यपांसि कर्तवेऽहन्वृत्रं निरपामौब्जदर्णवम् ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं त ओजसा दादृहाणं चिद्बिभिदुर्वि पर्वतम्।
धमन्तो वाणं मरुतः सुदानवो मदे सोमस्य रण्यानि चक्रिरे॥ १०॥
जिह्मं नुनुद्रेऽवतं तया दिशासिञ्चन्नुत्सं गोतमाय तृष्णजे।
आ गच्छन्तीमवसा चित्रभानवः कामं विप्रस्य तर्पयन्त धामभिः॥ ११॥
या वः शर्म शशमानाय सन्ति त्रिधातूनि दाशुषे यच्छताधि।
अस्मभ्यं तानि मरुतो वि यन्त रयिं नो धत्त वृषणः सुवीरम्॥ १२॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ४, ८, ९ गायत्री; २, ३, ७ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; ५, ६, १० निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः। स सुगोपातमो जनः॥ १॥
यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो विप्रस्य वा मतीनाम्। मरुतः शृणुता हवम्॥ २॥
उत वा यस्य वाजिनोऽनु विप्रमतक्षत। स गन्ता गोमति व्रजे॥ ३॥
अस्य वीरस्य बर्हिषि सुतः सोमो दिविष्टिषु। उक्थं मदश्च शस्यते॥ ४॥
अस्य श्रोषन्त्वा भुवो विश्वा यश्चर्षणीरभि। सूरं चित्सस्रुषीरिषः॥ ५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

पूर्वीभिर्हि ददाशिम शरद्भिर्मरुतो वयम्। अवोभिश्चर्षणीनाम्॥ ६॥
सुभगः स प्रयज्यवो मरुतो अस्तु मर्त्यः। यस्य प्रयांसि पर्थ॥ ७॥
शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः। विदा कामस्य वेनतः॥ ८॥
यूयं तत्सत्यशवस आविष्कर्त महित्वना। विध्यता विद्युता रक्षः॥ ९॥
गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम्। ज्योतिष्कर्ता यदुश्मसि॥ १०॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, २, ५ विराड्जगती; ३ जगती; ४ त्रिष्टुप्; ६ निचृज्जगती॥ स्वरः—१-३, ५, ६ निषादः; ४ धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

प्रत्वक्षसः प्रतवसो विरप्शिनोऽनानता अविथुरा ऋजीषिणः।
जुष्टतमासो नृतमासो अञ्जिभिर्व्यानज्रे के चिदुस्राइव स्तृभिः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

2451. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपह्वरेषु यदचिध्वं यियिं वयइव मरुतः केन चित्पथा ।
श्चोतन्ति कोशा उप वो रथेष्वा घृतमुक्षता मधुवर्णमर्चते ॥ २ ॥
प्रैषामज्मेषु विथुरेव रेजते भूमिर्यामेषु यद्ध युञ्जते शुभे ।
ते क्रीळयो धुनयो भ्राजदृष्टयः स्वयं महित्वं पनयन्त धूतयः ॥ ३ ॥
स हि स्वसृत्पृषदश्वो युवा गणोऽ३ऽ या ईशानस्तविषीभिरावृतः ।
असि सत्य ऋणयावानेद्योऽ स्या धियः प्राविताथा वृषा गणः ॥ ४ ॥
पितुः प्रत्नस्य जन्मना वदामसि सोमस्य जिह्वा प्र जिगाति चक्षसा ।
यदीमिन्द्रं शम्यृक्वाण आशतादिन्नामानि यज्ञियानि दधिरे ॥ ५ ॥
श्रियसे कं भानुभिः सं मिमिक्षिरे ते रश्मिभिस्त ऋक्वभिः सुखादयः ।
ते वाशीमन्त इष्मिणो अभीरवो विद्रे प्रियस्य मारुतस्य धाम्नः ॥ ६ ॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ६ निचृद्बृहती ॥
स्वरः—१, २, ५ पञ्चमः; ३, ४ धैवतः; ६ मध्यमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्कै रथेभिर्यात ऋष्टिमद्भिरश्वपर्णैः ।
आ वर्षिष्ठया न इषा वयो न पप्तता सुमायाः ॥ १ ॥
तेऽरुणेभिर्वरमा पिशङ्गैः शुभे कं यान्ति रथतूर्भिरश्वैः ।
रुक्मो न चित्रः स्वधितीवान् पव्या रथस्य जङ्घनन्त भूम ॥ २ ॥
श्रिये कं वो अधि तनूषु वाशीर्मेधा वना न कृणवन्त ऊर्ध्वा ।
युष्मभ्यं कं मरुतः सुजातास्तुविद्युम्नासो धनयन्ते अद्रिम् ॥ ३ ॥
अहानि गृध्राः पर्या व आगुरिमां धियं वार्क्यां च देवीम् ।
ब्रह्म कृण्वन्तो गोतमासो अर्कैरूर्ध्वं नुनुद्र उत्सधिं पिबध्यै ॥ ४ ॥
एतत्त्यन्न योजनमचेति सस्वर्ह यन्मरुतो गोतमो वः ।
पश्यन् हिरण्यचक्रानयोदंष्ट्रान्विधावतो वराहून् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एषा स्या वो मरुतोऽनुभर्त्री प्रति ष्टोभति वाघतो न वाणी ।
अस्तोभयद् वृथासामनु स्वधां गर्भस्त्योः ॥ ६ ॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २, ३, ७ जगती; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ स्वराड्बृहती; ८ विराट्त्रिष्टुप्; ९, १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५, ७ निषादः; ४, ८-१० धैवतः; ६ मध्यमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ॥ १ ॥
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो नि वर्तताम् ।
देवानां सख्यमुप सेदिमा वयं देवा न आयुः प्र तिरन्तु जीवसे ॥ २ ॥
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्रिधम् ।
अर्यमणं वरुणं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥ ३ ॥
तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः ।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम् ॥ ४ ॥
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ६ ॥
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह ॥ ७ ॥
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥ ८ ॥
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदितिर्द्यौरदितिर॒न्तरि॑क्षमदि॑तिर्मा॒ता स पि॒ता स पु॒त्रः ।
विश्वे॑ दे॒वा अदि॑तिः पञ्च॒ जना॒ अदि॑तिर्जा॒तमदि॑ति॒र्जनि॑त्वम् ॥ १० ॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ८ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; २, ७ गायत्री; ३ पिपीलिकामध्याविराड्गायत्री; ४ विराड्गायत्री; ५, ६ निचृद्गायत्री; ९ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-८ षड्जः; ९ गान्धार ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

ऋ॒जु॒नी॒ती नो॒ वरु॑णो मि॒त्रो न॑यतु वि॒द्वान् । अ॒र्य॒मा दे॒वैः स॒जोषाः॑ ॥ १ ॥
ते हि वस्वो॒ वस॑वानास्ते अप्रमू॒रा महो॑भिः । व्र॒ता र॑क्षन्ते वि॒श्वहा॑ ॥ २ ॥
ते अ॒स्मभ्यं॒ शर्म॑ यंसन्नमृता॒ मर्त्ये॑भ्यः । बाध॑माना॒ अप॒ द्विषः॑ ॥ ३ ॥
वि नः॑ प॒थः सु॑वि॒ताय॑ चियन्त्विन्द्रो॑ म॒रुतः॑ । पू॒षा भगो॒ वन्द्या॑सः ॥ ४ ॥
उ॒त नो॒ धियो॒ गोअ॑ग्राः पूष॒न्विष्ण॒वेव॑यावः । कर्ता॑ नः॒ स्वस्ति॑मतः ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

मधु॒ वाता॑ ऋताय॒ते मधु॑ क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वः । माध्वी॑र्नः स॒न्त्वोष॑धीः ॥ ६ ॥
मधु॒ नक्त॑मु॒तोष॑सो॒ मधु॑मत्पार्थि॒वं रजः॑ । मधु॒ द्यौर॑स्तु नः॒ पि॒ता ॥ ७ ॥
मधु॑मान्नो॒ वन॒स्पति॒र्मधु॑माँ अस्तु॒ सूर्यः॑ । माध्वी॒र्गावो॑ भवन्तु नः ॥ ८ ॥
शं नो॑ मि॒त्रः शं वरु॑ण॒ः शं नो॑ भवत्वर्य॒मा ।
शं न॒ इन्द्रो॒ बृह॒स्पति॒ः शं नो॒ विष्णु॑रुरुक्र॒मः ॥ ९ ॥

[९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ४ स्वराट्पङ्क्तिः; २ पङ्क्तिः; ५ पादनिचृद्गायत्री; ६, ८, ९, ११ निचृद्गायत्री; ७ वर्धमानागायत्री; १०, १२ गायत्री; १३, १४ विराड्गायत्री; १५, १६ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; १७ परोष्णिक्; १८, २० भुरिक्पङ्क्तिः; २२ विराट्पङ्क्तिः; १९, २१, २३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, १८, २०, २२ पञ्चमः; ५-१६ षड्जः; १७ ऋषभः; १९, २१, २३ धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

त्वं सो॑म॒ प्र चि॑कितो मनी॒षा त्वं रजि॑ष्ठमनु॒ नेषि॒ पन्था॑म् ।
तव॒ प्रणी॑ती॒ पि॒तरो॑ न इन्दो दे॒वेषु॒ रत्न॑मभजन्त॒ धीराः॑ ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूस्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युम्न्यभवो नृचक्षाः॥ २॥
राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद् गभीरं तव सोम धाम।
शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम॥ ३॥
या ते धामानि दिवि या पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु।
तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेळन्राजन्त्सोम प्रति हव्या गृभाय॥ ४॥
त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा। त्वं भद्रो असि क्रतुः॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे। प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः॥ ६॥
त्वं सोम महे भगं त्वं यून ऋतायते। दक्षं दधासि जीवसे॥ ७॥
त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः। न रिष्येत्त्वावतः सखा॥ ८॥
सोम यास्ते मयोभुव ऊतयः सन्ति दाशुषे। ताभिर्नोऽविता भव॥ ९॥
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि। सोम त्वं नो वृधे भव॥ १०॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः। सुमृळीको न आ विश॥ ११॥
गयस्फानो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्धनः। सुमित्रः सोम नो भव॥ १२॥
सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा। मर्यइव स्व ओक्ये॥ १३॥
यः सोम सख्ये तव रारणद्देव मर्त्यः। तं दक्षः सचते कविः॥ १४॥
उरुष्या णो अभिशस्तेः सोम नि पाह्यंहसः। सखा सुशेव एधि नः॥ १५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्।
भवा वाजस्य संगथे॥ १६॥
आ प्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिरंशुभिः।
भवा नः सुश्रवस्तमः सखा वृधे॥ १७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व॥ १८॥
या ते धामानि हविषा यजन्ति ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम्।
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरोऽवीरहा प्र चरा सोम दुर्यान्॥ १९॥
सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति।
सादन्यं विदथ्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै॥ २०॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

अषाळ्हं युत्सु पृतनासु पप्रिं स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम्।
भरेषुजां सुक्षितिं सुश्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम॥ २१॥
त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः।
त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ॥ २२॥
देवेन नो मनसा देव सोम रायो भागं सहसावन्नभि युध्य।
मा त्वा तनदीशिषे वीर्यस्योभयेभ्यः प्र चिकित्सा गविष्टौ॥ २३॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, २ निचृज्जगती; ३ जगती; ४ विराड्-जगती; ५, ७, १२ विराट्त्रिष्टुप्; ६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ८, ९ त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ निचृत्परोष्णिक्; १४, १५ विराट्परोष्णिक्; १६, १७, १८ उष्णिक्॥
स्वरः—१-४ निषादः; ५-१०, १२ धैवतः; ११ पञ्चमः; १३-१८ ऋषभः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते।
निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः॥ १॥
उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत।
अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः॥ २॥
अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः।
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते॥ ३॥
अधि पेशांसि वपते नृतूरिवापोर्णुते वक्ष उस्रेव बर्जहम्।
ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वती गावो न व्रजं व्युषा आवर्तमः॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यर्ची रुशदस्या अदर्शि वि तिष्ठते बाधते कृष्णमभ्वम्।
स्वरुं न पेशो विदथेष्वञ्जञ्चित्रं दिवो दुहिता भानुमश्रेत्॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

अतारिष्म तमसस्पारमस्योषा उच्छन्ती वयुना कृणोति।
श्रिये छन्दो न स्मयते विभाती सुप्रतीका सौमनसाय जीगः॥ ६॥
भास्वती नेत्री सूनृतानां दिवः स्तवे दुहिता गोतमेभिः।
प्रजावतो नृवतो अश्वबुध्यानुषो गोअग्राँ उप मासि वाजान्॥ ७॥
उषस्तमश्यां यशसं सुवीरं दासप्रवर्गं रयिमश्वबुध्यम्।
सुदंससा श्रवसा या विभासि वाजप्रसूता सुभगे बृहन्तम्॥ ८॥
विश्वानि देवी भुवनाभिचक्ष्या प्रतीची चक्षुरुर्विया वि भाति।
विश्वं जीवं चरसे बोधयन्ती विश्वस्य वाचमविदन्मनायोः॥ ९॥
पुनः पुनर्जायमाना पुराणी समानं वर्णमभि शुम्भमाना।
श्वघ्नीव कृत्नुर्विज आमिनाना मर्तस्य देवी जरयन्त्यायुः॥ १०॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

व्यूर्ण्वती दिवो अन्ताँ अबोध्यप स्वसारं सनुतर्युयोति।
प्रमिनती मनुष्या युगानि योषा जारस्य चक्षसा वि भाति॥ ११॥
पशून्न चित्रा सुभगा प्रथाना सिन्धुर्न क्षोद उर्विया व्यश्वैत्।
अमिनती दैव्यानि व्रतानि सूर्यस्य चेति रश्मिभिर्दृशाना॥ १२॥
उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति।
येन तोकं च तनयं च धामहे॥ १३॥
उषो अद्येह गोमत्यश्वावति विभावरि।
रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति॥ १४॥
युक्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यारुणाँ उषः।
अथा नो विश्वा सौभगान्या वह॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद्दस्रा हिरण्यवत् ।
अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम् ॥ १६ ॥
यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः ।
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ॥ १७ ॥
एह देवा मयोभुवा दस्रा हिरण्यवर्तनी ।
उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये ॥ १८ ॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमो राहूगणपुत्रः ॥ देवता—अग्नीषोमौ ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ भुरिग् उष्णिक्; ३ विराडनुष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्त्रिष्टुप्; ९-११ गायत्री; १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ गान्धारः; २ ऋषभः; ४ पञ्चमः; ५-८, १२ धैवतः; ९-११ षड्जः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अग्नीषोमाविमं सु मे शृणुतं वृषणा हवम् ।
प्रति सूक्तानि हर्यतं भवतं दाशुषे मयः ॥ १ ॥
अग्नीषोमा यो अद्य वामिदं वचः सपर्यति ।
तस्मै धत्तं सुवीर्यं गवां पोषं स्वश्व्यम् ॥ २ ॥
अग्नीषोमा य आहुतिं यो वां दाशाद्धविष्कृतिम् ।
स प्रजया सुवीर्यं विश्वमायुर्व्यश्नवत् ॥ ३ ॥
अग्नीषोमा चेति तद्वीर्यं वां यदमुष्णीतमवसं पणिं गाः ।
अवातिरतं बृसयस्य शेषोऽविन्दतं ज्योतिरेकं बहुभ्यः ॥ ४ ॥
युवमेतानि दिवि रोचनान्यग्निश्च सोम सक्रतू अधत्तम् ।
युवं सिन्धूँरभिशस्तेरवद्यादग्नीषोमावमुञ्चतं गृभीतान् ॥ ५ ॥
आन्यं दिवो मातरिश्वा जभारामथ्नादन्यं परि श्येनो अद्रेः ।
अग्नीषोमा ब्रह्मणा वावृधानोरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकम् ॥ ६ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

अग्नीषोमा हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्यतं वृषणा जुषेथाम् ।
सुशर्माणा स्ववसा हि भूतमथा धत्तं यजमानाय शं योः ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो अग्नीषोमा हविषा सपर्यादेवद्रीचा मनसा यो घृतेन ।
तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ॥ ८ ॥
अग्नीषोमा सवेदसा सहूती वनतं गिरः । सं देवत्रा बभूवथुः ॥ ९ ॥
अग्नीषोमावनेनं वां यो वां घृतेन दाशति । तस्मै दीदयतं बृहत् ॥ १० ॥
अग्नीषोमाविमानि नो युवं हव्या जुजोषतम् । आ यातमुप नः सचा ॥ ११ ॥
अग्नीषोमा पिपृतमर्वतो न आ प्यायन्तामुस्त्रिया हव्यसूदः ।
अस्मे बलानि मघवत्सु धत्तं कृणुतं नो अध्वरं श्रुष्टिमन्तम् ॥ १२ ॥

पञ्चदशोऽनुवाकः [९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ७, ९, १० निचृज्जगती; २, ३, १६ त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्त्रिष्टुप्; ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२-१४ विराड्जगती; १५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७, ९, १०, १२-१४ निषादः; २, ३, ६, ८, ११, १६ धैवतः; १५ पञ्चमः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ १ ॥
यस्मै त्वमायजसे स साधत्यनर्वा क्षेति दधते सुवीर्यम् ।
स तूताव नैनमश्नोत्यंहतिरग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ २ ॥
शकेम त्वा समिधं साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।
त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्युश्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ३ ॥
भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् ।
जीवातवे प्रतरं साधया धियोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ४ ॥
विशां गोपा अस्य चरन्ति जन्तवो द्विपच्च यदुत चतुष्पदक्तुभिः ।
चित्रः प्रकेत उषसो महाँ अस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

त्वमध्वर्युरुत होतासि पूर्व्यः प्रशास्ता पोता जनुषा पुरोहितः ।
विश्वा विद्वाँ आर्त्विज्या धीर पुष्यस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो विश्वतः सुप्रतीकः सदृङ्ङसि दूरे चित्सन्तळिदिवाति रोचसे।
रात्र्याश्चिदन्धो अति देव पश्यस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ ७॥
पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथोऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः।
तदा जानीतोत पुष्यता वचोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ ८॥
वधैर्दुःशंसाँ अप दूढ्यो जहि दूरे वा ये अन्ति वा के चिदत्रिणः।
अथा यज्ञाय गृणते सुगं कृध्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ ९॥
यदयुक्था अरुषा रोहिता रथे वातजूता वृषभस्येव ते रवः।
आदिन्वसि वनिनो धूमकेतुनाग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ १०॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

अध स्वनादुत बिभ्युः पतत्रिणो द्रप्सा यत्ते यवसादो व्यस्थिरन्।
सुगं तत्ते तावकेभ्यो रथेभ्योऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ ११॥
अयं मित्रस्य वरुणस्य धायसेऽवयातां मरुतां हेळो अद्भुतः।
मृळा सु नो भूत्वेषां मनः पुनरग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ १२॥
देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे।
शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ १३॥
तत्ते भद्रं यत्समिद्धः स्वे दमे सोमाहुतो जरसे मृळयत्तमः।
दधासि रत्नं द्रविणं च दाशुषेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव॥ १४॥
यस्मै त्वं सुद्रविणो ददाशोऽनागास्त्वमदिते सर्वताता।
यं भद्रेण शवसा चोदयासि प्रजावता राधसा ते स्याम॥ १५॥
स त्वमग्ने सौभगत्वस्य विद्वानस्माकमायुः प्र तिरेह देव।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ १६॥

इति प्रथमाष्टके षष्ठोध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तमोऽध्यायः

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—सत्यगुणविशिष्टोऽग्निः शुद्धोऽग्निर्वा॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ७, ८, ११ त्रिष्टुप्; ४-६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-८, १०, ११ धैवतः; ९ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुप धापयेते ।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चीः॥ १॥
दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त गर्भमन्तर्द्रासो युवतयो विभृत्रम् ।
तिग्मानीकं स्वयशसं जनेषु विरोचमानं परि षीं नयन्ति॥ २॥
त्रीणि जाना परि भूषन्त्यस्य समुद्र एकं दिव्येकमप्सु ।
पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानामृतून्प्रशासद्वि दधावनुष्ठु ॥ ३॥
क इमं वो निण्यमा चिकेत वत्सो मातृर्जनयत स्वधाभिः।
बह्वीनां गर्भो अपसामुपस्थान्महान्कविर्निश्चरति स्वधावान्॥ ४॥
आविष्ट्यो वर्धते चारुरासु जिह्मानामूर्ध्वः स्वयशा उपस्थे।
उभे त्वष्टुर्बिभ्यतुर्जायमानात्प्रतीची सिंहं प्रति जोषयेते ॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

उभे भद्रे जोषयेते न मेने गावो न वाश्रा उप तस्थुरेवैः।
स दक्षाणां दक्षपतिर्बभूवाञ्जन्ति यं दक्षिणतो हविर्भिः॥ ६॥
उद्यंयमीति सवितेव बाहू उभे सिचौ यतते भीम ऋञ्जन्।
उच्छुक्रमत्कमजते सिमस्मान्नवा मातृभ्यो वसना जहाति॥ ७॥
त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्संपृञ्चानः सदने गोभिरद्भिः ।
कविर्बुध्नं परि मर्मृज्यते धीः सा देवतातां समितिर्बभूव॥ ८॥
उरु ते ज्रयः पर्येति बुध्नं विरोचमानं महिषस्य धाम ।
विश्वेभिरग्ने स्वयशोभिरिद्धोऽदब्धेभिः पायुभिः पाह्यस्मान्॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन्वन्त्स्रोतः कृणुते गातुमूर्मिं शुक्रैरूर्मिभिरभि नक्षति क्षाम्।
विश्वा सनानि जठरेषु धत्तेऽन्तर्नवासु चरति प्रसूषु ॥ १० ॥
एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पावक श्रवसे वि भाहि।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ११ ॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—द्रविणोदा अग्निः शुद्धोऽग्निर्वा ॥
छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

स प्रत्नथा सहसा जायमानः सद्यः काव्यानि बळधत्त विश्वा।
आपश्च मित्रं धिषणा च साधन्देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ १ ॥
स पूर्वया निविदा कव्यतायोरिमाः प्रजा अजनयन्मनूनाम्।
विवस्वता चक्षसा द्यामपश्च देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ २ ॥
तमीळत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृञ्जसानम् ।
ऊर्जः पुत्रं भरतं सृप्रदानुं देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ ३ ॥
स मातरिश्वा पुरुवारपुष्टिर्विदद् गातुं तनयाय स्वर्वित् ।
विशां गोपा जनिता रोदस्योर्देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ ४ ॥
नक्तोषासा वर्णमामेम्याने धापयेते शिशुमेकं समीची ।
द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्वि भाति देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

रायो बुध्नः संगमनो वसूनां यज्ञस्य केतुर्मन्मसाधनो वेः।
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ ६ ॥
नू च पुरा च सदनं रयीणां जातस्य च जायमानस्य च क्षाम्।
सतश्च गोपां भवतश्च भूरेर्देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ॥ ७ ॥
द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्र यंसत्।
द्रविणोदा वीरवतीमिषं नो द्रविणोदा रासते दीर्घमायुः ॥ ८ ॥
एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पावक श्रवसे वि भाहि।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ७, ८ पिपीलिकामध्या निचृद्गायत्री; २, ४, ५ गायत्री; ३, ६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

अप॑ नः शोशुचद॒घमग्ने॑ शुशु॒ग्ध्या र॒यिम्। अप॑ नः शोशुचद॒घम्॥ १॥
सु॒क्षे॒त्रि॒या सु॒गात॒या व॑सू॒या च॑ यजामहे। अप॑ नः शोशुचद॒घम्॥ २॥
प्र यद्भन्दि॑ष्ठ ए॒षां प्रास्माकां॑सश्च सू॒रयः॑। अप॑ नः शोशुचद॒घम्॥ ३॥
प्र यत्ते॑ अग्ने सू॒रयो॒ जाय॑ेमहि॒ प्र ते॑ व॒यम्। अप॑ नः शोशुचद॒घम्॥ ४॥
प्र यद॒ग्नेः सह॑स्वतो वि॒श्वतो॒ यन्ति॑ भा॒नवः॑। अप॑ नः शोशुचद॒घम्॥ ५॥
त्वं हि वि॑श्वतोमुख वि॒श्वतः॑ परि॒भूर॑सि। अप॑ नः शोशुचद॒घम्॥ ६॥
द्विषो॑ नो विश्वतोमुखाति॑ ना॒वेव॑ पारय। अप॑ नः शोशुचद॒घम्॥ ७॥
स न॒ः सिन्धु॑मिव ना॒वयाति॑ पर्षा स्व॒स्तये॑। अप॑ नः शोशुचद॒घम्॥ ८॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—अग्निर्वैश्वानरः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

वै॒श्वा॒नर॑स्य सुम॒तौ स्या॑म॒ राजा॒ हि क॒ं भुव॑नानामभि॒श्रीः।
इ॒तो जा॒तो विश्व॑मि॒दं वि च॑ष्टे वैश्वान॒रो य॑तते॒ सूर्ये॑ण॥ १॥
पृ॒ष्टो दि॒वि पृ॒ष्टो अ॒ग्निः पृ॑थि॒व्यां पृ॒ष्टो विश्वा॒ ओष॑धीरा॒ वि॑वेश।
वै॒श्वा॒न॒रः सह॑सा पृ॒ष्टो अ॒ग्निः स नो॒ दिवा॒ स रि॒षः पा॑तु॒ नक्त॑म्॥ २॥
वैश्वा॑नर॒ तव॒ तत्स॒त्यम॑स्त्व॒स्मान् रायो॑ म॒घवा॑नः सचन्ताम्।
तन्नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो मामहन्ता॒मदि॑ति॒ः सिन्धुः॑ पृथि॒वी उ॒त द्यौः॥ ३॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपो मरीचिपुत्रः॥ देवता—अग्निर्जातवेदाः॥ छन्दः—निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

जा॒तवे॑दसे सुनवाम॒ सोम॑मरातीय॒तो नि द॑हाति॒ वेद॑ः।
स न॑ः पर्ष॒दति॑ दु॒र्गाणि॒ विश्वा॑ ना॒वेव॒ सिन्धुं॑ दु॒रि॒तात्य॒ग्निः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—वृषागिरो महाराज़स्य पुत्रभूता वार्षागिरा ऋज्राश्वाम्बरीषसहदेव भयमानसुराधसः॥
देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५ पङ्क्तिः; २, १३, १७ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४, ११, १८ विराट्त्रिष्टुप्; ६, १०, १६ भुरिक्पङ्क्तिः; ७, ८, ९, १२, १४, १५, १९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ५, ६, १०, १३, १६, १७ पञ्चमः; ३, ४, ७-९, ११, १२, १४, १५, १८, १९ धैवतः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

स यो वृषा वृष्ण्येभिः समोका महो दिवः पृथिव्याश्च सम्राट्।
सतीनसत्वा हव्यो भरेषु मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १॥
यस्यानासः सूर्यस्येव यामो भरेभरे वृत्रहा शुष्मो अस्ति।
वर्षन्तमः सखिभिः स्वेभिरेवैर्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ २॥
दिवो न यस्य रेतसो दुघानाः पन्थासो यन्ति शवसापरीताः।
तरद् द्वेषाः सासहिः पौंस्येभिर्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ३॥
सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो भूद् वृषा वृषभिः सखिभिः सखा सन्।
ऋग्मिभिर्ऋग्मी गातुभिर्ज्येष्ठो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ४॥
स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋभ्वा नृषाह्यो सासह्वाँ अमित्रान् ।
सनीळेभिः श्रवस्यानि तूर्वन्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ ५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

स मन्युमीः समदनस्य कर्तास्माकेभिर्नृभिः सूर्यं सनत् ।
अस्मिन्नहन्त्सत्पतिः पुरुहूतो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ६॥
तमूतयो रणयञ्छूरसातौ तं क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम्।
स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ७॥
तमप्सन्त शवस उत्सवेषु नरो नरमवसे तं धनाय ।
सो अन्धे चित्तमसि ज्योतिर्विदन्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ८॥
स सव्येन यमति व्राधतश्चित्स दक्षिणे संगृभीता कृतानि।
स कीरिणा चित्सनिता धनानि मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती॥ ९॥
स ग्रामेभिः सनिता स रथेभिर्विदे विश्वाभिः कृष्टिभिर्न्वद्य।
स पौंस्येभिरभिभूरशस्तीर्मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

स जामिभिर्यत्समजाति मीळ्हेऽजामिभिर्वा पुरुहूत एवैः ।
अपां तोकस्य तनयस्य जेषे मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ ११ ॥
स वज्रभृद्दस्युहा भीम उग्रः सहस्रचेताः शतनीथ ऋभ्वा ।
चम्रीषो न शवसा पाञ्चजन्यो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १२ ॥
तस्य वज्रः क्रन्दति स्मत्स्वर्षा दिवो न त्वेषो रवथः शिमीवान् ।
तं सचन्ते सनयस्तं धनानि मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १३ ॥
यस्याजस्रं शवसा मानमुक्थं परिभुजद्रोदसी विश्वतः सीम् ।
स पारिषत्क्रतुभिर्मन्दसानो मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १४ ॥
न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्चन शवसो अन्तमापुः ।
स प्ररिक्वा त्वक्षसा क्ष्मो दिवश्च मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती ॥ १५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

रोहिच्छ्यावा सुमदंशुर्ललामीर्धुक्षा राय ऋज्राश्वस्य ।
वृषण्वन्तं बिभ्रती धूर्षु रथं मन्द्रा चिकेत नाहुषीषु विक्षु ॥ १६ ॥
एतत्त्यत्त इन्द्र वृष्ण उक्थं वार्षागिरा अभि गृणन्ति राधः ।
ऋज्राश्वः प्रष्टिभिरम्बरीषः सहदेवो भयमानः सुराधाः ॥ १७ ॥
दस्यूञ्छिम्यूँश्च पुरुहूत एवैर्हत्वा पृथिव्यां शर्वा नि बर्हीत् ।
सनत्क्षेत्रं सखिभिः श्वित्न्येभिः सनत्सूर्यं सनदपः सुवज्रः ॥ १८ ॥
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिह्वृताः सनुयाम वाजम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ १९ ॥

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४ निचृज्जगती; २, ५, ७ विराड्जगती; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्त्रिष्टुप्; ८, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ९, ११ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ७ निषादः; ३, ६, ८-११ धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना ।
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो व्यंसं जाह्नषाणेन मन्युना यः शम्बरं यो अहन्पिप्रुमव्रतम्।
इन्द्रो यः शुष्णमशुषं न्यावृणङ्मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ २॥
यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यं महद्यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः।
यस्येन्द्रस्य सिन्धवः सश्चति व्रतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ३॥
यो अश्वानां यो गवां गोपतिर्वशी य आरितः कर्मणिकर्मणि स्थिरः।
वीळोश्चिदिन्द्रो यो असुन्वतो वधो मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ४॥
यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्पतिर्यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत्।
इन्द्रो यो दस्यूँरधराँ अवातिरन् मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ५॥
यः शूरैर्भिर्हव्यो यश्च भीरुभिर्यो धावद्भिर्हूयते यश्च जिग्युभिः।
इन्द्रं यं विश्वा भुवनाभि संदधुर्मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ६॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

रुद्राणामेति प्रदिशा विचक्षणो रुद्रेभिर्योषा तनुते पृथु ज्रयः।
इन्द्रे मनीषा अभ्यर्चति श्रुतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे॥ ७॥
यद् वा मरुत्वः परमे सधस्थे यद्वावमे वृजने मादयासे।
अत आ याह्यध्वरं नो अच्छा त्वाया हविश्चकृमा सत्यराधः॥ ८॥
त्वायेन्द्र सोमं सुषुमा सुदक्ष त्वाया हविश्चकृमा ब्रह्मवाहः।
अधा नियुत्वः सगणो मरुद्भिरस्मिन् यज्ञे बर्हिषि मादयस्व॥ ९॥
मादयस्व हरिभिर्ये त इन्द्र वि ष्यस्व शिप्रे वि सृजस्व धेने।
आ त्वा सुशिप्र हरयो वहन्तूशन् हव्यानि प्रति नो जुषस्व॥ १०॥
मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य गोपा वयमिन्द्रेण सनुयाम वाजम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ११॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ जगती; २, ४, ९ स्वराट्त्रिष्टुप्; ३, ५-८ निचृज्जगती; १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५-८ निषादः; २, ४, ९-११ धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

इमां ते धियं प्र भरे महो महीमस्य स्तोत्रे धिषणा यत्त आनजे।
तमुत्सवे च प्रसवे च सासहिमिन्द्रं देवासः शवसामदन्ननु॥ १॥
अस्य श्रवो नद्यः सप्त बिभ्रति द्यावाक्षामा पृथिवी दर्शतं वपुः।
अस्मे सूर्याचन्द्रमसाभिचक्षे श्रद्धे कमिन्द्र चरतो वितर्तुरम्॥ २॥
तं स्मा रथं मघवन् प्राव सातये जैत्रं यं ते अनुमदाम संगमे।
आजा न इन्द्र मनसा पुरुष्टुत त्वायद्भ्यो मघवञ्छर्म यच्छ नः॥ ३॥
वयं जयेम त्वया युजा वृतमस्माकमंशमुदवा भरेभरे।
अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन् वृष्ण्या रुज॥ ४॥
नाना हि त्वा हवमाना जना इमे धनानां धर्तरवसां विपन्यवः।
अस्माकं स्मा रथमा तिष्ठ सातये जैत्रं हीन्द्र निभृतं मनस्तव॥ ५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

गोजिता बाहू अमितक्रतुः सिमः कर्मन्कर्मञ्छतमूतिः खजंकरः।
अकल्प इन्द्रः प्रतिमानमोजसाथा जना वि ह्वयन्ते सिषासवः॥ ६॥
उत्ते शतान्मघवन्नुच्च भूयस उत्सहस्राद्रिरिचे कृष्टिषु श्रवः।
अमात्रं त्वा धिषणा तित्विषे महाधा वृत्राणि जिघ्नसे पुरन्दर॥ ७॥
त्रिविष्टिधातु प्रतिमानमोजसस्तिस्रो भूमीर्नृपते त्रीणि रोचना।
अतीदं विश्वं भुवनं ववक्षिथाशत्रुरिन्द्र जनुषा सनादसि॥ ८॥
त्वां देवेषु प्रथमं हवामहे त्वं बभूथ पृतनासु सासहिः।
सेमं नः कारुमुपमन्युमुद्भिदमिन्द्रः कृणोतु प्रसवे रथं पुरः॥ ९॥
त्वं जिगेथ न धना रुरोधिथाभीष्वाजा मघवन्महत्सु च।
त्वामुग्रमवसे सं शिशीमस्यथा न इन्द्र हवनेषु चोदय॥ १०॥
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिह्वृताः सनुयाम वाजम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ११॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

तत्त इन्द्रियं परमं पराचैरधारयन्त कवयः पुरेदम् ।
क्षमेदमन्यद्दिव्यन्यदस्य समी पृच्यते समनेव केतुः ॥ १ ॥
स धारयत्पृथिवीं पप्रथच्च वज्रेण हत्वा निरपः ससर्ज ।
अहन्नहिमभिनद्रौहिणं व्यहन्व्यंसं मघवा शचीभिः ॥ २ ॥
स जातूभर्मा श्रद्दधान ओजः पुरो विभिन्दन्नचरद्वि दासीः ।
विद्वान्वज्रिन्दस्यवे हेतिमस्यार्यं सहो वर्धया द्युम्नमिन्द्र ॥ ३ ॥
तदूचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्यं मघवा नाम बिभ्रत् ।
उपप्रयन्दस्युहत्याय वज्री यद्धं सूनुः श्रवसे नाम दधे ॥ ४ ॥
तदस्येदं पश्यता भूरि पुष्टं श्रदिन्द्रस्य धत्तन वीर्याय ।
स गा अविन्दत्सो अविन्ददश्वान्त्स ओषधीः सो अपः स वनानि ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

भूरिकर्मणे वृषभाय वृष्णे सत्यशुष्माय सुनवाम सोमम् ।
य आदृत्या परिपन्थीव शूरोऽयज्वनो विभजन्नेति वेदः ॥ ६ ॥
तदिन्द्र प्रेव वीर्यं चकर्थ यत्ससन्तं वज्रेणाबोधयोऽहिम् ।
अनु त्वा पत्नीर्हर्षितं वयश्च विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा ॥ ७ ॥
शुष्णं पिप्रुं कुयवं वृत्रमिन्द्र यदावधीर्वि पुरः शम्बरस्य ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ८ ॥

[१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ४, ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ७ त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४-६ पञ्चमः; ३, ७-९ धैवतः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

योनिष्ट इन्द्र निषदे अकारि तमा नि षीद स्वानो नार्वा ।
विमुच्या वयोऽवसायाश्वान्दोषा वस्तोर्वहीयसः प्रपित्वे ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ त्ये नर इन्द्रमूतये गुर्नू चित्तान्त्सद्यो अध्वनो जगम्यात्।
देवासो मन्युं दासस्य शचम्नन्ते न आ वक्षन्त्सुविताय वर्णम्॥ २॥
अव त्मना भरते केतवेदा अव त्मना भरते फेनमुदन्।
क्षीरेण स्नातः कुयवस्य योषे हते ते स्यातां प्रवणे शिफायाः॥ ३॥
युयोप नाभिरुपरस्यायोः प्र पूर्वीभिस्तिरते राष्टिः शूरः।
अञ्जसी कुलिशी वीरपत्नी पयो हिन्वाना उदभिर्भरन्ते॥ ४॥
प्रति यत्स्या नीथादर्शि दस्योरोको नाच्छा सदनं जानती गात्।
अधा स्मा नो मघवञ्चर्कृतादिन्मा नो मघेव निष्पपी परा दाः॥ ५॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

स त्वं न इन्द्र सूर्ये सो अप्स्वनागास्त्व आ भज जीवशंसे।
मान्तरां भुजमा रीरिषो नः श्रद्धितं ते महत इन्द्रियाय॥ ६॥
अधा मन्ये श्रत्ते अस्मा अधायि वृषा चोदस्व महते धनाय।
मा नो अकृते पुरुहूत योनाविन्द्र क्षुध्यद्भ्यो वय आसुतिं दाः॥ ७॥
मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा नः प्रिया भोजनानि प्र मोषीः।
आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भेन्मा नः पात्रा भेत्सहजानुषाणि॥ ८॥
अर्वाङेहि सोमकामं त्वाहुरयं सुतस्तस्य पिबा मदाय।
उरुव्यचा जठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि हूयमानः॥ ९॥

[१०५] पञ्चोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—आप्त्यस्त्रित आङ्गिरसः कुत्सो व॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २, १२, १६, १७ निचृत्पङ्क्तिः; ३; ४, ६, ९, १५, १८ विराट्पङ्क्तिः; ८, १० स्वराट्पङ्क्तिः; ११, १४ पङ्क्तिः; ५ निचृद्बृहती; ७ भुरिग्बृहती; १३ महाबृहती; १९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४, ६, ८-१२, १४-१८ पञ्चमः; ५, ७, १३ मध्यमः; १९ धैवतः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

चन्द्रमा अप्स्वा१न्तरा सुपर्णो धावते दिवि।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थमिद्वा उ अर्थिन आ जाया युवते पतिम् ।
तुञ्जाते वृष्ण्यं पयः परिदाय रसं दुहे वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ २ ॥
मो षु देवा अदः स्व१रव पादि दिवस्परि ।
मा सोम्यस्य शंभुवः शूने भूम कदा चन वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ३ ॥
यज्ञं पृच्छाम्यवमं स तद् दूतो वि वोचति ।
क्व ऋतं पूर्व्यं गतं कस्तद्बिभर्ति नूतनो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ४ ॥
अमी ये देवाः स्थन त्रिष्वा रोचने दिवः ।
कद्ध ऋतं कदनृतं क्व प्रत्ना व आहुतिर्वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

कद्ध ऋतस्य धर्णसि कद्वरुणस्य चक्षणम् ।
कदर्यम्णो महस्पथाति क्रामेम दूढ्यो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ६ ॥
अहं सो अस्मि यः पुरा सुते वदामि कानि चित् ।
तं मा व्यन्त्याध्योऽ३ वृको न तृष्णजं मृगं वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ७ ॥
सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः । मूषो न शिश्ना
व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ८ ॥
अमी ये सप्त रश्मयस्तत्रा मे नाभिरातता ।
त्रितस्तद्वेदाप्त्यः स जामित्वाय रेभति वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ९ ॥
अमी ये पञ्चोक्षणो मध्ये तस्थुर्महो दिवः ।
देवत्रा नु प्रवाच्यं सध्रीचीना नि वावृतुर्वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सुपर्णा एत आसते मध्य आरोधने दिवः ।
ते सेधन्ति पथो वृकं तरन्तं यह्वतीरपो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ११ ॥
नव्यं तदुक्थ्यं हितं देवासः सुप्रवाचनम् ।
ऋतमर्षन्ति सिन्धवः सत्यं तातान सूर्यो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ १२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्ने॒ तव॒ त्यदुक्थ्यं॑ दे॒वेष्व॒स्त्याप्य॑म् ।
स नः॑ स॒त्तो म॑नु॒ष्वदा दे॒वान्य॑क्षि वि॒दुष्टरो॒ वित्तं॑ मे॒ अ॒स्य रो॑दसी ॥ १३ ॥
स॒त्तो होता॑ मनु॒ष्वदा दे॒वाँ अच्छा॑ वि॒दुष्ट॑रः ।
अ॒ग्निर्ह॒व्या सु॑षूदति दे॒वो दे॒वेषु॒ मेधि॑रो॒ वित्तं॑ मे॒ अ॒स्य रो॑दसी ॥ १४ ॥
ब्रह्मा॑ कृणोति॒ वरु॑णो गातु॒विदं॒ तमी॑महे ।
व्यू॑र्णोति॒ हृदा॒ म॒तिं नव्यो॑ जायतामृ॒तं वि॒त्तं मे॒ अ॒स्य रो॑दसी ॥ १५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अ॒सौ यः पन्था॑ आदि॒त्यो दि॒वि प्र॒वाच्यं॑ कृ॒तः ।
न स दे॑वा अति॒क्रमे॒ तं म॑र्ता॒सो॒ न प॑श्यथ वि॒त्तं मे॒ अ॒स्य रो॑दसी ॥ १६ ॥
त्रि॒तः कूपे॑ऽ॒वहि॑तो दे॒वान्ह॑वत ऊ॒तये॑ ।
तच्छु॑श्राव बृह॒स्पति॑: कृ॒ण्वन्नंहू॑र॒णादु॒रु वि॒त्तं मे॒ अ॒स्य रो॑दसी ॥ १७ ॥
अ॒रु॒णो मा॑ स॒कृद् वृ॒कः प॒था यन्तं॑ द॒दर्श॑ हि ।
उज्जि॑हीते नि॒चाय्या॒ तष्टे॑व पृष्ट्या॒मयी वि॒त्तं मे॒ अ॒स्य रो॑दसी ॥ १८ ॥
एना॑ङ्गू॒षेण॑ व॒यमिन्द्र॑वन्तो॒ऽभि ष्या॑म वृ॒जने॒ सर्व॑वीराः ।
तन्नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो मामहन्ता॒मदि॑ति॒: सिन्धुः॑ पृथि॒वी उ॒त द्यौः ॥ १९ ॥

षोडशोऽनुवाकः [१०६] षडुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१-६ जगती; ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७ धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

इन्द्रं॑ मि॒त्रं वरु॑ण॒मग्नि॑मू॒तये॒ मारु॑तं॒ शर्धो॑ अदि॑तिं हवामहे ।
रथं॒ न दुर्गाद्व॑सवः सु॒दान॑वो॒ विश्व॑स्मान्नो॒ अंह॑सो॒ निष्पि॑पर्तन ॥ १ ॥
त आ॑दित्या॒ आ ग॑ता स॒र्वता॑तये भूत दे॒वा वृ॒त्रतू॒र्येषु॒ शं॑भुवः ।
रथं॒ न दुर्गाद्व॑सवः सु॒दान॑वो॒ विश्व॑स्मान्नो॒ अंह॑सो॒ निष्पि॑पर्तन ॥ २ ॥
अव॑न्तु नः पि॒तर॑: सु॒प्रवा॑च॒ना उ॒त दे॒वी दे॒वपु॑त्रे ऋ॒ता॒वृधा॑ ।
रथं॒ न दुर्गाद्व॑सवः सु॒दान॑वो॒ विश्व॑स्मान्नो॒ अंह॑सो॒ निष्पि॑पर्तन ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ ४ ॥
बृहस्पते सदमिन्नः सुगं कृधि शं योर्यत्ते मनुर्हितं तदीमहे।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ ५ ॥
इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं शचीपतिं काटे निबाळ्ह ऋषिरह्वदूतये।
रथं न दुर्गाद्वसवः सुदानवो विश्वस्मान्नो अंहसो निष्पिपर्तन ॥ ६ ॥
देवैर्नो देव्यदितिर्नि पातु देवस्त्राता त्रायतामप्रयुच्छन्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ७ ॥

[१०७] सप्तोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृळयन्तः ।
आ वोऽवाचीं सुमतिर्ववृत्यादंहोश्चिद्या वरिवोवित्तरासत् ॥ १ ॥
उप नो देवा अवसा गमन्त्वङ्गिरसां साममिः स्तूयमानाः ।
इन्द्र इन्द्रियैर्मरुतो मरुद्भिरादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत् ॥ २ ॥
तन्न इन्द्रस्तद्वरुणस्तदग्निस्तदर्यमा तत्सविता चनो धात् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ३ ॥

[१०८] अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ८, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३, ६, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ पङ्क्तिः; ७, ९, १०, १३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ६-१३ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

य इन्द्राग्नी चित्रतमो रथो वामभि विश्वानि भुवनानि चष्टे।
तेना यातं सरथं तस्थिवांसाथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ॥ १ ॥
यावदिदं भुवनं विश्वमस्त्युरुव्यचा वरिमता गभीरम् ।
तावाँ अयं पातवे सोमो अस्त्वरमिन्द्राग्नी मनसे युवभ्याम् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्राथे हि सध्र्यङ् नाम भद्रं सधीचीना वृत्रहणा उत स्थः।
ताविन्द्राग्नी सध्र्यञ्चा निषद्या वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम्॥ ३॥
समिद्धेष्वग्निष्वानजाना यतस्रुचा बर्हिरु तिस्तिराणा ।
तीव्रैः सोमैः परिषिक्तेभिरर्वागिन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ॥ ४॥
यानीन्द्राग्नी चक्रथुर्वीर्याणि यानि रूपाण्युत वृष्ण्यानि ।
या वां प्रत्नानि सख्या शिवानि तेभिः सोमस्य पिबतं सुतस्य॥ ५॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

यदब्रुवं प्रथमं वां वृणानोऽ३ऽ यं सोमो असुरैर्नो विहव्यः।
तां सत्यां श्रद्धामभ्या हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य॥ ६॥
यदिन्द्राग्नी मदथः स्वे दुरोणे यद् ब्रह्मणि राजनि वा यजत्रा।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य॥ ७॥
यदिन्द्राग्नी यदुषु तुर्वशेषु यद् द्रुह्युष्वनुषु पूरुषु स्थः।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य॥ ८॥
यदिन्द्राग्नी अवमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यां परमस्यामुत स्थः।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य॥ ९॥
यदिन्द्राग्नी परमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यामवमस्यामुत स्थः।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य॥ १०॥
यदिन्द्राग्नी दिवि ष्ठो यत्पृथिव्यां यत्पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य॥ ११॥
यदिन्द्राग्नी उदिता सूर्यस्य मध्ये दिवः स्वधया मादयेथे।
अतः परि वृषणावा हि यातमथा सोमस्य पिबतं सुतस्य॥ १२॥
एवेन्द्राग्नी पपिवांसा सुतस्य विश्वास्मभ्यं सं जयतं धनानि।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ १३॥

[१०९] नवोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

वि ह्यख्यं मनसा वस्य इच्छन्निन्द्राग्नी ज्ञास उत वा सजातान्।
नान्या युवत्प्रमतिरस्ति मह्यं स वां धियं वाजयन्तीमतक्षम् ॥ १ ॥
अश्रवं हि भूरिदावत्तरा वां विजामातुरुत वा घा स्यालात्।
अथा सोमस्य प्रयती युवभ्यामिन्द्राग्नी स्तोमं जनयामि नव्यम् ॥ २ ॥
मा च्छेद्म रश्मीँरिति नाधमानाः पितॄणां शक्तीरनुयच्छमानाः।
इन्द्राग्निभ्यां कं वृषणो मदन्ति ता ह्यद्री धिषणाया उपस्थे ॥ ३ ॥
युवाभ्यां देवी धिषणा मदायेन्द्राग्नी सोममुशती सुनोति।
तावश्विना भद्रहस्ता सुपाणी आ धावतं मधुना पृङ्क्तमप्सु ॥ ४ ॥
युवामिन्द्राग्नी वसुनो विभागे तवस्तमा शुश्रव वृत्रहत्ये।
तावासद्या बर्हिषि यज्ञे अस्मिन्प्र चर्षणी मादयेथां सुतस्य ॥ ५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

प्र चर्षणिभ्यः पृतनाहवेषु प्र पृथिव्या रिरिचाथे दिवश्च।
प्र सिन्धुभ्यः प्र गिरिभ्यो महित्वा प्रेन्द्राग्नी विश्वा भुवनात्यन्या ॥ ६ ॥
आ भरतं शिक्षतं वज्रबाहू अस्माँ इन्द्राग्नी अवतं शचीभिः।
इमे नु ते रश्मयः सूर्यस्य येभिः सपित्वं पितरो न आसन् ॥ ७ ॥
पुरंदरा शिक्षतं वज्रहस्तास्माँ इन्द्राग्नी अवतं भरेषु।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ८ ॥

[११०] दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१, ४ जगती; २, ३, ७ विराड्जगती; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, ८ निचृज्जगती; ९ त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-४, ६-८ निषादः; ५, ९ धैवतः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

ततं मे अपस्तदु तायते पुनः स्वादिष्ठा धीतिरुचथाय शस्यते।
अयं समुद्र इह विश्वदेव्यः स्वाहाकृतस्य समु तृप्णुत ऋभवः ॥ १ ॥
आभोगयं प्र यदिच्छन्त ऐतनापाकाः प्राञ्चो मम केचिदापयः।
सौधन्वनासश्चरितस्य भूमनागच्छत सवितुर्दाशुषो गृहम् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्स॑वि॒ता वो॑ऽ मृत॒त्वमासु॑व॒दगो॑ह्यं॒ यच्छ्र॒वय॑न्त॒ ऐत॑न ।
त्यं चि॑च्चम॒समसु॑रस्य॒ भक्ष॑ण॒मेकं॒ सन्त॑मकृणुता॒ चतु॑र्वयम् ॥ ३ ॥
वि॒ष्ट्वी शमी॑ तरणि॒त्वेन॑ वा॒घतो॒ मर्ता॑सः॒ सन्तो॑ अमृत॒त्वमा॑नशुः ।
सौ॒ध॒न्व॒ना ऋ॒भवः॒ सूर॑चक्षसः संवत्स॒रे सम॑पृच्यन्त धी॒तिभिः॑ ॥ ४ ॥
क्षेत्र॑मिव॒ वि म॑मु॒स्तेज॑नेनँ॒ एकं॒ पात्र॑मृ॒भवो॒ जेह॑मानम् ।
उप॑स्तुता उप॒मं नाध॑माना॒ अम॑र्त्येषु॒ श्रव॑ इ॒च्छमा॑नाः ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

आ म॑नी॒षाम॒न्तरि॑क्षस्य॒ नृभ्यः॑ स्रु॒चेव॑ घृ॒तं जु॑हवाम वि॒द्मना॑ ।
त॒र॒णि॒त्वा ये पि॒तुर॑स्य सश्चि॒र ऋ॒भवो॒ वाज॑मरुहन्दि॒वो रजः॑ ॥ ६ ॥
ऋ॒भुर्न॒ इन्द्रः॒ शव॑सा॒ नवी॑यानृ॒भुर्वाजे॑भि॒र्वसु॑भि॒र्वसु॑र्द॒दिः ।
यु॒ष्माकं॑ देवा॒ अव॒साह॑नि प्रि॒ये॒३॒॑ऽ भि ति॑ष्ठेम पृत्सु॒तीरसु॑न्वताम् ॥ ७ ॥
निश्चर्म॑ण ऋभवो॒ गाम॑पिंशत॒ सं व॒त्सेना॑सृजता मा॒तरं॒ पुनः॑ ।
सौध॑न्वनासः स्वप॒स्यया॑ नरो॒ जिव्री॒ युवा॑ना पि॒तरा॑कृणोतन ॥ ८ ॥
वाजे॑भिर्नो॒ वाज॑सातावविड्ढ्यृभु॒माँ इ॑न्द्र चि॒त्रमा द॑र्षि॒ राधः॑ ।
तन्नो॑ मि॒त्रो वरु॑णो मामहन्ता॒मदि॑तिः॒ सिन्धुः॑ पृथि॒वी उ॒त द्यौः ॥ ९ ॥

[१११] एकादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१-४ जगती; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५ धैवतः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

तक्ष॒न्रथं॑ सु॒वृतं॑ विद्म॒नाप॑स॒स्तक्ष॒न्हरी॑ इन्द्र॒वाहा॒ वृष॑ण्वसू ।
तक्ष॑न्पि॒तृभ्या॑मृ॒भवो॒ युव॒द्वय॒स्तक्ष॑न्व॒त्साय॑ मा॒तरं॑ सचा॒भुव॑म् ॥ १ ॥
आ नो॑ य॒ज्ञाय॑ तक्षत ऋभु॒मद्वयः॒ क्रत्वे॒ दक्षा॑य सुप्र॒जाव॑ती॒मिष॑म् ।
यथा॒ क्षया॑म॒ सर्व॑वीरया वि॒शा तन्नः॒ शर्धा॑य धासथा॒ स्वि॑न्द्रि॒यम् ॥ २ ॥
आ त॑क्षत सा॒तिम॒स्मभ्य॑मृभवः सा॒तिं रथा॑य सा॒तिमर्व॑ते नरः ।
सा॒तिं नो॒ जैत्रीं॒ सं म॑हेत वि॒श्वहा॑ जा॒मिमजा॑मिं॒ पृत॑नासु स॒क्षणि॑म् ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋभुक्षणमिन्द्रमा हुव ऊतय ऋभून्वाजान्मरुतः सोमपीतये।
उभा मित्रावरुणा नूनमश्विना ते नो हिन्वन्तु सातये धिये जिषे ॥ ४ ॥
ऋभुर्भराय सं शिशातु सातिं समर्यजिद्वाजो अस्माँ अविष्टु।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥

[११२] द्वादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—आदिमे मन्त्रे प्रथमपादस्य द्यावापृथिव्यौ, द्वितीयस्य अग्निः, शिष्टस्य सूक्तस्याश्विनौ ॥ छन्दः—१, २, ६, ७, १३, १५, १७, १८, २०-२२ निचृत् जगती; ३, ५, २४ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ८, ९, ११, १२, १४, १६, २३ जगती; १० भुरिक्त्रिष्टुप्; १९ विराड्जगती; २५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ६-९, ११-२३ निषादः; ३, ५, १०, २४, २५ धैवतः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

ईळे द्यावापृथिवी पूर्वचित्तयेऽग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये।
याभिर्भरे कारमंशाय जिन्वथस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ १ ॥
युवोर्दानाय सुभरा असश्चतो रथमा तस्थुर्वचसं न मन्तवे।
याभिर्धियोऽवथः कर्मन्निष्टये ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ २ ॥
युवं तासां दिव्यस्य प्रशासने विशां क्षयथो अमृतस्य मज्मना।
याभिर्धेनुमस्वं१ पिन्वथो नरा ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ३ ॥
याभिः परिज्मा तनयस्य मज्मना द्विमाता तूर्षु तरणिर्विभूषति।
याभिस्त्रिमन्तुरभवद्विचक्षणस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ४ ॥
याभी रेभं निवृतं सितमद्भ्य उद्वन्दनमैरयतं स्वर्दृशे।
याभिः कण्वं प्र सिषासन्तमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ५ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

याभिरन्तकं जसमानमारणे भुज्युं याभिरव्यथिभिर्जिजिन्वथुः।
याभिः कर्कन्धुं वय्यं च जिन्वथस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ६ ॥
याभिः शुचन्तिं धनसां सुषंसदं तप्तं घर्ममोम्यावन्तमत्रये।
याभिः पृश्निगुं पुरुकुत्समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याभिः शचीभिर्वृषणा परावृजं प्रान्धं श्रोणं चक्षस एतवे कृथः।
याभिर्वर्तिकां ग्रसिताममुञ्चतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ ८॥
याभिः सिन्धुं मधुमन्तमसश्चतं वसिष्ठं याभिरजरावजिन्वतम्।
याभिः कुत्सं श्रुतर्यं नर्यमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ ९॥
याभिर्विश्पलां धनसामथर्व्यं सहस्रमीळ्ह आजावजिन्वतम्।
याभिर्वशमश्व्यं प्रेणिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १०॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

याभिः सुदानू औशिजाय वणिजे दीर्घश्रवसे मधु कोशो अक्षरत्।
कक्षीवन्तं स्तोतारं याभिरावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ ११॥
याभी रसां क्षोदसोदनः पिप्युन्वथुरनश्वं याभी रथमावतं जिषे।
याभिस्त्रिशोकं उस्त्रिया उदाजत ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १२॥
याभिः सूर्यं परियाथः परावति मन्धातारं क्षैत्रपत्येष्वावतम्।
याभिर्विप्रं प्र भरद्वाजमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १३॥
याभिर्महामतिथिग्वं कशोजुवं दिवोदासं शम्बरहत्य आवतम्।
याभिः पूर्भिद्यो त्रसदस्युमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १४॥
याभिर्वम्रं विपिपानमुपस्तुतं कलिं याभिर्वित्तजानिं दुवस्यथः।
याभिर्व्यश्वमुत पृथिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १५॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः॥ ३६॥

याभिर्नरा शयवे याभिरत्रये याभिः पुरा मनवे गातुमीषथुः।
याभिः शारीराजतं स्यूमरश्मये ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १६॥
याभिः पठर्वा जठरस्य मज्मनाग्निर्नादीदेच्चित इद्धो अज्मन्ना।
याभिः शर्यातमवथो महाधने ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १७॥
याभिरङ्गिरो मनसा निरण्यथोऽ ग्रं गच्छथो विवरे गोअर्णसः।
याभिर्मनुं शूरमिषा समावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १८॥
याभिः पत्नीर्विमदाय न्यूहथुरा घ वा याभिररुणीरशिक्षतम्।
याभिः सुदास ऊहथुः सुदेव्यं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ १९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याभिः शन्ताती भवथो ददाशुषे भुज्युं याभिरवथो याभिरध्रिगुम्।
ओम्यावतीं सुभरामृतस्तुभं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ २०॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः॥ ३७॥

याभिः कृशानुमसने दुवस्यथो जवे याभिर्यूनो अर्वन्तमावतम्।
मधु प्रियं भरथो यत्सरड्भ्यस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ २१॥
याभिर्नरं गोषुयुधं नृषाह्ये क्षेत्रस्य साता तनयस्य जिन्वथः।
याभी रथाँ अवथो याभिरर्वतस्ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ २२॥
याभिः कुत्समार्जुनेयं शतक्रतू प्र तुर्वीतिं प्र च द्रुह्यतिमावतम्।
याभिर्ध्वसन्तिं पुरुषन्तिमावतं ताभिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम्॥ २३॥
अप्नस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतं नो दस्रा वृषणा मनीषाम्।
अद्यूत्येऽवसे नि ह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ॥ २४॥
द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ २५॥

इति प्रथमाष्टके सप्तमोऽध्यायः॥

अथाष्टमोऽध्यायः

[११३] त्रयोदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—उषाः, द्वितीयस्यार्द्धर्चस्य रात्रिरपि॥ छन्दः—१, ३, ९, १२, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ४, ८, १०, ११, १५, १६ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ त्रिष्टुप्; ७, १८-२० विराट्त्रिष्टुप्; १३, १४ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ६, ७, ९, १२, १७-२० धैवतः; २, ४, ५, ८, १०, ११, १३-१६ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा।
यथा प्रसूता सवितुः सवायँ एवा रात्र्युषसे योनिमारैक्॥ १॥
रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागादारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः।
समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं चरत आमिनाने॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समानो अध्वा स्वस्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे।
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे॥ ३॥
भास्वती नेत्री सूनृतानामचेति चित्रा वि दुरो न आवः।
प्रार्प्या जगद्व्युं नो रायो अख्यदुषा अजीगर्भुवनानि विश्वा॥ ४॥
जिह्मश्येऽ चरितवे मघोन्याभोगय इष्टये राय उ त्वम्।
दभ्रं पश्यद्भ्य उर्विया विचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीया इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै।
विसदृशा जीवितामिप्रचक्ष उषा अजीगर्भुवनानि विश्वा॥ ६॥
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि व्युच्छन्ती युवतिः शुक्रवासाः।
विश्वस्येशाना पार्थिवस्य वस्व उषो अद्येह सुभगे व्युच्छ॥ ७॥
परायतीनामन्वेति पाथ आयतीनां प्रथमा शश्वतीनाम्।
व्युच्छन्ती जीवमुदीरयन्त्युषा मृतं कं चन बोधयन्ती॥ ८॥
उषो यद्ग्निं समिधे चकर्थ वि यदावश्चक्षसा सूर्यस्य।
यन्मानुषान्यक्ष्यमाणाँ अजीगस्तद्देवेषु चकृषे भद्रमप्नः॥ ९॥
कियात्या यत्समया भवाति या व्यूषुर्याश्च नूनं व्युच्छान्।
अनु पूर्वाः कृपते वावशाना प्रदीध्याना जोषमन्याभिरेति॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन्व्युच्छन्तीमुषसं मर्त्यासः।
अस्माभिरू नु प्रतिचक्ष्याभूदो ते यन्ति ये अपरीषु पश्यान्॥ ११॥
यावयद् द्वेषा ऋतपा ऋतेजाः सुम्नावरी सूनृता ईरयन्ती।
सुमङ्गलीर्बिभ्रती देववीतिमिहाद्योषः श्रेष्ठतमा व्युच्छ॥ १२॥
शश्वत्पुरोषा व्युवास देव्यथो अद्येदं व्यावो मघोनी।
अथो व्युच्छादुत्तराँ अनु द्यूनजरामृता चरति स्वधाभिः॥ १३॥
व्य१ञ्जिभिर्दिव आतासु द्यौदप कृष्णां निर्णिजं देव्यावः।
प्रबोधयन्त्यरुणेभिरश्वैरोषा याति सुयुजा रथेन॥ १४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवहन्ती पोष्या वार्याणि चित्रं केतुं कृणुते चेकिताना।
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनां विभातीनां प्रथमोषा व्यश्वैत् ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगादप प्रागात्तम आ ज्योतिरेति।
आरैक्पन्थां यातवे सूर्यायागन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ॥ १६ ॥
स्यूमना वाच उदियर्ति वह्निः स्तवानो रेभ उषसो विभातीः।
अद्या तदुच्छ गृणते मघोन्यस्मे आयुर्नि दिदीहि प्रजावत् ॥ १७ ॥
या गोमतीरुषसः सर्ववीरा व्युच्छन्ति दाशुषे मर्त्याय।
वायोरिव सूनृतानामुदर्के ता अश्वदा अश्नवत्सोमसुत्वा ॥ १८ ॥
माता देवानामदितेरनीकं यज्ञस्य केतुर्बृहती वि भाहि।
प्रशस्तिकृद् ब्रह्मणे नो व्युच्छा नो जने जनय विश्ववारे ॥ १९ ॥
यच्चित्रमप्न उषसो वहन्तीजानाय शशमानाय भद्रम्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ २० ॥

[११४] चतुर्दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—रुद्रः ॥ छन्दः—१ जगती; २, ७ निचृज्जगती; ३, ६, ८, ९ विराड्जगती; ४, ५, ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; १० निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ६-९ निषादः; ४, ५, १०, ११ धैवतः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम् ॥ १ ॥
मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते।
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु ॥ २ ॥
अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः।
सुम्नायन्निद्विशो अस्माकमा चरारिष्टवीरा जुहवाम ते हविः ॥ ३ ॥
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं वङ्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे।
आरे अस्मद्दैव्यं हेळो अस्यतु सुमतिमिद्वयमस्या वृणीमहे ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं त्वेषं रूपं नमसा नि ह्वयामहे।
हस्ते बिभ्रद्भेषजा वार्याणि शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यंसत्॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम्।
रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृळ॥ ६॥
मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥ ७॥
मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥ ८॥
उप ते स्तोमान्पशुपाइवाकरं रास्वा पितर्मरुतां सुम्नमस्मे।
भद्रा हि ते सुमतिर्मृळयत्तमाथा वयमव इत्ते वृणीमहे॥ ९॥
आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं क्षयद्वीर सुम्नमस्मे ते अस्तु।
मृळा च नो अधि च ब्रूहि देवाधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हीः॥ १०॥
अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृणोतु नो हवं रुद्रो मरुत्वान्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ११॥

[११५] पञ्चदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—१, २, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥ १॥
सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्।
यत्रा नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रति भद्राय भद्रम्॥ २॥
भद्रा अश्वा हरितः सूर्यस्य चित्रा एतग्वा अनुमाद्यासः।
नमस्यन्तो दिव आ पृष्ठमस्थुः परि द्यावापृथिवी यन्ति सद्यः॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्वितंतं सं जभार।
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥ ४ ॥
तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे।
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति ॥ ५ ॥
अद्या देवा उदिता सूर्यस्य निरंहसः पिपृता निरवद्यात्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥ ६ ॥

सप्तदशोऽनुवाकः [११६] षोडशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान्॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, १०, २२, २३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ८, ९, १२-१५, १८, २०, २४, २५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३-५ ७, २१ त्रिष्टुप्; ६, १६, १९, भुरिक्पङ्क्तिः; ११ पङ्क्तिः; १७ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७-१०, १२-१५, १८, २०-२५ धैवतः; ६, ११, १६, १७, १९ पञ्चमः॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८ ॥

नासत्याभ्यां बर्हिरिव प्र वृञ्जे स्तोमाँ इयर्म्यभ्रियेव वातः।
यावर्भगाय विमदाय जायां सेनाजुवा न्यूहतू रथेन ॥ १ ॥
वीळुपत्मभिराशुहेमभिर्वा देवानां वा जूतिभिः शाशदाना।
तद्रासभो नासत्या सहस्त्रमाजा यमस्य प्रधने जिगाय ॥ २ ॥
तुग्रो ह भुज्युमश्विनोदमेघे रयिं न कश्चिन्ममृवाँ अवाहाः।
तमूहथुर्नौभिरात्मन्वतीभिरन्तरिक्षप्रुद्भिरपोदकाभिः ॥ ३ ॥
तिस्रः क्षपस्त्रिरहातिव्रजद्भिर्नासत्या भुज्युमूहथुः पतङ्गैः।
समुद्रस्य धन्वन्नार्द्रस्य पारे त्रिभी रथैः शतपद्भिः षळश्वैः ॥ ४ ॥
अनारम्भणे तदवीरयेथामनास्थाने अग्रभणे समुद्रे।
यदश्विना ऊहथुर्भुज्युमस्तं शतारित्रां नावमातस्थिवांसम् ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९ ॥

यमश्विना ददथुः श्वेतमश्वमघाश्वाय शश्वदित्स्वस्ति।
तद्वां दात्रं महि कीर्तेन्यं भूत्पैद्वो वाजी सदमिद्धव्यो अर्यः ॥ ६ ॥
युवं नरा स्तुवते पज्रियाय कक्षीवते अरदतं पुरन्धिम्।
कारोतराच्छफादश्वस्य वृष्णः शतं कुम्भाँ असिञ्चतं सुरायाः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिमेनाग्निं घ्रंसमंवारयेथां पितुमतीमूर्जमस्मा अधत्तम् ।
ऋबीसे अत्रिमश्विनावनीतमुन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति ॥ ८ ॥
परावतं नासत्यानुदेथामुच्चाबुध्नं चक्रथुर्जिह्मबारम् ।
क्षरन्नापो न पायनाय राये सहस्राय तृष्यते गोतमस्य ॥ ९ ॥
जुजुरुषो नासत्योत वव्रिं प्रामुञ्चतं द्रापिमिव च्यवानात् ।
प्रातिरतं जहितस्यायुर्दस्रादित्पतिमकृणुतं कनीनाम् ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

तद्वां नरा शंस्यं राध्यं चाभिष्टिमन्नासत्या वरूथम् ।
यद्विद्वांसा निधिमिवापगूळ्हमुद्दर्शतादूपथुर्वन्दनाय ॥ ११ ॥
तद्वां नरा सनये दंस उग्रमाविष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम् ।
दध्यङ्ह यन्मध्वाथर्वणो वामश्वस्य शीर्ष्णा प्र यदीमुवाच ॥ १२ ॥
अजोहवीन्नासत्या करा वां महे यामन्पुरुभुजा पुरन्धिः ।
श्रुतं तच्छासुरिव वध्रिमत्या हिरण्यहस्तमश्विनावदत्तम् ॥ १३ ॥
आस्नो वृकस्य वर्तिकामभीके युवं नरा नासत्यामुमुक्तम् ।
उतो कविं पुरुभुजा युवं ह कृपमाणमकृणुतं विचक्षे ॥ १४ ॥
चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि पर्णमाजा खेलस्य परितक्म्यायाम् ।
सद्यो जङ्घामायसीं विश्पलायै धने हिते सर्तवे प्रत्यधत्तम् ॥ १५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

शतं मेषान्वृक्ये चक्षदानमृज्राश्वं तं पितान्धं चकार ।
तस्मा अक्षी नासत्या विचक्ष आधत्तं दस्रा भिषजावनर्वन् ॥ १६ ॥
आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य कार्ष्मेवातिष्ठदर्वता जयन्ती ।
विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या सचेथे ॥ १७ ॥
यदयातं दिवोदासाय वर्तिर्भरद्वाजायाश्विना हयन्ता ।
रेवदुवाह सचनो रथो वां वृषभश्च शिंशुमारश्च युक्ता ॥ १८ ॥
रयिं सुक्षत्रं स्वपत्यमायुः सुवीर्यं नासत्या वहन्ता ।
आ जह्नावीं समनसोप वाजैस्त्रिरह्नो भागं दधतीमयातम् ॥ १९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिविष्टं जाहुषं विश्वतः सीं सुगेभिर्नक्तमूहथू रजोभिः ।
विभिन्दुना नासत्या रथेन वि पर्वताँ अजरयू अयातम् ॥ २० ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

एकस्या वस्तोरावतं रणाय वशमश्विना सनये सहस्रा ।
निरहतं दुच्छुना इन्द्रवन्ता पृथुश्रवसो वृषणावरातीः ॥ २१ ॥
शरस्य चिदार्चत्कस्यावतादा नीचादुच्चा चक्रथुः पातवे वाः ।
शयवे चिन्नासत्या शचीभिर्जसुरये स्तर्यं पिप्यथुर्गाम् ॥ २२ ॥
अवस्यते स्तुवते कृष्णियाय ऋजूयते नासत्या शचीभिः ।
पशुं न नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय ॥ २३ ॥
दश रात्रीरशिवेना नव द्यूनवनद्धं श्नथितमप्स्वन्तः ।
विप्रुतं रेभमुदनि प्रवृक्तमुन्निन्यथुः सोममिव स्रुवेण ॥ २४ ॥
प्र वां दंसांस्यश्विनावोचमस्य पतिः स्यां सुगवः सुवीरः ।
उत पश्येन्नश्नुवन्दीर्घमायुरस्तमिवेज्जरिमाणं जगम्याम् ॥ २५ ॥

[११७] सप्तदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान् ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २, ४, ७, १२, १६-१९ निचृत् त्रिष्टुप्; ३, ५, २४ त्रिष्टुप्; ६, २२ विराट्पङ्क्तिः; ८-१०, १३-१५, २०, २३ विराट्-त्रिष्टुप्; ११, २१, २५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ६, ११, २१, २२, २५ पञ्चमः; २-५, ७-१०, १२-२०, २३, २४ धैवतः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

मध्वः सोमस्याश्विना मदाय प्रत्नो होता विवासते वाम् ।
बर्हिष्मती रातिर्विश्रिता गीरिषा यातं नासत्योप वाजैः ॥ १ ॥
यो वामश्विना मनसो जवीयान्रथः स्वश्वो विश आजिगाति ।
येन गच्छथः सुकृतो दुरोणं तेन नरा वर्तिरस्मभ्यं यातम् ॥ २ ॥
ऋषिं नरावंहसः पाञ्चजन्यमूबीसादत्रिं मुञ्चथो गणेन ।
मिनन्ता दस्योरशिवस्य माया अनुपूर्वं वृषणा चोदयन्ता ॥ ३ ॥
अश्वं न गूळ्हमश्विना दुरेवैर्ऋषिं नरा वृषणा रेभमप्सु ।
सं तं रिणीथो विप्रुतं दंसोभिर्न वां जूर्यन्ति पूर्व्या कृतानि ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुषुप्वांसं न निर्ऋतेरुपस्थे सूर्यं न दस्रा तमसि क्षियन्तम् ।
शुभे रुक्मं न दर्शतं निखातमुदूपथुरश्विना वन्दनाय ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

तद्वां नरा शंस्यं पज्रियेण कक्षीवता नासत्या परिज्मन् ।
शफादश्वस्य वाजिनो जनाय शतं कुम्भाँ असिञ्चतं मधूनाम् ॥ ६ ॥
युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय विष्णाप्वं ददथुर्विश्वकाय ।
घोषायै चित्पितृषदे दुरोणे पतिं जूर्यन्त्या अश्विनावदत्तम् ॥ ७ ॥
युवं श्यावाय रुशतीमदत्तं महः क्षोणस्याश्विना कण्वाय ।
प्रवाच्यं तद् वृषणा कृतं वां यन्नार्षदाय श्रवो अध्यधत्तम् ॥ ८ ॥
पुरू वर्पांस्यश्विना दधाना नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम् ।
सहस्रसां वाजिनमप्रतीतमहिहनं श्रवस्यं तरुत्रम् ॥ ९ ॥
एतानि वां श्रवस्या सुदानू ब्रह्माङ्गूषं सदनं रोदस्योः ।
यद्वां पज्रासो अश्विना हवन्ते यातमिषा च विदुषे च वाजम् ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

सूनोर्मानेनाश्विना गृणाना वाजं विप्राय भुरणा रदन्ता ।
अगस्त्ये ब्रह्मणा वावृधाना सं विश्पलां नासत्यारिणीतम् ॥ ११ ॥
कुह यान्ता सुष्टुतिं काव्यस्य दिवो नपाता वृषणा शयुत्रा ।
हिरण्यस्येव कलशं निखातमुदूपथुर्दशमे अश्विनाहन् ॥ १२ ॥
युवं च्यवानमश्विना जरन्तं पुनर्युवानं चक्रथुः शचीभिः ।
युवो रथं दुहिता सूर्यस्य सह श्रिया नासत्यावृणीत ॥ १३ ॥
युवं तुग्राय पूर्व्येभिरेवैः पुनर्मन्यावभवतं युवाना ।
युवं भुज्युमर्णसो निः समुद्राद्भिभिरूहथुर्ऋज्रेभिरश्वैः ॥ १४ ॥
अजोहवीदश्विना तौग्र्यो वां प्रोळ्हः समुद्रमव्यथिर्जगन्वान् ।
निष्टमूहथुः सुयुजा रथेन मनोजवसा वृषणा स्वस्ति ॥ १५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

अजोहवीदश्विना वर्तिका वामास्नो यत्सीममुञ्चतं वृकस्य।
वि जयुषा ययथुः सान्वद्रेर्जातं विष्वाचो अहतं विषेण ॥ १६ ॥
शतं मेषान्वृक्ये मामहानं तमः प्रणीतमशिवेन पित्रा।
आक्षी ऋज्राश्वे अश्विनावधत्तं ज्योतिरन्धाय चक्रथुर्विचक्षे ॥ १७ ॥
शुनमन्धाय भरमह्वयत्सा वृकीरश्विना वृषणा नरेति।
जारः कनीनइव चक्षदान ऋज्राश्वः शतमेकं च मेषान् ॥ १८ ॥
मही वामूतिरश्विना मयोभूरुत स्रामं धिष्ण्या सं रिणीथः।
अथा युवामिदह्वयत्पुरन्धिरागच्छतं सीं वृषणाववोभिः ॥ १९ ॥
अधेनुं दस्रा स्तर्यं विषक्तामपिन्वतं शयवे अश्विना गाम्।
युवं शचीभिर्विमदाय जायां न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषाम् ॥ २० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

यवं वृकेणाश्विना वपन्तेषं दुहन्ता मनुषाय दस्रा ।
अभि दस्युं बकुरेणा धमन्तोरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय ॥ २१ ॥
आथर्वणायाश्विना दधीचेऽश्व्यं शिरः प्रत्यैरयतम् ।
स वां मधु प्र वोचदृतायन्त्वाष्ट्रं यद्दस्रावपिकक्ष्यं वाम् ॥ २२ ॥
सदा कवी सुमतिमा चके वां विश्वा धियो अश्विना प्रावतं मे।
अस्मे रयिं नासत्या बृहन्तमपत्यसाचं श्रुत्यं रराथाम् ॥ २३ ॥
हिरण्यहस्तमश्विना रराणा पुत्रं नरा वध्रिमत्या अदत्तम्।
त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तमुज्जीवसे ऐरयतं सुदानू ॥ २४ ॥
एतानि वामश्विना वीर्याणि प्र पूर्व्याण्यायवोऽवोचन् ।
ब्रह्मा कृण्वन्तो वृषणा युवभ्यां सुवीरासो विदथमा वदेम ॥ २५ ॥

[११८] अष्टादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान्॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१-११, भुरिक्पङ्क्तिः; २, ५, ७ त्रिष्टुप्; ३, ६, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ८ विराट्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—१, ११ पञ्चमः; २-१० धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

आ वां रथो अश्विना श्येनपत्वा सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ् ।
यो मर्त्यस्य मनसो जवीयान्त्रिवन्धुरो वृषणा वातरंहाः ॥ १ ॥
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक् ।
पिन्वतं गा जिन्वतमर्वतो नो वर्धयतमश्विना वीरमस्मे ॥ २ ॥
प्रवद्यामना सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः ।
किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठाहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः ॥ ३ ॥
आ वां श्येनासो अश्विना वहन्तु रथे युक्तास आशवः पतङ्गाः ।
ये असुरो दिव्यासो न गृध्रा अभि प्रयो नासत्या वहन्ति ॥ ४ ॥
आ वां रथं युवतिस्तिष्ठदत्र जुष्ट्री नरा दुहिता सूर्यस्य ।
परि वामश्वा वपुषः पतङ्गा वयो वहन्त्वरुषा अभीके ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

उद्वन्दनमैरतं दंसनाभिरुद्रेभं दस्रा वृषणा शचीभिः ।
निष्टौग्र्यं पारयथः समुद्रात् पुनश्च्यवानं चक्रथुर्युवानम् ॥ ६ ॥
युवमत्रयेऽवनीताय तप्तमूर्जमोमानमश्विनावधत्तम् ।
युवं कण्वायापिरिप्ताय चक्षुः प्रत्यधत्तं सुष्टुतिं जुजुषाणा ॥ ७ ॥
युवं धेनुं शयवे नाधितायापिन्वतमश्विना पूर्व्याय ।
अमुञ्चतं वर्तिकामंहसो निः प्रति जङ्घां विश्पलायां अधत्तम् ॥ ८ ॥
युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजूतमहिहनमश्विनादत्तमश्वम् ।
जोहूत्रमर्यो अभिभूतिमुग्रं सहस्त्रसां वृषणं वीड्वङ्गम् ॥ ९ ॥
ता वां नरा स्ववसे सुजाता हवामहे अश्विना नाधमानाः ।
आ न उप वसुमता रथेन गिरो जुषाणा सुविताय यातम् ॥ १० ॥
आ श्येनस्य जवसा नूतनेनास्मे यातं नासत्या सजोषाः ।
हवे हि वामश्विना रातहव्यः शश्वत्तमाया उषसो व्युष्टौ ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[११९] एकोनविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान् दैर्घतमसः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ४, ६ निचृज्जगती; २, ५, ९ भुरिक् त्रिष्टुप्; ३, ७, १० जगती; ८ विराड्जगती॥ स्वरः—१, ३, ४, ६-८, १० निषादः; २, ५, ९ धैवतः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

आ वां रथं पुरुमायं मनोजुवं जीराश्वं यज्ञियं जीवसे हुवे।
सहस्रकेतुं वनिनं शतद्वसुं श्रुष्टीवानं वरिवोधामभि प्रयः॥ १॥
ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य प्रयामन्यधायि शस्मन्त्समयन्त आ दिशः।
स्वदामि घर्मं प्रति यन्त्यूतय आ वामूर्जानी रथमश्विनारुहत्॥ २॥
सं यन्मिथः पस्पृधानासो अग्मत शुभे मखा अमिता जायवो रणे।
युवोरह प्रवणे चेकिते रथो यदश्विना वहथः सूरिमा वरम्॥ ३॥
युवं भुज्युं भुरमाणं विभिर्गतं स्वयुक्तिभिर्निवहन्ता पितृभ्य आ।
यासिष्टं वर्तिर्वृषणा विजेन्यं दिवोदासाय महि चेति वामवः॥ ४॥
युवोरश्विना वपुषे युवायुजं रथं वाणी येमतुरस्य शर्ध्यम्।
आ वां पतित्वं सख्याय जग्मुषी योषावृणीत जेन्या युवां पती॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

युवं रेभं परिषूतेरुरुष्यथो हिमेन घर्मं परितप्तमत्रये ।
युवं शयोरवसं पिप्यथुर्गविं प्र दीर्घेण वन्दनस्तार्यायुषा ॥ ६॥
युवं वन्दनं निर्ऋतेर्जरण्यया रथं न दस्रा करणा समिन्वथः।
क्षेत्रादा विप्रं जनथो विपन्यया प्र वामत्रं विधते दंसना भुवत्॥ ७॥
अगच्छतं कृपमाणं परावति पितुः स्वस्य त्यजसा निबाधितम्।
स्वर्वतीरित ऊतीर्युवोरह चित्रा अभीके अभवन्नभिष्टयः॥ ८॥
उत स्या वां मधुमन्मक्षिकारपन्मदे सोमस्यौशिजो हुवन्यति।
युवं दधीचो मन आ विवासथोऽथा शिरः प्रति वामश्व्यं वदत्॥ ९॥
युवं पेदवे पुरुवारमश्विना स्पृधां श्वेतं तरुतारं दुवस्यथः।
शर्यैरभिद्युं पृतनासु दुष्टरं चर्कृत्यमिन्द्रमिव चर्षणीसहम्॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१२०] विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उशिक्पुत्रः कक्षीवान्॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, १२ पिपीलिकामध्यानिचृद्गायत्री; २ भुरिग्गायत्री; ३ स्वराट्ककुबुष्णिक्; ४ आर्ष्यनुष्टुप्; ५ आर्ष्युष्णिक्; ६ विराडार्ष्युष्णिक्; ७ स्वराडार्ष्यनुष्टुप्; ८ भुरिगुष्णिक्; ९ भुरिगनुष्टुप्; १० गायत्री; ११ पिपीलिकामध्या-विराड्गायत्री॥ स्वरः—१, २, १०-१२ षड्जः; ३, ५, ६, ८ ऋषभः; ४, ७, ९ गान्धारः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

का राधद्धोत्राश्विना वां को वां जोष उभयोः। कथा विधात्यप्रचेताः॥ १॥
विद्वांसाविदुरः पृच्छेदविद्वानित्थापरो अचेताः। नू चिन्नु मर्ते अक्रौ॥ २॥
ता विद्वांसा हवामहे वां ता नो विद्वांसा मन्म वोचेतमद्य ।
प्रार्चद्दयमानो युवाकुः ॥ ३॥
वि पृच्छामि पाक्याꣳ न देवान्वषट्कृतस्याद्भुतस्य दस्रा ।
पातं च सह्यसो युवं च रभ्यसो नः ॥ ४॥
प्र या घोषे भृगवाणे न शोभे यया वाचा यजति पज्रियो वाम्।
प्रैषयुर्न विद्वान् ॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

श्रुतं गायत्रं तक्वानस्याहं चिद्धि रिरेभाश्विना वाम् ।
आक्षी शुभस्पती दन् ॥ ६॥
युवं ह्यास्तं महो रन् युवं वा यन्निरततंसतम् ।
ता नो वसू सुगोपा स्यातं पातं नो वृकादघायोः ॥ ७॥
मा कस्मै धातमभ्यमित्रिणे नो माकुत्रा नो गृहेभ्यो धेनवो गुः ।
स्तनाभुजो अशिश्वीः ॥ ८॥
दुहीयन्मित्रधितये युवाकु राये च नो मिमीतं वाजवत्यै ।
इषे च नो मिमीतं धेनुमत्यै ॥ ९॥
अश्विनोरसनं रथमनश्वं वाजिनीवतोः। तेनाहं भूरि चाकन ॥ १०॥
अयं समह मा तनूह्याते जनाँ अनु। सोमपेयं सुखो रथः ॥ ११॥
अध स्वप्नस्य निर्विदेऽभुञ्जतश्च रेवतः। उभा ता बस्रि नश्यतः॥ १२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टादशोऽनुवाकः [१२१] एकविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—औशिजः दैर्घतमसः कक्षीवान्॥ देवता—विश्वे देवा इन्द्रश्च॥ छन्दः—१, ७, १३ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ८, १० त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, १२, १४, १५ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ७, १३ पञ्चमः; २-६, ८-१२, १४, १५ धैवतः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

कदित्था नॄँः पात्रं देवयतां श्रवद् गिरो अङ्गिरसां तुरण्यन्।
प्र यदानड्विश आ हर्म्यस्योरु क्रंसते अध्वरे यजत्रः॥ १॥
स्तम्भीद्ध द्यां स धरुणं पृषायदृभुर्वाजाय द्रविणं नरो गोः।
अनु स्वजां महिषश्चक्षत व्रां मेनामश्वस्य परि मातरं गोः॥ २॥
नक्षद्धवमरुणीः पूर्व्यं राट् तुरो विशामङ्गिरसामनु द्यून्।
तक्षद्वज्रं नियुतं तस्तम्भद् द्यां चतुष्पदे नर्याय द्विपादे॥ ३॥
अस्य मदे स्वर्यं दा ऋतायापीवृतमुस्रियाणामनीकम्।
यद्ध प्रसर्गे त्रिककुम्निवर्तदप द्रुहो मानुषस्य दुरो वः॥ ४॥
तुभ्यं पयो यत्पितरावनीतां राधः सुरेतस्तुरणे भुरण्यू।
शुचि यत्ते रेक्ण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्रियायाः॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

अध प्र जज्ञे तरणिर्ममत्तु प्र रोच्यस्या उषसो न सूरः।
इन्दुर्येभिराष्ट स्वेदुहव्यैः स्तुवेण सिञ्चञ्जरणाभि धाम॥ ६॥
स्विध्मा यद् वनधितिरपस्यात्सूरो अध्वरे परि रोधना गोः।
यद्ध प्रभासि कृत्व्याँ अनु द्यूनन्विशे पश्विषे तुराय॥ ७॥
अष्टा महो दिव आदो हरी इह द्युम्नासाहमभि योधान उत्सम्।
हरिं यत्ते मन्दिनं दुक्षन्वृधे गोरभसमद्रिभिर्वाताप्यम्॥ ८॥
त्वमायसं प्रति वर्तयो गोर्दिवो अश्मानमुपनीतमृभ्वा।
कुत्साय यत्र पुरुहूत वन्वञ्छुष्णमन्तैः परियासि वधैः॥ ९॥
पुरा यत्सूरस्तमसो अपीतेस्तमद्रिवः फलिगं हेतिमस्य।
शुष्णस्य चित्परिहितं यदोजो दिवस्परि सुग्रथितं तदादः॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अनु॑ त्वा म॒ही पाज॑सी अच॒क्रे द्यावा॒क्षामा॑ मदतामिन्द्र॒ कर्म॑न्।
त्वं वृ॒त्रमा॒शया॑नं सि॒रासु॑ म॒हो वज्रे॑ण सिष्वपो व॒राहु॑म्॥ ११॥
त्वमि॑न्द्र॒ नर्यो॒ याँ अवो॒ नॄन्तिष्ठा॒ वात॑स्य सु॒युजो॒ वहि॑ष्ठान्।
यं ते॑ का॒व्य उ॒शना॑ म॒न्दिनं॒ दाद् वृ॑त्र॒हणं॒ पार्यं॑ ततक्ष॒ वज्र॑म्॥ १२॥
त्वं सूरो॑ ह॒रितो॑ रामयो॒ नॄन्भर॑च्च॒क्रमेत॑शो॒ नायमि॑न्द्र।
प्रास्य॑ पा॒रं न॑व॒तिं ना॒व्या॑ना॒मपि॑ क॒र्तम॑वर्त॒योऽ य॑ज्यून्॥ १३॥
त्वं नो॑ अ॒स्या इ॑न्द्र दु॒र्हणा॑याः पा॒हि व॑ज्रिवो दुरि॒ताद॒भीके॑।
प्र नो॒ वाजा॑न्र॒थ्यो॒३॒॑ अश्व॑बुध्यानि॒षे य॑न्धि॒ श्रव॑से सू॒नृता॑यै॥ १४॥
मा सा ते॑ अ॒स्मत्सु॑म॒तिर्वि द॑स॒द्वाज॑प्रमहः॒ समिषो॑ वरन्त।
आ नो॑ भज मघव॒न्गोष्व॒र्यो मंहि॑ष्ठास्ते सध॒मादः॑ स्याम॥ १५॥

इति प्रथमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥

इति प्रथमोऽष्टकः ॥

अथ द्वितीयोऽष्टकः

अथ द्वितीयाष्टके प्रथमोऽध्यायः

[१२२] द्वाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान्॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ५, १४ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, १५ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ९, १०, १३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृत्पङ्क्तिः; ६ विराट्पङ्क्तिः; ७, ११ त्रिष्टुप्; ८, १२ निचृत् त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-६, १४, १५ पञ्चमः; २, ७-१३ धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

प्र वः॒ पान्तं॑ रघुमन्य॒वोऽ न्धो॑ य॒ज्ञं रु॒द्राय॑ मी॒ळ्हुषे॑ भरध्वम्।
दि॒वो अ॑स्तो॒ष्यसु॑रस्य वी॒रैरि॑षु॒ध्येव॑ म॒रुतो॒ रोद॑स्योः॥ १॥
पत्नी॑व पू॒र्वहू॑तिं वावृ॒धध्या॑ उ॒षासा॒नक्ता॑ पुरु॒धा विदा॑ने।
स्त॒रीर्नात्कं॒ व्यु॑तं॒ वसा॑ना॒ सूर्य॑स्य श्रि॒या सु॒दृशी॒ हिर॑ण्यैः॥ २॥
म॒मत्तु॑ नः॒ परि॑ज्मा वस॒र्हा म॒मत्तु॒ वातो॑ अ॒पां वृष॑ण्वान्।
शि॒शी॒तमि॑न्द्रापर्वता यु॒वं न॒स्तन्नो॒ विश्वे॑ वस्विस्यन्तु दे॒वाः॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत त्या मे यशसा शवेतनायै व्यन्ता पान्तौशिजो हुवध्यै।
प्र वो नपातमपां कृणुध्वं प्र मातरा रास्पिनस्यायोः ॥ ४ ॥
आ वो रुवण्युमौशिजो हुवध्यै घोषेव शंसमर्जुनस्य नंशे।
प्र वः पूष्णे दावन आँ अच्छा वोचेय वसुतातिमग्नेः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमोत श्रुतं सदने विश्वतः सीम्।
श्रोतु नः श्रोतुरातिः सुश्रोतुः सुक्षेत्रा सिन्धुरद्भिः ॥ ६ ॥
स्तुषे सा वां वरुण मित्र रातिर्गवां शता पृक्षयामेषु पञ्चे।
श्रुतरथे प्रियरथे दधानाः सद्यः पुष्टिं निरुन्धानासो अग्मन् ॥ ७ ॥
अस्य स्तुषे महिमघस्य राधः सचा सनेम नहुषः सुवीराः।
जनो यः पञ्चेभ्यो वाजिनीवानश्वावतो रथिनो मह्या सूरिः ॥ ८ ॥
जनो यो मित्रावरुणावभिध्रुगपो न वां सुनोत्यक्ष्णयाध्रुक्।
स्वयं स यक्ष्मं हृदये नि धत्त आप यदीं होत्राभिर्ऋतावा ॥ ९ ॥
स व्राधतो नहुषो दंसुजूतः शर्धस्तरो नरां गूर्तश्रवाः।
विसृष्टरातिर्याति बाळ्हसृत्वा विश्वासु पृत्सु सदमिच्छूरः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

अध ग्मन्ता नहुषो हवं सूरेः श्रोता राजानो अमृतस्य मन्द्राः।
नभोजुवो यन्निरवस्य राधः प्रशस्तये महिना रथवते ॥ ११ ॥
एतं शर्धं धाम यस्य सूरेरित्यवोचन् दशतयस्य नंशे।
द्युम्नानि येषु वसुतातौ रारन्विश्वे सन्वन्तु प्रभृथेषु वाजम् ॥ १२ ॥
मन्दामहे दशतयस्य धासेर्द्विर्यत्पञ्च बिभ्रतो यन्त्यन्ना।
किमिष्टाश्व इष्टरश्मिरेत ईशानासस्तरुष ऋञ्जते नॄन् ॥ १३ ॥
हिरण्यकर्णं मणिग्रीवमर्णस्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः।
अर्यो गिरः सद्य आ जग्मुषीरोस्त्राश्चाकन्तूभयेष्वस्मे ॥ १४ ॥
चत्वारो मा मशर्शारस्य शिश्वस्त्रयो राज्ञ आयवसस्य जिष्णोः।
रथो वां मित्रावरुणा दीर्घाप्साः स्यूमगभस्तिः सूरो नाद्यौत् ॥ १५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१२३] त्रयोविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमसः पुत्रः कक्षीवान्॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, ३, ६, ७, ९, १०, १३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ८, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-१०, १२, १३ धैवतः; ११ पञ्चमः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

पृथू रथो दक्षिणाया अयोज्यैनं देवासो अमृतासो अस्थुः।
कृष्णादुदस्थाद्यर्याइ विहायाश्चिकित्सन्ती मानुषाय क्षयाय॥ १॥
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनादबोधि जयन्ती वाजं बृहती सनुत्री।
उच्चा व्यख्यद्युवतिः पुनर्भूरोषा अगन्प्रथमा पूर्वहूतौ॥ २॥
यदद्य भागं विभजासि नृभ्य उषो देवि मर्त्यत्रा सुजाते।
देवो नो अत्र सविता दमूना अनागसो वोचति सूर्याय॥ ३॥
गृहंगृहमहना यात्यच्छा दिवेदिवे अधि नामा दधाना।
सिषासन्ती द्योतना शश्वदागादग्रमग्रमिद्भजते वसूनाम्॥ ४॥
भगस्य स्वसा वरुणस्य जामिरुषः सूनृते प्रथमा जरस्व।
पश्चा स दध्या यो अघस्य धाता जयेम तं दक्षिणया रथेन॥ ५॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

उदीरतां सूनृता उत्पुरन्धीरुदग्नयः शुशुचानासो अस्थुः।
स्पार्हा वसूनि तमसापगूळ्हाविष्कृण्वन्त्युषसो विभातीः॥ ६॥
अपान्यदेत्यभ्यन्यदेति विषुरूपे अहनी सं चरेते।
परिक्षितोस्तमो अन्या गुहाकरद्यौदुषाः शोशुचता रथेन॥ ७॥
सदृशीरद्य सदृशीरिदु श्वो दीर्घं सचन्ते वरुणस्य धाम।
अनवद्यास्त्रिंशतं योजनान्येकैका क्रतुं परि यन्ति सद्यः॥ ८॥
जानत्यह्नः प्रथमस्य नाम शुक्रा कृष्णादजनिष्ट श्वितीची।
ऋतस्य योषा न मिनाति धामाहरहर्निष्कृतमाचरन्ती॥ ९॥
कन्येव तन्वाइ शाशदानाँ एषि देवि देवमियक्षमाणम्।
संस्मयमाना युवतिः पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुषे विभाती॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषाविस्तन्वं कृणुषे दृशे कम् ।
भद्रा त्वमुषो वितरं व्युच्छ न तत्ते अन्या उषसो नशन्त ॥ ११ ॥
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्ववारा यतमाना रश्मिभिः सूर्यस्य ।
परा च यन्ति पुनरा च यन्ति भद्रा नाम वहमाना उषासः ॥ १२ ॥
ऋतस्य रश्मिमनुयच्छमाना भद्रंभद्रं क्रतुमस्मासु धेहि ।
उषो नो अद्य सुहवा व्युछास्मासु रायो मघवत्सु च स्युः ॥ १३ ॥

[१२४] चतुर्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान् दैर्घतमसः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, ३, ६, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्; २, १३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ७, ११ त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः; ८ विराट्पङ्क्तिः; १२ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६, ७, ९-१२ धैवतः; २, ५, ८, १३ पञ्चमः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

उषा उच्छन्ती समिधाने अग्ना उद्यन्त्सूर्य उर्विया ज्योतिरश्रेत् ।
देवो नो अत्र सविता न्वर्थं प्रासावीद् द्विपत्प्र चतुष्पदित्यै ॥ १ ॥
अमिनती दैव्यानि व्रतानि प्रमिनती मनुष्या युगानि ।
ईयुषीणामुपमा शश्वतीनामायतीनां प्रथमोषा व्यद्यौत् ॥ २ ॥
एषा दिवो दुहिता प्रत्यदर्शि ज्योतिर्वसाना समना पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥ ३ ॥
उषो अदर्शि शुन्ध्युवो न वक्षो नोधाइवाविरकृत प्रियाणि ।
अद्मसन्न संसतो बोधयन्ती शश्वत्तमागात्पुनरेयुषीणाम् ॥ ४ ॥
पूर्वे अर्धे रजसो अप्त्यस्य गवां जनित्र्यकृत प्र केतुम् ।
व्यु प्रथते वितरं वरीय ओभा पृणन्ती पित्रोरुपस्था ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

एवेदेषा पुरुतमा दृशे कं नाजामिं न परि वृणक्ति जामिम् ।
अरेपसा तन्वा३ शाशदाना नाभोदीषते न महो विभाती ॥ ६ ॥
अभ्रातेव पुंस एति प्रतीची गर्तारुगिव सनये धनानाम् ।
जायेव पत्य उशती सुवासा उषा हस्त्रेव नि रिणीते अप्सः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वसा॒ स्वस्रे॒ ज्याय॑स्यै यो॒निमा॑रै॒गपै॑त्यस्याः प्रति॒चक्ष्ये॑व।
व्यु॒च्छन्ती॑ र॒श्मिभि॒: सूर्य॑स्याञ्ज्यङ्क्ते॒ समन॒गाइ॑व व्रा॒: ॥ ८ ॥
आ॒सां पू॒र्वीसा॒मह॑सु स्वसॄ॒णामपरा॒ पूर्वा॑म॒भ्येति॑ प॒श्चात्।
ताः प्र॑त्न॒वन्नव्य॑सीर्नू॒नम॒स्मे रे॒वदु॑च्छन्तु सु॒दिना॑ उ॒षास॑: ॥ ९ ॥
प्र बो॑धयोषः पृणतो मघो॒न्यबु॑ध्यमानाः प॒णय॑: ससन्तु।
रे॒वदु॑च्छ म॒घव॑द्भ्यो मघोनि रे॒वत्स्तो॒त्रे सू॑नृते जा॒रय॑न्ती ॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

अवे॒यम॑श्वैद्यु॒वति॒: पुरस्ता॑द्यु॒ङ्क्ते गवा॑मरु॒णाना॒मनी॑कम्।
वि नू॒नमु॑च्छा॒दस॑ति॒ प्र के॒तुर्गृ॒हंगृ॑हमु॒प ति॑ष्ठाते अ॒ग्निः ॥ ११ ॥
उ॒त्ते॒ वय॑श्चिद्वस॒तेर॑पप॒त्नर॑श्च॒ ये पि॑तृ॒भाजो॒ व्यु॑ष्टौ।
अ॒मा स॒ते व॑हसि॒ भूरि॑ वा॒ममुषो॑ देवि दा॒शुषे॒ मर्त्या॑य ॥ १२ ॥
अस्तो॑ढ्वं स्तोम्या॒ ब्रह्म॑णा मेऽवी॑वृधध्वमुश॒तीरु॑षासः।
यु॒ष्माक॑ं देवी॒रव॑सा सनेम सहस्त्रि॒णं च॑ श॒तिनं॑ च॒ वाज॑म् ॥ १३ ॥

[१२५] पञ्चविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान् दैर्घतमसः ॥ देवता—दम्पती ॥ छन्दः—१, ३, ७ त्रिष्टुप्; २, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ जगती ॥ स्वरः—१-३, ६, ७ धैवतः; ४, ५ निषादः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

प्रा॒ता रत्नं॑ प्रा॒तरि॒त्वा॑ दधाति॒ तं चि॑कि॒त्वान्प्र॑ति॒गृह्या॒ नि ध॑त्ते।
तेन॑ प्र॒जां व॒र्धय॑मान॒ आयू॑ रा॒यस्पोषे॑ण सचते सु॒वीर॑: ॥ १ ॥
सु॒गु॒र॑सत्सुहिर॒ण्यः स्वश्वो॑ बृ॒हद॑स्मै॒ वय॒ इन्द्रो॑ दधाति।
यस्त्वा॒यन्तं॑ वसु॒ना प्रा॑तरित्वो मु॒क्षीज॑येव॒ पदि॑मु॒त्सिना॑ति ॥ २ ॥
आय॑म॒द्य सु॒कृतं॑ प्रा॒तरि॒च्छन्नि॒ष्टेः पु॒त्रं वसु॑मता॒ रथे॑न।
अं॒शोः सु॒तं पा॑यय मत्स॒रस्य॑ क्षयद्वी॒रं वर्ध॑य सू॒नृता॑भिः ॥ ३ ॥
उप॑ क्षरन्ति॒ सिन्ध॑वो मयो॒भुव॑ ईजा॒नं च॑ यक्ष्यमा॒णं च॑ धे॒नव॑: ।
पृ॒णन्तं॑ च॒ पप्युरिं॑ च श्रव॒स्यवो॑ घृ॒तस्य॒ धारा॒ उप॑ यन्ति वि॒श्वत॑: ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाकस्य पृष्ठे अधि तिष्ठति श्रितो यः पृणाति स ह देवेषु गच्छति।
तस्मा आपो घृतमर्षन्ति सिन्धवस्तस्मा इयं दक्षिणा पिन्वते सदा॥ ५॥
दक्षिणावतामिदिमानि चित्रा दक्षिणावतां दिवि सूर्यासः।
दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते दक्षिणावन्तः प्र तिरन्त आयुः॥ ६॥
मा पृणन्तो दुरितमेन आरन्मा जारिषुः सूरयः सुव्रतासः।
अन्यस्तेषां परिधिरस्तु कश्चिदपृणन्तमभि सं यन्तु शोकाः॥ ७॥

[१२६] षड्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-५ कक्षीवान्; ६ भावयव्यः; ७ रोमशा ब्रह्मवादिनी॥ देवता—विद्वाँसः॥
छन्दः—१, २, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ६, ७ अनुष्टुप्॥
स्वरः—१-५ धैवतः; ६, ७ गान्धारः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

अमन्दान्स्तोमान्प्र भरे मनीषा सिन्धावधि क्षियतो भाव्यस्य।
यो मे सहस्रममिमीत सवानतूर्तो राजा श्रव इच्छमानः॥ १॥
शतं राज्ञो नाधमानस्य निष्काञ्छतमश्वान्प्रयतान्त्सद्य आदम्।
शतं कक्षीवाँ असुरस्य गोनां दिवि श्रवोऽजरमा ततान॥ २॥
उप मा श्यावाः स्वनयेन दत्ता वधूमन्तो दश रथासो अस्थुः।
षष्टिः सहस्रमनु गव्यमागात्सनत्कक्षीवाँ अभिपित्वे अह्नाम्॥ ३॥
चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणाः सहस्रस्याग्रे श्रेणिं नयन्ति।
मदच्युतः कृशनावतो अत्यान्कक्षीवन्त उदमृक्षन्त पज्राः॥ ४॥
पूर्वामनु प्रयतिमा ददे वस्त्रीन् युक्ताँ अष्टावरिधायसो गाः।
सुबन्धवो ये विश्याइव व्रा अनस्वन्तः श्रव ऐषन्त पज्राः॥ ५॥
आगधिता परिगधिता या कशीकेव जङ्घहे।
ददाति मह्यं यादुरी याशूनां भोज्या शता॥ ६॥
उपोप मे परा मृश मा मे दभ्राणि मन्यथाः।
सर्वाहमस्मि रोमशा गन्धारीणामिवाविका॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकोनविंशोऽनुवाकः [१२७] सप्तविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-३, ८, ९ अष्टिः; ४, ७, ११ भुरिगष्टिः; ५, ६ अत्यष्टिः; १० भुरिगतिशक्वरी ॥ स्वरः—१-९, ११ मध्यमः; १० पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्। य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा । घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषाजुह्वानस्य सर्पिषः ॥ १ ॥

यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां विप्र मन्मभिर्विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः। परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम् । शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु जूतये विशः ॥ २ ॥

स हि पुरू चिदोजसा विरुक्मता दीद्यानो भवति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः। वीळु चिद्यस्य समृतौ श्रुवद्वनेव यत्स्थिरम् । निष्षहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते ॥ ३ ॥

दूळहा चिदस्मा अनु दुर्यथा विदे तेजिष्ठाभिररणिभिर्दाष्ट्यवसेऽग्नये दाष्ट्यवसे। प्र यः पुरूणि गाहते तक्षद्वनेव शोचिषा । स्थिरा चिदन्ना नि रिणात्योजसा नि स्थिराणि चिदोजसा ॥ ४ ॥

तमस्य पृक्षमुपरासु धीमहि नक्तं यः सुदशीतरो दिवातरादप्रायुषे दिवातरात्। आदस्यायुर्गर्भणवद्वीळु शर्म न सूनवे । भक्तमभक्तमवो व्यन्तो अजरा अग्नयो व्यन्तो अजराः ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

स हि शर्धो न मारुतं तुविष्वणिरप्स्वतीषूर्वरास्विष्टनिरार्तनास्विष्टनिः। आदंह्व्यान्यादुदिर्यज्ञस्य केतुरर्हणा । अध स्मास्य हर्षतो हृषीवतो विश्वे जुषन्त पन्थां नरः शुभे न पन्थाम् ॥ ६ ॥

द्विता यदीं कीस्तासो अभिद्यवो नमस्यन्त उपवोचन्त भृगवो मथ्नन्तो दाशा भृगवः। अग्निरीशे वसूनां शुचिर्यो धर्णिरेषाम् । प्रियाँ अपिधौंर्वनिषीष्ट मेधिर आ वनिषीष्ट मेधिरः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वासां त्वा विशां पतिं हवामहे सर्वीसां समानं दम्पतिं भुजे
सत्यगिर्वाहसं भुजे। अतिथिं मानुषाणां पितुर्न यस्यासया ।
अमी च विश्वे अमृतास आ वयौ हव्या देवेष्वा वयः ॥८॥
त्वमग्ने सहसा सहन्तमः शुष्मिन्तमो जायसे देवतातये रयिर्न देवतातये।
शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युम्निन्तम उत क्रतुः ।
अधा स्मा ते परि चरन्त्यजर श्रुष्टीवानो नाजर ॥९॥
प्र वो महे सहसा सहस्वत उषर्बुधे पशुषे नाग्नये स्तोमो बभूत्वग्नये।
प्रति यदीं हविष्मान् विश्वासु क्षासु जोगुवे ।
अग्ने रेभो न जरत ऋषूणां जूर्णिर्होता ऋषूणाम् ॥१०॥
स नो नेदिष्ठं ददृशान आ भराग्ने देवेभिः सचनाः सुचेतुना महो
रायः सुचेतुना। महि शविष्ठ नस्कृधि सञ्चक्षे भुजे अस्यै ।
महि स्तोतृभ्यो मघवन्त्सुवीर्यं मथीरुग्रो न शवसा ॥११॥

[१२८] अष्टाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ निचृदत्यष्टिः; २ भुरिगष्टिः; ३, ४, ६, ८ विराडत्यष्टिः; ५, ७ निचृदष्टिः ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अयं जायत मनुषो धरीमणि होता यजिष्ठ उशिजामनु व्रतमग्निः
स्वमनु व्रतम्। विश्वश्रुष्टिः सखीयते रयिरिव श्रवस्यते।
अदब्धो होता नि षददिळस्पदे परिवीत इळस्पदे ॥१॥
तं यज्ञसाधमपि वातयामस्यृतस्य पथा नमसा हविष्मता देवताता
हविष्मता। स न ऊर्जामुपाभृत्यया कृपा न जूर्यति ।
यं मातरिश्वा मनवे परावतो देवं भाः परावतः ॥२॥
एवेन सद्यः पर्येति पार्थिवं मुहुर्गी रेतो वृषभः कनिक्रदद्दधद्रेतः
कनिक्रदत्। शतं चक्षाणो अक्षभिर्देवो वनेषु तुर्वणिः ।
सदो दधान उपरेषु सानुष्वग्निः परेषु सानुषु ॥३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स सुक्रतुः पुरोहितो दमेदमेऽग्निर्यज्ञस्याध्वरस्य चेतति क्रत्वा
यज्ञस्य चेतति। क्रत्वा वेधा इषूयते विश्वा जातानि पस्पशे ।
यतो घृतश्रीरतिथिरजायत वह्निर्वेधा अजायत ॥४॥
क्रत्वा यदस्य तविषीषु पृञ्चतेऽग्नेरवेण मरुतां न भोज्येषिराय
न भोज्या। स हि ष्मा दानमिन्वति वसूनां च मज्मना ।
स नस्त्रासते दुरितादभिह्रुतः शंसादघादभिह्रुतः ॥५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

विश्वो विहाया अरतिर्वसुर्दधे हस्ते दक्षिणे तरणिर्न शिश्रथच्छ्रवस्यया
न शिश्रथत्। विश्वस्मा इदिषुध्यते देवत्रा हव्यमोहिषे ।
विश्वस्मा इत्सुकृते वारमृण्वत्यग्निर्द्वारा व्यृण्वति ॥६॥
स मानुषे वृजने शन्तमो हितोऽग्निर्यज्ञेषु जेन्यो न विश्पतिः प्रियो
यज्ञेषु विश्पतिः। स हव्या मानुषाणामिळा कृतानि पत्यते ।
स नस्त्रासते वरुणस्य धूर्तेर्महो देवस्य धूर्तेः ॥७॥
अग्निं होतारमीळते वसुधितिं प्रियं चेतिष्ठमरतिं न्येरिरे
हव्यवाहं न्येरिरे। विश्वायुं विश्ववेदसं होतारं यजतं कविम् ।
देवासो रण्वमवसे वसूयवो गीर्भी रण्वं वसूयवः ॥८॥

[१२९] एकोनत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ निचृदत्यष्टिः; ३ विराडत्यष्टिः; ४ अष्टिः; ६, ११ भुरिगष्टिः; १० निचृदष्टिः; ५ भुरिगतिशक्वरी; ७ स्वराडतिशक्वरी; ८, ९ स्वराट्-शक्वरी ॥ स्वरः—१-४, ६, १०, ११ मध्यमः; ५, ७-९ पञ्चमः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

यं त्वं रथमिन्द्र मेधसातयेऽपाका सन्तमिषिर प्रणयसि
प्रानवद्य नयसि। सद्यश्चित्तमभिष्टये करो वशश्च वाजिनम् ।
सास्माकमनवद्य तूतुजान वेधसामिमां वाचं न वेधसाम् ॥१॥
स श्रुधि यः स्मा पृतनासु कासु चिद्दक्षाय्य इन्द्र भरहूतये नृभिरसि
प्रतूर्तये नृभिः। यः शूरैः स्वॄ१ः सनिता यो विप्रैर्वाजं तरुता ।
तमीशानास इरधन्त वाजिनं पृक्षमत्यं न वाजिनम् ॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस्मो हि ष्मा वृषणं पिन्वसि त्वचं कं चिद्यावीररुं शूर मर्त्यं
परिवृणक्षि मर्त्यम्। इन्द्रोत तुभ्यं तद्दिवे तद् रुद्राय स्वयशसे ।
मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृळीकाय सप्रथः ॥३॥
अस्माकं व इन्द्रमुश्मसीष्टये सखायं विश्वायुं प्रासहं युजं वाजेषु
प्रासहं युजम्। अस्माकं ब्रह्मोतयेऽवा पृत्सुषु कासु चित् ।
नहि त्वा शत्रुः स्तरते स्तृणोषि यं विश्वं शत्रुं स्तृणोषि यम् ॥४॥
नि षू नमातिमतिं कयस्य चित्तेजिष्ठाभिररणिभिर्नोति-
भिरुग्राभिरुग्रोतिभिः। नेषि णो यथा पुरानेनाः शूर मन्यसे ।
विश्वानि पूरोरप पर्षि वह्निरासा वह्निर्नो अच्छ ॥५॥
अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥
प्र तद्वोचेयं भव्यायेन्दवे हव्यो न य इषवान्मन्म रेजति रक्षोहा
मन्म रेजति। स्वयं सो अस्मदा निदो वधैरजेत दुर्मतिम् ।
अव स्रवेदघशंसोऽवतरमव क्षुद्रमिव स्रवेत् ॥६॥
वनेम तद्धोत्रया चितन्त्या वनेम रयिं रयिवः सुवीर्यं रण्वं
सन्तं सुवीर्यम्। दुर्मन्मानं सुमन्तुभिरेमिषा पृचीमहि ।
आ सत्याभिरिन्द्रं द्युम्नहूतिभिर्यजत्रं द्युम्नहूतिभिः ॥७॥
प्रप्रा वो अस्मे स्वयशोभिरूती परिवर्ग इन्द्रो दुर्मतीनां
दरीमन्दुर्मतीनाम्। स्वयं सा रिषयध्यै या न उपेषे अत्रैः ।
हतेमसन्न वक्षति क्षिप्रा जूर्णिर्न वक्षति ॥८॥
त्वं न इन्द्र राया परीणसा याहि पथाँ अनेहसा पुरो
याह्यरक्षसा। सचस्व नः पराक आ सचस्वास्तमीक आ ।
पाहि नो दूरादारादभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ॥९॥
त्वं न इन्द्र राया तरूषसोग्रं चित्त्वा महिमा सक्षदवसे महे
मित्रं नावसे। ओजिष्ठ त्रातरविता रथं कं चिदमर्त्य ।
अन्यमस्मद्रिरिषेः कं चिदद्रिवो रिरिक्षन्तं चिदद्रिवः ॥१०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाहि न इन्द्र सुष्टुत स्त्रिधोऽ वयाता सदमिद्दुर्मतीनां देवः
सन् दुर्मतीनाम्। हन्ता पापस्य रक्षसस्त्राता विप्रस्य मावतः ।
अधा हि त्वा जनिता जीजनद्वसो रक्षोहणं त्वा जीजनद्वसो ॥ ११ ॥

[१३०] त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ भुरिगष्टिः; २, ३, ६, ९ स्वराडष्टिः; ४, ८ अष्टिः; ७ निचृदत्यष्टिः; १० विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-६-९ मध्यमः; १० धैवतः॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव सत्पतिरस्तं
राजेव सत्पतिः। हवामहे त्वा वयं प्रयस्वन्तः सुते सचा ।
पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये ॥ १ ॥
पिबा सोममिन्द्र सुवानमद्रिभिः कोशेन सिक्तमवतं न वंसगस्तातृषाणो
न वंसगः। मदाय हर्यताय ते तुविष्टमाय धायसे ।
आ त्वा यच्छन्तु हरितो न सूर्यमहा विश्वेव सूर्यम् ॥ २ ॥
अविन्दद्दिवो निहितं गुहा निधिं वेर्न गर्भं परिवीतमश्मन्यन्तः
अन्तरश्मनि। व्रजं वज्री गवामिव सिषासन्नङ्गिरस्तमः ।
अपावृणोदिष इन्द्रः परीवृता द्वार इषः परीवृताः ॥ ३ ॥
दादृहाणो वज्रमिन्द्रो गभस्त्योः क्षद्मेव तिग्ममससनाय सं शर्यदहिहत्याय
सं शर्यत्। संविव्यान ओजसा शवोभिरिन्द्र मज्मना ।
तष्टेव वृक्षं वनिनो नि वृश्चसि परश्वेव नि वृश्चसि ॥ ४ ॥
त्वं वृथा नद्य इन्द्र सर्तवेऽच्छा समुद्रमसृजो रथाँइव
वाजयतो रथाँइव। इत ऊतीरयुञ्जत समानमर्थमक्षितम् ।
धेनूरिव मनवे विश्वदोहसो जनाय विश्वदोहसः ॥ ५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

इमां ते वाचं वसूयन्त आयवो रथं न धीरः स्वपा अतक्षिषुः
सुम्नाय त्वामतक्षिषुः। शुम्भन्तो जेन्यं यथा वाजेषु विप्र वाजिनम्।
अत्यमिव शवसे सातये धना विश्वा धनानि सातये ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिनत्पुरो नवतिमिन्द्र पूरवे दिवोदासाय महि दाशुषे नृतो वज्रेण दाशुषे
नृतो। अतिथिग्वाय शम्बरं गिरेरुग्रो अवाभरत्।
महो धनानि दयमान ओजसा विश्वा धनान्योजसा ॥७॥
इन्द्रः समत्सु यजमानमार्यं प्रावद्विश्वेषु शतमूतिराजिषु
स्वर्मीळ्हेष्वाजिषु। मनवे शासदव्रतान्त्वचं कृष्णामरन्धयत् ।
दक्षन्न विश्वं ततृषाणमोषति न्यर्शसानमोषति ॥८॥
सूरश्चक्रं प्र वृहज्जात ओजसा प्रपित्वे वाचमरुणो मुषायतीशान
आ मुषायति। उशना यत्परावतोऽजगन्नूतये कवे ।
सुम्नानि विश्वा मनुषेव तुर्वणिरहा विश्वेव तुर्वणिः ॥९॥
स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्नुक्थैः पुरां दर्तः पायुभिः पाहि शग्मैः ।
दिवोदासेभिरिन्द्र स्तवानो वावृधीथा अहोभिरिव द्यौः ॥१०॥

[१३१] एकत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ निचृदत्यष्टिः; ३, ५, ६, ७ भुरिगष्टिः;
४ विराडत्यष्टिः॥ स्वरः—मध्यमः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

इन्द्राय हि द्यौरसुरो अनम्नतेन्द्राय मही पृथिवी वरीमभिर्द्युम्नसाता
वरीमभिः। इन्द्रं विश्वे सजोषसो देवासो दधिरे पुरः ।
इन्द्राय विश्वा सवनानि मानुषा रातानि सन्तु मानुषा ॥१॥
विश्वेषु हि त्वा सवनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक्
स्वः सनिष्यवः पृथक्। तं त्वा नावं न पर्षणिं शूषस्य धुरि धीमहि।
इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयवः स्तोमेभिरिन्द्रमायवः ॥२॥
वि त्वा ततस्रे मिथुना अवस्यवो व्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः
सक्षन्त इन्द्र निःसृजः। यद् गव्यन्ता द्वा जना स्वर्यन्ता समूहसि।
आविष्करिक्रद् वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम् ॥३॥
विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र शारदीर्वातिरः सासहान्
अवातिरः। शासस्तमिन्द्र मर्त्यमयज्युं शवसस्पते ।
महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः ॥४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदित्ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन्मदेषु वृषन्नुशिजो यदाविथ
सखीयतो यदाविथ। चकर्थ कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे ।
ते अन्यामन्यां नद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत ॥५॥
उतो नो अस्या उषसो जुषेत ह्यर्कस्य बोधि हविषो हवीमभिः
स्वर्षाता हवीमभिः। यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिञ्चिकेतसि।
आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः ॥६॥
त्वं तमिन्द्र वावृधानो अस्मयुरमित्रयन्तं तुविजात मर्त्यं वज्रेण
शूर मर्त्यम्। जहि यो नो अघायति शृणुष्व सुश्रवस्तमः ।
रिष्टं न यामन्नप भूतु दुर्मतिर्विश्वाप भूतु दुर्मतिः ॥७॥

[१३२] द्वात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ विराडत्यष्टिः; २ भुरिगतिशक्वरी; ४ निचृदष्टिः ॥ स्वरः—१, ३-६ मध्यमः २ पञ्चमः;॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

त्वया वयं मघवन्पूर्व्ये धन इन्द्रत्वोताः सासह्याम पृतन्यतो
वनुयाम वनुष्यतः। नेदिष्ठे अस्मिन्नहन्यधि वोचा नु सुन्वते ।
अस्मिन्यज्ञे वि चयेमा भरे कृतं वाजयन्तो भरे कृतम् ॥१॥
स्वर्जेषे भर आप्रस्य वक्मन्युषर्बुधः स्वस्मिन्नञ्जसि क्राणस्य
स्वस्मिन्नञ्जसि। अहन्निन्द्रो यथा विदे शीष्णाशीर्ष्णोपवाच्यः ।
अस्मत्रा ते सध्यक् सन्तु रातयो भद्रा भद्रस्य रातयः ॥२॥
तत्तु प्रयः प्रत्नथा ते शुशुक्वनं यस्मिन्यज्ञे वारमकृण्वत क्षयमृतस्य
वारसि क्षयम्। वि तद्वोचेरध द्विता न्तः पश्यन्ति रश्मिभिः ।
स घा विदे अन्विन्द्रो गवेषणो बन्धुक्षिद्भ्यो गवेषणः ॥३॥
नू इत्था ते पूर्वथा च प्रवाच्यं यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रजमिन्द्र
शिक्षन्नप व्रजम्। एभ्यः समान्या दिशाऽस्मभ्यं जेषि योत्सि च।
सुन्वद्भ्यो रन्धया कं चिदव्रतं हृणायन्तं चिदव्रतम् ॥४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं यज्जनान् क्रतुभिः शूर ईक्षयद्धने हिते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र यक्षन्त श्रवस्यवः। तस्मा आयुः प्रजावदिद् बाधे अर्चन्त्योजसा। इन्द्रे ओक्यं दिधिषन्त धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ॥५॥

युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्। अस्माकं शत्रून् परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः ॥६॥

[१३३] त्रयस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ निचृदनुष्टुप्; ४ स्वराडनुष्टुप्; ५ आर्षीगायत्री; ६ स्वराड्ब्राह्मीजगती; ७ विराडष्टिः॥ स्वरः—१ धैवतः; २-४ गान्धारः; ५ षड्जः; ६ निषादः; ७ मध्यमः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

उभे पुनामि रोदसी ऋतेन द्रुहो दहामि सं महीरनिन्द्राः। अभिव्लग्य यत्र हता अमित्रा वैलस्थानं परि तृळ्हा अशेरन्॥ १॥

अभिव्लग्या चिदद्रिवः शीर्षा यातुमतीनाम्। छिन्धि वटूरिणा पदा महावटूरिणा पदा ॥२॥

अवासां मघवञ्जहि शर्धो यातुमतीनाम्। वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ॥३॥

यासां तिस्रः पञ्चाशतोऽभिव्लङ्गैरपावपः। तत्सु ते मनायति तकत्सु ते मनायति ॥४॥

पिशङ्गभृष्टिमम्भृणं पिशाचिमिन्द्र सं मृण। सर्वं रक्षो नि बर्हय ॥५॥

अवर्महे इन्द्र दादृहि श्रुधी नः शुशोच हि द्यौः क्षा न भीषाँ अद्रिवो घृणान्न भीषाँ अद्रिवः। शुष्मिन्तमो हि शुष्मिभिर्वधैरुग्रेभिरीयसे। अपूरुषघ्नो अप्रतीत शूर सत्वभिस्त्रिसप्तैः शूर सत्वभिः ॥६॥

वनोति हि सुन्वन्क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो देवानामव द्विषः। सुन्वान इत्सिषासति सहस्रा वाज्यवृतः। सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् ॥७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विंशोऽनुवाकः [१३४] चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—वायुः ॥ छन्दः—१, ३ निचृदत्यष्टिः; २, ४ विराडत्यष्टिः; ५ अष्टिः; ६ विराडष्टिः ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

आ त्वा जुवो रारहाणा अभि प्रयो वायो वहन्त्विह पूर्वपीतये
सोमस्य पूर्वपीतये। ऊर्ध्वा ते अनु सूनृता मनस्तिष्ठतु जानती ।
नियुत्वता रथेना याहि दावने वायो मखस्य दावने ॥ १ ॥
मन्दन्तु त्वा मन्दिनो वायविन्दवोऽस्मत्क्राणासः सुकृता अभिद्यवो
गोभिः क्राणा अभिद्यवः। यद्ध क्राणा इरध्यै दक्षं सचन्त ऊतयः।
सध्रीचीना नियुतो दावने धिय उप ब्रुवत ईं धियः ॥ २ ॥
वायुर्युङ्क्ते रोहिता वायुररुणा वायू रथे अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा
धुरि वोळ्हवे। प्र बोधया पुरन्धिं जार आ ससतीमिव ।
प्र चक्षय रोदसी वासयोषसः श्रवसे वासयोषसः ॥ ३ ॥
तुभ्यमुषासः शुचयः परावति भद्रा वस्त्रा तन्वते दंसु रश्मिषु
चित्रा नव्येषु रश्मिषु। तुभ्यं धेनुः सबर्दुघा विश्वा वसूनि दोहते ।
अजनयो मरुतो वक्षणाभ्यो दिव आ वक्षणाभ्यः ॥ ४ ॥
तुभ्यं शुक्रासः शुचयस्तुरण्यवो मदेषूग्रा इषणन्त भुर्वण्यपामिषन्त
भुर्वणिं। त्वां त्सारी दसमानो भगमीट्टे तक्ववीये ।
त्वं विश्वस्माद्भुवनात्पासि धर्मणासुर्यात्पासि धर्मणा ॥ ५ ॥
त्वं नो वायवेषामपूर्व्यः सोमानां प्रथमः पीतिमर्हसि ।
सुतानां पीतिमर्हसि। उतो विहुत्मतीनां विशां ववर्जुषीणाम् ।
विश्वा इत्ते धेनवो दुह्र आशिरं घृतं दुहत आशिरम् ॥ ६ ॥

[१३५] पञ्चत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—वायुः ॥ छन्दः—१, ३ निचृदत्यष्टिः; २, ४ विराडत्यष्टिः; ५, ९ भुरिगष्टिः; ६, ८ निचृदष्टिः; ७ अष्टिः ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

स्तीर्णं बर्हिरुप नो याहि वीतये सहस्रेण नियुता नियुत्वते
शतिनीभिर्नियुत्वते। तुभ्यं हि पूर्वपीतये देवा देवाय येमिरे ।
प्र तै सुतासो मधुमन्तो अस्थिरन्मदाय क्रत्वे अस्थिरन् ॥ १ ॥
तुभ्यायं सोमः परिपूतो अद्रिभिः स्पार्हा वसानः परि कोशमर्षति
शुक्रा वसानो अर्षति। तवायं भाग आयुषु सोमो देवेषु हूयते ।
वह वायो नियुतो याह्यस्मयुर्जुषाणो याह्यस्मयुः ॥ २ ॥
आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं सहस्त्रिणीभिरुप याहि वीतये
वायो हव्यानि वीतये। तवायं भाग ऋत्वियः सरश्मिः सूर्ये सचा।
अध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वायो शुक्रा अयंसत ॥ ३ ॥
आ वां रथो नियुत्वान्वक्षदवसेऽभि प्रयांसि सुधितानि वीतये वायो
हव्यानि वीतये। पिबतं मध्वो अन्धसः पूर्वपेयं हि वां हितम् ।
वायवा चन्द्रेण राधसा गतमिन्द्रश्च राधसा गतम् ॥ ४ ॥
आ वां धियो ववृत्युरध्वराँ उपेममिन्दुं मर्मृजन्त वाजिनमाशुमत्यं
न वाजिनम्। तेषां पिबतमस्मयू आ नो गन्तमिहोत्या ।
इन्द्रवायू सुतानामद्रिभिर्युवं मदाय वाजदा युवम् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

इमे वां सोमा अप्स्वा सुता इहाध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वायो
शुक्रा अयंसत। एते वामभ्यसृक्षत तिरः पवित्रमाशवः ।
युवायवोऽति रोमाण्यव्यया सोमासो अत्यव्यया ॥ ६ ॥
अति वायो ससतो याहि शश्वतो यत्र ग्रावा वदति तत्र गच्छतं
गृहमिन्द्रश्च गच्छतम्। वि सूनृता ददृशे रीयते घृतमा पूर्णया
नियुता याथो अध्वरमिन्द्रश्च याथो अध्वरम् ॥ ७ ॥
अत्राह तद्वहेथे मध्व आहुतिं यमश्वत्थमुपतिष्ठन्त जायवोऽस्मे
ते सन्तु जायवः। साकं गावः सुवते पच्यते यवो न तै वाय
उप दस्यन्ति धेनवो नाप दस्यन्ति धेनवः ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमे ये ते सु वायो बाह्वोजसोऽन्तर्नदी ते पतयन्त्युक्षणो महि
व्राधन्त उक्षणः। धन्वञ्चिद् ये अनाशवो जीराश्चिदगिरौकसः।
सूर्यस्येव रश्मयो दुर्नियन्तवो हस्तयोर्दुर्नियन्तवः ॥ ९ ॥

[१३६] षट्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः॥ देवता—१-५ मित्रावरुणौ; ६-७ मन्त्रोक्ताः॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ स्वराडत्यष्टिः; २ निचृदष्टिः; ४ भुरिगष्टिः; ७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-६ मध्यमः; ७ धैवतः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६ ॥

प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां बृहन्नमो हव्यं मतिं भरता मृळयद्भ्यां
स्वादिष्ठं मृळयद्भ्याम्। ता सम्राजा घृतासुती यज्ञेयज्ञ उपस्तुता।
अथैनोः क्षत्रं न कुतश्चनाधृषे देवत्वं नू चिदाधृषे ॥ १ ॥
अदर्शि गातुरुरवे वरीयसी पन्था ऋतस्य समयंस्त रश्मिभिश्
चक्षुर्भगस्य रश्मिभिः। द्युक्षं मित्रस्य सादनमर्यम्णो वरुणस्य च।
अथा दधाते बृहदुक्थ्यं१ वय उपस्तुत्यं बृहद् वयः ॥ २ ॥
ज्योतिष्मतीमदितिं धारयत्क्षितिं स्वर्वतीमा सचेते दिवेदिवे जागृवांसा
दिवेदिवे। ज्योतिष्मत् क्षत्रमाशाते आदित्या दानुनस्पती।
मित्रस्तयोर्वरुणो यातयज्जनोऽर्यमा यातयज्जनः ॥ ३ ॥
अयं मित्राय वरुणाय शन्तमः सोमो भूत्ववपानेष्वाभगो देवो
देवेष्वाभगः। तं देवासो जुषेरत विश्वे अद्य सजोषसः।
तथा राजाना करथो यदीमह ऋतावाना यदीमहे ॥ ४ ॥
यो मित्राय वरुणायाविधज्जनोऽनर्वाणं तं परि पातो अंहसो
दाश्वांसं मर्तमंहसः। तमर्यमाभि रक्षत्यृजूयन्तमनु व्रतम्।
उक्थैर्य एनोः परिभूषति व्रतं स्तोमैराभूषति व्रतम् ॥ ५ ॥
नमो दिवे बृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळ्हुषे
सुमृळीकाय मीळ्हुषे। इन्द्रमग्निमुप स्तुहि द्युक्षमर्यमणं भगम्।
ज्योग्जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊती देवानां वयमिन्द्रवन्तो मंसीमहि स्वयशसो मरुद्भिः ।
अग्निर्मित्रो वरुणः शर्म यंसन् तदश्याम मघवानो वयं च ॥ ७ ॥

इति द्वितीयाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयाष्टके द्वितीयोऽध्यायः

[१३७] सप्तत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ निचृच्छक्वरी; २ विराट्शक्वरी; ३ भुरिगतिशक्वरी ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

सुषुमा यातमद्रिभिर्गोश्रीता मत्सरा इमे सोमासो मत्सरा इमे ।
आ राजाना दिविस्पृशास्मत्रा गन्तमुप नः ।
इमे वां मित्रावरुणा गवाशिरः सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥ १ ॥
इम आ यातमिन्दवः सोमासो दध्याशिरः सुतासो दध्याशिरः ।
उत वामुषसो बुधि साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ।
सुतो मित्राय वरुणाय पीतये चारुर्ऋताय पीतये ॥ २ ॥
तां वां धेनुं न वासरीमंशुं दुहन्त्यद्रिभिः सोमं दुहन्त्यद्रिभिः ।
अस्मत्रा गन्तमुप नोऽवाञ्चा सोमपीतये ।
अयं वां मित्रावरुणा नृभिः सुतः सोम आ पीतये सुतः ॥ ३ ॥

[१३८] अष्टात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, ३ निचृदत्यष्टिः; २ विराड़त्यष्टिः; ४ भुरिगष्टिः ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

प्रप्र पूष्णस्तुविजातस्य शस्यते महित्वमस्य तवसो न तन्दते
स्तोत्रमस्य न तन्दते । अचीमि सुम्नयन्नहमन्त्यूतिं मयोभुवम् ।
विश्वस्य यो मन आयुयुवे मखो देव आयुयुवे मखः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र हि त्वा पूषन्नजिरं न यामन्नि स्तोमेभिः कृण्व ऋणवो यथा मृध
उष्ट्रो न पीपरो मृधः। हुवे यत्त्वा मयोभुवं देवं सख्याय मर्त्यः ।
अस्माकमाङ्गूषान् द्युम्निनस्कृधि वाजेषु द्युम्निनस्कृधि ॥ २ ॥
यस्य ते पूषन्त्सख्ये विपन्यवः क्रत्वा चित्सन्तोऽवसा बुभुज्रिर
इति क्रत्वा बुभुज्रिरे। तामनु त्वा नवीयसीं नियुतं राय ईमहे ।
अहेळमान उरुशंस सरी भव वाजेवाजे सरी भव ॥ ३ ॥
अस्या ऊ षु ण उप सातये भुवोऽहेळमानो ररिवाँ अजाश्व
श्रवस्यतामजाश्व। ओ षु त्वा ववृतीमहि स्तोमेभिर्दस्म साधुभिः।
नहि त्वा पूषन्नतिमन्य आघृणे न ते सख्यमपह्नुवे ॥ ४ ॥

[१३९] एकोनचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—परुच्छेपः ॥ देवता—१, ११ विश्वे देवाः; २ मित्रावरुणौ; ३-५ अश्विनौ; ६ इन्द्रः; ७ अग्निः; ८ मरुतः; ९ इन्द्राग्नी; १० बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, १० निचृदष्टिः; २, ३ विराडष्टिः; ४, ९ भुरिगत्यष्टिः; ५ निचृद्बृहती; ६ अष्टिः; ७ अत्यष्टिः; ८ स्वराडत्यष्टिः; ११ भुरिक्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—१-१० मध्यमः; ११ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु तच्छर्धो दिव्यं वृणीमह
इन्द्रवायू वृणीमहे। यद्ध क्राणा विवस्वति नाभा सन्दायि नव्यसी।
अध प्र सू न उप यन्तु धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ॥ १ ॥
यद्ध त्यन्मित्रावरुणावृतादध्यादुदाथे अनृतं स्वेन मन्युना दक्षस्य
स्वेन मन्युना। युवोरित्थाधि सद्मस्वपश्याम हिरण्ययम् ।
धीभिश्चन मनसा स्वेभिरक्षभिः सोमस्य स्वेभिरक्षभिः ॥ २ ॥
युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो अश्विनाश्रावयन्तइव श्लोकमायवो युवां
हव्याभ्याऽइ यवः। युवोर्विश्वा अधि श्रियः पृक्षश्च विश्ववेदसा।
प्रुषायन्ते वां पवयो हिरण्यये रथे दस्रा हिरण्यये ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचेति दस्रा व्युनाकमृण्वथो युञ्जते वां रथयुजो दिविष्टिष्व-
ध्वस्मानो दिविष्टिषु। अधि वां स्थाम वन्धुरे रथे दस्रा हिरण्यये।
पथेव यन्तावनुशासता रजोऽञ्जसा शासता रजः ॥४॥
शचीभिर्नः शचीवसू दिवा नक्तं दशस्यतम्।
मा वां रातिरुप दसत्कदा चनास्मद्रातिः कदा चन ॥५॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

वृषन्निन्द्र वृषपाणास इन्दव इमे सुता अद्रिषुतास उद्भिदस्तुभ्यं
सुतास उद्भिदः। ते त्वा मन्दन्तु दावने महे चित्राय राधसे।
गीर्भिर्गिर्वाहः स्तवमान आ गहि सुमृळीको न आ गहि ॥६॥
ओ षू णो अग्ने शृणुहि त्वमीळितो देवेभ्यो ब्रवसि यज्ञियेभ्यो
राजभ्यो यज्ञियेभ्यः। यद्द त्यामङ्गिरोभ्यो धेनुं देवा अदत्तन।
वि तां दुह्रे अर्यमा कर्तरी सचाँ एष तां वेद मे सचा ॥७॥
मो षु वो अस्मदभि तानि पौंस्या सना भूवन् द्युम्नानि मोत
जारिषुरस्मत्पुरोत जारिषुः। यद् वश्चित्रं युगेयुगे नव्यं घोषादमर्त्यम्।
अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टरं दिधृता यच्च दुष्टरम् ॥८॥
दध्यङ् ह मे जनुषं पूर्वो अङ्गिराः प्रियमेधः कण्वो अत्रिर्मनुर्विदुस्ते
मे पूर्वे मनुर्विदुः। तेषां देवेष्वायतिरस्माकं तेषु नाभयः।
तेषां पदेन मह्या नमे गिरेन्द्राग्नी आ नमे गिरा ॥९॥
होता यक्षद् वनिनो वन्त वार्यं बृहस्पतिर्यजति वेन उक्षभिः
पुरुवारेभिरुक्षभिः। जगृभ्मा दूरआदिशं श्लोकमद्रेरध त्मना।
अधारयदररिन्दानि सुक्रतुः पुरू सद्मानि सुक्रतुः ॥१०॥
ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥११॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकविंशोऽनुवाकः [१४०] चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५, ८ जगती; २, ७, ११ विराड्जगती; ३, ४, ९ निचृज्जगती; ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; १०, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५, ७-९, ११ निषादः; ६, १०, १२ धैवतः; १३ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

वेदिषदे प्रियधामाय सुद्युते धासिमिव प्र भरा योनिमग्नये।
वस्त्रेणेव वासया मन्मना शुचिं ज्योतीरथं शुक्रवर्णं तमोहनम् ॥ १ ॥
अभि द्विजन्मा त्रिवृदन्नमृज्यते संवत्सरे वावृधे जग्धमी पुनः।
अन्यस्यासा जिह्वया जेन्यो वृषा न्यन्येन वनिनो मृष्ट वारणः ॥ २ ॥
कृष्णप्रुतौ वेविजे अस्य सक्षिता उभा तरेते अभि मातरा शिशुम्।
प्राचाजिह्मं ध्वसयन्तं तृषुच्युतमा साच्यं कुपयं वर्धनं पितुः ॥ ३ ॥
मुमुक्ष्वो३ मनवे मानवस्यते रघुद्रुवः कृष्णसीतास ऊ जुवः।
असमना अजिरासो रघुष्यदो वातजूता उप युज्यन्त आशवः ॥ ४ ॥
आदस्य ते ध्वसयन्तो वृथेरते कृष्णमभ्वं महि वर्पः करिक्रतः।
यत्सीं महीमवनिं प्राभि मर्मृशदभिश्वसन्त्स्तनयन्नेति नानदत् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

भूषन् न योऽधि बभ्रूषु नम्नते वृषेव पत्नीरभ्येति रोरुवत्।
ओजायमानस्तन्वश्च शुम्भते भीमो न शृङ्गा दविधाव दुर्गृभिः ॥ ६ ॥
स संस्तिरो विष्टिरः सं गृभायति जानन्नेव जानतीर्नित्य आ शये।
पुनर्वर्धन्ते अपि यन्ति देव्यमन्यद् वर्पः पित्रोः कृण्वते सचा ॥ ७ ॥
तमग्रुवः केशिनीः सं हि रेभिर ऊर्ध्वास्तस्थुर्ममृषीः प्रायवे पुनः।
तासां जरां प्रमुञ्चन्नेति नानददसुं परं जनयञ्जीवमस्तृतम् ॥ ८ ॥
अधीवासं परि मातू रिहन्नहं तुविग्रेभिः सत्वभिर्याति वि ज्रयः।
वयो दधत् पद्वते रेरिहत् सदानु श्येनी सचते वर्तनीरहं ॥ ९ ॥
अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिह्यध श्वसीवान् वृषभो दमूनाः।
अवास्या शिशुमतीरदीदेर्वर्मेव युत्सु परिजर्भुराणः ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

इदमग्ने सुधितं दुधितादधि प्रियादु चिन्मन्मनः प्रेयो अस्तु ते।
यत्ते शुक्रं तन्वो रोचते शुचि तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम् ॥ ११ ॥
रथाय नावमुत नो गृहाय नित्यारित्रां पद्वतीं रास्यग्ने ।
अस्माकं वीराँ उत नो मघोनो जनाँश्च या पारयामच्छर्म या च ॥ १२ ॥
अभी नो अग्न उक्थमिज्जुगुर्या द्यावाक्षामा सिन्धवश्च स्वगूर्ताः।
गव्यं यव्यं यन्तो दीर्घाहेषं वरमरुण्यो वरन्त ॥ १३ ॥

[१४१] एकचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-३, ६, ११ जगती; ४, ७, ९, १० निचृज्जगती; ५ स्वराट्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६, ७, ९-११ निषादः; ५, ८ धैवतः; १२, १३ पञ्चमः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

बळित्था तद् वपुषे धायि दर्शतं देवस्य भर्गः सहसो यतो जनि।
यदीमुप ह्वरते साधते मतिर्ऋतस्य धेना अनयन्त सस्रुतः ॥ १ ॥
पृक्षो वपुः पितुमान्नित्य आ शये द्वितीयमा सप्तशिवासु मातृषु।
तृतीयमस्य वृषभस्य दोहसे दशप्रमतिं जनयन्त योषणः ॥ २ ॥
निर्यदीं बुध्नान्महिषस्य वर्पस ईशानासः शवसा क्रन्त सूरयः।
यदीमनु प्रदिवो मध्व आधवे गुहा सन्तं मातरिश्वा मथायति ॥ ३ ॥
प्र यत्पितुः परमान्नीयते पर्या पृक्षुधो वीरुधो दंसु रोहति।
उभा यदस्य जनुषं यदिन्वत आदिद्यविष्ठो अभवद् घृणा शुचिः ॥ ४ ॥
आदिन्मातृराविशद्यास्वा शुचिरहिंस्यमान उर्विया वि वावृधे।
अनु यत्पूर्वा अरुहत्सनाजुवो नि नव्यसीष्ववरासु धावते ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आदिद्धोतारं वृणते दिविष्टिषु भगमिव पपृचानास ऋञ्जते।
देवान्यत्क्रत्वा मज्मना पुरुष्टुतो मर्तं शंसं विश्वधा वेति धायसे ॥ ६ ॥
वि यदस्थाद्यजतो वातचोदितो ह्वारो न वक्वा जरणा अनाकृतः।
तस्य पत्मन्दक्षुषः कृष्णजंहसः शुचिजन्मनो रज आ व्यध्वनः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथो न यातः शिक्वभिः कृतो द्यामङ्गेभिररुषेभिरीयते ।
आदस्य ते कृष्णासो दक्षि सूरयः शूरस्येव त्वेषथादीषते वयः ॥ ८ ॥
त्वया ह्यग्ने वरुणो धृतव्रतो मित्रः शाशद्रे अर्यमा सुदानवः ।
यत्सीमनु क्रतुना विश्वथा विभुररान्न नेमिः परिभूरजायथाः ॥ ९ ॥
त्वमग्ने शशमानाय सुन्वते रत्नं यविष्ठ देवतातिमिन्वसि ।
तं त्वा नु नव्यं सहसो युवन्वयं भगं न कारे महिरत्न धीमहि ॥ १० ॥
अस्मे रयिं न स्वर्थं दमूनसं भगं दक्षं न पपृचासी धर्णसिम् ।
रश्मींरिव यो यमति जन्मनी उभे देवानां शंसमृत आ च सुक्रतुः ॥ ११ ॥
उत नः सुद्योत्मा जीराश्वो होता मन्द्रः शृणवच्चन्द्ररथः ।
स नो नेषन्नेषतमैरमूरोऽग्निर्वामं सुवितं वस्यो अच्छ ॥ १२ ॥
अस्तावि अग्निः शिमीवद्भिरर्कैः साम्राज्याय प्रतरं दधानः ।
अमी च ये मघवानो वयं च मिहं न सूरो अति निष्टतन्युः ॥ १३ ॥

[१४२] द्विचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—१-४ अग्निः; ५ बर्हिः; ६ देव्यो द्वारः; ७ उषासानक्ता; ८ दैव्यौ होतारौ; ९ सरस्वतीळाभारत्यः; १० त्वष्टा; ११ वनस्पतिः; १२ स्वाहाकृतिः; १३ इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ८, ९ निचृदनुष्टुप्; ३, ७, १०-१२ अनुष्टुप्; ४ स्वराडनुष्टुप्; १३ भुरिगुष्णिक् ॥
स्वरः—१-१२ गान्धारः; १३ ऋषभः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

समिद्धो अग्न आ वह देवाँ अद्य यतस्रुचे ।
तन्तुं तनुष्व पूर्व्यं सुतसोमाय दाशुषे ॥ १ ॥
घृतवन्तमुप मासि मधुमन्तं तनूनपात् ।
यज्ञं विप्रस्य मावतः शशमानस्य दाशुषः ॥ २ ॥
शुचिः पावको अद्भुतो मध्वा यज्ञं मिमिक्षति ।
नराशंसस्त्रिरा दिवो देवो देवेषु यज्ञियः ॥ ३ ॥
ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रमिह प्रियम् ।
इयं हि त्वा मतिर्ममाच्छा सुजिह्व वच्यते ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तृणानासो यतस्रुचो बर्हिर्यज्ञे स्वध्वरे ।
वृञ्जे देवव्यचस्तममिन्द्राय शर्म सप्रथः ॥ ५ ॥
वि श्रयन्तामृतावृधः प्रयै देवेभ्यो महीः ।
पावकासः पुरुस्पृहो द्वारो देवीरसश्चतः ॥ ६ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

आ भन्दमाने उषासा नक्तोषासा सुपेशसा ।
यह्वी ऋतस्य मातरा सीदतां बर्हिरा सुमत् ॥ ७ ॥
मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी होतारा दैव्या कवी ।
यज्ञं नो यक्षतामिमं सिध्रमद्य दिविस्पृशम् ॥ ८ ॥
शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती ।
इळा सरस्वती मही बर्हिः सीदन्तु यज्ञियाः ॥ ९ ॥
तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरु वारं पुरु त्मना ।
त्वष्टा पोषाय वि ष्यतु राये नाभा नो अस्मयुः ॥ १० ॥
अवसृजन्नुप त्मना देवान्यक्षि वनस्पते ।
अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः ॥ ११ ॥
पूषण्वते मरुत्वते विश्वदेवाय वायवे ।
स्वाहा गायत्रवेपसे हव्यमिन्द्राय कर्तन ॥ १२ ॥
स्वाहाकृतान्या गह्युप हव्यानि वीतये ।
इन्द्रा गहि श्रुधी हवं त्वां हवन्ते अध्वरे ॥ १३ ॥

[१४३] त्रिचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ७ निचृज्जगती; २, ३, ५ विराड्जगती; ४, ६ जगती; ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-७ निषादः; ८ धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्र तव्यसीं नव्यसीं धीतिमग्नये वाचो मतिं सहसः सूनवे भरे ।
अपां नपाद् यो वसुभिः सह प्रियो होता पृथिव्यां न्यसीददृत्वियः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स जाय॑मानः पर॒मे व्यो॑मन्या॒विर॒ग्निर॑भवन्मात॒रिश्व॑ने ।
अ॒स्य क्रत्वा॑ समिधा॒नस्य॑ म॒ज्मना॒ प्र द्यावा॑ शो॒चिः पृ॑थि॒वी अ॑रोचयत् ॥ २ ॥
अ॒स्य त्वे॒षा अ॒जरा॑ अ॒स्य भा॒नवः॑ सुसं॒दृशः॑ सु॒प्रती॑कस्य सु॒द्युतः॑ ।
भात्व॑क्षसो॒ अत्य॒क्तुर्न सिन्ध॑वो॒ऽग्ने रे॑जन्ते॒ अस॑सन्तो अ॒जराः॑ ॥ ३ ॥
यमे॑रि॒रे भृग॑वो वि॒श्ववे॑दसं॒ नाभा॑ पृथि॒व्या भुव॑नस्य म॒ज्मना॑ ।
अ॒ग्निं तं गी॒र्भिर्हि॑नुहि॒ स्व आ दमे॒ य एको॒ वस्वो॒ वरु॑णो॒ न राज॑ति ॥ ४ ॥
न यो वरा॑य म॒रुता॑मिव स्व॒नः सेने॑व सृ॒ष्टा दि॒व्या यथा॒शनिः॑ ।
अ॒ग्निर्जम्भै॑स्तिगि॒तैर॑त्ति॒ भर्व॑ति यो॒धो न शत्रू॒न्त्स वना॒ न्यृ॑ञ्जते ॥ ५ ॥
कु॒विन्नो॑ अ॒ग्निरु॒चथ॑स्य॒ वीरस॒द्वसु॑ष्कु॒विद्वसु॑भिः काम॑मा॒वर॑त् ।
चो॒दः कु॒वित्तु॑तु॒ज्यात्सा॒तये॒ धियः॒ शुचि॑प्रतीकं॒ तम॒या धि॒या गृ॑णे ॥ ६ ॥
घृ॒तप्र॑तीकं व ऋ॒तस्य॑ धू॒र्षद॑म॒ग्निं मि॒त्रं न स॑मिधा॒न ऋ॑ञ्जते ।
इन्धा॑नो अ॒क्रो वि॒दथे॑षु॒ दीद्य॑च्छु॒क्रव॑र्णा॒मुदु॑ नो यंसते॒ धिय॑म् ॥ ७ ॥
अप्र॑युच्छ॒न्नप्र॑युच्छद्भिरग्ने शि॒वेभि॑र्नः पा॒युभिः॑ पाहि श॒ग्मैः ।
अद॑ब्धेभि॒रदृ॑पितेभिरि॒ष्टेऽनि॑मिषद्भिः॒ परि॑ पाहि नो॒ जाः ॥ ८ ॥

[१४४] चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३-५, ७ निचृज्जगती; २ जगती; ६ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५, ७ निषादः; ६ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

एति॒ प्र होता॑ व्र॒तम॑स्य मा॒ययो॒र्ध्वां दधा॑नः॒ शुचि॑पेशसं॒ धिय॑म् ।
अ॒भि स्रुचः॑ क्रमते दक्षिणा॒वृतो॒ या अ॑स्य॒ धाम॑ प्रथ॒मं ह॒ निंस॑ते ॥ १ ॥
अ॒भीमृ॒तस्य॑ दो॒हना॑ अनूषत॒ योनौ॑ दे॒वस्य॒ सद॑ने॒ परी॑वृताः ।
अ॒पामु॒पस्थे॒ विभृ॑तो॒ यदाव॑स॒दध॑ स्व॒धा अ॑धय॒द्याभि॒रीय॑ते ॥ २ ॥
युयू॑षतः॒ सव॑यसा॒ तदिद्वपुः॑ समा॒नमर्थं॑ वि॒तरि॑त्रता मि॒थः ।
आदीं॒ भगो॒ न हव्यः॒ सम॒स्मदा वोळ्हु॒र्न र॒श्मीन्त्सम॑यंस्त॒ सार॑थिः ॥ ३ ॥
यमीं॒ द्वा सव॑यसा सप॒र्यतः॑ समा॒ने योना॑ मिथु॒ना समो॑कसा ।
दिवा॒ न नक्तं॑ पलि॒तो युवा॑जनि पु॒रू चर॑न्न॒जरो॒ मानु॑षा यु॒गा ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमीं हिन्वन्ति धीतयो दश व्रिशो देवं मर्तास ऊतये हवामहे।
धनोरधिं प्रवत आ स ऋण्वत्यभिव्रजद्भिर्वयुना नवाधित ॥ ५ ॥
त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य राजसि त्वं पार्थिवस्य पशुपाइव त्मना।
एनी त एते बृहती अभिश्रिया हिरण्ययी वक्वरी बर्हिराशाते ॥ ६ ॥
अग्ने जुषस्व प्रति हर्य तद्वचो मन्द्र स्वधावऋतजात सुक्रतो।
यो विश्वतः प्रत्यङ्ङसि दर्शतो रण्वः संदृष्टौ पितुमाँइव क्षयः ॥ ७ ॥

[१४५] पञ्चचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ५ निचृज्जगती; ३, ४ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५ निषादः; ३, ४ धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

तं पृच्छता स जगामा स वेद स चिकित्वाँ ईयते सा न्वीयते ।
तस्मिन्त्सन्ति प्रशिषस्तस्मिन्निष्टयः स वाजस्य शवसः शुष्मिणस्पतिः ॥ १ ॥
तमित्पृच्छन्ति न सिमो वि पृच्छति स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत्।
न मृष्यते प्रथमं नापरं वचोऽस्य क्रत्वा सचते अप्रदूषितः ॥ २ ॥
तमिद्वच्छन्ति जुह्वस्तमर्वतीर्विश्वान्येकः शृणवद्वचांसि मे ।
पुरुप्रैषस्तनूरियज्ञसाधनोऽच्छिद्रोतिः शिशुरादत्त सं रभः ॥ ३ ॥
उपस्थाय चरति यत्समारत सद्यो जातस्तत्सार युज्येभिः ।
अभि श्वान्तं मृशते नान्द्यो मुदे यदीं गच्छन्त्युशतीरपिष्ठितम् ॥ ४ ॥
स ईं मृगो अप्यो वनर्गुरुप त्वच्युपमस्यां नि धायि ।
व्यब्रवीद्वयुना मर्त्येभ्योऽग्निर्विद्वाँ ऋतचिद्धि सत्यः ॥ ५ ॥

[१४६] षट्चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिं गृणीषेऽनूनमग्निं पित्रोरुपस्थे ।
निषत्तमस्य चरतो ध्रुवस्य विश्वा दिवो रोचनापप्रिवांसम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्षा महाँ अभि ववक्ष एने अजरस्तस्थावितऊतिर्ऋष्वः ।
उर्व्याः पदो नि दधाति सानौ रिहन्त्यूधो अरुषासो अस्य ॥ २ ॥
समानं वत्समभि संचरन्ती विष्वग्धेनू वि चरतः सुमेके ।
अनपवृज्याँ अध्वनो मिमाने विश्वान्केताँ अधि महो दधाने ॥ ३ ॥
धीरासः पदं कवयो नयन्ति नाना हृदा रक्षमाणा अजुर्यम् ।
सिषासन्तः पर्यपश्यन्त सिन्धुमाविरेभ्यो अभवत्सूर्यो नॄन् ॥ ४ ॥
दिदृक्षेण्यः परि काष्ठासु जेन्य ईळेन्यो महो अर्भाय जीवसे ।
पुरुत्रा यदभवत्सूरहैभ्यो गर्भेभ्यो मघवा विश्वदर्शतः ॥ ५ ॥

[१४७] सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३-५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

कथा ते अग्ने शुचयन्त आयोर्ददाशुर्वाजेभिराशुषाणाः ।
उभे यत्तोके तनये दधाना ऋतस्य सामन्रणयन्त देवाः ॥ १ ॥
बोधा मे अस्य वचसो यविष्ठ मंहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः ।
पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति वन्दारुस्ते तन्वं वन्दे अग्ने ॥ २ ॥
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन् ।
ररक्ष तान्त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः ॥ ३ ॥
यो नो अग्ने अररिवाँ अघायुररातीवा मर्चयति द्वयेन ।
मन्त्रो गुरुः पुनरस्तु सो अस्मा अनु मृक्षीष्ट तन्वं दुरुक्तैः ॥ ४ ॥
उत वा यः सहस्य प्रविद्वान् मर्तो मर्तं मर्चयति द्वयेन ।
अतः पाहि स्तवमान स्तुवन्तमग्ने माकिर्नो दुरिताय धायीः ॥ ५ ॥

[१४८] अष्टचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५ पञ्चमः; ३, ४ धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

मथीद्यदीं विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं विश्वदेव्यम्।
नि यं दधुर्मनुष्यासु विक्षु स्वर्ण चित्रं वपुषे विभावम्॥ १॥
ददानमिन्न ददभन्त मन्माग्निर्वरूथं मम तस्य चाकन्।
जुषन्त विश्वान्यस्य कर्मोपस्तुतिं भरमाणस्य कारोः॥ २॥
नित्ये चिन्नु यं सदने जगृभ्रे प्रशस्तिभिर्दधिरे यज्ञियासः।
प्र सू नयन्त गृभयन्त इष्टावश्वासो न रथ्यो रारहाणाः॥ ३॥
पुरूणि दस्मो नि रिणाति जम्भैराद्रोचते वन आ विभावा।
आदस्य वातो अनु वाति शोचिरस्तुर्न शर्यामसनामनु द्यून्॥ ४॥
न यं रिपवो न रिषण्यवो गर्भे सन्तं रेषणा रेषयन्ति।
अन्धा अपश्या न ददभन्नभिख्या नित्यास ईं प्रेतारो अरक्षन्॥ ५॥

[१४९] एकोनपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ भुरिगनुष्टुप्; २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३ उष्णिक्; ५ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४; ५ गान्धारः; ३ ऋषभः॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

महः स राय एषते पतिर्दन्निन इनस्य वसुनः पद आ ।
उप ध्रजन्तमद्रयो विधन्नित् ॥ १॥
स यो वृषा नरां न रोदस्योः श्रवोभिरस्ति जीवपीतसर्गः ।
प्र यः ससत्राणः शिशीत योनौ ॥ २॥
आ यः पुरं नार्मिणीमदीदेदत्यः कविर्नभन्योऽ३ नावा ।
सूरो न रुरुक्वाञ्छतात्मा ॥ ३॥
अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात्।
होता यजिष्ठो अपां सधस्थे ॥ ४॥
अयं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दधे वार्याणि श्रवस्या ।
मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश ॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१५०] पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३ भुरिग्गायत्री; २ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३ षड्जः; २ ऋषभः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

पुरु त्वा दाश्वान्वोचेऽ रिरग्ने तव स्विदा । तोदस्येव शरण आ महस्य ॥ १ ॥
व्यनिनस्य धनिनः प्रहोषे चिदरुषः । कदा चन प्रजिगतो अदेवयोः ॥ २ ॥
स चन्द्रो विप्र मर्त्यो महो व्राधन्तमो दिवि । प्रप्रेत्ते अग्ने वनुषः स्याम ॥ ३ ॥

[१५१] एकपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २-५ विराड्जगती; ६, ७ जगती; ८, ९ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१ धैवतः; २-९ निषादः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

मित्रं न यं शिम्या गोषु गव्यवः स्वाध्यो विदथे अप्सु जीजनन् ।
अरेजेतां रोदसी पाजसा गिरा प्रति प्रियं यजतं जनुषामवः ॥ १ ॥
यद्ध त्यद्वां पुरुमीळ्हस्य सोमिनः प्र मित्रासो न दधिरे स्वाभुवः ।
अध क्रतुं विदतं गातुमर्चत उत श्रुतं वृषणा पस्त्यावतः ॥ २ ॥
आ वां भूषन्क्षितयो जन्म रोदस्योः प्रवाच्यं वृषणा दक्षसे महे ।
यदीमृताय भरथो यदर्वते प्र होत्रया शिम्या वीथो अध्वरम् ॥ ३ ॥
प्र सा क्षितिरसुर या महि प्रिय ऋतावानावृतमा घोषथो बृहत् ।
युवं दिवो बृहतो दक्षमाभुवं गां न धुर्युप युञ्जाथे अपः ॥ ४ ॥
मही अत्र महिना वारमृण्वथोऽ रेणवस्तुज आ सद्मन्धेनवः ।
स्वरन्ति ता उपरताति सूर्यमा निम्रुचः उषसस्तक्ववीरिव ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

आ वामृताय केशिनीरनूषत मित्र यत्र वरुण गातुमर्चथः ।
अव त्मना सृजतं पिन्वतं धियो युवं विप्रस्य मन्मनामिरज्यथः ॥ ६ ॥
यो वां यज्ञैः शशमानो ह दाशति कविर्होता यजति मन्मसाधनः ।
उपाह तं गच्छथो वीथो अध्वरमच्छा गिरः सुमतिं गन्तमस्मयू ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवां यज्ञैः प्रथमा गोभिरञ्जत ऋतावाना मनसो न प्रयुक्तिषु।
भरन्ति वां मन्मना संयता गिरोऽदृप्यता मनसा रेवदाशाथे ॥ ८ ॥
रेवद्वयो दधाथे रेवदाशाथे नरा मायाभिरितऊति माहिनम्।
न वां द्यावोऽहभिर्नोत सिन्धवो न देवत्वं पणयो नानशुर्मघम् ॥ ९ ॥

[१५२] द्विपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २, ४-६ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

युवं वस्त्राणि पीवसा वसाथे युवोरच्छिद्रा मन्तवो ह सर्गाः।
अवातिरतमनृतानि विश्वर्तेन मित्रावरुणा सचेथे ॥ १ ॥
एतच्चन त्वो वि चिकेतदेषां सत्यो मन्त्रः कविशस्त ऋधावान्।
त्रिरश्रिं हन्ति चतुरश्रिरुग्रो देवनिदो ह प्रथमा अजूर्यन् ॥ २ ॥
अपादेति प्रथमा पद्वतीनां कस्तद्वां मित्रावरुणा चिकेत।
गर्भो भारं भरत्या चिदस्य ऋतं पिपर्त्यनृतं नि तारीत् ॥ ३ ॥
प्रयन्तमित्परि जारं कनीनां पश्यामसि नोपनिपद्यमानम्।
अनवपृग्णा वितता वसानं प्रियं मित्रस्य वरुणस्य धाम ॥ ४ ॥
अनश्वो जातो अनभीशुरर्वा कनिक्रदत्पतयदूर्ध्वसानुः।
अचित्तं ब्रह्म जुजुषुर्युवानः प्र मित्रे धाम वरुणे गृणन्तः ॥ ५ ॥
आ धेनवो मामतेयमवन्तीर्ब्रह्मप्रियं पीपयन्त्सस्मिन्नूधन्।
पित्वो भिक्षेत वयुनानि विद्वानासाविवासन्नदितिमुरुष्येत् ॥ ६ ॥
आ वां मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं नमसा देवावसा ववृत्याम्।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु सह्या अस्माकं वृष्टिर्दिव्या सुपारा ॥ ७ ॥

[१५३] त्रिपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४ पञ्चमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

यजामहे वां महः सजोषा हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।
घृतैर्घृतस्नू अध यद्वामस्मे अध्वर्यवो न धीतिभिर्भरन्ति ॥ १ ॥
प्रस्तुतिर्वां धाम न प्रयुक्तिरयामि मित्रावरुणा सुवृक्तिः ।
अनक्ति यद्वां विदथेषु होता सुम्नं वां सूरिर्वृषणावियक्षन् ॥ २ ॥
पीपाय धेनुरदितिर्ऋताय जनाय मित्रावरुणा हविर्दे ।
हिनोति यद्वां विदथे सपर्यन्त्स रातहव्यो मानुषो न होता ॥ ३ ॥
उत वां विक्षु मद्यास्वन्धो गाव आपश्च पीपयन्त देवीः ।
उतो नो अस्य पूर्व्यः पतिर्दन्वीतं पातं पयस उस्त्रियायाः ॥ ४ ॥

[१५४] चतुष्पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—१, २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजांसि ।
यो अस्कभायदुत्तरं सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायः ॥ १ ॥
प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ २ ॥
प्र विष्णवे शूषमेतु मन्म गिरिक्षित उरुगायाय वृष्णे ।
य इदं दीर्घं प्रयतं सधस्थमेको विममे त्रिभिरित्पदेभिः ॥ ३ ॥
यस्य त्री पूर्णा मधुना पदान्यक्षीयमाणा स्वधया मदन्ति ।
य उ त्रिधातु पृथिवीमुत द्यामेको दाधार भुवनानि विश्वा ॥ ४ ॥
तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
उरुक्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः ॥ ५ ॥
ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः ।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१५५] पञ्चपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—१, ३, ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ निचृज्जगती; ४ स्वराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३-६ धैवतः; २ निषादः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

प्र वः पान्तमन्धसो धियायते महे शूराय विष्णवे चार्चत ।
या सानुनि पर्वतानामदाभ्या महस्तस्थतुरर्वतेव साधुना ॥ १ ॥
त्वेषमित्था समरणं शिमीवतोरिन्द्राविष्णू सुतपा वामुरुष्यति ।
या मर्त्याय प्रतिधीयमानमित्कृशानोरस्तुरसनामुरुष्यथः ॥ २ ॥
ता ईं वर्धन्ति महयस्य पौंस्यं नि मातरा नयति रेतसे भुजे ।
दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ॥ ३ ॥
तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसीनस्य त्रातुरवृकस्य मीळ्हुषः ।
यः पार्थिवानि त्रिभिरिद्विगामभिरुरु क्रमिष्टोरुगायाय जीवसे ॥ ४ ॥
द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशोऽभिख्याय मर्त्यो भुरण्यति ।
तृतीयमस्य नकिरा दधर्षति वयश्चन पतयन्तः पतत्रिणः ॥ ५ ॥
चतुर्भिः साकं नवतिं च नामभिश्चक्रं न वृत्तं व्यतीँरवीविपत् ।
बृहच्छरीरो विमिमान ऋक्वभिर्युवाकुमारः प्रत्येत्याहवम् ॥ ६ ॥

[१५६] षट्पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृज्जगती; ४ जगती; ५ स्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५ धैवतः; ३, ४ निषादः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

भवा मित्रो न शेव्यो घृतासुतिर्विभूतद्युम्न एवया उ सप्रथाः ।
अधा ते विष्णो विदुषा चिदर्ध्यः स्तोमो यज्ञश्च राध्यो हविष्मता ॥ १ ॥
यः पूर्व्याय वेधसे नवीयसे सुमज्जानये विष्णवे ददाशति ।
यो जातमस्य महतो महि ब्रवत्सेदु श्रवोभिर्युज्यं चिदभ्यसत् ॥ २ ॥
तमु स्तोतारः पूर्व्यं यथा विद ऋतस्य गर्भं जनुषा पिपर्तन ।
आस्य जानन्तो नाम चिद्विवक्तन महस्ते विष्णो सुमतिं भजामहे ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमस्य राजा वरुणस्तमश्विना क्रतुं सचन्त मारुतस्य वेधसः ।
दाधार दक्षमुत्तममहर्विदं व्रजं च विष्णुः सखिवाँ अपोर्णुते ॥ ४ ॥
आ यो विवाय सचथाय दैव्य इन्द्राय विष्णुः सुकृते सुकृत्तरः ।
वेधा अजिन्वत्रिषधस्थ आर्यमृतस्य भागे यजमानमाभजत् ॥ ५ ॥

द्वाविंशोऽनुवाकः [१५७] सप्तपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ४ जगती; ३ निचृज्जगती; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ५, ६ धैवतः; २-४ निषादः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अबोध्यग्निर्जम उदेति सूर्यो व्युषाश्चन्द्रा महावो अर्चिषा ।
आयुक्षाताश्विना यातवे रथं प्रासावीद्देवः सविता जगत्पृथक् ॥ १ ॥
यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम् ।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि ॥ २ ॥
अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः ।
त्रिबन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे ॥ ३ ॥
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवं मधुमत्या नः कशया मिमिक्षतम् ।
प्रायुस्तारिष्टं नी रपांसि मृक्षतं सेधतं द्वेषो भवतं सचाभुवा ॥ ४ ॥
युवं ह गर्भं जगतीषु धत्थो युवं विश्वेषु भुवनेष्वन्तः ।
युवमग्निं च वृषणावपश्च वनस्पतीँरश्विनावैरयेथाम् ॥ ५ ॥
युवं ह स्थो भिषजा भेषजेभिरथो ह स्थो रथ्या राथ्येभिः ।
अथो ह क्षत्रमधि धत्थ उग्रा यो वां हविष्मान्मनसा ददाश ॥ ६ ॥

इति द्वितीयाष्टके द्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयाष्टके तृतीयोऽध्यायः

[१५८] अष्टपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमा औचथ्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धैवतः; ३ पञ्चमः; ६ गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

वसू रुद्रा पुरुमन्तू वृधन्ता दशस्यतं नो वृषणावभिष्टौ ।
दस्रा ह यद्रेक्ण औचथ्यो वां प्र यत्सस्राथे अकवाभिरूती ॥ १ ॥
को वां दाशत्सुमतये चिदस्यै वसू यद्धेथे नमसा पदे गोः ।
जिगृतमस्मे रेवतीः पुरन्धीः कामप्रेणेव मनसा चरन्ता ॥ २ ॥
युक्तो ह यद्वां तौग्र्याय पेरुर्वि मध्ये अर्णसो धायि पज्रः ।
उप वामवः शरणं गमेयं शूरो नाज्म पतयद्भिरेवैः ॥ ३ ॥
उपस्तुतिरौचथ्यमुरुष्येन्मा मामिमे पतत्रिणी वि दुग्धाम् ।
मा मामेधो दशतयश्चितो धाक् प्र यद्वां बद्धस्त्मनि खादति क्षाम् ॥ ४ ॥
न मा गरन्नद्यो मातृतमा दासा यदीं सुसमुब्धमवाधुः ।
शिरो यदस्य त्रैतनो वितक्षत्स्वयं दास उरो अंसावपि ग्ध ॥ ५ ॥
दीर्घतमा मामतेयो जुजुर्वान् दशमे युगे ।
अपामर्थं यतीनां ब्रह्मा भवति सारथिः ॥ ६ ॥

[१५९] एकोनषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ३, ५ निचृज्जगती; ४ जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

प्र द्यावा यज्ञैः पृथिवी ऋतावृधा मही स्तुषे विदथेषु प्रचेतसा ।
देवेभिर्ये देवपुत्रे सुदंससेत्था धिया वार्याणि प्रभूषतः ॥ १ ॥
उत मन्ये पितुरद्रुहो मनो मातुर्महि स्वतवस्तद्धवीमभिः ।
सुरेतसा पितरा भूम चक्रतुरुरु प्रजाया अमृतं वरीमभिः ॥ २ ॥
ते सूनवः स्वपसः सुदंससो मही जज्ञुर्मातरा पूर्वचित्तये ।
स्थातुश्च सत्यं जगतश्च धर्मणि पुत्रस्य पाथः पदमद्वयाविनः ॥ ३ ॥
ते मायिनो ममिरे सुप्रचेतसो जामी सयोनी मिथुना समोकसा ।
नव्यंनव्यं तन्तुमा तन्वते दिवि समुद्रे अन्तः कवयः सुदीतयः ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्राधो॑ अ॒द्य स॑वि॒तुर्वरे॑ण्यं व॒यं दे॒वस्य॑ प्रस॒वे म॑नामहे।
अ॒स्मभ्यं॑ द्यावापृथिवी सुचे॒तुना॑ र॒यिं ध॑त्तं॒ वसु॑मन्तं शत॒ग्विन॑म्॥ ५॥

[१६०] षष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २-५ निचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

ते हि द्यावा॑पृथि॒वी वि॒श्वशं॑भुव ऋ॒ताव॑री॒ रज॑सो धार॒यत्क॑वी।
सु॒जन्म॑नी धि॒षणे॑ अ॒न्तरी॑यते दे॒वो दे॒वी धर्म॑णा॒ सूर्यः॒ शुचिः॑॥ १॥
उ॒रु॒व्यच॑सा म॒हिनी॑ अस॒श्चता॑ पि॒ता मा॒ता च॒ भुव॑नानि रक्षतः।
सु॒धृष्ट॑मे वपु॒ष्ये॒३॒॑ न रोद॑सी पि॒ता यत्सी॑म॒भि रू॒पैरवा॑सयत्॥ २॥
स वह्निः॑ पु॒त्रः पि॒त्रोः प॒वित्र॑वान् पु॒नाति॒ धीरो॒ भुव॑नानि मा॒यया॑।
धे॒नुं च॒ पृश्निं॑ वृष॒भं सु॒रेत॑सं वि॒श्वाहा॑ शु॒क्रं पयो॑ अस्य दुक्षत॥ ३॥
अ॒यं दे॒वाना॑म॒पसा॑म॒पस्त॑मो॒ यो ज॒जान॒ रोद॑सी वि॒श्वशं॑भुवा।
वि यो म॒मे रज॑सी सुक्रतू॒यया॒जरे॑भिः॒ स्कम्भ॑नेभिः॒ समा॑नृचे॥ ४॥
ते नो॑ गृणा॒ने म॑हिनी॒ महि॒ श्रवः॑ क्ष॒त्रं द्या॑वापृथिवी धासथो बृ॒हत्।
येना॒भि कृ॒ष्टिस्त॒तना॑म वि॒श्वहा॑ प॒नाय्य॒मोजो॑ अ॒स्मे समि॑न्वतम्॥ ५॥

[१६१] एकषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः॥ देवता—ऋभवः॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २, ५, ६, ८, १२ निचृज्जगती; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, १३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ७, १० जगती; ९ स्वराट्त्रिष्टुप्; ११ त्रिष्टुप्; १४ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ५-८, १०, १२ निषादः; ३, ४, ९, ११, १३ धैवतः; १४ पञ्चमः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ३॥

किमु॒ श्रेष्ठः॒ किं यवि॑ष्ठो न॒ आज॑ग॒न्किमी॑यते दू॒त्यं१॒॑ कद्यदू॑चि॒म।
न नि॑न्दिम चम॒सं यो म॑हाकु॒लोऽग्ने॑ भ्रात॒र्द्रुण॒ इद्भू॒तिमू॑दिम ॥ १॥
एकं॑ चम॒सं च॒तुरः॑ कृणोतन॒ तद्वो॑ दे॒वा अ॑ब्रुव॒न्तद्व॒ आग॑मम्।
सौध॑न्वना॒ यद्ये॒वा क॑रि॒ष्यथ॑ सा॒कं दे॒वैर्य॒ज्ञिया॑सो भविष्यथ ॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निं दूतं प्रति यदब्रवीतनाश्वः कर्त्वो रथ उतेह कर्त्वः ।
धेनुः कर्त्वी युवशा कर्त्वा द्वा तानि भ्रातरनु वः कृत्व्येमसि ॥ ३ ॥
चकृवांस ऋभवस्तदपृच्छत क्वेदभूद्यः स्य दूतो न आजगन् ।
यदावाख्यच्चमसाञ्चतुरः कृतानादित्त्वष्ट ग्नास्वन्तर्न्यीनजे ॥ ४ ॥
हनामैनाँ इति त्वष्टा यदब्रवीच्चमसं ये देवपानमनिन्दिषुः ।
अन्या नामानि कृण्वते सुते सचाँ अन्यैरेनान् कन्याइ३ नामभिः स्परत् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

इन्द्रो हरी युयुजे अश्विना रथं बृहस्पतिर्विश्वरूपामुषासम् ।
ऋभुर्विभ्वा वाजो देवाँ अगच्छत स्वपसो यज्ञियं भागमैतन ॥ ६ ॥
निश्चर्मणो गामरिणीत धीतिभिर्या जरन्ता युवशा ताकृणोतन ।
सौधन्वना अश्वादश्वमतक्षत युक्त्वा रथमुप देवाँ अयातन ॥ ७ ॥
इदमुदकं पिबतेत्यब्रवीतनेदं वा घा पिबता मुञ्जनेजनम् ।
सौधन्वना यदि तन्नेव हर्यथ तृतीये घा सवने मादयाध्वै ॥ ८ ॥
आपो भूयिष्ठा इत्येको अब्रवीदग्निर्भूयिष्ठ इत्यन्यो अब्रवीत् ।
वधर्यन्तीं बहुभ्यः प्रैको अब्रवीदृता वदन्तश्चमसाँ अपिंशत ॥ ९ ॥
श्रोणामेक उदकं गामवाजति मांसमेकः पिंशति सूनयाभृतम् ।
आ निम्रुचः शकृदेको अपाभरत्किं स्वित्पुत्रेभ्यः पितरा उपावतुः ॥ १० ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

उद्वत्स्वस्मा अकृणोतना तृणं निवत्स्वपः स्वपस्यया नरः ।
अगोह्यस्य यदसस्तना गृहे तदद्येदमृभवो नानु गच्छथ ॥ ११ ॥
संमील्य यद्भुवना पर्यसर्पत क्व स्वित्ता त्या पितरा व आसतुः ।
अशपत यः करस्ने व आददे यः प्राब्रवीत्प्रो तस्मा अब्रवीत ॥ १२ ॥
सुषुप्वांस ऋभवस्तदपृच्छतागोह्य क इदं नो अबूबुधत् ।
श्वानं बस्तो बोधयितारमब्रवीत्संवत्सर इदमद्या व्यख्यत ॥ १३ ॥
दिवा यान्ति मरुतो भूम्याग्निरयं वातो अन्तरिक्षेण याति ।
अद्भिर्याति वरुणः समुद्रैर्युष्माँ इच्छन्तः शवसो नपातः ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१६२] द्विषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—मित्रादयो लिङ्गोक्ताः ॥ छन्दः—१, २, ९, १०, १७, २० निचृत्त्रिष्टुप्; ३ निचृज्जगती; ४, ७, ८, १८ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६, ११, २१ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२ स्वराट्त्रिष्टुप्; १३, १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १५, १९, २२ स्वराट्पङ्क्तिः; १६ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४-१२, १७, १८, २०, २१ धैवतः; ३ निषादः; १३-१६, १९, २२ पञ्चमः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतः परि ख्यन्।
यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तेः प्रवक्ष्यामो विदथे वीर्याणि ॥ १ ॥
यन्निर्णिजा रेक्णसा प्रावृतस्य रातिं गृभीतां मुखतो नयन्ति।
सुप्राङजो मेम्यद्विश्वरूप इन्द्रापूष्णोः प्रियमप्येति पाथः ॥ २ ॥
एष च्छागः पुरो अश्वेन वाजिना पूष्णो भागो नीयते विश्वदेव्यः।
अभिप्रियं यत्पुरोळाशमर्वता त्वष्टेदेनं सौश्रवसाय जिन्वति ॥ ३ ॥
यद्धविष्यमृतुशो देवयानं त्रिर्मानुषाः पर्यश्वं नयन्ति ।
अत्रा पूष्णः प्रथमो भाग एति यज्ञं देवेभ्यः प्रतिवेदयन्नजः ॥ ४ ॥
होताध्वर्युरावया अग्निमिन्धो ग्रावग्राभ उत शंस्ता सुविप्रः ।
तेन यज्ञेन स्वरंकृतेन स्विष्टेन वक्षणा आ पृणध्वम् ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यूपव्रस्का उत ये यूपवाहाश्चषालं ये अश्वयूपाय तक्षति।
ये चार्वते पचनं संभरन्त्युतो तेषामभिगूर्तिर्न इन्वतु ॥ ६ ॥
उप प्रागात्सुमन्मेऽधायि मन्म देवानामाशा उप वीतपृष्ठः ।
अन्वेनं विप्रा ऋषयो मदन्ति देवानां पुष्टे चकृमा सुबन्धुम् ॥ ७ ॥
यद्वाजिनो दाम संदानमर्वतो या शीर्षण्या रशना रज्जुरस्य।
यद्वा घास्य प्रभृतमास्ये३ तृणं सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥ ८ ॥
यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति।
यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदूवध्यमुदरस्यापवाति य आमस्य क्रविषो गन्धो अस्ति।
सुकृता तच्छमितारः कृणवन्तूत मेधं शृतपाकं पचन्तु॥ १०॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

यत्ते गात्रादग्निना पच्यमानादभि शूलं निहतस्यावधावति।
मा तद्भूम्यामा श्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु॥ ११॥
ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं य ईमाहुः सुरभिर्निर्हरेति।
ये चार्वतो मांसभिक्षामुपासत उतो तेषामभिगूर्तिर्न इन्वतु॥ १२॥
यन्नीक्षणं मांस्पचन्या उखाया या पात्राणि यूष्ण आसेचनानि।
ऊष्मण्यापिधाना चरूणामङ्काः सूनाः परि भूषन्त्यश्वम्॥ १३॥
निक्रमणं निषदनं विवर्तनं यच्च पड्बीशमर्वतः।
यच्च पपौ यच्च घासिं जघास सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु॥ १४॥
मा त्वाग्निर्ध्वनयीद् धूमगन्धिर्मोखा भ्राजन्त्यभि विक्त जघ्रिः।
इष्टं वीतमभिगूर्तं वषट्कृतं तं देवासः प्रति गृभ्णन्त्यश्वम्॥ १५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

यदश्वाय वास उपस्तृणन्त्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै।
सन्दानमर्वन्तं पड्बीशं प्रिया देवेष्वा यामयन्ति॥ १६॥
यत्ते सादे महसा शूकृतस्य पार्ष्ण्या वा कशया वा तुतोद।
स्रुचेव ता हविषो अध्वरेषु सर्वा ता ते ब्रह्मणा सूदयामि॥ १७॥
चतुस्त्रिंशद्वाजिनो देवबन्धोर्वङ्क्रीरश्वस्य स्वधितिः समेति।
अच्छिद्रा गात्रा वयुना कृणोत परुष्परुरनुघुष्या वि शस्त॥ १८॥
एकस्त्वष्टुरश्वस्या विशस्ता द्वा यन्तारा भवतस्तथ ऋतुः।
या ते गात्राणामृतुथा कृणोमि ताता पिण्डानां प्र जुहोम्यग्नौ॥ १९॥
मा त्वा तपत्प्रिय आत्मापियन्तं मा स्वधितिस्तन्व१ आ तिष्ठिपत्ते।
मा ते गृध्नुरविशस्तातिहाय छिद्रा गात्राण्यसिना मिथू कः॥ २०॥
न वा उ एतन्म्रियसे न रिष्यसि देवाँ इदेषि पथिभिः सुगेभिः।
हरी ते युञ्जा पृषती अभूतामुपास्थाद्वाजी धुरि रासभस्य॥ २१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुगव्यं नो वाजी स्वश्व्यं पुंसः पुत्राँ उत विश्वापुषं रयिम्।
अनागास्त्वं नो अदितिः कृणोतु क्षत्रं नो अश्वो वनतां हविष्मान्॥ २२॥

[१६३] त्रिषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः॥ देवता—अश्वोऽग्निः॥ छन्दः—१, ६, ७, १३ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ४, १०, १२ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ५-९, ११, १३ धैवतः; ४, १०, १२ पञ्चमः॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्॥ १॥
यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत्।
गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात्सूरादश्वं वसवो निरतष्ट॥ २॥
असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन।
असि सोमेन समया विपृक्त आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि॥ ३॥
त्रीणि त आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे।
उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन् यत्रा त आहुः परमं जनित्रम्॥ ४॥
इमा ते वाजिन्नवमार्जनानीमा शफानां सनितुर्निधाना।
अत्रा ते भद्रा रशना अपश्यमृतस्य या अभिरक्षन्ति गोपाः॥ ५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

आत्मानं ते मनसारादजानामवो दिवा पतयन्तं पतङ्गम्।
शिरो अपश्यं पथिभिः सुगेभिररेणुभिर्जेहमानं पतत्रि॥ ६॥
अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यं जिगीषमाणमिष आ पदे गोः।
यदा ते मर्तो अनु भोगमानळादिद् ग्रसिष्ठ ओषधीरजीगः॥ ७॥
अनु त्वा रथो अनु मर्यो अर्वन्ननु गावोऽनु भगः कनीनाम्।
अनु व्रातासस्तव सख्यमीयुरनु देवा ममिरे वीर्यं ते॥ ८॥
हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य पादा मनोजवा अवर इन्द्र आसीत्।
देवा इदस्य हविरद्यमायन्यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत्॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमासः सं शूरणासो दिव्यासो अत्याः।
हंसाइव श्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः ॥ १० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् तव चित्तं वातइव ध्रजीमान्।
तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति ॥ ११ ॥
उप प्रागाच्छसनं वाज्यर्वी देवद्रीचा मनसा दीध्यानः।
अजः पुरो नीयते नाभिरस्यानु पश्चात्कवयो यन्ति रेभाः ॥ १२ ॥
उप प्रागात्परमं यत्सधस्थमर्वाँ अच्छा पितरं मातरं च।
अद्या देवाञ्जुष्टतमो हि गम्या अथा शास्ते दाशुषे वार्याणि ॥ १३ ॥

[१६४] चतुःषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दीर्घतमाः ॥ देवता—१-४१ विश्वे देवाः; ४२ (पूर्वार्धस्य), ४२ (उत्तरार्धस्य) ४५ वाक्; आपः; ४३ (पूर्वार्धस्य) शकधूमः, (उत्तरार्धस्य) सोमः; ४४ अग्निः सूर्यो वायुश्च; ४६, ४७ सूर्यः; ४८ संवत्सरात्मा कालः; ४९ सरस्वती; ५० साध्याः; ५१ सूर्यः पर्जन्योऽअग्नयो वा; ५२ सरस्वान् सूर्यो वा ॥ छन्दः—१, ९, २७, ३५, ४०, ५० विराट्त्रिष्टुप्; २, १०, १३, १६, १७, १९, २१, २४, २८, ३२, ५२ त्रिष्टुप्; ३-८, ११, १८, २६, ३१, ३३, ३४, ३७, ४३, ४६, ४७, ४९ निचृत्त्रिष्टुप्; १२, १५, २३ जगती; १४, ३९, ४१, ४४, ४५ भुरिक्त्रिष्टुप्; २० भुरिक्पङ्क्तिः; २२, २५, ४८ स्वराट्पङ्क्तिः; २९, ३६ निचृज्जगती; ३०, ३८ पङ्क्तिः; ४२ भुरिग्बृहती; ५१ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-११, १३, १४, १६-१९, २१, २४, २६-२८, ३१-३५, ३७, ३९-४१, ४३-४७, ४९, ५०, ५२ धैवतः; १२, १५, २३, २९, ३६ निषादः; २०, २२, २५, ३० ३८, ४८ पञ्चमः; ४२ मध्यमः; ५१ गान्धारः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः।
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्पतिं सप्तपुत्रम् ॥ १ ॥
सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा।
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुः ॥ २ ॥
इमं रथमधि ये सप्त तस्थुः सप्तचक्रं सप्त वहन्त्यश्वाः।
सप्त स्वसारो अभि सं नवन्ते यत्र गवां निहिता सप्त नाम ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को ददर्श प्रथमं जायमानमस्थन्वन्तं यदनस्था बिभर्ति।
भूम्या असुरसृगात्मा क्व स्वित्को विद्वांसमुप गात्प्रष्टुमेतत्॥ ४॥
पाकः पृच्छामि मनसाविजानन् देवानामेना निहिता पदानि।
वत्से बष्कयेऽधि सप्त तन्तून्वि तत्निरे कवय ओतवा उ॥ ५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अचिकित्वाञ्चिकितुषश्चिदत्र कवीन्पृच्छामि विद्मने न विद्वान्।
वि यस्तस्तम्भ षळिमा रजांस्यजस्य रूपे किमपि स्विदेकम्॥ ६॥
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग वेदास्य वामस्य निहितं पदं वेः।
शीर्ष्णः क्षीरं दुहते गावो अस्य वव्रिं वसाना उदकं पदापुः॥ ७॥
माता पितरमृत आ बभाज धीत्यग्रे मनसा सं हि जग्मे।
सा बीभत्सुर्गभरसा निविद्धा नमस्वन्त इदुपवाकमीयुः॥ ८॥
युक्ता मातासीद् धुरि दक्षिणाया अतिष्ठद् गर्भो वृजनीष्वन्तः।
अमीमेद् वत्सो अनु गामपश्यद् विश्वरूप्यं त्रिषु योजनेषु॥ ९॥
तिस्रो मातॄस्त्रीन्पितॄन्बिभ्रदेक ऊर्ध्वस्तस्थौ नेमव ग्लापयन्ति।
मन्त्रयन्ते दिवो अमुष्य पृष्ठे विश्वविदं वाचमविश्वमिन्वाम्॥ १०॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परि द्यामृतस्य।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः॥ ११॥
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम्।
अथेमे अन्य उपरे विचक्षणं सप्तचक्रे षळर आहुरर्पितम्॥ १२॥
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने तस्मिन्ना तस्थुर्भुवनानि विश्वा।
तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः॥ १३॥
सनेमि चक्रमजरं वि वावृत उत्तानायां दश युक्ता वहन्ति।
सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा॥ १४॥
साकंजानां सप्तथमाहुरेकजं षळिद्यमा ऋषयो देवजा इति।
तेषामिष्टानि विहितानि धामशः स्थात्रे रेजन्ते विकृतानि रूपशः॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

स्त्रियः सतीस्ताँ उ मे पुंस आहुः पश्यदक्षण्वान्न वि चेतदन्धः ।
कविर्यः पुत्रः स ईमा चिकेत यस्ता विजानात्स पितुष्पितासत् ॥ १६ ॥
अवः परेण पर एनावरेण पदा वत्सं बिभ्रती गौरुदस्थात् ।
सा कद्रीची कं स्विदर्धं परागात् क्व स्वित्सूते नहि यूथे अन्तः ॥ १७ ॥
अवः परेण पितरं यो अस्यानुवेद पर एनावरेण ।
कवीयमानः क इह प्र वोचद् देवं मनः कुतो अधि प्रजातम् ॥ १८ ॥
ये अर्वाञ्चस्ताँ उ पराच आहुर्ये पराञ्चस्ताँ उ अर्वाच आहुः ।
इन्द्रश्च या चक्रथुः सोम तानि धुरा न युक्ता रजसो वहन्ति ॥ १९ ॥
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति ॥ २० ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भागमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति ।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश ॥ २१ ॥
यस्मिन् वृक्षे मध्वदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधि विश्वे ।
तस्येदाहुः पिप्पलं स्वाद्वग्रे तन्नोन्नशद्यः पितरं न वेद ॥ २२ ॥
यद् गायत्रे अधि गायत्रमाहितं त्रैष्टुभाद् वा त्रैष्टुभं निरतक्षत ।
यद् वा जगज्जगत्याहितं पदं य इत्तद् विदुस्ते अमृतत्वमानशुः ॥ २३ ॥
गायत्रेण प्रति मिमीते अर्कमर्केण साम त्रैष्टुभेन वाकम् ।
वाकेन वाकं द्विपदा चतुष्पदाक्षरेण मिमते सप्त वाणीः ॥ २४ ॥
जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद्रथन्तरे सूर्यं पर्यपश्यत् ।
गायत्रस्य समिधस्तिस्र आहुस्ततो मह्ना प्र रिरिचे महित्वा ॥ २५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम् ।
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचम् ॥ २६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात्।
दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं सा वर्धतां महते सौभगाय॥ २७॥
गौरमीमेदनु वत्सं मिषन्तं मूर्धानं हिङ्ङकृणोन्मातवा उ।
सृक्वाणं घर्ममभि वावशाना मिमाति मायुं पयते पयोभिः॥ २८॥
अयं स शिङ्क्ते येन गौरभीवृता मिमाति मायुं ध्वसनावधि श्रिता।
सा चित्तिभिर्नि हि चकार मर्त्यं विद्युद्भवन्ती प्रति वव्रिमौहत॥ २९॥
अनच्छये तुरगातु जीवमेजद् ध्रुवं मध्य आ पस्त्यानाम्।
जीवो मृतस्य चरति स्वधाभिरमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः॥ ३०॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः॥ ३१॥
य ईं चकार न सो अस्य वेद य ईं ददर्श हिरुगिन्नु तस्मात्।
स मातुर्योना परिवीतो अन्तर्बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश॥ ३२॥
द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम्।
उत्तानयोश्चम्वोर्योनिरन्तरत्रा पिता दुहितुर्गर्भमाधात्॥ ३३॥
पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परमं व्योम॥ ३४॥
इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम॥ ३५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतो विष्णोस्तिष्ठन्ति प्रदिशा विधर्मणि।
ते धीतिभिर्मनसा ते विपश्चितः परिभुवः परि भवन्ति विश्वतः॥ ३६॥
न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः संनद्धो मनसा चरामि।
यदा मागन् प्रथमजा ऋतस्यादिद् वाचो अश्नुवे भागमस्याः॥ ३७॥
अपाङ् प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः।
ता शश्वन्ता विषूचीना वियन्ता न्यन्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम्॥ ३८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन्यस्मिन् देवा अधि विश्वे निषेदुः ।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ॥ ३९ ॥
सूयवसाद्भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम ।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती ॥ ४० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी ।
अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन् ॥ ४१ ॥
तस्याः समुद्रा अधि वि क्षरन्ति तेन जीवन्ति प्रदिशश्चतस्रः ।
ततः क्षरत्यक्षरं तद्विश्वमुप जीवति ॥ ४२ ॥
शकमयं धूममारादपश्यं विषूवता पर एनावरेण ।
उक्षाणं पृश्निमपचन्त वीरास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ॥ ४३ ॥
त्रयः केशिन ऋतुथा वि चक्षते संवत्सरे वपत एक एषाम् ।
विश्वमेको अभि चष्टे शचीभिर्ध्राजिरेकस्य ददृशे न रूपम् ॥ ४४ ॥
चत्वारि वाक्परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः ।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ॥ ४५ ॥
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः ॥ ४६ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

कृष्णं नियानं हरयः सुपर्णा अपो वसाना दिवमुत्पतन्ति ।
त आववृत्रन्त्सदनादृतस्यादिद् घृतेन पृथिवी व्युद्यते ॥ ४७ ॥
द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत ।
तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शङ्कवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः ॥ ४८ ॥
यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि ।
यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः सरस्वति तमिह धातवे कः ॥ ४९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञेन॑ यज्ञमयजन्त दे॒वास्तानि॒ धर्मा॑णि प्रथ॒मान्या॑सन् ।
ते ह॒ नाकं॑ महि॒मानः॑ सचन्त॒ यत्र॒ पूर्वे॑ सा॒ध्याः सन्ति॑ दे॒वाः ॥५०॥
स॒मा॒न॒मे॒तदु॑द॒कमुच्चै॒त्यव॒ चाहभिः ।
भूमिं॑ प॒र्जन्या॒ जिन्व॑न्ति दि॒वं जि॑न्वन्त्य॒ग्नय॑ः ॥५१॥
दि॒व्यं सु॑प॒र्णं वा॑य॒सं बृ॒हन्त॑मपां॒ गर्भं॑ दर्श॒तमोष॑धीनाम् ।
अ॒भी॒प॒तो वृ॒ष्टिभि॑स्तर्पयन्तं॒ सर॑स्वन्तमवसे जोहवीमि ॥५२॥

त्रयोविंशोऽनुवाकः [१६५] पञ्चषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३-५, ११, १२ विराट्त्रिष्टुप्; २, ८, ९ त्रिष्टुप्; ६, ७, १०, १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ निचृत्त्रिष्टुप्; १५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५, ८, ९, ११-१३ धैवतः; ६, ७, १०, १४, १५ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

कया॑ शु॒भा सव॑यस॒ः सनी॑ळाः॒ समा॒न्या म॒रुत॒ः सं मि॑मिक्षुः ।
कया॑ म॒ती कुत॒ एता॑स॒ एते॑ऽचि॑न्ति॒ शुष्मं॑ वृषणो॒ वसू॑या ॥१॥
कस्य॒ ब्रह्मा॑णि जुजुषु॒र्युवा॑न॒ः को अ॑ध्व॒रे म॒रुत॒ आ व॑वर्त ।
श्ये॒नाँइ॑व॒ ध्रज॑तो अ॒न्तरि॑क्षे॒ केन॑ म॒हा मन॑सा रीरमाम ॥२॥
कु॒त॒स्त्वमि॑न्द्र माहि॒न॒ः सन्नेको॑ यासि सत्पते॒ किं त॑ इ॒त्था ।
सं पृ॑च्छसे समरा॒णः शु॑भा॒नैर्वो॑चेस्तन्नो॑ हरिवो॒ यत्ते॑ अ॒स्मे ॥३॥
ब्रह्मा॑णि मे म॒तय॒ः शं सु॒तास॒ः शुष्म॑ इयर्ति॒ प्रभृ॑तो मे॒ अद्रि॑ः ।
आ शा॑सते॒ प्रति॑ हर्यन्त्यु॒क्थेमा हरी॑ वहत॒स्ता नो॒ अच्छ॑ ॥४॥
अतो॑ व॒यम॑न्त॒मेभि॒र्युजा॑नाः स्वक्षत्रे॒भिस्त॒न्व१॑ः शुम्भमानाः ।
महो॑भि॒रेताँ॒ उप॑ युज्महे॒ न्विन्द्र॑ स्व॒धाम॑नु॒ हि नो॑ ब॒भूथ॑ ॥५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

क्व१॒॑ स्या वो॑ मरुतः स्व॒धासी॒द्यन्मामेकं॑ स॒मध॑त्ताहि॒हत्ये॑ ।
अ॒हं ह्यु१॒॑ग्रस्त॑वि॒षस्तु॑वि॒ष्मान्वि॒श्वस्य॒ शत्रो॒रन॑मं वध॒स्नैः ॥६॥
भूरि॑ चकर्थ॒ युज्ये॑भि॒रस्मे स॑मा॒नेभि॑र्वृषभ॒ पौंस्ये॑भिः ।
भूरी॑णि॒ हि कृ॒णवा॑मा श॒वि॒ष्ठेन्द्र॒ क्रत्वा॑ मरुतो॒ यद्व॒शाम ॥७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वधीं वृत्रं मरुत इन्द्रियेण स्वेन भामेन तविषो बभूवान् ।
अहमेता मनवे विश्वश्चन्द्राः सुगा अपश्चकर वज्रबाहुः ॥ ८ ॥
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ अस्ति देवता विदानः ।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ॥ ९ ॥
एकस्य चिन्मे विभ्वी१स्त्वोजो यो नु दधृष्वान्कृणवै मनीषा ।
अहं ह्यु१ग्रो मरुतो विदानो यानि च्यवमिन्द्र इदीश एषाम् ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अमन्दन्मा मरुतः स्तोमो अत्र यन्मे नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र ।
इन्द्राय वृष्णे सुमखाय मह्यं सख्ये सखायस्तन्वे तनूभिः ॥ ११ ॥
एवेदेते प्रति मा रोचमाना अनेद्यः श्रव एषो दधानाः ।
संचक्ष्या मरुतश्चन्द्रवर्णा अच्छान्त मे छदयाथा च नूनम् ॥ १२ ॥
को न्वत्र मरुतो मामहे वः प्र यातन सखीँरच्छा सखायः ।
मन्मानि चित्रा अपिवातयन्त एषां भूत नवेदा म ऋतानाम् ॥ १३ ॥
आ यद्वस्याद्वसे न कारुरस्माञ्चक्रे मान्यस्य मेधा ।
ओ षु वर्त मरुतो विप्रमच्छेमा ब्रह्माणि जरिता वो अर्चत् ॥ १४ ॥
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः ।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ १५ ॥

इति द्वितीयाष्टके तृतीयोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयाष्टके चतुर्थोऽध्यायः

[१६६] षट्षष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मैत्रावरुणोऽगस्त्यः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ८ जगती; ३, ५, ६, १२, १३ निचृज्जगती; ४ विराड्जगती; ७, ९, १० भुरिक्त्रिष्टुप्; ११ विराट् त्रिष्टुप्; १४ त्रिष्टुप्; १५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-६, ८, १२, १३ निषादः; ७, ९-११, १४ धैवतः; १५ पञ्चमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

तन्नु वोचाम रभसाय जन्मने पूर्वं महित्वं वृषभस्य केतवे।
ऐधेव यामन्मरुतस्तुविष्वणो युधेव शक्रास्तविषाणि कर्तन॥ १ ॥
नित्यं न सूनुं मधु बिभ्रत उप क्रीळन्ति क्रीळा विदथेषु घृष्वयः।
नक्षन्ति रुद्रा अवसा नमस्विनं न मर्धन्ति स्वतवसो हविष्कृतम्॥ २ ॥
यस्मा ऊमासो अमृता अरासत रायस्पोषं च हविषा ददाशुषे।
उक्षन्त्यस्मै मरुतो हिताइव पुरू रजांसि पयसा मयोभुवः॥ ३ ॥
आ ये रजांसि तविषीभिरव्यत प्र व एवासः स्वयतासो अध्रजन्।
भयन्ते विश्वा भुवनानि हर्म्या चित्रो वो यामः प्रयतास्वृष्टिषु॥ ४ ॥
यत्त्वेषयामा नदयन्त पर्वतान्दिवो वा पृष्ठं नर्या अचुच्यवुः।
विश्वो वो अज्मन्भयते वनस्पती रथीयन्तीव प्र जिहीत ओषधिः॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

यूयं न उग्रा मरुतः सुचेतुनारिष्टग्रामाः सुमतिं पिपर्तन।
यत्रा वो दिद्युद्रदति क्रिविर्दती रिणाति पश्वः सुधितेव बर्हणा॥ ६ ॥
प्र स्कुम्भदेष्णा अनवभ्रराधसोऽलातृणासो विदथेषु सुष्टुताः।
अर्चन्त्यर्कं मदिरस्य पीतये विदुर्वीरस्य प्रथमानि पौंस्या॥ ७ ॥
शतभुजिभिस्तमभिहुतेर्घात्पूर्भी रक्षता मरुतो यमावत।
जनं यमुग्रास्तवसो विरप्शिनः पाथना शंसात्तनयस्य पुष्टिषु॥ ८ ॥
विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो मिथस्पृध्येव तविषाण्याहिता।
अंसेष्वा वः प्रपथेषु खादयोऽक्षो वश्चक्रा समया वि वावृते॥ ९ ॥
भूरीणि भद्रा नर्येषु बाहुषु वक्षःसु रुक्मा रभसासो अञ्जयः।
अंसेष्वेताः पविषु क्षुरा अधि वयो न पक्षान्व्यनु श्रियो धिरे॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

महान्तो मह्ना विभ्वोऽ३ विभूतयो दूरेदृशो ये दिव्याइव स्तृभिः।
मन्द्राः सुजिह्वाः स्वरितार आसभिः संमिश्ला इन्द्रे मरुतः परिष्टुभः॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्वः सुजाता मरुतो महित्वनं दीर्घं वो दात्रमदितेरिव व्रतम्।
इन्द्रश्चन त्यजसा वि ह्रुणाति तज्जनाय यस्मै सुकृते अराध्वम्॥ १२॥
तद्वो जामित्वं मरुतः परे युगे पुरू यच्छंसममृतास आवत।
अया धिया मनवे श्रुष्टिमाव्या साकं नरो दंसनैरा चिकित्रिरे॥ १३॥
येन दीर्घं मरुतः शूशवाम युष्माकेन परीणसा तुरासः।
आ यत्ततनन्वृजने जनास एभिर्यज्ञेभिस्तदभीष्टिमश्याम्॥ १४॥
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ १५॥

[१६७] सप्तषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—इन्द्रो मरुच्च॥ छन्दः—१, ४, ५ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ७, ९ स्वराट्पङ्क्तिः; १० निचृत्पङ्क्तिः; ११ पङ्क्तिः॥
स्वरः—१, ४, ५, ७, ९-११ पञ्चमः; २, ३, ६, ८ धैवतः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

सहस्रं त इन्द्रोतयो नः सहस्रमिषो हरिवो गूर्ततमाः।
सहस्रं रायो मादयध्यै सहस्त्रिण उप नो यन्तु वाजाः॥ १॥
आ नोऽवोभिर्मरुतो यान्त्वच्छा ज्येष्ठेभिर्वा बृहद्दिवैः सुमायाः।
अध यदेषां नियुतः परमाः समुद्रस्य चिद्धनयन्त पारे॥ २॥
मिम्यक्ष येषु सुधिता घृताची हिरण्यनिर्णिगुपरा न ऋष्टिः।
गुहा चरन्ती मनुषो न योषा सभावती विदथ्येव सं वाक्॥ ३॥
परा शुभ्रा अयासो यव्या साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः।
न रोदसी अप नुदन्त घोरा जुषन्त वृधं सख्याय देवाः॥ ४॥
जोषद्यदीमसुर्यं सचध्यै विषितस्तुका रोदसी नृमणाः।
आ सूर्येव विधतो रथं गात्त्वेषप्रतीका नभसो नेत्या॥ ५॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

आस्थापयन्त युवतिं युवानः शुभे निमिश्लां विदथेषु पज्राम्।
अर्को यद्वो मरुतो हविष्मान्गायद्गाथं सुतसोमो दुवस्यन्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र तं विवक्मि वक्म्यो य एषां मरुतां महिमा सत्यो अस्ति।
सचा यदीं वृषमणा अहंयुः स्थिरा चिज्जनीर्वहते सुभागाः ॥ ७ ॥
पान्ति मित्रावरुणावव्द्याच्चयत ईमर्यमो अप्रशस्तान्।
उत च्यवन्ते अच्युता ध्रुवाणि वावृध ईं मरुतो दातिवारः ॥ ८ ॥
नही नु वो मरुतो अन्त्यस्मे आरात्ताच्चिच्छवसो अन्तमापुः।
ते धृष्णुना शवसा शूशुवांसोऽर्णो न द्वेषो धृषता परि ष्ठुः ॥ ९ ॥
वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा वयं श्वो वोचेमहि समर्ये ।
वयं पुरा महि च नो अनु द्यून्तन्न ऋभुक्षा नरामनु ष्यात् ॥ १० ॥
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ११ ॥

[१६८] अष्टषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ४ निचृज्जगती; २, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ८ त्रिष्टुप्; ९ निचृत्त्रिष्टुप्; १० पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४ निषादः; २, ३, ५-९ धैवतः; १० पञ्चमः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

यज्ञायज्ञा वः समना तुतुर्वणिर्धियंधियं वो देवया उ दधिध्वे।
आ वोऽवार्चः सुविताय रोदस्योर्महे ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥ १ ॥
वव्रासो न ये स्वजाः स्वतवस इषं स्वरभिजायन्त धूतयः।
सहस्त्रियासो अपां नोर्मय आसा गावो वन्द्यासो नोक्षणः ॥ २ ॥
सोमासो न ये सुतास्तृप्तांशवो हृत्सु पीतासो दुवसो नासते।
ऐषामंसेषु रम्भिणीव रारभे हस्तेषु खादिश्च कृतिश्च सं दधे ॥ ३ ॥
अव स्वयुक्ता दिव आ वृथा ययुरमर्त्याः कशया चोदत त्मना।
अरेणवस्तुविजाता अचुच्यवुर्दूळहानि चिन्मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥ ४ ॥
को वोऽन्तर्मरुत ऋष्टिविद्युतो रेजति त्मना हन्वेव जिह्वया।
धन्वच्युत इषां न यामनि पुरुप्रैषा अहन्यो३ नैतशः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

क्व स्विदस्य रजसो महस्परं क्वावरं मरुतो यस्मिन्नायय।
यच्च्यावयथ विथुरेव संहितं व्यद्रिणा पतथ त्वेषमर्णवम् ॥ ६ ॥
सातिर्न वोऽमवती स्वर्वती त्वेषा विपाका मरुतः पिपिष्वती।
भद्रा वो रातिः पृणतो न दक्षिणा पृथुज्रयी असुर्येव जञ्जती ॥ ७ ॥
प्रति ष्टोभन्ति सिन्धवः पविभ्यो यदभ्रियां वाचमुदीरयन्ति।
अव स्मयन्त विद्युतः पृथिव्यां यदी घृतं मरुतः प्रुष्णुवन्ति ॥ ८ ॥
असूत पृश्निर्महते रणाय त्वेषमयासां मरुतामनीकम् ।
ते सप्सरासोऽजनयन्ताभ्वमादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ॥ ९ ॥
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः।
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ १० ॥

[१६९] एकोनसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ भुरिक्पङ्क्तिः; २ पङ्क्तिः; ४ ब्राह्म्युष्णिक्; ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५, ६ पञ्चमः; ४ ऋषभः; ७, ८ धैवतः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

महश्चित्त्वमिन्द्र यत एतान्महश्चिदसि त्यजसो वरूता।
स नो वेधो मरुतां चिकित्वान्त्सुम्ना वनुष्व तव हि प्रेष्ठा ॥ १ ॥
अयुज्रन्त इन्द्र विश्वकृष्टीर्विदानासो निष्षिधो मर्त्यत्रा।
मरुतां पृत्सुतिर्हासमाना स्वर्मीळहस्य प्रधनस्य सातौ ॥ २ ॥
अम्यक्सा त इन्द्र ऋष्टिरस्मे सनेम्यभ्वं मरुतो जुनन्ति।
अग्निश्चिद्धि ष्मातसे शुशुक्वानापो न द्वीपं दधति प्रयांसि ॥ ३ ॥
त्वं तू न इन्द्र तं रयिं दा ओजिष्ठया दक्षिणयेव रातिम्।
स्तुतश्च यास्ते चकनन्त वायोः स्तनं न मध्वः पीपयन्त वाजैः ॥ ४ ॥
त्वे राय इन्द्र तोशतमाः प्रणेतारः कस्य चिदृतायोः।
ते षु णो मरुतो मृळयन्तु ये स्मा पुरा गातूयन्तीव देवाः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

प्रति॒ प्र या॑हीन्द्र मी॒ळ्हुषो॒ नॄन्म॒हः पार्थि॑वे॒ सद॑ने यतस्व।
अध॒ यदे॑षां पृथु॒बुध्ना॑स॒ एता॑स्ती॒र्थे नार्यः॑ पौंस्या॑नि त॒स्थुः ॥ ६ ॥
प्रति॑ घो॒राणा॒मेता॑नाम॒यासां॑ म॒रुतां॑ शृण्व आय॒ताम्॒प॒ब्दिः।
ये मर्त्य॑ पृतना॒यन्त॒मूमै॑र्ऋ॒णावा॑नं॒ न प॒तय॑न्त॒ सर्गैः॑ ॥ ७ ॥
त्वं मा॒नेभ्य॒ इन्द्र वि॒श्वज॑न्या॒ रदा॑ म॒रुद्भि॑: शु॒रुधो॒ गोअ॑ग्राः।
स्तवा॑नेभिः स्तवसे देव दे॒वैर्वि॒द्यामे॒षं वृ॒जनं॑ जी॒रदा॑नुम् ॥ ८ ॥

[१७०] सप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ स्वराडनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४ गान्धारः; ५ पञ्चमः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

न नू॒नम॒स्ति नो श्वः कस्तद्वे॑द॒ यदद्भु॑तम् ।
अ॒न्यस्य॑ चि॒त्तम॒भि सं॑च॒रेण्य॑मु॒ताधी॑तं॒ वि ने॑शयति ॥ १ ॥
किं न॑ इन्द्र जिघांससि॒ भ्रात॑रो म॒रुत॒स्तव॑ ।
तेभि॑: कल्पस्व साधु॒या मा नः॑ स॒मर॑णे वधीः ॥ २ ॥
किं नो॑ भ्रातरगस्त्य॒ सखा॒ सन्नति॑ मन्यसे ।
वि॒द्मा हि ते॒ यथा॒ मनोऽ॒स्मभ्य॒मिन्न दि॑त्ससि ॥ ३ ॥
अरं॑ कृण्वन्तु॒ वेदिं॒ सम॒ग्निमि॑न्धतां॒ पुरः॑ ।
तत्रा॒मृत॑स्य॒ चेत॑नं य॒ज्ञं ते॑ तनवावहै ॥ ४ ॥
त्वमी॑शिषे वसुपते॒ वसू॑नां॒ त्वं मि॒त्राणां॑ मित्रपते॒ धेष्ठः॑ ।
इन्द्र॒ त्वं म॒रुद्भि॑: सं व॑दस्वाध॒ प्राशा॑न ऋ॒क्तुथा॒ ह॒वीं॑षि ॥ ५ ॥

[१७१] एकसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ४, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४-६ धैवतः; ३ पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

प्रति॑ व एना नमसा॒हमे॑मि सू॒क्तेन॑ भिक्षे सुम॒तिं तु॒राणा॑म्।
र॒रा॒णता॑ मरुतो वे॒द्याभि॒र्नि हे॒ळो॑ धत्त॒ वि मु॑चध्व॒मश्वा॑न् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एष वः स्तोमो मरुतो नमस्वान्हृदा तष्टो मनसा धायि देवाः।
उपेमा यात मनसा जुषाणा यूयं हि ष्ठा नमस इद् वृधासः॥ २॥
स्तुतासो नो मरुतो मृळयन्तूत स्तुतो मघवा शंभविष्ठः।
ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वनान्यहानि विश्वा मरुतो जिगीषा॥ ३॥
अस्माद्हं तविषादीषमाण इन्द्राद्भिया मरुतो रेजमानः।
युष्मभ्यं हव्या निशितान्यासन्तान्यारे चकृमा मृळता नः॥ ४॥
येन मानासश्चितयन्त उस्रा व्युष्टिषु शवसा शश्वतीनाम्।
स नो मरुद्भिर्वृषभ श्रवो धा उग्र उग्रेभिः स्थविरः सहोदाः॥ ५॥
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो नॄन्भवा मरुद्भिरवयातहेळाः ।
सुप्रकेतेभिः सासहिर्दधानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ६॥

[१७२] द्विसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री;
२, ३ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र ऊती सुदानवः। मरुतो अहिभानवः॥ १॥
आरे सा वः सुदानवो मरुत ऋज्जती शरुः। आरे अश्मा यमस्यथ॥ २॥
तृणस्कन्दस्य नु विशः परि वृङ्क्त सुदानवः। ऊर्ध्वान्नः कर्त जीवसे॥ ३॥

[१७३] त्रिसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५, ११ पङ्क्तिः; २, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ बृहती; ६, ९,
१०, १२ भुरिक्पङ्क्तिः; ७, १३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ५, ६, ९,
१०-१२ पञ्चमः; २, ३, ७, ८, १३ धैवतः; ४ मध्यमः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

गायत्साम नभन्यं१ यथा वेरर्चाम तद्वावृधानं स्वर्वत्।
गावो धेनवो बर्हिष्यदब्धा आ यत्सद्मानं दिव्यं विवासान्॥ १॥
अर्चद् वृषा वृषभिः स्वेदुहव्यैर्मृगो नाश्नो अति यज्जुगुर्यात्।
प्र मन्दयुर्मनां गूर्त होता भरते मर्यो मिथुना यजत्रः॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नक्षद्धोता परि सद्म मिता यन्भरद्गर्भमा शरदः पृथिव्याः।
क्रन्ददश्वो नयमानो रुवद्गौरन्तर्दूतो न रोदसी चरद्वाक् ॥ ३ ॥
ता कर्माषतरास्मै प्र च्यौत्नानि देवयन्तो भरन्ते ।
जुजोषदिन्द्रो दस्मवर्चा नासत्येव सुग्म्यो रथेष्ठाः ॥ ४ ॥
तमु ष्टुहीन्द्रं यो ह सत्वा यः शूरो मघवा यो रथेष्ठाः ।
प्रतीचश्चिद्योधीयान्वृषण्वान्ववव्रुषश्चित्तमसो विहन्ता ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र यदित्था महिना नृभ्यो अस्त्यरं रोदसी कक्ष्येइ नास्मै।
सं विव्य इन्द्रो वृजनं न भूमा भतिं स्वधावाँ ओपशमिव द्याम् ॥ ६ ॥
समत्सु त्वा शूर सतामुराणं प्रपथिन्तमं परितंसयध्यै।
सजोषस इन्द्रं मदे क्षोणीः सूरिं चिद्ये अनुमदन्ति वाजैः ॥ ७ ॥
एवा हि ते शं सवना समुद्र आपो यत्त आसु मदन्ति देवीः।
विश्वा ते अनु जोष्या भूद् गौः सूरींश्चिद्यदि धिषा वेषि जनान् ॥ ८ ॥
असाम यथा सुषखाय एन स्वभिष्टयो नरां न शंसैः।
असद्यथा न इन्द्रो वन्दनेष्टास्तुरो न कर्म नयमान उक्था ॥ ९ ॥
विष्पर्धसो नरां न शंसैरस्माकासदिन्द्रो वज्रहस्तः ।
मित्रायुवो न पूर्पतिं सुशिष्टौ मध्यायुव उप शिक्षन्ति यज्ञैः ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

यज्ञो हि ष्मेन्द्रं कश्चिदन्धञ्जुहुराणश्चिन्मनसा परियन्।
तीर्थे नाच्छा तातृषाणमोको दीर्घो न सिध्रमा कृणोत्यध्वा ॥ ११ ॥
मो षू ण इन्द्रात्र पृत्सु देवैरस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः।
महश्चिद्यस्य मीळ्हुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः ॥ १२ ॥
एष स्तोम इन्द्र तुभ्यमस्मे एतेन गातुं हरिवो विदो नः।
आ नो ववृत्याः सुविताय देव विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१७४] चतुःसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २, ३, ६, ८, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५, ७, ९ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

त्वं राजेन्द्र ये चे देवा रक्षा नृन्पाह्यसुर त्वमस्मान्।
त्वं सत्पतिर्मघवा नस्तरुत्रस्त्वं सत्यो वसवानः सहोदाः ॥ १ ॥
दनो विशं इन्द्र मृध्रवाचः सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्दर्त्।
ऋणोरपो अनवद्याणा यूने वृत्रं पुरुकुत्साय रन्धीः ॥ २ ॥
अजा वृतं इन्द्र शूरपत्नीर्द्यां च येभिः पुरुहूत नूनम्।
रक्षो अग्निमशुषं तूर्वयाणं सिंहो न दमे अपांसि वस्तोः ॥ ३ ॥
शेषन्नु त इन्द्र सस्मिन्योनौ प्रशस्तये पवीरवस्य महा।
सृजदर्णांस्यव यद्युधा गास्तिष्ठद्धरी धृषता मृष्ट वाजान् ॥ ४ ॥
वह कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन्त्स्यूमन्यू ऋज्रा वातस्याश्वा।
प्र सूरश्चक्रं वृहताद्भीकेऽभि स्पृधो यासिषद्वज्रबाहुः ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

जघन्वाँ इन्द्र मित्रेरूञ्चोदप्रवृद्धो हरिवो अदाशून् ।
प्र ये पश्यन्नर्यमणं सचायोस्त्वया शूर्ता वहमाना अपत्यम् ॥ ६ ॥
रपत्कविरिन्द्रार्कसातौ क्षां दासायोपबर्हणीं कः ।
करत्तिस्रो मघवा दानुचित्रा नि दुर्योणे कुयवाचं मृधि श्रेत् ॥ ७ ॥
सना ता त इन्द्र नव्या आगुः सहो नभोऽविरणाय पूर्वीः।
भिनत्पुरो न भिदो अदेवीर्ननमो वधरदेवस्य पीयोः ॥ ८ ॥
त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।
प्र यत्समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति ॥ ९ ॥
त्वमस्माकमिन्द्र विश्वधा स्या अवृकतमो नरां नृपाता।
स नो विश्वासां स्पृधां सहोदा विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१७५] पञ्चसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ स्वराडनुष्टुप्; २ विराडनुष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ उष्णिक्; ५ अनुष्टुप्; ६ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५ गान्धारः; ३, ६ धैवतः; ४ ऋषभः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

मत्स्यपायि॑ ते महः पात्र॑स्येव हरिवो मत्स॒रो मदः॑ ।
वृषा॑ ते वृष्ण॒ इन्दु॑र्वाजी सहस्रसा॑तमः ॥ १ ॥
आ नः॑ ते गन्तु मत्स॒रो वृषा॒ मदो॒ वरे॑ण्यः ।
स॒हावाँ॑ इन्द्र सान॒सिः पृ॑तना॒षाळम॑र्त्यः ॥ २ ॥
त्वं हि शूर॒ः सनि॑ता चो॒दयो॒ मनु॑षो॒ रथ॑म् ।
स॒हाव॒न्दस्यु॑मव्र॒तमोष॒ः पात्रं॑ न शो॒चिषा॑ ॥ ३ ॥
मु॒षा॒य सूर्यं॑ कवे च॒क्रमीशा॑न॒ ओज॑सा ।
वह॒ शुष्णा॑य व॒धं कुत्सं॑ वात॒स्याश्वैः॑ ॥ ४ ॥
शु॒ष्मिन्त॑मो॒ हि ते॒ मदो॑ द्यु॒म्निन्त॑म उ॒त क्रतुः॑ ।
वृ॒त्र॒घ्ना व॑रिवो॒विदा॑ मंसी॒ष्ठा अ॑श्व॒सात॑मः ॥ ५ ॥
यथा॒ पूर्वे॑भ्यो ज॒रि॒तृभ्य॑ इन्द्र मय॒इ॒वापो॒ न तृष्य॑ते ब॒भूथ॑ ।
तामनु॑ त्वा नि॒विदं॑ जोहवीमि वि॒द्यामे॒षं वृ॒जनं॑ जी॒रदा॑नुम् ॥ ६ ॥

[१७६] षट्सप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४ अनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ५ भुरिगुष्णिक्; ६ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ गान्धारः; ५ ऋषभः; ६ धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

मत्सि॑ नो॒ वस्य॑इष्टय॒ इन्द्र॑मिन्दो॒ वृषा॑ वि॑श ।
ऋ॒घा॒यमा॑ण इन्वसि॒ शत्रु॑म॒न्ति न वि॑न्दसि ॥ १ ॥
तस्मि॒न्ना वे॑शया॒ गिरो॒ य एक॑श्चर्षणी॒नाम् ।
अनु॑ स्व॒धा यमु॒प्यते॒ यवं॒ न चर्कृ॑ष॒द् वृषा॑ ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्य विश्वानि हस्तयोः पञ्च क्षितीनां वसु ।
स्पाशयस्व यो अस्मध्रुग्दिव्येवाशनिर्जहि ॥ ३ ॥
असुन्वन्तं समं जहि दूणाशं यो न ते मयः ।
अस्मभ्यमस्य वेदनं दद्धि सूरिश्चिदोहते ॥ ४ ॥
आवो यस्य द्विबर्हसोऽर्केषु सानुषगसत् ।
आजाविन्द्रस्येन्दो प्रावो वाजेषु वाजिनम् ॥ ५ ॥
यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मयइवापो न तृष्यते बभूथ ।
तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ६ ॥

[१७७] सप्तसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वर—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

आ चर्षणिप्रा वृषभो जनानां राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः ।
स्तुतः श्रवस्यन्नवसोप मद्रिग्युक्त्वा हरी वृषणा याह्यर्वाङ् ॥ १ ॥
ये ते वृषणो वृषभास इन्द्र ब्रह्मयुजो वृषरथासो अत्याः ।
ताँ आ तिष्ठ तेभिरा याह्यर्वाङ् हवामहे त्वा सुत इन्द्र सोमे ॥ २ ॥
आ तिष्ठ रथं वृषणं वृषा ते सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि ।
युक्त्वा वृषभ्यां वृषभ क्षितीनां हरिभ्यां याहि प्रवतोप मद्रिक् ॥ ३ ॥
अयं यज्ञो देवया अयं मियेधं इमा ब्रह्माण्ययमिन्द्र सोमः ।
स्तीर्णं बर्हिरा तु शक्र प्र याहि पिबा निषद्य वि मुचा हरी इह ॥ ४ ॥
ओ सुष्टुत इन्द्र याह्यर्वाङुप ब्रह्माणि मान्यस्य कारोः ।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ५ ॥

[१७८] अष्टसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३, ४, ५ धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

यद्ध स्या त इन्द्र श्रुष्टिरस्ति ययां बभूथ जरितृभ्य ऊती।
मा नः कामं महयन्तमा धग्विश्वा ते अश्यां पर्यापं आयोः ॥ १ ॥
न घा राजेन्द्र आ दभन्नो या नु स्वसारा कृणवन्त योनौ।
आपश्चिदस्मै सुतुका अवेषन्गमन्न इन्द्रः सख्या वयश्च ॥ २ ॥
जेता नृभिरिन्द्रः पृत्सु शूरः श्रोता हवं नाधमानस्य कारोः।
प्रभर्ता रथं दाशुष उपाक उद्यन्ता गिरो यदि च त्मना भूत् ॥ ३ ॥
एवा नृभिरिन्द्रः सुश्रवस्या प्रखादः पृक्षो अभि मित्रिणो भूत्।
समर्य इषः स्तवते विवाचि सत्राकरो यजमानस्य शंसः ॥ ४ ॥
त्वया वयं मघवन्निन्द्र शत्रूनभि ष्याम महतो मन्यमानान्।
त्वं त्राता त्वमु नो वृधे भूर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ५ ॥

[१७९] एकोनाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—लोपामुद्राऽगस्त्यौ ॥ देवता—दम्पती ॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ निचृद्बृहती; ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६ धैवतः; ५ मध्यमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

पूर्वीरहं शरदः शश्रमाणा दोषा वस्तोरुषसो जरयन्तीः।
मिनाति श्रियं जरिमा तनूनामप्यू नु पत्नीर्वृषणो जगम्युः ॥ १ ॥
ये चिद्धि पूर्व ऋतसाप आसन्त्साकं देवेभिरवदन्नृतानि।
ते चिदवासुर्नह्यन्तमापुः समू नु पत्नीर्वृषभिर्जगम्युः ॥ २ ॥
न मृषा श्रान्तं यदवन्ति देवा विश्वा इत्स्पृधो अभ्यश्नवाव।
जयावेदत्र शतनीथमाजिं यत्सम्यञ्चा मिथुनावभ्यजावं ॥ ३ ॥
नदस्य मा रुधतः काम आगन्नित आजातो अमुतः कुतश्चित्।
लोपामुद्रा वृषणं नी रिणाति धीरमधीरा धयति श्वसन्तम् ॥ ४ ॥
इमं नु सोममन्तितो हृत्सु पीतमुप ब्रुवे ।
यत्सीमागश्चकृमा तत्सु मृळतु पुलुकामो हि मर्त्यः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त्यः खनमानः खनित्रैः प्रजामपत्यं बलमिच्छमानः।
उभौ वर्णावृषिरुग्रः पुपोष सत्या देवेष्वाशिषो जगाम॥ ६॥

चतुर्विंशोऽनुवाकः [१८०] अशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ४, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ९ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-८, १० धैवतः; २, ९ पञ्चमः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

युवो रजांसि सुयमासो अश्वा रथो यद्वां पर्यर्णांसि दीयत्।
हिरण्ययां वां पवयः प्रुषायन्मध्वः पिबन्ता उषसः सचेथे॥ १॥
युवमत्यस्यावं नक्षथो यद्विपत्मनो नर्यस्य प्रयज्योः।
स्वसा यद्वां विश्वगूर्ती भरात्ति वाजायेट्टे मधुपाविषे च॥ २॥
युवं पयं उस्रियायामधत्तं पक्वमामायामव पूर्व्यं गोः।
अन्तर्यद्वनिनो वामृतप्सू ह्वारो न शुचिर्यजते हविष्मान्॥ ३॥
युवं ह घर्मं मधुमन्तमत्रयेऽपो न क्षोदोऽवृणीतमेषे।
तद्वां नरावश्विना पश्वइष्टी रथ्येव चक्रा प्रति यन्ति मध्वः॥ ४॥
आ वां दानाय ववृतीय दस्रा गोरोहेण तौग्र्यो न जिह्रिः।
अपः क्षोणी सचते माहिना वां जूर्णो वामक्षुरंहसो यजत्रा॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

नि यद्युवेथे नियुतः सुदानू उप स्वधाभिः सृजथः पुरन्धिम्।
प्रेषद्वेषद्वातो न सूरिरा महे ददे सुव्रतो न वाजम्॥ ६॥
वयं चिद्धि वां जरितारः सत्या विपन्यामहे वि पणिर्हितावान्।
अधा चिद्धि ष्माश्विनावनिन्द्या पाथो हि ष्मा वृषणावन्तिदेवम्॥ ७॥
युवां चिद्धि ष्माश्विनावनु द्यून्विरुद्रस्य प्रस्रवणस्य सातौ।
अगस्त्यो नरां नृषु प्रशस्तः कारा धुनीव चितयत्सहस्रैः॥ ८॥
प्र यद्वहेथे महिना रथस्य प्र स्पन्द्रा याथो मनुषो न होता।
धत्तं सूरिभ्य उत वा स्वश्व्यं नासत्या रयिषाचः स्याम॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं वां रथं वयमद्या हुवेम स्तोमैरश्विना सुविताय नव्यम्।
अरिष्टनेमिं परि द्यामियानं विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ १०॥

[१८१] एकाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ६-९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

कदु प्रेष्ठावृषणां रयीणामध्वर्यन्ता यदुन्निनीथो अपाम्।
अयं वां यज्ञो अकृत प्रशस्तिं वसुधिती अवितारा जनानाम्॥ १॥
आ वामश्वासः शुचयः पयस्पा वातरंहसो दिव्यासो अत्याः।
मनोजुवो वृषणो वीतपृष्ठा एह स्वराजो अश्विना वहन्तु॥ २॥
आ वां रथोऽवनिर्न प्रवत्वान्त्सुप्रवन्धुरः सुवृताय गम्याः।
वृष्णः स्थातारा मनसो जवीयानहंपूर्वो यजतो धिष्ण्या यः॥ ३॥
इहेह जाता समवावशीतामरेपसा तन्वा३ नामभिः स्वैः।
जिष्णुर्वामन्यः सुमखस्य सूरिर्दिवो अन्यः सुभगः पुत्र ऊहे॥ ४॥
प्र वां निचेरुः ककुहो वशाँ अनु पिशङ्गरूपः सदनानि गम्याः।
हरी अन्यस्य पीपयन्त वाजैर्मंथ्ना रजांस्यश्विना वि घोषैः॥ ५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

प्र वां शरद्वान्वृषभो न निष्षाट् पूर्वीरिषश्चरति मध्व इष्णन्।
एवैरन्यस्य पीपयन्त वाजैर्वेषन्तीरूर्ध्वा नद्यो न आगुः॥ ६॥
असर्जि वां स्थविरा वेधसा गीर्बाळ्हे अश्विना त्रेधा क्षरन्ती।
उपस्तुताववतं नाधमानं यामन्नयामञ्छृणुतं हवं मे॥ ७॥
उत स्या वां रुशतो वप्ससो गीस्त्रिबर्हिषि सदसि पिन्वते नॄन्।
वृषा वां मेघो वृषणा पीपाय गोर्न सेके मनुषो दशस्यन्॥ ८॥
युवां पूषेवाश्विना पुरन्धिरग्निमुषां न जरते हविष्मान्।
हुवे यद्वां वरिवस्या गृणानो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१८२] द्व्यशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ५, ७ निचृज्जगती; २ स्वराट्त्रिष्टुप्; ३ जगती; ४ विराड्जगती; ६, ८ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३-५, ७ निषादः; २ धैवतः; ६, ८ पञ्चमः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अभूदिदं वयुनमो षु भूषता रथो वृषण्वान्मदता मनीषिणः ।
धियंजिन्वा धिष्ण्या विश्पलावसू दिवो नपाता सुकृते शुचिव्रता ॥ १ ॥
इन्द्रतमा हि धिष्ण्या मरुत्तमा दस्रा दंसिष्ठा रथ्या रथीतमा ।
पूर्णं रथं वहेथे मध्व आचितं तेन दाश्वांसमुप याथो अश्विना ॥ २ ॥
किमत्र दस्रा कृणुथः किमासाथे जनो यः कश्चिदहविर्महीयते ।
अति क्रमिष्टं जुरतं पणेरसुं ज्योतिर्विप्राय कृणुतं वचस्यवे ॥ ३ ॥
जम्भयतमभितो रायतः शुनो हतं मृधो विदथुस्तान्यश्विना ।
वाचंवाचं जरितू रत्निनीं कृतमुभा शंसं नासत्यावतं मम ॥ ४ ॥
युवमेतं चक्रथुः सिन्धुषु प्लवमात्मन्वन्तं पक्षिणं तौग्र्याय कम् ।
येन देवत्रा मनसा निरूहथुः सुपप्तनी पेतथुः क्षोदसो महः ॥ ५ ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अवविद्धं तौग्र्यमप्स्वन्तरनारम्भणे तमसि प्रविद्धम् ।
चतस्रो नावो जठलस्य जुष्टा उदश्विभ्यामिषिताः पारयन्ति ॥ ६ ॥
कः स्विद् वृक्षो निष्ठितो मध्ये अर्णसो यं तौग्र्यो नाधितः पर्यषस्वजत् ।
पर्णा मृगस्य पतरोरिवारभ उदश्विना ऊहथुः श्रोमताय कम् ॥ ७ ॥
तद्वां नरा नासत्यावनु ष्याद्यद्वां मानास उचथमवोचन् ।
अस्मादद्य सदसः सोम्यादा विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ८ ॥

[१८३] त्र्यशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ४, ६ त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

तं युञ्जाथां मनसो यो जवीयान् त्रिवन्धुरो वृषणा यस्त्रिचक्रः ।
येनोपयाथः सुकृतो दुरोणं त्रिधातुना पतथो विर्न पर्णैः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुवृद्रथो वर्तते यन्नभि क्षां यत्तिष्ठथः क्रतुमन्तानु पृक्षे ।
वपुर्वपुष्या सचतामियं गीर्दिवो दुहित्रोषसा सचेथे ॥ २ ॥
आ तिष्ठतं सुवृतं यो रथो वामनु व्रतानि वर्तते हविष्मान् ।
येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ॥ ३ ॥
मा वां वृको मा वृकीरा दधर्षीन्मा परि वर्क्तमुत मातिं धक्तम् ।
अयं वां भागो निहित इयं गीर्दस्राविमे वां निधयो मधूनाम् ॥ ४ ॥
युवां गोतमः पुरुमीळ्हो अत्रिर्दस्रा हवतेऽवसे हविष्मान् ।
दिशं न दिष्टामृजूयेव यन्ता मे हवं नासत्योप यातम् ॥ ५ ॥
अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।
एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ६ ॥

इति द्वितीयाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयाष्टके पञ्चमोऽध्यायः

[१८४] चतुरशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४-६ पञ्चमः; २, ३ धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

ता वामद्य तावपरं हुवेमोच्छन्त्यामुषसि वह्निरुक्थैः ।
नासत्या कुह चित्सन्तावर्यो दिवो नपाता सुदास्तराय ॥ १ ॥
अस्मे ऊ षु वृषणा मादयेथामुत्पणीँर्हैतमूर्म्या मदन्ता ।
श्रुतं मे अच्छोक्तिभिर्मतीनामेष्टा नरा निचेतारा च कर्णैः ॥ २ ॥
श्रिये पूषन्निषुकृतेव देवा नासत्या वहतुं सूर्यायाः ।
वच्यन्ते वां ककुहा अप्सु जाता युगा जूर्णेव वरुणस्य भूरेः ॥ ३ ॥
अस्मे सा वां माध्वी रातिरस्तु स्तोमं हिनोतं मान्यस्य कारोः ।
अनु यद्वां श्रवस्या सुदानू सुवीर्याय चर्षणयो मदन्ति ॥ ४ ॥
एष वां स्तोमो अश्विनावकारि मानेभिर्मघवाना सुवृक्ति ।
यातं वर्तिस्तनयाय त्मने चागस्त्ये नासत्या मदन्ता ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरिष्मन् तमसस्पारमस्य प्रति वां स्तोमो अश्विनावधायि ।
एह यातं पथिभिर्देवयानैर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ६ ॥

[१८५] पञ्चाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—१, ६-८, १०, ११ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३-५, ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

कतरा पूर्वा कतरापरायोः कथा जाते कवयः को वि वेद ।
विश्वं त्मना बिभृतो यद्ध नाम वि वर्तेते अहनी चक्रियेव ॥ १ ॥
भूरिं द्वे अचरन्ती चरन्तं पद्वन्तं गर्भमपदी दधाते ।
नित्यं न सूनुं पित्रोरुपस्थे द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ २ ॥
अनेहो दात्रमदितेरनर्वं हुवे स्वर्वदवधं नमस्वत् ।
तद्रोदसी जनयतं जरित्रे द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ३ ॥
अतप्यमाने अवसावन्ती अनु ष्याम रोदसी देवपुत्रे ।
उभे देवानामुभयेभिरह्वां द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ४ ॥
संगच्छमाने युवती समन्ते स्वसारा जामी पित्रोरुपस्थे ।
अभिजिघ्रन्ती भुवनस्य नाभिं द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ५ ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

उर्वी सद्मनी बृहती ऋतेन हुवे देवानामवसा जनित्री ।
दधाते ये अमृतं सुप्रतीके द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ६ ॥
उर्वी पृथ्वी बहुले दूरेअन्ते उप ब्रुवे नमसा यज्ञे अस्मिन् ।
दधाते ये सुभगे सुप्रतूर्ती द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ७ ॥
देवान्वा यच्चकृमा कच्चिदागः सखायं वा सदमिज्जास्पतिं वा ।
इयं धीर्भूया अवयानमेषां द्यावा रक्षतं पृथिवी नो अभ्वात् ॥ ८ ॥
उभा शंसा नर्या मामविष्टामुभे मामूती अवसा सचेताम् ।
भूरि चिदर्यः सुदास्तरायेषा मदन्त इषयेम देवाः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतं दिवे तदवोचं पृथिव्या अभिश्रावाय प्रथमं सुमेधाः ।
पातामवद्याद्दुरितादभीके पिता माता च रक्षतामवोभिः ॥१०॥
इदं द्यावापृथिवी सत्यमस्तु पितर्मातर्यदिहोपब्रुवे वाम् ।
भूतं देवानामवमे अवोभिर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥११॥

[१८६] षडशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ८, ९ त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ५, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ पङ्क्तिः; १० स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ८, ९, ११ धैवतः; ३, ५-७, १० पञ्चमः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

आ न इळाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव एतु।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ॥ १ ॥
आ नो विश्व आस्क्रा गमन्तु देवा मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः।
भुवन्यथा नो विश्वे वृधासः करन्त्सुषाहा विथुरं न शवः ॥ २ ॥
प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषेऽग्निं शस्तिभिस्तुर्वणिः सजोषाः ।
असद्यथा नो वरुणः सुकीर्तिरिषश्च पर्षदरिगूर्तः सूरिः ॥ ३ ॥
उप व एषे नमसा जिगीषोषासानक्ता सुदुघेव धेनुः ।
समाने अहन्विमिमानो अर्कं विषुरूपे पयसि सस्मिन्नूधन् ॥ ४ ॥
उत नोऽहिर्बुध्न्योऽ३ मयस्करः शिशुं न पिप्युषीव वेति सिन्धुः।
येन नपातमपां जुनाम मनोजुवो वृषणो यं वहन्ति ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उत न ईं त्वष्टा गन्त्वच्छा स्मत्सूरिभिरभिपित्वे सजोषाः ।
आ वृत्रहेन्द्रश्चर्षणिप्रास्तुविष्टमो नरां न इह गम्याः ॥ ६ ॥
उत न ईं मतयोऽश्वयोगाः शिशुं न गावस्तरुणं रिहन्ति ।
तमीं गिरो जनयो न पत्नीः सुरभिष्टमं नरां नसन्त ॥ ७ ॥
उत न ईं मरुतो वृद्धसेनाः स्मद्रोदसी समनसः सदन्तु ।
पृषदश्वासोऽ वनयो न रथा रिशादसो मित्रयुजो न देवाः ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र नु यदेषां महिना चिकित्रे प्र युञ्जते प्रयुजस्ते सुवृक्ति ।
अध यदेषां सुदिने न शरुर्विश्वमेरिणं प्रुषायन्त सेनाः ॥ ९ ॥
प्रो अश्विनाववसे कृणुध्वं प्र पूषणं स्वतवसो हि सन्ति ।
अद्वेषो विष्णुर्वात ऋभुक्षा अच्छा सुम्नाय ववृतीय देवान् ॥ १० ॥
इयं सा वो अस्मे दीधितिर्यजत्रा अपिप्राणी च सदनी च भूयाः ।
नि या देवेषु यतते वसूयुर्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ११ ॥

[१८७] सप्ताशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—ओषधयः ॥ छन्दः—१ उष्णिक्; २, ८ निचृद्गायत्री; ३, ५ निचृदनुष्टुप्; ४ विराड्गायत्री; ६, ७ भुरिगुष्णिक्; ९, १० गायत्री; ११ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६, ७ ऋषभः; २, ४, ८-१० षड्जः; ३, ५, ११ गान्धारः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम् ।
यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥ १ ॥
स्वादो पितो मधो पितो वयं त्वा ववृमहे । अस्माकमविता भव ॥ २ ॥
उप नः पितवा चर शिवः शिवाभिरूतिभिः ।
मयोभुरद्विषेण्यः सखा सुशेवो अद्वयाः ॥ ३ ॥
तव त्ये पितो रसा रजांस्यनु विष्ठिताः । दिवि वाताइव श्रिताः ॥ ४ ॥
तव त्ये पितो ददतस्तव स्वादिष्ठ ते पितो ।
प्र स्वाद्मानो रसानां तुविग्रीवाइवेरते ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

त्वे पितो महानां देवानां मनो हितम् ।
अकारि चारु केतुना तवाहिमवसावधीत् ॥ ६ ॥
यददो पितो अजगन्विवस्व पर्वतानाम् ।
अत्रा चिन्नो मधो पितोऽरं भक्षाय गम्याः ॥ ७ ॥
यदुपामोषधीनां परिशमारिशामहे । वातापे पीव इद्भव ॥ ८ ॥
यत्ते सोम गवाशिरो यवाशिरो भजामहे । वातापे पीव इद्भव ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क॒र॒म्भ ओ॑षधे भव॒ पीवो॑ वृ॒क्क उ॑दार॒थिः। वाता॑पे॒ पीव॒ इद्भ॑व ॥ १० ॥
तं त्वा॑ व॒यं पि॑ता॒ वचो॑भि॒र्गावो॒ न हव्या॑ सुषूदिम।
दे॒वेभ्य॑स्त्वा सध॒मादं॒मस्मभ्यं॑ त्वा सध॒मादं॑म् ॥ ११ ॥

[१८८] अष्टाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—आप्रियः ॥ छन्दः—१, ३, ५-७, १० निचृद्गायत्री; २, ४, ८, ९, ११ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

समि॑द्धो अ॒द्य रा॑जसि दे॒वो दे॒वैः स॑हस्रजित्। दू॒तो ह॒व्या क॒विर्व॑ह ॥ १ ॥
तनू॑नपादृ॒तं य॒ते मध्वा॑ य॒ज्ञः सम॑ज्यते। दधत्स॒हस्रि॑णीरिषः ॥ २ ॥
आ॒जु॒ह्वा॑नो न॒ ईड्यो॑ दे॒वाँ आ व॑क्षि य॒ज्ञिया॑न्। अग्ने॑ सहस्र॒सा अ॑सि ॥ ३ ॥
प्रा॒चीनं॑ ब॒र्हिरोज॑सा स॒हस्र॑वीरमस्तृणन्। यत्रा॑दित्या वि॒राज॑थ ॥ ४ ॥
वि॒राट् स॒म्राड्वि॑भ्वी॒: प्र॒भ्वी॑र्बृ॒ह्वीश्च॒ भूय॑सीश्च॒ याः। दुरो॑ घृ॒तान्य॑क्षरन् ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

सु॒रु॒क्मे हि सु॒पेश॒साधि॒ श्रिया॑ वि॒राज॑तः। उ॒षासा॒वेह सी॑दताम् ॥ ६ ॥
प्र॒थ॒मा हि सु॒वाच॑सा॒ होता॑रा॒ दैव्या॑ क॒वी। य॒ज्ञं नो॑ यक्षतामि॒मम् ॥ ७ ॥
भार॒तीळे॑ सर॒स्व॒ति॒ या व॒: सर्वा॑ उपब्रु॒वे। ता न॑श्चोदयत॒ श्रिये ॥ ८ ॥
त्वष्टा॑ रू॒पाणि॒ हि प्र॒भुः प॒शून्विश्वा॑न्त्समा॒न॒जे। तेषां॑ नः स्फा॒तिमा य॑ज ॥ ९ ॥
उप॒ त्मन्या॑ वनस्पते॒ पाथो॑ दे॒वेभ्य॑: सृज। अ॒ग्निर्ह॒व्यानि॑ सिष्वदत् ॥ १० ॥
पु॒रो॒गा अ॒ग्निर्दे॒वानां॑ गाय॒त्रेण॒ सम॑ज्यते। स्वाहा॑कृतीषु रोचते ॥ ११ ॥

[१८९] एकोननवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४, ८ धैवतः; २, ३, ५-७ पञ्चमः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अग्ने॒ नय॑ सु॒पथा॑ रा॒ये अ॒स्मान्विश्वा॑नि देव व॒युना॑नि वि॒द्वान्।
यु॒यो॒ध्य॑१॒॑स्मज्जु॑हुरा॒णमे॑नो॒ भूयि॑ष्ठां ते॒ नम॑उक्तिं विधेम ॥ १ ॥
अग्ने॒ त्वं पा॑रया॒ नव्यो॑ अ॒स्मान्त्स्व॒स्तिभि॑रति॑ दुर्गा॑णि॒ विश्वा॑।
पूश्च॑ पृथ्वी ब॑हु॒ला न॑ उ॒र्वी भवा॑ तो॒काय॒ तन॑याय॒ शं योः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्ने त्वमस्मद्युयोध्यमीवा अनग्नित्रा अभ्यमन्त कृष्टीः ।
पुनरस्मभ्यं सुविताय देव क्षां विश्वेभिरमृतेभिर्यजत्र ॥ ३ ॥
पाहि नो अग्ने पायुभिरजस्रैरुत प्रिये सदन आ शुशुक्वान् ।
मा ते भयं जरितारं यविष्ठ नूनं विदन्मापरं सहस्वः ॥ ४ ॥
मा नो अग्नेऽव सृजो अघायाविष्यवे रिपवे दुच्छुनायै ।
मा दत्वते दशते मादते नो मा रीषते सहसावन्परा दाः ॥ ५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

वि घ त्वावाँ ऋतजात यंसद् गृणानो अग्ने तन्वे३ वरूथम् ।
विश्वाद्रिरिक्षोरुत वा निनित्सोरभिह्रुतामसि हि देव विष्पट् ॥ ६ ॥
त्वं ताँ अग्न उभयान्वि विद्वान्वेषि प्रपित्वे मनुषो यजत्र ।
अभिपित्वे मनवे शास्यो भूर्मर्मृजेन्य उशिग्भिर्नाक्रः ॥ ७ ॥
अवोचाम निवचनान्यस्मिन्मानस्य सूनुः सहसाने अग्नौ ।
वयं सहस्रमृषिभिः सनेम विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ८ ॥

[१९०] नवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ८ त्रिष्टुप्; ५-७ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ८ धैवतः; ५-७ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

अनर्वाणं वृषभं मन्द्रजिह्वं बृहस्पतिं वर्धया नव्यमर्कैः ।
गाथान्यः सुरुचो यस्य देवा आशृण्वन्ति नवमानस्य मर्तीः ॥ १ ॥
तमृत्विया उप वाचः सचन्ते सर्गो न यो देवयतामसर्जि ।
बृहस्पतिः स ह्यञ्जो वरांसि विभ्वाभवत्समृते मातरिश्वा ॥ २ ॥
उपस्तुतिं नमस उद्यतिं च श्लोकं यंसत्सवितेव प्र बाहू ।
अस्य क्रत्वाहन्योइ३ यो अस्ति मृगो न भीमो अरक्षसस्तुविष्मान् ॥ ३ ॥
अस्य श्लोको दिवीयते पृथिव्यामत्यो न यंसद्यक्षभृद्विचेताः ।
मृगाणां न हेतयो यन्ति चेमा बृहस्पतेरहिमायाँ अभि द्यून् ॥ ४ ॥
ये त्वा देवोस्रिकं मन्यमानाः पापा भद्रमुपजीवन्ति पज्राः ।
न दूढ्ये३ अनु ददासि वामं बृहस्पते चयस इत्पियारुम् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

सुप्रैतुः सूयवसो न पन्था दुर्नियन्तुः परिप्रीतो न मित्रः ।
अनर्वाणो अभि ये चक्षते नोऽपीवृता अपोर्णुवन्तो अस्थुः ॥ ६ ॥
सं यं स्तुभोऽवनयो न यन्ति समुद्रं न स्रवतो रोधचक्राः ।
स विद्वाँ उभयं चष्टे अन्तर्बृहस्पतिस्तर आपश्च गृध्रः ॥ ७ ॥
एवा महस्तुविजातस्तुविष्मान्बृहस्पतिर्वृषभो धायि देवः ।
स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ॥ ८ ॥

[१९१] एकनवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—अबोषधिसूर्याः ॥ छन्दः—१ उष्णिक्; २ भुरिगुष्णिक्; ३, ७ स्वराडुष्णिक्; ४, ९, १४ विराडनुष्टुप्; ५, ८, १५ निचृदनुष्टुप्; ६ अनुष्टुप्; १०, ११ निचृद्ब्राह्म्यनुष्टुप्; १२ विराड्ब्राह्म्यनुष्टुप्; १३ विराडुष्णिक्; १६ भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ७, १३ ऋषभः; ४-६, ८-१२, १४-१६ गान्धारः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

कङ्कतो न कङ्कतोऽथो सतीनकङ्कतः ।
द्वाविति प्लुषी इति न्यदृष्टा अलिप्सत ॥ १ ॥
अदृष्टान्हन्त्यायत्यथो हन्ति परायती ।
अथो अवघ्रती हन्त्यथो पिनष्टि पिंषती ॥ २ ॥
शरासः कुशरासो दर्भासः सैर्या उत ।
मौञ्जा अदृष्टा वैरिणाः सर्वे साकं न्यलिप्सत ॥ ३ ॥
नि गावो गोष्ठे असदन्नि मृगासो अविक्षत ।
नि केतवो जनानां न्यदृष्टा अलिप्सत ॥ ४ ॥
एत उ त्ये प्रत्यदृश्रन्प्रदोषं तस्करा इव ।
अदृष्टा विश्वदृष्टाः प्रतिबुद्धा अभूतन ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

द्यौर्वः पिता पृथिवी माता सोमो भ्रातादितिः स्वसा ।
अदृष्टा विश्वदृष्टास्तिष्ठतेलयता सु कम् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये अंस्या ये अङ्ग्याः सूचीका ये प्रकङ्कताः ।
अदृष्टाः किं चनेह वः सर्वे साकं नि जस्यत ॥ ७ ॥
उत्पुरस्तात्सूर्य एति विश्वदृष्टो अदृष्टहा ।
अदृष्टान्त्सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्यः ॥ ८ ॥
उदपप्तदसौ सूर्यः पुरु विश्वानि जूर्वन् ।
आदित्यः पर्वतेभ्यो विश्वदृष्टो अदृष्टहा ॥ ९ ॥
सूर्ये विषमा सजामि दृतिं सुरावतो गृहे ।
सो चिन्नु न मरति नो वयं मरामारे अस्य
योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार ॥ १० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

इयत्तिका शंकुन्तिका सका जघास ते विषम् ।
सो चिन्नु न मरति नो वयं मरामारे अस्य
योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार ॥ ११ ॥
त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका विषस्य पुष्पमक्षन् ।
ताश्चिन्नु न मरन्ति नो वयं मरामारे अस्य
योजनं हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार ॥ १२ ॥
नवानां नवतीनां विषस्य रोपुषीणाम् ।
सर्वासामग्रभं नामारे अस्य योजनं
हरिष्ठा मधु त्वा मधुला चकार ॥ १३ ॥
त्रिः सप्त मयूर्यः सप्त स्वसारो अग्रुवः ।
तास्ते विषं वि जभ्रिर उदकं कुम्भिनीरिव ॥ १४ ॥
इयत्तकः कुषुम्भकस्तकं भिनद्म्यदूयश्मना ।
ततो विषं प्र वावृते पराचीरनु संवतः ॥ १५ ॥
कुषुम्भकस्तदब्रवीद् गिरेः प्रवर्तमानकः ।
वृश्चिकस्यारसं विषमरसं वृश्चिक ते विषम् ॥ १६ ॥

इति प्रथमं मण्डलम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—आङ्गिरसः शौनहोत्रो भार्गवो गृत्समदः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, १५ विराड्जगती; ३, ५, ८, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६, ११, १२, १४ भुरिक् त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः; १३ स्वराट्पङ्क्तिः; १६ निचृज्जगती ॥
स्वरः—१, ९, १३ पञ्चमः; २, १५, १६ निषादः; ३-८, १०-१२, १४, १६ धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमश्मनस्परि ।
त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः ॥ १ ॥
तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निदृतायतः ।
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश्च नो दमे ॥ २ ॥
त्वमग्न इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वं विष्णुरुरुगायो नमस्यः ।
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरन्ध्या ॥ ३ ॥
त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस्त्वं मित्रो भवसि दस्म ईड्यः ।
त्वमर्यमा सत्पतिर्यस्य संभुजं त्वमंशो विदथे देव भाजयुः ॥ ४ ॥
त्वमग्ने त्वष्टा विधते सुवीर्यं तव ग्रावो मित्रमहः सजात्यम् ।
त्वमाशुहेमा रिषते स्वश्व्यं त्वं नरां शर्धो असि पुरूवसुः ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे ।
त्वं वातैररुणैर्यासि शंगयस्त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मना ॥ ६ ॥
त्वमग्ने द्रविणोदा अरंकृते त्वं देवः सविता रत्नधा असि ।
त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे त्वं पायुर्दमे यस्तेऽविधत् ॥ ७ ॥
त्वामग्ने दम आ विश्पतिं विशस्त्वां राजानं सुविदत्रमृञ्जते ।
त्वं विश्वानि स्वनीक पत्यसे त्वं सहस्राणि शता दश प्रति ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वामग्ने पितरमिष्टिभिर्नरस्त्वां भ्रात्राय शम्या तनूरुचम्।
त्वं पुत्रो भवसि यस्तेऽविधत्त्वं सखा सुशेवः पास्याधृषः॥ ९॥
त्वमग्न ऋभुराके नमस्य१स्त्वं वाजस्य क्षुमतो राय ईशिषे।
त्वं वि भास्यनु दक्षि दावने त्वं विशिक्षुरसि यज्ञमातनिः॥ १०॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

त्वमग्ने अदितिर्देव दाशुषे त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा।
त्वमिळा शतहिमासि दक्षसे त्वं वृत्रहा वसुपते सरस्वती॥ ११॥
त्वमग्ने सुभृत उत्तमं वयस्तव स्पार्हे वर्ण आ संदृशि श्रियः।
त्वं वाजः प्रतरणो बृहन्नसि त्वं रयिर्बहुलो विश्वतस्पृथुः॥ १२॥
त्वामग्न आदित्यास आस्य१ं त्वां जिह्वां शुचयश्चक्रिरे कवे।
त्वां रातिषाचो अध्वरेषु सश्चिरे त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम्॥ १३॥
त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो अद्रुह आसा देवा हविरदन्त्याहुतम्।
त्वया मर्तासः स्वदन्त आसुतिं त्वं गर्भो वीरुधां जज्ञिषे शुचिः॥ १४॥
त्वं तान्त्सं च प्रति चासि मज्मनाग्ने सुजात प्र च देव रिच्यसे।
पृक्षो यदत्र महिना वि ते भुवदनु द्यावापृथिवी रोदसी उभे॥ १५॥
ये स्तोतृभ्यो गोअग्रामश्वपेशसमग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः।
अस्माञ्च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १६॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः शौनकः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ७, १२ विराड्जगती; ३, ८, १०, ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ जगती; ५, ६, ९, १३ निचृज्जगती॥ स्वरः—१, २, ४-७, ९, १२, १३ निषादः; ३, ८, १०, ११ धैवतः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

यज्ञेन वर्धत जातवेदसमग्निं यजध्वं हविषा तना गिरा।
समिधानं सुप्रयसं स्वर्णरं दुक्षं होतारं वृजनेषु धूर्षदम्॥ १॥
अभि त्वा नक्तीरुषसो ववाशिरेऽग्ने वत्सं न स्वसरेषु धेनवः।
दिवइवेदरतिर्मानुषा युगा क्षपो भासि पुरुवार संयतः॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं देवा बुध्ने रजसः सुदंससं दिवस्पृथिव्योररतिं न्येरिरे।
रथमिव वेद्यं शुक्रशोचिषमग्निं मित्रं न क्षितिषु प्रशंस्यम्॥ ३॥
तमुक्षमाणं रजसि स्व आ दमे चन्द्रमिव सुरुचं ह्वार आ दधुः।
पृश्न्याः पतरं चितयन्तमक्षभिः पाथो न पायुं जनसी उभे अनु॥ ४॥
स होता विश्वं परि भूत्वध्वरं तमु हव्यैर्मनुष ऋञ्जते गिरा।
हिरिशिप्रो वृधसानासु जर्भुरद् द्यौर्न स्तृभिश्चितयद्रोदसी अनु॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

स नो रेवत्समिधानः स्वस्तये सन्दस्वान्रयिमस्मासु दीदिहि।
आ नः कृणुष्व सुविताय रोदसी अग्ने हव्या मनुषो देव वीतये॥ ६॥
दा नो अग्ने बृहतो दाः सहस्त्रिणो दुरो न वाजं श्रुत्या अपा वृधि।
प्राची द्यावापृथिवी ब्रह्मणा कृधि स्वर्ण शुक्रमुषसो वि दिद्युतुः॥ ७॥
स इधान उषसो राम्या अनु स्वर्ण दीदेदरुषेण भानुना।
होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो राजा विशामतिथिश्चारुरायवे॥ ८॥
एवा नो अग्ने अमृतेषु पूर्व्य धीष्वीपाय बृहद्दिवेषु मानुषा।
दुहाना धेनुर्वृजनेषु कारवे त्मना शतिनं पुरुरूपमिषणि॥ ९॥
वयमग्ने अवृता वा सुवीर्यं ब्रह्मणा वा चितयेमा जनाँ अति।
अस्माकं द्युम्नमधि पञ्च कृष्टिषूच्चा स्वर्ण शुशुचीत दुष्टरम्॥ १०॥
स नो बोधि सहस्य प्रशंस्यो यस्मिन्त्सुजाता इषयन्त सूरयः।
यमग्ने यज्ञमुपयन्ति वाजिनो नित्ये तोके दीदिवांसं स्वे दमे॥ ११॥
उभयासो जातवेदः स्याम ते स्तोतारो अग्ने सूरयश्च शर्मणि।
वस्वो रायः पुरुश्चन्द्रस्य भूयसः प्रजावतः स्वपत्यस्य शग्धि नः॥ १२॥
ये स्तोतृभ्यो गोअग्रामश्वपेशसमग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः।
अस्माञ्च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः शौनकः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ५, ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ जगती; ८, १० त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-६, ८-११ धैवतः; ७ निषादः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

समिद्धो अग्निर्निहितः पृथिव्यां प्रत्यङ् विश्वानि भुवनान्यस्थात्।
होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो देवान्यजत्वग्निरर्हन्॥ १॥
नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन्तिस्रो दिवः प्रति महा स्वर्चिः।
घृतप्रुषा मनसा हव्यमुन्दन्मूर्धन्यज्ञस्य समनक्तु देवान्॥ २॥
ईळितो अग्ने मनसा नो अर्हन्देवान्यक्षि मानुषात्पूर्वो अद्य।
स आ वह मरुतां शर्धो अच्युतमिन्द्रं नरो बर्हिषदं यजध्वम्॥ ३॥
देवं बर्हिर्वर्धमानं सुवीरं स्तीर्णं राये सुभरं वेद्यस्याम्।
घृतेनाक्तं वसवः सीदतेदं विश्वे देवा आदित्या यज्ञियासः॥ ४॥
वि श्रयन्तामुर्विया हूयमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा नमोभिः।
व्यचस्वतीर्वि प्रथन्तामजुर्या वर्णं पुनाना यशसं सुवीरम्॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

साध्वपांसि सनता न उक्षिते उषासानक्ता वय्येव रण्विते।
तन्तुं ततं संवयन्ती समीची यज्ञस्य पेशः सुदुघे पयस्वती॥ ६॥
दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर ऋजु यक्षतः समृचा वपुष्टरा।
देवान्यजन्तावृतुथा समञ्जतो नाभा पृथिव्या अधि सानुषु त्रिषु॥ ७॥
सरस्वती साधयन्ती धियं न इळा देवी भारती विश्वतूर्तिः।
तिस्रो देवीः स्वधया बर्हिरेदमच्छिद्रं पान्तु शरणं निषद्य॥ ८॥
पिशङ्गरूपः सुभरो वयोधाः श्रुष्टी वीरो जायते देवकामः।
प्रजां त्वष्टा वि ष्यतु नाभिमस्मे अथा देवानामप्येतु पाथः॥ ९॥
वनस्पतिरवसृजन्नुप स्थादग्निर्हविः सूदयाति प्र धीभिः।
त्रिधा समक्तं नयतु प्रजानन्देवेभ्यो दैव्यः शमितोप हव्यम्॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतमस्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥ ११॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—सोमाहुतिर्भार्गवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ३, ५-७ आर्षीपङ्क्तिः; ३ ब्राह्म्युष्णिक्; ९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ५-८ पञ्चमः; ४ ऋषभः; ९ धैवतः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

हुवे वः सुद्योत्मानं सुवृक्तिं विशामग्निमतिथिं सुप्रयसम्।
मित्रइव यो दिधिषाय्यो भूद्देव आदेवे जने जातवेदाः॥ १॥
इमं विधन्तो अपां सधस्थे द्वितादधुर्भृगवो विक्ष्वायोः।
एष विश्वान्यभ्यस्तु भूमा देवानामग्निररतिर्जीराश्वः॥ २॥
अग्निं देवासो मानुषीषु विक्षु प्रियं धुः क्षेष्यन्तो न मित्रम्।
स दीदयदुशतीरूर्म्या आ दक्षाय्यो यो दास्वते दम आ॥ ३॥
अस्य रण्वा स्वस्येव पुष्टिः संदृष्टिरस्य हियानस्य दक्षोः।
वि यो भरिभ्रदोषधीषु जिह्वामत्यो न रथ्यो दोधवीति वारान्॥ ४॥
आ यन्मे अभ्वं वनदः पनन्तोशिग्भ्यो नामिमीत वर्णम्।
स चित्रेण चिकिते रंसु भासा जुजुर्वाँ यो मुहुरा युवा भूत्॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

आ यो वना तातृषाणो न भाति वार्ण पथा रथ्येव स्वानीत्।
कृष्णाध्वा तपू रण्वश्चिकेत द्यौरिव स्मयमानो नभोभिः॥ ६॥
स यो व्यस्थादभि दक्षदुर्वीं पशुर्नैति स्वयुरगोपाः।
अग्निः शोचिष्माँ अतसान्युष्णान्कृष्णाव्यथिरस्वदयन्न भूम॥ ७॥
नू ते पूर्वस्यावसो अधीतौ तृतीये विदथे मन्म शंसि।
अस्मे अग्ने संयद्वीरं बृहन्तं क्षुमन्तं वाजं स्वपत्यं रयिं दाः॥ ८॥
त्वया यथा गृत्समदासो अग्ने गुहा वन्वन्त उपराँ अभि ष्युः।
सुवीरासो अभिमातिषाहः स्मत्सूरिभ्यो गृणते तद्वयो धाः॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—सोमाहुतिर्भार्गवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ६ निचृदनुष्टुप्; २, ४, ५ अनुष्टुप्; ८ विराडनुष्टुप्; ७ भुरिगुष्णिक् ॥ स्वरः—१-६, ८ गान्धारः; ७ ऋषभः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

होताजनिष्ट चेतनः पिता पितृभ्य ऊतये।
प्रयक्षञ्जेन्यं वसु शकेम वाजिनो यमम् ॥ १ ॥
आ यस्मिन्त्सप्त रश्मयस्तता यज्ञस्य नेतरि।
मनुष्वद्दैव्यमष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति ॥ २ ॥
दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्माणि वेरु तत्।
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभवत् ॥ ३ ॥
साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि।
विद्वाँ अस्य व्रता ध्रुवा वयाइवानु रोहते ॥ ४ ॥
ता अस्य वर्णमायुवो नेष्टुः सचन्त धेनवः।
कुवित्तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं ययुः ॥ ५ ॥
यदीं मातुरुप स्वसा घृतं भरन्त्यस्थित।
तासामध्वर्युरागतौ यवो वृष्टीव मोदते ॥ ६ ॥
स्वः स्वाय धायसे कृणुतामृत्विगृत्विजम्।
स्तोमं यज्ञं चादरं वनेमा ररिमा वयम् ॥ ७ ॥
यथा विद्वाँ अरं करद्विश्वेभ्यो यजतेभ्यः।
अयमग्ने त्वे अपि यं यज्ञं चकृमा वयम् ॥ ८ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—सोमाहुतिर्भार्गवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ८ गायत्री; २, ४, ६ निचृद्गायत्री; ७ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

इमां मे अग्ने समिधमिमामुपसदं वनेः। इमा उ षु श्रुधी गिरः ॥ १ ॥
अया ते अग्ने विधेमोर्जो नपादश्वमिष्टे। एना सूक्तेन सुजात ॥ २ ॥
तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं द्रविणस्युं द्रविणोदः। सपर्येम सपर्यवः ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स बोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन्। युयोध्यस्मद् द्वेषांसि ॥ ४ ॥
स नो वृष्टिं दिवस्परि स नो वाजमनर्वाणम्। स नः सहस्त्रिणीरिषः ॥ ५ ॥
ईळानायावस्यवे यविष्ठ दूत नो गिरा। यजिष्ठ होतरा गहि ॥ ६ ॥
अन्तर्ह्यग्न ईयसे विद्वान् जन्मोभया कवे। दूतो जन्येव मित्र्यः ॥ ७ ॥
स विद्वाँ आ च पिप्रयो यक्षि चिकित्व आनुषक्।
आ चास्मिन्त्सत्सि बर्हिषि ॥ ८ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—सोमाहुतिर्भार्गवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ३ निचृद्गायत्री; ४ पाद् निचृद्गायत्री; ५ विराट्पिपीलिकामध्यागायत्री; ६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

श्रेष्ठं यविष्ठ भारताग्ने द्युमन्तमा भर। वसो पुरुस्पृहं रयिम् ॥ १ ॥
मा नो अरातिरीशत देवस्य मर्त्यस्य च। परि तस्या उत द्विषः ॥ २ ॥
विश्वा उत त्वया वयं धारा उदन्याइव। अति गाहेमहि द्विषः ॥ ३ ॥
शुचिः पावक वन्द्योऽग्ने बृहद्वि रोचसे। त्वं घृतेभिराहुतः ॥ ४ ॥
त्वं नो असि भारताग्ने वशाभिरुक्षभिः। अष्टापदीभिराहुतः ॥ ५ ॥
द्रुवन्नः सर्पिरासुतिः प्रत्नो होता वरेण्यः। सहसस्पुत्रो अद्भुतः ॥ ६ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः शौनकः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २ निचृत्पिपीलिका-मध्यागायत्री; ३, ५ निचृद्गायत्री; ४ विराड्गायत्री; ६ निचृदनुष्टुप् ॥
स्वरः—१-५ षड्जः; ६ गान्धारः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

वाजयन्निव नू रथान्योगाँ अग्नेरुप स्तुहि। यशस्तमस्य मीळ्हुषः ॥ १ ॥
यः सुनीथो ददाशुषेऽजुर्यो जरयन्नरिम्। चारुप्रतीक आहुतः ॥ २ ॥
य उ श्रिया दमेष्वा दोषोषसि प्रशस्यते। यस्य व्रतं न मीयते ॥ ३ ॥
आ यः स्वर्ण भानुना चित्रो विभात्यर्चिषा। अञ्जानो अजरैरभि ॥ ४ ॥
अत्रिमनु स्वराज्यमग्निमुक्थानि वावृधुः। विश्वा अधि श्रियो दधे ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य देवानामूतिभिर्वयम् ।
अरिष्यन्तः सचेमह्यभि ष्याम पृतन्यतः ॥ ६ ॥

॥ इति द्वितीयाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयाष्टके षष्ठोऽध्यायः

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः शौनकः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३-६ धैवतः; २ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

नि होता होतृषदने विदानस्त्वेषो दीदिवाँ असदत्सुदक्षः ।
अदब्धव्रतप्रमतिर्वसिष्ठः सहस्त्रंभरः शुचिर्जिह्वो अग्निः ॥ १ ॥
त्वं दूतस्त्वमु नः परस्पास्त्वं वस्य वृषभ प्रणेता ।
अग्ने तोकस्य नस्तने तनूनामप्रयुच्छन्दीद्यद्बोधि गोपाः ॥ २ ॥
विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे ।
यस्माद्योनेरुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवींषि जुहुरे समिद्धे ॥ ३ ॥
अग्ने यजस्व हविषा यजीयाञ्छुष्टी देष्णमभि गृणीहि राधः ।
त्वं ह्यसि रयिपती रयीणां त्वं शुक्रस्य वचसो मनोता ॥ ४ ॥
उभयं ते न क्षीयते वसव्यं दिवेदिवे जायमानस्य दस्म ।
कृधि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पतिं स्वपत्यस्य रायः ॥ ५ ॥
सैनानीकेन सुविदत्रो अस्मे यष्टा देवाँ आयजिष्ठः स्वस्ति ।
अदब्धो गोपा उत नः परस्पा अग्ने द्युमदुत रेवद्दिदीहि ॥ ६ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

जोहूत्रो अग्निः प्रथमः पितेवेळस्पदे मनुषा यत्समिद्धः ।
श्रियं वसानो अमृतो विचेता मर्मृजेन्यः श्रवस्यैः स वाजी ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रूया अग्निश्चित्रभानुर्हवं मे विश्वाभिर्गीर्भिरमृतो विचेताः।
श्यावा रथं वहतो रोहिता वोतारुषाह चक्रे विभृत्रः॥ २॥
उत्तानायामजनयन्त्सुषूतं भुवद्दग्निः पुरुपेशासु गर्भः।
शिरिणायां चिदुक्तुना महोभिरपरीवृतो वसति प्रचेताः॥ ३॥
जिघर्म्यग्निं हविषा घृतेन प्रतिक्षियन्तं भुवनानि विश्वा।
पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तं व्यचिष्ठमन्नै रभसं दृशानम्॥ ४॥
आ विश्वतः प्रत्यञ्चं जिघर्म्यरक्षसा मनसा तज्जुषेत।
मर्यश्रीः स्पृहयद्वर्णो अग्निर्नाभिमृशे तन्वा३ जभुराणः॥ ५॥
ज्ञेया भागं सहसानो वरेण त्वादूतासो मनुवद्वदेम।
अनूनमग्निं जुह्वा वचस्या मधुपृचं धनसा जोहवीमि॥ ६॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ८, १०, १३, १९, २० पङ्क्तिः; २, ९ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४, ६, ११, १२, १४, १८ निचृत्पङ्क्तिः; ५ स्वराड् बृहती; ७ विराट्पङ्क्तिः; १५ बृहती; १६, १७ भुरिग्बृहती; २१ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४, ६-१४, १८-२० पञ्चमः; ५, १५-१७ मध्यमः; २१ धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

श्रुधी हवमिन्द्र मा रिषण्यः स्यामं ते दावने वसूनाम्।
इमा हि त्वामूर्जो वर्धयन्ति वसूयवः सिन्धवो न क्षरन्तः॥ १॥
सृजो महीरिन्द्र या अपिन्वः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः।
अमर्त्यं चिद्दासं मन्यमानमवाभिनदुक्थैर्वावृधानः॥ २॥
उक्थेष्विन्नु शूर येषु चाकन्त्स्तोमेष्विन्द्र रुद्रियेषु च।
तुभ्येदेता यासु मन्दसानः प्र वायवे सिस्रते न शुभ्राः॥ ३॥
शुभ्रं नु ते शुष्मं वर्धयन्तः शुभ्रं वज्रं बाह्वोर्दधानाः।
शुभ्रस्त्वमिन्द्र वावृधानो अस्मे दासीर्विशः सूर्येण सह्याः॥ ४॥
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्स्वपीवृतं मायिनं क्षियन्तम्।
उतो अपो द्यां तस्तभ्वांसमहन्नहिं शूर वीर्येण॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

स्तवा नु त इन्द्र पूर्व्या महान्युत स्तवाम नूतना कृतानि।
स्तवा वज्रं बाह्वोरुशन्तं स्तवा हरी सूर्यस्य केतू ॥ ६ ॥
हरी नु त इन्द्र वाजयन्ता घृतश्चुता स्वारमस्वार्ष्टाम् ।
वि समना भूमिरप्रथिष्टारस्त पर्वतश्चित्सरिष्यन् ॥ ७ ॥
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन्त्सं मातृभिर्वावशानो अक्रान् ।
दूरे पारे वाणीं वर्धयन्त इन्द्रेषितां धमनिं पप्रथन्नि ॥ ८ ॥
इन्द्रो महां सिन्धुमाशयानं मायाविनं वृत्रमस्फुरन्निः ।
अरेजेतां रोदसी भियाने कनिक्रदतो वृष्णो अस्य वज्रात् ॥ ९ ॥
अरौरवीद् वृष्णो अस्य वज्रोऽमानुषं यन्मानुषो निजूर्वात्।
नि मायिनो दानवस्य माया अपादयत्पपिवान्त्सुतस्य ॥ १० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दिनः सुतासः।
पृणन्तस्ते कुक्षी वर्धयन्त्विथा सुतः पौर इन्द्रमाव ॥ ११ ॥
त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा धियं वनेम ऋतया सपन्तः।
अवस्यवो धीमहि प्रशस्तिं सद्यस्ते रायो दावने स्याम ॥ १२ ॥
स्याम ते त इन्द्र ये त ऊती अवस्यव ऊर्जं वर्धयन्तः।
शुष्मिन्तमं यं चाकनाम देवास्मे रयिं रासि वीरवन्तम् ॥ १३ ॥
रासि क्षयं रासि मित्रमस्मे रासि शर्धं इन्द्र मारुतं नः।
सजोषसो ये च मन्दसानाः प्र वायवः पान्त्यग्रणीतिम् ॥ १४ ॥
व्यन्त्विन्नु येषु मन्दसानस्तृपत्सोमं पाहि द्रह्यदिन्द्र ।
अस्मान्त्सु पृत्स्वा तरुत्रावर्धयो द्यां बृहद्भिरर्कैः ॥ १५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

बृहन्त इन्नु ये ते तरुत्रोक्थेभिर्वा सुम्नमाविवासान्।
स्तृणानासो बर्हिः पस्त्यावत्त्वोता इदिन्द्र वाजमग्मन् ॥ १६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्रेष्विन्नु शूर मन्दसानस्त्रिकद्रुकेषु पाहि सोममिन्द्र।
प्रदोधुवच्छ्मश्रुषु प्रीणानो याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिम्॥ १७॥
धिष्वा शवः शूर येन वृत्रमवाभिनद्दानुमौर्णवाभम्।
अपावृणोज्ज्योतिरार्याय नि सव्यतः सादि दस्युरिन्द्र॥ १८॥
सनेम ये त ऊतिभिस्तरन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून्।
अस्मभ्यं तत्त्वाष्ट्रं विश्वरूपमरन्धयः साख्यस्य त्रिताय॥ १९॥
अस्य सुवानस्य मन्दिनस्त्रितस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्तः।
अवर्तयत्सूर्यो न चक्रं भिनद्बलमिन्द्रो अङ्गिरस्वान्॥ २०॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ २१॥

द्वितीयोऽनुवाकः [१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-५, १२-१५ त्रिष्टुप्; ६-८, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान्क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥ १॥
यः पृथिवीं व्यथमानामदृंहद्यः पर्वतान्प्रकुपिताँ अरम्णात्।
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात्स जनास इन्द्रः॥ २॥
यो हत्वाहिमरिणात्सप्त सिन्धून्यो गा उदाजदपधा वलस्य।
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक्समत्सु स जनास इन्द्रः॥ ३॥
येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः।
श्वघ्नीव यो जिगीवाँल्लक्षमाददर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः॥ ४॥
यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम्।
सो अर्यः पुष्टीर्विजइवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः ।
युक्तग्रावणो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः ॥ ६ ॥
यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः ॥ ७ ॥
यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभया अमित्राः ।
समानं चिद्रथमातस्थिवांसा नाना हवेते स जनास इन्द्रः ॥ ८ ॥
यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत्स जनास इन्द्रः ॥ ९ ॥
यः शश्वतो महोनो दधानानमन्यमानाञ्छर्वा जघान ।
यः शर्धते नानुददाति शृध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः ॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत् ।
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः ॥ ११ ॥
यः सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मानवासृजत्सर्तवे सप्त सिन्धून् ।
यो रौहिणमस्फुरद्वज्रबाहुर्द्यामारोहन्तं स जनास इन्द्रः ॥ १२ ॥
द्यावा चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः ॥ १३ ॥
यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती ।
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनास इन्द्रः ॥ १४ ॥
यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद्वाजं ददर्षि स किलासि सत्यः ।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम ॥ १५ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, १०-१२ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ निचृत् जगती; ५, ६ विराड्जगती; ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ९, १३ त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-३, ७-१३ धैवतः; ४-६ निषादः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

ऋतुर्जनित्री तस्या अपस्परि मक्षू जात आविशद्यासु वर्धते।
तदाहना अभवत्पिप्युषी पयोऽशोः पीयूषं प्रथमं तदुक्थ्यम् ॥ १ ॥
सध्रीमा यन्ति परि बिभ्रतीः पयो विश्वप्न्याय प्र भरन्त भोजनम्।
समानो अध्वा प्रवतामनुष्यदे यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ॥ २ ॥
अन्वेको वदति यद् ददाति तद्रूपा मिनन्तदपा एक ईयते।
विश्वा एकस्य विनुदस्तितिक्षते यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ॥ ३ ॥
प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त आसते रयिमिव पृष्ठं प्रभवन्तमायते।
असिन्वन्दंष्ट्रैः पितुरत्ति भोजनं यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ॥ ४ ॥
अधाकृणोः पृथिवीं संदृशे दिवे यो धौतीनामहिहन्नारिणक्पथः।
तं त्वा स्तोमेभिरुदभिर्न वाजिनं देवं देवा अजनन्त्सास्युक्थ्यः ॥ ५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

यो भोजनं च दयसे च वर्धनमार्द्रादा शुष्कं मधुमद्दुदोहिथ।
स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति विश्वस्यैक ईशिषे सास्युक्थ्यः ॥ ६ ॥
यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणाधि दाने व्यावनीरधारयः।
यश्चासमा अजनो द्यौतो दिव उरूरूर्वीँ अभितः सास्युक्थ्यः ॥ ७ ॥
यो नार्मरं सहवसुं निहन्तवे पृक्षाय च दासवेशाय चावहः।
ऊर्जयन्त्या अपरिविष्टमास्यमुतैवाद्य पुरुकृत्सास्युक्थ्यः ॥ ८ ॥
शतं वा यस्य दश साकमाद्य एकस्य श्रुष्टौ यद्ध चोदमाविथ।
अरज्जौ दस्यून्त्समुनब्दभीतये सुप्राव्यो अभवः सास्युक्थ्यः ॥ ९ ॥
विश्वेदनु रोधना अस्य पौंस्यं ददुरस्मै दधिरे कृत्वे धनम्।
षळस्तभ्ना विष्टिरः पञ्च संदृशः परि परो अभवः सास्युक्थ्यः ॥ १० ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

सुप्रवाचनं तव वीर वीर्या यदेकेन क्रतुना विन्दसे वसु।
जातूष्ठिरस्य प्र वयः सहस्वतो या चकर्थ सेन्द्र विश्वास्युक्थ्यः ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरमयः सरपसस्तरायं कं तुर्वीतये च वय्याय च स्तुतिम्।
नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थ्यः॥ १२॥
अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम्।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून्बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १३॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ४, ९, १०, १२ त्रिष्टुप्; २, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ६-१०, १२ धैवतः; ५, ११ पञ्चमः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोममामत्रेभिः सिञ्चता मद्यमन्धः।
कामी हि वीरः सदमस्य पीतिं जुहोत वृष्णे तदिदेष वष्टि॥ १॥
अध्वर्यवो यो अपो वव्रिवांसं वृत्रं जघानाशन्येव वृक्षम्।
तस्मा एतं भरत तद्वशायैष इन्द्रो अर्हति पीतिमस्य॥ २॥
अध्वर्यवो यो दूभीकं जघान यो गा उदाजदप हि वलं वः।
तस्मा एतमन्तरिक्षे न वातमिन्द्रं सोमैरोर्णुत जूर्न वस्त्रैः॥ ३॥
अध्वर्यवो य उरणं जघान नव चख्वांसं नवतिं च बाहून्।
यो अर्बुदमव नीचा बबाधे तमिन्द्रं सोमस्य भृथे हिनोत॥ ४॥
अध्वर्यवो यः स्वश्नं जघान यः शुष्णमशुषं यो व्यंसम्।
यः पिप्रुं नमुचिं यो रुधिक्रां तस्मा इन्द्रायान्धसो जुहोत॥ ५॥
अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य पुरो बिभेदाश्मनेव पूर्वीः।
यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपद्भरता सोममस्मै॥ ६॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

अध्वर्यवो यः शतमा सहस्रं भूम्या उपस्थेऽवपज्जघन्वान्।
कुत्सस्यायोरतिथिग्वस्य वीरान् न्यावृणग्भरता सोममस्मै॥ ७॥
अध्वर्यवो यन्नरः कामयाध्वे श्रुष्टी वहन्तो नशथा तदिन्द्रे।
गर्भस्तिपूतं भरत श्रुतायेन्द्राय सोमं यज्यवो जुहोत॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्वर्यवः कर्तना श्रुष्टिमस्मै वने निपूतं वन उन्नयध्वम्।
जुषाणो हस्त्यमभि वावशे व इन्द्राय सोमं मदिरं जुहोत॥ ९॥
अध्वर्यवः पयसोधर्यथा गोः सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम्।
वेदाहमस्य निभृतं म एतद्वित्सन्तं भूयो यजतश्चिकेत॥ १०॥
अध्वर्यवो यो दिव्यस्य वस्वो यः पार्थिवस्य क्षम्यस्य राजा।
तमूर्दरं न पृणता यवेनेन्द्रं सोमेभिस्तदपो वो अस्तु॥ ११॥
अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम्।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून्बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १२॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४-६, ९, १० त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ८ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ७ पञ्चमः; २-६, ८-१० धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

प्र घा न्वस्य महतो महानि सत्या सत्यस्य करणानि वोचम्।
त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्यास्य मदे अहिमिन्द्रो जघान॥ १॥
अवंशे द्यामस्तभायद् बृहन्तमा रोदसी अपृणदन्तरिक्षम्।
स धारयत्पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ २॥
सद्मेव प्राचो वि मिमाय मानैर्वज्रेण खान्यतृणन्नदीनाम्।
वृथासृजत्पथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ३॥
स प्रवोळ्हन्परिगत्या दभीतेर्विश्वमधागायुधमिद्धे अग्नौ।
सं गोभिरश्वैरसृजद्रथेभिः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ४॥
स ईं महीं धुनिमेतोररम्णात्सो अस्नातॄनपारयत्स्वस्ति।
त उत्स्राय रयिमभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

सोदञ्चं सिन्धुमरिणान्महित्वा वज्रेणान उषसः सं पिपेष।
अजवसो जविनीभिर्विवृश्चन्त्सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स विद्वाँ अपगोहं कनीनामाविर्भवन्नुदतिष्ठत्परावृक् ।
प्रति श्रोणः स्थाद् व्यनगचष्ट सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ७ ॥
भिनद्बलमङ्गिरोभिर्गृणानो वि पर्वतस्य दंहितान्यैरत् ।
रिणग्रोधांसि कृत्रिमाण्येषां सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ८ ॥
स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं धुनिं च जघन्थ दस्युं प्र दभीतिमावः ।
रम्भी चिदत्र विविदे हिरण्यं सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ ९ ॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १० ॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७ जगती; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३ विराड्जगती; ४-६, ८ निचृज्जगती; ९ त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१, ३-८ निषादः; २, ९ धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय सुष्टुतिमग्नाविव समिधाने हविर्भरे ।
इन्द्रमजुर्यं जरयन्तमुक्षितं सनाद्युवानमवसे हवामहे ॥ १ ॥
यस्मादिन्द्राद् बृहतः किं चनेमृते विश्वान्यस्मिन्त्संभृताधि वीर्या ।
जठरे सोमं तन्वी३ सहो महो हस्ते वज्रं भरति शीर्षणि क्रतुम् ॥ २ ॥
न क्षोणीभ्यां परिभ्वे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्वतैरिन्द्र ते रथः ।
न ते वज्रमन्वश्नोति कश्चन यदाशुभिः पतसि योजना पुरु ॥ ३ ॥
विश्वे ह्यस्मै यजताय धृष्णवे क्रतुं भरन्ति वृषभाय सश्चते ।
वृषा यजस्व हविषा विदुष्टरः पिबेन्द्र सोमं वृषभेण भानुना ॥ ४ ॥
वृष्णः कोशः पवते मध्व ऊर्मिर्वृषभान्नाय वृषभाय पातवे ।
वृषणाध्वर्यू वृषभासो अद्रयो वृषणं सोमं वृषभाय सुष्वति ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

वृषा ते वज्र उत ते वृषा रथो वृषणा हरी वृषभाण्यायुधा ।
वृष्णो मदस्य वृषभ त्वमीशिष इन्द्र सोमस्य वृषभस्य तृप्णुहि ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र ते नावं न समने वचस्युवं ब्रह्मणा यामि सवनेषु दाधृषिः।
कुविन्नो अस्य वचसो निबोधिषदिन्द्रमुत्सं न वसुनः सिचामहे॥ ७॥
पुरा संबाधादभ्या ववृत्स्व नो धेनुर्न वत्सं यवसस्य पिप्युषी।
सकृत्सु ते सुमतिभिः शतक्रतो सं पत्नीभिर्न वृषणो नसीमहि॥ ८॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ ९॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५, ६ विराड्जगती; २, ४ निचृज्जगती; ३, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ८ निचृत्पङ्क्तिः; ९ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४-६ निषादः; ३, ७, ९ धैवतः; ८ पञ्चमः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वदर्चत शुष्मा यदस्य प्रत्नथोदीरते।
विश्वा यद् गोत्रा सहसा परीवृता मदे सोमस्य दंहितान्यैरयत्॥ १॥
स भूतु यो ह प्रथमाय धायस ओजो मिमानो महिमानमातिरत्।
शूरो यो युत्सु तन्वं परिव्यत शीर्षणि द्यां महिना प्रत्यमुञ्चत॥ २॥
अधाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद्यदस्याग्रे ब्रह्मणा शुष्ममैरयः।
रथेष्ठेन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीरयः सिस्रते सध्र्यक् पृथक्॥ ३॥
अधा यो विश्वा भुवनाभि मज्मनेशानकृत्प्रवया अभ्यवर्धत।
आद्रोदसी ज्योतिषा वह्निरातनोत्सीव्यन्तमांसि दुधिता समव्ययत्॥ ४॥
स प्राचीनान् पर्वतान् दृंहदोजसाधराचीनमकृणोदपामपः।
अधारयत्पृथिवीं विश्वधायसमस्तभ्नान्मायया द्यामवस्रसः॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

सास्मा अरं बाहुभ्यां यं पिताकृणोद्विश्वस्मादा जनुषो वेदसस्परि।
येना पृथिव्यां नि क्रिविं शयध्यै वज्रेण हत्व्यवृणक्तुविष्वणिः॥ ६॥
अमाजूरिव पित्रोः सचा सती समानादा सदसस्त्वामिये भगम्।
कृधि प्रकेतमुप मास्या भर दद्धि भागं तन्वो३ येन मामहः॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजं त्वामिन्द्र वयं हुवेम ददिष्वमिन्द्रापांसि वाजान्।
अविड्ढीन्द्र चित्रया न ऊती कृधि वृषन्निन्द्र वस्यसो नः॥ ८॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ ९॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ३, ९ त्रिष्टुप्; ४, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ निचृत्पङ्क्तिः॥
स्वरः—१, ४-८ पञ्चमः; २, ३, ९ धैवतः॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

प्राता रथो नवो योजि सस्त्रिश्चतुर्युगस्त्रिकशः सप्तरश्मिः।
दशारित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंह्यो भूत्॥ १॥
सास्मा अरं प्रथमं स द्वितीयमुतो तृतीयं मनुषः स होता।
अन्यस्या गर्भमन्य ऊ जनन्त सो अन्येभिः सचते जेन्यो वृषा॥ २॥
हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योजमायै सूक्तेन वचसा नवेन।
मो षु त्वामत्र बहवो हि विप्रा नि रीरमन्यजमानासो अन्ये॥ ३॥
आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र याह्या चतुर्भिरा षड्भिर्हूयमानः।
आष्टाभिर्दशभिः सोमपेयमयं सुतः सुमख मा मृधस्कः॥ ४॥
आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वाङा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः।
आ पञ्चाशता सुरथेभिरिन्द्रा षष्ट्या सप्तत्या सोमपेयम्॥ ५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

आशीत्या नवत्या याह्यर्वाङा शतेन हरिभिरुह्यमानः।
अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोम इन्द्र त्वाया परिषिक्तो मदाय॥ ६॥
मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छा विश्वा हरी धुरि धिष्वा रथस्य।
पुरुत्रा हि विहव्यो बभूथास्मिञ्छूर सवने मादयस्व॥ ७॥
न म इन्द्रेण सख्यं वि योषदस्मभ्यमस्य दक्षिणा दुहीत।
उप ज्येष्ठे वरूथे गभस्तौ प्रायेप्राये जिगीवांसः स्याम॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ९ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः; ४, ७ भुरिक् पङ्क्तिः; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ६, ८, ९ धैवतः; ३-५, ७ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अपाव्यस्यान्धसो मदाय मनीषिणः सुवानस्य प्रयसः ।
यस्मिन्निन्द्रः प्रदिवि वावृधान ओकौ दधे ब्रह्मण्यन्तश्च नरः ॥ १ ॥
अस्य मन्दानो मध्वो वज्रहस्तोऽहिमिन्द्रो अर्णोवृतं वि वृश्चत्।
प्र यद्वयो न स्वसराण्यच्छा प्रयांसि च नदीनां चक्रमन्त ॥ २ ॥
स माहिन इन्द्रो अर्णो अपां प्रेरयदहिहाच्छा समुद्रम् ।
अजनयत्सूर्यं विदद्गा अक्तुनाह्नां वयुनानि साधत् ॥ ३ ॥
सो अप्रतीनि मनवे पुरूणीन्द्रो दाशद्दाशुषे हन्ति वृत्रम्।
सद्यो यो नृभ्यो अतसाय्यो भूत्पस्पृधानेभ्यः सूर्यस्य सातौ ॥ ४ ॥
स सुन्वत इन्द्रः सूर्यमा देवो रिणङ्मर्त्यीय स्तवान् ।
आ यद्रयिं गुहदवद्यमस्मै भरदंशं नैतशो दशस्यन् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

स रन्धयत्सदिवः सारथये शुष्णमशुषं कुयवं कुत्साय ।
दिवोदासाय नवतिं च नवेन्द्रः पुरो व्यैरच्छम्बरस्य ॥ ६ ॥
एवा त इन्द्रोचथमहेम श्रवस्या न त्मना वाजयन्तः ।
अश्याम ततसाममाशुषाणा ननमो वधरदेवस्य पीयोः ॥ ७ ॥
एवा तें गृत्समदाः शूर मन्मावस्यवो न वयुनानि तक्षुः ।
ब्रह्मण्यन्त इन्द्र ते नवीय इषमूर्जं सुक्षितिं सुम्नमश्युः ॥ ८ ॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; २ बृहती; ३ पङ्क्तिः; ४, ५, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६, ८, ९ धैवतः; २ मध्यमः; ३-५, ७ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

वयं ते वय इन्द्र विद्धि षु णः प्र भरामहे वाजयुर्न रथम्।
विपन्यवो दीध्यतो मनीषा सुम्नमियक्षन्तस्त्वावतो नॄन् ॥ १ ॥
त्वं न इन्द्र त्वाभिरूति त्वायतो अभिष्टिपासि जनान्।
त्वमिनो दाशुषो वरूतेत्थाधीरभि यो नक्षति त्वा ॥ २ ॥
स नो युवेन्द्रो जोहूत्रः सखा शिवो नरामस्तु पाता।
यः शंसन्तं यः शशमानमूती पचन्तं च स्तुवन्तं च प्रणेषत् ॥ ३ ॥
तमु स्तुष इन्द्रं तं गृणीषे यस्मिन्पुरा वावृधुः शाशदुश्च।
स वस्वः कामं पीपरदियानो ब्रह्मण्यतो नूतनस्यायोः ॥ ४ ॥
सो अङ्गिरसामुचथा जुजुष्वान्ब्रह्मा तूतोदिन्द्रो गातुमिष्णन्।
मुष्णन्नुषसः सूर्येण स्तवानश्नस्य चिच्छिश्नथत्पूर्व्याणि ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

स ह श्रुत इन्द्रो नाम देव ऊर्ध्वो भुवन्मनुषे दस्मतमः।
अव प्रियमर्शसानस्य साह्वाञ्छिरो भरद्दासस्य स्वधावान् ॥ ६ ॥
स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः पुरन्दरो दासीरैरयद्वि ।
अजनयन्मनवे क्षामपश्च सत्रा शंसं यजमानस्य तूतोत् ॥ ७ ॥
तस्मै तवस्य१ मनु दायि सत्रेन्द्राय देवेभिरर्णसातौ।
प्रति यदस्य वज्रं बाह्वोर्धुर्हत्वी दस्यून्पुर आयसीर्नि तारीत् ॥ ८ ॥
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी।
शिक्षा स्तोतृभ्यो माति धग्भगो नो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ९ ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ स्वराट्त्रिष्टुप्; ३-४ विराड्जगती; ५ निचृज्जगती; ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ६ धैवतः; ३-५ निषादः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

विश्वजितें धनजितें स्वर्जितें सत्राजितें नृजित उर्वराजितें।
अश्वजितें गोजितें अब्जितें भरेन्द्राय सोमं यजताय हर्यतम् ॥ १ ॥
अभिभुवेऽभिभङ्गाय वन्वतेऽषाळ्हाय सहमानाय वेधसें ।
तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे नम इन्द्राय वोचत ॥ २ ॥
सत्रासाहो जनभक्षो जनंसहश्च्यवनो युध्मो अनु जोषमुक्षितः।
वृतंचयः सहुरिर्विक्ष्वारित इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या ॥ ३ ॥
अनानुदो वृषभो दोधतो वधो गम्भीर ऋष्वो असमष्टकाव्यः।
रध्रचोदः श्नथनो वीळितस्पृथुरिन्द्रः सुयज्ञ उषसः स्वर्जनत् ॥ ४ ॥
यज्ञेन गातुमसुरो विविद्रिरे धियो हिन्वाना उशिजो मनीषिणः।
अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत ॥ ५ ॥
इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम् ॥ ६ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ अष्टिः; २ निचृदतिशक्वरी; ३ स्वराट् शक्वरी; ४ भुरिगतिशक्वरी ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २-४ पञ्चमः।

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृपत्सोममपिबद्विष्णुना
सुतं यथावशत्। स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं
सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ १ ॥
अध त्विषीमाँ अभ्योजसा क्रिविं युधाभवदा रोदसी
अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे। अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत
सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ २ ॥
साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः
सासहिर्मृधो विचर्षणिः। दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु
सैनं सश्चद्देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव॒ त्यन्नर्यं॑ नृतोऽ॑ प इन्द्र प्रथ॒मं पूर्व्यं॑ दि॒वि प्र॒वाच्यं॑ कृ॒तम् ।
यद्धे॒वस्य॒ शव॑सा॒ प्रारि॑णा॒ असु॑ं रि॒णन्न॒पः ।
भुव॒द्विश्व॑म॒भ्यदे॑व॒मोज॑सा वि॒दादू॒र्जं॑ श॒तक्र॑तुर्वि॒दादिष॑म् ॥ ४ ॥

तृतीयोऽनुवाकः [२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—१, ५, ९, ११, १७, १९ ब्रह्मणस्पतिः; २-४, ६-८, १०, १२ १६, १८ बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, ४, ५, १०-१२ जगती; २, ७-९, १३, १४ विराड्जगती; ३, ६, १६, १८ निचृज्जगती; १५, १७ भुरिक्त्रिष्टुप्; १९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१४, १६, १८ निषादः; १५, १७, १९ धैवतः ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

ग॒णानां॑ त्वा ग॒णप॑तिं हवामहे क॒विं क॑वी॒नामु॑प॒मश्र॑वस्तमम् ।
ज्येष्ठ॑राजं॒ ब्रह्म॑णां ब्रह्मणस्पत॒ आ नः॑ शृण्वन्नू॒तिभिः॑ सीद॒ सा॒द॒नम् ॥ १ ॥
दे॒वाश्चि॑त्ते असु॒र्य॑ प्रचेतसो॒ बृह॑स्पते॒ य॒ज्ञिय॑ं भा॒गमा॑नशुः ।
उ॒स्राइ॑व॒ सूर्यो॑ ज्योति॑षा म॒हो विश्वे॑षा॒मिज्जनि॒ता ब्रह्म॑णामसि ॥ २ ॥
आ वि॒बाध्या॑ परि॒रापः॑स्तमां॑सि च॒ ज्योति॑ष्मन्तं॒ रथ॑मृतस्य॑ तिष्ठसि ।
बृह॑स्पते भी॒मम॑मित्र॒दम्भ॑नं रक्षो॒हणं॑ गोत्र॒भिदं॑ स्व॒र्विद॑म् ॥ ३ ॥
सु॒नी॒तिभि॑र्नयसि॒ त्राय॑से॒ जन॑ं॒ यस्तुभ्य॒ं दाशा॒न्न तम॑हो॑ अश्नवत् ।
ब्रह्म॒द्विष॒स्तप॑नो मन्यु॒मीर॑सि॒ बृह॑स्पते॒ महि॒ तत्ते॑ महित्व॒नम् ॥ ४ ॥
न तम॑हो॒ न दु॒रि॒तं कुत॑श्च॒न नारा॑तयस्तितिरु॒र्न द्वया॑विनः ।
विश्वा॒ इद॑स्माद् ध्व॒रसो॒ वि बा॑धसे॒ यं सु॒गो॒पा रक्ष॑सि ब्रह्मणस्पते ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

त्वं नो॑ गो॒पाः प॑थि॒कृद्वि॑चक्षणस्तव॑ व्र॒ताय॑ म॒तिभि॑र्जरामहे ।
बृह॑स्पते॒ यो नो॑ अ॒भि ह्वरो॑ दधे स्वा॒ तं म॑र्मर्तु दुच्छु॒ना॒ हर॑स्वती ॥ ६ ॥
उ॒त वा॒ यो नो॑ म॒र्चया॒दना॑गसोऽ॒ रा॒तीवा॑ मर्तः॑ सानु॒को वृ॒कः ।
बृह॑स्पते॒ अप॒ तं व॑र्तया॒ पथः॑ सु॒गं नो॑ अ॒स्यै दे॒ववी॑तये कृधि ॥ ७ ॥
त्रा॒तार॑ं त्वा त॒नूना॑ं हवाम॒हेऽ॑ व॒स्पर्त॑रधिव॒क्तार॑मस्म॒युम् ।
बृह॑स्पते देव॒निदो॒ नि ब॑र्हय॒ मा दु॒रेव॒ा उत्त॑रं सु॒म्नमु॑न्नशन् ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वया॑ व॒यं सु॒वृधा॑ ब्रह्मणस्पते स्पा॒र्हा वसु॑ मनु॒ष्या द॑दीमहि।
या नो॑ दू॒रे त॒ळितो॒ या अ॑रा॒तयो॒ऽभि सन्ति॑ ज॒म्भया॒ ता अ॑न॒प्नसः॥ ९॥
त्वया॑ व॒यमु॑त्त॒मं धी॑महे॒ वयो॒ बृह॑स्पते॒ पप्रि॑णा॒ सस्नि॑ना॒ युजा।
मा नो॑ दुःशंसो॑ अभिदि॒प्सुरी॑शत॒ प्र सु॒शंसा॑ म॒तिभि॑स्तारिषीमहि॥ १०॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

अ॒ना॒नु॒दो वृ॑ष॒भो ज॑ग्मि॒राह॒वं नि॒ष्टप्ता॒ शत्रुं॑ पृतना॒सु सास॒हिः।
अ॒सि॒ स॒त्य ऋ॒ण॒या ब्र॑ह्मणस्पत उ॒ग्रस्य॑ चिद्दमि॒ता वी॑ळुहर्षिणः॥ ११॥
अदे॑वेन॒ मन॑सा॒ यो रि॑ष॒ण्यति॑ शा॒सामु॒ग्रो म॒न्यमा॑नो॒ जिघां॑सति।
बृह॑स्पते॒ मा प्र॑ण॒क्तस्य॑ नो व॒धो नि कर्म॑ म॒न्युं दु॒रेव॑स्य॒ शर्ध॑तः॥ १२॥
भरे॑षु॒ हव्यो॒ नम॑सोप॒सद्यो॒ गन्ता॒ वाजे॑षु सनि॒ता॒ धनं॑धनम्।
विश्वा॒ इद॒र्यो अ॑भिदि॒प्स्वो॑३॑ मृधो॒ बृह॒स्पति॒र्वि व॑वर्ह॒ा रथाँ॑इव॥ १३॥
तेजि॑ष्ठया तप॒नी र॒क्षस॑स्तप॒ ये त्वा॑ नि॒दे द॑धि॒रे दृ॒ष्टवी॑र्यम्।
आ॒विस्तत्कृ॑ष्व॒ यदस॑त्त उ॒क्थ्यं॑१॑ बृह॑स्पते॒ वि प॑रि॒रापो॑ अर्दय॥ १४॥
बृह॑स्पते॒ अति॒ यद॒र्यो अर्हा॑द् द्यु॒मद्वि॑भाति॒ क्रतु॑म॒ज्जने॑षु।
यद् दी॒दय॒च्छव॑स ऋ॒तप्रजा॑त॒ तद॒स्मासु॒ द्रवि॑णं धेहि चि॒त्रम्॥ १५॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

मा नः॑ स्ते॒नेभ्यो॒ ये अ॒भि द्रु॒हस्प॒दे नि॒रा॒मिणो॑ रि॒पवो॑ऽन्ने॑षु जागृधुः।
आ दे॒वाना॒मोह॑ते॒ वि व्र॒यो हृ॒दि बृह॑स्पते॒ न प॒रः साम्नो॑ विदुः॥ १६॥
विश्वे॑भ्यो हि त्वा॒ भुव॑नेभ्य॒स्परि॒ त्वष्टा॑जनत्साम्नः॑साम्नः॒ क॒विः।
स ऋ॒ण॒चिद्ऋ॑ण॒या ब्र॑ह्मण॒स्पति॑र्द्रु॒हो ह॒न्ता म॒ह ऋ॒तस्य॑ ध॒र्तरि॑॥ १७॥
तव॑ श्रि॒ये व्य॑जिहीत॒ पर्व॑तो॒ गवां॑ गो॒त्रमु॒दसृ॑जो॒ यद॑ङ्गिरः।
इन्द्रे॑ण यु॒जा तम॑सा॒ परी॑वृतं॒ बृह॑स्पते॒ निर॒ पामौ॑ब्जो अर्ण॒वम्॥ १८॥
ब्रह्म॑णस्पते॒ त्वम॒स्य य॒न्ता सू॒क्तस्य॑ बो॒धि॒ तन॑यं च जिन्व।
विश्व॑ं॒ तद्भ॒द्रं यद॑वन्ति दे॒वा बृह॒द्वदे॑म वि॒दथे॑ सु॒वीरा॑ः॥ १९॥

॥ इति द्वितीयाऽष्टके षष्ठोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयाष्टके सप्तमो अध्यायः

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—१-११, १३-१६ ब्रह्मणस्पतिः; १२ ब्रह्मणस्पतिरिन्द्रश्च ॥ छन्दः—१,७, ९, ११ निचृज्जगती; २, ३ त्रिष्टुप्; ४, ५ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६, ८, १४ जगती; १० स्वराड् जगती; १२, १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ भुरिग्जगती; १५ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६-११, १३, १४ निषादः; २-५, १२, १५, १६ धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

सेमामविड्ढि प्रभृतिं य ईशिषेऽया विधेम नवया महा गिरा।
यथा नो मीढ्वान्स्तवते सखा तव बृहस्पते सीषधः सोत नो मतिम् ॥ १ ॥
यो नस्त्वान्यनमन्योजसोतादर्दर्मन्युना शम्बराणि वि ।
प्राच्यावयदच्युता ब्रह्मणस्पतिरा चाविशद्वसुमन्तं वि पर्वतम् ॥ २ ॥
तद्देवानां देवतमाय कर्त्वमश्रथ्नन्दृळ्हाव्रदन्त वीळिता ।
उद्ना आजदभिनद् ब्रह्मणा वलमगूहत्तमो व्यचक्षयत्स्वः ॥ ३ ॥
अश्मास्यमवतं ब्रह्मणस्पतिर्मधुधारमभि यमोजसातृणत् ।
तमेव विश्वे पपिरे स्वर्दृशो बहु साकं सिसिचुरुत्समुद्रिणम् ॥ ४ ॥
सना ता का चिद् भुवना भवीत्वा माद्भिः शरद्भिर्दुरो वरन्त वः ।
अयतन्ता चरतो अन्यदन्यदिद्या चकार वयुना ब्रह्मणस्पतिः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

अभिनक्षन्तो अभि ये तमानशुर्निधिं पणीनां परमं गुहा हितम्।
ते विद्वांसः प्रतिचक्ष्यानृता पुनर्यत उ आयन्तदुदीयुराविशम् ॥ ६ ॥
ऋतावानः प्रतिचक्ष्यानृता पुनरात आ तस्थुः कवयो महस्पथः।
ते बाहुभ्यां धमितमग्निमश्मनि नकिः षो अस्त्यरणो जहुर्हि तम् ॥ ७ ॥
ऋतज्येन क्षिप्रेण ब्रह्मणस्पतिर्यत्र वष्टि प्र तदश्नोति धन्वना।
तस्य साध्वीरिषवो याभिरस्यति नृचक्षसो दृशये कर्णयोनयः ॥ ८ ॥
स संनयः स विनयः पुरोहितः स सुष्टुतः स युधि ब्रह्मणस्पतिः।
चाक्ष्मो यद्वाजं भरते मती धनादित्सूर्यस्तपति तप्यतुर्वृथा ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभु प्रभु प्रथमं मेहनावतो बृहस्पतेः सुविदत्राणि राध्या ।
इमा सातानि वेन्यस्य वाजिनो येन जना उभये भुञ्जते विशः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

योऽवरे वृजने विश्वथा विभुर्महामु रण्वः शवसा ववक्षिथ ।
स देवो देवान्प्रति पप्रथे पृथु विश्वेदु ता परिभूर्ब्रह्मणस्पतिः ॥ ११ ॥
विश्वं सत्यं मघवाना युवोरिदापश्चन प्र मिनन्ति व्रतं वाम् ।
अच्छेन्द्राब्रह्मणस्पती हविर्नोऽन्नं युजेव वाजिना जिगातम् ॥ १२ ॥
उताशिष्ठा अनु शृण्वन्ति वह्नयः सभेयो विप्रो भरते मती धना ।
वीळुद्वेषा अनु वशं ऋणमादिदिः स ह वाजी समिथे ब्रह्मणस्पतिः ॥ १३ ॥
ब्रह्मणस्पतेरभवद्यथावशं सत्यो मन्युर्महि कर्मा करिष्यतः ।
यो गा उदाजत्स दिवे वि चाभजन्महीव रीतिः शवसासरत्पृथक् ॥ १४ ॥
ब्रह्मणस्पते सुयमस्य विश्वहा रायः स्याम रथ्यो३ वयस्वतः ।
वीरेषु वीराँ उप पृङ्धि नस्त्वं यदीशानो ब्रह्मणा वेषि मे हवम् ॥ १५ ॥
ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व ।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १६ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः ॥ छन्दः—१, २ जगती; ३ निचृज्जगती; ४, ५ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

इन्धानो अग्निं वनवद्वनुष्यतः कृतब्रह्मा शूशुवद्रातहव्य इत् ।
जातेन जातमति स प्र सर्सृते यंयं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ १ ॥
वीरेभिर्वीरान्वनवद्वनुष्यतो गोभी रयिं पप्रथद्बोधति त्मना ।
तोकं च तस्य तनयं च वर्धते यंयं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ २ ॥
सिन्धुर्न क्षोदः शिमीवाँ ऋघायतो वृषेव वध्रीरभि वष्ट्योजसा ।
अग्नेरिव प्रसितिर्नाह वर्तवे यंयं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्मा अर्षन्ति दिव्या असश्चतः स सत्वभिः प्रथमो गोषु गच्छति।
अनिभृष्टतविषिर्हन्त्योजसा यंयं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः॥ ४॥
तस्मा इद्विश्वे धुनयन्त सिन्धवोऽच्छिद्रा शर्म दधिरे पुरूणि।
देवानां सुम्ने सुभगः स एधते यंयं युजं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः॥ ५॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—ब्रह्मणस्पतिः॥ छन्दः—१, ३ जगती; २, ४ निचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥
अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

ऋजुरिच्छंसो वनवद्वनुष्यतो देवयन्निददेवयन्तमभ्यसत्।
सुप्रावीरिद्वनवत्पृत्सु दुष्टरं यज्वेदयज्योर्वि भजाति भोजनम्॥ १॥
यजस्व वीर प्र विहि मनायतो भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये।
हविष्कृणुष्व सुभगो यथाससि ब्रह्मणस्पतेरव आ वृणीमहे॥ २॥
स इज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते धना नृभिः।
देवानां यः पितरमाविवासति श्रद्धामना हविषा ब्रह्मणस्पतिम्॥ ३॥
यो अस्मै हव्यैर्घृतवद्भिरविधत्प्र तं प्राचा नयति ब्रह्मणस्पतिः।
उरुष्यतीमंहसो रक्षती रिषोँ३ऽ होश्चिदस्मा उरुचक्रिरद्भुतः॥ ४॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा॥ देवता—आदित्याः॥ छन्दः—१, ३, ६, १३-१५ निचृत् त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ८, १२, १७ त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ९, १० स्वराट्पङ्क्तिः; ११, १६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-६, ८, ११-१७ धैवतः; ७, ९, १० पञ्चमः॥
अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

इमा गिर आदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद्राजभ्यो जुह्वा जुहोमि।
शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अंशः॥ १॥
इमं स्तोमं सक्रतवो मे अद्य मित्रो अर्यमा वरुणो जुषन्त।
आदित्यासः शुचयो धारपूता अवृजिना अनवद्या अरिष्टाः॥ २॥
त आदित्यास उरवो गभीरा अदब्धासो दिप्सन्तो भूर्यक्षाः।
अन्तः पश्यन्ति वृजिनोत साधु सर्वं राजभ्यः परमा चिदन्ति॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारयन्त आदित्यासो जगत्स्था देवा विश्वस्य भुवनस्य गोपाः।
दीर्घाधियो रक्षमाणा असुर्यं मृतावानश्चयमाना ऋणानि ॥ ४ ॥
विद्यामादित्या अवसो वो अस्य यदर्यमन्भय आ चिन्मयोभु।
युष्माकं मित्रावरुणा प्रणीतौ परि श्वभ्रेव दुरितानि वृज्याम् ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

सुगो हि वो अर्यमन्मित्र पन्था अनृक्षरो वरुण साधुरस्ति।
तेनादित्या अधि वोचता नो यच्छता नो दुष्परिहन्तु शर्म ॥ ६ ॥
पिपर्तु नो अदितीं राजपुत्राति द्वेषांस्यर्यमा सुगेभिः।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य शर्मोप स्याम पुरुवीरा अरिष्टाः ॥ ७ ॥
तिस्रो भूमीर्धारयन्त्रीँरुत द्यून्त्रीणि व्रता विदथे अन्तरेषाम्।
ऋतेनादित्या महि वो महित्वं तदर्यमन्वरुण मित्र चारु ॥ ८ ॥
त्री रोचना दिव्या धारयन्त हिरण्ययाः शुचयो धारपूताः।
अस्वप्नजो अनिमिषा अदब्धा उरुशंसा ऋजवे मर्त्याय ॥ ९ ॥
त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ये च देवा असुर ये च मर्ताः।
शतं नो रास्व शरदो विचक्षेऽश्यामायंषि सुधितानि पूर्वी ॥ १० ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

न दक्षिणा वि चिकिते न सव्या न प्राचीनमादित्या नोत पश्चा।
पाक्या चिद्वसवो धीर्या चिद्युष्मानीतो अभयं ज्योतिरश्याम् ॥ ११ ॥
यो राजभ्य ऋतनिभ्यो ददाश यं वर्धयन्ति पुष्टयश्च नित्याः।
स रेवान्याति प्रथमो रथेन वसुदावा विदथेषु प्रशस्तः ॥ १२ ॥
शुचिरपः सूयवसा अदब्ध उप क्षेति वृद्धवयाः सुवीरः।
नकिष्टं घ्नन्त्यन्तितो न दूराद्य आदित्यानां भवति प्रणीतौ ॥ १३ ॥
अदिते मित्र वरुणोत मृळ यद्वो वयं चकृमा कच्चिदागः।
उर्वश्यामभयं ज्योतिरिन्द्र मा नो दीर्घा अभि नशन्तमिस्राः ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उभे अस्मै पीपयतः समीची दिवो वृष्टिं सुभगो नाम पुष्यन्।
उभा क्षयावाजयन्याति पृत्सूभावर्धौ भवतः साधू अस्मै॥ १५॥
या वो माया अभिद्रुहे यजत्राः पाशा आदित्या रिपवे विचृत्ताः।
अश्वीव ताँ अति येषं रथेनारिष्टा उरावा शर्मन्त्स्याम॥ १६॥
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाव्न आ विदं शूनमापेः।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १७॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा॥ देवता—वरुणः॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ७, ११ त्रिष्टुप्; ८ विराट्त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-९, ११ धैवतः; २, १० पञ्चमः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

इदं कुवेरादित्यस्य स्वराजो विश्वानि सान्त्यभ्यस्तु मह्ना।
अति यो मन्द्रो यजथाय देवः सुकीर्तिं भिक्षे वरुणस्य भूरेः॥ १॥
तव व्रते सुभगासः स्याम स्वाध्यो वरुण तुष्टुवांसः।
उपायन उषसां गोमतीनामग्रयो न जरमाणा अनु द्यून्॥ २॥
तव स्याम पुरुवीरस्य शर्मन्नुरुशंसस्य वरुण प्रणेतः।
यूयं नः पुत्रा अदितेरदब्धा अभि क्षमध्वं युज्याय देवाः॥ ३॥
प्र सीमादित्यो असृजद्विधर्ताँ ऋतं सिन्धवो वरुणस्य यन्ति।
न श्राम्यन्ति न वि मुचन्त्येते वयो न पप्तू रघुया परिज्मन्॥ ४॥
वि मच्छ्रथाय रशनामिवाग ऋध्याम ते वरुण खामृतस्य।
मा तन्तुश्छेदि वयतो धियं मे मा मात्रा शार्यपसः पुर ऋतोः॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

अपो सु म्यक्ष वरुण भियसं मत्सम्राळृतावोऽनु मा गृभाय।
दामेव वत्साद्वि मुमुग्ध्यंहो नहि त्वदारे निमिषश्चनेशे॥ ६॥
मा नो वधैर्वरुण ये त इष्टावेनः कृण्वन्तमसुर भ्रीणन्ति।
मा ज्योतिषः प्रवसथानि गन्म वि षू मृधः शिश्रथो जीवसे नः॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमः पुरा ते वरुणोत नूनमुतापरं तुविजात ब्रवाम ।
त्वे हि कं पर्वते न श्रितान्यप्रच्युतानि दूळभ व्रतानि ॥ ८ ॥
परा ऋणा सावीरध मत्कृतानि माहं राजन्नन्यकृतेन भोजम् ।
अव्युष्टा इन्नु भूयसीरुषास आ नो जीवान्वरुण तासु शाधि ॥ ९ ॥
यो मे राजन्युज्यो वा सखा वा स्वप्ने भयं भीरवे मह्यमाह ।
स्तेनो वा यो दिप्सति नो वृको वा त्वं तस्माद्वरुण पाह्यस्मान् ॥ १० ॥
माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाव्न आ विदं शूनमापेः ।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ११ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कूर्मो गार्त्समदो गृत्समदो वा ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ६, ७ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

धृतव्रता आदित्या इषिरा आरे मत्कर्त रहसूरिवागः ।
शृण्वतो वो वरुण मित्र देवा भद्रस्य विद्वाँ अवसे हुवे वः ॥ १ ॥
यूयं देवाः प्रमतिर्यूयमोजो यूयं द्वेषांसि सनुतर्युयोत ।
अभिक्षत्तारो अभि च क्षमध्वमद्या च नो मृळयतापरं च ॥ २ ॥
किमू नु वः कृणवामापरेण किं सनेन वसव आप्येन ।
यूयं नो मित्रावरुणादिते च स्वस्तिमिन्द्रामरुतो दधात ॥ ३ ॥
हये देवा यूयमिदापयः स्थ ते मृळत नाधमानाय मह्यम् ।
मा वो रथो मध्यमवाळृते भून्मा युष्मावत्स्वापिषु श्रमिष्म ॥ ४ ॥
प्र व एको मिमय भूर्यागो यन्मा पितेव कितवं शशास ।
आरे पाशा आरे अघानि देवा मा माधि पुत्रे विमिव ग्रभीष्ट ॥ ५ ॥
अर्वाञ्चो अद्या भवता यजत्रा आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम् ।
त्राध्वं नो देवा निजुरो वृकस्य त्राध्वं कर्तादवपदो यजत्राः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माहं मघोनो वरुण प्रियस्य भूरिदाव्न आ विदं शूनमापेः।
मा रायो राजन्त्सुयमादव स्थां बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ ७॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—१-५, ७, ८, १० इन्द्रः; ६ इन्द्रासोमौ; ९ बृहस्पतिः; ११ मरुतः॥
छन्दः—१, ३ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४-७, ९ त्रिष्टुप्; १० विराट्त्रिष्टुप्;
११ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २, ४-११ धैवतः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

ऋतं देवाय कृण्वते सवित्र इन्द्रायाहिघ्ने न रमन्त आपः।
अहरहर्यात्यक्तुरपां कियात्या प्रथमः सर्ग आसाम्॥ १॥
यो वृत्राय सिनमत्राभरिष्यत्र तं जनित्री विदुष उवाच।
पथो रदन्तीरनु जोषमस्मै दिवेदिवे धुनयो यन्त्यर्थम्॥ २॥
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षेऽधा वृत्राय प्र वधं जभार।
मिहं वसान उप हीमदुद्रोत्तिग्मायुधो अजयच्छत्रुमिन्द्रः॥ ३॥
बृहस्पते तपुषाश्नेव विध्य वृकद्वरसो असुरस्य वीरान्।
यथा जघन्थ धृषता पुरा चिदेवा जहि शत्रुमस्माकमिन्द्र॥ ४॥
अव क्षिप दिवो अश्मान्मुच्या येन शत्रुं मन्दसानो निजूर्वीः।
तोकस्य सातौ तनयस्य भूरेरस्माँ अर्धं कृणुतादिन्द्र गोनाम्॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

प्र हि क्रतुं वृहथो यं वनुथो रध्रस्य स्थो यजमानस्य चोदौ।
इन्द्रासोमा युवमस्माँ अविष्टमस्मिन्भयस्थे कृणुतमु लोकम्॥ ६॥
न मा तमन्न श्रमन्नोत तन्द्रन्न वोचाम मा सुनोतेति सोमम्।
यो मे पृणाद्यो ददद्यो निबोधाद्यो मा सुन्वन्तमुप गोभिरायत्॥ ७॥
सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून्।
त्यं चिच्छर्धन्तं तविषीयमाणमिन्द्रो हन्ति वृषभं शण्डिकानाम्॥ ८॥
यो नः सनुत्य उत वा जिघत्नुरभिख्याय तं तिगितेन विध्य।
बृहस्पत आयुधैर्जेषि शत्रून्द्रुहे रीषन्तं परि धेहि राजन्॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्माकेभिः सत्वभिः शूर शूरैर्वीर्या कृधि यानि ते कर्त्वानि।
ज्योगभूवन्ननुधूपितासो हत्वी तेषामा भरा नो वसूनि॥ १०॥
तं वः शर्धं मारुतं सुम्नयुर्गिरोप ब्रुवे नमसा दैव्यं जनम्।
यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा अपत्यसाचं श्रुत्यं दिवेदिवे॥ ११॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २, ४ जगती; ३ विराट्जगती; ५ निचृत् जगती; ६ त्रिष्टुप्; ७ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५ निषादः; ६ धैवतः; ७ पञ्चमः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

अस्माकं मित्रावरुणावतं रथमादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा।
प्र यद्वयो न पप्तन्वस्मन्नस्परि श्रवस्यवो हृषीवन्तो वनर्षदः॥ १॥
अधं स्मा न उदवता सजोषसो रथं देवासो अभि विक्षु वाजयुम्।
यदाशवः पद्याभिस्तित्रतो रजः पृथिव्याः सानौ जङ्घनन्त पाणिभिः॥ २॥
उत स्य न इन्द्रो विश्वचर्षणिर्दिवः शर्धन मारुतेन सुक्रतुः।
अनु नु स्थात्यवृकाभिरूतिभी रथं महे सनये वाजसातये॥ ३॥
उत स्य देवो भुवनस्य सक्षणिस्त्वष्टा ग्राभिः सजोषा जूजुवद्रथम्।
इळा भगो बृहद्दिवोत रोदसी पूषा पुरंधिरश्विनावधा पती॥ ४॥
उत त्ये देवी सुभगे मिथूदृशोषासानक्ता जगतामपीजुवा।
स्तुषे यद्वां पृथिवि नव्यसा वचः स्थातुश्च वयस्त्रिवया उपस्तिरे॥ ५॥
उत वः शंसमुशिजामिव श्मस्यहिर्बुध्न्योऽज एकपादुत।
त्रित ऋभुक्षाः सविता चनो दधेऽपां नपादाशुहेमा धिया शमि॥ ६॥
एता वो वश्म्युद्यता यजत्रा अतक्षन्नायवो नव्यसे सम्।
श्रवस्यवो वाजं चकानाः ससिर्न रथ्यो अह धीतिमश्याः॥ ७॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—१ द्यावापृथिव्यौ; २, ३ इन्द्रस्त्वष्टा वा; ४; ५ राका; ६, ७ सिनीवाली; ८ लिङ्गोक्ताः॥ छन्दः—१ जगती; २ त्रिष्टुप्; ३ निचृज्जगती; ४, ५ विराट्जगती; ६ अनुष्टुप्; ७ विराडनुष्टुप्; ८ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-५ निषादः; २ धैवतः; ६-८ गान्धारः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अस्य मे द्यावापृथिवी ऋतायतो भूतमवित्री वचसः सिषासतः ।
ययोरायुः प्रतरं ते इदं पुर उपस्तुते वसूयुर्वां महो ददे ॥ १ ॥
मा नो गुह्या रिपं आयोरहन्दभन्मा नं आभ्यो रीरधो दुच्छुनाभ्यः ।
मा नो वि यौः सख्या विद्धि तस्य नः सुम्नायता मनसा तत्त्वेमहे ॥ २ ॥
अहेळता मनसा शृष्टिमा वह दुहानां धेनुं पिप्युषीमसश्चतम् ।
पद्याभिराशुं वचसा च वाजिनं त्वां हिनोमि पुरुहूत विश्वहा ॥ ३ ॥
राकामहं सुहवा सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा बोधतु त्मना ।
सीव्यत्वपः सूच्याच्छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायमुक्थ्यम् ॥ ४ ॥
यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि दाशुषे वसूनि ।
ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे रराणा ॥ ५ ॥
सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा ।
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि नः ॥ ६ ॥
या सुबाहुः स्वङ्गुरिः सुषूमा बहुसूवरी ।
तस्यै विश्पत्न्यै हविः सिनीवाल्यै जुहोतन ॥ ७ ॥
या गुङ्गूर्या सिनीवाली या राका या सरस्वती ।
इन्द्राणीमह्व ऊतये वरुणानीं स्वस्तये ॥ ८ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः [३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—रुद्रः ॥ छन्दः—१, ५, ९, १३-१५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ८ त्रिष्टुप्; २, ७ पङ्क्तिः; १२ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३-६, ८-११, १३-१५ धैवतः; २, ७, १२ पञ्चमः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु मा नः सूर्यस्य संदृशो युयोथाः ।
अभि नो वीरो अर्वति क्षमेत प्र जायेमहि रुद्र प्रजाभिः ॥ १ ॥
त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभिः शतं हिमा अशीय भेषजेभिः ।
व्य१स्मद् द्वेषो वितरं व्यंहो व्यमीवाश्चातयस्वा विषूचीः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियासि तवस्तमस्तवसां वज्रबाहो।
पर्षि णः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अभीती रपसो युयोधि ॥ ३ ॥
मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिर्मा दुष्टुती वृषभ मा सहूती।
उन्नो वीराँ अर्पय भेषजेभिर्भिषक्तमं त्वा भिषजां शृणोमि ॥ ४ ॥
हवीमभिर्हवते यो हविर्भिरव स्तोमेभी रुद्रं दिषीय।
ऋदूदरः सुहवो मा नो अस्यै बभ्रुः सुशिप्रो रीरधन्मनायै ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

उन्मा ममन्द वृषभो मरुत्वान्त्वक्षीयसा वयसा नाधमानम्।
घृणीव च्छायामरपा अशीया विवासेयं रुद्रस्य सुम्नम् ॥ ६ ॥
क्व१ स्य ते रुद्र मृळयाकुर्हस्तो यो अस्ति भेषजो जलाषः।
अपभर्ता रपसो दैव्यस्याभी नु मा वृषभ चक्षमीथाः ॥ ७ ॥
प्र बभ्रवे वृषभाय श्वितीचे महो महीं सुष्टुतिमीरयामि।
नमस्या कल्मलीकिनं नमोभिर्गृणीमसि त्वेषं रुद्रस्य नाम ॥ ८ ॥
स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप उग्रो बभ्रुः शुक्रेभिः पिपिशे हिरण्यैः।
ईशानादस्य भुवनस्य भूरेर्न वा उ योषद्रुद्रादसुर्यम् ॥ ९ ॥
अर्हन्बिभर्षि सायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपम्।
अर्हन्निदं दयसे विश्वमभ्वं न वा ओजीयो रुद्र त्वदस्ति ॥ १० ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम्।
मृळा जरित्रे रुद्र स्तवानोऽन्यं ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः ॥ ११ ॥
कुमारश्चित्पितरं वन्दमानं प्रति नानाम रुद्रोपयन्तम्।
भूरेर्दातारं सत्पतिं गृणीषे स्तुतस्त्वं भेषजा रास्यस्मे ॥ १२ ॥
या वो भेषजा मरुतः शुचीनि या शन्तमा वृषणो या मयोभु।
यानि मनुरवृणीता पिता नस्ता शं च योश्च रुद्रस्य वश्मि ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः परि त्वेषस्य दुर्मतिर्महीं गात्।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृळ॥ १४॥
एवा बभ्रो वृषभ चेकितान यथा देव न हृणीषे न हंसि।
हवनश्रुन्नो रुद्रेह बोधि बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ १५॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ३, ८, ९ निचृज्जगती; २, १०-१३ विराड्जगती; ४-७, १४ जगती; १५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१४ निषादः; १५ धैवतः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

धारावरा मरुतो धृष्णवोजसो मृगा न भीमास्तविषीभिरर्चिनः।
अग्रयो न शुशुचाना ऋजीषिणो भूमिं धमन्तो अप गा अवृण्वत॥ १॥
द्यावो न स्तृभिश्चितयन्त खादिनो व्यभ्रिया न द्युतयन्त वृष्टयः।
रुद्रो यद्वो मरुतो रुक्मवक्षसो वृषाजनि पृश्न्याः शुक्र ऊधनि॥ २॥
उक्षन्ते अश्वाँ अत्याँइवाजिषु नदस्य कर्णैस्तुरयन्त आशुभिः।
हिरण्यशिप्रा मरुतो दविध्वतः पृक्षं याथ पृषतीभिः समन्यवः॥ ३॥
पृक्षे ता विश्वा भुवना ववक्षिरे मित्रायं वा सदमा जीरदानवः।
पृषदश्वासो अनवभ्रराधस ऋजिप्यासो न वयुनेषु धूर्षदः॥ ४॥
इन्धन्वभिर्धेनुभी रपशदूधभिरध्वस्मभिः पथिभिर्भ्राजदृष्टयः।
आ हंसासो न स्वसराणि गन्तन मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

आ नो ब्रह्माणि मरुतः समन्यवो नरां न शंसः सवनानि गन्तन।
अश्वामिव पिप्यत धेनुमूधनि कर्ता धियं जरित्रे वाजपेशसम्॥ ६॥
तं नो दात मरुतो वाजिनं रथं आपानं ब्रह्म चितयद्दिवेदिवे।
इषं स्तोतृभ्यो वृजनेषु कारवे सनिं मेधामरिष्टं दुष्टरं सहः॥ ७॥
यद्युञ्जते मरुतो रुक्मवक्षसोऽश्वान्रथेषु भग आ सुदानवः।
धेनुर्न शिश्वे स्वसरेषु पिन्वते जनाय रातहविषे महीमिषम्॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो नो मरुतो वृकतातिमर्त्यो रिपुर्दधे वसवो रक्षता रिषः।
वर्तयत तपुषा चक्रियाभि तमव रुद्रा अशसो हन्तना वधः॥ ९॥
चित्रं तद्वो मरुतो याम चेकिते पृश्न्या यदूधरप्यापयो दुहुः।
यद्वा निदे नवमानस्य रुद्रियास्त्रितं जराय जुरतामदाभ्याः॥ १०॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

तान्वो महो मरुत एवयावो विष्णोरेषस्य प्रभृथे हवामहे।
हिरण्यवर्णान्ककुहान्यतस्रुचो ब्रह्मण्यन्तः शंस्यं राध ईमहे॥ ११॥
ते दशग्वाः प्रथमा यज्ञमूहिरे ते नो हिन्वन्तूषसो व्युष्टिषु।
उषा न रामीररुणैरपोर्णुते महो ज्योतिषा शुचता गोअर्णसा॥ १२॥
ते क्षोणीभिररुणेभिर्नाञ्जिभी रुद्रा ऋतस्य सदनेषु वावृधुः।
निमेघमाना अत्येन पाजसा सुश्चन्द्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम्॥ १३॥
ताँ इयानो महि वरूथमूतय उप घेदेना नमसा गृणीमसि।
त्रितो न यान्पञ्च होतॄनभिष्टय आववर्तदवराञ्चक्रियावसे॥ १४॥
यया रध्रं पारयथात्यंहो यया निदो मुञ्चथ वन्दितारम्।
अर्वाची सा मरुतो या व ऊतिरो षु वाश्रेव सुमतिर्जिगातु॥ १५॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—अपान्नपात्॥ छन्दः—१, ४, ६, ७, ९, १०, १२, १३, १५ निचृत् त्रिष्टुप्; २, ३, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ११ विराट्त्रिष्टुप्; १४ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४, ६, ७, ९-१५ धैवतः; २, ३, ५, ८ पञ्चमः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

उपेमसृक्षि वाजयुर्वचस्यां चनो दधीत नाद्यो गिरो मे।
अपां नपादाशुहेमा कुवित्स सुपेशसस्करति जोषिषद्धि॥ १॥
इमं स्वस्मै हृद आ सुतष्टं मन्त्रं वोचेम कुविदस्य वेदत्।
अपां नपादसुर्यस्य मह्ना विश्वान्यर्यो भुवना जजान॥ २॥
समन्या यन्त्युप यन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यः पृणन्ति।
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसमपां नपातं परि तस्थुरापः॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमस्मेरा युवतयो युवानं मर्मृज्यमानाः परि यन्त्यापः।
स शुक्रेभिः शिक्वभी रेवदस्मे दीदायानिध्मो घृतनिर्णिगप्सु॥ ४॥
अस्मै तिस्रो अव्यथ्याय नारीर्देवाय देवीर्दिधिषन्त्यन्नम्।
कृताइवोप हि प्रसर्स्रे अप्सु स पीयूषं धयति पूर्वसूनाम्॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

अश्वस्यात्र जनिमास्य च स्वर्द्रुहो रिषः संपृचः पाहि सूरीन्।
आमासु पूर्षु परो अप्रमृष्यं नारातयो वि नशन्नानृतानि॥ ६॥
स्व आ दमे सुदुघा यस्य धेनुः स्वधां पीपाय सुभ्वन्नमत्ति।
सो अपां नपादूर्जयन्नप्स्वन्तर्वसुदेयाय विधते वि भाति॥ ७॥
यो अप्स्वा शुचिना दैव्येन ऋतावाजस्र उर्विया विभाति।
वया इदन्या भुवनान्यस्य प्र जायन्ते वीरुधश्च प्रजाभिः॥ ८॥
अपां नपादा ह्यस्थादुपस्थं जिह्मानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः।
तस्य ज्येष्ठं महिमानं वहन्तीर्हिरण्यवर्णाः परि यन्ति यह्वीः॥ ९॥
हिरण्यरूपः स हिरण्यसन्दृगपां नपात्सेदु हिरण्यवर्णः।
हिरण्ययात्परि योनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै॥ १०॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

तदस्यानीकमुत चारु नामापीच्यं वर्धते नप्तुरपाम्।
यमिन्धते युवतयः समित्था हिरण्यवर्णं घृतमन्नमस्य॥ ११॥
अस्मै बहूनामवमाय सख्ये यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
सं सानु मार्ज्मि दिधिषामि बिल्मैर्ददाम्यन्नैः परि वन्द ऋग्भिः॥ १२॥
स ईं वृषाजनयत्तासु गर्भं स ईं शिशुर्धयति तं रिहन्ति।
सो अपां नपादनभिम्लातवर्णोऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष॥ १३॥
अस्मिन्पदे परमे तस्थिवांसमध्वस्मभिर्विश्वहा दीदिवांसम्।
आपो नप्त्रे घृतमन्नं वहन्तीः स्वयमत्कैः परि दीयन्ति यह्वीः॥ १४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयांसमग्ने सुक्षितिं जनायायांसमु मघवद्भ्यः सुवृक्तिम्।
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ १५॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—१ इन्द्रो मधुश्च; २ मरुतो माधवश्च; ३ त्वष्टा शुक्रश्च; ४ अग्निः शुचिश्च; ५ इन्द्रो नभश्च; ६ मित्रावरुणौ नभस्यश्च॥ छन्दः—१, ४ स्वराट् त्रिष्टुप्; २, ३ जगती; ५, ६ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४-६ धैवतः; २, ३ निषादः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ट गा अपोऽधुक्षन्त्सीमविभिरद्रिभिर्नरः।
पिबेन्द्र स्वाहा प्रहुतं वषट्कृतं होत्रादा सोमं प्रथमो य ईशिषे॥ १॥
यज्ञैः संमिश्लाः पृषतीभिर्ऋष्टिभिर्यामञ्छुभ्रासो अञ्जिषु प्रिया उत।
आसद्या बर्हिर्भरतस्य सूनवः पोत्रादा सोमं पिबता दिवो नरः॥ २॥
अमेव नः सुहवा आ हि गन्तन नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन।
अथा मन्दस्व जुजुषाणो अन्धसस्त्वष्टर्देवेभिर्जनिभिः सुमद्गणः॥ ३॥
आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि चोशन्होतर्नि षदा योनिषु त्रिषु।
प्रति वीहि प्रस्थितं सोम्यं मधु पिबाग्नीध्रात्तव भागस्य तृप्णुहि॥ ४॥
एष स्य ते तन्वो नृम्णवर्धनः सह ओजः प्रदिवि बाह्वोर्हितः।
तुभ्यं सुतो मघवन्तुभ्यमाभृतस्त्वमस्य ब्राह्मणादा तृपत्पिब॥ ५॥
जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे सत्तो होता निविदः पूर्व्या अनु।
अच्छा राजाना नमो एत्यावृतं प्रशास्त्रादा पिबतं सोम्यं मधु॥ ६॥

॥ इति द्वितीयाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—१-४ द्रविणोदाः; ५ अश्विनौ; ६ अग्निः॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २ जगती; ३ विराड्जगती; ४, ६ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ५ निषादः; ४, ६ धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

मन्दस्व होत्रादनु जोषमन्धसोऽध्वर्यवः स पूर्णां वष्ट्यासिचम्।
तस्मा एतं भरत तद्वशो ददिर्होत्रात्सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः ॥ १ ॥
यमु पूर्वमहुवे तमिदं हुवे सेदु हव्यो ददिर्यो नाम पत्यते।
अध्वर्युभिः प्रस्थितं सोम्यं मधु पोत्रात्सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः ॥ २ ॥
मेद्यन्तु ते वह्नयो येभिरीयसेऽरिषण्यन्वीळयस्वा वनस्पते ।
आयूया धृष्णो अभिगूर्या त्वं नेष्ट्रात्सोमं द्रविणोदः पिब ऋतुभिः ॥ ३ ॥
अपाद्धोत्रादुत पोत्रादमत्तोत नेष्ट्रादजुषत प्रयो हितम् ।
तुरीयं पात्रममृक्तमर्त्यं द्रविणोदाः पिबतु द्राविणोदसः ॥ ४ ॥
अर्वाञ्चमद्य यय्यं नृवाहणं रथं युञ्जाथामिह वां विमोचनम्।
पृङ्क्तं हवींषि मधुना हि कं गतमथा सोमं पिबतं वाजिनीवसू ॥ ५ ॥
जोष्यग्ने समिधं जोष्याहुतिं जोषि ब्रह्म जन्यं जोषि सुष्टुतिम्।
विश्वेभिर्विश्वाँ ऋतुना वसो मह उशन्देवाँ उशतः पायया हविः ॥ ६ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ९ भुरिक्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—१-६, १०, ११ धैवतः; ७-९ पञ्चमः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

उदु ष्य देवः सविता सवाय शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्थात्।
नूनं देवेभ्यो वि हि धाति रत्नमथाभजद्वीतिहोत्रं स्वस्तौ ॥ १ ॥
विश्वस्य हि श्रुष्टये देव ऊर्ध्वः प्र बाहवा पृथुपाणिः ससर्ति।
आपश्चिदस्य व्रत आ निमृग्रा अयं चिद्वातो रमते परिज्मन् ॥ २ ॥
आशुभिश्चिद्यान्वि मुचाति नूनमरीरमदतमानं चिदेतोः ।
अह्यर्षूणां चिन्न्यया अविष्यामनु व्रतं सवितुर्मोक्यागात् ॥ ३ ॥
पुनः समव्यद्विततं वयन्ती मध्या कर्तोर्न्यधाच्छक्म धीरः ।
उत्संहार्यास्थाद् व्यृतूँरदर्धर्ररमतिः सविता देव आगात् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नानौकांसि दुर्यो विश्वमायुर्वि तिष्ठते प्रभवः शोको अग्रेः ।
ज्येष्ठं माता सूनवे भागमाधादन्वस्य केतमिषितं सवित्रा ॥ ५ ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

समावर्वर्ति विष्ठितो जिगीषुर्विश्वेषां कामश्चरतामाभूत् ।
शश्वाँ अपो विकृतं हित्व्यागादनु व्रतं सवितुर्दैव्यस्य ॥ ६ ॥
त्वया हितमप्स्वप्सु भागं धन्वान्वा मृगयसो वि तस्थुः ।
वनानि विभ्यो नकिरस्य तानि व्रता देवस्य सवितुर्मिनन्ति ॥ ७ ॥
याद्राध्यं वरुणो योनिमप्यमनिशितं निमिषि जभुराणः ।
विश्वो मार्ताण्डो व्रजमा पशुर्गात्स्थशो जन्मानि सविता व्याकः ॥ ८ ॥
न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो व्रतमर्यमा न मिनन्ति रुद्रः ।
नारातयस्तमिदं स्वस्ति हुवे देवं सवितारं नमोभिः ॥ ९ ॥
भगं धियं वाजयन्तः पुरन्धिं नराशंसो ग्नास्पतिर्नो अव्याः ।
आये वामस्य सङ्गथे रयीणां प्रिया देवस्य सवितुः स्याम ॥ १० ॥
अस्मभ्यं तद्दिवो अद्भ्यः पृथिव्यास्त्वया दत्तं काम्यं राध आ गात् ।
शं यत्स्तोतृभ्य आपये भवात्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे ॥ ११ ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ७, ८ त्रिष्टुप्; ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ७, ८ धैवतः; २, ५, ६ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

ग्रावाणेव तदिदर्थं जरेथे गृध्रेव वृक्षं निधिमन्तमच्छ ।
ब्रह्माणेव विदथ उक्थशासा दूतेव हव्या जन्या पुरुत्रा ॥ १ ॥
प्रातर्यावाणा रथ्येव वीराजेव यमा वरमा सचेथे ।
मेनेइव तन्वा शुम्भमाने दम्पतीव क्रतुविदा जनेषु ॥ २ ॥
शृङ्गेव नः प्रथमा गन्तमर्वाक्छफाविव जभुराणा तरोभिः ।
चक्रवाकेव प्रति वस्तोरुस्रावाज्या यातं रथ्येव शक्रा ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नावेव नः पारयतं युगेव नभ्येव न उपधीव प्रधीव ।
श्वानेव नो अरिषण्या तनूनां खृगलेव विस्रसः पातमस्मान् ॥ ४ ॥
वातेवाजुर्या नद्येव रीतिरक्षीइव चक्षुषा यातमर्वाक् ।
हस्ताविव तन्वे३ शंभविष्ठा पादेव नो नयतं वस्यो अच्छ ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता स्तनाविव पिप्यतं जीवसे नः ।
नासेव नस्तन्वो रक्षितारा कर्णाविव सुश्रुता भूतमस्मे ॥ ६ ॥
हस्तेव शक्तिमभि संददी नः क्षामेव नः समजतं रजांसि ।
इमा गिरो अश्विना युष्मयन्तीः क्ष्णोत्रेणेव स्वधितिं सं शिशीतम् ॥ ७ ॥
एतानि वामश्विना वर्धनानि ब्रह्म स्तोमं गृत्समदासो अक्रन् ।
तानि नरा जुजुषाणोप यातं बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ८ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—सोमापूषणावदितिश्च ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५, ६ धैवतः; ४ पञ्चमः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

सोमापूषणा जनना रयीणां जनना दिवो जनना पृथिव्याः ।
जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम् ॥ १ ॥
इमौ देवौ जायमानौ जुषन्तेमौ तमांसि गूहतामजुष्टा ।
आभ्यामिन्द्रः पक्वमामास्वन्तः सोमापूषभ्यां जनदुस्रियासु ॥ २ ॥
सोमापूषणा रजसो विमानं सप्तचक्रं रथमविश्वमिन्वम् ।
विषूवृतं मनसा युज्यमानं तं जिन्वथो वृषणा पञ्चरश्मिम् ॥ ३ ॥
दिव्यन्यः सदनं चक्र उच्चा पृथिव्यामन्यो अध्यन्तरिक्षे ।
तावस्मभ्यं पुरुवारं पुरुक्षुं रायस्पोषं वि ष्यतां नाभिमस्मे ॥ ४ ॥
विश्वान्यन्यो भुवना जजान विश्वमन्यो अभिचक्षाण एति ।
सोमापूषणावतं धियं मे युवाभ्यां विश्वाः पृतना जयेम ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धियं पूषा जिन्वतु विश्वमिन्वो रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु।
अवतु देव्यदितिरनर्वा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ६ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः॥ देवता—१, २ वायुः; ३ इन्द्रवायू; ४-६ मित्रावरुणौ; ७-९ अश्विनौ; १०-१२ इन्द्रः; १३-१५ विश्वे देवाः; १६-१८ सरस्वती; १९-२१ द्यावापृथिव्यौ हविर्धानं वा॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, १०, ११, १३, १५, १९-२१ गायत्री; २, ५, ९, १२, १४, निचृद्गायत्री; ७ पाद्निचृद्गायत्री; ८ विराड्गायत्री; १६ अनुष्टुप्; १७ उष्णिक्; १८ बृहती॥ स्वरः—१-१५, १९-२१ षड्जः; १६ गान्धारः; १७ ऋषभः; १८ मध्यमः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७ ॥

वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरा गहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये॥ १ ॥
नियुत्वान्वायवा गह्ययं शुक्रो अयामि ते। गन्तासि सुन्वतो गृहम्॥ २ ॥
शुक्रस्याद्य गवाशिर इन्द्रवायू नियुत्वतः। आ यातं पिबतं नरा॥ ३ ॥
अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा। ममेदिह श्रुतं हवम्॥ ४ ॥
राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे। सहस्त्रस्थूण आसाते ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८ ॥

ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती। सचेते अनवह्वरम्॥ ६ ॥
गोमदू षु नासत्याश्वावद्यातमश्विना। वर्ती रुद्रा नृपाय्यम् ॥ ७ ॥
न यत्परो नान्तर आदधर्षद् वृषण्वसू। दुःशंसो मर्त्यो रिपुः॥ ८ ॥
ता न आ वोळ्हमश्विना रयिं पिशङ्गसन्दृशम्। धिष्ण्या वरिवोविदम्॥ ९ ॥
इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदपं चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९ ॥

इन्द्रश्च मृळयाति नो न नः पश्चादघं नशत्। भद्रं भवाति नः पुरः॥ ११ ॥
इन्द्र आशाभ्यस्परि सर्वीभ्यो अभयं करत्। जेता शत्रून्विचर्षणिः॥ १२ ॥
विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम्। एदं बर्हिर्नि षीदत॥ १३ ॥
तीव्रो वो मधुमाँ अयं शुनहोत्रेषु मत्सरः। एतं पिबत काम्यम्॥ १४ ॥
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः। विश्वे मम श्रुता हवम्॥ १५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अम्बितमे नदीतमे देवितमे सरस्वति ।
अप्रशस्ताइव स्मसि प्रशस्तिमम्ब नस्कृधि ॥ १६ ॥
त्वे विश्वा सरस्वति श्रितायूंषि देव्याम् ।
शुनहोत्रेषु मत्स्व प्रजां देवि दिदिड्ढि नः ॥ १७ ॥
इमा ब्रह्म सरस्वति जुषस्व वाजिनीवति ।
या ते मन्म गृत्समदा ऋतावरि प्रिया देवेषु जुह्वति ॥ १८ ॥
प्रेतां यज्ञस्य शंभुवा युवामिदा वृणीमहे । अग्निं च हव्यवाहनम् ॥ १९ ॥
द्यावा नः पृथिवी इमं सिध्रमद्य दिविस्पृशम् । यज्ञं देवेषु यच्छताम् ॥ २० ॥
आ वामुपस्थमद्रुहा देवाः सीदन्तु यज्ञियाः । इहाद्य सोमपीतये ॥ २१ ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—कपिञ्जलइवेन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण इयर्ति वाचमरितेव नावम् ।
सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मा त्वा का चिदभिभा विश्व्या विदत् ॥ १ ॥
मा त्वा श्येन उद्वधीन्मा सुपर्णो मा त्वा विददिषुमान्वीरो अस्ता ।
पित्र्यामनु प्रदिशं कनिक्रदत्सुमङ्गलो भद्रवादी वदेह ॥ २ ॥
अव क्रन्द दक्षिणतो गृहाणां सुमङ्गलो भद्रवादी शकुन्ते ।
मा नः स्तेन ईशत माघशंसो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ३ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—कपिञ्जलइवेन्द्रः ॥ छन्दः—१ जगती; २ भुरिगतिशक्वरी; ३ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, ३ निषादः; २ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्रदक्षिणिदभि गृणन्ति कारवो वयो वदन्त ऋतुथा शकुन्तयः ।
उभे वाचौ वदति सामगाइव गायत्रं च त्रैष्टुभं चानु राजति ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्गातेव शकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्रइव सवनेषु शंससि ।
वृषेव वाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतो नः शकुने भद्रमा वद
विश्वतो नः शकुने पुण्यमा वद ॥ २ ॥
आवदंस्त्वं शकुने भद्रमा वद तूष्णीमासीनः सुमतिं चिकिद्धि नः ।
यदुत्पतन्वदसि कर्करिर्यथा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥ ३ ॥

इति द्वितीयं मण्डलम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तृतीयं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—गाथिनो विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३-५, ९, ११, १२, १५, १७, १९, २० निचृत्त्रिष्टुप्; २, ६, ७, १३, १४ त्रिष्टुप्; ८, १६, २३ स्वराट्पङ्क्तिः; १०, २१ विराट्त्रिष्टुप्; १८ भुरिक्पङ्क्तिः; २२ ज्योतिष्मतीत्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-७, ९-१५, १७, १९-२२ धैवतः; ८, १६, १८, २३ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

सोमस्य मा तवसं वक्ष्यग्ने वह्निं चकर्थ विदथे यजध्यै।
देवाँ अच्छा दीद्यद्युञ्जे अद्रिं शमाये अग्ने तन्वं जुषस्व ॥ १ ॥
प्राञ्चं यज्ञं चकृम वर्धतां गीः समिद्भिरग्निं नमसा दुवस्यन्।
दिवः शशासुर्विदथा कवीनां गृत्साय चित्तवसे गातुमीषुः ॥ २ ॥
मयो दधे मेधिरः पूतदक्षो दिवः सुबन्धुर्जनुषा पृथिव्याः।
अविन्दन्नु दर्शतमप्स्वन्तर्देवासो अग्निमपसि स्वसॄणाम् ॥ ३ ॥
अवर्धयन्त्सुभगं सप्त यह्वीः श्वेतं जज्ञानमरुषं महित्वा।
शिशुं न जातमभ्यारुरश्वा देवासो अग्निं जनिमन्वपुष्यन् ॥ ४ ॥
शुक्रेभिरङ्गै रज आततन्वान्क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः।
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां श्रियो मिमीते बृहतीरनूनाः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

वव्राजा सीमदतीरदब्धा दिवो यह्वीरवसाना अनग्नाः।
सना अत्र युवतयः सयोनीरेकं गर्भं दधिरे सप्त वाणीः ॥ ६ ॥
स्तीर्णा अस्य संहतो विश्वरूपा घृतस्य योनौ स्रवथे मधूनाम्।
अस्थुरत्र धेनवः पिन्वमाना मही दस्मस्य मातरा समीची ॥ ७ ॥
बभ्राणः सूनो सहसो व्यद्यौद्दधानः शुक्रा रभसा वपूंषि।
श्चोतन्ति धारा मधुनो घृतस्य वृषा यत्र वावृधे काव्येन ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पितुश्चिदूधर्जनुषा विवेद व्यस्य धारा असृजद्वि धेनाः ।
गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिर्दिवो यह्वीभिर्न गुहा बभूव ॥ ९ ॥
पितुश्च गर्भं जनितुश्च बभ्रे पूर्वीरेको अधयत्पीप्यानाः ।
वृष्णो सपत्नी शुचये सबन्धू उभे अस्मै मनुष्ये३ नि पाहि ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

उरौ महाँ अनिबाधे ववर्धापो अग्निं यशसः सं हि पूर्वीः ।
ऋतस्य योनावशयद्दमूना जामीनामग्निरप्सि स्वसॄणाम् ॥ ११ ॥
अक्रो न बभ्रिः समिथे महीनां दिदृक्षेयः सूनवे भात्रृजीकः ।
उदुस्त्रिया जनिता यो जजानापां गर्भो नृतमो यह्वो अग्निः ॥ १२ ॥
अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां वना जजान सुभगा विरूपम् ।
देवासश्चिन्मनसा सं हि जग्मुः पनिष्ठं जातं तवसं दुवस्यन् ॥ १३ ॥
बृहन्त इद्भानवो भात्रृजीकमग्निं सचन्त विद्युतो न शुक्राः ।
गुहेव वृद्धं सदसि स्वे अन्तरपार ऊर्वे अमृतं दुहानाः ॥ १४ ॥
ईळे च त्वा यजमानो हविर्भिरीळे सखित्वं सुमतिं निकामः ।
देवैरवो मिमीहि सं जरित्रे रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ॥ १५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

उपक्षेतारस्तव सुप्रणीतेऽग्ने विश्वानि धन्या दधानाः ।
सुरेतसा श्रवसा तुज्यमाना अभि ष्याम पृतनायूँरदेवान् ॥ १६ ॥
आ देवानामभवः केतुरग्रे मन्द्रो विश्वानि काव्यानि विद्वान् ।
प्रति मताँ अवासयो दमूना अनु देवान्रथिरो यासि साधन् ॥ १७ ॥
नि दुरोणे अमृतो मर्त्यानां राजा ससाद विदथानि साधन् ।
घृतप्रतीक उर्विया व्यद्यौदग्निर्विश्वानि काव्यानि विद्वान् ॥ १८ ॥
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान्महीभिरूतिभिः सरण्यन् ।
अस्मे रयिं बहुलं सन्तरुत्रं सुवाचं भागं यशसं कृधी नः ॥ १९ ॥
एता ते अग्ने जनिमा सनानि प्र पूर्व्याय नूतनानि वोचम् ।
महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा जन्मञ्जन्मन्निहितो जातवेदाः ॥ २० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्मंजन्मन्निहितो जातवेदा विश्वामित्रेभिरिध्यते अजस्त्रः ।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ॥ २१ ॥
इमं यज्ञं सहसावन्त्वं नो देवत्रा धेहि सुक्रतो ररांणः ।
प्र यंसि होतर्बृहतीरिषो नोऽग्ने महि द्रविणमा यजस्व ॥ २२ ॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ २३ ॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निर्वैश्वानरः ॥ छन्दः—१, ३, १० जगती; २, ४, ६, ८, ९, ११ विराड्जगती; ५, ७, १२-१५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

वैश्वानराय धिषणामृतावृधे घृतं न पूतमग्नये जनामसि ।
द्विता होतारं मनुषश्च वाघतो धिया रथं न कुलिशः समृण्वति ॥ १ ॥
स रोचयज्जनुषा रोदसी उभे स मात्रोरभवत्पुत्र ईड्यः ।
हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितो दूळभो विशामतिथिर्विभावसुः ॥ २ ॥
क्रत्वा दक्षस्य तरुषो विधर्मणि देवासो अग्निं जनयन्त चित्तिभिः ।
रुरुचानं भानुना ज्योतिषा महामत्यं न वाजं सनिष्यन्नुप ब्रुवे ॥ ३ ॥
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो वरेण्यं वृणीमहे अह्रयं वाजमृग्मियम् ।
रातिं भृगूणामुशिजं कविक्रतुमग्निं राजन्तं दिव्येन शोचिषा ॥ ४ ॥
अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना वाजश्रवसमिह वृक्तबर्हिषः ।
यतस्रुचः सुरुचं विश्वदेव्यं रुद्रं यज्ञानां साधदिष्टिमपसाम् ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

पावकशोचे तव हि क्षयं परि होतर्यज्ञेषु वृक्तबर्हिषो नरः ।
अग्ने दुव इच्छमानास आप्यमुपासते द्रविणं धेहि तेभ्यः ॥ ६ ॥
आ रोदसी अपृणदा स्वर्महज्जातं यदेनमपसो अधारयन् ।
सो अध्वराय परि णीयते कविरत्यो न वाजसातये चनोहितः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमस्यत हव्यदातिं स्वध्वरं दुवस्यत दम्यं जातवेदसम् ।
रथीर्ऋतस्य बृहतो विचर्षणिरग्निर्देवानामभवत् पुरोहितः ॥ ८ ॥
तिस्रो यह्वस्य समिधः परिज्मनोऽग्नेरपुनन्नुशिजो अमृत्यवः ।
तासामेकामदधुर्मर्त्ये भुजमु लोकमु द्वे उप जामिमीयतुः ॥ ९ ॥
विशां कविं विश्पतिं मानुषीरिषः सं सीमकृण्वन्त्स्वधितिं न तेजसे ।
स उद्वतो निवतो याति वेविषत्स गर्भमेषु भुवनेषु दीधरत् ॥ १० ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

स जिन्वते जठरेषु प्रजज्ञिवान्वृषा चित्रेषु नानदन्न सिंहः ।
वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो वसु रत्ना दयमानो वि दाशुषे ॥ ११ ॥
वैश्वानरः प्रत्नथा नाकमारुहद्दिवस्पृष्ठं भन्दमानः सुमन्मभिः ।
स पूर्ववज्जनयञ्जन्तवे धनं समानमज्मं पर्येति जागृविः ॥ १२ ॥
ऋतावानं यज्ञियं विप्रमुक्थ्यं मा यं दधे मातरिश्वा दिवि क्षयम् ।
तं चित्रयामं हरिकेशमीमहे सुदीतिमग्निं सुविताय नव्यसे ॥ १३ ॥
शुचिं न यामन्निषिरं स्वर्दृशं केतुं दिवो रोचनस्थामुषर्बुधम् ।
अग्निं मूर्धानं दिवो अप्रतिष्कुतं तमीमहे नमसा वाजिनं बृहत् ॥ १४ ॥
मन्द्रं होतारं शुचिमद्वयाविनं दमूनसमुक्थ्यं विश्वचर्षणिम् ।
रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुर्हितं सदमिद्राय ईमहे ॥ १५ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—वैश्वानरोऽग्निः ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २-४, ६, ८, ९ जगती; ७, १० विराड्जगती; ११ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-१० निषादः; ११ पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

वैश्वानराय पृथुपाजसे विपो रत्ना विधन्त धरुणेषु गातवे ।
अग्निर्हि देवाँ अमृतो दुवस्यत्यथा धर्माणि सनता न दूदुषत् ॥ १ ॥
अन्तर्दूतो रोदसी दस्म ईयते होता निषत्तो मनुषः पुरोहितः ।
क्षयं बृहन्तं परि भूषति द्युभिर्देवेभिरग्निरिषितो धियावसुः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केतुं यज्ञानां विदथस्य साधनं विप्रासो अग्निं महयन्त चित्तिभिः।
अपांसि यस्मिन्नधि सन्दधुर्गिरस्तस्मिन्त्सुम्नानि यजमान आ चके॥ ३॥
पिता यज्ञानामसुरो विपश्चितां विमानमग्निर्वयुनं च वाघताम्।
आ विवेश रोदसी भूरिवर्पसा पुरुप्रियो भन्दते धामभिः कविः॥ ४॥
चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं हरिव्रतं वैश्वानरमप्सुषदं स्वर्विदम्।
विगाहं तूर्णिं तविषीभिरावृतं भूर्णिं देवास इह सुश्रियं दधुः॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च जन्तुभिस्तन्वानो यज्ञं पुरुपेशसं धिया।
रथीरन्तरीयते साधदिष्टिभिर्जीरो दमूना अभिशस्तिचातनः॥ ६॥
अग्ने जरस्व स्वपत्य आयुन्यूर्जा पिन्वस्व समिषो दिदीहि नः।
वयांसि जिन्व बृहतश्च जागृव उशिग्देवानामसि सुक्रतुर्विपाम्॥ ७॥
विश्पतिं यह्वमतिथिं नरः सदा यन्तारं धीनामुशिजं च वाघताम्।
अध्वराणां चेतनं जातवेदसं प्र शंसन्ति नमसा जूतिभिर्वृधे॥ ८॥
विभावा देवः सुरणः परि क्षितीरग्निर्बभूव शवसा सुमद्रथः।
तस्य व्रतानि भूरिपोषिणो वयमुप भूषेम दम आ सुवृक्तिभिः॥ ९॥
वैश्वानर तव धामान्या चके येभिः स्वर्विदभवो विचक्षण।
जात आपृणो भुवनानि रोदसी अग्ने ता विश्वा परिभूरसि त्मना॥ १०॥
वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो बृहदरिणादेकः स्वपस्यया कविः।
उभा पितरा महयन्नजायताग्निर्द्यावापृथिवी भूरिरेतसा॥ ११॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—आप्रियः॥ छन्दः—१, ४, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ३, ५ त्रिष्टुप्; ६, ८, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४, ७ पञ्चमः; २, ३, ५, ६, ८-११ धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

समित्समित्सुमना बोध्यस्मे शुचाशुचा सुमतिं रासि वस्वः।
आ देव देवान्यजथाय वक्षि सखा सखीन्त्सुमना यक्ष्यग्ने॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यं देवास स्त्रिरहन्नायजन्ते दिवेदिवे वरुणो मित्रो अग्निः।
सेमं यज्ञं मधुमन्तं कृधी नस्तनूनपाद् घृतयोनिं विधन्तम्॥ २॥
प्र दीधितिर्विश्ववारा जिगाति होतारमिळः प्रथमं यजध्यै।
अच्छा नमोभिर्वृषभं वन्दध्यै स देवान्यक्षदिषितो यजीयान्॥ ३॥
ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे अकार्यूर्ध्वा शोचींषि प्रस्थिता रजांसि।
दिवो वा नाभा न्यसादि होता स्तृणीमहि देवव्यचा वि बर्हिः॥ ४॥
सप्त होत्राणि मनसा वृणाना इन्वन्तो विश्वं प्रति यन्नृतेन।
नृपेशसो विदथेषु प्र जाता अभीमं यज्ञं वि चरन्त पूर्वीः॥ ५॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ २३॥

आ भन्दमाने उषसा उपाके उत स्मयेते तन्वा३ विरूपे।
यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषदिन्द्रो मरुत्वाँ उत वा महोभिः॥ ६॥
दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति।
ऋतं शंसन्त ऋतमित्त आहुरनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः॥ ७॥
आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक् तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु॥ ८॥
तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः॥ ९॥
वनस्पतेऽव सृजोप देवान्नग्निर्हविः शमिता सूदयाति।
सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद॥ १०॥
आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः।
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्॥ ११॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ११ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ पङ्क्तिः; ४ त्रिष्टुप्; ५, ७, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ८, ९ विराट्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—१-३, ६, ११ पञ्चमः; ४, ५, ७-१० धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानोऽ बोधि विप्रः पदवीः कवीनाम् ।
पृथुपाजा देवयद्भिः समिद्धोऽप द्वारा तमसो वह्निरावः ॥ १ ॥
प्रेद्वग्निर्वीवृधे स्तोमेभिर्गीर्भिः स्तोतॄणां नमस्य उक्थैः ।
पूर्वीर्ऋतस्य सन्दृशश्चकानः सं दूतो अद्यौदुषसो विरोके ॥ २ ॥
अधाय्यग्निर्मानुषीषु विक्ष्वि॑पां गर्भो मित्र ऋतेन साधन् ।
आ हर्यतो यजतः सान्वस्थादभूदु विप्रो हव्यो मतीनाम् ॥ ३ ॥
मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो मित्रो होता वरुणो जातवेदाः ।
मित्रो अध्वर्युरिषिरो दमूना मित्रः सिन्धूनामुत पर्वतानाम् ॥ ४ ॥
पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश्चरणं सूर्यस्य ।
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

ऋभुश्चक्र ईड्यं चारु नाम विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान् ।
ससस्य चर्म घृतवत्पदं वेस्तदिदग्नी रक्षत्यप्रयुच्छन् ॥ ६ ॥
आ योनिमग्निर्घृतवन्तमस्थात् पृथुप्रगाणमुशन्तमुशानः ।
दीद्यानः शुचिर्ऋष्वः पावकः पुनःपुनर्मातरा नव्यसी कः ॥ ७ ॥
सद्यो जात ओषधीभिर्ववक्षे यदी वर्धन्ति प्रस्वो घृतेन ।
आपइव प्रवता शुम्भमाना उरुष्यदग्निः पित्रोरुपस्थे ॥ ८ ॥
उदु ष्टुतः समिधा यह्वो अद्यौद्वर्ष्मन्दिवो अधि नाभा पृथिव्याः ।
मित्रो अग्निरीड्यो मातरिश्वा दूतो वक्षद्यजथाय देवान् ॥ ९ ॥
उदस्तम्भीत्समिधा नाकमृष्वोऽ३ऽ ग्निर्भवन्नुत्तमो रोचनानाम् ।
यदी भृगुभ्यः परि मातरिश्वा गुहा सन्तं हव्यवाहं समीधे ॥ १० ॥
इळामग्ने पुरुदꣳसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २, ७ त्रिष्टुप्; ३, ४ ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, ११ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ स्वराट्पङ्क्तिः; १० भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५, ७, ८, १० धैवतः; ६, ९, ११ पञ्चमः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

प्र कारवो मनना वच्यमाना देवद्रीचीं नयत देवयन्तः।
दक्षिणावाड् वाजिनी प्राच्येति हविर्भरन्त्यग्नये घृताचीं ॥ १ ॥
आ रोदसी अपृणा जायमान उत प्र रिक्था अध नु प्रयज्यो।
दिवश्चिदग्ने महिना पृथिव्या वच्यन्ता ते वह्नयः सप्तजिह्वाः ॥ २ ॥
द्यौश्च त्वा पृथिवी यज्ञियासो नि होतारं सादयन्ते दमाय।
यदी विशो मानुषीर्देवयन्तीः प्रयस्वतीरीळते शुक्रमर्चिः ॥ ३ ॥
महान्त्सधस्थे ध्रुव आ निषत्तोऽन्तर्द्यावा माहिने हर्यमाणः।
आस्क्रे सपत्नी अजरे अमृक्ते सबर्दुघे उरुगायस्य धेनू ॥ ४ ॥
व्रता ते अग्ने महतो महानि तव क्रत्वा रोदसी आ ततन्थ।
त्वं दूतो अभवो जायमानस्त्वं नेता वृषभ चर्षणीनाम् ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

ऋतस्य वा केशिना योग्याभिर्घृतस्नुवा रोहिता धुरि धिष्व।
अथा वह देवान्देव विश्वान्त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ॥ ६ ॥
दिवश्चिदा ते रुचयन्त रोका उषो विभातीरनु भासि पूर्वीः।
अपो यदग्न उशधग्वनेषु होतुर्मन्द्रस्य पनयन्त देवाः ॥ ७ ॥
उरौ वा ये अन्तरिक्षे मदन्ति दिवो वा ये रोचने सन्ति देवाः।
ऊमा वा ये सुहवासो यजत्रा आयेमिरे रथ्यो अग्ने अश्वाः ॥ ८ ॥
ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः।
पत्नीवतस्त्रिंशतं त्रींश्च देवाननुष्वधमा वह मादयस्व ॥ ९ ॥
स होता यस्य रोदसी चिदुर्वी यज्ञंयज्ञमभि वृधे गृणीतः।
प्राची अध्वरेव तस्थतुः सुमेके ऋतावरी ऋतजातस्य सत्ये ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे॥ ११॥

॥ इति द्वितीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः॥

॥ इति द्वितीयोऽष्टकः॥

अथ तृतीयाऽष्टके प्रथमोऽध्यायः

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ६, ९, १० त्रिष्टुप्; २-५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ११ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-७, ९, १० धैवतः; ८, ११ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्र य आरुः शितिपृष्ठस्य धासेरा मातरा विविशुः सप्त वाणीः।
परिक्षिता पितरा सं चरेते प्र सस्राते दीर्घमायुः प्रयक्षे॥ १॥
दिवक्षसो धेनवो वृष्णो अश्वा देवीरा तस्थौ मधुमद्वहन्तीः।
ऋतस्य त्वा सदसि क्षेमयन्तं पर्येका चरति वर्तनिं गौः॥ २॥
आ सीमरोहत्सुयमा भवन्तीः पतिश्चिकित्वान्रयिविद्रयीणाम्।
प्र नीलपृष्ठो अतसस्य धासेस्ता अवासयत्पुरुधप्रतीकः॥ ३॥
महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्तीरजुर्यं स्तभूयमानं वहतौ वहन्ति।
व्यङ्गेभिर्दिद्युतानः सधस्थ एकामिव रोदसी आ विवेश॥ ४॥
जानन्ति वृष्णो अरुषस्य शेवमुत ब्रध्नस्य शासने रणन्ति।
दिवोरुचः सुरुचो रोचमाना इळा येषां गण्या माहिना गीः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

उतो पितृभ्यां प्रविदानु घोषं महो महद्भ्यामनयन्त शूषम्।
उक्षा ह यत्र परि धानमक्तोरनु स्वं धाम जरितुर्ववक्ष॥ ६॥
अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त विप्राः प्रियं रक्षन्ते निहितं पदं वेः।
प्राञ्चो मदन्त्युक्षणो अजुर्या देवा देवानामनु हि व्रता गुः॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति।
ऋतं शंसन्त ऋतमित्त आहुरनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः ॥ ८ ॥
वृषायन्ते महे अत्याय पूर्वीर्वृष्णे चित्राय रश्मयः सुयामाः।
देव होतर्मन्द्रतरश्चिकित्वान्महो देवान्रोदसी एह वक्षि ॥ ९ ॥
पृक्षप्रयजो द्रविणः सुवाचः सुकेतव उषसो रेवदूषुः।
उतो चिदग्ने महिना पृथिव्याः कृतं चिदेनः सं महे दशस्य ॥ १० ॥
इळामग्ने पुरुदसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ११ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ८-१० निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ६, ११ त्रिष्टुप्; ३, ७ स्वराडनुष्टुप्; ४ स्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४-६, ८-११ धैवतः; ३, ७ गान्धारः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तो वनस्पते मधुना दैव्येन ।
यदूर्ध्वस्तिष्ठा द्रविणेह धत्ताद्यद्वा क्षयो मातुरस्या उपस्थे ॥ १ ॥
समिद्धस्य श्रयमाणः पुरस्ताद् ब्रह्म वन्वानो अजरं सुवीरम्।
आरे अस्मदमतिं बाधमान उच्छ्रयस्व महते सौभगाय ॥ २ ॥
उच्छ्रयस्व वनस्पते वर्ष्मन्पृथिव्या अधि ।
सुमिती मीयमानो वर्चो धा यज्ञवाहसे ॥ ३ ॥
युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान्भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो३ मनसा देवयन्तः ॥ ४ ॥
जातो जायते सुदिनत्वे अह्नां समर्य आ विदथे वर्धमानः।
पुनन्ति धीरा अपसो मनीषा देवया विप्र उदियर्ति वाचम् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

यान्वो नरो देवयन्तो निमिम्युर्वनस्पते स्वधितिर्वा ततक्ष।
ते देवासः स्वरवस्तस्थिवांसः प्रजावदस्मे दिधिषन्तु रत्नम् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये वृक्णासो अधि क्षमि निमितासो यतस्रुचः ।
ते नो व्यन्तु वार्यं देवत्रा क्षेत्रसाधसः ॥ ७ ॥
आदित्या रुद्रा वसवः सुनीथा द्यावाक्षामा पृथिवी अन्तरिक्षम् ।
सजोषसो यज्ञमवन्तु देवा ऊर्ध्वं कृण्वन्त्वध्वरस्य केतुम् ॥ ८ ॥
हंसाइव श्रेणिशो यतानाः शुक्रा वसानाः स्वरवो न आगुः ।
उन्नीयमानाः कविभिः पुरस्ताद्देवा देवानामपि यन्ति पाथः ॥ ९ ॥
शृङ्गाणीवेच्छृङ्गिणां सं ददृशे चषालवन्तः स्वरवः पृथिव्याम् ।
वाघद्भिर्वा विहवे श्रोषमाणा अस्माँ अवन्तु पृतनाज्येषु ॥ १० ॥
वनस्पते शतवल्शो वि रोह सहस्रवल्शा वि वयं रुहेम ।
यं त्वामयं स्वधितिस्तेजमानः प्रणिनाय महते सौभगाय ॥ ११ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४ बृहती; २, ५-७ निचृद्बृहती; ३, ८ विराड्बृहती; ९ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-८ मध्यमः; ९ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्तासं ऊतये ।
अपां नपातं सुभगं सुदीदितिं सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥ १ ॥
कायमानो वना त्वं यन्मातॄरजगन्नपः ।
न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभवः ॥ २ ॥
अति तृष्टं ववक्षिथाथैव सुमना असि ।
प्रप्रान्ये यन्ति पर्यन्य आसते येषां सख्ये असि श्रितः ॥ ३ ॥
ईयिवांसमति स्त्रिधः शश्वतीरति सश्चतः ।
अन्वीमविन्दन्निचिरासो अद्रुहोऽप्सु सिंहमिव श्रितम् ॥ ४ ॥
ससृवांसमिव त्मनाग्निमित्था तिरोहितम् ।
ऐनं नयन्मातरिश्वा परावतो देवेभ्यो मथितं परि ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

तं त्वा मर्ता अगृभ्णत देवेभ्यो हव्यवाहन ।
विश्वान्यद्यज्ञाँ अभिपासि मानुष तव क्रत्वा यविष्ठ्य ॥ ६ ॥
तद्भद्रं तव दंसना पाकाय चिच्छदयति ।
त्वां यदग्ने पशवः समासते समिद्धमपिशर्वरे ॥ ७ ॥
आ जुहोता स्वध्वरं शीरं पावकशोचिषम् ।
आशुं दूतमजिरं प्रत्नमीड्यं श्रुष्टी देवं सपर्यत ॥ ८ ॥
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
औक्षन्घृतैरस्तृणन्बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥ ९ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५, ८ विराडुष्णिक्; २ भुरिग्गायत्री; ३ उष्णिक्; ४, ६, ७, ९ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३-९ ऋषभः; २ षड्जः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं चर्षणीनाम् । देवं मर्तास इन्धते समध्वरे ॥ १ ॥
त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने होतारमीळते । गोपा ऋतस्य दीदिहि स्वे दमे ॥ २ ॥
स घा यस्ते ददाशति समिधा जातवेदसे । सो अग्ने धत्ते सुवीर्यं स पुष्यति ॥ ३ ॥
स केतुरध्वराणामग्निर्देवेभिरा गमत् । अञ्जानः सप्त होतृभिर्हविष्मते ॥ ४ ॥
प्र होत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत् । विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे ॥ ५ ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

अग्निं वर्धन्तु नो गिरो यतो जायत उक्थ्यः । महे वाजाय द्रविणाय दर्शतः ॥ ६ ॥
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान्देवयते यज । होता मन्द्रो वि राजस्यति स्त्रिधः ॥ ७ ॥
स नः पावक दीदिहि द्युमद्रस्मे सुवीर्यम् । भवा स्तोतृभ्यो अन्तमः स्वस्तये ॥ ८ ॥
तं त्वा विप्रा विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम् ॥ ९ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ५, ७, ८ निचृद्गायत्री; ३, ९ विराड्गायत्री; ४, ६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

अग्निर्होता पुरोहितोऽध्वरस्य विचर्षणिः। स वेद यज्ञमानुषक् ॥ १ ॥
स हव्यवाळमर्त्य उशिग्दूतश्चनोहितः। अग्निर्धिया समृण्वति ॥ २ ॥
अग्निर्धिया स चेतति केतुर्यज्ञस्य पूर्व्यः। अर्थं ह्यस्य तरणि ॥ ३ ॥
अग्निं सूनुं सनश्रुतं सहसो जातवेदसम्। वह्निं देवा अकृण्वत ॥ ४ ॥
अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम्। तूर्णी रथः सदा नवः ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

साह्वान्विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः। अग्निस्तुविश्रवस्तमः ॥ ६ ॥
अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वाँ अश्नोति मर्त्यः। क्षयं पावकशोचिषः ॥ ७ ॥
परि विश्वानि सुधिताग्नेरश्याम मन्मभिः। विप्रासो जातवेदसः ॥ ८ ॥
अग्ने विश्वानि वार्या वाजेषु सनिषामहे। त्वे देवास एरिरे ॥ ९ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ३, ५, ८, ९ निचृद्गायत्री; २, ४, ६ गायत्री; ७ यवमध्याविराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता ॥ १ ॥
इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः। अया पातमिमं सुतम् ॥ २ ॥
इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे। ता सोमस्येह तृम्पताम् ॥ ३ ॥
तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता। इन्द्राग्नी वाजसातमा ॥ ४ ॥
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमेकेन कर्मणा ॥ ६ ॥
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या३ अनु ॥ ७ ॥
इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च। युवोरप्सूर्यं हितम् ॥ ८ ॥
इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः। तद्वां चेति प्र वीर्यम् ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीयोऽनुवाकः [१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋषभो वैश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ भुरिगुष्णिक्; २ ३, ५-७ निचृदनुष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—१ ऋषभः; २-७ गान्धारः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

प्र वो देवायाग्नये बर्हिष्ठमर्चास्मै ।
गमद्देवेभिरा स नो यजिष्ठो बर्हिरा सदत् ॥ १ ॥
ऋतावा यस्य रोदसी दक्षं सचन्त ऊतयः ।
हविष्मन्तस्तमीळते तं सनिष्यन्तोऽवसे ॥ २ ॥
स यन्ता विप्र एषां स यज्ञानामथा हि षः ।
अग्निं तं वो दुवस्यत दाता यो वनिता मघम् ॥ ३ ॥
स नः शर्मणि वीतयेऽग्निर्यच्छतु शन्तमा ।
यतो नः प्रुष्णवद्वसु दिवि क्षितिभ्यो अप्स्वा ॥ ४ ॥
दीदिवांसमपूर्व्यं वस्वीभिरस्य धीतिभिः ।
ऋक्वाणो अग्निमिन्धते होतारं विश्पतिं विशाम् ॥ ५ ॥
उत नो ब्रह्मन्नविष उक्थेषु देवहूतमः ।
शं नः शोचा मरुद् वृधोऽग्ने सहस्रसातमः ॥ ६ ॥
नू नो रास्व सहस्ववत्तोकवत्पुष्टिमद्वसु ।
द्युमदग्ने सुवीर्यं बर्हिष्ठमनुपक्षितम् ॥ ७ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋषभो वैश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ त्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ६ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७, धैवतः; ६ पञ्चमः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

आ होता मन्द्रो विदथान्यस्थात्सत्यो यज्वा कवितमः स वेधाः ।
विद्युद्रथः सहसस्पुत्रो अग्निः शोचिष्केशः पृथिव्यां पाजो अश्रेत् ॥ १ ॥
अयामि ते नमउक्तिं जुषस्व ऋतावस्तुभ्यं चेतते सहस्वः ।
विद्वाँ आ वक्षि विदुषो नि षत्सि मध्य आ बर्हिरूतये यजत्र ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रवंतां त उषसो वाजयन्ती अग्ने वातस्य पथ्याभिरच्छ।
यत्सीमञ्जन्ति पूर्व्यं हविर्भिरा वन्धुरेव तस्थतुर्दुरोणे॥ ३॥
मित्रश्च तुभ्यं वरुणः सहस्वोऽग्ने विश्वे मरुतः सुम्नमर्चन्।
यच्छोचिषा सहसस्पुत्र तिष्ठा अभि क्षितीः प्रथयन्त्सूर्यो नॄन्॥ ४॥
वयं ते अद्य ररिमा हि काममुत्तानहस्ता नमसोपसद्य।
यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवानस्रेधता मन्मना विप्रो अग्ने॥ ५॥
त्वद्धि पुत्र सहसो वि पूर्वीर्देवस्य यन्त्यूतयो वि वाजाः।
त्वं देहि सहस्त्रिणं रयिं नोऽद्रोघेण वचसा सत्यमग्ने॥ ६॥
तुभ्यं दक्ष कविक्रतो यानीमा देव मर्तासो अध्वरे अकर्म।
त्वं विश्वस्य सुरथस्य बोधि सर्वं तदग्ने अमृत स्वदेह॥ ७॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—उत्कीलः कात्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४-६ धैवतः; २, ३, ७ पञ्चमः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

वि पाजसा पृथुना शोशुचानो बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः।
सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्यामग्नेरहं सुहवस्य प्रणीतौ॥ १॥
त्वं नो अस्या उषसो व्युष्टौ त्वं सूर उदिते बोधि गोपाः।
जन्मेव नित्यं तनयं जुषस्व स्तोमं मे अग्ने तन्वा सुजात॥ २॥
त्वं नृचक्षा वृषभानु पूर्वीः कृष्णास्वग्ने अरुषो वि भाहि।
वसो नेषि च पर्षि चात्यंहः कृधी नो राय उशिजो यविष्ठ॥ ३॥
अषाळ्हो अग्ने वृषभो दिदीहि पुरो विश्वाः सौभगा संजिगीवान्।
यज्ञस्य नेता प्रथमस्य पायोर्जातवेदो बृहतः सुप्रणीते॥ ४॥
अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरूणि देवाँ अच्छा दीद्यानः सुमेधाः।
रथो न सस्त्रिरभि वक्षि वाजमग्ने त्वं रोदसी नः सुमेके॥ ५॥
प्र पीपय वृषभ जिन्व वाजानग्ने त्वं रोदसी नः सुदोघे।
देवेभिर्देव सुरुचा रुचानो मा नो मर्तस्य दुर्मतिः परि ष्ठात्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ७ ॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—उत्कीलः कात्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५ भुरिगनुष्टुप्; २, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ३ निचृद्बृहती; ४ भुरिक्बृहती ॥ स्वरः—१, ५ गान्धारः; २, ६ पञ्चमः; ३, ४ मध्यमः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

अयमग्निः सुवीर्यस्येशे महः सौभगस्य ।
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम् ॥ १ ॥
इमं नरो मरुतः सश्चता वृधं यस्मिन्रायः शेवृधासः।
अभि ये सन्ति पृतनासु दूढ्यो विश्वाहा शत्रुमादभुः ॥ २ ॥
स त्वं नो रायः शिशीहि मीढ्वो अग्ने सुवीर्यस्य।
तुविद्युम्न वर्षिष्ठस्य प्रजावतोऽनमीवस्य शुष्मिणः ॥ ३ ॥
चक्रिर्यो विश्वा भुवनाभि सासहिश्चक्रिर्देवेष्वा दुवः।
आ देवेषु यतत आ सुवीर्य आ शंस उत नृणाम् ॥ ४ ॥
मा नो अग्नेऽमतये मावीरतायै रीरधः ।
मागोतायै सहसस्पुत्र मा निदेऽप द्वेषांस्या कृधि ॥ ५ ॥
शग्धि वाजस्य सुभग प्रजावतोऽग्ने बृहतो अध्वरे।
सं राया भूयसा सृज मयोभुना तुविद्युम्न यशस्वता ॥ ६ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—उत्कीलः कात्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धैवतः; ३ पञ्चमः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

समिध्यमानः प्रथमानु धर्मा समक्तुभिरज्यते विश्ववारः ।
शोचिष्केशो घृतनिर्णिक्पावकः सुयज्ञो अग्निर्यजथाय देवान् ॥ १ ॥
यथायजो होत्रमग्ने पृथिव्या यथा दिवो जातवेदश्चिकित्वान्।
एवानेन हविषा यक्षि देवान्मनुष्वद्यज्ञं प्र तिरेममद्य ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रीण्यायूंषि तव जातवेदस्तिस्र आजानीरुषसस्ते अग्ने ।
ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वानथा भव यजमानाय शं योः ॥ ३ ॥
अग्निं सुदीतिं सुदृशं गृणन्तो नमस्यामस्त्वेड्यं जातवेदः ।
त्वां दूतमरतिं हव्यवाहं देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम् ॥ ४ ॥
यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्द्विता च सत्ता स्वधया च शंभुः ।
तस्यानु धर्म प्र यजा चिकित्वोऽथा नो धा अध्वरं देववीतौ ॥ ५ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—कतो वैश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५ त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

भवा नो अग्ने सुमना उपेतौ सखेव सख्ये पितरेव साधुः ।
पुरुद्रुहो हि क्षितयो जनानां प्रति प्रतीचीर्दहतादरातीः ॥ १ ॥
तपो ष्वग्ने अन्तराँ अमित्रान्तपा शंसमररुषः परस्य ।
तपो वसो चिकितानो अचित्तान्वि ते तिष्ठन्ताम्जरा अयासः ॥ २ ॥
इध्मेनाग्न इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरसे बलाय ।
यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् ॥ ३ ॥
उच्छोचिषा सहसस्पुत्र स्तुतो बृहद्वयः शशमानेषु धेहि ।
रेवदग्ने विश्वामित्रेषु शं योर्मर्मृज्मा ते तन्वं१ भूरि कृत्वः ॥ ४ ॥
कृधि रत्नं सुसनितर्धनानां स घेदग्ने भवसि यत्समिद्धः ।
स्तोतुर्दुरोणे सुभगस्य रेवत्सूप्रा करस्ना दधिषे वपूंषि ॥ ५ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गाथी कौशिकः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ४, ५ विराट्-त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धैवतः; ३ पञ्चमः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अग्निं होतारं प्र वृणे मियेधे गृत्सं कविं विश्वविदममूरम् ।
स नो यक्षद्देवताता यजीयान्राये वाजाय वनते मघानि ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र तै अग्ने हविष्मतीमियर्म्यच्छा सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम्।
प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः सं रातिभिर्वसुभिर्यज्ञमश्रेत् ॥ २ ॥
स तेजीयसा मनसा त्वोत उत शिक्ष स्वपत्यस्य शिक्षोः।
अग्ने रायो नृतमस्य प्रभूतौ भूयाम ते सुष्टुतयश्च वस्वः ॥ ३ ॥
भूरीणि हि त्वे दधिरे अनीकाग्ने देवस्य यज्यवो जनासः।
स आ वह देवतातिं यविष्ठ शर्धो यद्द्य दिव्यं यजासि ॥ ४ ॥
यत्त्वा होतारमनजन्मियेधे निषादयन्तो यजथाय देवाः।
स त्वं नो अग्नेऽवितेह बोध्यधि श्रवांसि धेहि नस्तनूषु ॥ ५ ॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—गाथी कौशिकः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

अग्निमुषसमश्विना दधिक्रां व्युष्टिषु हवते वह्निरुक्थैः।
सुज्योतिषो नः शृण्वन्तु देवाः सजोषसो अध्वरं वावशानाः ॥ १ ॥
अग्ने त्री ते वाजिना त्री षधस्था तिस्रस्ते जिह्वा ऋतजात पूर्वीः।
तिस्र उ ते तन्वो देववातास्ताभिर्नः पाहि गिरो अप्रयुच्छन् ॥ २ ॥
अग्ने भूरीणि तव जातवेदो देव स्वधावोऽमृतस्य नाम।
याश्च माया मायिनां विश्वमिन्व त्वे पूर्वीः सन्दधुः पृष्टबन्धो ॥ ३ ॥
अग्निर्नेता भगइव क्षितीनां दैवीनां देव ऋतुपा ऋतावा।
स वृत्रहा सनयो विश्ववेदाः पर्षद्विश्वाति दुरिता गृणन्तम् ॥ ४ ॥
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीं बृहस्पतिं सवितारं च देवम्।
अश्विना मित्रावरुणा भगं च वसून्रुद्राँ आदित्याँ इह हुवे ॥ ५ ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गाथी कौशिकः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २, ३ अनुष्टुप्; ५ विराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ४ धैवतः; २, ३ गान्धारः; ५ मध्यमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहीमा हव्या जातवेदो जुषस्व ।
स्तोकानामग्ने मेदसो घृतस्य होतः प्राशान प्रथमो निषद्य ॥ १ ॥
घृतवन्तः पावक ते स्तोकाः श्चोतन्ति मेदसः ।
स्वधर्मन्देववीतये श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ॥ २ ॥
तुभ्यं स्तोका घृतश्चुतोऽग्ने विप्राय सन्त्य ।
ऋषिः श्रेष्ठः समिध्यसे यज्ञस्य प्राविता भव ॥ ३ ॥
तुभ्यं श्चोतन्त्यध्रिगो शचीवः स्तोकासो अग्ने मेदसो घृतस्य ।
कविशस्तो बृहता भानुनागा हव्या जुषस्व मेधिर ॥ ४ ॥
ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद उद्भृतं प्र ते वयं ददामहे ।
श्चोतन्ति ते वसो स्तोका अधि त्वचि प्रति तान्देवशो विहि ॥ ५ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—गाथी कौशिकः ॥ देवता—पुरीष्या अग्नयः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ४ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ धैवतः; २, ३, ५ पञ्चमः; ४ ऋषभः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अयं सो अग्निर्यस्मिन्त्सोममिन्द्रः सुतं दधे जठरे वावशानः ।
सहस्त्रिणं वाजमत्यं न सप्तिं ससवान्त्सन्त्स्तूयसे जातवेदः ॥ १ ॥
अग्ने यत्ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र ।
येनान्तरिक्षमुर्वीततन्थ त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षाः ॥ २ ॥
अग्ने दिवो अर्णमच्छा जिगास्यच्छा देवाँ ऊचिषे धिष्ण्या ये ।
या रोचने परस्तात्सूर्यस्य याश्चावस्तादुपतिष्ठन्त आपः ॥ ३ ॥
पुरीष्यासो अग्नयः प्रावणेभिः सजोषसः ।
जुषन्तां यज्ञमद्रुहोऽनमीवा इषो महीः ॥ ४ ॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—देवश्रवा देववातश्च भारतौ॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २-५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

निर्मंथितः सुधित आ सधस्थे युवा कविरध्वरस्य प्रणेता।
जूर्यत्स्वग्निर्जरो वनेष्वत्रा दधे अमृतं जातवेदाः ॥ १॥
अमन्थिष्टां भारता रेवदग्निं देवश्रवा देववातः सुदक्षम्।
अग्ने वि पश्य बृहताभि रायेषां नो नेता भवतादनु द्यून्॥ २॥
दश क्षिपः पूर्व्यं सीमजीजनन्त्सुजातं मातृषु प्रियम् ।
अग्निं स्तुहि दैववातं देवश्रवो यो जनानामसद्वशी ॥ ३॥
नि त्वा दधे वर आ पृथिव्या इळायास्पदे सुदिनत्वे अह्नाम्।
दृषद्वत्यां मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि॥ ४॥
इळामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ५॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ निचृद्गायत्री; ३-५ गायत्री॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-५ षड्जः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य। दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चो धा यज्ञवाहसे॥ १॥
अग्न इळा समिध्यसे वीतिहोत्रो अमर्त्यः। जुषस्व सू नो अध्वरम्॥ २॥
अग्ने द्युम्नेन जागृवे सहसः सूनवाहुत। एदं बर्हिः सदो मम॥ ३॥
अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः। यज्ञेषु य उ चायवः॥ ४॥
अग्ने दा दाशुषे रयिं वीरवन्तं परीणसम्। शिशीहि नः सूनुमतः॥ ५॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—१-४ अग्निः; ५ इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३-५ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २ ऋषभः; ३-५ धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अग्ने दिवः सूनुरसि प्रचेतास्तना पृथिव्या उत विश्ववेदाः ।
ऋधग्देवाँ इह यजा चिकित्वः ॥ १ ॥
अग्निः सनोति वीर्याणि विद्वान्त्सनोति वाजममृताय भूषन् ।
स नो देवाँ एह वहा पुरुक्षो ॥ २ ॥
अग्निर्द्यावापृथिवी विश्वजन्ये आ भाति देवी अमृते अमूरः ।
क्षयन्वाजैः पुरुश्चन्द्रो नमोभिः ॥ ३ ॥
अग्न इन्द्रश्च दाशुषो दुरोणे सुतावतो यज्ञमिहोप यातम् ।
अमर्धन्ता सोमपेयाय देवा ॥ ४ ॥
अग्ने अपां समिध्यसे दुरोणे नित्यः सूनो सहसो जातवेदः ।
सधस्थानि महयमान ऊती ॥ ५ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-६, ८, ९ गाथिनो विश्वामित्रः; ७ आत्मा ॥ देवता—१-३ वैश्वानरः; ४-६ मरुतः; ७, ८ अग्निरात्मा वा; ९ विश्वामित्रोपाध्यायः ॥ छन्दः—१-६ जगती; ७-९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७-९ धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

वैश्वानरं मनसाग्निं निचाय्या हविष्मन्तो अनुषत्यं स्वर्विदम् ।
सुदानुं देवं रथिरं वसूयवो गीर्भी रण्वं कुशिकासो हवामहे ॥ १ ॥
तं शुभ्रमग्निमवसे हवामहे वैश्वानरं मातरिश्वानमुक्थ्यम् ।
बृहस्पतिं मनुषो देवतातये विप्रं श्रोतारमतिथिं रघुष्यदम् ॥ २ ॥
अश्वो न क्रन्दञ्जनिभिः समिध्यते वैश्वानरः कुशिकेभिर्युगेयुगे ।
स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्व्यं दधातु रत्नममृतेषु जागृविः ॥ ३ ॥
प्र यन्तु वाजास्तविषीभिरग्नयः शुभे संमिश्लाः पृषतीरयुक्षत ।
बृहदुक्षो मरुतो विश्ववेदसः प्र वेपयन्ति पर्वतां अदाभ्याः ॥ ४ ॥
अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्टय आ त्वेषमुग्रमव ईमहे वयम् ।
ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः सिंहा न हेषक्रतवः सुदानवः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिरग्नेर्भामं मरुतामोजं ईमहे ।
पृषदश्वासो अनवभ्रराधसो गन्तारो यज्ञं विदथेषु धीराः ॥ ६ ॥
अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ।
अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानोऽजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम ॥ ७ ॥
त्रिभिः पवित्रैरपुपोद्ध्यर्कं हृदा मतिं ज्योतिरनु प्रजानन् ।
वर्षिष्ठं रत्नमकृत स्वधाभिरादिद् द्यावापृथिवी पर्यपश्यत् ॥ ८ ॥
शतधारमुत्समक्षीयमाणं विपश्चितं पितरं वक्त्वानाम् ।
मेळिं मदन्तं पित्रोरुपस्थे तं रोदसी पिपृतं सत्यवाचम् ॥ ९ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—१ ऋतवोऽग्निर्वा; २-१५ अग्निः ॥ छन्दः—१, ७-१०, १४, १५ निचृद्गायत्री; २, ३, ६, ११, १२ गायत्री; ४, ५, १३ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

प्र वो वाजा अभिद्यवो हविष्मन्तो घृताच्या । देवाञ्जिगाति सुम्नयुः ॥ १ ॥
ईळे अग्निं विपश्चितं गिरा यज्ञस्य साधनम् । श्रुष्टीवानं धितावानम् ॥ २ ॥
अग्ने शकेम ते वयं यमं देवस्य वाजिनः । अति द्वेषांसि तरेम ॥ ३ ॥
समिध्यमानो अध्वरेऽग्निः पावक ईड्यः । शोचिष्केशस्तमीमहे ॥ ४ ॥
पृथुपाजा अमर्त्यो घृतनिर्णिक्स्वाहुतः । अग्निर्यज्ञस्य हव्यवाट् ॥ ५ ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

तं सबाधो यतस्रुच इत्था धिया यज्ञवन्तः । आ चक्रुरग्निमूतये ॥ ६ ॥
होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया । विदथानि प्रचोदयन् ॥ ७ ॥
वाजी वाजेषु धीयतेऽध्वरेषु प्र णीयते । विप्रो यज्ञस्य साधनः ॥ ८ ॥
धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे । दक्षस्य पितरं तना ॥ ९ ॥
नि त्वा दधे वरेण्यं तक्षस्येळा सहस्कृत । अग्ने सुदीतिमुशिजम् ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

अग्निं यन्तुरमसुरमृतस्य योगे वनुषः। विप्रा वाजैः समिन्धते ॥ ११ ॥
ऊर्जो नपातमध्वरे दीदिवांसमुप द्यवि। अग्निमीळे कविक्रतुम् ॥ १२ ॥
ईळेन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः। समग्निरिध्यते वृषा ॥ १३ ॥
वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः। तं हविष्मन्त ईळते ॥ १४ ॥
वृषणं त्वा वयं वृषन्वृषणः समिधीमहि। अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥ १५ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २, ६ निचृद्गायत्री; ३ स्वराडुष्णिक्; ४ त्रिष्टुप्; ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, २, ६ षड्जः; ३ ऋषभः; ४ धैवतः; ५ निषादः ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

अग्ने जुषस्व नो हविः पुरोळाशं जातवेदः। प्रातःसावे धियावसो ॥ १ ॥
पुरोळा अग्ने पचतस्तुभ्यं वा घा परिष्कृतः। तं जुषस्व यविष्ठ्य ॥ २ ॥
अग्ने वीहि पुरोळाशमाहुतं तिरोअह्न्यम्। सहसः सूनुरस्यध्वरे हितः ॥ ३ ॥
माध्यंदिने सवने जातवेदः पुरोळाशमिह कवे जुषस्व।
अग्ने यह्वस्य तव भागधेयं न प्र मिनन्ति विदथेषु धीराः ॥ ४ ॥
अग्ने तृतीये सवने हि कानिषः पुरोळाशं सहसः सूनवाहुतम्।
अथा देवेष्वध्वरं विपन्यया धा रत्नवन्तममृतेषु जागृविम् ॥ ५ ॥
अग्ने वृधान आहुतिं पुरोळाशं जातवेदः। जुषस्व तिरोअह्न्यम् ॥ ६ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—१-४, ६-१६ अग्निः; ५ ऋत्विज अग्निर्वा ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५, ६ त्रिष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्; ७-९, १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १०, १२ भुरिग् अनुष्टुप्; ११, १४, १५ जगती; १३ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४, १०, १२ गान्धारः; २, १३ पञ्चमः; ३, ५-९, १६ धैवतः; ११, १४, १५ निषादः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अस्तीदमधिमन्थनमस्ति प्रजननं कृतम्।
एतां विश्पत्नीमा भराग्निं मन्थाम पूर्वथा ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भइव सुधितो गर्भिणीषु ।
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ २ ॥
उत्तानायामव भरा चिकित्वान्त्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान ।
अरुषस्तूपो रुशदस्य पाज इळायास्पुत्रो वयुनेऽजनिष्ट ॥ ३ ॥
इळायास्त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्या अधि ।
जातवेदो नि धीमह्यग्ने हव्याय वोळ्हवे ॥ ४ ॥
मन्थता नरः कविमद्वयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकम् ।
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्ताद्ग्निं नरो जनयता सुशेवम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

यदी मन्थन्ति बाहुभिर्विं रोचतेऽश्वो न वाज्यरुषो वनेष्वा ।
चित्रो न यामन्नश्विनोरनिवृतः परि वृणक्त्यश्मनस्तृणा दहन् ॥ ६ ॥
जातो अग्नी रोचते चेकितानो वाजी विप्रः कविशस्तः सुदानुः ।
यं देवास ईड्यं विश्वविदं हव्यवाहमदधुरध्वरेषु ॥ ७ ॥
सीद होतः स्व उ लोके चिकित्वान्त्सादया यज्ञं सुकृतस्य योनौ ।
देवावीर्देवान्हविषा यजास्यग्ने बृहद्यजमाने वयो धाः ॥ ८ ॥
कृणोत धूमं वृषणं सखायोऽस्त्रेधन्त इतन वाजमच्छ ।
अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवासो असहन्त दस्यून् ॥ ९ ॥
अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः ।
तं जानन्नग्न आ सीदाथा नो वर्धया गिरः ॥ १० ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

तनूनपादुच्यते गर्भ आसुरो नराशंसो भवति यद्विजायते ।
मातरिश्वा यदमिमीत मातरि वातस्य सर्गो अभवत्सरीमणि ॥ ११ ॥
सुनिर्मथा निर्मथितः सुनिधा निहितः कविः ।
अग्ने स्वध्वरा कृणु देवान्देवयते यज ॥ १२ ॥
अजीजनन्नमृतं मर्त्यासोऽस्त्रेमाणं तरणिं वीळुजम्भम् ।
दश स्वसारो अग्रुवः समीचीः पुमांसं जातमभि सं रभन्ते ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र सप्तहोता सनकादरोचत मातुरुपस्थे यदशोचदूर्धनि ।
न नि मिषति सुरणो दिवेदिवे यदसुरस्य जठरादजायत ॥ १४ ॥
अमित्रायुधो मरुतामिव प्रयाः प्रथमजा ब्रह्मणो विश्वमिद्विदुः ।
द्युम्नवद् ब्रह्म कुशिकास एरिरे एकएको दमे अग्निं समीधिरे ॥ १५ ॥
यदद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्होतश्चिकित्वोऽवृणीमहीह ।
ध्रुवमया ध्रुवमुताशमिष्ठाः प्रजानन्विद्वाँ उप याहि सोमम् ॥ १६ ॥

इति तृतीयाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

तृतीयोऽनुवाकः [३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवताः—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, २-११, १४, १७, २० निचृत्-त्रिष्टुप्; ३, ४, ७, १६, १८ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६, ८, १३, १९, २१, २२ त्रिष्टुप्; १२, १५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ५, ६, ८-१५, १७, १९-२२ धैवतः; ३, ४, ७, १६, १८ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि ।
तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेतः ॥ १ ॥
न ते दूरे परमा चिद्रजांस्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम् ।
स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ ॥ २ ॥
इन्द्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रातस्तुविकूर्मिर्ऋघावान् ।
यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु क्व१ त्या ते वृषभ वीर्याणि ॥ ३ ॥
त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युतान्येको वृत्रा चरसि जिघ्नमानः ।
तव द्यावापृथिवी पर्वतासोऽनु व्रताय निमितेव तस्थुः ॥ ४ ॥
उताभये पुरुहूत श्रवोभिरेको दृळ्हमवदो वृत्रहा सन् ।
इमे चिदिन्द्र रोदसी अपारे यत्संगृभ्णा मघवन्काशिरित्ते ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

प्र सू त इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु शत्रून्।
जहि प्रतीचो अनूचः पराचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु ॥ ६ ॥
यस्मै धायुरदधा मर्त्याया भक्तं चिद्भजते गेह्यं१ सः ।
भद्रा त इन्द्र सुमतिर्घृताची सहस्रदाना पुरुहूत रातिः ॥ ७ ॥
सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तमहस्तमिन्द्र सं पिणक्कुणारुम् ।
अभि वृत्रं वर्धमानं पियारुमपादमिन्द्र तवसा जघन्थ ॥ ८ ॥
नि सामनामिषिरामिन्द्र भूमिं महीमपारां सदने ससत्थ ।
अस्तभ्नाद् द्यां वृषभो अन्तरिक्षमर्षन्त्वापस्त्वयेह प्रसूताः ॥ ९ ॥
अलातृणो वल इन्द्र व्रजो गोः पुरा हन्तोर्भयमानो व्यार।
सुगान्पथो अकृणोन्निरजे गाः प्रावन्वाणीः पुरुहूतं धमन्तीः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

एको द्वे वसुमती समीची इन्द्र आ पप्रौ पृथिवीमुत द्याम्।
उतान्तरिक्षादभि नः समीक इषो रथीः सयुजः शूर वाजान् ॥ ११ ॥
दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा दिवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः।
सं यदानळध्वन आदिदश्वैर्विमोचनं कृणुते तत्त्वस्य ॥ १२ ॥
दिदृक्षन्त उषसो यामन्नक्तोर्विवस्वत्या महि चित्रमनीकम्।
विश्वे जानन्ति महिना यदागादिन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ॥ १३ ॥
महि ज्योतिर्निहितं वक्षणास्वामा पक्वं चरति बिभ्रती गौः।
विश्वं स्वाध्र संभृतमुस्रियायां यत्सीमिन्द्रो अदधाद्भोजनाय ॥ १४ ॥
इन्द्र दृह्य यामकोशा अभूवन्यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः।
दुर्मायवो दुरेवा मर्त्यासो निषङ्गिणो रिपवो हन्त्वासः ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैर्जहि न्येष्वशनिं तपिष्ठाम् ।
वृश्चेमधस्ताद्वि रुजा सहस्व जहि रक्षो मघवन्बन्धयस्व ॥ १६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्ध॑ह॒ रक्षः॑ स॒हमू॑लमिन्द्र वृ॒श्चा मध्यं॒ प्रत्यग्रं॑ शृणीहि।
आ कीव॑तः सल॒लूकं॑ चकर्थ ब्रह्म॒द्विषे॒ तपु॑षिं हे॒तिम॑स्य॥ १७॥
स्व॒स्तये॑ वा॒जिभि॑श्च प्रणे॒तः॑ सं यन्म॒हीरिष॑ आ॒सत्सि॑ पू॒र्वीः।
रा॒यो व॒न्तारो॑ बृह॒तः स्या॑मा॒स्मे अ॑स्तु॒ भग॑ इन्द्र प्र॒जावा॑न्॥ १८॥
आ नो॑ भर॒ भग॑मिन्द्र द्यु॒मन्तं॒ नि ते॑ दे॒ष्णस्य॑ धीमहि प्रारे॒के।
ऊ॒र्वइ॑व पप्रथे॒ काम॑ो अ॒स्मे तमा पृ॑ण वसुपते॒ वसू॑नाम्॥ १९॥
इ॒मं काम॑ं मन्दया॒ गोभि॑रश्वै॒श्च॒न्द्रव॑ता॒ राध॑सा प॒प्रथ॑श्च।
स्व॒र्यवो॑ म॒तिभि॒स्तुभ्यं॒ विप्रा॒ इन्द्रा॑य॒ वाहः॑ कु॒शिका॑सो॒ अक्रन्॥ २०॥
आ नो॑ गो॒त्रा द॑र्दृहि गोपते॒ गाः सम॒स्मभ्यं॑ स॒नयो॑ यन्तु॒ वाजा॑ः।
दि॒वक्षा॑ असि॒ वृष॑भ स॒त्यशु॑ष्मो॒ऽ स्मभ्यं॒ सु म॑घवन्बोधि गो॒दाः॥ २१॥
शु॒नं हु॑वेम म॒घवा॑न॒मिन्द्र॑म॒स्मिन्भरे॒ नृत॑मं॒ वाज॑सातौ ।
शृ॒ण्वन्त॑मु॒ग्रमू॒तये॑ स॒मत्सु॒ घ्नन्तं॑ वृ॒त्राणि॑ सं॒जित॑ं॒ धना॑नाम्॥ २२॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः कुशिको वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, १४, १६ विराट्पङ्क्तिः; २, ५, ९, १५, १७-२० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ७, ८, १०, १२, २१, २२ त्रिष्टुप्; ११, १३ स्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ६, १४, १६ पञ्चमः; २, ४, ५, ७-१३, १५, १७-२२ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

शास॒द्व॒ह्निर्दु॑हि॒तुर्न॑प्त्यं॒ गाद्वि॒द्वाँ ऋ॒तस्य॒ दीधि॑तिं सप॒र्यन् ।
पि॒ता यत्र॑ दुहि॒तुः से॒कमृ॑ञ्जन्त्सं॒ शग्म्ये॑न॒ मन॑सा दध॒न्वे ॥ १॥
न जा॒मये॒ तान्वो॑ रि॒क्थमा॑रैक्च॒कार॒ गर्भं॑ सनि॒तुर्नि॑धा॒नम् ।
यदी॑ मा॒तरो॑ ज॒नय॑न्त॒ वह्नि॑म॒न्यः क॒र्ता सु॑कृ॒तोर॒न्य ऋ॑न्धन्॥ २॥
अ॒ग्निर्ज॑ज्ञे जु॒ह्वा३॒ रेज॑मानो म॒हस्पु॒त्राँ अ॑रु॒षस्य॒ प्रय॑क्षे ।
म॒हान्गर्भो॑ मह्या जा॒तमे॑षां म॒ही प्र॒वृद्ध॑र्यश्वस्य य॒ज्ञैः ॥ ३॥
अ॒भि जैत्रीर॑सचन्त स्पृधा॒नं महि॒ ज्योति॒स्तम॑सो॒ निर॑जानन् ।
तं जा॒नती॑ः प्रत्यु॒दाय॒न्नुषा॑सः॒ पति॒र्गवा॑मभव॒देक॒ इन्द्रः॑ ॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीळौ सतीरभि धीरा अतृन्दन्प्राचाहिन्वन्मनसा सप्त विप्राः।
विश्वामविन्दन्पथ्यामृतस्य प्रजानन्नित्ता नमसा विवेश ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

विदद्यदी सरमा रुग्णमद्रेर्महि पाथः पूर्व्य सध्र्यक्कः ।
अग्रं नयत्सुपद्यक्षराणामच्छा रवं प्रथमा जानती गात् ॥ ६ ॥
अगच्छदु विप्रतमः सखीयन्नसूदयत्सुकृते गर्भमद्रिः ।
ससान मर्यो युवभिर्मखस्यन्नथाभवदङ्गिराः सद्यो अर्चन् ॥ ७ ॥
सतःसतः प्रतिमानं पुरोभूर्विश्वा वेद जनिमा हन्ति शुष्णम्।
प्र णो दिवः पदवीर्गव्युरर्चन्त्सखा सखीरमुञ्चन्निरवद्यात्॥ ८ ॥
नि गव्यता मनसा सेदुरर्कैः कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम्।
इदं चिन्नु सदनं भूर्येषां येन मासाँ असिषासन्नृतेन ॥ ९ ॥
संपश्यमाना अमदन्नभि स्वं पयः प्रत्नस्य रेतसो दुघानाः।
वि रोदसी अतपद्घोष एषां जाते निःष्ठामदधुर्गोषु वीरान्॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

स जातेभिर्वृत्रहा सेदु हव्यैरुदुस्त्रिया असृजदिन्द्रो अर्कैः ।
उरूच्यस्मै घृतवद्दरन्ती मधु स्वाद्म दुदुहे जेन्या गौः ॥ ११ ॥
पित्रे चिच्चक्रुः सदनं समस्मै महि त्विषीमत्सुकृतो वि हि ख्यन्।
विष्कभ्नन्तः स्कम्भनेना जनित्री आसीना ऊर्ध्वं रभसं वि मिन्वन्॥ १२ ॥
मही यदि धिषणा शिश्नथे धात्सद्योवृधं वि भ्वं रोदस्योः।
गिरो यस्मिन्ननवद्याः समीचीर्विश्वा इन्द्राय तविषीरनुत्ताः॥ १३ ॥
मह्या ते सख्यं वश्मि शक्तीरा वृत्रघ्ने नियुतो यन्ति पूर्वीः ।
महि स्तोत्रमव आगन्म सूरेरस्माकं सु मघवन्बोधि गोपाः ॥ १४ ॥
महि क्षेत्रं पुरु श्चन्द्रं विविद्वानादित्सखिभ्यश्चरथं समैरत् ।
इन्द्रो नृभिरजनद्दीद्यानः साकं सूर्यमुषसं गातुमग्निम् ॥ १५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

अपश्चिदेष विभ्वो३ दमूनाः प्र सध्रीचीरसृजद्विश्वश्चन्द्राः ।
मध्वः पुनानाः कविभिः पवित्रैर्द्युभिर्हिन्वन्त्यक्तुभिर्धनुत्रीः ॥ १६ ॥
अनु कृष्णे वसुधिती जिहाते उभे सूर्यस्य मंहना यजत्रे ।
परि यत्ते महिमानं वृजध्यै सखाय इन्द्र काम्या ऋजिप्याः ॥ १७ ॥
पतिर्भव वृत्रहन्त्सूनृतानां गिरां विश्वायुर्वृषभो वयोधाः ।
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान्महीभिरूतिभिः सरण्यन् ॥ १८ ॥
तमङ्गिरस्वन्नमसा सपर्यन्नव्यं कृणोमि सन्यसे पुराजाम् ।
द्रुहो वि याहि बहुला अदेवीः स्वश्च नो मघवन्त्सातये धाः ॥ १९ ॥
मिहः पावकाः प्रतता अभूवन्त्स्वस्ति नः पिपृहि पारमासाम् ।
इन्द्र त्वं रथिरः पाहि नो रिषो मक्षूमक्षू कृणुहि गोजितो नः ॥ २० ॥
अदेदिष्ट वृत्रहा गोपतिर्गा अन्तः कृष्णाँ अरुषैर्धामभिर्गात् ।
प्र सूनृता दिशमान ऋतेन दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ॥ २१ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ २२ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, ७-९, १७ त्रिष्टुप्; ४, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ६ विराट्पङ्क्तिः; ११-१५ निचृत्त्रिष्टुप्; १६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ७-९, ११-१७ धैवतः; ४-६, १० पञ्चमः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

इन्द्र सोमं सोमपते पिबेमं माध्यंदिनं सवनं चारु यत्ते ।
प्रप्रुथ्या शिप्रे मघवन्नृजीषिन्विमुच्या हरी इह मादयस्व ॥ १ ॥
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र शुक्रं पिबा सोमं रिरिमा ते मदाय ।
ब्रह्मकृता मारुतेना गणेन सजोषा रुद्रैस्तृपदा वृषस्व ॥ २ ॥
ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्धन्नर्चन्त इन्द्र मरुतस्त ओजः ।
माध्यन्दिने सवने वज्रहस्त पिबा रुद्रेभिः सगणः सुशिप्र ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त इन्वस्य मधुमद्विविप्र इन्द्रस्य शर्धो मरुतो य आसन्।
येभिर्वृत्रस्येषितो विवेदामर्मणो मन्यमानस्य मर्म ॥४॥
मनुष्वदिन्द्र सवनं जुषाणः पिबा सोमं शश्वते वीर्याय।
स आ ववृत्स्व हर्यश्व यज्ञैः सरण्युभिरपो अर्णा सिसर्षि॥५॥

अथ दशमो वर्गः॥१०॥

त्वमपो यद्ध वृत्रं जघन्वाँ अत्याँइव प्रासृजः सर्तवाजौ।
शयानमिन्द्र चरता वधेन वव्रिवांसं परि देवीरदेवम् ॥६॥
यजामइन्नमसा वृद्धमिन्द्रं बृहन्तमृष्वमजरं युवानम्।
यस्य प्रिये ममतुर्यज्ञियस्य न रोदसी महिमानं ममाते ॥७॥
इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि व्रतानि देवा न मिनन्ति विश्वे।
दाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां जजान सूर्यमुषसं सुदंसाः॥८॥
अद्रोघ सत्यं तव तन्महित्वं सद्यो यज्जातो अपिबो ह सोमम्।
न द्यावइन्द्र तवसस्त ओजो नाहा न मासाः शरदो वरन्त॥९॥
त्वं सद्यो अपिबो जात इन्द्र मदाय सोमं परमे व्योमन्।
यद्ध द्यावापृथिवी आविवेशीरथाभवः पूर्व्यः कारुधायाः॥१०॥

अथ एकादशो वर्गः॥११॥

अहन्नहिं परिशयानमर्णो ओजायमानं तुविजात तव्यान्।
न ते महित्वमनु भूदध द्यौर्यदन्यया स्फिग्याइ क्षामवस्थाः॥११॥
यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो भूदुत प्रियः सुतसोमो मियेधः।
यज्ञेन यज्ञमव यज्ञियः सन्यज्ञस्ते वज्रमहिहत्य आवत्॥१२॥
यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे अर्वागैनं सुम्नाय नव्यसे ववृत्याम्।
यः स्तोमेभिर्वावृधे पूर्व्येभिर्यो मध्यमेभिरुत नूतनेभिः॥१३॥
विवेष यन्मा धिषणा जजान स्तवै पुरा पार्यादिन्द्रमह्नः।
अंहसो यत्र पीपरद्यथा नो नावेव यान्तमुभये हवन्ते॥१४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपूर्णो अस्य कलशः स्वाहा सेक्तेव कोशं सिसिचे पिबध्यै।
समु प्रिया आववृत्रन्मदाय प्रदक्षिणिद्भि सोमास इन्द्रम्॥ १५॥
न त्वा गभीरः पुरुहूत सिन्धुर्नाद्रयः परि षन्तो वरन्त।
इत्था सखिभ्य इषितो यदिन्द्रा दूळहं चिदरुजो गव्यमूर्वम्॥ १६॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ १७॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—नद्यः॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, १० विराट्त्रिष्टुप्; ३, ८, ११, १२ त्रिष्टुप्; ४, ६, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ पङ्क्तिः; १३ उष्णिक्॥ स्वरः—१, ५, ७ पञ्चमः; २-४, ६, ८, ९-१२ धैवतः; १३ ऋषभः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

प्र पर्वतानामुशती उपस्थादश्वेइव विषिते हासमाने।
गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट् छुतुद्री पयसा जवेते॥ १॥
इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे अच्छा समुद्रं रथ्येव याथः।
समाराणे ऊर्मिभिः पिन्वमाने अन्या वामन्यामप्येति शुभ्रे॥ २॥
अच्छा सिन्धुं मातृतमामयासं विपाशमुर्वीं सुभगामगन्म।
वत्समिव मातरा संरिहाणे समानं योनिमनु संचरन्ती॥ ३॥
एना वयं पयसा पिन्वमाना अनु योनिं देवकृतं चरन्तीः।
न वर्तवे प्रसवः सर्गतक्तः किंयुर्विप्रो नद्यो जोहवीति॥ ४॥
रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्तमेवैः ।
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषावस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुरपाहन्वृत्रं परिधिं नदीनाम्।
देवोऽनयत्सविता सुपाणिस्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः॥ ६॥
प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तदिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्चत्।
वि वज्रेण परिषदो जघानायन्नापोऽयनमिच्छमानाः ॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतद्वचो जरितर्मापि मृष्ठा आ यत्ते घोषानुत्तरा युगानि।
उक्थेषु कारो प्रति नो जुषस्व मा नो नि कः पुरुषत्रा नमस्ते ॥ ८ ॥
ओ षु स्वसारः कारवे शृणोत ययौ वो दूरादनसा रथेन।
नि षू नमध्वं भवता सुपारा अधोअक्षाः सिन्धवः स्रोत्याभिः ॥ ९ ॥
आ ते कारो शृणवामा वचांसि ययाथ दूरादनसा रथेन।
नि ते नंसै पीप्यानेव योषा मर्यायेव कन्या शश्वचै ते ॥ १० ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

यदङ्ग त्वा भरताः सन्तरेयुर्गव्यन्ग्रामं इषित इन्द्रजूतः।
अर्षादह प्रसवः सर्गतक्त आ वो वृणे सुमतिं यज्ञियानाम् ॥ ११ ॥
अतारिषुर्भरता गव्यवः समभक्त विप्रः सुमतिं नदीनाम्।
प्र पिन्वध्वमिषयन्तीः सुराधा आ वक्षणाः पृणध्वं यात शीभम् ॥ १२ ॥
उद्व ऊर्मिः शम्या हन्त्वापो योक्त्राणि मुञ्चत ।
मादुष्कृतौ व्यैनसाघ्न्यौ शूनमारताम् ॥ १३ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ११ त्रिष्टुप्; ३, ६, ८, भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ५, ७, ९ विराट्त्रिष्टुप्; १० निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१; २, ४, ५, ७, ९-११ धैवतः; ३, ६, ८ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

इन्द्रः पूर्भिदातिरद्दासमर्कैर्विदद्वसुर्दयमानो वि शत्रून् ।
ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद्रोदसी उभे ॥ १ ॥
मखस्य ते तविषस्य प्र जूतिमियर्मि वाचममृताय भूषन्।
इन्द्र क्षितीनामसि मानुषीणां विशां दैवीनामुत पूर्वयावा ॥ २ ॥
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद्वर्पणीतिः।
अहन्व्यंसमुशधग्वनेष्वाविर्धना अकृणोद्राम्याणाम् ॥ ३ ॥
इन्द्रः स्वर्षा जनयन्नहानि जिगायोशिग्भिः पृतना अभिष्टिः।
प्रारोचयन्मनवे केतुमह्नामविन्दज्ज्योतिर्बृहते रणाय ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद्दधानो नर्या पुरूणि।
अचेतयद्धिय इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६ ॥

महो महानि पनयन्त्यस्येन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ।
वृजनेन वृजिनान्त्सं पिपेष मायाभिर्दस्यूँरभिभूत्योजाः ॥ ६ ॥
युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिप्राः।
विवस्वतः सदने अस्य तानि विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति ॥ ७ ॥
सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ससवांसं स्वरपश्च देवीः ।
ससान यः पृथिवीं द्यामुतेमामिन्द्रं मदन्त्यनु धीरणासः ॥ ८ ॥
ससानात्याँ उत सूर्यं ससानेन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम्।
हिरण्ययमुत भोगं ससान हत्वी दस्यून्प्रार्यं वर्णमावत् ॥ ९ ॥
इन्द्र ओषधीरसनोदहानि वनस्पतीँरसनोदन्तरिक्षम् ।
बिभेद वलं नुनुदे विवाचोऽथाभवद्दमिताभिक्रतूनाम् ॥ १० ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ११ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७, १०, ११ त्रिष्टुप्; २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ६-११ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

तिष्ठा हरी रथ आ युज्यमाना याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ।
पिबास्यन्धो अभिसृष्टो अस्मे इन्द्र स्वाहा ररिमा ते मदाय ॥ १ ॥
उपाजिरा पुरुहूताय सप्ती हरी रथस्य धूर्ष्वा युनज्मि।
द्रवद्यथा संभृतं विश्वतश्चिदुपेमं यज्ञमा वहात इन्द्रम् ॥ २ ॥
उपो नयस्व वृषणा तपुष्पोतेमव त्वं वृषभ स्वधावः।
ग्रसेतामश्वा वि मुचेह शोणा दिवेदिवे सदृशीरद्धि धानाः ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनज्मि हरी सखाया सधमाद आशू।
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन्प्रजानन्विद्वाँ उप याहि सोमम्॥ ४॥
मा ते हरी वृषणा वीतपृष्ठा नि रीरमन्यजमानासो अन्ये।
अत्यायाहि शश्वतो वयं तेऽरं सुतेभिः कृणवाम सोमैः॥ ५॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् शश्वत्तमं सुमना अस्य पाहि।
अस्मिन्यज्ञे बर्हिष्या निषद्या दधिष्वेमं जठर इन्दुमिन्द्र॥ ६॥
स्तीर्णं ते बर्हिः सुत इन्द्र सोमः कृता धाना अत्तवे ते हरिभ्याम्।
तदोकसे पुरुशाकाय वृष्णे मरुत्वते तुभ्यं राता हवींषि॥ ७॥
इमं नरः पर्वतास्तुभ्यमापः समिन्द्र गोभिर्मधुमन्तमक्रन्।
तस्यागत्या सुमना ऋष्व पाहि प्रजानन्विद्वान्पथ्या३ अनु स्वाः॥ ८॥
याँ आभजो मरुत इन्द्र सोमे ये त्वामवर्धन्नभवन्गणास्ते।
तेभिरेतं सजोषा वावशानो३ऽग्नेः पिब जिह्वया सोममिन्द्र॥ ९॥
इन्द्र पिब स्वधया चित्सुतस्याग्नेर्वा पाहि जिह्वया यजत्र।
अध्वर्योर्वा प्रयतं शक्र हस्ताद्धोतुर्वा यज्ञं हविषो जुषस्व॥ १०॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ ११॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-९, ११ विश्वामित्रः; १० घोर आङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७, १०, ११ त्रिष्टुप्; २, ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ६-११ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

इमामू षु प्रभृतिं सातये धाः शश्वच्छश्वदूतिभिर्यादमानः।
सुतेसुते वावृधे वर्धनेभिर्यः कर्मभिर्महद्भिः सुश्रुतो भूत्॥ १॥
इन्द्राय सोमाः प्रदिवो विदाना ऋभुर्येभिर्वृषपर्वा विहायाः।
प्रयम्यमानान्प्रति षू गृभायेन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्णः॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिबा वर्धस्व तवं घा सुतास इन्द्र सोमासः प्रथमा उतेमे।
यथापिबः पूर्व्याँ इन्द्र सोमाँ एवा पाहि पन्यो अद्या नवीयान्॥ ३॥
महाँ अमत्रो वृजने विरप्श्युग्रं शवः पत्यते धृष्णवोजः।
नाह विव्याच पृथिवी चनैनं यत्सोमासो हर्यश्वममन्दन्॥ ४॥
महाँ उग्रो वावृधे वीर्याय समाचक्रे वृषभः काव्येन।
इन्द्रो भगो वाजदा अस्य गावः प्र जायन्ते दक्षिणा अस्य पूर्वीः॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

प्र यत्सिन्धवः प्रसवं यथायन्नापः समुद्रं रथ्येव जग्मुः।
अतश्चिदिन्द्रः सदसो वरीयान्यदीं सोमः पृणति दुग्धो अंशुः॥ ६॥
समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तः।
अंशुं दुहन्ति हस्तिनो भरित्रैर्मध्वः पुनन्ति धारया पवित्रैः॥ ७॥
हृदाइव कुक्षयः सोमधानाः समीं विव्याच सवना पुरूणि।
अन्ना यदिन्द्रः प्रथमा व्यास वृत्रं जघन्वाँ अवृणीत सोमम्॥ ८॥
आ तू भर माकिरेतत्परि ष्ठाद्विद्मा हि त्वा वसुपतिं वसूनाम्।
इन्द्र यत्ते माहिनं दत्रमस्त्यस्मभ्यं तद्धर्यश्व प्र यन्धि॥ ९॥
अस्मे प्र यन्धि मघवन्नृजीषिन्निन्द्र रायो विश्ववारस्य भूरेः।
अस्मे शतं शरदो जीवसे धा अस्मे वीराञ्छश्वत इन्द्र शिप्रिन्॥ १०॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ ११॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ७ निचृद्गायत्री; २, ४-६, ८-१० गायत्री; ११ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-१० षड्जः; ११ गान्धारः॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च। इन्द्र त्वा वर्तयामसि॥ १॥
अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो। इन्द्र कृण्वन्तु वाघतः॥ २॥
नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे। इन्द्राभिमातिषाह्ये॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि। इन्द्रस्य चर्षणीधृतः ॥ ४ ॥
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुप ब्रुवे। भरेषु वाजसातये ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ २२ ॥

वाजेषु सासहिर्भव त्वामीमहे शतक्रतो। इन्द्र वृत्राय हन्तवे ॥ ६ ॥
द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृत्सुतूर्षु श्रवःसु च। इन्द्र साक्ष्वाभिमातिषु ॥ ७ ॥
शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम्। इन्द्र सोमं शतक्रतो ॥ ८ ॥
इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु। इन्द्र तानि त आ वृणे ॥ ९ ॥
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद्द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम्। उत्ते शुष्मं तिरामसि ॥ १० ॥
अर्वावतो न आ गह्यथो शक्र परावतः ।
उ लोको यस्ते अद्रिव इन्द्रेह तत आ गहि ॥ ११ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ६, १० त्रिष्टुप्; २-५, ८, ९ निचृत्-त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-६, ८-१० धैवतः; ७ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अभि तष्टेव दीधया मनीषामत्यो न वाजी सुधुरो जिहानः।
अभि प्रियाणि मर्मृशत्परांणि कविर्ँरिच्छामि सन्दृशे सुमेधाः ॥ १ ॥
इनोत पृच्छ जनिमा कवीनां मनोधृतः सुकृतस्तक्षत द्याम्।
इमा उ ते प्रण्योऽ३ वर्धमाना मनोवाता अध नु धर्मणि ग्मन् ॥ २ ॥
नि षीमिदत्र गुह्या दधाना उत क्षत्राय रोदसी समञ्जन्।
सं मात्राभिर्ममिरे येमुरुर्वी अन्तर्महि समृते धायसे धुः ॥ ३ ॥
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूषञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः।
महत्तद् वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ ॥ ४ ॥
असूत पूर्वो वृषभो ज्यायानिमा अस्य शुरुधः सन्ति पूर्वीः।
दिवो नपाता विदथस्य धीभिः क्षत्रं राजाना प्रदिवो दधाते ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि।
अपश्यमत्र मनसा जगन्वान्व्रते गन्धर्वाँ अपि वायुकेशान् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदिन्नवस्य वृषभस्य धेनोरा नामभिर्ममिरे सक्म्यं गोः।
अन्यदन्यदसुर्यं१ वसानो नि मायिनो ममिरे रूपमस्मिन्॥ ७॥
तदिन्नवस्य सवितुर्नकिर्मे हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत्।
आ सुष्टुती रोदसी विश्वमिन्वे अपीव योषा जनिमानि वव्रे॥ ८॥
युवं प्रत्नस्य साधथो महो यद्दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम्।
गोपाजिह्वस्य तस्थुषो विरूपा विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि॥ ९॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ १०॥

चतुर्थोऽनुवाकः [३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ९ विराट्त्रिष्टुप्; २, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ३-७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-७, ९ धैवतः; २, ८ पञ्चमः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

इन्द्रे मतिर्हृद आ वच्यमानाच्छा पतिं स्तोमतष्टा जिगाति।
या जागृविर्विदथे शस्यमानेन्द्र यत्ते जायते विद्धि तस्य॥ १॥
दिवश्चिदा पूर्व्या जायमाना वि जागृविर्विदथे शस्यमाना।
भद्रा वस्त्राण्यर्जुना वसाना सेयमस्मे सनजा पित्र्या धीः॥ २॥
यमा चिदत्र यमसूरसूत जिह्वाया अग्रं पतदा ह्यस्थात्।
वपूंषि जाता मिथुना सचेते तमोहना तपुषो बुध्न एता॥ ३॥
नकिरेषां निन्दिता मर्त्येषु ये अस्माकं पितरो गोषु योधाः।
इन्द्र एषां दृंहिता माहिनावानुद् गोत्राणि ससृजे दंसनावान्॥ ४॥
सखा ह यत्र सखिभिर्नवग्वैरभिज्ञ्वा सत्वभिर्गा अनुग्मन्।
सत्यं तदिन्द्रो दशभिर्दशग्वैः सूर्यं विवेद तमसि क्षियन्तम्॥ ५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

इन्द्रो मधु संभृतमुस्त्रियायां पद्वद्विवेद शफवन्नमे गोः।
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु हस्ते दधे दक्षिणे दक्षिणावान्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्योतिर्वृणीत तमसो विजानन्नारे स्याम दुरितादभीके।
इमा गिरः सोमपाः सोमवृद्ध जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः ॥ ७ ॥
ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु ष्यादारे स्याम दुरितस्य भूरेः।
भूरि चिद्धि तुजतो मर्त्यस्य सुपारासो वसवो बर्हणावत् ॥ ८ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ९ ॥

इति तृतीयाष्टके द्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ तृतीयाष्टके तृतीयोऽध्यायः

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-४, ६-९ गायत्री; ५ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

इन्द्रं त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे। स पाहि मध्वो अन्धसः ॥ १ ॥
इन्द्रं क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुष्टुत। पिबा वृषस्व तातृपिम् ॥ २ ॥
इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः। तिरः स्तवान विश्पते ॥ ३ ॥
इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते। क्षयं चन्द्रास इन्दवः ॥ ४ ॥
दधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम्। तव द्युक्षास इन्दवः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः ॥ ६ ॥
अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता। पीत्वी सोमस्य वावृधे ॥ ७ ॥
अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन्। इमा जुषस्व नो गिरः ॥ ८ ॥
यदन्तरा परावतमर्वावतं च हूयसे। इन्द्रेह तत आ गहि ॥ ९ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ यवमध्यागायत्री; २, ३, ५, ९ गायत्री; ४, ७, ८ निचृद्गायत्री; ६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

आ तू न इन्द्र मद्र्यग्घुवानः सोमपीतये। हरिभ्यां याह्यद्रिवः ॥ १ ॥
सत्तो होता न ऋत्वियस्तिस्तिरे बर्हिरानुषक्। अयुज्रन्प्रातरद्रयः ॥ २ ॥
इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद। वीहि शूर पुरोळाशम् ॥ ३ ॥
रारन्धि सवनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन्। उक्थेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ ४ ॥
मतयः सोमपामुरुं रिहन्ति शवसस्पतिम्। इन्द्रं वत्सं न मातरः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे। न स्तोतारं निदे करः ॥ ६ ॥
वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे। उत त्वमस्मयुर्वसो ॥ ७ ॥
मारे अस्मद्वि मुमुचो हरिप्रियार्वाङ् याहि। इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह ॥ ८ ॥
अर्वाञ्चं त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना। घृतस्नू बर्हिरासदे ॥ ९ ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४-७ गायत्री; २, ३, ८, ९ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उप नः सुतमा गहि सोममिन्द्र गवाशिरम्। हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः ॥ १ ॥
तमिन्द्र मदमा गहि बर्हिःष्ठां ग्रावभिः सुतम्। कुविन्नवस्य तृप्णवः ॥ २ ॥
इन्द्रमित्था गिरो ममाच्छागुरिषिता इतः। आवृते सोमपीतये ॥ ३ ॥
इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे। उक्थेभिः कुविदागमत् ॥ ४ ॥
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान्दधिष्व शतक्रतो। जठरे वाजिनीवसो ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

विद्मा हि त्वा धनञ्जयं वाजेषु दधृषं कवे। अधा ते सुम्नमीमहे ॥ ६ ॥
इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब। आगत्या वृषभिः सुतम् ॥ ७ ॥
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये३ सोमं चोदामि पीतये। एष रारन्तु ते हृदि ॥ ८ ॥
त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे। कुशिकासो अवस्यवः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ विराट्पङ्क्तिः; २, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; ७, ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २, ४-८ धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

आ याह्यर्वाङुप वन्धुरेष्टास्तवेदनु प्रदिवः सोमपेयम् ।
प्रिया सखाया वि मुचोप बर्हिस्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते ॥ १ ॥
आ याहि पूर्वीरति चर्षणीराँ अर्य आशिष उप नो हरिभ्याम् ।
इमा हि त्वा मतयः स्तोमतष्टा इन्द्र हवन्ते सख्यं जुषाणाः ॥ २ ॥
आ नो यज्ञं नमोवृधं सजोषा इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूयम् ।
अहं हि त्वा मतिभिर्जोहवीमि घृतप्रयाः सधमादे मधूनाम् ॥ ३ ॥
आ च त्वामेता वृषणा वहातो हरी सखाया सुधुरा स्वङ्गा ।
धानावदिन्द्रः सवनं जुषाणः सखा सख्युः शृणवद्वन्दनानि ॥ ४ ॥
कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद्राजानं मघवन्नृजीषिन् ।
कुविन्म ऋषिं पपिवांसं सुतस्य कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः ॥ ५ ॥
आ त्वा बृहन्तो हरयो युजाना अर्वागिन्द्र सधमादो वहन्तु ।
प्र ये द्विता दिव ऋञ्जन्त्याताः सुसंमृष्टासो वृषभस्य मूराः ॥ ६ ॥
इन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्ण आ यं ते श्येन उशते जभार ।
यस्य मदे च्यावयसि प्र कृष्टीर्यस्य मदे अप गोत्रा ववर्थ ॥ ७ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ८ ॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ निचृद्बृहती; ३, ५ बृहती; ४ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५ मध्यमः; ४ गान्धारः ॥

अथ अष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

अयं ते अस्तु हर्यतः सोम आ हरिभिः सुतः ।
जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ गह्या तिष्ठ हरितं रथम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्यं हर्यन्नरोचयः ।
विद्वांश्चिकित्वान्हर्यश्व वर्धस इन्द्र विश्वा अभि श्रियः ॥ २ ॥
द्यामिन्द्रो हरिधायसं पृथिवीं हरिवर्पसम् ।
अधारयद्धरितोर्भूरि भोजनं ययोरन्तर्हरिश्चरत् ॥ ३ ॥
जज्ञानो हरितो वृषा विश्वमा भाति रोचनम् ।
हर्यश्वो हरितं धत्त आयुधमा वज्रं बाह्वोर्हरिम् ॥ ४ ॥
इन्द्रो हर्यन्तमर्जुनं वज्रं शुक्रैरभीवृतम् ।
अपावृणोद्धरिभिरद्रिभिः सुतमुद्गा हरिभिराजत ॥ ५ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ निचृद्बृहती; ३, ५ बृहती; ४ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५ मध्यमः; ४ गान्धारः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।
मा त्वा के चिन्नि यमन्विं न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥ १ ॥
वृत्रखादो वलंरुजः पुरां दर्मो अपामजः ।
स्थाता रथस्थ हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृळ्हा चिदारुजः ॥ २ ॥
गम्भीराँ उदधींरिव क्रतुं पुष्यसि गाइव ।
प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा ह्रदं कुल्याइवाशत ॥ ३ ॥
आ नस्तुजं रयिं भरांशं न प्रतिजानते ।
वृक्षं पक्वं फलमङ्कीव धूनुहीन्द्र संपारणं वसु ॥ ४ ॥
स्वयुरिन्द्र स्वराळसि स्मद्दिष्टिः स्वयशस्तरः ।
स वावृधान ओजसा पुरुष्टुत भवा नः सुश्रवस्तमः ॥ ५ ॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

युध्मस्य ते वृषभस्य स्वराज उग्रस्य यूनः स्थविरस्य घृष्वेः ।
अजूर्यतो वज्रिणो वीर्येण इन्द्र श्रुतस्य महतो महानि ॥ १ ॥
महाँ असि महिष वृष्ण्येभिर्धनस्पृदुग्र सहमानो अन्यान् ।
एको विश्वस्य भुवनस्य राजा स योधया च क्षयया च जनान् ॥ २ ॥
प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो अप्रतीतः ।
प्र मज्मना दिव इन्द्रः पृथिव्याः प्रोरोर्महो अन्तरिक्षादृजीषी ॥ ३ ॥
उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं विश्वव्यचसमवतं मतीनाम् ।
इन्द्रं सोमासः प्रदिवि सुतासः समुद्रं न स्रवत आ विशन्ति ॥ ४ ॥
यं सोममिन्द्र पृथिवीद्यावा गर्भं न माता बिभृतस्त्वाया ।
तं ते हिन्वन्ति तमु ते मृजन्त्यध्वर्यवो वृषभ पातवा उ ॥ ५ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय ।
आ सिञ्चस्व जठरे मध्व ऊर्मिं त्वं राजासि प्रदिवः सुतानाम् ॥ १ ॥
सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।
जहि शत्रूँरप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः ॥ २ ॥
उत ऋतुभिर्ऋतुपाः पाहि सोममिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः ।
याँ आभजो मरुतो ये त्वान्वहन्वृत्रमदधुस्तुभ्यमोजः ॥ ३ ॥
ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन्ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ ।
ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं सगणो मरुद्भिः ॥ ४ ॥
मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् ।
विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

सद्यो ह जातो वृषभः कनीनः प्रभर्तुमावदन्धसः सुतस्य ।
साधोः पिब प्रतिकामं यथा ते रसाशिरः प्रथमं सोम्यस्य ॥ १ ॥
यज्जायथास्तदहरस्य कामेंऽशोः पीयूषमपिबो गिरिष्ठाम् ।
तं ते माता परि योषा जनित्री महः पितुर्दम आसिञ्चदग्रे ॥ २ ॥
उपस्थाय मातरमन्नमैट्ट तिग्ममपश्यदभि सोममूधः ।
प्रयावयन्नचरद् गृत्सो अन्यान्महानि चक्रे पुरुधप्रतीकः ॥ ३ ॥
उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजा यथावशं तन्वं चक्र एषः ।
त्वष्टारमिन्द्रो जनुषाभिभूयामुष्या सोममपिबच्चमूषु ॥ ४ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ५ ॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ धैवतः; ३ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

शंसा महामिन्द्रं यस्मिन्विश्वा आ कृष्टयः सोमपाः काममव्यन् ।
यं सुक्रतुं धिषणे विभ्वतष्टं घनं वृत्राणां जनयन्त देवाः ॥ १ ॥
यं नु नकिः पृतनासु स्वराजं द्विता तरति नृतमं हरिष्ठाम् ।
इनतमः सत्वभिर्यो ह शूषैः पृथुज्रयां अमिनादायुर्दस्योः ॥ २ ॥
सहावा पृत्सु तरणिर्नार्वा व्यानशी रोदसी मेहनावान् ।
भगो न कारे हव्यो मतीनां पितेव चारुः सुहवो वयोधाः ॥ ३ ॥
धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वो रथो न वायुर्वसुभिर्नियुत्वान् ।
क्षपां वस्ता जनिता सूर्यस्य विभक्ता भागं धिषणेव वाजम् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ५ ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

इन्द्रः स्वाहा पिबतु यस्य सोम आगत्या तुम्रो वृषभो मरुत्वान् ।
ओरुव्यचाः पृणतामेभिरन्नैरास्य हविस्तन्वः१ कामंमृध्याः ॥ १ ॥
आ ते सपर्यू जवसे युनज्मि ययोरनु प्रदिवः श्रुष्टिमावः ।
इह त्वा धेयुर्हरयः सुशिप्र पिबा त्वस्य१ सुषुतस्य चारोः ॥ २ ॥
गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे सुपारमिन्द्रं ज्यैष्ठ्याय धायसे गृणानाः ।
मन्दानः सोमं पपिवाँ ऋजीषिन्त्समस्मभ्यं पुरुधा गा इषण्य ॥ ३ ॥
इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च ।
स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् ॥ ४ ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ५ ॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ निचृज्जगती; ४, ७-९ त्रिष्टुप्; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; १०, ११ यवमध्यागायत्री; १२ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—१-३ निषादः; ४-९ धैवतः; १०-१२ षड्जः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्य१मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत ।
वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं जरमाणं दिवेदिवे ॥ १ ॥
शतक्रतुमर्णवं शाकिनं नरं गिरो म इन्द्रमुप यन्ति विश्वतः ।
वाजसनिं पूर्भिदं तूर्णिमप्तुरं धामसाचमभिषाचं स्वर्विदम् ॥ २ ॥
आकरे वसोर्जरिता पनस्यतेऽनेहसः स्तुभ इन्द्रो दुवस्यति ।
विवस्वतः सदन आ हि पिप्रिये सत्रासाहमभिमातिहनं स्तुहि ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृणामु त्वा नृतमं गीर्भिरुक्थैरभि प्र वीरमर्चता सबाधः।
सं सहसे पुरुमायो जिहीते नमो अस्य प्रदिव एक ईशे॥ ४॥
पूर्वीरस्य निष्षिधो मर्त्येषु पुरू वसूनि पृथिवी बिभर्ति।
इन्द्राय द्याव ओषधीरुतापो रयिं रक्षन्ति जीरयो वनानि॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

तुभ्यं ब्रह्माणि गिर इन्द्र तुभ्यं सत्रा दधिरे हरिवो जुषस्व।
बोध्याऽऽपिरवसो नूतनस्य सखे वसो जरितृभ्यो वयो धाः॥ ६॥
इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबः सुतस्य।
तव प्रणीती तव शूर शर्मन्ना विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः॥ ७॥
स वावशान इह पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः सुतं नः।
जातं यत्त्वा परि देवा अभूषन्महे भराय पुरुहूत विश्वे॥ ८॥
असूर्ये मरुत आपिरेषोऽमन्दन्निन्द्रमनु दातिवाराः।
तेभिः साकं पिबतु वृत्रखादः सुतं सोमं दाशुषः स्वे सधस्थे॥ ९॥
इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते। पिबा त्वस्य गिर्वणः॥ १०॥
यस्ते अनु स्वधामसत्सुते नि यच्छ तन्वम्। स त्वा ममत्तु सोम्यम्॥ ११॥
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः। प्र बाहु शूर राधसे॥ १२॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ४ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ जगती; ८ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४ षड्जः; ५, ७, ८ धैवतः; ६ निषादः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः॥ १॥
पुरोळाशं पचत्यं जुषस्वेन्द्रा गुरस्व च। तुभ्यं हव्यानि सिस्रते॥ २॥
पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः। वधूयुरिव योषणाम्॥ ३॥
पुरोळाशं सनश्रुत प्रातःसावे जुषस्व नः। इन्द्र क्रतुर्हि ते बृहन्॥ ४॥
माध्यन्दिनस्य सवनस्य धानाः पुरोळाशमिन्द्र कृष्वेह चारुम्।
प्र यत्स्तोता जरिता तूर्यर्थो वृषायमाण उप गीर्भिरीट्टे॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

तृतीये धानाः सवने पुरुष्टुत पुरोळाशमाहुतं मामहस्व नः ।
ऋभुमन्तं वाजवन्तं त्वा कवे प्रयस्वन्त उप शिक्षेम धीतिभिः ॥ ६ ॥
पूषण्वते ते चकृमा करम्भं हरिवते हर्यश्वाय धानाः ।
अपूपमद्धि सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ॥ ७ ॥
प्रति धाना भरत तूयमस्मै पुरोळाशं वीरतमाय नृणाम् ।
दिवेदिवे सदृशीरिन्द्र तुभ्यं वर्धन्तु त्वा सोमपेयाय धृष्णो ॥ ८ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—१ इन्द्रापर्वतौ; २-१४, २१-२४ इन्द्रः; १५, १६ वाक्; १७-२० रथाङ्गानि ॥ छन्दः—१, ५, ९, २१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ६, ७, १४, १७, १९, २३, २४ त्रिष्टुप्; ३, ४, ८, १५ स्वराट्त्रिष्टुप्; १०, १६ निचृज्जगती; ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२, २२ अनुष्टुप्; १३ निचृद्गायत्री; १८ निचृद्बृहती; २० भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-९, ११, १४, १५, १७, १९, २१, २३, २४ धैवतः; १०, १६ निषादः; १२, २०, २२ गान्धारः; १३ षड्जः; १८ मध्यमः ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः ।
वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भीरिळया मदन्ता ॥ १ ॥
तिष्ठा सु कं मघवन्मा परा गाः सोमस्य नु त्वा सुषुतस्य यक्षि ।
पितुर्न पुत्रः सिचमा रभे त इन्द्र स्वादिष्ठया गिरा शचीवः ॥ २ ॥
शंसावाध्वर्यो प्रति मे गृणीहीन्द्राय वाहः कृणवाव जुष्टम् ।
एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदाथा च भूदुक्थमिन्द्राय शस्तम् ॥ ३ ॥
जायेदस्तं मघवन्त्सेदु योनिस्तदित्त्वा युक्ता हरयो वहन्तु ।
यदा कदा च सुनवाम सोममग्निष्टो दूतो धन्वात्यच्छ ॥ ४ ॥
परा याहि मघवन्ना च याहीन्द्र भ्रातरुभयत्रा ते अर्थम् ।
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो रासभस्य ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

अपाः सोममस्तमिन्द्र प्र याहि कल्याणीर्जाया सुरणं गृहे ते ।
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमे भोजा अङ्गिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः॥ ७॥
रूपंरूपं मघवा बोभवीति मायाः कृण्वानस्तन्वं परि स्वाम्।
त्रिर्यद्दिवः परि मुहूर्तमागात्स्वैर्मन्त्रैरनृतुपा ऋतावा॥ ८॥
महाँ ऋषिर्देवजा देवजूतोऽस्तभ्नात्सिन्धुमर्णवं नृचक्षाः।
विश्वामित्रो यदवहत्सुदासमप्रियायत कुशिकेभिरिन्द्रः॥ ९॥
हंसाइव कृणुथ श्लोकमद्रिभिर्मदन्तो गीर्भिरध्वरे सुते सचा।
देवेभिर्विप्रा ऋषयो नृचक्षसो वि पिबध्वं कुशिकाः सोम्यं मधु॥ १०॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

उप प्रेत कुशिकाश्चेतयध्वमश्वं राये प्र मुञ्चता सुदासः।
राजा वृत्रं जङ्घनत्प्रागपागुदगथा यजाते वर आ पृथिव्याः॥ ११॥
य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमतुष्टवम्।
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम्॥ १२॥
विश्वामित्रा अरासत ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे। करदिन्नः सुराधसः॥ १३॥
किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु गावो नाशिरं दुह्रे न तपन्ति घर्मम्।
आ नो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन्रन्धया नः॥ १४॥
ससर्परीरमतिं बाधमाना बृहन्निमाय जमदग्निदत्ता।
आ सूर्यस्य दुहिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्यम्॥ १५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

ससर्परीरभरत्तूयमेभ्योऽधि श्रवः पाञ्चजन्यासु कृष्टिषु।
सा पक्ष्या३ नव्यमायुर्दधाना यां मे पलस्तिजमदग्नयो ददुः॥ १६॥
स्थिरौ गावौ भवतां वीळुरक्षो मेषा वि वर्हि मा युगं वि शारि।
इन्द्रः पातल्यं ददतां शरीतोररिष्टनेमे अभि नः सचस्व॥ १७॥
बलं धेहि तनूषु नो बलमिन्द्रानळुत्सु नः।
बलं तोकाय तनयाय जीवसे त्वं हि बलदा असि॥ १८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि व्यंयस्व खदिरस्य सारमोजो धेहि स्पन्दने शिंशपायाम्।
अक्षं वीळो वीळित वीळयस्व मा यामादस्मादव जीहिपो नः॥ १९॥
अयमस्मान्वनस्पतिर्मा च हा मा च रीरिषत्।
स्वस्त्या गृहेभ्य आवसा आ विमोचनात्॥ २०॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो अद्य याच्छ्रेष्ठाभिर्मघवञ्छूर जिन्व।
यो नो द्वेष्ट्यधरः सस्पदीष्ट यमु द्विष्मस्तमु प्राणो जहातु॥ २१॥
परशुं चिद्वि तपति शिम्बलं चिद्वि वृश्चति।
उखा चिदिन्द्र येषन्ती प्रयस्ता फेनमस्यति॥ २२॥
न सायकस्य चिकिते जनासो लोधं नयन्ति पशु मन्यमानाः।
नावाजिनं वाजिना हासयन्ति न गर्दभं पुरो अश्वान्नयन्ति॥ २३॥
इम इन्द्र भरतस्य पुत्रा अपपित्वं चिकितुर्न प्रपित्वम्।
हिन्वन्त्यश्वमरणं न नित्यं ज्यावाजं परि णयन्त्याजौ॥ २४॥

पञ्चमोऽनुवाकः [५४] चतुःपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २, ३, ६, ८, १०, ११, १३, १४ त्रिष्टुप्; ४, ७, १५, १६, १८, २० २१ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ स्वराट् त्रिष्टुप्; ९ भुरिक्पङ्क्तिः; १२ स्वराट्पङ्क्तिः; १७ भुरिक्त्रिष्टुप्; १९, २२ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ९, १२ पञ्चमः; २-८, १०, ११, १३-२२ धैवतः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

इमं महे विदथ्याय शूषं शश्वत्कृत्व ईड्याय प्र जभ्रुः।
शृणोतु नो दम्यैभिरनीकैः शृणोत्वग्निर्दिव्यैरजस्रः॥ १॥
महि महे दिवे अर्चा पृथिव्यै कामो म इच्छञ्चरति प्रजानन्।
ययोर्ह स्तोमे विदथेषु देवाः संपर्यवो मादयन्ते सचायोः॥ २॥
युवोर्ऋतं रोदसी सत्यमस्तु महे षु णः सुविताय प्र भूतम्।
इदं दिवे नमो अग्रे पृथिव्यै संपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम्॥ ३॥
उतो हि वां पूर्व्या आविविद्र ऋतावरी रोदसी सत्यवाचः।
नरश्चिद्वां समिथे शूरसातौ ववन्दिरे पृथिवि वेविदानाः॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अ॒द्धा वे॑द॒ क इ॒ह प्र वो॑चद्दे॒वाँ अच्छा॑ प॒थ्या॒३॒॑ का समे॑ति।
ददृ॑श्र एषामव॒मा सदां॑सि॒ परे॑षु॒ या गुह्ये॑षु व्र॒तेषु॑ ॥५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

क॒विर्नृ॒चक्षा॑ अ॒भि षी॑मचष्ट ऋ॒तस्य॒ योना॒ विघृ॑ते॒ मद॑न्ती।
नाना॑ चक्राते॒ सद॑नं॒ यथा॒ वेः स॑मा॒नेन॒ क्रतु॑ना संविदा॒ने॥ ६॥
स॒मा॒न्या वियु॑ते दू॒रेअ॑न्ते ध्रु॒वे प॒दे त॑स्थतुर्जाग॒रूके॑।
उ॒त स्वसा॑रा युव॒ती भव॑न्ती॒ आदु॑ ब्रुवाते मिथु॒नानि॒ नाम॑॥ ७॥
विश्वेदे॒ते जनि॑मा॒ सं वि॑विक्तो म॒हो दे॒वान्बिभ्र॑ती॒ न व्य॑थेते।
एज॑द् ध्रु॒वं प॑त्यते॒ विश्व॒मेकं॒ चर॑त्पत॒त्रि विषु॑णं॒ वि जा॒तम्॥ ८॥
सना॑ पुरा॒णमध्यै॑म्या॒रान्म॒हः पि॒तुर्ज॑नि॒तुर्जा॒मि तन्नः॑ ।
दे॒वासो॒ यत्र॑ पनि॒तार॒ एवै॑रु॒रौ प॒थि व्यु॑ते त॒स्थुर॒न्तः ॥ ९॥
इ॒मं स्तोमं॑ रोदसी॒ प्र ब्र॑वीम्यृदू॒दराः॑ शृणवन्नग्निजि॒ह्वाः ।
मि॒त्रः स॒म्राजो॒ वरु॑णो॒ युवा॑न आदि॒त्यासः॑ क॒वयः॑ पप्रथा॒नाः॥ १०॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

हिर॑ण्यपाणिः सवि॒ता सु॑जि॒ह्वस्त्रिरा दि॒वो वि॒दथे॒ पत्य॑मानः।
दे॒वेषु॑ च सवितः॒ श्लोक॒मश्रे॒राद॒स्मभ्य॒मा सु॑व स॒र्वता॑तिम्॥ ११॥
सु॒कृत्सु॑पा॒णिः स्ववाँ॑ ऋ॒तावा॑ दे॒वस्त्वष्टाव॑से॒ तानि॑ नो धात्।
पू॒ष॒ण्वन्त॑ ऋभवो मादयध्वमू॒र्ध्वग्रा॑वाणो अध्व॒रम॑तष्ट ॥ १२॥
वि॒द्युद्र॑था म॒रुत॑ ऋष्टि॒मन्तो॑ दि॒वो मर्या॑ ऋ॒तजा॑ता अ॒यासः॑।
सर॑स्वती शृणवन्य॒ज्ञिया॑सो॒ धाता॑ र॒यिं स॒हवी॑रं तुरासः॥ १३॥
विष्णुं॒ स्तोमा॑सः पुरुद॒स्मम॒र्का भग॑स्येव का॒रिणो॒ याम॑नि ग्मन्।
उ॒रु॒क्र॒मः क॑कु॒हो यस्य॑ पू॒र्वीर्न म॑र्धन्ति युव॒तयो॒ जनि॑त्रीः॥ १४॥
इन्द्रो॒ विश्वै॑र्वी॒र्यै॒३॒॑ः पत्य॑मान उ॒भे आ प॑प्रौ॒ रोद॑सी महि॒त्वा।
पु॒रं॒द॒रो वृ॑त्र॒हा धृ॒ष्णुषे॑णः सं॒गृभ्या॑ न॒ आ भ॑रा॒ भूरि॑ प॒श्वः॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

नासत्या मे पितरा बन्धुपृच्छा सजात्यमश्विनोश्चारु नाम।
युवं हि स्थो रयिदौ नो रयीणां दात्रं रक्षेथे अकवैरदब्धा ॥ १६ ॥
महत्तद्वः कवयश्चारु नाम यद्ध देवा भवथ विश्व इन्द्रे।
सख ऋभुभिः पुरुहूत प्रियेभिरिमां धियं सातये तक्षता नः ॥ १७ ॥
अर्यमा णो अदितिर्यज्ञियासोऽदब्धानि वरुणस्य व्रतानि।
युयोत नो अनपत्यानि गन्तोः प्रजावान्नः पशुमाँ अस्तु गातुः ॥ १८ ॥
देवानां दूतः पुरुध प्रसूतोऽनागान्नो वोचतु सर्वताता ।
शृणोतु नः पृथिवी द्यौरुतापः सूर्यो नक्षत्रैरुर्वन्तरिक्षम् ॥ १९ ॥
शृण्वन्तु नो वृषणः पर्वतासो ध्रुवक्षेमास इळया मदन्तः।
आदित्यैर्नो अदितिः शृणोतु यच्छन्तु नो मरुतः शर्म भद्रम् ॥ २० ॥
सदा सुगः पितुमाँ अस्तु पन्था मध्वा देवा ओषधीः सं पिपृक्त।
भगो मे अग्ने सख्ये न मृध्या उद्रायो अश्यां सदनं पुरुक्षोः ॥ २१ ॥
स्वदस्व हव्या समिषो दिदीह्यस्मद्र्यक्सं मिमीहि श्रवांसि।
विश्वाँ अग्ने पृत्सु ताञ्जेषि शत्रूनहा विश्वा सुमना दीदिही नः ॥ २२ ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ॥ देवता—विश्वे देवाः—१ उषा; २-१० अग्निः; ११ अहोरात्रौ; १२-१४ रोदसी; १५ रोदसी द्युनिशौ वा; १६ दिशः; १७-२२ इन्द्रः पर्जन्यात्मा त्वष्टा वाग्निश्च ॥ छन्दः—१, २, ६, ७, ९-१२, १९, २२ निचृत् त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ८, १३, १६, २१ त्रिष्टुप्; ५, २० स्वराट् पङ्क्तिः; १७ भुरिक्त्रिष्टुप्; १४, १५, १८ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ६-१९, २१, २२ धैवतः; ३, ५, २० पञ्चमः ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

उषसः पूर्वा अध यद् व्यूषुर्महद्वि जज्ञे अक्षरं पदे गोः।
व्रता देवानामुप नु प्रभूषन्महद्देवानामसुरत्वमेकम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मो षू णो अत्र जुहुरन्त देवा मा पूर्वे अग्ने पितरः पदज्ञाः।
पुराण्योः सद्मनोः केतुरन्तर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ २॥
वि मे पुरुत्रा पतयन्ति कामाः शम्यच्छा दीद्ये पूर्व्याणि।
समिद्धे अग्नावृतमिद्वदेम महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ३॥
समानो राजा विभृतः पुरुत्रा शये शयासु प्रयुतो वनानु।
अन्या वत्सं भरति क्षेति माता महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ४॥
आक्षित्पूर्वास्वपरा अनूरुत्सद्यो जातासु तरुणीष्वन्तः।
अन्तर्वतीः सुवते अप्रवीता महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ५॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

शयुः परस्तादध नु द्विमाताबन्धनश्चरति वत्स एकः।
मित्रस्य ता वरुणस्य व्रतानि महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ६॥
द्विमाता होता विदथेषु सम्राळन्वग्रं चरति क्षेति बुध्नः।
प्र रण्यानि रण्यवाचो भरन्ते महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ७॥
शूरस्येव युध्यतो अन्तमस्य प्रतीचीनं ददृशे विश्वमायत्।
अन्तर्मतिश्चरति निष्षिधं गोर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ८॥
नि वेवेति पलितो दूत आस्वन्तर्महांश्चरति रोचनेन।
वपूंषि बिभ्रदभि नो वि चष्टे महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ९॥
विष्णुर्गोपाः परमं पाति पाथः प्रिया धामान्यमृता दधानः।
अग्निष्टा विश्वा भुवनानि वेद महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १०॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

नाना चक्राते यम्या३ वपूंषि तयोरन्यद्रोचते कृष्णमन्यत्।
श्यावी च यदरुषी च स्वसारौ महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ ११॥
माता च यत्र दुहिता च धेनू सबर्दुघे धापयेते समीची।
ऋतस्य ते सदसीळे अन्तर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः।
ऋतस्य सा पयसापिन्वतेळा महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १३॥
पद्या वस्ते पुरुरूपा वपूंष्यूर्ध्वा तस्थौ त्र्यविं रेरिहाणा।
ऋतस्य सद्म वि चरामि विद्वान्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १४॥
पदेइव निहिते दस्मे अन्तस्तयोरन्यद् गुह्यमाविरन्यत्।
सध्रीचीना पथ्या३ सा विषूची महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १५॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

आ धेनवो धुनयन्तामशिश्वीः सबर्दुघाः शशया अप्रदुग्धाः।
नव्यानव्या युवतयो भवन्तीर्महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १६॥
यदन्यासु वृषभो रोरवीति सो अन्यस्मिन्यूथे नि दधाति रेतः।
स हि क्षपावान्त्स भगः स राजा महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १७॥
वीरस्य नु स्वश्व्यं जनासः प्र नु वोचाम विदुरस्य देवाः।
षोळ्हा युक्ताः पञ्चपञ्चा वहन्ति महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १८॥
देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः पुपोष प्रजाः पुरुधा जजान।
इमा च विश्वा भुवनान्यस्य महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ १९॥
मही समैरच्चम्वा समीची उभे ते अस्य वसुना न्यृष्टे।
शृण्वे वीरो विन्दमानो वसूनि महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ २०॥
इमां च नः पृथिवीं विश्वधायाः उप क्षेति हितमित्रो न राजा।
पुरःसदः शर्मसदो न वीरा महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ २१॥
निषिध्वरीस्त ओषधीरुतापो रयिं त इन्द्र पृथिवी बिभर्ति।
सखायस्ते वामभाजः स्याम महद्देवानामसुरत्वमेकम्॥ २२॥

इति तृतीयाऽष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तृतीयाष्टके चतुर्थोऽध्यायः

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-८ धैवतः; २ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

न ता मिनन्ति मायिनो न धीरा व्रता देवानां प्रथमा ध्रुवाणि।
न रोदसी अद्रुहा वेद्याभिर्न पर्वता निनमे तस्थिवांसः॥ १॥
षड् भाराँ एको अचरन्बिभर्त्यृतं वर्षिष्ठमुप गाव आगुः।
तिस्रो महीरुपरास्तस्थुरत्या गुहा द्वे निहिते दर्श्येका ॥ २॥
त्रिषाजस्यो वृषभो विश्वरूप उत त्र्युधा पुरुध प्रजावान्।
त्र्यनीकः पत्यते माहिनावान्त्स रेतोधा वृषभः शश्वतीनाम्॥ ३॥
अभीक आसां पदवीर्बोध्यादित्यानामह्वे चारु नाम।
आपश्चिदस्मा अरमन्त देवीः पृथग्व्रजन्तीः परि षीमवृञ्जन्॥ ४॥
त्री षधस्था सिन्धवस्त्रिः कवीनामुत त्रिमाता विदथेषु सम्राट्।
ऋतावरीर्योषणास्तिस्रो अप्यास्त्रिरा दिवो विदथे पत्यमानाः॥ ५॥
त्रिरा दिवः सवितर्वार्याणि दिवेदिव आ सुव त्रिर्नो अह्नः।
त्रिधातु राय आ सुवा वसूनि भगं त्रातर्धिषणे सातये धाः॥ ६॥
त्रिरा दिवः सविता सोषवीति राजाना मित्रावरुणा सुपाणी।
आपश्चिदस्य रोदसी चिदुर्वी रत्नं भिक्षन्त सवितुः सवाय॥ ७॥
त्रिरुत्तमा दूणशा रोचनानि त्रयो राजन्त्यसुरस्य वीराः।
ऋतावान इषिरा दूळभासस्त्रिरा दिवो विदथे सन्तु देवाः॥ ८॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप्; २, ५, ६, निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

प्र मे विविक्वाँ अविदन्मनीषां धेनुं चरन्तीं प्रयुतामगोपाम्।
सद्यश्चिद्या दुदुहे भूरि धासेरिन्द्रस्तदग्निः पनितारो अस्याः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रः सु पूषा वृषणा सुहस्ता दिवो न प्रीताः शंशयं दुदुह्रे।
विश्वे यदस्यां रणयन्त देवाः प्र वोऽत्र वसवः सुम्नमश्याम्॥ २॥
या जामयो वृष्णं इच्छन्ति शक्तिं नमस्यन्तीर्जानते गर्भमस्मिन्।
अच्छा पुत्रं धेनवो वावशाना महश्चरन्ति बिभ्रतं वपूंषि॥ ३॥
अच्छा विवक्मि रोदसी सुमेके ग्राव्णो युजानो अध्वरे मनीषा।
इमा उ ते मनवे भूरिवारा ऊर्ध्वा भवन्ति दर्शता यजत्राः॥ ४॥
या ते जिह्वा मधुमती सुमेधा अग्ने देवेषूच्यत उरूची।
तयेह विश्वाँ अवसे यजत्राना सादय पायया चा मधूनि॥ ५॥
या ते अग्ने पर्वतस्येव धारासश्चन्ती पीपयद्देव चित्रा।
तामस्मभ्यं प्रमतिं जातवेदो वसो रास्व सुमतिं विश्वजन्याम्॥ ६॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ८, ९ त्रिष्टुप्; २-५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७-९ धैवतः; ६ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

धेनुः प्रत्नस्य काम्यं दुहानान्तः पुत्रश्चरति दक्षिणायाः।
आ द्योतनिं वहति शुभ्रयामोषसः स्तोमो अश्विनावजीगः॥ १॥
सुयुग्वहन्ति प्रति वामृतेनोर्ध्वा भवन्ति पितरेव मेधाः।
जरेथामस्मद्वि पणेर्मनीषां युवोरवश्चकृमा यातमर्वाक्॥ २॥
सुयुग्भिरश्वैः सुवृता रथेन दस्राविमं शृणुतं श्लोकमद्रेः।
किमङ्ग वां प्रत्यवर्तिं गमिष्ठाहुर्विप्रासो अश्विना पुराजाः॥ ३॥
आ मन्येथामा गतं कच्चिदेवैर्विश्वे जनासो अश्विना हवन्ते।
इमा हि वां गोऋजीका मधूनि प्र मित्रासो न ददुरुस्रो अग्रे॥ ४॥
तिरः पुरू चिदश्विना रजांस्याङ्गूषो वां मघवाना जनेषु।
एह यातं पथिभिर्देवयानैर्दस्रावि मे वां निधयो मधूनाम्॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

पुराणमोकः सख्यं शिवं वां युवोर्नरा द्रविणं जह्नाव्याम्।
पुनः कृण्वानाः सख्या शिवानि मध्वा मदेम सह नू समानाः ॥ ६ ॥
अश्विना वायुना युवं सुदक्षा नियुद्भिश्च सजोषसा युवाना।
नासत्या तिरोअह्न्यं जुषाणा सोमं पिबतमस्त्रिधा सुदानू ॥ ७ ॥
अश्विना परि वामिषः पुरूचीरीयुर्गीर्भिर्यतमाना अमृध्राः।
रथो ह वामृतजा अद्रिजूतः परि द्यावापृथिवी याति सद्यः ॥ ८ ॥
अश्विना मधुषुत्तमो युवाकुः सोमस्तं पातमा गतं दुरोणे।
रथो ह वां भूरि वर्पः करिक्रत्सुतावतो निष्कृतमागमिष्ठः ॥ ९ ॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—मित्रः ॥ छन्दः—१, २, ५, त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ६, ९ निचृद्गायत्री; ७, ८ गायत्री ॥ स्वरः—१-३, ५ धैवतः; ४ पञ्चमः; ६-९ षड्जः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

मित्रो जनान्यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम्।
मित्रः कृष्टीरनिमिषाभि चष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत ॥ १ ॥
प्र स मित्र मर्तो अस्तु प्रयस्वान्यस्त आदित्य शिक्षति व्रतेन।
न हन्यते न जीयते त्वोतो नैनमंहो अश्नोत्यन्तितो न दूरात् ॥ २ ॥
अनमीवास इळया मदन्तो मितज्ञवो वरिमन्ना पृथिव्याः।
आदित्यस्य व्रतमुपक्षियन्तो वयं मित्रस्य सुमतौ स्याम ॥ ३ ॥
अयं मित्रो नमस्यः सुशेवो राजा सुक्षत्रो अजनिष्ट वेधाः।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ॥ ४ ॥
महाँ आदित्यो नमसोपसद्यो यातयज्जनो गृणते सुशेवः।
तस्मा एतत्पन्यतमाय जुष्टमग्नौ मित्राय हविरा जुहोत ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवो देवस्य सानसि। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि यो महिना दिवं मित्रो बभूव सप्रथाः। अभि श्रवोभिः पृथिवीम्॥ ७॥
मित्राय पञ्च येमिरे जना अभिष्टिशवसे। स देवान्विश्वान्बिभर्ति॥ ८॥
मित्रो देवेष्वायुषु जनाय वृक्तबर्हिषे। इषं इष्टव्रता अकः ॥ ९॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—ऋभवः॥ छन्दः—१-३ जगती; ४, ५ निचृज्जगती; ६ विराड्जगती; ७ भुरिग्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

इहेह वो मनसा बन्धुता नर उशिजो जग्मुरभि तानि वेदसा।
याभिर्मायाभिः प्रतिजूतिवर्पसः सौधन्वना यज्ञियं भागमानश॥ १॥
याभिः शचीभिश्चमसाँ अपिंशत यया धिया गामरिणीत चर्मणः।
येन हरी मनसा निरतक्षत तेन देवत्वमृभवः समानश ॥ २॥
इन्द्रस्य सख्यमृभवः समानशुर्मनोर्नपातो अपसो दधन्विरे ।
सौधन्वनासो अमृतत्वमेरिरे विष्ट्वी शमीभिः सुकृतः सुकृत्यया॥ ३॥
इन्द्रेण याथ सरथं सुते सचाँ अथो वशानां भवथा सह श्रिया।
न वः प्रतिमै सुकृतानि वाघतः सौधन्वना ऋभवो वीर्याणि च॥ ४॥
इन्द्र ऋभुभिर्वाजवद्भिः समुक्षितं सुतं सोममा वृषस्वा गभस्त्योः।
धियेषितो मघवन्दाशुषो गृहे सौधन्वनेभिः सह मत्स्वा नृभिः॥ ५॥
इन्द्र ऋभुमान्वाजवान्मत्स्वेह नोऽस्मिन्त्सवने शच्या पुरुष्टुत ।
इमानि तुभ्यं स्वसराणि येमिरे व्रता देवानां मनुषश्च धर्मभिः॥ ६॥
इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभिर्वाजयन्निह स्तोमं जरितुरुप याहि यज्ञियम्।
शतं केतेभिरिषिरेभिरायवे सहस्त्रणीथो अध्वरस्य होमनि ॥ ७॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ५-७ धैवतः; ३, ४ पञ्चमः॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

उषो वाजेन वाजिनि प्रचेताः स्तोमं जुषस्व गृणतो मघोनि।
पुराणी देवि युवतिः पुरन्धिरनु व्रतं चरसि विश्ववारे॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उषो देव्यमर्त्या वि भाहि चन्द्ररथा सूनृता ईरयन्ती ।
आ त्वा वहन्तु सुयमासो अश्वा हिरण्यवर्णां पृथुपाजसो ये ॥ २ ॥
उषः प्रतीची भुवनानि विश्वोर्ध्वा तिष्ठस्यमृतस्य केतुः ।
समानमर्थं चरणीयमाना चक्रमिव नव्यस्या ववृत्स्व ॥ ३ ॥
अव स्यूमेव चिन्वती मघोन्युषा याति स्वसरस्य पत्नी ।
स्वर्जनन्ती सुभगा सुदंसा आन्ताद्दिवः पप्रथ आ पृथिव्याः ॥ ४ ॥
अच्छा वो देवीमुषसं विभातीं प्र वो भरध्वं नमसा सुवृक्तिम् ।
ऊर्ध्वं मधुधा दिवि पाजो अश्रेत्प्र रोचना रुरुचे रण्वसन्दृक् ॥ ५ ॥
ऋतावरी दिवो अर्कैरबोध्या रेवती रोदसी चित्रमस्थात् ।
आयतीमग्न उषसं विभातीं वाममेषि द्रविणं भिक्षमाणः ॥ ६ ॥
ऋतस्य बुध्न उषसामिषण्यन्वृषा मही रोदसी आ विवेश ।
मही मित्रस्य वरुणस्य माया चन्द्रेव भानुं वि दधे पुरुत्रा ॥ ७ ॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-१५ विश्वामित्रः; १६-१८ विश्वामित्रो जमदग्निर्वा ॥ देवता—१-३ इन्द्रावरुणौ; ४-६ बृहस्पतिः; ७-९ पूषा; १०-१२ सविता; १३-१५ सोमः; १६-१८ मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५, १०, ११, १६ निचृद् गायत्री; ६ पादनिचृद्गायत्री; ७-९, १२-१५, १७, १८ गायत्री ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-१८ षड्जः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

इमा उ वां भृमयो मन्यमाना युवावते न तुज्या अभूवन् ।
क्व१ त्यदिन्द्रावरुणा यशो वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः ॥ १ ॥
अयमु वां पुरुतमो रयीयञ्छश्वत्तममवसे जोहवीति ।
सजोषाविन्द्रावरुणा मरुद्भिर्दिवा पृथिव्या शृणुतं हवं मे ॥ २ ॥
अस्मे तदिन्द्रावरुणा वसु ष्यादस्मे रयिर्मरुतः सर्ववीरः ।
अस्मान्वरूत्रीः शरणैरवन्त्वस्मान्होत्रा भारती दक्षिणाभिः ॥ ३ ॥
बृहस्पते जुषस्व नो हव्यानि विश्वदेव्य । रास्व रत्नानि दाशुषे ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुचिमर्कैर्बृहस्पतिमध्वरेषु नमस्यत। अनाम्योज आ चके॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

वृषभं चर्षणीनां विश्वरूपमदाभ्यम्। बृहस्पतिं वरेण्यम् ॥ ६॥
इयं ते पूषन्नाघृणे सुष्टुतिर्देव नव्यसी। अस्माभिस्तुभ्यं शस्यते॥ ७॥
तां जुषस्व गिरं मम वाजयन्तीमवा धियम्। वधूयुरिव योषणाम्॥ ८॥
यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति। स नः पूषाविता भुवत्॥ ९॥
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥ १०॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

देवस्य सवितुर्वयं वाजयन्तः पुरन्ध्या। भगस्य रातिमीमहे॥ ११॥
देवं नरः सवितारं विप्रा यज्ञैः सुवृक्तिभिः। नमस्यन्ति धियेषिताः॥ १२॥
सोमो जिगाति गातुविद्देवानामेति निष्कृतम्। ऋतस्य योनिमासदम्॥ १३॥
सोमो अस्मभ्यं द्विपदे चतुष्पदे च पशवे। अनमीवा इषस्करत्॥ १४॥
अस्माकमार्युर्वर्धयन्नभिमातीः सहमानः। सोमः सधस्थमासदत्॥ १५॥
आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू॥ १६॥
उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः। द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता॥ १७॥
गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्। पातं सोममृतावृधा॥ १८॥

इति तृतीयं मण्डलम्॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१, ५-२० अग्निः; २-४ अग्निर्वा वरुणश्च ॥ छन्दः—१ स्वराडतिशक्वरी; २ अतिजगती; ३ अष्टिः; ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, १८, २० स्वराट्पङ्क्तिः; ७, ९, १५, १७, १९ विराट्त्रिष्टुप्; ८, १०-१२, १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १३, १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४-६, १८, २० पञ्चमः; २ निषादः; ३ मध्यमः; ७-१७, १९ धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

त्वां ह्यग्ने सदमित्समन्यवो देवासो देवमरतिं न्येरिरे इति क्रत्वा न्येरिरे।
अमर्त्यं यजत मर्त्येष्वा देवमादेवं जनत प्रचेतसं
विश्वमादेवं जनत प्रचेतसम् ॥ १ ॥

स भ्रातरं वरुणमग्र आ ववृत्स्व देवाँ अच्छा सुमती यज्ञवनसं
ज्येष्ठं यज्ञवनसम्। ऋतावानमादित्यं चर्षणीधृतं राजानं चर्षणीधृतम् ॥ २ ॥

सखे सखायमभ्या ववृत्स्वाशुं न चक्रं रथ्येव रंह्यास्मभ्यं दस्म रंह्या।
अग्ने मृळीकं वरुणे सचा विदो मरुत्सु विश्वभानुषु ।
तोकाय तुजे शुशुचान शं कृध्यस्मभ्यं दस्म शं कृधि ॥ ३ ॥

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः ।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत् ॥ ४ ॥

स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य सन्दृग्देवस्य चित्रतमा मर्त्येषु।
शुचि घृतं न तप्तमघ्न्यायाः स्पार्हा देवस्य मंहनेव धेनोः ॥ ६ ॥

त्रिरस्य ता परमा सन्ति सत्या स्पार्हा देवस्य जनिमान्यग्नेः ।
अनन्ते अन्तः परिवीत आगाच्छुचिः शुक्रो अर्यो रोरुचानः ॥ ७ ॥

स दूतो विश्वेदभि वष्टि सद्मा होता हिरण्यरथो रंसुजिह्वः ।
रोहिदश्वो वपुष्यो विभावा सदा रण्वः पितुमतीव संसत् ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स चेतयन्मनुषो यज्ञबन्धुः प्र तं मह्या रशनया नयन्ति।
स क्षेत्यस्य दुर्यासु साधन्देवो मर्तस्य सधनित्वमाप॥ ९॥
स तू नो अग्निर्नयतु प्रजानन्नच्छा रत्नं देवभक्तं यदस्य।
धिया यद्विश्वे अमृता अकृण्वन्द्यौष्पिता जनिता सत्यमुक्षन्॥ १०॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

स जायत प्रथमः पस्त्यासु महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ।
अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायोर्युवानो वृषभस्य नीळे॥ ११॥
प्र शर्धं आर्त प्रथमं विपन्याँ ऋतस्य योना वृषभस्य नीळे।
स्पार्हो युवा वपुष्यो विभावा सप्त प्रियासोऽजनयन्त वृष्णे॥ १२॥
अस्माकमत्र पितरो मनुष्या अभि प्र सेदुर्ऋतमाशुषाणाः।
अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तरुदुस्रा आजन्नुषसो हुवानाः॥ १३॥
ते मर्मृजत ददृवांसो अद्रिं तदेषामन्ये अभितो वि वोचन्।
पश्वयन्त्रासो अभि कारमर्चन्विदन्त ज्योतिश्चकृपन्त धीभिः॥ १४॥
ते गव्यता मनसा दृध्रमुब्धं गा येमानं परि षन्तमद्रिम्।
दृळ्हं नरो वचसा दैव्येन व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः॥ १५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

ते मन्वत प्रथमं नाम धेनोस्त्रिः सप्त मातुः परमाणि विन्दन्।
तज्जानतीरभ्यनूषत व्रा आविर्भुवदरुणीर्यशसा गोः॥ १६॥
नेशत्तमो दुधितं रोचत द्यौरुद्देव्या उषसो भानुरर्त।
आ सूर्यो बृहतस्तिष्ठदज्राँ ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्॥ १७॥
आदित्पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्नादिद्रत्नं धारयन्त द्युभक्तम्।
विश्वे विश्वासु दुर्यासु देवा मित्र धिये वरुण सत्यमस्तु॥ १८॥
अच्छा वोचेय शुशुचानमग्निं होतारं विश्वभरसं यजिष्ठम्।
शुच्यूधो अतृणन्न गवामन्धो न पूतं परिषिक्तमंशोः॥ १९॥
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम्।
अग्निर्देवानामव आवृणानः सुमृळीको भवतु जातवेदाः॥ २०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, १९ पङ्क्तिः; २, ४-७, ९, १३, १५, १७, १८, २० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, १६ त्रिष्टुप्; ८, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; १२ निचृत्पङ्क्तिः; १४ स्वराट्-पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, १२, १४, १९ पञ्चमः; २-११, १३, १५-१८, २० धैवतः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा देवो देवेष्वरतिर्निधायि ।
होता यजिष्ठो मह्ना शुचध्यै हव्यैरग्निर्मनुष ईरयध्यै ॥ १ ॥
इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य जातो जाताँ उभयाँ अन्तरग्ने ।
दूत ईयसे युयुजान ऋष्व ऋजुमुष्कान्वृषणः शुक्रांश्च ॥ २ ॥
अत्या वृधस्नू रोहिता घृतस्नू ऋतस्य मन्ये मनसा जविष्ठा ।
अन्तरीयसे अरुषा युजानो युष्मांश्च देवान्विश आ च मर्तान् ॥ ३ ॥
अर्यमणं वरुणं मित्रमेषामिन्द्राविष्णू मरुतो अश्विनोत ।
स्वश्वो अग्ने सुरथः सुराधा एदु वह सुहविषे जनाय ॥ ४ ॥
गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी यज्ञो नृवत्सखा सदमिदप्रमृष्यः ।
इळावाँ एषो असुर प्रजावान्दीर्घो रयिः पृथुबुध्नः सभावान् ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

यस्ते इध्मं जभरत्सिष्विदानो मूर्धानं वा ततपते त्वाया ।
भुवस्तस्य स्वतवाँ पायुरग्ने विश्वस्मात्सीमघायत उरुष्य ॥ ६ ॥
यस्ते भरादन्नियते चिदन्नं निशिषन्मन्द्रमतिथिमुदीरत् ।
आ देवयुरिनधते दुरोणे तस्मिन्रयिर्ध्रुवो अस्तु दास्वान् ॥ ७ ॥
यस्त्वा दोषा य उषसि प्रशंसात्प्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान् ।
अश्वो न स्वे दम आ हेम्यावान्तमंहसः पीपरो दाश्वांसम् ॥ ८ ॥
यस्तुभ्यमग्ने अमृताय दाशदुवस्त्वे कृणवते यतस्रुक् ।
न स राया शशमानो वि योषन्नैनमंहः परि वरदघायोः ॥ ९ ॥
यस्य त्वमग्ने अध्वरं जुजोषो देवो मर्तस्य सुधितं रराणः ।
प्रीतेदसद्धोत्रा सा यविष्ठासाम यस्य विधतो वृधासः ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

चित्तिमचित्तिं चिनवद्वि विद्वान्पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्तान्।
राये च नः स्वपत्याय देव दितिं च रास्वादितिमुरुष्य ॥ ११ ॥
कविं शशासुः कवयोऽदब्धा निधारयन्तो दुर्यास्वायोः।
अतस्त्वं दृश्याँ अग्न एतान्पड्भिः पश्येरद्भुताँ अर्य एवैः ॥ १२ ॥
त्वमग्ने वाघते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते यविष्ठ।
रत्नं भर शशमानाय घृष्वे पृथु श्चन्द्रमवसे चर्षणिप्राः ॥ १३ ॥
अधा ह यद्वयमग्ने त्वाया पड्भिर्हस्तेभिश्चकृमा तनूभिः।
रथं न क्रन्तो अपसा भुरिजोर्ऋतं येमुः सुध्य आशुषाणाः ॥ १४ ॥
अधा मातुरुषसः सप्त विप्रा जायेमहि प्रथमा वेधसो नॄन्।
दिवस्पुत्रा अङ्गिरसो भवेमाद्रिं रुजेम धनिनं शुचन्तः ॥ १५ ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न ऋतमाशुषाणाः।
शुचीदयन्दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप व्रन् ॥ १६ ॥
सुकर्मीणः सुरुचो देवयन्तोऽयो न देवा जनिमा धमन्तः।
शुचन्तो अग्निं ववृधन्त इन्द्रमूर्वं गव्यं परिषदन्तो अग्मन् ॥ १७ ॥
आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्यद्देवानां यज्जनिमान्त्युग्र।
मर्तानां चिदुर्वशीरकृप्रन्वृधे चिदर्य उपरस्यायोः ॥ १८ ॥
अकर्म ते स्वपसो अभूम ऋतमवस्त्रन्नुषसो विभातीः ।
अनूनमग्निं पुरुधा सुश्चन्द्रं देवस्य मर्मृजतश्चारु चक्षुः ॥ १९ ॥
एता ते अग्न उचथानि वेधोऽवोचाम कवये ता जुषस्व।
उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि ॥ २० ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५, ८, १०, १२, १५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, १३, १४ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ७, ९ त्रिष्टुप्; ४ स्वराड्बृहती; ६, ११, १६ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३, ५, ७-१०,१२-१५ धैवतः; ४ मध्यमः; ६, ११, १६ पञ्चमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

आ वो॒ राजा॑नमध्व॒रस्य॑ रु॒द्रं होता॑रं सत्य॒यजं॒ रोद॑स्योः ।
अ॒ग्निं पु॒रा त॑नयि॒त्नोर॒चित्ता॒द्धिर॑ण्यरूप॒मव॑से कृणुध्वम् ॥ १ ॥
अ॒यं योनि॑श्चकृ॒मा यं व॒यं ते॑ जा॒येव॒ पत्य॑ उश॒ती सु॒वासाः॑ ।
अ॒र्वा॒ची॒नः परि॑वीतो॒ नि षी॑दे॒मा उ॑ ते स्वपाक प्रती॒चीः ॥ २ ॥
आ॒शृ॒ण्व॒ते अदृ॑पिताय॒ मन्म॑ नृ॒चक्ष॑से सुमृळी॒काय॑ वेधः ।
दे॒वाय॑ श॒स्तिम॒मृता॑य शंस॒ ग्रावे॑व॒ सोता॑ मधु॒षुद्यमी॒ळे ॥ ३ ॥
त्वं चि॑न्नः॒ शम्या॑ अग्ने अ॒स्या ऋ॒तस्य॑ बोध्यृतचित्स्वा॒धीः ।
क॒दा त॑ उ॒क्था स॑ध॒माद्या॑नि क॒दा भ॑वन्ति स॒ख्या गृ॒हे ते॑ ॥ ४ ॥
क॒था ह॒ तद्वरु॑णाय॒ त्वम॑ग्ने क॒था दि॒वे ग॑र्हसे॒ कन्न॒ आगः॑ ।
क॒था मि॒त्राय॑ मी॒ळ्हुषे॑ पृथि॒व्यै ब्रवः॒ कद॑र्य॒म्णे कद्भगा॑य ॥ ५ ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

कद्धिष्ण्या॑सु वृधसा॒नो अ॑ग्ने॒ कद्वाता॑य॒ प्रत॑वसे शुभं॒ये ।
परि॑ज्मने॒ नास॑त्याय॒ क्षे ब्रवः॒ कद॑ग्ने रु॒द्राय॑ नृ॒घ्ने ॥ ६ ॥
क॒था म॒हे पु॑ष्टिंभ॒राय॑ पू॒ष्णे कद्रु॒द्राय॒ सुम॑खाय हवि॒र्दे ।
कद्विष्ण॑व उरुगा॒याय॒ रेतो॒ ब्रवः॒ कद॑ग्ने॒ शर॑वे बृह॒त्यै ॥ ७ ॥
क॒था शर्धा॑य म॒रुता॑मृ॒ताय॑ क॒था सू॒रे बृ॑ह॒ते पृ॒च्छ्यमा॑नः ।
प्रति॑ ब्र॒वोऽदि॑तये तु॒राय॒ साधा॑ दि॒वो जा॑तवेदश्चिकि॒त्वान् ॥ ८ ॥
ऋ॒तेन॑ ऋ॒तं निय॑तमीळ॒ आ गोरा॒मा सचा॒ मधु॑मत्प॒क्वम॑ग्ने ।
कृ॒ष्णा स॒ती रुश॑ता धा॒सिनै॒षा जाम॑र्येण॒ पय॑सा पीपाय ॥ ९ ॥
ऋ॒तेन॒ हि ष्मा॑ वृष॒भश्चि॑द॒क्तः पुमाँ॑ अ॒ग्निः पय॑सा पृ॒ष्ठ्ये॑न ।
अस्प॑न्दमानो अचरद्वयो॒धा वृषा॑ शु॒क्रं दु॑दुहे॒ पृश्नि॒रूधः॑ ॥ १० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

ऋ॒तेनाद्रिं॒ व्य॑सन्भि॒दन्तः॒ समङ्गि॑रसो नवन्त॒ गोभिः॑ ।
शु॒नं नरः॒ परि॑ षदन्नु॒षास॑मा॒विः स्व॑रभवज्जा॒ते अ॒ग्नौ ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋ॒तेन॑ दे॒वीर॒मृता॒ अमृ॑क्ता॒ अर्णो॑भिरापो॒ मधु॑मद्भिरग्ने ।
वा॒जी न सर्गे॑षु प्रस्तु॒भा॒नः प्र सद॒मित्स्त्रवि॑तवे दधन्युः ॥ १२ ॥
मा कस्य॑ य॒क्षं सद॒मिद्धु॒रो गा॒ मा वे॒शस्य॑ प्रमि॒नतो मापेः ।
मा भ्रातु॑रग्ने॒ अनृ॑जोर्ऋ॒णं वे॒र्मा सख्यु॒र्दक्षं॑ रि॒पोर्भु॑जेम ॥ १३ ॥
रक्षा॑ णो अग्ने॒ तव॒ रक्ष॑णेभी रारक्षा॒णः सु॑मख प्रीणा॒नः ।
प्रति॑ ष्फुर॒ वि रु॑ज वी॒ड्वंहो॑ ज॒हि रक्षो॒ महि॑ चिद्वावृधा॒नम् ॥ १४ ॥
ए॒भिर्भ॑व सु॒मना॑ अग्ने अ॒र्कैरि॒मान्त्स्पृ॑श॒ मन्म॑भिः शूर॒ वाजा॑न् ।
उ॒त ब्रह्मा॑ण्यङ्गिरो जुषस्व॒ सं ते॑ शस्ति॒र्दे॒व॒वा॒ता ज॑रेत ॥ १५ ॥
ए॒ता विश्वा॑ वि॒दुषे॒ तुभ्यं॑ वेधो नी॒थान्य॑ग्ने नि॒ण्या वचां॑सि ।
नि॒वच॑ना क॒वये॒ काव्या॒न्यशं॑सिषं म॒ति॒भि॒र्विप्र॑ उ॒क्थैः ॥ १६ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋक् १५ ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—रक्षोहाऽग्निः ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, १०, ११, १५, निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७, १३ त्रिष्टुप्; ९ स्वराट्पङ्क्तिः; १२ निचृत्पङ्क्तिः; १४ स्वराड्बृहती ॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ८, ९, १२ पञ्चमः; ३, ६, ७, १०, ११, १३, १५ धैवतः; १४ मध्यमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

कृ॒णु॒ष्व पाज॒ः प्रसि॑तिं॒ न पृ॒थ्वीं या॒हि राजे॒वाम॑वाँ॒ इभे॑न ।
तृ॒ष्वीमनु॒ प्रसि॑तिं द्रूणा॒नोऽ स्ता॑सि॒ विध्य॑ र॒क्षस॒स्तपि॑ष्ठैः ॥ १ ॥
तव॑ भ्र॒मास॑ आशु॒या प॑त॒न्त्यनु॑ स्पृश धृष॒ता शोशु॑चानः ।
तपूं॑ष्यग्ने जु॒ह्वा॑ पतङ्गा॒नस॑न्दितो॒ वि सृ॑ज॒ विष्व॑गु॒ल्काः ॥ २ ॥
प्रति॒ स्पशो॒ वि सृ॑ज॒ तूर्णि॑तमो॒ भवा॑ पा॒युर्वि॒शो अ॒स्या अद॑ब्धः ।
यो नो॑ दू॒रे अ॒घशं॑सो॒ यो अन्त्य॑ग्ने मा॒कि॑ष्टे॒ व्यथि॒रा द॑धर्षीत् ॥ ३ ॥
उद॑ग्ने॒ तिष्ठ॒ प्रत्या॑ त॒नुष्व॒ न्य॑१॑मित्राँ॑ ओषतात्ति॒ग्महे॑ते ।
यो नो॒ अरा॑तिं समिधा॒न च॒क्रे नी॒चा तं ध॑क्ष्यत॒सं न शुष्क॑म् ॥ ४ ॥
ऊ॒र्ध्वो भ॑व॒ प्रति॒ वि॒ध्याध्य॒स्मदा॒विष्कृ॑णुष्व दैव्या॒न्यग्ने ।
अव॑ स्थि॒रा त॑नुहि यातुजू॒नां जा॒मिम॑जा॒मिं प्र मृ॑णीहि शत्रू॑न् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

स तै जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत्।
विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्यर्यो वि दुरो अभि द्यौत्॥ ६ ॥
सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर्यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः।
पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासदिष्टिः॥ ७ ॥
अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक्सं ते वावाता जरतामियं गीः।
स्वश्वास्त्वा सुरथा मर्जयेमास्मे क्षत्राणि धारयेरनु द्यून्॥ ८ ॥
इह त्वा भूर्या चरेदुप त्मन्दोषावस्तर्दीदिवांसमनु द्यून्।
क्रीळन्तस्त्वा सुमनसः सपेमाभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम्॥ ९ ॥
यस्त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन।
तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस्ते आतिथ्यमानुषग्जुजोषत्॥ १० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

महो रुजामि बन्धुता वचोभिस्तन्मा पितुर्गोतमादन्वियाय।
त्वं नो अस्य वचसश्चिकिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः॥ ११ ॥
अस्वप्नजस्तरणयः सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः।
ते पायवः सध्यञ्चो निषद्याग्ने तव नः पान्त्वमूर ॥ १२ ॥
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन्।
ररक्ष तान्त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः॥ १३ ॥
त्वया वयं सधन्य१स्त्वोतास्तव प्रणीत्यश्याम वाजान्।
उभा शंसा सूदय सत्यतातेऽनुष्ठुया कृणुह्यह्रयाण ॥ १४ ॥
अया ते अग्ने समिधा विधेम प्रति स्तोमं शस्यमानं गृभाय।
दहाशसो रक्षसः पाह्य१स्मान्द्रुहो निदो मित्रमहो अवद्यात्॥ १५ ॥

इति तृतीयाष्टके चतुर्थोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तृतीयाष्टके पञ्चमोऽध्यायः

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ५-८, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ९, १२, १३, १५ त्रिष्टुप्; १०, १४ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९, ११-१३, १५ धैवतः; १०, १४ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

वैश्वानराय मीळ्हुषे सजोषाः कथा दाशेमाग्नये बृहद्भाः ।
अनूनेन बृहता वक्षथेनोप स्तभायदुपमिन्न रोधः ॥ १ ॥
मा निन्दत य इमां मह्यं रातिं देवो ददौ मर्त्याय स्वधावान् ।
पाकाय गृत्सो अमृतो विचेता वैश्वानरो नृतमो यह्वो अग्निः ॥ २ ॥
साम द्विबर्हा महि तिग्मभृष्टिः सहस्ररेता वृषभस्तुविष्मान् ।
पदं न गोरपगूळ्हं विविद्वाननग्निर्मह्यं प्रेदु वोचन्मनीषाम् ॥ ३ ॥
प्र ताँ अग्निर्बभसत्तिग्मजम्भस्तपिष्ठेन शोचिषा यः सुराधाः ।
प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि ॥ ४ ॥
अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः ।
पापासः सन्तो अनृता असत्या इदं पदमजनता गभीरम् ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

इदं मे अग्ने कियते पावकामिनते गुरुं भारं न मन्म ।
बृहद्दधाथ धृषता गभीरं यह्वं पृष्ठं प्रयसा सप्तधातु ॥ ६ ॥
तमिन्वेऽव समना समानमभि क्रत्वा पुनती धीतिरश्याः ।
ससस्य चर्मन्नधि चारु पृश्नेरग्रे रुप आरुपितं जबारु ॥ ७ ॥
प्रवाच्यं वचसः किं मे अस्य गुहा हितमुप निणिग्वदन्ति ।
यदुस्त्रियाणामप वारिव व्रन्पाति प्रियं रुपो अग्रं पदं वेः ॥ ८ ॥
इदमु त्यन्महि महामनीकं यदुस्त्रिया सचत पूर्व्यं गौः ।
ऋतस्य पदे अधि दीद्यानं गुहा रघुष्यद्रघुयद्विवेद ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधा द्युतानः पित्रोः सचासामनुत गुह्यं चारु पृश्नेः ।
मातुष्पदे परमे अन्ति षद्गोर्वृष्णः शोचिषः प्रयतस्य जिह्वा ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

ऋतं वोचे नमसा पृच्छ्यमानस्तवाशसा जातवेदो यदीदम् ।
त्वमस्य क्षयसि यद्ध विश्वं दिवि यदु द्रविणं यत्पृथिव्याम् ॥ ११ ॥
किं नो अस्य द्रविणं कद्ध रत्नं वि नो वोचो जातवेदश्चिकित्वान् ।
गुहाध्वनः परमं यन्नो अस्य रेकु पदं न निदाना अगन्म ॥ १२ ॥
का मर्यादा वयुना कद्ध वाममच्छा गमेम रघवो न वाजम् ।
क्रदा नो देवीरमृतस्य पत्नीः सूरो वर्णेन ततनन्नुषासः ॥ १३ ॥
अनिरेण वचसा फल्गुनेन प्रतीत्येन कृधुनातृपासः ।
अधा ते अग्ने किमिहा वदन्त्यनायुधास आसता सचन्ताम् ॥ १४ ॥
अस्य श्रिये समिधानस्य वृष्णो वसोरनीकं दम आ रुरोच ।
रुशद्वसानः सुदृशीकरूपः क्षितिर्न राया पुरुवारो अद्यौत् ॥ १५ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ८, ११ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ९ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ निचृत्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ८, १०, ११ धैवतः; २, ४, ६, ९ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य होतरग्ने तिष्ठ देवताता यजीयान् ।
त्वं हि विश्वमभ्यसि मन्म प्र वेधसश्चित्तिरसि मनीषाम् ॥ १ ॥
अमूरो होता न्यसादि विक्ष्वग्निर्मन्द्रो विदथेषु प्रचेताः ।
ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन्मेतेव धूमं स्तभायदुप द्याम् ॥ २ ॥
यता सुजूर्णी रातिनी घृताची प्रदक्षिणिद्देवतातिमुराणः ।
उदु स्वरुर्नवजा नाक्रः पश्वो अनक्ति सुधितः सुमेकः ॥ ३ ॥
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्ना ऊर्ध्वो अध्वर्युर्जुजुषाणो अस्थात् ।
पर्यग्निः पशुपा न होता त्रिविष्ट्येति प्रदिव उराणः ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परि त्मना मितद्रुरेति होताग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा।
द्रवन्त्यस्य वाजिनो न शोका भयन्ते विश्वा भुवना यदभ्राट्॥ ५॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

भद्रा ते अग्ने स्वनीक सन्दृग्घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः।
न यत्ते शोचिस्तमसा वरन्त न ध्वस्मानस्तन्वी३ रेप आ धुः॥ ६॥
न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरापितरा नू चिदिष्टौ।
अधा मित्रो न सुधितः पावको३ऽग्निर्दीदाय मानुषीषु विक्षु॥ ७॥
द्विर्यं पञ्च जीजनन्त्संवसानाः स्वसारो अग्निं मानुषीषु विक्षु।
उषर्बुधमथर्यो३ न दन्तं शुक्रं स्वासं परशुं न तिग्मम्॥ ८॥
तव त्ये अग्ने हरितो घृतस्ना रोहितास ऋञ्चञ्चः स्वञ्चः।
अरुषासो वृषण ऋजुमुष्का आ देवतातिमह्वन्त द्रस्माः॥ ९॥
ये ह त्ये ते सहमाना अयासस्त्वेषासो अग्ने अर्चयश्चरन्ति।
श्येनासो न दुवसनासो अर्थं तुविष्वणसो मारुतं न शर्धः॥ १०॥
अकारि ब्रह्म समिधान तुभ्यं शंसात्युक्थं यजते व्यू धाः।
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्नमस्यन्त उशिजः शंसमायोः॥ ११॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ स्वराडुष्णिक्; ३ निचृदनुष्टुप्; ४, ६ अनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप्; ७, १०, ११, त्रिष्टुप्; ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ७-११ धैवतः; २ ऋषभः; ३-६ गान्धारः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः।
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे॥ १॥
अग्ने कदा त आनुषग्भुवद्देवस्य चेतनम्।
अधा हि त्वा जगृभ्रिरे मर्तासो विक्ष्वीड्यम्॥ २॥
ऋतावानं विचेतसं पश्यन्तो द्यामिव स्तृभिः।
विश्वेषामध्वराणां हस्कर्तारं दमेदमे॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशुं दूतं विवस्वतो विश्वा यश्चर्षणीरभिः
आ जभ्रुः केतुमायवो भृगवाणं विशेविशे ॥ ४ ॥
तमीं होतारमानुषक्चिकित्वांसं नि षेदिरे।
रण्वं पावकशोचिषं यजिष्ठं सप्त धामभिः ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

तं शश्वतीषु मातृषु वन आ वीतमश्रितम् ।
चित्रं सन्तं गुहा हितं सुवेदं कूचिदर्थिनम् ॥ ६ ॥
ससस्य यद्धियुता सस्मिन्नूधन्नृतस्य धामन्रणयन्त देवाः ।
महाँ अग्निर्नमसा रातहव्यो वेरध्वराय सदमिदृतावा ॥ ७ ॥
वेरध्वरस्य दूत्यानि विद्वानुभे अन्ता रोदसी संचिकित्वान् ।
दूत ईयसे प्रदिव उराणो विदुष्टरो दिव आरोधनानि ॥ ८ ॥
कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाश्चरिष्णवर्चिर्वपुषामिदेकम् ।
यदप्रवीता दधते ह गर्भं सद्यश्चिज्जातो भवसीदु दूतः ॥ ९ ॥
सद्यो जातस्य ददृशानमोजो यदस्य वातो अनुवाति शोचिः।
वृणक्ति तिग्मामतसेषु जिह्वां स्थिरा चिदन्ना दयते वि जम्भैः ॥ १० ॥
तृषु यदन्ना तृषुणा ववक्ष तृषुं दूतं कृणुते यह्वो अग्निः।
वातस्य मेळिं सचते निजूर्वन्नाशुं न वाजयते हिन्वे अर्वा ॥ ११ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४-६ निचृद्गायत्री; २, ३, ७, गायत्री; ८ भुरिग्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा ॥ १ ॥
स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः। स देवाँ एह वक्षति ॥ २ ॥
स वेद देव आनमं देवाँ ऋतायते दमे। दाति प्रियाणि चिद्वसु ॥ ३ ॥
स होता सेदु दूत्यं चिकित्वाँ अन्तरीयते। विद्वाँ आरोधनं दिवः ॥ ४ ॥
ते स्याम ये अग्नये ददाशुर्हव्यदातिभिः। य ईं पुष्यन्त इन्धते ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते राया ते सुवीर्यैः ससवांसो वि शृण्विरे। ये अग्रा दधिरे दुवः ॥ ६ ॥
अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्तु पुरुस्पृहः। अस्मे वाजास ईरताम् ॥ ७ ॥
स विप्रश्चर्षणीनां शवसा मानुषाणाम्। अति क्षिप्रेव विध्यति ॥ ८ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४ गायत्री; २, ६ विराड्गायत्री; ५ पादनिचृद्गायत्री; ७, ८ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

अग्ने मृळ महाँ असि य ईमा देवयुं जनम्। इयेथ बर्हिरासदम् ॥ १ ॥
स मानुषीषु दूळभो विक्षु प्रावीरमर्त्यः। दूतो विश्वेषां भुवत् ॥ २ ॥
स सद्म परि णीयते होता मन्द्रो दिविष्टिषु। उत पोता नि षीदति ॥ ३ ॥
उत ग्ना अग्निरध्वर उतो गृहपतिर्दमे। उत ब्रह्मा नि षीदति ॥ ४ ॥
वेषि ह्यध्वरीयतामुपवक्ता जनानाम्। हव्या च मानुषाणाम् ॥ ५ ॥
वेषीद्वस्य दूत्यं यस्य जुजोषो अध्वरम्। हव्यं मर्तस्य वोळहवे ॥ ६ ॥
अस्माकं जोष्यध्वरमस्माकं यज्ञमङ्गिरः। अस्माकं शृणुधी हवम् ॥ ७ ॥
परि ते दूळभो रथोऽस्माँ अश्नोतु विश्वतः। येन रक्षसि दाशुषः ॥ ८ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २-४, ७ भुरिग्गायत्री; ५, ८ स्वराडुष्णिक्; ६ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—१-४, ७ षड्जः; ५, ६, ८ ऋषभः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् ।
ऋध्यामा त ओहैः ॥ १ ॥
अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः ।
रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ ॥ २ ॥
एभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ् स्वर्ण ज्योतिः ।
अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः ॥ ३ ॥
आभिष्टे अद्य गीर्भिर्गृणन्तोऽग्ने दाशेम ।
प्र ते दिवो न स्तनयन्ति शुष्माः ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव स्वादिष्ठाग्ने संदृष्टिरिदा चिदह्न इदा चिदक्तोः ।
श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके ॥ ५ ॥
घृतं न पूतं तनूररेपाः शुचि हिरण्यम् ।
तत्ते रुक्मो न रोचत स्वधावः ॥ ६ ॥
कृतं चिद्धि ष्मा सनेमि द्वेषोऽग्न इनोषि मर्तात् ।
इत्था यजमानादृतावः ॥ ७ ॥
शिवाः नः सख्या सन्तु भ्रात्राग्ने देवेषु युष्मे ।
सा नो नाभिः सदने सस्मिन्नूधन् ॥ ८ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः [११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ स्वराड्बृहती; ४ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५, ६ धैवतः; ३ मध्यमः; ४ पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकमुपाक आ रोचते सूर्यस्य ।
रुशद् दृशे ददृशे नक्तया चिदरूक्षितं दृश आ रूपे अन्नम् ॥ १ ॥
वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां खं वेषसा तुविजात स्तवानः ।
विश्वेभिर्यद्वावनः शुक्र देवैस्तन्नो रास्व सुमहो भूरि मन्म ॥ २ ॥
त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषास्त्वदुक्था जायन्ते राध्यानि ।
त्वदेति द्रविणं वीरपेशा इत्थाधिये दाशुषे मर्त्याय ॥ ३ ॥
त्वद्वाजी वाजंभरो विहाया अभिष्टिकृज्जायते सत्यशुष्मः ।
त्वद्रयिर्देवजूतो मयोभुस्त्वदाशुर्जूजुवाँ अग्ने अर्वा ॥ ४ ॥
त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो देवं मर्ता अमृत मन्द्रजिह्वम् ।
द्वेषोयुतमा विवासन्ति धीभिर्दमूनसं गृहपतिममूरम् ॥ ५ ॥
आरे अस्मदमतिमारे अंह आरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि ।
दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित्सचसे स्वस्ति ॥ ६ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५ धैवतः; ३, ४, ६ पञ्चमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

यस्त्वामग्न इनधते यतस्रुक्त्रिस्ते अन्नं कृणवत्सस्मिन्नहन्।
स सु द्युम्नैरभ्यस्तु प्रसक्षत्तव क्रत्वा जातवेदश्चिकित्वान्॥ १ ॥
इध्मं यस्ते जभरच्छश्रमाणो महो अग्ने अनीकमा सपर्यन्।
स इधानः प्रति दोषामुषासं पुष्यन्रयिं सचते घ्नन्नमित्रान्॥ २ ॥
अग्निरीशे बृहतः क्षत्रियस्याग्निर्वाजस्य परमस्य रायः।
दधाति रत्नं विधते यविष्ठो व्यानुषङ्मर्त्यीय स्वधावान्॥ ३ ॥
यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा यविष्ठाचित्तिभिश्चकृमा कच्चिदागः।
कृधी ष्वस्माँ अदितेरनागान्व्येनांसि शिश्रथो विष्वगग्ने॥ ४ ॥
महश्चिदग्न एनसो अभीक ऊर्वाद्देवानामुत मर्त्यानाम्।
मा ते सखायः सदमिद्रिषाम यच्छा तोकाय तनयाय शं योः॥ ५ ॥
यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः।
एवो ष्वस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः॥ ६ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यद्विभातीनां सुमना रत्नधेयम्।
यातमश्विना सुकृतो दुरोणमुत्सूर्यो ज्योतिषा देव एति॥ १ ॥
ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् द्रप्सं दविध्वद्गविषो न सत्वा।
अनु व्रतं वरुणो यन्ति मित्रो यत्सूर्यं दिव्यारोहयन्ति॥ २ ॥
यं सीमकृण्वन्तमसे विपृचे ध्रुवक्षेमा अनवस्यन्तो अर्थम्।
तं सूर्यं हरितः सप्त यह्वीः स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति॥ ३ ॥
वहिष्ठेभिर्विहरन्यासि तन्तुमव्ययन्नसितं देव वस्म।
दविध्वतो रश्मयः सूर्यस्य चर्मेवावाधुस्तमो अप्स्वन्तः॥ ४ ॥
अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्ङुत्तानोऽव पद्यते न।
कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम्॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निर्लिङ्गोक्ता वा ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २, ४, ५ धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्रत्यग्निरुषसो जातवेदा अख्यद्देवो रोचमाना महोभिः ।
आ नासत्योरुगाया रथेनेमं यज्ञमुप नो यातमच्छ ॥ १ ॥
ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेज्ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वन् ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं वि सूर्यो रश्मिभिश्चेकितानः ॥ २ ॥
आवहन्त्यरुणीर्ज्योतिषागान्महो चित्रा रश्मिभिश्चेकिताना ।
प्रबोधयन्ती सुविताय देव्युषा ईयते सुयुजा रथेन ॥ ३ ॥
आ वां वहिष्ठा इह ते वहन्तु रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ ।
इमे हि वां मधुपेयाय सोमा अस्मिन्यज्ञे वृषणा मादयेथाम् ॥ ४ ॥
अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्ङुत्तानोऽव पद्यते न ।
कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम् ॥ ५ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१-६ अग्निः; ७, ८ सोमकः साहदेव्यः; ९, १० अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ४ गायत्री; २, ५, ६ विराड्गायत्री; ३, ७-१० निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अग्निर्होता नो अध्वरे वाजी सन्परि णीयते । देवो देवेषु यज्ञियः ॥ १ ॥
परि त्रिविष्ट्यध्वरं यात्यग्नी रथीरिव । आ देवेषु प्रयो दधत् ॥ २ ॥
परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ ३ ॥
अयं यः सृञ्जये पुरो दैववाते समिध्यते । द्युमाँ अमित्रदम्भनः ॥ ४ ॥
अस्य घा वीर ईवतोऽग्नेरीशीत मर्त्यः । तिग्मजम्भस्य मीळ्हुषः ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

तमर्वन्तं न सानसिमरुषं न दिवः शिशुम् । मर्मृज्यन्ते दिवेदिवे ॥ ६ ॥
बोधद्यन्मा हरिभ्यां कुमारः साहदेव्यः । अच्छा न हूत उदरम् ॥ ७ ॥
उत त्या यजता हरी कुमारात्साहदेव्यात् । प्रयता सद्य आ ददे ॥ ८ ॥
एष वां देवावश्विना कुमारः साहदेव्यः । दीर्घायुरस्तु सोमकः ॥ ९ ॥
तं युवं देवावश्विना कुमारं साहदेव्यम् । दीर्घायुषं कृणोतन ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ६, ८, ९, १२, १९ निचृत्त्रिष्टुप्; २, २१, निचृत्पङ्क्तिः; ३ त्रिष्टुप्; ५, १३-१५ स्वराट्पङ्क्तिः; ७, १६, १७ विराट्-त्रिष्टुप्; १०, ११, १८, २० भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ४, ६-९, १२, १६, १७, १९ धैवतः; २, ५, १०, ११, १३-१५, १८, २०, २१ पञ्चमः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

आ सत्यो यातु मघवाँ ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरयः उप नः।
तस्मा इदन्धः सुषुमा सुदक्षमिहाभिपित्वं करते गृणानः॥ १॥
अव स्य शूराध्वनो नान्तेऽस्मिन्नो अद्य सवने मन्दध्यै।
शंसात्युक्थमुशनेव वेधाश्चिकितुषे असुर्याय मन्म ॥ २॥
कविर्न निण्यं विदथानि साधन्वृषा यत्सेकं विपिपानो अर्चात्।
दिव इत्था जीजनत्सप्त कारून्हा चिच्चक्रुर्वयुना गृणन्तः ॥ ३॥
स्व१र्यद्वेदि सुदृशीकमर्कैर्महि ज्योती रुरुचुर्यद्ध वस्तोः ।
अन्धा तमांसि दुधिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टौ॥ ४॥
ववक्ष इन्द्रो अमितमृजीष्यु१भे आ पप्रौ रोदसी महित्वा।
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यभि यो विश्वा भुवना बभूव॥ ५॥

अथैष्टादशो वर्गः॥ १८॥

विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वानपो रिरेच सखिभिर्निकामैः।
अश्मानं चिद्वि बिभिदुर्वचोभिर्व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः॥ ६॥
अपो वृत्रं वव्रिवांसं परा हन्प्रावत्ते वज्रं पृथिवी सचेताः।
प्राणोसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवञ्छवसा शूर धृष्णो ॥ ७॥
अपो यदद्रिं पुरुहूत दर्दराविर्भुवत्सरमा पूर्व्यं ते ।
स नो नेता वाजमा दर्षि भूरिं गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः॥ ८॥
अच्छा कविं नृमणो गा अभिष्टौ स्वर्षाता मघवन्नाधमानम्।
ऊतिभिस्तमिषणो द्युम्नहूतौ नि मायावानब्रह्मा दस्युरर्त ॥ ९॥
आ दस्युघ्रा मनसा याह्यस्तं भुवत्ते कुत्सः सख्ये निकामः।
स्वे योनौ नि षदतं सरूपा वि वां चिकित्सदृतचिद्ध नारी॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

यासि कुत्सेन सरथमवस्युस्तोदो वातस्य हर्योरीशानः ।
ऋज्रा वाजं न गध्यं युयूषन्कविर्यदह्न्पार्याय भूषात् ॥ ११ ॥
कुत्साय शुष्णमशुषं नि बर्हीः प्रपित्वे अह्नः कुयवं सहस्रा ।
सद्यो दस्यून्प्र मृण कुत्स्येन प्र सूरश्चक्रं वृहताद्भीके ॥ १२ ॥
त्वं पिप्रुं मृगयं शूशुवांसमृजिश्वने वैदथिनाय रन्धीः ।
पञ्चाशत्कृष्णा नि वपः सहस्रात्कं न पुरो जरिमा वि दर्दः ॥ १३ ॥
सूर उपाके तन्वं दधानो वि यत्ते चेत्यमृतस्य वर्पः ।
मृगो न हस्ती तविषीमुषाणः सिंहो न भीम आयुधानि बिभ्रत् ॥ १४ ॥
इन्द्रं कामा वसूयन्तो अग्मन्त्स्वर्मीळ्हे न सवने चकानाः ।
श्रवस्यवः शशमानास उक्थैरोको न रण्वा सुदृशीव पुष्टिः ॥ १५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

तमिद्व इन्द्रं सुहवं हुवेम यस्ता चकार नर्या पुरूणि ।
यो मावते जरित्रे गध्यं चिन्मक्षू वाजं भरति स्पार्हराधाः ॥ १६ ॥
तिग्मा यदन्तरशनिः पतात्ति कस्मिंञ्चिच्छूर मुहुके जनानाम् ।
घोरा यदर्य समृतिर्भवात्यध स्मा नस्तन्वो बोधि गोपाः ॥ १७ ॥
भुवोऽ विता वामदेवस्य धीनां भुवः सखावृको वाजसातौ ।
त्वामनु प्रमतिमा जगन्मोरुशंसो जरित्रे विश्वधा स्याः ॥ १८ ॥
एभिर्नृभिरिन्द्र त्वायुभिष्ट्वा मघवद्भिर्मघवन्विश्व आजौ ।
द्यावो न द्युम्नैरभि सन्तो अर्यः क्षपो मदेम शरदश्च पूर्वीः ॥ १९ ॥
एवेदिन्द्राय वृषभाय वृष्णे ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् ।
नू चिद्यथा नः सख्या वियोषदसन्न उग्रोऽ विता तनूपाः ॥ २० ॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ २१ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, १२, १३, १७-१९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५, ६, ८, १०, ११ त्रिष्टुप्; ४, २० विराट्त्रिष्टुप्; ७, ९ भुरिक्पङ्क्तिः; १४, १६ स्वराट्पङ्क्तिः; १५ याजुषीपङ्क्तिः; २१ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ७, ९, १४-१६, २१ पञ्चमः; २-६, ८, १०-१३, १७-२० धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं ह क्षा अनु क्षत्रं मंहना मन्यत द्यौः ।
त्वं वृत्रं शवसा जघन्वान्त्सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानान् ॥ १ ॥
तव त्विषो जनिमन्रेजत द्यौ रेजद्भूमिर्भियसा स्वस्य मन्योः ।
ऋघायन्त सुभ्वः पर्वतास आर्दन्धन्वानि सरयन्त आपः ॥ २ ॥
भिनद्गिरिं शवसा वज्रमिष्णन्नाविष्कृण्वानः सहसान ओजः ।
वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः सरन्नापो जवसा हतवृष्णीः ॥ ३ ॥
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौरिन्द्रस्य कर्ता स्वपस्तमो भूत् ।
य ईं जजान स्वर्यं सुवज्रमनपच्युतं सदसो न भूम ॥ ४ ॥
य एक इच्च्यावयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः ।
सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सत्रा सोमा अभवन्नस्य विश्वे सत्रा मदासो बृहतो मदिष्ठाः ।
सत्राभवो वसुपतिर्वसूनां दत्रे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः ॥ ६ ॥
त्वमध प्रथमं जायमानोऽ मे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः ।
त्वं प्रति प्रवत आशयानमहिं वज्रेण मघवन्वि वृश्चः ॥ ७ ॥
सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम् ।
हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः ॥ ८ ॥
अयं वृतश्चातयते समीचीर्य आजिषु मघवा शृण्व एकः ।
अयं वाजं भरति यं सनोत्यस्य प्रियासः सख्ये स्याम ॥ ९ ॥
अयं शृण्वे अध जयन्नुत घ्नन्नयमुत प्र कृणुते युधा गाः ।
यदा सत्यं कृणुते मन्युमिन्द्रो विश्वं दृळ्हं भयत एजदस्मात् ॥ १० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

समिन्द्रो गा अजयत्सं हिरण्या समश्विया मघवा यो ह पूर्वीः ।
एभिर्नृभिर्नृतमो अस्य शाकै रायो विभक्ता संभरश्च वस्वः ॥ ११ ॥
कियत्स्विदिन्द्रो अध्येति मातुः कियत्पितुर्जनितुर्यो जजान ।
यो अस्य शुष्मं मुहुकैरियर्ति वातो न जूतः स्तनयद्भिरभ्रैः ॥ १२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोतीयर्ति रेणुं मघवा समोहम् ।
विभञ्जनुरशनिमाँइव द्यौरुत स्तोतारं मघवा वसौ धात् ॥ १३ ॥
अयं चक्रमिषणत्सूर्यस्य न्येतशं रीरमत्ससृमाणम् ।
आ कृष्णा ईं जुहुराणो जिघर्ति त्वचो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ॥ १४ ॥
असिक्न्यां यजमानो न होता ॥ १५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।
जनीयन्तो जनिदामक्षितोतिमा च्यावयामोऽवते न कोशम् ॥ १६ ॥
त्राता नो बोधि ददृशान आपिरभिख्याता मर्डिता सोम्यानाम् ।
सखा पिता पितृतमः पितॄणां कर्तेमु लोकमुशते वयोधाः ॥ १७ ॥
सखीयतामविता बोधि सखा गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः ।
वयं ह्या ते चकृमा सबाध आभिः शमीभिर्महयन्त इन्द्र ॥ १८ ॥
स्तुत इन्द्रो मघवा यद्ध वृत्रा भूरीण्येको अप्रतीनि हन्ति ।
अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्मन्नकिर्देवा वारयन्ते न मर्तीः ॥ १९ ॥
एवा न इन्द्रो मघवा विरप्शी करत्सत्या चर्षणीधृदनर्वा ।
त्वं राजा जनुषां धेह्यस्मे अधि श्रवो माहिनं यज्जरित्रे ॥ २० ॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ३ न पीपेः ।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ २१ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रादिती ॥ छन्दः—१, ८, १२ त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६, ७, ९-११ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ५-१२ धैवतः; २-४, १३ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो देवा उदजायन्त विश्वे ।
अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरममुया पत्तवे कः ॥ १ ॥
नाहमतो निरया दुर्गहैतत्तिरश्चता पार्श्वान्निर्गमाणि ।
बहूनि मे अकृता कर्त्वानि युध्यै त्वेन सं त्वेन पृच्छै ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परायतीं मातरमन्वचष्ट न नानु गान्यनु नू गमानि ।
त्वष्टुर्गृहे अपिबत्सोममिन्द्रः शतधन्यं चम्वोः सुतस्य ॥ ३ ॥
किं स ऋधक्कृणवद्यं सहस्रं मासो जभार शरदश्च पूर्वीः ।
नही न्वस्य प्रतिमानमस्त्यन्तर्जातेषूत ये जनित्वाः ॥ ४ ॥
अवद्यमिव मन्यमाना गुहाकरिन्द्रं माता वीर्येण न्यृष्टम् ।
अथोदस्थात्स्वयमत्कं वसान आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

एता अर्षन्त्यललाभवन्तीर्ऋतावरीरिव संक्रोशमानाः ।
एता वि पृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति ॥ ६ ॥
किमु ष्विदस्मै निविदो भनन्तेन्द्रस्यावद्यं दिधिषन्त आपः ।
ममैतान्पुत्रो महता वधेन वृत्रं जघन्वाँ असृजद्वि सिन्धून् ॥ ७ ॥
ममच्चन त्वा युवतिः परास ममच्चन त्वा कुषवा जगार ।
ममच्चिदापः शिशवे ममृड्युर्ममच्चिदिन्द्रः सहसोदतिष्ठत् ॥ ८ ॥
ममच्चन ते मघवन्व्यंसो निविविध्वाँ अप हनू जघान ।
अधा निविद्ध उत्तरो बभूवाञ्छिरो दासस्य सं पिणग्वधेन ॥ ९ ॥
गृष्टिः ससूव स्थविरं तवागामनाधृष्यं वृषभं तुम्रमिन्द्रम् ।
अरीळ्हं वत्सं चरथाय माता स्वयं गातुं तन्वः इच्छमानम् ॥ १० ॥
उत माता महिषमन्ववेनदमी त्वा जहति पुत्र देवाः ।
अथाब्रवीद् वृत्रमिन्द्रो हनिष्यन्त्सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ॥ ११ ॥
कस्ते मातरं विधवामचक्रच्छयुं कस्त्वामजिघांसच्चरन्तम् ।
कस्ते देवो अधि मार्डीक आसीद्यत्प्राक्षिणाः पितरं पादगृह्य ॥ १२ ॥
अवर्त्या शुन आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्डितारम् ।
अपश्यं जायाममहीयमानामधा मे श्येनो मध्वा जभार ॥ १३ ॥

इति तृतीयाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तृतीयाष्टके षष्ठोऽध्यायः

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५, ८ त्रिष्टुप्; ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ७, १० पङ्क्तिः; ११ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३, ५, ८, ९ धैवतः; ४, ६, ७, १०, ११ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र विश्वे देवासः सुहवास ऊमाः।
महामुभे रोदसी वृद्धमृष्वं निरेकमिद् वृणते वृत्रहत्ये॥ १॥
अवासृजन्त जिव्रयो न देवा भुवः सम्राळिन्द्र सत्ययोनिः।
अहन्नहिं परिशयानमर्णः प्र वर्तनीरदो विश्वधेनाः॥ २॥
अतृप्णुवन्तं वियतमबुध्यमबुध्यमानं सुषुपाणमिन्द्र।
सप्त प्रति प्रवत आशयानमहिं वज्रेण वि रिणा अपर्वन्॥ ३॥
अक्षोदयच्छवसा क्षामं बुध्नं वार्णं वातस्तविषीभिरिन्द्रः।
दृळ्हान्यौभ्नादुशमान ओजोऽवाभिनत्ककुभः पर्वतानाम्॥ ४॥
अभि प्र दद्रुर्जनयो न गर्भं रथाइव प्र ययुः साकमद्रयः।
अतर्पयो विसृत उब्ज ऊर्मीन्त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

त्वं महीमवनिं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम्।
अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणाँ अकृणोरिन्द्र सिन्धून्॥ ६॥
प्राग्रुवो नभन्वो३ न वक्वा ध्वस्रा अपिन्वद्युवतीर्ऋतज्ञाः।
धन्वान्यज्राँ अपृणक्तृषाणाँ अधोगिन्द्रः स्तर्यो३ दंसुपत्नीः॥ ७॥
पूर्वीरुषसः शरदश्च गूर्ता वृत्रं जघन्वाँ असृजद्वि सिन्धून्।
परिष्ठिता अतृणद्बद्बधानाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या॥ ८॥
वम्रीभिः पुत्रमग्रुवो अदानं निवेशनाद्धरिव आ जभर्थ।
व्य१न्धो अख्यदहिमाददानो निर्भूदुखच्छिस्मरन्त पर्व॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्राविद्वाँ आह विदुषे करांसि।
यथायथा वृष्ण्यानि स्वगूर्तापांसि राजन्नर्याविवेषीः॥ १०॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ ११॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ९ स्वराट्पङ्क्तिः; ८, १० त्रिष्टुप्; ११ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-६, ८, १० धैवतः; २, ७, ९, ११ पञ्चमः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

आ न इन्द्रो दूरादा न आसादभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः।
ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः सङ्गे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून्॥ १॥
आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छार्वाचीनोऽवसे राधसे च।
तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शीमं यज्ञमनु नो वाजसातौ॥ २॥
इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र पुरो दधत्सनिष्यसि क्रतुं नः।
श्वघ्नीव वज्रिन्त्सनये धनानां त्वया वयमर्य आजिं जयेम॥ ३॥
उशन्नु षु णः सुमना उपाके सोमस्य नु सुषुतस्य स्वधावः।
पा इन्द्र प्रतिभृतस्य मध्वः समन्धसा ममदः पृष्ठ्येन॥ ४॥
वि यो ररप्श ऋषिभिर्नवेभिर्वृक्षो न पक्वः सृण्यो न जेता।
मर्यो न योषामभि मन्यमानोऽच्छा विवक्मि पुरुहूतमिन्द्रम्॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

गिरिर्न यः स्वतवाँ ऋष्व इन्द्रः सनादेव सहसे जात उग्रः।
आदर्ता वज्रं स्थविरं न भीम उद्नेव कोशं वसुना न्यृष्टम्॥ ६॥
न यस्य वर्ता जनुषा न्वस्ति न राधस आमरीता मघस्य ।
उद्भावृषाणस्तविषीव उग्रास्मभ्यं दद्धि पुरुहूत रायः ॥ ७॥
ईक्षे रायः क्षयस्य चर्षणीनामुत व्रजमपवर्तासि गोनाम् ।
शिक्षानरः समिथेषु प्रहावान्वस्वो राशिमभिनेतासि भूरिम् ॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठो यया कृणोति मुहु का चिदृष्वः।
पुरु दाशुषे विचयिष्ठो अंहोऽथा दधाति द्रविणं जरित्रे॥ ९॥
मा नो मर्धीरा भरा दद्धि तन्नः प्र दाशुषे दातवे भूरि यत्ते।
नव्यै देष्णे शस्ते अस्मिन्त उक्थे प्र ब्रवाम वयमिन्द्र स्तुवन्तः॥ १०॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ ११॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ७, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ३ स्वराट्पङ्क्तिः; ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ९ त्रिष्टुप्; ११ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३, ७, १०, ११ पञ्चमः; ४-६, ८, ९ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

आ यात्विन्द्रोऽवस उप न इह स्तुतः सधमादस्तु शूरः।
वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीर्द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुष्यात्॥ १॥
तस्येदिह स्तवथ वृष्ण्यानि तुविद्युम्नस्य तुविराधसो नॄन्।
यस्य क्रतुर्विदथ्योऽ३ न सम्राट् साह्वान्तरुत्रो अभ्यस्ति कृष्टीः॥ २॥
आ यात्विन्द्रो दिव आ पृथिव्या मक्षू समुद्रादुत वा पुरीषात्।
स्वर्णरादवसे नो मरुत्वान्परावतो वा सदनादृतस्य ॥ ३॥
स्थूरस्य रायो बृहतो य ईशे तमु ष्टवाम विदथेष्विन्द्रम्।
यो वायुना जयति गोमतीषु प्र धृष्णुया नयति वस्यो अच्छ॥ ४॥
उप यो नमो नमसि स्तभायन्नियर्ति वाचं जनयन्यजध्यै।
ऋञ्जसानः पुरुवार उक्थैरेन्द्रं कृण्वीत सदनेषु होता॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

धिषा यदि धिषण्यन्तः सरण्यान्त्सदन्तो अद्रिमौशिजस्य गोहे।
आ दुरोषाः पास्त्यस्य होता यो नो महान्त्संवरणेषु वह्निः॥ ६॥
सत्रा यदीं भार्वरस्य वृष्णः सिषक्ति शुष्मः स्तुवते भराय।
गुहा यदीमौशिजस्य गोहे प्र यद्धिये प्रायसे मदाय ॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि यद्वरांसि पर्वतस्य वृण्वे पयोभिर्जिन्वे अपां जवांसि।
विदद्गौरस्य गवयस्य गोहे यदी वाजाय सुध्योऽ३ वहन्ति॥ ८॥
भद्रा ते हस्ता सुकृतोत पाणी प्रयन्तारा स्तुवते राध इन्द्र।
का ते निषत्तिः किमु नो ममत्सि किं नोदुदु हर्षसे दातवा उ॥ ९॥
एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्राड्धन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः।
पुरुष्टुत क्रत्वा नः शग्धि रायो भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य॥ १०॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषे जरित्रे नद्योऽ३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ ११॥

तृतीयोऽनुवाकः [२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ५, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्-त्रिष्टुप्; ६, ७, त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ स्वराट्पङ्क्तिः; ११ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-७, १० धैवतः; ८, ९, ११ पञ्चमः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

यन्न इन्द्रो जुजुषे यच्च वष्टि तन्नो महान्करति शुष्म्या चित्।
ब्रह्म स्तोमं मघवा सोममुक्था यो अश्मानं शवसा बिभ्रदेति॥ १॥
वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिमस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान्।
श्रिये परुष्णीमुषमाण ऊर्णां यस्याः पवीणि सख्याय विव्ये॥ २॥
यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः।
दधानो वज्रं बाह्वोरुशन्तं द्याममेन रेजयत्प्र भूम॥ ३॥
विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वीर्द्यौर्न कृष्वाजनिमत्रेजत क्षाः।
आ मातरा भरति शुष्म्या गोर्नृवत्परिज्मन्नोनुवन्त वाताः॥ ४॥
ता तू त इन्द्र महतो महानि विश्वेष्वित्सवनेषु प्रवाच्या।
यच्छूर धृष्णो धृषता दधृष्वानहिं वज्रेण शवसाविवेषीः॥ ५॥

अथ अष्टमो वर्गः॥ ८॥

ता तू ते सत्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः सिस्रते वृष्ण ऊधनः।
अधा ह त्वद् वृषमणो भियानाः प्र सिन्धवो जवसा चक्रमन्त॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्राह ते हरिवस्ता उ देवीरवोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वसारः।
यत्सीमनु प्र मुचो बद्बधाना दीर्घामनु प्रसितिं स्यन्दयध्यै॥ ७॥
पिपीळे अंशुर्मद्यो न सिन्धुरा त्वा शमी शशमानस्य शक्तिः।
अस्मद्र्यक्शुशुचानस्य यम्या आशुर्न रश्मिं तुव्योजसं गोः॥ ८॥
अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि।
अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य॥ ९॥
अस्माकमित्सु शृणुहि त्वमिन्द्रास्मभ्यं चित्राँ उप माहि वाजान्।
अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरन्धीरमाकं सु मघवन्बोधि गोदाः॥ १०॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ ११॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—१-७, ११ इन्द्रः; ८-१० इन्द्र ऋतदेवो वा॥
छन्दः—१-३, ७-९ त्रिष्टुप्; ४, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ भूरिक्पङ्क्तिः;
११ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ७-१० धैवतः;
५, ६, ११ पञ्चमः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

कथा महामवृधत्कस्य होतुर्यज्ञं जुषाणो अभि सोममूधः।
पिबन्नुशानो जुषमाणो अन्धो ववक्ष ऋष्वः शुचते धनाय॥ १॥
को अस्य वीरः सधमादमाप समानंश सुमतिभिः को अस्य।
कदस्य चित्रं चिकिते कदूती वृधे भुवच्छशमानस्य यज्योः॥ २॥
कथा शृणोति हूयमानमिन्द्रः कथा शृण्वन्नवसामस्य वेद।
का अस्य पूर्वीरुपमातयो ह कथैनमाहुः पपुरिं जरित्रे॥ ३॥
कथा सबाधः शशमानो अस्य नशदभि द्रविणं दीध्यानः।
देवो भुवन्नवेदा म ऋतानां नमो जगृभ्वाँ अभि यज्जुजोषत्॥ ४॥
कथा कदस्या उषसो व्युष्टौ देवो मर्तस्य सख्यं जुजोष।
कथा कदस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन्कामं सुयुजं ततस्रे॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

किमादमत्रं सख्यं सखिभ्यः कदा नु ते भ्रात्रं प्र ब्रवाम।
श्रिये सुदृशो वपुरस्य सर्गाः स्वर्ण चित्रतममिष आ गोः ॥ ६ ॥
द्रुहं जिघांसन्ध्वरसमनिन्द्रां तेतिक्ते तिग्मा तुजसे अनीका।
ऋणा चिद्यत्र ऋणया न उग्रो दूरे अज्ञाता उषसो बबाधे ॥ ७ ॥
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वीर्ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति।
ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्द कर्णा बुधानः शुचमान आयोः ॥ ८ ॥
ऋतस्य दृळ्हा धरुणानि सन्ति पुरूणि चन्द्रा वपुषे वपूंषि।
ऋतेन दीर्घमिषणन्त पक्षे ऋतेन गावं ऋतमा विवेशुः ॥ ९ ॥
ऋतं येमान ऋतमिद्वनोत्यृतस्य शुष्मस्तुरया उ गव्युः।
ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ऋताय धेनू परमे दुहाते ॥ १० ॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ॥ ११ ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप्; २, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ९ निचृत् त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः; १० निचृदनुष्टुप्; ११ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३-५, ७, ९ धैवतः; २, ६, ८, ११ पञ्चमः; १० गान्धारः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

का सुष्टुतिः शवसः सूनुमिन्द्रमवाचीनं राधस आ ववर्तत्।
ददिर्हि वीरो गृणते वसूनि स गोपतिर्निष्षिधां नो जनासः ॥ १ ॥
स वृत्रहत्ये हव्यः स ईड्यः स सुष्टुत इन्द्रः सत्यराधाः।
स यामन्ना मघवा मर्त्याय ब्रह्मण्यते सुष्वये वरिवो धात् ॥ २ ॥
तमिन्नरो वि ह्वयन्ते समीके रिरिक्वांसस्तन्वः कृण्वत त्राम्।
मिथो यत्त्यागमुभयासो अग्मन्नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ ॥ ३ ॥
क्रतूयन्ति क्षितयो योगा उग्राशुषाणासो मिथो अर्णसातौ।
सं यद्विशोऽववृत्रन्त युध्मा आदिन्नेम इन्द्रयन्ते अभीके ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदिद्ध नेम इन्द्रियं यजन्त आदित्पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात्।
आदित्सोमो वि पपृच्यादसुष्वीनादिज्जुजोष वृषभं यजध्यै॥ ५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

कृणोत्यस्मै वरिवो य इत्थेन्द्राय सोममुशते सुनोति।
सध्रीचीनेन मनसाविवेनन् तमित्सखायं कृणुते समत्सु॥ ६॥
य इन्द्राय सुनवत्सोममद्य पचात्पक्तीरुत भृज्जाति धानाः।
प्रति मनायोरुचथानि हर्यन्तस्मिन्दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्रः॥ ७॥
यदा समर्यं व्यचेदृघावा दीर्घं यदाजिमभ्यख्यदर्यः।
अचिक्रदद् वृषणं पत्न्यच्छा दुरोण आ निशितं सोमसुद्भिः॥ ८॥
भूयसा वस्नमचरत्कनीयोऽविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन्।
स भूयसा कनीयो नारिरेचीद्दीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम्॥ ९॥
क इमं दशभिर्ममेन्द्रं क्रीणाति धेनुभिः।
यदा वृत्राणि जङ्घनदथैनं मे पुनर्ददत्॥ १०॥
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ३ न पीपेः।
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः॥ ११॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः २, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ४, ६, ८ पञ्चमः; ३, ५, ७ धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

को अद्य नर्यो देवकाम उशन्निन्द्रस्य सख्यं जुजोष।
को वा महेऽवसे पार्याय समिद्धे अग्नौ सुतसोम ईट्टे॥ १॥
को नानाम वचसा सोम्याय मनायुर्वी भवति वस्त उस्राः।
क इन्द्रस्य युज्यं कः सखित्वं को भ्रात्रं वष्टि कवये क ऊती॥ २॥
को देवानामवो अद्या वृणीते क आदित्याँ अदितिं ज्योतिरीट्टे।
कस्याश्विनाविन्द्रो अग्निः सुतस्यांशोः पिबन्ति मनसाविवेनम्॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्मा अग्निर्भारतः शर्म यंसज्ज्योक्पश्यात्सूर्यमुच्चरन्तम्।
य इन्द्राय सुनवामेत्याह नरे नर्याय नृतमाय नृणाम्॥ ४॥
न तं जिनन्ति बहवो न दभ्रा उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत्।
प्रियः सुकृत्प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी॥ ५॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

सुप्राव्यः प्राशुषाळेष वीरः सुष्वेः पक्तिं कृणुते केवलेन्द्रः।
नासुष्वेरापिर्न सखा न जामिर्दुष्प्राव्योऽवहन्तेदवाचः ॥ ६॥
न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रोऽ सुन्वता सुतपाः सं गृणीते।
आस्य वेदः खिदति हन्ति नग्नं वि सुष्वये पक्तये केवलो भूत्॥ ७॥
इन्द्रं परेऽ वरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽ वसितास इन्द्रम्।
इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते॥ ८॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ७ पञ्चमः; ४-६ धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अहं मनुरभवं सूर्यश्चाहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मि विप्रः।
अहं कुत्समार्जुनेयं न्यृञ्जेऽ हं कविरुशना पश्यता मा॥ १॥
अहं भूमिमददामार्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय।
अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनु केतमायन्॥ २॥
अहं पुरो मन्दसानो व्यैरं नव साकं नवतीः शम्बरस्य।
शततमं वेश्यं सर्वताता दिवोदासमतिथिग्वं यदावम्॥ ३॥
प्र सु ष विभ्यो मरुतो विरस्तु प्र श्येनः श्येनेभ्य आशुपत्वा।
अचक्रया यत्स्वधया सुपर्णो हव्यं भरन्मनवे देवजुष्टम्॥ ४॥
भरद्यदि विरतो वेविजानः पथोरुणा मनोजवा असर्जि।
तूयं ययौ मधुना सोम्येनोत श्रवो विविदे श्येनो अत्र॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋजीपी श्येनो ददमानो अंशुं परावतः शकुनो मन्द्रं मदम्।
सोमं भरद्दाद्हाणो देवावान्दिवो अमुष्मादुत्तरादादाय॥ ६॥
आदाय श्येनो अभरत्सोमं सहस्रं सवाँ अयुतं च साकम्।
अत्रा पुरंन्धिरजहादरातीर्मदे सोमस्य मूरा अमूरः ॥७॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ५ निचृच्छक्वरी॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

गर्भे नु सन्नन्वेषामवेदमहं देवानां जनिमानि विश्वा ।
शतं मा पुर आयसीररक्षन्नधं श्येनो जवसा निरदीयम्॥ १॥
न घा स मामप जोषं जभाराभीमास त्वक्षसा वीर्येण।
ईर्मा पुरंन्धिरजहादरातीरुत वातां अतरच्छूशुवानः ॥ २॥
अव यच्छ्येनो अस्वनीदध द्योर्वि यद्यदि वात ऊहुः पुरंन्धिम्।
सृजद्यदस्मा अव ह क्षिपज्ज्यां कृशानुरस्ता मनसा भुरण्यन्॥ ३॥
ऋजिप्य ईमिन्द्रावतो न भुज्युं श्येनो जभार बृहतो अधि ष्णोः।
अन्तः पतत्पतत्र्यस्य पर्णमध यामनि प्रसितस्य तद्वेः॥ ४॥
अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तमापिप्यानं मघवा शुक्रमन्धः।
अध्वर्युभिः प्रयतं मध्वो अग्रमिन्द्रो मदाय प्रति धत्पिबध्यै
शूरो मदाय प्रति धत्पिबध्यै ॥५॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रसोमौ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ४ धैवतः; २, ५ पञ्चमः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

त्वा युजा तव तत्सोम सख्य इन्द्रो अपो मनवे सस्रुतस्कः।
अहन्नहिमरिणात्सप्त सिन्धूनपावृणोदपिहितेव खानि ॥ १॥
त्वा यरुजा नि खिदत्सूर्यस्येन्द्रश्चक्रं सहसा सद्य इन्दो।
अधि ष्णुना बृहता वर्तमानं महो द्रुहो अप विश्वायु धायि॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहन्निन्द्रो अदहदग्निरिन्दो पुरा दस्यून्मध्यन्दिनादभीके।
दुर्गे दुरोणे क्रत्वा न यातां पुरू सहस्रा शर्वा नि बर्हीत्॥ ३॥
विश्वस्मात्सीमधमाँ इन्द्र दस्यून्विशो दासीरकृणोरप्रशस्ताः।
अबाधेथाममृणतं नि शत्रूनविन्देथामपचितिं वधत्रैः ॥ ४॥
एवा सत्यं मघवाना युवं तदिन्द्रश्च सोमोर्वमश्व्यं गोः।
आदर्दृतमपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश्चित्ततृदाना ॥ ५॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

आ नः स्तुत उप वाजेभिरूती इन्द्र याहि हरिभिर्मन्दसानः।
तिरश्चिदर्यः सवना पुरूण्याङ्गूषेभिर्गृणानः सत्यराधाः॥ १॥
आ हि ष्मा याति नर्यश्चिकित्वान्हूयमानः सोतृभिरुप यज्ञम्।
स्वश्वो यो अभीरुर्मन्यमानः सुष्वाणेभिर्मदति सं ह वीरैः॥ २॥
श्रावयेदस्य कर्णा वाजयध्यै जुष्टामनु प्र दिशं मन्दयध्यै।
उद्वावृषाणो राधसे तुविष्मान्करन्न इन्द्रः सुतीर्थाभयं च॥ ३॥
अच्छा यो गन्ता नाधमानमूती इत्था विप्रं हवमानं गृणन्तम्।
उप त्मनि दधानो धुर्याश्शून्त्सहस्राणि शतानि वज्रबाहुः॥ ४॥
त्वोतासो मघवन्निन्द्र विप्रा वयं ते स्याम सूरयो गृणन्तः।
भेजानासो बृहद्दिवस्य राय आकाय्यस्य दावने पुरुक्षोः॥ ५॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—१-८, १२-२४ इन्द्रः; ९-११ इन्द्र उषाश्च॥ छन्दः—१, ३, ५, ९, ११, १२, १६, १८, १९, २३ निचृद्गायत्री; २, ७, १०, १३-१५, १७, २१, २२ गायत्री; ४, ६ विराड्गायत्री; ८, २४ विराडनुष्टुप्; २० पिपीलिकामध्यागायत्री॥ स्वरः—१-७, ९-२३ षड्जः; ८, २४ गान्धारः॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन्। नकिरेवा यथा त्वम्॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः । सत्रा महाँ असि श्रुतः ॥ २ ॥
विश्वे चनेदना त्वा देवास इन्द्र युयुधुः । यदह नक्तमातिरः ॥ ३ ॥
यत्रोत बाधितेभ्यश्चक्रं कुत्साय युध्यते । मुषाय इन्द्र सूर्यम् ॥ ४ ॥
यत्र देवाँ ऋघायतो विश्वाँ अयुध्य एक इत् । त्वमिन्द्र वनूँरहन् ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

यत्रोत मर्त्यीय कमरिणा इन्द्र सूर्यम् । प्रावः शचीभिरेतशम् ॥ ६ ॥
किमादुतासि वृत्रहन्मघवन्मन्युमत्तमः । अत्राह दानुमातिरः ॥ ७ ॥
एतद्धेदुत वीर्यमिन्द्र चकर्थ पौंस्यम् ।
स्त्रियं यद्दुर्हणायुवं वधीर्दुहितरं दिवः ॥ ८ ॥
दिवश्चिद्धा दुहितरं महान्महीयमानाम् । उषासमिन्द्र सं पिणक् ॥ ९ ॥
अपोषा अनसः सरत्संपिष्टादह बिभ्युषी । नि यत्सीं शिश्नथद्वृषा ॥ १० ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

एतदस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्या । ससार सीं परावतः ॥ ११ ॥
उत सिन्धुं विबाल्यं वितस्थानामधि क्षमि । परि ष्ठा इन्द्र मायया ॥ १२ ॥
उत शुष्णस्य धृष्णुया प्र मृक्षो अभि वेदनम् । पुरो यदस्य संपिणक् ॥ १३ ॥
उत दासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि । अवाहन्निन्द्र शम्बरम् ॥ १४ ॥
उत दासस्य वर्चिनः सहस्राणि शतावधीः । अधि पञ्च प्रधींरिव ॥ १५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

उत त्यं पुत्रमग्रुवः परावृक्तं शतक्रतुः । उक्थेष्विन्द्र आभजत् ॥ १६ ॥
उत त्या तुर्वशायदू अस्नातारा शचीपतिः । इन्द्रो विद्वाँ अपारयत् ॥ १७ ॥
उत त्या सद्य आर्या सरयोरिन्द्र पारतः । अर्णाचित्ररथावधीः ॥ १८ ॥
अनु द्वा जहिता नयोऽन्धं श्रोणं च वृत्रहन् । न तत्ते सुम्नमष्टवे ॥ १९ ॥
शतमश्मन्मयीनां पुरामिन्द्रो व्यास्यत् । दिवोदासाय दाशुषे ॥ २० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अस्वापयद्दभीतये सहस्रा त्रिंशतं हथैः । दासानामिन्द्रो मायया ॥ २१ ॥
स घेदुतासि वृत्रहन्त्समान इन्द्र गोपतिः । यस्ता विश्वानि चिच्युषे ॥ २२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत नूनं यदिन्द्रियं करिष्या इन्द्र पौंस्यम्। अद्या नकिष्टदा मिनत्॥ २३॥

वामंवामं त आदुरे देवो ददात्वर्यमा ।

वामं पूषा वामं भगो वामं देवः करूळती ॥ २४॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७-१०, १४ गायत्री; २, ६, १२, १३, १५ निचृद्गायत्री; ३ पादनिचृद्गायत्री; ४, ५ विराड्गायत्री; ११ पिपीलिका-मध्यागायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ १॥

कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृळ्हा चिदारुजे वसु॥ २॥

अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्। शतं भवास्यूतिभिः॥ ३॥

अभी न आ ववृत्स्व चक्रं न वृत्तमर्वतः। नियुद्भिश्चर्षणीनाम्॥ ४॥

प्रवता हि क्रतूनामा हा पदेव गच्छसि। अभक्षि सूर्ये सचा॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

सं यत्ते इन्द्र मन्यवः सं चक्राणि दधन्विरे। अध त्वे अध सूर्ये॥ ६॥

उत स्मा हि त्वामाहुरिन्मघवानं शचीपते। दातारमविदीधयुम्॥ ७॥

उत स्मा सद्य इत्परि शशमानाय सुन्वते। पुरू चिन्मंहसे वसु॥ ८॥

नहि ष्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरः। न च्यौत्नानि करिष्यतः॥ ९॥

अस्माँ अवन्तु ते शतमस्मान्त्सहस्रमूतयः। अस्मान्विश्वा अभिष्टयः॥ १०॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

अस्माँ इहा वृणीष्व सख्याय स्वस्तये। महो राये दिवित्मते॥ १॥

अस्मां अविड्ढि विश्वहेन्द्र राया परीणसा। अस्मान्विश्वाभिरूतिभिः॥ १२॥

अस्मभ्यं ताँ अपा वृधि व्रजाँ अस्तेव गोमतः। नवाभिरिन्द्रोतिभिः॥ १३॥

अस्माकं धृष्णुया रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः। गव्युरश्वयुरीयते॥ १४॥

अस्माकमुत्तमं कृधि श्रवो देवेषु सूर्य। वर्षिष्ठं द्यामिवोपरि॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१-२२ इन्द्रः; २३, २४ इन्द्राश्वौ ॥ छन्दः—१, ८-१०, १४, १६, १८, २२, २३ गायत्री; २, ४, ७ विराड्गायत्री; ३, ५, ६, १२, १३, १५, १९-२१ निचृद्गायत्री; ११ पिपीलिकामध्यागायत्री; १७ पादनिचृद्गायत्री; २४ स्वराडार्चीगायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि। महान्महीभिरूतिभिः ॥ १ ॥
भूमिश्चिद्धासि तूतुजिरा चित्र चित्रिणीष्वा। चित्रं कृणोष्यूतये ॥ २ ॥
दभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं हंसि व्राधन्तमोजसा। सखिभिर्ये त्वे सचा ॥ ३ ॥
वयमिन्द्र त्वे सचा वयं त्वाभि नोनुमः। अस्माँअस्माँ इदुदव ॥ ४ ॥
स नश्चित्राभिरद्रिवोऽनवद्याभिरूतिभिः। अनाधृष्टाभिरा गहि ॥ ५ ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

भूयामो षु त्वावतः सखाय इन्द्र गोमतः। युजो वाजाय घृष्वये ॥ ६ ॥
त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र वाजस्य गोमतः। स नो यन्धि महीमिषम् ॥ ७ ॥
न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्दित्ससि स्तुतो मघम्। स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः ॥ ८ ॥
अभि त्वा गोतमा गिरानूषत प्र दावने। इन्द्र वाजाय घृष्वये ॥ ९ ॥
प्र ते वोचाम वीर्या३ या मन्दसान आरुजः। पुरो दासीरभीत्य ॥ १० ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

ता ते गृणन्ति वेधसो यानि चकर्थ पौंस्या। सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ ११ ॥
अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोमवाहसः। ऐषु धा वीरवद्यशः ॥ १२ ॥
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम्। तं त्वा वयं हवामहे ॥ १३ ॥
अर्वाचीनो वसो भवास्मे सु मत्स्वान्धसः। सोमानामिन्द्र सोमपाः ॥ १४ ॥
अस्माकं त्वा मतीनामा स्तोम इन्द्र यच्छतु। अर्वागा वर्तया हरी ॥ १५ ॥
पुरोळाशं च नो घसो जोषयासे गिरश्च नः। वधूयुरिव योषणाम् ॥ १६ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

सहस्रं व्यतीनां युक्तानामिन्द्रमीमहे। शतं सोमस्य खार्यः ॥ १७ ॥
सहस्रा ते शता वयं गवामा च्यावयामसि। अस्मत्रा राध एतु ते ॥ १८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दश॑ ते क॒लशा॑नां॒ हिर॑ण्यानामधीमहि। भू॒रि॒दा अ॑सि वृत्रहन्॥ १९॥
भू॒रि॒दा॒ भू॒रि॑ देहि नो॒ मा दृ॒भ्रं भूर्या॑ भर। भू॒रि॒ घेदिन्द्र दित्ससि॥ २०॥
भू॒रि॒दा ह्यसि॑ श्रुतः पु॒रु॒त्रा शू॑र वृत्रहन्। आ नो॑ भजस्व॒ राध॑सि॥ २१॥
प्र ते॑ ब॒भ्रू वि॑चक्षण॒ शंसा॑मि गोषणो नपात्। माभ्यां॑ गा॒ अनु॑ शिश्रथः॥ २२॥
क॒नी॒न॒केव॑ वि॒द्रधे॒ नवे॑ दु॒प॒दे अ॑र्भ॒के। ब॒भ्रू यामे॑षु शोभेते॥ २३॥
अरं॑ म उ॒स्त्रया॒म्णेऽर् मनु॒स्त्रया॒म्णे। ब॒भ्रू यामे॑ष्वस्त्रिधा॥ २४॥

इति तृतीयाऽष्टके षष्ठोऽध्यायः॥

अथ तृतीयाष्टके सप्तमोऽध्यायः

चतुर्थोऽनुवाकः [३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—ऋभवः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ११ त्रिष्टुप्; ३, ६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ७, ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ स्वराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—१-६, १०, ११ धैवतः; ७-९ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्र ऋ॒भु॒भ्यो॑ दू॒तमि॑व॒ वाच॑मिष्य उप॒स्तिरे॒ श्वैत॑रीं धे॒नुमी॑ळे।
ये वा॑तजू॒तास्त॒रणि॑भि॒रेवैः॒ परि॒ द्यां स॒द्यो अ॒पसो॑ बभू॒वुः॥ १॥
य॒दार्म॑क्रं॒ नृभ॑वः पि॒तृभ्यां॑ परि॑विष्टी वे॒षणा॑ दं॒सना॑भिः।
आदि॑द्देवा॒नामु॑प॒ सख्य॑मा॒य॒न्धीरा॑सः पु॒ष्टिम॑वहन्म॒नायै॑॥ २॥
पु॒न॒र्ये च॒क्रुः पि॒तरा॒ युवा॑ना॒ सना॒ यूपे॑व॒ जर॒णा शया॑ना।
ते वाजो॒ विभ्वाँ॑ ऋ॒भुरि॑न्द्रवन्तो॒ मधु॒ष्परसो॒ नोऽ॑ वन्तु य॒ज्ञम्॥ ३॥
यत्सं॑वत्स॒मृ॒भवो॒ गामर॑क्षन्य॒त्सं॒व॒त्स॒मृ॒भवो॒ मा अपि॑ंशन्।
यत्सं॑वत्स॒मभ॑र॒न्भासो॑ अस्या॒स्ताभि॒ः शमी॑भिरमृत॒त्वमा॑शुः॥ ४॥
ज्येष्ठ॑ आह॒ च॒म॒सा द्वा क॒रेति॒ कनी॑या॒न्त्रीन्कृ॑णवा॒मेत्या॑ह।
क॒नि॒ष्ठ आ॑ह॒ च॒तुर॑स्क॒रेति॒ त्वष्ट॑ ऋभव॒स्तत्प॑नय॒द्वचो॑ वः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुरनु स्वधामृभवो जग्मुरेताम्।
विभ्राजमानांश्चमसाँ अहेवावेनत्त्वष्टा चतुरो ददृश्वान् ॥ ६ ॥
द्वादश द्यून्यदगोह्यस्यातिथ्ये रणन्नृभवः ससन्तः ।
सुक्षेत्रांकृण्वन्नयन्त सिन्धून्धन्वातिष्ठन्नोषधीर्निम्नमापः ॥ ७ ॥
रथं ये चक्रुः सुवृतं नरेष्ठां ये धेनुं विश्वजुवं विश्वरूपाम्।
त आ तक्षन्त्वृभवो रयिं नः स्ववसः स्वपसः सुहस्ताः ॥ ८ ॥
अपो ह्येषामजुषन्त देवा अभि क्रत्वा मनसा दीध्यानाः।
वाजो देवानामभवत्सुकर्मेन्द्रस्य ऋभुक्षा वरुणस्य विभ्वा ॥ ९ ॥
ये हरी मेधयोक्था मदन्त इन्द्राय चक्रुः सुयुजा ये अश्वा।
ते रायस्पोषं द्रविणान्यस्मे धत्त ऋभवः क्षेमयन्तो न मित्रम् ॥ १० ॥
इदाह्नः पीतिमुत वो मदं धुर्न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।
ते नूनमस्मे ऋभवो वसूनि तृतीये अस्मिन्त्सवने दधात ॥ ११ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ११ स्वराट् पङ्क्तिः; ४, ६-९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः; १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ६-१० धैवतः; ३, ५, ११ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

ऋभुर्विभ्वा वाज इन्द्रो नो अच्छेमं यज्ञं रत्नधेयोप यात।
इदा हि वो धिषणा देव्यह्नामधात्पीतिं सं मदा अगमता वः ॥ १ ॥
विदानासो जन्मनो वाजरत्ना उत ऋतुभिर्ऋभवो मादयध्वम्।
सं वो मदा अग्मत सं पुरन्धिः सुवीरामस्मे रयिमेरयध्वम् ॥ २ ॥
अयं वो यज्ञ ऋभवोऽकारि यमा मनुष्वत्प्रदिवो दधिध्वे।
प्र वोऽच्छा जुजुषाणासो अस्थुरभूत विश्वे अग्रियोत वाजाः ॥ ३ ॥
अभूदु वो विधते रत्नधेयमिदा नरो दाशुषे मर्त्याय।
पिबत वाजा ऋभवो ददे वो महि तृतीयं सवनं मदाय ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ वाजा यातोप न ऋभुक्षा महो नरो द्रविणसो गृणानाः।
आ वः पीतयोऽभिपित्वे अह्नामिमा अस्तं नवस्वइव गमन्॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

आ नपातः शवसो यातनोपेमं यज्ञं नमसा हूयमानाः।
सजोषसः सूरयो यस्य च स्थ मध्वः पात रत्नधा इन्द्रवन्तः॥ ६॥
सजोषा इन्द्र वरुणेन सोमं सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः।
अग्रेपाभिर्ऋतुपाभिः सजोषा ग्नास्पत्नीभी रत्नधाभिः सजोषाः॥ ७॥
सजोषस आदित्यैर्मादयध्वं सजोषस ऋभवः पर्वतेभिः।
सजोषसो दैव्येना सवित्रा सजोषसः सिन्धुभी रत्नधेभिः॥ ८॥
ये अश्विना ये पितरा य ऊती धेनुं ततक्षुर्ऋभवो ये अश्वा।
ये अंसत्रा य ऋधग्रोदसी ये विभ्वो नरः स्वपत्यानि चक्रुः॥ ९॥
ये गोमन्तं वाजवन्तं सुवीरं रयिं धत्थ वसुमन्तं पुरुक्षुम्।
ते अग्रेपा ऋभवो मन्दसाना अस्मे धत्त ये च रातिं गृणन्ति॥ १०॥
नार्पाभूत न वोऽतीतृषामानिः शस्ता ऋभवो यज्ञे अस्मिन्।
समिन्द्रेण मदथ सं मरुद्भिः सं राजभी रत्नधेयाय देवाः॥ ११॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—ऋभवः॥ छन्दः—१, २, ४, ६, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ८ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४, ६-९ धैवतः; ३, ५ पञ्चमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

इहोप यात शवसो नपातः सौधन्वना ऋभवो माप भूत।
अस्मिन्हि वः सवने रत्नधेयं गमन्त्विन्द्रमनु वो मदासः॥ १॥
आगन्त्रभूणामिह रत्नधेयमभूत्सोमस्य सुषुतस्य पीतिः।
सुकृत्यया यत्स्वपस्यया चँ एकं विचक्र चमसं चतुर्धा॥ २॥
व्यकृणोत चमसं चतुर्धा सखे वि शिक्षेत्यब्रवीत।
अथैत वाजा अमृतस्य पन्थां गणं देवानामृभवः सुहस्ताः॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किंमयः स्विच्चमस एष आस यं काव्येन चतुरो विचक्र।
अथा सुनुध्वं सवनं मदाय पात ऋभवो मधुनः सोम्यस्य॥ ४॥
शच्याकर्त पितरा युवाना शच्याकर्त चमसं देवपानम्।
शच्या हरी धनुतरावतष्टेन्द्रवाहावृभवो वाजरत्नाः ॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

यो वः सुनोत्यभिपित्वे अह्नां तीव्रं वाजासः सवनं मदाय।
तस्मै रयिमृभवः सर्ववीरमा तक्षत वृषणो मन्दसानाः॥ ६॥
प्रातः सुतमपिबो हर्यश्व माध्यन्दिनं सवनं केवलं ते।
समृभुभिः पिबस्व रत्नधेभिः सखीयाँ इन्द्र चकृषे सुकृत्या॥ ७॥
ये देवासो अभवता सुकृत्या श्येनाइवेदधि दिवि निषेद।
ते रत्नं धात शवसो नपातः सौधन्वना अभवतामृतासः॥ ८॥
यत्तृतीयं सवनं रत्नधेयमकृणुध्वं स्वपस्या सुहस्ताः ।
तदृभवः परिषिक्तं व एतत्सं मदेभिरिन्द्रियेभिः पिबध्वम्॥ ९॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—ऋभवः॥ छन्दः—१, ६, ८ स्वराट्त्रिष्टुप्; २-५ विराड्जगती; ७ जगती; ९ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ६, ८, ९ धैवतः; २-५, ७ निषादः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्योऽ३ रथस्त्रिचक्रः परि वर्तते रजः।
महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचनं द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथ॥ १॥
रथं ये चक्रुः सुवृतं सुचेतसोऽविह्वरन्तं मनसस्परि ध्यया।
ताँ ऊ न्वस्य सवनस्य पीतय आ वो वाजा ऋभवो वेदयामसि॥ २॥
तद्वो वाजा ऋभवः सुप्रवाचनं देवेषु विभ्वो अभवन्महित्वनम्।
जिव्री यत्सन्ता पितरा सनाजुरा पुनर्युवाना चरथाय तक्षथ॥ ३॥
एकं वि चक्र चमसं चतुर्वयं निश्चर्मणो गामरिणीत धीतिभिः।
अथा देवेष्वमृतत्वमानश श्रुष्टी वाजा ऋभवस्तद्व उक्थ्यम्॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋभुतो रयिः प्रथमश्रवस्तमो वाजश्रुतासो यमजीजनन्नरः।
विभ्वतष्टो विदथेषु प्रवाच्यो यं देवासोऽवथा स विचर्षणिः ॥ ५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

स वाज्यर्वा स ऋषिर्वचस्यया स शूरो अस्ता पृतनासु दुष्टरः।
स रायस्पोषं स सुवीर्यं दधे यं वाजो विभ्वाँ ऋभवो यमाविषुः ॥ ६ ॥
श्रेष्ठं वः पेशो अधि धायि दर्शतं स्तोमो वाजा ऋभवस्तं जुजुष्टन।
धीरासो हि ष्ठा कवयो विपश्चितस्तान्व एना ब्रह्मणा वेदयामसि ॥ ७ ॥
यूयमस्मभ्यं धिषणाभ्यस्परि विद्वांसो विश्वा नर्याणि भोजना।
द्युमन्तं वाजं वृषशुष्ममुत्तममा नो रयिमृभवस्तक्षता वयः ॥ ८ ॥
इह प्रजामिह रयिं रराणा इह श्रवो वीरवत्तक्षता नः ।
येन वयं चितयेमात्यन्यान्तं वाजं चित्रमृभवो ददा नः ॥ ९ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—ऋभवः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ५, ७ अनुष्टुप्; ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ८ धैवतः; ४ पञ्चमः; ५-७ गान्धारः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

उप नो वाजा अध्वरमृभुक्षा देवा यात पथिभिर्देवयानैः ।
यथा यज्ञं मनुषो विक्ष्वाइसु दधिध्वे रण्वाः सुदिनेष्वह्नाम् ॥ १ ॥
ते वो हृदे मनसे सन्तु यज्ञा जुष्टासो अद्य घृतनिर्णिजो गुः ।
प्र वः सुतासो हरयन्त पूर्णाः क्रत्वे दक्षाय हर्षयन्त पीताः ॥ २ ॥
त्र्युदायं देवहितं यथा वः स्तोमो वाजा ऋभुक्षणो ददे वः।
जुह्वे मनुष्वदुपरासु विक्षु युष्मे सचा बृहद्दिवेषु सोमम् ॥ ३ ॥
पीवोअश्वाः शुचद्रथा हि भूतायःशिप्रा वाजिनः सुनिष्काः।
इन्द्रस्य सूनो शवसो नपातोऽनु वश्चेत्यग्रियं मदाय ॥ ४ ॥
ऋभुमृभुक्षणो रयिं वाजे वाजिन्तमं युजम् ।
इन्द्रस्वन्तं हवामहे सदासातममश्विनम् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

सेदृभवो यमवथ यूयमिन्द्रश्च मर्त्यम् ।
स धीभिरस्तु सनिता मेधसाता सो अर्वता ॥ ६ ॥
वि नो वाजा ऋभुक्षणः पथश्चितन यष्टवे ।
अस्मभ्यं सूरयः स्तुता विश्वा आशास्तरीषणि ॥ ७ ॥
तं नो वाजा ऋभुक्षण इन्द्र नासत्या रयिम् ।
समश्वं चर्षणिभ्य आ पुरु शंस्त मघत्तये ॥ ८ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१ द्यावापृथिव्यौ; २-१० दधिक्राः ॥ छन्दः—१, ४ विराट्पङ्क्तिः; २, ३ त्रिष्टुप्; ५, ८-१० निचृत्त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६, पञ्चमः; २, ३, ५, ७-१० धैवतः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

उतो हि वां दात्रा सन्ति पूर्वा या पूरुभ्यस्त्रसदस्युर्नितोशे ।
क्षेत्रासां ददथुरुर्वरासां घनं दस्युभ्यो अभिभूतिमुग्रम् ॥ १ ॥
उत वाजिनं पुरुनिष्षिध्वानं दधिक्रामु ददथुर्विश्वकृष्टिम् ।
ऋजिप्यं श्येनं प्रुषितप्सुमाशुं चर्कृत्यमर्यो नृपतिं न शूरम् ॥ २ ॥
यं सीमनु प्रवतेव द्रवन्तं विश्वः पूरुर्मदति हर्षमाणः ।
पड्भिर्गृध्यन्तं मेथयुं न शूरं रथतुरं वातमिव ध्रजन्तम् ॥ ३ ॥
यः स्मारुन्धानो गध्या समत्सु सनुतरश्चरति गोषु गच्छन् ।
आविर्ऋजीको विदथा निचिक्यत्तिरो अरतिं पर्यापा आयोः ॥ ४ ॥
उत स्मैनं वस्त्रमथिं न तायुमनु क्रोशन्ति क्षितयो भरेषु ।
नीचायमानं जसुरिं न श्येनं श्रवश्चाच्छा पशुमच्च यूथम् ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

उत स्मासु प्रथमः सरिष्यन्नि वेवेति श्रेणिभी रथानाम् ।
स्त्रजं कृण्वानो जन्यो न शुभ्वा रेणुं रेरिहत्किरणं ददृश्वान् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत स्य वाजी सहुरिर्ऋतावा शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये।
तुरं यतीषु तुरयन्नृजिप्योऽधि भ्रुवोः किरते रेणुमृञ्जन्॥ ७॥
उत स्मास्य तन्यतोरिव द्योर्ऋघायतो अभियुजो भयन्ते।
यदा सहस्रमभि षीमयोधीदुर्वर्तुः स्मा भवति भीम ऋञ्जन्॥ ८॥
उत स्मास्य पनयन्ति जना जूतिं कृष्टिप्रो अभिभूतिमाशोः।
उतैनमाहुः समिथे वियन्तः परा दधिक्रा असरत्सहस्रैः॥ ९॥
आ दधिक्राः शवसा पञ्च कृष्टीः सूर्यइव ज्योतिषापस्ततान।
सहस्रसाः शतसा वाज्यर्वा पृणक्तु मध्वा समिमा वचांसि॥ १०॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—दधिक्राः॥ छन्दः—१, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५ धैवतः; २, ४ पञ्चमः; ६ गान्धारः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

आशुं दधिक्रां तमु नु ष्टवाम दिवस्पृथिव्या उत चर्किराम।
उच्छन्तीर्मामुषसः सूदयन्त्वति विश्वानि दुरितानि पर्षन्॥ १॥
महश्चर्कर्म्यर्वतः क्रतुप्रा दधिक्राव्णः पुरुवारस्य वृष्णः।
यं पूरुभ्यो दीदिवांसं नाग्निं ददथुर्मित्रावरुणा ततुरिम्॥ २॥
यो अश्वस्य दधिक्राव्णो अकारीत्समिद्धे अग्ना उषसो व्युष्टौ।
अनागसं तमदितिः कृणोतु स मित्रेण वरुणेना सजोषाः॥ ३॥
दधिक्राव्ण इष ऊर्जो महो यदमन्महि मरुतां नाम भद्रम्।
स्वस्तये वरुणं मित्रमग्निं हवामह इन्द्रं वज्रबाहुम्॥ ४॥
इन्द्रमिवेदुभये वि ह्वयन्त उदीराणा यज्ञमुपप्रयन्तः।
दधिक्रामु सूदनं मर्त्याय ददथुर्मित्रावरुणा नो अश्वम्॥ ५॥
दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ ६॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—१-४ दधिक्रावा; ५ सूर्यः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ निचृज्जगती॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ निषादः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

दधिक्राव्ण इदु नु चर्किराम विश्वा इन्मामुषसः सूदयन्तु।
अपामग्नेरुषसः सूर्यस्य बृहस्पतेराङ्गिरसस्य जिष्णोः ॥ १ ॥
सत्वा भरिषो गविषो दुवन्यसच्छ्रवस्यादिष उषसस्तुरण्यसत्।
सत्यो द्रवो द्रवरः पतङ्गरो दधिक्रावेषमूर्जं स्वर्जनत् ॥ २ ॥
उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनु वाति प्रगर्धिनः।
श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः ॥ ३ ॥
उत स्य वाजी क्षिपणिं तुरण्यति ग्रीवायां बद्धो अपिकक्ष आसनि।
क्रतुं दधिक्रा अनु सन्तवीत्वत्पथामङ्कांस्यन्वापनीफणत् ॥ ४ ॥
हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्।
नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतम् ॥ ५ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ५, ९, ११ त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७ पङ्क्तिः; ८, १० स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-६, ९, ११ धैवतः; ७, ८, १० पञ्चमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

इन्द्रा को वां वरुणा सुम्नमाप स्तोमो हविष्माँ अमृतो न होता।
यो वां हृदि क्रतुमाँ अस्मदुक्तः पस्पर्शदिन्द्रावरुणा नमस्वान् ॥ १ ॥
इन्द्रा ह यो वरुणा चक्र आपी देवौ मर्तः सख्याय प्रयस्वान्।
स हन्ति वृत्रा समिथेषु शत्रूनवोभिर्वा महद्भिः स प्र शृण्वे ॥ २ ॥
इन्द्रा ह रत्नं वरुणा धेष्ठेत्था नृभ्यः शशमानेभ्यस्ता।
यदी सखाया सख्याय सोमैः सुतेभिः सुप्रयसा मादयैते ॥ ३ ॥
इन्द्रा युवं वरुणा दिद्युमस्मिन्नोजिष्ठमुग्रा नि वधिष्टं वज्रम्।
यो नो दुरेवो वृकतिर्दभीतिस्तस्मिन्निमाथामभिभूत्योजः ॥ ४ ॥
इन्द्रा युवं वरुणा भूतमस्या धियः प्रेतारा वृषभेव धेनोः।
सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

तोके हिते तनय उर्वरासु सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये ।
इन्द्रा नो अत्र वरुणा स्यातामवोभिर्दस्मा परितक्म्यायाम् ॥ ६ ॥
युवामिद्ध्यवसे पूर्व्याय परि प्रभूती गविषः स्वापी ।
वृणीमहे सख्याय प्रियाय शूरा मंहिष्ठा पितरेव शंभू ॥ ७ ॥
ता वां धियोऽवसे वाजयन्तीरा जिं न जग्मुर्युवयूः सुदानू ।
श्रिये न गाव उप सोममस्थुरिन्द्रं गिरो वरुणं मे मनीषाः ॥ ८ ॥
इमा इन्द्रं वरुणं मे मनीषा अग्मन्नुप द्रविणमिच्छमानाः ।
उपेमस्थुर्जोष्टारइव वस्वो रघ्वीरिव श्रवसो भिक्षमाणाः ॥ ९ ॥
अश्व्यस्य त्मना रथ्यस्य पुष्टेर्नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।
ता चक्राणा ऊतिभिर्नव्यसीभिरस्मत्रा रायो नियुतः सचन्ताम् ॥ १० ॥
आ नो बृहन्ता बृहतीभिरूती इन्द्र यातं वरुण वाजसातौ ।
यद्दिद्यवः पृतनासु प्रक्रीळान्तस्यं वां स्याम सनितारं आजेः ॥ ११ ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः ॥ देवता—१-६ आत्मा; ७-१० इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१-४, ६, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्पङ्क्तिः; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६-१० धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥

मम द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य विश्वायोर्विश्वे अमृता यथा नः ।
क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः ॥ १ ॥
अहं राजा वरुणो मह्यं तान्यसुर्याणि प्रथमा धारयन्त ।
क्रतुं सचन्ते वरुणस्य देवा राजामि कृष्टेरुपमस्य वव्रेः ॥ २ ॥
अहमिन्द्रो वरुणस्ते महित्वोर्वी गभीरे रजसी सुमेके ।
त्वष्टेव विश्वा भुवनानि विद्वान्त्समैरयं रोदसी धारयं च ॥ ३ ॥
अहमपो अपिन्वमुक्षमाणा धारयं दिवं सदन ऋतस्य ।
ऋतेन पुत्रो अदितेर्ऋतावोत त्रिधातु प्रथयद्वि भूम ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां नरः स्वश्वा वाजयन्तो मां वृताः समरणे हवन्ते।
कृणोम्याजिं मघवाहमिन्द्र इयर्मि रेणुमभिभूत्योजाः॥ ५॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

अहं ता विश्वा चकरं नकिर्मा दैव्यं सहो वरते अप्रतीतम्।
यन्मा सोमासो ममदन्यदुक्थोभे भयेते रजसी अपारे॥ ६॥
विदुष्टे विश्वा भुवनानि तस्य ता प्र ब्रवीषि वरुणाय वेधः।
त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान्त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्॥ ७॥
अस्माकमत्र पितरस्त आसन्त्सप्त ऋषयो दौर्गहे बध्यमाने।
त आयजन्त त्रसदस्युमस्या इन्द्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम् ॥ ८॥
पुरुकुत्सानी हि वामदाशद्व्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।
अथा राजानं त्रसदस्युमस्या वृत्रहणं ददथुरर्धदेवम् ॥ ९॥
राया वयं ससवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः।
तां धेनुमिन्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्॥ १०॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३, ५-७ धैवतः; ४ पञ्चमः॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

क उ श्रवत्कतमो यज्ञियानां वन्दारु देवः कतमो जुषाते।
कस्येमां देवीममृतेषु प्रेष्ठां हृदि श्रेषाम् सुष्टुतिं सुहव्याम्॥ १॥
को मृळाति कतम आगमिष्ठो देवानामु कतमः शंभविष्ठः ।
रथं कमाहुर्द्रवदश्वमाशुं यं सूर्यस्य दुहितावृणीत ॥ २॥
मक्षू हि ष्मा गच्छथ ईवतो द्यूनिन्द्रो न शक्तिं परितक्म्यायाम्।
दिव आजाता दिव्या सुपर्णा कया शचीनां भवथः शचिष्ठा॥ ३॥
का वां भूदुपमातिः कया न आश्विना गमथो हूयमाना।
को वां महश्चित्त्यजसो अभीक उरुष्यतं माध्वी दस्रा न ऊती॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरु वां रथः परि नक्षति द्यामा यत्समुद्रादभि वर्तते वाम्।
मध्वा माध्वी मधु वां प्रुषायन्यत्सीं वां पृक्षो भुरजन्त पक्वाः॥ ५॥
सिन्धुर्ह वां रसया सिञ्चदश्वान्घृणा वयोऽरुषासः परि ग्मन्।
तदू षु वामजिरं चेति यानं येन पती भवथः सूर्यायाः॥ ६॥
इहेह यद्वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना।
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्॥ ७॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—पुरुमीळ्हाजमीळ्हौ सौहोत्रौ॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-३, ५-७ धैवतः; ४ पञ्चमः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

तं वां रथं वयमद्या हुवेम पृथुज्रयमश्विना संगतिं गोः।
यः सूर्यां वहति वन्धुरायुर्गिर्वाहसं पुरुतमं वसूयुम्॥ १॥
युवं श्रियमश्विना देवता तां दिवो नपाता वनथः शचीभिः।
युवोर्वपुरभि पृक्षः सचन्ते वहन्ति यत्ककुहासो रथे वाम्॥ २॥
को वामद्या करते रातहव्य ऊतये वा सुतपेयाय वार्कैः।
ऋतस्य वा वनुषे पूर्व्याय नमो येमानो अश्विना ववर्तत्॥ ३॥
हिरण्ययेन पुरुभू रथेनेमं यज्ञं नासत्योप यातम्।
पिबाथ इन्मधुनः सोम्यस्य दधथो रत्नं विधते जनाय॥ ४॥
आ नो यातं दिवो अच्छा पृथिव्या हिरण्ययेन सुवृता रथेन।
मा वामन्ये नि यमन्देवयन्तः सं यद्ददे नाभिः पूर्व्या वाम्॥ ५॥
नू नो रयिं पुरुवीरं बृहन्तं दस्रा मिमाथामुभयेष्वस्मे।
नरो यद्वामश्विना स्तोममावन्त्सधस्तुतिमाजमीळ्हासो अग्मन्॥ ६॥
इहेह यद्वां समना पपृक्षे सेयमस्मे सुमतिर्वाजरत्ना।
उरुष्यतं जरितारं युवं ह श्रितः कामो नासत्या युवद्रिक्॥ ७॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, ३, ४ जगती; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ निचृज्जगती; ६ विराड्जगती; ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-६ निषादः; २, ७ धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

एष स्य भानुरुदियर्ति युज्यते रथः परिज्मा दिवो अस्य सानवि।
पृक्षासो अस्मिन्मिथुना अधि त्रयो दृतिस्तुरीयो मधुनो वि रप्शते ॥ १ ॥
उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ईरते रथा अश्वास उषसो व्युष्टिषु।
अपोर्णुवन्तस्तम आ परीवृतं स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः ॥ २ ॥
मध्वः पिबतं मधुपेभिरासभिरुत प्रियं मधुने युञ्जाथां रथम्।
आ वर्तनिं मधुना जिन्वथस्पथो दृतिं वहेथे मधुमन्तमश्विना ॥ ३ ॥
हंसासो ये वां मधुमन्तो अस्त्रिधो हिरण्यपर्णा उहुव उषर्बुधः।
उदप्रुतो मन्दिनो मन्दिनिस्पृशो मध्वो न मक्षः सवनानि गच्छथः ॥ ४ ॥
स्वध्वरासो मधुमन्तो अग्नय उस्रा जरन्ते प्रति वस्तोरश्विना।
यन्निक्तहस्तस्तरणिर्विचक्षणः सोमं सुषाव मधुमन्तमद्रिभिः ॥ ५ ॥
आकेनिपासो अहभिर्दविध्वतः स्वर्ण शुक्रं तन्वन्त आ रजः।
सूरश्चिदश्वान्युयुजान ईयते विश्वाँ अनु स्वधया चेतथस्पथः ॥ ६ ॥
प्र वामवोचमश्विना धियंधा रथः स्वश्वो अजरो यो अस्ति।
येन सद्यः परि रजांसि याथो हविष्मन्तं तरणिं भोजमच्छ ॥ ७ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः [४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रवायू ॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ३, ५-७ गायत्री; ४ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अग्रं पिबा मधूनां सुतं वायो दिविष्टिषु। त्वं हि पूर्वपा असि ॥ १ ॥
शतेना नो अभिष्टिभिर्नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः। वायो सुतस्य तृम्पतम् ॥ २ ॥
आ वां सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः। वहन्तु सोमपीतये ॥ ३ ॥
रथं हिरण्यवन्धुरमिन्द्रवायू स्वध्वरम्। आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ॥ ४ ॥
रथेन पृथुपाजसा दाश्वांसमुप गच्छतम्। इन्द्रवायू इहा गतम् ॥ ५ ॥
इन्द्रवायू अयं सुतस्तं देवेभिः सजोषसा। पिबतं दाशुषो गृहे ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इह प्रयाणमस्तु वामिन्द्रवायू विमोचनम्। इह वां सोमपीतये ॥ ७ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१ वायुः; २-४ इन्द्रवायू ॥ छन्दः—१, ३ अनुष्टुप्; २ भुरिगुष्णिक्; ४ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४ गान्धारः; २ ऋषभः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु।
आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता ॥ १ ॥
इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः ।
युवां हि यन्तीन्दवो निम्नमापो न सध्र्यक् ॥ २ ॥
वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती ।
नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ॥ ३ ॥
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा ।
अस्मे ता यज्ञवाहसेन्द्रवायू नि यच्छतम् ॥ ४ ॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—वायुः ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३-५ भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

विहि होत्रा अवीता विपो न रायो अर्यः ।
वायवा चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये ॥ १ ॥
निर्युवाणो अशस्तीर्नियुत्वाँ इन्द्रसारथिः ।
वायवा चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये ॥ २ ॥
अनु कृष्णे वसुधिती येमाते विश्वपेशसा ।
वायवा चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये ॥ ३ ॥
वहन्तु त्वा मनोयुजो युक्तासो नवतिर्नव ।
वायवा चन्द्रेण रथेन याहि सुतस्य पीतये ॥ ४ ॥
वायो शतं हरीणां युवस्व पोष्याणाम् ।
उत वा ते सहस्त्रिणो रथ आ यातु पाजसा ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २-६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

इदं वामास्ये हविः प्रियमिन्द्राबृहस्पती। उक्थं मदश्च शस्यते ॥ १ ॥
अयं वां परि षिच्यते सोम इन्द्राबृहस्पती। चारुर्मदाय पीतये ॥ २ ॥
आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम्। सोमपा सोमपीतये ॥ ३ ॥
अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनम्। अश्वावन्तं सहस्त्रिणम् ॥ ४ ॥
इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर्हवामहे। अस्य सोमस्य पीतये ॥ ५ ॥
सोममिन्द्राबृहस्पती पिबतं दाशुषो गृहे। मादयेथां तदोकसा ॥ ६ ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१-९ बृहस्पतिः; १०, ११, इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१-३, ६, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५, ११, विराट्त्रिष्टुप्; ८, १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

यस्तस्तम्भ सहसा वि ज्मो अन्तान्बृहस्पतिस्त्रिषधस्थो रवेण।
तं प्रत्नास ऋषयो दीध्यानाः पुरो विप्रा दधिरे मन्द्रजिह्वम् ॥ १ ॥
धुनेतयः सुप्रकेतं मदन्तो बृहस्पते अभि ये नस्ततस्त्रे ।
पृषन्तं सृप्रमदब्धमूर्वं बृहस्पते रक्षतादस्य योनिम् ॥ २ ॥
बृहस्पते या परमा परावदत आ त ऋतस्पृशो नि षेदुः।
तुभ्यं खाता अवता अद्रिदुग्धा मध्वः श्चोतन्त्यभितो विरप्शम् ॥ ३ ॥
बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्।
सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिरधमत्तमांसि ॥ ४ ॥
स सुष्टुभा स ऋक्वता गणेन वलं रुरोज फलिगं रवेण ।
बृहस्पतिरुस्त्रिया हव्यसूदः कनिक्रदद्वावशतीरुदाजत् ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

एवा पित्रे विश्वदेवाय वृष्णे यज्ञैर्विधेम नमसा हविर्भिः।
बृहस्पते सुप्रजा वीरवन्तो वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स इद्राजा प्रतिजन्यानि विश्वा शुष्मेण तस्थावभि वीर्येण।
बृहस्पतिं यः सुभृतं बिभर्ति वल्गूयति वन्दते पूर्वभाजम्॥ ७॥
स इत्क्षेति सुधित ओकसि स्वे तस्मा इळा पिन्वते विश्वदानीम्।
तस्मै विशः स्वयमेवा नमन्ते यस्मिन्ब्रह्मा राजनि पूर्व एति॥ ८॥
अप्रतीतो जयति सं धनानि प्रतिजन्यान्युत या सजन्या।
अवस्यवे यो वरिवः कृणोति ब्रह्मणे राजा तमवन्ति देवाः॥ ९॥
इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पतेऽस्मिन्यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू।
आ वां विशन्त्विन्दवः स्वाभुवोऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम्॥ १०॥
बृहस्पत इन्द्र वर्धतं नः सचा सा वां सुमतिर्भूत्वस्मे ।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरन्धीर्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ॥ ११॥

इति तृतीयाऽष्टके सप्तमोऽध्यायः॥

अथ तृतीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, ५, ८ त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६, ७, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; १० भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-९, ११ धैवतः; २, १० पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

इदमु त्यत्पुरुतमं पुरस्ताज्ज्योतिस्तमसो वयुनावदस्थात्।
नूनं दिवो दुहितरो विभातीर्गातुं कृणवन्नुषसो जनाय॥ १॥
अस्थुरु चित्रा उषसः पुरस्तान्मिताइव स्वरवोऽध्वरेषु।
व्यू व्रजस्य तमसो द्वारोच्छन्तीरव्रञ्छुचयः पावकाः॥ २॥
उच्छन्तीरद्य चितयन्त भोजाजराँधोदेयायोषसो मघोनीः।
अचित्रे अन्तः पणयः ससन्त्वबुध्यमानास्तमसो विमध्ये॥ ३॥
कुवित्स देवीः सनयो नवो वा यामो बभूयादुषसो वो अद्य।
येना नवग्वे अङ्गिरे दशग्वे सप्तास्ये रेवती रेवदूष॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भिरश्वैः परिप्रयाथ भुवनानि सद्यः।
प्रबोधयन्तीरुषसः ससन्तं द्विपाच्चतुष्पाच्चरथाय जीवम्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

क्व स्विदासां कतमा पुराणी यया विधाना विदधुर्ऋभूणाम्।
शुभं यच्छुभ्रा उषसश्चरन्ति न वि ज्ञायन्ते सदृशीरजुर्याः॥ ६॥
ता घा ता भद्रा उषसः पुरासुरभिष्टिद्युम्ना ऋतजातसत्याः।
यास्वीजानः शशमान उक्थैः स्तुवञ्छंसन्द्रविणं सद्य आप॥ ७॥
ता आ चरन्ति समना पुरस्तात्समानतः समना पप्रथानाः।
ऋतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते॥ ८॥
ता इन्वेव समना समानीरमीतवर्णा उषसश्चरन्ति ।
गूहन्तीरभ्वमसितं रुशद्भिः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः॥ ९॥
रयिं दिवो दुहितरो विभातीः प्रजावन्तं यच्छतास्मासु देवीः।
स्योनादा वः प्रतिबुध्यमानाः सुवीर्यस्य पतयः स्याम॥ १०॥
तद्द्यौ दिवो दुहितरो विभातीरुप ब्रुव उषसो यज्ञकेतुः।
वयं स्याम यशसो जनेषु तद् द्यौश्च धत्तां पृथिवी च देवी॥ ११॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१-४, ६, निचृद्गायत्री; ५, ७, गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

प्रति ष्या सूनरी जनी व्यूच्छन्ती परि स्वसुः। दिवो अदर्शि दुहिता॥ १॥
अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी। सखाभूदश्विनोरुषाः॥ २॥
उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि। उतोषो वस्व ईशिषे॥ ३॥
यावयद् द्वेषसं त्वा चिकित्वित्सूनृतावरि। प्रति स्तोमैरभुत्स्महि॥ ४॥
प्रति भद्रा अदृक्षत गवां सर्गा न रश्मयः। ओषा अप्रा उरु ज्रयः॥ ५॥
आ पप्रुषी विभावरि व्यावर्ज्योतिषा तमः। उषो अनु स्वधामव॥ ६॥
आ द्यां तनोषि रश्मिभिरान्तरिक्षमुरु प्रियम्। उषः शुक्रेण शोचिषा॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—सविता॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृज्जगती; २ विराड्जगती; ४ स्वराड्जगती; ५ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

तद्देवस्य सवितुर्वार्यं महद् वृणीमहे असुरस्य प्रचेतसः।
छर्दिर्येन दाशुषे यच्छति त्मना तन्नो महाँ उदयान्देवो अक्तुभिः॥ १॥
दिवो धर्ता भुवनस्य प्रजापतिः पिशङ्गं द्रापिं प्रति मुञ्चते कविः।
विचक्षणः प्रथयन्नापृणन्नुर्वजीजनत्सविता सुम्नमुक्थ्यम्॥ २॥
आप्रा रजांसि दिव्यानि पार्थिवा श्लोकं देवः कृणुते स्वाय धर्मणे।
प्र बाहू अस्त्राक्सविता सवीमनि निवेशयन्प्रसुवन्नक्तुभिर्जगत्॥ ३॥
अदाभ्यो भुवनानि प्रचाकशद् व्रतानि देवः सविताभि रक्षते।
प्रास्त्रांग्बाहू भुवनस्य प्रजाभ्यो धृतव्रतो महो अज्मस्य राजति॥ ४॥
त्रिरन्तरिक्षं सविता महित्वना त्री रजांसि परिभूस्त्रीणि रोचना।
तिस्रो दिवः पृथिवीस्तिस्र इन्वति त्रिभिर्व्रतैरभि नो रक्षति त्मना॥ ५॥
बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेशनो जगतः स्थातुरुभयस्य यो वशी।
स नो देवः सविता शर्म यच्छत्वस्मे क्षयाय त्रिवरूथमंहसः॥ ६॥
आगन्देव ऋतुभिर्वर्धतु क्षयं दधातु नः सविता सुप्रजामिषम्।
स नः क्षपाभिरहभिश्च जिन्वतु प्रजावन्तं रयिमस्मे समिन्वतु॥ ७॥

[५४] चतुःपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—सविता॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३-५ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

अभूद्देवः सविता वन्द्यो नु न इदानीमह्न उपवाच्यो नृभिः।
वि यो रत्ना भजति मानवेभ्यः श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा दधत्॥ १॥
देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्योऽमृतत्वं सुवसि भागमुत्तमम्।
आदिद्वामानं सवितर्व्यूर्णुषेऽनूचीना जीविता मानुषेभ्यः॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचित्ती यच्चकृमा दैव्ये जनेदीनैर्दक्षैः प्रभूती पूरुषत्वता।
देवेषु च सवितर्मानुषेषु च त्वं नो अत्र सुवतादनागसः॥ ३॥
न प्रमियें सवितुर्दैव्यस्य तद्यथा विश्वं भुवनं धारयिष्यति।
यत्पृथिव्या वरिमन्ना स्वङ्गुरिर्वर्ष्मन्दिवः सुवति सत्यमस्य तत्॥ ४॥
इन्द्रज्येष्ठान्बृहद्भ्यः पर्वतेभ्यः क्षयाँ एभ्यः सुवसि पस्त्यावतः।
यथायथा पतयन्तो वियेमिर एवैव तस्थुः सवितः सवाय ते॥ ५॥
ये ते त्रिरहन्त्सवितः सवासो दिवेदिवे सौभगमासुवन्ति।
इन्द्रो द्यावापृथिवी सिन्धुरद्भिरादित्यैर्नो अदितिः शर्म यंसत्॥ ६॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५ भुरिक्पङ्क्तिः; ६, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ८, ९ विराड्गायत्री; १० गायत्री॥ स्वरः—१, २, ४ धैवतः; ३, ५-७ पञ्चमः; ८-१० षड्जः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

को वस्त्राता वसवः को वरूता द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नः।
सहीयसो वरुण मित्र मर्तात्को वोऽध्वरे वरिवो धाति देवाः॥ १॥
प्र ये धामानि पूर्व्याण्यर्चान्वि यदुच्छान्विंयोतारो अमूराः।
विधातारो वि ते दधुरजस्रा ऋतधीतयो रुरुचन्त दस्माः॥ २॥
प्र पस्त्याऽअदितिं सिन्धुमर्कैः स्वस्तिमीळे सख्याय देवीम्।
उभे यथा नो अहनी निपात उषासानक्ता करतामदब्धे॥ ३॥
व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्थामिषस्पतिः सुवितं गातुमग्निः।
इन्द्राविष्णू नृवदु षु स्तवाना शर्म नो यन्तमवद्वरूथम्॥ ४॥
आ पर्वतस्य मरुतामवांसि देवस्य त्रातुरवि भगस्य।
पात्पतिर्जन्यादंहसो नो मित्रो मित्रियादुत नं उरुष्येत्॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

नू रोदसी अहिना बुध्न्येन स्तुवीत देवी अभ्येभिरिष्टैः।
समुद्रं न संचरणे सनिष्यवो धर्मस्वरसो नद्योऽअर्षन्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे॒वैर्नो॑ दे॒व्यदि॑ति॒र्नि पा॑तु दे॒वस्त्रा॒ता त्रा॑यता॒मप्र॑युच्छन् ।
न॒हि मि॒त्रस्य॒ वरु॑णस्य धा॒सिमर्हा॑मसि प्र॒मियं॒ सान्व॒ग्नेः ॥७॥
अ॒ग्निरी॑शे वस॒व्य॑स्या॒ग्निर्म॒हः सौभ॑गस्य। तान्य॒स्मभ्यं॑ रासते॥८॥
उषो॑ मघो॒न्या व॑ह॒ सूनृ॑ते॒ वार्या॑ पु॒रु। अ॒स्मभ्यं॑ वाजिनीवति ॥९॥
तत्सु नः॑ सवि॒ता भगो॒ वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा। इन्द्रो॑ नो॒ राध॒सा ग॑मत्॥१०॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृद्गायत्री; ६ विराड्गायत्री; ७ गायत्री॥ स्वरः—१, २, ४ धैवतः; ३ पञ्चमः; ५-७ षड्जः॥

अथाष्टमो वर्गः॥

म॒ही द्यावा॑पृथि॒वी इ॒ह ज्येष्ठे॑ रु॒चा भ॑वतां शु॒चय॑द्भिर॒र्कैः ।
यत्सीं॒ वरि॑ष्ठे बृह॒ती वि॑मि॒न्वन्रु॒वद्धो॒क्षा प॑प्रथा॒नेभि॒रेवैः॑ ॥१॥
दे॒वी दे॒वेभि॑र्यज॒ते यज॑त्रै॒रमि॑नती तस्थतुरु॒क्षमा॑णे ।
ऋ॒ताव॑री अ॒द्रुहा॑ दे॒वपु॑त्रे य॒ज्ञस्य॑ ने॒त्री शु॒चय॑द्भिर॒र्कैः ॥२॥
स इत्स्वपा॒ भुव॑नेष्वास॒ य इ॒मे द्यावा॑पृथि॒वी ज॒जान॑ ।
उ॒र्वी ग॑भी॒रे रज॑सी सु॒मेके॑ अवं॒शे धीरः॒ शच्या॒ समै॑रत् ॥३॥
नू रो॑दसी बृ॒हद्भि॑र्नो॒ वरू॑थैः॒ पत्नी॑वद्भिरि॒षय॑न्ती स॒जोषाः॑।
उ॒रू॒ची विश्वे॑ यज॒ते नि पा॑तं धि॒या स्या॑म र॒थ्यः॑ सदा॒साः॥४॥
प्र वां॒ महि॒ द्यवी॑ अ॒भ्युप॑स्तुतिं भरामहे। शुची॒ उप॒ प्रश॑स्तये॥५॥
पु॒ना॒ने त॒न्वा॑ मि॒थः स्वेन॒ दक्षे॑ण राजथः। ऊ॒ह्याथे॑ स॒नादृ॒तम्॥६॥
म॒ही मि॒त्रस्य॑ साधथ॒स्तर॑न्ती॒ पिप्र॑ती ऋ॒तम्। परि॑ य॒ज्ञं नि षे॑दथुः॥७॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः॥ देवता—१-३ क्षेत्रपतिः; ४ शुनः; ५, ८ शुनासीरौ; ६, ७ सीता॥ छन्दः—१, ४, ६, ७ अनुष्टुप्; २, ३, ८ त्रिष्टुप्; ५ पुरउष्णिक्॥ स्वरः—१, ४, ६, ७ गान्धारः; २, ३, ८ धैवतः; ५ ऋषभः॥

अथ नवमो वर्गः॥९॥

क्षेत्र॑स्य॒ पति॑ना व॒यं हि॒तेने॑व जयामसि ।
गामश्वं॑ पोषयि॒त्न्वा स नो॑ मृळाती॒दृशे॑ ॥१॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

क्षेत्रस्य पते मधुमन्तमूर्मिं धेनुरिव पयो अस्मासु धुक्ष्व ।
मधुश्चुतं घृतमिव सुपूतमृतस्य नः पतयो मृळयन्तु ॥ २ ॥
मधुमतीरोषधीर्द्याव आपो मधुमन्नो भवत्वन्तरिक्षम् ।
क्षेत्रस्य पतिर्मधुमान्नो अस्त्वरिष्यन्तो अन्वेनं चरेम ॥ ३ ॥
शुनं वाहाः शुनं नरः शुनं कृषतु लाङ्गलम् ।
शुनं वरत्रा बध्यन्तां शुनमष्ट्रामुदिङ्गय ॥ ४ ॥
शुनासीराविमां वाचं जुषेथां यद्दिवि चक्रथुः पयः ।
तेनेमामुप सिञ्चतम् ॥ ५ ॥
अर्वाची सुभगे भव सीते वन्दामहे त्वा ।
यथा नः सुभगाससि यथा नः सुफलाससि ॥ ६ ॥
इन्द्रः सीतां नि गृह्णातु तां पूषानु यच्छतु ।
सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥ ७ ॥
शुनं नः फाला वि कृषन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अभि यन्तु वाहैः ।
शुनं पर्जन्यो मधुना पयोभिः शुनासीरा शुनमस्मासु धत्तम् ॥ ८ ॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः सूर्यो वाऽपो वा गावो वा घृतं वा ॥ छन्दः—१, ६, ७ निचृत् त्रिष्टुप्; २, ४, ८-१० त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ निचृदुष्णिक्; ११ स्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४, ६-१० धैवतः; ३ पञ्चमः; ५ ऋषभः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारदुपांशुना समममृतत्वमानट् ।
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः ॥ १ ॥
वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः ।
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद्गौर एतत् ॥ २ ॥
चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्।
इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः ॥ ४ ॥
एता अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ।
घृतस्य धारा अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् ॥ ५ ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

सम्यक्स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः।
एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगाइव क्षिपणोरीषमाणाः ॥ ६ ॥
सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः ॥ ७ ॥
अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्।
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः ॥ ८ ॥
कन्याइव वहतुमेतवा उ अज्ज्यज्जाना अभि चाकशीमि ।
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते ॥ ९ ॥
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त।
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते ॥ १० ॥
धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि।
अपामनीके समिथे य आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऊर्मिम् ॥ ११ ॥

इति चतुर्थं मण्डलम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—बुधगविष्ठिरावात्रेयौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ७, १० त्रिष्टुप्; ५, ८ स्वसट्पङ्क्तिः; ९ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६, ७, १०-१२ धैवतः; ५, ८, ९ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ।
यह्वाइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ ॥ १ ॥
अबोधि होता यजथाय देवानूर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात् ।
समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान्देवस्तमसो निरमोचि ॥ २ ॥
यदीं गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचिभिर्गोभिरग्निः ।
आद्दक्षिणा युज्यते वाजयन्त्युत्तानामूर्ध्वो अधयज्जुहूभिः ॥ ३ ॥
अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षूंषीव सूर्ये सं चरन्ति ।
यदीं सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नाम् ॥ ४ ॥
जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्नां हितो हितेष्वरुषो वनेषु ।
दमेदमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता नि षसादा यजीयान् ॥ ५ ॥
अग्निर्होता न्यसीदद्यजीयानुपस्थे मातुः सुरभा उ लोके ।
युवा कविः पुरुनिःष्ठ ऋतावा धर्ता कृष्टीनामुत मध्य इद्धः ॥ ६ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

प्र णु त्यं विप्रमध्वरेषु साधुमग्निं होतारमीळते नमोभिः ।
आ यस्ततान रोदसी ऋतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनं घृतेन ॥ ७ ॥
मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः ।
सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजा विश्वाँ अग्ने सहसा प्रास्यन्यान् ॥ ८ ॥
प्र सद्यो अग्ने अत्येष्यन्यानाविर्यस्मै चारुतमो बभूथ ।
ईळेन्यो वपुष्यो विभावा प्रियो विशामतिथिर्मानुषीणाम् ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलिमग्रे अन्तित ओत दूरात्।
आ भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि बृहत्ते अग्रे महि शर्म भद्रम्॥ १०॥
आद्य रथं भानुमो भानुमन्तमग्ने तिष्ठ यजतेभिः समन्तम्।
विद्वान्पथीनामुर्विन्तरिक्षमेह देवान्हविरद्याय वक्षि ॥ ११॥
अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे।
गविष्ठिरो नमसा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्ममुरुव्यञ्चमश्रेत्॥ १२॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३-८, १०-१२ कुमार आत्रेयो, वृशो वा जार उभौ वा; २, ९ वृशो जारः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ७, ८ त्रिष्टुप्; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ४, ५, ९, १० निचृत्-त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ११ विराट्त्रिष्टुप्; १२ निचृदतिजगती॥ स्वरः—१, ३-५, ७-११ धैवतः; २, ६ पञ्चमः; १२ निषादः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहा बिभर्ति न ददाति पित्रे।
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ॥ १॥
क्रमेतं त्वं युवते कुमारं पेषी बिभर्षि महिषी जजान।
पूर्वीर्हि गर्भैः शरदो ववर्धापश्यं जातं यदसूत माता॥ २॥
हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात्क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम् ।
ददानो अस्मा अमृतं विपृक्वत्किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुक्थाः॥ ३॥
क्षेत्रादपश्यं सनुतश्चरन्तं सुमद्यूथं न पुरु शोभमानम्।
न ता अगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्नीरिद्युवतयो भवन्ति॥ ४॥
के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर्न येषां गोपा अरणश्चिदास।
य ईं जगृभुरव ते सृजन्त्वाजाति पश्व उप नश्चिकित्वान्॥ ५॥
वसां राजानं वसतिं जनानामरातयो नि दधुर्मर्त्येषु।
ब्रह्माण्यत्रेरव तं सृजन्तु निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु॥ ६॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

शुनश्चिच्छेपं निदितं सहस्राद्यूपादमुञ्चो अशमिष्ट हि षः।
एवास्मदग्ने वि मुमुग्धि पाशान्होतश्चिकित्व इह तू निषद्य॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation.Chennai and eGangotri

हूणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतपा उवाच।
इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम्॥ ८॥
वि ज्योतिषा बृहता भात्यग्निराविर्विश्वानि कृणुते महित्वा।
प्रादेवीर्मायाः सहते दुरेवाः शिशीते शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे॥ ९॥
उत स्वानासो दिवि षन्त्वग्नेस्तिग्मायुधा रक्षसे हन्तवा उ।
मदे चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः॥ १०॥
एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्।
यदीदग्ने प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीरप एना जयेम॥ ११॥
तुविग्रीवो वृषभो वावृधानोऽशत्रू१र्यः समजाति वेदः।
इतीममग्निममृता अवोचन्बर्हिष्मते मनवे शर्म यंसद्बर्हिष्मते
मनवे शर्म यंसत्॥ १२॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २, ३, ५, ९, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, १० त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्त्रिष्टुप्; ७, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ११ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ११ पञ्चमः; २-१०, १२ धैवतः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

त्वमग्ने वरुणो जायसे यत्त्वं मित्रो भवसि यत्समिद्धः।
त्वे विश्वे सहसस्पुत्र देवास्त्वमिन्द्रो दाशुषे मर्त्याय॥ १॥
त्वमर्यमा भवसि यत्कनीनां नाम स्वधावन्गुह्यं बिभर्षि।
अञ्जन्ति मित्रं सुधितं न गोभिर्यद्दम्पती समनसा कृणोषि॥ २॥
तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त रुद्र यत्ते जनिम चारु चित्रम्।
पदं यद्विष्णोरुपमं निधायि तेन पासि गुह्यं नाम गोनाम्॥ ३॥
तव श्रिया सुदृशो देव देवाः पुरू दधाना अमृतं सपन्त।
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्दशस्यन्त उशिजः शंसमायोः॥ ४॥
न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः।
विशश्च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद्देव मर्तान्॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वयमग्ने वनुयाम त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमानाः।
वयं समर्ये विदथेष्वह्नां वयं राया सहसस्पुत्र मर्तान्॥ ६॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

यो न आगो अभ्येनो भरात्यधीदघमघशंसे दधात।
जही चिकित्वो अभिशस्तिमेतामग्ने यो नो मर्चयति द्वयेन॥ ७॥
त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यैः।
संस्थे यदग्न ईयसे रयीणां देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमानः॥ ८॥
अव स्पृधि पितरं योधि विद्वान्पुत्रो यस्ते सहसः सून ऊहे।
कदा चिकित्वो अभि चक्षसे नोऽग्ने कदाँ ऋतचिद्यातयासे॥ ९॥
भूरि नाम वन्दमानो दधाति पिता वसो यदि तज्जोषयासे।
कुविद्देवस्य सहसा चकानः सुम्नमग्निर्वनते वावृधानः॥ १०॥
त्वमङ्ग जरितारं यविष्ठ विश्वान्यग्ने दुरितातिं पर्षि।
स्तेना अदृश्रन्रिपवो जनासोऽज्ञातकेता वृजिना अभूवन्॥ ११॥
इमे यामासस्त्वद्रिगभूवन्वसवे वा तदिदागो अवाचि।
नाहायमग्निरभिशस्तये नो न रीषते वावृधानः परा दात्॥ १२॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, १०, ११ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ९ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४, ७, १०, ११ पञ्चमः; २, ३, ५, ६, ८, ९ धैवतः॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

त्वामग्ने वसुपतिं वसूनामभि प्र मन्दे अध्वरेषु राजन्।
त्वया वाजं वाजयन्तो जयेमाभि ष्याम पृत्सुतीर्मर्त्यानाम्॥ १॥
हव्यवाळग्निरजरः पिता नो विभुर्विभावा सुदृशीको अस्मे।
सुगार्हपत्याः समिषो दिदीह्यस्मद्र्यक्सं मिमीहि श्रवांसि॥ २॥
विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम्।
नि होतारं विश्वविदं दधिध्वे स देवेषु वनते वार्याणि॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुषस्वाग्न इळया सजोषा यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य।
जुषस्व नः समिधं जातवेद आ च देवान्हविरद्याय वक्षि॥ ४॥
जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान्।
विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामा भरा भोजनानि॥ ५॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

वधेन दस्युं प्र हि चातयस्व वयः कृण्वानस्तन्वे३ स्वायै।
पिपर्षि यत्सहसस्पुत्र देवान्त्सो अग्ने पाहि नृतम वाजे अस्मान्॥ ६॥
वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे।
अस्मे रयिं विश्ववारं समिन्वास्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि॥ ७॥
अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व सहसः सूनो त्रिषधस्थ हव्यम्।
वयं देवेषु सुकृतः स्याम शर्मणा नस्त्रिवरूथेन पाहि॥ ८॥
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिं पर्षि।
अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानो३ऽस्माकं बोध्यविता तनूनाम्॥ ९॥
यस्त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानोऽमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि।
जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्॥ १०॥
यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम्।
अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति॥ ११॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः॥ देवता—आप्रियः॥ छन्दः—१, ५-७, ९, १० गायत्री; २ आर्च्युष्णिक्; ३, ८ निचृद्गायत्री; ४ पिपीलिकामध्यागायत्री; ११ विराड्गायत्री॥ स्वरः—१, ३-११ षड्जः; २ ऋषभः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

समिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे॥ १॥
नराशंसः सुषूदतीमं यज्ञमदाभ्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः॥ २॥
ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रमिह प्रियम्। सुखे रथेभिरूतये॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्णम्रदा वि प्रथस्वाभ्यर्का अनूषत। भवा नः शुभ्र सातये॥ ४॥
देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं सुप्रायणा न ऊतये। प्रप्र यज्ञं पृणीतन॥ ५॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

सुप्रतीके वयोवृधा यह्वी ऋतस्य मातरा। दोषामुषासमीमहे॥ ६॥
वातस्य पत्मन्नीळिता दैव्या होतारा मनुषः। इमं नो यज्ञमा गतम्॥ ७॥
इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः। बर्हिः सीदन्त्वस्रिधः॥ ८॥
शिवस्त्वष्टरिहा गहि विभुः पोष उत त्मना। यज्ञेयज्ञे न उदव॥ ९॥
यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि। तत्र हव्यानि गामय॥ १०॥
स्वाहाग्नये वरुणाय स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः। स्वाहा देवेभ्यो हविः॥ ११॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ८, ९ निचृत्पङ्क्तिः; २, ५ पङ्क्तिः; ३, ४ स्वराड्बृहती; ६, १० भुरिग्बृहती; ७ विराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ५, ७-९ पञ्चमः; ३, ४, ६, १० मध्यमः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः।
अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर॥ १॥
सो अग्निर्यो वसुर्गृणे सं यमायन्ति धेनवः।
समर्वन्तो रघुद्रुवः सं सुजातासः सूरय इषं स्तोतृभ्य आ भर॥ २॥
अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः।
अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिषं स्तोतृभ्य आ भर॥ ३॥
आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम्।
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर॥ ४॥
आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य शोचिषस्पते।
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु विश्वं पुष्यन्ति वार्यम्।
ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यन्त्यानुषगिषं स्तोतृभ्य आ भर॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव त्ये अग्ने अर्चयो महि व्राधन्त वाजिनः ।
ये पत्वभिः शफानां व्रजा भुरन्त गोनामिषं स्तोतृभ्य आ भर ॥७॥
नवा नो अग्न आ भर स्तोतृभ्यः सुक्षितीरिषः ।
ते स्याम य आनृचुस्त्वादूतासो दमेदम इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥८॥
उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो दर्वी श्रीणीष आसनि ।
उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥९॥
एवाँ अग्निमजुर्यमुर्गीर्भिर्यज्ञेभिरानुषक् ।
दधद्रत्नमे सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यमिषं स्तोतृभ्य आ भर ॥१०॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—इष आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ भुरिगनुष्टुप्; ४, ५, ८, ९ निचृदनुष्टुप्; ६, ७ स्वराडुष्णिक्; १० निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१-५, ८, ९ गान्धारः; ६, ७ ऋषभः; १० मध्यमः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

सखायः सं वः सम्यञ्चमिषं स्तोमं चाग्नये ।
वर्षिष्ठाय क्षितीनामूर्जो नप्त्रे सहस्वते ॥१॥
कुत्रा चिद्यस्य समृतौ रण्वा नरो नृषदने ।
अर्हन्तश्चिद्यमिन्धते संजनयन्ति जन्तवः ॥२॥
सं यदिषो वनामहे सं हव्या मानुषाणाम् ।
उत द्युम्नस्य शवस ऋतस्य रश्मिमा ददे ॥३॥
स स्मा कृणोति केतुमा नक्तं चिद् दूर आ सते ।
पावको यद्वनस्पतीन्प्र स्मा मिनात्यजरः ॥४॥
अव स्म यस्य वेषणे स्वेदे पथिषु जुह्वति ।
अभीमह स्वजेन्यं भूमा पृष्ठेव रुरुहुः ॥५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

यं मर्त्यः पुरुस्पृहं विदद्विश्वस्य धायसे ।
प्र स्वादनं पितूनामस्ततातिं चिदायवे ॥६॥
स हि ष्मा धन्वाक्षितं दाता न दात्या पशुः ।
हिरिश्मश्रुः शुचिदन्नृभुरनिभृष्टतविषिः ॥७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत्प्र स्वधितीव रीयते ।
सुषूरसूत माता क्राणा यदानशे भगम् ॥ ८ ॥
आ यस्ते सर्पिरासुतेऽग्ने शमस्ति धायसे ।
एषु द्युम्नमुत श्रव आ चित्तं मर्त्येषु धाः ॥ ९ ॥
इति चिन्मन्युमध्रिजस्त्वादातमा पशुं ददे ।
आदग्ने अपृणतोऽत्रिः सासह्यादस्यूनिषः सासह्यान्नॄन् ॥ १० ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—इष आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ४, निचृज्जगती; ६, ७ विराड्जगती ॥ स्वरः—१, २, ५ धैवतः; ३, ४, ६, ७ निषादः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

त्वामग्न ऋतायवः समीधिरे प्रत्नं प्रत्नास ऊतये सहस्कृत।
पुरुश्चन्द्रं यजतं विश्वधायसं दमूनसं गृहपतिं वरेण्यम् ॥ १ ॥
त्वामग्ने अतिथिं पूर्व्यं विशः शोचिष्केशं गृहपतिं नि षेदिरे।
बृहत्केतुं पुरुरूपं धनस्पृतं सुशर्माणं स्ववसं जरद्विषम् ॥ २ ॥
त्वामग्ने मानुषीरीळते विशो होत्राविदं विविचिं रत्नधातमम्।
गुहा सन्तं सुभग विश्वदर्शतं तुविष्वणसं सुयजं घृतश्रियम् ॥ ३ ॥
त्वामग्ने धर्णसिं विश्वधा वयं गीर्भिर्गृणन्तो नमसोप सेदिम।
स नो जुषस्व समिधानो अङ्गिरो देवो मर्तस्य यशसा सुदीतिभिः ॥ ४ ॥
त्वमग्ने पुरुरूपो विशेविशे वयो दधासि प्रत्नथा पुरुष्टुत।
पुरूण्यन्ना सहसा वि राजसि त्विषिः सा ते तित्विषाणस्य नाधृषे ॥ ५ ॥
त्वामग्ने समिधानं यविष्ठ्य देवा दूतं चक्रिरे हव्यवाहनम् ।
उरुज्रयसं घृतयोनिमाहुतं त्वेषं चक्षुर्दधिरे चोदयन्मति ॥ ६ ॥
त्वामग्ने प्रदिव आहुतं घृतैः सुम्नायवः सुषमिधा समीधिरे।
स वावृधान ओषधीभिरुक्षितोऽभि ज्रयांसि पार्थिवा वि तिष्ठसे ॥ ७ ॥

इति तृतीयाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥

इति तृतीयोऽष्टकः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थाऽष्टके प्रथमोऽध्यायः

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—गय आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ स्वराडुष्णिक्; २ निचृदनुष्टुप्; ३, ४ भुरिगुष्णिक्; ५ स्वराड्बृहती; ६ विराडनुष्टुप्; ७ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ४ ऋषभः; २, ६ गान्धारः; ५ मध्यमः; ७ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

त्वामग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईळते ।
मन्ये त्वा जातवेदसं स हव्या वक्ष्यानुषक् ॥ १॥
अग्निर्होता दास्वतः क्षयस्य वृक्तबर्हिषः ।
सं यज्ञासश्चरन्ति यं सं वाजासः श्रवस्यवः ॥ २॥
उत स्म यं शिशुं यथा नवं जनिष्टारणी ।
धर्तारं मानुषीणां विशामग्निं स्वध्वरम् ॥ ३॥
उत स्म दुर्गृभीयसे पुत्रो न ह्वार्याणाम् ।
पुरू यो दग्धासि वनाग्ने पशुर्न यवसे ॥ ४॥
अध स्म यस्यार्चयः समक्तुंयन्ति धूमिनः ।
यदीमह त्रितो दिव्युप ध्मातेव धमति शिशीते ध्मातरी यथा॥ ५॥
तवाहमग्न ऊतिभिर्मित्रस्य च प्रशस्तिभिः ।
द्वेषोयुतो न दुरिता तुर्याम मर्त्यानाम् ॥ ६॥
तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर ।
स क्षेपयत्स पोषयद्भुवद्वाजस्य सातय उतैधि पृत्सु नो वृधे॥ ७॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—गय आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ६ निचृदनुष्टुप्; २, ३ भुरिगुष्णिक्; ४ स्वराड्बृहती; ५ अनुष्टुप्; ७ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ५, ६ गान्धारः; २, ३ ऋषभः; ४ मध्यमः; ७ पञ्चमः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो ।
प्र नो राया परीणसा रत्सि वाजाय पन्थाम्॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं नो अग्ने अद्भुत क्रत्वा दक्षस्य मंहना ।
त्वे असुर्यं१मारुहत्क्राणा मित्रो न यज्ञियः ॥ २ ॥
त्वं नो अग्न एषां गयं पुष्टिं च वर्धय ।
ये स्तोमेभिः प्र सूरयो नरो मघान्यानशुः ॥ ३ ॥
ये अग्ने चन्द्र ते गिरः शुम्भन्त्यश्वराधसः ।
शुष्मेभिः शुष्मिणो नरो दिवश्चिद्येषां बृहत्सुकीर्तिर्बोधति त्मना ॥ ४ ॥
तव त्ये अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो यन्ति धृष्णुया ।
परिज्मानो न विद्युतः स्वानो रथो न वाजयुः ॥ ५ ॥
नू नो अग्न ऊतये सबाधसश्च रातये ।
अस्माकासश्च सूरयो विश्वा आशास्तरीषणिं ॥ ६ ॥
त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः स्तवान आ भर ।
होतर्विभ्वासहं रयिं स्तोतृभ्यः स्तवसे च न उतैधि पृत्सु नो वृधे ॥ ७ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५, निचृज्जगती; २ जगती; ४, ६ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्वि भाति भरतेभ्यः शुचिः ॥ १ ॥
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समीधिरे ।
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥ २ ॥
असंमृष्टो जायसे मात्रोः शुचिर्मन्द्रः कविरुदतिष्ठो विवस्वतः ।
घृतेन त्वावर्धयन्नग्न आहुत धूमस्ते केतुरभवद्दिवि श्रितः ॥ ३ ॥
अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु साधुयाग्निं नरो वि भरन्ते गृहेगृहे ।
अग्निर्दूतो अभवद्धव्यवाहनोऽग्निं वृणाना वृणते कविक्रतुम् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं वचस्तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे।
त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीरा पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च ॥ ५ ॥
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने।
स जायसे मथ्यमानः सहो महत्त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥ ६ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २, स्वराट्पङ्क्तिः; ३-५ त्रिष्टुप्; ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-६ धैवतः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

प्राग्नये बृहते यज्ञियाय ऋतस्य वृष्णे असुराय मन्म।
घृतं न यज्ञ आस्ये३ सुपूतं गिरं भरे वृषभाय प्रतीचीम् ॥ १ ॥
ऋतं चिकित्व ऋतमिच्चिकिद्ध्यृतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वीः।
नाहं यातुं सहसा न द्वयेन ऋतं सपाम्यरुषस्य वृष्णः ॥ २ ॥
कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन भुवो नवेदा उचथस्य नव्यः।
वेदा मे देव ऋतुपा ऋतूनां नाहं पतिं सनितुरस्य रायः ॥ ३ ॥
के ते अग्ने रिपवे बन्धनासः के पायवः सनिषन्त द्युमन्तः।
के धासिमग्ने अनृतस्य पान्ति क आसतो वचसः सन्ति गोपाः ॥ ४ ॥
सखायस्ते विषुणा अग्न एते शिवासः सन्तो अशिवा अभूवन्।
अधूर्षत स्वयमेते वचोभिर्ऋजूयते वृजिनानि ब्रुवन्तः ॥ ५ ॥
यस्ते अग्ने नमसा यज्ञमीट्ट ऋतं स पात्यरुषस्य वृष्णः।
तस्य क्षयः पृथुरा साधुरेतु प्रसर्स्रीणस्य नहुषस्य शेषः ॥ ६ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृद्गायत्री; २, ६ गायत्री; ३ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

अर्चन्तस्त्वा हवामहेऽर्चन्तः समिधीमहि। अग्ने अर्चन्त ऊतये ॥ १ ॥
अग्नेः स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः। देवस्य द्रविणस्यवः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा। स यक्षद्दैव्यं जनम्॥ ३॥
त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः। त्वया यज्ञं वि तन्वते॥ ४॥
त्वामग्ने वाजसातमं विप्रा वर्धन्ति सुष्टुतम्। स नो रास्व सुवीर्यम्॥ ५॥
अग्ने नेमिर्राँइव देवाँस्त्वं परिभूरसि। आ राधश्चित्रमृञ्जसे॥ ६॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४-६ निचृद्गायत्री; २ विराड्गायत्री; ३ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

अग्निं स्तोमेन बोधय समिधानो अमर्त्यम्। हव्या देवेषु नो दधत्॥ १॥
तमध्वरेष्वीळते देवं मर्ता अमर्त्यम्। यजिष्ठं मानुषे जने॥ २॥
तं हि शश्वन्त ईळते स्रुचा देवं घृतश्चुता। अग्निं हव्याय वोळ्हवे॥ ३॥
अग्निर्जातो अरोचत घ्नन्दस्यूञ्ज्योतिषा तमः। अविन्दद् गा अपः स्वः॥ ४॥
अग्निमीळेन्यं कविं घृतपृष्ठं सपर्यत। वेतु मे शृणवद्धवम्॥ ५॥
अग्निं घृतेन वावृधुः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम्। स्वाधीभिर्वचस्युभिः॥ ६॥

द्वितीयोऽनुवाकः [१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—धरुण आङ्गिरसः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ५ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ४ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ५ पञ्चमः; २-४ धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

प्र वेधसे कवये वेद्याय गिरं भरे यशसे पूर्व्याय।
घृतप्रसत्तो असुरः सुशेवो रायो धर्ता धरुणो वस्वो अग्निः॥ १॥
ऋतेन ऋतं धरुणं धारयन्त यज्ञस्य शाके परमे व्योमन्।
दिवो धर्मन्धरुणे सेदुषो नृञ्जातैरजाताँ अभि ये ननक्षुः॥ २॥
अंहोयुवस्तन्वस्तन्वते वि वयो महद्दुष्टरं पूर्व्याय।
स संवतो नवजातस्तुतुर्यात्सिंहं न क्रुद्धमभितः परि ष्ठुः॥ ३॥
मातेव यद्धरसे पप्रथानो जनंजनं धायसे चक्षसे च।
वयोवयो जरसे यद्दधानः परि त्मना विषुरूपो जिगासि॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाजो नु ते शवसस्पात्वन्तमुरुं दोधं धरुणं देव रायः।
पदं न तायुर्गुहा दधानो महो राये चितयन्नत्रिमस्पः॥ ५॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—पूरुरात्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-३ विराडनुष्टुप्; ४ भुरिगुष्णिक्; ५ बृहती॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ ऋषभः; ५ मध्यमः॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

बृहद्वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये।
यं मित्रं न प्रशस्तिभिर्मर्तासो दधिरे पुरः॥ १॥
स हि द्युभिर्जनानां होता दक्षस्य बाह्वोः।
वि हव्यमग्निरानुषग्भगो न वारमृण्वति॥ २॥
अस्य स्तोमे मघोनः सख्ये वृद्धशोचिषः।
विश्वा यस्मिन्तुविष्वणि समर्ये शुष्ममादधुः॥ ३॥
अधा ह्यग्न एषां सुवीर्यस्य मंहना।
तमिद्यहं न रोदसी परि श्रवो बभूवतुः॥ ४॥
नू न एहि वार्यमग्ने गृणान आ भर।
ये वयं ये च सूरयः स्वस्ति धामहे सचोतैधि पृत्सु नो वृधे॥ ५॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—पूरुरात्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ भुरिगुष्णिक्; २ अनुष्टुप्; ३ निचृदनुष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्; ५ भुरिग्बृहती॥ स्वरः—१ ऋषभः; २-४ गान्धारः; ५ मध्यमः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

आ यज्ञैर्देव मर्त्य इत्था तव्यांसमूतये।
अग्निं कृते स्वध्वरे पूरुरीळीतावसे॥ १॥
अस्य हि स्वयशस्तर आसा विधर्मन्मन्यसे।
तं नाकं चित्रशोचिषं मन्द्रं परो मनीषया॥ २॥
अस्य वासा उ अर्चिषा य आयुक्त तुजा गिरा।
दिवो न यस्य रेतसा बृहच्छोचन्त्यर्चयः॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्य क्रत्वा विचेतसो दस्मस्य वसु रथ आ ।
अधा विश्वासु हव्योऽग्निर्विक्षु प्र शंस्यते ॥ ४ ॥
नू न इद्धि वार्यमासा सचन्त सूरयः ।
ऊर्जो नपाद्भिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तय उतैधि पृत्सु नो वृधे ॥ ५ ॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—द्वितो मृक्तवाहा आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४ विराडनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ३ भुरिगुष्णिक्; ५ भुरिग्बृहती ॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः; ३ ऋषभः; ५ मध्यमः ॥
अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेतातिथिः ।
विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्तेषु रण्यति ॥ १ ॥
द्वितायं मृक्तवाहसे स्वस्य दक्षस्य मंहना ।
इन्दुं स धत्त आनुषक्स्तोता चित्ते अमर्त्य ॥ २ ॥
तं वो दीर्घायुशोचिषं गिरा हुवे मघोनाम् ।
अरिष्टो येषां रथो व्यश्वदावन्नीयते ॥ ३ ॥
चित्रा वा येषु दीधितिरासन्नुक्था पान्ति ये ।
स्तीर्णं बर्हिः स्वर्णरे श्रवांसि दधिरे परि ॥ ४ ॥
ये मे पञ्चाशतं ददुरश्वानां सधस्तुति ।
द्युमदग्ने महि श्रवो बृहत्कृधि मघोनां नृवदमृत नृणाम् ॥ ५ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वव्रिरात्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ३ अनुष्टुप्; ४ भुरिगुष्णिक्; ५ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २ षड्जः; ३ गान्धारः; ४ ऋषभः; ५ पञ्चमः ॥
अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते प्र वव्रेर्वव्रिश्चिकेत । उपस्थे मातुर्वि चष्टे ॥ १ ॥
जुहुरे वि चितयन्तोऽनिमिषं नृम्णं पान्ति । आ द्रुळहं पुरं विविशुः ॥ २ ॥
आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो द्युमद्वर्धन्त कृष्टयः ।
निष्कग्रीवो बृहदुक्थ एना मध्वा न वाजयुः ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियं दुग्धं न काम्यमजामि जाम्योः सचा ।
घर्मो न वाजजठरोऽदब्धः शश्वतो दभः ॥ ४ ॥
क्रीळन्नो रश्म आ भुवः सं भस्मना वायुना वेविदानः ।
ता अस्य सन्धृषजो न तिग्माः सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः ॥ ५ ॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रयस्वन्त आत्रेयाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३ विराडनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

यमग्ने वाजसातम त्वं चिन्मन्यसे रयिम् ।
तं नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम् ॥ १ ॥
ये अग्ने नेरयन्ति ते वृद्धा उग्रस्य शवसः ।
अप द्वेषो अप ह्वरोऽन्यव्रतस्य सश्चिरे ॥ २ ॥
होतारं त्वा वृणीमहेऽग्ने दक्षस्य साधनम् ।
यज्ञेषु पूर्व्यं गिरा प्रयस्वन्तो हवामहे ॥ ३ ॥
इत्था यथा त ऊतये सहसावन्दिवेदिवे ।
राय ऋताय सुक्रतो गोभिः ष्याम सधमादो वीरैः स्याम सधमादः ॥ ४ ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—सस आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २ भुरिगुष्णिक्; ३ स्वराडुष्णिक्; ४ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २, ३ ऋषभः; ४ मध्यमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

मनुष्वत्त्वा नि धीमहि मनुष्वत्समिधीमहि ।
अग्ने मनुष्वदङ्गिरो देवान्देवयते यज ॥ १ ॥
त्वं हि मानुषे जनेऽग्ने सुप्रीत इध्यसे ।
स्रुचस्त्वा यन्त्यानुषक्सुजात सर्पिरासुते ॥ २ ॥
त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत ।
सपर्यन्तस्त्वा कवे यज्ञेषु देवमीळते ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवं वो देवयज्यया ग्निमीळीत मर्त्यः ।
समिद्धः शुक्र दीदिह्यृतस्य योनिमासदः ससस्य योनिमासदः ॥ ४ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वसामा आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २, ३ स्वराडुष्णिक्; ४ बृहती ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २, ३ ऋषभः; ४ मध्यमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र विश्वसामन्नत्रिवदर्चा पावकशोचिषे ।
यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि ॥ १ ॥
न्य१ग्निं जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् ।
प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः ॥ २ ॥
चिकित्विन्मनसं त्वा देवं मर्तास ऊतये ।
वरेण्यस्य तेऽवस इयानासो अमन्महि ॥ ३ ॥
अग्ने चिकिद्ध्य१स्य न इदं वचः सहस्य ।
तं त्वा सुशिप्र दम्पते स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रयः ॥ ४ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—द्युम्नो विश्वचर्षणिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ४ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्य प्रासहा रयिम् ।
विश्वा यश्चर्षणीरभ्या३सा वाजेषु सासहत् ॥ १ ॥
तमग्ने पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर ।
त्वं हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः ॥ २ ॥
विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो वृक्तबर्हिषः ।
होतारं सद्मसु प्रियं व्यन्ति वार्यं पुरु ॥ ३ ॥
स हि ष्मा विश्वचर्षणिरभिमाति सहो दधे ।
अग्ने एषु क्षयेष्वा रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गौपायना लौपायना वा॥ देवता—अग्निः॥
छन्दः—१ साम्नी बृहती २, ३, ४ भुरिग्बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः ॥ १॥
वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः ॥ २॥
स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्या णो अघायतः समस्मात्॥ ३॥
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः॥ ४॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसूयव आत्रेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ८ निचृदनुष्टुप्; २, ५, ६, ९ अनुष्टुप्; ३, ७ विराडनुष्टुप्; ४ भुरिगुष्णिक्॥ स्वरः—१-३, ५-९ गान्धारः; ४ ऋषभः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

अच्छा वो अग्निमवसे देवं गासि स नो वसुः।
रासत्पुत्र ऋषूणामृतावा पर्षति द्विषः ॥ १॥
स हि सत्यो यं पूर्वे चिद्देवासश्चिद्यमीधिरे ।
होतारं मन्द्रजिह्वमित्सुदीतिभिर्विभावसुम् ॥ २॥
स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या ।
अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर्वरेण्य ॥ ३॥
अग्निर्देवेषु राजत्यग्निर्मर्तेष्वाविशन् ।
अग्निर्नो हव्यवाहनोऽग्निं धीभिः सपर्यत ॥ ४॥
अग्निस्तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तमम् ।
अतूर्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे ॥ ५॥

अथाष्टादशो वर्गः॥

अग्निर्ददाति सत्पतिं सासाह यो युधा नृभिः।
अग्निरत्यं रघुष्यदं जेतारमपराजितम् ॥ ६॥
यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो ।
महिषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजा उदीरते ॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तवं द्युमन्तो अर्चयो ग्रावेवोच्यते बृहत् ।
उतो ते तन्यतुर्यथा स्वानो अर्त त्मना दिवः ॥ ८ ॥
एवाँ अग्निं वसूयवः सहसानं ववन्दिम ।
स नो विश्वा अति द्विषः पर्षन्नावेव सुक्रतुः ॥ ९ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसूयव आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ९ गायत्री; २-६, ८ निचृद्गायत्री; ७ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ १ ॥
तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम्। देवाँ आ वीतये वह ॥ २ ॥
वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि। अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥ ३ ॥
अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये। होतारं त्वा वृणीमहे ॥ ४ ॥
यजमानाय सुन्वत आग्ने सुवीर्यं वह। देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

समिधानः सहस्रजिदग्ने धर्माणि पुष्यसि। देवानां दूत उक्थ्यः ॥ ६ ॥
न्यग्निं जातवेदसं होत्रवाहं यविष्ठ्यम्। दधाता देवमृत्विजम् ॥ ७ ॥
प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः। स्तृणीत बर्हिरासदे ॥ ८ ॥
एदं मरुतो अश्विना मित्रः सीदन्तु वरुणः। देवासः सर्वया विशा ॥ ९ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्र्युरुणस्त्रैवृष्णस्त्रसदस्युश्च पौरुकुत्स्य अश्वमेधश्च भारतोऽत्रिर्वा ॥ देवता—१-५ अग्निः; ६ इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५, ६ भुरिगुष्णिक् ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४ गान्धारः; ५, ६ ऋषभः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः ।
त्रैवृष्णो अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानर त्र्यरुणश्चिकेत ॥ १ ॥
यो मे शता च विंशतिं च गोनां हरी च युक्ता सुधुरा ददाति।
वैश्वानर सुष्टुतो वावृधानोऽग्ने यच्छ त्र्यरुणाय शर्म ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

एवा ते अग्ने सुमतिं चकानो नविष्ठाय नवमं त्रसदस्युः ।
यो मे गिरस्तुविजातस्य पूर्वीर्युक्तेनाभि त्र्यरुणो गृणाति ॥ ३ ॥
यो म इति प्रवोचत्यश्वमेधाय सूरये ।
ददद्ऋचा सुनिं यते ददन्मेधामृतायते ॥ ४ ॥
यस्य मा परुषाः शतमुद्धर्षयन्त्युक्षणः ।
अश्वमेधस्य दानाः सोमाइव त्र्याशिरः ॥ ५ ॥
इन्द्राग्नी शतदाव्न्यश्वमेधे सुवीर्यम् ।
क्षत्रं धारयतं बृहद्दिवि सूर्यमिवाजरम् ॥ ६ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्ववारात्रेयी ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५, ६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४ गान्धारः; ५, ६ षड्जः ॥
अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत्प्रत्यङ्डुषसमुर्विया वि भाति ।
एति प्राची विश्ववारा नमोभिर्देवाँ ईळाना हविषा घृताची ॥ १ ॥
समिध्यमानो अमृतस्य राजसि हविष्कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये ।
विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वस्यातिथ्यमग्ने नि च धत्त इत्पुरः ॥ २ ॥
अग्ने शर्धं महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु ।
सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि ॥ ३ ॥
समिद्धस्य प्रमहसोऽग्ने वन्दे तव श्रियम् ।
वृषभो द्युम्नवाँ असि समध्वरेष्विध्यसे ॥ ४ ॥
समिद्धो अग्न आहुत देवान्यक्षि स्वध्वर। त्वं हि हव्यवाळसि ॥ ५ ॥
आ जुहोता दुवस्यताग्निं प्रयत्यध्वरे। वृणीध्वं हव्यवाहनम् ॥ ६ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गौरिवीतिः शाक्त्यः ॥ देवता—१-८, ९१-१५ इन्द्रः; ९२ इन्द्रः उशना वा ॥ छन्दः—१ भुरिक् पङ्क्तिः; २, ४, ७ त्रिष्टुप्; ३, ५, ६, ९-११ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्पङ्क्तिः; १२-१५ विराट् त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ८ पञ्चमः; २-७, ९-१५ धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

त्र्यर्यमा मनुषो देवताता त्री रोचना दिव्या धारयन्त ।
अर्चन्ति त्वा मरुतः पूतदक्षास्त्वमेषामृषिरिन्द्रासि धीरः ॥ १ ॥
अनु यदीं मरुतो मन्दसानमार्च्नित्रिन्द्रं पपिवांसं सुतस्य ।
आदत्त वज्रमभि यदहिं हन्नपो यह्वीरसृजत्सर्तवा उ ॥ २ ॥
उत ब्रह्माणो मरुतो मे अस्येन्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः ।
तद्धि हव्यं मनुषे गा अविन्ददहन्नहिं पपिवाँ इन्द्रो अस्य ॥ ३ ॥
आद्रोदसी वितरं वि ष्कभायत्संविव्यानश्चिद्बिभ्यसे मृगं कः ।
जिगर्तिमिन्द्रो अपजर्गुराणः प्रति श्वसन्तमव दानवं हन् ॥ ४ ॥
अध क्रत्वा मघवन्तुभ्यं देवा अनु विश्वे अददुः सोमपेयम् ।
यत्सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीरुपरा एतशे कः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

नव यदस्य नवतिं च भोगान्त्साकं वज्रेण मघवा विवृश्चत् ।
अर्चन्तीन्द्रं मरुतः सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसा बाधत द्याम् ॥ ६ ॥
सखा सख्ये अपचत्तूयमग्निरस्य क्रत्वा महिषा त्री शतानि ।
त्री साकमिन्द्रो मनुषः सरांसि सुतं पिबद् वृत्रहत्याय सोमम् ॥ ७ ॥
त्री यच्छता महिषाणामघो मास्त्री सरांसि मघवा सोम्यापाः ।
कारं न विश्वे अह्वन्त देवा भरमिन्द्राय यदहिं जघान ॥ ८ ॥
उशना यत्सहस्यैरयातं गृहमिन्द्र जूजुवानेभिरश्वैः ।
वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कुत्सेन देवैरवनोर्ह शुष्णम् ॥ ९ ॥
प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य कुत्सायान्यद्वरिवो यातवेऽकः ।
अनासो दस्यूँरमृणो वधेन नि दुर्योण आवृणङ्मृध्रवाचः ॥ १० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

स्तोमासस्त्वा गौरिवीतेरवर्धन्नरन्धयो वैदथिनाय पिप्रुम् ।
आ त्वामृजिश्वा सख्याय चक्रे पचन्पक्तीरपिबः सोममस्य ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवग्वासः सुतसोमास इन्द्रं दशग्वासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः।
गव्यं चिदूर्वमपिधानवन्तं तं चिन्नरः शशमाना अप व्रन्॥ १२॥
कथो नु ते परि चराणि विद्वान्वीर्या मघवन्या चकर्थ।
या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ प्रेदु ता ते विदथेषु ब्रवाम॥ १३॥
एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्यपरीतो जनुषा वीर्येण ।
या चिन्नु वज्रिन्कृणवो दधृष्वान्न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः॥ १४॥
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म।
वस्त्रेव भद्रा सुकृता वसूयू रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्॥ १५॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बभ्रुरात्रेयः॥ देवता—इन्द्र ऋणञ्चयश्च॥ छन्दः—१-५, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, १३ पङ्क्तिः; ७, ११, १२ त्रिष्टुप्; १० विराट्त्रिष्टुप्; १४, १५ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७-१२ धैवतः; ६, १३-१५ पञ्चमः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

क्व१स्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं सुखरथमीयमानं हरिभ्याम्।
यो राया वज्री सुतसोममिच्छन्तदोको गन्ता पुरुहूत ऊती॥ १॥
अवाचचक्षं पदमस्य सस्वरुग्रं निधातुरन्वायमिच्छन् ।
अपृच्छमन्याँ उत ते म आहुरिन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम ॥ २॥
प्र नु वयं सुते या ते कृतानीन्द्र ब्रवाम यानि नो जुजोषः।
वेददविद्वाञ्छृणवच्च विद्वान्वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः ॥ ३॥
स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूयसश्चित् ।
अश्मानं चिच्छवसा दिद्युतो वि विदो गवामूर्वमुस्त्रियाणाम् ॥ ४॥
परो यत्त्वं परम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत् ।
अतश्चिदिन्द्रादभयन्त देवा विश्वा अपो अजयद्दासपत्नीः ॥ ५॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा अर्चन्त्यर्कं सुन्वन्त्यन्धः ।
अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः ॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि षू मृधो जनुषा दानमिन्वन्नहन्गावो मघवन्त्संचकानः ।
अत्रा दासस्य नमुचेः शिरो यदवर्तयो मनवे गातुमिच्छन् ॥ ७ ॥
युजं हि मामकृथा आदिदिन्द्र शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।
अश्मानं चित्स्वर्यं१ वर्तमानं प्र चक्रियेव रोदसी मरुद्व्यः ॥ ८ ॥
स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे किं मा करन्नबला अस्य सेनाः ।
अन्तर्ह्यख्यदुभे अस्य धेने अथोप प्रैद्युधये दस्युमिन्द्रः ॥ ९ ॥
समत्र गावोऽभितोऽनवन्तेहेह वत्सैर्वियुता यदासन् ।
सं ता इन्द्रो असृजदस्य शाकैर्यदीं सोमासः सुषुता अमन्दन् ॥ १० ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

यदीं सोमा बभ्रुधूता अमन्दन्नरोरवीद् वृषभः सादनेषु ।
पुरन्दरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य पुनर्गवामददादुस्त्रियाणाम् ॥ ११ ॥
भद्रमिदं रुशमा अग्रे अक्रन्गवां चत्वारि ददतः सहस्रा ।
ऋणंचयस्य प्रयता मघानि प्रत्यग्रभीष्म नृतमस्य नृणाम् ॥ १२ ॥
सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं गवां सहस्रै रुशमासो अग्रे ।
तीव्रा इन्द्रममन्दुः सुतासोऽक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाः ॥ १३ ॥
औच्छत्सा रात्री परितक्म्या याँ ऋणंचये राजनि रुशमानाम् ।
अत्यो न वाजी रघुरज्यमानो बभ्रुश्चत्वार्यसनत्सहस्रा ॥ १४ ॥
चतुःसहस्रं गव्यस्य पश्वः प्रत्यग्रभीष्म रुशमेष्वग्रे ।
घर्मश्चित्तप्तः प्रवृजे य आसीदयस्मयस्तम्वादाम विप्राः ॥ १५ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अवस्युरात्रेयः ॥ देवता—१-८², १०-१३ इन्द्रः; ८³ इन्द्रःकुत्सो वा; ८⁴ इन्द्रः उशना वा; ९ इन्द्रः कुत्सश्च ॥ छन्दः—१, २, ५, ७, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, १० त्रिष्टुप्; ८, १२ स्वराट्पङ्क्तिः; १३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-७, ९-११, १३ धैवतः; ८, १२ पञ्चमः ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

इन्द्रो रथाय प्रवतं कृणोति यमध्यस्थान्मघवा वाजयन्तम् ।
यूथेव पश्वो व्युनोति गोपा अरिष्टो याति प्रथमः सिषासन् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ प्र द्रव हरिवो मा वि वेनः पिशङ्गराते अभि नः सचस्व।
नहि त्वदिन्द्र वस्यो अन्यदस्त्यमेनाँश्चिज्जनिवतश्चकर्थ॥ २॥
उद्यत्सहः सहस आजनिष्ट देदिष्ट इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा।
प्राचोदयत्सुदुघा वव्रे अन्तर्वि ज्योतिषा संववृत्वत्तमोऽ वः॥ ३॥
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षन्त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम्।
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ॥ ४॥
वृष्णे यत्ते वृषणो अर्कमर्चानिन्द्र ग्रावाणो अदितिः सजोषाः।
अनश्वासो ये पवयोऽरथा इन्द्रेषिता अभ्यवर्तन्त दस्यून्॥ ५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन्या चकर्थ।
शक्तीवो यद्बिभरा रोदसी उभे जयन्नपो मनवे दानुचित्राः॥ ६॥
तदिन्नु ते करणं दस्म विप्राहिं यद् घ्नन्नोजो अत्रामिमीथाः।
शुष्णस्य चित्परि माया अगृभ्णाः प्रपित्वं यन्नप दस्यूँरसेधः॥ ७॥
त्वमपो यदवे तुर्वशायारमयः सुदुघाः पार इन्द्र।
उग्रमयातमवहो ह कुत्सं सं ह यद्वामुशनारन्त देवाः॥ ८॥
इन्द्रा कुत्सा वहमाना रथेना वामत्या अपि कर्णे वहन्तु।
निः षीमद्भ्यो धमथो निः षधस्थान्मघोनो हृदो वरथस्तमांसि॥ ९॥
वातस्य युक्तान्त्सुयुजश्चिदश्वान्कविश्चिदेषो अजगन्नवस्युः।
विश्वे ते अत्र मरुतः सखाय इन्द्र ब्रह्माणि तविषीमवर्धन्॥ १०॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

सूरश्चिद्रथं परितक्म्यायां पूर्वं करदुपरं जूजुवांसम्।
भरच्चक्रमेतशः सं रिणाति पुरो दधत्सनिष्यति क्रतुं नः॥ ११॥
आयं जना अभिचक्षे जगामेन्द्रः सखायं सुतसोममिच्छन्।
वदन्ग्रावाव वेदिं भ्रियाते यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति॥ १२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मतीं अमृत मो ते अंहु आरन्।
वावन्धि यज्यूँरुत तेषु धेह्योजो जनेषु येषु ते स्याम॥ १३॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गातुरात्रेयः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७, ९, ११ त्रिष्टुप्; २-४, १०, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ७, ९-१२ धैवतः; ५, ६, ८ पञ्चमः॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

अदर्दरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान्बद्बधानाँ अरम्णाः।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजो वि धारा अव दानवं हन्॥ १॥
त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्बधानाँ अरंहु ऊधः पर्वतस्य वज्रिन्।
अहिं चिदुग्र प्रयुतं शयानं जघन्वाँ इन्द्र तविषीमधत्थाः॥ २॥
त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य वर्धर्जघान तविषीभिरिन्द्रः।
य एक इदप्रतिर्मन्यमान आदस्मादन्यो अजनिष्ट तव्यान्॥ ३॥
त्यं चिदेषां स्वधया मदन्तं मिहो नपातं सुवृधं तमोगाम्।
वृषप्रभर्मा दानवस्य भामं वज्रेण वज्री नि जघान शुष्णम्॥ ४॥
त्यं चिदस्य क्रतुभिर्निषत्तममर्मणो विददिदस्य मर्म।
यदीं सुक्षत्र प्रभृता मदस्य युयुत्सन्तं तमसि ह्मर्ये धाः॥ ५॥
त्यं चिदित्था कत्पयं शयानमसूर्ये तमसि वावृधानम्।
तं चिन्मन्दानो वृषभः सुतस्योच्चैरिन्द्रो अपगूर्यो जघान॥ ६॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

उद्यदिन्द्रो महते दानवाय वधर्यमिष्ट सहो अप्रतीतम्।
यदीं वज्रस्य प्रभृतौ ददाभ विश्वस्य जन्तोरधमं चकार॥ ७॥
त्यं चिदर्णं मधुपं शयानमसिन्वं वव्रं मह्यादद्युग्रः।
अपादमत्रं महता वधेन नि दुर्योण आवृणङ्मृध्रवाचम्॥ ८॥
को अस्य शुष्मं तविषीं वरात एको धना भरते अप्रतीतः।
इमे चिदस्य व्रयसो नु देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा जिहाते॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यस्मै देवी स्वधितिर्जिहीत इन्द्राय गातुरुशतीव येमे ।
सं यदोजो युवते विश्वमाभिरनु स्वधावे क्षितयो नमन्त ॥ १० ॥
एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु ।
तं मे जगृभ्र आशसो नविष्ठं दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम् ॥ ११ ॥
एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि ।
किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो ये त्वाया निदधुः कामिन्द्र ॥ १२ ॥

इति चतुर्थाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ चतुर्थाष्टके द्वितीयोऽध्यायः

तृतीयोऽनुवाकः [३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—संवरणः प्राजापत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ७ पङ्क्तिः; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ८ त्रिष्टुप्; ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-७, १० पञ्चमः; ८, ९ धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

महि महे तवसे दीध्ये नॄनिन्द्रायेत्था तवसे अतव्यान् ।
यो अस्मै सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जनेन समर्यश्चिकेत ॥ १ ॥
स त्वं न इन्द्र धियसानो अर्कैर्हरीणां वृषन्योक्त्रमश्रेः ।
या इत्था मघवन्ननु जोषं वक्षो अभि प्रार्यः संक्षि जनान् ॥ २ ॥
न ते त इन्द्राभ्यसदृष्वायुक्तासो अब्रह्मता यदसन् ।
तिष्ठा रथमधि तं वज्रहस्ता रश्मिं देव यमसे स्वश्वः ॥ ३ ॥
पुरू यत्त इन्द्र सन्त्युक्था गवे चकर्थोर्वरासु युध्यन् ।
ततक्षे सूर्याय चिदोकसि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित् ॥ ४ ॥
वयं ते त इन्द्र ये च नरः शर्धो जज्ञाना याताश्च रथाः ।
आस्माञ्जगम्यादहिशुष्म सत्वा भगो न हव्यः प्रभृथेषु चारुः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

पपृक्षेण्यमिन्द्र त्वे ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः ।
स न एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्यः स्तुषे तुविमघस्य दानम् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवा न इन्द्रोतिभिरव पाहि गृणतः शूर कारून् ।
उत त्वचं ददतो वाजसातौ पिप्रीहि मध्वः सुषुतस्य चारोः ॥ ७ ॥
उत त्ये मा पौरुकुत्स्यस्य सूरेस्त्रसदस्योर्हिरण्यो रराणाः ।
वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य गौरिक्षितस्य क्रतुभिर्नु सश्चे ॥ ८ ॥
उत त्ये मा मारुताश्वस्य शोणाः क्रत्वामघासो विदथस्य रातौ ।
सहस्त्रा मे च्यवतानो ददान आनूकमर्यो वपुषे नार्चत् ॥ ९ ॥
उत त्ये मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः ।
मह्ना रायः संवरणस्य ऋषेर्व्रजं न गावः प्रयता अपि ग्मन् ॥ १० ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—संवरणः प्राजापत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ निचृज्जगती; ३, ७ जगती; ६, ९ त्रिष्टुप्; ८ विराड्जगती ॥ स्वरः—१, ६, ९ धैवतः; २-५, ७, ८ निषादः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

अजातशत्रुमजरा स्वर्वत्यनु स्वधामिता दस्ममीयते ।
सुनोतन पचत ब्रह्मवाहसे पुरुष्टुताय प्रतरं दधातन ॥ १ ॥
आ यः सोमेन जठरमपिप्रतामन्दत मघवा मध्वो अन्धसः ।
यदीं मृगाय हन्तवे महावधः सहस्त्रभृष्टिमुशना वधं यमत् ॥ २ ॥
यो अस्मै घ्रंस उत वा य ऊधनि सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अह ।
अपाप शक्रस्ततनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवासखः ॥ ३ ॥
यस्यावधीत्पितरं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नात ईषते ।
वेतीद्वस्य प्रयता यतंकरो न किल्बिषादीषते वस्व आकरः ॥ ४ ॥
न पञ्चभिर्दशभिर्वष्ट्यारभं नासुन्वता सचते पुष्यता चन ।
जिनाति वेदमुया हन्ति वा धुनिरा देवयुं भजति गोमति व्रजे ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

वित्वक्षणः समृतौ चक्रमासजोऽ सुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः ।
इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणो यथावशं नयति दासमार्यः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीं पणेरजति भोजनं मुषे वि दाशुषे भजति सूनरं वसु।
दुर्गे चन ध्रियते विश्व आ पुरु जनो यो अस्य तविषीमचुक्रुधत्॥ ७॥
सं यज्जनौ सुधनौ विश्वशर्धसावववेदिन्द्रो मघवा गोषु शुभ्रिषु।
युजं ह्यन्यमकृत प्रवेपन्युदीं गव्यं सृजते सत्वभिर्धुनिः॥ ८॥
सहस्रसामाग्निवेशिं गृणीषे शत्रिमग्न उपमां केतुमर्यः।
तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन्क्षत्रममवत्त्वेषमस्तु॥ ९॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रभूवसुराङ्गिरसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; ३ भुरिगनुष्टुप्; ७ अनुष्टुप्; २ भुरिगुष्णिक्; ४-६ स्वराडुष्णिक्; ८ भुरिग्बृहती॥
स्वरः—१, ३, ७ गान्धारः; २, ४-६ ऋषभः; ८ मध्यमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

यस्ते साधिष्ठोऽवस इन्द्र क्रतुष्टमा भर।
अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्निं वाजेषु दुष्टरम्॥ १॥
यदिन्द्र ते चतस्रो यच्छूर सन्ति तिस्रः।
यद्वा पञ्च क्षितीनामवस्तत्सु न आ भर॥ २॥
आ तेऽवो वरेण्यं वृषन्तमस्य हूमहे।
वृषजूतिर्हि जज्ञिष आभूभिरिन्द्र तुर्वणिः॥ ३॥
वृषा ह्यसि राधसे जज्ञिषे वृष्णि ते शवः।
स्वक्षत्रं ते धृषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम्॥ ४॥
त्वं तमिन्द्र मर्त्यमभित्रयन्तमद्रिवः।
सर्वरथा शतक्रतो नि याहि शवसस्पते॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

त्वामिद् वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः।
उग्रं पूर्वीषु पूर्व्य हवन्ते वाजसातये॥ ६॥
अस्माकमिन्द्र दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु।
सयावानं धनेधने वाजयन्तमवा रथम्॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्माकमिन्द्रेहि नो रथमवा पुरंन्ध्या ।
वयं शविष्ठ वार्यं दिवि श्रवो दधीमहि दिवि स्तोमं मनामहे ॥ ८ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रभूवसुराङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ६ त्रिष्टुप्; ३ जगती ॥ स्वरः—१, २, ४-६ धैवतः; ३ निषादः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

स आ गमदिन्द्रो यो वसूनां चिकेतद्दातुं दामनो रयीणाम् ।
धन्वचरो न वंसगस्तृषाणश्चकमानः पिबतु दुग्धमंशुम् ॥ १ ॥
आ ते हनू हरिवः शूर शिप्रे रुहत्सोमो न पर्वतस्य पृष्ठे ।
अनु त्वा राजन्नर्वतो न हिन्वन्गीर्भिर्मदेम पुरुहूत विश्वे ॥ २ ॥
चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते मनो भिया मे अमतेरिदद्रिवः ।
रथादधि त्वा जरिता सदावृध कुविन्नु स्तोषन्मघवन्पुरूवसुः ॥ ३ ॥
एष ग्रावेव जरिता त इन्द्रेयर्ति वाचं बृहदाशुषाणः ।
प्र सव्येन मघवन्यंसि रायः प्र दक्षिणिद्धरिवो मा वि वेनः ॥ ४ ॥
वृषा त्वा वृषणं वर्धतु द्यौर्वृषा वृषभ्यां वहसे हरिभ्याम् ।
स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषा वज्रिन्भरे धाः ॥ ५ ॥
यो रोहितौ वाजिनौ वाजिनीवान्त्रिभिः शतैः सचमानावदिष्ट ।
यूने समस्मै क्षितयो नमन्तां श्रुतरथाय मरुतो दुवोया ॥ ६ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३-५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-५ धैवतः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

सं भानुना यतते सूर्यस्याजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वञ्चाः ।
तस्मा अमृध्रा उषसो व्युच्छान्य इन्द्राय सुनवामेत्याह ॥ १ ॥
समिद्धाग्निर्वनवत्स्तीर्णबर्हिर्युक्तग्रावा सुतसोमो जराते ।
ग्रावाणो यस्येषिरं वदन्त्यध्वर्युर्हविषाव सिन्धुम् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ईं वहाते महिषीमिषिराम् ।
आस्य श्रवस्याद्रथ आ च घोषात्पुरू सहस्रा परि वर्तयाते ॥ ३ ॥
न स राजा व्यथते यस्मिन्निन्द्रस्तीव्रं सोमं पिबति गोसखायम् ।
आ सत्वनैरजति हन्ति वृत्रं क्षेति क्षितीः सुभगो नाम पुष्यन् ॥ ४ ॥
पुष्यात्क्षेमे अभि योगे भवात्युभे वृतौ संयती सं जयाति ।
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति य इन्द्राय सुतसोमो ददाशत् ॥ ५ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २-४ निचृदनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

उरोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो ।
अधा नो विश्वचर्षणे द्युम्ना सुक्षत्र मंहय ॥ १ ॥
यदीमिन्द्र श्रवाय्यमिषं शविष्ठ दधिषे ।
पप्रथे दीर्घश्रुत्तमं हिरण्यवर्ण दुष्टरम् ॥ २ ॥
शुष्मासो ये ते अद्रिवो मेहना केतसापः ।
उभा देवावभिष्टये दिवश्च ग्मश्च राजथः ॥ ३ ॥
उतो नो अस्य कस्य चिद्दक्षस्य तव वृत्रहन् ।
अस्मभ्यं नृम्णमा भरास्मभ्यं नृमणस्यसे ॥ ४ ॥
नू त आभिरभिष्टिभिस्तव शर्मञ्छतक्रतो ।
इन्द्र स्याम सुगोपाः शूर स्याम सुगोपाः ॥ ५ ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २, ३ निचृदनुष्टुप्; ४ स्वराडुष्णिक्; ५ बृहती ॥ स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ ऋषभः; ५ मध्यमः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

यदिन्द्र चित्र मेहनास्ति त्वादातमद्रिवः ।
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर ।
विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावने ॥ २ ॥
यत्ते दित्सु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् ।
तेन दूळ्हा चिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये ॥ ३ ॥
मंहिष्ठं वो मघोनां राजानं चर्षणीनाम् ।
इन्द्रमुप प्रशस्तये पूर्वीभिर्जुजुषे गिरः ॥ ४ ॥
अस्मा इत्काव्यं वचः उक्थमिन्द्राय शंस्यम् ।
तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः ॥ ५ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—१-४ इन्द्रः; ५ सूर्यः; ६-९ अत्रिः ॥ छन्दः—१ निचृदुष्णिक्; २, ३ उष्णिक्; ४ त्रिष्टुप्; ५, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ भुरिदपङ्क्तिः; ९ स्वराडुष्णिक् ॥ स्वरः—१-३, ९ ऋषभः; ४-६, ८ धैवतः; ७ पञ्चमः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

आ याह्यद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम ॥ १ ॥
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम ॥ २ ॥
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम ॥ ३ ॥
ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाट्छुष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा ।
युक्त्वा हरिभ्यामुप यासदर्वाङ्माध्यन्दिने सवने मत्सदिन्द्रः ॥ ४ ॥
यत्त्वा सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।
अक्षेत्रविद्यथा मुग्धो भुवनान्यदीधयुः ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

स्वर्भानोरध यदिन्द्र माया अवो दिवो वर्तमाना अवाहन् ।
गूळ्हं सूर्यं तमसापव्रतेन तुरीयेण ब्रह्मणाविन्ददत्रिः ॥ ६ ॥
मा मामिमं तव सन्तमत्र इरस्या द्रुग्धो भियसा नि गारीत् ।
त्वं मित्रो असि सत्यराधास्तौ मेहावतं वरुणश्च राजा ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राव्णो ब्रह्मा युयुजानः सपर्यन्कीरिणा देवान्नमसोपशिक्षन्।
अत्रिः सूर्यस्य दिवि चक्षुराधात्स्वर्भानोरप माया अघुक्षत् ॥ ८ ॥
यं वै सूर्य स्वर्भानुस्तमसाविध्यदासुरः ।
अत्रयस्तमन्वविन्दन्नह्यन्ये अशक्नुवन् ॥ ९ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ६, १५, १८ त्रिष्टुप्; ३, ७, ८, १४, १९ पङ्क्तिः; ४, १३ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ९-१२ भुरिक्पङ्क्तिः; १६ जगती; १७ निचृज्जगती; २० याजुषीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ६, १३, १५, १८ धैवतः; ३, ५, ७-१२, १४, १९, २० पञ्चमः; १६, १७ निषादः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

को नु वां मित्रावरुणावृतायन्दिवो वा महः पार्थिवस्य वा दे।
ऋतस्य वा सदसि त्रासीथां नो यज्ञायते वा पशुषो न वाजान् ॥ १ ॥
ते नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऋभुक्षा मरुतो जुषन्त।
नमोभिर्वा ये दधते सुवृक्तिं स्तोमं रुद्राय मीळ्हुषे सजोषाः ॥ २ ॥
आ वां येष्ठाश्विना हुवध्यै वातस्य पत्मन्नर्थ्यस्य पुष्टौ।
उत वा दिवो असुराय मन्म प्रान्धांसीव यज्यवे भरध्वम् ॥ ३ ॥
प्र सक्षणो दिव्यः कण्वहोता त्रितो दिवः सजोषा वातो अग्निः।
पूषा भगः प्रभृथे विश्वभोजा आजिं न जग्मुराश्वश्वतमाः ॥ ४ ॥
प्र वो रयिं युक्ताश्वं भरध्वं राय एषेऽवसे दधीत धीः।
सुशेव एवैरौशिजस्य होता ये व एवा मरुतस्तुराणाम् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं प्र देवं विप्रं पनितारमर्कैः।
इषुध्यव ऋतसापः पुरन्धीर्वस्वीर्नो अत्र पत्नीरा धिये धुः ॥ ६ ॥
उप व एषे वन्द्योभिः शूषैः प्र यह्वी दिवश्चितयद्भिरर्कैः।
उषासानक्ता विदुषीव विश्वमा हा वहतो मर्त्याय यज्ञम् ॥ ७ ॥
अभि वो अर्चे पोष्यावतो नॄन्वास्तोष्पतिं त्वष्टारं रराणः।
धन्या सजोषा धिषणा नमोभिर्वनस्पतींरोषधी राय एषे ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुजे नस्तने पर्वताः सन्तु स्वैतवो ये वसवो न वीराः।
पनित आप्त्यो यजतः सदा नो वर्धन्नः शंसं नर्यो अभिष्टौ॥ ९॥
वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य गर्भं त्रितो नपातमपां सुवृक्ति।
गृणीते अग्निरेतरी न शूषैः शोचिष्केशो नि रिणाति वना॥ १०॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

कथा महे रुद्रियाय ब्रवाम कद्राये चिकितुषे भगाय।
आप ओषधीरुत नोऽवन्तु द्यौर्वना गिरयो वृक्षकेशाः॥ ११॥
शृणोतु न ऊर्जां पतिर्गिरः स नभस्तरीयाँ इषिरः परिज्मा।
शृण्वन्त्वापः पुरो न शुभ्राः परि स्रुचो बबृहाणस्यार्द्रेः॥ १२॥
विदा चिन्नु महान्तो ये व एवा ब्रवाम दस्मा वार्यं दधानाः।
वयश्चन सुभ्वः आव यन्ति क्षुभा मर्तमनुयतं वधस्नैः॥ १३॥
आ दैव्यानि पार्थिवानि जन्मापश्चाच्छा सुमखाय वोचम्।
वर्धन्तां द्यावो गिरश्चन्द्राग्रा उदा वर्धन्तामभिषाता अर्णाः॥ १४॥
पदेपदे मे जरिमा नि धायि वरूत्री वा शक्रा या पायुभिश्च।
सिषक्तु माता मही रसा नः स्मत्सूरिभिर्ऋजुहस्तैर्ऋजुवनिः॥ १५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

कथा दाशेम नमसा सुदानूनेवया मरुतो अच्छोक्तौ प्रश्रवसो मरुतो
अच्छोक्तौ। मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धाद्स्माकं भूदुपमातिवनिः॥ १६॥
इति चिन्नु प्रजायै पशुमत्यै देवासो वनते मर्त्यो व आ देवासो
वनते मर्त्यो वः। अत्रा शिवां तन्वो धासिमस्या
जरां चिन्मे निर्ऋतिर्जग्रसीत॥ १७॥
तां वो देवाः सुमतिमूर्जयन्तीमिषमश्याम वसवः शसा गोः।
सा नः सुदानुर्मृळयन्ती देवी प्रति द्रवन्ती सुविताय गम्याः॥ १८॥
अभि न इळा यूथस्य माता स्मन्नदीभिरुर्वशी वा गृणातु।
उर्वशी वा बृहद्दिवा गृणानाभ्यूर्ण्वाना प्रभूथस्यायोः॥ १९॥
सिषक्तु न ऊर्ज्व्यस्य पुष्टेः॥ २०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ४, ६, ११, १२, १५, १६, १८ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ५, ७-९, १३, १४ त्रिष्टुप्; १० भुरिक्पङ्क्तिः; १७ याजुषीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९, ११-१६, १८ धैवतः; १०, १७ पञ्चमः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

प्र शन्तमा वरुणं दीधिती गीर्मित्रं भगमदितिं नूनमश्याः ।
पूषद्योनिः पञ्चहोता शृणोत्वर्तूर्तपन्था असुरो मयोभुः ॥ १ ॥
प्रति मे स्तोममदितिर्जगृभ्यात्सूनुं न माता हृद्यं सुशेवम् ।
ब्रह्म प्रियं देवहितं यदस्त्यहं मित्रे वरुणे यन्मयोभु ॥ २ ॥
उदीरय कवितमं कवीनामुनत्तैनमभि मध्वा घृतेन ।
स नो वसूनि प्रयता हितानि चन्द्राणि देवः सविता सुवाति ॥ ३ ॥
समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः सं सूरिभिर्हरिवः सं स्वस्ति ।
सं ब्रह्मणा देवहितं यदस्ति सं देवानां सुमत्या यज्ञियानाम् ॥ ४ ॥
देवो भगः सविता रायो अंश इन्द्रो वृत्रस्य संजितो धनानाम् ।
ऋभुक्षा वाजो उत वा पुरन्धिरवन्तु नो अमृतासस्तुरासः ॥ ५ ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

मरुत्वतो अप्रतीतस्य जिष्णोरजूर्यतः प्र ब्रवामा कृतानि ।
न ते पूर्वे मघवन्नापरासो न वीर्यं१ नूतनः कश्चनाप ॥ ६ ॥
उप स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं बृहस्पतिं सनितारं धनानाम् ।
यः शंसते स्तुवते शंभविष्ठः पुरूवसुरागमज्जोहुवानम् ॥ ७ ॥
तवोतिभिः सचमाना अरिष्टा बृहस्पते मघवानः सुवीराः ।
ये अश्वदा उत वा सन्ति गोदा ये वस्त्रदाः सुभगास्तेषु रायः ॥ ८ ॥
विसर्मणं कृणुहि वित्तमेषां ये भुञ्जते अपृणन्तो न उक्थैः ।
अपव्रतान्प्रसवे वावृधानान् ब्रह्मद्विषः सूर्याद्यावयस्व ॥ ९ ॥
य ओहते रक्षसो देववीतावचक्रेभिस्तं मरुतो नि यात ।
यो वः शमी शशमानस्य निन्दात्तुच्छ्यान्कामान्करते सिष्विदानः ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

तमु ष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य।
यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य ॥ ११ ॥
दमूनसो अपसो ये सुहस्ता वृष्णः पत्नीर्नद्यो विभ्वतष्टाः।
सरस्वती बृहद्दिवोत राका दशस्यन्तीर्वरिवस्यन्तु शुभ्राः ॥ १२ ॥
प्र सू महे सुशरणाय मेधां गिरं भरे नव्यसीं जायमानाम्।
य आहना दुहितुर्वक्षणासु रूपा मिनानो अकृणोदिदं नः ॥ १३ ॥
प्र सुष्टुतिः स्तनयन्तं रुवन्तमिळस्पतिं जरितर्नूनमश्याः।
यो अब्दिमाँ उदनिमाँ इयर्ति प्र विद्युता रोदसी उक्षमाणः ॥ १४ ॥
एष स्तोमो मारुतं शर्धो अच्छा रुद्रस्य सूनूँर्युवन्यूँरुदश्याः।
कामो राये हवते मा स्वस्त्युप स्तुहि पृषदश्वाँ अयासः ॥ १५ ॥
प्रैष स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं वनस्पतीँरोषधीः राये अश्याः।
देवोदेवः सुहवो भूतु मह्यं मा नो माता पृथिवी दुर्मतौ धात् ॥ १६ ॥
उरौ देवा अनिबाधे स्याम ॥ १७ ॥
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥ १८ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ३, ६, ८, ९, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, १०-१२, १५ त्रिष्टुप्; ७, १३ विराट्त्रिष्टुप्; १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १६ याजुषीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-१३, १५, १७ धैवतः; १४, १६ पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्था अमर्धन्तीरुप नो यन्तु मध्वा।
महो राये बृहतीः सप्त विप्रो मयोभुवो जरिता जोहवीति ॥ १ ॥
आ सुष्टुती नमसा वर्तयध्यै द्यावा वाजाय पृथिवी अमृध्रे।
पिता माता मधुवचाः सुहस्ता भरेभरे नो यशसावविष्टाम् ॥ २ ॥
अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि प्र वायवे भरत चारु शुक्रम्।
होतेव नः प्रथमः पाह्यस्य देव मध्वो ररिमा ते मदाय ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दश॒ क्षिपो॑ युञ्जते बा॒हू अद्रिं॒ सोम॑स्य॒ या श॑मि॒तारा॑ सु॒हस्ता॑।
मध्वो॒ रसं॑ सु॒गभ॑स्तिर्गिरि॒ष्ठां चनि॑श्चदद्दुदुहे शु॒क्रमं॒शुः॥ ४॥
असा॑वि ते जुजुषा॒णाय॒ सोमः॒ क्रत्वे॒ दक्षा॑य बृह॒ते मदा॑य।
हरी॒ रथे॑ सु॒धुरा॒ योगे॑ अ॒र्वागिन्द्र॑ प्रि॒या कृ॑णुहि हू॒यमा॑नः॥ ५॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

आ नो॑ म॒हीम॒रम॑तिं स॒जोषा॒ ग्नां दे॒वीं नम॑सा रा॒तह॑व्याम्।
मधो॒र्मदा॑य बृह॒तीमृ॑त॒ज्ञामाग्ने॑ वह प॒थिभि॑र्देव॒यानैः॑॥ ६॥
अ॒ञ्जन्ति॒ यं प्र॒थय॑न्तो॒ न विप्रा॑ व॒पाव॑न्तं॒ नाग्निना॒ तप॑न्तः।
पि॒तुर्न पु॒त्र उ॒पसि॒ प्रेष्ठ॒ आ घ॒र्मो अ॒ग्निमृ॒तय॑न्नसादि॥ ७॥
अच्छा॑ म॒ही बृ॑ह॒ती शन्त॑मा॒ गीर्दू॒तो न ग॑न्त्व॒श्विना॑ हु॒वध्यै॑।
म॒यो॒भुवा॑ स॒रथा या॑तम॒र्वाग्ग॒न्तं नि॒धिं धुर॑मा॒णिर्न नाभि॑म्॥ ८॥
प्र तव्य॑सो॒ नम॑उक्तिं तु॒रस्या॒हं पू॒ष्ण उ॒त वा॒योर॑दिक्षि।
या राध॑सा चोदि॒तारा॑ मती॒नां या वाज॑स्य द्रविणो॒दा उ॒त त्मन्॥ ९॥
आ नाम॑भिर्म॒रुतो॑ वक्षि॒ विश्वा॒ना रू॒पेभि॑र्जातवेदो हुवा॒नः।
य॒ज्ञं गिरो॑ जरि॒तुः सु॑ष्टु॒तिं च॒ विश्वे॑ गन्त मरुतो॒ विश्व॑ ऊ॒ती॥ १०॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

आ नो॑ दि॒वो बृ॑ह॒तः पर्व॑ता॒दा सर॑स्वती यज॒ता ग॑न्तु य॒ज्ञम्।
हवं॑ दे॒वी जु॑जुषा॒णा घृ॒ताची॑ श॒ग्मां नो॒ वाच॑मुश॒ती शृ॑णोतु॥ ११॥
आ वे॒धसं॒ नील॑पृष्ठं बृ॒हन्तं॒ बृ॒ह॒स्पतिं॒ सद॑ने सादयध्वम्।
सा॒दद्यो॑निं॒ दम॒ आ दी॑दि॒वांसं॒ हिर॑ण्यवर्णमरु॒षं स॑पेम॥ १२॥
आ ध॑र्ण॒सिर्बृ॒हद्दि॑वो॒ ररा॑णो॒ विश्वे॑भिर्ग॒न्त्वोम॑भिर्हुवा॒नः ।
ग्ना वसा॑न॒ ओष॑धी॒रमृ॑ध्रस्त्रि॒धातु॑शृङ्गो वृष॒भो व॑यो॒धाः ॥ १३॥
मा॒तुष्प॒दे प॑र॒मे शु॒क्र आ॒योर्वि॑प॒न्यवो॑ रास्पि॒रासो॑ अग्मन्।
सु॒शेव्यं॒ नम॑सा रा॒तह॑व्याः॒ शिशुं॑ मृजन्त्या॒यवो॒ न वा॒से ॥ १४॥
बृ॒हद्वयो॑ बृह॒ते तुभ्य॑मग्ने धिया॒जुरो॑ मिथु॒नासः॑ सचन्त।
दे॒वोदे॑वः सु॒हवो॑ भूतु॒ मह्यं॒ मा नो॑ मा॒ता पृ॑थि॒वी दु॑र्म॒तौ धा॑त्॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरौ देवा अनिबाधे स्याम ॥ १६ ॥
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यामृता सौभगानि ॥ १७ ॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः काश्यप अन्ये च दृष्टलिङ्गाः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, १३ विराट् जगती; २-६ निचृज्जगती; ८, ९, १२ जगती; ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; १०, ११ स्वराट्त्रिष्टुप्; १४ विराट्त्रिष्टुप्; १५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६, ८, ९, १२, १३, निषादः; ७, १०, ११, १४, १५ धैवतः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषदं स्वर्विदम् ।
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे गिराशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे ॥ १ ॥
श्रिये सुदृशीरुपरस्य याः स्वर्विरोचमानः ककुभामचोदते ।
सुगोपा असि न दभाय सुक्रतो परो मायाभिर्ऋत आस नाम ते ॥ २ ॥
अत्यं हविः सचते सच्च धातु चारिष्टगातुः स होता सहोभरिः ।
प्रसस्त्रीणो अनु बर्हिर्वृषा शिशुर्मध्ये युवाजरो विस्रुहा हितः ॥ ३ ॥
प्र व एते सुयुजो यामन्निष्टये नीचीरमुष्मै यम्यं ऋतावृधः ।
सुयन्तुभिः सर्वशासैरभीशुभिः क्रिविर्नामानि प्रवणे मुषायति ॥ ४ ॥
संजभुराणास्तरुभिः सुतेगृभे वयाकिनं चित्तगर्भासु सुस्वरुः ।
धारवाकेष्वृजुगाथ शोभसे वर्धस्व पत्नीरभि जीवो अध्वरे ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते सं छायया दधिरे सिध्रयाप्स्वा ।
महीमस्मभ्यमुरुषामुरु ज्रयो बृहत्सुवीरमनपच्युतं सहः ॥ ६ ॥
वेत्यग्रुर्जनिवान्वा अति स्पृधः समर्यता मनसा सूर्यः कविः ।
घ्रंसं रक्षन्तं परि विश्वतो गयमस्माकं शर्म वनवत्स्वावसुः ॥ ७ ॥
ज्यायांसमस्य यतुनस्य केतुनं ऋषिस्वरं चरति यासु नाम ते ।
यादृश्मिन्धायि तमपस्यया विदद्य उ स्वयं वहते सो अरं करत् ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुद्रमासामवं तस्थे अग्रिमा न रिष्यति सवनं यस्मिन्नायता।
अत्रा न हार्दि क्रवणस्य रेजते यत्रा मतिर्विद्यते पूतबन्धनी ॥ ९ ॥
स हि क्षत्रस्य मनसस्य चित्तिभिरेवावदस्य यजतस्य सध्रीः।
अवत्सारस्य स्पृणवाम रण्वभिः शविष्ठं वाजं विदुषा चिदर्ध्यम् ॥ १० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

श्येन आसामदितिः कक्ष्यो३ मदो विश्ववारस्य यजतस्य मायिनः।
समन्यमन्यमर्थयन्त्येतवे विदुर्विषाणं परिपानमन्ति ते ॥ ११ ॥
सदापृणो यजतो वि द्विषो वधीद्बाहुवृक्तः श्रुतबित्तर्यो वः सचा।
उभा स वरा प्रत्येति भाति च यदीं गणं भजते सुप्रयावभिः ॥ १२ ॥
सुतंभरो यजमानस्य सत्पतिर्विश्वासामूधः स धियामुदञ्चनः।
भरद्धेनू रसवच्छिश्रिये पयोऽनुब्रुवाणो अध्येति न स्वपन् ॥ १३ ॥
यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥ १४ ॥
अग्निर्जीगार तमृचः कामयन्तेऽग्निर्जीगार तमु सामानि यन्ति।
अग्निर्जीगार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥ १५ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः [४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सदापृण आत्रेयः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २ पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ९, ११ भुरिक्पङ्क्तिः; ८, १० स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५, ८-११ पञ्चमः; ३, ४, ६, ७ धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुक्थैरायत्या उषसो अर्चिनो गुः ।
अपावृत व्रजिनीरुत्स्वर्गाद्वि दुरो मानुषीर्देव आवः ॥ १ ॥
वि सूर्यो अमतिं न श्रियं सादोर्वाद् गवां माता जानती गात्।
धन्वर्णसो नद्यः खादोअर्णाः स्थूणेव सुमिता दृंहत द्यौः ॥ २ ॥
अस्मा उक्थाय पर्वतस्य गर्भो महीनां जनुषे पूर्व्याय ।
वि पर्वतो जिहीत साधत द्यौराविवासन्तो दसयन्त भूम ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूक्तेभिर्वो वचोभिर्देवजुष्टैरिन्द्रा न्वग्नी अवसे हुवध्यै।
उक्थेभिर्हि ष्मा कवयः सुयज्ञा आविवासन्तो मरुतो यजन्ति॥ ४॥
एतो न्वद्य सुध्यो३ भवाम प्र दुच्छुना मिनवामा वरीयः।
आरे द्वेषांसि सनुतर्दधामायाम प्राञ्चो यजमानमच्छ॥ ५॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

एता धियं कृणवामा सखायोऽप या माताँ ऋणुत व्रजं गोः।
यया मनुर्विशिशिप्रं जिगाय यया वणिग्वङ्कुरापा पुरीषम्॥ ६॥
अनूनोदत्र हस्तयतो अद्रिरार्चन्येन दश मासो नवग्वाः।
ऋतं यती सरमा गा अविन्दद्विश्वानि सत्याङ्गिराश्चकार॥ ७॥
विश्वे अस्या व्युषि माहिनायाः सं यद् गोभिरङ्गिरसो नवन्त।
उत्स आसां परमे सधस्थ ऋतस्य पथा सरमा विदद् गाः॥ ८॥
आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः क्षेत्रं यदस्योर्विया दीर्घयाथे।
रघुः श्येनः पतयदन्धो अच्छा युवा कविर्दीदयद् गोषु गच्छन्॥ ९॥
आ सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णोऽयुक्त यद्धरितौ वीतपृष्ठाः।
उद्ना न नावमनयन्त धीरा आशृण्वतीरापो अर्वागतिष्ठन्॥ १०॥
धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षां ययातरन्दश मासो नवग्वाः।
अया धिया स्याम देवगोपा अया धिया तुतुर्यामात्यंहः॥ ११॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतिक्षत्र आत्रेयः॥ देवता—१-६ विश्वे देवाः; ७, ८ देवपत्न्यः॥ छन्दः—१ भुरिग्जगती; २, ८ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ५, ६ निचृज्जगती; ४, ७ जगती॥ स्वरः—१, ३-७ निषादः; २, ८ पञ्चमः॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

हयो न विद्वाँ अयुजि स्वयं धुरि तां वहामि प्रतरणीमवस्युवम्।
नास्या वश्मि विमुचं नावृतं पुनर्विद्वान्पथः पुरएत ऋजु नेषति॥ १॥
अग्न इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो।
उभा नासत्या रुद्रो अध ग्राः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ अपः।
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु शंसं सवितारमूतये॥ ३॥
उत नो विष्णुरुत वातो अस्त्रिधो द्रविणोदा उत सोमो मयस्करत्।
उत ऋभव उत राये नो अश्विनोत त्वष्टोत विभ्वानु मंसते॥ ४॥
उत त्यन्नो मारुतं शर्ध आ गमद्दिविक्षयं यजत्तं बर्हिरासदे।
बृहस्पतिः शर्म पूषोत नो यमद्वरूथ्यं१ वरुणो मित्रो अर्यमा॥ ५॥
उत त्ये नः पर्वतासः सुशस्तयः सुदीतयो नद्य१स्त्रामणे भुवन्।
भगो विभक्ता शवसावसा गमदुरुव्यचा अदितिः श्रोतु मे हवम्॥ ६॥
देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु नः प्रावन्तु नस्तुजये वाजसातये।
याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते ता नो देवीः सुहवाः शर्म यच्छत॥ ७॥
उत ग्ना व्यन्तु देवपत्नीरिन्द्राण्य१ग्नाय्यश्विनी राट्।
आ रोदसी वरुणानी शृणोतु व्यन्तु देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्॥ ८॥

इति चतुर्थाष्टके द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थाष्टके तृतीयोऽध्यायः

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतिरथ आत्रेयः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१-३, ७ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४, ६, ७ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्रयुञ्जती दिव एति ब्रुवाणा मही माता दुहितुर्बोधयन्ती।
आविर्वासन्ती युवतिर्मनीषा पितृभ्य आ सदने जोहुवाना॥ १॥
अजिरासस्तदप ईयमाना आतस्थिवांसो अमृतस्य नाभिम्।
अनन्तास उरवो विश्वतः सीं परि द्यावापृथिवी यन्ति पन्थाः॥ २॥
उक्षा समुद्रो अरुषः सुपर्णः पूर्वस्य योनिं पितुरा विवेश।
मध्ये दिवो निहितः पृश्निरश्मा वि चक्रमे रजसस्पात्यन्तौ॥ ३॥
चत्वार ईं बिभ्रति क्षेमयन्तो दश गर्भं चरसे धापयन्ते।
त्रिधातवः परमा अस्य गावो दिवश्चरन्ति परि सद्यो अन्तान्॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इदं वपुर्निवचनं जनासश्चरन्ति यन्नद्यस्तस्थुरापः ।
द्वे यदीं बिभृतो मातुरन्ये इहेह जाते यम्याꣳ सबन्धू ॥ ५ ॥
वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति ।
उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्वो यन्त्यच्छ ॥ ६ ॥
तदस्तु मित्रावरुणा तदग्ने शं योरस्मभ्यमिदमस्तु शस्तम् ।
अशीमहि गाधमुत प्रतिष्ठां नमो दिवे बृहते सादनाय ॥ ७ ॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतिभानुरात्रेयः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, ३ धैवतः; २, ४, ५ निषादः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे स्वक्षत्राय स्वयशसे महे वयम् ।
आमेन्यस्य रजसो यदभ्र आँ अपो वृणाना वितनोति मायिनी ॥ १ ॥
ता अत्नत वयुनं वीरवक्षणं समान्या वृतया विश्वमा रजः ।
अपो अपाचीरपरा अपेजते प्र पूर्वीभिस्तिरते देवयुर्जनः ॥ २ ॥
आ ग्रावभिरहन्येभिरक्तुभिर्वरिष्ठं वज्रमा जिघर्ति मायिनि ।
शतं वा यस्य प्रचरन्त्स्वे दमे संवर्तयन्तो वि च वर्तयन्नहा ॥ ३ ॥
तामस्य रीतिं परशोरिव प्रत्यनीकमख्यं भुजे अस्य वर्पसः ।
सचा यदि पितुमन्तमिव क्षयं रत्नं दधाति भरहूतये विशे ॥ ४ ॥
स जिह्वया चतुरनीक ऋञ्जते चारु वसानो वरुणो यतन्नरिम् ।
न तस्य विद्म पुरुषत्वता वयं यतो भगः सविता दाति वार्यम् ॥ ५ ॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतिप्रभ आत्रेयः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

देवं वो अद्य सवितारमेषे भगं च रत्नं विभजन्तमायोः ।
आ वां नरा पुरुभुजा ववृत्यां दिवेदिवे चिदश्विना सखीयन् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति प्रयाणमसुरस्य विद्वान्त्सूक्तैर्देवं सवितारं दुवस्य ।
उप ब्रुवीत नमसा विजानञ्ज्येष्ठं च रत्नं विभजन्तमायोः ॥ २ ॥
अदत्रया दयते वार्याणि पूषा भगो अदितिर्वस्त उस्त्रः ।
इन्द्रो विष्णुर्वरुणो मित्रो अग्निरहानि भद्रा जनयन्त दस्माः ॥ ३ ॥
तन्नो अनर्वा सविता वरूथं तत्सिन्धव इषयन्तो अनु ग्मन् ।
उप यद्वोचे अध्वरस्य होता रायः स्याम पतयो वाजरत्नाः ॥ ४ ॥
प्र ये वसुभ्य ईवदा नमो दुर्ये मित्रे वरुणे सूक्तवाचः ।
अवैत्वभ्वं कृणुता वरीयो दिवस्पृथिव्योरवसा मदेम ॥ ५ ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—स्वस्त्यात्रेयः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ स्वराडुष्णिक्; २ निचृदुष्णिक्; ३ भुरिगुष्णिक्; ४, ५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३ ऋषभः; ४, ५ गान्धारः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम् ।
विश्वो राय इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे ॥ १ ॥
ते तं देव नेतर्ये चेमाँ अनुशसे ।
ते राया ते ह्याऽ३पृचे सचेमहि सचथ्यैः ॥ २ ॥
अतो न आ नृनतिथीनतः पत्नीर्दशस्यत ।
आरे विश्वं पथेष्ठां द्विषो युयोतु यूयुविः ॥ ३ ॥
यत्र वह्निरभिहितो दुद्रवद् द्रोण्यः पशुः ।
नृमणा वीरपस्त्योऽ र्णा धीरेव सनिता ॥ ४ ॥
एष ते देव नेता रथस्पतिः शं रयिः ।
शं राये शं स्वस्तय इषःस्तुतो मनामहे देवस्तुतो मनामहे ॥ ५ ॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—स्वस्त्यात्रेयः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २-४ निचृद्गायत्री; ५, ८-१० निचृद् उष्णिक्; ६ उष्णिक्; ७ विराडुष्णिक्; ११ निचृत्त्रिष्टुप्; १२ त्रिष्टुप्; १३ पङ्क्तिः; १४, १५ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ षड्जः; ५-१० ऋषभः; ११, १२ धैवतः; १३ पञ्चमः; १४, १५ गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैरूमेभिरा गहि। देवेभिर्हव्यदातये ॥ १ ॥
ऋतधीतय आ गत सत्यधर्माणो अध्वरम्। अग्नेः पिबत जिह्वया ॥ २ ॥
विप्रेभिर्विप्र सन्त्य प्रातर्यावभिरा गहि। देवेभिः सोमपीतये ॥ ३ ॥
अयं सोमश्चमू सुतोऽमत्रे परि षिच्यते। प्रिय इन्द्राय वायवे ॥ ४ ॥
वायवा याहि वीतये जुषाणो हव्यदातये।
पिबा सुतस्यान्धसो अभि प्रयः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिमर्हथः।
ताञ्जुषेथामरेपसावभि प्रयः ॥ ६ ॥
सुता इन्द्राय वायवे सोमासो दध्याशिरः।
निम्नं न यन्ति सिन्धवोऽभि प्रयः ॥ ७ ॥
सजूर्विश्वेभिर्देवेभिरश्विभ्यामुषसा सजूः।
आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण ॥ ८ ॥
सजूर्मित्रावरुणाभ्यां सजूः सोमेन विष्णुना।
आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण ॥ ९ ॥
सजूरादित्यैर्वसुभिः सजूरिन्द्रेण वायुना।
आ याह्यग्ने अत्रिवत्सुते रण ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः।
स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥ ११ ॥
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः।
बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥ १२ ॥
विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥ १३ ॥
स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति ।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव ।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि ॥ १५ ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ४, ५, १५ विराडनुष्टुप्; २, ७, १० निचृद् अनुष्टुप्; ३, ९, ११ विराडुष्णिक्; ६ पङ्क्तिः; ८, १२, १३ अनुष्टुप्; १४, १७ बृहती; १६ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ गान्धारः; ३, ९, ११ ऋषभः; ६ पञ्चमः; १४, १६, १७ मध्यमः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

प्र श्यावाश्व धृष्णुयार्चा मरुद्भिर्ऋक्वभिः ।
ये अद्रोघमनुष्वधं श्रवो मदन्ति यज्ञियाः ॥ १ ॥
ते हि स्थिरस्य शवसः सखायः सन्ति धृष्णुया ।
ते यामन्ना धृषद्विनस्त्मना पान्ति शश्वतः ॥ २ ॥
ते स्पन्द्रासो नोक्षणोऽतिं ष्कन्दन्ति शर्वरीः ।
मरुतामधा महो दिवि क्षमा च मन्महे ॥ ३ ॥
मरुत्सु वो दधीमहि स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।
विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिषः ॥ ४ ॥
अर्हन्तो ये सुदानवो नरो असामिशवसः ।
प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो दिवो अर्चा मरुद्भ्यः ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आ रुक्मैरा युधा नर ऋष्वा ऋष्टीरसृक्षत ।
अन्वेनाँ अह विद्युतो मरुतो जज्झतीरिव भानुरर्त त्मना दिवः ॥ ६ ॥
ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ ।
वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो दिवः ॥ ७ ॥
शर्धो मारुतमुच्छंस सत्यशवसमृभ्वसम् ।
उत स्म ते शुभे नरः प्र स्पन्द्रा युजत त्मना ॥ ८ ॥
उत स्म ते पर्षण्यामूर्णा वसत शुन्ध्यवः ।
उत पव्या रथानामद्रिं भिन्दन्त्योजसा ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपथयो विपथयोऽन्तस्पथा अनुपथाः ।
एतेभिर्महां नामभिर्यज्ञं विष्टार ओहते ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अधा नरो न्योहतेऽधा नियुत ओहते ।
अधा पारावता इति चित्रा रूपाणि दर्शयन् ॥ ११ ॥
छन्दःस्तुभः कुभन्यव उत्समा कीरिणो नृतुः ।
ते मे के चिन्न तायव ऊमा आसन्दृशि त्विषे ॥ १२ ॥
य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः कवयः सन्ति वेधसः ।
तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा ॥ १३ ॥
अच्छ ऋषे मारुतं गणं दाना मित्रं न योषणा ।
दिवो वा धृष्णव ओजसा स्तुता धीभिरिषण्यत ॥ १४ ॥
नू मन्वान एषां देवाँ अच्छा न वक्षणा ।
दाना सचेत सूरिभिर्यामश्रुतेभिरञ्जिभिः ॥ १५ ॥
प्र ये मे बन्ध्वेषे गां वोचन्त सूरयः पृश्निं वोचन्त मातरम् ।
अधा पितरमिष्मिणं रुद्रं वोचन्त शिक्वसः ॥ १६ ॥
सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः ।
यमुनायामधि श्रुतमुद्राधो गव्यं मृजे नि राधो अश्व्यं मृजे ॥ १७ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ भुरिग्गायत्री; २ निचृद्बृहती; ३ अनुष्टुप्; ४, ५ उष्णिक्; ६, १६ पङ्क्तिः; ७, १३ निचृत्पङ्क्तिः; ८, १२ गायत्री; ९ स्वराड्बृहती; १०, १५ विराडुष्णिक्; ११ निचृदुष्णिक्; १४ बृहती ॥ स्वरः—१, ८, १२ षड्जः; २, ९, १४ मध्यमः; ३ गान्धारः; ४, ५, १०, ११, १५ ऋषभः; ६, ७, १३, १६ पञ्चमः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

को वेद जानमेषां को वा पुरा सुम्नेष्वास मरुताम् ।
यद्युयुज्रे किलास्यः ॥ १ ॥
ऐताञ्रथेषु तस्थुषः कः शुश्राव कथा ययुः ।
कस्मै सस्रुः सुदासे अन्वापय इळाभिर्वृष्टयः सह ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya.Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते म आहुर्य आयययुरुप द्युभिर्विभिर्मदे ।
नरो मर्यो अरेपस इमान्पश्यन्निति ष्टुहि ॥ ३ ॥
ये अञ्जिषु ये वाशीषु स्वभानवः स्वक्षु रुक्मेषु खादिषु ।
श्राया रथेषु धन्वसु ॥ ४ ॥
युष्माकं स्मा रथाँ अनु मुदे दधे मरुतो जीरदानवः ।
वृष्टी द्यावो यतीरिव ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

आ यं नरः सुदानवो ददाशुषे दिवः कोशमचुच्यवुः ।
वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु धन्वना यन्ति वृष्टयः ॥ ६ ॥
ततृदानाः सिन्धवः क्षोदसा रजः प्र सस्रुर्धेनवो यथा ।
स्यन्ना अश्वाइवाध्वनो विमोचने वि यद्वर्तन्त एन्यः ॥ ७ ॥
आ यात मरुतो दिव आन्तरिक्षादुमादुत । माव स्थात परावतः ॥ ८ ॥
मा वो रसानितभा कुभा क्रुमुर्मा वः सिन्धुर्नि रीरमत् ।
मा वः परि ष्ठात्सरयुः पुरीषिण्यस्मे इत्सुम्नमस्तु वः ॥ ९ ॥
तं वः शर्धं रथानां त्वेषं गणं मारुतं नव्यसीनाम् ।
अनु प्र यन्ति वृष्टयः ॥ १० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

शर्धंशर्धं व एषां व्रातंव्रातं गणंगणं सुशस्तिभिः ।
अनु क्रामेम धीतिभिः ॥ ११ ॥
कस्मा अद्य सुजाताय रातहव्याय प्र ययुः ।
एना यामेन मरुतः ॥ १२ ॥
येन तोकाय तनयाय धान्यं बीजं वहध्वे अक्षितम् ।
अस्मभ्यं तद्धत्तन यद्व ईमहे राधो विश्वायु सौभगम् ॥ १३ ॥
अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः ।
वृष्टी शं योरप उस्रिय भेषजं स्याम मरुतः सह ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदेवः सं महासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः।
यं त्रायध्वे स्याम ते ॥ १५ ॥
स्तुहि भोजान्त्स्तुवतो अस्य यामनि रणन्गावो न यवसे।
यतः पूवाँइव सखीरनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः ॥ १६ ॥

[५४] चतुःपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ३, ७, १२ जगती; २ विराड्जगती; ४, ८, १० भुरिक्त्रिष्टुप्; ५, ९, १३, १४ त्रिष्टुप्; ६ भुरिग्जगती; ११, १५ निचृज्जगती ॥
स्वरः—१-३, ६, ७, ११, १२, १५ निषादः; ४, ५, ८-१०, १३, १४ धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वाचमनजा पर्वतच्युते।
धर्मस्तुभे दिव आ पृष्ठयज्वने द्युम्नश्रवसे महि नृम्णमर्चत ॥ १ ॥
प्र वो मरुतस्तविषा उदन्यवो वयोवृधो अश्वयुजः परिज्रयः।
सं विद्युता दधति वाशति त्रितः स्वरन्त्यापोऽवना परिज्रयः ॥ २ ॥
विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातत्विषो मरुतः पर्वतच्युतः।
अब्दया चिन्मुहुरा ह्रादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदौजसः ॥ ३ ॥
व्यृक्तून्रुद्रा व्यहानि शिक्वसो व्यन्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः।
वि यदजाँ अजथ नावं ईं यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिष्यथ ॥ ४ ॥
तद्वीर्यं वो मरुतो महित्वनं दीर्घं तंतान सूर्यो न योजनम्।
एता न यामे अगृभीतशोचिषोऽनश्वदां यन्त्ययातना गिरिम् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अभ्राजि शर्धो मरुतो यदर्णसं मोषथा वृक्षं कपनेव वेधसः।
अध स्मा नो अरमतिं सजोषसश्चक्षुरिव यन्तमनु नेषथा सुगम् ॥ ६ ॥
न स जीयते मरुतो न हन्यते न स्रेधति न व्यथते न रिष्यति।
नास्य राय उप दस्यन्ति नोतय ऋषिं वा यं राजानं वा सुषूदथ ॥ ७ ॥
नियुत्वन्तो ग्रामजितो यथा नरोऽर्यमणो न मरुतः कवन्धिनः।
पिन्वन्त्युत्सं यदिनासो अस्वरन्व्युन्दन्ति पृथिवीं मध्वो अन्धसा ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवत्वतीयं पृथिवी मरुद्भ्यः प्रवत्वती द्यौर्भवति प्रयद्भ्यः।
प्रवत्वतीः पथ्या अन्तरिक्ष्याः प्रवत्वन्तः पर्वता जीरदानवः॥ ९॥
यन्मरुतः सभरसः स्वर्णरः सूर्य उदिते मदथा दिवो नरः।
न वोऽश्वाः श्रथयन्ताह सिस्रतः सद्यो अस्याध्वनः पारमशनुथ॥ १०॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

अंसेषु व ऋष्टयः पत्सु खादयो वक्षःसु रुक्मा मरुतो रथे शुभः।
अग्निभ्राजसो विद्युतो गभस्त्योः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः॥ ११॥
तं नाकमर्यो अगृभीतशोचिषं रुशत्पिप्पलं मरुतो वि धूनुथ।
समच्यन्त वृजनाति त्विषन्त यत्स्वरन्ति घोषं वितततमृतायवः॥ १२॥
युष्मादत्तस्य मरुतो विचेतसो रायः स्याम रथ्यो३ वयस्वतः।
न यो युच्छति तिष्यो३ यथा दिवो३ऽस्मे रारन्त मरुतः सहस्त्रिणम्॥ १३॥
यूयं रयिं मरुतः स्पार्हवीरं यूयमृषिमवथ सामविप्रम्।
यूयमर्वन्तं भरताय वाजं यूयं धत्थ राजानं श्रुष्टिमन्तम्॥ १४॥
तद्वो यामि द्रविणं सद्यऊतयो येना स्वर्णं ततनाम नॄँरभि।
इदं सु मे मरुतो हर्यता वचो यस्य तरेम तरसा शतं हिमाः॥ १५॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ५ जगती; २, ४, ७, ८ निचृज्जगती; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ९ विराड्जगती॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ७-९ निषादः; ३, ६, १० धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥

प्रयज्यवो मरुतो भ्राजदृष्टयो बृहद्वयो दधिरे रुक्मवक्षसः।
ईयन्ते अश्वैः सुयमेभिराशुभिः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥ १॥
स्वयं दधिध्वे तविषीं यथा विद बृहन्महान्त उर्विया वि राजथ।
उतान्तरिक्षं ममिरे व्योजसा शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥ २॥
साकं जाताः सुभ्वः साकमुक्षिताः श्रिये चिदा प्रतरं वावृधुर्नरः।
विरोकिणः सूर्यस्येव रश्मयः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभूषेण्यं वो मरुतो महित्वनं दिदृक्षेण्यं सूर्यस्येव चक्षणम्।
उतो अस्माँ अमृतत्वे दधातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ४ ॥
उदीरयथा मरुतः समुद्रतो यूयं वृष्टिं वर्षयथा पुरीषिणः।
न वो दस्रा उप दस्यन्ति धेनवः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यदश्वान्धूर्षु पृषतीरयुग्ध्वं हिरण्ययान्प्रत्यत्काँ अमुग्ध्वम् ।
विश्वा इत्स्पृधो मरुतो व्यस्यथ शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ६ ॥
न पर्वता न नद्यो वरन्त वो यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत्।
उत द्यावापृथिवी याथना परि शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ७ ॥
यत्पूर्व्यं मरुतो यच्च नूतनं यदुद्यते वसवो यच्च शस्यते।
विश्वस्य तस्य भवथा नवेदसः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ८ ॥
मृळत नो मरुतो मा वधिष्टनास्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तन।
अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ॥ ९ ॥
यूयमस्मान्नयत वस्यो अच्छा निर्ऋतिभ्यो मरुतो गृणानाः।
जुषध्वं नो हव्यदातिं यजत्रा वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १० ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ५ निचृद्बृहती; ३ विराट्पङ्क्तिः; ४ विराड्बृहती; ६, ७ निचृत्पङ्क्तिः; ८, ९ बृहती ॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ८, ९ मध्यमः; ३, ६, ७ पञ्चमः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अग्रे शर्धन्तमा गणं पिष्टं रुक्मेभिरञ्जिभिः ।
विशो अद्य मरुतामव ह्वये दिवश्चिद्रोचनादधि ॥ १ ॥
यथा चिन्मन्यसे हृदा तदिन्मे जग्मुराशसः ।
ये ते नेदिष्ठं हवनान्यागमन्तान्वर्ध भीमसंदृशः ॥ २ ॥
मीळ्हुष्मतीव पृथिवी पराहता मदन्त्येत्यस्मदा ।
ऋक्षो न वो मरुतः शिमीवाँ अमो दुध्रो गौरिव भीमयुः ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि ये रिणन्त्योजसा वृथा गावो न दुर्धुरः ।
अश्मानं चित्स्वर्यं पर्वतं गिरिं प्र च्यावयन्ति यामभिः ॥ ४ ॥
उत्तिष्ठ नूनमेषां स्तोमैः समुक्षितानाम् ।
मरुतां पुरुतममपूर्व्यं गवां सर्गमिव ह्वये ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

युङ्ग्ध्वं ह्यरुषी रथे युङ्ग्ध्वं रथेषु रोहितः ।
युङ्ग्ध्वं हरी अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे ॥ ६ ॥
उत स्य वाज्यरुषस्तुविष्वणिरिह स्म धायि दर्शतः ।
मा वो यामेषु मरुतश्चिरं करत्प्र तं रथेषु चोदत ॥ ७ ॥
रथं नु मारुतं वयं श्रवस्युमा हुवामहे ।
आ यस्मिन्तस्थौ सुरणानि बिभ्रती सचा मरुत्सु रोदसी ॥ ८ ॥
तं वः शर्धं रथेशुभं त्वेषं पनस्युमा हुवे ।
यस्मिन्त्सुजाता सुभगा महीयते सचा मरुत्सु मीळ्हुषी ॥ ९ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः [५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ४, ५ जगती; २, ६ विराड्जगती; ३ निचृज्जगती; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७, ८ धैवतः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुविताय गन्तन ।
इयं वो अस्मत्प्रति हर्यते मतिस्तृष्णजे न दिव उत्सा उदन्यवे ॥ १ ॥
वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान इषुमन्तो निषङ्गिणः ।
स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम् ॥ २ ॥
धूनुथ द्यां पर्वतान्दाशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया ।
कोपयथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यदुग्राः पृषतीरयुग्ध्वम् ॥ ३ ॥
वातत्विषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमाइव सुसदृशः सुपेशसः ।
पिशङ्गाश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवः ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरु द्रप्सा अञ्जिमन्तः सुदानवस्त्वेषसंदृशो अनवभ्रराधसः।
सुजातासो जनुषा रुक्मवक्षसो दिवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे॥ ५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

ऋष्टयो वो मरुतो अंसयोरधि सह ओजो बाह्वोर्वो बलं हितम्।
नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे॥ ६॥
गोमदश्वावद्रथवत्सुवीरं चन्द्रवद्राधो मरुतो ददा नः।
प्रशस्तिं नः कृणुत रुद्रियासो भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य॥ ७॥
हुये नरो मरुतो मृळता नस्तुविमघासो अमृता ऋतज्ञाः।
सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः॥ ८॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-६, ८ धैवतः; ७ पञ्चमः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

तमु नूनं तविषीमन्तमेषां स्तुषे गणं मारुतं नव्यसीनाम्।
य आश्वश्वा अमवद्वहन्त उतेशिरे अमृतस्य स्वराजः॥ १॥
त्वेषं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिव्रतं मायिनं दातिवारम्।
मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविराधसो नॄन्॥ २॥
आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति।
अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः॥ ३॥
यूयं राजानमिर्यं जनाय विभ्वतष्टं जनयथा यजत्राः।
युष्मदेति मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत्सदश्वो मरुतः सुवीरः॥ ४॥
अराइवेदचरमा अहेव प्रप्र जायन्ते अकवा महोभिः।
पृश्नेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः॥ ५॥
यत्प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वैर्वीळुपविभिर्मरुतो रथेभिः।
क्षोदन्त आपो रिणते वनान्यवोस्रियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः॥ ६॥
प्रथिष्ट यामन्पृथिवी चिदेषां भर्तेव गर्भं स्वमिच्छवो धुः।
वातान्ह्यश्वान्धुर्यायुयुज्रे वर्ष स्वेदं चक्रिरे रुद्रियासः॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता ऋतज्ञाः।
सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्गिरयो बृहदुक्षमाणाः ॥ ८ ॥

[५९] एकोनषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ४ विराड्जगती; २, ३, ६ निचृज्जगती; ५ जगती; ७ स्वराट्त्रिष्टुप्; ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७, ८ धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प्र वः स्पळक्रन्त्सुविताय दावनेऽर्चा दिवे प्र पृथिव्या ऋतं भरे।
उक्षन्ते अश्वान्तरुषन्त आ रजोऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः ॥ १ ॥
अमादेषां भियसा भूमिरेजति नौर्न पूर्णा क्षरति व्यथिर्यती।
दूरेदृशो ये चितयन्त एमभिरन्तर्महे विदथे येतिरे नरः ॥ २ ॥
गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं सूर्यो न चक्षू रजसो विसर्जने।
अत्याइव सुभ्वश्चारवः स्थन मर्याइव श्रियसे चेतथा नरः ॥ ३ ॥
को वो महान्ति महतामुदश्नवत्कस्काव्या मरुतः को ह पौंस्या।
यूयं ह भूमिं किरणं न रेजथ प्र यद्धरध्वे सुविताय दावने ॥ ४ ॥
अश्वाइवेदरुषासः सबन्धवः शूराइव प्रयुधः प्रोत युयुधुः।
मर्याइव सुवृधो वावृधुर्नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः ॥ ५ ॥
ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास उद्भिदोऽमध्यमासो महसा वि वावृधुः।
सुजातासो जनुषा पृश्निमातरो दिवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन ॥ ६ ॥
वयो न ये श्रेणीः पप्तुरोजसान्तान्दिवो बृहतः सानुनस्परि।
अश्वासः एषामुभये यथा विदुः प्र पर्वतस्य नभनूँरचुच्यवुः ॥ ७ ॥
मिमातु द्यौरदितिर्वीतये नः सं दानुचित्रा उषसो यतन्ताम्।
आचुच्यवुर्दिव्यं कोशमेत ऋषे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः ॥ ८ ॥

[६०] षष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—मरुतो वाग्निश्च ॥ छन्दः—१, ३-५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ८ जगती ॥ स्वरः—१-६ धैवतः; ७, ८ निषादः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

ईळे॑ अ॒ग्निं स्वव॑सं॒ नमो॑भिरि॒ह प्र॑स॒त्तो वि च॑यत्कृ॒तं नः॑ ।
रथै॑रिव॒ प्र भ॑रे वाज॒यद्भिः॑ प्रदक्षि॒णिन्म॒रुतां॒ स्तोम॑मृध्याम् ॥ १ ॥
आ ये त॒स्थुः पृष॑तीषु श्रु॒तासु॑ सु॒खेषु॑ रु॒द्रा म॒रुतो॒ रथे॑षु ।
वना॑ चिदुग्रा जिहते॒ नि वो॑ भि॒या पृ॑थि॒वी चि॑द्रेजते॒ पर्व॑तश्चित् ॥ २ ॥
पर्व॑तश्चि॒न्महि॑ वृ॒द्धो बि॑भाय दि॒वश्चि॒त्सानु॑ रेजत स्व॒ने वः॑ ।
यत्क्रीळ॑थ मरुत ऋष्टि॒मन्त॒ आप॑इव स॒ध्र्य॑ञ्चो धवध्वे ॥ ३ ॥
व॒राइ॒वेद्रै॑व॒तासो॒ हिर॑ण्यैर॒भि स्व॒धाभि॑स्त॒न्वः॑ पिपिश्रे ।
श्रि॒ये श्रेयां॑सस्त॒वसो॒ रथे॑षु स॒त्रा महां॑सि चक्रिरे त॒नूषु॑ ॥ ४ ॥
अ॒ज्ये॒ष्ठासो॒ अक॑निष्ठास ए॒ते सं भ्रात॑रो वावृधुः॒ सौभ॑गाय ।
युवा॑ पि॒ता स्वपा॑ रु॒द्र ए॑षां सु॒दुघा॒ पृश्निः॑ सु॒दिना॑ म॒रुद्भ्यः॑ ॥ ५ ॥
यदु॑त्त॒मे म॑रुतो मध्य॒मे वा॒ यद्वा॑व॒मे सु॑भगासो दि॒वि ष्ठ ।
अतो॑ नो रुद्रा उ॒त वा॒ न्व१॒॑स्याग्ने॑ वि॒त्ताद्ध॒विषो॒ यद्यजा॑म ॥ ६ ॥
अ॒ग्निश्च॒ यन्म॑रुतो विश्ववेदसो दि॒वो वह॑ध्व॒ उत्त॑रा॒दधि॒ ष्णुभिः॑ ।
ते म॑न्दसा॒ना धुन॑यो रिशादसो वा॒मं ध॑त्त॒ यज॑मानाय सुन्व॒ते ॥ ७ ॥
अग्ने॑ म॒रुद्भिः॑ शु॒भय॑द्भि॒र्ऋक्व॑भिः॒ सोमं॑ पिब मन्दसा॒नो ग॑णश्रिभिः॑ ।
पा॒व॒केभि॑र्विश्वमि॒न्वेभि॑रा॒युभि॒र्वैश्वा॑नर प्र॒दिवा॑ के॒तुना॑ स॒जूः ॥ ८ ॥

[६१] एकषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—१-४, ११-१६ मरुतः; ५-८ शशीयसी तरन्तमहिषी; ९ पुरुमीळ्हो वैददश्विः; १० तरन्तो वैददश्विः; १७, १८, १९ रथवीतिर्दाल्भ्यः ॥
छन्दः—१-४, ६-८, १०-१९ गायत्री; ५ अनुष्टुप्; ९ सतोबृहती ॥
स्वरः—१-४, ६-८, १०-१९ षड्जः; ५ गान्धारः; ९ मध्यमः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

के ष्ठा॑ नरः॒ श्रेष्ठ॑तमा॒ य एक॑एक आय॒य । प॒र॒मस्याः॑ परा॒वतः॑ ॥ १ ॥
क्व१॒॑ वोऽ श्वाः॒ क्वा॒३॒॑भीश॑वः क॒थं शे॑क क॒था य॑य । पृ॒ष्ठे सदो॑ न॒सोर्यमः॑ ॥ २ ॥
ज॒घने॒ चोद॑ एषां॒ वि स॒क्थानि॒ नरो॑ यमुः । पु॒त्र॒कृ॒थे न जन॑यः ॥ ३ ॥
परा॑ वीरास एतन॒ मर्या॑सो॒ भद्र॑जानयः । अ॒ग्नि॒तपो॒ यथास॑थ ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनत्साश्व्यं पशुमुत गव्यं शतावयम् ।
श्यावाश्वस्तुताय या दोर्वीरायोपबर्बृहत् ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

उत त्वा स्त्री शशीयसी पुंसो भवति वस्यसी। अदेवत्रादराधसः ॥ ६ ॥
वि या जानाति जसुरिं वि तृष्यन्तं वि कामिनम्। देवत्रा कृणुते मनः ॥ ७ ॥
उत घा नेमो अस्तुतः पुमाँ इति ब्रुवे पणिः। स वैरदेय इत्समः ॥ ८ ॥
उत मेऽरपद्युवतिर्ममन्दुषी प्रति श्यावाय वर्तनिम्।
वि रोहिता पुरुमीळ्हाय येमतुर्विप्राय दीर्घयशसे ॥ ९ ॥
यो मे धेनूनां शतं वैददश्विर्यथा ददत्। तरन्तइव मंहना ॥ १० ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

य ईं वहन्त आशुभिः पिबन्तो मदिरं मधु। अत्र श्रवांसि दधिरे ॥ ११ ॥
येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते रथेष्वा। दिवि रुक्मइवोपरि ॥ १२ ॥
युवा स मारुतो गणस्त्वेषरथो अनेद्यः। शुभंयावाप्रतिष्कुतः ॥ १३ ॥
को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धूतयः। ऋतजाता अरेपसः ॥ १४ ॥
यूयं मर्ता विपन्यवः प्रणेतार इत्था धिया। श्रोतारो यामहूतिषु ॥ १५ ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः। आ यज्ञियासो ववृत्तन ॥ १६ ॥
एतं मे स्तोममूर्म्ये दाभ्र्याय परा वह। गिरो देवि रथीरिव ॥ १७ ॥
उत मे वोचतादितिः सुतसोमे रथवीतौ। न कामो अप वेति मे ॥ १८ ॥
एष क्षेति रथवीतिर्मघवा गोमतीरनु। पर्वतेष्वपश्रितः ॥ १९ ॥

[६२] द्विषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—श्रुतविदात्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३-६ निचृत्त्रिष्टुप्; ७-९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

ऋतेन ऋतमपिहितं ध्रुवं वां सूर्यस्य यत्र विमुचन्त्यश्वान्।
दश शता सह तस्थुस्तदेकं देवानां श्रेष्ठं वपुषामपश्यम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्सु वां मित्रावरुणा महित्वमीर्मा तस्थुषीरहभिर्दुदुह्रे।
विश्वाः पिन्वथः स्वसरस्य धेना अनु वामेकः पविरा ववर्त॥ २॥
अधारयतं पृथिवीमुत द्यां मित्रराजाना वरुणा महोभिः।
वर्धयतमोषधीः पिन्वतं गा अव वृष्टिं सृजतं जीरदानू॥ ३॥
आ वामश्वासः सुयुजो वहन्तु यतरश्मय उप यन्त्ववर्वाक्।
घृतस्य निर्णिगनु वर्तते वामुप सिन्धवः प्रदिवि क्षरन्ति॥ ४॥
अनु श्रुतामतिं वर्धदुर्वीं बर्हिरिव यजुषा रक्षमाणा।
नमस्वन्ता धृतदक्षाधि गर्ते मित्रासाथे वरुणेळास्वन्तः॥ ५॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

अक्रविहस्ता सुकृते परस्पा यं त्रासाथे वरुणेळास्वन्तः।
राजाना क्षत्रमहृणीयमाना सहस्रस्थूणं बिभृथः सह द्वौ॥ ६॥
हिरण्यनिर्णिगयो अस्य स्थूणा वि भ्राजते दिव्यश्वाजनीव।
भद्रे क्षेत्रे निमिता तिल्विले वा सनेम मध्वो अधिगर्त्यस्य॥ ७॥
हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टावयःस्थूणमुदिता सूर्यस्य।
आ रोहथो वरुण मित्र गर्तमतश्चक्षाथे अदितिं दितिं च॥ ८॥
यद्वंहिष्ठं नातिविधे सुदानू अच्छिद्रं शर्म भुवनस्य गोपा।
तेन नो मित्रावरुणावविष्टं सिषासन्तो जिगीवांसः स्याम॥ ९॥

इति चतुर्थाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थाष्टके चतुर्थोऽध्यायः

[६३] त्रिषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अर्चनाना आत्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २, ४, ७ निचृज्जगती; ३, ५, ६ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

ऋतस्य गोपावधि तिष्ठथो रथं सत्यधर्माणा परमे व्योमनि।
यमत्र मित्रावरुणावथो युवं तस्मै वृष्टिर्मधुमत्पिन्वते दिवः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्राजावस्य भुवनस्य राजथो मित्रावरुणा विदथे स्वर्दृशा ।
वृष्टिं वां राधो अमृतत्वमीमहे द्यावापृथिवी वि चरन्ति तन्यवः ॥ २ ॥
सम्राजा उग्रा वृषभा दिवस्पती पृथिव्या मित्रावरुणा विचर्षणी ।
चित्रेभिरभ्रैरुप तिष्ठथो रवं द्यां वर्षयथो असुरस्य मायया ॥ ३ ॥
माया वां मित्रावरुणा दिवि श्रिता सूर्यो ज्योतिश्चरति चित्रमायुधम् ।
तमभ्रेण वृष्ट्या गूहथो दिवि पर्जन्य द्रप्सा मधुमन्त ईरते ॥ ४ ॥
रथं युञ्जते मरुतः शुभे सुखं शूरो न मित्रावरुणा गविष्टिषु ।
रजांसि चित्रा वि चरन्ति तन्यवो दिवः सम्राजा पयसा न उक्षतम् ॥ ५ ॥
वाचं सु मित्रावरुणाविरावतीं पर्जन्यश्चित्रां ववदति त्विषीमतीम् ।
अभ्रा वसत मरुतः सु मायया द्यां वर्षयतमरुणामरेपसम् ॥ ६ ॥
धर्मणा मित्रावरुणा विपश्चिता व्रता रक्षेथे असुरस्य मायया ।
ऋतेन विश्वं भुवनं वि राजथः सूर्यमा धत्थो दिवि चित्र्यं रथम् ॥ ७ ॥

[६४] चतुःषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—अर्चनाना आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २ विराडनुष्टुप्; ३, ५ भुरिगुष्णिक्; ४ उष्णिक्; ६ निचृदनुष्टुप्; ७ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ६ गान्धारः; ३-५ ऋषभः; ७ पञ्चमः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

वरुणं वो रिशादसमृचा मित्रं हवामहे ।
परि व्रजेव बाह्वोर्जगन्वांसा स्वर्णरम् ॥ १ ॥
ता बाहवा सुचेतुना प्र यन्तमस्मा अर्चते ।
शेवं हि जार्यं वां विश्वासु क्षासु जोगुवे ॥ २ ॥
यन्नूनमश्यां गतिं मित्रस्य यायां पथा ।
अस्य प्रियस्य शर्मण्यहिंसानस्य सश्चिरे ॥ ३ ॥
युवाभ्यां मित्रावरुणोपमं धेयामृचा ।
यद्ध क्षये मघोनां स्तोतॄणां च स्पूर्धसे ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ नो॑ मित्र सुदी॒तिभि॒र्वरु॑णश्च स॒धस्थ॒ आ।
स्वे क्षये॑ म॒घोना॑ सखी॒नां च॑ वृ॒धसे॑ ॥ ५ ॥
यु॒वं नो॒ येषु॑ वरुण क्ष॒त्रं बृ॒हच्च॑ बिभृ॒थः ।
उ॒रु णो॒ वाज॑सातये कृ॒तं रा॒ये स्व॒स्तये॑ ॥ ६ ॥
उ॒च्छन्त्यां॑ मे यज॒ता दे॒वक्ष॑त्रे रुश॒द्गवि ।
सु॒तं सोम॒ं न ह॒स्तिभि॒रा प॒ड्भिर्धी॑वतं नरा॒ बिभ्र॑तावर्च॒नान॑सम् ॥ ७ ॥

[६५] पञ्चषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—रातहव्य आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ४ अनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ३ स्वराडुष्णिक्; ५ भुरिगुष्णिक्; ६ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः; ३, ५ ऋषभः; ६ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

य॒श्चि॒केत॒ स सु॒क्रतु॑र्देव॒त्रा स ब्र॑वीतु नः ।
वरु॑णो॒ यस्य॑ दर्श॒तो मि॒त्रो वा॒ वन॑ते॒ गिरः॑ ॥ १ ॥
ता हि श्रेष्ठ॑वर्चसा॒ राजा॑ना दीर्घ॒श्रुत्त॑मा ।
ता स॒त्पति॑ ऋ॒तावृ॑धा ऋ॒तावा॑ना॒ जने॑जने ॥ २ ॥
ता वा॑मिया॒नोऽव॑से॒ पूर्वा॒ उप॑ ब्रुवे॒ सचा॑ ।
स्वश्वा॑सः सु॒ चेतु॑ना॒ वाजाँ॑ अ॒भि प्र॑दा॒वने॑ ॥ ३ ॥
मि॒त्रो अं॑हो॒श्चिदा॑दु॒रु क्षया॑य गा॒तुं व॑नते ।
मि॒त्रस्य॒ हि प्र॒तूर्व॑तः सु॒म॒तिर॑स्ति॒ विध॑तः ॥ ४ ॥
व॒यं मि॒त्रस्याव॑सि॒ स्याम॑ स॒प्रथ॑स्तमे ।
अ॒ने॒हस॒स्त्वोत॑यः स॒त्रा वरु॑णशेषसः ॥ ५ ॥
यु॒वं मि॑त्रे॒मं ज॑न॒ं यत॑थः॒ सं च॑ नयथः ।
मा म॒घोन॒ः परि॑ ख्यतं॒ मो अ॒स्माक॒मृषी॑णां गोपी॒थे न॑ उरुष्यतम् ॥ ६ ॥

[६६] षट्षष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—रातहव्य आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ५, ६ विराडनुष्टुप्; २ निचृदनुष्टुप्; ३, ४ स्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

आ चिकितान सुक्रतू देवौ मर्त रिशादसा ।
वरुणाय ऋतपेशसे दधीत प्रयसे महे ॥ १ ॥
ता हि क्षत्रमविहुतं सम्यगसुर्यꣳमाशाते ।
अध व्रतेव मानुषं स्वꣳर्ण धायि दर्शतम् ॥ २ ॥
ता वामेषे रथानामुर्वीं गव्यूतिमेषाम् ।
रातहव्यस्य सुष्टुतिं दधृक्स्तोमैर्मनामहे ॥ ३ ॥
अधा हि काव्या युवं दक्षस्य पूर्भिरद्भुता ।
नि केतुना जनानां चिकेथे पूतदक्षसा ॥ ४ ॥
तदूतं पृथिवि बृहच्छ्रव एष ऋषीणाम् ।
त्रयसानावरं पृथ्वति क्षरन्ति यामभिः ॥ ५ ॥
आ यद्वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः ।
व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये ॥ ६ ॥

[६७] सप्तषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—यजत आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३, ५ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

बळित्था देव निष्कृतमादित्या यजतं बृहत् ।
वरुण मित्रार्यमन्वर्षिष्ठं क्षत्रमाशाथे ॥ १ ॥
आ यद्योनिं हिरण्ययं वरुण मित्र सदथः ।
धर्तारा चर्षणीनां यन्तं सुम्नं रिशादसा ॥ २ ॥
विश्वे हि विश्ववेदसो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
व्रता पदेव सश्चिरे पान्ति मर्त्यꣳ रिषः ॥ ३ ॥
ते हि सत्या ऋतस्पृश ऋतावानो जनेजने ।
सुनीथासः सुदानवोऽहोश्चिदुरुचक्रयः ॥ ४ ॥
को नु वां मित्रास्तुतो वरुणो वा तनूनाम् ।
तत्सु वामेषते मतिरत्रिभ्य एषते मतिः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[६८] अष्टषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—यजत आत्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३, ४ निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा। महिक्षत्रावृतं बृहत्॥ १॥
सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च। देवा देवेषु प्रशस्ता॥ २॥
ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वां क्षत्रं देवेषु॥ ३॥
ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते। अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥ ४॥
वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः। बृहन्तं गर्तमाशाते ॥ ५॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—उरुचक्रिरात्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

त्री रोचना वरुण त्रीँरुत द्यून्त्रीणि मित्र धारयथो रजांसि।
वावृधानावमतिं क्षत्रियस्यानु व्रतं रक्षमाणावजुर्यम् ॥ १॥
इरावतीर्वरुण धेनवो वां मधुमद्वां सिन्धवो मित्र दुहे।
त्रयस्तस्थुर्वृषभासस्तिसॄणां धिषणानां रेतोधा वि द्युमन्तः॥ २॥
प्रातर्देवीमदितिं जोहवीमि मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य।
राये मित्रावरुणा सर्वतातेळे तोकाय तनयाय शं योः॥ ३॥
या धर्तारा रजसो रोचनस्योतादित्या दिव्या पार्थिवस्य।
न वां देवा अमृता आ मिनन्ति व्रतानि मित्रावरुणा ध्रुवाणि॥ ४॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—उरुचक्रिरात्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण। मित्र वंसि वां सुमतिम्॥ १॥
ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धायसे। वयं ते रुद्रा स्याम॥ २॥
पातं नो रुद्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा। तुर्याम दस्यून्तनूभिः॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha,Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा कस्याद्भुतक्रतू यक्षं भुजेमा तनूभिः। मा शेषसा मा तनसा॥ ४॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—बाहुवृक्त आत्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

आ नो गन्तं रिशादसा वरुण मित्र बर्हणा। उपेमं चारुमध्वरम्॥ १॥
विश्वस्य हि प्रचेतसा वरुण मित्र राजथः। ईशाना पिप्यतं धियः॥ २॥
उप नः सुतमा गतं वरुण मित्र दाशुषः। अस्य सोमस्य पीतये॥ ३॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—बाहुवृक्त आत्रेयः॥ देवता—मित्रावरुणः॥ छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

आ मित्रे वरुणे वयं गीर्भिर्जुहुमो अत्रिवत्। नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये॥ १॥
व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा धर्मणा यातयज्जना। नि बर्हिषि सदतं सोमपीतये॥ २॥
मित्रश्च नो वरुणश्च जुषेतां यज्ञमिष्टये। नि बर्हिषि सदतां सोमपीतये॥ ३॥

षष्ठोऽनुवाकः

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पौर आत्रेयः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ७ निचृदनुष्टुप्; ३, ६, ८, ९ अनुष्टुप्; १० विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

यद्द्य स्थः परावति यदर्वावत्यश्विना । यद्वा पुरू पुरुभुजा यदन्तरिक्ष आ गतम्॥ १॥
इह त्या पुरुभूतमा पुरू दंसांसि बिभ्रता । वरस्या याम्यध्रिगू हुवे तुविष्टमा भुजे॥ २॥
ईर्मान्यद्वपुषे वपुश्चक्रं रथस्य येमथुः । पर्यन्या नाहुषा युगा मह्ना रजांसि दीयथः॥ ३॥
तदू षु वामेना कृतं विश्वा यद्वामनु ष्टवे । नाना जातावरेपसा समस्मे बन्धुमेयथुः॥ ४॥
आ यद्वां सूर्या रथं तिष्ठद्रघुष्यदं सदा । परि वामरुषा वयो घृणा वरन्त आतपः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

युवोरत्रिश्चिकेतति नरा सुम्नेन चेतसा ।
घर्मं यद्वामरेपसं नासत्यास्ना भुरण्यति ॥ ६ ॥
उग्रो वां ककुहो ययिः शृण्वे यामेषु सन्तनिः ।
यद्वां दंसोभिरश्विनात्रिर्नरावर्वर्तति ॥ ७ ॥
मध्व ऊ षु मधूयुवा रुद्रा सिषक्ति पिप्युषी ।
यत्समुद्राति पर्षथः पक्वाः पृक्षो भरन्त वाम् ॥ ८ ॥
सत्यमिद्वा उ अश्विना युवामाहुर्मयोभुवा ।
ता यामन्यामहूतमा यामन्ना मृळयत्तमा ॥ ९ ॥
इमा ब्रह्माणि वर्धनाश्विभ्यां सन्तु शन्तमा ।
या तक्षाम रथाँइवावोचाम बृहन्नमः ॥ १० ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पौर आत्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, २, १० विराडनुष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ४-६, ९, निचृदनुष्टुप्; ७ विराडुष्णिक्; ८ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१-६, ९, १० गान्धारः; ७, ८ ऋषभः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

कूष्ठो देवावश्विनाद्या दिवो मनावसू ।
तच्छ्रवथो वृषण्वसू अत्रिर्वामा विवासति ॥ १ ॥
कुह त्या कुह नु श्रुता दिवि देवा नासत्या ।
कस्मिन्ना यतथो जने को वां नदीनां सचा ॥ २ ॥
कं याथः कं ह गच्छथः कमच्छा युञ्जाथे रथम् ।
कस्य ब्रह्माणि रण्यथो वयं वामुशमसीष्टये ॥ ३ ॥
पौरं चिद्ध्युदप्रुतं पौरं पौराय जिन्वथः ।
यदीं गृभीततातये सिंहमिव द्रुहस्पदे ॥ ४ ॥
प्र च्यवानाज्जुजुरुषो वव्रिमत्कं न मुञ्चथः ।
युवा यदी कृथः पुनरा काममृण्वे वध्वः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अस्ति हि वामिह स्तोता स्मसि वां सन्दृशि श्रिये ।
नू श्रुतं म आ गतमवोभिर्वाजिनीवसू ॥ ६ ॥
को वामद्य पुरूणामा ववर्ते मर्त्यानाम् ।
को विप्रो विप्रवाहसा को यज्ञैर्वाजिनीवसू ॥ ७ ॥
आ वां रथो रथानां येष्ठो यात्वश्विना ।
पुरू चिदस्मयुस्तिर आङ्गूषो मर्त्येष्वा ॥ ८ ॥
शमू षु वां मधूयुवास्माकमस्तु चर्कृतिः ।
अर्वाचीना विचेतसा विभिः श्येनेव दीयतम् ॥ ९ ॥
अश्विना यद्ध कर्हि चिच्छ्रुष्टिं यातमिमं हवम् ।
वस्वीरू षु वां भुजः पृञ्चन्ति सु वां पृचः ॥ १० ॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अवस्युरात्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१,३ पङ्क्तिः; २, ४, ६-८ निचृत्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ९ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।
स्तोता वामश्विनावृषिः स्तोमेन प्रति भूषति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ १ ॥
अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना ।
दस्रा हिरण्यवर्तनी सुषुम्ना सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ २ ॥
आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम् ।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ३ ॥
सुष्टुभो वां वृषण्वसू रथे वाणीच्याहिता ।
उत वां ककुहो मृगः पृक्षः कृणोति वापुषो माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ४ ॥
बोधिन्मनसा रथ्येषिरा हवनश्रुता ।
विभिश्च्यवानमश्विना नि यांथो अद्वयाविनं माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ वां नरा मनोयुजोऽश्वासः प्रुषितप्सवः ।
वयो वहन्तु पीतये सह सुम्नेभिरश्विना माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम् ।
तिरश्चिदर्यया परि वर्तिर्यातमदाभ्या माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ७ ॥
अस्मिन्यज्ञे अदाभ्या जरितारं शुभस्पती ।
अवस्युमश्विना युवं गृणन्तमुप भूषथो माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ८ ॥
अभूदुषा रुशत्पशुराग्निरधाय्यृत्वियः ।
अयोजि वां वृषण्वसू रथो दस्रावमर्त्यो माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ९ ॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१,२ स्वराट्पङ्क्तिः; ३-५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-५ धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद्विप्राणां देवया वाचो अस्थुः ।
अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ ॥ १ ॥
न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठान्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह ।
दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्तिं दाशुषे शंभविष्ठा ॥ २ ॥
उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य ।
दिवा नक्तमवसा शन्तमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान ॥ ३ ॥
इदं हि वां प्रदिवि स्थानमोक इमे गृहा अश्विनेदं दुरोणम् ।
आ नो दिवो बृहतः पर्वतादद्भ्यो यातमिषमूर्जं वहन्ता ॥ ४ ॥
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥ ५ ॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं पुरा गृध्रादररुषः पिबातः ।
प्रातर्हि यज्ञमश्विना दधाते प्र शंसन्ति कवयः पूर्वभाजः ॥ १ ॥
प्रातर्यजध्वमश्विना हिनोत न सायमस्ति देवया अजुष्टम् ।
उतान्यो अस्मद्यजते वि चावः पूर्वःपूर्वो यजमानो वनीयान् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो घृतस्नुः पृक्षो वहन्ना रथो वर्तते वाम्।
मनोजवा अश्विना वातरंहा येनातियाथो दुरितानि विश्वा ॥ ३ ॥
यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां विवेष चनिष्ठं पित्वो ररते विभागे।
स तोकमस्य पीपरच्छमीभिरनूर्ध्वभासः सदमित्तुतुर्यात् ॥ ४ ॥
समश्विनोरवसा नूतनेन मयोभुवा सुप्रणीती गमेम ।
आ नो रयिं वहतमोत वीराना विश्वान्यमृता सौभगानि ॥ ५ ॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सप्तवध्रिरात्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१-३ उष्णिक्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ अनुष्टुप्; ७-९ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३ ऋषभः; ४ धैवतः; ५-९ गान्धारः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अश्विनावेह गच्छतं नासत्या मा वि वेनतम्। हंसाविव पततमा सुताँ उप ॥ १ ॥
अश्विना हरिणाविव गौराविवानु यवसम्। हंसाविव पततमा सुताँ उप ॥ २ ॥
अश्विना वाजिनीवसू जुषेथां यज्ञमिष्टये। हंसाविव पततमा सुताँ उप ॥ ३ ॥
अत्रिर्यद्वामवरोहन्नृबीसमजोहवीन्नाधमानेव योषा ।
श्येनस्य चिज्जवसा नूतनेनागच्छतमश्विना शन्तमेन ॥ ४ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

वि जिहीष्व वनस्पते योनिः सूष्यन्त्याइव ।
श्रुतं मे अश्विना हवं सप्तवध्रिं च मुञ्चतम् ॥ ५ ॥
भीताय नाधमानाय ऋषये सप्तवध्रये ।
मायाभिरश्विना युवं वृक्षं सं च वि चाचथः ॥ ६ ॥
यथा वातः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः ।
एवा ते गर्भ एजतु निरैतु दशमास्यः ॥ ७ ॥
यथा वातो यथा वनं यथा समुद्र एजति ।
एवा त्वं दशमास्य सहावेहि जरायुणा ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दश॒ मासाञ्छशया॒नः कु॑मा॒रो अधि॑ मा॒तरि॑ ।
नि॒रैतु॑ जी॒वो अक्ष॑तो जी॒वो जी॑वन्त्या॒ अधि॑ ॥ ९ ॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—सत्यश्रवा आत्रेयः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१ स्वराड्ब्राह्मीगायत्री; २, ३, ७ भुरिग्बृहती; ४, ५, ८ पङ्क्तिः; ६, ९ निचृत्पङ्क्तिः; १० स्वराड्बृहती ॥ स्वरः—१ षड्जः; २, ३, ७, १० मध्यमः; ४-६, ८, ९ पञ्चमः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

म॒हे नो॑ अ॒द्य बो॑धयोषो॒ रा॒ये दि॒वित्म॑ती ।
यथा॑ चिन्नो॒ अबो॑धयः स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ १ ॥
या सु॒नी॒थे शौच॑द्रथे॒ व्यौच्छो॑ दुहितर्दिवः ।
सा व्यु॑च्छ सहीयसि स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ २ ॥
सा नो॑ अ॒द्याभ॒रद्व॑सुर्व्यु॑च्छा दुहितर्दिवः ।
यो व्यौच्छ॒: सहीय॑सि स॒त्यश्र॑वसि वा॒य्ये सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ३ ॥
अ॒भि ये त्वा॑ विभावरि॒ स्तोमै॑र्गृ॒णन्ति॒ वह्न॑यः ।
म॒घैर्म॑घोनि सु॒श्रियो॒ दाम॑न्वन्तः सु॒रा॒तयः॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ४ ॥
यच्चि॒द्धि ते॑ ग॒णा इ॒मे छ॒दय॑न्ति म॒घत्त॑ये ।
परि॑ चिद्वष्टयो दधुर्दी॒तो॒ राधो॒ अह्र॑यं सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

ऐषु॑ धा वी॒रव॒द्यश॒ उषो॑ मघोनि सू॒रिषु॑ ।
ये नो॒ राधां॑स्यह्र॒या म॒घवा॑नो॒ अरा॑सत॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ६ ॥
तेभ्यो॑ द्यु॒म्नं बृ॒हद्यश॒ उषो॑ मघो॒न्या व॑ह ।
ये नो॒ राधां॑स्यश्व्या॒ गव्या॑ भज॑न्त सू॒रय॒: सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ७ ॥
उ॒त नो॒ गोम॑तीरिष॒ आ व॑हा दुहितर्दिवः ।
सा॒कं सूर्य॑स्य र॒श्मिभिः॒ शुक्रैः॒ शोच॑द्भिर॒र्चिभि॒: सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ८ ॥
व्यु॑च्छा दुहितर्दिवो॒ मा चि॒रं त॑नुथा॒ अपः॑ ।
नेत्त्वा॑ स्ते॒नं यथा॑ रि॒पुं तपा॑ति॒ सूरो॑ अ॒र्चिषा॒ सुजा॑ते॒ अश्व॑सूनृते ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एतावद्वेदुषस्त्वं भूयो वा दातुमर्हसि ।
या स्तोतृभ्यो विभावर्युच्छन्ती न प्रमीयसे सुजाते अश्वसूनृते ॥ १० ॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—सत्यश्रवा आत्रेयः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३-५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ६, धैवतः; ३-५ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

द्युतद्यामानं बृहतीमृतेन ऋतावरीमरुणप्सुं विभातीम् ।
देवीमुषसं स्वरावहन्तीं प्रति विप्रासो मतिभिर्जरन्ते ॥ १ ॥
एषा जनं दर्शता बोधयन्ती सुगान्पथः कृण्वती यात्यग्रे ।
बृहद्रथा बृहती विश्वमिन्वोषा ज्योतिर्यच्छत्यग्रे अह्नाम् ॥ २ ॥
एषा गोभिररुणेभिर्युजानास्त्रेधन्ती रयिमप्रायु चक्रे ।
पथो रदन्ती सुविताय देवी पुरुष्टुता विश्ववारा वि भाति ॥ ३ ॥
एषा व्येनी भवति द्विबर्हा आविष्कृण्वाना तन्वं पुरस्तात् ।
ऋतस्य पन्थामन्वेति साधु प्रजानतीव न दिशो मिनाति ॥ ४ ॥
एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती दृशये नो अस्थात् ।
अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात् ॥ ५ ॥
एषा प्रतीची दुहिता दिवो नॄन्योषेव भद्रा नि रिणीते अप्सः ।
व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योतिर्युवतिः पूर्वथाकः ॥ ६ ॥

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१, ५ जगती; २ विराड्जगती; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, २, ४, ५ निषादः; ३ धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः ।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥ १ ॥
विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे ।
वि नाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनु प्रयाणमुषसो वि राजति ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्य प्रयाणमन्वन्य इद्ययुर्देवा देवस्य महिमानमोजसा ।
यः पार्थिवानि विममे स एतशो रजांसि देवः सविता महित्वना ॥ ३ ॥
उत यासि सवितस्त्रीणि रोचनोत सूर्यस्य रश्मिभिः समुच्यसि ।
उत रात्रीमुभयतः परीयस उत मित्रो भवसि देव धर्मभिः ॥ ४ ॥
उतेशिषे प्रसवस्य त्वमेक इदुत पूषा भवसि देव यामभिः ।
उतेदं विश्वं भुवनं वि राजसि श्यावाश्वस्ते सवितः स्तोममानशे ॥ ५ ॥

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्व आत्रेयः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २, ४, ९ निचृद्गायत्री; ३, ५-७ गायत्री; ८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-९ षड्जः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

तत्सवितुर्वृणीमहे वयं देवस्य भोजनम् ।
श्रेष्ठं सर्वधातमं तुरं भगस्य धीमहि ॥ १ ॥
अस्य हि स्वयंशस्तरं सवितुः कच्चन प्रियम् । न मिनन्ति स्वराज्यम् ॥ २ ॥
स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः । तं भागं चित्रमीमहे ॥ ३ ॥
अद्या नो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगम् । परा दुःष्वप्न्यं सुव ॥ ४ ॥
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आ सुव ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अनागसो अदितये देवस्य सवितुः सवे । विश्वा वामानि धीमहि ॥ ६ ॥
आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे । सत्यसवं सवितारम् ॥ ७ ॥
य इमे उभे अहनी पुर एत्यप्रयुच्छन् । स्वाधीर्देवः सविता ॥ ८ ॥
य इमा विश्वा जातान्याश्रावयति श्लोकेन । प्र च सुवाति सविता ॥ ९ ॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—पृथिवी ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ स्वराट्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ निचृज्जगती; ५, ६ त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ८, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ९ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-७ धैवतः; ४ निषादः; ८, १० पञ्चमः; ९ गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अच्छा वद तवसं गीर्भिराभिः स्तुहि पर्जन्यं नमसा विवास।
कनिक्रदद् वृषभो जीरदानू रेतो दधात्योषधीषु गर्भम् ॥ १ ॥
वि वृक्षान् हन्त्युत हन्ति रक्षसो विश्वं बिभाय भुवनं महावधात्।
उतानागा ईषते वृष्ण्यावतो यत्पर्जन्यः स्तनयन् हन्ति दुष्कृतः ॥ २ ॥
रथीव कशयाश्वाँ अभिक्षिपन्नाविर्दूतान्कृणुते वर्ष्याँ३ अह।
दूरात्सिंहस्य स्तनथा उदीरते यत्पर्जन्यः कृणुते वर्ष्यं१ नभः ॥ ३ ॥
प्र वाता वान्ति पतयन्ति विद्युत उदोषधीर्जिहते पिन्वते स्वः।
इरा विश्वस्मै भुवनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवीं रेतसावति ॥ ४ ॥
यस्य व्रते पृथिवी नन्नमीति यस्य व्रते शफवज्जर्भुरीति।
यस्य व्रत ओषधीर्विश्वरूपाः स नः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ॥ ५ ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

दिवो नो वृष्टिं मरुतो ररीध्वं प्र पिन्वत वृष्णो अश्वस्य धाराः।
अर्वाङेतेन स्तनयित्नुनेह्यपो निषिञ्चन्नसुरः पिता नः ॥ ६ ॥
अभि क्रन्द स्तनय गर्भमा धा उदन्वता परि दीया रथेन।
दृतिं सु कर्ष विषितं न्यञ्चं समा भवन्तूद्वतो निपादाः ॥ ७ ॥
महान्तं कोशमुदचा नि षिञ्च स्यन्दन्तां कुल्या विषिताः पुरस्तात्।
घृतेन द्यावापृथिवी व्युन्धि सुप्रपाणं भवत्वघ्न्याभ्यः ॥ ८ ॥
यत्पर्जन्य कनिक्रदत्स्तनयन् हंसि दुष्कृतः ।
प्रतीदं विश्वं मोदते यत्किं च पृथिव्यामधि ॥ ९ ॥
अवर्षीर्वर्षमुदु षू गृभायाकर्धन्वान्यत्येतवा उ ।
अजीजन ओषधीर्भोजनाय कमुत प्रजाभ्योऽविदो मनीषाम् ॥ १० ॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—पृथिवी ॥ छन्दः—१, २ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

बळित्था पर्वतानां खिद्रं बिभर्षि पृथिवि ।
प्र या भूमि॰ प्रवत्वति मह्ना जिनोषि महिनि ॥ १ ॥
स्तोमासस्त्वा विचारिणि प्रति ष्टोभन्त्युक्तुभिः ।
प्र या वाजं न हेषन्तं पेरुमस्यस्यर्जुनि ॥ २ ॥
दृळ्हा चिद्या वनस्पतीन्क्ष्मया दर्धर्ष्योजसा ।
यत्ते अभ्रस्य विद्युतो दिवो वर्षन्ति वृष्टयः ॥ ३ ॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१, २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, ८ निचृत् त्रिष्टुप्; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ७ ब्राह्म्युष्णिक् ॥ स्वरः—१-४, ६, ८ धैवतः; ५ पञ्चमः; ७ ऋषभः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

प्र सम्राजे बृहदर्चा गभीरं ब्रह्म प्रियं वरुणाय श्रुताय ।
वि यो जघान शमितेव चर्मोपस्तिरे पृथिवीं सूर्याय ॥ १ ॥
वनेषु व्य१न्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पय उस्रियासु ।
हृत्सु क्रतुं वरुणो अप्स्व१ग्निं दिवि सूर्यमदधात्सोममद्रौ ॥ २ ॥
नीचीनबारं वरुणः कबन्धं प्र ससर्ज रोदसी अन्तरिक्षम् ।
तेन विश्वस्य भुवनस्य राजा यवं न वृष्टिर्व्युनत्ति भूम ॥ ३ ॥
उनत्ति भूमि॰ पृथिवीमुत द्यां यदा दुग्धं वरुणो वष्ट्यादित् ।
समभ्रेण वसत पर्वतासस्तविषीयन्तः श्रथयन्त वीराः ॥ ४ ॥
इमामू ष्वासुरस्य श्रुतस्य महीं मायां वरुणस्य प्र वोचम् ।
मानेनेव तस्थिवाँ अन्तरिक्षे वि यो ममे पृथिवीं सूर्येण ॥ ५ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

इमामू नू कवितमस्य मायां महीं देवस्य नकिरा दधर्ष ।
एकं यदुद्ना न पृणन्त्येनीरासिञ्चन्तीर्वनयः समुद्रम् ॥ ६ ॥
अर्यम्य॰ वरुण मित्र्य॰ वा सखायं वा सदमिद् भ्रातरं वा ।
वेशं वा नित्य॰ वरुणारणं वा यत्सीमागश्चकृमा शिश्रथस्तत् ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितवासो यद्रिरिपुर्न दीवि यद्वा घा सत्यमुत यन्न विद्म।
सर्वा ता वि ष्य शिथिरेव देवाधा ते स्याम वरुण प्रियासः॥ ८॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ४, ५ स्वराडुष्णिक्; २, ३ विराडनुष्टुप्; ६ विराट्पूर्वानुष्टुप्॥ स्वरः—१, ४, ५ ऋषभः; २, ३, ६ गान्धारः॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

इन्द्राग्नी यमवथ उभा वाजेषु मर्त्यम्।
दूळ्हा चित्स प्र भेदति द्युम्ना वाणीरिव त्रितः॥ १॥
या पृतनासु दुष्टरा या वाजेषु श्रवाय्या।
या पञ्च चर्षणीरभीन्द्राग्नी ता हवामहे॥ २॥
तयोरिदमवच्छवस्तिग्मा दिद्युन्मघोनोः।
प्रति द्रुणा गभस्त्योर्गवां वृत्रघ्न एषते॥ ३॥
ता वामेषे रथानामिन्द्राग्नी हवामहे।
पती तुरस्य राधसो विद्वांसा गिर्वणस्तमा॥ ४॥
ता वृधन्तावनु द्यून्मतीय देवावदभा।
अर्हन्ता चित्पुरो दधेऽशेव देवाववर्वते॥ ५॥
एवेन्द्राग्निभ्यामहावि हव्यं शूष्यं घृतं न पूतमद्रिभिः।
ता सूरिषु श्रवो बृहद्रयिं गृणत्सु दिधृतमिषं गृणत्सु दिधृतम्॥ ६॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—एवयामरुदात्रेयः॥ देवता—मरुतः॥ छन्दः—१ अतिजगती; २, ८ स्वराड्जगती; ३, ६, ७ भुरिग्जगती; ४ निचृज्जगती; ५, ९ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा एवयामरुत्।
प्र शर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे॥ १॥
प्र ये जाता महिना ये च नु स्वयं प्र विद्मना ब्रुवत एवयामरुत्।
क्रत्वा तद्वो मरुतो नाधृषे शवो दाना मह्ना तदेषामधृष्टासो नाद्रयः॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र ये दिवो बृहतः शृण्विरे गिरा सुशुक्वानः सुभ्वः एवयामरुत्।
न येषामिरी सधस्थ ईष्टे आँ अग्रयो न स्वविद्युतः प्र स्पन्द्रासो धुनीनाम् ॥ ३ ॥
स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात्सदस एवयामरुत् ।
यदायुक्त त्मना स्वादधि ष्णुभिर्विष्पर्धसो विमहसो जिगाति
शेवृधो नृभिः ॥ ४ ॥
स्वनो न वोऽमवान्रेजयद् वृषा त्वेषो ययिस्तविष एवयामरुत् ।
येना सहन्त ऋञ्जत स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः
स्वायुधास इष्मिणः ॥ ५ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

अपारो वो महिमा वृद्धशवसस्त्वेषं शवोऽवत्वेवयामरुत् ।
स्थातारो हि प्रसितौ संदृशि स्थन ते न उरुष्यता निदः शुशुक्वांसो नाग्नयः ॥ ६ ॥
ते रुद्रासः सुमखा अग्रयो यथा तुविद्युम्ना अवन्त्वेवयामरुत् ।
दीर्घं पृथु पप्रथे सद्म पार्थिवं येषामज्मेष्वा महः शर्धांस्यद्भुतैनसाम् ॥ ७ ॥
अद्वेषो नो मरुतो गातुमेतन श्रोता हवं जरितुरेवयामरुत् ।
विष्णोर्महः समन्यवो युयोतन स्मद्रथ्योऽ न दंसनाप द्वेषांसि सनुतः ॥ ८ ॥
गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरक्ष एवयामरुत्।
ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य प्रचेतसः स्यात दुर्धर्तवो निदः ॥ ९ ॥

इति पञ्चमं मण्डलम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ७, १३ भुरिक्पङ्क्तिः; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४, ६, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः; ८, १० त्रिष्टुप्; ९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ५, ७, १३ पञ्चमः; ३, ४, ६, ८-१२ धैवतः॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोतास्या धियो अभवो दस्म होता।
त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु सहो विश्वस्मै सहसे सहध्यै॥ १॥
अधा होता न्यसीदो यजीयानिळस्पद इषयन्नीड्यः सन्।
तं त्वा नरः प्रथमं देवयन्तो महो राये चितयन्तो अनु ग्मन्॥ २॥
वृतेव यन्तं बहुभिर्वसव्यैरस्त्वे रयिं जागृवांसो अनु ग्मन्।
रुशन्तमग्निं दर्शतं बृहन्तं वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसम्॥ ३॥
पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रव आपन्नमृक्तम्।
नामानि चिद्दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्त सन्दृष्टौ॥ ४॥
त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्यां त्वां राय उभयासो जनानाम्।
त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्॥ ५॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः॥ ३६॥

सपर्येण्यः स प्रियो विक्ष्वग्निर्होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान्।
तं त्वा वयं दम आ दीदिवांसमुप ज्ञुबाधो नमसा सदेम॥ ६॥
तं त्वा वयं सुध्यो३ नव्यमग्ने सुम्नायव ईमहे देवयन्तः।
त्वं विशो अनयो दीद्यानो दिवो अग्ने बृहता रोचनेन॥ ७॥
विशां कविं विश्पतिं शश्वतीनां नितोशनं वृषभं चर्षणीनाम्।
प्रेतीषणिमिषयन्तं पावकं राजन्तमग्निं यजतं रयीणाम्॥ ८॥
सो अग्न ईजे शशमे च मर्तो यस्त आनट् समिधा हव्यदातिम्।
य आहुतिं परि वेदा नमोभिर्विश्वेत्स वामा दधते त्वोतः॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्मा उ ते महि महे विधेम नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः।
वेदी सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैरा ते भद्रायां सुमतौ यतेम॥ १०॥
आ यस्ततन्थ रोदसी वि भासा श्रवोभिश्च श्रवस्यस्तरुत्रः।
बृहद्भिर्वाजैः स्थविरेभिरस्मे रेवद्भिरग्ने वितरं वि भाहि॥ ११॥
नृवद्वसो सदमिद्धेह्यस्मे भूरि तोकाय तनयाय पश्वः।
पूर्वीरिषो बृहतीरारेअघा अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु॥ १२॥
पुरूण्यग्ने पुरुधा त्वाया वसूनि राजन्वसुता ते अश्याम्।
पुरूणि हि त्वे पुरुवार सन्त्यग्ने वसु विधते राजनि त्वे॥ १३॥

इति चतुर्थाष्टके चतुर्थोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थाष्टके पञ्चमोऽध्यायः

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ९ भुरिगुष्णिक्; २ स्वराडुष्णिक्; ३, ४ अनुष्टुप्; ५, ६, १० निचृदनुष्टुप्; ७ निचृदुष्णिक्; ८ उष्णिक्; ११ भुरिंगतिजगती॥ स्वरः—१, २, ७-९ ऋषभः; ३-६, १० गान्धारः; ११ निषादः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

त्वं हि क्षैतवद्यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे।
त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि॥ १॥
त्वां हि ष्मा चर्षणयो यज्ञेभिर्गीर्भिरीळते।
त्वां वाजी यात्यवृको रजस्तूर्विश्वचर्षणिः॥ २॥
सजोषस्त्वा दिवो नरो यज्ञस्य केतुमिन्धते।
यद्ध स्य मानुषो जनः सुम्नायुर्जुह्वे अध्वरे॥ ३॥
ऋधद्यस्ते सुदानवे धिया मर्तः शशमते।
ऊती ष बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति॥ ४॥
समिधा यस्त आहुतिं निशितिं मर्त्यो नशत्।
वयावन्तं स पुष्यति क्षयमग्ने शतायुषम्॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि षञ्छुक्र आततः ।
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ॥ ६ ॥
अधा हि विक्ष्वीड्योऽसि प्रियो नो अतिथिः ।
रण्वः पुरीव जूर्यः सूनुर्न त्रययाय्यः ॥ ७ ॥
क्रत्वा हि द्रोणे अज्यसेऽग्ने वाजी न कृत्व्यः ।
परिज्मेव स्वधा गयोऽत्यो न ह्वार्यः शिशुः ॥ ८ ॥
त्वं त्या चिदच्युताग्ने पशुर्न यवसे ।
धामा ह यत्ते अजर वना वृश्चन्ति शिक्वसः ॥ ९ ॥
वेषि ह्यध्वरीयतामग्ने होता दमे विशाम् ।
समृधो विश्पते कृणु जुषस्व हव्यमङ्गिरः ॥ १० ॥
अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः ।
वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नृन्द्विषो अंहांसि
दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ॥ ११ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप्; २, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-७ धैवतः; ८ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

अग्ने स क्षेषदृतपा ऋतेजा उरु ज्योतिर्नशते देवयुष्टे ।
यं त्वं मित्रेण वरुणः सजोषा देव पासि त्यजसा मर्तमंहः ॥ १ ॥
ईजे यज्ञेभिः शशमे शमीभिर्ऋधद्वाराया ग्नये ददाश ।
एवा चन तं यशसामजुष्टिर्नाहो मर्तं नशते न प्रदृप्तिः ॥ २ ॥
सूरो न यस्य दृशतिरेरेपा भीमा यदेति शुचतस्त आ धीः ।
हेषस्वतः शुरुधो नायमक्तोः कुत्रा चिद्रण्वो वसतिर्वनेजाः ॥ ३ ॥
तिग्मं चिदेम महि वर्पो अस्य भसदश्वो न यमसान आसा ।
विजेहमानः परशुर्न जिह्वां द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स इदस्तेव प्रति धादसिष्यञ्छ्रीतं तेजोऽयसो न धाराम्।
चित्रध्रजतिररतिर्यो अक्तोर्वेर्न द्रुषद्वा रघुपत्मजंहाः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

स ईं रेभो न प्रति वस्त उस्राः शोचिषा रारपीति मित्रमहाः।
नक्तं य ईमरुषो यो दिवा नृनमर्त्यो अरुषो यो दिवा नृन् ॥ ६ ॥
दिवो न यस्य विधतो नवींनोद् वृषा रुक्ष ओषधीषु नूनोत्।
घृणा न यो ध्रजसा पत्मना यन्ना रोदसी वसुना दं सुपत्नी ॥ ७ ॥
धायोभिर्वा यो युज्येभिरर्कैर्विद्युन्न दंविद्योत्स्वेभिः शुष्मैः।
शर्धो वा यो मरुतां ततक्ष ऋभुर्न त्वेषो रंभसानो अद्यौत् ॥ ८ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ५-७ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्पङ्क्तिः; ८ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ धैवतः २-८ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

यथा होतर्मनुषो देवताता यज्ञेभिः सूनो सहसो यजासि।
एवा नो अद्य समना समानानुशन्नग्न उशतो यक्षि देवान् ॥ १ ॥
स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोरग्निर्वन्दारु वेद्यश्चनो धात्।
विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषूषर्भुद्भूदतिथिर्जातवेदाः ॥ २ ॥
द्यावो न यस्य पनयन्त्यभ्वं भासांसि वस्ते सूर्यो न शुक्रः।
वि य इनोत्यजरः पावकोऽश्नस्य चिच्छिश्नथत्पूर्व्याणि ॥ ३ ॥
वद्मा हि सूनो अस्यद्मसद्वा चक्रे अग्निर्जनुषाज्मान्नम्।
स त्वं न ऊर्जसन ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः ॥ ४ ॥
निरितिक्ते यो वारणमन्नमत्ति वायुर्न राष्ट्र्यत्येत्यक्तून्।
तुर्याम यस्त आदिशामरातीरत्यो न हुतः पतंतः परिह्रुत् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

आ सूर्यो न भानुमद्भिरर्कैरग्ने ततन्थ रोदसी वि भासा।
चित्रो नयत्परि तमांस्यक्तः शोचिषा पत्मन्नौशिजो न दीयन् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैर्वावृमहे महि नः श्रोष्यग्ने।
इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः॥ ७॥
नू नो अग्नेऽवृकेभिः स्वस्ति वेषि रायः पथिभिः पर्ष्यंहः।
ता सूरिभ्यो गृणते रासि सुम्नं मदेम शतहिमाः सुवीराः॥ ८॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४ त्रिष्टुप्; २, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पंङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २, ४-७ धैवतः; ३ पञ्चमः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

हुवे वः सूनुं सहसो युवानमद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम्।
य इन्वति द्रविणानि प्रचेता विश्ववाराणि पुरुवारो अध्रुक्॥ १॥
त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियासः।
क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्त्संसौभगानि दधिरे पावके॥ २॥
त्वं विक्षु प्रदिवः सीद आसु क्रत्वा रथीरभवो वार्याणाम्।
अतं इनोषि विधते चिकित्वो व्यानुषग्जातवेदो वसूनि॥ ३॥
यो नः सनुत्यो अभिदासदग्ने यो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात्।
तमजरेभिर्वृषभिस्तव स्वैस्तपा तपिष्ठ तपसा तपस्वान्॥ ४॥
यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैरर्केभिः सूनो सहसो ददाशत्।
स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा वि भाति॥ ५॥
स तत्कृधीषितस्तूयमग्ने स्पृधो बाधस्व सहसा सहस्वान्।
यच्छस्यसे द्युभिरक्तो वचोभिस्तज्जुषस्व जरितुर्घोषि मन्म॥ ६॥
अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयिं रयिवः सुवीरम्।
अश्याम वाजमभि वाजयन्तोऽश्याम द्युम्नमजराजरं ते॥ ७॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१-५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६-७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

प्र नव्यसा सहसः सूनुमच्छा यज्ञेन गातुमव इच्छमानः।
वृश्चद्वनं कृष्णयामं रुशन्तं वीती होतारं दिव्यं जिगाति ॥ १ ॥
स श्वितानस्तन्यतू रोचनस्था अजरेभिर्नानदद्भिर्यविष्ठः।
यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरनुयाति भर्वन् ॥ २ ॥
वि ते विष्वग्वातजूतासो अग्ने भामासः शुचे शुचयश्चरन्ति।
तुविम्रक्षासो दिव्या नवग्वा वना वनन्ति धृषता रुजन्तः ॥ ३ ॥
ये ते शुक्रासः शुचयः शुचिष्मः क्षां वपन्ति विषितासो अश्वाः।
अध भ्रमस्त उर्विया वि भाति यातयमानो अधि सानु पृश्नेः ॥ ४ ॥
अध जिह्वा पापतीति प्र वृष्णो गोषुयुधो नाशनिः सृजाना।
शूरस्येव प्रसितिः क्षातिरग्नेर्दुर्वर्तुर्भीमो दयते वनानि ॥ ५ ॥
आ भानुना पार्थिवानि व्रयांसि महस्तोदस्य धृषता ततन्थ।
स बाधस्वाप भया सहोभिः स्पृधो वनुष्यन्वनुषो नि जूर्व ॥ ६ ॥
स चित्र चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्र चन्द्राभिर्गृणते युवस्व ॥ ७ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ पङ्क्तिः; ६ जगती; ७ स्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ७ धैवतः; ३-५ पञ्चमः; ६ निषादः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम्।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥ १ ॥
नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त ।
वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः ॥ २ ॥
त्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने त्वद्वीरासो अभिमातिषाहः ।
वैश्वानर त्वमस्मासु धेहि वसूनि राजन्त्स्पृहयाय्याणि ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते।
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन्वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः ॥ ४ ॥
वैश्वानर तव तानि व्रतानि महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।
यज्जायमानः पित्रोरुपस्थेऽविन्दः केतुं वयुनेष्वह्नाम् ॥ ५ ॥
वैश्वानरस्य विमितानि चक्षसा सानूनि दिवो अमृतस्य केतुना।
तस्येदु विश्वा भुवनाधि मूर्धनि वयाइव रुरुहुः सप्त विस्रुहः ॥ ६ ॥
वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो वि दिवो रोचना कविः।
परि यो विश्वा भुवनानि पप्रथेऽदब्धो गोपा अमृतस्य रक्षिता ॥ ७ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—१, ४ जगती; २, ३, ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ विराड्जगती; ७ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६ निषादः; २, ३, ५, ७ धैवतः ॥
अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू सहः प्र नु वोचं विदथा जातवेदसः।
वैश्वानराय मतिर्नव्यसी शुचिः सोमइव पवते चारुरग्नये ॥ १ ॥
स जायमानः परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत।
व्यन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुर्वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत् ॥ २ ॥
व्यस्तभ्नाद्रोदसी मित्रो अद्भुतोऽन्तर्वावदक्मो ज्योतिषा तमः।
वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयद्वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्ण्यम् ॥ ३ ॥
अपामुपस्थे महिषा अगृभ्णत विशो राजानमुप तस्थुरृग्मियम्।
आ दूतो अग्निमभरद्विवस्वतो वैश्वानरं मातरिश्वा परावतः ॥ ४ ॥
युगेयुगे विदथ्यं गृणद्भ्योऽग्ने रयिं यशसं धेहि नव्यसीम्।
पव्येव राजन्नघशंसमजर नीचा नि वृश्च वनिनं न तेजसा ॥ ५ ॥
अस्माकमग्ने मघवत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम्।
वयं जयेम शतिनं सहस्त्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः ॥ ६ ॥
अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टेऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरीन्।
रक्षा च नो दुदुषां शर्धो अग्ने वैश्वानर प्र च तारीः स्तवानः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४ पङ्क्तिः; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप्; ७ भुरिग्जगती ॥ स्वरः—१, ५, ६ धैवतः; २-४ पञ्चमः; ७ निषादः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ १ ॥

अहश्च कृष्णमहरर्जुनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः ।
वैश्वानरो जायमानो न राजावातिरज्ज्योतिषाग्निस्तमांसि ॥ १ ॥
नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं न यं वयन्ति समरेऽतमानाः ।
कस्य स्वित्पुत्र इह वक्त्वानि परो वदात्यवरेण पित्रा ॥ २ ॥
स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति ।
य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन् ॥ ३ ॥
अयं होता प्रथमः पश्यतेममिदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु ।
अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तोऽमर्त्यस्तन्वा३ वर्धमानः ॥ ४ ॥
ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृशये कं मनो जविष्ठं पतयत्स्वन्तः ।
विश्वे देवाः समनसः सकेता एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु ॥ ५ ॥
वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वी३दं ज्योतिर्हृदय आहितं यत् ।
वि मे मनश्चरति दूरआधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये ॥ ६ ॥
विश्वे देवा अनमस्यन्भियानास्त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम् ।
वैश्वानरोऽवतूतये नोऽमर्त्योऽवतूतये नः ॥ ७ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ आर्षीपङ्क्तिः; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ७ प्राजापत्याबृहती ॥ स्वरः—१-३, ५, ६ धैवतः; ४ पञ्चमः; ७ मध्यमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

पुरो वो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिं प्रयति यज्ञे अग्निमध्वरे दधिध्वम् ।
पुर उक्थेभिः स हि नो विभावा स्वध्वरा करति जातवेदाः ॥ १ ॥
तमु द्युमः पुर्वणीक होतरग्ने अग्निभिर्मनुष इधानः ।
स्तोमं यमस्मै ममतेव शूषं घृतं न शुचि मतयः पवन्ते ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीपाय स श्रवसा मर्त्येषु यो अग्नये ददाश विप्र उक्थैः।
चित्राभिस्तमूतिभिश्चित्रशोचिर्व्रजस्य साता गोमतो दधाति॥ ३॥
आ यः पप्रौ जायमान उर्वी दूरेदृशा भासा कृष्णाध्वा।
अध बहु चित्तम ऊर्म्यायास्तिरः शोचिषा ददृशे पावकः॥ ४॥
नू नश्चित्रं पुरुवाजाभिरूती अग्ने रयिं मघवद्भ्यश्च धेहि।
ये राधसा श्रवसा चात्यन्यान्त्सुवीर्येभिश्चाभि सन्ति जनान्॥ ५॥
इमं यज्ञं चनो धा अग्न उशन्यं त आसानो जुहुते हविष्मान्।
भरद्वाजेषु दधिषे सुवृक्तिमवीर्वाजस्य गध्यस्य सातौ॥ ६॥
वि द्वेषांसीनुहि वर्धयेळां मदेम शतहिमाः सुवीराः॥ ७॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-६ धैवतः; २ पञ्चमः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

यजस्व होतरिषितो यजीयानग्ने बाधो मरुतां न प्रयुक्ति।
आ नो मित्रावरुणा नासत्या द्यावा होत्राय पृथिवी ववृत्याः॥ १॥
त्वं होता मन्द्रतमो नो अध्रुगन्तर्देवो विदथा मर्त्येषु।
पावकया जुह्वा३ वह्निरासाग्ने यजस्व तन्वं१ तव स्वाम्॥ २॥
धन्या चिद्धि त्वे धिषणा वष्टि प्र देवाञ्जन्म गृणते यजध्यै।
वेषिष्ठो अङ्गिरसां यद्ध विप्रो मधु च्छन्दो भनति रेभ इष्टौ॥ ३॥
अदिद्युतत्स्वपाको विभावाग्ने यजस्व रोदसी उरूची।
आयुं न यं नमसा रातहव्या अञ्जन्ति सुप्रयसं पञ्च जनाः॥ ४॥
वृञ्जे ह यन्नमसा बर्हिरग्नावयामि स्रुग्घृतवती सुवृक्तिः।
अम्यक्षि सद्म सदने पृथिव्या अश्रायि यज्ञः सूर्ये न चक्षुः॥ ५॥
दशस्या नः पुर्वणीक होतर्देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः।
रायः सूनो सहसो वावसाना अति स्रसेम वृजनं नांहः॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २ धैवतः; ३-६ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

मध्ये होता दुरोणे बर्हिषो राळग्निस्तोदस्य रोदसी यजध्यै ।
अयं स सूनुः सहस ऋतावा दूरात्सूर्यो न शोचिषा ततान ॥ १ ॥
आ यस्मिन्त्वे स्वपाके यजत्र यक्षद्राजन्त्सर्वतातेव नु द्यौः ।
त्रिषधस्थस्ततुरुषो न जंहो हव्या मघानि मानुषा यजध्यै ॥ २ ॥
तेजिष्ठा यस्यारतिर्वनेराट् तोदो अध्वन्न वृधसानो अद्यौत् ।
अद्रोघो न द्रविता चेतति त्मन्नमर्त्योऽवर्त्र ओषधीषु ॥ ३ ॥
सास्माकेभिरेतरी न शूषैरग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः ।
द्रवन्नो वन्वन् क्रत्वा नार्वोस्त्रः पितेव जार्यायि यज्ञैः ॥ ४ ॥
अध स्मास्य पनयन्ति भासो वृथा यत्तक्षदनुयाति पृथ्वीम् ।
सद्यो यः स्पन्द्रो विषितो धवीयानृणो न तायुरति धन्वा राट् ॥ ५ ॥
स त्वं नो अर्वन्निदायाविश्वेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।
वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥ ६ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-६ धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

त्वद्विश्वा सुभग सौभगान्यग्ने वि यन्ति वनिनो न वयाः ।
श्रुष्टी रयिर्वाजो वृत्रतूर्ये दिवो वृष्टिरीड्यो रीतिरपाम् ॥ १ ॥
त्वं भगो न आ हि रत्नमिषे परिज्मेव क्षयसि दस्मवर्चाः ।
अग्ने मित्रो न बृहत ऋतस्यासि क्षत्ता वामस्य देव भूरेः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स सत्पतिः शवसा हन्ति वृत्रमग्ने विप्रो वि पणेर्भर्ति वाजम्।
यं त्वं प्रचेत ऋतजात राया सजोषा नप्त्रापां हिनोषि॥ ३॥
यस्ते सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर्यज्ञैर्मर्तो निशितं वेद्यानट्।
विश्वं स देव प्रति वारमग्ने धत्ते धान्यं पत्यते वसव्यैः॥ ४॥
ता नृभ्य आ सौश्रवसा सुवीराग्ने सूनो सहसः पुष्यसे धाः।
कृणोषि यच्छवसा भूरि पश्वो वयो वृकायारये जसुरये॥ ५॥
वह्ना सूनो सहसो नो विहाया अग्ने तोकं तनयं वाजि नो दाः।
विश्वाभिर्गीर्भिरभि पूर्तिमश्यां मदेम शतहिमाः सुवीराः॥ ६॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३ भुरिगुष्णिक्; २ निचृदनुष्टुप्; ४ अनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप्; ६ भुरिगतिजगती॥ स्वरः—१, ३ ऋषभः; २, ४, ५ गान्धार; ६ निषादः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

अग्ना यो मर्त्यो दुवो धियं जुजोष धीतिभिः।
भसन्नु ष प्र पूर्व्य इषं वुरीतावसे॥ १॥
अग्निरिद्धि प्रचेता अग्निर्वेधस्तम ऋषिः।
अग्निं होतारमीळते यज्ञेषु मनुषो विशः॥ २॥
नाना ह्यग्नेऽवसे स्पर्धन्ते रायो अर्यः।
तूर्वन्तो दस्युमायवो व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम्॥ ३॥
अग्निरप्सामृतीषहं वीरं ददाति सत्पतिम्।
यस्य त्रसन्ति शवसः संचक्षि शत्रवो भिया॥ ४॥
अग्निर्हि विश्वना निदो देवो मर्तमुरुष्यति।
सहावा यस्यावृतो रयिर्वाजेष्ववृतः॥ ५॥
अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः।
वीहि स्वस्तिं सुक्षितिं दिवो नृन्द्विषो अंहांसि।
दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ५ निचृज्जगती; ३ निचृदतिजगती; ४, १४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६ निचृदतिशक्वरी; ७ जगती; ८ विराड्जगती; ९-११, १६, १९ त्रिष्टुप्; १२ पङ्क्तिः; १३ विराट्त्रिष्टुप्; १५ ब्राह्मीबृहती; १७ विराडनुष्टुप्; १८ स्वराड् अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ५, ७, ८ निषादः; ४, ६, ९-११, १३, १४, १६, १९ धैवतः; १२ पञ्चमः; १५ मध्यमः; १७, १८ गान्धारः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

इममू षू वो अतिथिमुषर्बुधं विश्वासां विशां पतिमृञ्जसे गिरा ।
वेतीद्दिवो जनुषा कच्चिदा शुचिर्ज्योक्चिदत्ति गर्भो यदच्युतम् ॥ १ ॥
मित्रं न यं सुधितं भृगवो दधुर्वनस्पतावीड्यमूर्ध्वशोचिषम् ।
स त्वं सुप्रीतो वीतहव्ये अद्भुत प्रशस्तिभिर्महयसे दिवेदिवे ॥ २ ॥
स त्वं दक्षस्यावृको वृधो भूरर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः ।
रायः सूनो सहसो मर्त्येष्वा छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो
भरद्वाजाय सप्रथः ॥ ३ ॥
द्युतानं वो अतिथिं स्वर्णरमग्निं होतारं मनुषः स्वध्वरम् ।
विप्रं न द्युक्षवचसं सुवृक्तिभिर्हव्यवाहमरतिं देवमृञ्जसे ॥ ४ ॥
पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्नुरुष्य उषसो न भानुना ।
तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः ॥ ५ ॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

अग्निमग्निं वः समिधा दुवस्यत प्रियंप्रियं वो अतिथिं गृणीषणि ।
उप वो गीर्भिरमृतं विवासत देवो देवेषु वनते हि
वार्यं देवो देवेषु वनते हि नो दुवः ॥ ६ ॥
समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम् ।
विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुम्नैरीमहे जातवेदसम् ॥ ७ ॥
त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम् ।
देवासश्च मर्तासश्च जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभूषन्नग्न उभयाँ अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे ।
यत्ते धीतिं सुमतिमावृणीमहेऽध स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव ॥ ९ ॥
तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वञ्चमविद्वांसो विदुष्टरं सपेम ।
स यक्षद्विश्वा वयुनानि विद्वान्प्र हव्यमग्निरमृतेषु वोचत् ॥ १० ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

तमग्ने पास्युत तं पिपर्षि यस्त आनट् कवये शूर धीतिम् ।
यज्ञस्य वा निशितिं वोदितिं वा तमित्पृणक्षि शवसोत राया ॥ ११ ॥
त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात् ।
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री ॥ १२ ॥
अग्निर्होता गृहपतिः स राजा विश्वा वेद जनिमा जातवेदाः ।
देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा ॥ १३ ॥
अग्ने यद्य विशो अध्वरस्य होतः पावकशोचे वेष्टं हि यज्वा ।
ऋता यजासि महिना वि यद्भूर्हव्या वह यविष्ठ या ते अद्य ॥ १४ ॥
अभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यो नि त्वा दधीत रोदसी यजध्यै ।
अवा नो मघवन्वाजसातावग्ने विश्वानि दुरिता तरेम ता
तरेम तवावसा तरेम ॥ १५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैरूर्णावन्तं प्रथमः सीद योनिम् ।
कुलायिनं घृतवन्तं सवित्रे यज्ञं नय यजमानाय साधु ॥ १६ ॥
इममु त्यमथर्ववदग्निं मन्थन्ति वेधसः
यमङ्कूयन्तमानयन्नमूरं श्याव्याभ्यः ॥ १७ ॥
जनिष्वा देववीतये सर्वताता स्वस्तये ।
आ देवान्वक्ष्यमृताँ ऋतावृधो यज्ञं देवेषु पिस्पृशः ॥ १८ ॥
वयमु त्वा गृहपते जनानामग्रे अकर्म समिधा बृहन्तम् ।
अस्थूरि नो गार्हपत्यानि सन्तु तिग्मेन नस्तेजसा सं शिशाधि ॥ १९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीयोऽनुवाकः [१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ६, ७ आर्च्युष्णिक्; २-५, ८, ९, ११, १३-१५, १७, १८, २१, २४, २५, २८, ३२, ४० निचृद् गायत्री; १०, १९, २०, २२, २३, २९, ३१, ३४-३९, ४१ गायत्री; २६, ३० विराड्गायत्री; १२, १६, ३३, ४२, ४४ साम्नी-त्रिष्टुप्; ४३, ४५ निचृत्त्रिष्टुप्; २७ आर्चीपङ्क्तिः; ४६ भुरिक्पङ्क्तिः; ४७, ४८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ६, ७ ऋषभः; २-५, ८-११, १३-१५, १७-२६, २८-३२, ३४-४१, षड्जः; १२, १६, ३३, ४२-४५ धैवतः; २७, ४६ पञ्चमः; ४७, ४८ गान्धारः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने ॥ १ ॥
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ २ ॥
वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा। अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो ॥ ३ ॥
त्वामीळे अध द्विता भरतो वाजिभिः शुनम्। ईजे यज्ञेषु यज्ञियम् ॥ ४ ॥
त्वमिमा वार्या पुरु दिवोदासाय सुन्वते। भरद्वाजाय दाशुषे ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

त्वं दूतो अमर्त्य आ वहा दैव्यं जनम्। शृण्वन्विप्रस्य सुष्टुतिम् ॥ ६ ॥
त्वामग्ने स्वाध्यो३ मर्तासो देववीतये। यज्ञेषु देवमीळते ॥ ७ ॥
तव प्र यक्षि सन्दृशमुत क्रतुं सुदानवः। विश्वे जुषन्त कामिनः ॥ ८ ॥
त्वं होता मनुर्हितो वह्निरासा विदुष्टरः। अग्ने यक्षि दिवो विशः ॥ ९ ॥
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ १० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य ॥ ११ ॥
स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि। बृहदग्ने सुवीर्यम् ॥ १२ ॥
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥ १३ ॥
तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः पुत्र ईधे अथर्वणः। वृत्रहणं पुरन्दरम् ॥ १४ ॥
तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम्। धनञ्जयं रणेरणे ॥ १५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥ १६ ॥
यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्। तत्रा सदः कृणवसे ॥ १७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहि ते पूर्तमक्षिपद्भुवन्नेमानां वसो। अथा दुवो वनवसे ॥ १८ ॥
आग्निरगामि भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः। दिवोदासस्य सत्पतिः ॥ १९ ॥
स हि विश्वाति पार्थिवा रयिं दाशन्महित्वना। वन्वन्नवातो अस्तृतः ॥ २० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

स प्रत्नवन्नवीयसाग्ने द्युम्नेन संयता। बृहत्ततन्थ भानुना ॥ २१ ॥
प्र वः सखायो अग्नये स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया। अर्च गाय च वेधसे ॥ २२ ॥
स हि यो मानुषा युगा सीदद्धोता कविक्रतुः। दूतश्च हव्यवाहनः ॥ २३ ॥
ता राजाना शुचिव्रतादित्यान्मारुतं गणम्। वसो यक्षीह रोदसी ॥ २४ ॥
वस्वी ते अग्ने सन्दृष्टिरिषयते मर्त्याय। ऊर्जो नपाद्घृतस्य ॥ २५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

क्रत्वा दा अस्तु श्रेष्ठोऽद्य त्वा वन्वन्त्सुरेक्णाः ।
मर्त आनाश सुवृक्तिम् ॥ २६ ॥
ते ते अग्ने त्वोता इषयन्तो विश्वमायुः ।
तरन्तो अर्यो अरातीर्वन्वन्तो अर्यो अरातीः ॥ २७ ॥

अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यासद्विश्वं न्यत्रिणम्। अग्निर्नो वनते रयिम् ॥ २८ ॥
सुवीरं रयिमा भर जातवेदो विचर्षणे। जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥ २९ ॥
त्वं नः पाह्यंहसो जातवेदो अघायतः। रक्षा णो ब्रह्मणस्कवे ॥ ३० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

यो नो अग्ने दुरेव आ मर्तो वधाय दाशति। तस्मान्नः पाह्यंहसः ॥ ३१ ॥
त्वं तं देव जिह्वया परि बाधस्व दुष्कृतम्। मर्तो यो नो जिघांसति ॥ ३२ ॥
भरद्वाजाय सप्रथः शर्म यच्छ सहन्त्य। अग्ने वरेण्यं वसु ॥ ३३ ॥
अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः ॥ ३४ ॥
गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे। सीदन्नृतस्य योनिमा ॥ ३५ ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे। अग्ने यद्दीदयद्दिवि ॥ ३६ ॥
उप त्वा रण्वसन्दृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत। अग्ने ससृज्महे गिरः ॥ ३७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप च्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम्। अग्ने हिरण्यसंदृशः ॥ ३८ ॥
य उग्रइव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः। अग्ने पुरो रुरोजिथ ॥ ३९ ॥
आ यं हस्ते न खादिनं शिशुं जातं न बिभ्रति। विशामग्निं स्वध्वरम् ॥ ४० ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

प्र देवं देववीतये भरता वसुवित्तमम्। आ स्वे योनौ नि षीदतु ॥ ४१ ॥
आ जातं जातवेदसि प्रियं शिशीतातिथिम्। स्योन आ गृहपतिम् ॥ ४२ ॥
अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्ति मन्यवे ॥ ४३ ॥
अच्छा नो याह्या वहाभि प्रयांसि वीतये। आ देवान्त्सोमपीतये ॥ ४४ ॥
उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत्। शोचा वि भाह्यजर ॥ ४५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

वीती यो देवं मर्तो दुवस्येद्ग्निमीळीताध्वरे हविष्मान्।
होतारं सत्ययजं रोदस्योरुत्तानहस्तो नमसा विवासेत् ॥ ४६ ॥
आ ते अग्न ऋचा हविर्हृदा तष्टं भरामसि ।
ते ते भवन्तूक्षणो ऋषभासो वशा उत ॥ ४७ ॥
अग्निं देवासो अग्रियमिन्धते वृत्रहन्तमम् ।
येना वसून्याभृता तृळ्हा रक्षांसि वाजिना ॥ ४८ ॥

इति चतुर्थाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ चतुर्थाष्टके षष्ठोऽध्यायः

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-४, ११ त्रिष्टुप्; ५, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ७, ९, १०, १२, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ स्वराट्पङ्क्तिः; १५ आर्च्युष्णिक् ॥ स्वरः—१-१२, १४ धैवतः; १३ पञ्चमः; १५ ऋषभः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

पिबा सोममभि यमुग्र तर्द ऊर्वं गव्यं महि गृणान इन्द्र।
वि यो धृष्णो वधिषो वज्रहस्त विश्वा वृत्रमभित्रिया शवोभिः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स ईं पाहि य ऋजीषी तरुत्रो यः शिप्रवान्वृषभो यो मतीनाम्।
यो गोत्रभिद्वज्रभृद्यो हरिष्ठाः स इन्द्र चित्राँ अभि तृन्धि वाजान्॥ २॥
एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः।
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूँरभि गा इन्द्र तृन्धि॥ ३॥
ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम्।
महामनूनं तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हषन्त प्रसाहम् ॥ ४॥
येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानोऽवासयोऽप दृळ्हानि दर्द्रत् ।
महामद्रिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदसस्परि स्वात्॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

तव क्रत्वा तव तद्वंसनाभिरामासु पक्वं शच्या नि दीधः ।
और्णोर्दुरः उस्त्रियाभ्यो वि दृळ्होदूर्वाद्गा असृजो अङ्गिरस्वान्॥ ६॥
पप्राथ क्षां महि दंसो व्युर्वीमुप द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः।
अधारयो रोदसी देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यह्वी ऋतस्य ॥ ७॥
अध त्वा विश्वे पुर इन्द्र देवा एकं तवसं दधिरे भराय ।
अदेवो यदभ्यौहिष्ट देवान्त्स्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्र ॥ ८॥
अध द्यौश्चित्ते अप सा नु वज्राद् द्वितानमद्भियसा स्वस्य मन्योः।
अहिं यदिन्द्रो अभ्योहसानं नि चिद्विश्वायुः शयथे जघान॥ ९॥
अध त्वष्टा ते मह उग्र वज्रं सहस्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम्।
निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृजीषिन् ॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

वर्धान्यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषाँ इन्द्र तुभ्यम्।
पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन्वृत्रहणं मदिरमंशुमस्मै॥ ११॥
आ क्षोदो महि वृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम्।
तासामनु प्रवत इन्द्र पन्थां प्रार्दयो नीचीरपसः समुद्रम्॥ १२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवा ता विश्वा चकृवांसमिन्द्रं महामुग्रमजुर्यं सहोदाम्।
सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्रमा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात्॥ १३॥
स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमत इन्द्र विप्रान्।
भरद्वाजे नृवत इन्द्र सूरीन्दिवि च स्मैधि पार्ये न इन्द्र॥ १४॥
अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः॥ १५॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ९, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ८, ११, १३ त्रिष्टुप्; ३, १५ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ ब्राह्म्युष्णिक्; ७, १० विराट्त्रिष्टुप्; १२ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४, ७-१४ धैवतः; ३, ५, १५ पञ्चमः; ६ ऋषभः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

तमु ष्टुहि यो अभिभूत्योजा वन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रः।
अषाळ्हमुग्रं सहमानमाभिर्गीर्भिर्वर्धं वृषभं चर्षणीनाम्॥ १॥
स युध्मः सत्वा खजकृत्समद्वा तुविम्रक्षो नदनुमाँ ऋजीषी।
बृहद्रेणुश्च्यवनो मानुषीणामेकः कृष्टीनामभवत्सहावा॥ २॥
त्वं ह नु त्यदददमायो दस्यूँरेकः कृष्टीरवनोरार्याय।
अस्ति स्विन्नु वीर्यं तत्त इन्द्र न स्विदस्ति तदु तुथा वि वोचः॥ ३॥
सदिद्धि ते तुविजातस्य मन्ये सहः सहिष्ठ तुरतस्तुरस्य।
उग्रमुग्रस्य तवसस्तवीयोऽरंधस्य रध्रतुरो बभूव॥ ४॥
तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु युष्मे इत्था वदद्भिर्वलमङ्गिरोभिः।
हन्नच्युतच्युद्दस्मेषयन्तमृणोः पुरो वि दुरो अस्य विश्वाः॥ ५॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

स हि धीभिर्हव्यो अस्त्युग्र ईशानकृन्महति वृत्रतूर्ये।
स तोकसाता तनये स वज्री वितन्तसाय्यो अभवत्समत्सु॥ ६॥
स मज्मना जनिम मानुषाणाममर्त्येन नाम्नाति प्र सर्त्ते।
स द्युम्नेन स शवसोत राया स वीर्येण नृतमः समोकाः॥ ७॥
स यो न मुहे न मिथू जनो भूत्सुमन्तुनामा चुमुरिं धुनिं च।
वृणक्पिप्रुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरं च्यौत्नाय शयथाय नू चित्॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदावता त्वक्षसा पन्यसा च वृत्रहत्याय रथमिन्द्र तिष्ठ।
धिष्व वज्रं हस्त आ दक्षिणत्राभि प्र मन्द पुरुदत्र मायाः ॥ ९ ॥
अग्निर्न शुष्कं वनमिन्द्र हेती रक्षो नि धक्ष्यशनिर्न भीमा।
गम्भीरय ऋष्वया यो रुरोजाध्वानयद्दुरिता दुम्भयच्च ॥ १० ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र राया तुविद्युम्न तुविवाजेभिरर्वाक्।
याहि सूनो सहसो यस्य नू चिददेव ईशे पुरुहूत योतोः ॥ ११ ॥
प्र तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य घृष्वेर्दिवो ररप्शे महिमा पृथिव्याः।
नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति न प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सह्योः ॥ १२ ॥
प्र तत्ते अद्या करणं कृतं भूत्कुत्सं यदायुमतिथिग्वमस्मै।
पुरू सहस्रा नि शिशा अभि क्षामुत्तूर्वेयाणं धृषता निनेथ ॥ १३ ॥
अनु त्वाहिघ्ने अध देव देवा मदन्विश्वे कवितमं कवीनाम्।
करो यत्र वरिवो बाधिताय दिवे जनाय तन्वे गृणानः ॥ १४ ॥
अनु द्यावापृथिवी तत्त ओजोऽमर्त्या जिहत इन्द्र देवाः।
कृष्वा कृत्नो अकृतं यत्ते अस्त्युक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञैः ॥ १५ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, १३ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, १०-१२ विराट्त्रिष्टुप्; ८ त्रिष्टुप्; ९ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ९, १३ पञ्चमः; २, ४-८, १०-१२ धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

महाँ इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्रा उत द्विबर्हा अमिनः सहोभिः।
अस्मद्र्यग्वावृधे वीर्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत् ॥ १ ॥
इन्द्रमेव धिषणा सातये धाद् बृहन्तमृष्वमजरं युवानम्।
अषाळहेन शवसा शूशुवांसं सद्यश्चिद्यो वावृधे असामि ॥ २ ॥
पृथू करस्ना बहुला गभस्ती अस्मद्र्यक्सं मिमीहि श्रवांसि।
यूथेव पश्वः पशुपा दमूना अस्माँ इन्द्राभ्या ववृत्स्वाजौ ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं व इन्द्रं चतिनमस्य शाकैरिह नूनं वाजयन्तो हुवेम।
यथा चित्पूर्वे जरितार आसुरनेद्या अनवद्या अरिष्टाः॥ ४॥
धृतव्रतो धनदाः सोमवृद्धः स हि वामस्य वसुनः पुरुक्षुः।
सं जग्मिरे पथ्या३ रायो अस्मिन्त्समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः॥ ५॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

शविष्ठं न आ भर शूर शव ओजिष्ठमोजो अभिभूत उग्रम्।
विश्वा द्युम्ना वृष्ण्या मानुषाणामस्मभ्यं दा हरिवो मादयध्यै॥ ६॥
यस्ते मदः पृतनाषाळमृध्र इन्द्र तं न आ भर शूशुवांसम्।
येन तोकस्य तनयस्य सातौ मंसीमहि जिगीवांसस्त्वोताः॥ ७॥
आ नो भर वृषणं शुष्ममिन्द्र धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम्।
येन वंसाम पृतनासु शत्रून्तवोतिभिरुत जामींरजामीन्॥ ८॥
आ ते शुष्मो वृषभ एतु पश्चादोत्तरादधरादा पुरस्तात्।
आ विश्वतो अभि समेत्ववर्डिन्द्र द्युम्नं स्ववर्द्धेह्यस्मे॥ ९॥
नृवत्त इन्द्र नृतमाभिरूती वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः।
ईक्षे हि वस्व उभयस्य राजन्धा रत्नं महि स्थूरं बृहन्तम्॥ १०॥
मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम्।
विश्वासाहमवसे नूतनायोग्रं सहोदामिह तं हुवेम॥ ११॥
जनं वज्रिन्महि चिन्मन्यमानमेभ्यो नृभ्यो रन्धया येष्वस्मि।
अधा हि त्वा पृथिव्यां शूरसातौ हवामहे तनये गोष्वप्सु॥ १२॥
वयं त एभिः पुरुहूत सख्यैः शत्रोःशत्रोरुत्तर इत्स्याम।
घ्नन्तो वृत्राण्युभयानि शूर राया मदेम बृहता त्वोताः॥ १३॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ आर्ष्यनुष्टुप्; २, ३, ७, १२ पङ्क्तिः; ४, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ८, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; १० निचृत्पङ्क्तिः; १३ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-४, ६, ७, १०, १२, १३ पञ्चमः; ५, ८, ९, ११ धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

द्यौर्न य इन्द्राभि भूमार्यस्तस्थौ रयिः शवसा पृत्सु जनान्।
तं नः सहस्त्रभरमुर्वरासां दद्धि सूनो सहसो वृत्रतुरम् ॥ १ ॥
दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र सत्रासुर्यं देवेभिर्धायि विश्वम् ।
अहिं यद् वृत्रमपो वव्रिवांसं हन्नृजीषिन्विष्णुना सचानः ॥ २ ॥
तूर्वन्नोजीयान्तवसस्तवीयान्कृतब्रह्मेन्द्रो वृद्धमहाः ।
राजाभवन्मधुनः सोम्यस्य विश्वासां यत्पुरां दर्लुमावत् ॥ ३ ॥
शतैरपद्रन्पणय इन्द्रात्र दशोणये कवयेऽर्कसातौ ।
वधैः शुष्णस्याशुषस्य मायाः पित्वो नारिरेचीत्किं चन प्र ॥ ४ ॥
महो द्रुहो अप विश्वायु धायि वज्रस्य यत्पतने पादि शुष्णः ।
उरु ष सरथं सारथये करिन्द्रः कुत्साय सूर्यस्य सातौ ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

प्र श्येनो न मदिरमंशुमस्मै शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन्।
प्रावन्नमीं साप्यं ससन्तं पृणग्राया समिषा सं स्वस्ति ॥ ६ ॥
वि पिप्रोरहिमायस्य दृळ्हाः पुरो वज्रिञ्छवसा न दर्दः ।
सुदामन्तद्रेक्णो अप्रमृष्यमूजिश्वने दात्रं दाशुषे दाः ॥ ७ ॥
स वेतसुं दशमायं दशोणिं तूतुजिमिन्द्रः स्वभिष्टिसुम्नः ।
आ तुग्रं शश्वदिभं द्योतनाय मातुर्न सीमुप सृजा इयध्यै ॥ ८ ॥
स ईं स्पृधो वनते अप्रतीतो बिभ्रद्वज्रं वृत्रहणं गभस्तौ ।
तिष्ठद्धरी अध्यस्तेव गर्ते वचोयुजा वहत इन्द्रमृष्वम् ॥ ९ ॥
सनेम तेऽवसा नव्य इन्द्र प्र पूरवः स्तवन्त एना यज्ञैः ।
सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्दर्द्धन्दासीः पुरुकुत्साय शिक्षन् ॥ १० ॥
त्वं वृध इन्द्र पूर्व्यो भूर्वरिवस्यन्नुशने काव्याय ।
परा नववास्त्वमनुदेयं महे पित्रे ददाथ स्वं नपातम् ॥ ११ ॥
त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।
प्र यत्समुद्रमति शूर पर्षि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति ॥ १२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तवं हु त्यदिन्द्र विश्वमाजौ सस्तो धुनीचुमुरी या हं सिष्वप्।
दीदयदित्तुभ्यं सोमेभिः सुन्वन्द्भीतिरिध्मभृतिः पक्थ्यैः॥ १३॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ९, १०, १२ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४-६, ११ त्रिष्टुप्; ८ स्वराड्बृहती॥ स्वरः—१-७, ९-१२ धैवतः; ८ मध्यमः॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

इमा उ त्वा पुरुतमस्य कारोर्हव्यं वीर हव्या हवन्ते ।
धियो रथेष्ठामजरं नवीयो रयिर्विभूतिरीयते वचस्या ॥ १॥
तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानो गिर्वीहसं गीर्भिर्यज्ञवृद्धम् ।
यस्य दिवमति महा पृथिव्याः पुरुमायस्य रिरिचे महित्वम्॥ २॥
स इत्तमोऽवयुनं ततन्वत्सूर्येण वयुनवच्चकार ।
कदा ते मर्ता अमृतस्य धामेयक्षन्तो न मिनन्ति स्वधावः॥ ३॥
यस्ता चकार स कुह स्विदिन्द्रः कमा जनं चरति कासु विक्षु।
कस्ते यज्ञो मनसे शं वरायं को अर्क इन्द्र कतमः स होता॥ ४॥
इदा हि ते वेविषतः पुराजाः प्रत्नास आसुः पुरुकृत्सखायः।
ये मध्यमास उत नूतनास उतावमस्य पुरुहूत बोधि ॥५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

तं पृच्छन्तोऽवरासः परोणि प्रत्ना त इन्द्र श्रुत्यानु येमुः।
अचीमसि वीर ब्रह्मवाहो यादेव विद्म तात्त्वा महान्तम्॥ ६॥
अभि त्वा पाजो रक्षसो वि तस्थे महि जज्ञानमभि तत्सु तिष्ठ।
तवं प्रत्नेन युज्येन सख्या वज्रेण धृष्णो अप ता नुदस्व॥ ७॥
स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य ब्रह्मण्यतो वीर कारुधायः ।
त्वं ह्याऽऋषिः प्रदिवि पितृणां शश्वद् बभूथ सुहव एष्टौ॥ ८॥
प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं मरुतः कृष्वावसे नो अद्य।
प्र पूषणं विष्णुमग्निं पुरन्धिं सवितारमोषधीः पर्वतांश्च॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इम उ त्वा पुरुशाक प्रयज्यो जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कैः।
श्रुधी हवमा हुवतो हुवानो न त्वावाँ अन्यो अमृत त्वदस्ति॥ १०॥
नू म आ वाचमुप याहि विद्वान्विश्वेभिः सूनो सहसो यजत्रैः।
ये अग्निजिह्वा ऋतसाप आसुर्ये मनुं चक्रुरुपरं दसाय॥ ११॥
स नो बोधि पुरएता सुगेषूत दुर्गेषु पथिकृद्विदानः।
ये अश्रमास उरवो वहिष्ठास्तेभिर्न इन्द्राभि वक्षि वाजम्॥ १२॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४, ५ त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्पङ्क्तिः; ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; १० पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ७, १० पञ्चमः; २, ४-६, ८, ९, ११ धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

य एक इद्धव्यश्चर्षणीनामिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः।
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान्त्सत्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्॥ १॥
तमु नः पूर्वे पितरो नवग्वाः सप्तः विप्रासो अभि वाजयन्तः।
नक्षद्दाभं ततुरिं पर्वतेष्ठामद्रोघवाचं मतिभिः शविष्ठम्॥ २॥
तमीमह इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नृवतः पुरुक्षोः।
यो अस्कृधोयुरजरः स्ववान्तमा भर हरिवो मादयध्यै॥ ३॥
तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चिज्जरितार आनशुः सुम्नमिन्द्र।
कस्ते भागः किं वयो दुध खिद्वः पुरुहूत पुरूवसोऽसुरघ्नः॥ ४॥
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठामिन्द्रं वेपी वक्करी यस्य नू गीः।
तुविग्राभं तुविकूर्मिं रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ॥ ५॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

अया हु त्यं मायया वावृधानं मनोजुवा स्वतवः पर्वतेन।
अच्युता चिद्वीळिता स्वोजो रुजो वि दृळ्हा धृषता विरप्शिन्॥ ६॥
तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत्परितंसयध्यै।
स नो वक्षदनिमानः सुवह्येन्द्रो विश्वान्यति दुर्गहाणि॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ जनाय द्रुह्वणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽन्तरिक्षा।
तपा वृषन्विश्वतः शोचिषा तान्ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्च ॥ ८ ॥
भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंदृक्।
धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः ॥ ९ ॥
आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृध्राम्।
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन्त्सुतुका नाहुषाणि ॥ १० ॥
स नो नियुद्भिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यो।
न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मन्द्रयद्रिक् ॥ ११ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५, ६, १० त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५-१० धैवतः; २, ४ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

सुत इत्त्वं निमिश्ल इन्द्र सोमे स्तोमे ब्रह्मणि शस्यमान उक्थे।
यद्वा युक्ताभ्यां मघवन्हरिभ्यां बिभ्रद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र यासि ॥ १ ॥
यद्वा दिवि पार्ये सुष्विमिन्द्र वृत्रहत्येऽवसि शूरसातौ ।
यद्वा दक्षस्य बिभ्युषो अबिभ्यदरन्धयः शर्धत इन्द्र दस्यून् ॥ २ ॥
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं प्रणेनीरुग्रो जरितारमूती ।
कर्ता वीराय सुष्वय उ लोकं दाता वसु स्तुवते कीरये चित् ॥ ३ ॥
गन्तेयान्ति सवना हरिभ्यां बभ्रिर्वज्रं पपिः सोमं ददिर्गाः।
कर्ता वीरं नर्यं सर्ववीरं श्रोता हवं गृणतः स्तोमवाहाः ॥ ४ ॥
अस्मै वयं यद्वावान तद्विविष्म इन्द्राय यो नः प्रदिवो अपस्कः।
सुते सोमे स्तुमसि शंसदुक्थेन्द्राय ब्रह्म वर्धनं यथासत् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

ब्रह्माणि हि चकृषे वर्धनानि तावत्त इन्द्र मतिभिर्विविष्मः।
सुते सोमे सुतपाः शन्तमानि रान्द्रया क्रियास्म वक्षणानि यज्ञैः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स नो॑ बोधि पुरो॒ळाशं॒ ररा॑णः॒ पिबा॒ तु सोमं॒ गोऋ॑जीकमिन्द्र।
एदं ब॒र्हिर्यज॑मानस्य सीदो॒रुं कृ॑धि त्वाय॒त उ॑ लो॒कम् ॥७॥
स म॑न्दस्वा॒ ह्यनु॒ जोष॑मुग्र॒ प्र त्वा॑ य॒ज्ञास॑ इ॒मे अ॑श्नुवन्तु।
प्रेमे हवा॑सः पुरुहू॒तम॒स्मे आ त्वे॒यं धीरव॑स इन्द्र यम्याः॥८॥
तं वः॑ सखायः॒ सं यथा॑ सु॒तेषु॒ सोमे॑भिरीं पृणता भो॒जमिन्द्र॑म्।
कु॒वित्तस्मा॒ अस॑ति नो॒ भरा॑य॒ न सुष्वि॒मिन्द्रोऽ व॑से मृधाति॥९॥
ए॒वेदिन्द्रः॑ सु॒ते अ॑स्तावि॒ सोमे॑ भ॒रद्वा॑जेषु॒ क्षय॒दिन्म॒घोनः॑।
अस॒द्यथा॑ जरि॒त्र उ॒त सू॒रिरिन्द्रो॑ रा॒यो वि॒श्ववा॑रस्य दा॒ता॥१०॥

तृतीयोऽनुवाकः [२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ५, ९ पङ्क्तिः; ४, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ ब्राह्मीबृहती; ८ त्रिष्टुप्; १० विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ५, ९ पञ्चमः; ४, ७, ८, १० धैवतः; ६ मध्यमः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

वृषा॒ मद॒ इन्द्रे॒ श्लोक॑ उ॒क्था सचा॒ सोमे॑षु सुत॒पा ऋ॑जी॒षी।
अ॒र्च॒त्र्यो॑ म॒घवा॒ नृभ्य॑ उ॒क्थैर्द्यु॒क्षो राजा॑ गि॒रामक्षि॑तोतिः॥१॥
ततु॑रिर्वी॒रो नर्यो॒ विचे॑ताः॒ श्रोता॒ हवं गृण॒त उ॒र्व्यू॑तिः।
वसुः॒ शंसो॑ न॒रां का॒रुधा॑या वा॒जी स्तु॒तो वि॒दथे॑ दाति॒ वाज॑म्॥२॥
अक्षो॒ न च॒क्र्योः॑ शूर बृ॒हन्प्र ते॑ म॒ह्ना रि॑रिचे॒ रोद॑स्योः।
वृ॒क्षस्य॒ नु ते॑ पुरुहूत व॒या व्यू॒३॒॑तयो॑ रुरुहुरिन्द्र पू॒र्वीः॥३॥
शची॑वतस्ते पुरुशाक॒ शाका॒ गवा॑मिव स्रु॒तयः॑ सं॒चर॑णीः।
व॒त्सानां॒ न त॒न्तय॑स्त इन्द्र॒ दाम॑न्वन्तो अदा॒मानः॑ सुदामन्॥४॥
अ॒न्यद॒द्य कर्व॑रम॒न्यदु॒ श्वोऽ स॑च्च॒ सन्मुहु॑राच॒क्रिरिन्द्रः॑।
मि॒त्रो नो॒ अत्र॒ वरु॑णश्च पू॒षार्यो वश॑स्य पर्ये॒तास्ति॑ ॥५॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

वि त्वदापो॒ न पर्व॑तस्य पृ॒ष्ठादु॒क्थेभि॑रिन्द्रानयन्त य॒ज्ञैः।
तं त्वा॒भिः सु॑ष्टु॒तिभि॑र्वा॒जय॑न्त आ॒जिं न ज॑ग्मुर्गिर्वाहो॒ अश्वाः॑॥६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न यं जरन्ति शरदो न मासा न द्याव इन्द्रमवकर्शयन्ति।
वृद्धस्य चिद्वर्धतामस्य तनूः स्तोमेभिरुक्थैश्च शस्यमाना॥ ७॥
न वीळवे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युजूताय स्तवान्।
अज्रा इन्द्रस्य गिरयश्चिदृष्वा गम्भीरे चिद्भवति गाधमस्मै॥ ८॥
गम्भीरेण न उरुणामत्रिन्प्रेषो यन्धि सुतपावन्वाजान्।
स्था ऊ षु ऊर्ध्व ऊती अरिषण्यन्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम्॥ ९॥
सचस्व नायमवसे अभीक इतो वा तमिन्द्र पाहि रिषः।
अमा चैनमरण्ये पाहि रिषो मदेम शतहिमाः सुवीराः॥ १०॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५ पङ्क्तिः; २, ७-९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ५ पञ्चमः; २, ४, ६-९ धैवतः॥

अथ एकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

या त ऊतिरवमा या परमा या मध्यमेन्द्र शुष्मिन्नस्ति।
ताभिरू षु वृत्रहत्येऽवीर्न एभिश्च वाजैर्महान्न उग्र॥ १॥
आभिः स्पृधो मिथतीररिषण्यन्नमित्रस्य व्यथया मन्युमिन्द्र।
आभिर्विश्वा अभियुजो विषूचीरार्याय विशोऽव तारीर्दासीः॥ २॥
इन्द्र जामय उत येऽजामयोऽवाचीनासो वनुषो युयुज्रे।
त्वमेषां विथुरा शवांसि जहि वृष्ण्यानि कृणुही पराचः॥ ३॥
शूरो वा शूरं वनते शरीरैस्तनूरुचा तरुषि यत्कृणवैते।
तोके वा गोषु तनये यदप्सु वि क्रन्दसी उर्वरासु ब्रवैते॥ ४॥
नहि त्वा शूरो न तुरो न धृष्णुर्न त्वा योधो मन्यमानो युयोध।
इन्द्र नकिष्ट्वा प्रत्यस्त्येषां विश्वा जातान्यभ्यसि तानि॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

स पत्यत उभयोर्नृम्णमयोर्यदी वेधसः समिथे हवन्ते।
वृत्रे वा महो नृवति क्षये वा व्यचस्वन्ता यदि वितन्तसैते॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधं स्मा ते चर्षणयो यदेजानिन्द्र त्रातोत भवा वरूता।
अस्माकासो ये नृतमासो अर्य इन्द्र सूरयो दधिरे पुरो नः॥ ७॥
अनु ते दायि मह इन्द्रियाय सत्रा ते विश्वमनु वृत्रहत्ये।
अनु क्षत्रमनु सहो यजत्रेन्द्र देवेभिरनु ते नृषह्ये॥ ८॥
एवा नः स्पृधः समजा समत्स्विन्द्र रारन्धि मिथतीरदेवीः।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो भरद्वाजा उत त इन्द्र नूनम्॥ ९॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७ त्रिष्टुप्; ८ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-५ पञ्चमः ६-८ धैवतः॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि त्वा महो वाजस्य सातौ वावृषाणाः।
सं यद्विशोऽयन्त शूरसाता उग्रं नोऽवः पार्ये अहन्दाः॥ १॥
त्वां वाजी हवते वाजिनेयो महो वाजस्य गध्यस्य सातौ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं तरुत्रं त्वां चष्टे मुष्टिहा गोषु युध्यन्॥ २॥
त्वं कविं चोदयोऽर्कसातौ त्वं कुत्साय शुष्णं दाशुषे वर्क्।
त्वं शिरो अमर्मणः पराहन्नतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्॥ ३॥
त्वं रथं प्र भरो योधमृष्वमावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम्।
त्वं तुग्रं वेतसवे सचाहन्त्वं तुजिं गृणन्तमिन्द्र तूतोः॥ ४॥
त्वं तदुक्थमिन्द्र बर्हणा कः प्र यच्छता सहस्रा शूर दर्षि।
अव गिरेर्दासं शम्बरं हन्प्रावो दिवोदासं चित्राभिरूती॥ ५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः सोमैर्दभीतये चुमुरिमिन्द्र सिष्वप्।
त्वं रजिं पिठीनसे दशस्यन्षष्टिं सहस्रा शच्या सचाहन्॥ ६॥
अहं चन तत्सूरिभिरानशयां तव ज्याय इन्द्र सुम्नमोजः।
त्वया यत्स्तवन्ते सधवीर वीरास्त्रिवरूथेन नहुषा शविष्ठ॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वयं ते अस्यामिन्द्र द्युम्नहूतौ सखायः स्याम महिन प्रेष्ठाः।
प्रातर्दनिः क्षत्रश्रीरस्तु श्रेष्ठो घने वृत्राणां सनये धनानाम्॥ ८॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—१-७ इन्द्रः; ८ अभ्यावर्तिनश्चायमानस्य दानस्तुतिः॥
छन्दः—१, २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ७, ८ त्रिष्टुप्; ६ ब्राह्म्युष्णिक्॥
स्वरः—१-२ पञ्चमः; ३-४ धैवतः; ५, ७, ८ धैवतः; ६ ऋषभः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

किमस्य मदे किमु वस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार।
रणा वा ये निषदि किं ते अस्य पुरा विविद्रे किमु नूतनासः॥ १॥
सदस्य मदे सद्वस्य पीताविन्द्रः सदस्य सख्ये चकार।
रणा वा ये निषदि सत्ते अस्य पुरा विविद्रे सदु नूतनासः॥ २॥
नहि नु ते महिमनः समस्य न मघवन्मघवत्त्वस्य विद्म।
न राधसोराधसो नूतनस्येन्द्र नकिर्ददृश इन्द्रियं ते॥ ३॥
एतत्त्यत्त इन्द्रियमचेति येनावधीर्वरशिखस्य शेषः।
वज्रस्य यत्ते निहतस्य शुष्मात्स्वनाच्चिदिन्द्र परमो दुदार॥ ४॥
वधीदिन्द्रो वरशिखस्य शेषोऽभ्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन्।
वृचीवतो यद्धरियूपीयायां हन्पूर्वे अर्धे भियसापरो दर्त्॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

त्रिंशच्छतं वर्मिणो इन्द्र साकं युव्यावत्यां पुरुहूत श्रवस्या।
वृचीवन्तः शरवे पत्यमानाः पात्रा भिन्दाना न्यर्थान्यायन्॥ ६॥
यस्य गावावरुषा सूयवस्यू अन्तरू षु चरतो रेरिहाणा।
स सृञ्जयाय तुर्वशं परादाद् वृचीवतो दैववाताय शिक्षन्॥ ७॥
द्वयाँ अग्रे रथिनो विंशतिं गा वधूमतो मघवा महां समराट्।
अभ्यावर्ती चायमानो ददाति दूणाशेयं दक्षिणा पार्थवानाम्॥ ८॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—१, ३-८ गावः; २, ८ गाव इन्द्रो वा॥ छन्दः—१, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २ स्वराड्विष्टुप्; ३, ४ जगती; ५, ६ त्रिष्टुप्; ८ निचृदनुष्टुप्॥
स्वरः—१, २, ५-७ धैवतः; ३, ४ निषादः; ८ गान्धारः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे ।
प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥ १ ॥
इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्षत्युपेद्ददाति न स्वं मुषायति ।
भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् ॥ २ ॥
न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति ।
देवाँश्च याभिर्यजते ददाति च ज्योगित्ताभिः सचते गोपतिः सह ॥ ३ ॥
न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि ।
उरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः ॥ ४ ॥
गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान् गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः ।
इमा या गावः स जनास इन्द्र इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम् ॥ ५ ॥
यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम् ।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु ॥ ६ ॥
प्रजावतीः सूयवसं रिशन्तीः शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः ।
मा वः स्तेन ईशत माघशंसः परि वो हेती रुद्रस्य वृज्याः ॥ ७ ॥
उपेदमुपपर्चनमासु गोषूप पृच्यताम् ।
उप ऋषभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये ॥ ८ ॥

इति चतुर्थाष्टके षष्ठोऽध्यायः ॥

अथ चतुर्थाष्टके सप्तमोऽध्यायः

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ४ त्रिष्टुप्; ६ ब्राह्म्युष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३-५ धैवतः; २ पञ्चमः; ६ ऋषभः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

इन्द्रं वो नरः सख्याय सेपुर्महो यन्तः सुमतये चकानाः ।
महो हि दाता वज्रहस्तो अस्ति महामु रण्वमवसे यजध्वम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ यस्मिन्हस्ते नर्या मिमिक्षुरा रथे हिरण्यये रथेष्ठाः।
आ रश्मयो गभस्त्योः स्थूरयोराध्वन्नश्वासो वृषणो युजानाः॥ २॥
श्रिये ते पादा दुव आ मिमिक्षुर्धृष्णुर्वज्री शवसा दक्षिणावान्।
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वर्ण नृतविषिरो बभूथ॥ ३॥
स सोम आमिश्लतमः सुतो भूद्यस्मिन्पक्तिः पच्यते सन्ति धानाः।
इन्द्रं नरः स्तुवन्तो ब्रह्मकारा उक्था शंसन्तो देववाततमाः॥ ४॥
न ते अन्तः शवसो धाय्यस्य वि तु बबाधे रोदसी महित्वा।
आ ता सूरिः पृणति तूतुजानो यूथेवाप्सु समीजमान ऊती॥ ५॥
एवेदिन्द्रः सुहवः ऋष्वो अस्तूती अनूती हिरिशिप्रः सत्वा।
एवा हि जातो असमात्योजाः पुरू च वृत्रा हनति नि दस्यून्॥ ६॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ५ ब्राह्म्युष्णिक्॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४ पञ्चमः; ५ ऋषभः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

भूय इद्वावृधे वीर्यायँ एको अजुर्यो दयते वसूनि।
प्र रिरिचे दिव इन्द्रः पृथिव्या अर्धमिदस्य प्रति रोदसी उभे॥ १॥
अधा मन्ये बृहदसुर्यमस्य यानि दाधार नकिरा मिनाति।
दिवेदिवे सूर्यो दर्शतो भूद्वि सद्मान्युर्विया सुक्रतुर्धात्॥ २॥
अद्या चिन्नू चित्तदपो नदीनां यदाभ्यो अरदो गातुमिन्द्र।
नि पर्वता अद्मसदो न सेदुस्त्वया दृळ्हानि सुक्रतो रजांसि॥ ३॥
सत्यमित्तन्न त्वावाँ अन्यो अस्तीन्द्र देवो न मर्त्यो ज्यायान्।
अहन्नहिं परिशयानमर्णोऽवासृजो अपो अच्छा समुद्रम्॥ ४॥
त्वमपो वि दुरो विषूचीरिन्द्र दृळ्हमरुजः पर्वतस्य।
राजाभवो जगतश्चर्षणीनां साकं सूर्यं जनयन्द्यामुषासम्॥ ५॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सुहोत्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३ पङ्क्तिः; ४ निचृदतिशक्वरी; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ४, ५ धैवतः; २, ३ पञ्चमः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

अभूरेको रयिपते रयीणामा हस्तयोरधिथा इन्द्र कृष्टीः ।
वि तोके अप्सु तनये च सूरेऽ वोचन्त चर्षणयो विवाचः ॥ १ ॥
त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि विश्वाच्युता चिच्च्यावयन्ते रजांसि ।
द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वं दृळ्हं भयते अज्मन्ना ते ॥ २ ॥
त्वं कुत्सेनाभि शुष्णमिन्द्राशुषं युध्य कुयवं गविष्टौ ।
दशं प्रपित्वे अध सूर्यस्य मुषायश्चक्रमविवे रपांसि ॥ ३ ॥
त्वं शतान्यव शम्बरस्य पुरो जघन्थाप्रतीनि दस्योः ।
अशिक्षो यत्र शच्या शचीवो दिवोदासाय सुन्वते
सुतक्रे भरद्वाजाय गृणते वसूनि ॥ ४ ॥
स सत्यसत्वन्महते रणाय रथमा तिष्ठ तुविनृम्ण भीमम् ।
याहि प्रपथिन्नवसोप मद्रिक्प्र च श्रुत श्रावय चर्षणिभ्यः ॥ ५ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सुहोत्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ५ त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-५ धैवतः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय ।
विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि वचांस्यासा स्थविराय तक्षम् ॥ १ ॥
स मातरा सूर्येणा कवीनामवासयद्रुजदद्रिं गृणानः ।
स्वाधीभिर्ऋक्वभिर्वावशान उदुस्रियाणामसृजन्निदानम् ॥ २ ॥
स वह्निभिर्ऋक्वभिर्गोषु शश्वन्मितज्ञुभिः पुरुकृत्वा जिगाय ।
पुरः पुरोहा सखिभिः सखीयन्दृळ्हा रुरोज कविभिः कविः सन् ॥ ३ ॥
स नीव्याभिर्जरितारमच्छा महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः ।
पुरुवीराभिर्वृषभ क्षितीनामा गिर्वणः सुविताय प्र याहि ॥ ४ ॥
स सर्गेण शवसा तक्तो अत्यैरप इन्द्रो दक्षिणतस्तुराषाट् ।
इत्था सृजाना अनपावृदर्थं दिवेदिवे विविषुरप्रमृष्यम् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनहोत्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ निचृत्पङ्क्तिः; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

य ओजिष्ठ इन्द्र तं सु नो दा मदो वृषन्त्स्वभिष्टिर्दास्वान्।
सौवश्व्यं यो वनवत्स्वश्वो वृत्रा समत्सु सासहद्दमित्रान् ॥ १ ॥
त्वां हीन्द्रावसे विवाचो हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ।
त्वं विप्रेभिर्वि पणीँरशायस्त्वोत इत्सनिता वाजमर्वा ॥ २ ॥
त्वं ताँ इन्द्रोभयाँ अमित्रान्दासा वृत्राण्यार्या च शूर।
वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कैरा पृत्सु दर्षि नृणां नृतम ॥ ३ ॥
स त्वं न इन्द्राकवाभिरूती सखा विश्वायुरविता वृधे भूः।
स्वर्षाता यद्ध्वयामसि त्वा युध्यन्तो नेमधिता पृत्सु शूर ॥ ४ ॥
नूनं न इन्द्रापरायं च स्या भवा मृळीक उत नो अभिष्टौ।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन्दिवि ष्याम पार्ये गोषतमाः ॥ ५ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शुनहोत्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

सं च त्वे जग्मुर्गिर इन्द्र पूर्वीर्वि च त्वद्यन्ति विभ्वो मनीषाः।
पुरा नूनं च स्तुतय ऋषीणां पस्पृध्र इन्द्रे अध्युक्थार्का ॥ १ ॥
पुरुहूतो यः पुरुगूर्त ऋभ्वाँ एकः पुरुप्रशस्तो अस्ति यज्ञैः।
रथो न महे शवसे युजानोऽस्माभिरिन्द्रो अनुमाद्यो भूत् ॥ २ ॥
न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणीरिन्द्रं नक्षन्तीदभि वर्धयन्तीः।
यदि स्तोतारः शतं यत्सहस्रं गृणन्ति गिर्वणसं शं तदस्मै ॥ ३ ॥
अस्मा एतद्दिव्याय चेव मासा मिमिक्ष इन्द्रे न्यया मि सोमः।
जनं न धन्वन्नभि सं यदापः सत्रा वावृधुर्हवनानि यज्ञैः ॥ ४ ॥
अस्मा एतन्महयाङ्गूषमस्मा इन्द्राय स्तोत्रं मतिभिरवाचि।
असद्यथा महति वृत्रतूर्य इन्द्रो विश्वायुरविता वृधश्च ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नरः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ पङ्क्तिः; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३-५ धैवतः; २ पञ्चमः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

क॒दा भु॑व॒न्रथ॑क्षयाणि॒ ब्रह्म॑ क॒दा स्तो॒त्रे स॑हस्रपो॒ष्यं दाः।
क॒दा स्तोमं॑ वासयोऽ स्य रा॒या क॒दा धियः॑ करसि॒ वाज॑रत्नाः ॥ १ ॥
कहिं॑ स्वि॒त्तदि॑न्द्र॒ यन्नृ॒भिर्नृ॑न्वी॒रैर्वी॒रान्नी॒ळया॑से॒ जया॒जीन्।
त्रि॒धातु॒ गा अधि॑ जयासि॒ गोष्विन्द्र॑ द्यु॒म्नं स्व॑र्वद्धेह्यस्मे ॥ २ ॥
कहिं॑ स्वि॒त्तदि॑न्द्र॒ यज्ज॑रि॒त्रे वि॒श्वप्सु॒ ब्रह्म॑ कृ॒णवः॑ शविष्ठ।
क॒दा धियो॒ न नि॒युतो॑ युवासे क॒दा गोम॑घा॒ हव॑नानि गच्छाः ॥ ३ ॥
स गोम॑घा जरि॒त्रे अश्व॑श्चन्द्रा॒ वाज॑श्रवसो॒ अधि॑ धेहि॒ पृक्षः॑।
पी॒पि॒हीषः॑ सु॒दुघा॑मिन्द्र धे॒नुं भ॒रद्वा॑जेषु सु॒रुचो॑ रुरुच्याः ॥ ४ ॥
तमा नूनं॑ वृजन॒मन्यथा॑ चि॒च्छूरो॒ यच्छक्र॒ वि दुरो॑ गृणी॒षे।
मा निर॑रं शुक्र॒दुघ॑स्य धे॒नोरा॑ङ्गिर॒सान्ब्रह्म॑णा विप्र जिन्व ॥ ५ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नरः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ स्वराट् पङ्क्तिः; ४, ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २ धैवतः; ३-५ पञ्चमः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

स॒त्रा मदा॑स॒स्तव॑ वि॒श्वज॑न्याः स॒त्रा रायोऽध॒ ये पार्थि॑वासः।
सत्रा वाजा॑नामभवो विभ॒क्ता यद्दे॒वेषु॑ धार॒यथा॒ असु॑र्यम् ॥ १ ॥
अनु॒ प्र ये॑जे॒ जन॒ ओजो॑ अस्य स॒त्रा द॑धि॒रे॒ अनु॑ वी॒र्या॑य।
स्यू॒मगृ॑भे दुध॒येऽ व॑ते च॒ क्रतुं॑ वृञ्ज॒न्त्यपि॑ वृत्र॒हत्ये॑ ॥ २ ॥
तं स॒ध्रीची॑रू॒तयो॒ वृष्ण्या॑नि॒ पौंस्या॑नि नि॒युतः॑ सश्चुरिन्द्र॑म्।
स॒मु॒द्रं न सिन्ध॑व उ॒क्थशु॑ष्मा उरु॒व्यच॑सं॒ गिर॒ आ वि॑शन्ति ॥ ३ ॥
स रा॒यस्खामुप॑ सृजा गृणा॒नः पु॑रुश्च॒न्द्रस्य॒ त्वमि॑न्द्र॒ वस्वः॑।
पति॑र्बभूथास॒मो॒ जना॑ना॒मेको॒ विश्व॑स्य॒ भुव॑नस्य॒ राजा॑ ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स तु श्रुधि श्रुत्या यो दुवोयुर्द्यौर्न भूमाभि रायो अर्यः।
असो यथा नः शवसा चकानो युगेयुगे वयसा चेकितानः॥ ५॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ४, ५ धैवतः; २, ३ पञ्चमः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

अर्वाग्रथं विश्ववारं त उग्रेन्द्र युक्तासो हरयो वहन्तु।
कीरिश्चिद्धि त्वा हवते स्ववानृधीमहि सधमादस्ते अद्य॥ १॥
प्रो द्रोणे हरयः कर्मीग्मन्पुनानास ऋज्यन्तो अभूवन्।
इन्द्रो नो अस्य पूर्व्यः पपीयाद् द्युक्षो मदस्य सोम्यस्य राजा॥ २॥
आससत्राणासः शवसानमच्छेन्द्रं सुचक्रे रथ्यासो अश्वाः।
अभि श्रव ऋज्यन्तो वहेयुर्नू चिन्नु वायोरमृतं वि दस्येत्॥ ३॥
वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियर्तीन्द्रो मघोनां तुविकूर्मितमः।
यया वज्रिवः परियास्यंहो मघा च धृष्णो दयसे वि सूरीन्॥ ४॥
इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य दातेन्द्रो गीर्भिर्वर्धतां वृद्धमहाः।
इन्द्रो वृत्रं हनिष्ठो अस्तु सत्वा ता सूरिः पृणति तूतुजानः॥ ५॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

अपादित उदु नश्चित्रतमो महीं भर्षद् द्युमतीमिन्द्रहूतिम्।
पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य यामञ्जनस्य रातिं वनते सुदानुः॥ १॥
दूराच्चिदा वसतो अस्य कर्णा घोषादिन्द्रस्य तन्यति ब्रुवाणः।
एयमेनं देवहूतिर्ववृत्यान्मद्र्यग्गिन्द्रमियमृच्यमाना॥ २॥
तं वो धिया परमया पुराजामजरमिन्द्रमभ्यनूष्यर्कैः।
ब्रह्मा च गिरो दधिरे समस्मिन्महाँश्च स्तोमो अधि वर्धदिन्द्रे॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्धाद्यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद् ब्रह्म गिर उक्था च मन्म।
वर्धाहैनमुषसो यामन्नक्तोर्वर्धान्मासाः शरदो द्याव इन्द्रम् ॥ ४ ॥
एवा जज्ञानं सहसे असामि वावृधानं राधसे च श्रुताय ।
महामुग्रमवसे विप्र नूनमा विवासेम वृत्रतूर्येषु ॥ ५ ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ४, ५ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य वह्नेर्विप्रमन्मनो वचनस्य मध्वः।
अपा नस्तस्य सचनस्य देवेषो युवस्व गृणते गोअग्राः ॥ १ ॥
अयमुशानः पर्यद्रिमुस्रा ऋतधीतिभिर्ऋतयुग्युजानः ।
रुजदरुग्णं वि वलस्य सानुं पर्णीँर्वचोभिरभि योधदिन्द्रः ॥ २ ॥
अयं द्योतयद्द्युतो व्यु१क्तून्दोषा वस्तोः शरद इन्दुरिन्द्रः।
इमं केतुमदधुर्नू चिदह्नां शुचिजन्मन उषसश्चकार ॥ ३ ॥
अयं रोचयद्रुचो रुचानो३ऽयं वासयद् व्यु१तेन पूर्वीः।
अयमीयत ऋतयुग्भिरश्वैः स्वर्विदा नाभिना चर्षणिप्राः ॥ ४ ॥
नू गृणानो गृणते प्रत्न राजन्निषः पिन्व वसुदेयाय पूर्वीः।
अप ओषधीरविषा वनानि गा अर्वतो नॄनृचसे रिरीहि ॥ ५ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो मदायावं स्य हरी वि मुचा सखाया।
उत प्र गाय गण आ निषद्याथा यज्ञाय गृणते वयो धाः ॥ १ ॥
अस्य पिब यस्य जज्ञान इन्द्र मदाय क्रत्वे अपिबो विरप्शिन्।
तमु ते गावो नर आपो अद्रिरिन्दुं समह्यन्पीतये समस्मै ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिद्धे अग्नौ सुत इन्द्र सोम आ त्वा वहन्तु हरयो वहिष्ठाः।
त्वायता मनसा जोहवीमीन्द्रा याहि सुविताय महे नः॥ ३॥
आ याहि शश्वदुशता ययाथेन्द्र महा मनसा सोमपेयम्।
उप ब्रह्माणि शृणव इमा नोऽथा ते यज्ञस्तन्वे३ वयो धात्॥ ४॥
यदिन्द्र दिवि पार्ये यदृधग्यद्वा स्वे सदने यत्र वासि।
अतो नो यज्ञमवसे नियुत्वान्त्सजोषाः पाहि गिर्वणो मरुद्भिः॥ ५॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २-४ त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ पञ्चमः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

अहेळमान उप याहि यज्ञं तुभ्यं पवन्त इन्दवः सुतासः।
गावो न वज्रिन्त्स्वमोको अच्छेन्द्रा गहि प्रथमो यज्ञियानाम्॥ १॥
या ते काकुत्सुकृता या वरिष्ठा यया शश्वत्पिबसि मध्व ऊर्मिम्।
तया पाहि प्र ते अध्वर्युरस्थात्सं ते वज्रो वर्ततामिन्द्र गव्युः॥ २॥
एष द्रप्सो वृषभो विश्वरूप इन्द्रायु वृष्णे समकारि सोमः।
एतं पिब हरिवः स्थातरुग्र यस्येशिषे प्रदिवि यस्ते अन्नम्॥ ३॥
सुतः सोमो असुतादिन्द्र वस्यानयं श्रेयाञ्चिकितुषे रणाय।
एतं तितिर्व उप याहि यज्ञं तेन विश्वास्तविषीरा पृणस्व॥ ४॥
ह्वयामसि त्वेन्द्र याह्यर्वाङरं ते सोमस्तन्वे भवाति।
शतक्रतो मादयस्वा सुतेषु प्रास्माँ अव पृतनासु प्र विक्षु॥ ५॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ स्वराडुष्णिक्; २ निचृदनुष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ४ भुरिगनुष्टुप्॥ स्वरः—१ ऋषभः; २-४ गान्धारः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर।
अरंगमाय जग्मयेऽपश्चाद्दध्वने नरे॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः सोमपातमम् ।
अमत्रेभिर्ऋजीषिणमिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः ॥ २ ॥
यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ ।
वेदा विश्वस्य मेधिरो धृषत्तंतमिदेषते ॥ ३ ॥
अस्माअस्मा इदन्धसोऽध्वर्यो प्र भरा सुतम् ।
कुवित्समस्य जेन्यस्य शर्धतोऽभिशस्तेरवस्परत् ॥ ४ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥

यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयः ।
अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ १ ॥
यस्य तीव्रसुतं मदं मध्यमन्तं च रक्षसे ।
अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ २ ॥
यस्य गा अन्तरश्मनो मदे दृळ्हा अवासृजः ।
अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ ३ ॥
यस्य मन्दानो अन्धसो माघोनं दधिषे शवः ।
अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ ४ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ४ निचृदनुष्टुप्; २, ५ स्वराडुष्णिक्; ६ आसुरीपङ्क्तिः; ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ८ निचृत्पङ्क्तिः; ९, १२, १६ पङ्क्तिः; १०, ११, १३, २२ विराट्त्रिष्टुप्; १४, १५, १७, १८, २०, २४ निचृत्त्रिष्टुप्; १९, २१, २३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४ गान्धारः; २, ५, ऋषभः; ६-९, १२, १६ पञ्चमः; १०, ११, १३-१५, १७-२४ धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

यो रयिवो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः ।
सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यः शग्मस्तुविशग्म ते रायो दामा मतीनाम्।
सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ २॥
येन वृद्धो न शवसा तुरो न स्वाभिरूतिभिः।
सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः॥ ३॥
त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम्।
इन्द्रं विश्वासाहं नरं मंहिष्ठं विश्वचर्षणिम्॥ ४॥
यं वर्धयन्तीद्गिरः पतिं तुरस्य राधसः।
तमिन्वस्य रोदसी देवी शुष्मं सपर्यतः॥ ५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

तद्व उक्थस्य बर्हणेन्द्रायोपस्तृणीषणि।
विपो न यस्योतयो वि यद्रोहन्ति सक्षितः॥ ६॥
अविदद्दक्षं मित्रो नवीयान्पपानो देवेभ्यो वस्यो अचैत्।
ससवान्त्स्तौलाभिर्धौतरीभिरुरुष्या पायुरभवत्सखिभ्यः॥ ७॥
ऋतस्य पथि वेधा अपायि श्रिये मनांसि देवासो अक्रन्।
दधानो नाम महो वचोभिर्वपुर्दृशये वेन्यो व्यावः॥ ८॥
द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे सेधा जनानां पूर्वीररातीः।
वर्षीयो वयः कृणुहि शचीभिर्धनस्य सातावस्माँ अविड्ढि॥ ९॥
इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्नभूम वयं दात्रे हरिवो मा वि वेनः।
नकिरापिर्ददृशे मर्त्यत्रा किमङ्ग रध्रचोदनं त्वाहुः॥ १०॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

मा जस्वने वृषभ नो ररीथा मा ते रेवतः सख्ये रिषाम।
पूर्वीष्टे इन्द्र निष्षिधो जनेषु जह्यसुष्वीन्प्र वृहापृणतः॥ ११॥
उद्भ्राणीव स्तनयन्नियर्तीन्द्रो राधांस्यश्व्यानि गव्या।
त्वमसि प्रदिवः कारुधाया मा त्वादामान आ दंभन्मघोनः॥ १२॥
अध्वर्यो वीर प्र महे सुतानामिन्द्राय भर स ह्यस्य राजा।
यः पूर्व्याभिरुत नूतनाभिर्गीर्भिर्वावृधे गृणतामृषीणाम्॥ १३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्य मदे पुरु वर्पांसि विद्वानिन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान।
तमु प्र होषि मधुमन्तमस्मै सोमं वीराय शिप्रिणे पिबध्यै॥ १४॥
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं हन्ता वृत्रं वज्रेण मन्दसानः।
गन्ता यज्ञं परावतश्चिदच्छा वसुर्धीनामविता कारुधायाः॥ १५॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

इदं त्यत्पात्रमिन्द्रपानमिन्द्रस्य प्रियममृतमपायि ।
मत्सद्यथा सौमनसाय देवं व्यस्मद् द्वेषो युयवद् व्यंहः॥ १६॥
एना मन्दानो जहि शूर शत्रूञ्जामिमजामिं मघवन्नमित्रान्।
अभिषेणाँ अभ्याइदेदिशानान्परांच इन्द्र प्र मृणा जही च॥ १७॥
आसु ष्मा णो मघवन्निन्द्र पृत्स्वस्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः।
अपां तोकस्य तनयस्य जेष इन्द्र सूरीन्कृणुहि स्मा नो अर्धम्॥ १८॥
आ त्वा हरयो वृषणो युजाना वृषरथासो वृषरश्मयोऽत्याः।
अस्मत्राञ्चो वृषणो वज्रवाहो वृष्णे मदाय सुयुजो वहन्तु॥ १९॥
आ ते वृषन्वृषणो द्रोणमस्थुर्घृतप्रुषो नोर्मयो मदन्तः।
इन्द्र प्र तुभ्यं वृषभिः सुतानां वृष्णे भरन्ति वृषभाय सोमम्॥ २०॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

वृषासि दिवो वृषभः पृथिव्या वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम्।
वृष्णे त इन्दुर्वृषभ पीपाय स्वादू रसो मधुपेयो वराय॥ २१॥
अयं देवः सहसा जायमान इन्द्रेण युजा पणिमस्तभायत्।
अयं स्वस्य पितुरायुधानीन्दुरमुष्णादशिवस्य मायाः ॥ २२॥
अयमकृणोदुषसः सुपत्नीरयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः ।
अयं त्रिधातु दिवि रोचनेषु त्रितेषु विन्ददमृतं निगूळ्हम्॥ २३॥
अयं द्यावापृथिवी वि ष्कभायदयं रथमयुनक्सप्तरश्मिम्।
अयं गोषु शच्या पक्वमन्तः सोमो दाधार दशयन्त्रमुत्सम्॥ २४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः॥ देवता—१-३० इन्द्रः; ३१-३३ बृबुस्तक्षा॥ छन्दः—१-३, ८, १४, २०-२४, २८, ३०, ३२ गायत्री; ४, ७, ९-१३, १५-१९, २५, २६, २९ निचृद्गायत्री; ५, ६, २७ विराड्गायत्री; ३१ आर्च्युष्णिक्; ३३ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३०, ३२ षड्जः; ३१ ऋषभः; ३३ गान्धारः॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

य आनयत्परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्। इन्द्रः स नो युवा सखा॥ १॥
अविप्रे चिद्वयो दधदनाशुना चिदर्वता। इन्द्रो जेता हितं धनम्॥ २॥
महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः। नास्य क्षीयन्त ऊतयः॥ ३॥
सखायो ब्रह्मवाहसेऽर्चत प्र च गायत। स हि नः प्रमतिर्महीं॥ ४॥
त्वमेकस्य वृत्रहन्नविता द्वयोरसि। उतेदृशे यथा वयम्॥ ५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः। नृभिः सुवीर उच्यसे॥ ६॥
ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गीर्भिः सखायमूग्मियम्। गां न दोहसे हुवे॥ ७॥
यस्य विश्वानि हस्तयोरूचुर्वसूनि नि द्विता। वीरस्य पृतनाषहः॥ ८॥
वि दृळ्हानि चिदद्रिवो जनानां शचीपते। वृह माया अनानत॥ ९॥
तमु त्वा सत्य सोमपा इन्द्र वाजानां पते। अहूमहि श्रवस्यवः॥ १०॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

तमु त्वा यः पुरासिथ यो वा नूनं हिते धने। हव्यः स श्रुधी हवम्॥ ११॥
धीभिरर्वद्भिरर्वतो वाजाँ इन्द्र श्रवाय्यान्। त्वया जेष्म हितं धनम्॥ १२॥
अभूरु वीर गिर्वणो महाँ इन्द्र धने हिते। भरे वितन्तसाय्यः॥ १३॥
या त ऊतिरमित्रहन्मक्षूजवस्तमासति। तया नो हिनुही रथम्॥ १४॥
स रथेन रथीतमोऽस्माकेनाभियुग्वना। जेषि जिष्णो हितं धनम्॥ १५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

य एक इत्तमु ष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः॥ १६॥
यो गृणतामिदासिथापिरूती शिवः सखा। स त्वं न इन्द्र मृळय॥ १७॥
धिष्व वज्रं गभस्त्यो रक्षोहत्याय वज्रिवः। सासह्याम अभि स्पृधः॥ १८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्नं रयीणां युजं सखायं कीरिचोदनम्। ब्रह्मवाहस्तमं हुवे ॥ १९ ॥
स हि विश्वानि पार्थिवाँ एको वसूनि पत्यते। गिर्वणस्तमो अध्रिगुः ॥ २० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

स नो नियुद्भिरा पृण कामं वाजेभिरश्विभिः। गोमद्भिर्गोपते धृषत् ॥ २१ ॥
तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने ॥ २२ ॥
न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत्सीमुप श्रवद्गिरः ॥ २३ ॥
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्। शचीभिरप नो वरत् ॥ २४ ॥
इमा उ त्वा शतक्रतोऽभि प्र णोनुवुर्गिरः। इन्द्रं वत्सं न मातरः ॥ २५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

दूणाशं सख्यं तव गौरसि वीर गव्यते। अश्वो अश्वायते भव ॥ २६ ॥
स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे। न स्तोतारं निदे करः ॥ २७ ॥
इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः। वत्सं गावो न धेनवः ॥ २८ ॥
पुरूतमं पुरूणां स्तोतृणां विवाचि। वाजेभिर्वाजयताम् ॥ २९ ॥
अस्माकमिन्द्र भूतु ते स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः। अस्मान्राये महे हिनु ॥ ३० ॥
अधि बृबुः पणीनां वर्षिष्ठे मूर्धन्नस्थात्। उरुः कक्षो न गाङ्ग्यः ॥ ३१ ॥
यस्य वायोरिव द्रवद्भद्रा रातिः सहस्त्रिणी। सद्यो दानाय मंहते ॥ ३२ ॥
तत्सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः ।
बृबुं सहस्त्रदातमं सूरिं सहस्त्रसातमम् ॥ ३३ ॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः प्रगाथो वा ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ स्वराड्बृहती; ३, ४ भुरिग्बृहती; ५, ७ स्वराडनुष्टुप्; ६ ब्राह्मीगायत्री; ८, ९ विराड्बृहती; १० पङ्क्तिः; ११ निचृद्बृहती; १२, १४ विराट्पङ्क्तिः; १३ बृहती ॥ स्वरः—१, ५, ७ गान्धारः; २-४, ८, ९, ११, १३ मध्यमः; ६ षड्जः; १०, १२, १४ पञ्चमः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

त्वामिद्धि हवामहे साता वाजस्य कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः।
गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे॥ २॥
यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रं तं हूमहे वयम्।
सहस्रमुष्क तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे॥ ३॥
बाधसे जनान्वृषभेव मन्युना घृषौ मीळ्ह ऋचीषम।
अस्माकं बोध्यविता महाधने तनूष्वप्सु सूर्ये॥ ४॥
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरँ ओजिष्ठं पपुरि श्रवः।
येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः॥ ५॥

अथाष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन्देवेषु हूमहे।
विश्वा सु नो विथुरा पिब्दना वसोऽमित्रान्त्सुषहान्कृधि॥ ६॥
यदिन्द्र नाहुषीष्वाँ ओजो नृम्णं च कृष्टिषु।
यद्वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौंस्या॥ ७॥
यद्वा तृक्षौ मघवन्द्रुह्यावा जने यत्पूरौ कच्च वृष्ण्यम्।
अस्मभ्यं तद्रिरीहि सं नृषाह्योऽमित्रान्पृत्सु तुर्वणे॥ ८॥
इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत्।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः॥ ९॥
ये गव्यता मनसा शत्रुमादभुरभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया।
अधा स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वणस्तनूपा अन्तमो भव॥ १०॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

अधा स्मा नो वृधे भवेन्द्र नायमवा युधि।
यदन्तरिक्षे पतयन्ति पर्णिनो दिद्यवस्तिग्ममूर्धानः॥ ११॥
यत्र शूरासस्तन्वो वितन्वते प्रिया शर्म पितृणाम्।
अधा स्मा यच्छ तन्वे३ तने च छर्दिरचित्तं यावय द्वेषः॥ १२॥
यदिन्द्र सर्गे अर्वतश्चोदयासे महाधने।
असमने अध्वनि वृजिने पथि श्येनाँइव श्रवस्यतः॥ १३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्धूँरिव प्रवण आशुया यतो यदि क्लोशमनु ष्वणि।
आ ये वयो न ववृत्यामिषि गृभीता बाह्वोर्गवि॥ १४॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गर्गः॥ देवता—१-५ सोमः; ६-१९, २०[२], २१-३१ इन्द्रः; २०[१] लिङ्गोक्ताः; २२-२५ प्रस्तोकस्य साञ्जयस्य दानस्तुतिः; २६-२८ रथः; २९-३१[१] दुन्दुभिः; ३१[२] दुन्दुभि इन्द्रश्च॥ छन्दः—१, ३, ५, २१, २२, २८ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ८, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ६, ७, १०, १५, १६, १८, २०, २९, ३० त्रिष्टुप्; २७ स्वराट्त्रिष्टुप्; २, ९, १२, १३, २६, ३१ भुरिक्पङ्क्तिः; १४, १७ स्वराट्पङ्क्तिः; १९ बृहती; २३ आसुरीपङ्क्तिः; २४, २५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—१, ३-८, १०, ११, १५, १६, १८, २०-२२, २७-३० धैवतः; २, ९, १२-१४, १७, २३, २६, ३१ पञ्चमः; १९ मध्यमः; २४, २५ षड्जः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

स्वादुष्किलायं मधुमाँ उतायं तीव्रः किलायं रसवाँ उतायम्।
उतो न्वस्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आहवेषु॥ १॥
अयं स्वादुरिह मदिष्ठ आस यस्येन्द्रो वृत्रहत्ये ममाद।
पुरूणि यश्च्यौत्ना शम्बरस्य वि नवतिं नव च देह्योऽहन्॥ २॥
अयं मे पीत उदियर्ति वाचमयं मनीषामुशतीमजीगः।
अयं षळुर्वीरभिमीत धीरो न याभ्यो भुवनं कच्चनारे॥ ३॥
अयं स यो वरिमाणं पृथिव्या वर्ष्माणं दिवो अकृणोदयं सः।
अयं पीयूषं तिसृषु प्रवत्सु सोमो दाधारोर्वन्तरिक्षम्॥ ४॥
अयं विदच्चित्रदृशीकमर्णः शुक्रसद्मनामुषसामनीके।
अयं महान्महता स्कम्भनेनोद् द्यामस्तभ्नाद् वृषभो मरुत्वान्॥ ५॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

धृषत्पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम्।
माध्यन्दिने सवन आ वृषस्व रयिस्थानो रयिमस्मासु धेहि॥ ६॥
इन्द्र प्र णः पुरएतेव पश्य प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ।
भवा सुपारो अतिपारयो नो भवा सुनीतिरुत वामनीतिः॥ ७॥
उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान्त्स्वर्वज्ज्योतिरभयं स्वस्ति।
ऋष्वा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धा वहिष्ठयोः शतावन्नश्वयोरा ।
इषमा वक्षीषां वर्षिष्ठां मा नस्तारीन्मघवन्नायो अर्यः ॥ ९ ॥
इन्द्र मृळ महां जीवातुमिच्छ चोदय धियमयसो न धाराम् ।
यत्किं चाहं त्वायुरिदं वदामि तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम् ॥ १० ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः ॥ ११ ॥
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः ।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ १२ ॥
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ।
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु ॥ १३ ॥
अव त्वे इन्द्र प्रवतो नोर्मिर्गिरो ब्रह्माणि नियुतो धवन्ते ।
उरू न राधः सवना पुरूण्यपो गा वज्रिन्युवसे समिन्दून् ॥ १४ ॥
क ईं स्तवत्कः पृणात्को यजाते यदुग्रमिन्मघवा विश्वहावेत् ।
पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः ॥ १५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

शृण्वे वीर उग्रमुग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमानः ।
एधमानद्विळुभयस्य राजा चोष्कूयते विश इन्द्रो मनुष्यान् ॥ १६ ॥
परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति वितर्तुराणो अपरेभिरेति ।
अनानुभूतीरवधून्वानः पूर्वीरिन्द्रः शरदस्तर्तरीति ॥ १७ ॥
रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय ।
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश ॥ १८ ॥
युजानो हरिता रथे भूरि त्वष्टेह राजति ।
को विश्वाहा द्विषतः पक्ष आसत उतासीनेषु सूरिषु ॥ १९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगव्यूति क्षेत्रमागन्म देवा उर्वी सती भूमिरंहूरणाभूत्।
बृहस्पते प्र चिकित्सा गविष्टावित्था सते जरित्र इन्द्र पन्थाम्॥ २०॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः॥ ३४॥

दिवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं कृष्णा असेधदप सद्मनो जाः।
अहन्दासा वृषभो वस्त्रयन्तोदव्रजे वर्चिनं शम्बरं च ॥ २१॥
प्रस्तोक इन्नु राधसस्त इन्द्र दश कोशयीर्दश वाजिनोऽ दात्।
दिवोदासादतिथिग्वस्य राधः शाम्बरं वसु प्रत्यग्रभीष्म॥ २२॥
दशाश्वान्दश कोशान्दश वस्त्राधिभोजना ।
दशो हिरण्यपिण्डान्दिवोदासादसानिषम् ॥ २३॥
दश रथान्प्रष्टिमतः शतं गा अथर्वभ्यः। अश्वथः पायवेऽ दात्॥ २४॥
महि राधो विश्वजन्यं दधानान्भरद्वाजान्त्सार्ञ्जयो अभ्ययष्ट॥ २५॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः।
गोभिः सन्नद्धो असि वीळयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि॥ २६॥
दिवस्पृथिव्याः पर्योज उद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्याभृतं सहः।
अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्रं हविषा रथं यज॥ २७॥
इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः।
सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय॥ २८॥
उप श्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगत्।
स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अप सेध शत्रून्॥ २९॥
आ क्रन्दय बलमोजो न आ धा निः ष्टनिहि दुरिता बाधमानः।
अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना इत इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीळयस्व॥ ३०॥
आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति ।
समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोऽ स्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु॥ ३१॥

इति चतुर्थाष्टके सप्तमोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः (तृणपाणिकं पृश्निसूक्तम्)॥ देवता—१-१० अग्निः; ११, १२, २०, २१ मरुतः; १३-१५ मरुतो लिङ्गोक्ता वा; १६-१९ पूषा; २२ पृश्निर्वा भूमी वा॥ छन्दः—१, ४, ५, १४ बृहती; २ आर्चीजगती; ३, १९ विराड्बृहती; ६, ७, २१ महाबृहती; ८ महासतोबृहती; ९ भुरिगनुष्टुप्; १०, १२, १७ भुरिग्बृहती; ११, १६, उष्णिक्; १३, १८ निचृदुष्णिक्; १५ निचृदतिजगती; २० स्वराडनुष्टुप्; २२ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-८, १०, १२, १४, १७, १९, २१ मध्यमः; २, १५ निषादः; २१ धैवतः; ९, २०, २२ गान्धारः; ११, १३, १६, १८ ऋषभः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥ १ ॥
ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये ।
भुवद्वाजेष्वविता भुवद् वृध उत त्राता तनूनाम् ॥ २ ॥
वृषा ह्यग्ने अजरो महान्विभास्यर्चिषा ।
अजस्त्रेण शोचिषा शोशुचच्छुचे सुदीतिभिः सु दीदिहि ॥ ३ ॥
महो देवान्यजसि यक्ष्यानुषक्तव क्रत्वोत दंसना ।
अर्वाचः सीं कृणुह्यग्नेऽवसे रास्व वाजोत वंस्व ॥ ४ ॥
यमापो अद्रयो वना गर्भमृतस्य पिप्रति ।
सहसा यो मथितो जायते नृभिः पृथिव्या अधि सानवि ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

आ यः पप्रौ भानुना रोदसी उभे धूमेन धावते दिवि ।
तिरस्तमो ददृश ऊर्म्यास्वा श्यावास्वरुषो वृषा श्यावा अरुषो वृषा ॥ ६ ॥
बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवन्नः शुक्र दीदिहि द्युमत्पावक दीदिहि ॥ ७ ॥
विश्वासां गृहपतिर्विशामसि त्वमग्ने मानुषीणाम् ।
शतं पूर्भिर्यविष्ठ पाह्यंहसः समेद्धारं शतं हिमाः स्तोतृभ्यो ये च ददति ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः ॥ ९ ॥
पषिं तोकं तनयं पर्तृभिष्ट्वमदब्धैरप्रयुत्वभिः ।
अग्ने हेळांसि दैव्या युयोधि नोऽदेवानि हवांसि च ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

आ सखायः सबर्दुघां धेनुमजध्वमुप नव्यसा वचः ।
सृजध्वमनपस्फुराम् ॥ ११ ॥
या शर्धाय मारुताय स्वभानवे श्रवोऽमृत्यु धुक्षत ।
या मृळीके मरुतां तुराणां या सुम्नैरेवयावरी ॥ १२ ॥
भरद्वाजायाव धुक्षत द्विता ।
धेनुं च विश्वदोहसमिषं च विश्वभोजसम् ॥ १३ ॥
तं व इन्द्रं न सुक्रतुं वरुणमिव मायिनम् ।
अर्यमणं न मन्द्रं सुप्रभोजसं विष्णुं न स्तुष आदिशे ॥ १४ ॥
त्वेषं शर्धो न मारुतं तुविष्वण्यनर्वाणं पूषणं सं यथा शता ।
सं सहस्रा कारिषच्चर्षणिभ्य आँ आविर्गूळ्हा वसू करत्
सुवेदा नो वसू करत् ॥ १५ ॥
आ मा पूषन्नुप द्रव शंसिषं नु ते अपिकर्ण आघृणे ।
अघा अर्यो अरातयः ॥ १६ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

मा काकम्बीरमुद् वृहो वनस्पतिमशस्तीर्वि हि नीनशः ।
मोत सूरो अह एवा चन ग्रीवा आदर्धते वेः ॥ १७ ॥
दूतेरिव तेऽवृकमस्तु सख्यम् ।
अच्छिद्रस्य दधन्वतः सुपूर्णस्य दधन्वतः ॥ १८ ॥
परो हि मर्त्यैरसि समो देवैरुत श्रिया ।
अभि ख्यः पूषन्पृतनासु नस्त्वमवा नूनं यथा पुरा ॥ १९ ॥
वामी वामस्य धूतयः प्रणीतिरस्तु सूनृता ।
देवस्य वा मरुतो मर्त्यस्य वेजानस्य प्रयज्यवः ॥ २० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सद्यश्चिद्यस्य चर्कृतिः परि द्यां देवो नैति सूर्यः ।
त्वेषं शवो दधिरे नाम यज्ञियं मरुतो वृत्रहं शवो ज्येष्ठं वृत्रहं शवः ॥ २१ ॥
सकृद्द्यौरजायत सकृद्भूमिरजायत ।
पृश्न्या दुग्धं सकृत्पयस्तदन्यो नानु जायते ॥ २२ ॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋजिश्वाः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ३, ४, १०, ११ त्रिष्टुप्; २, १४ स्वराट्-पङ्क्तिः; ५, ६, ९, १३ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ ब्राह्म्युष्णिक्; ८, १२ विराट्त्रिष्टुप्; १५ अतिजगती ॥ स्वरः—१, ३-६, ८-१३ धैवतः; २, १४ पञ्चमः; ७ ऋषभः; १५ निषादः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

स्तुषे जनं सुव्रतं नव्यसीभिर्गीर्भिर्मित्रावरुणा सुम्नयन्ता ।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्तु सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निः ॥ १ ॥
विशोविश ईड्यमध्वरेष्वदृप्तक्रतुमरतिं युवत्योः ।
दिवः शिशुं सहसः सूनुमग्निं यज्ञस्य केतुमरुषं यजध्यै ॥ २ ॥
अरुषस्य दुहितरा विरूपे स्तृभिरन्या पिपिशे सूरो अन्या ।
मिथस्तुरा विचरन्ती पावके मन्म श्रुतं नक्षत ऋच्यमाने ॥ ३ ॥
प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रयिं विश्ववारं रथप्राम् ।
द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविमियक्षसि प्रयज्यो ॥ ४ ॥
स मे वपुश्छदयद्दश्विनोर्यो रथो विरुक्मान्मनसा युजानः ।
येन नरा नासत्येषयध्यै वर्तिर्याथस्तनयाय त्मने च ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

पर्जन्यवाता वृषभा पृथिव्याः पुरीषाणि जिन्वतमप्यानि ।
सत्यश्रुतः कवयो यस्य गीर्भिर्जगतः स्थातर्जगदा कृणुध्वम् ॥ ६ ॥
पावीरवी कन्या चित्रायुः सरस्वती वीरपत्नी धियं धात् ।
ग्नाभिरच्छिद्रं शरणं सजोषा दुराधर्षं गृणते शर्म यंसत् ॥ ७ ॥
पथस्पथः परिपतिं वचस्या कामेन कृतो अभ्यानळर्कम् ।
स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधियं सीषधाति प्र पूषा ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथमभाजं यशसं वयोधां सुपाणिं देवं सुगभस्तिमृभ्वम्।
होतां यक्षद्यजतं पस्त्यानामग्निस्त्वष्टारं सुहवं विभावा॥ ९॥
भुवनस्य पितरं गीर्भिराभी रुद्रं दिवा वर्धया रुद्रमक्तौ।
बृहन्तमृष्वमजरं सुषुम्नमृधग्घुवेम कविनेषितासः ॥ १०॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

आ युवानः कवयो यज्ञियासो मरुतो गन्त गृणतो वरस्याम्।
अचित्रं चिद्धि जिन्वथा वृधन्त इत्था नक्षन्तो नरो अङ्गिरस्वत्॥ ११॥
प्र वीराय प्र तवसे तुरायाजा यूथेव पशुरक्षिरस्तम्।
स पिस्पृशति तन्वि श्रुतस्य स्तृभिर्न नाकं वचनस्य विपः॥ १२॥
यो रजांसि विममे पार्थिवानि त्रिश्चिद्विष्णुर्मनवे बाधिताय।
तस्य ते शर्मन्नुपदद्यमाने राया मदेम तन्वा३ तना च ॥ १३॥
तन्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिरर्कैस्तत्पर्वतस्तत्सविता चनो धात्।
तदोषधीभिरभि रातिषाचो भगः पुरन्धिर्जिन्वतु प्र राये॥ १४॥
नू नो रयिं रथ्यं चर्षणिप्रां पुरुवीरं मह ऋतस्य गोपाम्।
क्षयं दाताजरं येन जनान्त्स्पृधो अदेवीरभि च क्रमाम
विश आदेवीरभ्यश्नवाम ॥ १५॥

पञ्चमोऽनुवाकः [५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋजिश्वाः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ७ त्रिष्टुप्; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३, ५, ६, १०-१२ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ८, १३ विराट्त्रिष्टुप्; ९ पङ्क्तिः; १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १५ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३-८, १०-१३ धैवतः; २, ९, १४, १५ पञ्चमः॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

हुवे वो देवीमदितिं नमोभिर्मृळीकाय वरुणं मित्रमग्निम्।
अभिक्षदामर्यमणं सुशेवं त्रातॄन्देवान्त्सवितारं भगं च ॥ १॥
सुज्योतिषः सूर्य दक्षपितृननागास्त्वे सुमहो वीहि देवान्।
द्विजन्मानो य ऋतसापः सत्याः स्वर्वन्तो यजता अग्निजिह्वाः॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत द्यावापृथिवी क्षत्रमुरु बृहद्रोदसी शरणं सुषुम्ने ।
महस्करथो वरिवो यथा नोऽस्मे क्षयाय धिषणे अनेहः ॥ ३ ॥
आ नो रुद्रस्य सूनवो नमन्तामद्या हूतासो वसवोऽधृष्टाः ।
यदीमर्भे महति वा हितासो बाधे मरुतो अह्वाम देवान् ॥ ४ ॥
मिम्यक्ष येषु रोदसी नु देवी सिषक्ति पूषा अभ्यर्धयज्वा ।
श्रुत्वा हवं मरुतो यद्ध याथ भूमा रेजन्ते अध्वनि प्रविक्ते ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

अभि त्यं वीरं गिर्वणसमर्चेन्द्रं ब्रह्मणा जरितर्नवेन ।
श्रवदिद्धवमुप च स्तवानो रासद्वाजाँ उप महो गृणानः ॥ ६ ॥
ओमानमापो मानुषीरमृक्तं धात तोकाय तनयाय शं योः ।
यूयं हि ष्ठा भिषजो मातृतमा विश्वस्य स्थातुर्जगतो जनित्रीः ॥ ७ ॥
आ नो देवः सविता त्रायमाणो हिरण्यपाणिर्यजतो जगम्यात् ।
यो दत्रवाँ उषसो न प्रतीकं व्यूर्णुते दाशुषे वार्याणि ॥ ८ ॥
उत त्वं सूनो सहसो नो अद्या देवाँ अस्मिन्नध्वरे ववृत्याः ।
स्यामहं ते सदमिद्रातौ तव स्यामग्रेऽवसा सुवीरः ॥ ९ ॥
उत त्या मे हवमा जग्म्यातं नासत्या धीभिर्युवमङ्ग विप्रा ।
अत्रिं न महस्तमसोऽमुमुक्तं तूर्वतं नरा दुरितादभीके ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

ते नो रायो द्युमतो वाजवतो दातारो भूत नृवतः पुरुक्षोः ।
दशस्यन्तो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता अप्या मळता च देवाः ॥ ११ ॥
ते नो रुद्रः सरस्वती सजोषा मीळ्हुष्मन्तो विष्णुर्मृळन्तु वायुः ।
ऋभुक्षा वाजो दैव्यो विधाता पर्जन्यावाता पिप्यतामिषं नः ॥ १२ ॥
उत स्य देवः सविता भगो नोऽपां नपादवतु दानु पप्रिः ।
त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः सजोषा द्यौर्देवेभिः पृथिवी समुद्रैः ॥ १३ ॥
उत नोऽहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज एकपात्पृथिवी समुद्रः ।
विश्वे देवा ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता अवन्तु ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवा नपातो मम तस्य धीभिर्भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
ग्ना हुतासो वसवोऽधृष्टा विश्वे स्तुतासो भूता यजत्राः ॥ १५ ॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋजिश्वाः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१-३, ५, ७, १०, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६, ९ स्वराट्पङ्क्तिः; ८ त्रिष्टुप्; १३-१५ निचृदुष्णिक्; १६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५, ७, ८, १०-१२ धैवतः; ४, ६, ९ पञ्चमः; १३-१५ ऋषभः; १६ गान्धारः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

उदु त्यच्चक्षुर्महि मित्रयोराँ एति प्रियं वरुणयोरदब्धम् ।
ऋतस्य शुचि दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदिता व्यद्यौत् ॥ १ ॥
वेद यस्त्रीणि विदथान्येषां देवानां जन्म सनुतरा च विप्रः ।
ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्नभि चष्टे सूरो अर्य एवान् ॥ २ ॥
स्तुष उ वो मह ऋतस्य गोपानदितिं मित्रं वरुणं सुजातान् ।
अर्यमणं भगमदब्धधीतीनच्छा वोचे सधन्यः पावकान् ॥ ३ ॥
रिशादसः सत्पतीँरदब्धान्महो राज्ञः सुवसनस्य दातॄन् ।
यूनः सुक्षत्रान्क्षयतो दिवो नॄनादित्यान्याम्यदितिं दुवोयु ॥ ४ ॥
द्यौ३ष्पितः पृथिवि मातरध्रुगग्ने भ्रातर्वसवो मृळता नः ।
विश्व आदित्या अदिते सजोषा अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्त ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

मा नो वृकाय वृक्ये समस्मा अघायते रीरधता यजत्राः ।
यूयं हि ष्ठा रथ्यो नस्तनूनां यूयं दक्षस्य वचसो बभूव ॥ ६ ॥
मा व एनो अन्यकृतं भुजेम मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ।
विश्वस्य हि क्षयथ विश्वदेवाः स्वयं रिपुस्तन्वं रीरिषीष्ट ॥ ७ ॥
नम इदुग्रं नम आ विवासे नमो दाधार पृथिवीमुत द्याम् ।
नमो देवेभ्यो नम ईश एषां कृतं चिदेनो नमसा विवासे ॥ ८ ॥
ऋतस्य वो रथ्यः पूतदक्षानृतस्य पस्त्यसदो अदब्धान् ।
ताँ आ नमोभिरुरुचक्षसो नॄन्विश्वान्व आ नमे महो यजत्राः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते हि श्रेष्ठवर्चसस्त उ नस्तिरो विश्वानि दुरिता नयन्ति।
सुक्षत्रासो वरुणो मित्रो अग्निर्ऋतधीतयो वक्मराजसत्याः ॥ १० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

ते न इन्द्रः पृथिवी क्षामं वर्धन्पूषा भगो अदितिः पञ्च जनाः।
सुशर्माणः स्ववसः सुनीथा भवन्तु नः सुत्रात्रासः सुगोपाः ॥ ११ ॥
नू सद्मानं दिव्यं नंशि देवा भारद्वाजः सुमतिं याति होता।
आसानेभिर्यजमानो मियेधैर्देवानां जन्म वसूयुर्ववन्द ॥ १२ ॥
अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम् ।
दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् ॥ १३ ॥
ग्रावाणः सोम नो हि कं सखित्वनाय वावशुः ।
जही न्यत्रिणं पणिं वृको हि षः ॥ १४ ॥
यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः ।
कर्ता नो अध्वन्ना सुगं गोपा अमा ॥ १५ ॥
अपि पन्थामगन्महि स्वस्तिगामनेहसम् ।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु ॥ १६ ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—ऋजिश्वाः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ४, १५, १६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३, ६, १३, १७ त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्पङ्क्तिः; ७, ८, ११ गायत्री; ९, १०, १२ निचृद्गायत्री; १४ विराड् जगती ॥ स्वरः—१-४, ६, १३, १५, १६, १७ धैवतः; ५ पञ्चमः; ७-१२ षड्जः; १४ निषादः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

न तद्दिवा न पृथिव्यानु मन्ये न यज्ञेन नोत शमीभिराभिः।
उब्जन्तु तं सुभ्वः पर्वतासो नि हीयतामतियाजस्य यष्टा ॥ १ ॥
अति वा यो मरुतो मन्यते नो ब्रह्म वा यः क्रियमाणं निनित्सात्।
तपूंषि तस्मै वृजिनानि सन्तु ब्रह्मद्विषमभि तं शोचतु द्यौः ॥ २ ॥
किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम गोपां किमङ्ग त्वाहुरभिशस्तिपां नः।
किमङ्ग नः पश्यसि निद्यमानान्ब्रह्मद्विषे तपुषिं हेतिमस्य ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्वन्तु मामुषसो जायमाना अर्वन्तु मा सिन्धवः पिन्वमानाः ।
अर्वन्तु मा पर्वतासो ध्रुवासोऽर्वन्तु मा पितरो देवहूतौ ॥ ४ ॥
विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
तथा करद्वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽवसागमिष्ठः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

इन्द्रो नेदिष्ठमवसागमिष्ठः सरस्वती सिन्धुभिः पिन्वमाना ।
पर्जन्यो न ओषधीभिर्मयोभुरग्निः सुशंसः सुहवः पितेव ॥ ६ ॥
विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमं हवम् । एदं बर्हिर्नि षीदत ॥ ७ ॥
यो वो देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति । तं विश्व उप गच्छथ ॥ ८ ॥
उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये । सुमृळीका भवन्तु नः ॥ ९ ॥
विश्वे देवा ऋतावृधं ऋतुभिर्हवनश्रुतः । जुषन्तां युज्यं पयः ॥ १० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणस्त्वष्टृमान्मित्रो अर्यमा । इमा हव्या जुषन्त नः ॥ ११ ॥
इमं नो अग्ने अध्वरं होतर्वयुनशो यज । चिकित्वान्दैव्यं जनम् ॥ १२ ॥
विश्वे देवाः शृणुतेमं हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ ।
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम् ॥ १३ ॥
विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञिया उभे रोदसी अपां नपाच्च मन्म ।
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम ॥ १४ ॥
ये के च ज्मा महिनो अहिमाया दिवो जज्ञिरे अपां सधस्थे ।
ते अस्मभ्यमिषये विश्वमायुः क्षपं उस्रा वरिवस्यन्तु देवाः ॥ १५ ॥
अग्नीपर्जन्यावतं धियं मेऽस्मिन्हवे सुहवा सुष्टुतिं नः ।
इळामन्यो जनयद्गर्भमन्यः प्रजावतीरिष आ धत्तमस्मे ॥ १६ ॥
स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्नौ सूक्तेन महा नमसा विवासे ।
अस्मिन्नो अद्य विदथे यजत्रा विश्वे देवा हविषि मादयध्वम् ॥ १७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ७, १० गायत्री; २, ५, ९ निचृद्गायत्री; ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-७, ९, १० षड्जः; ८ गान्धारः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

वयमु त्वा पथस्पते रथं न वाजसातये। धिये पूषन्नयुज्महि ॥ १ ॥
अभि नो नर्यं वसु वीरं प्रयतदक्षिणम्। वामं गृहपतिं नय ॥ २ ॥
अदित्सन्तं चिदाघृणे पूषन्दानाय चोदय। पणेश्चिद्वि म्रदा मनः ॥ ३ ॥
वि पथो वाजसातये चिनुहि वि मृधो जहि। साधन्तामुग्र नो धियः ॥ ४ ॥
परि तृन्धि पणीनामारया हृदया कवे। अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥ ५ ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

वि पूषन्नारया तुद पणेरिच्छ हृदि प्रियम्। अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥ ६ ॥
आ रिख किकिरा कृणु पणीनां हृदया कवे। अथेमस्मभ्यं रन्धय ॥ ७ ॥
यां पूषन्ब्रह्मचोदनीमारां बिभर्ष्याघृणे।
तया समस्य हृदयमा रिख किकिरा कृणु ॥ ८ ॥
या ते अष्ट्रा गोऔपशाघृणे पशुसाधनी। तस्यास्ते सुम्नमीमहे ॥ ९ ॥
उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत। नृवत्कृणुहि वीतये ॥ १० ॥

[५४] चतुःपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१, २, ४, ६-९ गायत्री; ३, १० निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

सं पूषन्विदुषा नय यो अञ्जसानुशासति। य एवेदमिति ब्रवत् ॥ १ ॥
समु पूष्णा गमेमहि यो गृहाँ अभिशासति। इम एवेति च ब्रवत् ॥ २ ॥
पूष्णश्चक्रं न रिष्यति न कोशोऽ व पद्यते। नो अस्य व्यथते पविः ॥ ३ ॥
यो अस्मै हविषाविधन्न तं पूषापि मृष्यते। प्रथमो विन्दते वसु ॥ ४ ॥
पूषा गा अन्वेतु नः पूषा रक्षत्ववर्तः। पूषा वाजं सनोतु नः ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

पूषन्ननु प्र गा इहि यजमानस्य सुन्वतः। अस्माकं स्तुवतामुत ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्किर्नेशन्मार्कीं रिषन्मार्कीं सं शारि केवटे। अथारिष्टाभिरा गहि॥ ७॥
शृण्वन्तं पूषणं वयमिर्यमनष्टवेदसम्। ईशानं राय ईमहे ॥ ८॥
पूषन्तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन। स्तोतारस्त इह स्मसि ॥ ९॥
परि पूषा परस्ताद्धस्तं दधातु दक्षिणम्। पुनर्नो नष्टमाजतु ॥ १०॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—पूषा॥ छन्दः—१, २, ५, ६ गायत्री; ३, ४ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

एहि वां विमुचो नपादाघृणे सं सचावहै। रथीर्ऋतस्य नो भव॥ १॥
रथीतमं कपर्दिनमीशानं राधसो महः। रायः सखायमीमहे॥ २॥
रायो धारास्याघृणे वसो राशिरजाश्व। धीवतोधीवतः सखा ॥ ३॥
पूषणं न्वाजाश्वमुप स्तोषाम वाजिनम्। स्वसुर्यो जार उच्यते॥ ४॥
मातुर्दिधिषुमब्रवं स्वसुर्जारः शृणोतु नः। भ्रातेन्द्रस्य सखा मम॥ ५॥
आजासः पूषणं रथे निशृम्भास्ते जनश्रियम्। देवं वहन्तु बिभ्रतः॥ ६॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—पूषा॥ छन्दः—१, ४, ५ गायत्री; २, ३ निचृद्गायत्री; ६ स्वराडुष्णिक्॥ स्वरः—१-५ षड्जः; ६ ऋषभः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

य एनमादिदेशति करम्भादिति पूषणम्। न तेन देव आदिशे॥ १॥
उत घा स रथीतमः सख्या सत्पतिर्युजा। इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते॥ २॥
उतादः पुरुषे गवि सूरश्चक्रं हिरण्ययम्। न्यैरयद्रथीतमः॥ ३॥
यदद्य त्वा पुरुष्टुत ब्रवाम दस्र मन्तुमः। तत्सु नो मन्म साधय॥ ४॥
इमं च नो गवेषणं सातये सीषधो गणम्। आरात्पूषन्नसि श्रुतः॥ ५॥
आ ते स्वस्तिमीमह आरेअघामुपावसुम् ।
अद्या च सर्वतातये श्वश्च सर्वतातये ॥ ६॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रापूषणौ॥ छन्दः—१, ६ विराड्गायत्री; २, ३ निचृद्गायत्री; ४, ५ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाजसातये॥ १॥
सोममन्य उपासदत्पातवे चम्वोः सुतम्। करम्भमन्य इच्छति॥ २॥
अजा अन्यस्य वह्नयो हरी अन्यस्य संभृता। ताभ्यां वृत्राणि जिघ्नते॥ ३॥
यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः। तत्र पूषाभवत्सचा॥ ४॥
तां पूष्णः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव। इन्द्रस्य चा रभामहे॥ ५॥
उत्पूषणं युवामहेऽभीशूंरिव सारथिः। मह्या इन्द्रं स्वस्तये॥ ६॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—पूषा॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराड्जगती; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ४ धैवतः; २ निषादः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४॥

शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावो भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ १॥
अजाश्वः पशुपा वाजपस्त्यो धियंजिन्वो भुवने विश्वे अर्पितः।
अष्ट्रां पूषा शिथिरामुद्वरीवृजत्संचक्षाणो भुवना देव ईयते॥ २॥
यास्ते पूषन्नावो अन्तः समुद्रे हिरण्ययीरन्तरिक्षे चरन्ति।
ताभिर्यासि दूत्यां सूर्यस्य कामेन कृत श्रव इच्छमानः॥ ३॥
पूषा सुबन्धुर्दिव आ पृथिव्या इळस्पतिर्मघवा दस्मवर्चाः।
यं देवासो अददुः सूर्यायै कामेन कृतं तवसं स्वञ्चम्॥ ४॥

[५९] एकोनषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ३-५ निचृद्बृहती; २ विराड्बृहती; ६, ७, ९ भुरिगनुष्टुप्; ८ उष्णिक्; १० अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-५ मध्यमः; ६, ७, ९, १० गान्धारः; ८ ऋषभः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५॥

प्र नु वोचा सुतेषु वां वीर्या३ यानि चक्रथुः ।
हतासो वां पितरो देवशत्रव इन्द्राग्नी जीवथो युवम् ॥ १॥
बळित्था महिमा वामिन्द्राग्नी पनिष्ट आ ।
समानो वां जनिता भ्रातरा युवं यमाविहेहमातरा ॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओकिवांसा सुते सचाँ अश्वा सप्तीइवादने ।
इन्द्रा न्वग्नी अवसेह वज्रिणा वयं देवा हवामहे ॥ ३ ॥
य इन्द्राग्नी सुतेषु वां स्तवत्तेष्वृतावृधा ।
जोषवाकं वदतः पज्रहोषिणा न देवा भसथश्चन ॥ ४ ॥
इन्द्राग्नी को अस्य वां देवौ मर्तश्चिकेतति ।
विषूचो अश्वान्युयुजान ईयत एकः समान आ रथे ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात्पद्वतीभ्यः ।
हित्वी शिरो जिह्वया वावदच्चरत्त्रिंशत्पदा न्यक्रमीत् ॥ ६ ॥
इन्द्राग्नी आ हि तन्वते नरो धन्वानि बाह्वोः ।
मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्क्तं गविष्टिषु ॥ ७ ॥
इन्द्राग्नी तपन्ति माघा अर्यो अरातयः ।
अप द्वेषांस्या कृतं युयुतं सूर्यादधि ॥ ८ ॥
इन्द्राग्नी युवोरपि वसु दिव्यानि पार्थिवा ।
आ न इह प्र यच्छतं रयिं विश्वायुपोषसम् ॥ ९ ॥
इन्द्राग्नी उक्थवाहसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता ।
विश्वाभिर्गीर्भिरा गतमस्य सोमस्य पीतये ॥ १० ॥

[६०] षष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६, ७ विराड्गायत्री; ५, ९, ११ निचृद्गायत्री; ८, १०, १२ गायत्री; १३ स्वराट्पङ्क्तिः; १४ निचृदनुष्टुप्; १५ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-१२ षड्जः; १३ पञ्चमः; १४, १५ गान्धारः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

शनथद् वृत्रमुत संनोति वाजमिन्द्रा यो अग्नी सहुरी सपर्यात् ।
इरज्यन्ता वसव्यस्य भूरेः सहस्तमा सहसा वाजयन्ता ॥ १ ॥
ता योधिष्टमभि गा इन्द्र नूनमपः स्वरुषसो अग्र ऊळ्हाः ।
दिशः स्वरुषस इन्द्र चित्रा अपो गा अग्ने युवसे नियुत्वान् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ वृत्रहणा वृत्रहभिः शुष्मैरिन्द्रं यातं नमोभिरग्ने अर्वाक्।
युवं राधोभिरकवेभिरिन्द्राग्ने अस्मे भवतमुत्तमेभिः ॥ ३ ॥
ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम्। इन्द्राग्नी न मर्धतः ॥ ४ ॥
उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे। ता नो मृळात ईदृशे ॥ ५ ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

हतो वृत्राण्यार्या हतो दासानि सत्पतिः। हतो विश्वा अप द्विषः ॥ ६ ॥
इन्द्राग्नी युवामिमेऽभि स्तोमा अनूषत। पिबतं शंभुवा सुतम् ॥ ७ ॥
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा। इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ॥ ८ ॥
ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ९ ॥
तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् ।
कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥ १० ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः। द्युम्नाय सुतरा अपः ॥ ११ ॥
ता नो वाजवतीरिष आशून्पिपृतमर्वतः। इन्द्रमग्निं च वोळ्हवे ॥ १२ ॥
उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह मादयध्यै।
उभा दातारा विषां रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम् ॥ १३ ॥
आ नो गव्यैभिरश्व्यैर्वसव्यैरुप गच्छतम् ।
सखायौ देवौ सख्याय शंभुवेन्द्राग्नी ता हवामहे ॥ १४ ॥
इन्द्राग्नी शृणुतं हवं यजमानस्य सुन्वतः ।
वीतं हव्यान्या गतं पिबतं सोम्यं मधु ॥ १५ ॥

[६१] एकषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—सरस्वती ॥ छन्दः—१, १३ निचृज्जगती; २ जगती; ३ विराड्जगती; ४, ९, ११, १२ निचृद्गायत्री; ५, ६, १० विराड्गायत्री; ७, ८ गायत्री; १४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३, १३ निषादः; ४-१२ षड्जः; १४ पञ्चमः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

इयमददाद्रभसमृणच्युतं दिवोदासं वध्र्यश्वाय दाशुषे ।
या शश्वन्तमाचखादावसं पणिं ता ते दात्राणि तविषा सरस्वति ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इयं शुष्मेभिर्बिसखा इवारुजत्सानु गिरीणां तविषेभिरूर्मिभिः।
पारावतघ्नीमवसे सुवृक्तिभिः सरस्वतीमा विवासेम धीतिभिः॥ २॥
सरस्वति देवनिदो नि बर्हय प्रजां विश्वस्य बृसयस्य मायिनः।
उत क्षितिभ्योऽवनीरविन्दो विषमेभ्यो अस्रवो वाजिनीवति॥ ३॥
प्र णो देवी सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। धीनामवित्र्यवतु॥ ४॥
यस्त्वा देवि सरस्वत्युपब्रूते धने हिते। इन्द्रं न वृत्रतूर्ये॥ ५॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

त्वं देवि सरस्वत्यवा वाजेषु वाजिनि। रदा पूषेव नः सनिम्॥ ६॥
उत स्या नः सरस्वती घोरा हिरण्यवर्तनिः। वृत्रघ्नी वष्टि सुष्टुतिम्॥ ७॥
यस्या अनन्तो अह्रुतस्त्वेषश्चरिष्णुरर्णवः। अमश्चरति रोरुवत्॥ ८॥
सा नो विश्वा अति द्विषः स्वसृरन्या ऋतावरी। अतन्नहेव सूर्यः॥ ९॥
उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा। सरस्वती स्तोम्या भूत्॥ १०॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

आप्रुषी पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम्। सरस्वती निदस्पातु॥ ११॥
त्रिषधस्था सप्तधातुः पञ्च जाता वर्धयन्ती। वाजेवाजे हव्या भूत्॥ १२॥
प्र या महिम्ना महिनासु चेकिते द्युम्नेभिरन्या अपसामपस्तमा।
रथइव बृहती विभ्वने कृतोपस्तुत्या चिकितुषा सरस्वती॥ १३॥
सरस्वत्यभि नो नेषि वस्यो माप स्फरीः पयसा मा न आ धक्।
जुषस्व नः सख्या वेश्या च मा त्वत्क्षेत्राण्यरणानि गन्म॥ १४॥

इति चतुर्थाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः॥

इति चतुर्थोऽष्टकः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चमोऽष्टके प्रथमोऽध्यायः

प्रथमोऽनुवाकः [६२] द्विषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, २ भुरिक्पङ्क्तिः ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६-८, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ९, ११ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-११ धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

स्तुषे नरा दिवो अस्य प्रसन्ताश्विना हुवे जरमाणो अर्कैः।
या सद्य उस्रा व्युषि ज्मो अन्तान्युर्यूषतः पर्युरू वरांसि॥ १॥
ता यज्ञमा शुचिभिश्चक्रमाणा रथस्य भानुं रुरुचू रजोभिः।
पुरू वरांस्यमिता मिमानापो धन्वान्यति याथो अज्रान्॥ २॥
ता ह त्यद्वर्तिर्यदरध्रमुग्रेत्था धियं ऊहथुः शश्वदश्वैः।
मनोजवेभिरिषिरैः शयध्यै परि व्यथिर्दाशुषो मर्त्यस्य॥ ३॥
ता नव्यसो जरमाणस्य मन्मोप भूषतो युयुजानसप्ती।
शुभं पृक्षमिषमूर्जं वहन्ता होता यक्षत्प्रत्नो अध्वगयुवाना॥ ४॥
ता वल्गू दस्रा पुरुशाकतमा प्रत्ना नव्यसा वचसा विवासे।
या शंसते स्तुवते शंभविष्ठा बभूवतुर्गृणते चित्ररातीं॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

ता भुज्युं विभिरद्भ्यः समुद्रात्तुग्रस्य सूनुमूहथू रजोभिः।
अरेणुभिर्योजनेभिर्भुजन्ता पतत्रिभिरर्णसो निरुपस्थात्॥ ६॥
वि जयुषा रथ्या यातमद्रिं श्रुतं हवं वृषणा वध्रिमत्याः।
दशस्यन्ता शयवे पिप्यथुर्गामिति च्यवाना सुमतिं भुरण्यू॥ ७॥
यद्रोदसी प्रदिवो अस्ति भूमा हेळो देवानामुत मर्त्यत्रा।
तदादित्या वसवो रुद्रियासो रक्षोयुजे तपुरघं दधात॥ ८॥
य ईं राजानावृतुथा विदधद्रजसो मित्रो वरुणश्चिकेतत्।
गम्भीराय रक्षसे हेतिमस्य द्रोघाय चिद्वचस आनवाय॥ ९॥
अन्तरैश्चक्रैस्तनयाय वर्तिर्द्युमता यातं नृवता रथेन।
सनुत्येन त्यजसा मर्त्यस्य वनुष्यतामपि शीर्षा ववृक्तम्॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ पर्माभिरुत मध्यमाभिर्नियुद्भिर्यातमवमाभिरर्वाक्।
दृळ्हस्य चिद्गोमतो वि व्रजस्य दुरो वर्तं गृणते चित्रराती॥ ११॥

[६३] त्रिषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१ स्वराड्बृहती; २, ४, ६, ७ पङ्क्तिः; ३, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ११ आसुरीपङ्क्तिः॥ स्वरः—१ मध्यमः; २-४, ६-८, १०, ११ पञ्चमः; ५, ९ धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

क्वा त्या वल्गू पुरुहूताद्य दूतो न स्तोमोऽविदन्नमस्वान्।
आ यो अर्वाङ्नासत्या ववर्त प्रेष्ठा ह्यसथो अस्य मन्मन्॥ १॥
अरं मे गन्तं हवनायास्मै गृणाना यथा पिबाथो अन्धः।
परि ह त्यद्वर्तिर्याथो रिषो न यत्परो नान्तरस्तुतुर्यात्॥ २॥
अकारि वामन्धसो वरीमन्नस्तारि बर्हिः सुप्रायणतमम्।
उत्तानहस्तो युवयुर्वन्दा वां नक्षन्तो अद्रय आज्जन्॥ ३॥
ऊर्ध्वो वामग्निरध्वरेष्वस्थात्प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची।
प्र होता गूर्तमना उराणोऽयुक्त यो नासत्या हवीमन्॥ ४॥
अधि श्रिये दुहिता सूर्यस्य रथं तस्थौ पुरुभुजा शतोतिम्।
प्र मायाभिर्मायिना भूतमत्र नरा नृतू जनिमन्यज्ञियानाम्॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

युवं श्रीभिर्दर्शताभिरासभिः शुभे पुष्टिमूहथुः सूर्यायाः।
प्र वां वयो वपुषेऽनु पप्तन्नक्षद्वाणी सुष्टुता धिष्ण्या वाम्॥ ६॥
आ वां वयोऽश्वासो वहिष्ठा अभि प्रयो नासत्या वहन्तु।
प्र वां रथो मनोजवा असर्जीषः पृक्ष इषिधो अनु पूर्वीः॥ ७॥
पुरु हि वां पुरुभुजा देष्णं धेनुं न इषं पिन्वतमसक्राम्।
स्तुतश्च वां माध्वी सुष्टुतिश्च रसाश्च ये वामनु रातिमग्मन्॥ ८॥
उत मं ऋज्रे पुरयस्य रघ्वी सुमीळ्हे शतं पेरुके च पक्वा।
शाण्डो दाद्धिरण्यैः स्मद्दिष्टीन्दशं वशासो अभिषाचं ऋष्वान्॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सं वां शता नासत्या सहस्राश्वानां पुरुपन्था गिरे दात्।
भरद्वाजाय वीर नू गिरे दाद्बृता रक्षांसि पुरुदंससा स्युः ॥ १० ॥
आ वां सुम्ने वरिमन्त्सूरिभिः ष्याम् ॥ ११ ॥

[६४] चतुःषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, २, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उदु श्रिय उषसो रोचमाना अस्थुरपां नोर्मयो रुशन्तः।
कृणोति विश्वा सुपथा सुगान्यभूदु वस्वी दक्षिणा मघोनी ॥ १ ॥
भद्रा ददृक्ष उर्विया वि भास्युत्ते शोचिर्भानवो द्यामपप्तन्।
आविर्वक्षः कृणुषे शुम्भमानोषो देवि रोचमाना महोभिः ॥ २ ॥
वहन्ति सीमरुणासो रुशन्तो गावः सुभगामुर्विया प्रथानाम्।
अपेजते शूरो अस्तेव शत्रून्बाधते तमो अजिरो न वोळ्हा ॥ ३ ॥
सुगोत ते सुपथा पर्वतेष्ववाते अपस्तरसि स्वभानो।
सा न आ वह पृथुयामन्नृष्वे रयिं दिवो दुहितरिषयध्यै ॥ ४ ॥
सा वह योक्षभिरवातोषो वरं वहसि जोषमनु ।
त्वं दिवो दुहितर्या ह देवी पूर्वहूतौ मंहना दर्शता भूः ॥ ५ ॥
उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन्नरश्च ये पितुभाजो व्युष्टौ ।
अमा सते वहसि भूरि वाममुषो देवि दाशुषे मर्त्याय ॥ ६ ॥

[६५] पञ्चषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ५ पञ्चमः; २-४, ६ धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

एषा स्या नो दुहिता दिवोजाः क्षितीरुच्छन्ती मानुषीरजीगः।
या भानुना रुशता राम्यास्वञ्जायि तिरस्तमसश्चिदक्तून् ॥ १ ॥
वि तद्ययुररुणयुग्भिरश्वैश्चित्रं भान्त्युषसश्चन्द्ररथाः।
अग्रं यज्ञस्य बृहतो नयन्तीर्वि ता बाधन्ते तम ऊर्म्यायाः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रवो॒ वाज॒मिष॒मूर्जं॑ वहन्ती॒र्नि दा॒शुषे॑ उषसो॒ मर्त्या॑य ।
म॒घोनी॑र्वी॒रव॒त्पत्य॑माना॒ अवो॑ धात विध॒ते र॑त्न॒मद्य ॥ ३ ॥
इ॒दा हि वो॑ विध॒ते र॑त्न॒मस्ती॒दा वी॒राय॑ दा॒शुषे॑ उषासः ।
इ॒दा विप्रा॑य॒ जर॑ते॒ यदु॒क्था नि ष्म॒ मावं॑ते वहथा पु॒रा चि॑त् ॥ ४ ॥
इ॒दा हि त॑ उषो अद्रिसानो गो॒त्रा गवा॒मङ्गि॑रसो गृ॒णन्ति॑ ।
व्य॑र्के॒णा बि॑भिदुर्ब्रह्म॒णा च स॒त्या नृ॒णाम॑भवद्दे॒वहू॑तिः ॥ ५ ॥
उ॒च्छा दि॑वो दुहितः प्र॒त्नव॑न्नो भरद्वाज॒वद्वि॑धते मघोनि ।
सु॒वीर॑ र॒यिं गृ॑ण॒ते रि॑रीह्यु॒रुगा॒यम॑धि धेहि॒ श्रवो॑ नः ॥ ६ ॥

[६६] षट्षष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ विराट् त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्पङ्क्तिः; ६, ७, १० भुरिक्पङ्क्तिः; ८ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५, ९, ११ धैवतः; ३, ४, ६-८, १० पञ्चमः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

वपु॑र्नु तच्चि॑कितुषे चिदस्तु समा॒नं नाम॑ धे॒नु पत्य॑मानम् ।
मर्ते॑ष्वन्यद्दो॒हसे॑ पी॒पाय॑ स॒कृच्छु॒क्रं दु॑दुहे पृ॒श्निरू॒धः ॥ १ ॥
ये अ॒ग्नयो॒ न शोशु॑चन्निधा॒ना द्विर्यत्त्रिर्म॒रुतो॑ वावृ॒धन्त॑ ।
अरे॑णवो॒ हिर॑ण्ययास॒ एषां सा॒कं नृ॒म्णैः पौंस्ये॑भिश्च भूवन् ॥ २ ॥
रु॒द्रस्य॒ ये मी॑ळ्हु॒षः सन्ति॑ पु॒त्रा यांश्चो॒ नु दा॒धृ॑विर्भर॑ध्यै ।
वि॒दे हि मा॒ता म॒हो म॒ही षा सेत्पृ॒श्निः सु॒भ्वे॑३ गर्भ॒माधा॑त् ॥ ३ ॥
न य ईष॑न्ते जनु॒षोऽया॒ न्वा॑न्तः सन्तोऽव॒द्यानि॑ पुना॒नाः ।
निर्यद्यु॒ह्रे शु॒चय॑ोऽनु॒ जोष॒मनु॒ श्रिया॒ त॒न्व॑मुक्षमा॑णाः ॥ ४ ॥
म॒क्षू न येषु॑ दो॒हसे॑ चिद॒या आ नाम॑ धृ॒ष्णु मारु॑तं दधा॒नाः ।
न ये स्तौ॒ना अ॒यासो॑ म॒ह्ना नू चि॑त्सु॒दानु॑रव॑ यासदु॒ग्रान् ॥ ५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

त इ॒दु॒ग्राः शव॑सा धृ॒ष्णुषे॑णा उ॒भे यु॑जन्त॒ रोद॑सी सु॒मेके॑ ।
अध॑ स्मै॒षु रो॒द॒सी स्वशो॑चि॒रामव॑त्सु तस्थौ॒ न रोक॑ः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेनो वो मरुतो यामो अस्त्वनश्वश्चिद्यमजत्यरथीः।
अनवसो अनभीशू रजस्तूर्वि रोदसी पथ्या याति साधन्॥ ७॥
नास्य वर्ता न तरुता न्वस्ति मरुतो यमवथ वाजसातौ।
तोके वा गोषु तनये यमप्सु स व्रजं दर्ता पार्ये अध द्योः॥ ८॥
प्र चित्रमर्कं गृणते तुराय मारुताय स्वतवसे भरध्वम्।
ये सहांसि सहसा सहन्ते रेजते अग्रे पृथिवी मखेभ्यः॥ ९॥
त्विषीमन्तो अध्वरस्येव दिद्युत्तृषुच्यवसो जुह्वो३ नाग्नेः।
अर्चत्रयो धुनयो न वीरा भ्राजज्जन्मानो मरुतो अधृष्टाः॥ १०॥
तं वृधन्तं मारुतं भ्राजदृष्टिं रुद्रस्य सूनुं हवसा विवासे।
दिवः शर्धाय शुचयो मनीषा गिरयो नाप उग्रा अस्पृधन्॥ ११॥

[६७] सप्तषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ९ स्वराट्पङ्क्तिः; २, १० भुरिक् पङ्क्तिः; ३, ७, ८, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ९, १० पञ्चमः; ३-८, ११ धैवतः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

विश्वेषां वः सतां ज्येष्ठतमा गीर्भिर्मित्रावरुणा वावृधध्यै।
सं या रश्मेव यमतुर्यतमिष्टा द्वा जनाँ असमा बाहुभिः स्वैः॥ १॥
इयं मद्वां प्र स्तृणीते मनीषोप प्रिया नमसा बर्हिरच्छ।
यन्तं नो मित्रावरुणावधृष्टं छर्दिर्यद्वां वरूथ्यं सुदानू॥ २॥
आ यातं मित्रावरुणा सुशस्त्युप प्रिया नमसा हूयमाना।
सं यावप्रः स्थो अपसेव जनाञ्छुधीयतश्चिद्यतथो महित्वा॥ ३॥
अश्वा न या वाजिना पूतबन्धू ऋता यद्गर्भमदितिर्भरध्यै।
प्र या महि महान्ता जायमाना घोरा मतीय रिपवे नि दीधः॥ ४॥
विश्वे यद्वां मंहना मन्दमानाः क्षत्रं देवासो अदधुः सजोषाः।
परि यद्द्यूथो रोदसी चिदुर्वी सन्ति स्पशो अदब्धासो अमूराः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

ता हि क्षत्रं धारयेथे अनु द्यून्दृंहेथे सानुमुपमादिव द्योः ।
दृळ्हो नक्षत्र उत विश्वदेवो भूमिमातान्द्यां धासिनायोः ॥ ६ ॥
ता विग्रं धैथे जठरं पृणध्या आ यत्सद्म सभृतयः पृणन्ति ।
न मृष्यन्ते युवतयोऽ वाता वि यत्पयो विश्वजिन्वा भरन्ते ॥ ७ ॥
ता जिह्वया सदमेदं सुमेधा आ यद्वां सत्यो अरतिर्ऋते भूत् ।
तद्वां महित्वं घृतान्नावस्तु युवं दाशुषे वि चयिष्टमंहः ॥ ८ ॥
प्र यद्वां मित्रावरुणा स्पूर्धन्प्रिया धाम युवधिता मिनन्ति ।
न ये देवास ओहसा न मर्ता अयज्ञसाचो अप्यो न पुत्राः ॥ ९ ॥
वि यद्वाचं कीस्तासो भरन्ते शंसन्ति के चिन्निविदो मनानाः ।
आद्वां ब्रवाम सत्यान्युक्था नकिर्देवेभिर्यतथो महित्वा ॥ १० ॥
अवोरित्था वां छर्दिषो अभिष्टौ युवोर्मित्रावरुणावस्कृधोयु ।
अनु यद्वावः स्फुरानृजिप्यं धृष्णुं यद्रणे वृषणं युनजन् ॥ ११ ॥

[६८] अष्टषष्टीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ४, ११ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ७, ८ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ पङ्क्तिः; ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ९, १० निचृज्जगती ॥ स्वरः—१, ४, ६, ११ धैवतः; २, ३, ५, ७, ८ पञ्चमः; ९, १० निषादः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः सजोषा मनुष्वद् वृक्तबर्हिषो यजध्यै ।
आ य इन्द्रावरुणाविषे अद्य महे सुम्नाय मह आववर्तत् ॥ १ ॥
ता हि श्रेष्ठा देवताता तुजा शूराणां शविष्ठा ता हि भूतम् ।
मघोनां महिष्ठा तुविशुष्म ऋतेन वृत्रतुरा सर्वसेना ॥ २ ॥
ता गृणीहि नमस्येभिः शूषैः सुम्नेभिरिन्द्रावरुणा चकाना ।
वज्रेणान्यः शवसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः ॥ ३ ॥
ग्राश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासो नरां स्वर्गूर्ताः ।
प्रैभ्य इन्द्रावरुणा महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतमुर्वी ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स इत्सुदानुः स्ववाँ ऋतावेन्द्रा यो वां वरुण दाशति त्मन्।
इषा स द्विषस्तरेद्दास्वान्वंसद्रयिं रयिवतश्च जनान् ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

यं युवं दाश्वध्वराय देवा रयिं धत्थो वसुमन्तं पुरुक्षुम्।
अस्मे स इन्द्रावरुणावपि ष्यात्प्र यो भनक्ति वनुषामशस्तीः ॥ ६ ॥
उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः सूरिभ्य इन्द्रावरुणा रयिः ष्यात्।
येषां शुष्मः पृतनासु साह्वान्प्र सद्यो द्युम्ना तिरते ततुरिः ॥ ७ ॥
नू न इन्द्रावरुणा गृणाना पृङ्क्तं रयिं सौश्रवसाय देवा।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्धोऽपो न नावा दुरिता तरेम ॥ ८ ॥
प्र सम्राजे बृहते मन्म नु प्रियमर्चा देवाय वरुणाय सप्रथः।
अयं य उर्वी महिना महिव्रतः क्रत्वा विभात्यजरो न शोचिषा ॥ ९ ॥
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रता।
युवो रथो अध्वरं देववीतये प्रति स्वसरमुप याति पीतये ॥ १० ॥
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम्।
इदं वामन्धः परिषिक्तमस्मे आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयेथाम् ॥ ११ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्राविष्णू ॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ८ त्रिष्टुप्; ५ ब्राह्म्युष्णिक् ॥ स्वरः—१-४, ६-८ धैवतः; ५ ऋषभः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

सं वां कर्मणा समिषा हिनोमीन्द्राविष्णू अपसस्पारे अस्य।
जुषेथां यज्ञं द्रविणं च धत्तमरिष्टैर्नः पथिभिः पारयन्ता ॥ १ ॥
या विश्वासां जनितारा मतीनामिन्द्राविष्णू कलशा सोमधाना।
प्र वां गिरः शस्यमाना अवन्तु प्र स्तोमासो गीयमानासो अर्कैः ॥ २ ॥
इन्द्राविष्णू मदपती मदानामा सोमं यातं द्रविणो दधाना।
सं वामञ्जन्त्वक्तुभिर्मतीनां सं स्तोमासः शस्यमानास उक्थैः ॥ ३ ॥
आ वामश्वासो अभिमातिषाह इन्द्राविष्णू सधमादो वहन्तु।
जुषेथां विश्वा हवना मतीनामुप ब्रह्माणि शृणुतं गिरो मे ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्राविष्णू तत्पनयाय्यं वां सोमस्य मद उरु चक्रमाथे।
अकृणुतमन्तरिक्षं वरीयोऽप्रथतं जीवसे नो रजांसि ॥ ५ ॥
इन्द्राविष्णू हविषा वावृधानाग्राद्वाना नमसा रातहव्या ।
घृतासुती द्रविणं धत्तमस्मे समुद्रः स्थः कलशः सोमधानः ॥ ६ ॥
इन्द्राविष्णू पिबतं मध्वो अस्य सोमस्य दस्रा जठरं पृणेथाम्।
आ वामन्धांसि मदिराण्यग्मन्नुप ब्रह्माणि शृणुतं हवं मे ॥ ७ ॥
उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चनैनोः।
इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम् ॥ ८ ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २-४, ६ जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा ।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥ १ ॥
असश्चन्ती भूरिधारे पयस्वती घृतं दुहाते सुकृते शुचिव्रते ।
राजन्ती अस्य भुवनस्य रोदसी अस्मे रेतः सिञ्चतं यन्मनुर्हितम् ॥ २ ॥
यो वामृजवे क्रमणाय रोदसी मर्तो ददाश धिषणे स साधति।
प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि युवोः सिक्ता विषुरूपाणि सव्रता ॥ ३ ॥
घृतेन द्यावापृथिवी अभीवृते घृतश्रिया घृतपृचा घृतावृधा ।
उर्वी पृथ्वी होतृवूर्ये पुरोहिते ते इद्विप्रा ईळते सुम्नमिष्टये ॥ ४ ॥
मधु नो द्यावापृथिवी मिमिक्षतां मधुश्चुता मधुदुघे मधुव्रते ।
दधाने यज्ञं द्रविणं च देवता महि श्रवो वाजमस्मे सुवीर्यम् ॥ ५ ॥
ऊर्जं नो द्यौश्च पृथिवी च पिन्वतां पिता माता विश्वविदा सुदंससा।
संरराणे रोदसी विश्वशम्भुवा सनिं वाजं रयिमस्मे समिन्वताम् ॥ ६ ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—सविता ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३ निचृज्जगती; ४ त्रिष्टुप्; ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३ निषादः; ४-६ धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

उदु ष्य देवः सविता हिरण्ययाँ बाहू अयंस्त सवनाय सुक्रतुः ।
घृतेन पाणी अभि प्रुष्णुते मखो युवा सुदक्षो रजसो विधर्मणि ॥ १ ॥
देवस्य वयं सवितुः सवीमनि श्रेष्ठे स्याम वसुनश्च दावने ।
यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो निवेशने प्रसवे चासि भूमनः ॥ २ ॥
अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वं शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम् ।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत ॥ ३ ॥
उदु ष्य देवः सविता दमूना हिरण्यपाणिः प्रतिदोषमस्थात् ।
अयोहनुर्यजतो मन्द्रजिह्व आ दाशुषे सुवति भूरि वामम् ॥ ४ ॥
उदू अयाँ उपवक्तेव बाहू हिरण्ययाँ सविता सुप्रतीका ।
दिवो रोहांस्यरुहत्पृथिव्या अरीरमत्पतयत्कच्चिदभ्वम् ॥ ५ ॥
वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवेदिवे वाममस्मभ्यं सावीः ।
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वामभाजः स्याम ॥ ६ ॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रासोमौ ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

इन्द्रासोमा महि तद्वां महित्वं युवं महानि प्रथमानि चक्रथुः ।
युवं सूर्यं विविदथुर्युवं स्व१र्विश्वा तमांस्यहतं निदश्च ॥ १ ॥
इन्द्रासोमा वासयथ उषासमुत्सूर्यं नयथो ज्योतिषा सह ।
उप द्यां स्कम्भथुः स्कम्भनेनाप्रथतं पृथिवीं मातरं वि ॥ २ ॥
इन्द्रासोमावहिमपः परिष्ठां हथो वृत्रमनु वां द्यौरमन्यत ।
प्राणंस्यैरयतं नदीनामा समुद्राणि पप्रथुः पुरूणि ॥ ३ ॥
इन्द्रासोमा पक्वमामास्वन्तर्नि गवामिद्दधथुर्वक्षणासु ।
जगृभथुरनपिनद्धमासु रुशच्चित्रासु जगतीष्वन्तः ॥ ४ ॥
इन्द्रासोमा युवमङ्ग तरुत्रमपत्यसाचं श्रुत्यं रराथे ।
युवं शुष्मं नर्यं चर्षणिभ्यः सं विव्यथुः पृतनाषाहमुग्रा ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[७३] त्रिसप्ततीतमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

यो अद्रिभित्प्रथमजा ऋतावा बृहस्पतिराङ्गिरसो हविष्मान् ।
द्विबर्हज्मा प्राघर्मसत्पिता न आ रोदसी वृषभो रोरवीति ॥ १ ॥
जनाय चिद्य ईवत उ लोकं बृहस्पतिर्देवहूतौ चकार ।
घ्नन्वृत्राणि वि पुरो ददरीति जयञ्छत्रूँरमित्रान्पृत्सु साहन् ॥ २ ॥
बृहस्पतिः समजयद्वसूनि महो व्रजान्गोमतो देव एषः ।
अपः सिषासन्त्स्वरप्रतीतो बृहस्पतिर्हन्त्यमित्रमर्कैः ॥ ३ ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—सोमारुद्रौ ॥ छन्दः—१, २, ४ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

सोमारुद्रा धारयेथामसुर्यं१ प्र वामिष्टयोऽरमश्नुवन्तु ।
दमेदमे सप्त रत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १ ॥
सोमारुद्रा वि वृहतं विषूचीममीवा या नो गयमाविवेश ।
आरे बाधेथां निर्ऋतिं पराचैरस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु ॥ २ ॥
सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।
अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत् ॥ ३ ॥
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृळतं नः ।
प्र नो मुञ्चतं वरुणस्य पाशाद्दोपायतं नः सुमनस्यमाना ॥ ४ ॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पायुर्भारद्वाजः ॥ देवता—१ वर्म; २ धनुः; ३ ज्या; ४ आर्त्नी; ५ इषुधिः; ६[१] सारथिः; ६[२] रश्मयः; ७ अश्वाः; ८ रथः; ९ रथगोपाः; १० लिङ्गोक्ताः; ११, १२, १५, १६, इषवः; १३ प्रतोदः; १४ हस्तघ्नः; १७-१९ लिङ्गोक्ता सङ्ग्रामाशिषः (१७ युद्धभूमिर्ब्रह्मणस्पतिरदितिश्च; १८ कवचसोमवरुणाः; १९ देवा ब्रह्म च) ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ७-९, ११, १४, १८ त्रिष्टुप्; ६ जगती;

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० विराड्जगती; १२, १९ विराडनुष्टुप्; १३ स्वराडुष्णिक्; १५ निचृद् अनुष्टुप्; १६ अनुष्टुप्; १७ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-५, ७-९, ११, १४, १८ धैवतः; ६, १० निषादः; १२, १५, १६, १९ गान्धारः; १३ ऋषभः; १७ पञ्चमः॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे।
अनाविद्धया तन्वा जय त्वं स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु॥ १॥
धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम।
धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वीः प्रदिशो जयेम॥ २॥
वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रियं सखायं परिषस्वजाना।
योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्ज्या इयं समने पारयन्ती॥ ३॥
ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे।
अप शत्रून्विध्यतां संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्॥ ४॥
बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य।
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वीः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः॥ ५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

रथे तिष्ठन्नयति वाजिनः पुरो यत्रयत्र कामयते सुषारथिः।
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः॥ ६॥
तीव्रान्घोषान्कृण्वते वृषपाणयोऽश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः।
अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूरनपव्ययन्तः॥ ७॥
रथवाहनं हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म।
तत्रा रथमुप शग्मं सदेम विश्वाहा वयं सुमनस्यमानाः॥ ८॥
स्वादुषंसदः पितरो वयोधाः कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः।
चित्रसेना इषुबला अमृध्राः सतोवीरा उरवो व्रातसाहाः॥ ९॥
ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा।
पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः संनद्धा पतति प्रसूता।
यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म यंसन् ॥ ११ ॥
ऋजीते परि वृङ्धि नोऽश्मा भवतु नस्तनूः ।
सोमो अधि ब्रवीतु नोऽदितिः शर्म यच्छतु ॥ १२ ॥
आ जङ्घन्ति सान्वेषां जघनाँ उप जिघ्नते ।
अश्वाजनि प्रचेतसोऽश्वान्त्समत्सु चोदय ॥ १३ ॥
अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांसं परि पातु विश्वतः ॥ १४ ॥
आलोक्ता या रुरुशीष्ण्यथो यस्या अयो मुखम् ।
इदं पर्जन्यरेतस इष्वै देव्यै बृहन्नमः ॥ १५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते ।
गच्छामित्रान्प्र पद्यस्व मामीषां कं चनोच्छिषः ॥ १६ ॥
यत्र बाणाः संपतन्ति कुमारा विशिखाइव ।
तत्रा नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥ १७ ॥
मर्मीणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥ १८ ॥
यो नः स्वो अरणो यश्च निष्ट्यो जिघांसति ।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम् ॥ १९ ॥

इति षष्ठं मण्डलम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-१८ एकादशाक्षरपादैस्त्रिपदा विराड् गायत्री, १९-२५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१८ षड्जः; १९-२५ धैवतः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथर्युम् ॥ १ ॥
तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित् ।
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ॥ २ ॥
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्त्रया सूम्यो यविष्ठ ।
त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥ ३ ॥
प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं निः सुवीरासः शोशुचन्त द्युमन्तः ।
यत्रा नरः समासते सुजाताः ॥ ४ ॥
दा नो अग्ने धिया रयिं सुवीरं स्वपत्यं सहस्य प्रशस्तम् ।
न यं यावा तरति यातुमावान् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

उप यमेति युवतिः सुदक्षं दोषा वस्तोर्हविष्मती घृताची ।
उप स्वैनमरमतिर्वसूयुः ॥ ६ ॥
विश्वा अग्नेऽप दुहरातीर्येभिस्तपोभिरदहो जरूथम् ।
प्र निस्वरं चातयस्वामीवाम् ॥ ७ ॥
आ यस्ते अग्न इधते अनीकं वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पावक ।
उतो न एभिः स्तवथैरिह स्याः ॥ ८ ॥
वि ये ते अग्ने भेजिरे अनीकं मर्ता नरः पित्र्यासः पुरुत्रा ।
उतो न एभिः सुमना इह स्याः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा विश्वा अदेवीरभि सन्तु माया:।
ये मे धियं पनयन्त प्रशस्ताम् ॥ १० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्ग: ॥ २५ ॥

मा शूने अग्ने नि षदाम नृणां माशेषसोऽ वीरता परि त्वा।
प्रजावतीषु दुर्यासु दुर्य ॥ ११ ॥
यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं न:।
स्वजन्मना शेषसा वावृधानम् ॥ १२ ॥
पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेरररुषो अघायो:।
त्वा युजा पृतनायूँरभि ष्याम् ॥ १३ ॥
सेदग्निरग्नीँरत्यस्त्वन्यान्यत्र वाजी तनयो वीळुपाणि: ।
सहस्त्रपाथा अक्षरा समेति ॥ १४ ॥
सेदग्निर्यो वनुष्यतो निपाति समेद्धार मंहस उरुष्यात् ।
सुजातास: परि चरन्ति वीरा: ॥ १५ ॥

अथ षड्विंशो वर्ग: ॥ २६ ॥

अयं सो अग्निराहुत: पुरुत्रा यमीशान: समिद्धिन्धे हविष्मान्।
परि यमेत्यध्वरेषु होता ॥ १६ ॥
त्वे अग्न आहवनानि भूरीशानास आ जुहुयाम नित्या ।
उभा कृण्वन्तौ वहतू मियेधे ॥ १७ ॥
इमो अग्ने वीततमानि हव्याजस्त्रो वक्षि देवतातिमच्छ ।
प्रति न ईं सुरभीणि व्यन्तु ॥ १८ ॥
मा नो अग्नेऽ वीरते परा दा दुर्वासससेऽ मतये मा नो अस्यै।
मा न: क्षुधे मा रक्षस ऋतावो मा नो दमे मा वन आ जुहूर्था: ॥ १९ ॥
नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्य: सुषूद:।
रातौ स्यामोभयासस आ ते यूयं पात स्वस्तिभि: सदा न: ॥ २० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

त्वमग्ने सुहवो रण्वसंदृक्सुदीती सूनो सहसो दिदीहि।
मा त्वे सचा तनये नित्य आ धङ्मा वीरो अस्मन्नर्यो वि दासीत् ॥ २१ ॥
मा नो अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेद्धेष्वग्निषु प्र वोचः।
मा ते अस्मान्दुर्मतयो भूमाच्छिद्रेवस्य सूनो सहसो नशन्त ॥ २२ ॥
स मर्तो अग्ने स्वनीक रेवानमर्त्ये य आजुहोति हव्यम्।
स देवता वसुवनिं दधाति यं सूरिरर्थी पृच्छमान एति ॥ २३ ॥
महो नो अग्ने सुवितस्य विद्वान्त्रयिं सूरिभ्य आ वहा बृहन्तम्।
येन वयं सहसावन्मदेमाविक्षितास आयुषा सुवीराः ॥ २४ ॥
नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः सुषूदः।
रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २५ ॥

इति पञ्चमाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ पञ्चमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आप्रियः ॥ छन्दः—१, ९ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ३, ६-८, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४, ६-११ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

जुषस्व नः समिधमग्ने अद्य शोचा बृहद्यजतं धूममृण्वन्।
उप स्पृश दिव्यं सानु स्तूपैः सं रश्मिभिस्ततनः सूर्यस्य ॥ १ ॥
नराशंसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः।
ये सुक्रतवः शुचयो धियंधाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या ॥ २ ॥
ईळेन्यं वो असुरं सुदक्षमन्तर्दूतं रोदसी सत्यवाचम्।
मनुष्वदग्निं मनुना समिद्धं समध्वराय सदमिन्महेम ॥ ३ ॥
सपर्यवो भरमाणा अभिज्ञु प्र वृञ्जते नमसा बर्हिरग्नौ।
आजुह्वाना घृतपृष्ठं पृषद्वदध्वर्यवो हविषा मर्जयध्वम् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्यो३ वि दुरो देवयन्तोऽ शिश्रयू रथयुर्देवताता ।
पूर्वी शिशुं न मातरा रिहाणे समग्रुवो न समनेष्वञ्जन् ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

उत योषणे दिव्ये मही न उषासानक्ता सुदुघेव धेनुः ।
बर्हिषदा पुरुहूते मघोनी आ यज्ञियै सुविताय श्रयेताम् ॥ ६ ॥
विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु कारू मन्ये वां जातवेदसा यजध्यै ।
ऊर्ध्वं नो अध्वरं कृतं हवेषु ता देवेषु वनथो वार्याणि ॥ ७ ॥
आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्येभिरग्निः ।
सरस्वती सारस्वतेभिरर्वाक्तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥ ८ ॥
तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि रराणः स्यस्व ।
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥ ९ ॥
वनस्पतेऽव सृजोप देवानग्निर्हविः शमिता सूदयाति ।
सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद ॥ १० ॥
आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङिन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः ।
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ॥ ११ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ९, १० विराट्त्रिष्टुप्; २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ६-८ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४-१० धैवतः; २, ३ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम् ।
यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥ १ ॥
प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन्यदा महः संवरणाद् व्यस्थात् ।
आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति ॥ २ ॥
उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः ।
अच्छा द्यामरुषो धूम एति सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान् ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि यस्य ते पृथिव्यां पाजो अश्रेत्तृषु यदन्ना समवृक्त जम्भैः।
सेनेव सृष्टा प्रसितिष्ट एति यवं न दस्म जुह्वा विवेक्षि॥ ४॥
तमिद्दोषा तमुषसि यविष्ठमग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः।
निशिशानो अतिथिमस्य योनौ दीदायं शोचिराहुतस्य वृष्णः॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

सुसंदृक्ते स्वनीक प्रतीकं वि यद्रुक्मो न रोचस उपाके।
दिवो न ते तन्यतुरेति शुष्मश्चित्रो न सूरः प्रति चक्षि भानुम्॥ ६॥
यथा वः स्वाहाग्नये दाशेम परीळाभिर्घृतवद्भिश्च हव्यैः।
तेभिर्नो अग्ने अमितैर्महोभिः शतं पूर्भिरायसीभिर्नि पाहि॥ ७॥
या वां ते सन्ति दाशुषे अधृष्टा गिरो वा याभिर्नृवतीरुरुष्याः।
ताभिर्नः सूनो सहसो नि पाहि स्मत्सूरीञ्जरितॄञ्जातवेदः॥ ८॥
निर्यत्पूतेव स्वधितिः शुचिर्गात्स्वया कृपा तन्वा३ रोचमानः।
आ यो मात्रोरुशन्यो जनिष्ट देवयज्याय सुक्रतुः पावकः॥ ९॥
एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ १०॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ४, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ८, ९ पङ्क्तिः; १० विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ४, ६-९ पञ्चमः; २, ५, १० धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

प्र वः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम्।
यो दैव्यानि मानुषा जनूंष्यन्तर्विश्वानि विद्मना जिगाति॥ १॥
स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिदस्तु यतो यविष्ठो अजनिष्ट मातुः।
सं यो वना युवते शुचिर्दन्भूरि चिदन्ना समिदत्ति सद्यः॥ २॥
अस्य देवस्य संसद्यनीके यं मर्तासः श्येतं जगृभ्रे।
नि यो गृभं पौरुषेयीमुवोच दुरोकमग्निरायवे शुशोच॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि।
स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम॥ ४॥
आ यो योनिं देवकृतं ससाद क्रत्वा ह्यग्निरमृताँ अतारीत्।
तमोषधीश्च वनिनश्च गर्भं भूमिश्च विश्वधायसं बिभर्ति॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

ईशे ह्यग्निरमृतस्य भूरेरीशे रायः सुवीर्यस्य दातोः।
मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः॥ ६॥
परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम।
न शेषो अग्ने अन्यजातमस्त्यचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः॥ ७॥
नहि ग्रभायारणः सुशेवोऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ।
अधा चिदोकः पुनरित्स एत्या नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः॥ ८॥
त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात्।
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री॥ ९॥
एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं वतेम।
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ १०॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—वैश्वानरः॥ छन्दः—१, ४ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३, ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; ६ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-४, ८, ९ धैवतः; ५-७ पञ्चमः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

प्राग्नये तवसे भरध्वं गिरं दिवो अरतये पृथिव्याः।
यो विश्वेषाममृतानामुपस्थे वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः॥ १॥
पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम्।
स मानुषीरभि विशो वि भाति वैश्वानरो वावृधानो वरेण॥ २॥
त्वद्भिया विश आयन्नसिक्नीरसमना जहतीर्भोजनानि।
वैश्वानर पूरवे शोशुचानः पुरो यदग्ने दरयन्नदीदेः॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तवं त्रिधातु पृथिवी उत द्यौर्वैश्वानर व्रतमग्ने सचन्त ।
त्वं भासा रोदसी आ ततन्थाजस्त्रेण शोचिषा शोशुचानः ॥ ४ ॥
त्वामग्ने हरितो वावशाना गिरः सचन्ते धुनयो घृताचीः ।
पतिं कृष्टीनां रथ्यं रयीणां वैश्वानरमुषसां केतुमह्नाम् ॥ ५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

त्वे असुर्यं वसवो न्यृण्वन्क्रतुं हि तै मित्रमहो जुषन्त ।
त्वं दस्यूँरोकसो अग्न आज उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय ॥ ६ ॥
स जायमानः परमे व्योमन्वायुर्न पाथः परि पासि सद्यः ।
त्वं भुवना जनयन्नभि क्रन्नपत्याय जातवेदो दशस्यन् ॥ ७ ॥
तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व वैश्वानर द्युमतीं जातवेदः ।
यया राधः पिन्वसि विश्ववार पृथु श्रवो दाशुषे मर्त्याय ॥ ८ ॥
तं नो अग्ने मघवद्भ्यः पुरुक्षुं रयिं नि वाजं श्रुत्यं युवस्व ।
वैश्वानर महि नः शर्म यच्छ रुद्रेभिरग्ने वसुभिः सजोषाः ॥ ९ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; २ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४-६ धैवतः; २, ३, ७ पञ्चमः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्तिं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य ।
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्मि ॥ १ ॥
कविं केतुं धासिं भानुमद्भिर्हिन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः ।
पुरन्दरस्य गीर्भिरा विवासेऽग्नेर्व्रतानि पूर्व्या महानि ॥ २ ॥
न्यक्रतून्प्रथिनो मृध्रवाचः पणींरश्रद्धाँ अवृधाँ अयज्ञान् ।
प्रप्र तान्दस्यूँरग्निर्विवाय पूर्वश्चकारापराँ अयज्यून् ॥ ३ ॥
यो अपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचीश्चकार नृतमः शचीभिः ।
तमीशानं वस्वो अग्निं गृणीषेऽनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

यो देह्यो३ अनमयद्वधस्त्रैर्यो अर्यपत्नीरुषसश्चकार ।
स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निर्विशश्चक्रे बलिहृतः सहोभिः ॥ ५ ॥
यस्य शर्मन्नुप विश्वे जनास एवैस्तस्थुः सुमतिं भिक्षमाणाः ।
वैश्वानरो वरमा रोदस्योराग्निः ससाद पित्रोरुपस्थम् ॥ ६ ॥
आ देवो ददे बुध्न्या३ वसूनि वैश्वानर उदिता सूर्यस्य ।
आ समुद्रादवरादा परस्मादाग्निर्ददे दिव आ पृथिव्याः ॥ ७ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ४-६ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३-६ धैवतः; २, ७ पञ्चमः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

प्र वो देवं चित्सहसानमग्निमश्वं न वाजिनं हिषे नमोभिः ।
भवा नो दूतो अध्वरस्य विद्वान्त्मना देवेषु विविदे मितद्रुः ॥ १ ॥
आ यात्यग्ने पथ्या३ अनु स्वा मन्द्रो देवानां सख्यं जुषाणः ।
आ सानु शुष्मैर्नदयन्पृथिव्या जम्भेभिर्विश्वमुशधग्वनानि ॥ २ ॥
प्राचीनो यज्ञः सुधितं हि बर्हिः प्रीणीते अग्निरीळितो न होता ।
आ मातरा विश्ववारे हुवानो यतो यविष्ठ जज्ञिषे सुशेवः ॥ ३ ॥
सद्यो अध्वरे रथिरं जनन्त मानुषासो विचेतसो य एषाम् ।
विशामधायि विश्पतिर्दुरोणे३ऽग्निर्मन्द्रो मधुवचा ऋतावा ॥ ४ ॥
असादि वृतो वह्निराजगन्वान्नग्निर्ब्रह्मा नृषदने विधर्ता ।
द्यौश्च यं पृथिवी वावृधाते आ यं होता यजति विश्ववारम् ॥ ५ ॥
एते द्युम्नेभिर्विश्वमातिरन्त मन्त्रं ये वारं नर्या अतक्षन् ।
प्र ये विशस्तिरन्त श्रोषमाणा आ ये मे अस्य दीधयन्नृतस्य ॥ ६ ॥
नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।
इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ७ स्वराट्पङ्क्तिः; २-४, ६ त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ७ पञ्चमः; २-६ धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
नरो हव्येभिरीळते सबाध आग्निरग्र उषसामशोचि ॥ १ ॥
अयमु ष्य सुमहाँ अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यह्वो अग्निः ।
वि भा अकः ससृजानः पृथिव्यां कृष्णप्रविरोषधीभिर्ववक्षे ॥ २ ॥
कया नो अग्ने वि वसः सुवृक्तिं कामु स्वधामृणवः शस्यमानः ।
कदा भवेम पतयः सुदत्र रायो वन्तारो दुष्टरस्य साधोः ॥ ३ ॥
प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत्सूर्यो न रोचते बृहद्भाः ।
अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ द्युतानो दैव्यो अतिथिः शुशोच ॥ ४ ॥
असन्नित्त्वे आहवनानि भूरि भुवो विश्वेभिः सुमना अनीकैः ।
स्तुतश्चिदग्ने शृण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात ॥ ५ ॥
इदं वचः शतसाः संसहस्रमुदग्नये जनिषीष्ट द्विबर्हाः ।
शं यत्स्तोतृभ्य आपये भवाति द्युमदमीवचातनं रक्षोहा ॥ ६ ॥
नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।
इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनड्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ४, ५ धैवतः; २, ३, ६ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

अबोधि जार उषसामुपस्थाद्धोता मन्द्रः कवितमः पावकः ।
दधाति केतुमुभयस्य जन्तोर्हव्या देवेषु द्रविणं सुकृत्सु ॥ १ ॥
स सुक्रतुर्यो वि दुरः पणीनां पुनानो अर्कं पुरुभोजसं नः ।
होता मन्द्रो विशां दमूनास्तिरस्तमो ददृशे राम्याणाम् ॥ २ ॥
अमूरः कविरदितिर्विवस्वान्त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः ।
चित्रभानुरुषसां भात्यग्रेऽपां गर्भः प्रस्वा आ विवेश ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईळेन्यो वो मनुषो युगेषु समनगा अशुचज्जातवेदाः।
सुसंदृशा भानुना यो विभाति प्रति गावः समिधानं बुधन्त ॥ ४ ॥
अग्ने याहि दूत्यं१ मा रिषण्यो देवाँ अच्छा ब्रह्मकृता गणेन।
सरस्वतीं मरुतो अश्विनापो यक्षि देवान्रत्नधेयाय विश्वान् ॥ ५ ॥
त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हुन्यक्षि राये पुरन्धिम्।
पुरुणीथा जातवेदो जरस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥
अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

उषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद्विद्युतद्दीद्यच्छोशुचानः।
वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः ॥ १ ॥
स्व१र्ण वस्तोरुषसामरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म।
अग्निर्जन्मानि देव आ वि विद्वान्द्रवद् दूतो देवयावा वनिष्ठः ॥ २ ॥
अच्छा गिरो मतयो देवयन्तीरग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षमाणाः।
सुसन्दृशं सुप्रतीकं स्वञ्चं हव्यवाहमरतिं मानुषाणाम् ॥ ३ ॥
इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः सजोषा रुद्रं रुद्रेभिरा वहा बृहन्तम्।
आदित्येभिरदितिं विश्वजन्यां बृहस्पतिमृक्वभिर्विश्ववारम् ॥ ४ ॥
मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठमग्निं विश ईळते अध्वरेषु।
स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणामतन्द्रो दूतो यजथाय देवान् ॥ ५ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ४ भुरिक्पङ्क्तिः;
३ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४ पञ्चमः;
३, ५ धैवतः ॥
अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता मादयन्ते।
आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैर्न्यग्ने होता प्रथमः सदेह ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सदमिन्मानुषासः।
यस्य देवैरासदो बर्हिरग्नेऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति॥ २॥
त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुर्वसूनि त्वे अन्तर्दाशुषे मर्त्याय।
मनुष्वदग्न इह यक्षि देवान्भवा नो दूतो अभिशस्तिपावा॥ ३॥
अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्याग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य।
क्रतुं ह्यस्य वसवो जुषन्ताथा देवा दधिरे हव्यवाहम्॥ ४॥
आग्ने वह हविरद्याय देवानिन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम्।
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २ धैवतः; ३ पञ्चमः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे।
चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम्॥ १॥
स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वानग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः।
स नो रक्षिषद् दुरितादवद्यादस्मान्गृणत उत नो मघोनः॥ २॥
त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः।
त्वे वसु सुषणानानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ३॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—वैश्वानरः॥ छन्दः—१, २ स्वराट्पङ्क्तिः; ३ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

प्राग्नये विश्वशुचे धियन्धेऽसुरघ्ने मन्म धीतिं भरध्वम्।
भरे हविर्न बर्हिषि प्रीणानो वैश्वानराय यतये मतीनाम्॥ १॥
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान आ रोदसी अपृणा जायमानः।
त्वं देवाँ अभिशस्तेरमुञ्चो वैश्वानर जातवेदो महित्वा॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातो यदग्ने भुवना व्यख्यः पशून्न गोपा इर्यः परिज्मा।
वैश्वानर ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २, ३ धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

समिधा जातवेदसे देवाय देवहूतिभिः ।
हविर्भिः शुक्रशोचिषे नमस्विनो वयं दाशेमाग्नये ॥ १ ॥
वयं ते अग्ने समिधा विधेम वयं दाशेम सुष्टुती यजत्र।
वयं घृतेनाध्वरस्य होतर्वयं देव हविषा भद्रशोचे ॥ २ ॥
आ नो देवेभिरुप देवहूतिमग्ने याहि वषट्कृतिं जुषाणः।
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ७, १०, १२, १४ विराड्गायत्री; २, ४-६, ९, १३ गायत्री; ८ निचृद्गायत्री; ११, १५ आर्च्युष्णिक् ॥ स्वरः—१-१०, १२-१४ षड्जः; ११, १५ ऋषभः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

उपसद्याय मीळ्हुष आस्ये जुहुता हविः। यो नो नेदिष्ठमाप्यम् ॥ १ ॥
यः पञ्च चर्षणीरभि निषसाद दमेदमे। कविर्गृहपतिर्युवा ॥ २ ॥
स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु विश्वतः। उतास्मान्पात्वंहसः ॥ ३ ॥
नवं नु स्तोममग्नये दिवः श्येनाय जीजनम्। वस्वः कुविद्वनाति नः ॥ ४ ॥
स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे रयिर्वीरवतो यथा। अग्ने यज्ञस्य शोचतः ॥ ५ ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

सेमां वेतु वषट्कृतिमग्निर्जुषत नो गिरः। यजिष्ठो हव्यवाहनः ॥ ६ ॥
नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं देव धीमहि। सुवीरमग्न आहुत ॥ ७ ॥
क्षप उस्रश्च दीदिहि स्वग्नयस्त्वया वयम्। सुवीरस्त्वमस्मयुः ॥ ८ ॥
उप त्वा सातये नरो विप्रासो यन्ति धीतिभिः। उपाक्षरा सहस्रिणी ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्नी रक्षांसि सेधति शुक्रशोचिरमर्त्यः। शुचिः पावक ईड्यः॥ १०॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

स नो राधांस्या भरेशानः सहसो यहो। भगश्च दातु वार्यम्॥ ११॥
त्वमग्ने वीरवद्यशो देवश्च सविता भगः। दितिश्च दाति वार्यम्॥ १२॥
अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः। तपिष्ठैरजरो दह॥ १३॥
अधा महीन आयस्यनाधृष्टो नृपीतये। पूर्भवा शतभुजिः॥ १४॥
त्वं नः पाह्यंहसो दोषावस्तरघायतः। दिवा नक्तमदाभ्य॥ १५॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ स्वराडनुष्टुप्; २ भुरिग्बृहती; ३ निचृद्बृहती; ४, ९, १० बृहती; ५ निचृदनुष्टुप्; ६, ८, १२ निचृत्पङ्क्तिः; ७ अनुष्टुप्; ११ भुरिगनुष्टुप्॥ स्वरः—१, ५, ७, ११ गान्धारः; २-४, ९, १० मध्यमः; ६, ८, १२ पञ्चमः॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे ।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥ १॥
स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत्स्वाहुतः ।
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम् ॥ २॥
उदस्य शोचिरस्थादाजुह्वानस्य मीळ्हुषः ।
उद् धूमासो अरुषासो दिविस्पृशः समग्निमिन्धते नरः ॥ ३॥
तं त्वा दूतं कृण्महे यशस्तमं देवाँ आ वीतये वह ।
विश्वा सूनो सहसो मर्तभोजना रास्व तद्यत्त्वेमहे ॥ ४॥
त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे ।
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम् ॥ ५॥
कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो त्वं हि रत्नधा असि ।
आ न ऋते शिशीहि विश्वमृत्विजं सुशंसो यश्च दक्षते ॥ ६॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान्दयन्त गोनाम् ॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

येषामिळा घृतहस्ता दुरोण आँ अपि प्राता निषीदति ।
ताँस्त्रायस्व सहस्य द्रुहो निदो यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत् ॥ ८ ॥
स मन्द्रया च जिह्वया वह्निरासा विदुष्टरः ।
अग्ने रयिं मघवद्भ्यो न आ वह हव्यदातिं च सूदय ॥ ९ ॥
ये राधांसि ददत्यश्व्या मघा कामेन श्रवसो महः ।
ताँ अंहसः पिपृहि पर्तृभिष्ट्वं शतं पूर्भिर्यविष्ठ्य ॥ १० ॥
देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्यासिचम् ।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते ॥ ११ ॥
तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत ।
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे ॥ १२ ॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ७ आर्च्युष्णिक्; २ साम्नीत्रिष्टुप्; ५ साम्नीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६, ७ ऋषभः; २ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अग्ने भव सुषमिधा समिद्ध उत बर्हिरुर्विया वि स्तृणीताम् ॥ १ ॥
उत द्वार उशतीर्वि श्रयन्तामुत देवाँ उशत आ वहेह ॥ २ ॥
अग्ने वीहि हविषा यक्षि देवान्त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ॥ ३ ॥
स्वध्वरा करति जातवेदा यक्षद्देवाँ अमृतान्पिप्रयच्च ॥ ४ ॥
वंस्व विश्वा वार्याणि प्रचेतः सत्या भवन्त्वाशिषो नो अद्य ॥ ५ ॥
त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं देवासो अग्न ऊर्ज आ नपातम् ॥ ६ ॥
ते ते देवाय दाशतः स्याम महो नो रत्ना वि दध इयानः ॥ ७ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः [१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-२१ इन्द्रः; २२-२५ सुदासः पैजवनस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, १७, २१ पङ्क्तिः; २, ४, १२, २२ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ९, ११, १६, १९, २० निचृत्त्रिष्टुप्; ६, १०, १५, १८, २३-२५ त्रिष्टुप्; ८, १३, १४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ८, १२-१४, १७, २१, २२ पञ्चमः; ३, ५-७, ९-११, १५, १६, १८-२०, २३-२५ धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

त्वे ह यत्पितरश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन्।
त्वे गावः सुदुघास्त्वे ह्यश्वास्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः ॥ १ ॥
राजेव हि जनिभिः क्षेष्येवाव द्युभिरभि विदुष्कविः सन्।
पिशा गिरो मघवन्गोभिरश्वैस्त्वायतः शिशीहि राये अस्मान् ॥ २ ॥
इमा उ त्वा पस्पृधानासो अत्र मन्द्रा गिरो देवयन्तीरुप स्थुः।
अर्वाचीं ते पथ्या राय एतु स्याम ते सुमताविन्द्र शर्मन् ॥ ३ ॥
धेनुं न त्वा सूयवसे दुदुक्षन्नुप ब्रह्माणि ससृजे वसिष्ठः।
त्वामिन्मे गोपतिं विश्व आहा न इन्द्रः सुमतिं गन्त्वच्छ ॥ ४ ॥
अर्णांसि चित्पप्रथाना सुदास इन्द्रो गाधान्यकृणोत्सुपारा।
शर्धन्तं शिम्युमुचथस्य नव्यः शापं सिन्धूनामकृणोदशस्तीः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

पुरोळा इत्तुर्वशो यक्षुरासीद्राये मत्स्यासो निशिता अपीव।
श्रुष्टिं चक्रुर्भृगवो द्रुह्यवश्च सखा सखायमतरद्विषूचोः ॥ ६ ॥
आ पक्थासो भलानसो भनन्तालिनासो विषाणिनः शिवासः।
आ योऽनयत्सधमा आर्यस्य गव्या तृत्सुभ्यो अजगन्युधा नॄन् ॥ ७ ॥
दुराध्योऽ३ अदितिं स्तेवयन्तोऽ चेतसो वि जगृभ्रे परुष्णीम् ।
महाविव्यक्पृथिवीं पत्यमानः पशुष्कविरशयच्चायमानः ॥ ८ ॥
ईयुरर्थं न न्यर्थं परुष्णीमाशुश्चनेदभिपित्वं जगाम ।
सुदास इन्द्रः सुतुकाँ अमित्रानरन्धयन्मानुषे वध्रिवाचः ॥ ९ ॥
ईयुर्गावो न यवसादगोपा यथाकृतमभि मित्रं चितासः ।
पृश्निगावः पृश्निनिप्रेषितासः श्रुष्टिं चक्रुर्नियुतो रन्तयश्च ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

एकं च यो विंशतिं च श्रवस्या वैकर्णयोर्जनाञ्राजा न्यस्तः।
दस्मो न सद्मन्नि शिशाति बर्हिः शूरः सर्गमकृणोदिन्द्र एषाम् ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधं श्रुतं कवषं वृद्धमप्स्वनुं द्रुह्युं नि वृणग्वज्रबाहुः।
वृणाना अत्र सख्याय सख्यं त्वायन्तो ये अमदन्ननु त्वा॥ १२॥
वि सद्यो विश्वा दृंहितान्येषामिन्द्रः पुरः सहसा सप्त दर्दः।
व्यानवस्य तृत्सवे गयं भागजेषं पूरुं विदथे मृध्रवाचम्॥ १३॥
नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च षष्टिः शता सुषुपुः षट् सहस्रा।
षष्टिर्वीरासो अधि षड् दुवोयु विश्वेदिन्द्रस्य वीर्या कृतानि॥ १४॥
इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अधवन्त नीचीः।
दुर्मित्रासः प्रकलविन्मिमाना जहुर्विश्वानि भोजना सुदासे॥ १५॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

अर्धं वीरस्य शृतपामनिन्द्रं परा शर्धन्तं नुनुदे अभि क्षाम्।
इन्द्रो मन्युं मन्युम्यो मिमाय भेजे पथो वर्तनिं पत्यमानः॥ १६॥
आध्रेण चित्तद्वेकं चकार सिंह्यं चित्पेत्वेना जघान।
अव स्रक्तीर्वेश्यावृश्चदिन्द्रः प्रायच्छद्विश्वा भोजना सुदासे॥ १७॥
शश्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टे भेदस्य चिच्छर्धतो विन्द रन्धिम्।
मर्ताँ एनः स्तुवतो यः कृणोति तिग्मं तस्मिन्नि जहि वज्रमिन्द्र॥ १८॥
आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च प्रात्र भेदं सर्वताता मुषायत्।
अजासश्च शिग्रवो यक्षवश्च बलिं शीर्षाणि जभ्रुरश्व्यानि॥ १९॥
न तं इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वीरुषसो न नूत्नाः।
देवकं चिन्मान्यमानं जघन्थाव त्मना बृहतः शम्बरं भेत्॥ २०॥

अथाष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

प्र ये गृहादममदुस्त्वाया पराशरः शतयातुर्वसिष्ठः।
न ते भोजस्य सख्यं मृषन्ताधा सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छान्॥ २१॥
द्वे नप्तुर्देववतः शते गोर्द्वा रथा वधूमन्ता सुदासः।
अहन्नग्ने पैजवनस्य दानं होतेव सद्म पर्येमि रेभन्॥ २२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चत्वारो मा पैजवनस्य दानाः स्महिष्टयः कृशनिनो निरेके।
ऋज्रासो मा पृथिविष्ठाः सुदासस्तोकं तोकाय श्रवसे वहन्ति॥ २३॥
यस्य श्रवो रोदसी अन्तरुर्वी शीर्ष्णेशीर्ष्णे विबभाजा विभक्ता।
सप्तेदिन्द्रं न स्रवतो गृणन्ति नि युध्यामधिमशिशादभीके॥ २४॥
इमं नरो मरुतः सश्चतानु दिवोदासं न पितरं सुदासः।
अविष्टना पैजवनस्य केतं दूणाशं क्षत्रमजरं दुवोयु॥ २५॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५ त्रिष्टुप्; २ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ७, ९, १० विराट्त्रिष्टुप्; ८, ११ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ३, ५-७, ९, १० धैवतः; २, ४, ८, ११ पञ्चमः॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः।
यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्विंतराय वेदः॥ १॥
त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्ये।
दासं यच्छुष्णं कुयवं न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन्॥ २॥
त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरूतिभिः सुदासम्।
प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम्॥ ३॥
त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्व हंसि।
त्वं नि दस्युं चुमुरिं धुनिं चास्वापयो दभीतये सुहन्तु॥ ४॥
तव च्यौत्नानि वज्रहस्त तानि नव यत्पुरो नवतिं च सद्यः।
निवेशने शततमाविवेषीरहञ्च वृत्रं नमुचिमुताहन्॥ ५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे।
वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक वाजम्॥ ६॥
मा ते अस्यां सहसावन्परिष्टावघाय भूम हरिवः परादै।
त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरूथैस्तव प्रियासः सूरिषु स्याम॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः।
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशीह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्॥ ८॥
सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशास उक्था।
ये ते हवेभिर्वि पणीँरदाशन्नस्मान्वृणीष्व युज्याय तस्मै॥ ९॥
एते स्तोमा नरां नृतम तुभ्यमस्मद्र्यञ्चो ददतो मघानि।
तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम्॥ १०॥
नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजूतस्तन्वा वावृधस्व।
उप नो वाजान्मिमीह्युप स्तीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ११॥

इति पञ्चमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमाष्टके तृतीयोऽध्यायः

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ स्वराट्पङ्क्तिः; २, ४; १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५ विराट् त्रिष्टुप्; ६, ८, ९ त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, ७ पञ्चमः; २-६, ८-१० धैवतः॥
अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधावाञ्चक्रिरपो नर्यो यत्करिष्यन्।
जग्मिर्युवा नृषदनमवोभिस्त्राता न इन्द्र एनसो महश्चित्॥ १॥
हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः प्रावीन्नु वीरो जरितारमूती।
कर्ता सुदासे अह वा उ लोकं दाता वसु मुहुरा दाशुषे भूत्॥ २॥
युध्मो अनर्वा खजकृत्समद्वा शूरः सत्राषाड् जनुषेमषाळ्हः।
व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान॥ ३॥
उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा पप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः।
नि वज्रमिन्द्रो हरिवान्मिमिक्षन्त्समन्धसा मदेषु वा उवोच॥ ४॥
वृषा जजान वृषणं रणाय तमु चिन्नारी नर्यं ससूव।
प्र यः सेनानीरध नृभ्यो अस्तीनः सत्वा गवेषणः स धृष्णुः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

नू चित्स भ्रेषते जनो न रेषन्मनो यो अस्य घोरमाविवासात्।
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत्स राय ऋतपा ऋतेजाः ॥ ६ ॥
यदिन्द्र पूर्वो अपराय शिक्षन्नयज्यायान्कनीयसो देष्णम्।
अमृत इत्पर्यासीत दूरमा चित्र चित्रं भरा रयिं नः ॥ ७ ॥
यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाशदसन्निरे के अद्रिवः सखा ते।
वयं ते अस्यां सुमतौ चनिष्ठाः स्याम वरूथे अघ्नतो नृपीतौ ॥ ८ ॥
एष स्तोमो अचिक्रदद् वृषा त उत स्तामुर्मघवन्नक्रपिष्ट।
रायस्कामो जरितारं त आगन्त्वमङ्ग शक्र वस्व आ शको नः ॥ ९ ॥
स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्तमना च ये मघवानो जुनन्ति।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ६, ८, ९ विराट्त्रिष्टुप्; २, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; ४, ५ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ६, ८-१० धैवतः; ३-५, ७ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

असाविव देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा नः स्तोममन्धसो मदेषु ॥ १ ॥
प्र यन्ति यज्ञं विपयन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुध्रवाचः।
न्यु भ्रियन्ते यशसो गृभादा दूरउपब्दो वृषणो नृषाचः ॥ २ ॥
त्वमिन्द्र स्त्रवितवा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः।
त्वद्वावक्रे रथ्योऽ३ न धेना रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि भीषा ॥ ३ ॥
भीमो विवेषायुधेभिरेषामपांसि विश्वा नर्याणि विद्वान्।
इन्द्रः पुरो जहैषाणो वि दूधोद्वि वज्रहस्तो महिना जघान ॥ ४ ॥
न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वन्दना शविष्ठ वेद्याभिः।
स शर्धदर्यो विषुणस्य जन्तोर्मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

अभि क्रत्वेन्द्र भूरध्र ज्मन्न तें विव्यङ्महिमानं रजांसि ।
स्वेना हि वृत्रं शवसा जघन्थ न शत्रुरन्तं विविदद्युधा तें ॥ ६ ॥
देवाश्चित्ते असुर्याय पूर्वेऽनु क्षत्राय ममिरे सहांसि ।
इन्द्रो मघानि दयते विषह्येन्द्रं वाजस्य जोहुवन्त सातौ ॥ ७ ॥
कीरिश्चिद्धि त्वामवसे जुहावेशानमिन्द्र सौभगस्य भूरेः ।
अवो बभूथ शतमूते अस्मे अभिक्षत्तुस्त्वावतो वरूता ॥ ८ ॥
सखायस्त इन्द्र विश्वहा स्याम नमोवृधासो महिना तरुत्र ।
वन्वन्तु स्मा तेऽवसा समीके३ऽभीतिमर्यो वनुषां शवांसि ॥ ९ ॥
स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्तमना च ये मघवानो जुनन्ति ।
वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ भुरिगुष्णिक्; २, ७ निचृदनुष्टुप्; ३ भुरिगनुष्टुप्; ४ आर्चीपङ्क्तिः; ५ अनुष्टुप्; ६, ८ विराडनुष्टुप्; ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २, ३, ५-८ गान्धारः; ४ पञ्चमः; ९ धैवतः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः ।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥ १ ॥
यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि ।
स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु ॥ २ ॥
बोधा सु मे मघवन्वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् ।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥ ३ ॥
श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेर्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम् ।
कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा ॥ ४ ॥
न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान् ।
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित् ।
मारे अस्मन्मघवञ्ज्योक्कः ॥ ६ ॥
तुभ्येदिमा सवना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि ।
त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ॥ ७ ॥
नू चिन्नु ते मन्यमानस्य दस्मोदंशनुवन्ति महिमानमुग्र ।
न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ॥ ८ ॥
ये च पूर्व ऋषयो ये च नूत्ना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः ।
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ९ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६ पञ्चमः; २, ३, ५ धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ ।
आ यो विश्वानि शवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥ १ ॥
अयामि घोष इन्द्र देवजामिरिज्यन्त यच्छुरुधो विवाचि ।
नहि स्वमायुश्चिकिते जनेषु तानीदंहांस्यति पर्ष्यस्मान् ॥ २ ॥
युजे रथं गवेषणं हरिभ्यामुप ब्रह्माणि जुजुषाणमस्थुः ।
वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वेन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ॥ ३ ॥
आपश्चित्पिप्युः स्तर्यो३ न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्त इन्द्र ।
याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान् ॥ ४ ॥
ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे ।
एको देवत्रा दयसे हि मर्तानस्मिञ्छूर सवने मादयस्व ॥ ५ ॥
एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
स नः स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ६ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५ धैवतः; ६ पञ्चमः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि।
असो यथा नोऽविता वृधे च ददो वसूनि ममदश्च सोमैः ॥ १ ॥
गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हाः सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि।
विसृष्टधेना भरते सुवृक्तिरियमिन्द्रं जोहुवती मनीषा ॥ २ ॥
आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि।
वहन्तु त्वा हरयो मद्र्यञ्चमाङ्गूषमच्छा तवसं मदाय ॥ ३ ॥
आ नो विश्वाभिरूतिभिः सजोषा ब्रह्मा जुषाणो हर्यश्व याहि।
वरीवृजत्स्थविरेभिः सुशिप्रास्मे दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्र ॥ ४ ॥
एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरीवात्यो न वाजयन्नधायि।
इन्द्रं त्वायमर्क ईट्टे वसूनां दिवीव द्यामधि नः श्रोमतं धाः ॥ ५ ॥
एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृत्पङ्क्तिः; २ विराट्पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४, ६ पञ्चमः; ३, ५ धैवतः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आ ते मह इन्द्रोत्युग्र समन्यवो यत्समरन्त सेनाः।
पतति दिद्युन्नर्यस्य बाह्वोर्मा ते मनो विष्वद्र्यङ्गवि चारीत् ॥ १ ॥
नि दुर्ग इन्द्र श्नथिह्यमित्रान्नभि ये नो मतीसो अमन्ति।
आरे तं शंसं कृणुहि निनित्सोरा नो भर संभरणं वसूनाम् ॥ २ ॥
शतं ते शिप्रिन्नूतयः सुदासे सहस्रं शंसा उत रातिरस्तु।
जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्यास्मे द्युम्नमधि रत्नं च धेहि ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे अस्मि त्वावतोऽवितुः शूर रातौ।
विश्वेदहानि तविषीव उग्रँ ओकः कृणुष्व हरिवो न मर्धीः ॥ ४ ॥
कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिन्द्रे सहो देवजूतमियानाः।
सत्रा कृधि सुहना शूर वृत्रा वयं तरुत्राः सनुयाम वाजम् ॥ ५ ॥
एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धि प्र ते महीं सुमतिं वेविदाम।
इषं पिन्व मघवद्भ्यः सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-४ त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

न सोम इन्द्रमसुतो ममाद नाब्रह्माणो मघवानं सुतासः।
तस्मा उक्थं जनये यज्जुजोषन्नृवन्नवीयः शृणवद्यथा नः ॥ १ ॥
उक्थउक्थे सोम इन्द्रं ममाद नीथेनीथे मघवानं सुतासः।
यदीं सबाधः पितरं न पुत्राः समानदक्षा अवसे हवन्ते ॥ २ ॥
चकार ता कृणवन्नूनमन्या यानि ब्रुवन्ति वेधसः सुतेषु।
जनीरिव पतिरेकः समानो नि मामृजे पुर इन्द्रः सु सर्वीः ॥ ३ ॥
एवा तमाहुरुत शृण्व इन्द्र एको विभक्ता तरणिर्मघानाम्।
मिथस्तुरः ऊतयो यस्य पूर्वीरस्मे भद्राणि सश्चत प्रियाणि ॥ ४ ॥
एवा वसिष्ठ इन्द्रमूतये नॄन्कृष्टीनां वृषभं सुते गृणाति।
सहस्त्रिण उप नो माहि वाजान्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः।
शूरो नृषाता शवसश्चकान आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥ १ ॥
य इन्द्र शुष्मो मघवन्ते अस्ति शिक्षा सखिभ्यः पुरुहूत नृभ्यः।
त्वं हि दृळ्हा मघवन्विचेता अपा वृधि परिवृतं न राधः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतश्चिदर्वाक् ॥ ३ ॥
नू चिन्न इन्द्रो मघवा सहूती दानो वाजं नि यंमते न ऊती।
अनूना यस्य दक्षिणा पीपाय वामं नृभ्यो अभिवीता सखिभ्यः ॥ ४ ॥
नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी न आ ते मनो ववृत्याम मघाय।
गोमदश्वावद्रथवद् व्यन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ५ धैवतः; ३, ४ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि विद्वानर्वाञ्चस्ते हरयः सन्तु युक्ताः।
विश्वे चिद्धि त्वा विहवन्त मर्ता अस्माकमिच्छृणुहि विश्वमिन्व ॥ १ ॥
हवं त इन्द्र महिमा व्यानड् ब्रह्म यत्पासि शवसिन्नृषीणाम्।
आ यद्वज्रं दधिषे हस्त उग्र घोरः सन्क्रत्वा जनिष्ठा अषाळहः ॥ २ ॥
तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान्त्सं यन्नृन्न रोदसी निनेथ ।
महे क्षत्राय शवसे हि जज्ञेऽतूतुजिं चित्तूतुजिरशिश्नत् ॥ ३ ॥
एभिर्नृभिरिन्द्राहभिर्दशस्य दुर्मित्रासो हि क्षितयः पवन्ते।
प्रति यच्चष्टे अनृतमनेना अव द्रुहा वरुणो मायी नः सात् ॥ ४ ॥
वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद्ददन्नः ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ स्वराट्पङ्क्तिः; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ पङ्क्तिः; ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २, ४, ५ धैवतः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे आ तु प्र याहि हरिवस्तदोकाः।
पिबा त्वस्य सुषुतस्य चारोर्ददो मघानि मघवन्नियानः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्म॑न्वीर॒ ब्रह्म॑कृतिं जुषा॒णो॑ऽर्वाची॒नो हरि॑भिर्याहि॒ तूय॑म्।
अ॒स्मिन्नू॒ षु सव॑ने मादय॒स्वोप॒ ब्रह्मा॑णि शृणव इ॒मा नः॑॥ २॥
का ते॑ अ॒स्त्यरं॑कृतिः सू॒क्तैः क॒दा नू॒नं ते॑ मघवन्दाशेम।
विश्वा॑ म॒तीरा त॑तने त्वा॒याधा॑ म इन्द्र शृणवो॒ हवे॒मा॥ ३॥
उ॒तो घा॒ ते पु॑रु॒ष्या॒३॒॑ इदा॑स॒न्येषां॒ पूर्वे॑षा॒मशृ॑णो॒र्ऋषी॑णाम्।
अधा॒हं त्वा॑ मघवञ्जोहवीमि॒ त्वं न॑ इन्द्रासि॒ प्रम॑तिः पि॒तेव॑॥ ४॥
वो॒चेमेदिन्द्रं॑ म॒घवा॑नमेनं म॒हो रा॒यो राध॑सो॒ यद्दद॑न्नः।
यो अर्च॑तो॒ ब्रह्म॑कृति॒मवि॑ष्ठो यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः॥ ५॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ स्वराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१, २ धैवतः; ३-५ पञ्चमः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

आ नो॑ देव॒ शव॑सा याहि शुष्मि॒न्भवा॑ वृ॒ध इ॑न्द्र रा॒यो अ॒स्य।
म॒हे नृ॒म्णाय॑ नृपते सुवज्र॒ महि॑ क्ष॒त्राय॒ पौंस्या॑य शूर॥ १॥
हव॑न्त उ त्वा॒ हव्यं॑ विवा॑चि त॒नूषु॒ शूराः॒ सूर्य॑स्य सा॒तौ।
त्वं विश्वे॑षु॒ सेन्यो॒ जने॑षु॒ त्वं वृ॒त्राणि॑ रन्धया सु॒हन्तु॑॥ २॥
अहा॒ यदि॑न्द्र सु॒दिना॑ व्यु॒च्छान्दधो॒ यत्के॒तुमु॑प॒मं स॒मत्सु॑।
न्य१॒॑ग्निः सी॑द॒दसु॑रो॒ न होता॑ हुवा॒नो अत्र॑ सु॒भगा॑य दे॒वान्॥ ३॥
व॒यं ते त॑ इन्द्र॒ ये च॑ देव॒ स्तव॑न्त शूर॒ दद॑तो म॒घानि॑।
यच्छा॑ सू॒रिभ्य॑ उप॒मं वरू॑थं स्वा॒भुवो॑ जर॒णाम॑श्नवन्त॥ ४॥
वो॒चेमेदिन्द्रं॑ म॒घवा॑नमेनं म॒हो रा॒यो राध॑सो॒ यद्दद॑न्नः।
यो अर्च॑तो॒ ब्रह्म॑कृति॒मवि॑ष्ठो यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः॥ ५॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ८ गायत्री; ३-५ आर्च्युष्णिक्; ६, ७, ९ निचृद्गायत्री; १०, ११ भुरिगनुष्टुप्; १२ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ६-९ षड्जः; ३-५ ऋषभः; १०-१२ गान्धारः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने ॥ १ ॥
शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः। चकृमा सत्यराधसे ॥ २ ॥
त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो। त्वं हिरण्ययुर्वसो ॥ ३ ॥
वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र णोनुमो वृषन्। विद्धी त्वस्य नो वसो ॥ ४ ॥
मा नो निदे च वक्तवेऽर्यो रन्धीरराव्णे। त्वे अपि क्रतुर्मम ॥ ५ ॥
त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन्। त्वया प्रति ब्रुवे युजा ॥ ६ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

महाँ उतासि यस्य तेऽनु स्वधावरी सहः। मम्नाते इन्द्र रोदसी ॥ ७ ॥
तं त्वा मरुत्वती परि भुवद्वाणी सयावरी। नक्षमाणा सह द्युभिः ॥ ८ ॥
ऊर्ध्वासस्त्वान्विन्दवो भुवन्दस्ममुप द्यवि। सं ते नमन्त कृष्टयः ॥ ९ ॥
प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम्।
विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः ॥ १० ॥
उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः।
तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः ॥ ११ ॥
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै ।
हर्यश्वाय बर्हया समापीन् ॥ १२ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-२५, २६², २७ वसिष्ठः; २६¹ वसिष्ठः शक्तिर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४, २४ विराड्बृहती; २, ९ पङ्क्तिः ३ साम्नीपङ्क्तिः; ५, १३, १५, १९, २३ निचृत्पङ्क्तिः; ६, ८, १२, १६, १८, २६ निचृद्बृहती; ७ विराट्पङ्क्तिः; १०, १४ भुरिगनुष्टुप्; ११, २७ बृहती; १७, २५ भुरिग्बृहती; २०, २२ स्वराडनुष्टुप्; २१ स्वराड्बृहती ॥
स्वरः—१, ४, ६, ८, ११, १२, १६-१८, २१, २४-२७ मध्यमः;
२, ३, ५, ७, ९, १३, १५, १९, २३ पञ्चमः;
१०, १४, २०, २२ गान्धारः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

मो षु त्वा वाघतश्चनारे अस्मन्नि रीरमन् ।
आराच्चित्सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते।
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः॥ २॥
रायस्कामो वज्रहस्तं सुदक्षिणं पुत्रो न पितरं हुवे॥ ३॥
इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ॥ ४॥
श्रवच्छुत्कर्ण ईयते वसूनां नू चिन्नो मर्धिषद्गिरः।
सद्यश्चिद्यः सहस्राणि शता ददन्नकिर्दित्सन्तमा मिनत्॥ ५॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

स वीरो अप्रतिष्कुत इन्द्रेण शूशुवे नृभिः ।
यस्ते गभीरा सवनानि वृत्रहन्त्सुनोत्या च धावति॥ ६॥
भवा वरूथं मघवन्मघोनां यत्समजासि शर्धतः।
वि त्वाहतस्य वेदनं भजेमह्या दूणाशो भरा गयम्॥ ७॥
सुनोता सोमपावने सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित्पृणन्नित्पृणते मयः॥ ८॥
मा स्तेधत सोमिनो दक्षता महे कृणुध्वं राय आतुजे।
तरणिरिज्जयति क्षेति पुष्यति न देवासः कवत्नवे॥ ९॥
नकिः सुदासो रथं पर्यास न रीरमत् ।
इन्द्रो यस्याविता यस्य मरुतो गमत्स गोमति व्रजे॥ १०॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

गमद्वाजं वाजयन्निन्द्र मर्त्यो यस्य त्वमविता भुवः।
अस्माकं बोध्यविता रथानामस्माकं शूर नृणाम् ॥ ११॥
उदिन्वस्य रिच्यतेऽशो धनं न जिग्युषः ।
य इन्द्रो हरिवान्न दभन्ति तं रिपो दक्षं दधाति सोमिनि॥ १२॥
मन्त्रमखर्वं सुधितं सुपेशसं दधात यज्ञियेष्वा ।
पूर्वीश्चन प्रसितयस्तरन्ति तं य इन्द्रे कर्मणा भुवत्॥ १३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्तमिन्द्र त्वावसुमा मर्त्यो दधर्षति ।
श्रद्धा इत्ते मघवन्पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥ १४ ॥
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु ।
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता ॥ १५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि नकिष्ट्वा गोषु वृण्वते ॥ १६ ॥
त्वं विश्वस्य धनदा असि श्रुतो य ईं भवन्त्याजयः ।
तवायं विश्वः पुरुहूत पार्थिवोऽवस्युर्नाम भिक्षते ॥ १७ ॥
यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दिधिषेय रदावसो न पापत्वाय रासीय ॥ १८ ॥
शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे ।
नहि त्वदन्यन्मघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन ॥ १९ ॥
तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा ।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रवम् ॥ २० ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु न स्रेधन्तं रयिर्नशत् ।
सुशक्तिरिन्मघवन्तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि ॥ २१ ॥
अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाइव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥ २२ ॥
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥ २३ ॥
अभी षतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः ।
पुरूवसुर्हि मघवन्त्सनादसि भरेभरे च हव्यः ॥ २४ ॥
परा णुदस्व मघवन्नमित्रान्त्सुवेदा नो वसू कृधि ।
अस्माकं बोध्यविता महाधने भवा वृधः सखीनाम् ॥ २५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ २६ ॥
मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो३ माशिवासो अव क्रमुः ।
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥ २७ ॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—संस्तवो वसिष्ठस्य सपुत्रस्येन्द्रेण वा संवादः; १-९ वसिष्ठपुत्राः; १०-१४ वसिष्ठः ॥ देवता—त एव ॥ छन्दः—१, २, ६, १२, १३ त्रिष्टुप्; ३-५, ७, ९, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; ८, ११ विराट्त्रिष्टुप्; १० भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९, ११-१४ धैवतः; १० पञ्चमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

श्वित्यञ्चो मा दक्षिणतस्कपर्दा धियंजिन्वासो अभि हि प्रमन्दुः ।
उत्तिष्ठन्वोचे परि बर्हिषो नृन्न मे दूरादवितवे वसिष्ठाः ॥ १ ॥
दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन तिरो वैशन्तमति पान्तमुग्रम् ।
पाशद्युम्नस्य वायतस्य सोमात्सुतादिन्द्रोऽवृणीता वसिष्ठान् ॥ २ ॥
एवेन्नु कं सिन्धुमेभिस्ततारेवेन्नु कं भेदमेभिर्जघान ।
एवेन्नु कं दाशराज्ञे सुदासं प्रावदिन्द्रो ब्रह्मणा वो वसिष्ठाः ॥ ३ ॥
जुष्टी नरो ब्रह्मणा वः पितॄणामक्षमव्ययं न किला रिषाथ ।
यच्छक्वरीषु बृहता रवेणेन्द्रे शुष्ममदधाता वसिष्ठाः ॥ ४ ॥
उद्न्याविवेत्तृष्णजो नाथितासोऽदीधयुर्दाशराज्ञे वृतासः ।
वसिष्ठस्य स्तुवत इन्द्रो अश्रोदुरुं तृत्सुभ्यो अकृणोदु लोकम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

दण्डाइवेद्गोअजनास आसन्परिच्छिन्ना भरता अर्भकासः ।
अभवच्च पुरएता वसिष्ठ आदित्तृत्सूनां विशो अप्रथन्त ॥ ६ ॥
त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेतस्तिस्रः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः ।
त्रयो घर्मास उषसं सचन्ते सर्वाँ इत्ताँ अनु विदुर्वसिष्ठाः ॥ ७ ॥
सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां समुद्रस्येव महिमा गभीरः ।
वातस्येव प्रजवो नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त इन्निण्यं हृदयस्य प्रकेतैः सहस्रवल्शमभि सं चरन्ति ।
यमेन ततं परिधिं वयन्तोऽप्सरस उप सेदुर्वसिष्ठाः ॥ ९ ॥
विद्युतो ज्योतिः परि संजिहानं मित्रावरुणा यदपश्यतां त्वा ।
तत्ते जन्मोतैकं वसिष्ठागस्त्यो यत्त्वा विश आजभार ॥ १० ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

उतासि मैत्रावरुणो वसिष्ठोर्वश्या ब्रह्मन्मनसोऽधि जातः ।
द्रप्सं स्कन्नं ब्रह्मणा दैव्येन विश्वे देवाः पुष्करे त्वाददन्त ॥ ११ ॥
स प्रकेत उभयस्य प्रविद्वान्त्सहस्रदान उत वा सदानः ।
यमेन ततं परिधिं वयिष्यन्नप्सरसः परि जज्ञे वसिष्ठः ॥ १२ ॥
सत्रे ह जाताविषिता नमोभिः कुम्भे रेतः सिषिचतुः समानम् ।
ततो ह मान उदियाय मध्यात्ततो जातमृषिमाहुर्वसिष्ठम् ॥ १३ ॥
उक्थभृतं सामभृतं बिभर्ति ग्रावाणं बिभ्रत्प्र वदात्यग्रे ।
उपैनमाध्वं सुमनस्यमाना आ वो गच्छति प्रतृदो वसिष्ठः ॥ १४ ॥

तृतीयोऽनुवाकः [३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-१५, १८-२५ विश्वे देवाः; १६ अहिः; १७ अहिर्बुध्न्यः ॥ छन्दः—१, २, ५, १२-१४, १६, १९, २० भुरिगार्चीगायत्री; ३, ४, १७ आर्चीगायत्री; ६-११, १५, १८, २१ पादनिचृद्गायत्री; २२, २४ निचृदार्षीत्रिष्टुप्; २३ आर्षी त्रिष्टुप्; २५ विराडार्षीत्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-२१ षड्जः; २२-२५ धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

प्र शुक्रैतु देवी मनीषा अस्मत्सुतष्टो रथो न वाजी ॥ १ ॥
विदुः पृथिव्या दिवो जनित्रं शृण्वन्त्यापो अध क्षरन्तीः ॥ २ ॥
आपश्चिदस्मै पिन्वन्त पृथ्वीर्वृत्रेषु शूरा मंसन्त उग्राः ॥ ३ ॥
आ धूर्ष्वस्मै दधाताश्वानिन्द्रो न वज्री हिरण्यबाहुः ॥ ४ ॥
अभि प्र स्थाताहेव यज्ञं यातेव पत्मन्त्मना हिनोत ॥ ५ ॥
त्मना समत्सु हिनोत यज्ञं दधात केतुं जनाय वीरम् ॥ ६ ॥
उदस्य शुष्माद्भानुर्नार्त बिभर्ति भारं पृथिवी न भूम ॥ ७ ॥
ह्वयामि देवाँ अयातुरग्ने साधन्नृतेन धियं दधामि ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि वो देवीं धियं दधिध्वं प्र वो देवत्रा वाचं कृणुध्वम् ॥ ९ ॥
आ चष्ट आसां पाथो नदीनां वरुण उग्रः सहस्रचक्षाः ॥ १० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

राजा राष्ट्रानां पेशो नदीनामनुत्तमस्मै क्षत्रं विश्वायु ॥ ११ ॥
अविष्टो अस्मान्विश्वासु विक्षवद्युं कृणोत शंसं निनित्सोः ॥ १२ ॥
व्येतु दिद्युद् द्विषामशेवा युयोत विष्वग्रपस्तनूनाम् ॥ १३ ॥
अवीन्नो अग्निर्हव्यान्नमोभिः प्रेष्ठो अस्मा अधायि स्तोमः ॥ १४ ॥
सजूर्देवेभिरपां नपातं सखायं कृध्वं शिवो नो अस्तु ॥ १५ ॥
अब्जामुक्थैरहिं गृणीषे बुध्ने नदीनां रजःसु षीदन् ॥ १६ ॥
मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषे धान्मा यज्ञो अस्य स्रिधदृतायोः ॥ १७ ॥
उत न एषु नृषु श्रवो धुः प्र राये यन्तु शर्धन्तो अर्यः ॥ १८ ॥
तपन्ति शत्रुं स्वर्णर्भूमा महासेनासो अमेभिरेषाम् ॥ १९ ॥
आ यन्नः पत्नीर्गमन्त्यच्छा त्वष्टा सुपाणिर्दधातु वीरान् ॥ २० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

प्रति नः स्तोमं त्वष्टा जुषेत स्याद्वस्मे अरमतिर्वसूयुः ॥ २१ ॥
ता नो रासन्रातिषाचो वसून्या रोदसी वरुणानी शृणोतु ।
वरूत्रीभिः सुशरणो नो अस्तु त्वष्टा सुदत्रो वि दधातु रायः ॥ २२ ॥
तन्नो रायः पर्वतास्तन्न आपस्तद्रातिषाच ओषधीरुत द्यौः ।
वनस्पतिभिः पृथिवी सजोषा उभे रोदसी परि पासतो नः ॥ २३ ॥
अनु तद्वीं रोदसी जिहातामनु द्युक्षो वरुण इन्द्रसखा ।
अनु विश्वे मरुतो ये सहासो रायः स्याम धरुणं धियध्यै ॥ २४ ॥
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निरापः ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २५ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१-५, ११, १२ त्रिष्टुप्; ६, ८, १०, १५ निचृत्त्रिष्टुप्; ७, ९ विराट्त्रिष्टुप्; १३, १४ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-१२, १५ धैवतः; १३, १४ पञ्चमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥ १ ॥
शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरंन्धिः शमु सन्तु रायः।
शं नः सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥ २ ॥
शं नो धाता शमु धर्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥ ३ ॥
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्।
शं नः सुकृतां सुकृतानि सन्तु शं न इषिरो अभि वातु वातः ॥ ४ ॥
शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।
शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥ ५ ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु ॥ ६ ॥
शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वाः शम्वस्तु वेदिः ॥ ७ ॥
शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥ ८ ॥
शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥ ९ ॥
शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः।
शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शंभुः ॥ १० ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः।
शं न ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु॥ १२॥
शं नो अज एकपाद्देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः।
शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपा॥ १३॥
आदित्या रुद्रा वसवो जुषन्तेदं ब्रह्म क्रियमाणं नवीयः।
शृण्वन्तु नो दिव्याः पार्थिवासो गोजाता उत ये यज्ञियासः॥ १४॥
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ १५॥

इति पञ्चमाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ७ भुरिक्पङ्क्तिः; २ त्रिष्टुप्; ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पङ्क्तिः; ८, ९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ५, ७ पञ्चमः; २-४, ६, ८, ९ धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य वि रश्मिभिः ससृजे सूर्यो गाः।
वि सानुना पृथिवी सस्त्र उर्वी पृथु प्रतीकमध्येधे अग्निः॥ १॥
इमां वां मित्रावरुणा सुवृक्तिमिषं न कृण्वे असुरा नवीयः।
इनो वामन्यः पदवीरदब्धो जनं च मित्रो यतति ब्रुवाणः॥ २॥
आ वातस्य ध्रजतो रन्त इत्या अपीपयन्त धेनवो न सूदाः।
महो दिवः सदने जायमानोऽचिक्रदद् वृषभः सस्मिन्नूधन्॥ ३॥
गिरा य एता युनजद्धरी त इन्द्र प्रिया सुरथा शूर धायू।
प्र यो मन्युं रिरिक्षतो मिनात्या सुक्रतुमर्यमणं ववृत्याम्॥ ४॥
यजन्ते अस्य सख्यं वयश्च नमस्विनः स्व ऋतस्य धामन्।
वि पृक्षो बाबधे नृभिः स्तवान इदं नमो रुद्राय प्रेष्ठम्॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

आ यत्साकं यशसो वावशानाः सरस्वती सप्तथी सिन्धुमाता।
याः सुष्वयन्त सुदुघाः सुधारा अभि स्वेन पयसा पीप्यानाः ॥ ६ ॥
उत त्ये नो मरुतो मन्दसाना धियं तोकं च वाजिनोऽवन्तु।
मा नः परि ख्यदक्षरा चरन्त्यवीवृधन्युज्यं ते रयिं नः ॥ ७ ॥
प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं प्र पूषणं विदथ्यं न वीरम्।
भगं धियोऽवितारं नो अस्याः सातौ वाजं रातिषाचं पुरन्धिम् ॥ ८ ॥
अच्छायं वो मरुतः श्लोक एत्वच्छा विष्णुं निषिक्तपामवोभिः।
उत प्रजायै गृणते वयो धुर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ९ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ निचृत्पङ्क्तिः; ५, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ६ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३, ५, ७, ८ धैवतः; ४, ६ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

आ वो वाहिष्ठो वहतु स्तवध्यै रथो वाजा ऋभुक्षणो अमृक्तः।
अभि त्रिपृष्ठैः सवनेषु सोमैर्मदे सुशिप्रा महभिः पृणध्वम् ॥ १ ॥
यूयं ह रत्नं मघवत्सु धत्थ स्वर्दृशं ऋभुक्षणो अमृक्तम्।
सं यज्ञेषु स्वधावन्तः पिबध्वं वि नो राधांसि मतिभिर्दयध्वम् ॥ २ ॥
उवोचिथ हि मघवन्देष्णं महो अर्भस्य वसुनो विभागे।
उभा ते पूर्णा वसुना गभस्ती न सूनृता नि यमते वसव्या ॥ ३ ॥
त्वमिन्द्र स्वयशा ऋभुक्षा वाजो न साधुरस्तमेष्यृक्वा।
वयं नु ते दाश्वांसः स्याम ब्रह्म कृण्वन्तो हरिवो वसिष्ठाः ॥ ४ ॥
सनितासि प्रवतो दाशुषे चिद्याभिर्विवेषो हर्यश्व धीभिः।
ववन्मा नु ते युज्याभिरूती कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

वासयसीव वेधसस्त्वं नः कदा न इन्द्र वचसो बुबोधः।
अस्ते तात्या धिया रयिं सुवीरं पृक्षो नो अर्वा न्युहीत वाजी ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि यं देवी निर्ऋतिश्चिदीशे नक्षन्त इन्द्रं शरदः सुपृक्षः।
उप त्रिबन्धुर्जरदष्टिमेत्यस्ववेशं यं कृणवन्त मर्तीः ॥ ७ ॥
आ नो राधांसि सवितः स्तवध्या आ रायो यन्तु पर्वतस्य रातौ।
सदा नो दिव्यः पायुः सिषक्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-६[१] सविता; ६[२] सविता भगो वा; ७, ८ वाजिनः ॥
छन्दः—१, ३, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ६ स्वराट्पङ्क्तिः; ५ विराट्त्रिष्टुप्;
७ भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ८ धैवतः;
२, ४, ६, ७ पञ्चमः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उदु ष्य देवः सविता ययाम हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत्।
नूनं भगो हव्यो मानुषेभिर्वि यो रत्ना पुरूवसुर्दधाति ॥ १ ॥
उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्य१स्य हिरण्यपाणे प्रभृतावृतस्य।
व्यु१र्वीं पृथ्वीममतिं सृजान आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः ॥ २ ॥
अपि ष्टुतः सविता देवो अस्तु यमा चिद्विश्वे वसवो गृणन्ति।
स नः स्तोमान्नमस्य१श्चनो धाद्विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरीन् ॥ ३ ॥
अभि यं देव्यदितिर्गृणाति सवं देवस्य सवितुर्जुषाणा।
अभि सम्राजो वरुणो गृणन्त्यभि मित्रासो अर्यमा सजोषाः ॥ ४ ॥
अभि ये मिथो वनुषः सपन्ते रातिं दिवो रातिषाचः पृथिव्याः।
अहिर्बुध्न्य उत नः शृणोतु वरूत्र्येकधेनुभिर्नि पातु ॥ ५ ॥
अनु तन्नो जास्पतिर्मंसीष्ट रत्नं देवस्य सवितुरियानः ।
भगमुग्रोऽवसे जोहवीति भगमनुग्रो अध याति रत्नम् ॥ ६ ॥
शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः।
जम्भयन्तोऽहिं वृकं रक्षांसि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः ॥ ७ ॥
वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; ४, ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं वस्वो अश्रेत्प्रतीची जूर्णिर्देवतातिमेति।
भेजाते अद्री रथ्येव पन्थामृतं होता न इषितो यजाति॥ १ ॥
प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्पतीव बीरिट इयाते।
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान्॥ २ ॥
ज्मया अत्र वसवो रन्त देवा उरावन्तरिक्षे मर्जयन्त शुभ्राः।
अर्वाक्पथ उरुज्रयः कृणुध्वं श्रोता दूतस्य जग्मुषो नो अस्य॥ ३ ॥
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमाः सधस्थं विश्वे अभि सन्ति देवाः।
ताँ अध्वर उशतो यक्ष्यग्ने श्रुष्टी भगं नासत्या पुरन्धिम्॥ ४ ॥
आग्ने गिरो दिव आ पृथिव्या मित्रं वह वरुणमिन्द्रमग्निम्।
आर्यमणमदितिं विष्णुमेषां सरस्वती मरुतो मादयन्ताम्॥ ५ ॥
ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां नक्षत्कामं मर्त्यानामसिन्वन्।
धाता रयिमविदस्यं सदासां सक्षीमहि युज्येभिर्नु देवैः॥ ६ ॥
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ६ पञ्चमः; २, ४, ५, ७ धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

ओ श्रुष्टिर्विदथ्या३ समेतु प्रति स्तोमं दधीमहि तुराणाम्।
यद्द्य देवः सविता सुवाति स्यामास्य रत्निनो विभागे॥ १ ॥
मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी च द्युभक्तमिन्द्रो अर्यमा ददातु।
दिदेष्टु देव्यदितिरनर्वणो वायुश्च यन्नियुवैते भगश्च॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेदुग्रो अस्तु मरुतः स शुष्मी यं मर्त्यं पृषदश्वा अवाथ।
उतेमग्निः सरस्वती जुनन्ति न तस्य रायः पर्येतास्ति॥ ३॥
अयं हि नेता वरुण ऋतस्य मित्रो राजानो अर्यमापो धुः।
सुहवा देव्यदितिरनर्वा ते नो अंहो अति पर्षन्नरिष्टान्॥ ४॥
अस्य देवस्य मीळ्हुषो वया विष्णोरेषस्य प्रभृथे हविर्भिः।
विदे हि रुद्रो रुद्रियं महित्वं यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत्॥ ५॥
मात्र पूषन्नाघृण इरस्यो वसूत्री यद्रातिषाचश्च रासन्।
मयोभुवो नो अर्वन्तो नि पान्तु वृष्टिं परिज्मा वातो ददातु॥ ६॥
नू रोदसी अभिष्टुते वसिष्ठैर्ऋतावानो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१ लिङ्गोक्ताः; २-६ भगः; ७ उषाः॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २, ३, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पङ्क्तिः; ६ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ निषादः; २, ३, ५-७ धैवतः; ४ पञ्चमः॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम॥ १॥
प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह॥ २॥
भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः ।
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥ ३॥
उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥ ४॥
भग एव भगवाँ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय ।
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु ॥ ६ ॥
अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः ।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५ धैवतः; ६ पञ्चमः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो नक्षन्त प्र क्रन्दनुर्नभन्यस्य वेतु ।
प्र धेनव उदप्रुतो नवन्त युज्यातामद्री अध्वरस्य पेशः ॥ १ ॥
सुगस्ते अग्ने सनवित्तो अध्वा युक्ष्वा सुते हरितो रोहितश्च ।
ये वा सद्मन्नरुषा वीरवाहो हुवे देवानां जनिमानि सत्तः ॥ २ ॥
समु वो यज्ञं महयन्नमोभिः प्र होता मन्द्रो रिरिच उपाके ।
यजस्व सु पुरुवणीक देवाना यज्ञियाममृर्मतिं ववृत्याः ॥ ३ ॥
यदा वीरस्य रेवतो दुरोणे स्योनशीरतिथिराचिकेतत् ।
सुप्रीतो अग्निः सुधितो दम आ स विशे दाति वार्यमियत्यै ॥ ४ ॥
इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व मरुत्स्विन्द्रे यशसं कृधी नः ।
आ नक्तां बर्हिः सदतामुषासोशन्ता मित्रावरुणा यजेह ॥ ५ ॥
एवाग्निं सहस्यं वसिष्ठो रायस्कामो विश्वपन्यस्य स्तौत् ।
इषं रयिं पप्रथद्वाजमस्मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ भुरिक्पङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४ धैवतः; २, ५ पञ्चमः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन्द्यावा नमोभिः पृथिवी इषध्यै ।
येषां ब्रह्माण्यसमानि विप्रा विष्वग्वियन्ति वनिनो न शाखाः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Ghennai and eGangotri

प्र यज्ञ एतु हेत्वो न सस्रिरुद्यच्छध्वं समनसो घृताचीः।
स्तृणीत बर्हिरध्वराय साधूर्ध्वा शोचींषि देवयून्यस्थुः॥ २॥
आ पुत्रासो न मातरं विभृत्राः सानौ देवासो बर्हिषः सदन्तु।
आ विश्वाची विदथ्यामनक्त्वग्रे मा नो देवतातां मृधस्कः॥ ३॥
ते सीषपन्त जोषमा यजत्रा ऋतस्य धाराः सुदुघा दुहानाः।
ज्येष्ठं वो अद्य महु आ वसूनामा गन्तन समनसो यति ष्ठ॥ ४॥
एवा नो अग्ने विक्ष्वा दशस्य त्वया वयं सहसावन्नास्क्राः।
राया युजा संधमादो अरिष्टा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—लिङ्गोक्ताः॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ पङ्क्तिः॥ स्वरः—१ निषादः; २, ३ धैवतः; ४, ५ पञ्चमः॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

दधिक्रां वः प्रथममश्विनोषसमग्निं समिद्धं भगमूतये हुवे ।
इन्द्रं विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिमादित्यान्द्यावापृथिवी अपः स्वः॥ १॥
दधिक्रामु नमसा बोधयन्त उदीराणा यज्ञमुपप्रयन्तः ।
इळां देवीं बर्हिषि सादयन्तोऽश्विना विप्रा सुहवा हुवेम ॥ २॥
दधिक्रावाणं बुबुधानो अग्निमुप ब्रुव उषसं सूर्यं गाम् ।
ब्रध्नं मँश्चतोर्वरुणस्य बभ्रुं ते विश्वास्मद्दुरिता यावयन्तु ॥ ३॥
दधिक्रावा प्रथमो वाज्यर्वाग्रे रथानां भवति प्रजानन् ।
संविदान उषसा सूर्येणादित्येभिर्वसुभिरङ्गिरोभिः ॥ ४॥
आ नो दधिक्राः पथ्यामनक्त्वृतस्य पन्थामन्वेतवा उ ।
शृणोतु नो दैव्यं शर्धो अग्निः शृण्वन्तु विश्वे महिषा अमूराः॥ ५॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—सविता॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

आ देवो यातु सविता सुरत्नोऽन्तरिक्षप्रा वहमानो अश्वैः ।
हस्ते दधानो नर्या पुरूणि निवेशयञ्च प्रसुवञ्च भूम ॥ १ ॥
उदस्य बाहू शिथिरा बृहन्ता हिरण्ययादिवो अन्ताँ अनष्टाम् ।
नूनं सो अस्य महिमा पनिष्ट सूरश्चिदस्मा अनु दादपस्याम् ॥ २ ॥
स घा नो देवः सविता सहावा साविष्टद्सुपतिर्वसूनि ।
विश्रयमाणो अमतिमुरूचीं मर्तभोजनमध रासते नः ॥ ३ ॥
इमा गिरः सवितारं सुजिह्वं पूर्णगभस्तिमीळते सुपाणिम् ।
चित्रं वयो बृहदस्मे दधातु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ४ ॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—रुद्रः ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ निचृत् जगती; ४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३ निषादः; २ धैवतः; ४ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाव्ने ।
अषाळ्हाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतु नः ॥ १ ॥
स हि क्षयेण क्षम्यस्य जन्मनः साम्राज्येन दिव्यस्य चेतति ।
अवन्नवन्तीरुप नो दुरश्चरानमीवो रुद्र जासु नो भव ॥ २ ॥
या ते दिद्युदवसृष्टा दिवस्परि क्षमया चरति परि सा वृणक्तु नः ।
सहस्रं ते स्वपिवात भेषजा मा नस्तोकेषु तनयेषु रीरिषः ॥ ३ ॥
मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ते भूम प्रसितौ हीळितस्य ।
आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ४ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आपः ॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४ स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आपो यं वः प्रथमं देवयन्त इन्द्रपानमूर्मिमकृण्वतेळः ।
तं वो वयं शुचिमरिप्रमद्य घृतप्रुषं मधुमन्तं वनेम ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमूर्मिमापो मधुमत्तमं वोऽपां नपादवत्वाशुहेमा ।
यस्मिन्निन्द्रो वसुभिर्मादयाते तमश्याम देवयन्तो वो अद्य ॥ २ ॥
शतपवित्राः स्वधया मदन्तीर्देवीर्देवानामपि यन्ति पाथः ।
ता इन्द्रस्य न मिनन्ति व्रतानि सिन्धुभ्यो हव्यं घृतवज्जुहोत ॥ ३ ॥
याः सूर्यो रश्मिभिराततान याभ्य इन्द्रो अरदद्गातुमूर्मिम् ।
ते सिन्धवो वरिवो धातना नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ४ ॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-३ ऋभवः; ४ ऋभवो विश्वे देवा वा ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-४ धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

ऋभुक्षणो वाजा मादयध्वमस्मे नरो मघवानः सुतस्य ।
आ वोऽवाचः क्रतवो न यातां विभ्वो रथं नर्या वर्तयन्तु ॥ १ ॥
ऋभुर्ऋभुभिरभि वः स्याम विभ्वो विभुभिः शवसा शवांसि ।
वाजो अस्माँ अवतु वाजसाताविन्द्रेण युजा तरुषेम वृत्रम् ॥ २ ॥
ते चिद्धि पूर्वीरभि सन्ति शासा विश्वाँ अर्य उपरताति वन्वन् ।
इन्द्रो विभ्वाँ ऋभुक्षा वाजो अर्यः शत्रोर्मिथत्या कृणवन्वि नृम्णम् ॥ ३ ॥
नू देवासो वरिवः कर्तना नो भूत नो विश्वेऽवसे सजोषाः ।
समस्मे इषं वसवो ददीरन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ४ ॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आपः ॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३ त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात्पुनाना यन्त्यनिविशमानाः ।
इन्द्रो या वज्री वृषभो ररादऽता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ १ ॥
या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः ।
समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्।
मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ ३ ॥
यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति।
वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु ॥ ४ ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१ मित्रावरुणौ; २ अग्निः; ३ विश्वे देवाः; ४ नद्यः ॥
छन्दः—१, ३ स्वराट्त्रिष्टुप्; २ निचृज्जगती; ४ भुरिगतिजगती ॥
स्वरः—१, ३ धैवतः; २, ४ निषादः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

आ मां मित्रावरुणेह रक्षतं कुलाययद्विश्वयन्मा न आ गन्।
अजकावं दुर्दृशीकं तिरो दधे मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः ॥ १ ॥
यद्विजामन्परुषि वन्दनं भुवदष्ठीवन्तौ परि कुल्फौ च देहत्।
अग्निष्टच्छोचन्नप बाधतामितो मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः ॥ २ ॥
यच्छल्मलौ भवति यन्नदीषु यदोषधीभ्यः परि जायते विषम्।
विश्वे देवा निरितस्तत्सुवन्तु मा मां पद्येन रपसा विदत्त्सरुः ॥ ३ ॥
याः प्रवतो निवत उद्वत उदन्वतीरनुदकाश्च याः ।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः शिवा देवीरशिपदा भवन्तु
सर्वा नद्यो अशिमिदा भवन्तु ॥ ४ ॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आदित्याः ॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्;
३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

आदित्यानामवसा नूतनेन सक्षीमहि शर्मणा शन्तमेन।
अनागास्त्वे अदितित्वे तुरास इमं यज्ञं दधतु श्रोषमाणाः ॥ १ ॥
आदित्यासो अदितिर्मादयन्तां मित्रो अर्यमा वरुणो रजिष्ठाः।
अस्माकं सन्तु भुवनस्य गोपाः पिबन्तु सोममवसे नो अद्य ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदित्या विश्वे मरुतश्च विश्वे देवाश्च विश्व ऋभवश्च विश्वे।
इन्द्रो अग्निरश्विना तुष्टुवाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आदित्याः ॥ छन्दः—१, ३ स्वराट्पङ्क्तिः; २ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३ पञ्चमः; २ धैवतः ॥

अथ एकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

आदित्यासो अदितयः स्याम पूर्देवत्रा वसवो मर्त्यत्रा।
सनेम मित्रावरुणा सनन्तो भवेम द्यावापृथिवी भवन्तः ॥ १ ॥
मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त शर्म तोकाय तनयाय गोपाः।
मा वो भुजेमान्यजातमेनो मा तत्कर्म वसवो यच्चयध्वे ॥ २ ॥
तुरण्यवोऽङ्गिरसो नक्षन्त रत्नं देवस्य सवितुरियानाः।
पिता च तन्नो महान्यजत्रो विश्वे देवाः समनसो जुषन्त ॥ ३ ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

प्र द्यावा यज्ञैः पृथिवी नमोभिः सबाध ईळे बृहती यजत्रे।
ते चिद्धि पूर्वे कवयो गृणन्तः पुरो मही दधिरे देवपुत्रे ॥ १ ॥
प्र पूर्वजे पितरा नव्यसीभिर्गीर्भिः कृणुध्वं सदने ऋतस्य।
आ नो द्यावापृथिवी दैव्येन जनेन यातं महि वां वरूथम् ॥ २ ॥
उतो हि वां रत्नधेयानि सन्ति पुरूणि द्यावापृथिवी सुदासे।
अस्मे धत्तं यदसदस्कृधोयु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

[५४] चतुःपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वास्तोष्पतिः ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

वास्तोष्पते प्रति जानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वास्तोष्पते प्रतरणो न एधि गयस्फानो गोभिरश्वेभिरिन्दो।
अजरासस्ते सख्ये स्याम पितेव पुत्रान्प्रति नो जुषस्व॥ २॥
वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।
पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ३॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१ वास्तोष्पतिः; २-८ इन्द्रः॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २-४ बृहती; ५, ७ अनुष्टुप्; ६, ८ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१ षड्जः; २-४ मध्यमः; ५-८ गान्धारः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

अमीवहा वास्तोष्पते विश्वा रूपाण्याविशन्।
सखा सुशेव एधि नः॥ १॥
यदर्जुन सारमेय दतः पिशङ्ग यच्छसे।
वीव भ्राजन्त ऋष्टय उप स्रक्वेषु बप्सतो नि षु स्वप॥ २॥
स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनःसर।
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान्दुच्छुनायसे नि षु स्वप॥ ३॥
त्वं सूकरस्य दर्दृहि तव दर्दर्तु सूकरः।
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान्दुच्छुनायसे नि षु स्वप॥ ४॥
सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्पतिः।
ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः॥ ५॥
य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः।
तेषां सं हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा॥ ६॥
सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत्।
तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि॥ ७॥
प्रोष्ठेशया वह्येशया नारीर्यास्तल्पशीवरीः।
स्त्रियो याः पुण्यगन्धास्ताः सर्वाः स्वापयामसि॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थोऽनुवाकः [५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ आर्चीगायत्री; २, ६, ७, ९ भुरिकार्चीगायत्री; ३-५ प्राजापत्याबृहती; ८, १० आर्च्युष्णिक्; ११ निचृदार्च्युष्णिक्; १२, १३, १५, १८, १९, २१ निचृत्त्रिष्टुप्; १४, १६ स्वराट्पङ्क्तिः; १७, २० त्रिष्टुप्; २२, २३, २५ विराट्त्रिष्टुप्; २४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ६, ७, ९ षड्जः; ३-५ मध्यमः; ८, १०, ११ ऋषभः; १२, १३, १५, १७-२३, २५ धैवतः; १४, १६, २४ पञ्चमः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

क ईं व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा स्वश्वाः ॥ १ ॥
नकिर्ह्येषां जनूंषि वेद ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम् ॥ २ ॥
अभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त वातस्वनसः श्येना अस्पृधन् ॥ ३ ॥
एतानि धीरो निण्या चिकेत पृश्निर्यदूधो मही जभार ॥ ४ ॥
सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात्सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम् ॥ ५ ॥
यामं येष्ठाः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया संमिश्ला ओजोभिरुग्राः ॥ ६ ॥
उग्रं व ओजः स्थिरा शवांस्यधा मरुद्भिर्गणस्तुविष्मान् ॥ ७ ॥
शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धृष्णोः ॥ ८ ॥
सनेम्यस्मद्युयोत द्विषुं मा वो दुर्मतिरिह प्रणङ् नः ॥ ९ ॥
प्रिया वो नाम हुवे तुराणामा यत्तृपन्मरुतो वावशानाः ॥ १० ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

स्वायुधास इष्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्वः शुम्भमानाः ॥ ११ ॥
शुचीं वो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः ।
ऋतेन सत्यमृतसाप आयञ्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः ॥ १२ ॥
अंसेष्वा मरुतः खादयो वो वक्षःसु रुक्मा उपशिश्रियाणाः ।
वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचाना अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः ॥ १३ ॥
प्र बुध्न्या व ईरते महांसि प्र नामानि प्रयज्यवस्तिरध्वम् ।
सहस्रियं दम्यं भागमेतं गृहमेधीयं मरुतो जुषध्वम् ॥ १४ ॥
यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथेत्था विप्रस्य वाजिनो हवीमन् ।
मक्षू रायः सुवीर्यस्य दात नू चिद्यमन्य आदभद्रावा ॥ १५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अत्यासो न ये मरुतः स्वञ्चो यक्षदृशो न शुभयन्त मर्याः ।
ते हर्म्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न प्रक्रीळिनः पयोधाः ॥ १६ ॥
दृशस्यन्तो नो मरुतो मृळन्तु वरिवस्यन्तो रोदसी सुमेके ।
आरे गोहा नृहा वधो वो अस्तु सुम्नेभिरस्मे वसवो नमध्वम् ॥ १७ ॥
आ वो होता जोहवीति सत्तः सत्राचीं रातिं मरुतो गृणानः ।
य ईवतो वृषणो अस्ति गोपाः सो अद्वयावी हवते व उक्थैः ॥ १८ ॥
इमे तुरं मरुतो रामयन्तीमे सहः सहस आ नमन्ति ।
इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अररुषे दधन्ति ॥ १९ ॥
इमे रध्रं चिन्मरुतो जुनन्ति भृमिं चिद्यथा वसवो जुषन्त ।
अप बाधध्वं वृषणस्तमांसि धत्त विश्वं तनयं तोकमस्मे ॥ २० ॥

अथ षडविंशो वर्गः ॥ २६ ॥

मा वो दात्रान्मरुतो निररामं मा पश्चाद्घ्म रथ्यो विभागे ।
आ नः स्पार्हे भजतना वसव्ये यदीं सुजातं वृषणो वो अस्ति ॥ २१ ॥
सं यद्भनन्त मन्युभिर्जनासः शूरा यह्वीष्वोषधीषु विक्षु ।
अध स्मा नो मरुतो रुद्रियासस्त्रातारो भूत पृतनास्वर्यः ॥ २२ ॥
भूरिं चक्र मरुतः पित्र्याण्युक्थानि या वः शस्यन्ते पुरा चित् ।
मरुद्भिरुग्रः पृतनासु साळ्हा मरुद्भिरित्सनिता वाजमर्वा ॥ २३ ॥
अस्मे वीरो मरुतः शुष्म्यस्तु जनानां यो असुरो विधर्ता ।
अपो येन सुक्षितये तरेमाध स्वमोकोऽभि वः स्याम ॥ २४ ॥
तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्निरापः ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ २५ ॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ३, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

मध्वो वो नाम मारुतं यजत्राः प्र यज्ञेषु शवसा मदन्ति।
ये रेजयन्ति रोदसी चिदुर्वी पिन्वन्त्युत्सं यदयासुरुग्राः ॥ १ ॥
निचेतारो हि मरुतो गृणन्तं प्रणेतारो यजमानस्य मन्म।
अस्माकमद्य विदथेषु बर्हिरा वीतये सदत पिप्रियाणाः ॥ २ ॥
नैतावदन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते रुक्मैरायुधैस्तनूभिः।
आ रोदसी विश्वपिशः पिशाना: समानमञ्ज्यञ्जते शुभे कम् ॥ ३ ॥
ऋध्वक्सा वो मरुतो दिद्युदस्तु यद्व आगः पुरुषता करामा।
मा वस्तस्यामपि भूमा यजत्रा अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ॥ ४ ॥
कृते चिदत्र मरुतो रणन्तानवद्यासः शुचयः पावकाः।
प्र णोऽ वत सुमतिभिर्यजत्राः प्र वाजेभिस्तिरत पुष्यसे नः ॥ ५ ॥
उत स्तुतासो मरुतो व्यन्तु विश्वेभिर्नामभिर्नरो हुवींषि।
ददात नो अमृतस्य प्रजायै जिगृत रायः सूनृता मघानि ॥ ६ ॥
आ स्तुतासो मरुतो विश्व ऊती अच्छा सूरीन्त्सर्वताता जिगात।
ये नस्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३-५ धैवतः; २, ६ पञ्चमः ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय यो दैव्यस्य धाम्नस्तुविष्मान्।
उत क्षोदन्ति रोदसी महित्वा नक्षन्ते नाकं निर्ऋतेरवंशात् ॥ १ ॥
जनूश्चिद्वो मरुतस्त्वेष्येण भीमासस्तुविमन्यवोऽ यासः।
प्र ये महोभिरोजसोत सन्ति विश्वो वो यामन्भयते स्वर्दृक् ॥ २ ॥
बृहद्वयो मघवद्भ्यो दधात जुजोषन्निन्मरुतः सुष्टुतिं नः।
गतो नाध्वा वि तिराति जन्तुं प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेत ॥ ३ ॥
युष्मोतो विप्रो मरुतः शतस्वी युष्मोतो अर्वा सहुरिः सहस्त्री।
युष्मोतः सम्राळुत हन्ति वृत्रं प्र तद्वो अस्तु धूतयो देष्णम् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताँ आ रुद्रस्य मीळ्हुषो विवासे कुविन्नंसन्ते मरुतः पुनर्नः ।
यत्सस्वर्ती जिहीळिरे यदाविरव तदेन ईमहे तुराणाम् ॥ ५ ॥
प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोनामिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त ।
आराच्चिद् द्वेषो वृषणो युयोत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-११ मरुतः; १२ रुद्रः ॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती; २ पङ्क्तिः; ३ बृहती; ४ निचृत्पङ्क्तिः; ५, १२ अनुष्टुप्; ६ स्वराड्बृहती; ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ त्रिष्टुप्; ९, १० गायत्री; ११ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—१, ३, ६ मध्यमः; २, ४ पञ्चमः; ५, १२ गान्धारः; ७, ८ धैवतः; ९-११ षड्जः ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

यं त्रायध्व इदमिदं देवासो यं च नयथ ।
तस्मा अग्ने वरुण मित्रार्यमन्मरुतः शर्म यच्छत ॥ १ ॥
युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिय ईजानस्तरति द्विषः ।
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ॥ २ ॥
नहि वश्चरमं चन वसिष्ठः परिमंसते ।
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबत कामिनः ॥ ३ ॥
नहि व ऊतिः पृतनासु मर्धति यस्मा अराध्वं नरः ।
अभि व आवर्त्सुमतिर्नवीयसी तूयं यात पिपीषवः ॥ ४ ॥
ओ षु घृष्विराधसो यातनान्धांसि पीतये ।
इमा वो हव्या मरुतो रारे हि कं मो ष्व१न्यत्र गन्तन ॥ ५ ॥
आ च नो बर्हिः सदतावितां च नः स्पार्हाणि दातवे वसु ।
अस्तेधन्तो मरुतः सोम्ये मधौ स्वाहेह मादयाध्वै ॥ ६ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

सस्वश्चिद्धि तन्व१ः शुम्भमाना आ हंसासो नीलपृष्ठा अपप्तन् ।
विश्वं शर्धो अभितो मा नि षेद नरो न रण्वाः सवने मदन्तः ॥ ७ ॥
यो नो मरुतो अभि दुर्हणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति ।
द्रुहः पाशान्प्रति स मुचीष्ट तपिष्ठेन हन्मना हन्तना तम् ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सान्तपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुजुष्टन। युष्माकोती रिशादसः ॥ ९ ॥
गृहमेधास आ गत मरुतो मापभूतन। युष्माकोती सुदानवः ॥ १० ॥
इहेह वः स्वतवसः कवयः सूर्यत्वचः। यज्ञं मरुत आ वृणे ॥ ११ ॥
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ १२ ॥

इति पञ्चमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ पञ्चमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१ सूर्यः; २-१२ मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ पङ्क्तिः; २-४, ६, ७, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ८, ११ त्रिष्टुप्; ९ विराट्पङ्क्तिः; १० स्वराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ९, १० पञ्चमः; २-८, ११, १२ धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

यद्द्य सूर्य ब्रवोऽनागा उद्यन्मित्राय वरुणाय सत्यम्
वयं देवत्रादिते स्याम तव प्रियासो अर्यमन्गृणन्तः ॥ १ ॥
एष स्य मित्रावरुणा नृचक्षा उभे उदेति सूर्यो अभि ज्मन्।
विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च गोपा ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ॥ २ ॥
अयुक्त सप्त हरितः सधस्थाद्या ईं वहन्ति सूर्यं घृताचीः।
धामानि मित्रावरुणा युवाकुः सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ॥ ३ ॥
उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुरा सूर्यो अरुहच्छुक्रमर्णः।
यस्मा आदित्या अध्वनो रदन्ति मित्रो अर्यमा वरुणः सजोषाः ॥ ४ ॥
इमे चेतारो अनृतस्य भूरेर्मित्रो अर्यमा वरुणो हि सन्ति।
इम ऋतस्य वावृधुर्दुरोणे शग्मासः पुत्रा अदितेरदब्धाः ॥ ५ ॥
इमे मित्रो वरुणो दूळभासोऽचेतसं चिच्चितयन्ति दक्षैः।
अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तस्तिरश्चिदंहः सुपथा नयन्ति ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

इमे दिवो अनिमिषा पृथिव्याश्चिक्वांसो अचेतसं नयन्ति।
प्रव्राजे चिन्नद्यो गाधमस्ति पारं नो अस्य विष्पितस्य पर्षन् ॥ ७ ॥
यद्वोपावददितिः शर्म भद्रं मित्रो यच्छन्ति वरुणः सुदासे।
तस्मिन्ना तोकं तनयं दधाना मा कर्म देवहेळनं तुरासः ॥ ८ ॥
अव वेदिं होत्राभिर्यजेत रिपः काश्चिद्वरुणाधृतः सः ।
परि द्वेषोभिरर्यमा वृणक्तूरुं सुदासे वृषणा उ लोकम् ॥ ९ ॥
सस्वश्चिद्धि समृतिस्त्वेष्येषामपीच्येन सहसा सहन्ते ।
युष्मद्रिया वृषणो रेजमाना दक्षस्य चिन्महिना मृळता नः ॥ १० ॥
यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते वाजस्य सातौ परमस्य रायः।
सीक्षन्त मन्युं मघवानो अर्य उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु ॥ ११ ॥
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि ।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १२ ॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ भुरिक्पङ्क्तिः; २, ४ त्रिष्टुप्; ३, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-७ धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

उद्वां चक्षुर्वरुण सुप्रतीकं देवयोरेति सूर्यस्ततन्वान् ।
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे स मन्युं मर्त्येष्वा चिकेत ॥ १ ॥
प्र वां स मित्रावरुणावृतावा विप्रो मन्मानि दीर्घश्रुदियर्ति।
यस्य ब्रह्माणि सुक्रतू अवाथ आ यत्क्रत्वा न शरदः पृणैथे ॥ २ ॥
प्रोरोर्मित्रावरुणा पृथिव्याः प्र दिव ऋष्वाद् बृहतः सुदानू।
स्पशो दधाथे ओषधीषु विक्ष्वृधग्यतो अनिमिषं रक्षमाणा ॥ ३ ॥
शंसा मित्रस्य वरुणस्य धाम शुष्मो रोदसी बद्बधे महित्वा।
अयन्मासा अयज्वनामवीराः प्र यज्ञमन्मा वृजनं तिराते ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमूरा विश्वा वृषणाविमा वां न यासु चित्रं ददृशे न यक्षम्।
द्रुहः सचन्ते अनृता जनानां न वां निण्यान्यचिते अभूवन्॥ ५॥
समु वां यज्ञं महयं नमोभिर्हुवे वां मित्रावरुणा सबाधः।
प्र वां मन्मान्यूचसे नवानि कृतानि ब्रह्म जुजुषन्निमानि॥ ६॥
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां यज्ञेषु मित्रावरुणावकारि।
विश्वानि दुर्गा पिपृतं तिरो नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१-३ सूर्यः; ४-६ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, २, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३-५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

उत्सूर्यो बृहद्वर्चींष्यश्रेत्पुरु विश्वा जनिम मानुषाणाम्।
समो दिवा ददृशे रोचमानः क्रत्वा कृतः सुकृतः कर्तृभिर्भूत्॥ १॥
स सूर्य प्रति पुरो न उद्गा एभिः स्तोमेभिरेतशेभिरेवैः।
प्र नो मित्राय वरुणाय वोचोऽनागसो अर्यम्णे अग्नये च॥ २॥
वि नः सहस्रं शुरुधो रदन्त्वृतावानो वरुणो मित्रो अग्निः।
यच्छन्तु चन्द्रा उपमं नो अर्कमा नः कामं पूपुरन्तु स्तवानाः॥ ३॥
द्यावाभूमी अदिते त्रासीथां नो ये वां जज्ञुः सुजनिमान ऋष्वे।
मा हेळे भूम वरुणस्य वायोर्मा मित्रस्य प्रियतमस्य नृणाम्॥ ४॥
प्र बाहवा सिसृतं जीवसे न आ नो गव्यूतिमुक्षतं घृतेन।
आ नो जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा॥ ५॥
नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्तमे तोकाय वरिवो दधन्तु।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१-५[१] सूर्यः; ५[२], ६ मित्रावरुणौ॥ छन्दः—१, ६ विराट्त्रिष्टुप्; २-५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः साधारणः सूर्यो मानुषाणाम्।
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्य देवश्चर्मेव यः समविव्यक्तमांसि ॥ १ ॥
उद्वेति प्रसवीता जनानां महान्केतुरर्णवः सूर्यस्य ।
समानं चक्रं पर्यावृत्सन्यदेतशो वहति धूर्षु युक्तः ॥ २ ॥
विभ्राजमान उषसामुपस्थाद्रेभैरुदेत्यनुमद्यमानः ।
एष मे देवः सविता चच्छन्द यः समानं न प्रमिनाति धाम ॥ ३ ॥
दिवो रुक्म उरुचक्षा उदेति दूरेअर्थस्तरणिर्भ्राजमानः।
नूनं जनाः सूर्येण प्रसूता अयन्नर्थानि कृणवन्नपांसि ॥ ४ ॥
यत्रा चक्रुरमृता गातुमस्मै श्येनो न दीयन्नन्वेति पाथः।
प्रति वां सूर उदिते विधेम नमोभिर्मित्रावरुणोत हव्यैः ॥ ५ ॥
नू मित्रो वरुणो अर्यमा नस्तमने तोकाय वरिवो दधन्तु।
सुगा नो विश्वा सुपथानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१-४ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

दिवि क्षयन्ता रजसः पृथिव्यां प्र वां घृतस्य निर्णिजो ददीरन्।
हव्यं नो मित्रो अर्यमा सुजातो राजा सुक्षत्रो वरुणो जुषन्त ॥ १ ॥
आ राजाना महऋतस्य गोपा सिन्धुपती क्षत्रिया यातमर्वाक्।
इळां नो मित्रावरुणोत वृष्टिमवं दिवं इन्वतं जीरदानू ॥ २ ॥
मित्रस्तन्नो वरुणो देवो अर्यः प्र साधिष्ठेभिः पथिभिर्नयन्तु।
ब्रवद्यथा न आदरिः सुदास इषा मदेम सह देवगोपाः ॥ ३ ॥
यो वां गर्तं मनसा तक्षदेतमूर्ध्वां धीतिं कृणवद्धारयच्च।
उक्षेथां मित्रावरुणा घृतेन ता राजाना सुक्षितीस्तर्पयेथाम् ॥ ४ ॥
एष स्तोमो वरुण मित्र तुभ्यं सोमः शुक्रो न वायवेऽयामि।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरन्धीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

प्रति॑ वां॒ सूर॒ उदि॑ते सू॒क्तैर्मि॒त्रं हु॑वे॒ वरु॑णं पू॒तद॑क्षम् ।
ययो॑रसु॒र्य१॒॑मक्षि॑तं॒ ज्येष्ठं॒ विश्वस्य॒ याम॑न्ना॒चिता॑ जिग॒त्नु ॥ १ ॥
ता हि दे॒वाना॒मसु॑रा॒ ताव॒र्या ता नः॑ क्षि॒तीः क॑रतमू॒र्जय॑न्तीः ।
अ॒श्याम॑ मित्रावरुणा व॒यं वां॒ द्यावा॑ च॒ यत्र॑ पी॒पय॒न्नहा॑ च ॥ २ ॥
ता भूरि॑पाशा॒वनृ॑तस्य॒ सेतू॑ दुर॒त्येतू॑ रि॒पवे॒ मर्त्या॑य ।
ऋ॒तस्य॑ मित्रावरुणा प॒था वा॑म॒पो न ना॒वा दु॑रि॒ता त॑रेम ॥ ३ ॥
आ नो॑ मित्रावरुणा ह॒व्यजु॑ष्टिं घृ॒तैर्गव्यू॑तिमुक्षत॒मिळा॑भिः ।
प्रति॑ वा॒मत्र॒ वर॒मा जना॑य पृणी॒तमु॒द्नो दि॒व्यस्य॒ चारोः॑ ॥ ४ ॥
ए॒ष स्तोमो॑ वरुण मित्र॒ तुभ्यं॒ सोमः॑ शु॒क्रो न वा॒यवे॑ऽ यामि ।
अ॒वि॒ष्टं धियो॑ जिगृ॒तं पुर॑न्धीर्यू॒यं पा॑त स्व॒स्तिभिः॒ सदा॑ नः ॥ ५ ॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-३, १७-१९ मित्रावरुणौ; ४-१३ आदित्याः; १४-१६ सूर्यः ॥ छन्दः—१, २, ४, ९ निचृद्गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ५-७, १८, १९ आर्षीगायत्री; ८ स्वराड्गायत्री; १० निचृद्बृहती; ११ स्वराड्बृहती; १२ आर्चीस्वराड्बृहती; १३, १५ आर्षीभुरिग् बृहती; १४ आर्षीविराड्बृहती; १६ पुरउष्णिक्; १७ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—१-९, १७-१९ षड्जः; १०-१५ मध्यमः; १६ ऋषभः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

प्र मि॒त्रयो॒र्वरु॑णयोः॒ स्तोमो॑ न एतु शू॒ष्यः॑ । नम॑स्वान्तुविजा॒तयोः॑ ॥ १ ॥
या धा॒रय॑न्त दे॒वाः सु॒दक्षा॒ दक्ष॑पितरा । अ॒सु॒र्या॑य॒ प्रम॑हसा ॥ २ ॥
ता नः॑ स्ति॒पा त॑नू॒पा वरु॑ण जरितॄ॒णाम् । मित्र॑ सा॒धय॑तं॒ धियः॑ ॥ ३ ॥
यद॒द्य सूर॒ उदि॒तेऽ ना॑गा मि॒त्रो अ॑र्य॒मा । सु॒वाति॑ सवि॒ता भगः॑ ॥ ४ ॥
सु॒प्रा॒वीर॑स्तु॒ स क्षयः॒ प्र नु याम॑न्त्सुदानवः । ये नो॒ अंहो॑ऽति॒पिप्र॑ति ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये। महो राजान ईशते ॥ ६ ॥
प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम्। अर्यमणं रिशादसम् ॥ ७ ॥
राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे। इयं विप्रा मेधसातये ॥ ८ ॥
ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह। इषं स्वश्च धीमहि ॥ ९ ॥
बहवः सूरचक्षसोऽग्निजिह्वा ऋतावृधः ।
त्रीणि ये येमुर्विदथानि धीतिभिर्विश्वानि परिभूतिभिः ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

वि ये दधुः शरदं मासमादहर्यज्ञमक्तुं चादृचम् ।
अनाप्यं वरुणो मित्रो अर्यमा क्षत्रं राजान आशत ॥ ११ ॥
तद्वो अद्य मनामहे सूक्तैः सूर उदिते ।
यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा यूयमृतस्य रथ्यः ॥ १२ ॥
ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः ।
तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे नरः स्याम ये च सूरयः ॥ १३ ॥
उदु त्यद्दर्शतं वपुर्दिव एति प्रतिह्वरे ।
यदीमाशुर्वहति देव एतशो विश्वस्मै चक्षसे अरम् ॥ १४ ॥
शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतस्तस्थुषस्पतिं समया विश्वमा रजः ।
सप्त स्वसारः सुविताय सूर्यं वहन्ति हरितो रथे ॥ १५ ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

तच्चक्षुर्देवहितं शुक्रमुच्चरत् ।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम् ॥ १६ ॥
काव्येभिरदाभ्या यातं वरुण द्युमत्। मित्रश्च सोमपीतये ॥ १७ ॥
दिवो धामभिर्वरुण मित्रश्चा यातमद्रुहा। पिबतं सोममातुजी ॥ १८ ॥
आ यातं मित्रावरुणा जुषाणावाहुतिं नरा। पातं सोममृतावृधा ॥ १९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, २, ६-८, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५, ९ विराट्त्रिष्टुप्; ४ आर्षीत्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्रति वां रथं नृपती जरध्यै हविष्मता मनसा यज्ञियेन ।
यो वां दूतो न धिष्ण्यावजीगरच्छा सूनुर्न पितरा विवक्मि ॥ १ ॥
अशोच्यग्निः समिधानो अस्मे उषो अदृश्रन्तमसश्चिदन्ताः ।
अचेति केतुरुषसः पुरस्ताच्छ्रिये दिवो दुहितुर्जायमानः ॥ २ ॥
अभि वां नूनमश्विना सुहोता स्तोमैः सिषक्ति नासत्या विवक्वान् ।
पूर्वीभिर्यातं पथ्याभिरर्वाक्स्वर्विदा वसुमता रथेन ॥ ३ ॥
अवोर्वां नूनमश्विना युवाकुर्हुवे यद्वां सुते माध्वी वसूयुः ।
आ वां वहन्तु स्थविरासो अश्वाः पिबाथो अस्मे सुषुता मधूनि ॥ ४ ॥
प्राचीमु देवाश्विना धियं मेऽमृध्रां सातये कृतं वसूयुम् ।
विश्वा अविष्टं वाज आ पुरन्धीस्ता नः शक्तं शचीपती शचीभिः ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अविष्टं धीष्वश्विना न आसु प्रजावद्रेतो अह्रयं नो अस्तु ।
आ वां तोके तनये तूतुजानाः सुरत्नासो देववीतिं गमेम ॥ ६ ॥
एष स्य वां पूर्वगत्वेव सख्ये निधिर्हितो माध्वी रातो अस्मे ।
अहेळता मनसा यातमर्वागश्नन्ता हव्यं मानुषीषु विक्षु ॥ ७ ॥
एकस्मिन्योगे भुरणा समाने परि वां सप्त स्रवतो रथो गात् ।
न वायन्ति सुभ्वो देवयुक्ता ये वां धूर्षु तरणयो वहन्ति ॥ ८ ॥
असश्चता मघवद्भ्यो हि भूतं ये राया मघदेयं जुनन्ति ।
प्र ये बन्धुं सूनृताभिस्तिरन्ते गव्या पृञ्चन्तो अश्व्या मघानि ॥ ९ ॥
नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।
धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ६, ८ साम्नीत्रिष्टुप्; २, ३, ५ साम्नीनिचृत्त्रिष्टुप्; ४, ७ साम्नीभुरिगासुरीविराट्त्रिष्टुप्; ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आ शुभ्रा यातमश्विना स्वश्वा गिरो दस्रा जुजुषाणा युवाकोः ।
हव्यानि च प्रतिभृता वीतं नः ॥ १ ॥
प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुरर्वं गन्तं हविषो वीतये मे ।
तिरो अर्यो हवनानि श्रुतं नः ॥ २ ॥
प्र वां रथो मनोजवा इयर्ति तिरो रजांस्यश्विना शतोतिः ।
अस्मभ्यं सूर्यावसू इयानः ॥ ३ ॥
अयं ह यद्वां देवया उ अद्रिरूर्ध्वो विवक्ति सोमसुद्युवभ्याम् ।
आ वल्गू विप्रो ववृतीत हव्यैः ॥ ४ ॥
चित्रं ह यद्वां भोजनं न्वस्ति न्यत्रये महिष्वन्तं युयोतम् ।
यो वामोमानं दधते प्रियः सन् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

उत त्यद्वां जुरते अश्विना भूच्यवानाय प्रतीत्यं हविर्दे ।
अधि यद्वपं इतऊति धत्थः ॥ ६ ॥
उत त्यं भुज्युमश्विना सखायो मध्ये जहुर्दुरेवासः समुद्रे ।
निरीं पर्षदरावा यो युवाकुः ॥ ७ ॥
वृकाय चिज्जसमानाय शक्तमुत श्रुतं शयवे हूयमाना ।
यावघ्न्यामपिन्वतमपो न स्तर्यं चिच्छक्त्यश्विना शचीभिः ॥ ८ ॥
एष स्य कारुर्जरते सूक्तैरग्रे बुधान उषसां सुमन्मा ।
इषा तं वर्धदघ्न्या पयोभिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ९ ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ४, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ७ त्रिष्टुप्; ३ आर्षीस्वराट्त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ वां रथो रोदसी बद्बधानो हिरण्ययो वृषभिर्यात्वश्वैः ।
घृतवर्तनिः पविभी रुचान इषां वोळ्हा नृपतिर्वाजिनीवान् ॥ १ ॥
स पप्रथानो अभि पञ्च भूमा त्रिबन्धुरो मनसा यातु युक्तः ।
विशो येन गच्छथो देवयन्तीः कुत्रा चिद्यामममश्विना दधाना ॥ २ ॥
स्वश्वा यशसा यातमर्वाग्दस्रा निधिं मधुमन्तं पिबाथः ।
वि वां रथो वध्वाऽ३ यादमानोऽन्तान्दिवो बाधते वर्तनिभ्याम् ॥ ३ ॥
युवोः श्रियं परि योषावृणीत सूरो दुहिता परितक्म्यायाम् ।
यद्देवयन्तमवथः शचीभिः परि ध्रंसमोमना वां वयो गात् ॥ ४ ॥
यो ह स्य वां रथिरा वस्त उस्रा रथो युजानः परियाति वर्तिः ।
तेन नः शं योरुषसो व्युष्टौ न्यश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन् ॥ ५ ॥
नरा गौरेव विद्युतं तृषाणास्माकमद्य सवनोप यातम् ।
पुरुत्रा हि वां मतिभिर्हवन्ते मा वामन्ये नि यमन्देवयन्तः ॥ ६ ॥
युवं भुज्युमवविद्धं समुद्र उदूहथुरर्णसो अस्रिधानैः ।
पतत्रिभिरश्रमैरव्यथिभिर्दंसनाभिरश्विना पारयन्ता ॥ ७ ॥
नू मे हवमा शृणुतं युवाना यासिष्टं वर्तिरश्विनाविरावत् ।
धत्तं रत्नानि जरतं च सूरीन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

आ विश्ववारा श्विना गतं नः प्र तत्स्थानमवाचि वां पृथिव्याम् ।
अश्वो न वाजी शुनपृष्ठो अस्थादा यत्सेदथुर्ध्रुवसे न योनिम् ॥ १ ॥
सिषक्ति सा वां सुमतिश्चनिष्टातापि घर्मो मनुषो दुरोणे ।
यो वां समुद्रान्त्सरितः पिपर्त्येतग्वा चिन्न सुयुजा युजानः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यानि स्थानान्यश्विना दधाथे दिवो यह्वीष्वोषधीषु विक्षु।
नि पर्वतस्य मूर्धनि सदन्तेषं जनाय दाशुषे वहन्ता ॥ ३ ॥
चनिष्टं देवा ओषधीष्वप्सु यद्योग्या अश्नवैथे ऋषीणाम्।
पुरूणि रत्ना दधतौ न्य१स्मे अनु पूर्वाणि चख्यथुर्युगानि ॥ ४ ॥
शुश्रुवांसा चिदश्विना पुरूण्यभि ब्रह्माणि चक्षाथे ऋषीणाम्।
प्रति प्र यातं वरमा जनायास्मे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ॥ ५ ॥
यो वां यज्ञो नासत्या हविष्मान्कृतब्रह्मा समर्यो३ भवाति।
उप प्र यातं वरमा वसिष्ठमिमा ब्रह्माण्यृच्यन्ते युवभ्याम् ॥ ६ ॥
इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम्।
इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः [७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ५ त्रिष्टुप्; २-४, ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अप स्वसुरुषसो नग्जिहीते रिणक्ति कृष्णीररुषाय पन्थाम्।
अश्वामघा गोमघा वां हुवेम दिवा नक्तं शरुमस्मद्युयोतम् ॥ १ ॥
उपायातं दाशुषे मर्त्याय रथेन वाममश्विना वहन्ता।
युयुतमस्मदनिराममीवां दिवा नक्तं माध्वी त्रासीथां नः ॥ २ ॥
आ वां रथमवमस्यां व्युष्टौ सुम्नायवो वृषणो वर्तयन्तु।
स्यूमगभस्तिमृतयुग्भिरश्वैराश्विना वसुमन्तं वहेथाम् ॥ ३ ॥
यो वां रथो नृपती अस्ति वोळ्हा त्रिवन्धुरो वसुमाँ उत्त्रयामा।
आ न एना नासत्योप यातमभि यद्वां विश्वपन्यो जिगाति ॥ ४ ॥
युवं च्यवानं जरसोऽमुमुक्तं नि पेदव ऊहथुराशुमश्वम्।
निरंहसस्तमसः स्पर्तमत्रिं नि जाहुषं शिथिरे धातमन्तः ॥ ५ ॥
इयं मनीषा इयमश्विना गीरिमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम्।
इमा ब्रह्माणि युवयून्यग्मन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१-४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

आ गोमता नासत्या रथेनाश्वावता पुरुश्चन्द्रेण यातम् ।
अभि वां विश्वा नियुतः सचन्ते स्पार्हया श्रिया तन्वा शुभाना ॥ १ ॥
आ नो देवेभिरुप यातमर्वाक्सजोषसा नासत्या रथेन ।
युवोर्हि नः सख्या पित्र्याणि समानो बन्धुरुत तस्य वित्तम् ॥ २ ॥
उदु स्तोमासो अश्विनोरबुध्रञ्जामि ब्रह्माण्युषसश्च देवीः ।
आविर्वासन्नोदसी धिष्ण्येमे अच्छा विप्रो नासत्या विवक्ति ॥ ३ ॥
वि चेदुच्छन्त्यश्विना उषासः प्र वां ब्रह्माणि कारवो भरन्ते ।
ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेद् बृहद्गय्यः समिधा जरन्ते ॥ ४ ॥
आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात् ।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ५ विराट्त्रिष्टुप्; २-४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

अतारिष्म तमसस्पारमस्य प्रति स्तोमं देवयन्तो दधानाः ।
पुरुदंसा पुरुतमा पुराजामर्त्या हवते अश्विना गीः ॥ १ ॥
न्यु प्रियो मनुषः सादि होता नासत्या यो यजते वन्दते च ।
अश्नीतं मध्वो अश्विना उपाक आ वां वोचे विदथेषु प्रयस्वान् ॥ २ ॥
अहेम यज्ञं पथामुराणा इमां सुवृक्तिं वृषणा जुषेथाम् ।
श्रुष्टीवेव प्रेषितो वामबोधि प्रति स्तोमैर्जरमाणो वसिष्ठः ॥ ३ ॥
उप त्या वह्नी गमतो विशं नो रक्षोहणा संभृता वीळुपाणी ।
समन्धांस्यग्मत मत्सराणि मा नो मर्धिष्टमा गतं शिवेन ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ पश्चातान्नासत्या पुरस्तादाश्विना यातमधरादुदक्तात्।
आ विश्वतः पाञ्चजन्येन राया यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३ निचृद्बृहती; २, ४, ६ आर्षीभुरिग्बृहती; ५ आर्षीबृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना ।
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ॥ १ ॥
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते।
अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ॥ २ ॥
आ यातमुप भूषतं मध्वः पिबतमश्विना ।
दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम् ॥ ३ ॥
अश्वासो ये वामुप दाशुषो गृहं युवां दीयन्ति बिभ्रतः।
मक्षूयुभिर्नरा हयेभिरश्विना देवा यातमस्मयू ॥ ४ ॥
अधा ह यन्तो अश्विना पृक्षः सचन्त सूरयः ।
ता यंसतो मघवद्भ्यो ध्रुवं यशश्छर्दिरस्मभ्यं नासत्या ॥ ५ ॥
प्र ये ययुरवृकासो रथाइव नृपातारो जनानाम् ।
उत स्वेन शवसा शूशुवुर्नर उत क्षियन्ति सुक्षितिम् ॥ ६ ॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ६, ७ आर्षीत्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

व्युषा आवो दिविजा ऋतेनाविष्कृण्वाना महिमानमागात्।
अप द्रुहस्तम आवरजुष्टमङ्गिरस्तमा पथ्या अजीगः ॥ १ ॥
महे नो अद्य सुविताय बोध्युषो महे सौभगाय प्र यन्धि।
चित्रं रयिं यशसं धेह्यस्मे देवि मर्तेषु मानुषि श्रवस्युम् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एते त्ये भानवो दर्शतायाश्चित्रा उषसो अमृतास आगुः।
जनयन्तो दैव्यानि व्रतान्यापृणन्तो अन्तरिक्षा व्यस्थुः॥ ३॥
एषा स्या युजाना परākात्पञ्च क्षितीः परि सद्यो जिगाति।
अभिपश्यन्ती वयुना जनानां दिवो दुहिता भुवनस्य पत्नी॥ ४॥
वाजिनीवती सूर्यस्य योषा चित्रामघा राय ईशे वसूनाम्।
ऋषिष्टुता जरयन्ती मघोन्युषा उच्छति वह्निभिर्गृणाना॥ ५॥
प्रति द्युतानामरुषासो अश्वाश्चित्रा अदृश्रन्नुषसं वहन्तः।
याति शुभ्रा विश्वपिशा रथेन दधाति रत्नं विधते जनाय॥ ६॥
सत्या सत्येभिर्महती महद्भिर्देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः।
रुजद् दृळ्हानि दददुस्रियाणां प्रति गाव उषसं वावशन्त॥ ७॥
नू नो गोमद्वीरवद्धेहि रत्नमुषो अश्वावत्पुरुभोजो अस्मे।
मा नो बर्हिः पुरुषता निदे कर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ८॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३-७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

उदु ज्योतिरमृतं विश्वजन्यं विश्वानरः सविता देवो अश्रेत्।
कृत्वा देवानामजनिष्ट चक्षुराविरकर्भुवनं विश्वमुषाः॥ १॥
प्र मे पन्था देवयानाः अदृश्रन्नमर्धन्तो वसुभिरिष्कृतासः।
अभूदु केतुरुषसः पुरस्तात्प्रतीच्यागादधि हर्म्येभ्यः॥ २॥
तानीदहानि बहुलान्यासन्या प्राचीनमुदिता सूर्यस्य।
यतः परि जारइवाचरन्त्युषो ददृक्षे न पुनर्यतीव॥ ३॥
त इद्देवानां सधमाद आसन्नृतावानः कवयः पूर्व्यासः।
गूळ्हं ज्योतिः पितरो अन्वविन्दन्त्सत्यमन्त्रा अजनयन्नुषासम्॥ ४॥
समान ऊर्वे अधि संगतासः सं जानते न यतन्ते मिथस्ते।
ते देवानां न मिनन्ति व्रतान्यमर्धन्तो वसुभिर्यादमानाः॥ ५॥

CC-0:Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति त्वा स्तोमैरीळते वसिष्ठा उषर्बुधः सुभगे तुष्टुवांसः।
गवां नेत्री वाजपत्नी न उच्छोषः सुजाते प्रथमा जरस्व॥ ६॥
एषा नेत्री राधसः सूनृतानामुषा उच्छन्ती रिभ्यते वसिष्ठैः।
दीर्घश्रुतं रयिमस्मे दधाना यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २-५ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः धैवतः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

उषो रुरुचे युवतिर्न योषा विश्वं जीवं प्रसुवन्ती चरायै।
अभूदग्निः समिधे मानुषाणामकर्ज्योतिर्बाधमाना तमांसि॥ १॥
विश्वं प्रतीची सुप्रथा उदस्थाद्रुशद्वासो बिभ्रती शुक्रमश्वैत्।
हिरण्यवर्णा सुदृशीकसंदृग्गवां माता नेत्र्यह्नामरोचि॥ २॥
देवानां चक्षुः सुभगा वहन्ती श्वेतं नयन्ती सुदृशीकमश्वम्।
उषा अदर्शि रश्मिभिर्व्यक्ता चित्रामघा विश्वमनु प्रभूता॥ ३॥
अन्तिवामा दूरे अमित्रमुच्छोर्वीं गव्यूतिमभयं कृधी नः।
यावय द्वेष आ भरा वसूनि चोदय राधो गृणते मघोनि॥ ४॥
अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिर्वि भाह्युषो देवि प्रतिरन्ती न आयुः।
इषं च नो दधती विश्ववारे गोमदश्वावद्रथवच्च राधः॥ ५॥
यां त्वा दिवो दुहितर्वर्धयन्त्युषः सुजाते मतिभिर्वसिष्ठाः।
सास्मासु धा रयिमृष्वं बृहन्तं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन्नूर्ध्वा अस्या अञ्जयो वि श्रयन्ते।
उषो अर्वाचा बृहता रथेन ज्योतिष्मता वाममस्मभ्यं वक्षि॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः प्रति विप्रासो मतिभिर्गृणन्तः।
उषा याति ज्योतिषा बाधमाना विश्वा तमांसि दुरितापं देवी ॥ २ ॥
एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन्पुरस्ताज्ज्योतिर्यच्छन्तीरुषसो विभातीः।
अजीजनन्त्सूर्यं यज्ञमग्निमपाचीनं तमो अगादजुष्टम् ॥ ३ ॥
अचैति दिवो दुहिता मघोनी विश्वे पश्यन्त्युषसं विभातीम्।
आस्थाद्रथं स्वधया युज्यमानमा यमश्वासः सुयुजो वहन्ति ॥ ४ ॥
प्रति त्वाद्य सुमनसो बुधन्तास्माकासो मघवानो वयं च।
तिल्विलायध्वमुषसो विभातीर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

व्युषा आवः पथ्या३ जनानां पञ्च क्षितीर्मानुषीर्बोधयन्ती।
सुसन्दृग्भिरुक्षभिर्भानुमश्रेद्वि सूर्यो रोदसी चक्षसावः ॥ १ ॥
व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून्विशो न युक्ता उषसो यतन्ते।
सं ते गावस्तम आ वर्तयन्ति ज्योतिर्यच्छन्ति सवितेव बाहू ॥ २ ॥
अभूदुषा इन्द्रतमा मघोन्यजीजनत्सुविताय श्रवांसि ।
वि दिवो देवी दुहिता दधात्यङ्गिरस्तमा सुकृते वसूनि ॥ ३ ॥
तावदुषो राधो अस्मभ्यं रास्व यावत्स्तोतृभ्यो अरदो गृणाना।
यां त्वा जज्ञुर्वृषभस्या रवेण वि दृळ्हस्य दुरो अद्रेरौर्णोः ॥ ४ ॥
देवंदेवं राधसे चोदयन्त्यस्मद्र्यक्सूनृता ईरयन्ती ।
व्युच्छन्ती नः सनये धियो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठा गीर्भिर्विप्रासः प्रथमा अबुध्रन्।
विवर्तयन्तीं रजसी समन्ते आविष्कृण्वतीं भुवनानि विश्वा ॥ १ ॥
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना गूढ्वी तमो ज्योतिषोषा अबोधि।
अग्र एति युवतिरह्नयाणा प्राचिकितत्सूर्यं यज्ञमग्निम् ॥ २ ॥
अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

इति पञ्चमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ पञ्चमाष्टके षष्ठोऽध्यायः

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—१ विराड्बृहती; २ भुरिग्बृहती; ३ आर्षी-बृहती; ४, ६ आर्षीभुरिग्बृहती; ५ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

प्रत्यु अदर्श्यायत्युच्छन्ती दुहिता दिवः ।
अपो महि व्ययति चक्षसे तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥ १ ॥
उदुस्रियाः सृजते सूर्यः सचाँ उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि ॥ २ ॥
प्रति त्वा दुहितर्दिव उषो जीरा अभुत्स्महि ।
या वहसि पुरु स्पार्हं वनन्वति रत्नं न दाशुषे मयः ॥ ३ ॥
उच्छन्ती या कृणोषि महना महि प्रख्यै देवि स्वर्दृशे।
तस्यास्ते रत्नभाज ईमहे वयं स्याम मातुर्न सूनवः ॥ ४ ॥
तच्चित्रं राध आ भरोषो यद्दीर्घश्रुत्तमम् ।
यत्ते दिवो दुहितर्मर्तभोजनं तद्रासस्व भुनजामहै ॥ ५ ॥
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनं वाजाँ अस्मभ्यं गोमतः।
चोदयित्री मघोनः सूनृतावत्युषा उच्छदप स्रिधः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २, ६, ७, ९ निचृज्जगती; ३ आर्चीभुरिग्जगती; ४, ५, १० आर्षीविराड्जगती; ८ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

इन्द्रावरुणा युवमध्वराय नो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।
दीर्घप्रयज्युमति यो वनुष्यति वयं जयेम पृतनासु दूढ्यः ॥ १ ॥
सम्राळुन्यः स्वराळुन्य उच्यते वां महान्ताविन्द्रावरुणा महावसू ।
विश्वे देवासः परमे व्योमनि सं वामोजो वृषणा सं बलं दधुः ॥ २ ॥
अन्वपां खान्यतृन्तमोजसा सूर्यमैरयतं दिवि प्रभुम् ।
इन्द्रावरुणा मदे अस्य मायिनोऽपिन्वतमपितः पिन्वतं धियः ॥ ३ ॥
युवामिद्युत्सु पृतनासु वह्नयो युवां क्षेमस्य प्रसवे मितज्ञवः ।
ईशाना वस्व उभयस्य कारव इन्द्रावरुणा सुहवा हवामहे ॥ ४ ॥
इन्द्रावरुणा यदिमानि चक्रथुर्विश्वा जातानि भुवनस्य मज्मना ।
क्षेमेण मित्रो वरुणं दुवस्यति मरुद्भिरुग्रः शुभमन्य ईयते ॥ ५ ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

महे शुल्काय वरुणस्य नु त्विष ओजो मिमाते ध्रुवमस्य यत्स्वम् ।
अजामिमन्यः श्नथयन्तमातिरद्भ्रेभिरन्यः प्र वृणोति भूयसः ॥ ६ ॥
न तमंहो न दुरितानि मर्त्यमिन्द्रावरुणा न तपः कुतश्चन ।
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वरं न तं मर्तस्य नशते परिह्वृतिः ॥ ७ ॥
अर्वाङ् नरा दैव्येनावसा गतं शृणुतं हवं यदि मे जुजोषथः ।
युवोर्हि सख्यमुत वा यदाप्यं मार्डीकमिन्द्रावरुणा नि यच्छतम् ॥ ८ ॥
अस्माकमिन्द्रावरुणा भरेभरे पुरोयोधा भवतं कृष्टयोजसा ।
यद्वां हवन्त उभये अधि स्पृधि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु ॥ ९ ॥
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।
अवध्रं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ३, ९ विराड्जगती; २, ४, ६ निचृज्जगती; ५ आर्चीजगती; ७, ८, १० आर्षीजगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

युवां नरा पश्यमानास आप्यं प्राचा गव्यन्तः पृथुशर्वो ययुः ।
दासा च वृत्रा हतमार्याणि च सुदासमिन्द्रावरुणावसावतम् ॥ १ ॥
यत्रा नरः समयन्ते कृतध्वजो यस्मिन्नाजा भवति किं चन प्रियम् ।
यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्दृशस्तत्रा न इन्द्रावरुणाधि वोचतम् ॥ २ ॥
सं भूम्या अन्तां ध्वसिरा अदृक्षतेन्द्रावरुणा दिवि घोष आरुहत् ।
अस्थुर्जनानामुप मामरातयोऽर्वागवसा हवनश्रुता गतम् ॥ ३ ॥
इन्द्रावरुणा वधनाभिरप्रति भेदं वन्वन्ता प्र सुदासमावतम् ।
ब्रह्माण्येषां शृणुतं हवीमनि सत्या तृत्सूनामभवत्पुरोहितिः ॥ ४ ॥
इन्द्रावरुणावभ्या तपन्ति माघान्यर्यो वनुषामरातयः ।
युवं हि वस्व उभयस्य राजथोऽध स्मा नोऽवतं पार्ये दिवि ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

युवां हवन्त उभयास आजिष्विन्द्रं च वस्वो वरुणं च सातये ।
यत्र राजभिर्दशभिर्निबाधितं प्र सुदासमावतं तृत्सुभिः सह ॥ ६ ॥
दश राजानः समिता अयज्यवः सुदासमिन्द्रावरुणा न युयुधुः ।
सत्या नृणामद्मसदामुपस्तुतिर्देवा एषामभवन्देवहूतिषु ॥ ७ ॥
दाशराज्ञे परियत्ताय विश्वतः सुदास इन्द्रावरुणावशिक्षतम् ।
शिवित्यञ्चो यत्र नमसा कपर्दिनो धिया धीवन्तो असपन्त तृत्सवः ॥ ८ ॥
वृत्राण्यन्यः समिथेषु जिघ्नते व्रतान्यन्यो अभि रक्षते सदा ।
हवामहे वां वृषणा सुवृक्तिभिरस्मे इन्द्रावरुणा शर्म यच्छतम् ॥ ९ ॥
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।
अवध्रं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, २, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

आ वां राजानावध्वरे ववृत्यां हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।
प्र वां घृताची बाह्वोर्दधाना परि त्मना विषुरूपा जिगाति ॥ १ ॥
युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति द्यौर्यौ सेतृभिररज्जुभिः सिनीथः ।
परि नो हेळो वरुणस्य वृज्या उरुं न इन्द्रः कृणवदु लोकम् ॥ २ ॥
कृतं नो यज्ञं विदथेषु चारुं कृतं ब्रह्माणि सूरिषु प्रशस्ता ।
उपो रयिर्देवजूतो न एतु प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेतम् ॥ ३ ॥
अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववारं रयिं धत्तं वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।
प्र य आदित्यो अनृता मिनात्यमिता शूरो दयते वसूनि ॥ ४ ॥
इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये तूतुजाना ।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ५ ॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१, ४ आर्षीत्रिष्टुप्; २, ३, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

पुनीषे वामरक्षसं मनीषां सोममिन्द्राय वरुणाय जुह्वत् ।
घृतप्रतीकामुषसं न देवीं ता नो यामन्नुरुष्यताभीके ॥ १ ॥
स्पर्धन्ते वा उ देवहूये अत्र येषु ध्वजेषु दिद्यवः पतन्ति ।
युवं तॉं इन्द्रावरुणावमित्रान्हतं पराचः शर्वा विषूचः ॥ २ ॥
आपश्चिद्धि स्वयशसः सदःसु देवीरिन्द्रं वरुणं देवता धुः ।
कृष्टीरन्यो धारयति प्रविक्ता वृत्राण्यन्यो अप्रतीनि हन्ति ॥ ३ ॥
स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु होता य आदित्य शवसा वां नमस्वान् ।
आववर्तदवसे वां हविष्मानसदित्स सुविताय प्रयस्वान् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये तूतुजाना।
सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—वरुणः॥ छन्दः—१, ३-५, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ६ आर्षीत्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

धीरा त्वस्य महिना जनूंषि वि यस्तस्तम्भ रोदसी चिदुर्वी।
प्र नाकमृष्वं नुनुदे बृहन्तं द्विता नक्षत्रं पप्रथच्च भूम॥ १॥
उत स्वया तन्वा३ सं वदे तत्कदा न्व१न्तर्वरुणे भुवानि।
किं मे हव्यमहृणानो जुषेत कदा मृळीकं सुमना अभि ख्यम्॥ २॥
पृच्छे तदेनो वरुण दिदृक्षूपो एमि चिकितुषो विपृच्छम्।
समानमिन्मे कवयश्चिदाहुरयं हु तुभ्यं वरुणो हृणीते ॥ ३॥
किमाग आस वरुण ज्येष्ठं यत्स्तोतारं जिघांससि सखायम्।
प्र तन्मे वोचो दूळभ स्वधावोऽव त्वानेना नमसा तुर इयाम्॥ ४॥
अव द्रुग्धानि पित्र्या सृजा नोऽव या वयं चकृमा तनूभिः।
अव राजन्पशुतृपं न तायुं सृजा वत्सं न दाम्नो वसिष्ठम्॥ ५॥
न स स्वो दक्षो वरुण धृतिः सा सुरा मन्युर्विभीदको अचित्तिः।
अस्ति ज्यायान्कनीयस उपारे स्वप्नश्चनेदनृतस्य प्रयोता ॥ ६॥
अरं दासो न मीळ्हुषे कराण्यहं देवाय भूर्णयेऽनागाः।
अचेतयदचितो देवो अर्यो गृत्सं राये कवितरो जुनाति॥ ७॥
अयं सु तुभ्यं वरुण स्वधावो हृदि स्तोम उपश्रितश्चिदस्तु।
शं नः क्षेमे शमु योगे नो अस्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ८॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—वरुणः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३, ५ आर्षी-त्रिष्टुप्; ४, ६, ७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

रदत्पथो वरुणः सूर्याय प्रार्णांसि समुद्रियो नदीनाम् ।
सर्गो न सृष्टो अर्वतीर्ऋताय॒ञ्चकार महीरवनीरहभ्यः ॥ १ ॥
आत्मा ते वातो रज आ नवीनोत्पशुर्न भूर्णिर्यवसे ससवान् ।
अन्तर्महि बृहती रोदसीमे विश्वा ते धाम वरुण प्रियाणि ॥ २ ॥
परि स्पशो वरुणस्य स्मदिष्टा उभे पश्यन्ति रोदसी सुमेके ।
ऋतावानः कवयो यज्ञधीराः प्रचेतसो य इषयन्त मन्म ॥ ३ ॥
उवाच मे वरुणो मेधिराय त्रिः सप्त नामाघ्न्या बिभर्ति ।
विद्वान्पदस्य गुह्या न वोचद्युगाय विप्र उपराय शिक्षन् ॥ ४ ॥
तिस्रो द्यावो निहिता अन्तरस्मिन्तिस्रो भूमीरुपराः षड्विधानाः ।
गृत्सो राजा वरुणश्चक्र एतं दिवि प्रेङ्खं हिरण्ययं शुभे कम् ॥ ५ ॥
अव सिन्धुं वरुणो द्यौरिव स्याद्द्रप्सो न श्वेतो मृगस्तुविष्मान् ।
गम्भीरशंसो रजसो विमानः सुपारक्षत्रः सतो अस्य राजा ॥ ६ ॥
यो मृळयाति चक्रुषे चिदागो वयं स्याम वरुणे अनागाः ।
अनु व्रतान्यदितेर्ऋधन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१-३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५, ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

प्र शुन्ध्युवं वरुणाय प्रेष्ठां मतिं वसिष्ठ मीळ्हुषे भरस्व ।
य ईमर्वाञ्चं करते यजत्रं सहस्रामघं वृषणं बृहन्तम् ॥ १ ॥
अधा न्वस्य संदृशं जगन्वानग्नेरनीकं वरुणस्य मंसि ।
स्वर्यदश्मन्नधिपा उ अन्धोऽभि मा वपुर्दृशये निनीयात् ॥ २ ॥
आ यद्रुहाव वरुणश्च नावं प्र यत्समुद्रमीरयाव मध्यम् ।
अधि यदपां स्नुभिश्चराव प्र प्रेङ्ख ईङ्खयावहै शुभे कम् ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसिष्ठं ह वरुणो नाव्याधादृषिं चकार स्वपा महोभिः ।
स्तोतारं विप्रः सुदिनत्वे अह्नां यान्नु द्यावस्ततनन्यादुषासः ॥ ४ ॥
क्व१ त्यानि नौ सख्या बभूवुः सचावहे यदवृकं पुरा चित् ।
बृहन्तं मानं वरुण स्वधावः सहस्रद्वारं जगमा गृहं ते ॥ ५ ॥
य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः सन्त्वामागांसि कृणवत्सखा ते ।
मा त एनांस्वन्तो यक्षिन्भुजेम यन्धि ष्मा विप्रः स्तुवते वरूथम् ॥ ६ ॥
ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु क्षियन्तो व्य१स्मत्पाशं वरुणो मुमोचत् ।
अवो वन्वाना अदितेरुपस्थाद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१-४ आर्षीगायत्री; ५ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१-४ षड्जः; ५ निषादः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मो षु वरुण मृन्मयं गृहं राजन्नहं गमम् । मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ १ ॥
यदेमि प्रस्फुरन्निव दृतिर्न ध्मातो अद्रिवः । मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ २ ॥
क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे । मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ ३ ॥
अपां मध्ये तस्थिवांसं तृष्णाविदज्जरितारम् । मृळा सुक्षत्र मृळय ॥ ४ ॥
यत्किं चेदं वरुण दैव्ये जनेऽभिद्रोहं मनुष्याश्चरामसि ।
अचित्ती यत्तव धर्मा युयोपिम मा नस्तस्मादेनसो देव रीरिषः ॥ ५ ॥

षष्ठोऽनुवाकः

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-४ वायुः; ५-७ इन्द्रवायू ॥ छन्दः—१, २, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४-६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वामध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः ।
वह वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय ॥ १ ॥
ईशानाय प्रहुतिं यस्त आनट् शुचिं सोमं शुचिपास्तुभ्यं वायो ।
कृणोषि तं मर्त्येषु प्रशस्तं जातोजातो जायते वाज्यस्य ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणा धाति देवम्।
अधं वायुं नियुतः सश्चत स्वा उत श्वेतं वसुधितिं निरेके॥ ३॥
उच्छन्नुषसः सुदिना अरिप्रा उरु ज्योतिर्विविदुर्दीध्यानाः।
गव्यं चिदूर्वमुशिजो वि वव्रुस्तेषामनु प्रदिवः सस्रुरापः॥ ४॥
ते सत्येन मनसा दीध्यानाः स्वेन युक्तासः क्रतुना वहन्ति।
इन्द्रवायू वीरवाहं रथं वामीशानयोरभि पृक्षः सचन्ते॥ ५॥
ईशानासो ये दधते स्वर्णो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यैः।
इन्द्रवायू सूरयो विश्वमायुरर्वद्भिर्वीरैः पृतनासु सह्युः॥ ६॥
अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१, ३ वायुः; २, ४-७ इन्द्रवायू॥ छन्दः—१, ४, ७ विराट् त्रिष्टुप्; २, ५, ६ आर्षीत्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

कुविद्दङ्ग नमसा ये वृधासः पुरा देवा अनवद्यास आसन्।
ते वायवे मनवे बाधितायावासयन्नुषसं सूर्येण॥ १॥
उशन्ता दूता न दभाय गोपा मासश्च पाथः शरदश्च पूर्वीः।
इन्द्रवायू सुष्टुतिर्वीमियाना मार्डीकमीट्टे सुवितं च नव्यम्॥ २॥
पीवोअन्नाँ रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः।
ते वायवे समनसो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः॥ ३॥
यावत्तरस्तन्वो३ यावदोजो यावन्नरश्चक्षसा दीध्यानाः।
शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे इन्द्रवायू सदतं बर्हिरेदम्॥ ४॥
नियुवाना नियुतः स्पार्हवीरा इन्द्रवायू सरथं यातमर्वाक्।
इदं हि वां प्रभृतं मध्वो अग्रमधा प्रीणाना वि मुमुक्तमस्मे॥ ५॥
या वां शतं नियुतो याः सहस्रमिन्द्रवायू विश्ववाराः सचन्ते।
आभिर्यातं सुविदत्राभिरर्वाक्पातं नरा प्रतिभृतस्य मध्वः॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१, ३-५ वायुः; २ इन्द्रवायू॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २-४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ आर्षीत्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

आ वायो भूष शुचिपा उप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार।
उपो ते अन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयम्॥ १॥
प्र सोता जीरो अध्वरेष्वस्थात्सोममिन्द्राय वायवे पिबध्यै।
प्र यद्वां मध्वो अग्रियं भरन्त्यध्वर्यवो देवयन्तः शचीभिः॥ २॥
प्र याभिर्यासि दाश्वांसमच्छा नियुद्भिर्वायविष्टये दुरोणे।
नि नो रयिं सुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्व्यं च राधः॥ ३॥
ये वायव इन्द्रमादनास आदेवासो नितोशनासो अर्यः।
घ्नन्तो वृत्राणि सूरिभिः ष्याम सासह्वांसो युधा नृभिरमित्रान्॥ ४॥
आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरं सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ५॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्राग्री॥ छन्दः—१, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ आर्षीत्रिष्टुप्; ३, ४, ६, ७ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

शुचिं नु स्तोमं नवजातमद्येन्द्राग्नी वृत्रहणा जुषेथाम्।
उभा हि वां सुहवा जोहवीमि ता वाजं सद्य उशते धेष्ठा॥ १॥
ता सानसी शवसाना हि भूतं साकंवृधा शवसा शूशुवांसा।
क्षयन्तौ रायो यवसस्य भूरेः पृङ्क्तं वाजस्य स्थविरस्य घृष्वेः॥ २॥
उपो ह यद्विदथे वाजिनो गुर्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः।
अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नरस्ते॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ईट्टे रयिं यशसं पूर्वभाजम् ।
इन्द्राग्नी वृत्रहणा सुवज्रा प्र नो नव्येभिस्तिरतं देष्णैः ॥ ४ ॥
सं यन्महीं मिथती स्पर्धमाने तनूरुचा शूरसाता यतैते ।
अदेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा हतं सोमसुता जनेन ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

इमामु षु सोमसुतिमुप न एन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ।
नू चिद्धि परिमम्नाथे अस्माना वां शश्वद्भिर्ववृतीय वाजैः ॥ ६ ॥
सो अग्न एना नमसा समिद्धोऽच्छा मित्रं वरुणमिन्द्रं वोचेः ।
यत्सीमागश्चकृमा तत्सु मृळ तदर्यमादितिः शिश्रथन्तु ॥ ७ ॥
एता अग्न आशुषाणास इष्टीर्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान् ।
मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ८ ॥

[९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, ३, ८, १० आर्षीनिचृद्गायत्री; २, ४-७, ९, ११ आर्षीगायत्री; १२ आर्षीनिचृदनुष्टुप् ॥
स्वरः—१-११ षड्जः; १२ गान्धारः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः । अभ्राद् वृष्टिरिवाजनि ॥ १ ॥
शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः । ईशाना पिप्यतं धियः ॥ २ ॥
मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये । मा नो रीरधतं निदे ॥ ३ ॥
इन्द्रे अग्ना नमो बृहत्सुवृक्तिमेरयामहे । धिया धेना अवस्यवः ॥ ४ ॥
ता हि शश्वन्त ईळत इत्था विप्रास ऊतये । सबाधो वाजसातये ॥ ५ ॥
ता वां गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वन्तो हवामहे । मेधसाता सनिष्यवः ॥ ६ ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

इन्द्राग्नी अवसा गतमस्मभ्यं चर्षणीसहा । मा नो दुःशंस ईशत ॥ ७ ॥
मा कस्य नो अरुरुषो धूर्तिः प्रणङ्मर्त्यस्य । इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ॥ ८ ॥
गोमद्धिरण्यवद्वसु यद्वामश्वावदीमहे । इन्द्राग्नी तद्वनेमहि ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्सोम आ सुते नर इन्द्राग्नी अजोहवुः। सप्तीवन्ता सपर्यवः ॥ १० ॥
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा। आङ्गूषैराविवासतः ॥ ११ ॥
ताविद्युःशंसं मर्त्यं दुर्विद्वांसं रक्षस्विनम् ।
आभोगं हन्मना हतमुदधिं हन्मना हतम् ॥ १२ ॥

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१, २, ४-६ सरस्वती; ३ सरस्वान्॥ छन्दः—१ पादनिचृत् त्रिष्टुप्; २, ५, ६ आर्षीत्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९ ॥

प्र क्षोदसा धायसा सस्र एषा सरस्वती धरुणमायसी पूः।
प्रबाबधाना रथ्येव याति विश्वा अपो महिना सिन्धुरन्याः॥ १ ॥
एकाचेतत्सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात्।
रायश्चेतन्ती भुवनस्य भूरेर्घृतं पयो दुदुहे नाहुषाय॥ २ ॥
स वावृधे नर्यो योषणासु वृषा शिशुर्वृषभो यज्ञियासु।
स वाजिनं मघवद्भ्यो दधाति वि सातये तन्वं मामृजीत॥ ३ ॥
उत स्या नः सरस्वती जुषाणोप श्रवत्सुभगा यज्ञे अस्मिन्।
मितज्ञुभिर्नमस्यैरियाना राया युजा चिदुत्तरा सखिभ्यः॥ ४ ॥
इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः प्रति स्तोमं सरस्वति जुषस्व।
तव शर्मन्प्रियतमे दधाना उप स्थेयाम शरणं न वृक्षम्॥ ५ ॥
अयमु ते सरस्वति वसिष्ठो द्वारावृतस्य सुभगे व्यावः।
वर्धा शुभ्रे स्तुवते रासि वाजान्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६ ॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—१-३ सरस्वती; ४-६ सरस्वान्॥ छन्दः—१ आर्चीभुरिग्बृहती; २ आर्षीभुरिग्बृहतीः ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ निचृद्गायत्री; ६ आर्षीगायत्री॥ स्वरः—१, २ मध्यमः; ३ पञ्चमः; ४-६ षड्जः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २० ॥

बृहदु गायिषे वचोऽसुर्या नदीनाम् ।
सरस्वतीमिन्महया सुवृक्तिभिः स्तोमैर्वसिष्ठ रोदसी ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उभे यत्ते महिना शुभ्रे अन्धसी अधिक्षियन्ति पूरवः ।
सा नो बोध्यवित्री मरुत्सखा चोद राधो मघोनाम् ॥ २ ॥
भद्रमिद्भद्रा कृणवत्सरस्वत्यकवारी चेतति वाजिनीवती ।
गृणाना जमदग्निवत्स्तुवाना च वसिष्ठवत् ॥ ३ ॥
जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्तः सुदानवः । सरस्वन्तं हवामहे ॥ ४ ॥
ये ते सरस्व ऊर्मयो मधुमन्तो घृतश्चुतः । तेभिर्नोऽविता भव ॥ ५ ॥
पीपिवांसं सरस्वतः स्तनं यो विश्वदर्शतः । भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥ ६ ॥

[९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१ इन्द्रः; २, ४-८ बृहस्पतिः; ३, ९ इन्द्राब्रह्मणस्पती; १० इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१ आर्षीत्रिष्टुप्; २, ४, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ५, ६, ८-१० निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

यज्ञे दिवो नृषदने पृथिव्या नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
इन्द्राय यत्र सवनानि सुन्वे गमन्मदाय प्रथमं वयश्च ॥ १ ॥
आ दैव्या वृणीमहेऽवांसि बृहस्पतिर्नो मह आ सखायः ।
यथा भवेम मीळ्हुषे अनागा यो नो दाता परावतः पितेव ॥ २ ॥
तमु ज्येष्ठं नमसा हविर्भिः सुशेवं ब्रह्मणस्पतिं गृणीषे ।
इन्द्रं श्लोको महि दैव्यः सिषक्तु यो ब्रह्मणो देवकृतस्य राजा ॥ ३ ॥
स आ नो योनिं सदतु प्रेष्ठो बृहस्पतिर्विश्ववारो यो अस्ति ।
कामो रायः सुवीर्यस्य तं दात्पर्षन्नो अति सश्चतो अरिष्टान् ॥ ४ ॥
तमा नो अर्कममृताय जुष्टमिमे धासुरमृतासः पुराजाः ।
शुचिक्रन्दं यजतं पस्त्यानां बृहस्पतिमनर्वाणं हुवेम ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

तं शग्मासो अरुषासो अश्वा बृहस्पतिं सहवाहो वहन्ति ।
सहस्रचित्रमस्य नीलवत्सधस्थं नभो न रूपमरुषं वसानाः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स हि शुचिः शतपवित्रः स शुन्ध्युर्हिरण्यवाशीरिषिरः स्वर्षाः।
बृहस्पतिः स स्वावेश ऋष्वः पुरू सखिभ्य आसुतिं करिष्ठः ॥ ७ ॥
देवी देवस्य रोदसी जनित्री बृहस्पतिं वावृधतुर्महित्वा।
दक्षाय्याय दक्षता सखायः करद् ब्रह्मणे सुतरा सुगाधा ॥ ८ ॥
इयं वां ब्रह्मणस्पते सुवृक्तिर्ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे अकारि।
अविष्टं धियो जिगृतं पुरन्धीर्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ॥ ९ ॥
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ १० ॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-६ इन्द्रः; ७ इन्द्राबृहस्पती ॥ छन्दः—१, २, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ त्रयविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।
गौराद्वेदीयाँ अवपानमिन्द्रो विश्वाहेह्याति सुतसोममिच्छन् ॥ १ ॥
यद्ध्यधिषे प्रदिवि चार्वन्नं दिवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि ।
उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान्पाहि सोमान् ॥ २ ॥
जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र तै माता महिमानमुवाच ।
एन्द्र पप्राथोर्वन्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकर्थ ॥ ३ ॥
यद्योधया महतो मन्यमानान्त्साक्षाम ताम्बाहुभिः शाशदानान् ।
यद्वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयाजिं सौश्रवसं जयेम ॥ ४ ॥
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार ।
यदेददेवीरसहिष्ट माया अथाभवत्केवलः सोमो अस्य ॥ ५ ॥
तवेदं विश्वमभितः पशव्यं यत्पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य ।
गवामसि गोपतिरेक इन्द्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः ॥ ६ ॥
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-३, ७ विष्णुः; ४-६ इन्द्राविष्णू ॥ छन्दः—१, ६ विराट् त्रिष्टुप्; २, ३ त्रिष्टुप्; ४, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

परो मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्नुवन्ति।
उभे ते विद्म रजसी पृथिव्या विष्णो देव त्वं परमस्य वित्से ॥ १ ॥
न ते विष्णो जायमानो न जातो देव महिम्नः परमन्तमाप।
उदस्तभ्ना नाकमृष्वं बृहन्तं दाधर्थ प्राचीं ककुभं पृथिव्याः ॥ २ ॥
इरावती धेनुमती हि भूतं सूयवसिनी मनुषे दशस्या।
व्यस्तभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः ॥ ३ ॥
उरुं यज्ञाय चक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम्।
दासस्य चिद् वृषशिप्रस्य माया जघ्नथुर्नरा पृतनाज्येषु ॥ ४ ॥
इन्द्राविष्णू दृंहिताः शम्बरस्य नव पुरो नवतिं च श्नथिष्टम्।
शतं वर्चिनः सहस्रं च साकं हथो अप्रत्यसुरस्य वीरान् ॥ ५ ॥
इयं मनीषा बृहती बृहन्तोरुक्रमा तवसा वर्धयन्ती।
ररे वां स्तोमं विदथेषु विष्णो पिन्वतमिषो वृजनेष्विन्द्र ॥ ६ ॥
वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ७ ॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—१, २, ५-७ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ आर्षीत्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

नू मर्तो दयते सनिष्यन्यो विष्णव उरुगायाय दाशत्।
प्र यः सत्राचा मनसा यजात एतावन्तं नर्यमाविवासात् ॥ १ ॥
त्वं विष्णो सुमतिं विश्वजन्यामप्रयुतामेवयावो मतिं दाः।
पवीर्यो यथा नः सुवितस्य भूरेरश्वावतः पुरुश्चन्द्रस्य रायः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिर्देवः पृथिवीमेष एतां वि चक्रमे शतर्चसं महित्वा।
प्र विष्णुरस्तु तवसस्तवीयान्त्वेषं ह्यस्य स्थविरस्य नाम॥ ३॥
वि चक्रमे पृथिवीमेष एतां क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दशस्यन्।
ध्रुवासो अस्य कीरयो जनास उरुक्षितिं सुजनिमा चकार॥ ४॥
प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट नामार्यः शंसामि वयुनानि विद्वान्।
तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान्क्षयन्तमस्य रजसः पराके॥ ५॥
किमित्ते विष्णो परिचक्ष्यं भूत्प्र यद्ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि।
मा वर्पो अस्मदप गूह एतद्यदन्यरूपः समिथे बभूथ॥ ६॥
वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ७॥

इति पञ्चमाष्टके षष्ठोऽध्यायः॥

अथ पञ्चमाष्टके सप्तमोऽध्यायः

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः कुमारो वाग्नेयः॥ देवता—पर्जन्यः॥ छन्दः—१, ६ त्रिष्टुप्; २, ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

तिस्रो वाचः प्र वद ज्योतिरग्रा या एतदुह्रे मधुदोघमूधः।
स वत्सं कृण्वन्गर्भमोषधीनां सद्यो जातो वृषभो रोरवीति॥ १॥
यो वर्धन ओषधीनां यो अपां यो विश्वस्य जगतो देव ईशे।
स त्रिधातु शरणं शर्म यंसत्त्रिवर्तु ज्योतिः स्वभिष्ट्यस्मे॥ २॥
स्तरीरु त्वद्भवति सूत उ त्वद्यथावशं तन्वं चक्र एषः।
पितुः पयः प्रति गृभ्णाति माता तेन पिता वर्धते तेन पुत्रः॥ ३॥
यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुस्तिस्रो द्यावस्त्रेधा सस्रुरापः।
त्रयः कोशास उपसेचनासो मध्वः श्चोतन्त्यभितो विरप्शम्॥ ४॥
इदं वचः पर्जन्याय स्वराजे हृदो अस्त्वन्तरं तज्जुजोषत्।
मयोभुवो वृष्टयः सन्त्वस्मे सुपिप्पला ओषधीर्देवगोपाः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स रेतोधा वृषभः शश्वतीनां तस्मिन्नात्मा जगतस्तस्थुषश्च।
तन्म ऋतं पातु शतशारदाय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ६ ॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः कुमारो वाग्नेयः ॥ देवता—पर्जन्यः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २ पादनिचृद्गायत्री; ३ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

पर्जन्यायं प्र गायत दिवस्पुत्रायं मीळहुषे। स नो यवसमिच्छतु ॥ १ ॥
यो गर्भमोषधीनां गवां कृणोत्यर्वताम्। पर्जन्यः पुरुषीणाम् ॥ २ ॥
तस्मा इदास्ये हविर्जुहोता मधुमत्तमम्। इळां नः संयतं करत् ॥ ३ ॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—मण्डूकाः ॥ छन्दः—१ आर्ष्यनुष्टुप्; २, ६-८, १० आर्षी-त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ९ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ गान्धार; २-१० धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ॥ १ ॥
दिव्या आपो अभि यदेनमायन्दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम्।
गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वग्नुरत्रा समेति ॥ २ ॥
यदीमेनाँ उशतो अभ्यवर्षीत्तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम्।
अखंखलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति ॥ ३ ॥
अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनोरपां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम्।
मण्डूको यदभिवृष्टः कनिष्क्रन्पृश्निः संपृङ्क्ते हरितेन वाचम् ॥ ४ ॥
यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः।
सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत्सुवाचो वदथनाध्यप्सु ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम्।
समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः।
संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूव ॥ ७ ॥
ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम्।
अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित् ॥ ८ ॥
देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य ऋतुं नरो न प्र मिनन्त्येते ।
संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तपा घर्मा अश्नुवते विसर्गम् ॥ ९ ॥
गोमायुरदादजमायुरदात्पृश्निरदाद्धरितो नो वसूनि ।
गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ॥ १० ॥

[१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—१-७, १५, २५ इन्द्रासोमौ रक्षोहणौ; ८, १६, १९-२२, २४ इन्द्र; ९, १२, १३ सोमः; १०, १४ अग्निः; ११ देवाः; १७ ग्रावाणः; १८ मरुतः; २३[१] वसिष्ठः; २३[२] पृथिव्यन्तरिक्षे ॥ छन्दः—१, ४, ६, ७ विराड्जगती; २ आर्षीजगती; ३, ५, १८, २१ निचृज्जगती; २३ आर्चीभुरिग्जगती; ८, १०, ११, १३-१५, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; ९ आर्षीत्रिष्टुप्; १२, १६ विराट्त्रिष्टुप्; १९, २०, २२ त्रिष्टुप्; २४ याजुषी-विराट्त्रिष्टुप्; २५ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-७, १८, २१, २३ निषादः; ८-१७, १९, २०, २२, २४ धैवतः; २५ गान्धारः ॥

अथ षञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उब्जतं न्यर्पयतं वृषणा तमोवृधः।
परा शृणीतमचितो न्योषतं हतं नुदेथां नि शिशीतमत्रिणः ॥ १ ॥
इन्द्रासोमा समघशंसमभ्यघं तपुर्यस्तु चरुरग्निवाँइव ।
ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने ॥ २ ॥
इन्द्रासोमा दुष्कृतो वव्रे अन्तरनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम्।
यथा नातः पुनरेकश्चनोदयत्तद्वामस्तु सहसे मन्युमच्छवः ॥ ३ ॥
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो वधं सं पृथिव्या अघशंसाय तर्हणम्।
उत्तक्षतं स्वर्यं पर्वतेभ्यो येन रक्षो वावृधानं निजूर्वथः ॥ ४ ॥
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पर्यग्नितप्तेभिर्युवमश्महन्मभिः ।
तपुर्वधेभिरजरेभिरत्रिणो नि पर्शाने विध्यतं यन्तु निस्वरम् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

इन्द्रासोमा परि वां भूतु विश्वत इयं मतिः कक्ष्याश्वेव वाजिना ।
यां वां होत्रां परिहिनोमि मेधयेमा ब्रह्माणि नृपतीव जिन्वतम् ॥ ६ ॥
प्रति स्मरेथां तुजयद्भिरेवैर्हतं द्रुहो रक्षसो भङ्गुरावतः ।
इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगं भूद्यो नः कदा चिदभिदासति द्रुहा ॥ ७ ॥
यो मा पाकेन मनसा चरन्तमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः ।
आपइव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता ॥ ८ ॥
ये पाकशंसं विहरन्त एवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधाभिः ।
अहये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे ॥ ९ ॥
यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने यो अश्वानां यो गवां यस्तनूनाम् ।
रिपुः स्तेनः स्तेयकृद्द्रभ्रमेतु नि ष हीयतां तन्वा३ तना च ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

परः सो अस्तु तन्वा३ तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः ।
प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो नो दिवा दिप्सति यश्च नक्तम् ॥ ११ ॥
सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥ १२ ॥
न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम् ।
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्वदन्तमुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते ॥ १३ ॥
यदि वाहमनृतदेव आस मोघं वा देवाँ अप्यूहे अग्ने ।
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस्ते निर्ऋथं सचन्ताम् ॥ १४ ॥
अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यदि वायुस्ततप पूरुषस्य ।
अधा स वीरैर्दशभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह ॥ १५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह ।
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट ॥ १६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र या जिगाति खर्गलेव नक्तमप द्रुहा तन्वं गूहमाना।
वव्राँ अनन्ताँ अव सा पदीष्ट ग्रावाणो घ्नन्तु रक्षस उपब्दैः ॥ १७ ॥
वि तिष्ठध्वं मरुतो विक्षिवीच्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन।
वयो ये भूत्वी पतयन्ति नक्तभिर्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे ॥ १८ ॥
प्र वर्तय दिवो अश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशाधि।
प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तादभि जहि रक्षसः पर्वतेन ॥ १९ ॥
एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम्।
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदशनिं यातुमद्भ्यः ॥ २० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

इन्द्रो यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्याय्यविवासताम् ।
अभीदु शक्रः पर्शुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्त्सत एति रक्षसः ॥ २१ ॥
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र ॥ २२ ॥
मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावतामपोच्छतु मिथुना या किमीदिना।
पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ॥ २३ ॥
इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानमुत स्त्रियं मायया शाशदानाम्।
विग्रीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते दृशन्त्सूर्यमुच्चरन्तम् ॥ २४ ॥
प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम् ।
रक्षोभ्यो वधमस्यतमशनिं यातुमद्भ्यः ॥ २५ ॥

इति सप्तमं मण्डलम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

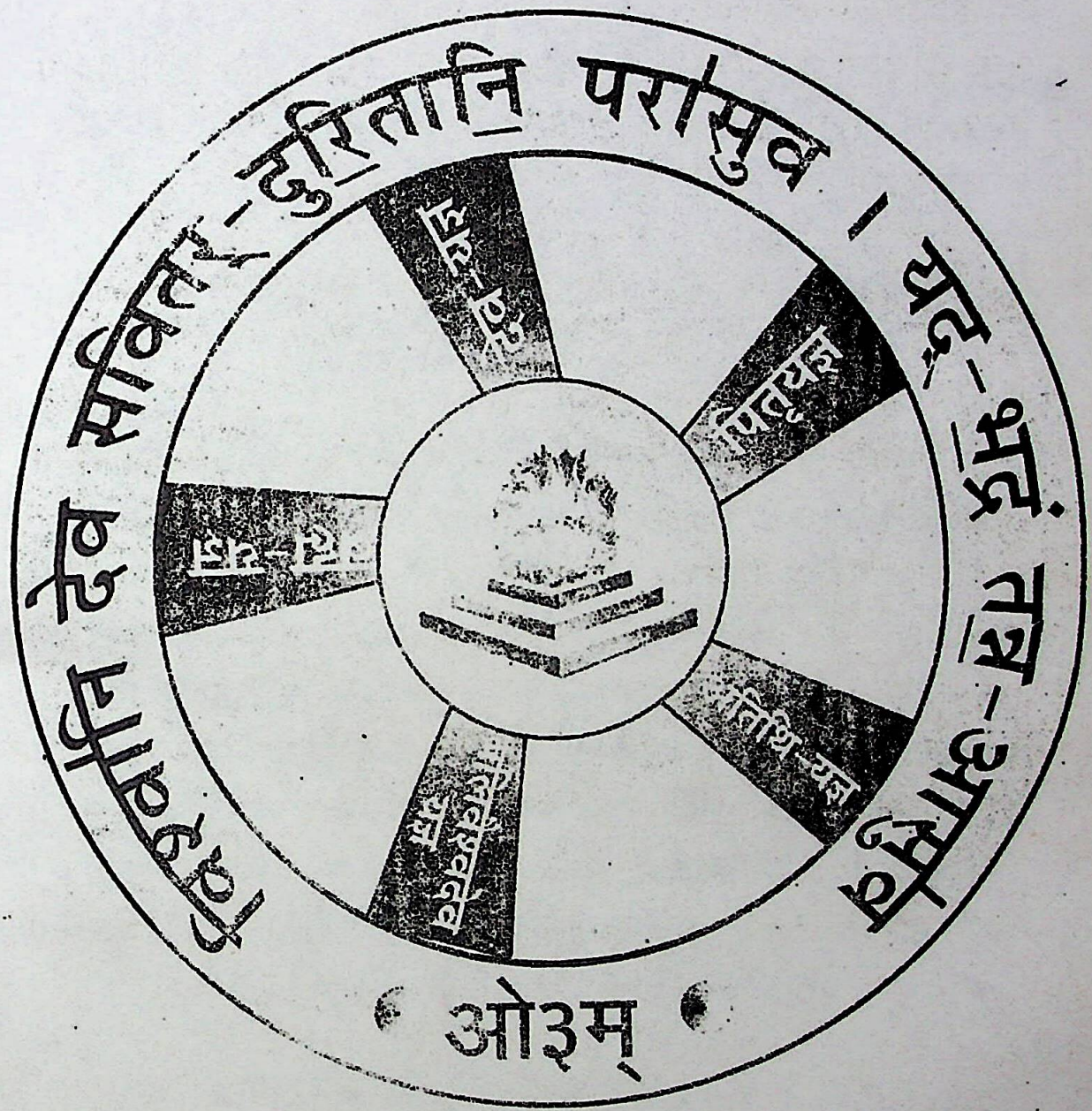

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

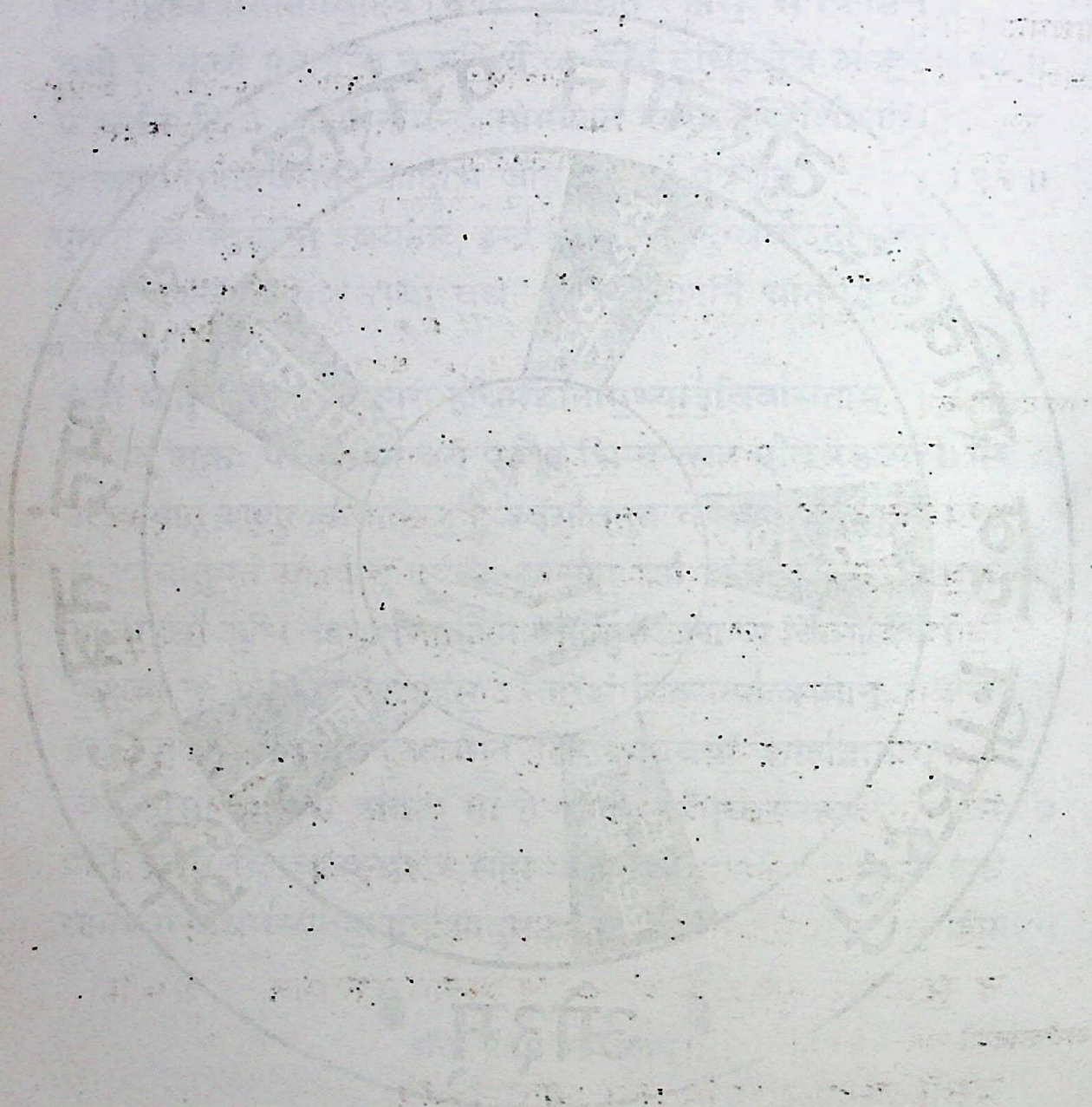

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः [१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—१-२ प्रगाथो घौरः काण्वो वा; ३-२९ मेधातिथिमेध्यातिथी काण्वौ; ३०-३२, ३३ आसङ्गः प्लायोगिः; ३४ शश्वत्याङ्गिरस्यासङ्गस्य पत्नी ॥ देवता—१-२९ इन्द्रः; ३०-३३ आसङ्गस्य दानस्तुतिः; ३४ आसङ्गः ॥ छन्दः—१ उपरिष्टाद्बृहती; २ आर्षीभुरिग्बृहती; ३, ७, १०, १४, १८, २१ विराड्बृहती; ४ आर्षीस्वराड्बृहती; ५, ८, १५, १७, १९, २२, २५, ३१ निचृद्बृहती; ६, ९, ११, १२, २०, २४, २६, २७ आर्षीबृहती; १३ शङ्कुमतीबृहती; १६, २३, ३०, ३२ आर्चीभुरिग्बृहती; २८ आसुरीस्वराड्निचृद्बृहती; २९ बृहती; ३३ त्रिष्टुप्; ३४ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३२ मध्यमः; ३३, ३४ धैवतः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥ १ ॥
अवक्रक्षिणं वृषभं यथाजुरं गां न चर्षणीसहम् ।
विद्वेषणं संवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् ॥ २ ॥
यच्चिद्धि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये ।
अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु तेऽहा विश्वा च वर्धनम् ॥ ३ ॥
वि तर्तूर्यन्ते मघवन्विपश्चितोऽर्यो विपो जनानाम् ।
उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ॥ ४ ॥
महे चन त्वामद्रिवः परा शुल्काय देयाम् ।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ ॥ ५ ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः ।
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ॥ ६ ॥
क्रेयथ क्रेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः ।
अलर्षि युध्म खजकृत्पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरन्दरः ।
याभिः काण्वस्योप बर्हिरासदं यासद्वज्री भिनत्पुरः ॥ ८ ॥
ये ते सन्ति दशग्विनः शतिनो ये सहस्त्रिणः ।
अश्वासो ये ते वृषणो रघुद्रुवस्तेभिर्नस्तूयमा गहि ॥ ९ ॥
आ त्वद्य सबर्दुघां हुवे गायत्रवेपसम् ।
इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिषमुरुधारामरंकृतम् ॥ १० ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

यत्तुदत्सूर एतशं वङ्कू वातस्य पर्णिना ।
वहत्कुत्समार्जुनेयं शतक्रतुः त्सरद्गन्धर्वमस्तृतम् ॥ ११ ॥
य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः ।
सन्धाता सन्धिं मघवा पुरूवसुरिष्कर्ता विह्रुतं पुनः ॥ १२ ॥
मा भूम निष्ट्याइवेन्द्र त्वदरणाइव ।
वनानि न प्रजहितान्यद्रिवो दुरोषासो अमन्महि ॥ १३ ॥
अमन्महीदनाशवोऽनुग्रासश्च वृत्रहन् ।
सकृत्सु ते महता शूर राधसानु स्तोमं मुदीमहि ॥ १४ ॥
यदि स्तोमं मम श्रवदस्माकमिन्द्रमिन्दवः ।
तिरः पवित्रं ससृवांस आशवो मन्दन्तु तुग्र्यावृधः ॥ १५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

आ त्वद्य सधस्तुतिं वावातुः सख्युरा गहि ।
उपस्तुतिर्मघोनां प्र त्वावत्वधा ते वश्मि सुष्टुतिम् ॥ १६ ॥
सोता हि सोममद्रिभिरेमेनमप्सु धावत ।
गव्या वस्त्रेव वासयन्त इन्नरो निर्धुक्षन्वक्षणाभ्यः ॥ १७ ॥
अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि ।
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता सुक्रतो पृण ॥ १८ ॥
इन्द्राय सु मदिन्तमं सोमं सोता वरेण्यम् ।
शक्र एणं पीपयद्विश्वया धिया हिन्वानं न वाजयुम् ॥ १९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं गिरा ।
भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् ॥ २० ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

मदेनेषितं मदमुग्रमुग्रेण शवसा ।
विश्वेषां तरुतारं मदच्युतं मदे हि ष्मा ददाति नः ॥ २१ ॥
शेवारे वार्यं पुरु देवो मर्तीय दाशुषे ।
स सुन्वते च स्तुवते च रासते विश्वगूर्तो अरिष्टुतः ॥ २२ ॥
एन्द्र याहि मत्स्व चित्रेण देव राधसा ।
सरो न प्रास्युदरं सपीतिभिरा सोमेभिरुरु स्फिरम् ॥ २३ ॥
आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥ २४ ॥
आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशेप्या ।
शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये ॥ २५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

पिबा त्वस्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपाइव ।
परिष्कृतस्य रसिन इयमासुतिश्चारुर्मदाय पत्यते ॥ २६ ॥
य एको अस्ति दंसना महाँ उग्रो अभि व्रतैः ।
गमत्स शिप्री न स योषदा गमद्धवं न परि वर्जति ॥ २७ ॥
त्वं पुरं चरिष्ण्वे वधैः शुष्णस्य सं पिणक् ।
त्वं भा अनु चरो अध द्विता यदिन्द्र हव्यो भुवः ॥ २८ ॥
मम त्वा सूर उदिते मम मध्यन्दिने दिवः ।
मम प्रपित्वे अपिशर्वरे वसवा स्तोमासो अवृत्सत ॥ २९ ॥
स्तुहि स्तुहीदेते घा ते मंहिष्ठासो मघोनाम् ।
निन्दिताश्वः प्रपथी परमज्या मघस्य मेध्यातिथे ॥ ३० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ यदश्वान्वनन्वतः श्रद्धयाहं रथे रुहम् ।
उत वामस्य वसुनश्चिकेतति यो अस्ति याद्वः पशुः ॥ ३१ ॥
य ऋज्रा मह्यं मामहे सह त्वचा हिरण्यया ।
एष विश्वान्यभ्यस्तु सौभगासङ्गस्य स्वनद्रथः ॥ ३२ ॥
अध प्लायोगिरति दासदन्यानासङ्गे अग्ने दशभिः सहस्रैः ।
अधोक्षणो दश मह्यं रुशन्तो नळाइव सरसो निरतिष्ठन् ॥ ३३ ॥
अन्वस्य स्थूरं ददृशे पुरस्तादनस्थ ऊरुरवरम्बमाणः ।
शश्वती नार्यभिचक्ष्याह सुभद्रमर्य भोजनं बिभर्षि ॥ ३४ ॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—१-४० मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चाङ्गिरसः; ४१, ४२ मेधातिथिः ॥ देवता—१-४० इन्द्रः; ४१, ४२ विभिन्दोर्दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१-३, ५, ६, ९, ११, १२, १४, १६-१८, २२, २७, २९, ३१, ३३, ३५, ३७-३९ आर्षी-गायत्री; ४, १३, १५, १९-२१, २३-२६, ३०, ३२, ३६, ४२ आर्षी-निचृद्गायत्री; ७, ८, १०, ३४, ४० आर्षीविराड्गायत्री; ४१ पाद-निचृद्गायत्री; २८ आर्चीस्वराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-२७, २९-४२ षड्जः; २८ गान्धारः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् । अनाभयिन्ररिमा ते ॥ १ ॥
नृभिर्धूतः सुतो अश्नैरव्यो वारैः परिपूतः । अश्वो न निक्तो नदीषु ॥ २ ॥
तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः । इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे ॥ ३ ॥
इन्द्र इत्सोमपा एक इन्द्रः सुतपा विश्वायुः । अन्तर्देवान्मर्त्यांश्च ॥ ४ ॥
न यं शुक्रो न दुराशीर्न तृप्रा उरुव्यचसम् । अपस्पृणवते सुहार्दम् ॥ ५ ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

गोभिर्यदीमन्ये अस्मन्मृगं न व्रा मृगयन्ते । अभित्सरन्ति धेनुभिः ॥ ६ ॥
त्रय इन्द्रस्य सोमाः सुतासः सन्तु देवस्य । स्वे क्षये सुतपावनः ॥ ७ ॥
त्रयः कोशासः श्चोतन्ति तिस्रश्चम्वः सुपूर्णाः । समाने अधि भामन् ॥ ८ ॥
शुचिरसि पुरुनिःष्ठाः क्षीरैर्मध्यत आशीर्तः । दध्ना मन्दिष्ठः शूरस्य ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमे त इन्द्र सोमास्तीव्रा अस्मे सुतासः। शुक्रा आशिरं याचन्ते॥ १०॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

ताँ आशिरं पुरोळाशमिन्द्रेमं सोमं श्रीणीहि। रेवन्तं हि त्वा शृणोमि॥ ११॥
हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्। ऊधर्न नग्ना जरन्ते॥ १२॥
रेवाँ इद्रेवतः स्तोता स्यात्त्वावतो मघोनः। प्रेदु हरिवः श्रुतस्य ॥ १३॥
उक्थं चन शस्यमानमगोररिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम् ॥ १४॥
मा नः इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः। शिक्षा शचीवः शचीभिः॥ १५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते॥ १६॥
न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमं चिकेत ॥ १७॥
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः॥ १८॥
ओ षु प्र याहि वाजेभिर्मा हृणीथा अभ्य१स्मान्। महाँइव युवजानिः॥ १९॥
मो ष्व१द्य दुर्हणावान्त्सायं करदारे अस्मत्। अश्रीरइव जामाता॥ २०॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

विद्मा ह्यस्य वीरस्य भूरिदावरीं सुमतिम्। त्रिषु जातस्य मनांसि॥ २१॥
आ तू षिञ्च कण्वमन्तं न घा विद्म शवसानात्। यशस्तरं शतमूतेः॥ २२॥
ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय सोमं वीराय शक्राय। भरा पिबन्नर्याय ॥ २३॥
यो वेदिष्ठो अव्यथिष्वश्वावन्तं जरितृभ्यः। वाजं स्तोतृभ्यो गोमन्तम्॥ २४॥
पन्यंपन्यमित्सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय ॥ २५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत्। नि यमते शतमूतिः॥ २६॥
एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम्। गीर्भिः श्रुतं गिर्वणसम्॥ २७॥
स्वादवः सोमा आ याहि श्रीताः सोमा आ याहि ।
शिप्रिन्नृषीवः शचीवो नायमच्छा सधमादम् ॥ २८॥
स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति महे राधसे नृम्णाय। इन्द्र कारिणं वृधन्तः॥ २९॥
गिरश्च यास्ते गिर्वाह उक्था च तुभ्यं तानि। सत्रा दधिरे शवांसि॥ ३०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

एवेदेष तुविकूर्मिर्वाजाँ एको वज्रहस्तः। सनादमृक्तो दयते ॥ ३१ ॥
हन्ता वृत्रं दक्षिणेनेन्द्रः पुरू पुरुहूतः। महान्महीभिः शचीभिः ॥ ३२ ॥
यस्मिन्विश्वाश्चर्षणय उत च्यौत्ना व्रयांसि च। अनु धेन्मन्दी मघोनः ॥ ३३ ॥
एष एतानि चकारेन्द्रो विश्वा योऽति शृण्वे। वाजदावा मघोनाम् ॥ ३४ ॥
प्रभर्ता रथं गव्यन्तमपाकाच्चिद्यमवति। इनो वसु स हि वोळ्हा ॥ ३५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

सनिता विप्रो अर्वद्भिर्हन्ता वृत्रं नृभिः शूरः। सत्योऽविता विधन्तम् ॥ ३६ ॥
यजध्वैनं प्रियमेधा इन्द्रं सत्राचा मनसा। यो भूत्सोमैः सत्यमद्वा ॥ ३७ ॥
गाथश्रवसं सत्पतिं श्रवस्कामं पुरुत्मानम्। कण्वासो गात वाजिनम् ॥ ३८ ॥
य ऋते चिद्भास्पदेभ्यो दात्सखा नृभ्यः शचीवान्।
ये अस्मिन्काममश्रियन् ॥ ३९ ॥
इत्था धीवन्तमद्रिवः काण्वं मेध्यातिथिम्। मेषो भूतोऽभि यन्नयः ॥ ४० ॥
शिक्षा विभिन्दो अस्मै चत्वार्ययुता ददत्। अष्टा परः सहस्रा ॥ ४१ ॥
उत सु त्ये पयोवृधा माकी रणस्य नप्त्या। जनित्वनाय मामहे ॥ ४२ ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः काण्वः ॥ देवता—१-२० इन्द्रः; २१-२४ पाकस्थाम्नः कौरयाणस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१ ककुम्मतीबृहती; २, १०, १४ सतःपङ्क्तिः; ३, ५, ७, ९, १९ निचृद्बृहती; ४, १२, १६, १८ निचृत्पङ्क्तिः; ६ भुरिक्पङ्क्तिः; ८ स्वराड्बृहती; ११, २१, भुरिगनुष्टुप्; १३ अनुष्टुप्; १५, २४ बृहती; १७ पथ्याबृहती; २० विराट्पङ्क्तिः; २२ विराड्गायत्री; २३ निचृद् गायत्री ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७-९, १५, १७, १९, २४ मध्यमः; २, ४, ६, १०, १२, १४, १६, १८, २० पञ्चमः; ११, १३, २१ गान्धारः; २२, २३ षड्जः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः।
आपिर्नो बोधि सधमाद्यो वृधेऽस्माँ अवन्तु ते धियः ॥ १ ॥
भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा नः स्तरभिमातये।
अस्माञ्चित्राभिरवतादुभिष्टिभिरा नः सुम्नेषु यामय ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥ ३ ॥
अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्रइव पप्रथे ।
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥ ४ ॥
इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

इन्द्रो महा रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत् ।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे सुवानास इन्दवः ॥ ६ ॥
अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन्रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥ ७ ॥
अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि ।
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ॥ ८ ॥
तत्त्वा यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये ।
येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ ॥ ९ ॥
येना समुद्रमसृजो महीरपस्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः ।
सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे ॥ १० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

शग्धी न इन्द्र यत्त्वा रयिं यामि सुवीर्यम् ।
शग्धि वाजाय प्रथमं सिषासते शग्धि स्तोमाय पूर्व्य ॥ ११ ॥
शग्धी नो अस्य यद्धि पौरमाविथ धिय इन्द्र सिषासतः ।
शग्धि यथा रुशमं श्यावकं कृपमिन्द्र प्रावः स्वर्णरम् ॥ १२ ॥
कन्नव्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः ।
नही न्वस्य महिमानमिन्द्रियं स्वर्गृणन्त आनशुः ॥ १३ ॥
कदु स्तुवन्त ऋतयन्त देवत ऋषिः को विप्र ओहते ।
कदा हवं मघवन्निन्द्र सुन्वतः कदु स्तुवत आ गमः ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते ।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव ॥ १५ ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

कण्वाइव भृगवः सूर्याइव विश्वमिद्धीतमानशुः ।
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥ १६ ॥
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः ।
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि ॥ १७ ॥
इमे हि ते कारवो वावशुर्धिया विप्रासो मेधसातये ।
स त्वं नो मघवन्निन्द्र गिर्वणो वेनो न शृणुधी हवम् ॥ १८ ॥
निरिन्द्र बृहतीभ्यो वृत्रं धनुभ्यो अस्फुरः ।
निरबुंदस्य मृगयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा आजः ॥ १९ ॥
निरग्नयो रुरुचुर्निरु सूर्यो निः सोम इन्द्रियो रसः ।
निरन्तरिक्षादधमो महामहिं कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ॥ २० ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

यं मे दुरिन्द्रो मरुतः पाकस्थामा कौरयाणः ।
विश्वेषां त्मना शोभिष्ठमुपेव दिवि धावमानम् ॥ २१ ॥
रोहितं मे पाकस्थामा सुधुरं कक्ष्यप्राम् ।
अदाद्रायो विबोधनम् ॥ २२ ॥
यस्मा अन्ये दश प्रति धुरं वहन्ति वह्नयः ।
अस्तं वयो न तुग्र्यम् ॥ २३ ॥
आत्मा पितुस्तनूर्वासः ओजोदा अभ्यञ्जनम् ।
तुरीयमिद्रोहितस्य पाकस्थामानं भोजं दातारमब्रवम् ॥ २४ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—१-१४ इन्द्रः; १५-१८ इन्द्रः पूषा वा; १९-२१ कुरुङ्गस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, १३ भुरिगनुष्टुप्; २, ४, ६, ८, १२, १४, १८ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ११, १५ निचृद्बृहती; ५, ९ पथ्याबृहती; ७ अनुष्टुप्; १० सतःपङ्क्तिः; १६, २० विराट्पङ्क्तिः;

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७, १९ विराड्बृहती; २१ विराडुष्णिक्॥ स्वरः—१, ७, १३ गान्धारः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २० पञ्चमः; ३, ५, ९, ११, १५, १७, १९ मध्यमः; २१ ऋषभः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ १ ॥
यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।
कण्वासस्त्वा ब्रह्मभिः स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि॥ २ ॥
यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब॥ ३ ॥
मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते ।
आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद् दधिषे सहः ॥ ४॥
प्र चक्रे सहसा सहो बभञ्ज मन्युमोजसा ।
विश्वे त इन्द्र पृतनायवो यहो नि वृक्षाइव येमिरे ॥ ५॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

सहस्त्रेणेव सचते यवीयुधा यस्त आनळुपस्तुतिम् ।
पुत्रं प्रावर्गं कृणुते सुवीर्यं दाश्नोति नमउक्तिभिः ॥ ६॥
मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव ।
महत्ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ॥ ७॥
सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति।
मध्वा संपृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब ॥ ८॥
अश्वी रथी सुरूप इद्गोमाँ इदिन्द्र ते सखा ।
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रो याति सभामुप॥ ९॥
ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा गहि पिबा सोमं वशाँ अनु।
निमेघमानो मघवन्दिवेदिव ओजिष्ठं दधिषे सहः ॥ १०॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।
उप नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥ ११॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वयं चित्स मन्यते दाशुरिर्जनो यत्रा सोमस्य तृम्पसि।
इदं ते अन्नं युज्यं समुक्षितं तस्येहि प्र द्रवा पिब ॥ १२ ॥
रथेष्ठायाध्वर्यवः सोममिन्द्राय सोतन ।
अधि ब्रध्नस्याद्रयो वि चक्षते सुन्वन्तो दाश्वध्वरम् ॥ १३ ॥
उप ब्रध्नं वावाता वृषणा हरी इन्द्रमपसु वक्षतः ।
अर्वाञ्चं त्वा सप्तयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप ॥ १४ ॥
प्र पूषणं वृणीमहे युज्याय पुरूवसुम् ।
स शक्र शिक्ष पुरुहूत नो धिया तुजे राये विमोचन ॥ १५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

सं नः शिशीहि भुरिजोरिव क्षुरं रास्व रायो विमोचन।
त्वे तन्नः सुवेदमुस्रियं वसु यं त्वं हिनोषि मर्त्यम् ॥ १६ ॥
वेमि त्वा पूषन्नृञ्जसे वेमि स्तोतव आघृणे ।
न तस्य वेम्यरणं हि तद्वसो स्तुषे पज्राय साम्ने ॥ १७ ॥
परा गावो यवसं कच्चिदाघृणे नित्यं रेक्णो अमर्त्य ।
अस्माकं पूषन्नविता शिवो भव मंहिष्ठो वाजसातये ॥ १८ ॥
स्थूरं राधः शताश्वं कुरुङ्गस्य दिविष्टिषु ।
राज्ञस्त्वेषस्य सुभगस्य रातिषु तुर्वशेष्वमन्महि ॥ १९ ॥
धीभिः सातानि काण्वस्य वाजिनः प्रियमेधैरभिद्युभिः।
षष्टिं सहस्रानु निर्मजामजे निर्यूथानि गवामृषिः ॥ २० ॥
वृक्षाश्चिन्मे अभिपित्वे अरारणुः ।
गां भजन्त मेहनाश्वं भजन्त मेहना ॥ २१ ॥

इति पञ्चमाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥

अथ पञ्चमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—ब्रह्मातिथिः काण्वः ॥ देवता—१-३७[१] अश्विनौ; ३७[२]-३९ चैद्यस्य कशोर्दानस्तुतिः ॥
छन्दः—१, ५, ११, १२, १४, १८, २१, २२, २९, ३२, ३३ निचृद्गायत्री; २-४,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६-१०, १५-१७, १९, २०, २४, २५, २७, २८, ३०, ३४, ३६ गायत्री; १३, २३, ३१, ३५ विराड्गायत्री; २६ आर्चीस्वराड्गायत्री; ३७, ३८ निचृद्बृहती; ३९ आर्षीनिचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३६ षड्जः; ३७, ३८ मध्यमः; ३९ गान्धारः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

दूरादिहेव यत्सत्यरुणप्सुरशिश्वितत्। वि भानुं विश्वधातनत् ॥ १॥
नृवद्दस्रा मनोयुजा रथेन पृथुपाजसा। सचेथे अश्विनोषसम् ॥ २॥
युवाभ्यां वाजिनीवसू प्रति स्तोमा अदृक्षत। वाचं दूतो यथोहिषे॥ ३॥
पुरुप्रिया ण ऊतये पुरुमन्द्रा पुरूवसू। स्तुषे कण्वासो अश्विना॥ ४॥
मंहिष्ठा वाजसातमेषयन्ता शुभस्पती। गन्तारा दाशुषो गृहम् ॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

ता सुदेवाय दाशुषे सुमेधामवितारिणीम्। घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम् ॥ ६॥
आ नः स्तोममुप द्रवत्तूयं श्येनेभिराशुभिः। यातमश्वेभिरश्विना॥ ७॥
येभिस्तिस्रः परावतो दिवो विश्वानि रोचना। त्रीँरुक्तून्परिदीयथः॥ ८॥
उत नो गोमतीरिष उत सातीरहर्विदा। वि पथः सातये सितम् ॥ ९॥
आ नो गोमन्तमश्विना सुवीरं सुरथं रयिम्। वोळ्हमश्वावतीरिषः॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

वावृधाना शुभस्पती दस्रा हिरण्यवर्तनी। पिबतं सोम्यं मधु ॥ ११॥
अस्मभ्यं वाजिनीवसू मघवद्भ्यश्च सप्रथः। छर्दिर्यन्तमदाभ्यम्॥ १२॥
नि षु ब्रह्म जनानां याविष्टं तूयमा गतम्। मो ष्वन्याँ उपारतम्॥ १३॥
अस्य पिबतमश्विना युवं मदस्य चारुणः। मध्वो रातस्य धिष्ण्या॥ १४॥
अस्मे आ वहतं रयिं शतवन्तं सहस्रिणम्। पुरुक्षुं विश्वधायसम्॥ १५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

पुरुत्रा चिद्धि वां नरा विह्वयन्ते मनीषिणः। वाघद्भिरश्विना गतम्॥ १६॥
जनासो वृक्तबर्हिषो हविष्मन्तो अरंकृतः। युवां हवन्ते अश्विना॥ १७॥
अस्माकमद्य वामयं स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः। युवाभ्यां भूत्वश्विना॥ १८॥
यो ह वां मधुनो दृतिराहितो रथचर्षणे। ततः पिबतमश्विना ॥ १९॥
तेन नो वाजिनीवसू पशवे तोकाय शं गवे। वहतं पीवरीरिषः ॥ २०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

उत नो दिव्या इष उत सिन्धूँरहर्विदा। अप द्वारेव वर्षथः ॥ २१ ॥
कदा वां तौग्र्यो विधत्समुद्रे जहितो नरा। यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥ २२ ॥
युवं कण्वाय नासत्यापिरिप्ताय हर्म्ये। शश्वदूतीर्दशस्यथः ॥ २३ ॥
ताभिरा यातमूतिभिर्नव्यसीभिः सुशस्तिभिः। यद्वां वृषण्वसू हुवे ॥ २४ ॥
यथा चित्कण्वमावतं प्रियमेधमुपस्तुतम्। अत्रिं शिञ्जारमश्विना ॥ २५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

यथोत कृत्व्ये धनेऽंशुं गोष्वगस्त्यम्। यथा वाजेषु सोभरिम् ॥ २६ ॥
एतावद्वां वृषण्वसू अतो वा भूयो अश्विना। गृणन्तः सुम्नमीमहे ॥ २७ ॥
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभीशुमश्विना। आ हि स्थाथो दिविस्पृशम् ॥ २८ ॥
हिरण्ययी वां रभिरीषा अक्षो हिरण्ययः। उभा चक्रा हिरण्यया ॥ २९ ॥
तेन नो वाजिनीवसू परावतश्चिदा गतम्। उपेमां सुष्टुतिं मम ॥ ३० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

आ वहेथे पराकात्पूर्वीरश्नन्तावश्विना। इषो दासीरमर्त्या ॥ ३१ ॥
आ नो द्युम्नैरा श्रवोभिरा राया यातमश्विना। पुरुश्चन्द्रा नासत्या ॥ ३२ ॥
एह वां प्रुषितप्सवो वयो वहन्तु पर्णिनः। अच्छा स्वध्वरं जनम् ॥ ३३ ॥
रथे वामनुगायसि य इषा वर्तते सह। न चक्रमभि बाधते ॥ ३४ ॥
हिरण्ययेन रथेन द्रवत्पाणिभिरश्वैः। धीजवना नासत्या ॥ ३५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

युवं मृगं जागृवांसं स्वदथो वा वृषण्वसू। ता नः पृङ्क्तमिषा रयिम् ॥ ३६ ॥
ता मे अश्विना सनीनां विद्यातं नवानाम् ।
यथा चिच्चैद्यः कशुः शतमुष्ट्रानां ददत्सहस्रा दश गोनाम् ॥ ३७ ॥
यो मे हिरण्यसंदृशो दश राज्ञो अमंहत ।
अधस्पदा इच्चैद्यस्य कृष्टयश्चर्म्मम्ना अभितो जनाः ॥ ३८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्किरेणा पथा गाद्येनेमे यन्ति चेदयः ।
अन्यो नेत्सूरिरोहते भूरिदावत्तरो जनः ॥ ३९ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः [६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—१-४५ इन्द्रः; ४६-४८ तिरिन्दिरस्य पारशव्यस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१-१३, १५-१७, १९, २५-२७, २९, ३०, ३२, ३५, ३८, ४२ गायत्री; १४, १८, २३, ३३, ३४, ३६, ३७, ३९-४१, ४३, ४५, ४८ निचृद्गायत्री; २० आर्चीस्वराड्गायत्री; २४, ४७ पाद-निचृद्गायत्री; २१, २२, २८, ३१, ४४, ४६ आर्षी-विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँइव । स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥ १ ॥
प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥ २ ॥
कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् । जामि ब्रुवत आयुधम् ॥ ३ ॥
समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायेव सिन्धवः ॥ ४ ॥
ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्तयत् ॥ इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

वि चिद् वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा । शिरो बिभेद वृष्णिना ॥ ६ ॥
इमा अभि प्र णोनुमो विपामग्रेषु धीतयः । अग्नेः शोचिर्न दिद्युतः ॥ ७ ॥
गुहा सतीरुप त्मना प्र यच्छोचन्त धीतयः । कण्वा ऋतस्य धारया ॥ ८ ॥
प्र तमिन्द्र नशीमहि रयिं गोमन्तमश्विनम् । प्र ब्रह्म पूर्वचित्तये ॥ ९ ॥
अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ । अहं सूर्यइवाजनि ॥ १० ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे ॥ ११ ॥
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद्वर्धस्व सुष्टुतः ॥ १२ ॥
यदस्य मन्युरध्वनीद्वि वृत्रं पर्वशो रुजन् । अपः समुद्रमैरयत् ॥ १३ ॥
नि शुष्ण इन्द्र धर्णसिं वज्रं जघन्थ दस्यवि । वृषा ह्युग्र शृण्विषे ॥ १४ ॥
न द्यावइन्द्रमोजसा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । न विव्यचन्त भूमयः ॥ १५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

यस्ते इन्द्र महीरपः स्तभूयमान आशयत्। नि तं पद्यासु शिश्नथः ॥ १६ ॥
य इमे रोदसी मही समीची समजग्रभीत्। तमोभिरिन्द्र तं गुहः ॥ १७ ॥
य इन्द्र यतयस्त्वा भृगवो ये च तुष्टुवुः। ममेदुग्र श्रुधी हवम् ॥ १८ ॥
इमास्ते इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम्। एनामृतस्य पिप्युषीः ॥ १९ ॥
या इन्द्र प्रस्वस्त्वासा गर्भमचक्रिरन्। परि धर्मेव सूर्यम् ॥ २० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

त्वामिच्छवसस्पते कण्वा उक्थेन वावृधुः। त्वां सुतास इन्दवः ॥ २१ ॥
तवेदिन्द्र प्रणीतिषूत प्रशस्तिरद्रिवः। यज्ञो वितन्तसाय्यः ॥ २२ ॥
आ न इन्द्र महीमिषं पुरं न दर्षि गोमतीम्। उत प्रजां सुवीर्यम् ॥ २३ ॥
उत त्यदाश्वश्व्यं यदिन्द्र नाहुषीष्वा। अग्ने विक्षु प्रदीदयत् ॥ २४ ॥
अभि व्रजं न तत्निषे सूर उपाकचक्षसम्। यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ २५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

यदङ्ग तविषीयस इन्द्र प्रराजसि क्षितीः। महाँ अपार ओजसा ॥ २६ ॥
तं त्वा हविष्मतीर्विश उप ब्रुवत ऊतये। उरुव्रयसमिन्दुभिः ॥ २७ ॥
उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत ॥ २८ ॥
अतः समुद्रमुद्वतश्चिकित्वाँ अव पश्यति। यतो विपान एजति ॥ २९ ॥
आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम्। परो यदिध्यते दिवा ॥ ३० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

कण्वास इन्द्र ते मतिं विश्वे वर्धन्ति पौंस्यम्। उतो शविष्ठ वृष्ण्यम् ॥ ३१ ॥
इमां म इन्द्र सुष्टुतिं जुषस्व प्र सु मामव। उत प्र वर्धया मतिम् ॥ ३२ ॥
उत ब्रह्मण्या वयं तुभ्यं प्रवृद्ध वज्रिवः। विप्रा अतक्ष्म जीवसे ॥ ३३ ॥
अभि कण्वा अनूषतापो न प्रवता यतीः। इन्द्रं वनन्वती मतिः ॥ ३४ ॥
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः समुद्रमिव सिन्धवः। अनुत्तमन्युमजरम् ॥ ३५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ नो याहि परावतो हरिभ्यां हर्यताभ्याम्। इममिन्द्र सुतं पिब ॥ ३६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वामिद् वृत्रहन्तम जनासो वृक्तबर्हिषः। हवन्ते वाजसातये ॥ ३७ ॥
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं न वर्त्येतशम्। अनु सुवानास इन्दवः ॥ ३८ ॥
मन्दस्वा सु स्वर्णर उतेन्द्र शर्यणावति। मत्स्वा विवस्वतो मती ॥ ३९ ॥
वावृधान उप द्यवि वृषा वज्र्यरोरवीत्। वृत्रहा सोमपातमः ॥ ४० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा। इन्द्र चोष्कूयसे वसु ॥ ४१ ॥
अस्माकं त्वा सुताँ उप वीतपृष्ठा अभि प्रयः। शतं वहन्तु हरयः ॥ ४२ ॥
इमां सु पूर्व्यां धियं मधोर्घृतस्य पिप्युषीम्। कण्वा उक्थेन वावृधुः ॥ ४३ ॥
इन्द्रमिद्विमहीनां मेधे वृणीत मर्त्यः। इन्द्रे सनिष्युरूतये ॥ ४४ ॥
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी। सोमपेयाय वक्षतः ॥ ४५ ॥
शतमहं तिरिन्दिरे सहस्रं पर्शावा ददे। राधांसि याद्वानाम् ॥ ४६ ॥
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रा दश गोनाम्। ददुष्प्रायु साम्ने ॥ ४७ ॥
उदानट् ककुहो दिवमुष्ट्राञ्चतुर्युजो ददत्। श्रवसा याद्वं जनम् ॥ ४८ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—पुनर्वत्सः काण्वः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ३-५, ७-१३, १७-१९, २१, २८, ३०-३२, ३४ गायत्री; २, ६, १४, १६, २०, २२-२७, ३५, ३६ निचृद्गायत्री; १५ पादनिचृद्गायत्री; २९, ३३ आर्षीविराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

प्र यद्वस्त्रिष्टुभमिषं मरुतो विप्रो अक्षरत्। वि पर्वतेषु राजथ ॥ १ ॥
यदङ्ग तविषीयवो यामं शुभ्रा अचिध्वम्। नि पर्वता अहासत ॥ २ ॥
उदीरयन्त वायुभिर्वाश्रासः पृश्निमातरः। धुक्षन्त पिप्युषीमिषम् ॥ ३ ॥
वर्पन्ति मरुतो मिहं प्र वेपयन्ति पर्वतान्। यद्यामं यान्ति वायुभिः ॥ ४ ॥
नि यद्यामाय वो गिरिर्नि सिन्धवो विधर्मणे। महे शुष्माय येमिरे ॥ ५ ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

युष्माँ उ नक्तमूतये युष्मान्दिवा हवामहे। युष्मान्प्रयत्यध्वरे ॥ ६ ॥
उदु त्ये अरुणप्सवश्चित्रा यामेभिरीरते। वाश्रा अधि ष्णुना दिवः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सृजन्ति रश्मिमोजसा पन्थां सूर्याय यातवे। ते भानुभिर्वि तस्थिरे॥ ८॥
इमां मे मरुतो गिरमिमं स्तोममृभुक्षणः। इमं मे वनता हवम् ॥ ९॥
त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुह्रे वज्रिणे मधु। उत्सं कबन्धमुद्रिणम्॥ १०॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

मरुतो यद्ध वो दिवः सुम्नायन्तो हवामहे। आ तू न उप गन्तन॥ ११॥
यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा ऋभुक्षणो दमे। उत प्रचेतसो मदे ॥ १२॥
आ नो रयिं मदच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम्। इयर्ता मरुतो दिवः॥ १३॥
अधीव यद्गिरीणां यामं शुभ्रा अचिध्वम्। सुवानैर्मन्दध्व इन्दुभिः॥ १४॥
एतावतश्चिदेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः। अदाभ्यस्य मन्मभिः ॥ १५॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

ये द्रप्साइव रोदसी धमन्त्यनु वृष्टिभिः। उत्सं दुहन्तो अक्षितम्॥ १६॥
उदु स्वानेभिरीरत उद्रथैरुदु वायुभिः। उत्स्तोमैः पृश्निमातरः ॥ १७॥
येनाव तुर्वशं यदुं येन कण्वं धनस्पृतम्। राये सु तस्य धीमहि॥ १८॥
इमा उ वः सुदानवो घृतं न पिप्युषीरिषः। वर्धान्काण्वस्य मन्मभिः॥ १९॥
क्व नूनं सुदानवो मदथा वृक्तबर्हिषः। ब्रह्मा को वः सपर्यति ॥ २०॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

नहि ष्म यद्ध वः पुरा स्तोमेभिर्वृक्तबर्हिषः। शर्धाँ ऋतस्य जिन्वथ॥ २१॥
समु त्ये महतीरपः सं क्षोणी समु सूर्यम्। सं वज्रं पर्वशो दधुः॥ २२॥
वि वृत्रं पर्वशो ययुर्वि पर्वताँ अराजिनः। चक्राणा वृष्णि पौंस्यम्॥ २३॥
अनु त्रितस्य युध्यतः शुष्ममावन्नुत क्रतुम्। अन्विन्द्रं वृत्रतूर्ये ॥ २४॥
विद्युद्दस्ता अभिद्यवः शिप्राः शीर्षन्हिरण्ययीः। शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये॥ २५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

उशना यत्परावत उक्षणो रन्ध्रमयातन। द्यौर्न चक्रदद्भिया ॥ २६॥
आ नो मखस्य दावनेऽश्वैर्हिरण्यपाणिभिः। देवासः उप गन्तन॥ २७॥
यदेषां पृषती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः। यान्ति शुभ्रा रिणन्नपः ॥ २८॥
सुषोमे शर्यणावत्यार्जीके पस्त्यावति। ययुर्निचक्रया नरः ॥ २९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदा गच्छाथ मरुत इत्था विप्रं हवमानम्। मार्डीकेभिर्नाधमानम्॥ ३०॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

कद्ध नूनं कधप्रियो यदिन्द्रमजहातन। को वः सखित्व ओहते॥ ३१॥
सहो षु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्निं मरुद्भिः। स्तुषे हिरण्यवाशीभिः॥ ३२॥
ओ षु वृष्णः प्रयज्यूना नव्यसे सुविताय। ववृत्यां चित्रवाजान्॥ ३३॥
गिरयश्चिन्नि जिहते पर्शीनासो मन्यमानाः। पर्वताश्चिन्नि येमिरे॥ ३४॥
आक्षण्यावानो वहन्त्यन्तरिक्षेण पततः। धातारः स्तुवते वयः॥ ३५॥
अग्निर्हि जानिं पूर्व्यश्छन्दो न सूरो अर्चिषा। ते भानुभिर्वि तस्थिरे॥ ३६॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—सध्वंशः काण्वः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१-३, ५, ९, १२, १४, १५, १८-२०, २२ निचृदनुष्टुप्; ४, ७, ८, १०, ११, १३, १७, २१, २३ आर्षीविराडनुष्टुप्; ६, १६ अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

आ नो विश्वाभिरूतिभिरश्विना गच्छतं युवम्।
दस्रा हिरण्यवर्तनी पिबतं सोम्यं मधु॥ १॥
आ नूनं यातमश्विना रथेन सूर्यत्वचा।
भुजी हिरण्यपेशसा कवी गम्भीरचेतसा॥ २॥
आ यातं नहुषस्पर्यान्तरिक्षात्सुवृक्तिभिः।
पिबाथो अश्विना मधु कण्वानां सवने सुतम्॥ ३॥
आ नो यातं दिवस्पर्यान्तरिक्षादधप्रिया।
पुत्रः कण्वस्य वामिह सुषाव सोम्यं मधु॥ ४॥
आ नो यातमुपश्रुत्यश्विना सोमपीतये।
स्वाहा स्तोमस्य वर्धना प्र कवी धीतिभिर्नरा॥ ५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो जुहूरेऽवसे नरा।
आ यातमश्विना गतमुपेमां सुष्टुतिं मम॥ ६॥
दिवश्चिद्रोचनादध्या नो गन्तं स्वर्विदा।
धीभिर्वत्सप्रचेतसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किमन्ये पर्यासतेऽस्मत्स्तोमेभिरश्विना ।
पुत्रः कण्वस्य वामृषिर्गीर्भिर्वत्सो अवीवृधत् ॥ ८ ॥
आ वां विप्र इहावसेऽह्वत्स्तोमेभिरश्विना ।
अरिप्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं मयोभुवा ॥ ९ ॥
आ यद्वां योषणा रथमतिष्ठद्वाजिनीवसू ।
विश्वान्यश्विना युवं प्र धीतान्यगच्छतम् ॥ १० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अतः सहस्त्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ।
वत्सो वां मधुमद्वचोऽशंसीत्काव्यः कविः ॥ ११ ॥
पुरुमन्द्रा पुरूवसू मनोतरा रयीणाम् ।
स्तोमं मे अश्विनाविमममभि वह्नी अनूषाताम् ॥ १२ ॥
आ नो विश्वान्यश्विना धत्तं राधांस्यह्रया ।
कृतं न ऋत्वियावतो मा नो रीरधतं निदे ॥ १३ ॥
यन्नासत्या परावति यद्वा स्थो अध्यम्बरे ।
अतः सहस्त्रनिर्णिजा रथेना यातमश्विना ॥ १४ ॥
यो वां नासत्यावृषिर्गीर्भिर्वत्सो अवीवृधत् ।
तस्मै सहस्त्रनिर्णिजमिषं धत्तं घृतश्चुतम् ॥ १५ ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

प्रास्मा ऊर्जं घृतश्चुतमश्विना यच्छतं युवम् ।
यो वां सुम्नाय तुष्टवद्वसूयाद्दानुनस्पती ॥ १६ ॥
आ नो गन्तं रिशादसेमं स्तोमं पुरुभुजा ।
कृतं नः सुश्रियो नरेमा दातमभिष्टये ॥ १७ ॥
आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत ।
राजन्तावध्वराणामश्विना यामहूतिषु ॥ १८ ॥
आ नो गन्तं मयोभुवाश्विना शंभुवा युवम् ।
यो वां विपन्यू धीतिभिर्गीर्भिर्वत्सो अवीवृधत् ॥ १९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याभिः कण्वं मेधातिथिं याभिर्वशं दशव्रजम् ।
याभिर्गोशर्यमावतं ताभिर्नोऽवतं नरा ॥ २० ॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

याभिर्नरा त्रसदस्युमावतं कृत्व्ये धने ।
ताभिः ष्वस्माँ अश्विना प्रावतं वाजसातये ॥ २१ ॥
प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो गिरो वर्धन्त्वश्विना ।
पुरुत्रा वृत्रहन्तमा ता नो भूतं पुरुस्पृहा ॥ २२ ॥
त्रीणि पदान्यश्विनोरविः सान्ति गुहा परः ।
कवी ऋतस्य पत्मभिर्वाग्जीवेभ्यस्परि ॥ २३ ॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—शशकर्णः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ४, ६ बृहती; २, २० गायत्री; ३, २१ निचृद्गायत्री; ५ ककुबुष्णिक्; ७, ८, १७, १९ अनुष्टुप्; ९ पादनिचृदनुष्टुप्; १० आर्षी निचृत्पङ्क्तिः; ११ त्रिपादविराड्गायत्री; १२ जगती; १३ निचृदनुष्टुप्; १४, १५ निचृद्बृहती; १६ आर्च्यनुष्टुप्; १८ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६, १४, १५ मध्यमः; २, ३, ११, २०, २१ षड्जः; ५ ऋषभः; ७-९, १३, १६-१९ गान्धारः; १० पञ्चमः; १२ निषादः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

आ नूनमश्विना युवं वत्सस्य गन्तमवसे ।
प्रास्मै यच्छतमवृकं पृथु च्छर्दिर्युयुतं या अरातयः ॥ १ ॥
यदन्तरिक्षे यद्दिवि यत्पञ्च मानुषाँ अनु । नृम्णं तद्धत्तमश्विना ॥ २ ॥
ये वां दंसांस्यश्विना विप्रासः परिमामृशुः । एवेत्काण्वस्य बोधतम् ॥ ३ ॥
अयं वां घर्मो अश्विना स्तोमेन परि षिच्यते ।
अयं सोमो मधुमान्वाजिनीवसू येन वृत्रं चिकेतथः ॥ ४ ॥
यदप्सु यद्वनस्पतौ यदोषधीषु पुरुदंससा कृतम् ।
तेन माविष्टमश्विना ॥ ५ ॥

अथैकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

यन्नासत्या भुरण्यथो यद्वा देव भिषज्यथः ।
अयं वां वत्सो मतिभिर्न विन्धते हविष्मन्तं हि गच्छथः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ नूनमश्विनोर्ऋषिः स्तोमं चिकेत वामया ।
आ सोमं मधुमत्तमं घर्मं सिञ्चादथर्वणि ॥ ७ ॥
आ नूनं रघुवर्तनिं रथं तिष्ठाथो अश्विना ।
आ वां स्तोमा इमे मम नभो न चुच्यवीरत ॥ ८ ॥
यद्द्य वां नासत्योक्थैरा चुच्युवीमहि ।
यद्वा वाणीभिरश्विनेवेत्काण्वस्य बोधतम् ॥ ९ ॥
यद्वां कक्षीवाँ उत यद्वयश्व ऋषिर्यद्वां दीर्घतमा जुहाव ।
पृथी यद्वां वैन्यः सादनेष्वेवेदतो अश्विना चेतयेथाम् ॥ १० ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

यातं छर्दिष्पा उत नः परस्पा भूतं जगत्पा उत नस्तनूपा ।
वर्तिस्तोकाय तनयाय यातम् ॥ ११ ॥
यदिन्द्रेण सरथं याथो अश्विना यद्वा वायुना भवथः समोकसा ।
यदादित्येभिर्ऋभुभिः सजोषसा यद्वा विष्णोर्विक्रमणेषु तिष्ठथः ॥ १२ ॥
यद्द्याश्विनावहं हुवेय वाजसातये ।
यत्पृत्सु तुर्वणे सहस्तच्छ्रेष्ठमश्विनोरवः ॥ १३ ॥
आ नूनं यातमश्विनेमा हव्यानि वां हिता ।
इमे सोमासो अधि तुर्वशे यदाविमे कण्वेषु वामथ ॥ १४ ॥
यन्नासत्या पराके अर्वाके अस्ति भेषजम् ।
तेन नूनं विमदाय प्रचेतसा छर्दिर्वत्साय यच्छतम् ॥ १५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

अभुत्स्यु प्र देव्या साकं वाचाहमश्विनोः ।
व्यावर्देव्या मतिं वि रातिं मर्त्येभ्यः ॥ १६ ॥
प्र बोधयोषो अश्विना प्र देवि सूनृते महि ।
प्र यज्ञहोतरानुषक्प्र मदाय श्रवो बृहत् ॥ १७ ॥
यदुषो यासि भानुना सं सूर्येण रोचसे ।
आ हायमश्विनो रथो वर्तिर्याति नृपाय्यम् ॥ १८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदापीतासो अंशवो गावो न दुह्र ऊधभिः ।
यद्वा वाणीरनूषत प्र देवयन्तो अश्विना ॥ १९ ॥
प्र द्युम्नाय प्र शवसे प्र नृषाह्याय शर्मणे । प्र दक्षाय प्रचेतसा ॥ २० ॥
यन्नूनं धीभिरश्विना पितुर्योना निषीदथः । यद्वा सुम्नेभिरुक्थ्या ॥ २१ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ५ आर्चीस्वराड्बृहती; २ त्रिष्टुप्; ३ आर्चीभुरिगनुष्टुप्; ४ आर्चीभुरिक्पङ्क्तिः; ६ आर्षीस्वराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ५, ६ मध्यमः; २ धैवतः; ३ गान्धारः; ४ पञ्चमः ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

यत्स्थो दीर्घप्रसद्मनि यद्वादो रोचने दिवः ।
यद्वा समुद्रे अध्याकृते गृहेऽत आ यातमश्विना ॥ १ ॥
यद्वा यज्ञं मनवे संमिमिक्षथुरेवेत्काण्वस्य बोधतम् ।
बृहस्पतिं विश्वान्देवाँ अहं हुव इन्द्राविष्णू अश्विनावाशुहेषसा ॥ २ ॥
त्या न्वश्विना हुवे सुदंससा गृभे कृता ।
ययोरस्ति प्र णः सख्यं देवेष्वध्याप्यम् ॥ ३ ॥
ययोरधि प्र यज्ञा असूरे सन्ति सूर्यः ।
ता यज्ञस्याध्वरस्य प्रचेतसा स्वधाभिर्या पिबतः सोम्यं मधु ॥ ४ ॥
यदद्याश्विनावपाग्यत्प्राक्स्थो वाजिनीवसू ।
यद् द्रुह्यव्यनवि तुर्वशे यदौ हुवे वामथ मा गतम् ॥ ५ ॥
यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजा यद्वेमे रोदसी अनु ।
यद्वा स्वधाभिरधितिष्ठथो रथमत आ यातमश्विना ॥ ६ ॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ आर्चीभुरिग्गायत्री; २ वर्धमानागायत्री; ३, ५-७, ९ निचृद्गायत्री; ४ विराड्गायत्री; ८ गायत्री; १० आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-९ षड्जः; १० धैवतः ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येष्वा । त्वं यज्ञेष्वीड्यः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वमसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य। अग्ने रथीरध्वराणाम् ॥ २ ॥
स त्वमस्मदप द्विषो युयोधि जातवेदः। अदेवीरग्ने अरातीः ॥ ३ ॥
अन्ति चित्सन्तमह यज्ञं मर्तस्य रिपोः। नोप वेषि जातवेदः ॥ ४ ॥
मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे। विप्रासो जातवेदसः ॥ ५ ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

विप्रं विप्रासोऽवसे देवं मतीस ऊतये। अग्निं गीर्भिर्हवामहे ॥ ६ ॥
आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्। अग्ने त्वांकामया गिरा ॥ ७ ॥
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः। समत्सु त्वा हवामहे ॥ ८ ॥
समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे। वाजेषु चित्रराधसम् ॥ ९ ॥
प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि ।
स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौभगमा यजस्व ॥ १० ॥

इति पञ्चमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥

इति पञ्चमोऽष्टकः ॥

अथ षष्ठाऽष्टके प्रथमोऽध्यायः

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—पर्वतः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ८, ९, १५, १६, २०, २१, २५, ३१, ३२ निचृदुष्णिक्; ३-६, १०-१२, १४, १७, १८, २२-२४, २६-३० उष्णिक्; ७, १३, १९ आर्षीविराडुष्णिक्; ३३ आर्चीस्वराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति ।
येना हंसि न्यत्रिणं तमीमहे ॥ १ ॥
येना दशग्वमध्रिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम् ।
येना समुद्रमाविथा तमीमहे ॥ २ ॥
येन सिन्धुं महीरपो रथाँइव प्रचोदयः ।
पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमं स्तोममभिष्टये घृतं न पूतमद्रिवः ।
येना नु सद्य ओजसा ववक्षिथ ॥ ४ ॥
इमं जुषस्व गिर्वणः समुद्रइव पिन्वते ।
इन्द्र विश्वाभिरूतिभिर्ववक्षिथ ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

यो नो देवः परावतः सखित्वनाय मामहे ।
दिवो न वृष्टिं प्रथयन्ववक्षिथ ॥ ६ ॥
ववक्षुरस्य केतव उत वज्रो गभस्त्योः ।
यत्सूर्यो न रोदसी अवर्धयत् ॥ ७ ॥
यदि प्रवृद्ध सत्पते सहस्रं महिषाँ अघः ।
आदित्ते इन्द्रियं महि प्र वावृधे ॥ ८ ॥
इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिर्न्यृर्शसानमोषति ।
अग्निर्वनेव सासहिः प्र वावृधे ॥ ९ ॥
इयं त ऋत्वियावती धीतिरेति नवीयसी ।
सपर्यन्ती पुरुप्रिया मिमीत इत् ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

गर्भो यज्ञस्य देवयुः क्रतुं पुनीत आनुषक् ।
स्तोमैरिन्द्रस्य वावृधे मिमीत इत् ॥ ११ ॥
सनिर्मित्रस्य पप्रथ इन्द्रः सोमस्य पीतये ।
प्राची वाशीव सुन्वते मिमीत इत् ॥ १२ ॥
यं विप्रा उक्थवाहसोऽभिप्रमन्दुरायवः ।
घृतं न पिप्य आसन्यृतस्य यत् ॥ १३ ॥
उत स्वराजे अदितिः स्तोममिन्द्राय जीजनत् ।
पुरुप्रशस्तमूतय ऋतस्य यत् ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि वह्नय ऊतयेऽ नूषत प्रशस्तये ।
न देव विव्रता हरी ऋतस्य यत् ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये ।
यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥ १६ ॥
यद्वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे ।
अस्माकमित्सुते रणा समिन्दुभिः ॥ १७ ॥
यद्वासि सुन्वतो वृधो यजमानस्य सत्पते ।
उक्थे वा यस्य रण्यसि समिन्दुभिः ॥ १८ ॥
देवंदेवं वोऽ वस इन्द्रमिन्द्रं गृणीषणि ।
अधा यज्ञाय तुर्वणे व्यानशुः ॥ १९ ॥
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमेभिः सोमपातमम् ।
होत्राभिरिन्द्रं वावृधुर्व्यानशुः ॥ २० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः ।
विश्वा वसूनि दाशुषे व्यानशुः ॥ २१ ॥
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो दधिरे पुरः ।
इन्द्रं वाणीरनूषता समोजसे ॥ २२ ॥
महान्तं महिना वयं स्तोमेभिर्हवनश्रुतम् ।
अर्कैरभि प्र णोनुमः समोजसे ॥ २३ ॥
न यं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् ।
अमादिदस्य तित्विषे समोजसः ॥ २४ ॥
यदिन्द्र पृतनाज्ये देवास्त्वा दधिरे पुरः ।
आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ॥ २५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

यदा वृत्रं नदीवृतं शवसा वज्रिन्नवधीः ।
आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ॥ २६ ॥
यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे ।
आदित्ते हर्यता हरी ववक्षतुः ॥ २७ ॥
यदा ते हर्यता हरी वावृधाते दिवेदिवे ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ २८ ॥
यदा ते मारुतीर्विशस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ २९ ॥
यदा सूर्यममुं दिवि शुक्रं ज्योतिरधारयः ।
आदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ ३० ॥
इमां त इन्द्र सुष्टुतिं विप्र इयर्ति धीतिभिः ।
जामिं पदेव पिप्रतीं प्राध्वरे ॥ ३१ ॥
यदस्य धामनि प्रिये समीचीनासो अस्वरन् ।
नाभा यज्ञस्य दोहना प्राध्वरे ॥ ३२ ॥
सुवीर्यं स्वश्व्यं सुगव्यमिन्द्र दद्धि नः ।
होतेव पूर्वचित्तये प्राध्वरे ॥ ३३ ॥

तृतीयोऽनुवाकः [१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—नारदः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ८, ११, १४, १९, २१, २२, २६, २७, ३१ निचृदुष्णिक्; २-४, ६, ७, ९, १०, १२, १३, १५-१८, २०, २३-२५, २८, २९, ३२, ३३ उष्णिक्; ३० आर्षीविराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

इन्द्रः सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीत उक्थ्यम् ।
विदे वृधस्य दक्षसो महान्हि षः ॥ १ ॥
स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः ।
सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमंहूवे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम् ।
भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे ॥ ३ ॥
इयं त इन्द्र गिर्वणो रातिः क्षरति सुन्वतः ।
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥ ४ ॥
नूनं तदिन्द्र दद्धि नो यत्त्वा सुन्वन्त ईमहे ।
रयिं नश्चित्रमा भरा स्वर्विदम् ॥ ५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

स्तोता यत्ते विचर्षणिरतिप्रशर्धयद्गिरः ।
वयाइवानु रोहते जुषन्त यत् ॥ ६ ॥
प्रत्नवज्जनया गिरः शृणुधी जरितुर्हवम् ।
मदेमदे ववक्षिथा सुकृत्वने ॥ ७ ॥
क्रीळन्त्यस्य सूनृता आपो न प्रवता यतीः ।
अया धिया य उच्यते पतिर्दिवः ॥ ८ ॥
उतो पतिर्य उच्यते कृष्टीनामेक इद्वशी ।
नमोवृधैरवस्युभिः सुते रण ॥ ९ ॥
स्तुहि श्रुतं विपश्चितं हरी यस्य प्रसक्षिणा ।
गन्तारा दाशुषो गृहं नमस्विनः ॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

तूतुजानो महेमतेऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः ।
आ याहि यज्ञमाशुभिः शमिद्धि ते ॥ ११ ॥
इन्द्र शविष्ठ सत्पते रयिं गृणत्सु धारय ।
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम् ॥ १२ ॥
हवे त्वा सूर उदिते हवे मध्यन्दिने दिवः ।
जुषाण इन्द्र सप्तिभिर्न आ गहि ॥ १३ ॥
आ तू गहि प्र तु द्रव मत्स्वा सुतस्य गोमतः ।
तन्तुं ततुष्व पूर्व्यं यथा विदे ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।
यद्वा समुद्रे अन्धसोऽविते दसि ॥ १५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर इन्द्रं सुतास इन्दवः ।
इन्द्रं हविष्मतीर्विशो अराणिषुः ॥ १६ ॥
तमिद्विप्रा अवस्यवः प्रवत्वतीभिरूतिभिः ।
इन्द्रं क्षोणीरवर्धयन्वयाइव ॥ १७ ॥
त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत ।
तमिद्वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम् ॥ १८ ॥
स्तोता यत्ते अनुव्रत उक्थान्यृतुथा दधे ।
शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः ॥ १९ ॥
तदिद्रुद्रस्य चेतति यह्वं प्रत्नेषु धामसु ।
मनो यत्रा वि तदधुर्विचेतसः ॥ २० ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

यदिं मे सख्यमावरं द्रुमस्य पाह्यन्धसः ।
येन विश्वा अति द्विषो अतारिम ॥ २१ ॥
कदा त इन्द्र गिर्वणः स्तोता भवाति शन्तमः ।
कदा नो गव्ये अश्व्ये वसौ दधः ॥ २२ ॥
उत ते सुष्टुता हरी वृषणा वहतो रथम् ।
अजुर्यस्य मदिन्तमं यमीमहे ॥ २३ ॥
तमीमहे पुरुष्टुतं यह्वं प्रत्नाभिरूतिभिः ।
नि बर्हिषि प्रिये सददधं द्विता ॥ २४ ॥
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत ऋषिष्टुताभिरूतिभिः ।
धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च नः ॥ २५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

इन्द्र त्वमंवितेदंसीत्था स्तुवतो अद्रिवः ।
ऋतादियर्मि ते धियं मनोयुजम् ॥ २६ ॥
इह त्या संधमाद्या युजानः सोमपीतये ।
हरी इन्द्र प्रतद्वसू अभि स्वर ॥ २७ ॥
अभि स्वरन्तु ये तव रुद्रासः सक्षत श्रियम् ।
उतो मरुत्वतीर्विशो अभि प्रयः ॥ २८ ॥
इमा अस्य प्रतूर्तयः पदं जुषन्त यद्दिवि ।
नाभा यज्ञस्य सं दधुर्यथा विदे ॥ २९ ॥
अयं दीर्घाय चक्षसे प्राचिं प्रयत्यध्वरे ।
मिमीते यज्ञमानुषग्विचक्ष्य ॥ ३० ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

वृषायमिन्द्र ते रथ उतो ते वृषणा हरी ।
वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः ॥ ३१ ॥
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः ।
वृषा यज्ञो यमिन्वसि वृषा हवः ॥ ३२ ॥
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः ।
वावन्थ हि प्रतिष्टुतिं वृषा हवः ॥ ३३ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ११ विराड्गायत्री; २, ४, ५, ७, १५ निचृद्गायत्री; ३, ६, ८-१०, १२-१४ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोषखा स्यात् ॥ १ ॥
शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे । यदहं गोपतिः स्याम् ॥ २ ॥
धेनुष्टे इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते । गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥ ३ ॥
न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः । यद्दित्ससि स्तुतो मघम् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि ॥५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः। ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे ॥ ६ ॥

व्य१न्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद्बलम् ॥ ७ ॥

उद्ना आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥ ८ ॥

इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दृंहितानि च। स्थिराणि न पराणुदे ॥ ९ ॥

अपामूर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते। वि ते मदा अराजिषुः ॥ १० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्रास्युक्थवर्धनः। स्तोतॄणामुत भद्रकृत् ॥ ११ ॥

इन्द्रमित्केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः। उप यज्ञं सुराधसम् ॥ १२ ॥

अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजयः स्पृधः ॥ १३ ॥

मायाभिरुत्सिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः। अव दस्यूँरधूनुथाः ॥ १४ ॥

असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः। सोमपा उत्तरो भवन् ॥ १५ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, ५-७, ११, १३ निचृदुष्णिक्; ४ उष्णिक्; ८, १२ विराडुष्णिक्; ९, १० पादनिचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

तम्वभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतं। इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥ १ ॥

यस्य द्विबर्हसो बृहत्सहो दाधार रोदसी। गिरीँरज्राँ अपः स्ववृषत्वना ॥ २ ॥

स राजसि पुरुष्टुतँ एको वृत्राणि जिघ्नसे। इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे ॥ ३ ॥

तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृत्सु सासहिम्।
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥ ४ ॥

येन ज्योतीँष्यायवे मनवे च विवेदिथ।
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥ ५ ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा। वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव॒ त्यदि॑न्द्रि॒यं बृ॒हत्तव॒ शुष्म॑मुत क्र॒तुम्। वज्रं॑ शिशाति॒ धि॒षणा॒ वरे॑ण्यम्॥ ७॥
तव॒ द्यौरि॑न्द्र॒ पौंस्यं॑ पृथि॒वी व॑र्धति॒ श्रवः॑। त्वामापः॒ पर्व॑तासश्च हिन्विरे॥ ८॥
त्वां विष्णु॑र्बृहन्क्षयो॒ मि॒त्रो गृ॑णाति॒ वरु॑णः। त्वां शर्धो॑ मद॒त्यनु॑ मारु॒तम्॥ ९॥
त्वं वृषा॒ जना॑नां॒ मंहि॑ष्ठ इन्द्र जज्ञिषे। स॒त्रा विश्वा॑ स्वप॒त्यानि॑ दधिषे॥ १०॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

स॒त्रा त्वं पु॑रुष्टु॒तँ एको॑ वृ॒त्राणि॑ तोशसे।
नान्य इन्द्रा॒त्कर॑णं॒ भूय॑ इन्वति॥ ११॥
यदि॑न्द्र॒ मन्म॒शस्त्वा॒ नाना॒ हव॑न्त ऊ॒तये॑।
अ॒स्माके॑भि॒र्नृभि॒रत्रा॒ स्वर्ज॑य॥ १२॥
अर॑ं क्षया॑य नो म॒हे विश्वा॑ रू॒पाण्या॑वि॒शन्।
इन्द्रं॒ जैत्रा॑य हर्षया॒ शची॒पति॑म्॥ १३॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ९-१२ गायत्री; २-७ निचृद्गायत्री; ८ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

प्र स॒म्राजं॑ चर्षणी॒नामिन्द्रं॑ स्तोता॒ नव्यं॑ गी॒र्भिः। नरं॑ नृषा॒हं मंहि॑ष्ठम्॥ १॥
यस्मि॑न्नु॒क्थानि॒ रण्य॑न्ति॒ विश्वा॑नि च श्रव॒स्या। अ॒पाम॑वो॒ न स॑मु॒द्रे॥ २॥
तं सु॑ष्टु॒त्या वि॑वासे॒ ज्येष्ठ॑राजं॒ भरे॑ कृ॒त्नुम्। म॒हो वा॒जिनं॑ स॒निभ्यः॥ ३॥
यस्यानू॑ना गभी॒रा मदा॑ उ॒रव॒स्तरु॑त्राः। हर्षु॑मन्तः॒ शूर॑सातौ॥ ४॥
तमिद्धने॑षु हि॒तेष्वधि॒वाकाय॑ हवन्ते। येषा॒मिन्द्र॒स्ते ज॑यन्ति॥ ५॥
तमिच्च्यौ॒त्नैरार्य॑न्ति॒ तं कृ॒तेभि॑श्चर्षणय॒यः। एष इन्द्रो॑ वरिव॒स्कृत्॥ ६॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

इन्द्रो॑ ब्र॒ह्मेन्द्र॒ ऋषि॒रिन्द्रः॑ पु॒रू पु॑रुहू॒तः। म॒हान्म॒हीभि॒ः शची॑भिः॥ ७॥
स स्तोम्य॒ः स हव्य॑ः स॒त्यः सत्वा॑ तुविकू॒र्मिः। एक॑श्चित्सन्न॒भिभू॑तिः॥ ८॥
तम॒र्के॑भि॒स्तं साम॑भि॒स्तं गा॑य॒त्रैश्च॑र्षणय॒यः। इन्द्रं॑ वर्धन्ति॒ क्षि॒तय॑ः॥ ९॥
प्रणे॑तार॒ं वस्यो॒ अच्छा॒ कर्ती॑र॒ं ज्योति॑ः स॒मत्सु॑। सा॒स॒ह्वांसं॑ यु॒धामि॒त्रान्॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स नः पप्रिः पारयाति स्वस्ति नावा पुरुहूतः। इन्द्रो विश्वा अति द्विषः॥ ११॥
स त्वं नं इन्द्र वाजेभिर्दशस्या च गातुया च। अच्छा च नः सुम्नं नेषि॥ १२॥

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१-३, ७, ८ गायत्री; ४-६, ९-१२ निचृद्गायत्री; १३ विराड्गायत्री; १४ आसुरीबृहती; १५ आर्षी-भुरिग्बृहती॥ स्वरः—१-१३, षड्जः; १४, १५ मध्यमः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम॥ १॥
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना। उप ब्रह्माणि नः शृणु॥ २॥
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः। सुतावन्तो हवामहे॥ ३॥
आ नो याहि सुतावतोऽ स्माकं सुष्टुतीरुप। पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः॥ ४॥
आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योरनु गात्रा वि धावतु। गृभाय जिह्वया मधु॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

स्वादुष्टे अस्तु संसुदे मधुमान्तन्वे३ तव। सोमः शमस्तु ते हृदे॥ ६॥
अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः। प्र सोम इन्द्र सर्पतु॥ ७॥
तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुरन्धसो मदे। इन्द्रो वृत्राणि जिघ्नते ॥ ८॥
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा। वृत्राणि वृत्रहञ्जहि ॥ ९॥
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि। यजमानाय सुन्वते॥ १०॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब ॥ ११॥
शाचिगो शाचिपूजनायं रणाय ते सुतः। आखण्डल प्र हूयसे ॥ १२॥
यस्ते शृङ्गवृषो नपात्प्रणपात्कुण्डपाय्यः। न्यस्मिन्दध्र आ मनः॥ १३॥
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम् ।
द्रप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥ १४॥
पदाकुसानुर्यजतो गवेषण एकः सन्नभि भूयसः ।
भूर्णिमश्वं नयत्तुजा पुरो गृभेन्द्रं सोमस्य पीतये ॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—इरिम्बिठिः काण्वः ॥ देवता—१-७, १०-२२ आदित्याः; ८ अश्विनौ; ९ अग्निसूर्यानिलाः ॥ छन्दः—१, १३, १५, १६ पादनिचृदुष्णिक्; २ आर्चीस्वराडुष्णिक्; ३, ८, १०, ११, १७, १८, २२ उष्णिक्; ४, ९, २१ विराडुष्णिक्; ५-७, १२, १४, १९, २० निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

इदं ह नूनमेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः। आदित्यानामपूर्व्यं सवीमनि ॥ १ ॥
अनर्वाणो ह्येषां पन्था आदित्यानाम्। अदब्धाः सन्ति पायवः सुगेवृधः ॥ २ ॥
तत्सु नः सविता भगो वरुणो मित्रो अर्यमा।
शर्म यच्छन्तु सप्रथो यदीमहे ॥ ३ ॥
देवेभिर्देव्यदितेऽरिष्टभर्मन्ना गहि। स्मत्सूरिभिः पुरुप्रिये सुशर्मभिः ॥ ४ ॥
ते हि पुत्रासो अदितेर्विदुर्द्वेषांसि योतवे।
अंहोश्चिदुरुचक्रयोऽने हसः ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अदितिर्नो दिवा पशुमदितिर्नक्तमद्वया।
अदितिः पात्वंहसः सदावृधा ॥ ६ ॥
उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्या गमत्।
सा शन्ताति मयस्करदप स्रिधः ॥ ७ ॥
उत त्या दैव्या भिषजा शं नः करतो अश्विना।
युयुयातामितो रपो अप स्रिधः ॥ ८ ॥
शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः।
शं वातो वात्वरपा अप स्रिधः ॥ ९ ॥
अपामीवामप स्रिधमप सेधत दुर्मतिम्।
आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ १० ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

युयोता शरुमस्मदाँ आदित्यास उतामतिम्।
ऋधग्द्वेषः कृणुत विश्ववेदसः ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्सु नः शर्म यच्छतादित्या यन्मुमोचति ।
एनस्वन्तं चिदेनसः सुदानवः ॥ १२ ॥
यो नः कश्चिद्रिरिक्षति रक्षस्त्वेन मर्त्यः ।
स्वैः ष एवैः रिरिषीष्ट युर्जनः ॥ १३ ॥
समित्तमघमश्नवद्दुःशंसं मर्त्यं रिपुम् ।
यो अस्मत्रा दुर्हणावाँ उप द्वयुः ॥ १४ ॥
पाकत्रा स्थन देवा ह्रत्सु जानीथ मर्त्यम् ।
उप द्वयुं चाद्वयुं च वसवः ॥ १५ ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

आ शर्म पर्वतानामोतापां वृणीमहे ।
द्यावाक्षामारे अस्मद्रपस्कृतम् ॥ १६ ॥
ते नो भद्रेण शर्मणा युष्माकं नावा वसवः ।
अति विश्वानि दुरिता पिपर्तन ॥ १७ ॥
तुचे तनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे ।
आदित्यासः सुमहसः कृणोतन ॥ १८ ॥
यज्ञो हीळो वो अन्तर आदित्या अस्ति मृळत ।
युष्मे इद्वो अपि ष्मसि सजात्ये ॥ १९ ॥
बृहद्वरूथं मरुतां देवं त्रातारमश्विना । मित्रमीमहे वरुणं स्वस्तये ॥ २० ॥
अनेहो मित्रार्यमन्नृवद्वरुण शंस्यम् । त्रिवरूथं मरुतो यन्त नश्छर्दिः ॥ २१ ॥
ये चिद्धि मृत्युबन्धव आदित्या मनवः स्मसि ।
प्र सू न आयुर्जीवसे तिरेतन ॥ २२ ॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—१-३३ अग्निः; ३४, ३५ आदित्याः; ३६, ३७ त्रसदस्योर्दान-स्तुतिः ॥ छन्दः—१, ३, १५, २१, २३, २८, ३२ निचृदुष्णिक्; २, २२, २९, ३७ विराट् पङ्क्तिः; ४, ६, १२, १६, २०, ३१ निचृत्पङ्क्तिः; ५, १९, ३० ककुबुष्णिक्; ७, ९, ३४ पादनिचृदुष्णिक्; ८ आर्चीभुरिक्पङ्क्तिः; १० सतःपङ्क्तिः; ११, १७, ३६ विराड्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उष्णिक्; १३ पुरउष्णिक्; १४ पङ्क्तिः; १८, ३३ पादनिचृत्पङ्क्तिः २४, २६ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः; २५ आर्चीस्वराडुष्णिक्; २७ भुरिगार्ची-विराडुष्णिक्; ३५ स्वराड्बृहती॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५, २७, २८, ३०, ३२, ३४, ३६; ऋषभः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २६, २९, ३१, ३३, ३७ पञ्चमः; ३५ मध्यमः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे। देवत्रा हव्यमोहिरे॥ १॥
विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषमग्निमीळिष्व यन्तुरम्। अस्य मेधस्य सोम्यस्य सोभरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम्॥ २॥
यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारमर्त्यम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्॥ ३॥
ऊर्जो नपातं सुभगं सुदीदितिमग्निं श्रेष्ठशोचिषम्। स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपामा सुम्नं यक्षते दिवि॥ ४॥
यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्नये।
यो नमसा स्वध्वरः॥ ५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

तस्येदर्वन्तो रंहयन्त आशवस्तस्य द्युम्नितमं यशः।
न तमंहो देवकृतं कुतश्चन न मर्त्यकृतं नशत्॥ ६॥
स्वग्नयो वो अग्निभिः स्याम सूनो सहस ऊर्जां पते। सुवीरस्त्वमस्मयुः॥ ७॥
प्रशंसमानो अतिथिर्न मित्रियोऽग्नी रथो न वेद्यः।
त्वे क्षेमासो अपि सन्ति साधवस्त्वं राजा रयीणाम्॥ ८॥
सो अद्धा दाश्वध्वरोऽग्ने मर्तः सुभग स प्रशंस्यः। स धीभिरस्तु सनिता॥ ९॥
यस्य त्वमूर्ध्वो अध्वराय तिष्ठसि क्षयद्वीरः स साधते।
सो अर्वद्भिः सनिता स विपन्युभिः स शूरैः सनिता कृतम्॥ १०॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

यस्याग्निर्वपुर्गृहे स्तोमं चनो दधीत विश्ववार्यः। हव्या वा वेविषद्विषः॥ ११॥
विप्रस्य वा स्तुवतः सहसो यहो मक्षूतमस्य रातिषु।
अवोदेवमुपरिमर्त्यं कृधि वसो विविदुषो वचः॥ १२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो अग्निं हव्यदातिभिर्नमोभिर्वा सुदक्षमाविवासति ।
गिरा वाजिरशोचिषम् ॥ १३ ॥
समिधा यो निशिती दाशददितिं धामभिरस्य मर्त्यः ।
विश्वेत्स धीभिः सुभगो जनाँ अति द्युम्नैरुद्नइव तारिषत् ॥ १४ ॥
तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासहत्सदने कं चिदत्रिणम् ।
मन्युं जनस्य दूढ्यः ॥ १५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा येन नासत्या भगः ।
वयं तत्ते शवसा गातुवित्तमा इन्द्रत्वोता विधेमहि ॥ १६ ॥
ते घेदग्ने स्वाध्योऽ३ ये त्वा विप्र निदधिरे नृचक्षसम् ।
विप्रासो देव सुक्रतुम् ॥ १७ ॥
त इद्वेदिं सुभग त आहुतिं ते सोतुं चिक्रिरे दिवि ।
त इद्वाजेभिर्जिग्युर्महद्धनं ये त्वे कामं न्येरिरे ॥ १८ ॥
भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः ।
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥ १९ ॥
भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहः ।
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टिभिः ॥ २० ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

ईळे गिरा मनुर्हितं यं देवा दूतमरतिं न्येरिरे । यजिष्ठं हव्यवाहनम् ॥ २१ ॥
तिग्मजम्भाय तरुणाय राजते प्रयो गायस्यग्नये ।
यः पिंशते सूनृताभिः सुवीर्यमग्निर्घृतेभिराहुतः ॥ २२ ॥
यदी घृतेभिराहुतो वाशीमग्निर्भरत उच्चा वच । असुरइव निर्णिजम् ॥ २३ ॥
यो हव्यान्यैरयता मनुर्हितो देव आसा सुगन्धिना ।
विवासते वार्याणि स्वध्वरो होता देवो अमर्त्यः ॥ २४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदग्ने मर्त्यस्त्वं स्यामहं मित्रमहो अमर्त्यः। सहसः सूनवाहुत ॥ २५ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

न त्वा रासीयाभिशस्तये वसो न पापत्वाय सन्त्य ।
न मे स्तोतामतीवा न दुर्हितः स्यादग्ने न पापया ॥ २६ ॥
पितुर्न पुत्रः सुभृतो दुरोण आ देवाँ एतु प्र णो हविः ॥ २७ ॥
तवाहमग्न ऊतिभिर्नेदिष्ठाभिः सचेय जोषमा वसो ।
सदा देवस्य मर्त्यैः ॥ २८ ॥
तव क्रत्वा सनेयं तव रातिभिरग्ने तव प्रशस्तिभिः ।
त्वामिदाहुः प्रमतिं वसो ममाग्ने हर्षस्व दातवे ॥ २९ ॥
प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तिरते वाजभर्मभिः ।
यस्य त्वं सख्यमावरः ॥ ३० ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

तव द्रप्सो नीलवान्वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे ।
त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि ॥ ३१ ॥
तमाग्न्म सोभरयः सहस्रमुष्कं स्वभिष्टिमवसे । सम्राजं त्रासदस्यवम् ॥ ३२ ॥
यस्य ते अग्ने अन्ये अग्नय उपक्षितो वयाइव ।
विपो न द्युम्ना नि युवे जनानां तव क्षत्राणि वर्धयन् ॥ ३३ ॥
यमादित्यासो अद्रुहः पारं नयथ मर्त्यम् । मघोनां विश्वेषां सुदानवः ॥ ३४ ॥
यूयं राजानः कं चिच्चर्षणीसहः क्षयन्तं मानुषाँ अनु ।
वयं ते वो वरुण मित्रार्यमन्त्स्यामेदूतस्य रथ्यः ॥ ३५ ॥
अदान्मे पौरुकुत्स्यः पञ्चाशतं त्रसदस्युर्वधूनाम् ।
मंहिष्ठो अर्यः सत्पतिः ॥ ३६ ॥
उत मे प्रियो वियायोः सुवास्त्वा अधि तुर्वनि ।
तिसृणां सप्तीनां श्यावः प्रणेता भुवद्वसुर्दियानां पतिः ॥ ३७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ५, ७, १९, २३ ककुबुष्णिक्; २, १०, १६, २२ सतःपङ्क्तिः; ३, १५, १७ विराडुष्णिक्; ४, १८ विराट्पङ्क्तिः; ६, १२ पादनिचृत् पङ्क्तिः; ८, २०, २४, २६ निचृत्पङ्क्तिः; ९, १३, २१, २५ निचृदुष्णिक्; ११ पादनिचृद् उष्णिक्; १४ आर्चीभुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९, २१, २३, २५ ऋषभः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २२, २४, २६ पञ्चमः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो मापस्थाता समन्यवः ।
स्थिरा चिन्नमयिष्णवः ॥ १ ॥
वीळुपविभिर्मरुत ऋभुक्षण आ रुद्रासः सुदीतिभिः ।
इषा नो अद्या गता पुरुस्पृहो यज्ञमा सोभरीयवः ॥ २ ॥
विद्मा हि रुद्रियाणां शुष्ममुग्रं मरुतां शिमीवताम् ।
विष्णोरेषस्य मीळ्हुषाम् ॥ ३ ॥
वि द्वीपानि पार्पतन्तिष्ठदुच्छुनोभे युजन्त रोदसी ।
प्र धन्वान्यैरत शुभ्रखादयो यदेजथ स्वभानवः ॥ ४ ॥
अच्युता चिद्वो अज्मन्ना नानदति पर्वतासो वनस्पतिः ।
भूमिर्यामेषु रेजते ॥ ५ ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

अमाय वो मरुतो यातवे द्यौर्जिहीत उत्तरा बृहत् ।
यत्रा नरो देदिशते तनूष्वा त्वक्षांसि बाह्वोजसः ॥ ६ ॥
स्वधामनु श्रियं नरो महि त्वेषा अमवन्तो वृषप्सवः ।
वहन्ते अहुतप्सवः ॥ ७ ॥
गोभिर्वाणो अज्यते सोभरीणां रथे कोशे हिरण्ययें ।
गोबन्धवः सुजातास इषे भुजे महान्तो नः स्परसे नु ॥ ८ ॥
प्रति वो वृषदञ्जयो वृष्णे शर्धाय मारुताय भरध्वम् ।
हव्या वृषप्रयाव्णे ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृषणश्वेन मरुतो वृषप्सुना रथेन वृषनाभिना ।
आ श्येनासो न पक्षिणो वृथा नरो हव्या नो वीतये गत ॥ १० ॥

अथाष्टत्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

समानमञ्ज्येषां वि भ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु ।
दविद्युतत्यृष्टयः ॥ ११ ॥
त उग्रासो वृषण उग्रबाहवो नकिष्टनूषु येतिरे ।
स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वोऽनीकेष्वधि श्रियः ॥ १२ ॥
येषामर्णो न सप्रथो नाम त्वेषं शश्वतामेकमिद्भुजे ।
वयो न पित्र्यं सहः ॥ १३ ॥
तान्वन्दस्व मरुतस्ताँ उप स्तुहि तेषां हि धुनीनाम् ।
अराणां न चरमस्तदेषां दाना मह्ना तदेषाम् ॥ १४ ॥
सुभगः स व ऊतिष्वास पूर्वासु मरुतो व्युष्टिषु ।
यो वो नूनमुतासति ॥ १५ ॥

अथैकोनचत्वारिंशो वर्गः ॥ ३९ ॥

यस्य वा यूयं प्रति वाजिनो नर आ हव्या वीतये गथ ।
अभि ष द्युम्नैरुत वाजसातिभिः सुम्ना वो धूतयो नशत् ॥ १६ ॥
यथा रुद्रस्य सूनवो दिवो वशन्त्यसुरस्य वेधसः ।
युवानस्तथेदसत् ॥ १७ ॥
ये चार्हन्ति मरुतः सुदानवः स्मन्मीळ्हुषश्चरन्ति ये ।
अतश्चिदा न उप वस्यसा हृदा युवान आ ववृध्वम् ॥ १८ ॥
यून ऊ षु नविष्ठया वृष्णः पावकाँ अभि सोभरे गिरा ।
गाय गाइव चर्कृषत् ॥ १९ ॥
साहा ये सन्ति मुष्टिहेव हव्यो विश्वासु पृत्सु होतृषु ।
वृष्णश्चन्द्रान्न सुश्रवस्तमान् गिरा वन्दस्व मरुतो अह ॥ २० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४० ॥

गावश्चिद्धा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः ।
रिहते ककुभौ मिथः ॥ २१ ॥
मर्तांश्चिद्धो नृतवो रुक्मवक्षस उप भ्रातृत्वमायति ।
अधि नो गात मरुतः सदा हि व आपित्वमस्ति निध्रुवि ॥ २२ ॥
मरुतो मारुतस्य न आ भेषजस्य वहता सुदानवः ।
यूयं सखायः ससयः ॥ २३ ॥
याभिः सिन्धुमवथ याभिस्तूर्वथ याभिर्दशस्यथा क्रिविम् ।
मयो नो भूतोतिभिर्मयोभुवः शिवाभिरसचद्विषः ॥ २४ ॥
यत्सिन्धौ यदसिक्न्यां यत्समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः ।
यत्पर्वतेषु भेषजम् ॥ २५ ॥
विश्वं पश्यन्तो बिभृथा तनूष्वा तेना नो अधि वोचत ।
क्षमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कर्ता विहुतं पुनः ॥ २६ ॥

इति षष्ठाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

अथ षष्ठाष्टके द्वितीयोऽध्यायः

चतुर्थोऽनुवाकः [२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—१-१६ इन्द्रः; १७, १८ चित्रस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ३, १५ विराडुष्णिक्; २, १२, १४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ४ भुरिक्पङ्क्तिः; ५, ७, ९, ११ ककुबुष्णिक्; ६, ८, १६, १८ निचृत्पङ्क्तिः; १० विराट्पङ्क्तिः; १३, १७ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७ ऋषभः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः ।
वाजे चित्रं हवामहे ॥ १ ॥
उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत् ।
त्वामिद्धवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ याहीम इन्द्रवोऽ श्वपते गोपत उर्वरापते ।
सोमं सोमपते पिब ॥ ३ ॥
वयं हि त्वा बन्धुमन्तमबन्धवो विप्रास इन्द्र येमिम ।
या ते धामानि वृषभ तेभिरा गहि विश्वेभिः सोमपीतये ॥ ४ ॥
सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे ।
अभि त्वामिन्द्र नोनुमः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

अच्छा च त्वैना नमसा वदामसि कं मुहुश्चिद्वि दीधयः ।
सन्ति कामासो हरिवो ददिष्टं स्मो वयं सन्ति नो धियः ॥ ६ ॥
नूत्रा इदिन्द्र ते वयमूती अभूम नहि नू ते अद्रिवः ।
विद्मा पुरा परीणसः ॥ ७ ॥
विद्मा सखित्वमुत शूर भोज्यमा ते ता वज्रिन्नीमहे ।
उतो समस्मिन्ना शिशीहि नो वसो वाजे सुशिप्र गोमति ॥ ८ ॥
यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु वः स्तुषे ।
सखाय इन्द्रमूतये ॥ ९ ॥
हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम् ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि ।
संस्थे जनस्य गोमतः ॥ ११ ॥
जयेम कारे पुरुहूत कारिणोऽ भि तिष्ठेम दूढ्यः ।
नृभिर्वृत्रं हन्याम शूशुयाम चावेरिन्द्र प्र णो धियः ॥ १२ ॥
अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि ।
युधेदापित्वमिच्छसे ॥ १३ ॥
नकीं रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः ।
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मा तें अमाजुरो यथा मूरास इन्द्र सख्ये त्वावतः ।
नि षदाम सचा सुते ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

मा तें गोदत्र निरराम राधस इन्द्र मा तें गृहामहि ।
दृळ्हा चिदुर्यः प्र मृशाभ्या भर न तें दामान आदभे ॥ १६ ॥
इन्द्रो वा घेदियन्मघं सरस्वती वा सुभगा ददिर्वसु ।
त्वं वा चित्र दाशुषे ॥ १७ ॥
चित्र इद्राजा राजका इदन्यके यके सरस्वतीमनु ।
पर्जन्यइव ततनद्धि वृष्ट्या सहस्रमयुता ददत् ॥ १८ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ विराड्बृहती; २ विराट्पङ्क्तिः; ३, ५ निचृद्बृहती; ४, १० सतःपङ्क्तिः; ६, १६, १८ निचृत्पङ्क्तिः; ७ पथ्याबृहती; ८ अनुष्टुप्; ९, ११, १७ उष्णिक्; १२ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ निचृदुष्णिक्; १४ भुरिक्पङ्क्तिः; १५ पादनिचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७ मध्यमः; २, ४, ६, १०, १४, १६, १८ पञ्चमः; ८ गान्धारः; ९, ११, १३, १५, १७ ऋषभः; १२ धैवतः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

ओ त्यमह्व आ रथमद्या दंसिष्ठमूतये ।
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी आ सूर्यायै तस्थथुः ॥ १ ॥
पूर्वापुषं सुहवं पुरुस्पृहं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ।
सचनावन्तं सुमतिभिः सोभरे विद्वेषसमनेहसम् ॥ २ ॥
इह त्या पुरुभूतमा देवा नमोभिरश्विना ।
अर्वाचीना स्ववसे करामहे गन्तारा दाशुषो गृहम् ॥ ३ ॥
युवो रथस्य परि चक्रमीयत ईर्मान्यद्धामिषण्यति ।
अस्माँ अच्छा सुमतिर्वां शुभस्पती आ धेनुरिव धावतु ॥ ४ ॥
रथो यो वां त्रिवन्धुरो हिरण्याभीशुरश्विना ।
परि द्यावापृथिवी भूषति श्रुतस्तेन नासत्या गतम् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

दशस्यन्ता मनवे पूर्व्यं दिवि यवं वृकेण कर्षथः ।
ता वामद्य सुमतिभिः शुभस्पती अश्विना प्र स्तुवीमहि ॥ ६ ॥
उप नो वाजिनीवसू यातमृतस्य पथिभिः ।
येभिस्तृक्षिं वृषणा त्रासदस्यवं महे क्षत्राय जिन्वथः ॥ ७ ॥
अयं वामद्रिभिः सुतः सोमो नरा वृषण्वसू ।
आ यातं सोमपीतये पिबतं दाशुषो गृहे ॥ ८ ॥
आ हि रुहतमश्विना रथे कोशे हिरण्यये वृषण्वसू ।
युञ्जाथां पीवरीरिषः ॥ ९ ॥
याभिः पक्थमवथो याभिरध्रिगुं याभिर्बभ्रुं विजोषसम् ।
ताभिर्नो मक्षू तूयमश्विना गतं भिषज्यतं यदातुरम् ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

यदध्रिगावो अध्रिगू इदा चिदह्नो अश्विना हवामहे ।
वयं गीभिर्विपन्यवः ॥ ११ ॥
ताभिरा यातं वृषणोप मे हवं विश्वप्सु विश्ववार्यम् ।
इषा मंहिष्ठा पुरुभूतमा नरा याभिः क्रिविं वावृधुस्ताभिरा गतम् ॥ १२ ॥
ताविदा चिदहानां तावश्विना वन्दमान उप ब्रुवे ।
ता ऊ नमोभिरीमहे ॥ १३ ॥
ताविद्दोषा ता उषसि शुभस्पती ता यामन्रुद्रवर्तनी ।
मा नो मर्ताय रिपवे वाजिनीवसू परो रुद्रावति ख्यतम् ॥ १४ ॥
आ सुग्म्याय सुग्म्यं प्राता रथेनाश्विना वा सक्षणी ।
हुवे पितेव सोभरी ॥ १५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

मनोजवसा वृषणा मदच्युता मक्षुंगमाभिरूतिभिः ।
आरात्ताच्चिद्भूतमस्मे अवसे पूर्वीभिः पुरुभोजसा ॥ १६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ नो अश्वावदश्विना वर्तिर्यासिष्टं मधुपातमा नरा ।
गोमद्दस्रा हिरण्यवत् ॥ १७ ॥
सुप्रावर्गं सुवीर्यं सुष्ठु वार्यमनाधृष्टं रक्षस्विना ।
अस्मिन्ना वामायाने वाजिनीवसू विश्वा वामानि धीमहि ॥ १८ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, १०, १४-१६, १९-२२, २६, २७ निचृदुष्णिक्; २, ४, ५, ७, ११, १७, २५, २९, ३० विराडुष्णिक्; ६, ८, ९, १३, १८, उष्णिक्; १२, २३, २८ पादनिचृदुष्णिक्; २४ आर्चीस्वराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

ईळिष्वा हि प्रतीव्यं१ यजस्व जातवेदसम् ।
चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम् ॥ १ ॥
दामानं विश्वचर्षणेऽग्निं विश्वमनो गिरा ।
उत स्तुषे विष्पर्धसो रथानाम् ॥ २ ॥
येषामाबाध ऋग्मियं इषः पृक्षश्च निग्रभे ।
उपविदा वह्निर्विन्दते वसु ॥ ३ ॥
उदस्य शोचिरस्थाद्दीदियुषो व्य१जरम् ।
तपुर्जम्भस्य सुद्युतो गणश्रियः ॥ ४ ॥
उदु तिष्ठ स्वध्वर स्तवानो देव्या कृपा ।
अभिख्या भासा बृहता शुशुक्वनिः ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अग्ने याहि सुशस्तिभिर्हव्या जुह्वान आनुषक् ।
यथा दूतो बभूथ हव्यवाहनः ॥ ६ ॥
अग्निं वः पूर्व्यं हुवे होतारं चर्षणीनाम् ।
तमया वाचा गृणे तमु वः स्तुषे ॥ ७ ॥
यज्ञेभिरद्भुतक्रतुं यं कृपा सूदयन्त इत् ।
मित्रं न जने सुधितमृतावनि ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतावानमृतायवो यज्ञस्य साधनं गिरा ।
उपो एनं जुजुषुर्नमसस्पदे ॥ ९ ॥
अच्छा नो अङ्गिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः ।
होता यो अस्ति विक्ष्वा यशस्तमः ॥ १० ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अग्ने तव त्ये अजरेन्धानासो बृहद्भाः ।
अश्वाइव वृषणस्तविषीयवः ॥ ११ ॥
स त्वं न ऊर्जां पते रयिं रास्व सुवीर्यम् ।
प्राव नस्तोके तनये समत्स्वा ॥ १२ ॥
यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशि ।
विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति ॥ १३ ॥
श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते ।
नि मायिनस्तपुषा रक्षसो दह ॥ १४ ॥
न तस्य मायया चन रिपुरीशीत मर्त्यः ।
यो अग्नये ददाश हव्यदातिभिः ॥ १५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

व्यश्वस्त्वा वसुविदमुक्षण्युरप्रीणादृषिः ।
महो राये तमु त्वा समिधीमहि ॥ १६ ॥
उशना काव्यस्त्वा नि होतारमसादयत् ।
आयजिं त्वा मनवे जातवेदसम् ॥ १७ ॥
विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमक्रत ।
श्रुष्टी देव प्रथमो यज्ञियो भुवः ॥ १८ ॥
इमं घा वीरो अमृतं दूतं कृण्वीत मर्त्यः ।
पावकं कृष्णवर्तनिं विहायसम् ॥ १९ ॥
तं हुवेम यतस्रुचः सुभासं शुक्रशोचिषम् ।
विशामग्निमजरं प्रत्नमीड्यम् ॥ २० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

यो अस्मै हव्यदातिभिराहुतिं मर्तोऽविधत् ।
भूरि षोषं स धत्ते वीरवद्यशः ॥ २१ ॥
प्रथमं जातवेदसमग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ।
प्रति स्तुगेति नमसा हविष्मती ॥ २२ ॥
आभिर्विधेमाग्नये ज्येष्ठाभिर्व्यश्ववत् ।
मंहिष्ठाभिर्मतिभिः शुक्रशोचिषे ॥ २३ ॥
नूनमर्च विहायसे स्तोमेभिः स्थूरयूपवत् ।
ऋषे वैयश्व दम्यायाग्नये ॥ २४ ॥
अतिथिं मानुषाणां सूनुं वनस्पतीनाम् ।
विप्रा अग्निमवसे प्रत्नमीळते ॥ २५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

महो विश्वाँ अभि षतोऽ३ऽ भि हव्यानि मानुषा ।
अग्ने नि षत्सि नमसाधि बर्हिषि ॥ २६ ॥
वंस्वा नो वार्या पुरु वंस्व रायः पुरुस्पृहः ।
सुवीर्यस्य प्रजावतो यशस्वतः ॥ २७ ॥
त्वं वरो सुषाम्णेऽ ग्ने जनाय चोदय ।
सदा वसो रातिं यविष्ठ शश्वते ॥ २८ ॥
त्वं हि सुप्रतूरसि त्वं नो गोमतीरिषः ।
महो रायः सातिमग्ने अपा वृधि ॥ २९ ॥
अग्ने त्वं यशा अस्या मित्रावरुणा वह ।
ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ॥ ३० ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—१-२७ इन्द्रः; २८-३० वरोः सौषाम्णस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, ६, ११, १३, २०, २३, २४ निचृदुष्णिक्; २-५, ७, ८, १०, १६, २५-२७ उष्णिक्; ९, १२, १८, २२, २८, २९ विराडुष्णिक्; १४, १५, १७, २१ पाद निचृदुष्णिक्; १९ आर्ची-स्वराडुष्णिक्; ३० निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-२९ ऋषभः; ३० गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

सखायं आ शिषामहि ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे ।
स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥ १ ॥
शवसा ह्यसि श्रुतो वृत्रहत्येन वृत्रहा ।
मघैर्मघोनो अति शूर दाशसि ॥ २ ॥
स नः स्तवान आ भर रयिं चित्रश्रवस्तमम् ।
निरेके चिद्यो हरिवो वसुर्ददिः ॥ ३ ॥
आ निरेकमुत प्रियमिन्द्र दर्षि जनानाम् ।
धृषता धृष्णो स्तवमान आ भर ॥ ४ ॥
न ते सव्यं न दक्षिणं हस्तं वरन्त आमुरः ।
न परिबाधो हरिवो गविष्टिषु ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

आ त्वा गोभिरिव व्रजं गीर्भिर्ऋणोम्यद्रिवः ।
आ स्मा कामं जरितुरा मनः पृण ॥ ६ ॥
विश्वानि विश्वमनसो धिया नो वृत्रहन्तम ।
उग्र प्रणेतरधि षू वसो गहि ॥ ७ ॥
वयं ते अस्य वृत्रहन्विद्याम शूर नव्यसः ।
वसोः स्पार्हस्य पुरुहूत राधसः ॥ ८ ॥
इन्द्र यथा ह्यस्ति तेऽपरीतं नृतो शवः ।
अमृक्ता रातिः पुरुहूत दाशुषे ॥ ९ ॥
आ वृषस्व महामह महे नृतम राधसे ।
दृळ्हश्चिद् दृह्य मघवन्मघत्तये ॥ १० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

नू अन्यत्रा चिदद्रिवस्त्वन्नो जग्मुराशसः ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिः ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नह्या॑ऽङ्ग नृ॒तो त्वद॒न्यं वि॒न्दामि॒ राध॑से ।
रा॒ये द्यु॒म्नाय॒ शव॑से च गि॒र्वणः ॥ १२ ॥
एन्दु॒मिन्द्रा॑य सिञ्चत॒ पिबा॑ति सो॒म्यं मधु ।
प्र राध॑सा चोदयाते महित्व॒ना ॥ १३ ॥
उपो॒ हरी॑णां॒ पति॑ दक्षं॑ पृञ्चन्त॑मब्रवम् ।
नूनं श्रु॑धि स्तु॒वतो॒ अश्व्यस्य ॥ १४ ॥
नह्या॑ऽङ्ग पु॒रा च॒न ज॒ज्ञे वी॒रत॑र॒स्त्वत् ।
नकी॑ रा॒या नैवथा॒ न भ॒न्दना ॥ १५ ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

एदु॒ मध्वो॑ म॒दिन्त॑रं सि॒ञ्च वा॑ध्वर्यो॒ अन्ध॑सः ।
ए॒वा हि वी॒रः स्तव॑ते स॒दावृ॑धः ॥ १६ ॥
इन्द्रं॑ स्थातर्हरी॑णां नकि॑ष्टे पू॒र्व्यस्तु॑तिम् ।
उदा॑नंश॒ शव॑सा॒ न भ॒न्दना ॥ १७ ॥
तं वो॒ वाजा॑नां॒ पति॒महू॑महि श्रव॒स्यव॑ः ।
अप्रा॑युभिर्यज्ञे॒भिर्वा॑वृधे॒न्यम् ॥ १८ ॥
ए॒तो न्वि॑न्द्रं॒ स्तवा॑म॒ सखा॑यः॒ स्तोम्यं॒ नर॑म् ।
कृ॒ष्टीर्यो विश्वा॑ अ॒भ्यस्त्येक॒ इत् ॥ १९ ॥
अगो॑रुधाय॒ ग॒विषे॑ द्यु॒क्षाय॒ दस्म्यं॒ वच॑ः ।
घृ॒तात्स्वादी॑यो॒ मधु॑नश्च वोचत ॥ २० ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

यस्या॑मि॒तानि॑ वी॒र्या३॒ न राध॒ः पर्ये॑तवे ।
ज्योति॒र्न विश्व॑म॒भ्यस्ति॒ दक्षि॑णा ॥ २१ ॥
स्तु॒हीन्द्रं॒ व्यश्व॒वदनू॑र्मिं वा॒जिनं॒ यम॑म् ।
अ॒र्यो गय॒ं मंह॑मानं॒ वि दा॒शुषे॑ ॥ २२ ॥
ए॒वा नू॒नमुप॑ स्तुहि॒ वैय॑श्व दश॒मं नव॑म् ।
सु॒वि॒द्वांसं॑ च॒र्कृत्यं॑ च॒रणी॑नाम् ॥ २३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् ।
अहरहः शुन्ध्युः पर्रिपदामिव ॥ २४ ॥
तद्दिन्द्राव आ भर येना दंसिष्ठ कृत्वने ।
द्विता कुत्साय शिश्नथो नि चोदय ॥ २५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

तमु त्वा नूनमीमहे नव्यं दंसिष्ठ सन्यसे ।
स त्वं नो विश्वा अभिमातीः सक्षणिः ॥ २६ ॥
य ऋक्षादंहसो मुचद्यो वार्यात्सप्त सिन्धुषु ।
वधर्दासस्य तुविनृम्ण नीनमः ॥ २७ ॥
यथा वरो सुषाम्णे सनिभ्य आवहो रयिम् ।
व्यश्वेभ्यः सुभगे वाजिनीवति ॥ २८ ॥
आ नार्यस्य दक्षिणा व्यश्वाँ एतु सोमिनः ।
स्थूरं च राधः शतवत्सहस्रवत् ॥ २९ ॥
यत्त्वा पृच्छादीजानः कुहया कुहयाकृते ।
एषो अपश्रितो वलो गोमतीमव तिष्ठति ॥ ३० ॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—१-९, १३-२४ मित्रावरुणौ; १०-१२ विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ५-९, १९ निचृदुष्णिक्; ३, १०, १३-१६, २०, २१, २२ विराडुष्णिक्; ४, ११, १२, २४ उष्णिक्; १७, १८ पादनिचृदुष्णिक्; २३ आर्च्युष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

ता वां विश्वस्य गोपा देवा देवेषु यज्ञिया ।
ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ॥ १ ॥
मित्रा तना न रथ्या वरुणो यश्च सुक्रतुः ।
सनात्सुजाता तनया धृतव्रता ॥ २ ॥
ता माता विश्ववेदसासुर्या य प्रमहसा ।
मही जजानादितिर्ऋतावरी ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महान्ता मित्रावरुणा सम्राजा देवावसुरा ।
ऋतावानावृतमा घोषतो बृहत् ॥४॥
नपाता शवसो महः सूनू दक्षस्य सुक्रतू ।
सुप्रदानू इषो वास्त्वधि क्षितः ॥५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सं या दानूनि येमथुर्दिव्याः पार्थिवीरिषः ।
नभस्वतीरा वां चरन्तु वृष्टयः ॥६॥
अधि या बृहतो दिवोऽभि यूथेव पश्यतः ।
ऋतावाना सम्राजा नमसे हिता ॥७॥
ऋतावाना नि षेदतुः साम्राज्याय सुक्रतू ।
धृतव्रता क्षत्रिया क्षत्रमाशतुः ॥८॥
अक्ष्णश्चिद्वातुवित्तरानुल्बणेन चक्षसा ।
नि चिन्मिषन्ता निचिरा नि चिक्यतुः ॥९॥
उत नो देव्यदितिरुरुष्यतां नासत्या ।
उरुष्यन्तु मरुतो वृद्धशवसः ॥१०॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

ते नो नावमुरुष्यत दिवा नक्तं सुदानवः ।
अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ॥११॥
अघ्नते विष्णवे वयमरिष्यन्तः सुदानवे ।
श्रुधि स्वयावन्त्सिन्धो पूर्वचित्तये ॥१२॥
तद्वार्यं वृणीमहे वरिष्ठं गोपयत्यम् ।
मित्रो यत्पान्ति वरुणो यदर्यमा ॥१३॥
उत नः सिन्धुरपां तन्मरुतस्तद्दश्विना ।
इन्द्रो विष्णुर्मीढ्वांसः सजोषसः ॥१४॥
ते हि ष्मा वनुषो नरोऽभिमातिं कयस्य चित् ।
तिग्मं न क्षोदः प्रतिघ्नन्ति भूर्णयः ॥१५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

अयमेक इत्था पुरूरु चष्टे वि विश्पतिः ।
तस्य व्रतान्यनु वश्चरामसि ॥ १६ ॥
अनु पूर्वीण्योक्या साम्राज्यस्य सश्चिम ।
मित्रस्य व्रता वरुणस्य दीर्घश्रुत् ॥ १७ ॥
परि यो रश्मिना दिवोऽन्तान्ममे पृथिव्याः ।
उभे आ पप्रौ रोदसी महित्वा ॥ १८ ॥
उदु ष्य शरणे दिवो ज्योतिरयंस्त सूर्यः ।
अग्निर्न शुक्रः समिधान आहुतः ॥ १९ ॥
वचो दीर्घप्रसद्मनीशे वाजस्य गोमतः ।
ईशे हि पित्वोऽविषस्य दावने ॥ २० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

तत्सूर्यं रोदसी उभे दोषा वस्तोरुप ब्रुवे ।
भोजेष्वस्माँ अभ्युच्चरा सदा ॥ २१ ॥
ऋज्रमुक्षण्यायने रजतं हरयाणे ।
रथं युक्तमसनाम सुषामणि ॥ २२ ॥
ता मे अश्व्यानां हरीणां नितोशना ।
उतो नु कृत्व्यानां नृवाहसा ॥ २३ ॥
स्मदभीशू कशावन्ता विप्रा नविष्ठया मती ।
महो वाजिनावर्वन्ता सचासनम् ॥ २४ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वो व्यश्वो वाङ्गिरसः ॥ देवता—१-१९ अश्विनौ; २०, २१, २२-२५ वायुः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, ७ उष्णिक्; २, ८, २३ विराडुष्णिक्; ५, ९-१५, २२ निचृदुष्णिक्; १६, १९ विराड्गायत्री; १७, १८, २१ निचृद्गायत्री; २० विराडनुष्टुप्; २४ पादनिचृदुष्णिक्; २५ गायत्री ॥ स्वरः—१-१५, २२-२४ ऋषभः; १६-१९, २१, २५ षड्जः; २० गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

युवोरु षू रथं हुवे सधस्तुत्याय सूरिषु ।
अतूर्तदक्षा वृषणा वृषण्वसू ॥ १ ॥
युवं वरो सुषाम्णे महे तने नासत्या ।
अवोभिर्याथो वृषणा वृषण्वसू ॥ २ ॥
ता वामद्य हवामहे हव्येभिर्वाजिनीवसू ।
पूर्वीरिष इषयन्तावति क्षपः ॥ ३ ॥
आ वां वाहिष्ठो अश्विना रथो यातु श्रुतो नरा ।
उप स्तोमान्तुरस्य दर्शथः श्रिये ॥ ४ ॥
जुहुराणा चिदश्विना मन्येथां वृषण्वसू ।
युवं हि रुद्रा पर्षथो अति द्विषः ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

दस्रा हि विश्वमानुषङ् मक्षूभिः परिदीयथः ।
धियंजिन्वा मधुवर्णा शुभस्पती ॥ ६ ॥
उप नो यातमश्विना राया विश्वपुषा सह ।
मघवाना सुवीरावनंपच्युता ॥ ७ ॥
आ मे अस्य प्रतीव्यमिन्द्रनासत्या गतम् ।
देवा देवेभिरद्य सचनस्तमा ॥ ८ ॥
वयं हि वां हवामह उक्षण्यन्तो व्यश्ववत् ।
सुमतिभिरुप विप्राविहा गतम् ॥ ९ ॥
अश्विना स्वृषे स्तुहि कुवित्ते श्रवतो हवम् ।
नेदीयसः कूळयातः पणींरुत ॥ १० ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

वैयश्वस्य श्रुतं नरोतो मे अस्य वेदथः ।
सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवादत्तस्य धिष्ण्या युवानीतस्य सूरिभिः ।
अहरहर्वृषणा मह्यं शिक्षतम् ॥ १२ ॥
यो वां यज्ञेभिरावृतोऽधिवस्त्रा वधूरिव ।
सपर्यन्ता शुभे चक्राते अश्विना ॥ १३ ॥
यो वामुरुव्यचस्तमं चिकेतति नृपाय्यम् ।
वर्तिरश्विना परि यातमस्मयू ॥ १४ ॥
अस्मभ्यं सु वृषण्वसू यातं वर्तिर्नृपाय्यम् ।
विषुद्रुहेव यज्ञमूहथुर्गिरा ॥ १५ ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

वाहिष्ठो वां हवानां स्तोमो दूतो हुवन्नरा ।
युवाभ्यां भूत्वश्विना ॥ १६ ॥
यदुदो दिवो अर्णव इषो वा मदथो गृहे ।
श्रुतमिन्मे अमर्त्या ॥ १७ ॥
उत स्या श्वेतयावरी वाहिष्ठा वां नदीनाम् ।
सिन्धुर्हिरण्यवर्तनिः ॥ १८ ॥
स्मदेतया सुकीर्त्याश्विना श्वेतया धिया ।
वहेथे शुभ्रयावाना ॥ १९ ॥
युक्ष्वा हि त्वं रथासहा युवस्व पोष्या वसो ।
आन्नो वायो मधु पिबास्माकं सवना गहि ॥ २० ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत ।
अवांस्या वृणीमहे ॥ २१ ॥
त्वष्टुर्जामातरं वयमीशानं राय ईमहे ।
सुतावन्तो वायुं द्युम्ना जनासः ॥ २२ ॥
वायो याहि शिवा दिवो वहस्वा सु स्वश्व्यम् ।
वहस्व महः पृथुपक्षसा रथे ॥ २३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वां हि सुष्मरंस्तमं नृषदंनेषु हूमहे ।
ग्रावांणं नाश्वंपृष्ठं मंहना ॥ २४ ॥
स त्वं नो देव मनसा वायो मन्दानो अंग्रियः ।
कृधि वाजाँ अपो धियः ॥ २५ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ७, ९ निचृद्बृहती; २, ८, १४, २० पङ्क्तिः; ३ शङ्कुमतीबृहती; ४, ६, १६, २२ निचृत्पङ्क्तिः; ५, ११, १३ विराड्बृहती; १० पादनिचृत्पङ्क्तिः; १२ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः; १५ आर्चीबृहती; १७ विराट्पङ्क्तिः; १८, १९, २१ बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १८, १९, २१ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १७, २०, २२ पञ्चमः ॥

अथैकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावांणो बर्हिरध्वरे ।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पतिं देवाँ अवो वरेण्यम् ॥ १ ॥
आ पशुं गासि पृथिवीं वनस्पतीनुषासा नक्तमोषधीः ।
विश्वे च नो वसवो विश्ववेदसो धीनां भूत प्रावितारः ॥ २ ॥
प्र सू न एत्वध्वरोऽग्ना देवेषु पूर्व्यः ।
आदित्येषु प्र वरुणे धृतव्रते मरुत्सु विश्वभानुषु ॥ ३ ॥
विश्वे हि ष्मा मनवे विश्ववेदसो भुवन्वृधे रिशादसः ।
अरिष्टेभिः पायुभिर्विश्ववेदसो यन्ता नोऽवृकं छर्दिः ॥ ४ ॥
आ नो अद्य समनसो गन्ता विश्वे सजोषसः ।
ऋचा गिरा मरुतो देव्यदिते सदने पस्त्ये महि ॥ ५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अभि प्रिया मरुतो या वो अश्व्या हव्या मित्र प्रयाथन ।
आ बर्हिरिन्द्रो वरुणस्तुरा नर आदित्यासः सदन्तु नः ॥ ६ ॥
वयं वो वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आनुषक् ।
सुतसोमासो वरुण हवामहे मनुष्वदिद्धाग्नयः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ प्र यात मरुतो विष्णो अश्विना पूषन्माकीनया धिया।
इन्द्र आ यातु प्रथमः सनिष्युभिर्वृषा यो वृत्रहा गृणे ॥ ८ ॥
वि नो देवासो अद्रुहोऽच्छिद्रं शर्म यच्छत ।
न यद्दूराद्वसवो नू चिदन्तितो वरूथमाद्धर्षति ॥ ९ ॥
अस्ति हि वः सजात्यं रिशादसो देवासो अस्त्याप्यम्।
प्र णः पूर्वस्मै सुविताय वोचत मक्षू सुम्नाय नव्यसे ॥ १० ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

इदा हि व उपस्तुतिमिदा वामस्य भक्तये ।
उप वो विश्ववेदसो नमस्युराँ असृक्ष्यन्यामिव ॥ ११ ॥
उदु ष्य वः सविता सुप्रणीतयोऽस्थादूर्ध्वो वरेण्यः ।
नि द्विपादश्चतुष्पादो अर्थिनोऽविश्रन्पतयिष्णवः ॥ १२ ॥
देवंदेवं वोऽवसे देवंदेवमभिष्टये ।
देवंदेवं हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया ॥ १३ ॥
देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साकं सरातयः।
ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवोविदः ॥ १४ ॥
प्र वः शंसाम्यद्रुहः संस्थ उपस्तुतीनाम् ।
न तं धूर्तिर्वरुण मित्र मर्त्यं यो वो धामभ्योऽविधत् ॥ १५ ॥
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति।
प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परीष्टः सर्व एधते ॥ १६ ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

ऋते स विन्दते युधः सुगेभिर्यात्यध्वनः ।
अर्यमा मित्रो वरुणः सरातयो यं त्रायन्ते सजोषसः ॥ १७ ॥
अज्रे चिदस्मै कृणुथा न्यञ्चनं दुर्गे चिदा सुसरणम् ।
एषा चिदस्मादशनिः परो नु सास्रेधन्ती वि नश्यतु ॥ १८ ॥
यद्द्य सूर्य उद्यति प्रियक्षत्रा ऋतं दध ।
यन्निम्रुचि प्रबुधि विश्ववेदसो यद्वा मध्यन्दिने दिवः ॥ १९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्वाभिपित्वे असुरा ऋतं यते छर्दिर्येम वि दाशुषे ।
वयं तद्वो वसवो विश्ववेदस उप स्थेयाम मध्य आ ॥ २० ॥
यदद्य सूर उदिते यन्मध्यन्दिन आतुचि ।
वामं धत्थ मनवे विश्ववेदसो जुह्वानाय प्रचेतसे ॥ २१ ॥
वयं तद्वः सम्राज आ वृणीमहे पुत्रो न बहुपाय्यम् ।
अश्याम तदादित्या जुह्वतो हविर्येन वस्योऽनशामहै ॥ २२ ॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३, ५ विराड्गायत्री; ४ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—१-३, ५ षड्जः; ४ ऋषभः ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

ये त्रिंशति त्रयस्परो देवासो बर्हिरासदन् । विदन्नह द्वितासनन् ॥ १ ॥
वरुणो मित्रो अर्यमा स्मद्रातिषाचो अग्रयः । पत्नीवन्तो वषट्कृताः ॥ २ ॥
ते नो गोपा अपाच्यास्त उदक्तं इत्था न्यक् । पुरस्तात्सर्वया विशा ॥ ३ ॥
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत्तदेषां नकिरा मिनत् । अरावा चन मर्त्यः ॥ ४ ॥
सप्तानां सप्त ऋष्टयः सप्त द्युम्नान्येषाम् । सप्तो अधि श्रियो धिरे ॥ ५ ॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः कश्यपो वा मारीचः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २ आर्चीगायत्री; ३, ४, १० आर्चीस्वराड्गायत्री; ५ विराड्गायत्री; ६-९ आर्चीभुरिग्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

बभ्रुरेको विषुणः सूनरो युवाञ्ज्यङ्क्ते हिरण्ययम् ॥ १ ॥
योनिमेक आ ससाद द्योतनोऽन्तर्देवेषु मेधिरः ॥ २ ॥
वाशीमेको बिभर्ति हस्त आयसीमन्तर्देवेषु निर्ऋतिः ॥ ३ ॥
वज्रमेको बिभर्ति हस्त आहितं तेन वृत्राणि जिघ्नते ॥ ४ ॥
तिग्ममेको बिभर्ति हस्त आयुधं शुचिरुग्रो जलाषभेषजः ॥ ५ ॥
पथ एकः पीपाय तस्करो यथाँ एष वेद निधीनाम् ॥ ६ ॥
त्रीण्येक उरुगायो वि चक्रमे यत्र देवासो मदन्ति ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिर्द्वा चरत एकया सह प्र प्रवासेव वसतः ॥ ८ ॥
सदो द्वा चक्राते उपमा दिवि सम्राजा सर्पिरासुती ॥ ९ ॥
अर्चन्त एके महि साम मन्वत तेन सूर्यमरोचयन् ॥ १० ॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २ पुरउष्णिक्; ३ विराड् बृहती; ४ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ षड्जः; २ ऋषभः; ३ मध्यमः; ४ गान्धारः ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

नहि वो अस्त्यर्भको देवासो न कुमारकः ।
विश्वे सतोमहान्त इत् ॥ १ ॥
इति स्तुतासो असथा रिशादसो ये स्थ त्रयश्च त्रिंशच्च ।
मनोर्देवा यज्ञियासः ॥ २ ॥
ते नस्त्राध्वं तेऽवत त उ नो अधि वोचत ।
मा नः पथः पित्र्यान्मानवादधि दूरं नैष्ट परावतः ॥ ३ ॥
ये देवास इह स्थन विश्वे वैश्वानरा उत ।
अस्मभ्यं शर्म सप्रथो गवेऽश्वाय यच्छत ॥ ४ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः [३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मनुर्वैवस्वतः ॥ देवता—१-४ ईज्यास्तवो यजमानप्रशंसा च; ५-९ दम्पती; १०-१८ दम्पत्योराशिषः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ७, १२ गायत्री; २, ४, ६, ८ निचृद्गायत्री; ९ अनुष्टुप्; १० पादनिचृद्-गायत्री; ११, १३ विराड्गायत्री; १४ विराडनुष्टुप्; १५-१७ विराट्पङ्क्तिः; १८ आर्ची-भुरिक्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-८, १०-१३ षड्जः; ९, १४ गान्धार; १५-१८ पञ्चमः ॥

अथाष्टत्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

यो यजाति यजात इत्सुनवच्च पचाति च ।
ब्रह्मेदिन्द्रस्य चाकनत् ॥ १ ॥
पुरोळाशं यो अस्मै सोमं ररत आशिरम् ।
पादित्तं शक्रो अंहसः ॥ २ ॥
तस्य द्युमाँ असद्रथो देवजूतः स शूशुवत् ।
विश्वा वन्वन्नमित्रिया ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्य प्रजावती गृहेऽ सश्चन्ती दिवेदिवे ।
इळा धेनुमती दुहे ॥४॥
या दंपती समनसा सुनुत आ च धावतः ।
देवासो नित्ययाशिरा ॥५॥

अथैकोनचत्वारिंशो वर्गः ॥ ३९ ॥

प्रति प्राशव्यां इतः सम्यञ्चा बर्हिराशाते ।
न ता वाजेषु वायतः ॥६॥
न देवानामपि ह्रुतः सुमतिं न जुगुक्षतः ।
श्रवो बृहद्दिवासतः ॥७॥
पुत्रिणा ता कुमारिणा विश्वमायुर्व्यश्नुतः ।
उभा हिरण्यपेशसा ॥८॥
वीतिहोत्रा कृतद्वसू दशस्यन्तामृताय कम् ।
समूधो रोमशं हतो देवेषु कृणुतो दुवः ॥९॥
आ शर्म पर्वतानां वृणीमहे नदीनाम् ।
आ विष्णोः सचाभुवः ॥१०॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४० ॥

ऐतु पूषा रयिर्भगः स्वस्ति सर्वधातमः ।
उरुरध्वा स्वस्तये ॥११॥
अरमतिरनर्वणो विश्वो देवस्य मनसा ।
आदित्यानामनेह इत् ॥१२॥
यथा नो मित्रो अर्यमा वरुणः सन्ति गोपाः ।
सुगा ऋतस्य पन्थाः ॥१३॥
अग्निं वः पूर्व्यं गिरा देवमीळे वसूनाम् ।
सपर्यन्तः पुरुप्रियं मित्रं न क्षेत्रसाधसम् ॥१४॥
मक्षू देववतो रथः शूरो वा पृत्सु कासु चित् ।
देवानां य इन्मनो यजमान इयक्षत्यभीदयज्वनो भुवत् ॥१५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न यजमान रिष्यसि न सुन्वान न देवयो ।
देवानां य इन्मनो यजमान इयक्षत्यभीदयज्वनो भुवत् ॥ १६ ॥
नकिष्टं कर्मणा नशन्न प्र योषन्न योषति ।
देवानां य इन्मनो यजमान इयक्षत्यभीदयज्वनो भुवत् ॥ १७ ॥
असदत्र सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्व्यम् ।
देवानां य इन्मनो यजमान इयक्षत्यभीदयज्वनो भुवत् ॥ १८ ॥

इति षष्ठाष्टके द्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ षष्ठाष्टके तृतीयोऽध्यायः

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७, १३, १५, २७, २८, निचृद्गायत्री; २, ४, ६, ८-१२, १४, १६, १७, २१, २२, २४-२६ गायत्री; ३, ५, १९, २०, २३, २९ विराड्गायत्री; १८, ३० भुरिग्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

प्र कृतान्यृजीषिणः कण्वा इन्द्रस्य गाथया । मदे सोमस्य वोचत ॥ १ ॥
यः सृबिन्दुमनर्शनिं पिप्रुं दासमहीशुवम् । वधीदुग्रो रिणन्नपः ॥ २ ॥
न्यर्बुदस्य विष्टपं वर्ष्माणं बृहतस्तिर । कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ॥ ३ ॥
प्रति श्रुतायं वो धृषत्तूर्णाशं न गिरेरधि । हुवे सुशिप्रमूतये ॥ ४ ॥
स गोरश्वस्य वि व्रजं मन्दानः सोम्येभ्यः । पुरं न शूर दर्षसि ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

यदि मे रारणः सुत उक्थे वा दधसे चनः । आरादुप स्वधा गहि ॥ ६ ॥
वयं घा ते अपि ष्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः ॥ ७ ॥
उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम् । मघवन्भूरि ते वसु ॥ ८ ॥
उत नो गोमतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः । इळाभिः सं रभेमहि ॥ ९ ॥
बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये । साधु कृण्वन्तमवसे ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

यः संस्थे चिच्छतक्रतुरादीं कृणोति वृत्रहा । जरितृभ्यः पुरूवसुः ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स नः शक्रश्चिदा शकदानवाँ अन्तराभरः। इन्द्रो विश्वाभिरूतिभिः ॥ १२ ॥
यो रायोऽवनिर्महान्त्सुपारः सुन्वतः सखा। तमिन्द्रमभि गायत ॥ १३ ॥
आयन्तारं महि स्थिरं पृतनासु श्रवोजितम्। भूरेरीशानमोजसा ॥ १४ ॥
नकिरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतानाम्। नकिर्वक्ता न दादिति ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

न नूनं ब्रह्मणामृणं प्राशूनामस्ति सुन्वताम्। न सोमो अप्रता पपे ॥ १६ ॥
पन्य इदुप गायत पन्य उक्थानि शंसत। ब्रह्मा कृणोत पन्य इत् ॥ १७ ॥
पन्य आ ददिरच्छता सहस्रा वाज्यवृतः। इन्द्रो यो यज्वनो वृधः ॥ १८ ॥
वि षू चर स्वधा अनु कृष्टीनामन्वाहुवः। इन्द्र पिब सुतानाम् ॥ १९ ॥
पिब स्वधैनवानामुत यस्तुग्र्ये सचा। उतायमिन्द्र यस्तव ॥ २० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपारणे। इमं रातं सुतं पिब ॥ २१ ॥
इहि तिस्रः परावत इहि पञ्च जनाँ अति। धेना इन्द्रावचाकशत् ॥ २२ ॥
सूर्यो रश्मिं यथा सृजा त्वा यच्छन्तु मे गिरः। निम्नमापो न सध्र्यक् ॥ २३ ॥
अध्वर्यवा तु हि षिञ्च सोमं वीराय शिप्रिणे। भरा सुतस्य पीतये ॥ २४ ॥
य उदनः फलिगं भिनन्न्यक्सिन्धूँरवासृजत्। यो गोषु पक्वं धारयत् ॥ २५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

अहन्वृत्रमृचीषम और्णवाभमहीशुवम्। हिमेनाविध्यदर्बुदम् ॥ २६ ॥
प्र व उग्राय निष्टुरेऽषाळ्हाय प्रसक्षिणे। देवत्तं ब्रह्म गायत ॥ २७ ॥
यो विश्वान्यभि व्रता सोमस्य मदे अन्धसः। इन्द्रो देवेषु चेतति ॥ २८ ॥
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या। वोळ्हामभि प्रयो हितम् ॥ २९ ॥
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी। सोमपेयाय वक्षतः ॥ ३० ॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३, ५ बृहती; ४, ७, ८, १०, १२ विराड् बृहती; ६, ९, ११, १४, १५ निचृद्बृहती; १३ आर्चीभुरिग्बृहती; १६, १८ गायत्री; १७ निचृद् गायत्री; १९ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१५ मध्यमः; १६-१८ षड्जः; १९ गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन्परि स्तोतार आसते ॥ १ ॥
स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः ॥ २ ॥
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्त्रिणम् ।
पिशङ्गरूपं मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ ३ ॥
पाहि गायान्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे ।
यः संमिश्लो हर्योर्यः सुते सचा वज्री रथो हिरण्ययः ॥ ४ ॥
यः सुषव्यः सुदक्षिण इनो यः सुक्रतुर्गृणे ।
य आकरः सहस्त्रा यः शतामघ इन्द्रो यः पूर्भिदारितः ॥ ५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यो धृषितो योऽवृतो यो अस्ति श्मश्रुषु श्रितः ।
विभूतद्युम्नश्च्यवनः पुरुष्टुतः क्रत्वा गौरिव शाकिनः ॥ ६ ॥
क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्रिन्धसः ॥ ७ ॥
दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।
नकिष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाँश्चरस्योजसा ॥ ८ ॥
य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः ।
यदिं स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत् ॥ ९ ॥
सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽवृतः ।
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः ॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

वृषणस्ते अभीशवो वृषा कशा हिरण्ययी ।
वृषा रथो मघवन्वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृषा सोता सुनोतु ते वृषन्नृजीषिन्ना भर ।
वृषा दधन्वे वृषणं नदीष्वा तुभ्यं स्थातर्हरीणाम् ॥ १२ ॥
एन्द्र याहि पीतये मधु शविष्ठ सोम्यम् ।
नायमच्छा मघवा शृणवद्गिरो ब्रह्मोक्था च सुक्रतुः ॥ १३ ॥
वहन्तु त्वा रथेष्ठामा हरयो रथयुजः ।
तिरश्चिदर्यं सवनानि वृत्रहन्न्येषां या शतक्रतो ॥ १४ ॥
अस्माकमद्यान्तमं स्तोमं धिष्व महामह ।
अस्माकं ते सवना सन्तु शन्तमा मदाय द्युक्ष सोमपा ॥ १५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य रण्यति ।
यो अस्मान्वीर आनयत् ॥ १६ ॥
इन्द्रश्चिद्धा तदब्रवीत्स्त्रिया अशास्यं मनः ।
उतो अह क्रतुं रघुम् ॥ १७ ॥
सप्तीं चिद्धा मदच्युता मिथुना वहतो रथम् ।
एवेद्दूर्वृष्ण उत्तरा ॥ १८ ॥
अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर ।
मा ते कशप्लकौ दृशन्स्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ ॥ १९ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-१५ नीपातिथिः काण्वः; १६-१८ सहस्रं वसुरोचिषोऽङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—१, ३, ८, १०, १२, १३, १५ निचृदनुष्टुप्; २, ४, ६, ७, ९ अनुष्टुप्; ५, ११, १४ विराडनुष्टुप्; १६, १८ निचृद्गायत्री; १७ विराड्गायत्री ॥
स्वरः—१-१५ गान्धारः; १६-१८ षड्जः ॥

अथ एकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १ ॥
आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण यच्छतु ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्रा वि नेमिरेषामुरां न धूनुते वृकः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ३ ॥
आ त्वा कण्वा इहावसे हवन्ते वाजसातये ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ४ ॥
दधामि ते सुतानां वृष्णे न पूर्वपाय्यम् ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

स्मत्पुरन्धिर्न आ गहि विश्वतोधीर्न ऊतये ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ६ ॥
आ नो याहि महेमते सहस्त्रोते शतामघ ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ७ ॥
आ त्वा होता मनुर्हितो देवत्रा वक्षदीड्यः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ८ ॥
आ त्वा मदच्युता हरी श्येनं पक्षेव वक्षतः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ९ ॥
आ याह्यर्य आ परि स्वाहा सोमस्य पीतये ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १० ॥

अत त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

आ नो याह्युपश्रुत्युक्थेषु रणया इह ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ११ ॥
सरूपैरा सु नो गहि संभूतैः संभृताश्वः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १२ ॥
आ याहि पर्वतेभ्यः समुद्रस्याधि विष्टपः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १३ ॥
आ नो गव्यान्यश्व्या सहस्त्रा शूर दर्दृहि ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ नः सहस्रशो भरायुतानि शतानि च ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १५ ॥
आ यदिन्द्रश्च दद्वहे सहस्रं वसुरोचिषः ।
ओजिष्ठमश्व्यं पशुम् ॥ १६ ॥
य ऋज्रा वातरंहसोऽरुषासो रघुष्यदः ।
भ्राजन्ते सूर्यांइव ॥ १७ ॥
पारावतस्य रातिषु द्रवच्चक्रेष्वाशुषु ।
तिष्ठं वनस्य मध्य आ ॥ १८ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१-५, १६, १८, विराट्त्रिष्टुप्; ६, १०-१२, १४, १५, १७ भुरिक्पङ्क्तिः; ७-९, १३ निचृत्त्रिष्टुप्; १९, २२ निचृत्पङ्क्तिः; २०, २१, २४ पङ्क्तिः; २३ पुरस्ताज्ज्योतिर्नामजगती ॥ स्वरः—१-५, ७-९, १३, १६, १८ धैवतः; ६, १०-१२, १४, १५, १७, १९-२२, २४ पञ्चमः; २३ निषादः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अग्निनेन्द्रेण वरुणेन विष्णुनादित्यै रुद्रैर्वसुभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ १ ॥
विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन वाजिना दिवा पृथिव्याद्रिभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ २ ॥
विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैरिहाद्भिर्मरुद्भिर्भृगुभिः सचाभुवा ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं पिबतमश्विना ॥ ३ ॥
जुषेथां यज्ञं बोधतं हवस्य मे विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चेषं नो वोळ्हमश्विना ॥ ४ ॥
स्तोमं जुषेथां युवशेव कन्यनां विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चेषं नो वोळ्हमश्विना ॥ ५ ॥
गिरो जुषेथामध्वरं जुषेथां विश्वेह देवौ सवनाव गच्छतम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चेषं नो वोळ्हमश्विना ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

हारिद्रवेव पतथो वनेदुप सोमं सुतं मंहिषेवाव गच्छथः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥ ७ ॥
हंसाविव पतथो अध्वगाविव सोमं सुतं मंहिषेवाव गच्छथः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥ ८ ॥
श्येनाविव पतथो हव्यदातये सोमं सुतं मंहिषेवाव गच्छथः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च त्रिर्वर्तिर्यातमश्विना ॥ ९ ॥
पिबतं च तृप्णुतं चा च गच्छतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण नो धत्तमश्विना ॥ १० ॥
जयतं च प्र स्तुतं च प्र चावतं प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण नो धत्तमश्विना ॥ ११ ॥
हतं च शत्रून्यततं च मित्रिणः प्रजां च धत्तं द्रविणं च धत्तम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण नो धत्तमश्विना ॥ १२ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

मित्रावरुणवन्ता उत धर्मवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना ॥ १३ ॥
अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णुवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना ॥ १४ ॥
ऋभुमन्ता वृषणा वाजवन्ता मरुत्वन्ता जरितुर्गच्छथो हवम् ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चादित्यैर्यातमश्विना ॥ १५ ॥
ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं धियो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ॥ १६ ॥
क्षत्रं जिन्वतमुत जिन्वतं नृन्हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ॥ १७ ॥
धेनूर्जिन्वतमुत जिन्वतं विशो हतं रक्षांसि सेधतममीवाः ।
सजोषसा उषसा सूर्येण च सोमं सुन्वतो अश्विना ॥ १८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

अत्रेरिव शृणुतं पूर्व्यस्तुतिं श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चाश्विना तिरोअह्न्यम् ॥ १९ ॥
सर्गाँइव सृजतं सुष्टुतीरुप श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चाश्विना तिरोअह्न्यम् ॥ २० ॥
रश्मींरिव यच्छतमध्वराँ उप श्यावाश्वस्य सुन्वतो मदच्युता ।
सजोषसा उषसा सूर्येण चाश्विना तिरोअह्न्यम् ॥ २१ ॥
अर्वाग्रथं नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ।
आ यातमश्विना गतमवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ २२ ॥
नमोवाके प्रस्थिते अध्वरे नरा विवक्षणस्य पीतये ।
आ यातमश्विना गतमवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ २३ ॥
स्वाहाकृतस्य तृम्पतं सुतस्य देवावन्धसः ।
आ यातमश्विना गतमवस्युर्वीमहं हुवे धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ २४ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ६ शक्वरी; २, ४ निचृच्छक्वरी; ३ विराट्शक्वरी; ७ विराड्जगती ॥ स्वरः—१-६ धैवतः; ७ निषादः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अवितासि सुन्वतो वृक्तबर्हिषः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं ते भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ १ ॥
प्राव स्तोतारं मघवन्नव त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं ते भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ २ ॥
ऊर्जा देवाँ अवस्योजसा त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
यं ते भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो।
यं ते भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ ४ ॥
जनिताश्वानां जनिता गवामसि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो।
यं ते भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ ५ ॥
अत्रीणां स्तोममद्रिवो महस्कृधि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो।
यं ते भागमधारयन्विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः
समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ॥ ६ ॥
श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा शृणु यथाशृणोरत्रेः कर्माणि कृण्वतः।
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्य इन्द्र ब्रह्माणि वर्धयन् ॥ ७ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराडतिजगती; २-६ निचृज्जगती; ७ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ प्र सुन्वतः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ १ ॥
सेहान उग्र पृतना अभि द्रुहः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ २ ॥
एकराळस्य भुवनस्य राजसि शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ३ ॥
सस्थावाना ययसि त्वमेक इच्छचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ४ ॥
क्षेमस्य च प्रयुजश्च त्वमीशिषे शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षत्राय त्वमवसि न त्वमाविथ शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्ननेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ॥ ६ ॥
श्यावाश्वस्य रेभतस्तथा शृणु यथाशृणोरत्रेः कर्माणि कृण्वतः।
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नृषाह्य इन्द्र क्षत्राणि वर्धयन् ॥ ७ ॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—१, २, ४, ६, ९ गायत्री; ३, ५, ७, १० निचृद्गायत्री; ८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ १ ॥
तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ २ ॥
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः। इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ ३ ॥
जुषेथां यज्ञमिष्टये सुतं सोमं सधस्तुती। इन्द्राग्नो आ गतं नरा ॥ ४ ॥
इमा जुषेथां सवना येभिर्हव्यान्यूहथुः। इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥ ५ ॥
इमां गायत्रवर्तनिं जुषेथां सुष्टुतिं मम। इन्द्राग्नी आ गतं नरा ॥ ६ ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

प्रातर्यावभिरा गतं देवेभिर्जेन्यावसू। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ७ ॥
श्यावाश्वस्य सुन्वतोऽत्रीणां शृणुतं हवम्। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ८ ॥
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः। इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ९ ॥
आहं सरस्वतीवतोरिन्द्राग्न्योरवो वृणे। याभ्यां गायत्रमृच्यते ॥ १० ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नाभाकः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६-८ स्वराट्त्रिष्टुप्; ९ निचृज्जगती; १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-८, १० धैवतः; ९ निषादः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अग्निमस्तोष्यृग्मियमग्निमीळा यजध्यै ।
अग्निर्देवाँ अनक्तु न उभे हि विदथे कविरन्तश्चरति
दूत्यं१ नभन्तामन्यके समे ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यग्ने नव्यसा वचस्तनूषु शंसमेषाम् ।
न्यरातीररावणां विश्वा अर्यो अरातीरितो
युच्छन्त्वामुरो नभन्तामन्यके समे ॥ २ ॥
अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं घृतं न जुह्व आसनि ।
स देवेषु प्र चिकिद्धि त्वं ह्यसि पूर्व्यः
शिवो दूतो विवस्वतो नभन्तामन्यके समे ॥ ३ ॥
तत्तदग्निर्वयो दधे यथायथा कृपण्यति ।
ऊर्जाहुतिर्वसूनां शं च योश्च मयो दधे
विश्वस्यै देवहूत्यै नभन्तामन्यके समे ॥ ४ ॥
स चिकेत सहीयसाग्निश्चित्रेण कर्मणा ।
स होता शश्वतीनां दक्षिणाभिर्भीवृत
इनोति च प्रतीव्यं नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अग्निर्जाता देवानामग्निर्वेद मतीनामपीच्यम् ।
अग्निः स द्रविणोदा अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते
स्वाहुतो नवीयसा नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥
अग्निर्देवेषु संवसुः स विक्षु यज्ञियास्वा ।
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुष्यति
देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके समे ॥ ७ ॥
यो अग्निः सप्तमानुषः श्रितो विश्वेषु सिन्धुषु ।
तमागन्म त्रिपस्त्यं मन्धातुर्दस्युहन्तममग्निं
यज्ञेषु पूर्व्यं नभन्तामन्यके समे ॥ ८ ॥
अग्निस्त्रीणि त्रिधातून्या क्षेति विदथा कविः ।
स त्रींरेकादशाँ इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो
विप्रो दूतः परिष्कृतो नभन्तामन्यके समे ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं नो अग्न आयुषु त्वं देवेषु पूर्व्य वस्व एक इरज्यसि।
त्वामापः परिस्रुतः परि यन्ति स्वसेतवो नभन्तामन्यके समे॥ १०॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नाभाकः काण्वः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—१, ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ स्वराट्शक्वरी; ३, ४ स्वराट्त्रिष्टुप्; ५, ७, ९ जगती; ६ भुरिग्जगती; ८, १० निचृज्जगती; १२ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४, ११, १२ धैवतः; ५-१० निषादः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

इन्द्राग्नी युवं सु नः सहन्ता दासथो रयिम्।
येन दूळहा समत्स्वा वीळु चित्साहिषीमह्यग्निर्वनेव
वात इन्नभन्तामन्यके समे॥ १॥
नहि वां वव्रयाम हेऽथेन्द्रमिद्यजामहे शविष्ठं नृणां नरम्।
स नः कदा चिदर्वता गमदा वाजसातये
गमदा मेधसातये नभन्तामन्यके समे॥ २॥
ता हि मध्यं भराणामिन्द्राग्नी अधिक्षितः।
ता उ कवित्वना कवी पृच्छ्यमाना सखीयते
सं धीतमश्नुतं नरा नभन्तामन्यके समे॥ ३॥
अभ्यर्च नभाकवदिन्द्राग्नी यजसा गिरा।
ययोर्विश्वमिदं जगदियं द्यौः पृथिवी मह्युपस्थे
बिभृतो वसु नभन्तामन्यके समे॥ ४॥
प्र ब्रह्माणि नभाकवदिन्द्राग्निभ्यामिरज्यत।
या सप्तबुध्नमर्णवं जिह्मबारमपोर्णुत
इन्द्र ईशान ओजसा नभन्तामन्यके समे॥ ५॥
अपि वृश्च पुराणवद् व्रततेरिव गुष्पितमोजो दासस्य दम्भय।
वयं तदस्य संभृतं वस्विन्द्रेण वि भजेमहि नभन्तामन्यके समे॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

यदिन्द्राग्नी जना इमे विह्वयन्ते तना गिरा ।
अस्माकेभिर्नृभिर्वयं सासह्याम पृतन्यतो
वनुयाम वनुष्यतो नभन्तामन्यके समे ॥ ७ ॥
या नु श्वेतावबो दिव उच्चरात उप द्युभिः ।
इन्द्राग्न्योरनु व्रतमुहाना यन्ति सिन्धवो
यान्तसीं बन्धादमुञ्चतां नभन्तामन्यके समे ॥ ८ ॥
पूर्वीष्ट इन्द्रोपमातयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः सूनौ हिन्वस्य हरिवः ।
वस्वौ वीरस्यापचो या नु साधन्त नो धियो नभन्तामन्यके समे ॥ ९ ॥
तं शिशीता सुवृक्तिभिस्त्वेषं सत्वानमूग्मियम् ।
उतो नु चिद्य ओजसा शुष्णस्याण्डानि भेदति
जेषत्स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥ १० ॥
तं शिशीता स्वध्वरं सत्यं सत्वानमूत्वियम् ।
उतो नु चिद्य ओहत आण्डा शुष्णस्य भेदत्यजैः
स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥ ११ ॥
एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन्नवीयो मन्धातृवदङ्गिरस्वदवाचि ।
त्रिधातुना शर्मणा पातमस्मान्वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १२ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नाभाकः काण्वः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१, ५ त्रिष्टुप्; २, ३, ६, १० निचृज्जगती; ४, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ८ स्वराट्त्रिष्टुप्; ९ जगती ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७, ८ धैवतः; २, ३, ६, ९, १० निषादः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

अस्मा ऊ षु प्रभूतये वरुणाय मरुद्भ्योऽर्चा विदुष्टरेभ्यः ।
यो धीता मानुषाणां पशवो गाइव रक्षति नभन्तामन्यके समे ॥ १ ॥
तमू षु समना गिरा पितॄणां च मन्मभिः ।
नाभाकस्य प्रशस्तिभिर्यः सिन्धूनामुपोदये
सप्तस्वसा स मध्यमो नभन्तामन्यके समे ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स क्षपः परि षस्वजे न्युस्त्रो मायया दधे स विश्वं परि दर्शतः ।
तस्य वेनीरनु व्रतमुषस्तिस्त्रो अवर्धयन्नभन्तामन्यके समे ॥ ३ ॥
यः ककुभौ निधारयः पृथिव्यामधि दर्शतः ।
स माता पूर्व्यं पदं तद्वरुणस्य सप्त्यं स हि गोपाइवेर्यो
नभन्तामन्यके समे ॥ ४ ॥
यो धर्ता भुवनानां य उस्त्राणामपीच्या३ वेद नामानि गुह्या ।
स कविः काव्या पुरु रूपं द्यौरिव पुष्यति नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

यस्मिन्विश्वानि काव्या चक्रे नाभिरिव श्रिता ।
त्रितं जूती सपर्यत व्रजे गावो न संयुजे
युजे अश्वाँ अयुक्षत नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥
य आस्वत्क आशये विश्वा जातान्येषाम् ।
परि धामानि मर्मृशद्वरुणस्य पुरो गये
विश्वे देवा अनु व्रतं नभन्तामन्यके समे ॥ ७ ॥
स समुद्रो अपीच्यस्तुरो द्यामिव रोहति नि यदासु यजुर्दधे ।
स माया अर्चिना पदास्तृणान्नाकमारुहन्नभन्तामन्यके समे ॥ ८ ॥
यस्य श्वेता विचक्षणा तिस्त्रो भूमीरधिक्षितः ।
त्रिरुत्तराणि पप्रतुर्वरुणस्य ध्रुवं सदः
स सप्तानामिरज्यति नभन्तामन्यके समे ॥ ९ ॥
यः श्वेताँ अधिनिर्णिजश्चक्रे कृष्णाँ अनु व्रता ।
स धाम पूर्व्यं ममे यः स्कम्भेन वि रोदसी
अजो न द्यामधारयन्नभन्तामन्यके समे ॥ १० ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—१-६ नाभाकः काण्व अर्चनाना वा; अथवा १-३ नाभाकः काण्वः; ४-६ नाभाकः काण्व अर्चनाना वा ॥ देवता—१-३ वरुणः; ४-६ अश्विनौ ॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४-६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-६ गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अस्तभ्नाद् द्यामसुरो विश्ववेदा अमिमीत वरिमाणं पृथिव्याः ।
आसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राड् विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि ॥ १ ॥
एवा वन्दस्व वरुणं बृहन्तं नमस्या धीरममृतस्य गोपाम् ।
स नः शर्म त्रिवरूथं वि यंसत्पातं नौ द्यावापृथिवी उपस्थे ॥ २ ॥
इमां धियं शिक्षमाणस्य देव क्रतुं दक्षं वरुण सं शिशाधि ।
ययाति विश्वा दुरिता तरेम सुतर्मीणमधि नावं रुहेम ॥ ३ ॥
आ वां ग्रावाणो अश्विना धीभिर्विप्रा अचुच्यवुः ।
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे ॥ ४ ॥
यथा वामत्रिरश्विना गीर्भिर्विप्रो अजोहवीत् ।
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे ॥ ५ ॥
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
नासत्या सोमपीतये नभन्तामन्यके समे ॥ ६ ॥

षष्ठोऽनुवाकः [४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ९-१२, २२, २६, २८, २९, ३३ निचृद्गायत्री; २-८, १३, १५-२१, २३-२५, २७, ३१, ३२ गायत्री; १४ ककुम्मतीगायत्री; ३० पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

इमे विप्रस्य वेधसोऽग्नेरस्तृतयज्वनः । गिरः स्तोमास ईरते ॥ १ ॥
अस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचर्षणे । अग्ने जनामि सुष्टुतिम् ॥ २ ॥
आरोकाइव घेदहं तिग्मा अग्ने तव त्विषः । दद्भिर्वनानि बप्सति ॥ ३ ॥
हरयो धूमकेतवो वातजूता उप द्यवि । यतन्ते वृथगग्रयः ॥ ४ ॥
एते त्ये वृथगग्रय इद्धासः समदृक्षत । उषसामिव केतवः ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

कृष्णा रजांसि पत्सुतः प्रयाणे जातवेदसः । अग्निर्यद्रोधति क्षमि ॥ ६ ॥
धासिं कृण्वान ओषधीर्बप्सदग्निर्न वायति । पुनर्यन्तरुणीरपि ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिह्वाभिरह नन्नमद्दर्चिषा जञ्जणाभवन्। अग्निर्वनेषु रोचते॥ ८॥
अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सञ्जायसे पुनः॥ ९॥
उदग्ने तव तद् घृतादर्ची रोचत आहुतम्। निंसानं जुह्वो३ मुखे॥ १०॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे। स्तोमैर्विधेमाग्नये ॥ ११॥
उत त्वा नमसा वयं होतर्वरेण्यक्रतो। अग्ने समिद्धिरीमहे ॥ १२॥
उत त्वा भृगुवच्छुचे मनुष्वदग्न आहुत। अङ्गिरस्वद्धवामहे ॥ १३॥
त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन्त्सता। सखा सख्या समिध्यसे॥ १४॥
स त्वं विप्राय दाशुषे रयिं देहि सहस्त्रिणम्। अग्ने वीरवतीमिषम्॥ १५॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

अग्ने भ्रातः सहस्कृत रोहिदश्व शुचिव्रत। इमं स्तोमं जुषस्व मे॥ १६॥
उत त्वाग्ने मम स्तुतौ वाश्राय प्रतिहर्यते। गोष्ठं गावइवाशत ॥ १७॥
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक्। अग्ने कामाय येमिरे॥ १८॥
अग्निं धीभिर्मनीषिणो मेधिरासो विपश्चितः। अद्यसद्याय हिन्विरे॥ १९॥
तं त्वामज्मेषु वाजिनं तन्वाना अग्ने अध्वरम्। वह्निं होतारमीळते॥ २०॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः। समत्सु त्वा हवामहे॥ २१॥
तमीळिष्व य आहुतोऽग्निर्विभ्राजते घृतैः। इमं नः शृणवद्धवम् ॥ २२॥
तं त्वा वयं हवामहे शृण्वन्तं जातवेदसम्। अग्ने घ्नन्तमप द्विषः॥ २३॥
विशां राजानमद्भुतमध्यक्षं धर्मणामिमम्। अग्निमीळे स उ श्रवत्॥ २४॥
अग्निं विश्वायुवेपसं मर्यं न वाजिनं हितम्। सप्तिं न वाजयामसि॥ २५॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः॥ ३४॥

घ्नन्मृधाण्यप द्विषो दहन्रक्षांसि विश्वहा। अग्ने तिग्मेन दीदिहि ॥ २६॥
यं त्वा जनास इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम। अग्ने स बोधि मे वचः॥ २७॥
यदग्ने दिविजा असि पृथुजा वा सहस्कृत। तं त्वा गीर्भिर्हवामहे॥ २८॥
तुभ्यं धेत्ते जना इमे विश्वाः सुक्षितयः पृथक्। धासिं हिन्वन्त्यत्तवे॥ २९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते घेदग्ने स्वाध्योऽ हा विश्वा नृचक्षसः। तरन्तः स्याम दुर्गहा ॥ ३० ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं शीरं पावकशोचिषम्। हृद्भिर्मन्द्रेभिरीमहे ॥ ३१ ॥
स त्वमग्ने विभावसुः सृजन्त्सूर्यो न रश्मिभिः। शर्धन्तमांसि जिघ्नसे ॥ ३२ ॥
तत्ते सहस्व ईमहे दात्रं यन्नोपदस्यति। त्वदग्ने वार्यं वसु ॥ ३३ ॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६, १०, २०-२२, २५, २६ गायत्री; २, ५, ७, ८, ११, १४-१७, २४ निचृद्गायत्री; ९, १२, १३, १८, २८, ३० विराड्गायत्री; २७ यवमध्यागायत्री; २९ ककुम्मतीगायत्री; १९, २३ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन्हव्या जुहोतन ॥ १ ॥
अग्ने स्तोमं जुषस्व मे वर्धस्वानेन मन्मना। प्रति सूक्तानि हर्य नः ॥ २ ॥
अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ आ सादयादिह ॥ ३ ॥
उत्ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः। अग्ने शुक्रास ईरते ॥ ४ ॥
उप त्वा जुह्वो३ मम घृताचीर्यन्तु हर्यत। अग्ने हव्या जुषस्व नः ॥ ५ ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

मन्द्रं होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम्। अग्निमीळे स उ श्रवत् ॥ ६ ॥
प्रत्नं होतारमीड्यं जुष्टमग्निं कविक्रतुम्। अध्वराणामभिश्रियम् ॥ ७ ॥
जुषाणो अङ्गिरस्तमेमा हव्यान्यानुषक्। अग्ने यज्ञं नय ऋतुथा ॥ ८ ॥
समिधान उ सन्त्य शुक्रशोच इहा वह। चिकित्वान्दैव्यं जनम् ॥ ९ ॥
विप्रं होतारमद्रुहं धूमकेतुं विभावसुम्। यज्ञानां केतुमीमहे ॥ १० ॥

अथाष्टत्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

अग्ने नि पाहि नस्त्वं प्रति ष्म देव रीषतः। भिन्धि द्वेषः सहस्कृतः ॥ ११ ॥
अग्निः प्रत्नेन मन्मना शुम्भानस्तन्वं स्वाम्। कविर्विप्रेण वावृधे ॥ १२ ॥
ऊर्जो नपातमा हुवेऽग्निं पावकशोचिषम्। अस्मिन्यज्ञे स्वध्वरे ॥ १३ ॥
स नो मित्रमहस्त्वमग्ने शुक्रेण शोचिषा। देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो अग्निं तन्वो३ दमे देवं मर्तः सपर्यति। तस्मा इद्दीदयद्वसु ॥ १५ ॥

अथैकोनचत्वारिंशो वर्गः ॥ ३९ ॥

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति ॥ १६ ॥
उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव ज्योतींष्यर्चयः ॥ १७ ॥
ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वर्पतिः। स्तोता स्यां तव शर्मणि ॥ १८ ॥
त्वामग्ने मनीषिणस्त्वां हिन्वन्ति चित्तिभिः। त्वां वर्धन्तु नो गिरः ॥ १९ ॥
अदब्धस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतः सदा। अग्नेः सख्यं वृणीमहे ॥ २० ॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४० ॥

अग्निः शुचिव्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः। शुची रोचत आहुतः ॥ २१ ॥
उत त्वा धीतयो मम गिरो वर्धन्तु विश्वहा। अग्ने सख्यस्य बोधि नः ॥ २२ ॥
यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम्। स्युष्टे सत्या इहाशिषः ॥ २३ ॥
वसुर्वसुपतिर्हि कमस्यग्ने विभावसुः। स्याम ते सुमतावपि ॥ २४ ॥
अग्ने धृतव्रताय ते समुद्रायेव सिन्धवः। गिरो वाश्रास ईरते ॥ २५ ॥

अथैकचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४१ ॥

युवानं विश्पतिं कविं विश्वादं पुरुवेपसम्। अग्निं शुम्भामि मन्मभिः ॥ २६ ॥
यज्ञानां रथ्यं वयं तिग्मजम्भाय वीळवे। स्तोमैरिषेमाग्नये ॥ २७ ॥
अयमग्ने त्वे अपि जरिता भूतु सन्त्य। तस्मै पावक मृळय ॥ २८ ॥
धीरो ह्यस्यद्मसद्विप्रो न जागृविः सदा। अग्ने दीदयसि द्यवि ॥ २९ ॥
पुराग्ने दुरितेभ्यः पुरा मृध्रेभ्यः कवे। प्र ण आयुर्वसो तिर ॥ ३० ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रिशोकः काण्वः ॥ देवता—१ इन्द्राग्नी; २-४२ इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३-६, ८, ९, १२, १३, १५-२१, २३-२५, ३१, ३६, ३७, ३९-४२ गायत्री; २, १०, ११, १४, २२, २८-३०, ३३-३५ निचृद्गायत्री; २६, २७, ३२, ३८ विराड्गायत्री; ७ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्विचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४२ ॥

आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ १ ॥
बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः। येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः। येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ ३ ॥
आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छद्वि मातरम्। क उग्राः के ह शृण्विरे ॥ ४ ॥
प्रति त्वा शवसी वदद्गिरावप्सो न योधिषत्। यस्ते शत्रुत्वमाचके ॥ ५ ॥

अथ त्रयचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४३ ॥

उत त्वं मघवञ्छृणु यस्ते वष्टि ववक्षि तत्। यद्वीळयासि वीळु तत् ॥ ६ ॥
यदाजिं यात्याजिकृदिन्द्रः स्वश्वयुरुपः। रथीतमो रथीनाम् ॥ ७ ॥
वि षु विश्वा अभियुजो वज्रिन्विष्वग्यथा वृह। भवा नः सुश्रवस्तमः ॥ ८ ॥
अस्माकं सु रथं पुर इन्द्रः कृणोतु सातये। न यं धूर्वन्ति धूर्तयः ॥ ९ ॥
वृज्याम ते परि द्विषोऽरं ते शक्र दावने। गमेमेदिन्द्र गोमतः ॥ १० ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४४ ॥

शनैश्चिद्यन्तोऽद्रिवोऽश्वावन्तः शतग्विनः। विवक्षणा अनेहसः ॥ ११ ॥
ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे सहस्रा सूनृता शता। जरितृभ्यो विमंहते ॥ १२ ॥
विद्मा हि त्वा धनंजयमिन्द्र दृळ्हा चिदारुजम्। आदारिणं यथा गयम् ॥ १३ ॥
ककुहं चित्त्वा कवे मन्दन्तु धृष्णविन्दवः। आ त्वा पणिं यदीमहे ॥ १४ ॥
यस्ते रेवाँ अदाशुरिः प्रममर्ष मघत्तये। तस्य नो वेद आ भर ॥ १५ ॥

अथ पञ्चचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४५ ॥

इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः। पुष्टावन्तो यथा पशुम् ॥ १६ ॥
उत त्वाबधिरं वयं शृत्कर्णं सन्तमूतये। दूरादिह हवामहे ॥ १७ ॥
यच्छुश्रूया इमं हवं दुर्मर्षं चक्रिया उत। भवेरापिर्नो अन्तमः ॥ १८ ॥
यच्चिद्धि ते अपि व्यथिर्जगन्वांसो अमन्महि। गोदा इदिन्द्र बोधि नः ॥ १९ ॥
आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररभ्मा शवस्पते। उश्मसि त्वा सधस्थ आ ॥ २० ॥

अथ षट्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४६ ॥

स्तोत्रमिन्द्राय गायत पुरुनृम्णाय सत्वने। नकिर्यं वृण्वते युधि ॥ २१ ॥
अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥ २२ ॥
मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्। माकीं ब्रह्मद्विषो वनः ॥ २३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इह त्वा गोपरीणसा महे मन्दन्तु राधसे। सरो गौरो यथा पिब॥ २४॥
या वृत्रहा परावति सना नवा च चुच्युवे। ता संसत्सु प्र वोचत॥ २५॥

अथ सप्तचत्वारिंशो वर्गः॥ ४७॥

अपिबत्कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्त्रबाह्वे। अन्रादेदिष्ट पौंस्यम् ॥ २६॥
सत्यं तत्तुर्वशे यदौ विदानो अह्नवाय्यम्। व्यानट् तुर्वणे शमि ॥ २७॥
तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः। समानमु प्र शंसिषम्॥ २८॥
ऋभुक्षणं न वर्तवं उक्थेषु तुग्र्यावृधम्। इन्द्रं सोमे सचा सुते॥ २९॥
यः कृन्तदिद्वि योन्यं त्रिशोकाय गिरिं पृथुम्। गोभ्यो गातुं निरेतवे॥ ३०॥

अथाष्टचत्वारिंशो वर्गः॥ ४८॥

यद्दधिषे मनस्यसि मन्दानः प्रेदियक्षसि। मा तत्करिन्द्र मृळयं ॥ ३१॥
दभ्रं चिद्धि त्वावतः कृतं शृण्वे अधि क्षमि। जिगात्विन्द्र ते मनः॥ ३२॥
तवेदु ताः सुकीर्तयोऽ सन्नुत प्रशस्तयः। यदिन्द्र मृळयासि नः ॥ ३३॥
मा न एकस्मिन्नागसि मा द्वयोरुत त्रिषु। वधीर्मा शूर भूरिषु ॥ ३४॥
बिभया हि त्वावत उग्रादभिप्रभङ्गिणः। दस्मादहमृतीषहः ॥ ३५॥

अथैकोनपञ्चाशो वर्गः॥ ४९॥

मा सख्युः शूनमा विदे मा पुत्रस्य प्रभूवसो। आवृत्वद्भूतु ते मनः॥ ३६॥
को नु मर्या अमिथितः सखा सखायमब्रवीत्। जहा को अस्मदीषते॥ ३७॥
एवारे वृषभा सुतेऽ सिन्वन्भूर्यावयः। श्वघ्नीव निवता चरन् ॥ ३८॥
आ त एता वचोयुजा हरी गृभ्णे सुमद्रथा। यदीं ब्रह्मभ्य इद्ददः॥ ३९॥
भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः। वसु स्पार्हं तदा भर॥ ४०॥
यद्वीळाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर॥ ४१॥
यस्य ते विश्वमानुषो भूरेर्दत्तस्य वेदति। वसु स्पार्हं तदा भर ॥ ४२॥

इति षष्ठाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठाष्टके चतुर्थोऽध्यायः

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वशोऽश्व्यः ॥ देवता—१-२०, २९-३१, ३३ इन्द्रः; २१-२४ पृथुश्रवसः कानीतस्य दानस्तुतिः; २५-२८, ३२ वायुः ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २, १०, १५, २९ विराड्गायत्री; ३, २३ गायत्री; ४ प्रतिष्ठागायत्री; ५ निचृदुष्णिक्; ६, १३, ३३ निचृद्गायत्री; ७, २०, २७, २८ निचृद्बृहती; ८ विराडनुष्टुप्; ९, २६ स्वराड्बृहती; ११, १४ विराड्बृहती; १२, २२, २४ निचृत्पङ्क्तिः; १६ भुरिगुष्णिक्; १७ जगती; १८ अनुष्टुप्; १९ भुरिगनुष्टुप्; २१, २५, ३२ बृहती; ३० आर्चीस्वराड्गायत्री; ३१ स्वराड्गायत्री ॥ स्वरः—१-४, ६, १०, १३, १५, २३, २९-३१, ३३ षड्जः; ५, १६ ऋषभः; ७, ९, ११, १४, २०, २१, २५-२८, ३२ मध्यमः; ८, १८, १९ गान्धारः; १२, २२, २४ पञ्चमः; १७ निषादः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः। स्मसि स्थातर्हरीणाम् ॥ १ ॥
त्वां हि सत्यमद्रिवो विद्म दातारमिषाम्। विद्म दातारं रयीणाम् ॥ २ ॥
आ यस्य ते महिमानं शतमूते शतक्रतो। गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ॥ ३ ॥
सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्रः पान्त्यद्रुहः ॥ ४ ॥
दधानो गोमदश्ववत्सुवीर्यमादित्यजूत एधते। सदा राया पुरुस्पृहा ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

तमिन्द्रं दानमीमहे शवसानमभीर्वम्। ईशानं राय ईमहे ॥ ६ ॥
तस्मिन्हि सन्त्यूतयो विश्वा अभीरवः सचा ।
तमा वहन्तु सप्तयः पुरूवसुं मदाय हरयः सुतम् ॥ ७ ॥
यस्ते मदो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः ।
य आददिः स्वर्नृभिर्यः पृतनासु दुष्टरः ॥ ८ ॥
यो दुष्टरो विश्ववार श्रवाय्यो वाजेष्वस्ति तरुता ।
स नः शविष्ठ सवना वसो गहि गमेम गोमति व्रजे ॥ ९ ॥
गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथ्या। वरिवस्य महामह ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

नहि ते शूर राधसोऽन्तं विन्दामि सत्रा ।
दशस्या नो मघवन्नू चिदद्रिवो धियो वाजेभिरा विथ ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य ऋष्वः श्रावयत्सखा विश्वेत्स वेद जनिमा पुरुष्टुतः।
तं विश्वे मानुषा युगेन्द्रं हवन्ते तविषं यतस्रुचः ॥ १२ ॥
स नो वाजेष्वविता पुरूवसुः पुरःस्थाता मघवा वृत्रहा भुवत् ॥ १३ ॥
अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम्।
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा ॥ १४ ॥
ददी रेक्णस्तन्वे ददिर्वसु ददिर्वाजेषु पुरुहूत वाजिनम् ।
नूनमथ ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

विश्वेषामिरज्यन्तं वसूनां सासह्वांसं चिदस्य वर्पसः ।
कृपयतो नूनमत्यथ ॥ १६ ॥
महः सु वो अरमिषे स्तवामहे मीळ्हुषे अरंगमाय जग्मये।
यज्ञेभिर्गीर्भिर्विश्वमनुषां मरुतामियक्षसि गाये त्वा नमसा गिरा ॥ १७ ॥
ये पातयन्ते अज्मभिर्गिरीणां स्नुभिरेषाम् ।
यज्ञं महिष्वणीनां सुम्नं तुविष्वणीनां प्राध्वरे ॥ १८ ॥
प्रभङ्गं दुर्मतीनामिन्द्र शविष्ठा भर ।
रयिमस्मभ्यं युज्यं चोदयन्मते ज्येष्ठं चोदयन्मते ॥ १९ ॥
सनितः सुसनितरुग्र चित्र चेतिष्ठ सूनृत ।
प्रासहा सम्राट् सहुरिं सहन्तं भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ॥ २० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

आ स एतु य ईवदाँ अदेवः पूर्तमाददे ।
यथा चिद्वशो अश्व्यः पृथुश्रवसि कानीतेऽऽस्या व्युष्यादुदे ॥ २१ ॥
षष्टिं सहस्राश्व्यस्यायुतासनमुष्ट्रानां विंशतिं शता ।
दश श्यावीनां शता दश त्र्यरुषीणां दश गवां सहस्रा ॥ २२ ॥
दश श्यावा ऋधद्रयो वीतवारास आशवः ।
मथ्रा नेमिं नि वावृतुः ॥ २३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दानासः पृथुश्रवसः कानीतस्य सुराधसः ।
रथं हिरण्ययं ददन्मंहिष्ठः सूरिरभूद्वर्षिष्ठमकृत श्रवः ॥ २४ ॥
आ नो वायो महे तने याहि मखाय पाजसे ।
वयं हि ते चकृमा भूरि दावने सद्यश्चिन्महि दावने ॥ २५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

यो अश्वेभिर्वहते वस्त उस्त्रास्त्रिः सप्त सप्ततीनाम् ।
एभिः सोमेभिः सोमसुद्भिः सोमपा दानाय शुक्रपूतपाः ॥ २६ ॥
यो म इमं चिदु त्मनामन्दच्चित्रं दावने ।
अरद्वे अक्षे नहुषे सुकृत्वनि सुकृत्तराय सुक्रतुः ॥ २७ ॥
उच्चथ्येऽ३ वपुषि यः स्वराळुत वायो घृतस्नाः ।
अश्वेषितं रजेषितं शुनेषितं प्राज्म तदिदं नु तत् ॥ २८ ॥
अध प्रियमिषिराय षष्टिं सहस्रासनम् । अश्वानामिन्न वृष्णाम् ॥ २९ ॥
गावो न यूथमुप यन्ति वध्रय उप मा यन्ति वध्रयः ॥ ३० ॥
अध यच्चारथे गणे शतमुष्ट्राँ अचिक्रदत् ।
अध श्वित्नेषु विंशतिं शता ॥ ३१ ॥
शतं दासे बल्बूथे विप्रस्तरुक्ष आ ददे ।
ते ते वायविमे जना मदन्तीन्द्रगोपा मदन्ति देवगोपाः ॥ ३२ ॥
अध स्या योषणा मही प्रतीची वशमश्व्यम् ।
अधिरुक्मा वि नीयते ॥ ३३ ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रित आप्त्यः ॥ देवता—१-१३ आदित्याः; १४-१८ आदित्या उषाश्च ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३, ५, ९, १३, १५, १६, १८ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४, ६-८, १२ निचृज्जगती; १०, ११, १७ स्वराट्त्रिष्टुप्; १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ६-८, १२ निषादः; २, ३, ५, ९-११, १३-१८ धैवतः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

महि वो महतामवो वरुण मित्र दाशुषे ।
यमादित्या अभि द्रुहो रक्षथा नेमघं
नशदनेहसो व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदा देवा अघानामादित्यासो अपाकृतिम् ।
पक्षा वयो यथोपरि व्यꣳस्मे शर्म यच्छतानेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ २ ॥
व्यꣳस्मे अधि शर्म तत्पक्षा वयो न यन्तन ।
विश्वानि विश्ववेदसो वरूथ्या मनामहे ऽनेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ३ ॥
यस्मा अरासत क्षयं जीवातुं च प्रचेतसः ।
मनोर्विश्वस्य घेदिम आदित्या राय ईशते ऽनेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ४ ॥
परि णो वृणजन्नघा दुर्गाणि रथ्यो यथा ।
स्यामेदिन्द्रस्य शर्मण्यादित्यतानामुतावस्यनेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

परिह्वृतेदना जनो युष्मादत्तस्य वायति ।
देवा अदभ्रमाश वो यमादित्या अहेतनानेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ६ ॥
न तं तिग्मं चन त्यजो न द्रासदभि तं गुरु ।
यस्मा उ शर्म सप्रथ आदित्यासो अराध्वमनेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ७ ॥
युष्मे देवा अपि ष्मसि युध्यन्तइव वर्मसु ।
यूयं महो न एनसो यूयमर्भादुरुष्यतानेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ८ ॥
अदितिर्न उरुष्यत्वदितिः शर्म यच्छतु ।
माता मित्रस्य रेवतोऽर्यम्णो वरुणस्य चानेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्देवाः शर्म शरणं यद्भद्रं यदनातुरम् ।
त्रिधातु यद्वरूथ्यं१ तदस्मासु वि यन्तनानेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आदित्या अव हि ख्यताधि कूलादिव स्पशः ।
सुतीर्थमर्वतो यथानु नो नेषथा सुगमनेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ ११ ॥
नेह भद्रं रक्षस्विने नावयै नोपया उत ।
गवे च भद्रं धेनवे वीराय च श्रवस्यतेऽनेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १२ ॥
यदाविर्यदपीच्यं१ देवासो अस्ति दुष्कृतम् ।
त्रिते तद्विश्वमाप्त्य आरे अस्मद्दधातनानेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १३ ॥
यच्च गोषु दुष्वप्न्यं यच्चास्मे दुहितर्दिवः ।
त्रिताय तद्विभावर्याप्त्याय परा वहानेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १४ ॥
निष्कं वा घा कृणवते स्रजं वा दुहितर्दिवः ।
त्रिते दुष्वप्न्यं सर्वमाप्त्ये परि दद्मस्यनेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

तदन्नाय तदपसे तं भागमुपसेदुषे ।
त्रिताय च द्विताय चोषो दुष्वप्न्यं वहानेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १६ ॥
यथा कलां यथा शफं यथर्णं संनयामसि ।
एवा दुष्वप्न्यं सर्वमाप्त्ये सं नयामस्यनेहसो
व ऊतयः सुऊतयो व ऊतयः ॥ १७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम् ।
उषो यस्माद्दुष्ष्वप्न्यादभैष्माप तद्दुच्छत्वनेहसौ
व ऊतयः सुऊतयौ व ऊतयः ॥ १८ ॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—सोमः ॥ छन्दः—१, २, १३ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७-९ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६, १०, ११, १४ त्रिष्टुप्; ५ विराड्जगती; १२, १५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६-१५ धैवतः; ५ निषादः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

स्वादोरभक्षि वयसः सुमेधाः स्वाध्यो वरिवोवित्तरस्य ।
विश्वे यं देवा उत मर्त्यासो मधु ब्रुवन्तो अभि संचरन्ति ॥ १ ॥
अन्तश्च प्रागा अदितिर्भवास्यवयाता हरसो दैव्यस्य ।
इन्द्रविन्द्रस्य सख्यं जुषाणः श्रौष्टीव धुरमनु राय ऋध्याः ॥ २ ॥
अपाम सोमममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवान् ।
किं नूनमस्मान्कृणवदरातिः किमु धूर्तिरमृतं मर्त्यस्य ॥ ३ ॥
शं नो भव हृद आ पीत इन्दो पितेव सोम सूनवे सुशेवः ।
सखेव सख्य उरुशंस धीरः प्र ण आयुर्जीवसे सोम तारीः ॥ ४ ॥
इमे मा पीता यशसं उरुष्यवो रथं न गावः समनाहु पर्वसु ।
ते मा रक्षन्तु विस्रसश्चरित्रादुत मा स्रामाद्यवयन्त्विन्दवः ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

अग्निं न मा मथितं सं दिदीपः प्र चक्षय कृणुहि वस्यसो नः ।
अथा हि ते मद आ सोम मन्ये रेवाँइव प्र चरा पुष्टिमच्छ ॥ ६ ॥
इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः ।
सोम राजन्प्र ण आयूंषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि ॥ ७ ॥
सोम राजन्मृळया नः स्वस्ति तव स्मसि व्रत्याउस्तस्य विद्धि ।
अलर्ति दक्ष उत मन्युरिन्दो मा नो अर्यो अनुकामं परा दाः ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं हि नस्तन्वः सोम गोपा गात्रेगात्रे निषसत्था नृचक्षाः।
यत्ते वयं प्रमिनाम व्रतानि स नो मृळ सुषखा देव वस्यः॥ ९॥
ऋदूदरेण सख्या सचेय यो मा न रिष्येद्धर्यश्व पीतः ।
अयं यः सोमो न्यधायस्मे तस्मा इन्द्रं प्रतिरमेम्यायुः ॥ १०॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

अप त्या अस्थुरनिरा अमीवा निरत्रसन्तमिषीचीरभैषुः ।
आ सोमो अस्माँ अरुहद्विहाया अगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः॥ ११॥
यो न इन्दुः पितरो हृत्सु पीतोऽमर्त्यो मर्त्याँ आविवेश।
तस्मै सोमाय हविषा विधेम मृळीके अस्य सुमतौ स्याम॥ १२॥
त्वं सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ।
तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ १३॥
त्रातारो देवा अधि वोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः।
वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम॥ १४॥
त्वं नः सोम विश्वतो वयोधास्त्वं स्वर्विदा विशा नृचक्षाः।
त्वं न इन्द ऊतिभिः सजोषाः पाहि पश्चातादुत वा पुरस्तात्॥ १५॥

अथ बालखिल्यम्

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ बृहती; २ पङ्क्तिः; ३ विराड् बृहती; ४, ६, ८, १० निचृत्पङ्क्तिः; ५ भुरिग्बृहती; ७, ९ निचृद्बृहती॥
स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे ।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ १॥
शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे ।
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ त्वा सुतास इन्दवो मदा य इन्द्र गिर्वणः ।
आपो न वज्रिन्नन्वोक्यं सरः पृणन्ति शूर राधसे ॥ ३ ॥
अनेहसं प्रतरणं विवक्षणं मध्वः स्वादिष्ठमीं पिब ।
आ यथा मन्दसानः किरासि नः प्र क्षुद्रेव त्मना धृषत् ॥ ४ ॥
आ नः स्तोममुप द्रवद्धियानो अश्वो न सोतृभिः ।
यं ते स्वधावन्त्स्वदयन्ति धेनव इन्द्र कण्वेषु रातयः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

उग्रं न वीरं नमसोप सेदिम विभूतिमक्षितावसुम् ।
उद्रीव वज्रिन्नवतो न सिञ्चते क्षरन्तीन्द्र धीतयः ॥ ६ ॥
यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे यद्वा पृथिव्यामधि ।
अतो नो यज्ञमाशुभिर्महेमत उग्र उग्रेभिरा गहि ॥ ७ ॥
अजिरासो हरयो ये त आशवो वाताइव प्रसक्षिणः ।
येभिरपत्यं मनुषः परीयसे येभिर्विश्वं स्वर्दृशे ॥ ८ ॥
एतावतस्त ईमह इन्द्र सुम्नस्य गोमतः ।
यथा प्रावो मघवन्मेध्यातिथिं यथा नीपातिथिं धने ॥ ९ ॥
यथा कण्वे मघवन्त्रसदस्यवि यथा पक्थे दशव्रजे ।
यथा गोशर्ये असनोर्ऋजिश्वनीन्द्र गोमद्धिरण्यवत् ॥ १० ॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—पुष्टिगुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ७ निचृद्बृहती; २, ४, ६, १० पङ्क्तिः; ८ निचृत्पङ्क्तिः; ९ विराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा शक्रमभिष्टये ।
यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव मंहते ॥ १ ॥
शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः ।
गिरिर्न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते यदीं सुता अमन्दिषुः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदीं सुतास इन्दवोऽभि प्रियममन्दिषुः ।
आपो न धायि सवनं म आ वसो दुघाइवोप दाशुषे ॥ ३ ॥
अनेहसं वो हवमानमूतये मध्वः क्षरन्ति धीतयः ।
आ त्वा वसो हवमानास इन्दव उप स्तोत्रेषु दधिरे ॥ ४ ॥
आ नः सोमे स्वध्वर इयानो अत्यो न तोशते ।
यं ते स्वदावन्त्स्वदन्ति गूर्तयः पौरे छन्दयसे हवम् ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

प्र वीरमुग्रं विविचिं धनस्पृतं विभूतिं राधसो महः ।
उद्रीव वज्रिन्नवतो वसुत्वना सदा पीपेथ दाशुषे ॥ ६ ॥
यद्ध नूनं परावति यद्वा पृथिव्यां दिवि ।
युजान इन्द्र हरिभिर्महेमत ऋष्व ऋष्वेभिरा गहि ॥ ७ ॥
रथिरासो हरयो ये ते अस्रिध ओजो वातस्य पिप्रति ।
येभिर्नि दस्युं मनुषो निघोषयो येभिः स्वः परीयसे ॥ ८ ॥
एतावतस्ते वसो विद्याम शूर नव्यसः ।
यथा प्राव एतशं कृत्व्ये धने यथा वशं दशव्रजे ॥ ९ ॥
यथा कण्वे मघवन्मेधे अध्वरे दीर्घनीथे दमूनसि ।
यथा गोशर्ये असिषासो अद्रिवो मयि गोत्रं हरिश्रियम् ॥ १० ॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—श्रुष्टिगुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ९ निचृद्बृहती; २ विराट्पङ्क्तिः; ४, ६, ८, १० निचृत्पङ्क्तिः; ५ विराड्बृहती; ७ बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यथा मनौ सांवरणौ सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।
नीपातिथौ मघवन्मेध्यातिथौ पुष्टिगौ श्रुष्टिगौ सचा ॥ १ ॥
पार्षद्वाणः प्रस्कण्वं समसादयच्छयानं जिह्मबुध्नितम् ।
सहस्राण्यसिषासद्वामृषिस्त्वोतो दस्यवे वृकः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य उक्थेभिर्न विन्धते चिकिद्य ऋषिचोदनः ।
इन्द्रं तमच्छा वद नव्यस्या मत्यरिष्यन्तं न भोजसे ॥ ३ ॥
यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानृचुस्त्रिधातुमुत्तमे पदे ।
स त्विमा विश्वा भुवनानि चिक्रदुदादिर्ज्जनिष्ट पौंस्यम् ॥ ४ ॥
यो नो दाता वसूनामिन्द्रं तं हूमहे वयम् ।
विद्मा ह्यस्य सुमतिं नवीयसीं गमेम गोमति व्रजे ॥ ५ ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

यस्मै त्वं वसो दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्नुते ।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ॥ ६ ॥
कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन्भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥ ७ ॥
प्र यो ननक्षे अभ्योजसा क्रिविं वधैः शुष्णं निघोषयन् ।
यदेदस्तम्भीत्प्रथयन्नमूं दिवमादिर्ज्जनिष्ट पार्थिवः ॥ ८ ॥
यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः ।
तिरश्चिद्दर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सो अज्यते रयिः ॥ ९ ॥
तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः ।
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवोऽस्मे सुवानास इन्दवः ॥ १० ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—आयुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७ निचृद्बृहती; २ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३, ५ बृहती; ४, ६, ८, १० निचृत्पङ्क्तिः; ९ विराड्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १० पञ्चमः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

यथा मनौ विवस्वति सोमं शक्रापिबः सुतम् ।
यथा त्रिते छन्द इन्द्र जुजोषस्यायौ मादयसे सचा ॥ १ ॥
पृषध्रे मेध्ये मातरिश्वनीन्द्र सुवाने अमन्दथाः ।
यथा सोमं दशशिप्रे दशोण्ये स्यूमरश्मावृजूनसि ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य उक्था केवला दधे यः सोमं धृषितापिबत् ।
यस्मै विष्णुस्त्रीणि पदा विचक्रम उप मित्रस्य धर्मभिः ॥ ३ ॥
यस्य त्वमिन्द्र स्तोमेषु चाकनो वाजे वाजिञ्छतक्रतो ।
तं त्वा वयं सुदुघामिव गोदुहो जुहूमसि श्रवस्यवः ॥ ४ ॥
यो नो दाता स नः पिता महाँ उग्र ईशानकृत् ।
अर्यामन्नुग्रो मघवा पुरूवसुर्गोरश्वस्य प्र दातु नः ॥ ५ ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति ।
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ॥ ६ ॥
कदा चन प्र युच्छस्युभे नि पासि जन्मनी ।
तुरीयादित्य हवनं त इन्द्रियमा तस्थावमृतं दिवि ॥ ७ ॥
यस्मै त्वं मघवन्निन्द्र गिर्वणः शिक्षो शिक्षसि दाशुषे ।
अस्माकं गिर उत सुष्टुतिं वसो कण्ववच्छृणुधी हवम् ॥ ८ ॥
अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत ॥ ९ ॥
समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम् ।
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः ॥ १० ॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ७ विराड्बृहती; २, ४, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ३ आर्चीस्वराड्बृहती; ८ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७ मध्यमः; २, ४, ६, ८ पञ्चमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

उपमं त्वा मघोनां ज्येष्ठं च वृषभाणाम् ।
पूर्भित्तमं मघवन्निन्द्र गोविदमीशानं राय ईमहे ॥ १ ॥
य आयुं कुत्समतिथिग्वमर्दयो वावृधानो दिवेदिवे ।
तं त्वा वयं हर्यश्वं शतक्रतुं वाजयन्तो हवामहे ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ नो विश्वेषां रसं मध्वः सिञ्चन्त्वद्रयः ।
ये परावति सुन्विरे जनेष्वा ये अर्वावतीन्दवः ॥ ३ ॥
विश्वा द्वेषांसि जहि चाव चा कृधि विश्वे सन्वन्त्वा वसु ।
शीष्टेषु चित्ते मदिरासो अंशवो यत्रा सोमस्य तृम्पसि ॥ ४ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः ।
आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः ॥ ५ ॥
आजितुरं सत्पतिं विश्वचर्षणिं कृधि प्रजास्वाभगम् ।
प्र सू तिरा शचीभिर्ये त उक्थिनः क्रतुं पुनत आनुषक् ॥ ६ ॥
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ते स्याम भरेषु ते ।
वयं होत्राभिरुत देवहूतिभिः ससवांसो मनामहे ॥ ७ ॥
अहं हि ते हरिवो ब्रह्म वाजयुराजिं यामि सदोतिभिः ।
त्वामिदेव तममे समश्वयुर्गव्युरग्रे मथीनाम् ॥ ८ ॥

[५४] चतुःपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मातरिश्वा काण्वः ॥ देवता—१, २, ५-८ इन्द्रः; ३, ४ विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ५ निचृद्बृहती; २, ४, ६, ८ निचृत्पङ्क्तिः; ३ बृहती; ७ विराड् बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७ मध्यमः; २, ४, ६, ८ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

एतत्त इन्द्र वीर्यं गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ।
ते स्तोभन्त ऊर्जमावन्घृतश्चुतं पौरासो नक्षन्धीतिभिः ॥ १ ॥
नक्षन्त इन्द्रमवसे सुकृत्यया येषां सुतेषु मन्दसे ।
यथा संवर्ते अमदो यथा कृश एवास्मे इन्द्र मत्सव ॥ २ ॥
आ नो विश्वे सजोषसो देवासो गन्तनोप नः ।
वसवो रुद्रा अवसे न आ गमञ्छृण्वन्तु मरुतो हवम् ॥ ३ ॥
पूषा विष्णुर्हवनं मे सरस्वत्यवन्तु सप्त सिन्धवः ।
आपो वातः पर्वतासो वनस्पतिः शृणोतु पृथिवी हवम् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

यदिन्द्र राधो अस्ति ते माघोनं मघवत्तम ।
तेन नो बोधि सधमाद्यो वृधे भगो दानाय वृत्रहन् ॥ ५ ॥
आजिपते नृपते त्वमिद्धि नो वाज आ वक्षि सुक्रतो ।
वीती होत्राभिरुत देववीतिभिः ससवांसो वि शृण्विरे ॥ ६ ॥
सन्ति ह्यार्य आशिष इन्द्र आयुर्जनानाम् ।
अस्मान्नक्षस्व मघवन्नुपावसे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ॥ ७ ॥
वयं त इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम त्वमस्माकं शतक्रतो ।
महि स्थूरं शशयं राधो अह्रयं प्रस्कण्वाय नि तोशय ॥ ८ ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—कृशः काण्वः ॥ देवता—प्रस्कण्वस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २, ४ गायत्री; ३, ५ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २, ४ षड्जः; ३, ५ गान्धारः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

भूरीदिन्द्रस्य वीर्यं व्यख्यमभ्यायति । राधस्ते दस्यवे वृक ॥ १ ॥
शतं श्वेतास उक्षणो दिवि तारो न रोचन्ते । महा दिवं न तस्तभुः ॥ २ ॥
शतं वेणूञ्छतं शुनः शतं चर्माणि म्लातानि ।
शतं मे बल्बजस्तुका अरुषीणां चतुःशतम् ॥ ३ ॥
सुदेवाः स्थ काण्वायना वयोवयो विचरन्तः । अश्वासो न चङ्क्रमत ॥ ४ ॥
आदित्साप्तस्य चर्किरन्नानूनस्य महि श्रवः ।
श्यावीरतिध्वसन्पथश्चक्षुषा चन संनशे ॥ ५ ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—पृषध्रः काण्वः ॥ देवता—१-४ प्रस्कण्वस्य दानस्तुतिः; ५ अग्निसूर्यौ ॥ छन्दः—१, ३, ४ विराड्गायत्री; २ गायत्री; ५ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४ षड्जः; ५ पञ्चमः ॥

अत सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

प्रति ते दस्यवे वृक राधो अदर्श्यह्रयम् । द्यौर्न प्रथिना शवः ॥ १ ॥
दश मह्यं पौतक्रतः सहस्रा दस्यवे वृकः । नित्याद्रायो अमंहत ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतं मे गर्दभानां शतमूर्णावतीनाम्। शतं दासाँ अति स्रजः॥ ३॥
तत्रो अपि प्राणीयत पूतक्रतायै व्यक्ता। अश्वानामिन्न यूथ्याम्॥ ४॥
अचेत्यग्निश्चिकितुर्हव्यवाट् स सुमद्रथः।
अग्निः शुक्रेण शोचिषा बृहत्सूरो अरोचत दिवि सूर्यो अरोचत॥ ५॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यः काण्वः॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ अष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

युवं देवा क्रतुना पूर्व्येण युक्ता रथेन तविषं यजत्रा।
आगच्छतं नासत्या शचीभिरिदं तृतीयं सवनं पिबाथः॥ १॥
युवां देवास्त्रय एकादशासः सत्याः सत्यस्य ददृशे पुरस्तात्।
अस्माकं यज्ञं सवनं जुषाणा पातं सोममश्विना दीद्यग्नी॥ २॥
पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः।
सहस्रं शंसा उत ये गविष्टौ सर्वाँ इत्ताँ उप याता पिबध्यै॥ ३॥
अयं वां भागो निहितो यजत्रेमा गिरो नासत्योप यातम्।
पिबतं सोमं मधुमन्तमस्मे प्र दाश्वांसमवतं शचीभिः॥ ४॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यः काण्वः॥ देवता—१ विश्वे देवा ऋत्विजो वा; २, ३ विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

यमृत्विजो बहुधा कल्पयन्तः सचेतसो यज्ञमिमं वहन्ति।
यो अनूचानो ब्राह्मणो युक्त आसीत्का स्वित्तत्र यजमानस्य संवित्॥ १॥
एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभूतः।
एकैवोषाः सर्वमिदं वि भात्येकं वा इदं वि बभूव सर्वम्॥ २॥
ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं त्रिचक्रं सुखं रथं सुषदं भूरिवारम्।
चित्रामघा यस्य योगेऽधिजज्ञे तं वां हुवे अति रिक्तं पिबध्यै॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुपर्णः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ जगती; २, ३ निचृज्जगती; ४, ५, ७ विराड्जगती; ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५, ७ निषादः; ६ धैवतः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

इमानि वां भागधेयानि सिस्रत इन्द्रावरुणा प्र महे सुतेषु वाम् ।
यज्ञेयज्ञे ह सवना भुरण्यथो यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षथः ॥ १ ॥
निष्षिध्वरीरोषधीराप आस्तामिन्द्रावरुणा महिमानमाशत ।
या सिस्रतू रजसः पारे अध्वनो ययोः शत्रुर्न किरादेव ओहते ॥ २ ॥
सत्यं तदिन्द्रावरुणा कृशस्य वां मध्व ऊर्मिं दुहते सप्त वाणीः ।
ताभिर्दाश्वांसमवतं शुभस्पती यो वामदब्धो अभि पाति चित्तिभिः ॥ ३ ॥
घृतप्रुषः सौम्या जीरदानवः सप्त स्वसारः सदन ऋतस्य ।
या ह वामिन्द्रावरुणा घृतश्चुतस्ताभिर्धत्तं यजमानाय शिक्षतम् ॥ ४ ॥

अथ एकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

अवोचाम महते सौभगाय सत्यं त्वेषाभ्यां महिमानमिन्द्रियम् ।
अस्मान्तिस्रेन्द्रावरुणा घृतश्चुतस्त्रिभिः साप्तेभिरवतं शुभस्पती ॥ ५ ॥
इन्द्रावरुणा यदृषिभ्यो मनीषां वाचो मतिं श्रुतमदत्तमग्रे ।
यानि स्थानान्यसृजन्त धीरा यज्ञं तन्वानास्तपसाभ्यपश्यम् ॥ ६ ॥
इन्द्रावरुणा सौमनसमदृप्तं रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् ।
प्रजां पुष्टिं भूतिमस्मासु धत्तं दीर्घायुत्वाय प्र तिरतं न आयुः ॥ ७ ॥

इति बालखिल्यं समाप्तम् ॥

सप्तमोऽनुवाकः

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ९, १३, १७ विराड्बृहती; २ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः; ३, ५ पादनिचृद्बृहती; ४, ६, ८, १४, १८, २० निचृत्पङ्क्तिः; ७, १९ बृहती; १०, १६ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ११, १५ निचृद्बृहती; १२ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७, १९ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २० पञ्चमः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्तुचश्चरन्त्यध्वरे।
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥ २ ॥
अग्ने कविर्वेधा असि होता पावक यक्ष्यः ।
मन्द्रो यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यो विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः ॥ ३ ॥
अद्रोघमा वहोशतो यविष्ठ्य देवाँ अजस्र वीतये।
अभि प्रयांसि सुधिता वसो गहि मन्दस्व धीतिभिर्हितः ॥ ४ ॥
त्वमित्सप्रथा असग्ने त्रातर्ऋतस्कविः ।
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः ॥ ५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

शोचा शोचिष्ठ दीदिहि विशे मयो रास्व स्तोत्रे महाँ असि।
देवानां शर्मन्मम सन्तु सूरयः शत्रूषाहः स्वग्नयः ॥ ६ ॥
यथा चिद् वृद्धमतसमग्ने संजूर्वसि क्षमि ।
एवा दह मित्रमहो यो अस्मध्रुग्दुर्मन्मा कश्च वेनति ॥ ७ ॥
मा नो मर्ताय रिपवे रक्षस्विने माघशंसाय रीरधः ।
अस्रेधद्भिस्तरणिभिर्यविष्ठ्य शिवेभिः पाहि पायुभिः ॥ ८ ॥
पाहि नो अग्न एकया पाह्युत द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥ ९ ॥
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अराव्णः प्र स्म वाजेषु नोऽव।
त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपिं नक्षामहे वृधे ॥ १० ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यम् ।
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती स्वर्यशस्तरम् ॥ ११ ॥
येन वंसाम पृतनासु शर्धतस्तरन्तो अर्य आदिशः ।
स त्वं नो वर्ध प्रयसा शचीवसो जिन्वा धियो वसुविदः ॥ १२ ॥
शिशानो वृषभो यथाग्निः शृङ्गे दविध्वत् ।
तिग्मा अस्य हनवो न प्रतिधृषे सुजम्भः सहसो यहुः ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहि ते अग्ने वृषभ प्रतिधूषे जम्भासो यद्वितिष्ठसे ।
स त्वं नो होतः सुहुतं हविष्कृधि वंस्वा नो वार्या पुरु ॥ १४ ॥
शेषे वनेषु मातृोः सं त्वा मर्तास इन्धते ।
अतन्द्रो हव्या वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि ॥ १५ ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

सस्त होतार्स्तमिदीळते त्वाग्ने सुत्यजमह्वयम् ।
भिनत्स्यद्रिं तपसा वि शोचिषा प्राग्ने तिष्ठ जनाँ अति ॥ १६ ॥
अग्निमग्निं वो अध्रिगुं हुवेम वृक्तबर्हिषः ।
अग्निं हितप्रयसः शश्वतीष्वा होतारं चर्षणीनाम् ॥ १७ ॥
केतेन शर्मन्त्सचते सुषामण्यग्ने तुभ्यं चिकित्वना ।
इषण्यया नः पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ॥ १८ ॥
अग्ने जरितर्विशपतिस्तेपानो देव रक्षसः ।
अप्रोषिवान्गृहपतिर्महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः ॥ १९ ॥
मा नो रक्ष आ वेशीदाघृणीवसो मा यातुर्यातुमावताम् ।
परो गव्यूत्यतिरामप क्षुधमग्ने सेधा रक्षस्विनः ॥ २० ॥

[६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—भर्गः प्रगाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ११, १५ निचृद्बृहती; २, ४, १० पङ्क्तिः; ३, ९ विराड्बृहती; ६, १४, १६ विराट्पङ्क्तिः; ७, १७ पादनिचृद्बृहती; ८, १२, १८ निचृत् पङ्क्तिः; १३ बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १३, १५, १७ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ पञ्चमः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवा सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ १ ॥
तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः ।
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः ॥ २ ॥
आ वृषस्व पुरूवसो सुतस्येन्द्रान्धसः ।
विद्मा हि त्वा हरिवः पृत्सु सासहिमधृष्टं चिद्दधृष्वणिम् ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रामिसत्य मघवन्तथेदसदिन्द्र क्रत्वा यथा वशः।
सनेम वाजं तव शिप्रिन्नवसा मक्षू चिद्यन्तो अद्रिवः॥ ४॥
शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि॥ ५॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः॥ ३७॥

पौरो अश्वस्य पुरुकृद्गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः।
नकिर्हि दानं परिमर्धिषत्त्वे यद्यद्यामि तदा भर॥ ६॥
त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।
उद्वावृषस्व मघवन्गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥ ७॥
त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे।
आ पुरन्दरं चकृम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे॥ ८॥
अविप्रो वा यदविधद्विप्रो वेन्द्र ते वचः ।
स प्र मंमन्दत्त्वाया शतक्रतो प्राचामन्यो अहंसन॥ ९॥
उग्रबाहुर्मक्षकृत्वा पुरन्दरो यदि मे शृणवद्धवम्।
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे॥ १०॥

अथाष्टत्रिंशो वर्गः॥ ३८॥

न पापासो मनामहे नारायासो न जल्हवः ।
यदिन्विन्द्रं वृषणं सचा सुते सखायं कृणवामहै॥ ११॥
उग्रं युयुज्म पृतनासु सासहिमृणकातिमदाभ्यम् ।
वेदा भूमं चित्सनिता रथीतमो वाजिनं यमिदू नशत्॥ १२॥
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिर्वि द्विषो वि मृधो जहि॥ १३॥
त्वं हि राधस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधतः।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे॥ १४॥
इन्द्रः स्पळुत वृत्रहा परस्पा नो वरेण्यः ।
स नो रक्षिषच्चरमं स मध्यमं स पश्चात्पातु नः पुरः॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकोनचत्वारिंशो वर्गः ॥ ३९ ॥

त्वं नः पश्चादधरादुत्तरात्पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः ।
आरे अस्मत्कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः ॥ १६ ॥
अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः ।
विश्वा च नो जरितॄन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः ॥ १७ ॥
प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः संमिश्लो वीर्याय कम् ।
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः ॥ १८ ॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ६, १०, ११ निचृत्पङ्क्तिः; २, ५ विराट्पङ्क्तिः; ४, १२ पङ्क्तिः; ७ निचृद्बृहती; ८, ९ बृहती ॥
स्वरः—१-६, १०-१२ पञ्चमः; ७-९ मध्यमः ॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४० ॥

प्रो अस्मा उपस्तुतिं भरता यज्जुजोषति ।
उक्थैरिन्द्रस्य माहिनं वयो वर्धन्ति सोमिनो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ १ ॥
अयुजो असमो नृभिरेकः कृष्टीरयास्यः ।
पूर्वीरति प्र वावृधे विश्वा जातान्योजसा भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ २ ॥
अहिंतेन चिदर्वता जीरदानुः सिषासति ।
प्रवाच्यमिन्द्र तत्तव वीर्याणि करिष्यतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ३ ॥
आ याहि कृणवाम त इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।
येभिः शविष्ठ चाकनो भद्रमिह श्रवस्यते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ४ ॥
धृषतश्चिद् धृषन्मनः कृणोषीन्द्र यत्त्वम् ।
तीव्रैः सोमैः सपर्यतो नमोभिः प्रतिभूषतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ५ ॥
अव चष्ट ऋचीषमोऽवताँइव मानुषः ।
जुष्टी दक्षस्य सोमिनः सखायं कृणुते युजं भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ६ ॥

अथैकचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४१ ॥

विश्वे त इन्द्र वीर्यं देवा अनु क्रतुं ददुः ।
भुवो विश्वस्य गोपतिः पुरुष्टुत भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृणे तदिन्द्र ते शव उपमं देवतातये ।
यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ८ ॥
समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा ।
विदे तदिन्द्रश्चेतनमध श्रुतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ९ ॥
उज्जातमिन्द्र ते शव उत्त्वामुत्तव क्रतुम् ।
भूरिगो भूरि वावृधुर्मघवन्तव शर्मणि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ १० ॥
अहं च त्वं च वृत्रहन्त्संयुज्याव सनिभ्य आ ।
अरातीवा चिदद्रिवोऽनु नौ शूर मंसते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ ११ ॥
सत्यमिद्वा उ तं वयमिन्द्रं स्तवाम नानृतम् ।
महाँ असुन्वतो वधो भूरि ज्योतींषि सुन्वतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः ॥ १२ ॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—१-११ इन्द्रः; १२ देवाः ॥ छन्दः—१, ४, ७ विराडनुष्टुप्; २, ३, ६ विराड्गायत्री; ५ निचृदनुष्टुप्; ८, ९, ११ निचृद्गायत्री; १० गायत्री; १२ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७ गान्धारः; २, ३, ६, ८, ९-११ षड्जः; १२ धैवतः ॥

अथ द्विचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४२ ॥

स पूर्व्यो महानां वेनः क्रतुभिरानजे ।
यस्य द्वारा मनुष्पिता देवेषु धिय आनजे ॥ १ ॥
दिवो मानं नोत्सदन्त्सोमपृष्ठासो अद्रयः ।
उक्था ब्रह्म च शंस्या ॥ २ ॥
स विद्वाँ अङ्गिरोभ्य इन्द्रो गा अवृणोदपः ।
स्तुषे तदस्य पौंस्यम् ॥ ३ ॥
स प्रत्नथा कविवृध इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः ।
शिवो अर्कस्य होमन्यस्मत्रा गन्त्ववसे ॥ ४ ॥
आदू नु ते अनु क्रतुं स्वाहा वरस्य यज्यवः ।
श्वात्रमर्का अनूषतेन्द्र गोत्रस्य दावने ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रे विश्वानि वीर्या कृतानि कर्त्वानि च ।
यमर्का अध्वरं विदुः ॥ ६ ॥

अथ त्रयश्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४३ ॥

यत्पाञ्चजन्यया विशेन्द्रे घोषा असृक्षत ।
अस्तृणाद्बर्हणा विपो३ऽ र्यो मानस्य स क्षयः ॥ ७ ॥

इयमु ते अनुष्टुतिश्चकृषे तानि पौंस्या । प्रावश्चक्रस्य वर्तनिम् ॥ ८ ॥
अस्य वृष्णो व्योदन उरु क्रमिष्ट जीवसे । यवं न पश्व आ ददे ॥ ९ ॥
तद्धाना अवस्यवो युष्माभिर्दक्षपितरः । स्याम मरुत्वतो वृधे ॥ १० ॥
बळित्थायय धान्न ऋक्वभिः शूर नोनुमः । जेषामेन्द्र त्वया युजा ॥ ११ ॥
अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः ।
यः शंसते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः ॥ १२ ॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ७, ९ निचृद्गायत्री; २, ६, ८, १०-१२ गायत्री; ३ आर्चीस्वराड्गायत्री; ४ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुश्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४४ ॥

उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि ॥ १ ॥
पदा पणीँरराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति ॥ २ ॥
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम् ॥ ३ ॥
एहि प्रेहि क्षयो दिव्या३ घोषञ्चर्षणीनाम् । ओभे पृणासि रोदसी ॥ ४ ॥
त्यं चित्पर्वतं गिरिं शतवन्तं सहस्त्रिणम् । वि स्तोतृभ्यो रुरोजिथ ॥ ५ ॥
वयमु त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे । अस्माकं काममा पृण ॥ ६ ॥

अथ पञ्चचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४५ ॥

क्व१ स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः । ब्रह्मा कस्तं सपर्यति ॥ ७ ॥
कस्य स्वित्सवनं वृषा जुजुष्वाँ अव गच्छति । इन्द्रं क उ स्विदा चके ॥ ८ ॥
कं ते दाना असक्षत वृत्रहन्कं सुवीर्या । उक्थे क उ स्विदन्तमः ॥ ९ ॥
अयं ते मानुषे जने सोमः पूरुषु सूयते । तस्येहि प्र द्रवा पिब ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः। आर्जीकीये मदिन्तमः ॥ ११ ॥
तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये। एहीमिन्द्र द्रवा पिब ॥ १२ ॥

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ९, ११, १२ निचृद्गायत्री; ३, ४ गायत्री; ७, ८, १० विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षट्चत्वारिंशो वर्गः ॥ ४६ ॥

यदिन्द्र प्रागपागुदङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः। आ याहि तूयमाशुभिः ॥ १ ॥
यद्वा प्रस्रवणे दिवो मादयासे स्वर्णरे। यद्वा समुद्रे अन्धसः ॥ २ ॥
आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं हुवे गामिव भोजसे। इन्द्र सोमस्य पीतये ॥ ३ ॥
आ त इन्द्र महिमानं हरयो देव ते महः। रथे वहन्तु बिभ्रतः ॥ ४ ॥
इन्द्रं गृणीष उ स्तुषे महाँ उग्र ईशानकृत्। एहि नः सुतं पिब ॥ ५ ॥
सुतावन्तस्त्वा वयं प्रयस्वन्तो हवामहे। इदं नो बर्हिरासदे ॥ ६ ॥

अथ सप्तचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४७ ॥

यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम्। तं त्वा वयं हवामहे ॥ ७ ॥
इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः। जुषाण इन्द्र तत्पिब ॥ ८ ॥
विश्वाँ अर्यो विपश्चितोऽति ख्यस्तूयमा गहि। अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ ९ ॥
दाता मे पृषतीनां राजा हिरण्यवीनाम्। मा देवा मघवा रिषत् ॥ १० ॥
सहस्रे पृषतीनामधि श्चन्द्रं बृहत्पृथु। शुक्रं हिरण्यमा ददे ॥ ११ ॥
नपातो दुर्गहस्य मे सहस्रेण सुराधसः। श्रवो देवेष्वक्रत ॥ १२ ॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—कलिः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ बृहती; २, ८, १२ निचृत्पङ्क्तिः; ३, ५, ११, १३ विराड्बृहती; ४, ६ विराट्पङ्क्तिः; ७ पादनिचृद्बृहती; १० पङ्क्तिः; १४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ९, १५ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ११, १३ मध्यमः; २, ४, ६, ८, १०, १२, १४ पञ्चमः; ९, १५ गान्धारः ॥

अथाष्टचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४८ ॥

तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये।
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदे सुशिप्रमन्धसः ।
य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम् ॥ २ ॥
यः शक्रो मृक्षो अश्व्यो यो वा कीजो हिरण्ययः ।
स ऊर्वस्य रेजयत्यपावृतिमिन्द्रो गव्यस्य वृत्रहा ॥ ३ ॥
निखातं चिद्यः पुरुसंभृतं वसूदिद्वपति दाशुषे ।
वज्री सुशिप्रो हर्यश्व इत्करदिन्द्रः क्रत्वा यथा वशत् ॥ ४ ॥
यद्वावन्थ पुरुष्टुत पुरा चिच्छूर नृणाम् ।
वयं तत्त इन्द्र सं भरामसि यज्ञमुक्थं तुरं वचः ॥ ५ ॥

अथैकोनपञ्चाशो वर्गः ॥ ४९ ॥

सचा सोमेषु पुरुहूत वज्रिवो मदाय द्युक्ष सोमपाः ।
त्वमिद्धि ब्रह्मकृते काम्यं वसु देष्ठः सुन्वते भुवः ॥ ६ ॥
वयमेनमिदा ह्योऽ पीपेमेह वज्रिणम् ।
तस्मा उ अद्य समना सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ ७ ॥
वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति ।
सेमं नः स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया ॥ ८ ॥
कदू न्व१स्याकृतमिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् ।
केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा ॥ ९ ॥
कदू महीरधृष्टा अस्य तविषीः कदु वृत्रघ्नो अस्तृतम् ।
इन्द्रो विश्वान्बेकनाटाँ अहर्दृशे उत क्रत्वा पणीँरभि ॥ १० ॥

अथ पञ्चाशो वर्गः ॥ ५० ॥

वयं घा ते अपूर्व्येन्द्र ब्रह्माणि वृत्रहन् ।
पुरूतमासः पुरुहूत वज्रिवो भूतिं न प्र भरामसि ॥ ११ ॥
पूर्वीश्चिद्धि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो हवन्त इन्द्रोतयः ।
तिरश्चिद्दर्यः सवना वसो गहि शविष्ठ श्रुधि मे हवम् ॥ १२ ॥
वयं घा ते त्वे इद्विन्द्र विप्रा अपि ष्मसि ।
नहि त्वदन्यः पुरुहूत कश्चन मघवन्नस्ति मर्डिता ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं नो अस्या अमतेरुत क्षुधोऽभिशस्तेरव स्पृधि।
त्वं न ऊती तव चित्रया धिया शिक्षा शचिष्ठ गातुवित्॥ १४॥
सोम इद्वः सुतो अस्तु कल्पयो मा बिभीतन ।
अपेदेष ध्वस्मायति स्वयं घैषो अपायति ॥ १५॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—मत्स्यः साम्मदो मान्यो वा मैत्रावरुणिर्बहवो वा मत्स्या जालनद्धाः॥ देवता—आदित्याः॥
छन्दः—१-३, ५, ७, ९, १३-१५, २१ निचृद्गायत्री; ४, १० विराड्गायत्री;
६, ८, ११, १२, १६-२० गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ एकपञ्चाशो वर्गः॥ ५१॥

त्यान्नु क्षत्रियाँ अव आदित्यान्याचिषामहे। सुमृळीकाँ अभिष्टये॥ १॥
मित्रो नो अत्यंहतिं वरुणः पर्षर्यमा। आदित्यासो यथा विदुः ॥ २॥
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं वरूथमस्ति दाशुषे। आदित्यानामरंकृते ॥ ३॥
महि वो महतामवो वरुण मित्रार्यमन्। अवांस्या वृणीमहे ॥ ४॥
जीवान्नो अभि धेतनादित्यासः पुरा हथात्। कद्ध स्थ हवनश्रुतः॥ ५॥

अथ द्विपञ्चाशो वर्गः॥ ५२॥

यद्वः श्रान्ताय सुन्वते वरूथमस्ति यच्छर्दिः। तेना नो अधि वोचत॥ ६॥
अस्ति देवा अंहोरुर्वस्ति रत्नमनागसः। आदित्या अद्भुतैनसः ॥ ७॥
मा नः सेतुः सिषेदयं महे वृणक्तु नस्परि। इन्द्र इद्धि श्रुतो वशी॥ ८॥
मा नो मृचा रिपूणां वृजिनानामविष्यवः। देवा अभि प्र मृक्षत॥ ९॥
उत त्वामदिते मह्यहं देव्युप ब्रुवे। सुमृळीकामभिष्टये ॥ १०॥

अथ त्रिपञ्चाशो वर्गः॥ ५३॥

पर्षि दीने गभीर आँ उग्रपुत्रे जिघांसतः। माकिस्तोकस्य नो रिषत्॥ ११॥
अनेहो न उरुव्रज उरूचि वि प्रसर्तवे। कृधि तोकाय जीवसे ॥ १२॥
ये मूर्धानः क्षितीनामदब्धासः स्वयशसः। व्रता रक्षन्ते अद्रुहः ॥ १३॥
ते न आस्त्रो वृकाणामादित्यासो मुमोचत। स्तेनं बद्धमिवादिते॥ १४॥
अपो षु णो दुरं शरुरादित्या अप दुर्मतिः। अस्मदेत्वजघ्नुषी ॥ १५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुष्पञ्चाशो वर्गः ॥ ५४ ॥

शश्वद्धि वः सुदानव आदित्या ऊतिभिर्वयम्। पुरा नूनं बुभुज्महे ॥ १६ ॥
शश्वन्तं हि प्रचेतसः प्रतियन्तं चिदेनसः। देवाः कृणुथ जीवसे ॥ १७ ॥
तत्सु नो नव्यं सन्यस आदित्या यन्मुमोचति। बन्धाद्बुध्नमिवादिते ॥ १८ ॥
नास्माकमस्ति तत्तर आदित्यासो अतिष्कदे। यूयमस्मभ्यं मृळत ॥ १९ ॥
मा नो हेतिर्विवस्वत आदित्याः कृत्रिमा शरुः। पुरा नु जरसो वधीत् ॥ २० ॥
वि षु द्वेषो व्यंहतिमादित्यासो वि संहितम्। विष्वग्विं वृहता रपः ॥ २१ ॥

इति षष्ठाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ षष्ठाष्टके पञ्चमोऽध्यायः

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—१-१३ इन्द्रः; १४-१९ ऋक्षाश्वमेधयोर्दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २, ३, १५ गायत्री; ४, ७ विराडनुष्टुप्; ५, ६, ८, १२, १३, १७, १९ निचृद्गायत्री; ९, १४, १८ पादनिचृद्गायत्री; १० निचृदनुष्टुप्; ११ विराड्गायत्री; १६ आर्चीस्वराड्गायत्री ॥ स्वरः—१, ४, ७, १० गान्धारः; २, ३, ५, ६, ८, ९, ११-१९ षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि ।
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्र शविष्ठ सत्पते ॥ १ ॥
तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते। आ पप्राथ महित्वना ॥ २ ॥
यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः। हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ॥ ३ ॥
विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः।
एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम् ॥ ४ ॥
अभिष्टये सदावृधं स्वर्मीळ्हेषु यं नरः। नाना हवन्त ऊतये ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

परोमात्रमृचीषममिन्द्रमुग्रं सुराधसम्। ईशानं चिद्वसूनाम् ॥ ६ ॥
तन्तमिद्राधसे महे इन्द्रं चोदामि पीतये।
यः पूर्व्यामनुष्टुतिमीशे कृष्टीनां नृतुः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न यस्य ते शवसान सख्यमानंश मर्त्यः। नकिः शवांसि ते नशत्॥ ८॥
त्वोतासस्त्वा युजाप्सु सूर्ये महद्धनम्। जयेम पृत्सु वज्रिवः ॥ ९॥
तं त्वा यज्ञेभिरीमहे तं गीर्भिर्गिर्वणस्तम ।
इन्द्र यथा चिदाविथ वाजेषु पुरुमाय्यम् ॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

यस्य ते स्वादु सख्यं स्वाद्वी प्रणीतिरद्रिवः। यज्ञो वितन्तसाय्यः॥ ११॥
उरु णस्तन्वेऽ३ तन उरु क्षयाय नस्कृधि। उरु णो यन्धि जीवसे॥ १२॥
उरुं नृभ्य उरुं गव उरुं रथाय पन्थाम्। देववीतिं मनामहे ॥ १३॥
उप मा षड् द्वाद्वा नरः सोमस्य हर्ष्यी। तिष्ठन्ति स्वादुरातयः ॥ १४॥
ऋज्राविन्द्रोत आ ददे हरी ऋक्षस्य सूनवि। आश्वमेधस्य रोहिता॥ १५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

सुरथाँ आतिथिग्वे स्वभीशूँरार्क्षे। आश्वमेधे सुपेशसः ॥ १६॥
षळश्वाँ आतिथिग्व इन्द्रोते वधूमतः। सचा पूतक्रतौ सनम् ॥ १७॥
ऐषु चेतद् वृषण्वत्यन्तर्ऋज्रेष्वरुषी। स्वभीशुः कशावती ॥ १८॥
न युष्मे वाजबन्धवो निनित्सुश्चन मर्त्यः। अवद्यमधि दीधरत् ॥ १९॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रियमेधः॥ देवता—१-१०, १३-१८ इन्द्रः; ११[१] विश्वे देवाः; ११[२], १२ वरुणः॥ छन्दः—१, ३, १० विराडनुष्टुप्; २ निचृदुष्णिक्; ४, ५ निचृद् गायत्री; ६ गायत्री; ७, ९, १२, १३, १५ निचृदनुष्टुप्; ८ पादनिचृद् अनुष्टुप्; ११ पङ्क्तिः; १४ अनुष्टुप्; १६ निचृत्पङ्क्तिः; १७ बृहती; १८ विराड्बृहती॥ स्वरः—१, ३, ७-१०, १२-१५ गान्धारः; २ ऋषभः; ४-६ षड्जः; ११, १६ पञ्चमः; १७, १८ मध्यमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं मन्दद्वीरायेन्दवे ।
धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥ १॥
नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम् ।
पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि ॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
जन्मन्देवानां विशस्त्रिष्वा रोचने दिवः ॥ ३ ॥
अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४ ॥
आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

इन्द्राय गावो आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥ ६ ॥
उद्यद् ब्रध्नस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।
मध्वः पीत्वा सचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ॥ ७ ॥
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो अर्चत ।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धृष्ण्वर्चत ॥ ८ ॥
अव स्वराति गर्गरो गोधा परि सनिष्वणत् ।
पिङ्गा परि चनिष्कददिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ॥ ९ ॥
आ यत्पतन्त्येन्यः सुदुघा अनपस्फुरः ।
अपस्फुरं गृभायत सोममिन्द्राय पातवे ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

अपादिन्द्रो अपादग्निर्विश्वे देवा अमत्सत ।
वरुण इदिह क्षयत्तमापो अभ्यनूषत वत्सं संशिश्वरीरिव ॥ ११ ॥
सुदेवो असि वरुण यस्य ते सप्त सिन्धवः ।
अनुक्षरन्ति काकुदं सूर्यं सुषिरामिव ॥ १२ ॥
यो व्यतीँरफाणयत्सुयुक्ताँ उप दाशुषे ।
तक्वो नेता तदिद्वपुरुपमा यो अमुच्यत ॥ १३ ॥
अतीदु शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।
भिनत्कनीन ओदनं पच्यमानं परो गिरा ॥ १४ ॥
अर्भको न कुमारकोऽधि तिष्ठन्नवं रथम् ।
स पक्षन्महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्रतुम् ॥ १५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ तू सुशिप्र दम्पते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् ।
अधं द्युक्षं सचेवहि सहस्त्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम् ॥ १६ ॥
तं घेमित्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
अर्थं चिदस्य सुधितं यदेतव आवर्तयन्ति दावने ॥ १७ ॥
अनु प्रत्नस्यौकसः प्रियमेधास एषाम् ।
पूर्वामनु प्रयतिं वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत ॥ १८ ॥

अष्टमोऽनुवाकः [७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्बृहती; २, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ३ निचृद्बृहती; ४ पङ्क्तिः; ५, ७ विराड्बृहती; ८, १० आर्चीस्वराड्बृहती; ९, ११ बृहती; १२ आर्चीबृहती; १३ उष्णिक्; १४ भुरिगनुष्टुप्; १५ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७-१२ मध्यमः; २, ४, ६, पञ्चमः; १३, १५ ऋषभः; १४ गान्धारः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गृणे ॥ १ ॥
इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।
हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्यः ॥ २ ॥
नकिष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम् ।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णवोजसम् ॥ ३ ॥
अषाळ्हमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्महीरुरुज्रयः ।
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामो अनोनवुः ॥ ४ ॥
यद् द्यावः इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्त्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन्विश्वा शविष्ठ शवसा ।
अस्माँ अव मघवन्गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः ॥ ६ ॥
न सीमदेव आपदिषं दीर्घायो मर्त्यः ।
एतग्वा चिद्य एतशा युयोजते हरी इन्द्रो युयोजते ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं वो महो महाय्यमिन्द्रं दानाय सक्षणिम् ।
यो गाधेषु य आरणेषु हव्यो वाजेष्वस्ति हव्यः ॥ ८ ॥
उदू षु णो वसो महे मृशस्व शूर राधसे ।
उदू षु महो मघवन्मघत्तय उदिन्द्र श्रवसे महे ॥ ९ ॥
त्वं न इन्द्र ऋतयुस्त्वानिदो नि तृम्पसि ।
मध्ये वसिष्व तुविनृम्णोर्वोर्नि दासं शिश्नथो हथैः ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अन्यव्रततममानुषमयज्वानमदेवयुम् ।
अव स्वः सखा दुधुवीत पर्वतः सुम्नाय दस्युं पर्वतः ॥ ११ ॥
त्वं न इन्द्रासां हस्ते शविष्ठ दावने ।
धानानां न सं गृभायास्मयुर्द्विः सं गृभायास्मयुः ॥ १२ ॥
सखायः क्रतुमिच्छत कथा राधाम शरस्य ।
उपस्तुतिं भोजः सूरिर्यो अह्रयः ॥ १३ ॥
भूरिभिः समहृ ऋषिभिर्बर्हिष्मद्भिः स्तविष्यसे ।
यदित्थमेकमेकमिच्छरं वत्सान्पराददः ॥ १४ ॥
कर्णगृह्या मघवा शौरदेव्यो वत्सं नस्त्रिभ्य आनयत् ।
अजां सूरिर्न धातवे ॥ १५ ॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुदीतिपुरुमीळ्हौ तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ७ विराड्गायत्री; २, ६, ८, ९ निचृद्गायत्री; ३, ५ गायत्री; १०, १३ निचृद्बृहती; ११, १५ बृहती; १२ पादनिचृद्बृहती; १४ विराड्बृहती ॥ स्वरः—१-९ षड्जः; १०-१५ मध्यमः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः । उत द्विषो मर्त्यस्य ॥ १ ॥
नहि मन्युः पौरुषेय ईशे हि वः प्रियजात । त्वमिदसि क्षपावान् ॥ २ ॥
स नो विश्वेभिर्देवेभिरूर्जो नपाद्भद्रशोचे । रयिं देहि विश्ववारम् ॥ ३ ॥
न तमग्ने अरातयो मर्तं युवन्त रायः । यं त्रायसे दाश्वांसम् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यं त्वं विप्र मेधसातावग्ने हिनोषि धनाय। स तवोती गोषु गन्ता॥५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

त्वं रयिं पुरुवीरमग्ने दाशुषे मर्तीय। प्र णो नय वस्यो अच्छ ॥६॥
उरुष्या णो मा परा दा अघायते जातवेदः। दुराध्येऽ३ मर्तीय ॥७॥
अग्ने माकिष्टे देवस्य रातिमदेवो युयोत। त्वमीशिषे वसूनाम् ॥८॥
स नो वस्व उप मास्यूर्जो नपान्माहिनस्य। सखे वसो जरितृभ्यः॥९॥
अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम् ।
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरूवसुं पुरुप्रशस्तमूतये॥१०॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम्।
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मन्द्रतमो विशि॥११॥
अग्निं वो देवयज्ययाग्निं प्रयत्यध्वरे ।
अग्निं धीषु प्रथममग्निमर्वत्यग्निं क्षैत्राय साधसे ॥१२॥
अग्निरिषां सख्ये ददातु न ईशे यो वार्याणाम्।
अग्निं तोके तनये शश्वदीमहे वसुं सन्तं तनूपाम्॥१३॥
अग्निमीळिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
अग्निं राये पुरुमीळ्ह श्रुतं नरोऽग्निं सुदीतये छर्दिः॥१४॥
अग्निं द्वेषो योतवै नो गृणीमस्यग्निं शं योश्च दातवे।
विश्वासु विक्ष्वविते व हव्यो भुवद्वस्तुर्ऋषूणाम् ॥१५॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—हर्यतः प्रागाथः॥ देवता—अग्निर्हवींषि वा॥ छन्दः—१, ३, ८-१०, १२, १६ गायत्री; २ पादनिचृद्गायत्री; ४-६, ११, १३-१५, १७ निचृद्गायत्री; ७, १८ विराड्गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

हविष्कृणुध्वमा गमदध्वर्युर्वनते पुनः। विद्वाँ अस्य प्रशासनम् ॥१॥
नि तिग्ममभ्यं१शुं सीदद्धोता मनावधि। जुषाणो अस्य सख्यम्॥२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तरिच्छन्ति तं जने रुद्रं परो मनीषया। गृभ्णन्ति जिह्वया ससम्॥ ३॥
जाम्यतीतपे धनुर्वयोधा अरुहद्वनम्। दूषदं जिह्वयावधीत् ॥ ४॥
चरन्वत्सो रुशन्निह निदातारं न विन्दते। वेति स्तोतव अम्ब्यम्॥ ५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

उतो न्वस्य यन्महदश्वावद्योजनं बृहत्। दामा रथस्य ददृशे ॥ ६॥
दुहन्ति सप्तैकामुप द्वा पञ्च सृजतः। तीर्थे सिन्धोरधि स्वरे ॥ ७॥
आ दशभिर्विवस्वत इन्द्रः कोशमचुच्यवीत्। खेदया त्रिवृता दिवः॥ ८॥
परि त्रिधातुरध्वरं जूर्णिरेति नवीयसी। मध्वा होतारो अञ्जते ॥ ९॥
सिञ्चन्ति नमसावतमुच्चाचक्रं परिज्मानम्। नीचीनबारमक्षितम्॥ १०॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवतस्य विसर्जने ॥ ११॥
गाव उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया ॥ १२॥
आ सुते सिञ्चत श्रियं रोदस्योरभिश्रियम्। रसा दधीत वृषभम्॥ १३॥
ते जानत स्वमोक्यं सं वत्सासो न मातृभिः। मिथो नसन्त जामिभिः॥ १४॥
उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि। इन्द्रे अग्रा नमः स्वः॥ १५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

अधुक्षत्पिप्युषीमिषमूर्जं सप्तपदीमरिः। सूर्यस्य सप्त रश्मिभिः ॥ १६॥
सोमस्य मित्रावरुणोदिता सूर आ ददे। तदातुरस्य भेषजम् ॥ १७॥
उतो न्वस्य यत्पदं हर्यतस्य निधान्यम्। परि द्यां जिह्वयातनत् ॥ १८॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोपवन आत्रेयः सप्तवध्रिर्वा॥ देवता—अश्विनौ॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ७, ९-११, १६-१८ गायत्री; ३, ८, १२-१५ निचृद्गायत्री; ६ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

उदीराथामृतायते युञ्जाथामश्विना रथम्। अन्ति षद्भूतु वामवः॥ १॥
निमिषश्चिज्जवीयसा रथेना यातमश्विना। अन्ति षद्भूतु वामवः॥ २॥
उप स्तृणीतमर्त्तये हिमेव घर्ममश्विना। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुह स्थः कुह जग्मथुः कुह श्येनेव पेतथुः। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ४ ॥
यद्द्य कर्हि कर्हि चिच्छुश्रूयातमिमं हवम्। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ५ ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अश्विना यामहूतमा नेदिष्ठं याम्याप्यम्। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ६ ॥
अवन्तमत्रये गृहं कृणुतं युवमश्विना। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ७ ॥
वरेथे अग्निमातपो वदते वल्गवत्रये। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ८ ॥
प्र सप्तवध्रिराशसा धारामग्नेरशायत। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ९ ॥
इहा गतं वृषण्वसू श्रृणुतं म इमं हवम्। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १० ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

किमिदं वां पुराणवज्जरतोरिव शस्यते। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ ११ ॥
समानं वां सजात्यं समानो बन्धुरश्विना। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १२ ॥
यो वां रजांस्यश्विना रथो वियाति रोदसी। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १३ ॥
आ नो गव्येभिरश्व्यैः सहस्त्रैरुप गच्छतम्। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १४ ॥
मा नो गव्येभिरश्व्यैः सहस्त्रैभिरति ख्यतम्। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १५ ॥
अरुणप्सुरुषा अभूदकर्ज्योतिर्ऋतावरी। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १६ ॥
अश्विना सु विचाकशद् वृक्षं परशुमाँइव। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १७ ॥
पुरं न धृष्णवा रुज कृष्णया बाधितो विशा। अन्ति षद्भूतु वामवः ॥ १८ ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गोपवन आत्रेयः ॥ देवता—१-१२ अग्निः; १३-१५ श्रुतर्वण आर्क्षस्य दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, १० निचृदनुष्टुप्; २, ११ गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ४, १३-१५ विराडनुष्टुप्; ५, ६, ८, ९, १२ निचृद्गायत्री; ७ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ७, १०, १३-१५ गान्धारः; २, ३, ५, ६, ८, ९, ११, १२ षड्जः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम्।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥ १ ॥
यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम्।
प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता। हव्यान्यैरयद्दिवि ॥ ३ ॥
आगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम्।
यस्य श्रुतर्वी बृहन्नाक्षो अनीक एधते ॥ ४ ॥
अमृतं जातवेदसं तिरस्तमांसि दर्शतम्। घृताहवनमीड्यम् ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सबाधो यं जना इमेऽग्निं हव्येभिरीळते। जुह्वानासो यतस्रुचः ॥ ६ ॥
इयं ते नव्यसी मतिरग्ने अधायि अस्मदा।
मन्द्र सुजात सुक्रतोऽमूर दस्मातिथे ॥ ७ ॥
सा ते अग्ने शन्तमा चनिष्ठा भवतु प्रिया। तया वर्धस्व सुष्टुतः ॥ ८ ॥
सा द्युम्नैर्द्युम्निनी बृहदुपोप श्रवसि श्रवः। दधीत वृत्रतूर्ये ॥ ९ ॥
अश्वमिद्गां रथप्रां त्वेषमिन्द्रं न सत्पतिम्।
यस्य श्रवांसि तूर्थ पन्यंपन्यं च कृष्टयः ॥ १० ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

यं त्वा गोपवनो गिरा चनिष्ठदग्ने अङ्गिरः। स पावक श्रुधी हवम् ॥ ११ ॥
यं त्वा जनास ईळते सबाधो वाजसातये। स बोधि वृत्रतूर्ये ॥ १२ ॥
अहं हुवान आर्क्षे श्रुतर्वणि मद्च्युति।
शर्धांसीव स्तुकाविनां मृक्षा शीर्षा चतुर्णाम् ॥ १३ ॥
मां चत्वार आशवः शविष्ठस्य द्रवित्नवः।
सुरथासो अभि प्रयो वक्षन्वयो न तुग्र्यम् ॥ १४ ॥
सत्यमित्त्वा महेनदि परुष्ण्यव देदिशम्।
नेमापो अश्वदातरः शविष्ठादस्ति मर्त्यः ॥ १५ ॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—विरूपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ७, ९, ११ निचृद्गायत्री; २, ३, १५ विराड्-गायत्री; ६, १०, १२-१४, १६ गायत्री; ८ आर्चीस्वराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

युक्ष्वा हि देवहूतमाँ अश्वाँ अग्ने रथीरिव। नि होता पूर्व्यः सदः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत नो देव देवाँ अच्छा वोचो विदुष्टरः। श्रद्धिश्वा वार्या कृधि॥ २॥
त्वं ह यद्यविष्ठ्य सहसः सूनवाहुत। ऋतावा यज्ञियो भुवः॥ ३॥
अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः। मूर्धा कवी रयीणाम्॥ ४॥
तं नेमिमृभवो यथा नमस्व सहूतिभिः। नेदीयो यज्ञमङ्गिरः॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

तस्मै नूनमभिद्यवे वाचा विरूप नित्यया। वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम्॥ ६॥
कमु ष्विदस्य सेनयाग्नेरपाकचक्षसः। पणिं गोषु स्तरामहे॥ ७॥
मा नो देवानां विशः प्रस्त्रातीरिवोस्त्राः। कृशं न हासुरघ्न्याः॥ ८॥
मा नः समस्य दूढ्यः परिद्वेषसो अंहतिः। ऊर्मिर्न नावमा वधीत्॥ ९॥
नमस्ते अग्न ओजसे गृणान्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय॥ १०॥

अथ षडविंशो वर्गः॥ २६॥

कुवित्सु नो गविष्टयेऽग्ने संवेषिषो रयिम्। उरुकृदुरु णस्कृधि॥ ११॥
मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा। संवर्ग्ं सं रयिं जय॥ १२॥
अन्यमस्मद्रिया इयमग्ने सिषक्तु दुच्छुना। वधी नो अमवच्छवः॥ १३॥
यस्याजुषन्नमस्विनः शमीमदुर्मखस्य वा। तं घेदग्निर्वृधावति॥ १४॥
परस्या अधि संवतोऽवराँ अभ्या तर। यत्राहमस्मि ताँ अव॥ १५॥
विद्मा हि ते पुरा वयमग्ने पितुर्यथावसः। अधा ते सुम्नमीमहे॥ १६॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुरुसुतिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ८-१२ गायत्री; ३, ४, ७ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

इमं नु मायिनं हुव इन्द्रमीशानमोजसा। मरुत्वन्तं न वृञ्जसे॥ १॥
अयमिन्द्रो मरुत्सखा वि वृत्रस्याभिनच्छिरः। वज्रेण शतपर्वणा॥ २॥
वावृधानो मरुत्सखेन्द्रो वि वृत्रमैरयत्। सृजन्त्समुद्रिया अपः॥ ३॥
अयं ह येन वा इदं स्वर्मरुत्वता जितम्। इन्द्रेण सोमपीतये॥ ४॥
मरुत्वन्तमृजीषिणमोजस्वन्तं विरप्शिनम्। इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे। अस्य सोमस्य पीतये॥ ६॥

अथाष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

मरुत्वाँ इन्द्र मीढ्वः पिबा सोमं शतक्रतो। अस्मिन्यज्ञे पुरुष्टुत॥ ७॥
तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते सुताः सोमासो अद्रिवः। हृदा हूयन्त उक्थिनः॥ ८॥
पिबेदिन्द्र मरुत्सखा सुतं सोमं दिविष्टिषु। वज्रं शिशान ओजसा॥ ९॥
उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः। सोममिन्द्र चमू सुतम्॥ १०॥
अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम्। इन्द्र यद्दस्युहाभवः॥ ११॥
वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतस्पृशम्। इन्द्रात्परि तन्वं ममे॥ १२॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुरुसुतिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ४, ७, ८ गायत्री; २, ५, ६, ९ निचृद्गायत्री; १० निचृद्बृहती; ११ निचृत्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१-९ षड्जः; १० मध्यमः; ११ पञ्चमः॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि पृच्छदिति मातरम्। क उग्राः के ह शृण्विरे॥ १॥
आदीं शवस्यब्रवीदौर्णवाभमहीशुवम्। ते पुत्र सन्तु निष्टुरः॥ २॥
समित्तान्वृत्रहाखिदत्खे अराँइव खेदया। प्रवृद्धो दस्युहाभवत्॥ ३॥
एकया प्रतिधापिबत्साकं सरांसि त्रिंशतम्। इन्द्रः सोमस्य काणुका॥ ४॥
अभि गन्धर्वमतृणदबुध्नेषु रजःस्वा। इन्द्रो ब्रह्मभ्य इद् वृधे॥ ५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

निरविध्यद्गिरिभ्य आ धारयत्पक्वमोदनम्। इन्द्रो बुन्दं स्वाततम्॥ ६॥
शतब्रध्न इषुस्तव सहस्रपर्ण एक इत्। यमिन्द्र चकृषे युजम्॥ ७॥
तेन स्तोतृभ्य आ भर नृभ्यो नारिभ्यो अत्तवे। सद्यो जात ऋभुक्षिर॥ ८॥
एता च्यौत्नानि ते कृता वर्षिष्ठानि परीणसा। हृदा वीड्वधारयः॥ ९॥
विश्वेत्ता विष्णुराभरदुरुक्रमस्त्वेषितः।
शतं महिषान्क्षीरपाकमोदनं वराहमिन्द्र एमुषम्॥ १०॥
तुविक्षं ते सुकृतं सूमयं धनुः साधुर्बुन्दो हिरण्ययः।
उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृत ऋदूपे चिदृदूवृधा॥ ११॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋषिः—कुरुसुतिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री; २, ६-९ विराड्गायत्री; ४, ५ गायत्री; १० बृहती ॥ स्वरः—१-९ षड्जः; १० मध्यमः ॥

अथैकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

पुरोळाशं नो अन्धस इन्द्र सहस्रमा भर। शता च शूर गोनाम् ॥ १ ॥
आ नो भर व्यञ्जनं गामश्वमभ्यञ्जनम्। सचा मना हिरण्यया ॥ २ ॥
उत नः कर्णशोभना पुरूणि धृष्णवा भर। त्वं हि शृण्विषे वसो ॥ ३ ॥
नकीं वृधीक इन्द्र ते न सुषा न सुदा उत। नान्यस्त्वच्छूर वाघतः ॥ ४ ॥
नकीमिन्द्रो निकर्तवे न शक्रः परिशक्तवे। विश्वं शृणोति पश्यति ॥ ५ ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

स मन्युं मर्त्यानामदब्धो नि चिकीषते। पुरा निदश्चिकीषते ॥ ६ ॥
क्रत्व इत्पूर्णमुदरं तुरस्यास्ति विधतः। वृत्रघ्नः सोमपाव्नः ॥ ७ ॥
त्वे वसूनि संगता विश्वा च सोम सौभगा। सुदात्वपरिह्वृता ॥ ८ ॥
त्वामिद्यवयुर्मम कामो गव्युर्हिरण्ययुः। त्वामश्वयुरेषते ॥ ९ ॥
तवेदिन्द्राहमाशसा हस्ते दात्रं चना ददे ।
दिनस्य वा मघवन्त्संभृतस्य वा पूर्धि यवस्य काशिना ॥ १० ॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृत्नुर्भार्गवः ॥ देवता—सोमः ॥ छन्दः—१, २, ६ निचृद्गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ४, ५, ७, ८ गायत्री; ९ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-८ षड्जः; ९ गान्धारः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

अयं कृत्नुरगृभीतो विश्वजिदुद्भिदित्सोमः ।
ऋषिर्विप्रः काव्येन ॥ १ ॥
अभ्यूर्णोति यन्नग्नं भिषक्ति विश्वं यत्तुरम् ।
प्रेमन्धः स्त्रातिः श्रोणो भूत् ॥ २ ॥
त्वं सोम तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यः ।
उरु यन्तासि वरूथम् ॥ ३ ॥
त्वं चित्ती तव दक्षैर्दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् ।
यावीरघस्य चिद् द्वेषः ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थिनो यन्ति चेदर्थं गच्छानिद्दुदुषो रातिम् ।
ववृज्युस्तृष्यतः कामम् ॥५॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

विदद्यत्पूर्व्यं नष्टमुदीमृतायुमीरयत् ।
प्रेमायुस्तारीदतीर्णम् ॥६॥
सुशेवो नो मृळयाकुरदृसक्रतुरवातः ।
भवा नः सोम शं हृदे ॥७॥
मा नः सोम सं वीविजो मा वि बीभिषथा राजन् ।
मा नो हार्दि त्विषा वधीः ॥८॥
अव यत्स्वे सधस्थे देवानां दुर्मतीरीक्षे ।
राजन्नप द्विषः सेध मीढ्वो अप स्त्रिधः सेध ॥९॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—एकद्यूर्नैधसः ॥ देवता—१-९ इन्द्रः; १० देवाः ॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ३, ५, ८ निचृद्गायत्री; ४, ६, ७, ९, गायत्री १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-९ षड्जः, १ धैवतः ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

नह्यन्यं बळाकरं मर्डितारं शतक्रतो । त्वं न इन्द्र मृळय ॥१॥
यो नः शश्वत्पुराविथामृध्रो वाजसातये । स त्वं न इन्द्र मृळय ॥२॥
किमङ्ग रधचोदनः सुन्वानस्यावितेदसि । कुवित्स्विन्द्र णः शकः ॥३॥
इन्द्र प्र णो रथमव पश्चाच्चित्सन्तमद्रिवः । पुरस्तादेनं मे कृधि ॥४॥
हन्तो नु किमाससे प्रथमं नो रथं कृधि । उपमं वाजयु श्रवः ॥५॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

अवा नो वाजयुं रथं सुकरं ते किमित्परि । अस्मान्त्सु जिग्युषस्कृधि ॥६॥
इन्द्र दृह्यस्व पूरसि भद्रा त एति निष्कृतम् । इयं धीर्ऋत्वियावती ॥७॥
मा सीमवद्य आ भागुर्वी काष्ठा हितं धनम् । अपावृक्ता अरत्नयः ॥८॥
तुरीयं नाम यज्ञियं यदा करस्तदुश्मसि । आदित्पतिर्न ओहसे ॥९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवीवृधद्धो अमृता अमन्दीदेकद्यूर्देवा उत याश्च देवीः ।
तस्मा उ राधः कृणुत प्रशस्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥१०॥

नवमोऽनुवाकः [८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुसीदी काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५, ८ गायत्री; २, ३, ६, ७ निचृद्गायत्री; ४, ९ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः॥ ३७॥

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय। महाहस्ती दक्षिणेन॥१॥
विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम्। तुविमात्रमवोभिः॥२॥
नहि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम्। भीमं न गां वारयन्ते॥३॥
एतो न्विन्द्रं स्तवामेशानं वस्वः स्वराजम्। न राधसा मर्धिषन्नः॥४॥
प्र स्तोषदुप गासिषच्छ्रवत्साम गीयमानम्। अभि राधसा जुगुरत्॥५॥

अथाष्टत्रिंशो वर्गः॥ ३८॥

आ नो भर दक्षिणेनाभि सव्येन प्र मृश। इन्द्र मा नो वसोर्निर्भीक्॥६॥
उप क्रमस्वा भर धृषता धृष्णो जनानाम्। अदाशूष्टरस्य वेदः॥७॥
इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सनित्वः। अस्माभिः सु तं सनुहि॥८॥
सद्योजुवस्ते वाजा अस्मभ्यं विश्वश्चन्द्राः। वशैश्च मक्षू जरन्ते॥९॥

इति षष्ठाष्टके पञ्चमोऽध्यायः॥

अथ षष्ठाष्टके षष्ठोऽध्यायः

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुसीदी काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७, ९ निचृद्गायत्री; २, ५, ६, ८ गायत्री; ३, ४ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

आ प्र द्रव परावतोऽर्वावतश्च वृत्रहन्। मध्वः प्रति प्रभर्मणि॥१॥
तीव्राः सोमास आ गहि सुतासो मादयिष्णवः। पिबा दुधृग्यथोचिषे॥२॥
इषा मन्दस्वादु तेऽरं वराय मन्यवे। भुवत्त इन्द्र शं हृदे॥३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ त्वशत्रवा गहि न्युक्थानि च हूयसे। उपमे रोचने दिवः ॥ ४ ॥
तुभ्यायमद्रिभिः सुतो गोभिः श्रीतो मदाय कम्। प्र सोम इन्द्र हूयते ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

इन्द्र श्रुधि सु मे हवमस्मे सुतस्य गोमतः। वि पीतिं तृम्पमश्नुहि ॥ ६ ॥
य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः। पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥ ७ ॥
यो अप्सु चन्द्रमाइव सोमश्चमूषु ददृशे। पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥ ८ ॥
यं ते श्येनः पदाभरत्तिरो रजांस्यस्पृतम्। पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥ ९ ॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कुसीदी काण्वः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ५, ६, ९ गायत्री; ३ निचृद्गायत्री; ४ पादनिचृद्गायत्री; ७ आर्चीस्वराड्गायत्री; ८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम्। वृष्णामस्मभ्यमूतये ॥ १ ॥
ते नः सन्तु युजः सदा वरुणो मित्रो अर्यमा। वृधासश्च प्रचेतसः ॥ २ ॥
अति नो विष्पिता पुरु नौभिरपो न पर्षथ। यूयमृतस्य रथ्यः ॥ ३ ॥
वामं नो अस्त्वर्यमन्वामं वरुण शंस्यम्। वामं ह्यावृणीमहे ॥ ४ ॥
वामस्य हि प्रचेतस ईशानासो रिशादसः। नेमादित्या अघस्य यत् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

वयमिद्धः सुदानवः क्षियन्तो यान्तो अध्वन्ना। देवा वृधाय हूमहे ॥ ६ ॥
अधि न इन्द्रैषां विष्णो सजात्यानाम्। इता मरुतो अश्विना ॥ ७ ॥
प्र भ्रातृत्वं सुदानवोऽध द्विता समान्या। मातुर्गर्भे भरामहे ॥ ८ ॥
यूयं हि ष्ठा सुदानव इन्द्रज्येष्ठा अभिद्यवः। अधा चिद्ध उत ब्रुवे ॥ ९ ॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—उशना काव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २ विराड्गायत्री; ३, ६ निचृद्गायत्री; ४, ५, ७-९ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्निं रथं न वेद्यम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविमिव प्रचेतसं यं देवासो अधि द्विता। नि मर्त्येष्वादधुः ॥ २ ॥
त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄंः पाहि शृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना ॥ ३ ॥
कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम्। वराय देव मन्यवे ॥ ४ ॥
दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो। कदु वोच इदं नमः ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

अधा त्वं हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः। वाजद्रविणसो गिरः ॥ ६ ॥
कस्य नूनं परीणसो धियो जिन्वसि दंपते। गोषाता यस्य ते गिरः ॥ ७ ॥
तं मर्जयन्त सुक्रतुं पुरोयावानमाजिषु। स्वेषु क्षयेषु वाजिनम् ॥ ८ ॥
क्षेति क्षेमेभिः साधुभिर्नकिर्यं घ्नन्ति हन्ति यः। अग्ने सुवीर एधते ॥ ९ ॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ९ विराड्गायत्री; २, ५, ७ निचृद्गायत्री; ३, ४, ६, ८ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

आ मे हवं नासत्याश्विना गच्छतं युवम्। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ १ ॥
इमं मे स्तोममश्विनेमं मे शृणुतं हवम्। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ २ ॥
अयं वां कृष्णो अश्विना हवते वाजिनीवसू। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ३ ॥
शृणुतं जरितुर्हवं कृष्णस्य स्तुवतो नरा। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ४ ॥
छर्दिर्यन्तमदाभ्यं विप्राय स्तुवते नरा। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

गच्छतं दाशुषो गृहमित्था स्तुवतो अश्विना। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ६ ॥
युञ्जाथां रासभं रथे वीड्वङ्गे वृषण्वसू। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ७ ॥
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना यातमश्विना। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ८ ॥
नू मे गिरो नासत्याश्विना प्रावतं युवम्। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ९ ॥

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णो विश्वको वा कार्ष्णिः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३ विराड्जगती; २, ४, ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

उभा हि दस्रा भिषजा मयोभुवोभा दक्षस्य वचसो बभूवथुः ।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ १ ॥
कथा नूनं वां विमना उप स्तवद्युवं धियं ददथुर्वस्यइष्टये ।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ २ ॥
युवं हि ष्मा पुरुभुजेममेधतुं विष्णाप्वे ददथुर्वस्यइष्टये ।
ता वां विश्वको हवते तनूकृथे मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ ३ ॥
उत त्यं वीरं धनसामृजीषिणं दूरे चित्सन्तमवसे हवामहे ।
यस्य स्वादिष्ठा सुमतिः पितुर्यथा मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ ४ ॥
ऋतेन देवः सविता शमायत ऋतस्य शृङ्गमुर्विया वि पप्रथे ।
ऋतं सासाह महि चित्पृतन्यतो मा नो वि यौष्टं सख्या मुमोचतम् ॥ ५ ॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णो द्युम्नीको वा वासिष्ठः प्रियमेधो वा ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३ बृहती; २, ४, ६ निचृत्पङ्क्तिः; ५ निचृद्बृहती ॥ स्वरः—१, ३, ५ मध्यमः; २, ४, ६ पञ्चमः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना क्रिविर्न सेक आ गतम् ।
मध्वः सुतस्य स दिवि प्रियो नरा पातं गौराविवेरिणे ॥ १ ॥
पिबतं घर्मं मधुमन्तमश्विना बर्हिः सीदतं नरा ।
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ नि षातं वेदसा वयः ॥ २ ॥
आ वां विश्वाभिरूतिभिः प्रियमेधा अहूषत ।
ता वर्तिर्यातमुप वृक्तबर्हिषो जुष्टं यज्ञं दिविष्टिषु ॥ ३ ॥
पिबतं सोमं मधुमन्तमश्विना बर्हिः सीदतं सुमत् ।
ता वावृधाना उप सुष्टुतिं दिवो गन्तं गौराविवेरिणम् ॥ ४ ॥
आ नूनं यातमश्विनाश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः ।
दस्रा हिरण्यवर्तनी शुभस्पती पातं सोममृतावृधा ॥ ५ ॥
वयं हि वां हवामहे विपन्यवो विप्रासो वाजसातये ।
ता वल्गू दस्रा पुरुदंससा धियाश्विना श्रुष्ट्या गतम् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ बृहती; २, ४ पङ्क्तिः; ५ निचृद्बृहती; ६ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५ मध्यमः; २, ४, ६ पञ्चमः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ १ ॥
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्त्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे ॥ २ ॥
न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीळवः ।
यद्दित्ससि स्तुवते मावते वसु नकिष्टदा मिनाति ते ॥ ३ ॥
योद्धासि क्रत्वा शवसोत दंसना विश्वा जाताभि मज्मना ।
आ त्वायमर्क ऊतये ववर्तति यं गोतमा अजीजनन् ॥ ४ ॥
प्र हि रिरिक्ष ओजसा दिवो अन्तेभ्यस्परि ।
न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवमनु स्वधां ववक्षिथ ॥ ५ ॥
नकिः परिष्टिर्मघवन्मघस्य ते यद्दाशुषे दशस्यसि ।
अस्माकं बोध्युचथस्य चोदिता मंहिष्ठो वाजसातये ॥ ६ ॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ७ बृहती; २ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३ निचृद्बृहती; ४ विराट्पङ्क्तिः; ५ विराडनुष्टुप्; ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ७ मध्यमः; २, ४ पञ्चमः; ५, ६ गान्धारः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम् ।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि ॥ १ ॥
अपाधमदभिशस्तीरशस्तिहाथेन्द्रो द्युम्न्याभवत् ।
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे बृहद्भानो मरुद्गण ॥ २ ॥
प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत ।
वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि प्र भर धृषता धृषन्मनः श्रवश्चित्ते असद् बृहत्।
अर्षन्त्वापो जवसा वि मातरो हनो वृत्रं जया स्वः ॥ ४ ॥
यज्जायथा अपूर्व्य मघवन्वृत्रहत्याय ।
तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उत द्याम् ॥ ५ ॥
तत्ते यज्ञो अजायत तदर्क उत हस्कृतिः ।
तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम् ॥ ६ ॥
आमासु पक्वमैरय आ सूर्यं रोहयो दिवि ।
घर्मं न सामन्तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे बृहत् ॥ ७ ॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती; २, ४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३ विराड्बृहती; ५ पादनिचृद्बृहती; ६ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५ मध्यमः; २, ४, ६ गान्धारः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

आ नो विश्वासु हव्य इन्द्रः समत्सु भूषतु ।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः ॥ १ ॥
त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत्।
तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः ॥ २ ॥
ब्रह्मा त इन्द्र गिर्वणः क्रियन्ते अनतिद्भुता ।
इमा जुषस्व हर्यश्व योजनेन्द्र या ते अमन्महि ॥ ३ ॥
त्वं हि सत्यो मघवन्ननानतो वृत्रा भूरि न्यृञ्जसे ।
स त्वं शविष्ठ वज्रहस्त दाशुषेऽर्वाञ्चं रयिमा कृधि ॥ ४ ॥
त्वमिन्द्र यशा असृजीषी शवसस्पते ।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इदनुत्ता चर्षणीधृता ॥ ५ ॥
तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे ।
महीवः कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्नवन् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अपालात्रेयी ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः; २ पङ्क्तिः; ३ निचृदनुष्टुप्; ४ अनुष्टुप्; ५, ६ विराडनुष्टुप्; ७ पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-७ गान्धारः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

कन्या३ वारवायती सोममपि स्रुताविदत् ।
अस्तं भरन्त्यब्रवीदिन्द्राय सुनवै त्वा शक्राय सुनवै त्वा ॥ १ ॥
असौ य एषि वीरको गृहंगृहं विचाकशत् ।
इमं जम्भसुतं पिब धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम् ॥ २ ॥
आ चन त्वा चिकित्सामोऽधि चन त्वा नेमसि ।
शनैरिव शनकैरिवेन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥
कुविच्छकत्कुवित्करत्कुविन्नो वस्यसस्करत् ।
कुवित्पतिद्विषो यतीरिन्द्रेण संगमामहै ॥ ४ ॥
इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र वि रोहय ।
शिरस्ततस्योर्वरामादिदं म उपोदरे ॥ ५ ॥
असौ च या न उर्वरादिमां तन्वं मम ।
अथो ततस्य यच्छिरः सर्वा ता रोमशा कृधि ॥ ६ ॥
खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो ।
अपालामिन्द्र त्रिष्पूत्व्यकृणोः सूर्यत्वचम् ॥ ७ ॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २, ४, ८-१२, २२, २५-२७, ३० निचृद्गायत्री; ३, ७, ३१, ३३ पादनिचृद्गायत्री; ५ आर्चीस्वराड्गायत्री; ६, १३-१५, २८ विराड्गायत्री; १६-२१, २३, २४, २९, ३२ गायत्री ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-३३ षड्जः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत ।
विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरूहूतं पुरुष्टुतं गाथान्यं१ सनश्रुतम्। इन्द्र इति ब्रवीतन ॥ २ ॥
इन्द्र इन्नो महानां दाता वाजानां नृतुः। महाँ अभिज्ञ्वा यमत् ॥ ३ ॥
अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः। इन्दोरिन्द्रो यवाशिरः ॥ ४ ॥
तम्वभि प्रार्चतेन्द्रं सोमस्य पीतये। तदिद्धर्यस्य वर्धनम् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

अस्य पीत्वा मदानां देवो देवस्यौजसा। विश्वाभि भुवना भुवत् ॥ ६ ॥
त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये ॥ ७ ॥
युध्मं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम्। नरमवार्यक्रतुम् ॥ ८ ॥
शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वाँ ऋचीषम। अवा नः पार्ये धने ॥ ९ ॥
अतश्चिदिन्द्र ण उपा याहि शतवाजया। इषा सहस्रवाजया ॥ १० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

अयाम धीवतो धियोऽर्वद्भिः शक्र गोदरे। जयेम पृत्सु वज्रिवः ॥ ११ ॥
वयमु त्वा शतक्रतो गावो न यवसेष्वा। उक्थेषु रणयामसि ॥ १२ ॥
विश्वा हि मर्त्यत्वनानुकामा शतक्रतो। अगन्म वज्रिन्नाशसः ॥ १३ ॥
त्वे सु पुत्र शवसोऽवृत्रन्कामकातयः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ १४ ॥
स नो वृषन्त्सनिष्ठया सं घोरया द्रवित्न्वा। धियाविड्ढि पुरन्ध्या ॥ १५ ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः। तेन नूनं मदे मदेः ॥ १६ ॥
यस्ते चित्रश्रवस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः। य ओजोदातमो मदः ॥ १७ ॥
विद्मा हि यस्ते अद्रिवस्त्वादत्तः सत्य सोमपाः। विश्वासु दस्म कृष्टिषु ॥ १८ ॥
इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः ॥ १९ ॥
यस्मिन्विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः। इन्द्रं सुते हवामहे ॥ २० ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥ २१ ॥
आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ २२ ॥
विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षं सोमस्य जागृवे। य इन्द्र जठरेषु ते ॥ २३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्। अरं धामभ्य इन्दवः ॥ २४ ॥
अरमश्वाय गायति श्रुतकक्षो अरं गवे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ २५ ॥
अरं हि ष्मा सुतेषु णः सोमेष्विन्द्र भूषसि। अरं ते शक्र दावने ॥ २६ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

पराकात्त्वाच्चिदद्रिवस्त्वां नक्षन्त नो गिरः। अरं गमाम ते वयम् ॥ २७ ॥
एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः ॥ २८ ॥
एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः। अधा चिदिन्द्र मे सचा ॥ २९ ॥
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते। मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥ ३० ॥
मा न इन्द्राभ्याꣳ दिशः सूरो अक्तुष्वा यमन्। त्वा युजा वनेम तत् ॥ ३१ ॥
त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः। त्वमस्माकं तव स्मसि ॥ ३२ ॥
त्वामिद्धि त्वायवोऽनुनोनुवतश्चरान्। सखाय इन्द्र कारवः ॥ ३३ ॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—१-३३ इन्द्रः; ३४ इन्द्र ऋभवश्च ॥ छन्दः—१, २४, ३३ विराड्गायत्री; २-४, १०, ११, १३, १५, १६, १८, २१, २३, २७-३१ निचृद्गायत्री; ५-९, १२, १४, १७, २०, २२, २५, २६, ३२, ३४ गायत्री; १९ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

उद्वेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य ॥ १ ॥
नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा। अहिं च वृत्रहावधीत् ॥ २ ॥
स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते ॥ ३ ॥
यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥ ४ ॥
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे। उतो तत्सत्यमित्तव ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। सर्वाꣳस्ताँ इन्द्र गच्छसि ॥ ६ ॥
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत् ॥ ७ ॥
इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदे हितः। द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः ॥ ८ ॥
गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः। ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि गृणान इन्द्र गिर्वणः। त्वं च मघवन्वशः॥ १०॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

यस्य ते नू चिदादिशं न मिनन्ति स्वराज्यम्। न देवो नाधिगुर्जनः॥ ११॥
अधा ते अप्रतिष्कुतं देवी शुष्मं सपर्यतः। उभे सुशिप्र रोदसी॥ १२॥
त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च। परुष्णीषु रुशत्पयः॥ १३॥
वि यदहेरधत्विषो विश्वे देवासो अक्रमुः। विदन्मृगस्य ताँ अमः॥ १४॥
आदु मे निवरो भुवद् वृत्रहादिष्ट पौंस्यम्। अजातशत्रुरस्तृतः॥ १५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम्। आ शुषे राधसे महे॥ १६॥
अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत। यत्सोमेसोम आभुवः॥ १७॥
बोधिन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः। शृणोतु शक्र आशिषम्॥ १८॥
कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आ भर॥ १९॥
कस्य वृषा सुते सचा नियुत्वान्वृषभो रणत्। वृत्रहा सोमपीतये॥ २०॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

अभी षु णस्त्वं रयिं मन्दसानः सहस्त्रिणम्। प्रयन्ता बोधि दाशुषे॥ २१॥
पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये। अपां जग्मिर्निचुम्पुणः॥ २२॥
इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधासो अध्वरे। अच्छावभृथमोजसा॥ २३॥
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या। वोळ्हामभि प्रयो हितम्॥ २४॥
तुभ्यं सोमाः सुता इमे स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो। स्तोतृभ्य इन्द्रमा वह॥ २५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

आ ते दक्षं वि रोचना दधद्रत्ना वि दाशुषे। स्तोतृभ्य इन्द्रमर्चत॥ २६॥
आ ते दधामीन्द्रियमुक्था विश्वा शतक्रतो। स्तोतृभ्य इन्द्र मृळय॥ २७॥
भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो। यदिन्द्र मृळयासि नः॥ २८॥
स नो विश्वान्या भर सुवितानि शतक्रतो। यदिन्द्र मृळयासि नः॥ २९॥
त्वामिद् वृत्रहन्तम सुतावन्तो हवामहे। यदिन्द्र मृळयासि नः॥ ३०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३१ ॥
द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३२ ॥
त्वं हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३३ ॥
इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम्। वाजी ददातु वाजिनम् ॥ ३४ ॥

दशमोऽनुवाकः [९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—बिन्दुः पूतदक्षो वा ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, २, ८ विराड्गायत्री; ३, ५, ७, ९ गायत्री; ४, ६, १०-१२ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम्। युक्ता वह्नी रथानाम् ॥ १ ॥
यस्या देवा उपस्थे व्रता विश्वे धारयन्ते। सूर्यामासा दृशे कम् ॥ २ ॥
तत्सु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः। मरुतः सोमपीतये ॥ ३ ॥
अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः। उत स्वराजो अश्विना ॥ ४ ॥
पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः। त्रिषधस्थस्य जावतः ॥ ५ ॥
उतो न्वस्य जोषमाँ इन्द्रः सुतस्य गोमतः। प्रातर्होतेव मत्सति ॥ ६ ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

कदत्विषन्त सूरयस्तिर आपइव स्रिधः। अर्षन्ति पूतदक्षसः ॥ ७ ॥
कद्वो अद्य महानां देवानामवो वृणे। त्मना च दस्मवर्चसाम् ॥ ८ ॥
आ ये विश्वा पार्थिवानि पप्रथन्रोचना दिवः। मरुतः सोमपीतये ॥ ९ ॥
त्यान्नु पूतदक्षसो दिवो वो मरुतो हुवे। अस्य सोमस्य पीतये ॥ १० ॥
त्यान्नु ये वि रोदसी तस्तभुर्मरुतो हुवे। अस्य सोमस्य पीतये ॥ ११ ॥
त्यं नु मारुतं गणं गिरिष्ठां वृषणं हुवे। अस्य सोमस्य पीतये ॥ १२ ॥

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—तिरश्चीः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-४, ६, ७ विराडनुष्टुप्; ५, ९ अनुष्टुप्; ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः ।
अभि त्वा समनूषतेन्द्र वत्सं न मातरः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः सुतास इन्द्र गिर्वणः।
पिबा त्वा१स्यान्धस इन्द्र विश्वासु ते हितम्॥ २॥
पिबा सोमं मदाय कमिन्द्र श्येनाभृतं सुतम्।
त्वं हि शश्वतीनां पती राजा विशामसि॥ ३॥
श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥ ४॥
इन्द्र यस्ते नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत्।
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम्॥ ५॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ।
पुरूण्यस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे ॥ ६॥
एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना ।
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान्ममत्तु ॥ ७॥
इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः।
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्यः॥ ८॥
इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे।
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषाससि॥ ९॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—तिरश्चीर्द्युतानो वा मरुतः॥ देवता—१-१४[३], १६-२१ इन्द्रः; १४[४] मरुतः; १५ इन्द्राबृहस्पती॥ छन्दः—१, २, ५, १३, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६, ७, १०, ११, १६ विराट्त्रिष्टुप्; ४, १७ पङ्क्तिः; ८, ९, १२ त्रिष्टुप्; १५, १८, १९ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २० निचृत्पङ्क्तिः; २१ विराट्पङ्क्तिः॥
स्वरः—१-३, ५-१६, १८, १९ धैवतः; ४, १७, २०, २१ पञ्चमः॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

अस्मा उषास आतिरन्त यामन्निन्द्राय नक्तमूर्म्यीः सुवाचः।
अस्मा आपो मातरः सप्त तस्थुर्नृभ्यस्तराय सिन्धवः सुपाराः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिविद्धा विथुरेणा चिदस्त्रा त्रिः सप्त सानु संहिता गिरीणाम्।
न तद्देवो न मर्त्यस्तुतुर्याद्यानि प्रवृद्धो वृषभश्चकार ॥ २ ॥
इन्द्रस्य वज्र आयसो निमिश्ल इन्द्रस्य बाह्वोर्भूयिष्ठमोजः ।
शीर्षन्निन्द्रस्य क्रतवो निरेक आसन्नेषन्त श्रुत्या उपाके ॥ ३ ॥
मन्ये त्वा यज्ञियं यज्ञियानां मन्ये त्वा च्यवनमच्युतानाम्।
मन्ये त्वा सत्वनामिन्द्र केतुं मन्ये त्वा वृषभं चर्षणीनाम्॥ ४ ॥
आ यद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र धत्से मदच्युतमहये हन्तवा उ ।
प्र पर्वता अनवन्त प्र गावः प्र ब्रह्माणो अभिनक्षन्त इन्द्रम्॥ ५ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

तमु ष्टवाम य इमा जजान विश्वा जातान्यवराण्यस्मात् ।
इन्द्रेण मित्रं दिधिषेम गीर्भिरुपो नमोभिर्वृषभं विशेम ॥ ६ ॥
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि॥ ७ ॥
त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो वावृधाना उस्राइव राशयो यज्ञियासः।
उप त्वेमः कृधि नो भागधेयं शुष्मं त एना हविषा विधेम॥ ८ ॥
तिग्ममायुधं मरुतामनीकं कस्त इन्द्र प्रति वज्रं दधर्ष।
अनायुधासो असुरा अदेवाश्चक्रेण ताँ अप वप ऋजीषिन्॥ ९ ॥
मह उग्राय तवसे सुवृक्तिं प्रेरय शिवतमाय पश्वः ।
गिर्वाहसे गिर इन्द्राय पूर्वीर्धेहि तन्वे कुविदङ्ग वेदत् ॥ १० ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

उक्थवाहसे विभ्वे मनीषां द्रुणा न पारमीरया नदीनाम्।
नि स्पृश धिया तन्वि श्रुतस्य जुष्टतरस्य कुविदङ्ग वेदत्॥ ११ ॥
तद्विविद्धि यत्त इन्द्रो जुजोषत्स्तुहि सुष्टुतिं नमसा विवास।
उप भूष जरितर्मा रुवण्यः श्रावया वाचं कुविदङ्ग वेदत्॥ १२ ॥
अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदियानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः।
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नेहितीर्नृमणा अधत्त ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तमुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः ।
नभो न कृष्णमवतस्थिवांसमिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ ॥ १४ ॥
अधा द्रप्सो अंशुमत्या उपस्थेऽधारयत्तन्वं तित्विषाणः ।
विशो अदेवीरभ्याचरन्तीर्बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे ॥ १५ ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र ।
गूळ्हे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ॥ १६ ॥
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन्धृषितो जघन्थ ।
त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रैस्त्वं गा इन्द्र शच्येदविन्दः ॥ १७ ॥
त्वं ह त्यद् वृषभ चर्षणीनां घनो वृत्राणां तविषो बभूथ ।
त्वं सिन्धूँरसृजस्तस्तभानान्त्वमपो अजयो दासपत्नीः ॥ १८ ॥
स सुक्रतू रणिता यः सुतेष्वनुत्तमन्युर्यो अहेव रेवान् ।
य एक इन्नर्यपांसि कर्ता स वृत्रहा प्रतीदन्यमाहुः ॥ १९ ॥
स वृत्रहेन्द्रश्चर्षणीधृत्तं सुष्टुत्या हव्यं हुवेम ।
स प्राविता मघवा नोऽधिवक्ता स वाजस्य श्रवस्यस्य दाता ॥ २० ॥
स वृत्रहेन्द्र ऋभुक्षाः सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव ।
कृण्वन्नपांसि नर्या पुरूणि सोमो न पीतो हव्यः सखिभ्यः ॥ २१ ॥

[९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—रेभः काश्यपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ११ विराड्बृहती; २, ६, ९, १२ निचृद्बृहती; ३ भुरिगनुष्टुप्; ४, ५, ८ बृहती; ७ अनुष्टुप्; १० भुरिग्जगती; १३ अतिजगती; १४ विराट्-त्रिष्टुप्; १५ ककुम्मतीजगती ॥ स्वरः—१, २, ४-६, ८, ९, ११, १२ मध्यमः; ३, ७ गान्धारः; १०, १३, १५ निषादः; १४ धैवतः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ २६ ॥

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः ।
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥ १ ॥
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं गां भागमव्ययम् ।
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन्तं धेहि मा पणौ ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य इन्द्र सस्त्यव्रतोऽनुष्वापमदेवयुः ।
स्वैः ष एवैर्मुमुरत्पोष्यं रयिं सनुतर्धेहि तं ततः ॥ ३ ॥
यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति ॥ ४ ॥
यद्वासि रोचने दिवः समुद्रस्याधि विष्टपि ।
यत्पार्थिवे सदने वृत्रहन्तम यदन्तरिक्ष आ गहि ॥ ५ ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

स नः सोमेषु सोमपाः सुतेषु शवसस्पते ।
मादयस्व राधसा सूनृतावतेन्द्र राय परीणसा ॥ ६ ॥
मा नं इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्यः ।
त्वं नं ऊती त्वमिन्न आप्यं मा नं इन्द्र परा वृणक् ॥ ७ ॥
अस्मे इन्द्र सचा सुते नि षदा पीतये मधु ।
कृधी जरित्रे मघवन्नवो महदस्मे इन्द्र सचा सुते ॥ ८ ॥
न त्वा देवास आशत न मर्त्यासो अद्रिवः ।
विश्वा जातानि शवसाभिभूरसि न त्वा देवास आशत ॥ ९ ॥
विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।
क्रत्वा वरिष्ठं वर आमुरिमुतोग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम् ॥ १० ॥

अथाष्टत्रिंशो वर्गः ॥ ३८ ॥

समी रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये ।
स्वर्पतिं यदीं वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥ ११ ॥
नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरा ।
सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः ॥ १२ ॥
तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं शवांसि ।
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद्राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री ॥ १३ ॥
त्वं पुरं इन्द्र चिकिदेना व्योजसा शविष्ठ शक्र नाशयध्यै ।
त्वद्विश्वानि भुवनानि वज्रिन्द्यावा रेजेते पृथिवी च भीषा ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन्मे ऋतमिन्द्र शूर चित्र पात्वपो न वज्रिन्दुरितातिं पर्षि भूरिं ।
कदा न इन्द्र राय आ दशस्येर्विश्वप्न्यस्य स्पृहयाय्यस्य राजन् ॥ १५ ॥

इति षष्ठाष्टके षष्ठोऽध्यायः ॥

अथ षष्ठाष्टके सप्तमोऽध्यायः

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ उष्णिक्; २, ६ ककुम्मतीउष्णिक्; ३, ७, ८, १०-१२ विराडुष्णिक्; ४ पादनिचृदुष्णिक्; ९ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

इन्द्रायु साम गायत विप्राय बृहते बृहत् । धर्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ १ ॥
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः । विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि ॥ २ ॥
विभ्राजञ्ज्योतिषा स्व१रगच्छो रोचनं दिवः ।
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥ ३ ॥
एन्द्र नो गधि प्रियः सत्राजिदगोह्यः । गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः ॥ ४ ॥
अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी ।
इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥ ५ ॥
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र दर्ता पुरामसि । हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः ॥ ६ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा कामान्महः ससृज्महे । उदेव यन्त उदभिः ॥ ७ ॥
वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि । वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे ॥ ८ ॥
युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे । इन्द्रवाहा वचोयुजा ॥ ९ ॥
त्वं न इन्द्रा भरँ ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे । आ वीरं पृतनाषहम् ॥ १० ॥
त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधा ते सुम्नमीमहे ॥ ११ ॥
त्वां शुष्मिन्पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे शतक्रतो । स नो रास्व सुवीर्यम् ॥ १२ ॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराड्बृहती; २ बृहती; ३, ७ निचृद्बृहती; ४, ६, ८ पङ्क्तिः; ५ पादनिचृद्बृहती ॥ स्वरः—१-३, ५, ७ गान्धारः; ४, ६, ८ पञ्चमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन्वज्रिन्भूर्णयः ।
स इन्द्र स्तोमवाहसामिह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥ १ ॥
मत्स्वा सुशिप्र हरिवस्तदीमहे त्वे आ भूषन्ति वेधसः ।
तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्या सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ २ ॥
श्रायन्तइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम ॥ ३ ॥
अनर्शरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।
सो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन् ॥ ४ ॥
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ ५ ॥
अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥ ६ ॥
इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।
आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्तं तुग्र्यावृधम् ॥ ७ ॥
इष्कर्तारमनिष्कृतं सहस्कृतं शतमूतिं शतक्रतुम् ।
समानमिन्द्रमवसे हवामहे वसवानं वसूजुवम् ॥ ८ ॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३, ६-१२ नेमो भार्गवः; ४, ५ इन्द्रः ॥ देवता—१-९, १२ इन्द्रः; १०, ११ वाक् ॥ छन्दः—१, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५, १२ त्रिष्टुप्; ६ निचृज्जगती; ७, ८ अनुष्टुप्; ९ निचृदनुष्टुप्; १० विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५, १०-१२ धैवतः; ६ निषादः; ७-९ गान्धारः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

अयं त एमि तन्वा पुरस्ताद्विश्वे देवा अभि मा यन्ति पश्चात् ।
यदा मह्यं दीधरो भागमिन्द्रादिन्मया कृणवो वीर्याणि ॥ १ ॥
दधामि ते मधुनो भक्षमग्रे हितस्ते भागः सुतो अस्तु सोमः ।
असश्च त्वं दक्षिणतः सखा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति।
नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभि ष्टवाम॥ ३॥
अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना।
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्यादर्दिरो भुवना दर्दरीमि॥ ४॥
आ यन्मा वेना अरुहन्नृतस्यँ एकमासीनं हर्यतस्य पृष्ठे।
मनश्चिन्मे हृद आ प्रत्यवोचदचिक्रदद्भिश्शुमन्तः सखायः॥ ५॥
विश्वेत्ता ते सवनेषु प्रवाच्या या चकर्थ मघवन्निन्द्र सुन्वते।
पारावतं यत्पुरुसंभृतं वस्वपावृणोः शरभाय ऋषिबन्धवे॥ ६॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

प्र नूनं धावता पृथङ् नेह यो वो अवावरीत्।
नि षीं वृत्रस्य मर्मणि वज्रमिन्द्रो अपीपतत्॥ ७॥
मनोजवा अयमान आयसीमतरत्पुरम्।
दिवं सुपर्णो गत्वाय सोमं वज्रिण आभरत्॥ ८॥
समुद्रे अन्तः शयत उद्ना वज्रो अभीवृतः।
भरन्त्यस्मै संयतः पुरःप्रस्रवणा बलिम्॥ ९॥
यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा।
चतस्र ऊर्जं दुदुहे पयांसि क्व स्विदस्याः परमं जगाम॥ १०॥
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु॥ ११॥
सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व द्यौर्देहि लोकं वज्राय विष्कभे।
हनाव वृत्रं रिणचाव सिन्धूनिन्द्रस्य यन्तु प्रसवे विसृष्टाः॥ १२॥

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जमदग्निर्भार्गवः॥ देवता—१-५[१] मित्रावरुणौ; ५[४], ६ आदित्याः; ७, ८ अश्विनौ; ९, १० वायुः; ११, १२ सूर्यः; १३ उषाः सूर्यप्रभा वा; १४ पवमानः; १५, १६ गौः॥ छन्दः—१ निचृद्बृहती; २, ४, ८ पङ्क्तिः; ३ गायत्री; ५ आर्चीस्वराड्बृहती; ६, ७, ९, ११ विराड्बृहती; १० स्वराड्बृहती; १२ भुरिग्बृहती; १३ आर्चीबृहती; १४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; १५ त्रिष्टुप्; १६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ५-७, ९-१३ मध्यमः; २, ४, ८ पञ्चमः; ३ षड्जः; १४-१६ धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

ऋधगित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये ।
यो नूनं मित्रावरुणावभिष्टय आचक्रे हव्यदातये ॥ १ ॥
वषिष्ठक्षत्रा उरुचक्षसा नरा राजाना दीर्घश्रुत्तमा ।
ता बाहुता न दंसना रथर्यतः साकं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ २ ॥
प्र यो वां मित्रावरुणाजिरो दूतो अद्रवत् । अयःशीर्षा मदेरघुः ॥ ३ ॥
न यः संपृच्छे न पुनर्हवीतवे न संवादाय रमते ।
तस्मान्नो अद्य समृतेरुरुष्यतं बाहुभ्यां न उरुष्यतम् ॥ ४ ॥
प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो ।
वरूथ्यं१ वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

ते हिन्विरे अरुणं जेन्यं वस्वेकं पुत्रं तिसॄणाम् ।
ते धामान्यमृता मर्त्यानामदब्धा अभि चक्षते ॥ ६ ॥
आ मे वचांस्युद्यता द्युमत्तमानि कर्त्वा ।
उभा यातं नासत्या सजोषसा प्रति हव्यानि वीतये ॥ ७ ॥
रातिं यद्वामरक्षसं हवामहे युवाभ्यां वाजिनीवसू ।
प्राचीं होत्रां प्रतिरन्ताविंतं नरा गृणाना जमदग्निना ॥ ८ ॥
आ नो यज्ञं दिविस्पृशं वायो याहि सुमन्मभिः ।
अन्तः पवित्र उपरि श्रीणानो३ऽयं शुक्रो अयामि ते ॥ ९ ॥
वेत्यध्वर्युः पथिभी रजिष्ठैः प्रति हव्यानि वीतये ।
अधा नियुत्व उभयस्य नः पिब शुचिं सोमं गवाशिरम् ॥ १० ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

बण्महाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि ।
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ असि ॥ ११ ॥
बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि ।
महा देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥ १२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इयं या नीच्यर्किणी रूपा रोहिण्या कृता ।
चित्रेव प्रत्यदर्श्यायत्यन्तर्दशसु बाहुषु ॥ १३ ॥
प्रजा ह तिस्रो अत्यायमीयुर्न्या अर्कमभितो विविश्रे ।
बृहद्ध तस्थौ भुवनेष्वन्तः पवमानो हरित आ विवेश ॥ १४ ॥
माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट ॥ १५ ॥
वचोविदं वाचमुदीरयन्तीं विश्वाभिर्धीभिरुपतिष्ठमानाम् ।
देवीं देवेभ्यः पर्येयुषीं गामा मावृक्त मर्त्यो दभ्रचेताः ॥ १६ ॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रयोगो भार्गव अग्निर्वा पावको बार्हस्पत्यः; अथवाग्नी गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३-५, ८, ९, १४, १५, २०-२२ निचृद् गायत्री; २, ६, १२, १३, १६ गायत्री; ७, ११, १७, १९ विराड्गायत्री; १०, १८ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

त्वमग्ने बृहद्वयो दधासि देव दाशुषे । कविर्गृहपतिर्युवा ॥ १ ॥
स न ईळानया सह देवाँ अग्ने दुवस्युवा । चिकिद्विभानवा वह ॥ २ ॥
त्वया ह स्विद्युजा वयं चोदिष्ठेन यविष्ठ्य । अभि ष्मो वाजसातये ॥ ३ ॥
और्वभृगुवच्छुचिमप्नवानवदा हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ४ ॥
हुवे वातस्वनं कविं पर्जन्यक्रन्द्यं सहः । अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

आ सवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजिं हुवे । अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ६ ॥
अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम् । अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ ७ ॥
अयं यथा न आभुवत्त्वष्टा रूपेव तक्ष्या । अस्य क्रत्वा यशस्वतः ॥ ८ ॥
अयं विश्वा अभि श्रियोऽग्निर्देवेषु पत्यते । आ वाजैरुप नो गमत् ॥ ९ ॥
विश्वेषामिह स्तुहि होतॄणां यशस्तमम् । अग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥ १० ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

शीरं पावकशोचिषं ज्येष्ठो यो दमेष्वा । दीदाय दीर्घश्रुत्तमः ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमर्वन्तं न सानसिं गृणीहि विप्र शुष्मिणम्। मित्रं न यातयज्जनम्॥ १२॥
उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन्॥ १३॥
यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसंदिनम्। आपश्चिन्नि दधा पदम्॥ १४॥
पदं देवस्य मीळ्हुषोऽनाधृष्टाभिरूतिभिः। भद्रा सूर्यइवोपदृक्॥ १५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

अग्ने घृतस्य धीतिभिस्तेपानो देव शोचिषा। आ देवान्वक्षि यक्षि च॥ १६॥
तं त्वाजनन्त मातरः कविं देवासो अङ्गिरः। हव्यवाहममर्त्यम्॥ १७॥
प्रचेतसं त्वा कवेऽग्ने दूतं वरेण्यम्। हव्यवाहं नि षेदिरे॥ १८॥
नहि मे अस्त्यघ्न्या न स्वधितिर्वनन्वति। अथैतादृग्भरामि ते॥ १९॥
यदग्ने कानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि। ता जुषस्व यविष्ठ्य॥ २०॥
यदत्त्युपजिह्विका यद्बभ्रो अतिसर्पति। सर्वं तदस्तु ते घृतम्॥ २१॥
अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमीधे विवस्वभिः॥ २२॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सोभरिः काण्वः॥ देवता—१-१३ अग्निः; १४ अग्निर्मरुतश्च॥ छन्दः—१, ३, १३ विराड्बृहती; २ निचृद्बृहती; ४ बृहती; ५ पङ्क्तिः; ६ आर्चीस्वराड्बृहती; ७, ९ स्वराड्बृहती; ८ निचृदुष्णिक्; १० आर्चीभुरिग्गायत्री; ११ निचृत्पङ्क्तिः; १२ विराडुष्णिक्; १४ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-४, ६, ७, ९, १३ मध्यमः; ५, ११ पञ्चमः; ८, १२ ऋषभः; १० षड्जः; १४ गान्धारः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन्व्रतान्यादधुः।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्त नो गिरः॥ १॥
प्र दैवोदासो अग्निर्देवाँ अच्छा न मज्मना।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य सानवि॥ २॥
यस्माद्रेजन्त कृष्टयश्चर्कृत्यानि कृण्वतः।
सहस्रसां मेधसाताविव त्मनाग्निं धीभिः सपर्यत॥ ३॥
प्र यं राये निनीषसि मर्तो यस्ते वसो दाशत्।
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम्॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स दूळ्हे चिद्दभि तृणत्ति वाजमर्वंता स धत्ते अक्षिति श्रवः ।
त्वे देवत्रा सदा पुरूवसो विश्वा वामानि धीमहि ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्यग्नये ॥ ६ ॥
अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः ।
उभे तोके तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो मघोनाम् ॥ ७ ॥
प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे ।
उपस्तुतासो अग्नये ॥ ८ ॥
आ वंसते मघवा वीरवद्यशः समिद्धो द्युम्न्याहुतः ।
कुविन्नो अस्य सुमतिर्नवीयस्यच्छा वाजेभिरागमत् ॥ ९ ॥
प्रेष्ठमु प्रियाणां स्तुह्यासावातिथिम् । अग्निं रथानां यमम् ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

उदिता यो निदिता वेदिता वस्वा यज्ञियो ववर्तति ।
दुष्टरा यस्य प्रवणे नोर्मयो धिया वाजं सिषासतः ॥ ११ ॥
मा नो हृणीतामतिथिर्वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः ।
यः सुहोता स्वध्वरः ॥ १२ ॥
मो ते रिषन्ये अच्छोक्तिभिर्वसो ऽग्ने केभिश्चिदेवैः ।
कीरिश्चिद्धि त्वामीट्टे दूत्याय रातहव्यः स्वध्वरः ॥ १३ ॥
आग्ने याहि मरुत्सखा रुद्रेभिः सोमपीतये ।
सोभर्या उप सुष्टुतिं मादयस्व स्वर्णरे ॥ १४ ॥

इत्यष्टमं मण्डलम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः

[१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ६ गायत्री; ३, ७-१० निचृद्गायत्री; ४, ५ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः ॥ १ ॥
रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहतम्। द्रुणा सधस्थमासदत् ॥ २ ॥
वरिवोधातमो भव मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः। पर्षि राधो मघोनाम् ॥ ३ ॥
अभ्यर्ष महानां देवानां वीतमन्धसा। अभि वाजमुत श्रवः ॥ ४ ॥
त्वामच्छा चरामसि तदिदर्थं दिवेदिवे। इन्दो त्वे न आशसः ॥ ५ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

पुनाति ते परिस्रुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता। वारेण शश्वता तना ॥ ६ ॥
तमीमण्वीः समर्य आ गृभ्णन्ति योषणो दश। स्वसारः पार्ये दिवि ॥ ७ ॥
तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो धमन्ति बाकुरं दृतिम्। त्रिधातु वारणं मधु ॥ ८ ॥
अभीमममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे ॥ ९ ॥
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा विश्वा वृत्राणि जिघ्नते। शूरो मघा च मंहते ॥ १० ॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ४, ६ निचृद्गायत्री; २, ३, ५, ७-९ गायत्री; १० विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या। इन्द्रमिन्दो वृषा विश ॥ १ ॥
आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः। आ योनिं धर्णसिः सदः ॥ २ ॥
अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः। अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥ ३ ॥
महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः। यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥ ४ ॥
समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः। सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः। सं सूर्येण रोचते ॥ ६ ॥
गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भसे ॥ ७ ॥
तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे। तव प्रशस्तयो महीः ॥ ८ ॥
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः पवस्व धारया। पर्जन्यो वृष्टिमाँइव ॥ ९ ॥
गोषा इन्दो नृषा असि अश्वसा वाजसा उत। आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥ १० ॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—शुनः शेपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ विराड्गायत्री; ३, ५, ७, १० गायत्री; ४, ६, ८, ९ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति। अभि द्रोणान्यासदम् ॥ १ ॥
एष देवो विपा कृतोऽति ह्वरांसि धावति। पवमानो अदाभ्यः ॥ २ ॥
एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः। हरिर्वाजाय मृज्यते ॥ ३ ॥
एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः। पवमानः सिषासति ॥ ४ ॥
एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति। आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥ ५ ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते। दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ ६ ॥
एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया। पवमानः कनिक्रदत् ॥ ७ ॥
एष दिवं व्यासरत्तिरो रजांस्यस्पृतः। पवमानः स्वध्वरः ॥ ८ ॥
एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः। हरिः पवित्रे अर्षति ॥ ९ ॥
एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः। धारया पवते सुतः ॥ १० ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ४, १० गायत्री; २, ५, ८, ९ निचृद्गायत्री; ६, ७ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ १ ॥
सना ज्योतिः सना स्वर्विश्वा च सोम सौभगा। अथा नो वस्यसस्कृधि ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सना दक्षमुत क्रतुमपं सोम मृधो जहि। अ । नो वस्यसस्कृधि॥ ३॥
पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ४॥
त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक्पश्येम सूर्यम्। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ६॥
अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम्। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ७॥
अभ्यर्षानपच्युतो रयिं समत्सु सासहिः। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ८॥
त्वां यज्ञैरवीवृधन्पवमान विधर्मणि। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ ९॥
रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर। अथा नो वस्यसस्कृधि॥ १०॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—आप्रियः॥ छन्दः—१, २, ४-६ गायत्री; ३, ७ निचृद्गायत्री; ८ निचृदनुष्टुप्; ९, १० अनुष्टुप्; ११ विराडनुष्टुप्॥
स्वरः—१-७ षड्जः; ८-११ गान्धारः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

समिद्धो विश्वतस्पतिः पवमानो वि राजति। प्रीणन्वृषा कनिक्रदत्॥ १॥
तनूनपात्पवमानः शृङ्गे शिशानो अर्षति। अन्तरिक्षेण रारजत्॥ २॥
ईळेन्यः पवमानो रयिर्वि राजति द्युमान्। मधोर्धारा अभिरोजसा॥ ३॥
बर्हिः प्राचीनमोजसा पवमानः स्तृणन्हरिः देवेषु देव ईयते॥ ४॥
उदातैर्जिहते बृहद् द्वारो देवीर्हिरण्ययीः। पवमानेन सुष्टुताः॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

सुशिल्पे बृहती मही पवमानो वृषण्यति ।
नक्तोषासा न दर्शते ॥ ६॥
उभा देवा नृचक्षसा होतारा दैव्या हुवे ।
पवमान इन्द्रो वृषा ॥ ७॥
भारती पवमानस्य सरस्वतीळा मही ।
इमं नो यज्ञमा गमन्तिस्रो देवीः सुपेशसः ॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वष्टारमग्रजां गोपां पुरोयावानमा हुवे ।
इन्दुरिन्द्रो वृषा हरिः पवमानः प्रजापतिः ॥ ९ ॥
वनस्पतिं पवमान मध्वा समङ्ग्धि धारया ।
सहस्रवल्शं हरितं भ्राजमानं हिरण्ययम् ॥ १० ॥
विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं पवमानस्या गत ।
वायुर्बृहस्पतिः सूर्योऽग्निरिन्द्रः सजोषसः ॥ ११ ॥

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ७ निचृद्गायत्री; ३-६, ९ गायत्री; ८ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः । अव्यो वारेष्वस्मयुः ॥ १ ॥
अभि त्यं मद्यं मदमिन्दविन्द्र इति क्षर । अभि वाजिनो अर्वतः ॥ २ ॥
अभि त्यं पूर्व्यं मदं सुवानो अर्ष पवित्र आ । अभि वाजमुत श्रवः ॥ ३ ॥
अनु द्रप्सास इन्दव आपो न प्रवतासरन् । पुनाना इन्द्रमाशत ॥ ४ ॥
यमत्यमिव वाजिनं मृजन्ति योषणो दश । वने क्रीळन्तमत्यविम् ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

तं गोभिर्वृषणं रसं मदाय देववीतये । सुतं भराय सं सृज ॥ ६ ॥
देवो देवाय धारयेन्द्राय पवते सुतः । पयो यदस्य पीपयत् ॥ ७ ॥
आत्मा यज्ञस्य रंह्या सुष्वाणः पवते सुतः । प्रत्नं नि पाति काव्यम् ॥ ८ ॥
एवा पुनान इन्द्रयुर्मदं मदिष्ठ वीतये । गुहा चिद्दधिषे गिरः ॥ ९ ॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ५-९ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ४ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः । विदाना अस्य योजनम् ॥ १ ॥
प्र धारा मध्वो अग्रियो महीरपो वि गाहते । हविर्हविष्षु वन्द्यः ॥ २ ॥
प्र युजो वाचो अग्रियो वृषावं चक्रदद्धनै । सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परि यत्काव्या कविर्नृम्णा वसानो अर्षति। स्वर्वाजी सिषासति॥ ४॥
पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति। यदीमृण्वन्ति वेधसः॥ ५॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

अव्यो वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति। रेभो वनुष्यते मती॥ ६॥
स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति। रणा यो अस्य धर्मभिः॥ ७॥
आ मित्रावरुणा भगं मध्वः पवन्त ऊर्मयः। विदाना अस्य शक्मभिः॥ ८॥
अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये। श्रवो वसूनि सं जितम्॥ ९॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ५, ८ निचृद्-गायत्री; ३, ४, ७ गायत्री; ६ पादनिचृद्गायत्री; ९ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य कामममक्षरन्। वर्धन्तो अस्य वीर्यम्॥ १॥
पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना। ते नो धान्तु सुवीर्यम्॥ २॥
इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय। ऋतस्य योनिमासदम्॥ ३॥
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः। अनु विप्रा अमादिषुः॥ ४॥
देवेभ्यस्त्वा मदाय कं सृजानमति मेष्यः। सं गोभिर्वासयामसि॥ ५॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः। परि गव्यान्यव्यत॥ ६॥
मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः। इन्दो सखायमा विश॥ ७॥
वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि। सहो नः सोम पृत्सु धाः॥ ८॥
नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतं स्वर्विदम्। भक्षीमहि प्रजामिषम्॥ ९॥

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३-५, ८ गायत्री; २, ६, ७, ९ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः। सुवानो याति कविक्रतुः॥ १॥
प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहे। वीत्यर्ष चनिष्ठया॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत्। महान्मही ऋतावृधा॥ ३॥
स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रुहः। या एकमक्षि वावृधुः॥ ४॥
ता अभि सन्तमस्तृतं महे युवानमा दधुः। इन्दुमिन्द्र तव व्रते॥ ५॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

अभि वह्निरमर्त्यः सप्त पश्यति वावहिः। क्रिविर्देवीरतर्पयत्॥ ६॥
अवा कल्पेषु नः पुमस्तमांसि सोम योध्या। तानि पुनान जङ्घनः॥ ७॥
नू नव्यसे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः। प्रत्नवद्रोचया रुचः॥ ८॥
पवमान महि श्रवो गामश्वं रासि वीरवत्। सना मेधां सना स्वः॥ ९॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ६, ८ निचृद्गायत्री; ३, ५, ७, ९ गायत्री; ४ भुरिग्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः॥ ३४॥

प्र स्वानासो रथाइवावन्तो न श्रवस्यवः। सोमासो राये अक्रमुः॥ १॥
हिन्वानासो रथाइव दधन्विरे गभस्त्योः। भरासः कारिणामिव॥ २॥
राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते। यज्ञो न सप्त धातृभिः॥ ३॥
परि सुवानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा। सुता अर्षन्ति धारया॥ ४॥
आपानासो विवस्वतो जनन्त उषसो भगम्। सूरा अण्वं वि तन्वते॥ ५॥

अथ पञ्चस्त्रिंशो वर्गः॥ ३५॥

अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः। वृष्णो हरस आयवः॥ ६॥
समीचीनास आसते होतारः सप्तजामयः। पदमेकस्य पिप्रतः॥ ७॥
नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुश्चित्सूर्ये सचा। कवेरपत्यमा दुहे॥ ८॥
अभि प्रिया दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम्। सूरः पश्यति चक्षसा॥ ९॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपः देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-४, ९ निचृद्गायत्री; ५-८ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः॥ ३६॥

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ इयक्षते॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु॥ २॥
स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः॥ ३॥
बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत॥ ४॥
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावा धावता मधु॥ ५॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः॥ ३७॥

नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन। इन्दुमिन्द्रे दधातन॥ ६॥
अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे। देवेभ्यो अनुकामकृत्॥ ७॥
इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे। मनश्चिन्मनसस्पतिः॥ ८॥
पवमान सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि नः। इन्दविन्द्रेण नो युजा॥ ९॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ६-८ गायत्री; ३-५ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथाष्टत्रिंशो वर्गः॥ ३८॥

सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य सादने। इन्द्राय मधुमत्तमाः॥ १॥
अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न मातरः। इन्द्रं सोमस्य पीतये॥ २॥
मदच्युत्क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित्। सोमो गौरी अधि श्रितः॥ ३॥
दिवो नाभा विचक्षणोऽव्यो वारे महीयते। सोमो यः सुक्रतुः कविः॥ ४॥
यः सोमः कलशेष्वाँ अन्तः पवित्र आहितः। तमिन्दुः परि षस्वजे॥ ५॥

अथैकोनचत्वारिंशो वर्गः॥ ३९॥

प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि। जिन्वन्कोशं मधुश्चुतम्॥ ६॥
नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धीनामनन्तः सबर्दुघः। हिन्वानो मानुषा युगा॥ ७॥
अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्षति। विप्रस्य धारया कविः॥ ८॥
आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम्। अस्मे इन्दो स्वाभुवम्॥ ९॥

इति षष्ठाष्टके सप्तमोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-३, ५, ८ गायत्री; ४ निचृद्गायत्री; ६ भुरिग्गायत्री; ७ पादनिचृद्गायत्री; ९ यवमध्यागायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः। वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम्॥ १॥
पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत। सुष्वाणं देववीतये॥ २॥
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः। गृणाना देववीतये॥ ३॥
उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः। द्युमदिन्दो सुवीर्यम्॥ ४॥
ते नः सहस्त्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम्। सुवाना देवास इन्दवः॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये। वि वारमव्यमाशवः॥ ६॥
वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न धेनवः। दधन्विरे गर्भस्त्योः॥ ७॥
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमान कनिक्रदत्। विश्वा अप द्विषो जहि॥ ८॥
अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः। योनावृतस्य सीदत॥ ९॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-३, ५, ७ गायत्री; ४, ८ निचृद्गायत्री; ६ ककुम्मतीगायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः। कारं बिभ्रत्पुरुस्पृहम्॥ १॥
गिरा यदी सबन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः। परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम्॥ २॥
आदस्य शुष्मिणो रसे विश्वे देवा अमत्सत। यदी गोभिर्वसायते॥ ३॥
निरिणानो वि धावति जहुच्छर्याणि तान्वा। अत्रा सं जिघ्रते युजा॥ ४॥
नप्तीभिर्यो विवस्वतः शुभ्रो न मामृजे युवा। गाः कृण्वानो न निर्णिजम्॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

अति श्रिती तिरश्चता गव्या जिगात्यण्व्या। वग्गुमियर्ति यं विदे॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि क्षिपः समग्मत मर्जयन्तीरिषस्पतिम्। पृष्ठा गृभ्णत वाजिनः ॥ ७ ॥
परि दिव्यानि मर्मृशद्विश्वानि सोम पार्थिवा। वसूनि याह्यस्मयुः ॥ ८ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३-५, ८ निचृद्गायत्री; २, ६ गायत्री; ७ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥
एष पुरू धियायते बृहते देवतातये। यत्रामृतास आसते ॥ २ ॥
एष हितो वि नीयतेऽन्तः शुभ्रावता पथा। यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ॥ ३ ॥
एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्यो३ वृषा। नृम्णा दधान ओजसा ॥ ४ ॥
एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः। पतिः सिन्धूनां भवन् ॥ ५ ॥
एष वसूनि पिब्दना परुषा ययिवाँ अति। अव शादेषु गच्छति ॥ ६ ॥
एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः। प्रचक्राणं महीरिषः ॥ ७ ॥
एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सप्त धीतयः। स्वायुधं मदिन्तमम् ॥ ८ ॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ८ निचृद्गायत्री; ३-७ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

प्र ते सोतार ओण्यो३ रसं मदाय घृष्वये। सर्गो न तक्त्येतशः ॥ १ ॥
क्रत्वा दक्षस्य रथ्यमपो वसानमन्धसा। गोषामण्वेषु सश्चिम ॥ २ ॥
अनप्सवमप्सु दुष्टरं सोमं पवित्र आ सृज। पुनीहीन्द्राय पातवे ॥ ३ ॥
प्र पुनानस्य चेतसा सोमः पवित्रे अर्षति। क्रत्वा सधस्थमासदत् ॥ ४ ॥
प्र त्वा नमोभिरिन्दव इन्द्र सोमा असृक्षत। महे भराय कारिणः ॥ ५ ॥
पुनानो रूपे अव्यये विश्वा अर्षन्नभि श्रियः। शूरो न गोषु तिष्ठति ॥ ६ ॥
दिवो न सानु पिप्युषी धारा सुतस्य वेधसः। वृथा पवित्रे अर्षति ॥ ७ ॥
त्वं सोम विपश्चितं तना पुनान आयुषु। अव्यो वारं वि धावसि ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३-८ गायत्री; २ भुरिग्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

प्र निम्नेनेव सिन्धवो घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः। सोमा असृग्रमाशवः॥ १॥
अभि सुवानास इन्दवो वृष्टयः पृथिवीमिव। इन्द्रं सोमासो अक्षरन्॥ २॥
अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः सोमः पवित्रे अर्षति। विघ्नन्रक्षांसि देवयुः॥ ३॥
आ कलशेषु धावति पवित्रे परि षिच्यते। उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते॥ ४॥
अति त्री सोम रोचना रोहन्न भ्राजसे दिवम्। इष्णन्त्सूर्यं न चोदयः॥ ५॥
अभि विप्रा अनूषत मूर्धन्यज्ञस्य कारवः। दधानाश्चक्षसि प्रियम्॥ ६॥
तमु त्वा वाजिनं नरो धीभिर्विप्रा अवस्यवः। मृजन्ति देवतातये॥ ७॥
मधोर्धारामनु क्षर तीव्रः सधस्थमासदः। चारुर्ऋताय पीतये॥ ८॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४ निचृद्गायत्री; २ ककुम्मतीगायत्री; ३, ५, ६ गायत्री; ७ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षाः। मदेषु सर्वधा असि॥ १॥
त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः। मदेषु सर्वधा असि॥ २॥
तव विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत। मदेषु सर्वधा असि॥ ३॥
आ यो विश्वानि वार्या वसूनि हस्तयोर्दधे। मदेषु सर्वधा असि॥ ४॥
य इमे रोदसी मही सं मातरेव दोहते। मदेषु सर्वधा असि॥ ५॥
परि यो रोदसी उभे सद्यो वाजेभिरर्षति। मदेषु सर्वधा असि॥ ६॥
स शुष्मी कलशेष्वा पुनानो अचिक्रदत्। मदेषु सर्वधा असि॥ ७॥

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमान सोमः॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २, ५, ७ निचृद्गायत्री; ३, ४ गायत्री; ६ भुरिग्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु। तन्नः पुनान आ भर॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवं हि स्थः स्वर्पती इन्द्रश्च सोम गोपती। ईशाना पिप्यतं धियः॥ २॥
वृषा पुनान आयुषु स्तनयन्नधि बर्हिषि। हरिः सन्योनिमासदत्॥ ३॥
अवावशन्त धीतयो वृषभस्याधि रेतसि। सूनोर्वत्सस्य मातरः॥ ४॥
कुविद् वृषण्यन्तीभ्यः पुनानो गर्भमादधत्। याः शुक्रं दुहते पयः॥ ५॥
उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रुषु। पवमान विदा रयिम्॥ ६॥
नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं नि शुष्मं नि वयस्तिर। दूरे वा सतो अन्ति वा॥ ७॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४-७ निचृद्गायत्री; २, ३ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

प्र कविर्देववीतयेऽव्यो वारेभिरर्षति। साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः॥ १॥
स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति। पवमानः सहस्रिणम्॥ २॥
परि विश्वानि चेतसा मृशसे पवसे मती। स नः सोम श्रवो विदः॥ ३॥
अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम्। इषं स्तोतृभ्य आ भर॥ ४॥
त्वं राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ। पुनानो वह्ने अद्भुत॥ ५॥
स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः। सोमश्चमूषु सीदति॥ ६॥
क्रीळुर्मखो न मंहयुः पवित्रं सोम गच्छसि। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम्॥ ७॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ विराड्गायत्री; २, ७ गायत्री; ४-६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

एते धावन्तीन्दवः सोमा इन्द्राय घृष्वयः। मत्सरासः स्वर्विदः॥ १॥
प्रवृण्वन्तो अभियुजः सुष्वये वरिवोविदः। स्वयं स्तोत्रे वयस्कृतः॥ २॥
बृथा क्रीळन्त इन्दवः सधस्थमभ्येकमित्। सिन्धोरूर्मा व्यक्षरन्॥ ३॥
एते विश्वानि वार्या पवमानास आशत। हिता न सप्तयो रथे॥ ४॥
आस्मिन्पिशङ्गमिन्दवो दधाता वेनमादिशे। यो अस्मभ्यमरावा॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋभुर्न रथ्यं नवं दधाता केतमादिशे। शुक्राः पवध्वमर्णसा ॥ ६ ॥
एत उ त्ये अवीवशन्काष्ठां वाजिनो अक्रत। सतः प्रासाविषुर्मतिम् ॥ ७ ॥

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ४, ५, ६, ७ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

एते सोमास आशवो रथाइव प्र वाजिनः। सर्गाः सृष्टा अहेषत ॥ १ ॥
एते वाताइवोरवः पर्जन्यस्येव वृष्टयः। अग्नेरिव भ्रमा वृथा ॥ २ ॥
एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः। विपा व्यानशुर्धियः ॥ ३ ॥
एते मृष्टा अमर्त्याः ससृवांसो न शश्रमुः। इयक्षन्तः पथो रजः ॥ ४ ॥
एते पृष्ठानि रोदसोर्विप्रयन्तो व्यानशुः। उतेदमुत्तमं रजः ॥ ५ ॥
तन्तुं तन्वानमुत्तममनु प्रवत आशत। उतेदमुत्तमाय्यम् ॥ ६ ॥
त्वं सोम पणिभ्य आ वसु गव्यानि धारयः। ततं तन्तुमचिक्रदः ॥ ७ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ४, ६ निचृद्गायत्री; ५ गायत्री; ७ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

सोमा असृग्रमाशवो मधोर्मदस्य धारया। अभि विश्वानि काव्या ॥ १ ॥
अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः। रुचे जनन्त सूर्यम् ॥ २ ॥
आ पवमान नो भरार्यो अदाशुषो गयम्। कृधि प्रजावतीरिषः ॥ ३ ॥
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम्। अभि कोशं मधुश्चुतम् ॥ ४ ॥
सोमो अर्षति धर्णसिर्दधान इन्द्रियं रसम्। सुवीरो अभिशस्तिपाः ॥ ५ ॥
इन्द्राय सोम पवसे देवेभ्यः सधमाद्यः। इन्दो वाजं सिषाससि ॥ ६ ॥
अस्य पीत्वा मदानामिन्द्रो वृत्राण्यप्रति। जघान जघनच्च नु ॥ ७ ॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३, ५, ७ निचृद्गायत्री; ४, ६ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः । श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥ १ ॥
अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः । पुनाना इन्द्रमाशत ॥ २ ॥
प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय पातवे । नृभिर्यतो वि नीयसे ॥ ३ ॥
त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीसहे । सस्निर्यो अनुमाद्यः ॥ ४ ॥
इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधावसि । अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ ५ ॥
पवस्व वृत्रहन्तमोक्थेभिरनुमाद्यः । शुचिः पावको अद्भुतः ॥ ६ ॥
शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतस्य मध्वः । देवावीरघशंसहा ॥ ७ ॥

द्वितीयोऽनुवाकः [२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—दूळहच्युत आगस्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ गायत्री; २, ४ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे । मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥ १ ॥
पवमान धिया हितो ३ऽ भि योनिं कनिक्रदत् । धर्मणा वायुमा विश ॥ २ ॥
सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः । वृत्रहा देववीतमः ॥ ३ ॥
विश्वा रूपाण्याविशन्पुनानो याति हर्यतः । यत्रामृतास आसते ॥ ४ ॥
अरुषो जनयन्गिरः सोमः पवत आयुषक् । इन्द्रं गच्छन्कविक्रतुः ॥ ५ ॥
आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे । अर्कस्य योनिमासदम् ॥ ६ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—इध्मवाहो दाळर्हच्युतः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ५ निचृद्गायत्री; २, ६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

तममृक्षन्त वाजिनमुपस्थे अदितेरधि । विप्रासो अण्व्या धिया ॥ १ ॥
तं गावो अभ्यनूषत सहस्रधारमक्षितम् । इन्दुं धर्तारमा दिवः ॥ २ ॥
तं वेधां मेधयाह्यन्पवमानमधि द्यवि । धर्णसिं भूरिधायसम् ॥ ३ ॥
तमह्यन्भुरिजोर्धिया संवसानं विवस्वतः । पतिं वाचो अदाभ्यम् ॥ ४ ॥
तं सानावधि जामयो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । हर्यतं भूरिचक्षसम् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः पवमान गिरावृधम्। इन्दविन्द्राय मत्सरम्॥ ६॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ६ निचृद्गायत्री; ३-५ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते। पुनानो घ्नन्नप स्रिधः॥ १॥
एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित्परि षिच्यते। पवित्रे दक्षसाधनः॥ २॥
एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः। सोमो वनेषु विश्ववित्॥ ३॥
एष गव्युरचिक्रदत्पवमानो हिरण्ययुः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः॥ ४॥
एष सूर्येण हासते पवमानो अधि द्यवि। पवित्रे मत्सरो मदः॥ ५॥
एष शुष्म्यसिष्यददन्तरिक्षे वृषा हरिः। पुनान इन्दुरिन्द्रमा॥ ६॥

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रियमेधः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४, ५ गायत्री; २, ३, ६ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ अष्टादशो वर्गः॥ १८॥

एष वाजी हितो नृभिर्विश्ववित्मनसस्पतिः। अव्यो वारं वि धावति॥ १॥
एष पवित्रे अक्षरत्सोमो देवेभ्यः सुतः। विश्वा धामान्याविशन्॥ २॥
एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः। वृत्रहा देववीतमः॥ ३॥
एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः। अभि द्रोणानि धावति॥ ४॥
एष सूर्यमरोचयत्पवमानो विचर्षणिः। विश्वा धामानि विश्ववित्॥ ५॥
एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति। देवावीरघशंसहा॥ ६॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २-४, ६ निचृद्गायत्री; ५ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

प्रास्य धारा अक्षरन्वृष्णः सुतस्यौजसा। देवाँ अनु प्रभूषतः॥ १॥
सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा। ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम्॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो। वर्धा समुद्रमुक्थ्यम्॥ ३॥
विश्वा वसूनि संजयन्पवस्व सोम धारया। इनु द्वेषांसि सध्र्यक्॥ ४॥
रक्षा सु नो अरुरुषः स्वनात्समस्य कस्य चित्। निदो यत्र मुमुच्महे॥ ५॥
एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पवस्व धारया। द्युमन्तं शुष्ममा भर॥ ६॥

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बिन्दुः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ६ गायत्री; ३-५ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

प्र धारा अस्य शुष्मिणो वृथा पवित्रे अक्षरन्। पुनानो वाचमिष्यति॥ १॥
इन्दुर्हियानः सोतृभिर्मृज्यमानः कनिक्रदत्। इयर्ति वग्गुमिन्द्रियम्॥ २॥
आ नः शुष्मं नृषाह्यं वीरवन्तं पुरुस्पृहम्। पवस्व सोम धारया॥ ३॥
प्र सोमो अति धारया पवमानो असिष्यदत्। अभि द्रोणान्यासदम्॥ ४॥
अप्सु त्वा मधुमत्तमं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दविन्द्राय पीतये॥ ५॥
सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। चारुं शर्धाय मत्सरम्॥ ६॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—गोतमः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ ककुम्मतीगायत्री; २ यवमध्यागायत्री; ३, ५ गायत्री; ४, ६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

प्र सोमासः स्वाध्यः पवमानासो अक्रमुः। रयिं कृण्वन्ति चेतनम्॥ १॥
दिवस्पृथिव्या अधि भवेन्दो द्युम्नवर्धनः। भवा वाजानां पतिः॥ २॥
तुभ्यं वाता अभिप्रियस्तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः। सोम वर्धन्ति ते महः॥ ३॥
आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य संगथे॥ ४॥
तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रो दुदुह्रे अक्षितम्। वर्षिष्ठे अधि सानवि॥ ५॥
स्वायुधस्य ते सतो भुवनस्य पते वयम्। इन्दो सखित्वमुश्मसि॥ ६॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—श्यावाश्वः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २ निचृद्गायत्री; ३-६ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनः। सुता विदथे अक्रमुः ॥ १ ॥
आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ २ ॥
आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम्। अत्यो न गोभिरज्यते ॥ ३ ॥
उभे सोमावचाकशन्मृगो न तक्तो अर्षसि। सीदन्नृतस्य योनिमा ॥ ४ ॥
अभि गावो अनूषत योषा जारमिव प्रियम्। अगन्नाजिं यथा हितम् ॥ ५ ॥
अस्मे धेहि द्युमद्यशो मघवद्भ्यश्च मह्यं च। सनिं मेधामुत श्रवः ॥ ६ ॥

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ ककुम्मतीगायत्री; २, ४, ५ गायत्री; ३, ६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

प्र सोमासो विपश्चितोऽपां न यन्त्यूर्मयः। वनानि महिषाइव ॥ १ ॥
अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया। वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥ २ ॥
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमा अर्षन्ति विष्णवे ॥ ३ ॥
तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत् ॥ ४ ॥
अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः। मर्मृज्यन्ते दिवः शिशुम् ॥ ५ ॥
रायः समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्रिणः ॥ ६ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृद्गायत्री; ३, ५, ६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प्र सुवानो धारया तनेन्दुर्हिन्वानो अर्षति। रुजद् दृळ्हा व्योजसा ॥ १ ॥
सुत इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमो अर्षति विष्णवे ॥ २ ॥
वृषाणं वृषभिर्यतं सुन्वन्ति सोममद्रिभिः। दुहन्ति शक्मना पयः ॥ ३ ॥
भुवत्त्रितस्य मर्ज्यो भुवदिन्द्राय मत्सरः। सं रूपैरज्यते हरिः ॥ ४ ॥
अभीमृतस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः। चारुं प्रियतमं हविः ॥ ५ ॥
समेनमह्रुता इमा गिरो अर्षन्ति सस्रुतः। धेनूर्वाश्रो अवीवशत् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रभूवसुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४-६ गायत्री; ३ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम्। यया ज्योतिर्विदासि नः ॥ १ ॥
इन्दो समुद्रमीङ्खय पवस्व विश्वमेजय। रायो धर्ता न ओजसा ॥ २ ॥
त्वया वीरेण वीरवोऽभि ष्याम पृतन्यतः। क्षरा णो अभि वार्यम् ॥ ३ ॥
प्र वाजमिन्दुरिष्यति सिषासन्वाजसा ऋषिः। व्रता विदान आयुधा ॥ ४ ॥
तं गीर्भिर्वीचमीङ्खयं पुनानं वासयामसि। सोमं जनस्य गोपतिम् ॥ ५ ॥
विश्वो यस्य व्रते जनो दाधार धर्मणस्पतेः। पुनानस्य प्रभूवसोः ॥ ६ ॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—प्रभूवसुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २, ६ गायत्री; ३-५ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः। कार्ष्मन्वाजी न्यक्रमीत् ॥ १ ॥
स वह्निः सोम जागृविः पवस्व देववीरति। अभि कोशं मधुश्चुतम् ॥ २ ॥
स नो ज्योतींषि पूर्व्य पवमान वि रोचय। क्रत्वे दक्षाय नो हिनु ॥ ३ ॥
शुम्भमान ऋतायुभिर्मृज्यमानो गभस्त्योः। पवते वारे अव्यये ॥ ४ ॥
स विश्वा दाशुषे वसु सोमो दिव्यानि पार्थिवा। पवतामान्तरिक्ष्या ॥ ५ ॥
आ दिवस्पृष्ठमश्वयुर्गव्ययुः सोम रोहसि। वीरयुः शवसस्पते ॥ ६ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—रहूगणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४-६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति। विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥ १ ॥
स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः। अभि योनिं कनिक्रदत् ॥ २ ॥
स वाजी रोचना दिवः पवमानो वि धावति। रक्षोहा वारमव्ययम् ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत्। जामिभिः सूर्यं सह॥ ४॥
स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविददभ्यः। सोमो वाजमिवासरत्॥ ५॥
स देवः कविनेषितोऽअभि द्रोणानि धावति। इन्दुरिन्द्राय मंहना॥ ६॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—रहूगणः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ४, ६ निचृद्गायत्री; ३ गायत्री; ५ ककुम्मतीगायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथाष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

एष उ स्य वृषा रथोऽव्यो वारेभिरर्षति। गच्छन्वाजं सहस्त्रिणम्॥ १॥
एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये॥ २॥
एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भते॥ ३॥
एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति। गच्छञ्जारो न योषितम्॥ ४॥
एष स्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिवः शिशुः। य इन्दुर्वारमाविशत्॥ ५॥
एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः। क्रन्दन्योनिमभि प्रियम्॥ ६॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहन्मतिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४, ६ निचृद्गायत्री; २, ३, ५ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना। यत्र देवा इति ब्रुवन्॥ १॥
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः। वृष्टिं दिवः परि स्रव॥ २॥
सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा। विचक्षाणो विरोचयन्॥ ३॥
अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ। सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत्॥ ४॥
आविवासन्परावतो अथो अर्वावतः सुतः। इन्द्राय सिच्यते मधु॥ ५॥
समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। योनावृतस्य सीदत॥ ६॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहन्मतिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३-६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः। शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रं वृषा सुतः। ध्रुवे सदसि सीदति ॥ २ ॥
नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्त्रिणम् ॥ ३ ॥
विश्वा सोम पवमान द्युम्नानीन्दवा भर। विदाः सहस्त्रिणीरिषः ॥ ४ ॥
स नः पुनान आ भर रयिं स्तोत्रे सुवीर्यम्। जरितुर्वर्धया गिरः ॥ ५ ॥
पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम्। वृषन्निन्दो न उक्थ्यम् ॥ ६ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३-५ गायत्री; २ ककुम्मतीगायत्री; ६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथैकत्रिंशो वर्गः ॥ ३१ ॥

प्र ये गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः। घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥ १ ॥
सुवितस्य मनामहेऽति सेतुं दुराव्यम्। साह्वांसो दस्युमव्रतम् ॥ २ ॥
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः। चरन्ति विद्युतो दिवि ॥ ३ ॥
आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत्। अश्वावद्वाजवत्सुतः ॥ ४ ॥
स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण। उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ ५ ॥
परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः। सरा रसेव विष्टपम् ॥ ६ ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ निचृद्गायत्री; ३, ४, ६ गायत्री; ५ ककुम्मतीगायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

जनयन्नोचना दिवो जनयन्नप्सु सूर्यम्। वसानो गा अपो हरिः ॥ १ ॥
एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि। धारया पवते सुतः ॥ २ ॥
वावृधानाय तूर्वये पवन्ते वाजसातये। सोमाः सहस्त्रपाजसः ॥ ३ ॥
दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यते। क्रन्दन्देवाँ अजीजनत् ॥ ४ ॥
अभि विश्वानि वार्याभि देवाँ ऋतावृधः। सोमः पुनानो अर्षति ॥ ५ ॥
गोमन्नः सोम वीरवदश्वावद्वाजवत्सुतः। पवस्व बृहतीरिषः ॥ ६ ॥

[४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४, ५ गायत्री; ३, ६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

यो अत्यइव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः। तं गीर्भिर्वासयामसि ॥ १ ॥
तं नो विश्वा अवस्युवो गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा। इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ २ ॥
पुनानो याति हर्यतः सोमो गीर्भिः परिष्कृतः। विप्रस्य मेध्यातिथेः ॥ ३ ॥
पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम सुश्रियम्। इन्दो सहस्रवर्चसम् ॥ ४ ॥
इन्दुरत्यो न वाजसृत्कनिक्रन्ति पवित्र आ। यदक्षारति देवयुः ॥ ५ ॥
पवस्व वाजसातये विप्रस्य गृणतो वृधे। सोम रास्व सुवीर्यम् ॥ ६ ॥

इति षष्ठाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥

इति षष्ठोऽष्टकः ॥

अथ सप्तमाष्टके प्रथमोऽध्यायः

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २-६ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

प्र ण इन्दो महे तन ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि। अभि देवाँ अयास्यः ॥ १ ॥
मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति। विप्रस्य धारया कविः ॥ २ ॥
अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ। सोमो याति विचर्षणिः ॥ ३ ॥
स नः पवस्व वाजयुश्चक्राणश्चारुमध्वरम्। बर्हिष्माँ आ विवासति ॥ ४ ॥
स नो भगाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः। सोमो देवेष्वा यमत् ॥ ५ ॥
स नो अद्य वसुत्तये क्रतुविद्धातुवित्तमः। वाजं जेषि श्रवो बृहत् ॥ ६ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३-५ गायत्री; २, विराड्गायत्री; ६ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

स पवस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये। इन्दविन्द्राय पीतये ॥ १ ॥
स नो अर्षाभि दूत्यं त्वमिन्द्राय तोशसे। देवान्त्सखिभ्य आ वरम् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत त्वामरुणं वयं गोभिरञ्ज्मो मदाय कम्। वि नो राये दुरो वृधि॥ ३॥
अत्यू पवित्रमक्रमीद्वाजी धुरं न यामनि। इन्दुर्देवेषु पत्यते॥ ४॥
समी सखायो अस्वरन्वने क्रीळन्तमत्यविम्। इन्दुं नावा अनूषत॥ ५॥
तया पवस्व धारया यया पीतो विचक्षसे। इन्दो स्तोत्रे सुवीर्यम्॥ ६॥

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ ककुम्मतीगायत्री; २, ४, ६ निचृद्गायत्री; ३, ५ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

असृग्रन्देववीतयेऽत्यासः कृत्व्या इव। क्षरन्तः पर्वतावृधः॥ १॥
परिष्कृतास इन्दवो योषेव पित्र्यावती। वायुं सोमा असृक्षत॥ २॥
एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः। इन्द्रं वर्धन्ति कर्मभिः॥ ३॥
आ धावता सुहस्त्यः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना। गोभिः श्रीणीत मत्सरम्॥ ४॥
स पवस्व धनंजय प्रयन्ता राध्सो महः। अस्मभ्यं सोम गातुवित्॥ ५॥
एतं मृजन्ति मर्ज्यं पवमानं दश क्षिपः। इन्द्राय मत्सरं मदम्॥ ६॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कविर्भार्गवः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

अया सोमः सुकृत्यया महश्चिदभ्यवर्धत। मन्दान उद् वृषायते॥ १॥
कृतानीदस्य कर्त्वा चेतन्ते दस्युतर्हणा। ऋणा च धृष्णुश्चयते॥ २॥
आत्सोम इन्द्रियो रसो वज्रः सहस्रसा भुवत्। उक्थं यदस्य जायते॥ ३॥
स्वयं कविर्विधर्तरि विप्राय रत्नमिच्छति। यदी मर्मृज्यते धियः॥ ४॥
सिषासतू रयीणां वाजेष्ववर्तामिव। भरेषु जिग्युषामसि॥ ५॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कविर्भार्गवः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ५ गायत्री; २-४ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः। चारुं सुकृत्ययेमहे॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम्। शतं पुरो रुरुक्षणिम्॥ २॥
अतस्त्वा रयिमभि राजानं सुक्रतो दिवः। सुपर्णो अव्यथिर्भरत्॥ ३॥
विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणं रजस्तुरम्। गोपामृतस्य विर्भरत्॥ ४॥
अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे। अभिष्टिकृद्विचर्षणिः॥ ५॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—कविर्भार्गवः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४, ५ निचृद्गायत्री; २, ३ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि। अयक्ष्मा बृहतीरिषः॥ १॥
तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन्। जन्यास उप नो गृहम्॥ २॥
घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः। अस्मभ्यं वृष्टिमा पव॥ ३॥
स नं ऊर्जे व्यव्ययं पवित्रं धाव धारया। देवासः शृणवन्हि कम्॥ ४॥
पवमानो असिष्यदद्रक्षांस्यपजङ्घनत्। प्रत्नवद्रोचयन्रुचः॥ ५॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ४, ५ गायत्री; ३ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः। वाणस्य चोदया पविम्॥ १॥
प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः। यदव्य एषि सानवि॥ २॥
अव्यो वारे परि प्रियं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। पवमानं मधुश्चुतम्॥ ३॥
आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम्॥ ४॥
स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः। इन्दविन्द्राय पीतये॥ ५॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३-५ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ सृज। पुनीहीन्द्राय पातवे॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। सुनोता मधुमत्तमम्॥ २॥
तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर्व्यश्नते। पवमानस्य मरुतः॥ ३॥
त्वं हि सोम वर्धयन्त्सुतो मदाय भूर्णये। वृषन्तस्तोतारमूतये॥ ४॥
अभ्यर्ष विचक्षण पवित्रं धारया सुतः। अभि वाजमुत श्रवः॥ ५॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ भुरिग्गायत्री; २ गायत्री; ३, ५ निचृद्गायत्री; ४ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

परि द्युक्षः सनद्रयिर्भरद्वाजं नो अन्धसा। सुवानो अर्ष पवित्र आ॥ १॥
तव प्रत्नेभिरध्वभिरव्यो वारे परि प्रियः। सहस्रधारो याति नाम्॥ २॥
चरुर्न यस्तमीङ्खयेन्दो न दानमीङ्खय। वधैर्वधस्नवीङ्खय॥ ३॥
नि शुष्ममिन्दवेषां पुरुहूत जनानाम्। यो अस्माँ आदिदेशति॥ ४॥
शतं न इन्द ऊतिभिः सहस्रं वा शुचीनाम्। पवस्व मंहयद्रयिः॥ ५॥

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री; २, ४ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः। नुदस्व याः परिस्पृधः॥ १॥
अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते। स्तवा अबिभ्युषा हृदा॥ २॥
अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या। रुज यस्त्वा पृतन्यति॥ ३॥
तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम्। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्॥ ४॥

[५४] चतुष्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ४ गायत्री; ३ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः। पयः सहस्रसामृषिम्॥ १॥
अयं सूर्य इवोपदृगयं सरांसि धावति। सप्त प्रवत आ दिवम्॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि। सोमो देवो न सूर्यः ॥ ३ ॥
परि णो देववीतये वाजाँ अर्षसि गोमतः। पुनान इन्दविन्द्रयुः ॥ ४ ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ गायत्री; ३, ४ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्रव। सोम विश्वा च सौभगा ॥ १ ॥
इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः। नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥ २ ॥
उत नो गोविदश्ववित्पवस्व सोमान्धसा। मक्षूतमेभिरहभिः ॥ ३ ॥
यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य। स पवस्व सहस्रजित् ॥ ४ ॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४ यवमध्यागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

परि सोम ऋतं बृहदाशुः पवित्रे अर्षति। विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥ १ ॥
यत्सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः। इन्द्रस्य सख्यमाविशन् ॥ २ ॥
अभि त्वा योषणो दश जारं न कन्यानूषत। मृज्यसे सोम सातये ॥ ३ ॥
त्वमिन्द्राय विष्णवे स्वादुरिन्दो परि स्रव। नृन्स्तोतॄन्पाह्यंहसः ॥ ४ ॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३ गायत्री; २ निचृद्गायत्री; ४ ककुम्मतीगायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः। अच्छा वाजं सहस्रिणम् ॥ १ ॥
अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति। हरिस्तुञ्जान आयुधा ॥ २ ॥
स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः। श्येनो न वंसु षीदति ॥ ३ ॥
स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि। पुनान इन्दवा भर ॥ ४ ॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री; २ विराड्गायत्री; ४ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

तर॒त्स म॒न्दी धा॑वति॒ धारा॑ सु॒तस्यान्ध॑सः। तर॒त्स म॒न्दी धा॑वति ॥ १ ॥
उ॒स्रा वे॑द॒ वसू॑नां॒ मर्त॑स्य दे॒व्यव॑सः। तर॒त्स म॒न्दी धा॑वति ॥ २ ॥
ध्व॒स्र॒योः पु॒रु॒ष॒न्त्योरा स॒हस्रा॑णि दद्महे। तर॒त्स म॒न्दी धा॑वति ॥ ३ ॥
आ ययो॑स्त्रिं॒शत॑ं त॒ना स॒हस्रा॑णि च॒ दद्म॑हे। तर॒त्स म॒न्दी धा॑वति ॥ ४ ॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ गायत्री; २ आर्ची-स्वराड्गायत्री; ३, ४ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

पव॑स्व गो॒जिद॑श्व॒जिद्बि॑श्व॒जित्सो॑म रण्य॒जित्। प्र॒जाव॒द्रत्न॒मा भ॑र ॥ १ ॥
पव॑स्वाद्भ्यो अदा॒भ्य॒ः पव॒स्वौष॑धीभ्यः। पव॑स्व धि॒षणा॑भ्यः ॥ २ ॥
त्वं सो॑म॒ पव॑मानो॒ विश्वा॑नि दुरि॒ता त॑र। क॒विः सी॑द॒ नि ब॒र्हिषि॑ ॥ ३ ॥
पव॑मान॒ स्वर्वि॑दो॒ जाय॑मानोऽभवो म॒हान्। इन्दो॒ विश्वाँ॑ अ॒भीद॑सि ॥ ४ ॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४ गायत्री; ३ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—१, २, ४ षड्जः; ३ ऋषभः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

प्र गा॑य॒त्रेण॑ गायत॒ पव॑मानं॒ विच॑र्षणिम्। इन्दुं॑ स॒हस्र॑चक्षसम् ॥ १ ॥
तं त्वा॑ स॒हस्र॑चक्षस॒मथो॑ स॒हस्र॑भर्णसम्। अति॒ वार॑मपाविषुः ॥ २ ॥
अति॒ वारा॒न्पव॑मानो असिष्यदत्क॒लशाँ॑ अ॒भि धा॑वति।
इन्द्र॑स्य॒ हार्द्या॑विशन् ॥ ३ ॥
इन्द्र॑स्य सोम॒ राध॑से॒ शं प॑वस्व विचर्षणे। प्र॒जाव॒द्रेत॒ आ भ॑र ॥ ४ ॥

तृतीयोऽनुवाकः [६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ४, ५, ८, १०, १२, १५, १८, २२-२४, २९, ३० निचृद्गायत्री; २, ३, ६, ७, ९, १३, १४, १६, १७, २०, २१, २६-२८ गायत्री; ११, १९ विराड्गायत्री; २५ ककुम्मतीगायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव ॥ १ ॥
पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शम्बरम्। अध त्यं तुर्वशं यदुम् ॥ २ ॥
परि णो अश्वमश्वविद्गोमदिन्दो हिरण्यवत्। क्षरा सहस्रिणीरिषः ॥ ३ ॥
पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः। सखित्वमा वृणीमहे ॥ ४ ॥
ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया। तेभिर्नः सोम मृळय ॥ ५ ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम्। ईशानः सोम विश्वतः ॥ ६ ॥
एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम्। समादित्येभिरख्यत ॥ ७ ॥
समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ। सं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ ८ ॥
स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान्। चारुर्मित्रे वरुणे च ॥ ९ ॥
उच्चा ते जातमन्धसो दिवि षद्भूम्या ददे। उग्रं शर्म महि श्रवः ॥ १० ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे ॥ ११ ॥
स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित्परि स्रव ॥ १२ ॥
उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम्। इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ १३ ॥
तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव। य इन्द्रस्य हृदंसनिः ॥ १४ ॥
अर्षा णः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्। वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् ॥ १५ ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

पवमानो अजिजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥ १६ ॥
पवमानस्य ते रसो मदो राजन्नदुच्छुनः। वि वारमव्यमर्षति ॥ १७ ॥
पवमान रसस्तव दक्षो वि राजति द्युमान्। ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे ॥ १८ ॥
यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा। देवावीरघशंसहा ॥ १९ ॥
जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे। गोषा उ अश्वसा असि ॥ २० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

संमिश्लो अरुषो भव सूपस्थाभिर्न धेनुभिः। सीदञ्छ्येनो न योनिमा ॥ २१ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे। वव्रिवांसं महीरपः॥ २२॥
सुवीरासो वयं धना जयेम सोम मीढ्वः। पुनानो वर्ध नो गिरः॥ २३॥
त्वोतासस्तवावसा स्याम वन्वन्त आमुरः। सोम व्रतेषु जागृहि॥ २४॥
अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अरावणः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्॥ २५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः। रास्वेन्दो वीरवद्यशः॥ २६॥
न त्वा शतं चन हुतो राधो दित्सन्तमा मिनन्। यत्पुनानो मखस्यसे॥ २७॥
पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने। विश्वा अप द्विषो जहि॥ २८॥
अस्य ते सख्ये वयं तवेन्दो द्युम्न उत्तमे। सासह्याम पृतन्यतः॥ २९॥
या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे। रक्षा समस्य नो निदः॥ ३०॥

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—जमदग्निः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ६, ७, ९, १०, २३, २५, २८, २९ निचृद्गायत्री; २, ५, ११-१९, २१-२४, २७, ३० गायत्री; ३ ककुम्मतीगायत्री; ४ पिपीलिकामध्यागायत्री; ८, २०, २६ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

एते असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः। विश्वान्यभि सौभगा॥ १॥
विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः। तना कृण्वन्तो अर्वते॥ २॥
कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम्। इळामस्मभ्यं संयतम्॥ ३॥
असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः। श्येनो न योनिमासदत्॥ ४॥
शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धूतो नृभिः सुतः। स्वदन्ति गावः पयोभिः॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

आदीमश्वं न हेतारोऽशूशुभन्नमृताय। मध्वो रसं सधमादे॥ ६॥
यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रमिन्द ऊतये। ताभिः पवित्रमासदः॥ ७॥
सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो रोमाण्यव्यया। सीदन्योना वनेष्वा॥ ८॥
त्वमिन्दो परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः। वरिवोविद् घृतं पयः॥ ९॥
अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति। हिन्वान आप्यं बृहत्॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

एष वृषा वृषव्रतः पवमानो अशस्तिहा। करद्वसूनि दाशुषे ॥ ११ ॥
आ पवस्व सहस्त्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम्। पुरुश्चन्द्रं पुरुस्पृहम् ॥ १२ ॥
एष स्य परि षिच्यते मर्मृज्यमान आयुभिः। उरुगायः कविक्रतुः ॥ १३ ॥
सहस्त्रौतिः शतामघो विमानो रजसः कविः। इन्द्राय पवते मदः ॥ १४ ॥
गिरा जात इह स्तुत इन्दुरिन्द्राय धीयते। विर्योना वसताविव ॥ १५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

पवमानः सुतो नृभिः सोमो वाजमिवासरत्। चमूषु शक्मनासदम् ॥ १६ ॥
तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे रथे युञ्जन्ति यातवे। ऋषीणां सप्त धीतिभिः ॥ १७ ॥
तं सोतारो धनस्पृतमाशुं वाजाय यातवे। हरिं हिनोत वाजिनम् ॥ १८ ॥
आविशन्कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः। शूरो न गोषु तिष्ठति ॥ १९ ॥
आ त इन्दो मदाय कं पयो दुहन्त्यायवः। देवा देवेभ्यो मधु ॥ २० ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

आ नः सोम पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम्। देवेभ्यो देवश्रुत्तमम् ॥ २१ ॥
एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे। मदिन्तमस्य धारया ॥ २२ ॥
अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि। सनद्वाजः परि स्रव ॥ २३ ॥
उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः। गृणानो जमदग्निना ॥ २४ ॥
पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः। अभि विश्वानि काव्या ॥ २५ ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

त्वं समुद्रियो अपोऽग्रियो वाचं ईरयन्। पवस्व विश्वमेजय ॥ २६ ॥
तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे। तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ॥ २७ ॥
प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यसश्चतः। अभि शुक्रामुपस्तिरम् ॥ २८ ॥
इन्द्रायेन्दुं पुनीतनोग्रं दक्षाय साधनम्। ईशानं वीतिराधसम् ॥ २९ ॥
पवमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमासदत्। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ ३० ॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—निध्रुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४, १२, १७,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२०, २२ २३, २५, २७, २८, ३० निचृद्गायत्री; ३, ७-११, १६, १८, १९, २१, २४, २६ गायत्री; ५, १३, १५ विराड्गायत्री; ६, १४, २९ ककुम्मतीगायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम्। अस्मे श्रवांसि धारय॥ १॥
इषमूर्जं च पिन्वस इन्द्राय मत्सरिन्तमः। चमूष्वा नि षीदसि॥ २॥
सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत्। मधुमाँ अस्तु वायवे॥ ३॥
एते असृग्रमाशवोऽति ह्वरांसि बभ्रवः। सोमा ऋतस्य धारया॥ ४॥
इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः॥ ५॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

सुता अनु स्वमा रजोऽभ्यर्षन्ति बभ्रवः। इन्द्रं गच्छन्त इन्दवः॥ ६॥
अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः॥ ७॥
अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे॥ ८॥
उत त्या हरितो दश सूरो अयुक्त यातवे। इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्॥ ९॥
परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम्। अव्यो वारेषु सिञ्चत॥ १०॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम दुष्टरम्। यो दूणाशो वनुष्यता॥ ११॥
अभ्यर्ष सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम्। अभि वाजमुत श्रवः॥ १२॥
सोमो देवो न सूर्योऽद्रिभिः पवते सुतः। दधानः कलशे रसम्॥ १३॥
एते धामान्यार्या शुक्रा ऋतस्य धारया। वाजं गोमन्तमक्षरन्॥ १४॥
सुता इन्द्राय वज्रिणे सोमासो दध्याशिरः। पवित्रमत्यक्षरन्॥ १५॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः॥ ३३॥

प्र सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ। मदो यो देववीतमः॥ १६॥
तमी मृजन्त्यायवो हरिं नदीषु वाजिनम्। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्॥ १७॥
आ पवस्व हिरण्यवदश्वावत्सोम वीरवत्। वाजं गोमन्तमा भर॥ १८॥
परि वाजे न वाजयुमव्यो वारेषु सिञ्चत। इन्द्राय मधुमत्तमम्॥ १९॥
कविं मृजन्ति मर्ज्यं धीभिर्विप्रा अवस्यवः। वृषा कनिक्रदर्षति॥ २०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया। मती विप्राः समस्वरन् ॥ २१ ॥
पवस्व देवायुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः। वायुमा रोह धर्मणा ॥ २२ ॥
पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम्। प्रियः समुद्रमा विश ॥ २३ ॥
अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः। नुदस्वादेवयुं जनम् ॥ २४ ॥
पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः। अभि विश्वानि काव्या ॥ २५ ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः। घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः ॥ २६ ॥
पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत। पृथिव्या अधि सानवि ॥ २७ ॥
पुनानः सोम धारयेन्दो विश्वा अप स्रिधः। जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥ २८ ॥
अपघ्नन्सोम रक्षसोऽभ्यर्ष कनिक्रदत्। द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ॥ २९ ॥
अस्मे वसूनि धारय सोम दिव्यानि पार्थिवा। इन्दो विश्वानि वार्या ॥ ३० ॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ७, १२, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६ गायत्री; २, ५, ६, ८-११, १४, १६, २०, २३, २५, २९ निचृद्गायत्री; १८, २१, २७, २८ विराड्गायत्री; ३० यवमध्यागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दधिषे ॥ १ ॥
वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा मदः। सत्यं वृषन्वृषेदसि ॥ २ ॥
अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः। वि नो राये दुरो वृधि ॥ ३ ॥
असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया। शुक्रासो वीरयाशवः ॥ ४ ॥
शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः। पवन्ते वारे अव्यये ॥ ५ ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा। पवन्तामान्तरिक्ष्या ॥ ६ ॥
पवमानस्य विश्ववित्प्र ते सर्गा असृक्षत। सूर्यस्येव न रश्मयः ॥ ७ ॥
केतुं कृण्वन्दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि। समुद्रः सोम पिन्वसे ॥ ८ ॥
हिन्वानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि। अक्रान्देवो न सूर्यः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मती। सृजदश्वं रथीरिव॥ १०॥

अथाष्टत्रिंशो वर्गः॥ ३८॥

ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ देवावीः पर्यक्षरत्। सीदन्नृतस्य योनिमा॥ ११॥
स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः। इन्दविन्द्राय पीतये॥ १२॥
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः। इन्दो रुचाभि गा इहि॥ १३॥
पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः। हरे सृजान आशिरम्॥ १४॥
पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्। द्युतानो वाजिभिर्यतः॥ १५॥

अथैकोनचत्वारिंशो वर्गः॥ ३९॥

प्र हिन्वानास इन्दवोऽच्छा समुद्रमाशवः। धिया जूता असृक्षत॥ १६॥
मर्मृजानास आयवो वृथा समुद्रमिन्दवः। अग्मन्नृतस्य योनिमा॥ १७॥
परि णो याह्यस्मयुर्विश्वा वसून्योजसा। पाहि नः शर्म वीरवत्॥ १८॥
मिमाति वह्निरेतशः पदं युजान ऋक्वभिः। प्र यत्समुद्र आहितः॥ १९॥
आ यद्योनिं हरिण्ययमाशुर्ऋतस्य सीदति। जहात्यप्रचेतसः॥ २०॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः॥ ४०॥

अभि वेना अनूषतेयक्षन्ति प्रचेतसः। मज्जन्त्यविचेतसः॥ २१॥
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। ऋतस्य योनिमासदम्॥ २२॥
तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति वेधसः। सं त्वा मृजन्त्यायवः॥ २३॥
रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे। पवमानस्य मरुतः॥ २४॥
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो वाचमिष्यसि। इन्दो सहस्रभर्णसम्॥ २५॥

अथैकचत्वारिंशो वर्गः॥ ४१॥

उतो सहस्रभर्णसं वाचं सोम मखस्युवम्। पुनान इन्दवा भर॥ २६॥
पुनान इन्दवेषां पुरुहूत जनानाम्। प्रियः समुद्रमा विश॥ २७॥
दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा। सोमाः शुक्रा गवाशिरः॥ २८॥
हिन्वानो हेतृभिर्यत आ वाजं वाज्यक्रमीत्। सीदन्तो वनुषो यथा॥ २९॥
ऋधक्सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवः कविः। पवस्व सूर्यो दृशे॥ ३०॥

इति सप्तमाष्टके प्रथमोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ९, १०, १२, १३, १६, १८, २१, २२, २४-२६ गायत्री; २, ११, १४, १५, २९, ३० विराड्गायत्री; ३, ६-८, १९, २०, २७, २८ निचृद्गायत्री; ४, ५, पादनिचृद्गायत्री; १७, २३ ककुम्मतीगायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम्। महामिन्दुं महीयुवः॥ १॥
पवमान रुचारुचा देवो देवेभ्यस्परि। विश्वा वसून्या विश॥ २॥
आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः। इषे पवस्व संयतम्॥ ३॥
वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वाध्यः॥ ४॥
आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध। इहो ष्विन्दवा गहि॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

यद्वाजिः परिषिच्यसे मृज्यमानो गभस्त्योः। द्रुणा सधस्थमश्नुषे॥ ६॥
प्र सोमाय व्यश्ववत्पवमानाय गायत। महे सहस्रचक्षसे॥ ७॥
यस्य वर्णं मधुश्चुतं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये॥ ८॥
तस्य ते वाजिनो वयं विश्वा धनानि जिग्युषः। सखित्वमा वृणीमहे॥ ९॥
वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥ १०॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

तं त्वा धर्तारमोण्योः सुदक्षं पवमान स्वर्दृशम्। हिन्वे वाजेषु वाजिनम्॥ ११॥
अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया। युजं वाजेषु चोदय॥ १२॥
आ न इन्दो महीमिषं पवस्व विश्वदर्शतः। अस्मभ्यं सोम गातुवित्॥ १३॥
आ कलशा अनूषतेन्दो धाराभिरोजसा। एन्द्रस्य पीतये विश॥ १४॥
यस्य ते मद्यं रसं तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः। स पवस्वाभिमातिहा॥ १५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे॥ १६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ नं इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम्। वहा भगत्तिमूतये॥ १७॥
आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर। सुष्वाणो देववीतये॥ १८॥
अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदञ्छ्येनो न योनिमा॥ १९॥
अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः। सोमो अर्षति विष्णवे॥ २०॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

इषे तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः। आ पवस्व सहस्त्रिणम्॥ २१॥
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे। ये वादः शर्यणावति॥ २२॥
य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम्। ये वा जनेषु पञ्चसु॥ २३॥
ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम्। सुवाना देवास इन्दवः॥ २४॥
पवते हर्यतो हरिर्गृणानो जमदग्निना। हिन्वानो गोरधि त्वचि॥ २५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न सप्तयः। श्रीणाना अप्सु मृञ्जत॥ २६॥
तं त्वा सुतेष्वाभुवो हिन्विरे देवतातये। स पवस्वानया रुचा॥ २७॥
आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ २८॥
आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम्। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ २९॥
आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥ ३०॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—शतं वैखानसाः॥ देवता—१-१८, २२-३० पवमानः सोमः॥ १९-२१ अग्निः॥
छन्दः—१ पादनिचृद्गायत्री; २, ३, ५-८, १०, ११, १३, १५-१७, १९, २०, २३-२६, ३० गायत्री; ४, १४, २२, २७ विराड्गायत्री; ९, १२, २१, २८, २९ निचृद्गायत्री; १८ पादनिचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-१७, १९-३० षड्जः; १८ गान्धारः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

पवस्व विश्वचर्षणोऽभि विश्वानि काव्या। सखा सखिभ्य ईड्यः॥ १॥
ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी। प्रतीची सोम तस्थतुः॥ २॥
परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः। पवमान ऋतुभिः कवे॥ ३॥
पवस्व जनयन्निषोऽभि विश्वानि वार्या। सखा सखिभ्य ऊतये॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तवं शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्ठे वि तन्वते। पवित्रं सोम धामभिः ॥ ५ ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिस्रते। तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥ ६ ॥

प्र सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः। दधानो अक्षितिं श्रवः ॥ ७ ॥

समु त्वा धीभिरस्वरन्हिन्वतीः सप्त जामयः। विप्रमाजा विवस्वतः ॥ ८ ॥

मृजन्ति त्वा समग्रुवोऽव्ये जीरावधि ष्वणि। रेभो यदज्यसे वने ॥ ९ ॥

पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत। अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥ १० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये। अवावशन्त धीतयः ॥ ११ ॥

अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः। अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥ १२ ॥

प्र ण इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति सिन्धवः। यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥ १३ ॥

अस्य ते सख्ये वयमिर्यक्षन्तस्त्वोतयः। इन्दो सखित्वमुश्मसि ॥ १४ ॥

आ पवस्व गविष्टये महे सोम नृचक्षसे। एन्द्रस्य जठरे विश ॥ १५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

महाँ असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्द ओजिष्ठः। युध्वा सञ्छश्वज्जिगेथ ॥ १६ ॥

य उग्रेभ्यश्चिदोजीयाञ्छूरेभ्यश्चिच्छूरतरः। भूरिदाभ्यश्चिन्मंहीयान् ॥ १७ ॥

त्वं सोम सूर एषस्तोकस्य साता तनूनाम् ।
वृणीमहे सख्याय वृणीमहे युज्याय ॥ १८ ॥

अग्र आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ १९ ॥

अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम् ॥ २० ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषम् ॥ २१ ॥

पवमानो अति स्त्रिधोऽभ्यर्षति सुष्टुतिम्। सूरो न विश्वदर्शतः ॥ २२ ॥

स मर्मृजान आयुभिः प्रयस्वान्प्रयसे हितः। इन्दुरत्यो विचक्षणः ॥ २३ ॥

पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत्। कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ॥ २४ ॥

पवमानस्य जङ्घ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत। जीरा अजिरशोचिषः ॥ २५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः। हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥ २६ ॥
पवमानो व्यश्नवद्रश्मिभिर्वाजसातमः। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ २७ ॥
प्र सुवान इन्दुरक्षाः पवित्रमत्यव्ययम्। पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥ २८ ॥
एष सोमो अधि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः। इन्द्रं मदाय जोहुवत् ॥ २९ ॥
यस्य ते द्युम्नवत्पयः पवमानाभृतं दिवः। तेन नो मृळ जीवसे ॥ ३० ॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ भरद्वाजः; ४-६ कश्यपः; ७-९ गोतमः; १०-१२ अत्रिः; १३, १४, १५ विश्वामित्रः; १६-१८ जमदग्निः; १९-२१ वसिष्ठः; २२-३२ पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा॥ देवता—१-९, १३-२२, २८-३० पवमानः सोमः; १०, ११, १२ पवमानः सोमः पूषा वा; २३, २४ अग्निः; २५ अग्निः सविता वा; २६ अग्निरग्निर्वा सविता च; २७ अग्निर्विश्वे देवा वा; ३१, ३२ पवमान्यध्येतृ-स्तुतिः॥ छन्दः—१, २, ४, ५, ११-१३, १५, १९, २३, २५ निचृद्गायत्री; ३, ८ विराड्गायत्री; १० यवमध्यागायत्री; १६-१८ भुरिगार्चीविराड्गायत्री; ६, ७, ९, १४, २०-२२, २४, २६, २८, २९ गायत्री; २७ अनुष्टुप्; ३१, ३२ निचृदनुष्टुप्; ३० पुरउष्णिक्॥ स्वरः—१-२६, २८, २९ षड्जः; २७, ३१, ३२ गान्धारः; ३० ऋषभः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

त्वं सोमासि धार्युर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे। पवस्व मंहयद्रयिः ॥ १ ॥
त्वं सुतो नृमादनो दध्न्वान्मत्सरिन्तमः। इन्द्राय सूरिरन्धसा ॥ २ ॥
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत्। द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ॥ ३ ॥
इन्दुर्हिन्वानो अर्षति तिरो वाराण्यव्यया। हरिर्वाजमचिक्रदत् ॥ ४ ॥
इन्दो व्यव्यमर्षसि वि श्रवांसि वि सौभगा ।
वि वाजान्त्सोम गोमतः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आ न इन्दो शतग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम्। भरा सोम सहस्त्रिणम् ॥ ६ ॥
पवमानास इन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः। इन्द्रं यामेभिराशत ॥ ७ ॥
ककुहः सोम्यो रस इन्दुरिन्द्राय पूर्व्यः। आयुः पवत आयवे ॥ ८ ॥
हिन्वन्ति सूरमुस्त्रयः पवमानं मधुश्चुतम्। अभि गिरा समस्वरन् ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अविता नो अजाश्वः पूषा यामनियामनि। आ भक्षत्कन्यासु नः ॥ १० ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

अयं सोमः कपर्दिने घृतं न पवते मधु। आ भक्षत्कन्यासु नः ॥ ११ ॥

अयं त आघृणे सुतो घृतं न पवते शुचिः। आ भक्षत्कन्यासु नः ॥ १२ ॥

वाचो जन्तुः कवीनां पवस्व सोम धारया। देवेषु रत्नधा असि ॥ १३ ॥

आ कलशेषु धावति श्येनो वर्म वि गाहते। अभि द्रोणा कनिक्रदत् ॥ १४ ॥

परि प्र सोम ते रसोऽसर्जि कलशे सुतः। श्येनो न तक्तो अर्षति ॥ १५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः ॥ १६ ॥

असृग्रन्देववीतये वाजयन्तो रथाइव ॥ १७ ॥

ते सुतासो मदिन्तमाः शुक्रा वायुमसृक्षत ॥ १८ ॥

ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रं सोम गच्छसि। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥ १९ ॥

एष तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रमति गाहते। रक्षोहा वारमव्ययम् ॥ २० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह। पवमान वि तज्जहि ॥ २१ ॥

पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु नः ॥ २२ ॥

यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने वितततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनीहि नः ॥ २३ ॥

यत्ते पवित्रमर्चिषदग्ने तेन पुनीहि नः। ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥ २४ ॥

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः ॥ २५ ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वसुभिः सोम धामभिः। अग्रे दक्षैः पुनीहि नः ॥ २६ ॥

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।

विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मा ॥ २७ ॥

प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः।

देवेभ्य उत्तमं हविः ॥ २८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप प्रियं पनिप्रतं युवानमाहुतीवृधम् ।
अर्गन्म बिभ्रतो नमः ॥ २९ ॥
अलाय्यस्य परशुर्ननाश तमा पवस्व देव सोम ।
आखुं चिदेव देव सोम ॥ ३० ॥
यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना ॥ ३१ ॥
पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥ ३२ ॥

चतुर्थोऽनुवाकः [६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सप्रिर्भालन्दनः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ६, ७ निचृज्जगती; २, ४, ५, ९ जगती; ८ विराड्जगती; १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-९ निषादः; १० धैवतः ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवोऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः ।
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे ॥ १ ॥
स रोरुवद्भि पूर्वीं अचिक्रददुपारुहः श्रथयन्त्स्वादते हरिः ।
तिरः पवित्रं परियन्नुरु ज्रयो नि शर्याणि दधते देव आ वरम् ॥ २ ॥
वि यो ममे यम्या संयती मदः साकंवृधा पयसा पिन्वदक्षिता ।
मही अपारे रजसी विवेविददभिव्रजन्नक्षितं पाज आ ददे ॥ ३ ॥
स मातरा विचरन्वाजयन्नपः प्र मेधिरः स्वधया पिन्वते पदम् ।
अंशुर्यवेन पिपिशे यतो नृभिः सं जामिभिर्नसते रक्षते शिरः ॥ ४ ॥
सं दक्षेण मनसा जायते कविर्ऋतस्य गर्भो निहितो यमा परः ।
यूना ह सन्ता प्रथमं वि जज्ञतुर्गुहा हितं जनिम नेममुद्यतम् ॥ ५ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

मन्द्रस्य रूपं विविदुर्मनीषिणः श्येनो यदन्धो अभरत्परावतः ।
तं मर्जयन्त सुवृधं नदीष्वाँ उशन्तमंशुं परियन्तमृग्मियम् ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वां मृजन्ति दश योषणः सुतं सोम ऋषिभिर्मतिभिर्धीतिभिर्हितम्।
अव्यो वारेभिरुत देवहूतिभिर्नृभिर्यतो वाजमा दर्षि सातये ॥ ७ ॥
परि प्रयन्तं वय्यं सुषंसदं सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभः।
यो धारया मधुमाँ ऊर्मिणा दिव इयर्ति वाचं रयिषाळमर्त्यः ॥ ८ ॥
अयं दिव इयर्ति विश्वमा रजः सोमः पुनानः कलशेषु सीदति।
अद्भिर्गोभिर्मृज्यते अद्रिभिः सुतः पुनान इन्दुर्वरिवो विदत्प्रियम् ॥ ९ ॥
एवा नः सोम परिषिच्यमानो वयो दधच्चित्रतमं पवस्व।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ॥ १० ॥

[६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यस्तूपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ५ पादनिचृज्जगती; २-४, ६ जगती; ७, ८ निचृज्जगती; ९ निचृत्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-८ निषादः; ९, १० धैवतः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

इषुर्न धन्वन्प्रति धीयते मतिर्वत्सो न मातुरुप सर्ज्यूधनि।
उरुधारेव दुहे अग्र आयत्यस्य व्रतेष्वपि सोम इष्यते ॥ १ ॥
उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनि।
पवमानः सन्तनिः प्रघ्नतामिव मधुमान्द्रप्सः परि वारमर्षति ॥ २ ॥
अव्ये वधूयुः पवते परि त्वचि श्रथ्नीते नप्तीरदितेर्ऋतं यते।
हरिरक्रान्यजतः संयतो मदो नृम्णा शिशानो महिषो न शोभते ॥ ३ ॥
उक्षा मिमाति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप यन्ति निष्कृतम्।
अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत ॥ ४ ॥
अमृक्तेन रुशता वाससा हरिरमर्त्यो निर्णिजानः परि व्यत।
दिवस्पृष्ठं बर्हणा निर्णिजे कृतोपस्तरणं चम्वोर्नभस्मयम् ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुपः साकमीरते।
तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्धोरिव प्रवणे निम्न आशवो वृषच्युता मदासो गातुमाशत।
शं नो निवेशे द्विपदे चतुष्पदेऽस्मे वाजाः सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः॥ ७॥
आ नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवदश्वावद्गोमद्यवमत्सुवीर्यम्।
यूयं हि सोम पितरो मम स्थन दिवो मूर्धानः प्रस्थिता वयस्कृतः॥ ८॥
एते सोमाः पवमानास इन्द्रं रथाइव प्र ययुः सातिमच्छ।
सुताः पवित्रमति यन्त्यव्यं हित्वी वव्रिं हरितो वृष्टिमच्छ॥ ९॥
इन्दविन्द्राय बृहते पवस्व सुमृळीको अनवद्यो रिशादाः।
भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैद्यावापृथिवी प्रावतं नः॥ १०॥

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—रेणुर्वैश्वामित्रः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २, ६, ९, १० निचृज्जगती; ४, ५, ७ जगती; ८ विराड्जगती॥ स्वरः—१, ३ धैवतः; २, ४-१० निषादः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रे सत्यामाशिरं पूर्व्ये व्योमनि।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत॥ १॥
स भिक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे।
तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः॥ २॥
ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवोऽदाभ्यासो जनुषी उभे अनु।
येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद्राजानं मनना अगृभ्णत॥ ३॥
स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः प्र मध्यमासु मातृषु प्रमे सचा।
व्रतानि पानो अमृतस्य चारुण उभे नृचक्षा अनु पश्यते विशौ॥ ४॥
स मर्मृजान इन्द्रियाय धायसे ओभे अन्ता रोदसी हर्षते हितः।
वृषा शुष्मेण बाधते वि दुर्मतीरादेदिशानः शर्यहेव शुरुधः॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

स मातरा न ददृशान उस्त्रियो नानददेति मरुतामिव स्वनः।
जानन्नृतं प्रथमं यत्स्वर्णरं प्रशस्तये कमवृणीत सुक्रतुः॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया शृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणः।
आ योनिं सोमः सुकृतं नि षीदति गव्ययी त्वग्भवति निर्णिगव्ययी॥ ७॥
शुचिः पुनानस्तन्वमरेपसमव्ये हरिर्न्यधाविष्ट सानवि ।
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे त्रिधातु मधु क्रियते सुकर्मभिः॥ ८॥
पवस्व सोम देववीतये वृषेन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश।
पुरा नो बाधादुरितादि पारय क्षेत्रविद्धि दिश आहा पिपृच्छते॥ ९॥
हितो न सप्तिर्भि वाजमर्षेन्द्रस्येन्दो जठरमा पवस्व।
नावा न सिन्धुमति पर्षि विद्वाञ्छूरो न युध्यन्नव नो निदः स्पः॥ १०॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—ऋषभो वैश्वामित्रः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४, ७ विराड्जगती; २, जगती; ३, ५, ८ निचृज्जगती; ६ पादनिचृज्जगती; ९ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-८ निषादः; ९ धैवतः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

आ दक्षिणा सृज्यते शुष्म्या३ सदं वेति द्रुहो रक्षसः पाति जागृविः।
हरिरोपशं कृणुते नभस्पयं उपस्तिरे चम्वो३र्ब्रह्म निर्णिजे॥ १॥
प्र कृष्टिहेव शूष एति रोरुवदसुर्यं१ वर्ण नि रिणीते अस्य तम्।
जहाति वव्रिं पितुरेति निष्कृतमुपप्रुतं कृणुते निर्णिजं तना॥ २॥
अद्रिभिः सुतः पवते गभस्त्योर्वृषायते नभसा वेपते मती।
स मोदते नसते साधते गिरा नेनिक्ते अप्सु यजते परीमणि॥ ३॥
परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिञ्चन्ति हर्म्यस्य सक्षणिम्।
आ यस्मिन्गावः सुहुताद ऊधनि मूर्धञ्छ्रीणन्त्यग्रियं वरीमभिः॥ ४॥
समी रथं न भुरिजोरहेषत दश स्वसारो अदितेरुपस्थ आ।
जिगादुप ज्रयति गोरपीच्यं पदं यदस्य मातुथा अजीजनन्॥ ५॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

श्येनो न योनिं सदनं धिया कृतं हिरण्ययमासदं देव एषति।
ए रिणन्ति बर्हिषि प्रियं गिराश्वो न देवाँ अप्येति यज्ञियः॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परा व्यक्तो अरुषो दिवः कविर्वृषा त्रिपृष्ठो अनविष्ट गा अभि।
सहस्रणीतिर्यतिः परायती रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति॥ ७॥
त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत्समृता सेधति स्त्रिधः।
अप्सा याति स्वधया दैव्यं जनं सं सुष्टुती नसते सं गोअग्रया॥ ८॥
उक्षेव यूथा परियन्नरावीदधि त्विषीरधित सूर्यस्य ।
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः परि क्रतुना पश्यते जाः॥ ९॥

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—हरिमन्तः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-३, ६, ७ निचृज्जगती; ४, ८ जगती; ५ विराड्जगती; ९ पादनिचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते।
उद्वाचमीरयति हिन्वते मती पुरुष्टुतस्य कति चित्परिप्रियः॥ १॥
साकं वदन्ति बहवो मनीषिण इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहुः।
यदी मृजन्ति सुगभस्तयो नरः सनीळाभिर्दशभिः काम्यं मधु॥ २॥
अरममाणो अत्येति गा अभि सूर्यस्य प्रियं दुहितुस्तिरो रवम्।
अन्वस्मै जोषमभरद्विनंगृसः सं द्वयीभिः स्वसृभिः क्षेति जामिभिः॥ ३॥
नृधूतो अद्रिषुतो बर्हिषि प्रियः पतिर्गवां प्रदिव इन्दुर्ऋत्वियः।
पुरन्धिवान्मनुषो यज्ञसाधनः शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते॥ ४॥
नृबाहुभ्यां चोदितो धारया सुतोऽनुष्वधं पवते सोम इन्द्र ते ।
आप्राः क्रतून्त्समजैरध्वरे मतीर्वेर्न द्रुषच्चम्वोः३ रासदद्धरिः ॥ ५॥

अथाष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

अंशुं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितं कविं कवयोऽपसो मनीषिणः।
समी गावो मतयो यन्ति संयतं ऋतस्य योना सदने पुनर्भुवः॥ ६॥
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवोः३ऽपामूर्मौ सिन्धुष्वन्तरुक्षितः।
इन्द्रस्य वज्रो वृषभो विभूवसुः सोमो ह्रदे पवते चारु मत्सरः॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स तू पवस्व परि पार्थिवं रजः स्तोत्रे शिक्षन्नाधून्वते च सुक्रतो।
मा नो निर्भाग्वसुनः सादनस्पृशो रयिं पिशङ्गं बहुलं वसीमहि॥ ८॥
आ तू न इन्दो शतदात्वश्व्यं सहस्रदातु पशुमद्धिरण्यवत्।
उप मास्व बृहती रेवतीरिषोऽधि स्तोत्रस्य पवमान नो गहि॥ ९॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—पवित्रः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ जगती; २-७ निचृज्जगती; ८, ९ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

त्रक्वे द्रप्सस्य धमतः समस्वरन्नृतस्य योना समरन्त नाभयः।
त्रीन्त्स मूर्ध्नो असुरश्चक्र आरभे सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्॥ १॥
सम्यक्सम्यञ्चो महिषा अहेषत सिन्धोरूर्मावधि वेना अवीविपन्।
मधोर्धारामभिर्जनयन्तो अर्कमित्प्रियामिन्द्रस्य तन्वमवीवृधन्॥ २॥
पवित्रवन्तः परि वाचमासते पितैषां प्रत्नो अभि रक्षति व्रतम्।
महः समुद्रं वरुणास्तिरो दधे धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम्॥ ३॥
सहस्रधारेऽव ते समस्वरन्दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः।
अस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवः॥ ४॥
पितुर्मातुरध्या ये समस्वरन्नृचा शोचन्तः सन्दहन्तो अव्रतान्।
इन्द्रद्विष्टामप धमन्ति मायया त्वचमसिक्नीं भूमनो दिवस्परि॥ ५॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वरञ्छ्लोकयन्त्रासो रभसस्य मन्तवः।
अपानक्षासो बधिरा अहासत ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः॥ ६॥
सहस्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः।
रुद्रास एषामिषिरासो अद्रुहः स्पशः स्वञ्चः सुदृशो नृचक्षसः॥ ७॥
ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुस्त्री ष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे।
विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यत्यवाजुष्टान्विध्यति कर्ते अव्रतान्॥ ८॥
ऋतस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ जिह्वाया अग्रे वरुणस्य मायया।
धीरासश्चित्तत्समिनक्षन्त आशतात्रा कर्तमव पदात्यप्रभुः॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कक्षीवान्॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ पादनिचृज्जगती; २, ६ विराड्जगती; ४, ७ जगती; ५, ९ निचृज्जगती; ८ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-७, ९ निषादः; ८ धैवतः॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

शिशुर्न जातोऽव चक्रदद्वने स्वर्१॒॑र्यद्वाज्यरुषः सिषासति ।
दिवो रेतसा सचते पयोवृधा तमीमहे सुमती शर्म सप्रथः॥ १॥
दिवो यः स्कम्भो धरुणः स्वातत आपूर्णो अंशुः पर्येति विश्वतः।
सेमे मही रोदसी यक्षदावृता समीचीने दाधार समिषः कविः॥ २॥
महि प्सरः सुकृतं सोम्यं मधूर्वी गव्यूतिरदितेर्ऋतं यते।
ईशे यो वृष्टेरित उस्त्रियो वृषापां नेता य इतऊतिर्ऋग्मियः॥ ३॥
आत्मन्वन्नभो दुह्यते घृतं पय ऋतस्य नाभिरमृतं वि जायते।
समीचीनाः सुदानवः प्रीणन्ति तं नरो हितमव मेहन्ति पेरवः॥ ४॥
अरावीदंशुः सचमान ऊर्मिणा देवाव्यं१॒॑ मनुषे पिन्वति त्वचम्।
दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे॥ ५॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः॥ ३२॥

सहस्रधारेऽव ता असश्चतस्तृतीये सन्तु रजसि प्रजावतीः।
चतस्रो नाभो निहिता अवो दिवो हविर्भिरन्त्यमृतं घृतश्चुतः॥ ६॥
श्वेतं रूपं कृणुते यत्सिषासति सोमो मीढ्वाँ असुरो वेद भूमनः।
धिया शमी सचते सेमभि प्रवद्दिवस्कवन्धमव दर्षदुद्रिणम्॥ ७॥
अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तं कार्ष्मन्ना वाज्यक्रमीत्ससवान्।
आ हिन्विरे मनसा देवयन्तः कक्षीवते शतहिमाय गोनाम्॥ ८॥
अद्भिः सोम पपृचानस्य ते रसोऽव्यो वारं वि पवमान धावति।
स मृज्यमानः कविभिर्मदिन्तम स्वदस्वेन्द्राय पवमान पीतये॥ ९॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४ निचृज्जगती; २ पादनिचृज्जगती; ५ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः ॥ १ ॥
ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः।
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं१ नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ॥ २ ॥
अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभिर्येमानः कोश आ हिरण्ययें।
अभीमृतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति ॥ ३ ॥
अद्रिभिः सुतो मतिभिश्चनोहितः प्ररोचयन्रोदसी मातरा शुचिः।
रोमाण्यव्या समया वि धावति मधोर्धारा पिन्वमाना दिवेदिवे ॥ ४ ॥
परि सोम प्र धन्वा स्वस्तये नृभिः पुनानो अभि वासयाशिरम्।
ये ते मदा आहनसो विहायसस्तेभिरिन्द्रं चोदय दातवे मघम् ॥ ५ ॥

इति सप्तमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ सप्तमाष्टके तृतीयोऽध्यायः

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ विराड्जगती; ३, ५ निचृज्जगती; ४ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१ धैवतः; २-५ निषादः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुते नदीष्वा ॥ १ ॥
शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वर्१षः सिषासन्रथिरो गविष्टिषु।
इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः ॥ २ ॥
इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश।
प्र णः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया न वाजाँ उप मासि शश्वतः ॥ ३ ॥
विश्वस्य राजा पवते स्वर्दृशं ऋतस्य धीतिमृषिषाळवीवशत्।
यः सूर्यस्यासिरेण मृज्यते पिता मतीनामसमष्टकाव्यः ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वृषेव यूथा परि कोशमर्षस्यपामुपस्थे वृषभः कनिक्रदत् ।
स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमो यथा जेषाम समिथे त्वोतयः ॥ ५ ॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ जगती; २, ४, ५ निचृज्जगती; ३ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः ।
अभीमृतस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः ॥ १ ॥
स पूर्व्यः पवते यं दिवस्परि श्येनो मथायदिषितस्तिरो रजः ।
स मध्व आ युवते वेविजान इत्कृशानोरस्तुर्मनसाह बिभ्युषा ॥ २ ॥
ते नः पूर्वीस उपरास इन्दवो महे वाजाय धन्वन्तु गोमते ।
ईक्षेण्यासो अह्यो३ न चारवो ब्रह्मब्रह्म ये जुजुषुर्हविर्हविः ॥ ३ ॥
अयं नो विद्वान्वनवद्वनुष्यत इन्दुः सत्राचा मनसा पुरुष्टुतः ।
इनस्य यः सदने गर्भमादधे गवामुरुब्जमभ्यर्षति व्रजम् ॥ ४ ॥
चक्रिर्दिवः पवते कृत्व्यो रसो महाँ अदब्धो वरुणो हुरुग्यते ।
असावि मित्रो वृजनेषु यज्ञियोऽत्यो न यूथे वृषयुः कनिक्रदत् ॥ ५ ॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २-४ जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

प्र राजा वाचं जनयन्नसिष्यदद्रपो वसानो अभि गा इयक्षति ।
गृभ्णाति रिप्रमविरस्य तान्वा शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम् ॥ १ ॥
इन्द्राय सोम परि षिच्यसे नृभिर्नृचक्षा ऊर्मिः कविरग्ज्यसे वने ।
पूर्वीर्हि ते स्रुतयः सन्ति यातवे सहस्रमश्वा हरयश्चमूषदः ॥ २ ॥
समुद्रिया अप्सरसो मनीषिणमासीना अन्तरभि सोममक्षरन् ।
ता ईं हिन्वन्ति हर्म्यस्य सक्षणिं याचन्ते सुम्नं पवमानमक्षितम् ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोजिन्नः सोमो रथजिद्धिरण्यजित्स्वर्जिदब्जित्पवते सहस्रजित्।
यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदं स्वादिष्ठं द्रप्समरुणं मयोभुवम्॥ ४॥
एतानि सोम पवमानो अस्मयुः सत्यानि कृण्वन्द्रविणान्यर्षसि।
जहि शत्रुमन्तिके दूरके च य उर्वीं गव्यूतिमभयं च नस्कृधि॥ ५॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कविः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ पादनिचृज्जगती; २, ४, ५ निचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ ४॥

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र सुवानासो बृहद्दिवेषु हरयः।
वि च नशन्न इषो अरातयोऽर्यो नशन्त सनिषन्त नो धियः॥ १॥
प्र णो धन्वन्त्विन्दवो मदच्युतो धना वा येभिरर्वतो जुनीमसि।
तिरो मर्तस्य कस्य चित्परिह्वृतिं वयं धनानि विश्वधा भरेमहि॥ २॥
उत स्वस्या अरात्या अरिर्हि ष उतान्यस्या अरात्या वृको हि षः।
धन्वन्न तृष्णा समरीत ताँ अभि सोम जहि पवमान दुराध्यः॥ ३॥
दिवि ते नाभा परमो य आददे पृथिव्यास्ते रुरुहुः सानवि क्षिपः।
अद्रयस्त्वा बप्सति गोरधि त्वचि प्सु त्वा हस्तैर्दुदुहुर्मनीषिणः॥ ४॥
एवा त इन्दो सुभ्वं सुपेशसं रसं तुञ्जन्ति प्रथमा अभिश्रियः।
निदंनिदं पवमान नि तारिष आविस्ते शुष्मो भवतु प्रियो मदः॥ ५॥

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुर्भारद्वाजः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४ जगती; २, ५ विराड्जगती; ३ निचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ ५॥

सोमस्य धारा पवते नृचक्षस ऋतेन देवान्हवते दिवस्परि।
बृहस्पतेरवथेना वि दिद्युते समुद्रासो न सवनानि विव्यचुः॥ १॥
यं त्वा वाजिन्नङ्ग्या अभ्यनूषतायोहतं योनिमा रोहसि द्युमान्।
मघोनामायुः प्रतिरन्महि श्रव इन्द्राय सोम पवसे वृषा मदः॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एन्द्रस्य कुक्षा पवते मदिन्तम ऊर्जं वसानः श्रवसे सुमङ्गलः।
प्रत्यङ् स विश्वा भुवनाभि पप्रथे क्रीळन्हरिरत्यः स्यन्दते वृषा॥ ३॥
तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं नरः सहस्रधारं दुहते दश क्षिपः।
नृभिः सोम प्रच्युतो ग्रावभिः सुतो विश्वान्देवाँ आ पवस्वा सहस्रजित्॥ ४॥
तं त्वा हस्तिनो मधुमन्तमद्रिभिर्दुहन्त्यप्सु वृषभं दश क्षिपः।
इन्द्रं सोम मादयन्दैव्यं जनं सिन्धोरिवोर्मिः पवमानो अर्षसि॥ ५॥

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुर्भारद्वाजः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-३ निचृज्जगती; ४ जगती; ५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५ धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

प्र सोमस्य पवमानस्योर्मय इन्द्रस्य यन्ति जठरं सुपेशसः।
दध्ना यदीमुन्नीता यशसा गवां दानाय शूरमुदमन्दिषुः सुताः॥ १॥
अच्छा हि सोमः कलशाँ असिष्यदत्यो न वोळ्हा रघुवर्तनिर्वृषा।
अथा देवानामुभयस्य जन्मनो विद्वाँ अश्नोत्यमुतं इतश्च यत्॥ २॥
आ नः सोम पवमानः किरा वस्विन्दो भव मघवा राधसो महः।
शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना मा नो गयमारे अस्मत्परा सिचः॥ ३॥
आ नः पूषा पवमानः सुरातयो मित्रो गच्छन्तु वरुणः सजोषसः।
बृहस्पतिर्मरुतो वायुरश्विना त्वष्टा सविता सुयमा सरस्वती॥ ४॥
उभे द्यावापृथिवी विश्वमिन्वे अर्यमा देवो अदितिर्विधाता।
भगो नृशंस उर्वन्तरिक्षं विश्वे देवाः पवमानं जुषन्त॥ ५॥

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुर्भारद्वाजः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४ विराड्जगती; २ निचृज्जगती; ३ जगती; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५ धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम्॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि।
अपसेधन्दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम्॥ २॥
पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे।
स्वसार आपो अभि गा उतासरन्त्सं ग्रावभिर्नसते वीते अध्वरे॥ ३॥
जायेव पत्यावधि शेव मंहसे पज्राया गर्भ शृणुहि ब्रवीमि ते।
अन्तर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसेऽनिन्द्यो वृजने सोम जागृहि॥ ४॥
यथा पूर्वेभ्यः शतसा अमृध्रः सहस्रसाः पर्यया वाजमिन्दो।
एवा पवस्व सुविताय नव्यसे तव व्रतमन्वापः सचन्ते॥ ५॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—पवित्रः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ४ निचृज्जगती; २, ५ विराड्जगती; ३ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत॥ १॥
तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन्।
अवन्त्यस्य पवीतारमाशवो दिवस्पृष्ठमधि तिष्ठन्ति चेतसा॥ २॥
अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा बिभर्ति भुवनानि वाजयुः।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः॥ ३॥
गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पाति देवानां जनिमान्यद्भुतः।
गृभ्णाति रिपुं निधया निधापतिः सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत॥ ४॥
हविर्हविष्मो महि सद्म दैव्यं नभो वसानः परि यास्यध्वरम्।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयसि श्रवो बृहत्॥ ५॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिर्वाच्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३ विराड्जगती; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ जगती; ५ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ४ निषादः; २, ५ धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

पवस्व देवमादनो विचर्षणिरप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे।
कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्तिमदुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम्॥ १ ॥
आ यस्तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति।
कृण्वन्त्संचृतं विचृतमभिष्टय इन्दुः सिषक्त्युषसं न सूर्यः॥ २ ॥
आ यो गोभिः सृज्यत ओषधीष्वा देवानां सुम्न इषयन्नुपावसुः।
आ विद्युता पवते धारया सुत इन्द्रं सोमो मादयन्दैव्यं जनम्॥ ३ ॥
एष स्य सोमः पवते सहस्रजिद्धिन्वानो वाचमिषिरामुषर्बुधम्।
इन्दुः समुद्रमुदियर्ति वायुभिरेन्द्रस्य हार्दि कलशेषु सीदति॥ ४ ॥
अभि त्यं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति मतिभिः स्वर्विदम्।
धनंजयः पवते कृत्व्यो रसो विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः॥ ५ ॥

[८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वेनो भार्गवः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ५, ९, १० विराड्जगती; २, ७ निचृज्जगती; ३ जगती; ४, ६ पादनिचृज्जगती; ८ आर्चीस्वराड्जगती; ११ भुरिक्त्रिष्टुप्; १२ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१० निषादः; ११, १२ धैवतः॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह।
मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः॥ १ ॥
अस्मान्त्समर्ये पवमान चोदय दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः।
जहि शत्रूँरभ्या भन्दनायतः पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि॥ २ ॥
अदब्ध इन्दो पवसे मदिन्तम आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुत्तमः।
अभि स्वरन्ति बहवो मनीषिणो राजानमस्य भुवनस्य निंसते॥ ३ ॥
सहस्रणीथः शतधारो अद्भुत इन्द्रायेन्दुः पवते काम्यं मधु।
जयन्क्षेत्रमभ्यर्षा जयन्नप उरुं नो गातुं कृणु सोम मीढ्वः॥ ४ ॥
कनिक्रदत्कलशे गोभिरज्यसे व्यव्ययं समया वारमर्षसि।
मर्मृज्यमानो अत्यो न सानसिरिन्द्रस्य सोम जठरे समक्षरः॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः॥ ६॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

अत्यं मृजन्ति कलशे दश क्षिपः प्र विप्राणां मतयो वाचं ईरते।
पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिमेन्द्रं विशन्ति मदिरास इन्दवः॥ ७॥
पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्यमुर्वीं गव्यूतिं महि शर्म सप्रथः।
माकिर्नो अस्य परिषूतिरीशतेन्दो जयेम त्वया धनंधनम्॥ ८॥
अधि द्यामस्थाद् वृषभो विचक्षणोऽरूरुचद्वि दिवो रोचना कविः।
राजा पवित्रमत्येति रोरुवद्दिवः पीयूषं दुहते नृचक्षसः॥ ९॥
दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतो वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम्।
अप्सु द्रप्सं वावृधानं समुद्र आ सिन्धोरूर्मा मधुमन्तं पवित्र आ॥ १०॥
नाके सुपर्णमुपपप्तिवांसं गिरो वेनानामकृपन्त पूर्वीः।
शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतं हिरण्ययं शकुनं क्षामणि स्थाम्॥ ११॥
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थाद्विश्वा रूपा प्रतिचक्षाणो अस्य।
भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यद्यौत्प्रारूरुचद्रोदसी मातरा शुचिः॥ १२॥

पञ्चमोऽनुवाकः [८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-१० अकृष्टा माषाः; ११-२० सिकता निवावरी; २१-३० पृश्नयोऽजाः; ३१-४० त्रय ऋषिगणाः; ४१-४५ अत्रिः; ४६-४८ गृत्समदः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ६, २१, २६, ३३, ४० जगती; २, ७, ८, ११, १२, १७, २०, २३, ३०, ३१, ३४-३६, ३८, ३९, ४२, ४४, ४७ विराड्जगती; ३-५, ९, १०, १३, १६, १८, १९, २२, २५, २७, ३२, ३७, ४१, ४६ निचृज्जगती; १४, १५, २८, २९, ४३, ४८ पाद-निचृज्जगती; २४ आर्चीजगती; ४५ आर्चीस्वराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

प्र त आशवः पवमान धीजवो मदा अर्षन्ति रघुजाइव त्मना।
दिव्याः सुपर्णा मधुमन्त इन्दवो मदिन्तमासः परि कोशमासते॥ १॥
प्र ते मदासो मदिरास आशवोऽसृक्षत रथ्यासो यथा पृथक्।
धेनुर्न वत्सं पयसाभि वज्रिणमिन्द्रमिन्दवो मधुमन्त ऊर्मयः॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष स्वर्वित्कोशं दिवो अद्रिमातरम् ।
वृषा पवित्रे अधि सानौ अव्यये सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ॥ ३ ॥
प्र त आश्विनीः पवमान धीजुवो दिव्या असृग्रन्पयसा धरीमणि ।
प्रान्तर्ऋषयः स्थाविरीरसृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः ॥ ४ ॥
विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोस्ते सतः परियन्ति केतवः ।
व्यानशिः पवसे सोम धर्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः ।
यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योना कलशेषु सीदति ॥ ६ ॥
यज्ञस्य केतुः पवते स्वध्वरः सोमो देवानामुप याति निष्कृतम् ।
सहस्रधारः परि कोशमर्षति वृषा पवित्रमत्येति रोरुवत् ॥ ७ ॥
राजा समुद्रं नद्यो३ वि गाहतेऽपामूर्मिं सचते सिन्धुषु श्रितः ।
अध्यस्थात्सानु पवमानो अव्ययं नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ॥ ८ ॥
दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदद् द्यौश्च यस्य पृथिवी च धर्मभिः ।
इन्द्रस्य सख्यं पवते विवेविदत्सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ॥ ९ ॥
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः ।
दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः ॥ १० ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अभिक्रन्दन्कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः ।
हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ॥ ११ ॥
अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षत्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छति ।
अग्रे वाजस्य भजते महाधनं स्वायुधः सोतृभिः पूयते वृषा ॥ १२ ॥
अयं मतवाञ्छकुनो यथा हितोऽव्ये ससार पवमान ऊर्मिणा ।
तव क्रत्वा रोदसी अन्तरा कवे शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रापिं वसानो यजतो दिविस्पृशमन्तरिक्षप्रा भुवनेष्वर्पितः ।
स्वर्जज्ञानो नभसाभ्यक्रमीत्प्रत्नमस्य पितरमा विवासति ॥ १४ ॥
सो अस्य विशे महि शर्म यच्छति यो अस्य धाम प्रथमं व्यानशे ।
पदं यदस्य परमे व्योमन्यतो विश्वा अभि सं याति संयतः ॥ १५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम् ।
मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयाम्ना पथा ॥ १६ ॥
प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवसनेष्वक्रमुः ।
सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभोऽभि धेनवः पयसेमशिश्रयुः ॥ १७ ॥
आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व पवमानो अस्त्रिधम् ।
या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यम् ॥ १८ ॥
वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अहः प्रतरीतोषसो दिवः ।
क्राणा सिन्धूनां कलशाँ अवीवशदिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः ॥ १९ ॥
मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशाँ अचिक्रदत् ।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरदिन्द्रस्य वायोः सख्याय कर्तवे ॥ २० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

अयं पुनान उषसो वि रोचयदयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत् ।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥ २१ ॥
पवस्व सोम दिव्येषु धामसु सृजान इन्दो कलशे पवित्र आ ।
सीदन्निन्द्रस्य जठरे कनिक्रदन्नृभिर्यतः सूर्यमारोहयो दिवि ॥ २२ ॥
अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र आँ इन्दविन्द्रस्य जठरेष्वाविशन् ।
त्वं नृचक्षा अभवो विचक्षण सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप ॥ २३ ॥
त्वां सोम पवमानं स्वाध्योऽनु विप्रासो अमदन्नवस्यवः ।
त्वां सुपर्ण आभरद्दिवस्परीन्दो विश्वाभिर्मतिभिः परिष्कृतम् ॥ २४ ॥
अव्ये पुनानं परि वार ऊर्मिणा हरिं नवन्ते अभि सप्त धेनवः ।
अपामुपस्थे अध्यायवः कविमृतस्य योना महिषा अहेषत ॥ २५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥ २६ ॥
असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥ २७ ॥
तवेमाः प्रजा दिव्यस्य रेतसस्त्वं विश्वस्य भुवनस्य राजसि।
अथेदं विश्वं पवमान ते वशे त्वमिन्दो प्रथमो धामधा असि ॥ २८ ॥
त्वं समुद्रो असि विश्ववित्कवे तवेमाः पञ्च प्रदिशो विधर्मणि।
त्वं द्यां च पृथिवीं चाति जभ्रिषे तव ज्योतींषि पवमान सूर्यः ॥ २९ ॥
त्वं पवित्रे रजसो विधर्मणि देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे।
त्वामुशिजः प्रथमा अगृभ्णत तुभ्येमा विश्वा भुवनानि येमिरे ॥ ३० ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

प्र रेभ एत्यति वारमव्ययं वृषा वनेष्ववं चक्रदद्धरिः।
सं धीतयो वावशाना अनूषत शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतम् ॥ ३१ ॥
स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे।
नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुप याति निष्कृतम् ॥ ३२ ॥
राजा सिन्धूनां पवते पतिर्दिव ऋतस्य याति पथिभिः कनिक्रदत्।
सहस्रधारः परि षिच्यते हरिः पुनानो वाचं जनयन्नुपावसुः ॥ ३३ ॥
पवमान महिषार्णो वि धावसि सूरो न चित्रो अर्व्ययानि पव्यया।
गभस्तिपूतो नृभिरद्रिभिः सुतो महे वाजाय धन्याय धन्वसि ॥ ३४ ॥
इषमूर्जं पवमानाभ्यर्षसि श्येनो न वंसु कलशेषु सीदसि।
इन्द्राय मद्वा मद्यो मदः सुतो दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः ॥ ३५ ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

सप्त स्वसारो अभि मातरः शिशुं नवं जज्ञानं जेन्यं विपश्चितम्।
अपां गन्धर्वं दिव्यं नृचक्षसं सोमं विश्वस्य भुवनस्य राजसे ॥ ३६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईशान इमा भुवनानि वीयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः।
तास्ते क्षरन्तु मधुमद् घृतं पयस्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः॥ ३७॥
त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि।
स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्वयं स्याम भुवनेषु जीवसे॥ ३८॥
गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्यविद्रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्पितः।
त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित्तं त्वा विप्रा उप गिरेम आसते॥ ३९॥
उन्मध्व ऊर्मिर्वननो अतिष्ठिपदपो वसानो महिषो वि गाहते।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहत्सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो बृहत्॥ ४०॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

स भन्दना उदियर्ति प्रजावतीर्विश्वायुर्विश्वाः सुभरा अहर्दिवि।
ब्रह्म प्रजावद्रयिमश्वपस्त्यं पीत इन्दविन्द्रमस्मभ्यं याचतात्॥ ४१॥
सो अग्रे अह्नां हरिर्हर्यतो मदः प्र चेतसा चेतयते अनु द्युभिः।
द्वा जना यातयन्नन्तरीयते नरा च शंसं दैव्यं च धर्तरि॥ ४२॥
अज्जते व्यज्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमासु गृभ्णते॥ ४३॥
विपश्चिते पवमानाय गायत महीं न धारामत्यन्धो अर्षति।
अहिर्न जूर्णामतिं सर्पति त्वचमत्यो न क्रीळन्नसरद् वृषा हरिः॥ ४४॥
अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः।
हरिर्घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः॥ ४५॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

असर्जि स्कम्भो दिव उद्यतो मदः परि त्रिधातुर्भुवनान्यर्षति।
अंशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतं गिरा यदि निर्णिजमृग्मिणो ययुः॥ ४६॥
प्र ते धारा अत्यण्वानि मेष्यः पुनानस्य संयतो यन्ति रंहयः।
यद्गोभिरिन्दो चम्वोः समज्यस आ सुवानः सोम कलशेषु सीदसि॥ ४७॥
पवस्व सोम क्रतुविन्न उक्थ्योऽव्यो वारे परि धाव मधु प्रियम्।
जहि विश्वान्रक्षस इन्दो अत्रिणो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः॥ ४८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—उशनाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ पादनिचृत् त्रिष्टुप्; ४, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ५-७, ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

प्र तु द्र॑व॒ परि॒ कोशं॒ नि षी॑द॒ नृभिः॑ पुना॒नो अ॒भि वाज॑मर्ष।
अश्वं॒ न त्वा॑ वा॒जिनं॑ म॒र्जय॒न्तोऽ च्छा॑ ब॒र्ही र॑श॒नाभि॑र्नयन्ति ॥ १ ॥
स्वा॒यु॒धः प॑वते दे॒व इन्दु॑रशस्ति॒हा वृ॒जनं॒ रक्ष॑माणः।
पि॒ता दे॒वानां॑ जनि॒ता सु॒दक्षो॑ विष्ट॒म्भो दि॒वो ध॒रुणः॑ पृथि॒व्याः ॥ २ ॥
ऋषि॒र्विप्रः॑ पुरए॒ता जना॑नामृ॒भुर्धीर॑ उ॒शना॒ काव्ये॑न।
स चि॑द्विवेद॒ निहि॑तं॒ यदा॑सामपी॒च्यं१॒॑ गुह्यं॒ नाम॒ गोना॑म् ॥ ३ ॥
ए॒ष स्य ते॒ मधु॑माँ इन्द्र॒ सोमो॒ वृषा॒ वृष्णे॒ परि॑ प॒वित्रे॑ अक्षाः।
स॒ह॒स्र॒साः श॑त॒सा भू॑रि॒दावा॑ शश्वत्त॒मं ब॒र्हिरा वा॒ज्य॑स्थात् ॥ ४ ॥
ए॒ते सोमा॑ अ॒भि ग॒व्या स॒हस्रा॑ म॒हे वाजा॑या॒मृता॑य॒ श्रवां॑सि।
प॒वित्रे॑भिः॒ पव॑माना असृग्रञ्छ्रव॒स्यवो॒ न पृ॑त॒नाजो॒ अत्याः॑ ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

परि॒ हि ष्मा॑ पुरुहू॒तो जना॑नां॒ विश्वास॑र॒द्भोज॑ना पू॒यमा॑नः।
अथा भ॑र श्येनभृत॒ प्रयां॑सि र॒यिं तुञ्जा॑नो अ॒भि वाज॑मर्ष ॥ ६ ॥
ए॒ष सु॑वा॒नः परि॒ सोमः॑ प॒वित्रे॒ सर्गो॒ न सृ॒ष्टो अ॑दधाव॒दर्वा॑।
ति॒ग्मे शिशा॑नो महि॒षो न शृङ्गे॒ गा ग॒व्यन्न॒भि शूरो॒ न सत्वा॑ ॥ ७ ॥
ए॒षा य॑यौ पर॒माद॒न्तरद्रेः॒ कूचि॑त्स॒तीरू॒र्वे गा वि॑वेद।
दि॒वो न वि॒द्युत्स्त॒नय॑न्त्य॒भ्रैः सोम॑स्य ते पवत इन्द्र॒ धारा॑ ॥ ८ ॥
उ॒त स्म॑ रा॒शिं परि॑ यासि॒ गोना॒मिन्द्रे॑ण सोम स॒रथं॑ पुना॒नः।
पू॒र्वीरिषो॑ बृह॒तीर्जी॑रदानो॒ शिक्षा॑ शचीव॒स्तव॒ ता उ॑प॒ष्टुत् ॥ ९ ॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—उशनाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ सतःपङ्क्तिः; २, ४, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-८ धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि।
त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम् ॥ १ ॥
स ईं रथो न भुरिषाळयोजि महः पुरूणि सातये वसूनि।
आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त ॥ २ ॥
वायुर्न यो नियुत्वाँ इष्टयामा नासत्येव हव आ शंभविष्ठः।
विश्ववारो द्रविणोदाइव त्मन्पूषेव धीजवनोऽसि सोम ॥ ३ ॥
इन्द्रो न यो महा कर्माणि चक्रिर्हन्ता वृत्राणामसि सोम पूर्भित्।
पैद्वो न हि त्वमहिनाम्नां हन्ता विश्वस्यासि सोम दस्योः ॥ ४ ॥
अग्निर्न यो वन आ सृज्यमानो वृथा पाजांसि कृणुते नदीषु।
जनो न युध्वा महत उपब्दिरियर्ति सोमः पवमान ऊर्मिम् ॥ ५ ॥
एते सोमा अति वाराण्यव्या दिव्या न कोशासो अभ्रवर्षाः।
वृथा समुद्रं सिन्धवो न नीचीः सुतासो अभि कलशाँ असृग्रन् ॥ ६ ॥
शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वानभिशस्ता दिव्या यथा विट्।
आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्त्राप्साः पृतनाषाण्न यज्ञः ॥ ७ ॥
राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्भीरं तव सोम धाम।
शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम ॥ ८ ॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—उशनाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ६ त्रिष्टुप्; ३, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

प्रो स्य वह्निः पथ्याभिरस्यान्दिवो न वृष्टिः पवमानो अक्षाः।
सहस्त्रधारो असदन्न्यस्मे मातुरुपस्थे वन आ च सोमः ॥ १ ॥
राजा सिन्धूनामवसिष्ट वास ऋतस्य नावमारुहद्रजिष्ठाम्।
अप्सु द्रप्सो वावृधे श्येनजूतो दुह ईं पिता दुह ईं पितुर्जाम् ॥ २ ॥
सिंहं नसन्त मध्वो अयासं हरिमरुषं दिवो अस्य पतिम्।
शूरो युत्सु प्रथमः पृच्छते गा अस्य चक्षसा परि पात्युक्षा ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुपृष्ठं घोरमयासमश्वं रथे युञ्जन्त्युरुचक्रं ऋष्वम्।
स्वसार ईं जामयो मर्जयन्ति सनाभयो वाजिनमूर्जयन्ति॥ ४॥
चतस्र ईं घृतदुहः सचन्ते समाने अन्तर्धरुणे निषत्ताः।
ता ईमर्षन्ति नमसा पुनानास्ता ईं विश्वतः परि षन्ति पूर्वीः॥ ५॥
विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या विश्वा उत क्षितयो हस्ते अस्य।
असत्त उत्सो गृणते नियुत्वान्मध्वो अंशुः पवत इन्द्रियाय॥ ६॥
वन्वन्नवातो अभि देववीतिमिन्द्राय सोम वृत्रहा पवस्व।
शग्धि महः पुरुश्चन्द्रस्य रायः सुवीर्यस्य पतयः स्याम॥ ७॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४ त्रिष्टुप्; २, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिष्यन्नयासीत्।
इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः॥ १॥
अभि त्रिषृष्ठं वृषणं वयोधामाङ्गूषाणामवावशन्त वाणीः।
वना वसानो वरुणो न सिन्धून्वि रत्नधा दयते वार्याणि॥ २॥
शूरग्रामः सर्ववीरः सहावाञ्जेता पवस्व सनिता धनानि।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वसाळहः साह्वान्पृतनासु शत्रून्॥ ३॥
उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन्त्समीचीने आ पवस्वा पुरन्धी।
अपः सिषासन्नुषसः स्वर्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान्॥ ४॥
मत्सि सोम वरुणं मत्सि मित्रं मत्सीन्द्रमिन्दो पवमान विष्णुम्।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान्मत्सि महामिन्द्रमिन्दो मदाय॥ ५॥
एवा राजेव क्रतुमाँ अमेन विश्वा घनिघ्नदुरिता पवस्व।
इन्दो सूक्ताय वचसे वयो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ६॥

इति सप्तमाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः

[९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमो मनीषी।
दश स्वसारो अधि सानो अव्येऽजन्ति वह्निं सदनान्यच्छ॥ १ ॥
वीतो जनस्य दिव्यस्य कव्यैरधि सुवानो नहुष्येभिरिन्दुः।
प्र यो नृभिरमृतो मर्त्येभिर्मर्मृजानोऽविभिर्गोभिरद्भिः ॥ २ ॥
वृषा वृष्णे रोरुवदंशुरस्मै पवमानो रुशदीर्ते पयो गोः।
सहस्रमृक्वा पथिभिर्वचोविदध्वस्मभिः सूरो अण्वं वि याति॥ ३ ॥
रुजा दृळहा चिद्रक्षसः सदांसि पुनान इन्द ऊर्णुहि वि वाजान्।
वृश्चोपरिष्टात्तुजता वधेन ये अन्ति दूरादुपनायमेषाम्॥ ४ ॥
स प्रत्नवन्नव्यसे विश्ववार सूक्ताय पथः कृणुहि प्राचः।
ये दुष्पहासो वनुषा बृहन्तस्ताँस्ते अश्याम पुरुकृत्पुरुक्षो॥ ५ ॥
एवा पुनानो अपः स्वर्गा अस्मभ्यं तोका तनयानि भूरि।
शं नः क्षेत्रमुरु ज्योतींषि सोम ज्योङ् नः सूर्यं दृशये रिरीहि॥ ६ ॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

परि सुवानो हरिरंशुः पवित्रे रथो न सर्जि सनये हियानः।
आपच्छ्लोकमिन्द्रियं पूयमानः प्रति देवाँ अजुषत प्रयोभिः॥ १ ॥
अच्छा नृचक्षा असरत्पवित्रे नाम दधानः कविरस्य योनौ।
सीदन्होतेव सदने चमूषूपेमग्मन्नृषयः सप्त विप्राः ॥ २ ॥
प्र सुमेधा गातुविद्विश्वदेवः सोमः पुनानः सद एति नित्यम्।
भुवद्विश्वेषु काव्येषु रन्तानु जनान्यतते पञ्च धीरः॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव॒ त्ये सो॑म पवमान नि॒ण्ये विश्वे॑ दे॒वास्त्रय॑ एकाद॒शासः॑।
दश॑ स्व॒धाभि॒रधि॒ सानो॒ अव्ये॑ मृ॒जन्ति॑ त्वा न॒द्यः॑ स॒प्त य॒ह्वीः॥ ४॥
तन्नु स॒त्यं पव॑मानस्यास्तु॒ यत्र॒ विश्वे॑ का॒रवः॑ सं॒नस॑न्त।
ज्योति॒र्यदह्ने॒ अकृ॑णोदु लो॒कं प्राव॒न्मनुं॒ दस्य॑वे कर॒भीक॑म्॥ ५॥
परि॒ सद्मे॑व पशु॒मान्ति॒ होता॒ राजा॒ न स॒त्यः समि॑तीरिया॒नः।
सोमः॑ पुना॒नः क॒लशाँ॑ अयासी॒त्सीद॑न्मृ॒गो न म॑हि॒षो वने॑षु॥ ६॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नोधाः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

सा॒क॒मुक्षो॑ मर्जयन्त॒ स्वसा॑रो॒ दश॒ धीर॑स्य धी॒तयो॒ धनु॑त्रीः।
हरि॒ः पर्य॑द्रव॒ज्जाः सूर्य॑स्य॒ द्रोणं॑ ननक्षे॒ अत्यो॒ न वा॒जी॥ १॥
सं मा॒तृभि॒र्न शिशु॑र्वावशा॒नो वृषा॑ दधन्वे पुरु॒वारो॑ अ॒द्भिः।
मर्यो॒ न योषा॑म॒भि नि॑ष्कृ॒तं यन्त्सं ग॑च्छते क॒लश॑ उ॒स्त्रिया॑भिः॥ २॥
उ॒त प्र पि॑प्य॒ ऊध॒रघ्न्या॑या॒ इन्दु॒र्धारा॑भिः सचते सुमे॒धाः।
मू॒र्धानं॒ गावः॒ पय॑सा च॒मूष्व॒भि श्री॑णन्ति॒ वसु॑भि॒र्न नि॒क्तैः॥ ३॥
स नो॑ दे॒वेभिः॑ पवमान र॒देन्दो॑ र॒यिम॒श्विनं॑ वावशा॒नः।
र॒थि॒रा॒यता॑मुश॒ती पुर॑न्धिरस्म॒द्र्य१॒॑गा दा॒वने॒ वसू॑नाम्॥ ४॥
नू नो॑ र॒यिमुप॑ मास्व नृ॒वन्तं॑ पुना॒नो वा॒ताप्यं॑ वि॒श्वश्च॑न्द्रम्।
प्र व॑न्दि॒तुरि॑न्दो ता॒र्यायुः॑ प्रा॒तर्म॒क्षू धि॒याव॑सुर्जगम्यात्॥ ५॥

[९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—कण्वः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ३, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ४ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

अधि॒ यद॑स्मिन्वा॒जिनी॑व॒ शुभः॒ स्पर्ध॑न्ते॒ धियः॒ सूर्ये॒ न विशः॑।
अ॒पो वृ॑णा॒नः प॑वते कवी॒यन्व्र॒जं न प॑शु॒वर्ध॑नाय॒ मन्म॑॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विता व्यूर्ण्वन्नमृतस्य धाम स्वर्विदे भुवनानि प्रथन्त।
धियः पिन्वानाः स्वसरे न गाव ऋतायन्तीरभि वावश्र इन्दुम्॥ २॥
परि यत्कविः काव्या भरते शूरो न रथो भुवनानि विश्वा।
देवेषु यशो मर्तीय भूषन्दक्षाय रायः पुरुभूषु नव्यः॥ ३॥
श्रियें जातः श्रिय आ निरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन्भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ॥ ४॥
इषमूर्जमभ्यर्षाश्वं गामुरु ज्योतिः कृणुहि मत्सि देवान्।
विश्वानि हि सुषहा तानि तुभ्यं पवमान बाधसे सोम शत्रून्॥ ५॥

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रस्कण्वः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ संस्तारपङ्क्तिः; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-५ धैवतः; २ पञ्चमः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन्वनस्य जठरे पुनानः।
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गा अतो मतीर्जनयत स्वधाभिः॥ १॥
हरिः सृजानः पथ्यामृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम्।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे॥ २॥
अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ।
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चा च विशन्त्युशतीरुशन्तम्॥ ३॥
तं मर्मृजानं महिषं न सानावंशुं दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम्।
तं वावशानं मतयः सचन्ते त्रितो बिभर्ति वरुणं समुद्रे॥ ४॥
इष्यन्वाचमुपवक्तेव होतुः पुनान इन्दो वि ष्या मनीषाम्।
इन्द्रश्च यत्क्षयथः सौभगाय सुवीर्यस्य पतयः स्याम॥ ५॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ३, ११, १२, १४, १९, २३, त्रिष्टुप्; २, १७ विराट्त्रिष्टुप्; ४-१०, १३, १५, १८, २१, २४ निचृत्त्रिष्टुप्; १६ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; २०, २२ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना।
भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥ १ ॥
समस्य हरिं हरयो मृजन्त्यश्वहयैरनिशितं नमोभिः।
आ तिष्ठति रथमिन्द्रस्य सखा विद्वाँ एना सुमतिं यात्यच्छ ॥ २ ॥
स नो देव देवतांते पवस्व महे सोम प्सरस इन्द्रपानः।
कृण्वन्नपो वर्षयन्द्यामुतेमामुरोरा नो वरिवस्या पुनानः ॥ ३ ॥
अजीतयेऽहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते ।
तदुशन्ति विश्व इमे सखायस्तद्दहं वश्मि पवमान सोम ॥ ४ ॥
सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्।
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥ ६ ॥
प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिरः सोमः पवमानो मनीषाः।
अन्तः पश्यन्वृजनेमावराण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन् ॥ ७ ॥
स मत्सरः पृत्सु वन्वन्नवातः सहस्ररेता अभि वाजमर्ष।
इन्द्रायेन्दो पवमानो मनीष्यंशोरूर्मिमीरय गा इषण्यन् ॥ ८ ॥
परि प्रियः कलशे देववात इन्द्राय सोमो रण्यो मदाय।
सहस्रधारः शतवाज इन्दुर्वाजी न सप्तिः समना जिगाति ॥ ९ ॥
स पूर्व्यो वसुविज्जायमानो मृजानो अप्सु दुदुहानो अद्रौ।
अभिशस्तिपा भुवनस्य राजा विदद्गातुं ब्रह्मणे पूयमानः ॥ १० ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः।
वन्वन्नवातः परिधीँरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यथापवथा मनवे वयोधा अमित्रहा वरिवोविद्भविष्मान्।
एवा पवस्व द्रविणं दधान इन्द्रे सं तिष्ठ जनयायुधानि॥ १२॥
पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये।
अव द्रोणानि घृतवान्ति सीद मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः॥ १३॥
वृष्टिं दिवः शतधारः पवस्व सहस्रसा वाजयुर्देववीतौ।
सं सिन्धुभिः कलशे वावशानः समुस्रियाभिः प्रतिरन्न आयुः॥ १४॥
एष स्य सोमो मतिभिः पुनानोऽत्यो न वाजी तरतीदरातीः।
पयो न दुग्धमदितेरिषिरमुर्विव गातुः सुयमो न वोळ्हा॥ १५॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

स्वायुधः सोतृभिः पूयमानोऽभ्यर्ष गुह्यं चारु नाम।
अभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्याभि वायुमभि गा देव सोम॥ १६॥
शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन।
कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ १७॥
ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम्।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप्॥ १८॥
चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति॥ १९॥
मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानोऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम्।
वृषेव यूथा परि कोशमर्षन्कनिक्रदच्चम्वोरा विवेश॥ २०॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

पवस्वेन्दो पवमानो महोभिः कनिक्रदत्परि वाराण्यर्ष।
क्रीळञ्चम्वोरा विश पूयमान इन्द्रं ते रसो मदिरो ममत्तु॥ २१॥
प्रास्य धारा बृहतीरसृग्रन्वक्तो गोभिः कलशाँ आ विवेश।
साम कृण्वन्त्सामन्यो विपश्चित्क्रन्दन्नेत्यभि सख्युर्न जामिम्॥ २२॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप॒घ्नन्नेषि पवमान॒ शत्रू॒न्प्रियां॒ न जा॒रो अ॒भिगी॑त॒ इन्दुः॑।
सीद॒न्वनेषु॒ शकु॑नो॒ न पत्वा॒ सोमः॑ पुना॒नः क॒लशे॑षु॒ सत्ता॑॥ २३॥
आ ते॒ रुच॒: पव॑मानस्य सोम॒ योषे॑व॒ यन्ति॑ सु॒दुघा॑: सु॒धा॒राः।
हरि॒रानी॑तः पुरु॒वारो॑ अ॒प्स्वचि॑क्रदत्क॒लशे॑ देवयू॒नाम्॥ २४॥

षष्ठोऽनुवाकः [९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ वसिष्ठः; ४-६ इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः; ७-९ वृषगणो वासिष्ठः; १०, ११, १२ मन्युर्वासिष्ठः; १३-१५ उपमन्युर्वासिष्ठः; १६-१८ व्याघ्रपाद्वासिष्ठः; १९, २०, २१ शक्तिर्वासिष्ठः; २२-२४ कर्ण-श्रुद्वासिष्ठः; २५-२७ मृळीको वासिष्ठः; २८, २९, ३० वसुक्रोवासिष्ठः; ३१-४४ पराशरः शाक्तः; ४५-५८ कुत्सः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ६, १०, १२, १४, १५, १९, २१, २५, २६, ३२, ३६, ३८, ३९, ४५, ४६, ५२, ५४, ५६ निचृत् त्रिष्टुप्; २-४, ७, ८, ११, १६, १७, २०, २३, २४, ३३, ४८, ५३ विराट्-त्रिष्टुप्; ५, ९, १३, २२, २७-३०, ३४, ३५, ३७, ४२-४४, ४७, ५७, ५८ त्रिष्टुप्; १८, ४१, ५०, ५१, ५५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ३१, ४९ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ४० भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

अ॒स्य प्रेषा॒ हेम॑ना॒ पूय॑मानो॒ दे॒वो दे॒वेभि॒: सम॑पृक्त॒ रस॑म्।
सु॒तः प॒वित्रं॑ पर्ये॑ति॒ रेभ॑न्मि॒तेव॒ सद्म॑ पशु॒मान्ति॑ होता॥ १॥
भ॒द्रा वस्त्रा॑ स॒मन्या॒३॒॑ वसा॑नो म॒हान्क॒विर्नि॒वच॑नानि॒ शंस॑न्।
आ व॑च्यस्व च॒म्वो॑: पू॒यमा॑नो विचक्ष॒णो जागृ॑विर्दे॒ववी॑तौ॥ २॥
सम॑ु प्रि॒यो मृ॑ज्यते॒ सानो॒ अव्ये॒ य॒शस्त॑रो य॒शसां॑ क्षै॒तो अ॒स्मे।
अ॒भि स्व॑र॒ धन्वा॑ पू॒यमा॑नो॒ यूयं पा॑त स्व॒स्ति॒भि॒: सदा॑ नः॥ ३॥
प्र गा॑यता॒भ्य॑र्चाम दे॒वान्त्सोमं॑ हिनोत मह॒ते धना॑य।
स्वा॒दुः प॑वाते॒ अति॒ वार॑मव्य॒मा सीदा॑ति क॒लशं॑ देव॒युर्न॑ः॥ ४॥
इन्दु॑र्दे॒वाना॒मुप॑ स॒ख्यमा॑यन्त्स॒हस्र॑धारः पवते॒ मदा॑य।
नृभि॒: स्तवा॑नो॒ अनु॒ धाम॒ पूर्व॑मग॒न्निन्द्रं॑ मह॒ते सौभ॑गाय॥ ५॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

स्तोत्रे॒ रा॒ये हरि॑रर्षा पुना॒न इन्द्रं॒ मदो॑ गच्छतु॒ ते॒ भरा॑य।
दे॒वैर्या॑हि स॒रथं॑ रा॒धो॒ अच्छा॑ यूयं पा॑त स्व॒स्ति॒भि॒: सदा॑ नः॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन्॥ ७॥
प्र हंसासस्तृपलं मन्युमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः।
आङ्गूष्यं पवमानं सखायो दुर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम्॥ ८॥
स रंहत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीळन्तं मिमते न गावः।
परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः॥ ९॥
इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातीर्वरिवः कृण्वन्वृजनस्य राजा॥ १०॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोमं पवते अद्रिदुग्धः।
इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय॥ ११॥
अभि प्रियाणि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन्।
इन्दुर्धर्मीण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये॥ १२॥
वृषा शोणो अभिकनिक्रदद्गा नदयन्नेति पृथिवीमुत द्याम्।
इन्द्रस्येव वग्गुरा शृण्व आजौ प्रचेतयन्नर्षति वाचमेमाम्॥ १३॥
रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम्।
पवमानः सन्तनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः॥ १४॥
एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन्वधस्नैः।
परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः॥ १५॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

जुष्टी नं इन्दो सुपथा सुगान्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन्।
घनेव विष्वग्दुरितानि विघ्नन्नधि ष्णुना धन्व सानो अव्ये॥ १६॥
वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां जिगत्नुमिळावतीं शंगयीं जीरदानुम्।
स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन्बन्धूँरिमाँ अवराँ इन्दो वायून्॥ १७॥
ग्रन्थिं न वि ष्य ग्रथितं पुनान ऋजुं च गातुं वृजिनं च सोम।
अत्यो न क्रदो हरिरा सृजानो मर्यो देव धन्व पस्त्यावान्॥ १८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुष्टो॒ मदा॑य दे॒वता॑त इन्दो॒ परि॒ ष्णुना॑ धन्व॒ सानो॒ अव्ये॑।
स॒हस्र॑धारः सु॒र॒भिरदब्धः॒ परि॑ स्रव॒ वाज॑सातौ नृषह्ये॑॥ १९॥
अ॒र॒श्मानो॒ येऽर॒था अयु॑क्ता॒ अत्या॑सो॒ न स॑सृजा॒नास॑ आ॒जौ।
ए॒ते शु॒क्रासो॑ धन्वन्ति॒ सोमा॒ देवा॑स॒स्ताँ उप॑ याता॒ पिब॑ध्यै॥ २०॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

ए॒वा न॑ इन्दो अ॒भि दे॒ववी॑तिं॒ परि॑ स्रव॒ नभो॒ अर्णश्च॒मूषु॑।
सोमो॑ अ॒स्मभ्यं॒ काम्यं॑ बृ॒हन्तं॑ र॒यिं द॑दातु वी॒रव॑न्तमु॒ग्रम्॥ २१॥
तक्षद्यदी॒ मन॑सो॒ वेन॑तो॒ वाग्ज्येष्ठ॑स्य वा॒ धर्म॑णि॒ क्षोर॑नीके।
आदी॑माय॒न्वर॒मा वा॑वशा॒ना जु॒ष्टं पतिं॑ क॒लशे॒ गाव॒ इन्दु॑म्॥ २२॥
प्र दा॑नु॒दो दि॒व्यो दा॑नुपि॒न्व ऋ॒तमृ॒ताय॑ पवते सुमे॒धाः।
धर्मा॑ भुवद् वृजन्य॑स्य॒ राजा॒ प्र र॒श्मिभि॑र्द॒शभि॑र्भा॒रि भूम॑॥ २३॥
प॒वित्रे॑भिः पव॑मानो नृचक्षा॒ राजा॑ दे॒वाना॑मुत मर्त्या॑नाम्।
द्वि॒ता भु॑वद्रयि॒पती॑ र॒यी॒णाम॒मृतं॑ भर॒त्सुभृ॑तं॒ चार्वि॑न्दुः॥ २४॥
अवाँ॑ इव॒ श्रव॑से सा॒तिम॑च्छे॒न्द्रस्य॒ वा॒योर॒भि वी॒तिम॑र्ष।
स नः॑ स॒हस्रा॑ बृ॒हती॑रिषो॑ दा॒ भवा॑ सोम द्रविणो॒वित्पु॑ना॒नः॥ २५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

दे॒वा॒व्यो॑ नः परिषि॒च्यमा॑ना॒ः क्षय॑ं सु॒वीर॑ं धन्वन्तु सोमा॑ः।
आ॒य॒ज्यव॑ः सु॒म॒तिं वि॒श्ववा॑रा॒ होता॑रो॒ न दि॑वि॒यजो॑ म॒न्द्रत॑माः॥ २६॥
ए॒वा दे॑व दे॒वता॑ते पवस्व म॒हे सो॑म॒ प्सर॑से देव॒पान॑ः।
म॒हश्चि॒द्धि ष्मसि॑ हि॒ताः सम॒र्ये कृ॑धि सु॒ष्ठा॒ने रोद॑सी पुना॒नः॥ २७॥
अश्वो॒ न क्रदो॒ वृष॑भिर्युजा॒नः सिं॒हो न भी॒मो मन॑सो॒ जवी॑यान्।
अ॒र्वा॒ची॒नैः प॒थिभि॒र्ये र॑जि॒ष्ठा आ प॑वस्व सौमन॒सं न॑ इन्दो॥ २८॥
श॒तं धारा॑ दे॒वजा॑ता असृग्रन्त्स॒हस्र॑मेनाः क॒वयो॑ मृजन्ति।
इन्दो॑ स॒नित्र॑ं दि॒व आ प॑वस्व पुरए॒तासि॑ महृ॒तो धन॑स्य॥ २९॥
दि॒वो न सर्गा॑ असस॒ृग्रम॒ह्नां राजा॒ न मि॒त्रं प्र मि॑नाति॒ धीरः॑।
पि॒तुर्न पु॒त्रः क्रतु॑भिर्यता॒न आ प॑वस्व वि॒शे अ॒स्या अजी॑तिम्॥ ३०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन्वाराꣳअत्येष्यव्यान् ।
पवमान पवसे धाम गोनां जज्ञानः सूर्यमपिन्वो अर्कैः ॥ ३१ ॥
कनिक्रददनु पन्थामृतस्य शुक्रो वि भास्यमृतस्य धाम ।
स इन्द्राय पवसे मत्सरवान्हिन्वानो वाचं मतिभिः कवीनाम् ॥ ३२ ॥
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि सोम पिन्वन्धाराः कर्मणा देववीतौ ।
एन्दो विश कलशꣳ सोमधानं क्रन्दन्निहि सूर्यस्योपꣳ रश्मिम् ॥ ३३ ॥
तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥ ३४ ॥
सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः ।
सोमः सुतः पूयते अज्यमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते ॥ ३५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।
इन्द्रमा विश बृहता रवेण वर्धया वाचं जनया पुरन्धिम् ॥ ३६ ॥
आ जागृविर्विप्र ऋता मतीनां सोमः पुनानो असदच्चमूषु ।
सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः ॥ ३७ ॥
स पुनान उप सूरे न धातोभे अप्रा रोदसी वि ष आवः ।
प्रिया चिद्यस्य प्रियसास ऊती स तू धनं कारिणे न प्र यꣳसत् ॥ ३८ ॥
स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वाँ अभि नो ज्योतिषावीत् ।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिमुष्णन् ॥ ३९ ॥
अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्प्रजा भुवनस्य राजा ।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे सुवान इन्दुः ॥ ४० ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान् ।
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥ ४१ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत्सि वायुमिष्टये राधसे च मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः।
मत्सि शर्धो मारुतं देवान्मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम॥ ४२॥
ऋजुः पवस्व वृजिनस्य हन्तापामीवां बाधमानो मृधश्च।
अभिश्रीणन्पयः पयसाभि गोनामिन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः॥ ४३॥
मध्वः सूदं पवस्व वस्व उत्सं वीरं च न आ पवस्वा भगं च।
स्वदस्वेन्द्राय पवमान इन्दो रयिं च न आ पवस्वा समुद्रात्॥ ४४॥
सोमः सुतो धारयात्यो न हित्वा सिन्धुर्न निम्नमभि वाज्यक्षाः।
आ योनिं वन्यमसदत्पुनानः समिन्दुर्गोभिरसरत्समद्भिः॥ ४५॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

एष स्य ते पवत इन्द्र सोमश्चमूषु धीर उशते तवस्वान्।
स्वर्चक्षा रथिरः सत्यशुष्मः कामो न यो देवयतामसर्जि॥ ४६॥
एष प्रत्नेन वयसा पुनानस्तिरो वर्पांसि दुहितुर्दधानः।
वसानः शर्म त्रिवरूथमप्सु होतेव याति समनेषु रेभन्॥ ४७॥
नू नस्त्वं रथिरो देव सोम परि स्रव चम्वोः पूयमानः।
अप्सु स्वादिष्ठो मधुमाँ ऋतावा देवो न यः सविता सत्यमन्मा॥ ४८॥
अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि मित्रावरुणा पूयमानः।
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठामभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम्॥ ४९॥
अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः।
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान्रथिनो देव सोम॥ ५०॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः।
अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यर्षेयं जमदग्निवन्नः॥ ५१॥
अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व।
ब्रध्नश्चिदत्र वातो न जूतः पुरुमेधश्चित्तकवे नरं दात्॥ ५२॥
उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे।
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद्रणाय॥ ५३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीमे अस्य वृषनाम शूषे माँश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे।
अस्वापयन्निगुतः स्नेहयच्चापामित्राँ अपाचितो अचेतः ॥५४॥
सं त्री पवित्रा विततान्येष्यन्वेकं धावसि पूयमानः ।
असि भगो असि दात्रस्य दातासि मघवा मघवद्भ्य इन्दो ॥५५॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

एष विश्ववित्पवते मनीषी सोमो विश्वस्य भुवनस्य राजा।
द्रप्साँ ईरयन्विदथेष्विन्दुर्वि वारमव्यं समयाति याति ॥५६॥
इन्दुं रिहन्ति महिषा अदब्धाः पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः।
हिन्वन्ति धीरा दशभिः क्षिपाभिः समञ्जते रूपमपां रसेन ॥५७॥
त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥५८॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अम्बरीष ऋजिष्वा च॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २, ४, ७, १० अनुष्टुप्; ३, ५, ९ निचृदनुष्टुप्; ६, १२ विराडनुष्टुप्; ८ आर्चीस्वराडनुष्टुप्; ११ निचृद्बृहती॥ स्वरः—१-१०, १२ गान्धारः; ११ मध्यमः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अभि नो वाजसातमं रयिमर्ष पुरुस्पृहम् ।
इन्दो सहस्त्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभ्वासहम् ॥१॥
परि ष्य सुवानो अव्ययं रथे न वर्मीव्यत ।
इन्दुरभि द्रुणा हितो हियानो धाराभिरक्षाः ॥२॥
परि ष्य सुवानो अक्षा इन्दुरव्ये मदच्युतः ।
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा नैति गव्ययुः ॥३॥
स हि त्वं देव शश्वते वसु मर्तीय दाशुषे ।
इन्दो सहस्त्रिणं रयिं शतात्मानं विवाससि ॥४॥
वयं ते अस्य वृत्रहन्वसो वस्वः पुरुस्पृहः ।
नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्नस्याध्रिगो ॥५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विर्यं पञ्च स्वयशसं स्वसारो अद्रिसंहतम् ।
प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त्यूर्मिणम् ॥ ६ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
यो देवान्विश्वाँ इत्परि मदेन सह गच्छति ॥ ७ ॥
अस्य वो ह्यवसा पान्तो दक्षसाधनम् ।
यः सूरिषु श्रवो बृहद्दधे स्वर्ण हर्यतः ॥ ८ ॥
स वां यज्ञेषु मानवी इन्दुर्जनिष्ट रोदसी ।
देवो देवी गिरिष्ठा अस्त्रेधन्तं तुविष्वणिं ॥ ९ ॥
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे ।
नरे च दक्षिणावते देवाय सदनासदे ॥ १० ॥
ते प्रत्नासो व्युष्टिषु सोमाः पवित्रे अक्षरन् ।
अपप्रोथन्तः सनुतर्दुरश्चितः प्रातस्ताँ अप्रचेतसः ॥ ११ ॥
तं सखायः पुरोरुचं यूयं वयं च सूरयः ।
अश्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् ॥ १२ ॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—रेभसूनू काश्यपौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ विराड्बृहती; २, ३, ५, ६ अनुष्टुप्; ४, ७, ८ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २-८ गान्धारः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

आ हर्यताय धृष्णवे धनुस्तन्वन्ति पौंस्यम् ।
शुक्रां वयन्त्यसुराय निर्णिजं विपामग्रे महीयुवः ॥ १ ॥
अध क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहते ।
यदी विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे ॥ २ ॥
तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः ।
यं गाव आसभिर्दधुः पुरा नूनं च सूरयः ॥ ३ ॥
तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत ।
उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमुक्षमाणमव्यये वारे पुनन्ति धर्णसिम् ।
दूतं न पूर्वचित्तय आ शासते मनीषिणः ॥ ५ ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

स पुनानो मदिन्तमः सोमश्चमूषु सीदति ।
पशौ न रेत आदधत्पतिर्वचस्यते धियः ॥ ६ ॥
स मृज्यते सुकर्मभिर्देवो देवेभ्यः सुतः ।
विदे यदासु सन्दृदिर्महीरपो वि गाहते ॥ ७ ॥
सुत इन्दो पवित्र आ नृभिर्यतो वि नीयसे ।
इन्द्राय मत्सरिन्तमश्चमूष्वा नि षीदसि ॥ ८ ॥

[१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—रेभसूनू काश्यपौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ४, ७, ९ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ५, ६, ८ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः ॥ १ ॥
पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम् ।
त्वं वसूनि पुष्यसि विश्वानि दाशुषो गृहे ॥ २ ॥
त्वं धियं मनोयुजं सृजा वृष्टिं न तन्यतुः ।
त्वं वसूनि पार्थिवा दिव्या च सोम पुष्यसि ॥ ३ ॥
परि ते जिग्युषो यथा धारा सुतस्य धावति ।
रंहमाणा व्यव्ययं वारं वाजीव सानसिः ॥ ४ ॥
क्रत्वे दक्षाय नः कवे पवस्व सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतो मित्राय वरुणाय च ॥ ५ ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

पवस्व वाजसातमः पवित्रे धारया सुतः ।
इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तमः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वां रिहन्ति मातरो हरिं पवित्रे अद्रुहः ।
वत्सं जातं न धेनवः पवमान विधर्मणि ॥ ७ ॥
पवमान महि श्रवश्चित्रेभिर्यासि रश्मिभिः ।
शर्धन्तमांसि जिघ्नसे विश्वानि दाशुषो गृहे ॥ ८ ॥
त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे ।
प्रति द्रापिममुञ्चथाः पवमान महित्वना ॥ ९ ॥

इति सप्तमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ सप्तमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ अन्धीगुः श्यावाश्विः; ४-६ ययातिर्नाहुषः; ७-९ नहुषो मानवः; १०-१२ मनुः सांवरणः; १३-१६ प्रजापतिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ६, ७, ९, ११-१४ निचृदनुष्टुप्; २ निचृद्गायत्री; ३ विराड्गायत्री; ४, ५, ८, १५, १६ अनुष्टुप्; १० पादनिचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४-१६ गान्धारः; २, ३ षड्जः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्वयम् ॥ १ ॥
यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः ।
इन्दुरश्वो न कृत्व्यः ॥ २ ॥
तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया ।
यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः ॥ ३ ॥
सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः ॥ ४ ॥
इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् ।
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।
सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥ ६ ॥
अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥ ७ ॥
समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः ।
सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ॥ ८ ॥
य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम् ।
यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहै ॥ ९ ॥
सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
मित्राः सुवाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधि त्वचि ।
इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन्वसुविदः ॥ ११ ॥
एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।
सूर्यासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥ १२ ॥
प्र सुन्वानस्यान्धसो मर्तो न वृत तद्वचः ।
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥ १३ ॥
आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः ।
सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् ॥ १४ ॥
स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी ।
हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् ॥ १५ ॥
अव्यो वारेभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि ।
कनिक्रदद्वृषा हरिरिन्द्रस्याभ्येति निष्कृतम् ॥ १६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-४, ८ निचृदुष्णिक्; ५-७ उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥ १ ॥
उप त्रितस्य पाष्यो३रभक्त यद् गुहा पदम् ।
यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् ॥ २ ॥
त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वेरया रयिम् ।
मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ॥ ३ ॥
जज्ञानं सप्त मातरो वेधामशासत श्रिये ।
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेत यत् ॥ ४ ॥
अस्य व्रते सजोषसो विश्वे देवासो अद्रुहः ।
स्पार्हा भवन्ति रन्तयो जुषन्त यत् ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

यमी गर्भमृतावृधो दृशे चारुमजीजनन् ।
कविं मंहिष्ठमध्वरे पुरुस्पृहम् ॥ ६ ॥
समीचीने अभि त्मना यह्वी ऋतस्य मातरा ।
तन्वाना यज्ञमानुषग्यदञ्जते ॥ ७ ॥
क्रत्वा शुक्रेभिरक्षभिर्ऋणोरप व्रजं दिवः ।
हिन्वन्नृतस्य दीधितिं प्राध्वरे ॥ ८ ॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—द्वित आप्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३ उष्णिक्; २, ५ निचृदुष्णिक्; ४ पादनिचृदुष्णिक्; ६ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उद्यतम् ।
भूतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परि॒ वारा॑ण्यव्यया॒ गोभि॑रञ्जा॒नो अ॑र्षति ।
त्री ष॒धस्था॑ पुना॒नः कृ॑णु॒ते हरिः॑ ॥ २ ॥
परि॒ कोशं॑ मधु॒श्चुत॑मव्यये॒ वारे॑ अर्षति ।
अ॒भि वाणी॒रृषी॑णां सप्त॒ नूष॑त ॥ ३ ॥
परि॑ णेता म॑तीनां वि॒श्वदे॑वो॒ अदा॑भ्यः ।
सोमः॑ पुना॒नश्च॒म्वो॑र्वि॒शद्धरिः॑ ॥ ४ ॥
परि॒ दैवी॒रनु॑ स्व॒धा इन्द्रे॑ण याहि स॒रथ॑म् ।
पुना॒नो वा॒घद्भ्यो॑ घ॒द्भिरम॑र्त्यः ॥ ५ ॥
परि॒ सप्ति॑र्न वा॑ज॒युर्दे॒वो दे॒वेभ्य॑: सु॒तः ।
व्या॒न॒शिः पव॑मानो॒ वि धा॑वति ॥ ६ ॥

सप्तमोऽनुवाकः [१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पर्वतनारदौ द्वे शिखण्डिन्यौ वा काश्यप्यावप्सरसौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—१, ३, ४ उष्णिक्; २, ५, ६ निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

सखा॑य॒ आ नि षी॑दत पुना॒नाय॒ प्र गा॑यत ।
शिशुं॒ न य॒ज्ञैः परि॑ भूषत॒ श्रिये ॥ १ ॥
समी॑ व॒त्सं न मा॒तृभिः॑ सृ॒जता॑ गय॒साध॑नम् ।
दे॒वाव्य॑मभि द्विश॑वसम् ॥ २ ॥
पुनाता॑ दक्ष॒साध॑नं॒ यथा॒ शर्धा॑य वी॒तये॑ ।
यथा॑ मि॒त्राय॒ वरु॑णाय॒ शन्त॑मः ॥ ३ ॥
अ॒स्मभ्यं॑ त्वा वसुविद॑मभि वाणी॑रनूषत ।
गोभि॑ष्टे॒ वर्णं॑मभि वा॑सयामसि ॥ ४ ॥
स नो॑ मदानां पत॒ इन्दो॑ दे॒वप्स॑रा असि ।
सखे॑व॒ सख्ये॑ गातु॒वित्त॑मो भव ॥ ५ ॥
सने॑मि कृ॒ध्यस्मदा र॒क्षस॑ं कं चि॒दृत्रि॑णम् ।
अपा॑दे॒वं द्व॒युमं॑हो॒ युयो॑धि नः ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१०५] पञ्चोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पर्वतनारदौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ उष्णिक्; ३, ४, ६ निचृदुष्णिक्; ५ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत ।
शिशुं न यज्ञैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥ १ ॥
सं वत्सइव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते ।
देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥ २ ॥
अयं दक्षाय साधनोऽयं शर्धाय वीतये ।
अयं देवेभ्यो मधुमत्तमः सुतः ॥ ३ ॥
गोमन्न इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धन्व ।
शुचिं ते वर्णमधि गोषु दीधरम् ॥ ४ ॥
स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः ।
सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ॥ ५ ॥
सनेमि त्वमस्मदाँ अदेवं कं चिदत्रिणम् ।
साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् ॥ ६ ॥

[१०६] षडुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-३ अग्निश्चाक्षुषः; ४-६ चक्षुर्मानवः; ७-९ मनुराप्सवः; १०-१४ अग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ८, १०, १४ निचृदुष्णिक्; २, ५-७, ११, १२ उष्णिक्; ९, १३ विराडुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः ।
श्रुष्टी जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ १ ॥
अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः ।
सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे ॥ २ ॥
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णीत सानसिम् ।
वज्रं च वृषणं भरत्समप्सुजित् ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव।
द्युमन्तं शुष्ममा भर स्वर्विदम् ॥ ४ ॥
इन्द्राय वृषणं मदं पवस्व विश्वदर्शतः ।
सहस्रयामा पथिकृद्विचक्षणः ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अस्मभ्यं गातुवित्तमो देवेभ्यो मधुमत्तमः ।
सहस्रं याहि पथिभिः कनिक्रदत् ॥ ६ ॥
पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा ।
आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ॥ ७ ॥
तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः ।
त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ॥ ८ ॥
आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम्।
वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ॥ ९ ॥
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यो वारं वि धावति ।
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ १० ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं वने क्रीळन्तमत्यविम्।
अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ॥ ११ ॥
असर्जि कलशाँ अभि मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः।
पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् ॥ १२ ॥
पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या ।
अभ्यर्षन्त्स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥ १३ ॥
अया पवस्व देवयुर्मधोर्धारा असृक्षत ।
रेभन्पवित्रं पर्येषि विश्वतः ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१०७] सप्तोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ४, ६, ९, १४, १७, २१ विराड्बृहती; २, ५ भुरिग्बृहती; ३, १६ द्विपदा विराट्; ७, ११, १८, २०, २४, २६ निचृत्पङ्क्तिः; ८, १०, १२, १३, १९, २५ बृहती; १५, २२ पङ्क्तिः; २३ पादनिचृद्बृहती ॥ स्वरः—१, २, ४, ५, ६, ८-१०, १२-१४, १७, १९, २१, २३, २५ मध्यमः; ३, १६ षड्जः; ७, ११, १५, १८, २०, २२, २४, २६ पञ्चमः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥ १ ॥
नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवादब्धः सुरभिन्तरः ।
सुते चित्त्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम् ॥ २ ॥
परि सुवानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः ॥ ३ ॥
पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देव हिरण्ययः ॥ ४ ॥
दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत् ।
आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षति नृभिर्धूतो विचक्षणः ॥ ५ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

पुनानः सोम जागृविरव्यो वारे परि प्रियः ।
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तमो मध्वा यज्ञं मिमिक्ष नः ॥ ६ ॥
सोमो मीढ्वान्पवते गातुवित्तम ऋषिर्विप्रो विचक्षणः ।
त्वं कविरभवो देववीतम आ सूर्यं रोहयो दिवि ॥ ७ ॥
सोम उ षुवाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम् ।
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥ ८ ॥
अनूपे गोमान्गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।
समुद्रं न संवरणान्यग्मन्मन्दी मदाय तोशते ॥ ९ ॥
आ सोम सुवानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया ।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दधिषे ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः ।
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रेभिर्ऋक्वभिः ॥ ११ ॥
प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ १२ ॥
आ हर्यतो अर्जुने अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः ।
तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः ॥ १३ ॥
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
समुद्रस्याधि विष्टपि मनीषिणो मत्सरासः स्वर्विदः ॥ १४ ॥
तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत् ।
अर्षन्मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत् ॥ १५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

नृभिर्येमानो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्रियः ॥ १६ ॥
इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः ।
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमीं मृजन्त्यायवः ॥ १७ ॥
पुनानश्चमू जनयन्मतिं कविः सोमो देवेषु रण्यति ।
अपो वसानः परि गोभिरुत्तरः सीदन्वनेष्वव्यत ॥ १८ ॥
तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे ।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधींरति ताँ इहि ॥ १९ ॥
उताहं नक्तमुत सोम ते दिवा सख्याय बभ्र ऊधनि ।
घृणा तपन्तमति सूर्यं परः शकुनाइव पप्तिम ॥ २० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

मृज्यमानः सुहस्त्य समुद्रे वाचमिन्वसि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥ २१ ॥
मृजानो वारे पवमानो अव्यये वृषाव चक्रदो वने ।
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि ॥ २२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पवस्व वाजसातयेऽभि विश्वानि काव्या ।
त्वं समुद्रं प्रथमो वि धारयो देवेभ्यः सोम मत्सरः ॥ २३ ॥
स तू पवस्व परि पार्थिवं रजो दिव्या च सोम धर्मभिः ।
त्वां विप्रासो मतिभिर्विचक्षण शुभ्रं हिन्वन्ति धीतिभिः ॥ २४ ॥
पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया ।
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हयां मेधामभि प्रयांसि च ॥ २५ ॥
अपो वसानः परि कोशमर्षतीन्दुर्हियानः सोतृभिः ।
जनयज्ज्योतिर्मन्दना अवीवशद्गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥ २६ ॥

[१०८] अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१, २ गौरिवीतिः; ३, १४-१६ शक्तिः; ४, ५ उरुः; ६, ७ ऋजिष्वा; ८, ९ ऊर्ध्वसद्मा; १०, ११ कृतयशाः; १२, १३ ऋणञ्चयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, ९, ११ ककुबुष्णिक्; २ निचृद्बृहती; ३ पादनिचृदुष्णिक्; ४, ६, १०, १२ स्वराड्बृहती; ५, ७, १५ निचृदुष्णिक्; ८, १६ पङ्क्तिः; १३ गायत्री; १४ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ५, ७, ९, ११, १५ ऋषभः; २, ४, ६, १०, १२ मध्यमः; ८, १४, १६ पञ्चमः; १३ षड्जः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः ।
महि द्युक्षतमो मदः ॥ १ ॥
यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायतेऽस्य पीता स्वर्विदः ।
स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषोऽच्छा वाजं नैतशः ॥ २ ॥
त्वं ह्यङ्ग दैव्या पवमान जनिमानि द्युमत्तमः ।
अमृतत्वाय घोषयः ॥ ३ ॥
येना नवग्वो दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे ।
देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवांस्यानशुः ॥ ४ ॥
एष स्य धारया सुतोऽव्यो वारेभिः पवते मदिन्तमः ।
क्रीळन्नूर्मिरपामिव ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

य उस्रिया अप्या अन्तरश्मनो निर्गा अकृन्तदोजसा।
अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज ॥ ६ ॥
आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्।
वनक्रक्षमुदप्रुतम् ॥ ७ ॥
सहस्रधारं वृषभं पयोवृधं प्रियं देवाय जन्मने।
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत् ॥ ८ ॥
अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुः।
वि कोशं मध्यमं युव ॥ ९ ॥
आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विश्पतिः।
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपां जिन्वा गविष्टये धियः ॥ १० ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहुः।
विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ११ ॥
वृषा वि जज्ञे जनयन्नमर्त्यः प्रतपञ्ज्योतिषा तमः।
स सुष्टुतः कविभिर्निर्णिजं दधे त्रिधातवस्य दंससा ॥ १२ ॥
स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इळानाम्।
सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥ १३ ॥
यस्य न इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः।
आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे ॥ १४ ॥
इन्द्राय सोम पातवे नृभिर्यतः स्वायुधो मदिन्तमः।
पवस्व मधुमत्तमः ॥ १५ ॥
इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश समुद्रमिव सिन्धवः।
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे दिवो विष्टम्भ उत्तमः ॥ १६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१०९] नवोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, ७, ८, १०, १३-१५, १७, १८ आर्चीभुरिग्गायत्री; २-६, ९, ११, १२, १९, २२ आर्चीस्वराड्गायत्री; १६ पादनिचृद्गायत्री; २०, २१ आर्चीगायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

परि॒ प्र ध॒न्वेन्द्रा॑य सोम स्वा॒दुर्मि॒त्राय॑ पू॒ष्णे भगा॑य ॥ १॥
इन्द्र॑स्ते सोम सु॒तस्य॑ पेया॒ः क्रत्वे॒ दक्षा॑य॒ विश्वे॑ च दे॒वाः॥ २॥
ए॒वामृता॑य म॒हे क्षया॑य॒ स शु॒क्रो अ॑र्ष दि॒व्यः पी॒यूष॑ः॥ ३॥
पव॑स्व सोम म॒हान्त्स॑मु॒द्रः पि॒ता दे॒वाना॑ं विश्वा॒भि धाम॑॥ ४॥
शु॒क्रः पव॑स्व दे॒वेभ्य॑ः सोम दि॒वे पृ॑थि॒व्यै शं च॑ प्र॒जायै॑॥ ५॥
दि॒वो ध॒र्तासि॑ शु॒क्रः पी॒यूष॑ः स॒त्ये वि॑धर्म॒न्वा॒जी प॑वस्व॥ ६॥
पव॑स्व सोम द्यु॒म्नी सु॑धा॒रो म॒हामवी॑ना॒मनु॑ पू॒र्व्यः॥ ७॥
नृभि॑र्येमा॒नो ज॑ज्ञा॒नः पू॒तः क्षर॒द्विश्वा॑नि म॒न्द्रः स्व॒र्वित्॥ ८॥
इन्दु॑ः पुना॒नः प्र॒जामु॑रा॒णः कर॒द्विश्वा॑नि॒ द्रवि॑णानि नः॥ ९॥
पव॑स्व सोम॒ क्रत्वे॒ दक्षा॑याश्वो॒ न नि॒क्तो वा॒जी धना॑य॥ १०॥

अथैकविंशो वर्गः॥ २१॥

तं तै॑ सो॒तारो॒ रस॒ं मदा॑य पुनन्ति॒ सोम॑ं म॒हे द्यु॒म्नाय॑॥ ११॥
शिशु॑ं जज्ञा॒नं हरि॑ं मृजन्ति प॒वित्रे॒ सोम॑ं दे॒वेभ्य॒ इन्दु॑म्॥ १२॥
इन्दु॑ः पविष्ट॒ चारु॒र्मदा॑या॒पामु॒पस्थे॑ क॒विर्भगा॑य॥ १३॥
बिभ॑र्ति॒ चार्वि॑न्द्र॒स्य॒ नाम॒ येन॒ विश्वा॑नि वृ॒त्रा ज॒घान॑॥ १४॥
पिब॑न्त्यस्य॒ विश्वे॑ दे॒वासो॒ गोभि॑ः श्री॒तस्य॒ नृभि॑ः सु॒तस्य॑॥ १५॥
प्र सु॑वा॒नो अ॑क्षाः स॒हस्र॑धारस्ति॒रः प॒वित्र॑ं वि॒ वार॒मव्य॑म्॥ १६॥
स वा॒ज्य॑क्षाः स॒हस्र॑रेता अ॒द्भिर्मृ॑जा॒नो गोभि॑ः श्रीणा॒नः॥ १७॥
प्र सोम॑ याहीन्द्र॒स्य कु॒क्षा नृभि॑र्येमा॒नो अद्रि॑भिः सु॒तः॥ १८॥
अस॑र्जि वा॒जी ति॒रः प॒वित्र॒मिन्द्रा॑य॒ सोम॑ः स॒हस्र॑धारः॥ १९॥
अ॒ञ्ज॒न्त्ये॑नं॒ मध्वो॒ रसे॑नेन्द्रा॑य॒ वृष्ण॒ इन्दु॑ं मदा॑य॥ २०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसेऽपो वसानं हरिं मृजन्ति ॥ २१ ॥
इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते श्रीणन्नुग्रो रिणन्नपः ॥ २२ ॥

[११०] दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—त्र्यरुणत्रसदस्यू ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, १२ निचृदनुष्टुप्; ३ विराडनुष्टुप्; ४, ७, ८ विराड्बृहती; ५, ६ पादनिचृद्बृहती; ९ बृहती; १०, ११ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, १०-१२ गान्धारः; ४-९ मध्यमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईयसे ॥ १ ॥
अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये ।
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे ॥ २ ॥
अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः ।
गोजीरया रंहमाणः पुरन्ध्या ॥ ३ ॥
अजीजनो अमृत मर्त्येष्वाँ ऋतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः ।
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत् ॥ ४ ॥
अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथोत्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम् ।
शयीभिर्न भरमाणो गभस्त्योः ॥ ५ ॥
आदीं के चित्पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत ।
वारं न देवः सविता व्यूर्णुते ॥ ६ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः ।
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय ॥ ७ ॥
दिवः पीयूषं पूर्व्यं यदुक्थ्यं महो गाहाद्दिव आ निरधुक्षत ।
इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन् ॥ ८ ॥
अध यदिमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना ।
यूथे न निष्ठा वृषभो वि तिष्ठसे ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमः पुनानो अव्यये वारे शिशुर्न क्रीळन्पवमानो अक्षाः।
सहस्रधारः शतवाज इन्दुः ॥ १० ॥
एष पुनानो मधुमाँ ऋतावेन्द्रायेन्दुः पवते स्वादुरूर्मिः।
वाजसनिर्वरिवोविद्वयोधाः ॥ ११ ॥
स पवस्व सहमानः पृतन्यून्त्सेधन्रक्षांस्यप दुर्गहाणि ।
स्वायुधः सासह्वान्त्सोम शत्रून् ॥ १२ ॥

[१११] एकादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अनानतः पारुच्छेपिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ निचृदष्टिः; २ भुरिगष्टिः; ३ अष्टिः ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति स्वयुर्वभिः
सूरो न स्वयुर्वभिः। धारा सुतस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः।
विश्वा यद्रूपा परियात्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥ १ ॥
त्वं त्यत्पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि स्व आ दमे
ऋतस्य धीतिभिर्दमे। परावतो न साम तद्यत्रा रणन्ति धीतयः।
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे ॥ २ ॥
पूर्वामनु प्रदिशं याति चेकितत्सं रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथो
दैव्यो दर्शतो रथः। अग्मन्नुक्थानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन्।
वज्रश्च यद्धवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता ॥ ३ ॥

[११२] द्वादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शिशुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-३ विराट्पङ्क्तिः; ४ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम् ।
तक्षा रिष्टं रुतं भिषग्ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १ ॥
जरतीभिरोषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम् ।
कार्मारो अश्मभिर्द्युभिर्हिरण्यवन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारुरहं ततो भिषगुपलप्रक्षिणी नना ।
नानाधियो वसूयवोऽनु गाइव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥
अश्वो वोळ्हा सुखं रथं हसनामुपमन्त्रिणः ।
शेपो रोमण्वन्तौ भेदौ वारिन्मण्डूक इच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ४ ॥

[११३] त्रयोदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २, ७ विराट्पङ्क्तिः; ३ भुरिक्पङ्क्तिः; ४ पङ्क्तिः; ५, ६, ८-११ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

शर्यणावति सोममिन्द्रः पिबतु वृत्रहा ।
बलं दधान आत्मनि करिष्यन्वीर्यं महदिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १ ॥
आ पवस्व दिशां पत आर्जीकात्सोम मीढ्वः ।
ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ २ ॥
पर्जन्यवृद्धं महिषं तं सूर्यस्य दुहिताभरत् ।
तं गन्धर्वाः प्रत्यगृभ्णन्तं सोमे रसमादधुरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥
ऋतं वदन्नृतद्युम्न सत्यं वदन्त्सत्यकर्मन् ।
श्रद्धां वदन्त्सोम राजन्धात्रा सोम परिष्कृत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ४ ॥
सत्यमुग्रस्य बृहतः सं स्रवन्ति संस्रवाः ।
सं यन्ति रसिनो रसाः पुनानो ब्रह्मणा हर इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

यत्र ब्रह्मा पवमान छन्दस्यां३ वाचं वदन् ।
ग्राव्णा सोमे महीयते सोमेनानन्दं जनयन्निन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ६ ॥
यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम् ।
तस्मिन्मां धेहि पवमानामृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ७ ॥
यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः ।
यत्रामूर्यह्वतीरापस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः ।
लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ९ ॥
यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रध्नस्य विष्टपम् ।
स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १० ॥
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।
कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ११ ॥

[११४] चतुर्दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१, २ विराट्पङ्क्तिः; ३, ४ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

य इन्दोः पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत् ।
तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमाविधन्मन इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ १ ॥
ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्वर्धयन्गिरः ।
सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पतिरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ २ ॥
सप्त दिशो नानासूर्याः सप्त होतार ऋत्विजः ।
देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष न इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ३ ॥
यत्ते राजञ्छृतं हविस्तेन सोमाभि रक्ष नः ।
अरातीवा मा नस्तारीन्मो च नः किं चनाममदिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥ ४ ॥

इति नवमं मण्डलम् ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दशमं मण्डलम्

प्रथमोऽनुवाकः

[१] प्रथमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वो अस्थान्निर्जगन्वान्तमसो ज्योतिषागात्।
अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्ग आ जातो विश्वा सद्मान्यप्राः ॥ १ ॥
स जातो गर्भो असि रोदस्योरग्ने चारुर्विभृत ओषधीषु।
चित्रः शिशुः परि तमांस्यक्तून्प्र मातृभ्यो अधि कनिक्रदद्गाः ॥ २ ॥
विष्णुरित्था परममस्य विद्वाञ्जातो बृहन्नभि पाति तृतीयम्।
आसा यदस्य पयो अक्रत स्वं सचेतसो अभ्यर्चन्त्यत्र ॥ ३ ॥
अत उ त्वा पितुभृतो जनित्रीरन्नावृधं प्रति चरन्त्यन्नैः।
ता ईं प्रत्येषि पुनरन्यरूपा असि त्वं विक्षु मानुषीषु होता ॥ ४ ॥
होतारं चित्ररथमध्वरस्य यज्ञस्ययज्ञस्य केतुं रुशन्तम्।
प्रत्यर्धिं देवस्यदेवस्य मह्ना श्रिया त्वाग्निमतिथिं जनानाम् ॥ ५ ॥
स तु वस्त्राण्यध पेशनानि वसानो अग्निर्नाभा पृथिव्याः।
अरुषो जातः पद इळायाः पुरोहितो राजन्यक्षीह देवान् ॥ ६ ॥
आ हि द्यावापृथिवी अग्न उभे सदा पुत्रो न मातरा ततन्थ।
प्र याह्यच्छोशतो यविष्ठाथा वह सहस्येह देवान् ॥ ७ ॥

[२] द्वितीयं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६, ७ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

पिप्रीहि देवाँ उशतो यविष्ठ विद्वाँ ऋतूँरृतुपते यजेह ।
ये दैव्या ऋत्विजस्तेभिरग्ने त्वं होतॄणामस्यायजिष्ठः ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेषिं होत्रमुत पोत्रं जनानां मन्धातासिं द्रविणोदा ऋतावा।
स्वाहा वयं कृणवामा हवींषिं देवो देवान्यजत्वग्निरर्हन्॥ २॥
आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्नवाम तदनु प्रवोळ्हुम्।
अग्निर्विद्वान्त्स यजात्सेदु होता सो अध्वरान्त्स ऋतून्कल्पयाति॥ ३॥
यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानिं विदुषां देवा अविदुष्टरासः।
अग्निष्टद्विश्वमा पृणाति विद्वान्येभिर्देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति॥ ४॥
यत्पाकत्रा मनसा दीनदक्षा न यज्ञस्य मन्वते मर्त्यासः ।
अग्निष्टद्धोता क्रतुविद्विजानन्यजिष्ठो देवाँ ऋतुशो यजाति ॥ ५॥
विश्वेषां ह्यध्वराणामनीकं चित्रं केतुं जनिता त्वा जजान।
स आ यजस्व नृवतीरनु क्षाः स्पार्हा इषः क्षुमतीर्विश्वजन्याः॥ ६॥
यं त्वा द्यावापृथिवी यं त्वापस्त्वष्टा यं त्वा सुजनिमा जजान।
पन्थामनु प्रविद्वान्पितृयाणं द्युमदग्ने समिधानो वि भाहि ॥७॥

[३] तृतीयं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५-७ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि।
चिकित्रि भाति भासा बृहतासिक्नीमेति रुशतीमपाजन्॥ १॥
कृष्णां यदेनीमभि वर्पसा भूज्जनयन्योषां बृहतः पितुर्जाम्।
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन्दिवो वसुभिररतिर्वि भाति॥ २॥
भद्रो भद्रया सचमान आगात्स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्।
सुप्रकेतैर्द्युभिररग्निर्वितिष्ठन्रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् ॥ ३॥
अस्य यामासो बृहतो न वग्नूनिन्धाना अग्नेः सख्युः शिवस्य।
ईड्यस्य वृष्णो बृहतः स्वासो भामासो यामन्नक्तवश्चिकित्रे॥ ४॥
स्वना न यस्य भामासः पवन्ते रोचमानस्य बृहतः सुदिवः।
ज्येष्ठेभिर्यस्तेजिष्ठैः क्रीळुमद्भिर्वर्षिष्ठेभिर्भानुभिर्नक्षति द्याम्॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्य शुष्मासो ददृशानपवेर्जेहमानस्य स्वनयन्नियुद्भिः ।
प्रत्नेभिर्यो रुशद्भिर्देवतमो वि रेभद्भिररतिर्भाति विभ्वा ॥ ६ ॥
स आ वक्षि महि न आ च सत्सि दिवस्पृथिव्योररतिर्युवत्योः ।
अग्निः सुतुकः सुतुकेभिरश्वै रभस्वद्भी रभस्वाँ एह गम्याः ॥ ७ ॥

[४] चतुर्थं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

प्र ते यक्षि प्र त इयर्मि मन्म भुवो यथा वन्द्यो नो हवेषु ।
धन्वन्निव प्रपा असि त्वमग्न इयक्षवे पूरवे प्रत्न राजन् ॥ १ ॥
यं त्वा जनासो अभि संचरन्ति गाव उष्णमिव व्रजं यविष्ठ ।
दूतो देवानामसि मर्त्यानामन्तर्महाँश्चरसि रोचनेन ॥ २ ॥
शिशुं न त्वा जेन्यं वर्धयन्ती माता बिभर्ति सचनस्यमाना ।
धनोरधि प्रवता यासि हर्यञ्जिगीषसे पशुरिवावसृष्टः ॥ ३ ॥
मूरा अमूर न वयं चिकित्वो महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से ।
शये वव्रिश्चरति जिह्वयादत्रैरिह्यते युवतिं विश्पतिः सन् ॥ ४ ॥
कूचिज्जायते सनयासु नव्यो वने तस्थौ पलितो धूमकेतुः ।
अस्नातापो वृषभो न प्र वेति सचेतसो यं प्रणयन्त मर्तीः ॥ ५ ॥
तनूत्यजेव तस्करा वनर्गू रशनाभिर्दशभिरभ्यधीताम् ।
इयं ते अग्ने नव्यसी मनीषा युक्ष्वा रथं न शुचयद्भिरङ्गैः ॥ ६ ॥
ब्रह्मा च ते जातवेदो नमश्चेयं च गीः सदमिद्वर्धनी भूत् ।
रक्षा णो अग्ने तनयानि तोका रक्षोत नस्तन्वो३ अप्रयुच्छन् ॥ ७ ॥

[५] पञ्चमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २-५ त्रिष्टुप्; ६, ७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

एकः समुद्रो धरुणो रयीणामस्मद्ह्रदो भूरिजन्मा वि चष्टे।
सिषक्त्यूर्ध्वा नि ण्योरुपस्थ उत्सस्य मध्ये निहितं पदं वेः ॥ १ ॥
समानं नीळं वृषणो वसानाः सं जग्मिरे महिषा अर्वतीभिः।
ऋतस्य पदं कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे परांसि ॥ २ ॥
ऋतायिनी मायिनी सं दधाते मित्वा शिशुं जज्ञतुर्वर्धयन्ती।
विश्वस्य नाभिं चरतो ध्रुवस्य कवेश्चित्तन्तुं मनसा वियन्तः ॥ ३ ॥
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातमिषो वाजाय प्रदिवः सचन्ते।
अधीवासं रोदसी वावसाने घृतैरन्नैर्वावृधाते मधूनाम् ॥ ४ ॥
सप्त स्वसॄररुषीर्वावशानो विद्वान्मध्व उर्जभारा दृशे कम्।
अन्तर्येमे अन्तरिक्षे पुराजा इच्छन्वव्रिमविदत्पूषणस्य ॥ ५ ॥
सप्त मर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात्।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीळे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ ॥ ६ ॥
असच्च सच्च परमे व्योमन्दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थे।
अग्निर्ह नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्व आयुनि वृषभश्च धेनुः ॥ ७ ॥

इति सप्तमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथ सप्तमाष्टके षष्ठोऽध्यायः

[६] षष्ठं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; २ विराट्पङ्क्तिः; ३ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ६ पङ्क्तिः; ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४, ५, ७ धैवतः; २, ३, ६ पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

अयं स यस्य शर्मन्नवोभिरग्नेरधते जरिताभिष्टौ।
ज्येष्ठेभिर्यो भानुभिर्ऋषूणां पर्येति परिवीतो विभावा ॥ १ ॥
यो भानुभिर्विभावा विभात्यग्निर्देवेभिर्ऋतावाजस्रः।
आ यो विवाय सख्या सखिभ्योऽपरिह्वृतो अत्यो न सप्तिः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईशे यो विश्वस्या देववीतेरीशे विश्वायुरुषसो व्युष्टौ।
आ यस्मिन्मना हवींष्यग्रावरिष्टरथः स्कभ्नाति शूषैः॥ ३॥
शूषेभिर्वृधो जुषाणो अर्कैर्देवाँ अच्छा रघुपत्वा जिगाति।
मन्द्रो होता स जुह्वा३ यजिष्ठः संमिश्लो अग्निरा जिघर्ति देवान्॥ ४॥
तमुस्त्रामिन्द्रं न रेजमानमग्निं गीर्भिर्नमोभिरा कृणुध्वम्।
आ यं विप्रासो मतिभिर्गृणन्ति जातवेदसं जुह्वं सहानाम्॥ ५॥
सं यस्मिन्विश्वा वसूनि जग्मुर्वाजे नाश्वाः सप्तीवन्त एवैः।
अस्मे ऊतीरिन्द्रवाततमा अर्वाचीना अग्न आ कृणुष्व॥ ६॥
अधा ह्यग्ने महा निषद्या सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूथ।
तं ते देवासो अनु केतमायन्नधावर्धन्त प्रथमास ऊमाः॥ ७॥

[७] सप्तमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रितः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ५, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

स्वस्ति नो दिवो अग्ने पृथिव्या विश्वायुर्धेहि यजथाय देव।
सचेमहि तव दस्म प्रकेतैरुरुष्या णो उरुभिर्देव शंसैः॥ १॥
इमा अग्ने मतयस्तुभ्यं जाता गोभिरश्वैरभि गृणन्ति राधः।
यदा ते मर्तो अनु भोगमानड्वसो दधानो मतिभिः सुजात॥ २॥
अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिमग्निं भ्रातरं सदमित्सखायम्।
अग्नेरनीकं बृहतः सपर्यं दिवि शुक्रं यजतं सूर्यस्य॥ ३॥
सिधा अग्ने धियो अस्मे सनुत्रीर्यं त्रायसे दम आ नित्यहोता।
ऋतावा स रोहिदश्वः पुरुक्षुर्द्युभिरस्मा अहभिर्वाममस्तु॥ ४॥
द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रत्नमृत्विजमध्वरस्य जारम्।
बाहुभ्यामग्निमायवोऽजनन्त विक्षु होतारं न्यसादयन्त ॥ ५॥
स्वयं यजस्व दिवि देव देवान् किं ते पाकः कृणवदप्रचेताः।
यथायजऋतुभिर्देव देवानेवा यजस्व तन्वं सुजात ॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भवा नो अग्नेऽवितोत गोपा भवा वयस्कृदुत नो वयोधाः।
रास्वा च नः सुमहो हव्यदातिं त्रास्वोत नस्तन्वो३ अप्रयुच्छन्॥ ७॥

[८] अष्टमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः॥ देवता—१-६ अग्निः; ७-९ इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५-७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ तृतीयो वर्गः॥ ३॥

प्र केतुना बृहता यात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति।
दिवश्चिदन्ताँ उपमाँ उदानळपामुपस्थे महिषो ववर्ध॥ १॥
मुमोद गर्भो वृषभः ककुद्मानस्त्रेमा वत्सः शिमीवाँ अरावीत्।
स देवतात्युद्यतानि कृण्वन्त्स्वेषु क्षयेषु प्रथमो जिगाति॥ २॥
आ यो मूर्धानं पित्रोररब्धा न्यध्वरे दधिरे सूरो अर्णः।
अस्य पत्मन्नरुषीरश्वबुध्ना ऋतस्य योनौ तन्वो जुषन्त॥ ३॥
उषउषो हि वसो अग्रमेषि त्वं यमयोरभवो विभावा।
ऋताय सप्त दधिषे पदानि जनयन्मित्रं तन्वे३ स्वायै॥ ४॥
भुवश्चक्षुर्महः ऋतस्य गोपा भुवो वरुणो यदूताय वेषि।
भुवो अपां नपाज्जातवेदो भुवो दूतो यस्य हव्यं जुजोषः॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः।
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्॥ ६॥
अस्य त्रितः क्रतुना वव्रे अन्तरिच्छन्धीतिं पितुरेवैः परस्य।
सचस्यमानः पित्रोरुपस्थे जामि ब्रुवाण आयुधानि वेति॥ ७॥
स पित्र्याण्यायुधानि विद्वानिन्द्रेषित आप्त्यो अभ्ययुध्यत्।
त्रिशीर्षाणं सप्तरश्मिं जघन्वान्त्वाष्ट्रस्य चिन्निः ससृजे त्रितो गाः॥ ८॥
भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्तमोजोऽवाभिनत्सत्पतिर्मन्यमानम्।
त्वाष्ट्रस्य चिद्विश्वरूपस्य गोनामाचक्राणस्त्रीणि शीर्षा परा वर्क्॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[९] नवमं सूक्तम्

ऋषिः—त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः सिन्धुद्वीपो वाम्बरीषः ॥ देवता—आपः ॥ छन्दः—१-४, ६ गायत्री; ५ वर्धमाना गायत्री; ७ प्रतिष्ठा गायत्री; ८, ९ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-७ षड्जः; ८, ९ गान्धारः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

आपो॒ हि ष्ठा म॑यो॒भुव॒स्ता न॑ ऊ॒र्जे द॑धातन।
म॒हे रणा॑य॒ चक्ष॑से ॥ १ ॥
यो वः॒ शि॒वत॑मो॒ रस॒स्तस्य॑ भाजयतेह नः ।
उ॒श॒तीरि॑व मा॒तरः॑ ॥ २ ॥
तस्मा॒ अर॑ं गमाम वो॒ यस्य॒ क्षया॑य॒ जिन्व॑थ।
आपो॑ ज॒नय॑था च नः ॥ ३ ॥
शं नो॑ दे॒वीर॒भिष्ट॑य॒ आपो॑ भवन्तु पी॒तये॑ ।
शं योर॒भि स्र॑वन्तु नः ॥ ४ ॥
ईशा॑ना॒ वार्या॑णां क्षयन्तीश्चर्षणी॒नाम् ।
अ॒पो या॑चामि भेष॒जम् ॥ ५ ॥
अ॒प्सु मे॒ सोमो॑ अब्रवीद॒न्तर्विश्वा॑नि भेष॒जा।
अ॒ग्निं च॑ वि॒श्वश॑ंभुवम् ॥ ६ ॥
आपः॑ पृणी॒त भे॑ष॒जं वरू॑थं त॒न्वे॒३॒ मम॑ ।
ज्योक्च॒ सूर्यं॑ दृ॒शे ॥ ७ ॥
इ॒दमा॑पः॒ प्र व॑हत॒ यत्किं च॑ दुरि॒तं मयि॑ ।
यद्वा॒हम॑भिदु॒द्रोह॒ यद्वा॑ शे॒प उ॒तानृ॑तम् ॥ ८ ॥
आपो॑ अ॒द्यान्व॑चारिषं॒ रसे॑न॒ सम॑गस्महि ।
पय॑स्वानग्न॒ आ ग॑हि॒ तं मा॒ सं सृ॑ज॒ वर्च॑सा ॥ ९ ॥

[१०] दशमं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३, ५-७, ११, १३ यमी वैवस्वती; २, ४, ८-१०, १२, १४, यमो वैवस्वतः ॥ देवता—१, ३, ५-७, ११, १३ यमो वैवस्वतः; २, ४, ८-१०, १२, १४ यमी वैवस्वती ॥ छन्दः—१, २, ४, ६, ८ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ११ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५, ९, १०, १२ त्रिष्टुप्; ७, १३ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; १४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

ओ चित्सखायं सख्या ववृत्यां तिरः पुरू चिदर्णवं जगन्वान्।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अधि क्षमि प्रतरं दीध्यानः ॥ १ ॥
न ते सखा सख्यं वष्ट्येतत्सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति।
महस्पुत्रासो असुरस्य वीरा दिवो धर्तार उर्विया परि ख्यन् ॥ २ ॥
उशन्ति घा ते अमृतास एतदेकस्य चित्त्यजसं मर्त्यस्य।
नि ते मनो मनसि धाय्यस्मे जन्युः पतिस्तन्वा१मा विविश्याः ॥ ३ ॥
न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनमृता वदन्तो अनृतं रपेम।
गन्धर्वो अप्स्वप्या च योषा सा नो नाभिः परमं जामि तन्नौ ॥ ४ ॥
गर्भे नु नौ जनिता दम्पती कर्देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः।
नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि वेद नावस्य पृथिवी उत द्यौः ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः क ईं ददर्श क इह प्र वोचत्।
बृहन्मित्रस्य वरुणस्य धाम कदु ब्रव आहनो वीच्या नॄन् ॥ ६ ॥
यमस्य मा यम्य१ काम आगन्त्समाने योनौ सहशेय्याय।
जायेव पत्ये तन्वं रिरिच्यां वि चिद् वृहेव रथ्येव चक्रा ॥ ७ ॥
न तिष्ठन्ति न नि मिषन्त्येते देवानां स्पश इह ये चरन्ति।
अन्येन मदाहनो याहि तूयं तेन वि वृह रथ्येव चक्रा ॥ ८ ॥
रात्रीभिरस्मा अहभिर्दशस्येत्सूर्यस्य चक्षुर्मुहुरुन्मिमीयात् ।
दिवा पृथिव्या मिथुना सबन्धू यमीर्यमस्य बिभृयादजामि ॥ ९ ॥
आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि।
उप बर्बृहि वृषभाय बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत् ॥ १० ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति किमु स्वसा यन्निर्ऋतिर्निगच्छात्।
काममूता बह्वेऽ३तद्रपामि तन्वा मे तन्वं१ सं पिपृग्धि ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न वा उ ते तन्वा तन्वं१ सं पपृच्यां पापमाहुर्यः स्वसारं निगच्छात्।
अन्येन मत्प्रमुदः कल्पयस्व न ते भ्राता सुभगे वष्ट्येतत्॥ १२॥
बतो बतासि यम नैव ते मनो हृदयं चाविदाम।
अन्या किल त्वां कक्ष्येव युक्तं परि ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्॥ १३॥
अन्यमू षु त्वं यम्यन्य उ त्वां परि ष्वजाते लिबुजेव वृक्षम्।
तस्य वा त्वं मन इच्छा स वा तवाधा कृणुष्व संविदं सुभद्राम्॥ १४॥

[११] एकादशं सूक्तम्

ऋषिः—हविर्धान आङ्गिः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ६ निचृज्जगती; ३-५ विराड्जगती; ७-९ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-६ निषादः; ७-९ धैवतः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा दिवः पयांसि यह्वो अदितेरदाभ्यः।
विश्वं स वेद वरुणो यथा धिया स यज्ञियो यजतु यज्ञियाँ ऋतून्॥ १॥
रपद्गन्धर्वीरप्या च योषणा नदस्य नादे परि पातु मे मनः।
इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु नो भ्राता नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति॥ २॥
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वत्युषा उवास मनवे स्वर्वती।
यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुमग्निं होतारं विदथाय जीजनन्॥ ३॥
अध त्यं द्रप्सं विभ्वं विचक्षणं विराभरदिषितः श्येनो अध्वरे।
यदी विशो वृणते दस्ममार्यी अग्निं होतारमध धीरजायत॥ ४॥
सदासि रण्वो यवसेव पुष्यते होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः।
विप्रस्य वा यच्छशमान उक्थ्यं१ वाजं ससवाँ उपयासि भूरिभिः॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

उदीरय पितरा जार आ भगमियक्षति हर्यतो हृत्त इष्यति।
विवक्ति वह्निः स्वपस्यते मखस्तविष्यते असुरो वेपते मती॥ ६॥
यस्ते अग्ने सुमतिं मर्तो अक्षत्सहसः सूनो अति स प्र शृण्वे।
इषं दधानो वहमानो अश्वैरा स द्युमाँ अमवान्भूषति द्यून्॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदग्न एषा समितिर्भवाति देवी देवेषु यजता यजत्र ।
रत्ना च यद्भिभजासि स्वधावो भागं नो अत्र वसुमन्तं वीतात् ॥ ८ ॥
श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथमृतस्य द्रविलुम् ।
आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामप भूरिह स्याः ॥ ९ ॥

[१२] द्वादशं सूक्तम्

ऋषिः—हविर्धान आङ्गिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

द्यावा ह क्षामा प्रथमे ऋतेनाभिश्रावे भवतः सत्यवाचा ।
देवो यन्मर्तान्यजथाय कृण्वन्त्सीदद्धोता प्रत्यङ् स्वमसुं यन् ॥ १ ॥
देवो देवान्परिभूर्ऋतेन वहा नो हव्यं प्रथमश्चिकित्वान् ।
धूमकेतुः समिधा भात्यृजीको मन्द्रो होता नित्यो वाचा यजीयान् ॥ २ ॥
स्वावृग्देवस्यामृतं यदी गोरतो जातासो धारयन्त उर्वी ।
विश्वे देवा अनु तत्ते यजुर्गुर्दुहे यदेनी दिव्यं घृतं वाः ॥ ३ ॥
अर्चामि वां वर्धायापो घृतस्नू द्यावाभूमी शृणुतं रोदसी मे ।
अहा यद् द्यावोऽसुनीतिमयन्मध्वा नो अत्र पितरा शिशीताम् ॥ ४ ॥
किं स्विन्नो राजा जगृहे कदस्यातिं व्रतं चकृमा को वि वेद ।
मित्रश्चिद्धि ष्मा जुहुराणो देवाञ्छ्लोको न यातामपि वाजो अस्ति ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम सलक्ष्मा यद्विषुरूपा भवाति ।
यमस्य यो मनवते सुमन्त्वग्ने तमृष्व पाह्यप्रयुच्छन् ॥ ६ ॥
यस्मिन्देवा विदथे मादयन्ते विवस्वतः सदने धारयन्ते ।
सूर्ये ज्योतिरदधुर्मास्यक्तून्परि द्योतनिं चरतो अजस्रा ॥ ७ ॥
यस्मिन्देवा मन्मनि संचरन्त्यपीच्ये न वयमस्य विद्म ।
मित्रो नो अत्रादितिरनागान्त्सविता देवो वरुणाय वोचत् ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रुधी नौ अग्ने सदने सधस्थे युक्ष्वा रथमृतस्य द्रवित्नुम् ।
आ नौ वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामप भूरिह स्याः ॥ ९ ॥

[१३] त्रयोदशं सूक्तम्

ऋषिः—विवस्वानादित्यः ॥ देवता—हविर्धाने ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ निचृत् त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ निषादः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोक एतु पथ्येव सूरेः ।
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः ॥ १ ॥
यमेइव यतमाने यदैतं प्र वां भरन्मानुषा देवयन्तः ।
आ सीदतं स्वमु लोकं विदाने स्वास्सस्थे भवतमिन्दवे नः ॥ २ ॥
पञ्च पदानि रुपो अन्वरोहं चतुष्पदीमन्वेमि व्रतेन ।
अक्षरेण प्रति मिम एतामृतस्य नाभावधि सं पुनामि ॥ ३ ॥
देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं प्रजायै कममृतं नावृणीत ।
बृहस्पतिं यज्ञमकृण्वत ऋषिं प्रियां यमस्तन्वं१ प्रारिरेचीत् ॥ ४ ॥
सप्त क्षरन्ति शिशवे मरुत्वते पित्रे पुत्रासो अप्यवीवतन्नृतम् ।
उभे इदस्योभयस्य राजत उभे यतेते उभयस्य पुष्यतः ॥ ५ ॥

[१४] चतुर्दशं सूक्तम्

ऋषिः—यमः ॥ देवता—१-५, १३-१६ यमः; ६ लिङ्गोक्ताः; ७-९ लिङ्गोक्ताः पितरो वा; १०-१२ श्वानौ ॥ छन्दः—१, १२ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ३, ७, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ९ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ८ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; १० त्रिष्टुप्; १३, १४ निचृदनुष्टुप्; १५ विराड्बृहती; १६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१२ धैवतः; १३, १४, १६ गान्धारः; १५ मध्यमः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

परेयिवांसं प्रवतो महीरनु बहुभ्यः पन्थामनुपस्पशानम् ।
वैवस्वतं संगमनं जनानां यमं राजानं हविषा दुवस्य ॥ १ ॥
यमो नो गातुं प्रथमो विवेद नैषा गव्यूतिरपभर्तवा उ ।
यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुरेना जज्ञानाः पथ्या३ अनु स्वाः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातलीं कव्यैर्यमो अङ्गिरोभिर्बृहस्पतिर्ऋक्वभिर्वावृधानः।
याँश्च देवा वावृधुर्ये च देवान्त्स्वाहान्ये स्वधयान्ये मदन्ति॥ ३॥
इमं यम प्रस्तरमा हि सीदाङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः।
आ त्वा मन्त्राः कविशस्ता वहन्त्वेना राजन्हविषा मादयस्व॥ ४॥
अङ्गिरोभिरा गहि यज्ञियेभिर्यम वैरूपैरिह मादयस्व।
विवस्वन्तं हुवे यः पिता तेऽस्मिन्यज्ञे बर्हिष्या निषद्य॥ ५॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥ ६॥
प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्व्येभिर्यत्रा नः पूर्वे पितरः परेयुः।
उभा राजाना स्वधया मदन्ता यमं पश्यासि वरुणं च देवम्॥ ७॥
सं गच्छस्व पितृभिः सं यमेनेष्टापूर्तेन परमे व्योमन्।
हित्वावद्यं पुनरस्तमेहि सं गच्छस्व तन्वा सुवर्चीः॥ ८॥
अपेत वीत वि च सर्पतातोऽस्मा एतं पितरो लोकमक्रन्।
अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्यवसानमस्मै॥ ९॥
अति द्रव सारमेयौ श्वानौ चतुरक्षौ शबलौ साधुना पथा।
अथा पितॄन्त्सुविदत्राँ उपेहि यमेन ये सधमादं मदन्ति॥ १०॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ।
ताभ्यामेनं परि देहि राजन्त्स्वस्ति चास्मा अनमीवं च धेहि॥ ११॥
उरूणसावसुतृपा उदुम्बलौ यमस्य दूतौ चरतो जनाँ अनु।
तावस्मभ्यं दृशये सूर्याय पुनर्दातामसुमद्येह भद्रम्॥ १२॥
यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः।
यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः॥ १३॥
यमाय घृतवद्धविर्जुहोत प्र च तिष्ठत।
स नो देवेष्वा यमद्दीर्घमायुः प्र जीवसे॥ १४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन ।
इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः ॥ १५ ॥
त्रिकद्रुकेभिः पतति षळुर्वीरेकमिद् बृहत् ।
त्रिष्टुब्गायत्री छन्दांसि सर्वा ता यम आहिता ॥ १६ ॥

[१५] पञ्चदशं सूक्तम्

ऋषिः—शङ्खो यामायनः ॥ देवता—पितरः ॥ छन्दः—१, २, ७, १२, १३, १४ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ९, १० त्रिष्टुप्; ४, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ११ निचृज्जगती ॥ स्वरः—१-१०, १२-१४ धैवतः; ११ निषादः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥ १ ॥
इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरास ईयुः ।
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनं सुवृजनासु विक्षु ॥ २ ॥
आहं पितॄन्त्सुविदत्राँ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः ।
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः ॥ ३ ॥
बर्हिषदः पितर ऊत्य१र्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम् ।
त आ गतावसा शन्तमेनाथा नः शं योररपो दधात ॥ ४ ॥
उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥ ५ ॥

अथ अष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभि गृणीत विश्वे ।
मा हिंसिष्ट पितरः केन चिन्नो यद्व आगः पुरुषता करम ॥ ६ ॥
आसीनासो अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय ।
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त इहोर्जं दधात ॥ ७ ॥
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः ।
तेभिर्यमः संरराणो हवींष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये तातृषुर्देवत्रा जेहमाना होत्राविदः स्तोमतष्टासो अर्कैः।
आग्ने याहि सुविदत्रेभिरर्वाङ् सत्यैः कव्यैः पितृभिर्घर्मसद्भिः॥ ९॥
ये सत्यासो हविरदो हविष्पा इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः।
आग्ने याहि सहस्रं देववन्दैः परैः पूर्वैः पितृभिर्घर्मसद्भिः॥ १०॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः।
अत्ता हवींषि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिं सर्ववीरं दधातन॥ ११॥
त्वमग्न ईळितो जातवेदोऽवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वी।
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवींषि॥ १२॥
ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञं सुकृतं जुषस्व॥ १३॥
ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।
तेभिः स्वराळसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयस्व॥ १४॥

[१६] षोडशं सूक्तम्

ऋषिः—दमनो यामायनः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ४, ७, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ६, ९ त्रिष्टुप्; १० स्वराट्त्रिष्टुप्; ११ अनुष्टुप्; १२ निचृदनुष्टुप्; १३, १४ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—१-१० धैवतः; ११-१४ गान्धारः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

मैनमग्ने वि दहो माभि शोचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम्।
यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेमेनं प्र हिणुतात्पितृभ्यः॥ १॥
शृतं यदा करसि जातवेदोऽथेमेनं परि दत्तात्पितृभ्यः।
यदा गच्छात्यसुनीतिमेतामथा देवानां वशनीर्भवाति॥ २॥
सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मणा।
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितमोषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः॥ ३॥
अजो भागस्तपसा तं तपस्व तं ते शोचिस्तपतु तं ते अर्चिः।
यास्ते शिवास्तन्वो जातवेदस्ताभिर्वहैनं सुकृतामु लोकम्॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अव॑ सृज॒ पुन॑रग्ने पि॒तृभ्यो॒ यस्त॒ आहु॑त॒श्चर॑ति स्व॒धाभिः॑।
आयु॒र्वसा॑न॒ उप॑ वेतु॒ शेषः॒ सं ग॑च्छतां त॒न्वा॑ जातवेदः॥ ५॥

अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

यत्ते॑ कृ॒ष्णः श॑कु॒न आ॑तु॒तोद॑ पिपी॒लः स॒र्प उ॒त वा॒ श्वाप॑दः।
अ॒ग्निष्टद्वि॒श्वाद॑ग॒दं कृ॑णोतु॒ सोम॑श्च॒ यो ब्रा॑ह्म॒णाँ आ॑वि॒वेश॑॥ ६॥
अ॒ग्नेर्वर्म॒ परि॒ गोभि॑र्व्ययस्व॒ सं प्रोर्णु॑स्व॒ पीव॑सा॒ मेद॑सा च।
नेत्त्वा॑ धृ॒ष्णुर्हर॑सा॒ जर्हृ॑षाणो द॒धृग्वि॑ध॒क्ष्यन्प॑र्य॒ङ्खया॑ते ॥ ७॥
इ॒मम॑ग्ने चम॒सं मा वि जि॑ह्वरः प्रि॒यो दे॒वाना॑मु॒त सो॒म्याना॑म् ।
ए॒ष यश्च॑म॒सो दे॑व॒पान॒स्तस्मि॑न्दे॒वा अ॒मृता॑ मादयन्ते ॥ ८॥
क्र॒व्याद॑म॒ग्निं प्र हि॑णोमि दू॒रं य॒मरा॑ज्ञो गच्छतु रिप्रवा॒हः ।
इ॒हैवायमित॑रो जा॒तवे॑दा दे॒वेभ्यो॑ ह॒व्यं व॑हतु प्रजा॒नन् ॥ ९॥
यो अ॒ग्निः क्र॒व्यात्प्र॑वि॒वेश॑ वो गृ॒हमि॒मं पश्य॒न्नित॑रं जा॒तवे॑दसम्।
तं ह॑रामि पितृय॒ज्ञाय॑ दे॒वं स घ॒र्ममि॑न्वात्पर॒मे स॒धस्थे॑॥ १०॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

यो अ॒ग्निः क्र॑व्य॒वाह॑नः पि॒तॄन्यक्ष॑दृता॒वृधः॑ ।
प्रेदु॑ ह॒व्यानि॑ वोचति दे॒वेभ्य॑श्च पि॒तृभ्य॒ आ॥ ११॥
उ॒शन्त॑स्त्वा॒ नि धी॑मह्यु॒शन्तः॒ समि॑धीमहि ।
उ॒शन्नु॑श॒त आ व॑ह पि॒तॄन्ह॒विषे॒ अत्त॑वे ॥ १२॥
यं त्वम॑ग्ने स॒मद॑ह॒स्तमु॒ निर्वा॑पया॒ पुनः॑ ।
कि॒याम्ब्वत्र॑ रोहतु पाकदू॒र्वा व्य॑ल्कशा ॥ १३॥
शीति॑के॒ शीति॑कावति॒ ह्लादि॑के॒ ह्लादि॑कावति।
म॒ण्डू॒क्या॒३॒॑ सु सं ग॑म इ॒मं स्व१॒॑ग्निं ह॑र्षय ॥ १४॥

द्वितीयोऽनुवाकः [१७] सप्तदशं सूक्तम्

ऋषिः—देवश्रवा यामायनः॥ देवता—१, २ सरण्यूः; ३-६ पूषा; ७-९ सरस्वती; १०, १४ आपः; ११-१३ आपः सोमो वा॥ छन्दः—१, ५, ८ विराट्त्रिष्टुप्; २, ६, १२ त्रिष्टुप्; ३, ४, ७, ९-११ निचृत्त्रिष्टुप्; १३ ककुम्मतीबृहती; १४ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-१२ धैवतः; १३ मध्यमः; १४ गान्धारः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

त्वष्टा दुहित्रे वहतुं कृणोतीतीदं विश्वं भुवनं समेति।
यमस्य माता पर्युह्यमाना महो जाया विवस्वतो ननाश ॥ १ ॥
अपागूहन्नमृतां मर्त्येभ्यः कृत्वी सवर्णामददुर्विवस्वते।
उताश्विनावभरद्यत्तदासीदजहादु द्वा मिथुना सरण्यूः ॥ २ ॥
पूषा त्वेतश्च्यावयतु प्र विद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः।
स त्वैतेभ्यः परि ददत्पितृभ्योऽग्निर्देवेभ्यः सुविदत्रियेभ्यः ॥ ३ ॥
आयुर्विश्वायुः परि पासति त्वा पूषा त्वा पातु प्रपथे पुरस्तात्।
यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु ॥ ४ ॥
पूषेमा आशा अनु वेद सर्वाः सो अस्माँ अभयतमेन नेषत्।
स्वस्तिदा आघृणिः सर्ववीरोऽप्रयुच्छन्पुर एतु प्रजानन् ॥ ५ ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

प्रपथे पथामजनिष्ट पूषा प्रपथे दिवः प्रपथे पृथिव्याः।
उभे अभि प्रियतमे सधस्थे आ च परा च चरति प्रजानन् ॥ ६ ॥
सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते सरस्वतीमध्वरे तायमाने।
सरस्वतीं सुकृतो अह्वयन्त सरस्वती दाशुषे वार्यं दात् ॥ ७ ॥
सरस्वति या सरथं ययाथ स्वधाभिर्देवि पितृभिर्मदन्ती।
आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयस्वानमीवा इष आ धेह्यस्मे ॥ ८ ॥
सरस्वतीं यां पितरो हवन्ते दक्षिणा यज्ञमभिनक्षमाणाः।
सहस्रार्घमिळो अत्र भागं रायस्पोषं यजमानेषु धेहि ॥ ९ ॥
आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।
विश्वं हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूत एमि ॥ १० ॥

अथ पञ्चविंशो वर्ग ॥ २५ ॥

द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु द्यूनिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः।
समानं योनिमनु संचरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते अंशुर्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात्।
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात्तं ते जुहोमि मनसा वषट्कृतम्॥ १२॥
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो यस्ते अंशुरवश्च यः परः स्रुचा ।
अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिञ्चतु राधसे ॥ १३॥
पयस्वतीरोषधयः पयस्वन्मामकं वचः ।
अपां पयस्वदित्पयस्तेन मा सह शुन्धत ॥ १४॥

[१८] अष्टादशं सूक्तम्

ऋषिः—सङ्कुसुको यामायनः॥ देवता—१-४ मृत्युः; ५ धाता; ६ त्वष्टा; ७-१०, ११-१३ पितृमेधः; १४ पितृमेधः प्रजापतिर्वा॥ छन्दः—१, ५, ७-९ निचृत्त्रिष्टुप्; २-४, ६, १२, १३ त्रिष्टुप्; १० भुरिक्त्रिष्टुप्; ११ निचृत्पङ्क्तिः; १४ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-१०, १२, १३ धैवतः; ११ पञ्चमः; १४ गान्धारः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्।
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान्॥ १॥
मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः।
आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः॥ २॥
इमे जीवा वि मृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य।
प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः॥ ३॥
इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्।
शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन॥ ४॥
यथाहान्यनुपूर्वं भवन्ति यथ ऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु।
यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषि कल्पयैषाम्॥ ५॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

आ रोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यति ष्ठ।
इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः॥ ६॥
इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु।
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदीर्ष्व नार्यभि जीवलोकं गतासुमेतमुप शेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूथ॥ ८॥
धनुर्हस्तादाददानो मृतस्यास्मे क्षत्राय वर्चसे बलाय।
अत्रैव त्वमिह वयं सुवीरा विश्वाः स्पृधो अभिमातीर्जयेम॥ ९॥
उप सर्प मातरं भूमिमेतामुरुव्यचसं पृथिवीं सुशेवाम्।
ऊर्णम्रदा युवतिर्दक्षिणावत एषा त्वा पातु निर्ऋतेरुपस्थात्॥ १०॥

अथाष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

उच्छ्वञ्चस्व पृथिवि मा नि बाधथाः सूपायनास्मै भव सूपवञ्चना।
माता पुत्रं यथा सिचाभ्येनं भूम ऊर्णुहि ॥ ११॥
उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम्।
ते गृहासो घृतश्चुतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र ॥ १२॥
उत्ते स्तभ्नामि पृथिवीं त्वत्परीमं लोगं निदधन्मो अहं रिषम्।
एतां स्थूणां पितरो धारयन्तु तेऽत्रा यमः सादना ते मिनोतु ॥ १३॥
प्रतीचीने मामहनीष्वाः पर्णमिवा दधुः ।
प्रतीचीं जग्रभा वाचमश्वं रशनया यथा ॥ १४॥

इति सप्तमाष्टके षष्ठोऽध्यायः॥

अथ सप्तमाष्टके सप्तमो अध्यायः

[१९] एकोनविंशं सूक्तम्

ऋषिः—मथितो यामायनो भृगुर्वा वारुणिश्च्यवनो वा भार्गवः॥ देवता—१[१], २-८ आपो गावो वा; १[२] अग्नीषोमौ॥ छन्दः—१, ३-५ निचृदनुष्टुप्; २ विराडनुष्टुप्; ६ गायत्री; ७, ८ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-५, ७, ८ गान्धारः; ६ षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

नि वर्तध्वं मानु गाताऽस्मान्त्सिषक्त रेवतीः ।
अग्नीषोमा पुनर्वसू अस्मे धारयतं रयिम् ॥ १॥
पुनरेना नि वर्तय पुनरेना न्या कुरु ।
इन्द्रं एणा नि यच्छत्वग्निरेना उपाजतु ॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनरेता नि वर्तन्तामस्मिन्पुष्यन्तु गोपतौ ।
इहैवाग्ने नि धारयेह तिष्ठतु या रयिः ॥ ३ ॥
यन्नियानं न्ययनं संज्ञानं यत्परायणम् ।
आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे ॥ ४ ॥
य उदानड् व्ययनं य उदानट् परायणम् ।
आवर्तनं निवर्तनमपि गोपा नि वर्तताम् ॥ ५ ॥
आ निवर्त नि वर्तय पुनर्न इन्द्र गा देहि ।
जीवाभिर्भुनजामहै ॥ ६ ॥
परि वो विश्वतो दध ऊर्जा घृतेन पयसा ।
ये देवाः के च यज्ञियास्ते रय्या सं सृजन्तु नः ॥ ७ ॥
आ निवर्तन वर्तय नि निवर्तन वर्तय ।
भूम्याश्चतस्रः प्रदिशस्ताभ्य एना नि वर्तय ॥ ८ ॥

[२०] विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ आसुरीत्रिष्टुप्; २, ९ अनुष्टुप्; ३ पादनिचृद्गायत्री; ४, ५, ७ निचृद्गायत्री; ६ गायत्री; ८ विराड्गायत्री; १० त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, १० धैवतः; २, ९ गान्धारः; ३-८ षड्जः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

भद्रं नो अपि वातय मनः ॥ १ ॥
अग्निमीळे भुजां यविष्ठं शासा मित्रं दुर्धरीतुम् ।
यस्य धर्मन्त्स्वरेनीः सपर्यन्ति मातुरूधः ॥ २ ॥
यमासा कृपनीळं भासाकेतुं वर्धयन्ति । भ्राजते श्रेणिदन् ॥ ३ ॥
अर्यो विशां गातुरेति यदानड् दिवो अन्तान् । कविरभ्रं दीद्यानः ॥ ४ ॥
जुषद्रव्या मानुषस्योर्ध्वस्तस्थावृभ्वा यज्ञे । मिन्वन्त्सद्म पुर एति ॥ ५ ॥
स हि क्षेमो हविर्यज्ञः श्रुष्टीदस्य गातुरेति । अग्निं देवा वाशीमन्तम् ॥ ६ ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

यज्ञासाहं दुवस इषेऽग्निं पूर्वस्य शेवस्य । अद्रेः सूनुमायुमाहुः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरो ये के चास्मदा विश्वेत्ते वाम आ स्युः । अग्निं हविषा वर्धन्तः ॥ ८ ॥
कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रध्न ऋञ्ज्र उत शोणो यशस्वान् ।
हिरण्यरूपं जनिता जजान ॥ ९ ॥
एवा ते अग्ने विमदो मनीषामूर्जो नपादमृतेभिः सजोषाः ।
गिर आ वक्षत्सुमतीरियान इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः ॥ १० ॥

[२१] एकविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ४, ८ निचृत् पङ्क्तिः; २ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३, ५, ७ विराट्पङ्क्तिः; ६ आर्चीपङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

अग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
यज्ञाय स्तीर्णबर्हिषे वि वो मदे शीरं पावकशोचिषं विवक्षसे ॥ १ ॥
त्वामु ते स्वाभुवः शुम्भन्त्यश्वराधसः ।
वेति त्वामुपसेचनी वि वो मद ऋजीतिरग्न आहुतिर्विवक्षसे ॥ २ ॥
त्वे धर्माण आसते जुहूभिः सिञ्चतीरिव ।
कृष्णा रूपाण्यर्जुना वि वो मदे विश्वा अधि श्रियो धिषे विवक्षसे ॥ ३ ॥
यमग्ने मन्यसे रयिं सहसावन्नमर्त्य ।
तमा नो वाजसातये वि वो मदे यज्ञेषु चित्रमा भर विवक्षसे ॥ ४ ॥
अग्निर्जातो अथर्वणा विदद्विश्वानि काव्या ।
भुवद्दूतो विवस्वतो वि वो मदे प्रियो यमस्य काम्यो विवक्षसे ॥ ५ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

त्वां यज्ञेष्वीळतेऽग्ने प्रयत्यध्वरे ।
त्वं वसूनि काम्या वि वो मदे विश्वा दधासि दाशुषे विवक्षसे ॥ ६ ॥
त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि षेदिरे ।
घृतप्रतीकं मनुषो वि वो मदे शुक्रं चेतिष्ठमक्षभिर्विवक्षसे ॥ ७ ॥
अग्ने शुक्रेण शोचिषोरु प्रथयसे बृहत् ।
अभिक्रन्दन्वृषायसे वि वो मदे गर्भं दधासि जामिषु विवक्षसे ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२२] द्वाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ८, १०, १४ पादनिचृद्बृहती; २, ६, १२, १३ निचृदनुष्टुप्; ३, ११ विराड्बृहती; ५ पादनिचृदनुष्टुप्; ७ आर्च्यनुष्टुप्; ९ अनुष्टुप्; १५ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३, ४, ८, १०, ११, १४ मध्यमः; २, ५-७, ९, १२, १३ गान्धारः; १५ धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

कुह श्रुत इन्द्रः कस्मिन्नद्य जने मित्रो न श्रूयते ।
ऋषीणां वा यः क्षये गुहा वा चकृषे गिरा ॥ १॥
इह श्रुत इन्द्रो अस्मे अद्य स्तवे वज्र्यृचीषमः ।
मित्रो न यो जनेष्वा यशश्चक्रे असाम्या ॥ २॥
महो यस्पतिः शवसो असाम्या महो नृम्णस्य तूतुजिः ।
भर्ता वज्रस्य धृष्णोः पिता पुत्रमिव प्रियम् ॥ ३॥
युजानो अश्वा वातस्य धुनी देवो देवस्य वज्रिवः ।
स्यन्ता पथा विरुक्मता सृजानः स्तोष्यध्वनः ॥ ४॥
त्वं त्या चिद्वातस्याश्वागा ऋज्रा त्मना वहध्यै ।
ययोर्देवो न मर्त्यो यन्ता नकिर्विदाय्यः ॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

अध ग्मन्तोशना पृच्छते वां कदर्था न आ गृहम् ।
आ जग्मथुः पराकाद्दिवश्च ग्मश्च मर्त्यम् ॥ ६॥
आ न इन्द्र पृक्षसेऽस्माकं ब्रह्मोद्यतम् ।
तत्त्वा याचामहेऽवः शुष्णं यद्धन्नमानुषम् ॥ ७॥
अकर्मा दस्युरभि नो अमन्तुरन्यव्रतो अमानुषः ।
त्वं तस्यामित्रहन्वधर्दासस्य दम्भय ॥ ८॥
त्वं न इन्द्र शूर शूरैरुत त्वोतासो बर्हणा ।
पुरुत्रा ते वि पूर्तयो नवन्त क्षोणयो यथा ॥ ९॥
त्वं तान्वृत्रहत्ये चोदयो नृन्कार्पाणे शूर वज्रिवः ।
गुहा यदी कवीनां विशां नक्षत्रशवसाम् ॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

मक्षू ता त इन्द्र दानाप्रस आक्षाणे शूर वज्रिवः ।
यद्ध शुष्णस्य दम्भयो जातं विश्वं सयावभिः ॥ ११ ॥
माकुर्ध्यगिन्द्र शूर वस्वीरस्मे भूवन्नभिष्टयः ।
वयंवयं त आसां सुम्ने स्याम वज्रिवः ॥ १२ ॥
अस्मे ता त इन्द्र सन्तु सत्याहिंसन्तीरुपस्पृशः ।
विद्याम यासां भुजो धेनूनां न वज्रिवः ॥ १३ ॥
अहस्ता यदपदी वर्धत क्षाः शचीभिर्वेद्यानाम् ।
शुष्णं परि प्रदक्षिणिद्विश्वायवे नि शिश्नथः ॥ १४ ॥
पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यो वसवान वसुः सन् ।
उत त्रायस्व गृणतो मघोनो महश्च रायो रेवतस्कृधी नः ॥ १५ ॥

[२३] त्रयोविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ आर्चीभुरिग्जगती; ३ निचृज्जगती; ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ आर्चीस्वराड्जगती ॥ स्वरः—१, ५, ७ धैवतः; २-४, ६ निषादः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

यजामहु इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यं१ विव्रतानाम् ।
प्र श्मश्रु दोधुवदूर्ध्वथा भूद्वि सेनाभिर्दयमानो वि राधसा ॥ १ ॥
हरी न्वस्य या वने विदे वस्विन्द्रो मघैर्मघवा वृत्रहा भुवत् ।
ऋभुर्वाज ऋभुक्षाः पत्यते शवोऽव क्ष्णौमि दासस्य नाम चित् ॥ २ ॥
यदा वज्रं हिरण्ययमिदथा रथं हरी यमस्य वहतो वि सूरिभिः ।
आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत इन्द्रो वाजस्य दीर्घश्रवसस्पतिः ॥ ३ ॥
सो चिन्नु वृष्टिर्यूथ्या३ स्वा सचाँ इन्द्रः श्मश्रूणि हरिताभि प्रुष्णुते ।
अव वेति सुक्षयं सुते मधूदिद्धूनोति वातो यथा वनम् ॥ ४ ॥
यो वाचा विवाचो मृध्रवाचः पुरू सहस्राशिवा जघान ।
तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तोमं त इन्द्र विमदा अजीजनन्नपूर्व्यं पुरुतमं सुदानवे।
विद्मा ह्यस्य भोजनमिनस्य यदा पशुं न गोपाः करामहे॥ ६॥
माकिर्न एना सख्या वि यौषुस्तव चेन्द्र विमदस्य च ऋषेः।
विद्मा हि ते प्रमतिं देव जामिवदस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि॥ ७॥

[२४] चतुर्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः॥ देवता—१-३ इन्द्रः; ४-६ अश्विनौ॥ छन्दः—१ आस्तारपङ्क्तिः; २ आर्चीस्वराट्पङ्क्तिः; ३ शङ्कुमती पङ्क्तिः; ४, ६ अनुष्टुप्; ५ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-३ पञ्चमः; ४-६ गान्धारः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

इन्द्र सोममिमं पिब मधुमन्तं चमू सुतम्।
अस्मे रयिं नि धारय वि वो मदे सहस्त्रिणं पुरूवसो विवक्षसे॥ १॥
त्वां यज्ञेभिरुक्थैरुप हव्येभिरीमहे।
शचीपते शचीनां वि वो मदे श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्षसे॥ २॥
यस्पतिर्वार्याणामसि रध्रस्य चोदिता।
इन्द्र स्तोतृणामविता वि वो मदे द्विषो नः पाह्यंहसो विवक्षसे॥ ३॥
युवं शक्रा मायाविना समीची निरमन्थतम्।
विमदेन यदीळिता नासत्या निरमन्थतम्॥ ४॥
विश्वे देवा अकृपन्त समीच्योर्निष्पतन्त्योः।
नासत्यावब्रुवन्देवाः पुनरा वहतादिति॥ ५॥
मधुमन्मे परायणं मधुमत्पुनरायनम्।
ता नो देवा देवतया युवं मधुमतस्कृतम्॥ ६॥

[२५] पञ्चविंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः॥ देवता—सोमः॥ छन्दः—१, २, ६, १०, ११ आस्तारपङ्क्तिः; ३-५ आर्षीनिचृत्पङ्क्तिः; ७-९ आर्षीविराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम्।
अधा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणन्गावो न यवसे विवक्षसे॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदिस्पृशस्त आसते विश्वेषु सोम धामसु ।
अधा कामा इमे मम वि वो मदे वि तिष्ठन्ते वसूयवो विवक्षसे ॥ २ ॥
उत व्रतानि सोम ते प्राहं मिनामि पाक्या ।
अधा पितेव सूनवे वि वो मदे मृळा नो अभि चिद्वधाद्विवक्षसे ॥ ३ ॥
समु प्र यन्ति धीतयः सर्गासोऽवताँइव ।
क्रतुं नः सोम जीवसे वि वो मदे धारया चमसाँइव विवक्षसे ॥ ४ ॥
तव त्ये सोम शक्तिभिर्निकामासो व्यृण्विरे ।
गृत्सस्य धीरास्तवसो वि वो मदे व्रजं गोमन्तमश्विनं विवक्षसे ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

पशुं नः सोम रक्षसि पुरुत्रा विष्ठितं जगत् ।
समाकृणोषि जीवसे वि वो मदे विश्वा संपश्यन्भुवना विवक्षसे ॥ ६ ॥
त्वं नः सोम विश्वतो गोपा अदाभ्यो भव ।
सेधा राजन्नप स्त्रिधो वि वो मदे मा नो दुःशंस ईशता विवक्षसे ॥ ७ ॥
त्वं नः सोम सुक्रतुर्वयोधेयाय जागृहि ।
क्षेत्रवित्तरो मनुषो वि वो मदे द्रुहो नः पाह्यंहसो विवक्षसे ॥ ८ ॥
त्वं नो वृत्रहन्तमेन्द्रस्येन्दो शिवः सखा ।
यत्सीं हवन्ते समिथे वि वो मदे युध्यमानास्तोकसातौ विवक्षसे ॥ ९ ॥
अयं घ स तुरो मद इन्द्रस्य वर्धत प्रियः ।
अयं कक्षीवतो महो वि वो मदे मतिं विप्रस्य वर्धयद्विवक्षसे ॥ १० ॥
अयं विप्राय दाशुषे वाजाँ इयर्ति गोमतः ।
अयं सप्तभ्य आ वरं वि वो मदे प्रान्धं श्रोणं च तारिषद्विवक्षसे ॥ ११ ॥

[२६] षड्विंशं सूक्तम्

ऋषिः—विमदः ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा वासुक्रः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—१ उष्णिक्; २ आर्चीस्वराडनुष्टुप्; ३ ककुम्मत्यनुष्टुप्; ४ आर्चीनिचृदुष्णिक्; ५-८ पादनिचृदनुष्टुप्; ९ आर्चीविराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ४ ऋषभः; २, ३, ५-९ गान्धारः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

प्र ह्यच्छा मनीषाः स्पार्हा यन्ति नियुतः ।
प्र दस्रा नियुद्रथः पूषा अविष्टु माहिनः ॥ १ ॥
यस्य त्यन्महित्वं वाताप्यमयं जनः ।
विप्र आ ववसद्धीतिभिश्चिकेत सुष्टुतीनाम् ॥ २ ॥
स वेद सुष्टुतीनामिन्दुर्न पूषा वृषा ।
अभि प्सुरः प्रुषायति व्रजं न आ प्रुषायति ॥ ३ ॥
मंसीमहि त्वा वयमस्माकं देव पूषन् ।
मतीनां च साधनं विप्राणां चाधवम् ॥ ४ ॥
प्रत्यर्धिर्यज्ञानामश्वहयो रथानाम् ।
ऋषिः स यो मनुर्हितो विप्रस्य याववयत्सखः ॥ ५ ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

आधीषमाणाया पतिः शुचायाश्च शुचस्य च ।
वासोवायोऽवीनामा वासांसि मर्मृजत् ॥ ६ ॥
इनो वाजानां पतिरिनः पुष्टीनां सखा ।
प्र श्मश्रु हर्यतो दूधोद्वि वृथा यो अदाभ्यः ॥ ७ ॥
आ ते रथस्य पूषन्नजा धुरं ववृत्युः ।
विश्वस्यार्थिनः सखा सनोजा अनपच्युतः ॥ ८ ॥
अस्माकमूर्जा रथं पूषा अविष्टु माहिनः ।
भुवद्वाजानां वृध इमं नः शृणवद्धवम् ॥ ९ ॥

[२७] सप्तविंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसुक्र ऐन्द्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५, ८, १०, १४, २२ त्रिष्टुप्; २, ९, १६, १८ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ४, ११, १२, १५, १९-२१, २३ निचृत्त्रिष्टुप्; ६, ७, १३, १७ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २४ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

असत्सु मे जरितः साभिवेगो यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षम् ।
अनाशीर्दामहमस्मि प्रहन्ता सत्यध्वृतं वृजिनायन्तमाभुम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदीद॒हं यु॒धये॑ सं॒नया॒न्यदे॑वयून्त॒न्वा॒३॒॑ शूशु॑जानान्।
अ॒मा ते॒ तुम्रं॑ वृष॒भं प॑चानि ती॒व्रं सु॒तं प॑ञ्चद॒शं नि षि॑ञ्चम्॥ २॥
नाहं तं वे॑द॒ य इति॒ ब्रवी॒त्यदे॑वयून्त्स॒मर॑णे जघ॒न्वान्।
य॒दावाख्य॑त्स॒मर॑ण॒मृघा॑व॒दादिद्ध॑ मे वृष॒भा प्र ब्रु॑वन्ति॥ ३॥
यदज्ञा॑तेषु वृ॒जने॒ष्वासं॒ विश्वे॑ स॒तो म॒घवा॑नो म आसन्।
जि॒नामि॒ वेत्क्षेम॒ आ सन्त॑मा॒भुं प्र तं क्षि॑णां॒ पर्व॑ते पाद॒गृह्य॑॥ ४॥
न वा उ॒ मां वृ॒जने॑ वारयन्ते॒ न पर्व॑तासो॒ यद॒हं म॑न॒स्ये।
मम॑ स्व॒नात्कृ॑धु॒कर्णो॑ भयात ए॒वेदनु॒ द्यून्कि॒रणः॒ समे॑जात्॥ ५॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

दर्श॒न्न्वत्र॑ शृत॒पाँ अ॑नि॒न्द्रान्बा॑हु॒क्षदः॒ शर॑वे॒ पत्य॑मानान्।
घृषुं॑ वा॒ ये नि॑नि॒दुः सखा॑य॒मध्यू॒ न्वे॑षु प॒वयो॑ ववृत्युः॥ ६॥
अभू॒र्वौक्षी॒र्व्यु१॒॑ आयु॑रान॒ड्दर्ष॒न्नु पूर्वो॒ अप॑रो॒ नु द॑र्षत्।
द्वे प॒वस्ते॒ परि॒ तं न भू॑तो॒ यो अ॒स्य पा॒रे रज॑सो वि॒वेष॑॥ ७॥
गावो॒ यवं॒ प्रयु॑ता अ॒र्यो अ॑क्ष॒न्ता अ॑पश्यं स॒हगो॑पा॒श्चर॑न्तीः।
हवा॒ इद॒र्यो अ॒भितः॒ समा॑य॒न्किय॑दासु॒ स्वप॑तिश्छन्दयाते॥ ८॥
सं यद्वयं॑ यव॒सादो॒ जना॑नाम॒हं य॒वाद॑ उ॒र्वज्रे॑ अ॒न्तः।
अत्रा॑ यु॒क्तो॑ऽ वसा॒तार॑मिच्छा॒दथो॒ अयु॑क्तं युनजद्वव॒न्वान्॥ ९॥
अत्रेदु॑ मे मंससे स॒त्यमु॒क्तं द्वि॒पाच्च॒ यच्चतु॑ष्पात्संसृ॒जानि॑।
स्त्री॒भिर्यो अत्र॒ वृष॑णं पृत॒न्यादयु॑द्धो अस्य॒ वि भ॑जानि॒ वेदः॑॥ १०॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

यस्या॑न॒क्षा दु॑हि॒ता जात्वास॒ कस्तां वि॒द्वाँ अ॒भि म॑न्याते अ॒न्धाम्।
क॒त॒रो मे॒निं प्रति॒ तं मु॑चाते॒ य ईं॒ वहा॑ते॒ य ईं॑ वा वरे॒यात्॥ ११॥
किय॑ती॒ योषा॑ मर्य॒तो व॑धू॒योः परि॑प्रीता॒ पन्य॑सा॒ वार्ये॑ण।
भ॒द्रा व॒धूर्भ॑वति॒ यत्सु॒पेशाः॑ स्व॒यं सा मि॒त्रं व॑नुते॒ जने॑ चित्॥ १२॥
प॒त्तो ज॑गार प्र॒त्यञ्च॑मत्ति शी॒र्ष्णा शिरः॒ प्रति॑ दधौ॒ वरू॑थम्।
आसी॑न ऊ॒र्ध्वामु॒पसि॑ क्षिणाति॒ न्य॑ङ्ङुत्ता॒नामन्वे॑ति॒ भूमि॑म्॥ १३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृहन्नेच्छायो अपलाशो अर्वा तस्थौ माता विषितो अत्ति गर्भैः।
अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरूधः॥ १४॥
सप्त वीरासो अधरादुदायन्नष्टोत्तरात्तात्समजग्मिरन्ते ।
नव पश्चातास्थिविमन्त आयन्दश प्राक्सानु वि तिरन्त्यश्नैः॥ १५॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

दशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वन्ति क्रतवे पार्याय।
गर्भं माता सुधितं वक्षणास्ववेनन्तं तुषयन्ती बिभर्ति॥ १६॥
पीवानं मेषमपचन्त वीरा न्युप्ता अक्षा अनु दीव आसन्।
द्वा धनुं बृहतीमप्स्वन्तः पवित्रवन्ता चरतः पुनन्ता॥ १७॥
वि क्रोशनासो विष्वञ्च आयन्पचाति नेमो नहि पक्षदुर्धः।
अयं मे देवः सविता तदाह द्रुवन्न इद्धनवत्सर्पिरन्नः॥ १८॥
अपश्यं ग्रामं वहमानमादचक्रया स्वधया वर्तमानम्।
सिषक्त्यूर्ध्वः प्र युगा जनानां सद्यः शिश्ना प्रमिनानो नवीयान्॥ १९॥
एतौ मे गावौ प्रमरस्य युक्तौ मो षु प्र सेधीर्मुहुरिन्ममन्धि।
आपश्चिदस्य वि नशन्त्यर्थं सूरश्च मर्क उपरो बभूवान्॥ २०॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

अयं यो वज्रः पुरुधा विवृत्तोऽव सूर्यस्य बृहतः पुरीषात्।
श्रव इदेना परो अन्यदस्ति तदव्यथी जरिमाणस्तरन्ति॥ २१॥
वृक्षेवृक्षे नियता मीमयद्गौस्ततौ वयः प्र पतान्पूरुषादः।
अथेदं विश्वं भुवनं भयात इन्द्राय सुन्वदृषये च शिक्षत्॥ २२॥
देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन्कृन्तत्रादेषामुपरा उदायन् ।
त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनूपा द्वा बबूकं वहतः पुरीषम् ॥ २३॥
सा ते जीवातुरुत तस्य विद्धि मा स्मैतादृगप गूहः समर्ये।
आविः स्वः कृणुते गूहते बुसं स पादुरस्य निर्णिजो न मुच्यते॥ २४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२८] अष्टाविंशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रवसुक्रयोः संवाद ऐन्द्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ७, ८, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ६ त्रिष्टुप्; ४, ५, १० विराट्त्रिष्टुप्; ९, ११ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

विश्वो ह्यन्यो अरिराजगाम ममेदह श्वशुरो ना जगाम।
जक्षीयाद्धाना उत सोमं पपीयात्स्वाशितः पुनरस्तं जगायात् ॥ १ ॥
स रोरुवद् वृषभस्तिग्मशृङ्गो वर्ष्मन्तस्थौ वरिमन्ना पृथिव्याः।
विश्वेष्वेनं वृजनेषु पामि यो मे कुक्षी सुतसोमः पृणाति ॥ २ ॥
अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्र तूयान्त्सुन्वन्ति सोमान्पिबसि त्वमेषाम्।
पचन्ति ते वृषभाँ अत्सि तेषां पृक्षेण यन्मघवन्हूयमानः ॥ ३ ॥
इदं सु मे जरितरा चिकिद्धि प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति।
लोपाशः सिंहं प्रत्यञ्चमत्साः क्रोष्टा वराहं निरतक्त कक्षात् ॥ ४ ॥
कथा त एतदहमा चिकेतं गृत्सस्य पाकस्तवसो मनीषाम्।
त्वं नो विद्वाँ ऋतुथा वि वोचो यमर्धं ते मघवन्क्षेम्या धूः ॥ ५ ॥
एवा हि मां तवसं वर्धयन्ति दिवश्चिन्मे बृहत उत्तरा धूः।
पुरू सहस्रा नि शिशामि साकमशत्रुं हि मा जनिता जजान ॥ ६ ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

एवा हि मां तवसं जज्ञुरुग्रं कर्मन्कर्मन्वृषणमिन्द्र देवाः।
वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानोऽप व्रजं महिना दाशुषे वम् ॥ ७ ॥
देवास आयन्पर्शूरबिभ्रन्वना वृश्चन्तो अभि विड्भिरायन्।
नि सुद्रवं दधतो वक्षणासु यत्रा कृपीटमनु तद्दहन्ति ॥ ८ ॥
शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं जगाराद्रिं लोगेन व्यभेदमारात्।
बृहन्तं चिद्बृहते रन्धयानि वयद्वत्सो वृषभं शूशुवानः ॥ ९ ॥
सुपर्ण इत्था नखमा सिषायावरुद्धः परिपदं न सिंहः।
निरुद्धश्चिन्महिषस्तर्ष्यावान्गोधा तस्मा अयथं कर्षदेतत् ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेभ्यो गोधा अयथं कर्षदेतद्ये ब्रह्मणः प्रतिपीयन्त्यन्नैः।
सिम उक्षणोऽ वसृष्टाँ अदन्ति स्वयं बलानि तन्वः शृणानाः॥ ११॥
एते शमीभिः सुशमी अभूवन्ये हिन्विरे तन्वः सोम उक्थैः।
नृवद्वदन्नुप नो माहि वाजान्दिवि श्रवो दधिषे नाम वीरः॥ १२॥

[२९] एकोनत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वसुक्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५, ७ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

वने न वा यो न्यधायि चाकञ्छुचिर्वां स्तोमो भुरणावजीगः।
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षुपावान्॥ १॥
प्र तै अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम्।
अनु त्रिशोकः शतमावहन्नृन्कुत्सेन रथो यो असत्ससवान्॥ २॥
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद्दुरो गिरो अभ्युग्रो वि धाव।
कद्वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः॥ ३॥
कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नृन्कया धिया करसे कन्न आगन्।
मित्रो न सत्य उरुगाय भृत्या अन्ने समस्य यदसन्मनीषाः॥ ४॥
प्रेरय सूरो अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधाइव ग्मन्।
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वीर्नरे इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्मना पृथिवी काव्येन।
वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्मन्भवन्तु पीतये मधूनि॥ ६॥
आ मध्वो अस्मा असिचन्नमत्रमिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधाः।
स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या अभि क्रत्वा नर्यः पौंस्यैश्च॥ ७॥
व्यानळिन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः।
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीयोऽनुवाकः

[३०] त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूषः॥ देवता—आप अपान्नपाद्वा॥ छन्दः—१, ३, ९, ११, १२, १५ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ६, ८, १४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ७, १०, १३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

प्र देवत्रा ब्रह्मणे गातुरेत्वपो अच्छा मनसो न प्रयुक्ति।
महीं मित्रस्य वरुणस्य धासिं पृथुज्रयसे रीरधा सुवृक्तिम्॥ १॥
अध्वर्यवो हविष्मन्तो हि भूताऽच्छापं इतोशतीरुशन्तः ।
अव यांश्चष्टे अरुणः सुपर्णस्तमास्यध्वमूर्मिमद्या सुहस्ताः॥ २॥
अध्वर्यवोऽप इता समुद्रमपां नपातं हविषा यजध्वम् ।
स वो दददूर्मिमद्या सुपूतं तस्मै सोमं मधुमन्तं सुनोत ॥ ३॥
यो अनिध्मो दीदयदप्स्वन्तर्यं विप्रास ईळते अध्वरेषु ।
अपां नपान्मधुमतीरपो दा याभिरिन्द्रो वावृधे वीर्याय ॥ ४॥
याभिः सोमो मोदते हर्षते च कल्याणीभिर्युवतिभिर्न मर्यः।
ता अध्वर्यो अपो अच्छा परेहि यदासिञ्चा ओषधीभिः पुनीतात्॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

एवेद्यूने युवतयो नमन्त यदीमुशन्नुशतीरेत्यच्छ ।
सं जानते मनसा सं चिकित्रेऽध्वर्यवो धिषणापश्च देवीः॥ ६॥
यो वो वृताभ्यो अकृणोदु लोकं यो वो मह्या अभिशस्तेरमुञ्चत्।
तस्मा इन्द्राय मधुमन्तमूर्मिं देवमादनं प्र हिणोतनापः ॥ ७॥
प्रास्मै हिनोत मधुमन्तमूर्मिं गर्भो यो वः सिन्धवो मध्व उत्सः।
घृतपृष्ठमीड्यमध्वरेष्वापो रेवतीः शृणुता हवं मे ॥ ८॥
तं सिन्धवो मत्सरमिन्द्रपानमूर्मिं प्र हैत य उभे इयर्ति।
मदच्युतमौशानं नभोजां परि त्रितन्तुं विचरन्तमुत्सम् ॥ ९॥
आववृत्रतीरध नु द्विधारा गोषुयुधो न नियवं चरन्तीः।
ऋषे जनित्रीर्भुवनस्य पत्नीरपो वन्दस्व सवृधः सयोनीः॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

हिनोता नो अध्वरं देवयज्या हिनोत ब्रह्म सनये धनानाम्।
ऋतस्य योगे वि ष्यध्वमूधः श्रुष्टीवरीर्भूतनास्मभ्यमापः ॥ ११ ॥
आपो रेवतीः क्षयथा हि वस्वः क्रतुं च भद्रं बिभृथामृतं च।
रायश्च स्थ स्वपत्यस्य पत्नीः सरस्वती तद् गृणते वयो धात् ॥ १२ ॥
प्रति यदापो अदृश्रमायतीर्घृतं पयांसि बिभ्रतीर्मधूनि।
अध्वर्युभिर्मनसा संविदाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तीः ॥ १३ ॥
एमा अगन्रेवतीर्जीवधन्या अध्वर्यवः सादयता सखायः।
नि बर्हिषि धत्तन सोम्यासोऽपां नप्त्रा संविदानास एनाः ॥ १४ ॥
आगन्नापः उशतीर्बर्हिरेदं न्यध्वरे असदन्देवयन्तीः।
अध्वर्यवः सुनुतेन्द्राय सोममभूदु वः सुशका देवयज्या ॥ १५ ॥

[३१] एकत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूषः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५, ७, ११ त्रिष्टुप्; ३, १० विराट्त्रिष्टुप्; ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

आ नो देवानामुप वेतु शंसो विश्वेभिस्तुरैरवसे यजत्रः।
तेभिर्वयं सुषखायो भवेम तरन्तो विश्वा दुरिता स्याम ॥ १ ॥
परि चिन्मर्तो द्रविणं ममन्यादृतस्य पथा नमसा विवासेत्।
उत स्वेन क्रतुना सं वदेत श्रेयांसं दक्षं मनसा जगृभ्यात् ॥ २ ॥
अधायि धीतिरसनिष्ट मंशास्तीर्थे न दस्ममुप यन्त्यूमाः।
अभ्यानशम सुविताय शूषं नवेदसो अमृतानामभूम ॥ ३ ॥
नित्यश्चाकन्यात्स्वपतिर्दमूना यस्मा उ देवः सविता जजान।
भगो वा गोभिरर्यमेमनज्यात्सो अस्मै चारुश्छदयदुत स्यात् ॥ ४ ॥
इयं सा भूया उषसामिव क्षा यद्ध क्षुमन्तः शवसा समायन्।
अस्य स्तुतिं जरितुर्भिक्षमाणा आ नः शग्मास उप यन्तु वाजाः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

अस्येदेषा सुमतिः पप्रथानाऽभवत्पूर्व्या भूमना गौः ।
अस्य सनीळा असुरस्य योनौ समान आ भरणे बिभ्रमाणाः ॥ ६ ॥
किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः ।
संतस्थाने अजरे इतऊती अहानि पूर्वीरुषसो जरन्त ॥ ७ ॥
नैतावदेना परो अन्यदस्त्युक्षा स द्यावापृथिवी बिभर्ति ।
त्वचं पवित्रं कृणुत स्वधावान्यर्दीं सूर्यं न हरितो वहन्ति ॥ ८ ॥
स्तेगो न क्षामत्येति पृथ्वीं मिहं न वातो वि ह वाति भूम ।
मित्रो यत्र वरुणो अज्यमानोऽग्निर्वने न व्यसृष्ट शोकम् ॥ ९ ॥
स्तरीर्यत्सूत सद्यो अज्यमाना व्यथिरव्यथीः कृणुत स्वगोपा ।
पुत्रो यत्पूर्वः पित्रोर्जनिष्ट शम्यां गौर्जगार यद्ध पृच्छान् ॥ १० ॥
उत कण्वं नृषदः पुत्रमाहुरुत श्यावो धनमादत्त वाजी ।
प्र कृष्णाय रुशदपिन्वतोधर्ऋतमत्र नकिरस्मा अपीपेत् ॥ ११ ॥

[३२] द्वात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूषः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २ विराड्जगती; ३ निचृत् जगती; ४ पादनिचृज्जगती; ५ आर्चीभुरिग्जगती; ६ त्रिष्टुप्; ७ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५ निषादः; ६-९ धैवतः ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

प्र सु ग्मन्ता धियसानस्य सक्षणिं वरेभिर्वराँ अभि षु प्रसीदतः ।
अस्माकमिन्द्र उभयं जुजोषति यत्सोम्यस्यान्धसो बुबोधति ॥ १ ॥
वीन्द्र यासि दिव्यानि रोचना वि पार्थिवानि रजसा पुरुष्टुत ।
ये त्वा वहन्ति मुहुरध्वराँ उप ते सु वन्वन्तु वग्वनाँ अराधसः ॥ २ ॥
तदिन्मे छन्त्सद्वपुषो वपुष्टरं पुत्रो यजानं पित्रोरधीयति ।
जाया पतिं वहति वग्नुना सुमत्पुंस इद्भद्रो वहतुः परिष्कृतः ॥ ३ ॥
तदित्सधस्थमभि चारु दीधय गावो यच्छसन्वहतुं न धेनवः ।
माता यन्मन्तुर्यूथस्य पूर्व्याभि वाणस्य सप्तधातुरिज्जनः ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र वोऽच्छा रिरिचे देवयुष्पदमेकौ रुद्रेभिर्याति तुर्वणिः।
जरा वा येष्वमृतेषु दावने परि व ऊमेभ्यः सिञ्चता मधु॥ ५॥

अथ त्रिंशो वर्ग॥ ३०॥

निधीयमानमपगूळ्हमप्सु प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
इन्द्रो विद्वाँ अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्रे अनुशिष्ट आगाम्॥ ६॥
अक्षेत्रवित्क्षेत्रविदं ह्याप्राट् स प्रैति क्षेत्रविदानुशिष्टः ।
एतद्वै भद्रमनुशासनस्योत स्तुतिं विन्दत्यञ्जसीनाम् ॥ ७॥
अद्येदु प्राणीदमममन्निमाहापीवृतो अधयन्मातुरूधः ।
एमेनमाप जरिमा युवानमहेळन्वसुः सुमना बभूव ॥ ८॥
एतानि भद्रा कलश क्रियाम कुरुश्रवण ददतो मघानि।
दान इद्धो मघवानः सो अस्त्वयं च सोमो हृदि यं बिभर्मि॥ ९॥

इति सप्तमाष्टके सप्तमोऽध्यायः॥

अथ सप्तमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः

[३३] त्रयस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूषः॥ देवता—१ विश्वे देवाः; २, ३ इन्द्रः; ४, ५ कुरुश्रवणस्य त्रासदस्यवस्य दानस्तुतिः; ६-९ उपमश्रवा मित्रातिथिपुत्राः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ निचृद्बृहती; ३ भुरिग्बृहती; ४-७, ९ गायत्री; ८ पादनिचृद्गायत्री॥ स्वरः—१ धैवतः; २, ३ मध्यमः; ४-९ षड्जः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

प्र मा युयुज्रे प्रयुजो जनानां वहामि स्म पूषणमन्तरेण।
विश्वे देवासो अध मामरक्षन्दुःशासुरागादिति घोष आसीत्॥ १॥
सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्शवः ।
नि बाधते अमतिर्नग्नता जसुर्वेर्न वेवीयते मतिः ॥ २॥
मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो।
सकृत्सु नो मघवन्निन्द्र मृळयाधा पितेव नो भव ॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुरुश्रवणमावृणि राजानं त्रासदस्यवम् ।
मंहिष्ठं वाघतामृषिः ॥ ४ ॥
यस्य मा हरितो रथे तिस्त्रो वहन्ति साधुया ।
स्तवै सहस्त्रदक्षिणे ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

यस्य प्रस्वादसो गिरं उपमश्रवसः पितुः । क्षेत्रं न रण्वमूचुषे ॥ ६ ॥
अधि पुत्रोपमश्रवो नपान्मित्रातिथेरिहि । पितुष्टे अस्मि वन्दिता ॥ ७ ॥
यदीशीयामृतानामुत वा मर्त्यानाम् । जीवेदिन्मघवा मम ॥ ८ ॥
न देवानामति व्रतं शतात्मा चन जीवति । तथा युजा वि वावृते ॥ ९ ॥

[३४] चतुस्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कवष ऐलूष अक्षो वा मौजवान्॥ देवता—१, ७, ९, १२, १३ अक्षकृषिप्रशंसा; २-६, ८, १०, ११, १४ अक्षकितवनिन्दा॥ छन्दः—१, २, ८, १२, १३ त्रिष्टुप्; ३, ६, ११, १४ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५, ९, १० विराट्त्रिष्टुप्; ७ जगती॥ स्वरः—१-६, ८-१४ धैवतः; ७ निषादः॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

प्रावेपा मा बृहतो मादयन्ति प्रवातेजा इरिणे ववृतानाः ।
सोमस्येव मौजवतस्य भक्षो विभीदको जागृविर्मह्यमच्छान् ॥ १ ॥
न मा मिमेथ न जिहीळ एषा शिवा सखिभ्य उत मह्यमासीत् ।
अक्षस्याहमेकपरस्य हेतोरनुव्रतामप जायामरोधम् ॥ २ ॥
द्वेष्टि श्वश्रूरप जाया रुणद्धि न नाथितो विन्दते मर्डितारम् ।
अश्वस्येव जरतो वस्न्यस्य नाहं विन्दामि कितवस्य भोगम् ॥ ३ ॥
अन्ये जायां परि मृशन्त्यस्य यस्यागृधद्वेदने वाज्यक्षः ।
पिता माता भ्रातर एनमाहुर्न जानीमो नयता बद्धमेतम् ॥ ४ ॥
यदादीध्ये न दविषाण्येभिः परायद्भ्योऽव हीये सखिभ्यः ।
न्युप्तांश्च बभ्रवो वाचमक्रतँ एमीदेषां निष्कृतं जारिणीव ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

सभामेति कितवः पृच्छमानो जेष्यामीति तन्वा३ शूशुजानः ।
अक्षासो अस्य वि तिरन्ति कामं प्रतिदीव्ने दधत आ कृतानि ॥ ६ ॥
अक्षास इदङ्कुशिनो नितोदिनो निकृत्वानस्तपनास्तापयिष्णवः ।
कुमारदेष्णा जयतः पुनर्हणो मध्वा सम्पृक्ताः कितवस्य बर्हणा ॥ ७ ॥
त्रिपञ्चाशः क्रीळति व्रात एषां देवइव सविता सत्यधर्मा ।
उग्रस्य चिन्मन्यवे ना नमन्ते राजा चिदेभ्यो नम इत्कृणोति ॥ ८ ॥
नीचा वर्तन्त उपरि स्फुरन्त्यहस्तासो हस्तवन्तं सहन्ते ।
दिव्या अङ्गारा इरिणे न्युप्ताः शीताः सन्तो हृदयं निर्दहन्ति ॥ ९ ॥
जाया तप्यते कितवस्य हीना माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित् ।
ऋणावा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुप नक्तमेति ॥ १० ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

स्त्रियं दृष्ट्वाय कितवं ततापान्येषां जायां सुकृतं च योनिम् ।
पूर्वाह्णे अश्वान्युयुजे हि बभ्रून्त्सो अग्रेरन्ते वृषलः पपाद ॥ ११ ॥
यो वः सेनानीर्महतो गणस्य राजा व्रातस्य प्रथमो बभूव ।
तस्मै कृणोमि न धना रुणध्मि दशाहं प्राचीस्तदृतं वदामि ॥ १२ ॥
अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः ।
तत्र गावः कितव तत्र जाया तन्मे वि चष्टे सवितायमर्यः ॥ १३ ॥
मित्रं कृणुध्वं खलु मृळता नो मा नो घोरेण चरताभि धृष्णु ।
नि वो नु मन्युर्विशतामरातिरन्यो बभ्रूणां प्रसितौ न्वस्तु ॥ १४ ॥

[३५] पञ्चत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—लुशो धानाकः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ६, ९, ११ विराड्जगती; २ भुरिग् जगती; ३, ७, १०, १२ पादनिचृज्जगती; ४, ८ आर्चीस्वराड्जगती; ५ आर्चीभुरिग्जगती; १३ निचृत्त्रिष्टुप्; १४ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१२ निषादः; १३, १४ धैवतः ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तो अग्नयो ज्योतिर्भरन्त उषसो व्युष्टिषु ।
मही द्यावापृथिवी चेततामपोऽद्या देवानामव आ वृणीमहे ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिवस्पृथिव्योरव आ वृणीमहे मातृन्तिसन्धून्पर्वताञ्छर्यणावतः।
अनागास्त्वं सूर्यमुषासमीमहे भद्रं सोमः सुवानो अद्या कृणोतु नः ॥ २ ॥
द्यावा नो अद्य पृथिवी अनागसो मही त्रायेतां सुविताय मातरा।
उषा उच्छन्त्यप बाधतामघं स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ३ ॥
इयं न उस्रा प्रथमा सुदेव्यं रेवत्सनिभ्यो रेवती व्युच्छतु ।
आरे मन्युं दुर्विदत्रस्य धीमहि स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ४ ॥
प्र याः सिस्रते सूर्यस्य रश्मिभिर्ज्योतिर्भरन्तीरुषसो व्युष्टिषु ।
भद्रा नो अद्य श्रवसे व्युच्छत स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

अनमीवा उषस आ चरन्तु न उदग्नयो जिहतां ज्योतिषा बृहत्।
आयुक्षातामश्विना तूतुजिं रथं स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ६ ॥
श्रेष्ठं नो अद्य सवितर्वरेण्यं भागमा सुव स हि रत्नधा असि।
रायो जनित्रीं धिषणामुप ब्रुवे स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ७ ॥
पिपर्तु मा तदृतस्य प्रवाचनं देवानां यन्मनुष्या३, अमन्महि।
विश्वा इदुस्राः स्पळुदेति सूर्यः स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ८ ॥
अद्वेषो अद्य बर्हिषः स्तरीमणि ग्राव्णां योगे मन्मनः साधं ईमहे।
आदित्यानां शर्मणि स्था भुरण्यसि स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ९ ॥
आ नो बर्हिः सधमादे बृहद्दिवि देवाँ ईळे सादया सप्त होतॄन्।
इन्द्रं मित्रं वरुणं सातये भगं स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ १० ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

त आदित्या आ गता सर्वतातये वृधे नो यज्ञमवता सजोषसः।
बृहस्पतिं पूषणमश्विना भगं स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ ११ ॥
तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम्।
पश्वे तोकाय तनयाय जीवसे स्वस्त्य१ग्निं समिधानमीमहे ॥ १२ ॥
विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः।
विश्वे नो देवा अवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं त्रायध्वे यं पिपृथात्यंहः।
यो वो गोपीथे न भयस्य वेद ते स्याम देववीतये तुरासः॥ १४॥

[३६] षट्त्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—लुशो धानाकः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २, ४, ६-८, ११ निचृज्जगती; ३ विराड्जगती; ५, ९, १० जगती; १२ पादनिचृज्जगती; १३ त्रिष्टुप्; १४ स्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१२ निषादः; १३, १४ धैवतः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

उषासानक्ता बृहती सुपेशसा द्यावाक्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा।
इन्द्रं हुवे मरुतः पर्वताँ अप आदित्यान्द्यावापृथिवी अपः स्वः॥ १॥
द्यौश्च नः पृथिवी च प्रचेतस ऋतावरी रक्षतामंहसो रिषः।
मा दुर्विदत्रा निर्ऋतिर्न ईशत तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे॥ २॥
विश्वस्मान्नो अदितिः पात्वंहसो माता मित्रस्य वरुणस्य रेवतः।
स्वर्वज्ज्योतिरवृकं नशीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे॥ ३॥
ग्रावा वदन्नप रक्षांसि सेधतु दुष्ष्वप्न्यं निर्ऋतिं विश्वमत्रिणम्।
आदित्यं शर्म मरुतामशीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे॥ ४॥
एन्द्रो बर्हिः सीदतु पिन्वतामिळा बृहस्पतिः सामभिर्ऋक्वो अर्चतु।
सुप्रकेतं जीवसे मन्म धीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

दिविस्पृशं यज्ञमस्माकमश्विना जीराध्वरं कृणुतं सुम्नमिष्टये।
प्राचीनरश्मिमाहुतं घृतेन तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे॥ ६॥
उप ह्वये सुहवं मारुतं गणं पावकमृष्वं सख्याय शंभुवम्।
रायस्पोषं सौश्रवसाय धीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे॥ ७॥
अपां पेरुं जीवधन्यं भरामहे देवाव्यं सुहवमध्वरश्रियम्।
सुरश्मिं सोममिन्द्रियं यमीमहि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे॥ ८॥
सनेम तत्सुसनितो सनित्वभिर्वयं जीवा जीवपुत्रा अनागसः।
ब्रह्मद्विषो विष्वगेनो भरेरत तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये स्था मनोर्यज्ञियास्ते शृणोतन यद्वो देवा ईमहे तद्ददातन।
जैत्रं क्रतुं रयिमद्वीरवद्यशस्तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ १० ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

महद्वद्य महतामा वृणीमहे ऽवो देवानां बृहतामनर्वणाम् ।
यथा वसु वीरजातं नशामहै तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ ११ ॥
महो अग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ।
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे ॥ १२ ॥
ये सवितुः सत्यसवस्य विश्वे मित्रस्य व्रते वरुणस्य देवाः।
ते सौभगं वीरवद्गोमदप्नो दधातन द्रविणं चित्रमस्मे ॥ १३ ॥
सविता पश्चातात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात्।
सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः ॥ १४ ॥

[३७] सप्तत्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—अभितपाः सौर्यः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—१-५ निचृज्जगती; ६-९ विराड्जगती; ११, १२ जगती; १० निचृत्त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१-९, ११, १२ निषादः; १० धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृतं सपर्यत ।
दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय शंसत ॥ १ ॥
सा मा सत्योक्तिः परि पातु विश्वतो द्यावा च यत्र ततनन्नहानि च।
विश्वमन्यन्नि विशते यदेजति विश्वाहापो विश्वाहोदेति सूर्यः ॥ २ ॥
न ते अदेवः प्रदिवो नि वासते यदेतशेभिः पतरै रथैर्यसि।
प्राचीनमन्यदनु वर्तते रज उदन्येन ज्योतिषा यासि सूर्य ॥ ३ ॥
येन सूर्य ज्योतिषा बाधसे तमो जगच्च विश्वमुदियर्षि भानुना।
तेनास्मद्विश्वामनिरामनाहुतिमपामीवामप दुष्वप्न्यं सुव ॥ ४ ॥
विश्वस्य हि प्रेषितो रक्षसि व्रतमहेळयन्नुच्चरसि स्वधा अनु।
यदद्य त्वा सूर्योपब्रवामहै तं नो देवा अनु मंसीरत क्रतुम् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं नो द्यावापृथिवी तन्न आप इन्द्रः शृण्वन्तु मरुतो हवं वचः।
मा शूने भूम सूर्यस्य संदृशि भद्रं जीवन्तो जरणामशीमहि॥ ६॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

विश्वाहा त्वा सुमनसः सुचक्षसः प्रजावन्तो अनमीवा अनागसः।
उद्यन्तं त्वा मित्रमहो दिवेदिवे ज्योग्जीवाः प्रति पश्येम सूर्य॥ ७॥
महि ज्योतिर्बिभ्रतं त्वा विचक्षण भास्वन्तं चक्षुषेचक्षुषे मयः।
आरोहन्तं बृहतः पाजसस्परि वयं जीवाः प्रति पश्येम सूर्य॥ ८॥
यस्य ते विश्वा भुवनानि केतुना प्र चेरते नि च विशन्ते अक्तुभिः।
अनागास्त्वेन हरिकेश सूर्याह्नाह्ना नो वस्यसावस्यसोदिहि॥ ९॥
शं नो भव चक्षसा शं नो अह्ना शं भानुना शं हिमा शं घृणेन।
यथा शमध्वञ्छमसद्दुरोणे तत्सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम्॥ १०॥
अस्माकं देवा उभयाय जन्मने शर्म यच्छत द्विपदे चतुष्पदे।
अदत्पिबदूर्जयमानमाशितं तदस्मे शं योररपो दधातन॥ ११॥
यद्वो देवाश्चकृम जिह्वया गुरु मनसो वा प्रयुती देवहेळनम्।
अरावा यो नो अभि दुच्छुनायते तस्मिन्तदेनो वसवो नि धेतन॥ १२॥

[३८] अष्टात्रिंशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रो मुष्कवान्॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ५ निचृज्जगती; २ पादनिचृज्जगती; ३, ४ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

अस्मिन्न इन्द्र पृत्सुतौ यशस्वति शिमीवति क्रन्दसि प्राव सातये।
यत्र गोषाता धृषितेषु खादिषु विष्वक्पतन्ति दिद्यवो नृषाह्ये॥ १॥
स नः क्षुमन्तं सदने व्यूर्णुहि गोअर्णसं रयिमिन्द्र श्रवाय्यम्।
स्याम ते जयतः शक्र मेदिनो यथा वयमुश्मसि तद्वसो कृधि॥ २॥
यो नो दास आर्यो वा पुरुष्टुतादेव इन्द्र युधये चिकेतति।
अस्माभिष्टे सुषहाः सन्तु शत्रवस्त्वया वयं तान्वनुयाम संगमे॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो दभ्रेभिर्हव्यो यश्च भूरिभिर्यो अभीके वरिवोविन्नृषाह्यो ।
तं विखादे सस्निमद्य श्रुतं नरमर्वाञ्चमिन्द्रमवसे करामहे ॥ ४ ॥
स्ववृजं हि त्वामहमिन्द्र शुश्रवानानुदं वृषभ रध्रचोदनम् ।
प्र मुञ्चस्व परि कुत्सादिहा गहि किमु त्वावान्मुष्कयोर्बद्ध आसते ॥ ५ ॥

[३९] एकोनचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—घोषा काक्षीवती ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ६, ७, ११, १३ निचृज्जगती; २, ८, ९, १२ जगती; ३ विराड्जगती; ४, ५ पादनिचृज्जगती; १० आर्चीस्वराड्जगती; १४ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१३ निषादः; १४ धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

यो वां परिज्मा सुवृदश्विना रथो दोषामुषासो हव्यो हविष्मता ।
शश्वत्तमासस्तमु वामिदं वयं पितुर्न नाम सुहवं हवामहे ॥ १ ॥
चोदयतं सूनृताः पिन्वतं धिय उत्पुरन्धीरीरयतं तदुश्मसि ।
यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमं न चारुं मघवत्सु नस्कृतम् ॥ २ ॥
अमाजुरश्चिद्धवथो युवं भगोऽनाशोश्चिदवितारापमस्य चित् ।
अन्धस्य चिन्नासत्या कृशस्य चिद्युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्य चित् ॥ ३ ॥
युवं च्यवानं सनयं यथा रथं पुनर्युवानं चरथाय तक्षथुः ।
निष्टौग्र्यमूहथुरद्भ्यस्परि विश्वेत्ता वां सवनेषु प्रवाच्या ॥ ४ ॥
पुराणा वां वीर्या३ प्र ब्रवा जनेऽथो हासथुर्भिषजा मयोभुवा ।
ता वां नु नव्यावसे करामहेऽयं नासत्या श्रदरिर्यथा दधत् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

इयं वामह्वे शृणुतं मे अश्विना पुत्रायेव पितरा मह्यं शिक्षतम् ।
अनापिरज्ञा असजात्यामतिः पुरा तस्या अभिशस्तेरव स्पृतम् ॥ ६ ॥
युवं रथेन विमदाय शुन्ध्युवं न्यूहथुः पुरुमित्रस्य योषणाम् ।
युवं हवं वध्रिमत्या अगच्छतं युवं सुषुतिं चक्रथुः पुरन्धये ॥ ७ ॥
युवं विप्रस्य जरणामुपेयुषः पुनः कलेरकृणुतं युवद्वयः ।
युवं वन्दनमृश्यदादुदूपथुर्युवं सद्यो विश्पलामेतवे कृथः ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवं ह रेभं वृषणा गुहा हितमुदैरयतं ममृवांसमश्विना ।
युवमूबीसमुत तप्तमत्रय ओमन्वन्तं चक्रथुः सप्तवध्रये ॥ ९ ॥
युवं श्वेतं पेदवेऽश्विनाश्वं नवभिर्वाजैर्नवती च वाजिनम् ।
चर्कृत्यं ददथुर्द्रवित्स्वं भगं न नृभ्यो हव्यं मयोभुवम् ॥ १० ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

न तं राजानावदिते कुतश्चन नांहो अश्नोति दुरितं नकिर्भयम् ।
यमश्विना सुहवा रुद्रवर्तनी पुरोरथं कृणुथः पत्न्या सह ॥ ११ ॥
आ तेन यातं मनसो जवीयसा रथं यं वामृभवश्चक्रुरश्विना ।
यस्य योगे दुहिता जायते दिव उभे अहनी सुदिने विवस्वतः ॥ १२ ॥
ता वर्तिर्यातं जयुषा वि पर्वतमपिन्वतं शयवे धेनुमश्विना ।
वृकस्य चिद्वर्तिकामन्तरास्यादुवं शचीभिर्ग्रसिताममुञ्चतम् ॥ १३ ॥
एतं वां स्तोममश्विनावकर्मातक्षाम भृगवो न रथम् ।
न्यमृक्षाम योषणां न मर्ये नित्यं न सूनुं तनयं दधानाः ॥ १४ ॥

[४०] चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—घोषा काक्षीवती ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ५, १२, १४ विराड् जगती; २, ३, ७, १०, १३ जगती; ४, ९, ११ निचृज्जगती; ६, ८ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

रथं यान्तं कुह को ह वां नरा प्रति द्युमन्तं सुविताय भूषति ।
प्रातर्यावाणं विभ्वं विशेविशे वस्तोर्वस्तोर्वहमानं धिया शमि ॥ १ ॥
कुह स्विद्घोषा कुह वस्तोरश्विना कुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः ।
को वां शयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुते सधस्थ आ ॥ २ ॥
प्रातर्जरेथे जरणेव काप्या वस्तोर्वस्तोर्यजता गच्छथो गृहम् ।
कस्य ध्वस्त्रा भवथः कस्य वा नरा राजपुत्रेव सवनाव गच्छथः ॥ ३ ॥
युवां मृगेव वारणा मृगण्यवो दोषा वस्तोर्हविषा नि ह्वयामहे ।
युवं होत्रामृतुथा जुह्वते नरेषं जनाय वहथः शुभस्पती ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवां ह घोषा पर्यश्विना यती राज्ञ ऊचे दुहिता पृच्छे वां नरा।
भूतं मे अह्न उत भूतमक्तवेऽश्वावते रथिने शक्तमर्वते ॥ ५ ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

युवं कवी ष्टः पर्यश्विना रथं विशो न कुत्सो जरितुर्नशायथः।
युवोर्ह मक्षा पर्यश्विना मध्वासा भरत निष्कृतं न योषणा ॥ ६ ॥
युवं ह भुज्युं युवमश्विना वशं युवं शिञ्जारमुशनामुपारथुः।
युवो रावा परि सख्यमासते युवोरहमवसा सुम्नमा चके ॥ ७ ॥
युवं ह कृशं युवमश्विना शयुं युवं विधन्तं विधवामुरुष्यथः।
युवं सनिभ्यः स्तनयन्तमश्विनापं व्रजमूर्णुथः सप्तास्यम् ॥ ८ ॥
जनिष्ट योषा पतयत्कनीनको वि चारुहन्वीरुधो दंसना अनु।
आस्मै रीयन्ते निवनेव सिन्धवोऽस्मा अह्ने भवति तत्पतित्वनम् ॥ ९ ॥
जीवं रुदन्ति वि मयन्ते अध्वरे दीर्घामनु प्रसितिं दीधियुर्नरः।
वामं पितृभ्यो य इदं समेरिरे मयः पतिभ्यो जनयः परिष्वजे ॥ १० ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

न तस्य विद्म तदु षु प्र वोचत युवा ह यद्युवत्याः क्षेति योनिषु।
प्रियो स्त्रियस्य वृषभस्य रेतिनो गृहं गमेमाश्विना तदुश्मसि ॥ ११ ॥
आ वामगन्त्सुमतिर्वाजिनीवसू न्यश्विना हृत्सु कामा अयंसत।
अभूतं गोपा मिथुना शुभस्पती प्रिया अर्यम्णो दुयाँ अशीमहि ॥ १२ ॥
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ धत्तं रयिं सहवीरं वचस्यवे।
कृतं तीर्थं सुप्रपाणं शुभस्पती स्थाणुं पथेष्ठामप दुर्मतिं हतम् ॥ १३ ॥
क्व स्विदद्य कतमास्वश्विना विक्षु दस्रा मादयेते शुभस्पती।
क ईं नि येमे कतमस्य जग्मतुर्विप्रस्य वा यजमानस्य वा गृहम् ॥ १४ ॥

[४१] एकचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सुहस्त्यो घौषेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१ पादनिचृज्जगती; २ निचृज्जगती; ३ विराड्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

समानमु त्यं पुरुहूतमुक्थ्यं१ रथं त्रिचक्रं सवना गणिग्मतम् ।
परिज्मानं विदथ्यं सुवृक्तिभिर्वयं व्युष्टा उषसो हवामहे ॥ १ ॥
प्रातर्युजं नासत्याधि तिष्ठथः प्रातर्यावाणं मधुवाहनं रथम् ।
विशो येन गच्छथो यज्वरीर्नरा कीरेश्चिद्यज्ञं होतृमन्तमश्विना ॥ २ ॥
अध्वर्युं वा मधुपाणिं सुहस्त्यमग्निधं वा धृतदक्षं दमूनसम् ।
विप्रस्य वा यत्सवनानि गच्छथोऽत आ यातं मधुपेयमश्विना ॥ ३ ॥

[४२] द्विचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३, ७-९, ११ त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत् त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ६, १० विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन्भूषन्निव प्र भरा स्तोममस्मै ।
वाचा विप्रास्तरत वाचमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम् ॥ १ ॥
दोहेन गामुप शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम् ।
कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टमा च्यावय मघदेयाय शूरम् ॥ २ ॥
किमङ्ग त्वा मघवन्भोजमाहुः शिशीहि मा शिश्वयं त्वा शृणोमि ।
अप्रस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भगमिन्द्रा भरा नः ॥ ३ ॥
त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र सन्तस्थाना वि ह्वयन्ते समीके ।
अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान्नासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः ॥ ४ ॥
धनं न स्पन्द्रं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्त्सोमाँ आसुनोति प्रयस्वान् ।
तस्मै शत्रून्त्सुतुकान्प्रातरह्नो नि स्वष्ट्रान्युवति हन्ति वृत्रम् ॥ ५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

यस्मिन्वयं दधिमा शंसमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा कामम्मस्मे ।
आराच्चित्सन्भयतामस्य शत्रुर्न्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम् ॥ ६ ॥
आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्बः पुरुहूत तेन ।
अस्मे धेहि यवमद्गोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम् ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र यमन्तर्वृषसवासो अग्मन्तीव्राः सोमा बहुलान्तासु इन्द्रम्।
नाहं दामानं मघवा नि यंसन्नि सुन्वते वहति भूरि वामम्॥ ८॥
उत प्रहामतिदीव्या जयाति कृतं यच्छ्वघ्नी विचिनोति काले।
यो देवकामो न धना रुणद्धि समित्तं राया सृजति स्वधावान्॥ ९॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम॥ १०॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु॥ ११॥

चतुर्थोऽनुवाकः [४३] त्रिचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ९ निचृज्जगती; २ आर्चीस्वराड्जगती; ३, ६ जगती; ४, ५, ७, ८ विराड्जगती; १० विराट्त्रिष्टुप्; ११ त्रिष्टुप्॥
स्वरः—१-९ निषादः; १०, ११ धैवतः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

अच्छा म इन्द्रं मतयः स्वर्विदः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत।
परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये॥ १॥
न घा त्वद्रिगप वेति मे मनस्त्वे इत्कामं पुरुहूत शिश्रय।
राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते॥ २॥
विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते।
तस्येदिमे प्रवणे सप्त सिन्धवो वयो वर्धन्ति वृषभस्य शुष्मिणः॥ ३॥
वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन्त्सोमास इन्द्रं मन्दिनश्चमूषदः।
प्रैषामनीकं शवसा दविद्युतद्विदत्स्वर्मनवे ज्योतिरार्यम्॥ ४॥
कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत्।
न तत्ते अन्यो अनु वीर्यं शकन्न पुराणो मघवन्नोत नूतनः॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद्वृषा।
यस्याह शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपो॒ न सिन्धु॒मभि यत्स॒मक्ष॑र॒न्त्सोमा॑स॒ इन्द्रं॑ कु॒ल्याइ॑व ह्र॒दम्।
वर्धं॑न्ति॒ विप्रा॒ महो॑ अस्य॒ सादने॒ यवं॒ न वृ॒ष्टिर्दि॒व्येन॒ दानु॑ना ॥ ७ ॥
वृषा॒ न क्रु॒द्धः प॑तय॒द्रज॒स्वा यो अ॒र्यप॑त्नीरकृणोदि॒मा अ॒पः।
स सु॑न्व॒ते म॒घवा॑ जी॒रदा॑नवेऽविन्द॒ज्ज्योति॒र्मन॑वे हविष्म॒ते ॥ ८ ॥
उज्जा॑यतां पर॒शुर्ज्योति॑षा स॒ह भूया॒ ऋत॑स्य सु॒दुघा॑ पुराण॒वत्।
वि रो॑चतामरु॒षो भा॒नुना॒ शुचि॒: स्व॑र्ण॒ शुक्रं॑ शु॒शुचीत॒ सत्प॑तिः ॥ ९ ॥
गोभि॑ष्टरे॒मामति॑तिं दुरे॒वां यवे॑न॒ क्षुधं॑ पुरुहूत॒ विश्वा॑म्।
व॒यं राज॑भिः प्रथ॒मा धना॑न्य॒स्माके॑न वृ॒जने॑ना ज॒येम ॥ १० ॥
बृह॒स्पति॑र्नः॒ परि॑ पातु प॒श्चादु॒तोत्त॑रस्मा॒दध॑रादघा॒योः।
इन्द्रः॑ पु॒रस्ता॑दुत म॑ध्य॒तो न॒: सखा॒ सखि॑भ्यो॒ वरि॑वः कृणोतु ॥ ११ ॥

[४४] चतुश्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—कृष्णः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, १० विराट्त्रिष्टुप्; ३, ११ त्रिष्टुप्; ४ विराड्जगती; ५-७, ९ पादनिचृज्जगती; ८ निचृज्जगती ॥
स्वरः—१-३, १०, ११ धैवतः; ४-९ निषादः ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

आ या॒त्विन्द्रः॒ स्वप॑तिर्मदा॒य॒ यो धर्म॑णा तूतुजा॒नस्तुवि॑ष्मान्।
प्रत्व॑क्षाणो अति॒ विश्वा॒ सहां॑स्यपा॒रेण॑ महु॒ता वृ॒ष्ण्येन ॥ १ ॥
सु॒ष्ठामा॒ रथः॑ सु॒यमा॒ हरी॑ ते मि॒म्यक्ष॒ वज्रो॑ नृपते॒ गभ॑स्तौ।
शीभं॑ राजन्त्सु॒पथा॑ या॒ह्यर्वाङ्वर्धा॑म ते प॒पुषो॒ वृष्ण्या॑नि ॥ २ ॥
एन्द्र॒वाहौ॑ नृ॒पति॑ं वज्र॒बाहु॑मु॒ग्रमु॒ग्रास॑स्तवि॒षास॑ एनम्।
प्रत्व॑क्षसं वृष॒भं स॒त्यशु॑ष्ममे॒मस्म॒त्रा स॑धमा॒दो॑ वहन्तु ॥ ३ ॥
एवा पति॑र्द्रोण॒साचं॑ सचे॒तसमू॑र्जः स्क॒म्भं ध॒रुण॒ आ वृ॑षायसे।
ओज॑: कृष्व॒ सं गृ॑भाय॒ त्वे अप्य॑सो॒ यथा॑ के॒नि॒पाना॑मि॒नो वृधे ॥ ४ ॥
गम॑न्न॒स्मे वसू॒न्या हि शंसि॑षं स्वा॒शिष॑ं भर॒मा या॑हि सो॒मिनः॑।
त्वमी॑शिषे॒ सास्मिन्ना स॑त्सि ब॒र्हिष्यना॑धृष्या तव॒ पात्रा॑णि॒ धर्म॑णा ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

पृथक्प्रायन्प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा ।
न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीर्मैव ते न्यविशन्त केपयः ॥ ६ ॥
एवैवापागपरे सन्तु दूढ्योऽश्वा येषां दुर्युज आयुयुज्रे ।
इत्था ये प्रागुपरे सन्ति दावने पुरूणि यत्र वयुनानि भोजना ॥ ७ ॥
गिरींरज्राञ्जेजमानाँ अधारयद् द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत् ।
समीचीने धिषणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति ॥ ८ ॥
इमं बिभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवञ्छफारुजः ।
अस्मिन्त्सु ते सवने अस्त्वोक्यं सुत इष्टौ मघवन्बोध्याभगः ॥ ९ ॥
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥ १० ॥
बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ॥ ११ ॥

[४५] पञ्चचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सप्रिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ त्रिष्टुप्; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९-१२ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद् द्वितीयं परि जातवेदाः ।
तृतीयमप्सु नृमणा अजस्त्रमिन्धान एनं जरते स्वाधीः ॥ १ ॥
विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा ।
विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ ॥ २ ॥
समुद्रे त्वा नृमणा अप्स्वन्तर्नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊधन् ।
तृतीये त्वा रजसि तस्थिवांसमपामुपस्थे महिषा अवर्धन् ॥ ३ ॥
अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन् ।
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः ॥ ४ ॥
श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः ।
वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा वि भात्यग्र उषसामिधानः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः।
वीळुं चिदद्रिमभिनत्परायञ्जना यदग्निमयजन्त पञ्च ॥ ६ ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

उशिक्पावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि ।
इयर्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन् ॥ ७ ॥
दृशानो रुक्म उर्विया व्यद्यौद्दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः ।
अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौर्जनयत्सुरेताः ॥ ८ ॥
यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचेऽपूपं देव घृतवन्तमग्ने ।
प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ ॥ ९ ॥
आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थऽउक्थ आ भज शस्यमाने।
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनदुदुज्जनित्वैः ॥ १० ॥
त्वामग्ने यजमाना अनु द्यून्विश्वा वसु दधिरे वार्याणि।
त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः ॥ ११ ॥
अस्तोव्यग्निर्नरां सुशेवो वैश्वानर ऋषिभिः सोमगोपाः।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ॥ १२ ॥

इति सप्तमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः ॥

अथाष्टमाष्टके प्रथमोऽध्यायः

[४६] षट्चत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—वत्सप्रिः ॥ देवता—अग्निः—१, २ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ४, ८, १० त्रिष्टुप्; ६ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप्; ९ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

प्र होता जातो महान्नभोविन्नृषद्वा सीददुपामुपस्थे ।
दधिर्यो धायि स ते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः ॥ १ ॥
इमं विधन्तो अपां सधस्थे पशुं न नष्टं पदैरनु गमन् ।
गुहा चतन्तमुशिजो नमोभिरिच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमं त्रितो भूर्यविन्ददिच्छन्वैभूवसो मूर्धन्यघ्न्यायाः ।
स शेवृधो जात आ हर्म्येषु नाभिर्युवा भवति रोचनस्य ॥ ३ ॥
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः प्राञ्चं यज्ञं नेतारमध्वराणाम् ।
विशामकृण्वन्नरतिं पावकं हव्यवाहं दधतो मानुषेषु ॥ ४ ॥
प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरा अमूरं पुरां दर्माणम् ।
नयन्तो गर्भं वनां धियं धुर्हिरिश्मश्रुं नावीणां धनर्चम् ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

नि पस्त्यासु त्रितः स्तभूयन्परिवीतो योनौ सीददन्तः ।
अतः संगृभ्या विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयते नॄन् ॥ ६ ॥
अस्याजरासो दमामरित्रा अर्चद्धूमासो अग्नयः पावकाः ।
श्वितीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः ॥ ७ ॥
प्र जिह्वया भरते वेपो अग्निः प्र वयुनानि चेतसा पृथिव्याः ।
तमायवः शुचयन्तं पावकं मन्द्रं होतारं दधिरे यजिष्ठम् ॥ ८ ॥
द्यावा यमग्निं पृथिवी जनिष्टामापस्त्वष्टा भृगवो यं सहोभिः ।
ईळेन्यं प्रथमं मातरिश्वा देवास्ततक्षुर्मनवे यजत्रम् ॥ ९ ॥
यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहं पुरुस्पृहो मानुषासो यजत्रम् ।
स यामन्नग्ने स्तुवते वयो धाः प्र देवयन्यशसः सं हि पूर्वीः ॥ १० ॥

[४७] सप्तचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—सप्तगुः ॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः ॥ छन्दः—१, ४, ७ त्रिष्टुप्; २ आर्चीस्वराट्-त्रिष्टुप्; ३ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५, ६, ८ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

जगृभ्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम् ।
विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ १ ॥
स्वायुधं स्ववसं सुनीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम् ।
चर्कृत्यं शंस्यं भूरिवारमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुब्रह्माणं देववन्तं बृहन्तमुरुं गभीरं पृथुबुध्नमिन्द्र।
श्रुतऋषिमुग्रमभिमातिषाहमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः॥ ३॥
सनद्वाजं विप्रवीरं तरुत्रं धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम्।
दस्युहनं पूर्भिदमिन्द्र सत्यमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः॥ ४॥
अश्वावन्तं रथिनं वीरवन्तं सहस्त्रिणं शतिनं वाजमिन्द्र।
भद्रब्रातं विप्रवीरं स्वर्षामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

प्र सप्तगुमृतधीतिं सुमेधां बृहस्पतिं मतिरच्छा जिगाति।
य आङ्गिरसो नमसोपसद्योऽस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः॥ ६॥
वनीवानो मम दूतास इन्द्रं स्तोमाश्चरन्ति सुमतीरियानाः।
हृदिस्पृशो मनसा वच्यमाना अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः॥ ७॥
यत्त्वा यामि दद्धि तन्न इन्द्र बृहन्तं क्षयमसमं जनानाम्।
अभि तद् द्यावापृथिवी गृणीतामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः॥ ८॥

[४८] अष्टचत्वारिंशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ छन्दः—१, ३ पादनिचृज्जगती; २, ८ जगती; ४ निचृज्जगती; ५ विराड्जगती; ६, ९ आर्चीस्वराड्जगती; ७ विराट्त्रिष्टुप्; १०, ११ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-६, ८, ९ निषादः; ७, १०, ११ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिरहं धनानि सं जयामि शश्वतः।
मां हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे वि भजामि भोजनम्॥ १॥
अहमिन्द्रो रोधो वक्षो अथर्वणस्त्रिताय गा अजनयमहेरधि।
अहं दस्युभ्यः परि नृम्णमा ददे गोत्रा शिक्षन्दधीचे मातरिश्वने॥ २॥
मह्यं त्वष्टा वज्रमतक्षदायसं मयि देवासोऽवृजन्नपि क्रतुम्।
ममानीकं सूर्यस्येव दुष्टरं मामार्यन्ति कृतेन कर्त्वेन च ॥ ३॥
अहमेतं गव्ययमश्व्यं पशुं पुरीषिणं सायकेना हिरण्ययम्।
पुरू सहस्त्रा नि शिशामि दाशुषे यन्मा सोमास उक्थिनो अमन्दिषुः॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन।
सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

अहमेताञ्छाश्वसतो द्वाद्वेन्द्रं ये वज्रं युधयेऽकृण्वत ।
आह्वयमानाँ अव हन्मनाहनं दूळहा वदन्ननमस्युर्नमस्विनः॥ ६॥
अभी३दमेकमेको अस्मि निष्षाळभी द्वा किमु त्रयः करन्ति।
खले न पर्षान्प्रति हन्मि भूरि किं मा निन्दन्ति शत्रवोऽनिन्द्राः॥ ७॥
अहं गुङ्भ्यो अतिथिग्वमिष्कर्मिषं न वृत्रतुरं विक्षु धारयम्।
यत्पर्णयघ्न उत वा करञ्जहे प्राहं महे वृत्रहत्ये अशुश्रवि॥ ८॥
प्र मे नमी साप्य इषे भुजे भूद्ववामेषे सख्या कृणुत द्विता।
दिद्युं यदस्य समिथेषु मंहयमादिदेनं शंस्यमुक्थ्यं करम्॥ ९॥
प्र नेमस्मिन्ददृशे सोमो अन्तर्गोपा नेममाविरस्था कृणोति।
स तिग्मशृङ्गं वृषभं युयुत्सन्द्रुहस्तस्थौ बहुले बद्धो अन्तः॥ १०॥
आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां न मिनामि धाम।
ते मा भद्राय शवसे ततक्षुरपराजितमस्तृतमषाळ्हम् ॥ ११॥

[४९] एकोनपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ छन्दः—१ आर्चीभुरिग्जगती; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३, ९ विराड्जगती; ४ जगती; ५, ६, ८ निचृज्जगती; ७ आर्चीस्वराड्जगती; १० पादनिचृज्जगती; ११ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-१० निषादः; २, ११ धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

अहं दां गृणते पूर्व्यं वस्वहं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम्।
अहं भुवं यजमानस्य चोदितायज्वनः साक्षि विश्वस्मिन्भरे॥ १॥
मां धुरिन्द्रं नाम देवता दिवश्च ग्मश्चापां च जन्तवः।
अहं हरी वृषणा विव्रता रघू अहं वज्रं शवसे धृष्णवा ददे॥ २॥
अहमत्कं कवये शिश्नथं हथैरहं कुत्समावमाभिरूतिभिः।
अहं शुष्णस्य श्नथिता वधर्यमं न यो ररक्ष आर्यं नाम दस्यवे॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहं पितेव वेतसूँरभिष्टये तुग्रं कुत्साय स्मदिभं च रन्धयम्।
अहं भुवं यजमानस्य राजनि प्र यद्धरे तुजये न प्रियाधृषे॥ ४॥
अहं रन्धयं मृगयं श्रुतर्वणे यन्माजिहीत वयुना चनानुषक्।
अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सव्याय पड्गृभिमरन्धयम्॥ ५॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम्।
यद्वर्धयन्तं प्रथयन्तमानुषग्दूरे पारे रजसो रोचनाकरम्॥ ६॥
अहं सूर्यस्य परि याम्याशुभिः प्रैतशेभिर्वहमान ओजसा।
यन्मा सावो मनुष आह निर्णिज ऋधक्कृषे दासं कृत्व्यं हथैः॥ ७॥
अहं सप्तहा नहुषो नहुष्टरः प्राश्रावयं शवसा तुर्वशं यदुम्।
अहं न्य१न्यं सहसा सहस्करं नव व्राधतो नवतिं च वक्षयम्॥ ८॥
अहं सप्त स्रवतो धारयं वृषा द्रवित्नवः पृथिव्यां सीरा अधि।
अहमर्णांसि वि तिरामि सुक्रतुर्युधा विदं मनवे गातुमिष्टये॥ ९॥
अहं तदासु धारयं यदासु न देवश्चन त्वष्टाधारयद्रुशत्।
स्पार्हं गवामूधःसु वक्षणास्वा मधोर्मधु श्वात्र्यं सोममाशिरम्॥ १०॥
एवा देवाँ इन्द्रो विव्ये नृन्प्र च्यौत्नेन मघवा सत्यराधाः।
विश्वेत्ता ते हरिवः शचीवोऽभि तुरासः स्वयशो गृणन्ति॥ ११॥

[५०] पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ देवता—इन्द्रो वैकुण्ठः॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २ आर्ची-स्वराड्जगती; ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप्; ६, ७ पाद-निचृज्जगती॥ स्वरः—१, २, ६, ७ निषादः; ३, ४, ५ धैवतः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

प्र वो महे मन्दमानायान्धसोऽर्चा विश्वानराय विश्वाभुवे।
इन्द्रस्य यस्य सुमखं सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः॥ १॥
सो चिन्नु सख्या नर्यो इनः स्तुतश्चर्कृत्य इन्द्रो मावते नरे।
विश्वासु धूर्षु वाजकृत्येषु सत्पते वृत्रे वाप्स्व१भि शूर मन्दसे॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ते नर इन्द्र ये त इषे ये ते सुम्नं सधन्यमियक्षान्।
के ते वाजायासुर्याय हिन्विरे के अप्सु स्वासूर्वरासु पौंस्ये॥ ३॥
भुवस्त्वमिन्द्र ब्रह्मणा महान्भुवो विश्वेषु सवनेषु यज्ञियः।
भुवो नृँश्च्यौत्नो विश्वस्मिन्भरे ज्येष्ठश्च मन्त्रो विश्वचर्षणे॥ ४॥
अवा नु कं ज्यायान्यज्ञवनसो महीं त ओमात्रां कृष्टयो विदुः।
असो नु कमजरो वर्धीश्च विश्वेदेता सवना तूतुमा कृषे॥ ५॥
एता विश्वा सवना तूतुमा कृषे स्वयं सूनो सहसो यानि दधिषे।
वराय ते पात्रं धर्मणे तना यज्ञो मन्त्रो ब्रह्मोद्यतं वचः॥ ६॥
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा वसूनां च वसुनश्च दावने।
प्र ते सुम्नस्य मनसा पथा भुवन्मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः॥ ७॥

[५१] एकपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३, ५, ७, ९ देवाः; २, ४, ६, ८ अग्निः सौचीकः॥ देवता—१, ३, ५, ७, ९ अग्निः सौचीकः; २, ४, ६, ८ देवाः॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ४, ७, त्रिष्टुप्; ८, ९ भुरिक्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

महत्तदुल्बं स्थविरं तदासीद्येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः।
विश्वा अपश्यद्बहुधा ते अग्ने जातवेदस्तन्वो देव एकः॥ १॥
को मा ददर्श कतमः स देवो यो मे तन्वो बहुधा पर्यपश्यत्।
क्वाहं मित्रावरुणा क्षियन्त्यग्नेर्विश्वाः समिधो देवयानीः॥ २॥
ऐच्छाम त्वा बहुधा जातवेदः प्रविष्टमग्ने अप्स्वोषधीषु।
तं त्वा यमो अचिकेच्चित्रभानो दशान्तरुष्यादतिरोचमानम्॥ ३॥
होत्रादहं वरुण बिभ्यदायं नेदेव मा युनजन्नत्र देवाः।
तस्य मे तन्वो बहुधा निविष्टा एतमर्थं न चिकेताहमग्निः॥ ४॥
एहि मनुर्देवयुर्यज्ञकामोऽरं कृत्या तमसि क्षेष्यग्ने।
सुगान्पथः कृणुहि देवयानान्वह हव्यानि सुमनस्यमानः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अग्नेः पूर्वे भ्रातरो अर्थमेतं रथीवाध्वानमन्वावरीवुः ।
तस्माद्द्रिया वरुण दूरमायं गौरो न क्षेप्नोरविजे ज्यायाः ॥ ६ ॥
कुर्मस्त आयुर्जरं यदग्ने यथा युक्तो जातवेदो न रिष्याः ।
अथा वहासि सुमनस्यमानो भागं देवेभ्यो हविषः सुजात ॥ ७ ॥
प्रयाजान्मे अनुयाजाँश्च केवलानूर्जस्वन्तं हविषो दत्त भागम् ।
घृतं चापां पुरुषं चौषधीनामग्नेश्च दीर्घमायुरस्तु देवाः ॥ ८ ॥
तवं प्रयाजा अनुयाजाश्च केवल ऊर्जस्वन्तो हविषः सन्तु भागाः ।
तवाग्ने यज्ञोऽयमस्तु सर्वस्तुभ्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रः ॥ ९ ॥

[५२] द्विपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निः सौचीकः ॥ देवता—देवाः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २-४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

विश्वे देवाः शास्तन मा यथेह होता वृतो मनवै यन्निषद्य ।
प्र मे ब्रूत भागधेयं यथा वो येन पथा हव्यमा वो वहानि ॥ १ ॥
अहं होता न्यसीदं यजीयान्विश्वे देवा मरुतो मा जुनन्ति ।
अहरहरश्विनाध्वर्यवं वां ब्रह्मा समिद्धवति साहुतिर्वाम् ॥ २ ॥
अयं यो होता किरु स यमस्य कमप्यूहे यत्समञ्जन्ति देवाः ।
अहरहर्जायते मासिमास्यथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ॥ ३ ॥
मां देवा दधिरे हव्यवाहमपम्लुक्तं बहु कृच्छ्रा चरन्तम् ।
अग्निर्विद्वान्यज्ञं नः कल्पयाति पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् ॥ ४ ॥
आ वो यक्ष्यमृतत्वं सुवीरं यथा वो देवा वरिवः करणि ।
आ बाह्वोर्वज्रमिन्द्रस्य धेयामथेमा विश्वाः पृतना जयाति ॥ ५ ॥
त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
औक्षन्घृतैरस्तृणन्बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५३] त्रिपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—१-३, ६-११ देवाः; ४, ५ अग्निः सौचीकः॥ देवता—१-३, ६-११ अग्निः सौचीकः; ४, ५ देवाः॥ छन्दः—१, ३, ८ त्रिष्टुप्; २, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ६, ७, ९ निचृज्जगती; १० विराड्जगती; ११ पादनिचृज्जगती॥ स्वरः—१-५, ८ धैवतः; ६, ७, ९-११ निषादः॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

यमैच्छाम मनसा सोऽयमागाद्यज्ञस्य विद्वान्परुषश्चिकित्वान्।
स नो यक्षद्देवताता यजीयान्नि हि षत्सदन्तरः पूर्वो अस्मत्॥ १॥
अराधि होता निषदा यजीयानभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यत्।
यजामहै यज्ञियान्हन्त देवाँ ईळामहा ईड्याँ आज्येन ॥ २॥
साध्वीमकर्देववीतिं नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामविदाम गुह्याम्।
स आयुरागात्सुरभिर्वसानो भद्रामकर्देवहूतिं नो अद्य ॥ ३॥
तदद्य वाचः प्रथमं मसीय येनासुराँ अभि देवा असाम ।
ऊर्जीद उत यज्ञियासः पञ्च जना मम होत्रं जुषध्वम् ॥ ४॥
पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ॥ ५॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

तन्तुं तन्वन्रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥ ६॥
अक्षानहो नह्यतनोत सोम्या इष्कृणुध्वं रशना ओत पिंशत।
अष्टावन्धुरं वहताभितो रथं येन देवासो अनयन्नभि प्रियम्॥ ७॥
अश्मन्वती रीयते सं रभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः ।
अत्रा जहाम ये असन्नशेवाः शिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान् ॥ ८॥
त्वष्टा माया वेदपसामपस्तमो बिभ्रत्पात्रा देवपानानि शन्तमा।
शिशीते नूनं परशुं स्वायसं येन वृश्चादेतशो ब्रह्मणस्पतिः॥ ९॥
सतो नूनं कवयः सं शिशीत वाशीभिर्याभिरमृताय तक्षथ।
विद्वांसः पदा गुह्यानि कर्तन येन देवासो अमृतत्वमानशुः॥ १०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्भे योषामदधुर्वत्समासन्यपीच्येन मनसोत जिह्वया ।
स विश्वाहा सुमना योग्या अभि सिषासनिर्वनते कार इज्जितिम् ॥ ११ ॥

[५४] चतुःपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेव्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ६ त्रिष्टुप्; २ विराट् त्रिष्टुप्; ३, ४ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

तां सु ते कीर्तिं मघवन्महित्वा यत्त्वा भीते रोदसी अह्वयेताम् ।
प्रावो देवाँ आतिरो दासमोजः प्रजायै त्वस्यै यदशिक्ष इन्द्र ॥ १ ॥
यदचरस्तन्वा वावृधानो बलानीन्द्र प्रब्रुवाणो जनेषु ।
मायेत्सा ते यानि युद्धान्याहुर्नाद्य शत्रुं ननु पुरा विवित्से ॥ २ ॥
क उ नु ते महिमानः समस्यास्मत्पूर्व ऋषयोऽन्तमापुः ।
यन्मातरं च पितरं च साकमजनयथास्तन्वः स्वायाः ॥ ३ ॥
चत्वारि ते असुर्याणि नामादाभ्यानि महिषस्य सन्ति ।
त्वमङ्ग तानि विश्वानि वित्से येभिः कर्माणि मघवञ्चकर्थ ॥ ४ ॥
त्वं विश्वा दधिषे केवलानि यान्यावियां च गुह्या वसूनि ।
काममिन्मे मघवन्मा वि तारीस्त्वमाज्ञाता त्वमिन्द्रासि दाता ॥ ५ ॥
यो अदधाज्ज्योतिषि ज्योतिरन्तर्यो असृजन्मधुना सं मधूनि ।
अर्धं प्रियं शूषमिन्द्राय मन्म ब्रह्मकृतो बृहदुक्थादवाचि ॥ ६ ॥

[५५] पञ्चपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेव्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ८ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ४, ६ त्रिष्टुप्; ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

दूरे तन्नाम गुह्यं पराचैर्यत्त्वा भीते अह्वयेतां वयोधै ।
उदस्तभ्नाः पृथिवीं द्यामभीके भ्रातुः पुत्रान्मघवन्तित्विषाणः ॥ १ ॥
महत्तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृग्येन भूतं जनयो येन भव्यम् ।
प्रत्नं जातं ज्योतिर्यदस्य प्रियं प्रियाः समविशन्त पञ्च ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ रोदसी अपृणादोत मध्यं पञ्च देवाँ ऋतुशः सप्तसप्त।
चतुस्त्रिंशता पुरुधा वि चष्टे सरूपेण ज्योतिषा विव्रतेन॥ ३॥
यदुष औच्छः प्रथमा विभानामजनयो येन पुष्टस्य पुष्टम्।
यत्ते जामित्वमवरं परस्या महन्महत्या असुरत्वमेकम्॥ ४॥
विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान॥ ५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

शाक्मना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः सनादनीळः।
यच्चिकेत सत्यमित्तन्न मोघं वसु स्पार्हमुत जेतोत दाता॥ ६॥
ऐभिर्ददे वृष्णया पौंस्यानि येभिरौक्षद्वृत्रहत्याय वज्री।
ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्न ऋतेकर्ममुदजायन्त देवाः॥ ७॥
युजा कर्माणि जनयन्विश्वौजा अशस्तिहा विश्वमनास्तुराषाट्।
पीत्वी सोमस्य दिव आ वृधानः शूरो निर्युधाधमद्दस्यून्॥ ८॥

[५६] षट्पञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेव्यः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २ विराट्त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृज्जगती; ५ विराड्जगती; ६ आर्चीभुरिग्जगती; ७ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ७ धैवतः; ४-६ निषादः॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व।
संवेशने तन्वश्चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे॥ १॥
तनूष्टे वाजिन्तन्वं नयन्ती वाममस्मभ्यं धातु शर्म तुभ्यम्।
अहुतो महो धरुणाय देवान्दिवीव ज्योतिः स्वमा मिमीयाः॥ २॥
वाज्यसि वाजिनेना सुवेनीः सुवितः स्तोमं सुवितो दिवं गाः।
सुवितो धर्म प्रथमानु सत्या सुवितो देवान्त्सुवितोऽनु पत्म॥ ३॥
महिम्न एषां पितरश्चनेशिरे देवा देवेष्वदधुरपि क्रतुम्।
समविव्यचुरुत यान्यत्विषुरैषां तनूषु नि विविशुः पुनः॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहोभिर्विश्वं परि चक्रमू रजः पूर्वा धामान्यमिता मिमानाः।
तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे प्रासारयन्त पुरुध प्रजा अनु॥ ५॥
द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्विदमास्थापयन्त तृतीयेन कर्मणा।
स्वां प्रजां पितरः पित्र्यं सह आवरेष्वदधुस्तन्तुमातितम्॥ ६॥
नावा न क्षोदः प्रदिशः पृथिव्याः स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा।
स्वां प्रजां बृहदुक्थो महित्वावरेष्वदधादा परेषु ॥ ७॥

[५७] सप्तपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गौपायनाः॥ देवता—विश्वे देवाः॥
छन्दः—१ गायत्री; २-६ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

मा प्र गाम पथो वयं मा यज्ञादिन्द्र सोमिनः। मान्तः स्थुर्नो अरातयः॥ १॥
यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वाततः। तमाहुतं नशीमहि॥ २॥
मनो न्वा हुवामहे नाराशंसेन सोमेन। पितॄणां च मन्मभिः॥ ३॥
आ त एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे। ज्योक्च सूर्यं दृशे॥ ४॥
पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः। जीवं व्रातं सचेमहि॥ ५॥
वयं सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि॥ ६॥

[५८] अष्टपञ्चाशं सूक्तम्

ऋषिः—बन्ध्वादयो गौपायनाः॥ देवता—मन आवर्त्तनम्॥ छन्दः—निचृदनुष्टुप्॥
स्वरः—गान्धारः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

यत्ते यमं वैवस्वतं मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे॥ १॥
यत्ते दिवं यत्पृथिवीं मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे॥ २॥
यत्ते भूमिं चतुर्भृष्टिं मनो जगाम दूरकम्।
तत्त आ वर्तयामसीह क्षयाय जीवसे॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्ते॒ चतस्रः॒ प्रदिशो॒ मनो॑ ज॒गाम॑ दूर॒कम् ।
तत्त॒ आ व॑र्तयामसी॒ह क्षया॑य जी॒वसे॑ ॥४॥
यत्ते॑ समु॒द्रमर्ण॑वं॒ मनो॑ ज॒गाम॑ दूर॒कम् ।
तत्त॒ आ व॑र्तयामसी॒ह क्षया॑य जी॒वसे॑ ॥५॥
यत्ते॒ मरी॑चीः॒ प्रव॑तो॒ मनो॑ ज॒गाम॑ दूर॒कम् ।
तत्त॒ आ व॑र्तयामसी॒ह क्षया॑य जी॒वसे॑ ॥६॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

यत्ते॑ अ॒पो यदोष॑धी॒र्मनो॑ ज॒गाम॑ दूर॒कम् ।
तत्त॒ आ व॑र्तयामसी॒ह क्षया॑य जी॒वसे॑ ॥७॥
यत्ते॒ सूर्यं॑ यदु॒षस॑ं॒ मनो॑ ज॒गाम॑ दूर॒कम् ।
तत्त॒ आ व॑र्तयामसी॒ह क्षया॑य जी॒वसे॑ ॥८॥
यत्ते॒ पर्वं॑ता॒न्बृह॒तो मनो॑ ज॒गाम॑ दूर॒कम् ।
तत्त॒ आ व॑र्तयामसी॒ह क्षया॑य जी॒वसे॑ ॥९॥
यत्ते॒ विश्वं॒मिदं॑ जग॒न्मनो॑ ज॒गाम॑ दूर॒कम् ।
तत्त॒ आ व॑र्तयामसी॒ह क्षया॑य जी॒वसे॑ ॥१०॥
यत्ते॒ परा॑ः परा॒वतो॒ मनो॑ ज॒गाम॑ दूर॒कम् ।
तत्त॒ आ व॑र्तयामसी॒ह क्षया॑य जी॒वसे॑ ॥११॥
यत्ते॑ भू॒तं च॒ भव्यं॑ च॒ मनो॑ ज॒गाम॑ दूर॒कम् ।
तत्त॒ आ व॑र्तयामसी॒ह क्षया॑य जी॒वसे॑ ॥१२॥

[५९] एकोनषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—बन्ध्वादयो गौपायनाः ॥ देवता—१-३ निर्ऋतिः; ४ निर्ऋतिः सोमश्च; ५, ६ असुनीतिः; ७ लिङ्गोक्ताः; ८, ९, १०² द्यावापृथिव्यौ; १०¹ द्यावापृथिव्याविन्द्रश्च ॥ छन्दः—१ विराट्-त्रिष्टुप्; २, ४-६ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्पङ्क्तिः; ९ जगती; १० विराड्जगती ॥ स्वरः—१-७ धैवतः; ८ पञ्चमः; ९, १० निषादः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

प्र ता॒र्यायुः॒ प्रत॑रं नवी॒यः॒ स्थाता॑रेव॒ क्रतु॑मता॒ रथ॑स्य ।
अध॒ च्यवा॑न॒ उत्त॑वी॒त्यर्थं॑ परात॒रं सु निर्ऋ॑तिर्जिहीताम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामन्नु राये निधिमन्वन्नं करामहे सु पुरुध श्रवांसि।
ता नो विश्वानि जरिता ममत्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम्॥ २॥
अभी ष्व१र्यः पौंस्यैर्भवेम द्यौर्न भूमिं गिरयो नाज्रान्।
ता नो विश्वानि जरिता चिकेत परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम्॥ ३॥
मो षु णः सोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम्।
द्युभिर्हितो जरिमा सू नो अस्तु परातरं सु निर्ऋतिर्जिहीताम्॥ ४॥
असुनीते मनो अस्मासु धारय जीवातवे सु प्र तिरा न आयुः।
रारन्धि नः सूर्यस्य संदृशि घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम्।
ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृळया नः स्वस्ति॥ ६॥
पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्द्यौर्देवी पुनरन्तरिक्षम्।
पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यां३ या स्वस्तिः॥ ७॥
शं रोदसी सुबन्धवे यह्वी ऋतस्य मातरा।
भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत्॥ ८॥
अव द्रुके अव त्रिका दिवश्चरन्ति भेषजा।
क्षमा चरिष्ण्वेकजं भरतामप यद्रपो द्यौः
पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत्॥ ९॥
समिन्द्रेरय गामनड्वाहं य आवहदुशीनराण्या अनः।
भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत्॥ १०॥

[६०] षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—१-५, ७-१२ बन्ध्वादयो गौपायनाः; ६ अगस्त्यस्य स्वसैषां माता॥ देवता—१-४, ६ असमाती राजा; ५ इन्द्रः; ७-११ सुबन्धोर्जीविताह्वानम्; १२ हस्तः॥ छन्दः—१-३ गायत्री; ४, ५ निचृद्गायत्री; ६ पादनिचृदनुष्टुप्; ७, १०, १२ निचृदनुष्टुप्; ८, ९ निचृत्पङ्क्तिः; ११ आर्च्यनुष्टुप्॥ स्वरः—१-५ षड्जः; ६, ७, १०-१२ गान्धारः; ८, ९ पञ्चमः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

आ जनं त्वेषसन्दृशं माहीनानामुपस्तुतम्। अर्गन्म बिभ्रतो नमः ॥ १ ॥
असमातिं नितोशनं त्वेषं नियुयिनं रथम्। भजेरथस्य सत्पतिम् ॥ २ ॥
यो जनान्महिषाँ इवातितस्थौ पवीरवान्। उतापवीरवान्युधा ॥ ३ ॥
यस्येक्ष्वाकुरुप व्रते रेवान्मराय्येधते। दिवीव पञ्च कृष्टयः ॥ ४ ॥
इन्द्र क्षत्रासमातिषु रथप्रोष्ठेषु धारय। दिवीव सूर्यं दृशे ॥ ५ ॥
अगस्त्यस्य नद्भ्यः सप्ती युनक्षि रोहिता ।
पणीन्र्यक्रमीरभि विश्वान्राजन्नराधसः ॥ ६ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

अयं मातायं पितायं जीवातुरागमत् ।
इदं तव प्रसर्पणं सुबन्धवेहि निरिहि ॥ ७ ॥
यथा युगं वरत्रया नह्यन्ति धरुणाय कम् ।
एवा दाधार ते मनो जीवातवे न मृत्यवेऽथो अरिष्टतातये ॥ ८ ॥
यथेयं पृथिवी मही दाधारेमान्वनस्पतीन् ।
एवा दाधार ते मनो जीवातवे न मृत्यवेऽथो अरिष्टतातये ॥ ९ ॥
यमाद्हं वैवस्वतात्सुबन्धोर्मन आभरम् ।
जीवातवे न मृत्यवेऽथो अरिष्टतातये ॥ १० ॥
न्यग्वातोऽवं वाति न्यक्तपति सूर्यः ।
नीचीनमध्न्या दुहे न्यग्भवतु ते रपः ॥ ११ ॥
अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः ।
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शनः ॥ १२ ॥

पञ्चमोऽनुवाकः [६१] एकषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नाभानेदिष्ठो मानवः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ८-१०, १५, १६, १८, १९, २१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ७, ११, १२, २० विराट्त्रिष्टुप्; ३, २६ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ४, १४, १७, २२, २३, २५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६, १३ त्रिष्टुप्; २४, २७ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

इदमित्था रौद्रं गूर्तवचा ब्रह्म क्रत्वा शच्यामन्तराजौ ।
क्राणा यदस्य पितरा मंहनेष्ठाः पर्षत्पक्थे अहन्ना सप्त होतॄन् ॥ १ ॥
स इद्दानाय दभ्याय वन्वञ्च्यवानः सूदैरमिमीत वेदिम् ।
तूर्वयाणो गूर्तवचस्तमः क्षोदो न रेत इतऊति सिञ्चत् ॥ २ ॥
मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विपः शच्या वनुथो द्रवन्ता ।
आ यः शर्याभिस्तुविनृम्णो अस्याश्रीणीतादिशं गभस्तौ ॥ ३ ॥
कृष्णा यद्रोष्वरुणीषु सीदद्दिवो नपाताश्विना हुवे वाम् ।
वीतं मे यज्ञमा गतं मे अन्नं ववन्वांसा नेषमस्मृतध्रू ॥ ४ ॥
प्रथिष्ट यस्य वीरकर्ममिष्णदनुष्ठितं नु नर्यो अपौहत् ।
पुनस्तदा वृहति यत्कनाया दुहितुरा अनुभूतमनर्वा ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

मध्या यत्कर्त्वमभवद्भीके कामं कृण्वाने पितरि युवत्याम् ।
मनानग्रेतौ जहतुर्वियन्ता सानौ निषिक्तं सुकृतस्य योनौ ॥ ६ ॥
पिता यत्स्वां दुहितरमधिष्कन्क्ष्मया रेतः संजग्मानो नि षिञ्चत् ।
स्वाध्योऽ जनयन्ब्रह्म देवा वास्तोष्पतिं व्रतपां निरतक्षन् ॥ ७ ॥
स ईं वृषा न फेनमस्यदाजौ स्मदा परैदप दभ्रचेताः ।
सरत्पदा न दक्षिणा परावृङ् न ता नु मे पृशन्यो जगृभ्रे ॥ ८ ॥
मक्षू न वह्निः प्रजाया उपब्दिरग्निं न नग्न उप सीददूधः ।
सनितेध्मं सनितोत वाजं स धर्ता जज्ञे सहसा यवीयुत् ॥ ९ ॥
मक्षू कनायाः सख्यं नवग्वा ऋतं वदन्त ऋतयुक्तिमगमन् ।
द्विबर्हसो य उप गोपमागुरदक्षिणासो अच्युता दुदुक्षन् ॥ १० ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो राधो न रेत ऋतमित्तुरण्यन् ।
शुचि यत्ते रेक्ण आयजन्त सबर्दुघायाः पय उस्त्रियायाः ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रश्ना यत्पृश्चा वियुता बुधन्तेति ब्रवीति वक्तरी रराणः।
वसोर्वसुत्वा कारवोऽनेहा विश्वं विवेष्टि द्रविणमुप क्षु॥ १२॥
तदिन्वस्य परिषद्वानो अग्मन्पुरू सदन्तो नार्षदं बिभित्सन्।
वि शुष्णस्य संग्रथितमनर्वा विदत्पुरुप्रजातस्य गुहा यत्॥ १३॥
भर्गो ह नामोत यस्य देवाः स्वर्णं ये त्रिषधस्थे निषेदुः।
अग्निर्ह नामोत जातवेदाः श्रुधी नो होतर्ऋतस्य होताध्रुक्॥ १४॥
उत त्या मे रौद्रावर्चिमन्ता नासत्याविन्द्र गूर्तये यजध्यै।
मनुष्वद् वृक्तबर्हिषे रराणा मन्दू हितप्रयसा विक्षु यज्यू॥ १५॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

अयं स्तुतो राजा वन्दि वेधा अपश्च विप्रस्तरति स्वसेतुः।
स कक्षीवन्तं रेजयत्सो अग्निं नेमिं न चक्रमर्वतो रघुद्रु॥ १६॥
स द्विबन्धुर्वैतरणो यष्टा सबर्धु धेनुमस्वं दुहध्यै ।
सं यन्मित्रावरुणो वृञ्ज उक्थैर्ज्येष्ठेभिरर्यमणं वरूथैः॥ १७॥
तद्बन्धुः सूरिर्दिवि ते धियन्धा नाभानेदिष्ठो रपति प्र वेनन्।
सा नो नाभिः परमास्य वा घाहं तत्पश्चा कतिथश्चिदास॥ १८॥
इयं मे नाभिरिह मे सधस्थमिमे मे देवा अयमस्मि सर्वः।
द्विजा अहं प्रथमजा ऋतस्येदं धेनुरदुहज्जायमाना॥ १९॥
अधासु मन्द्रो अरतिर्विभावावं स्यति द्विवर्तनिर्वनेषाट्।
ऊर्ध्वा यच्छ्रेणिर्न शिशुर्दन्मक्षू स्थिरं शेवृधं सूत माता॥ २०॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

अधा गाव उपमातिं कनाया अनु श्वान्तस्य कस्य चित्परेयुः।
श्रुधि त्वं सुद्रविणो नस्त्वं याळाश्वघ्नस्य वावृधे सूनृताभिः॥ २१॥
अध त्वमिन्द्र विद्धयस्मान्महो राये नृपते वज्रबाहुः।
रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरीन्नेहसस्ते हरिवो अभिष्टौ॥ २२॥
अध यद्राजाना गविष्टौ सरत्सरण्युः कारवे जरण्युः।
विप्रः प्रेष्ठः स होषां बभूव परा च वक्षदुत पर्षदेनान्॥ २३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधा न्वस्य जेन्यस्य पुष्टौ वृथा रेभन्त ईमहे तदू नु।
सरण्युरस्य सूनुरश्वो विप्रश्चासि श्रवसश्च सातौ ॥ २४ ॥
युवोर्यदि सख्यायास्मे शर्धाय स्तोमं जुजुषे नमस्वान्।
विश्वत्र यस्मिन्ना गिरः समीचीः पूर्वीव गातुर्दाशत्सूनृतायै ॥ २५ ॥
स गृणानो अद्भिर्देववानिति सुबन्धुर्नमसा सूक्तैः ।
वर्धदुक्थैर्वचोभिरा हि नूनं व्यध्वैति पयस उस्त्रियायाः ॥ २६ ॥
त ऊ षु णो महो यजत्रा भूत देवास ऊतये सजोषाः।
ये वाजाँ अनयता वियन्तो ये स्था निचेतारो अमूराः ॥ २७ ॥

इत्यष्टमाष्टके प्रथमोऽध्यायः ॥

अथाष्टमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः

[६२] द्विषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—नाभानेदिष्ठो मानवः ॥ देवता—१-६ विश्वे देवा आङ्गिरसो वा; ७ विश्वे देवाः; ८-११ सावर्णेर्दानस्तुतिः ॥ छन्दः—१, २ विराड्जगती; ३ पादनिचृज्जगती; ४ निचृज्जगती; ५ अनुष्टुप्; ६ बृहती; ७ विराट्पङ्क्तिः; ८, ९ निचृदनुष्टुप्; १० गायत्री; ११ भुरिक्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५, ८, ९ गान्धारः; ६ मध्यमः; ७ पञ्चमः; १० षड्जः; ११ धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

ये यज्ञेन दक्षिणया समक्ता इन्द्रस्य सख्यममृतत्वमानश।
तेभ्यो भद्रमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः ॥ १ ॥
य उदाजन्पितरो गोमयं वस्वृतेनाभिन्दन्परिवत्सरे वलम्।
दीर्घायुत्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः ॥ २ ॥
य ऋतेन सूर्यमारोहयन्दिव्यप्रथयन्पृथिवीं मातरं वि।
सुप्रजास्त्वमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः ॥ ३ ॥
अयं नाभा वदति वल्गु वो गृहे देवपुत्रा ऋषयस्तच्छृणोतन।
सुब्रह्मण्यमङ्गिरसो वो अस्तु प्रति गृभ्णीत मानवं सुमेधसः ॥ ४ ॥
विरूपास इदृषयस्त इद्भभीरवेपसः ।
ते अङ्गिरसः सूनवस्ते अग्नेः परि जज्ञिरे ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

ये अग्नेः परि जज्ञिरे विरूपासो दिवस्परि ।
नवग्वो नु दशग्वो अङ्गिरस्तमः सचा देवेषु मंहते ॥ ६ ॥
इन्द्रेण युजा निः सृजन्त वाघतो व्रजं गोमन्तमश्विनम् ।
सहस्रं मे ददतो अष्टकर्ण्या[1]ः श्रवो देवेष्वक्रत ॥ ७ ॥
प्र नूनं जायतामयं मनुस्तोक्मेव रोहतु ।
यः सहस्रं शताश्वं सद्यो दानाय मंहते ॥ ८ ॥
न तमश्नोति कश्चन दिवइव सान्वारभम् ।
सावर्ण्यस्य दक्षिणा वि सिन्धुरिव पप्रथे ॥ ९ ॥
उत दासा परिविषे स्मद्दिष्टी गोपरीणसा । यदुस्तुर्वश्च मामहे ॥ १० ॥
सहस्रदा ग्रामणीर्मा रिषन्मनुः सूर्येणास्य यतमानैतु दक्षिणा ।
सावर्णेर्देवाः प्र तिरन्त्वायुर्यस्मिन्नश्रान्ता असनाम वाजम् ॥ ११ ॥

[६३] त्रिषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—गयः प्लातः ॥ देवता—१-१४, १७ विश्वे देवाः; १५, १६ पथ्यास्वस्तिः ॥ छन्दः—१, ६, ८, ११-१३ विराड्जगती; २, ३, १०, १४ पादनिचृज्जगती; ४, ५, ७ निचृज्जगती; ९ आर्ची-स्वराड्जगती; १५ जगती त्रिष्टुप् वा; १६ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; १७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१४ निषादः; १५ निषादो धैवतो वा; १६, १७ धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

परावतो ये दिधिषन्त आप्यं मनुप्रीतासो जनिमा विवस्वतः ।
ययातेर्ये नहुष्यस्य बर्हिषि देवा आसते ते अधि ब्रुवन्तु नः ॥ १ ॥
विश्वा हि वो नमस्यानि वन्द्या नामानि देवा उत यज्ञियानि वः ।
ये स्थ जाता अदितेरदब्धयस्परि ये पृथिव्यास्ते म इह श्रुता हवम् ॥ २ ॥
येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः ।
उक्थशुष्मान्वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँ आदित्याँ अनु मदा स्वस्तये ॥ ३ ॥
नृचक्षसो अनिमिषन्तो अर्हणा बृहद्देवासो अमृतत्वमानशुः ।
ज्योतीरथा अहिमाया अनागसो दिवो वर्ष्माणं वसते स्वस्तये ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्राजो ये सुवृधो यज्ञमाययुरपरिह्वृता दधिरे दिवि क्षयम्।
ताँ आ विवास नमसा सुवृक्तिभिर्महो आदित्याँ अदितिं स्वस्तये॥ ५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

को वः स्तोमं राधति यं जुजोषथ विश्वे देवासो मनुषो यति ष्टन।
को वोऽध्वरं तुविजाता अरं करद्यो नः पर्षदत्यंहः स्वस्तये॥ ६॥
येभ्यो होत्रां प्रथमामायेजे मनुः समिद्धाग्निर्मनसा सप्त होतृभिः।
त आदित्या अभयं शर्म यच्छत सुगा नः कर्त सुपथा स्वस्तये॥ ७॥
य ईशिरे भुवनस्य प्रचेतसो विश्वस्य स्थातुर्जगतश्च मन्तवः।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये॥ ८॥
भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेंऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्।
अग्निं मित्रं वरुणं सातये भगं द्यावापृथिवी मरुतः स्वस्तये॥ ९॥
सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये॥ १०॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

विश्वे यजत्रा अधि वोचतोतये त्रायध्वं नो दुरेवाया अभिह्रुतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये॥ ११॥
अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरु णः शर्म यच्छता स्वस्तये॥ १२॥
अरिष्टः स मर्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि।
यमादित्यासो नयथा सुनीतिभिरति विश्वानि दुरिता स्वस्तये॥ १३॥
यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये॥ १४॥
स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन॥ १५॥
स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति।
सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपा॥ १६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवा प्लतेः सूनुरवीवृधद्वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी।
ईशानासो नरो अमर्त्येनास्तावि जनो दिव्यो गयेन॥ १७॥

[६४] चतुःषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—गयः प्लातः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ४, ५, ९, १०, १३, १५ निचृज्जगती; २, ३, ७, ८, ११ विराड्जगती; ६, १४ जगती; १२ त्रिष्टुप्; १६ निचृत्त्रिष्टुप्; १७ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-११, १३-१५ निषादः; १२, १६, १७ धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

कथा देवानां कतमस्य यामनि सुमन्तु नाम शृण्वतां मनामहे।
को मृळाति कतमो नो मयस्करत्कतम ऊती अभ्या ववर्तति॥ १॥
क्रतूयन्ति क्रतवो हृत्सु धीतयो वेनन्ति वेनाः पतयन्त्या दिशः।
न मर्डिता विद्यते अन्य एभ्यो देवेषु मे अधि कामा अयंसत॥ २॥
नरा वा शंसं पूषणमगोह्यमग्निं देवेद्धमभ्यर्चसे गिरा।
सूर्यामासा चन्द्रमसा यमं दिवि त्रितं वातमुषसमक्तुमश्विना॥ ३॥
कथा कविस्तुवीरवान्कया गिरा बृहस्पतिर्वावृधते सुवृक्तिभिः।
अज एकपात्सुहवैभिर्ऋक्वभिरहिः शृणोतु बुध्न्यो३ हवीमनि॥ ४॥
दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि।
अतूर्तपन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विषुरूपेषु जन्मसु॥ ५॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः।
सहस्त्रसा मेधसाताविव त्मना महो ये धनं समिथेषु जभ्रिरे॥ ६॥
प्र वो वायुं रथयुजं पुरन्धिं स्तोमैः कृणुध्वं सख्याय पूषणम्।
ते हि देवस्य सवितुः सवीमनि क्रतुं सचन्ते सचितः सचेतसः॥ ७॥
त्रिः सप्त सस्त्रा नद्यो महीरपो वनस्पतीन्पर्वताँ अग्निमूतये।
कृशानुमस्तृन्तिष्यं सधस्थ आ रुद्रं रुद्रेषु रुद्रियं हवामहे॥ ८॥
सरस्वती सरयुः सिन्धुरूर्मिभिर्महो महीरवसा यन्तु वक्षणीः।
देवीरापो मातरः सूदयित्नवो घृतवत्पयो मधुमन्नो अर्चत॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत माता बृहद्दिवा शृणोतु नस्त्वष्टा देवेभिर्जनिभिः पिता वचः।
ऋभुक्षा वाजो रथस्पतिर्भगो रण्वः शंसः शशमानस्य पातु नः॥ १०॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

रण्वः सन्दृष्टौ पितुमाँइव क्षयो भद्रा रुद्राणां मरुतामुपस्तुतिः।
गोभिः ष्याम यशसो जनेष्वा सदा देवास इळया सचेमहि॥ ११॥
यां मे धियं मरुत इन्द्र देवा अददात वरुण मित्र यूयम्।
तां पीपयत पयसेव धेनुं कुविद्गिरो अधि रथे वहाथ॥ १२॥
कुविदङ्ग प्रति यथा चिदस्य नः सजात्यस्य मरुतो बुबोधथ।
नाभा यत्र प्रथमं संनसामहे तत्र जामित्वमदितिर्दधातु नः॥ १३॥
ते हि द्यावापृथिवी मातरा मही देवी देवाञ्जन्मना यज्ञिये इतः।
उभे बिभृत उभयं भरीमभिः पुरू रेतांसि पितृभिश्च सिञ्चतः॥ १४॥
वि षा होत्रा विश्वमश्नोति वार्यं बृहस्पतिर्रमतिः पनीयसी।
ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदवीवशन्त मतिभिर्मनीषिणः॥ १५॥
एवा कविस्तुवीरवाँ ऋतज्ञा द्रविणस्युर्द्रविणसश्चकानः।
उक्थेभिरत्र मतिभिश्च विप्रोऽपीपयद्वयो दिव्यानि जन्म॥ १६॥
एवा प्लतेः सूनुरवीवृधद्वो विश्व आदित्या अदिते मनीषी।
ईशानासो नरो अमर्त्येनास्तावि जनो दिव्यो गयेन॥ १७॥

[६५] पञ्चषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुकर्णो वासुक्रः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ४, ६, १०, १२, १३ निचृज्जगती; २ पादनिचृज्जगती ३, ७, ९ विराड्जगती; ५, ८, ११ जगती; १४ त्रिष्टुप्; १५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१३ निषादः; १४, १५ धैवतः॥

अथ नवमो वर्गः॥ ९॥

अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा वायुः पूषा सरस्वती सजोषसः।
आदित्या विष्णुर्मरुतः स्वर्बृहत्सोमो रुद्रो अदितिर्ब्रह्मणस्पतिः॥ १॥
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु सत्पती मिथो हिन्वाना तन्वा३ समोकसा।
अन्तरिक्षं महा पप्रुरोजसा सोमो घृतश्रीर्महिमानमीरयन्॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेषां॒ हि म॒ह्ना म॑ह॒ताम॑न॒र्वणां॒ स्तोमाँ॒ इय॑र्म्यृत॒ज्ञा ऋ॑ता॒वृधा॑म्।
ये अ॑प्स॒वम॑र्ण॒वं चि॒त्ररा॑धस॒स्ते नो॑ रासन्तां म॒हये॑ सुमि॒त्र्याः॥ ३॥
स्व॑र्णरम॒न्तरि॑क्षाणि रोच॒ना द्यावा॒भूमी॑ पृथि॒वीं स्क॑म्भु॒रोज॑सा।
पृ॒क्षाइ॑व म॒हय॑न्तः सुरा॒तयो॑ दे॒वाः स्त॑वन्ते॒ मनु॑षाय सू॒रयः॑॥ ४॥
मि॒त्राय॑ शिक्ष॒ वरु॑णाय दा॒शुषे॒ या स॒म्राजा॒ मन॑सा॒ न प्र॒युच्छ॑तः।
ययो॒र्धाम॒ धर्म॑णा॒ रोच॑ते बृ॒हद्ययो॑रु॒भे रोद॑सी॒ नाध॑सी॒ वृतौ॑॥ ५॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

या गौर्व॑र्त॒निं प॒र्येति॑ निष्कृ॒तं पयो॒ दुहा॑ना व्रत॒नीर॑वा॒रतः॑।
सा प्र॑ब्रुवा॒णा वरु॑णाय दा॒शुषे॑ दे॒वेभ्यो॑ दाशद्ध॒विषा॑ वि॒वस्व॑ते॥ ६॥
दि॒वक्ष॑सो अग्निजि॒ह्वा ऋ॑ता॒वृध॑ ऋ॒तस्य॒ योनिं॑ विमृ॒शन्त॑ आसते।
द्यां स्क॑भि॒त्व्य१॒॑प आ च॑क्रु॒रोज॑सा य॒ज्ञं ज॑नि॒त्वी त॒न्वी॒३॒॑नि मा॑मृजुः॥ ७॥
प॒रि॒क्षिता॑ पि॒तरा॑ पूर्व॒जाव॑री ऋ॒तस्य॒ योना॑ क्षयतः॒ समो॑कसा।
द्यावा॑पृथि॒वी वरु॑णाय॒ सव्र॑ते घृ॒तव॒त्पयो॑ महि॒षाय॑ पिन्वतः॥ ८॥
प॒र्जन्या॒वाता॑ वृष॒भा पु॑री॒षिणे॑न्द्रवा॒यू वरु॑णो मि॒त्रो अ॑र्य॒मा।
दे॒वाँ आ॑दि॒त्याँ अदि॑तिं हवामहे॒ ये पार्थि॑वासो दि॒व्यासो॑ अ॒प्सु ये॥ ९॥
त्वष्टा॑रं वा॒युमृ॑भवो॒ य ओह॑ते॒ दैव्या॒ होता॑रा उ॒षसं॑ स्व॒स्तये॑।
बृह॒स्पतिं॑ वृत्रखा॒दं सु॑मे॒धस॑मिन्द्रि॒यं सोमं॑ धन॒सा उ॑ ईमहे॥ १०॥

अथैकादशो वर्गः॥ ११॥

ब्रह्म॒ गामश्वं॑ ज॒नय॑न्त॒ ओष॑धी॒र्वन॒स्पती॑न्पृथि॒वीं पर्व॑ताँ अ॒पः।
सूर्यं॑ दि॒वि रो॒हय॑न्तः सु॒दान॑व॒ आर्या॑ व्र॒ता वि॑सृ॒जन्तो॒ अधि॒ क्षमि॑॥ ११॥
भु॒ज्युमंह॑सः पिपृथो॒ निर॑श्विना॒ श्यावं॑ पु॒त्रं व॑ध्रिम॒त्या अ॑जिन्वतम्।
क॒म॒द्युवं॑ विम॒दायो॑हथुर्यु॒वं वि॑ष्णा॒प्वं१॒॑ विश्व॑का॒याव॑ सृजथः॥ १२॥
पावी॑रवी तन्य॒तुरेक॑पाद॒जो दि॒वो ध॒र्ता सिन्धु॒रापः॑ समु॒द्रियः॑।
विश्वे॑ दे॒वासः॑ शृणव॒न्वचां॑सि मे॒ सर॑स्वती स॒ह धी॒भिः पुर॑न्ध्या॥ १३॥
विश्वे॑ दे॒वाः स॒ह धी॒भिः पुर॑न्ध्या॒ मनो॒र्यज॑त्रा अ॒मृता॑ ऋत॒ज्ञाः।
रा॒ति॒षाचो॑ अभि॒षाचः॑ स्व॒र्विदः॒ स्व१॒॑र्गिरो॒ ब्रह्म॑ सू॒क्तं जु॑षेरत॥ १४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवान्वसिष्ठो अमृतान्ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ १५॥

[६६] षट्षष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—वसुकर्णो वासुक्रः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ३, ५-७ जगती; २, १०, १२, १३ निचृज्जगती; ४, ८, ११ विराड्जगती; ९ पादनिचृज्जगती; १४ आर्चीस्वराड्जगती; १५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-१४ निषादः; १५ धैवतः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

देवान्हुवे बृहच्छ्रवसः स्वस्तये ज्योतिष्कृतो अध्वरस्य प्रचेतसः।
ये वावृधुः प्रतरं विश्ववेदस इन्द्रज्येष्ठासो अमृता ऋतावृधः॥ १॥
इन्द्रप्रसूता वरुणप्रशिष्टा ये सूर्यस्य ज्योतिषो भागमानशुः।
मरुद्गणे वृजने मन्म धीमहि माघोने यज्ञं जनयन्त सूरयः॥ २॥
इन्द्रो वसुभिः परि पातु नो गयमादित्यैर्नो अदितिः शर्म यच्छतु।
रुद्रो रुद्रेभिर्देवो मृळयाति नस्त्वष्टा नो ग्नाभिः सुविताय जिन्वतु॥ ३॥
अदितिर्द्यावापृथिवी ऋतं महदिन्द्राविष्णू मरुतः स्वर्बृहत्।
देवाँ आदित्याँ अवसे हवामहे वसून्रुद्रान्त्सवितारं सुदंससम्॥ ४॥
सरस्वान्धीभिर्वरुणो धृतव्रतः पूषा विष्णुर्महिमा वायुरश्विना।
ब्रह्मकृतो अमृता विश्ववेदसः शर्म नो यंसन्त्रिवरूथमंहसः॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

वृषा यज्ञो वृषणः सन्तु यज्ञिया वृषणो देवा वृषणो हविष्कृतः।
वृषणा द्यावापृथिवी ऋतावरी वृषा पर्जन्यो वृषणो वृषस्तुभः॥ ६॥
अग्रीषोमा वृषणा वाजसातये पुरुप्रशस्ता वृषणा उप ब्रुवे।
यावीजिरे वृषणो देवयज्यया ता नः शर्म त्रिवरूथं वि यंसतः॥ ७॥
धृतव्रताः क्षत्रिया यज्ञनिष्कृतो बृहद्दिवा अध्वराणामभिश्रियः।
अग्निहोतार ऋतसापो अद्रुहोऽपो असृजन्ननु वृत्रतूर्ये॥ ८॥
द्यावापृथिवी जनयन्नभि व्रताप ओषधीर्वनिनानि यज्ञिया।
अन्तरिक्षं स्वरा पप्रुरूतये वशं देवास्तन्वी३ नि मामृजुः॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्तारौ दिव ऋभवः सुहस्ता वातापर्जन्या महिषस्य तन्यतोः।
आप ओषधीः प्रतिरन्तु नो गिरो भगो रातिर्वाजिनो यन्तु मे हवम्॥ १०॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

समुद्रः सिन्धू रजो अन्तरिक्षमज एकपात्तनयित्नुरर्णवः।
अहिर्बुध्न्यः शृणवद्वचांसि मे विश्वे देवास उत सूरयो मम॥ ११॥
स्याम वो मनवो देववीतये प्राञ्चं नो यज्ञं प्र णयत साधुया।
आदित्या रुद्रा वसवः सुदानव इमा ब्रह्म शस्यमानानि जिन्वत॥ १२॥
दैव्या होतारा प्रथमा पुरोहित ऋतस्य पन्थामन्वेमि साधुया।
क्षेत्रस्य पतिं प्रतिवेशमीमहे विश्वान्देवाँ अमृताँ अप्रयुच्छतः॥ १३॥
वसिष्ठासः पितृवद्वाचमक्रत देवाँ ईळाना ऋषिवत्स्वस्तये।
प्रीताइव ज्ञातयः काममेत्यास्मे देवासोऽव धूनुता वसु॥ १४॥
देवान्वसिष्ठो अमृतान्ववन्दे ये विश्वा भुवनाभि प्रतस्थुः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ १५॥

[६७] सप्तषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २-७, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ८-१०, १२ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

इमां धियं सप्तशीर्ष्णीं पिता न ऋतप्रजातां बृहतीमविन्दत्।
तुरीयं स्विज्जनयद्विश्वजन्योऽयास्य उक्थमिन्द्राय शंसन्॥ १॥
ऋतं शंसन्त ऋजु दीध्याना दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः।
विप्रं पदमङ्गिरसो दधाना यज्ञस्य धाम प्रथमं मनन्त॥ २॥
हंसैरिव सखिभिर्वावदद्भिरश्मन्मयानि नहना व्यस्यन्।
बृहस्पतिरभिकनिक्रदद्गा उत प्रास्तौदुच्च विद्वाँ अगायत्॥ ३॥
अवो द्वाभ्यां पर एकया गा गुहा तिष्ठन्तीरनृतस्य सेतौ।
बृहस्पतिस्तमसि ज्योतिरिच्छन्नुदुस्रा आकर्वि हि तिस्र आवः॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिद्या पुरं शयथेमपाचीं निस्त्रीणि साकमुदधेरकृन्तत्।
बृहस्पतिरुषसं सूर्यं गामर्कं विवेद स्तनयन्निव द्यौः ॥ ५ ॥
इन्द्रो वलं रक्षितारं दुघानां करेणेव वि चकर्ता रवेण।
स्वेदाञ्जिभिराशिरमिच्छमानोऽरोदयत्पणिमा गा अमुष्णात् ॥ ६ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

स ईं सत्येभिः सखिभिः शुचद्भिर्गोधायसं वि धनसैरदर्दः।
ब्रह्मणस्पतिर्वृषभिर्वराहैर्घर्मस्वेदेभिर्द्रविणं व्यानट् ॥ ७ ॥
ते सत्येन मनसा गोपतिं गा इयानास इषणयन्त धीभिः।
बृहस्पतिर्मिथोअवद्यपेभिरुदुस्त्रिया असृजत स्वयुग्भिः ॥ ८ ॥
तं वर्धयन्तो मतिभिः शिवाभिः सिंहमिव नानदतं सधस्थे।
बृहस्पतिं वृषणं शूरसातौ भरेभरे अनु मदेम जिष्णुम् ॥ ९ ॥
यदा वाजमसनद्विश्वरूपमा द्यामरुक्षदुत्तराणि सद्म ।
बृहस्पतिं वृषणं वर्धयन्तो नाना सन्तो बिभ्रतो ज्योतिरासा ॥ १० ॥
सत्यामाशिषं कृणुता वयोधै कीरिं चिद्ध्यवथ स्वेभिरेवैः।
पश्चा मृधो अप भवन्तु विश्वास्तद्रोदसी शृणुतं विश्वमिन्वे ॥ ११ ॥
इन्द्रो महा महतो अर्णवस्य वि मूर्धानमभिनदर्बुदस्य ।
अहन्नहिमरिणात्सप्त सिन्धून्देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ॥ १२ ॥

[६८] अष्टषष्टितमं सूक्तम्

ऋषिः—अयास्यः ॥ देवता—बृहस्पतिः ॥ छन्दः—१, १२ विराट्त्रिष्टुप्; २, ८-११ त्रिष्टुप्; ३-७ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

उदप्रुतो न वयो रक्षमाणा वावदतो अभ्रियस्येव घोषाः ।
गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तो बृहस्पतिमभ्यर्का अनावन् ॥ १ ॥
सं गोभिराङ्गिरसो नक्षमाणो भगइवेदर्यमणं निनाय ।
जनेमित्रो न दम्पती अनक्ति बृहस्पते वाजयाशूँरिवाजौ ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साध्वर्या अतिथिनीरिषिराः स्पार्हाः सुवर्णा अनवद्यरूपाः ।
बृहस्पतिः पर्वतेभ्यो वितूर्या निर्गा ऊपे यवमिव स्थिविभ्यः ॥ ३ ॥
आप्रुषायन्मधुन ऋतस्य योनिमवक्षिपन्नर्क उल्कामिव द्योः ।
बृहस्पतिरुद्धरन्नश्मनो गा भूम्या उद्नेव वि त्वचं बिभेद ॥ ४ ॥
अप ज्योतिषा तमो अन्तरिक्षादुद्नः शीपालमिव वात आजत् ।
बृहस्पतिरनुमृश्या वलस्याभ्रमिव वात आ चक्र आ गाः ॥ ५ ॥
यदा वलस्य पीयतो जसुं भेद् बृहस्पतिरग्नितपोभिरर्कैः ।
दद्भिर्न जिह्वा परिविष्टमाददाविर्निधीँरकृणोदुस्त्रियाणाम् ॥ ६ ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

बृहस्पतिरमत हि त्यदासां नाम स्वरीणां सदने गुहा यत् ।
आण्डेव भित्त्वा शकुनस्य गर्भमुदुस्त्रियाः पर्वतस्य त्मनाजत् ॥ ७ ॥
अश्नापिनद्धं मधु पर्यपश्यन्मत्स्यं न दीन उदनि क्षियन्तम् ।
निष्टज्जभार चमसं न वृक्षाद् बृहस्पतिर्विर्वेणा विकृत्य ॥ ८ ॥
सोषामविन्दत्स स्वः सो अग्निं सो अर्केण वि बबाधे तमांसि ।
बृहस्पतिर्गोवपुषो वलस्य निर्मज्जानं न पर्वणो जभार ॥ ९ ॥
हिमेव पर्णा मुषिता वनानि बृहस्पतिनाकृपयद्वलो गाः ।
अनानुकृत्यमपुनश्चकार यात्सूर्यामासा मिथ उच्चरातः ॥ १० ॥
अभि श्यावं न कृशनेभिरश्वं नक्षत्रेभिः पितरो द्यामपिंशन् ।
रात्र्यां तमो अदधुर्ज्योतिरह्नबृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद्गाः ॥ ११ ॥
इदमकर्म नमो अभ्रियाय यः पूर्वीरन्वानोनवीति ।
बृहस्पतिः स हि गोभिः सो अश्वैः स वीरेभिः स नृभिर्नो वयो धात् ॥ १२ ॥

षष्ठोऽनुवाकः [६९] एकोनसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुमित्रो वाध्र्यश्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २ विराड्जगती; ३, ७ त्रिष्टुप्; ४, ५, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ८, १० पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९, ११ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ निषादः; ३-१२ धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

भद्रा अग्नेर्वध्र्यश्वस्य सन्दृशो वामी प्रणीतिः सुरणा उपेतयः ।
यदीं सुमित्रा विशो अग्र इन्धते घृतेनाहुतो जरते दविद्युतत् ॥ १ ॥
घृतमग्नेर्वध्र्यश्वस्य वर्धनं घृतमन्नं घृतम्वस्य मेदनम् ।
घृतेनाहुत उर्विया वि पप्रथे सूर्यइव रोचते सर्पिरासुतिः ॥ २ ॥
यत्ते मनुर्यदनीकं सुमित्रः समीधे अग्ने तदिदं नवीयः ।
स रेवच्छोच स गिरो जुषस्व स वाजं दर्षि स इह श्रवो धाः ॥ ३ ॥
यं त्वा पूर्वमीळितो वध्र्यश्वः समीधे अग्ने स इदं जुषस्व ।
स नः स्तिपा उत भवा तनूपा दात्रं रक्षस्व यदिदं ते अस्मे ॥ ४ ॥
भवा द्युम्नी वाध्र्यश्वोत गोपा मा त्वा तारीदभिमातिर्जनानाम् ।
शूरइव धृष्णुश्च्यवनः सुमित्रः प्र नु वोचं वाध्र्यश्वस्य नाम ॥ ५ ॥
समज्या पर्वत्याइ बसूनि दासा वृत्राण्यार्या जिगेथ ।
शूरइव धृष्णुश्च्यवनो जनानां त्वमग्ने पृतनायूँरभि ष्याः ॥ ६ ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

दीर्घतन्तुर्बृहदुक्षायमग्निः सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभ्वा ।
द्युमान्द्युमत्सु नृभिर्मृज्यमानः सुमित्रेषु दीदयो देवयत्सु ॥ ७ ॥
त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदोऽसश्चतैव समना सबर्धुक् ।
त्वं नृभिर्दक्षिणावद्भिरग्ने सुमित्रेभिरिध्यसे देवयद्भिः ॥ ८ ॥
देवाश्चित्ते अमृता जातवेदो महिमानं वाध्र्यश्व प्र वोचन् ।
यत्संपृच्छं मानुषीर्विश आयन्त्वं नृभिरजयस्त्वावृधेभिः ॥ ९ ॥
पितेव पुत्रमबिभरुपस्थे त्वामग्ने वध्र्यश्वः सपर्यन् ।
जुषाणो अस्य समिधं यविष्ठोत पूर्वाँ अवनोर्व्राधतश्चित् ॥ १० ॥
शश्वदग्निर्वध्र्यश्वस्य शत्रून्नृभिर्जिगाय सुतसोमवद्भिः ।
समनं चिददहश्चित्रभानोऽव व्राधन्तमभिनद् वृधश्चित् ॥ ११ ॥
अयमग्निर्वध्र्यश्वस्य वृत्रहा सनकात्प्रेद्धो नमसोपवाक्यः ।
स नो अजामींरुत वा विजामीनभि तिष्ठ शर्धतो वाध्र्यश्व ॥ १२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[७०] सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सुमित्रो वाध्यश्वः ॥ देवता—आप्रियः ॥ छन्दः—१, २, ४, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५-७, ९, ११ त्रिष्टुप्; ८ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

इमां मे अग्ने समिधं जुषस्वेळस्पदे प्रति हर्या घृताचीम्।
वर्ष्मन्पृथिव्याः सुदिनत्वे अह्नामूर्ध्वो भव सुक्रतो देवयज्या ॥ १ ॥
आ देवानामग्रयावेह यातु नराशंसो विश्वरूपेभिरश्वैः।
ऋतस्य पथा नमसा मियेधो देवेभ्यो देवतमः सुषूदत् ॥ २ ॥
शश्वत्तममीळते दूत्याय हविष्मन्तो मनुष्यासो अग्निम्।
बर्हिष्ठैरश्वैः सुवृता रथेना देवान्वक्षि नि षदेह होता ॥ ३ ॥
वि प्रथतां देवजुष्टं तिरश्चा दीर्घं द्राघ्मा सुरभि भूत्वस्मे।
अहेळता मनसा देव बर्हिरिन्द्रज्येष्ठाँ उशतो यक्षि देवान् ॥ ४ ॥
दिवो वा सानु स्पृशता वरीयः पृथिव्या वा मात्रया वि श्रयध्वम्।
उशतीर्द्वीरो महिना महद्भिर्देवं रथं रथयुर्धीरयध्वम् ॥ ५ ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

देवी दिवो दुहितरा सुशिल्पे उषासानक्ता सदतां नि योनौ।
आ वां देवास उशती उशन्त उरौ सीदन्तु सुभगे उपस्थे ॥ ६ ॥
ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदग्निः समिद्धः प्रिया धामान्यदितेरुपस्थे।
पुरोहितावृत्विजा यज्ञे अस्मिन्विदुष्टरा द्रविणमा यजेथाम् ॥ ७ ॥
तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं वरीय आ सीदत चकृमा वः स्योनम्।
मनुष्वद्यज्ञं सुधिता हवींषीळा देवी घृतपदी जुषन्त ॥ ८ ॥
देवं त्वष्टर्यद्ध चारुत्वमानडयदङ्गिरसामभवः सचाभूः ।
स देवानां पाथ उप प्र विद्वानुशन्यक्षि द्रविणोदः सुरत्नः ॥ ९ ॥
वनस्पते रशनया नियूया देवानां पाथ उप वक्षि विद्वान्।
स्वदाति देवः कृणवद्धवींष्यवतां द्यावापृथिवी हवं मे ॥ १० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आग्नेय वह वरुणमिष्टये न इन्द्रं दिवो मरुतो अन्तरिक्षात्।
सीदन्तु बर्हिर्विश्व आ यजत्राः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्॥ ११॥

[७१] एकसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—बृहस्पतिः॥ देवता—ज्ञानम्॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६, ८, १०, ११ विराट्त्रिष्टुप्; ९ विराड्जगती॥ स्वरः—१-८, १०, ११ धैवतः; ९ निषादः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः।
यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीत्प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः॥ १॥
सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत।
अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि॥ २॥
यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्।
तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्त रेभा अभि सं नवन्ते॥ ३॥
उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्वं१ वि सस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः॥ ४॥
उत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु।
अधेन्वा चरति मायया एष वाचं शुश्रुवाँ अफलामपुष्पाम्॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्॥ ६॥
अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः।
आदघ्नास उपकक्षास उ त्वे हृदाइव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे॥ ७॥
हृदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद् ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः।
अत्राह त्वं वि जहुर्वेद्याभिरोहब्रह्माणो वि चरन्त्यु त्वे॥ ८॥
इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः।
त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्रं तन्वते अप्रजज्ञयः॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः।
किल्बिषस्पृत्पितुषणिर्ह्येषामरं हितो भवति वाजिनाय॥ १०॥
ऋचां त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान्गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु।
ब्रह्मा त्वो वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां वि मिमीत उ त्वः॥ ११॥

इत्यष्टमाष्टके द्वितीयोऽध्यायः॥

अथाष्टमाष्टके तृतीयोऽध्यायः

[७२] द्विसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—बृहस्पतिर्बृहस्पतिर्वा लौक्य अदितिर्वा दाक्षायणी॥ देवता—देवाः॥ छन्दः—१, ४, ६ अनुष्टुप्; २ पादनिचृदनुष्टुप्; ३, ५, ७ निचृदनुष्टुप्; ८, ९ विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

देवानां नु वयं जाना प्र वोचाम विपन्यया।
उक्थेषु शस्यमानेषु यः पश्यादुत्तरे युगे ॥ १॥
ब्रह्मणस्पतिरेता सं कर्मार इवाधमत्।
देवानां पूर्व्ये युगेऽसतः सदजायत ॥ २॥
देवानां युगे प्रथमेऽसतः सदजायत।
तदाशा अन्वजायन्त तदुत्तानपदस्परि ॥ ३॥
भूर्जज्ञ उत्तानपदो भुव आशा अजायन्त।
अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाद्वदितिः परि ॥ ४॥
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः ॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

यद्देवा अदः सलिले सुसंरब्धा अतिष्ठत।
अत्रा वो नृत्यतामिव तीव्रो रेणुरपायत ॥ ६॥
यद्देवा यतयो यथा भुवनान्यपिन्वत।
अत्रा समुद्र आ गूळ्हमा सूर्यमजभर्तन ॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्टौ पुत्रासो अदितेर्ये जातास्तन्वस्परि ।
देवाँ उप प्रैत्सप्तभिः परा मार्ताण्डमास्यत् ॥ ८ ॥
सप्तभिः पुत्रैरदितिरुप प्रैत्पूर्व्यं युगम् ।
प्रजायै मृत्यवे त्वत्पुनर्मार्ताण्डमाभरत् ॥ ९ ॥

[७३] त्रिसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गौरिवीतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ५ त्रिष्टुप्; ३, ४, ८, १० पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप्; ७ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ९ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ११ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः ।
अवर्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं दधनद्धनिष्ठा ॥ १ ॥
द्रुहो निषत्ता पृशनी चिदेवैः पुरू शंसेन वावृधुष्ट इन्द्रम् ।
अभीवृतेव ता महापदेन ध्वान्तात्प्रपित्वादुदरन्त गर्भीः ॥ २ ॥
ऋष्वा ते पादा प्र यजिगास्यवर्धन्वाजा उत ये चिदत्र ।
त्वमिन्द्र सालावृकान्त्सहस्त्रमासन्दधिषे अश्विना ववृत्याः ॥ ३ ॥
सममना तूर्णिरुप यासि यज्ञमा नासत्या सख्याय वक्षि ।
वसाव्यामिन्द्र धारयः सहस्त्राश्विना शूर ददतुर्मघानि ॥ ४ ॥
मन्दमान ऋतादधि प्रजायै सखिभिरिन्द्र इषिरेभिरर्थम् ।
आभिर्हि माया उप दस्युमागान्मिहः प्र तस्रा अवपत्तमांसि ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

सनामाना चिद् ध्वसयो न्यस्मा अवाहन्निन्द्र उषसो यथानः ।
ऋष्वैरगच्छः सखिभिर्निकामैः साकं प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ ॥ ६ ॥
त्वं जघन्थ नमुचिं मखस्युं दासं कृण्वान ऋषये विमायम् ।
त्वं चकर्थ मनवे स्योनान्पथो देवत्राञ्जसेव यानान् ॥ ७ ॥
त्वमेतानि पप्रिषे वि नामेशान इन्द्र दधिषे गभस्तौ ।
अनु त्वा देवाः शवसा मदन्त्युपरिबुध्नान्ववनिनश्चकर्थ ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् ।
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु ॥ ९ ॥
अश्वादियायेति यद्वदन्त्योजसो जातमुत मन्य एनम् ।
मन्योरियाय हर्म्येषु तस्थौ यतः प्रजज्ञ इन्द्रो अस्य वेद ॥ १० ॥
वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान् ॥ ११ ॥

[७४] चतुःसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—गौरिवीतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

वसूनां वा चर्कृष इयक्षन्धिया वा यज्ञैर्वा रोदस्योः ।
अर्वन्तो वा ये रयिमन्तः सातौ वनुं वा ये सुश्रुणं सुश्रुतो धुः ॥ १ ॥
हव एषामसुरो नक्षत द्यां श्रवस्यता मनसा निंसत क्षाम् ।
चक्षाणा यत्र सुवितायं देवा द्यौर्न वारेभिः कृणवन्त स्वैः ॥ २ ॥
इयमेषाममृतानां गीः सर्वताता ये कृपणन्त रत्नम् ।
धियं च यज्ञं च साधन्तस्ते नो धान्तु वसव्यमसामि ॥ ३ ॥
आ तत्त इन्द्रायवः पनन्ताभि य ऊर्वं गोमन्तं तितृत्सान् ।
सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां महीं सहस्रधारां बृहतीं दुदुक्षन् ॥ ४ ॥
शचीव इन्द्रमवसे कृणुध्वमनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ।
ऋभुक्षणं मघवानं सुवृक्तिं भर्ता यो वज्रं नर्यं पुरुक्षुः ॥ ५ ॥
यद्वावान पुरुतमं पुराषाळा वृत्रहेन्द्रो नामान्यप्राः ।
अचेति प्रासहस्पतिस्तुविष्मान्यदीमुश्मसि कर्तवे करत्तत् ॥ ६ ॥

[७५] पञ्चसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—सिन्धुक्षित्प्रैयमेधः ॥ देवता—नद्यः ॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २, ३ विराड्जगती; ४ जगती; ५, ७ आर्चीस्वराड्जगती; ६ आर्चीभुरिग्जगती; ८, ९ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

प्र सु व आपो महिमानमुत्तमं कारुर्वोचाति सदने विवस्वतः ।
प्र सप्तसप्त त्रेधा हि चक्रमुः प्र सृत्वरीणामति सिन्धुरोजसा ॥ १ ॥
प्र तेऽरदद्वरुणो यातवे पथः सिन्धो यद्वाजाँ अभ्यद्रवस्त्वम् ।
भूम्या अधि प्रवता यासि सानुना यदेषामग्रं जगतामिरज्यसि ॥ २ ॥
दिवि स्वनो यतते भूम्योपर्यनन्तं शुष्ममुदियर्ति भानुना ।
अभ्रादिव प्र स्तनयन्ति वृष्टयः सिन्धुर्यदेति वृषभो न रोरुवत् ॥ ३ ॥
अभि त्वा सिन्धो शिशुमिन्न मातरो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः ।
राजेव युध्वा नयसि त्वमित्सिचौ यदासामग्रं प्रवतामिनक्षसि ॥ ४ ॥
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या ।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥ ५ ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

तृष्टामया प्रथमं यातवे सजूः सुसर्त्वा रसया श्वेत्या त्या ।
त्वं सिन्धो कुभया गोमतीं क्रुमुं मेहत्न्वा सरथं याभिरीयसे ॥ ६ ॥
ऋजीत्येनी रुशती महित्वा परि व्रयांसि भरते रजांसि ।
अदब्धा सिन्धुरपसामपस्तमाश्वा न चित्रा वपुषीव दर्शता ॥ ७ ॥
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्ययी सुकृता वाजिनीवती ।
ऊर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम् ॥ ८ ॥
सुखं रथं युयुजे सिन्धुरश्विनं तेन वाजं सनिषदस्मिन्नाजौ ।
महान्ह्यस्य महिमा पनस्यतेऽदब्धस्य स्वयशसो विरप्शिनः ॥ ९ ॥

[७६] षट्सप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—जरत्कर्ण ऐरावतः सर्पः ॥ देवता—ग्रावाणः ॥ छन्दः—१, ६, ८ पादनिचृज्जगती; २, ३ आर्ची-स्वराड्जगती; ४, ७ निचृज्जगती; ५ आसुरीस्वराडार्ची निचृज्जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

आ व ऋञ्जस ऊर्जा व्युष्टिष्विन्द्रं मरुतो रोदसी अनक्तन ।
उभे यथा नो अहनी सचाभुवा सदःसदो वरिवस्यात उद्भिदा ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदु श्रेष्ठं सवनं सुनोतनात्यो न हस्तयतो अद्रिः सोतरि।
विदद्ध्यर्यो अभिभूति पौंस्यं महो राये चित्तरुते यदर्वतः ॥ २ ॥
तदिद्ध्यस्य सवनं विवेरपो यथा पुरा मनवे गातुमश्रैत्।
गोअर्णसि त्वाष्ट्रे अश्वनिर्णिजि प्रेमध्वरेष्वध्वराँ अशिश्रयुः ॥ ३ ॥
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः स्कभायत निर्ऋतिं सेधतामतिम्।
आ नो रयिं सर्ववीरं सुनोतन देवाव्यं भरत श्लोकमद्रयः ॥ ४ ॥
दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो विभ्वना चिदाश्वपस्तरेभ्यः ।
वायोश्चिदा सोमरभस्तरेभ्योऽग्नेश्चिदर्च पितुकृत्तरेभ्यः ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

भुरन्तु नो यशसः सोत्वन्धसो ग्रावाणो वाचा दिविता दिवित्मता।
नरो यत्र दुहते काम्यं मध्वाघोषयन्तो अभितो मिथस्तुरः ॥ ६ ॥
सुन्वन्ति सोमं रथिरासो अद्रयो निरस्य रसं गविषो दुहन्ति ते।
दुहन्त्यूधरुपसेचनाय कं नरो हव्या न मर्जयन्त आसभिः ॥ ७ ॥
एते नरः स्वपसो अभूतन य इन्द्राय सुनुथ सोममद्रयः।
वामंवामं नो दिव्याय धाम्ने वसुंवसु वः पार्थिवाय सुन्वते ॥ ८ ॥

[७७] सप्तसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—स्यूमरश्मिर्भार्गवः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ६-८ विराट्त्रिष्टुप्; ५ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१-४, ६-८ धैवतः; ५ निषादः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

अभ्रप्रुषो न वाचा प्रुषा वसु हविष्मन्तो न यज्ञा विजानुषः।
सुमारुतं न ब्रह्माणमर्हसे गणमस्तोष्येषां न शोभसे ॥ १ ॥
श्रिये मयीसो अञ्जीँरकृण्वत सुमारुतं न पूर्वीरति क्षपः।
दिवस्पुत्रास एता न येतिर आदित्यासस्ते अक्रा न वावृधुः ॥ २ ॥
प्र ये दिवः पृथिव्या न बर्हणा त्मना रिरिच्रे अभ्रान्न सूर्यः।
पाजस्वन्तो न वीराः पनस्यवो रिशादसो न मर्या अभिद्यवः ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युष्माकं बुध्ने अपां न यामनि विथुर्यति न मही श्रथर्यति।
विश्वप्सुर्यज्ञो अर्वागयं सु वः प्रयस्वन्तो न सत्राच आ गत ॥ ४ ॥
यूयं धूर्षु प्रयुजो न रश्मिभिर्ज्योतिष्मन्तो न भासा व्युष्टिषु।
श्येनासो न स्वयशसो रिशादसः प्रवासो न प्रसितासः परिप्रुषः ॥ ५ ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

प्र यद्वहध्वे मरुतः पराकाद्यूयं महः संवरणस्य वस्वः ।
विदानासो वसवो राध्यस्याराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोत ॥ ६ ॥
य उदृचि यज्ञे अध्वरेष्ठा मरुद्भ्यो न मानुषो ददाशत् ।
रेवत्स वयो दधते सुवीरं स देवानामपि गोपीथे अस्तु ॥ ७ ॥
ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमा आदित्येन नाम्ना शंभविष्ठाः ।
ते नोऽवन्तु रथतूर्मनीषां महश्च यामन्नध्वरे चकानाः ॥ ८ ॥

[७८] अष्टसप्ततितमं सूक्तम्

ऋषिः—स्यूमरश्मिर्भार्गवः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—१ आर्चीत्रिष्टुप्; २, ५, ६ विराड्जगती; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ७ पादनिचृज्जगती; ८ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ८ धैवतः; २, ५-७ निषादः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

विप्रासो न मन्मभिः स्वाध्यो देवाव्यो३ न यज्ञैः स्वप्नसः।
राजानो न चित्राः सुसंदृशः क्षितीनां न मर्या अरेपसः ॥ १ ॥
अग्निर्न ये भ्राजसा रुक्मवक्षसो वातासो न स्वयुजः सद्यऊतयः।
प्रज्ञातारो न ज्येष्ठाः सुनीतयः सुशर्माणो न सोमा ऋतं यते ॥ २ ॥
वातासो न ये धुनयो जिगत्नवोऽग्रीनां न जिह्वा विरोकिणः।
वर्मण्वन्तो न योधाः शिमीवन्तः पितॄणां न शंसाः सुरातयः ॥ ३ ॥
रथानां न येऽराः सनाभयो जिगीवांसो न शूरा अभिद्यवः।
वरेयवो न मर्या घृतप्रुषोऽभिस्वर्तारो अर्कं न सुष्टुभः ॥ ४ ॥
अश्वासो न ये ज्येष्ठास आशवो दिधिषवो न रथ्यः सुदानवः।
आपो न निम्नैरुदभिर्जिगत्नवो विश्वरूपा अङ्गिरसो न सामभिः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

ग्रावाणो न सूरयः सिन्धुमातर आदर्दिरासो अद्रयो न विश्वहा।
शिशूला न क्रीळयः सुमातरो महाग्रामो न यामन्नुत त्विषा ॥ ६ ॥
उषसां न केतवोऽध्वरश्रियः शुभंयवो नाञ्जिभिर्व्यश्वितन्।
सिन्धवो न यययो भ्राजदृष्टयः परावतो न योजनानि ममिरे ॥ ७ ॥
सुभागान्नो देवाः कृणुता सुरत्नानस्मान्त्स्तोतॄन्मरुतो वावृधानाः।
अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गात सनाद्धि वो रत्नधेयानि सन्ति ॥ ८ ॥

[७९] एकोनाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा, समिर्वा वाजम्भरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; ७ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अपश्यमस्य महतो महित्वममर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु।
नाना हनू विभृते सं भरेते असिन्वती बप्सती भूर्यत्तः ॥ १ ॥
गुहा शिरो निहितमृधग्रक्षी असिन्वन्नत्ति जिह्वया वनानि।
अत्राण्यस्मै पड्भिः सं भरन्त्युत्तानहस्ता नमसाधि विक्षु ॥ २ ॥
प्र मातुः प्रतरं गुह्यमिच्छन्कुमारो न वीरुधः सर्पदुर्वीः।
ससं न पक्वमविदच्छुचन्तं रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अन्तः ॥ ३ ॥
तद्वामृतं रोदसी प्र ब्रवीमि जायमानो मातरा गर्भो अत्ति।
नाहं देवस्य मर्त्यश्चिकेताग्निरङ्ग विचेताः स प्रचेताः ॥ ४ ॥
यो अस्मा अन्नं तृष्वा३ दधात्याज्यैर्घृतैर्जुहोति पुष्यति।
तस्मै सहस्रमक्षभिर्वि चक्षेऽग्ने विश्वतः प्रत्यङ्ङसि त्वम् ॥ ५ ॥
किं देवेषु त्यज एनश्चकर्थाग्ने पृच्छामि नु त्वामविद्वान्।
अक्रीळन्क्रीळन्हरिरत्तवेऽदन्वि पर्वशश्चकर्त गामिवासिः ॥ ६ ॥
विषूचो अश्वान्युयुजे वनेजा ऋजीतिभी रशनाभिर्गृभीतान्।
चक्षदे मित्रो वरुणभिः सुजातः समानृधे पर्वभिर्वावृधानः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[८०] अशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ५, ६ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

अग्निः समिद्धो वाजंभरं ददात्यग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिःष्ठाम् ।
अग्नी रोदसी वि चरत्समञ्जन्नग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरन्धिम् ॥ १ ॥
अग्नेरग्नसः समिदस्तु भद्राग्निर्महो रोदसी आ विवेश ।
अग्निरेकं चोदयत्समत्स्वग्निर्वृत्राणि दयते पुरूणि ॥ २ ॥
अग्निर्ह त्यं जरतः कर्णमावाग्निरद्भ्यो निरदहज्जरूथम् ।
अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदन्तरग्निर्नृमेधं प्रजयासृजत्सम् ॥ ३ ॥
अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशा अग्निर्ऋषिं यः सहस्रा सनोति ।
अग्निर्दिवि हव्यमा तताना ग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा ॥ ४ ॥
अग्निमुक्थैर्ऋषयो वि ह्वयन्तेऽग्निं नरो यामनि बाधितासः ।
अग्निं वयो अन्तरिक्षे पतन्तोऽग्निः सहस्रा परि याति गोनाम् ॥ ५ ॥
अग्निं विश ईळते मानुषीर्या अग्निं मनुषो नहुषो वि जाताः ।
अग्निर्गन्धर्वीं पथ्यामृतस्याग्नेर्गव्यूतिर्घृत आ निषत्ता ॥ ६ ॥
अग्नये ब्रह्म ऋभवस्ततक्षुरग्निं महामवोचामा सुवृक्तिम् ।
अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठाग्ने महि द्रविणमा यजस्व ॥ ७ ॥

[८१] एकाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वकर्मा भौवनः॥ देवता—विश्वकर्मा॥ छन्दः—१, ५, ६ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ३, ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वदृषिर्होता न्यसीदत्पिता नः ।
स आशिषा द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छदवराँ आ विवेश॥ १ ॥
किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्कथासीत् ।
यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः॥ ३॥
किं स्विद्वनं क उ स वृक्ष आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः।
मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तद्यद्ध्यतिष्ठद्भुवनानि धारयन्॥ ४॥
या ते धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा।
शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः स्वयं यजस्व तन्वं वृधानः॥ ५॥
विश्वकर्मन्हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम्।
मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु॥ ६॥
वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम।
स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा॥ ७॥

[८२] द्व्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वकर्मा भौवनः॥ देवता—विश्वकर्मा॥ छन्दः—१, ५, ६ त्रिष्टुप्; २, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो घृतमेने अजनन्नम्नमाने।
यदेदन्ता अददृहन्त पूर्व आदिद् द्यावापृथिवी अप्रथेताम्॥ १॥
विश्वकर्मा विमना आद्विहाया धाता विधाता परमोत संदृक्।
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऋषीन्पर एकमाहुः॥ २॥
यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यो देवानां नामधा एक एव तं संप्रश्नं भुवना यन्त्यन्या॥ ३॥
त आयजन्त द्रविणं समस्मा ऋषयः पूर्वे जरितारो न भूना।
असूर्ते सूर्ते रजसि निषत्ते ये भूतानि समकृण्वन्निमानि॥ ४॥
परो दिवा पर एना पृथिव्या परो देवेभिरसुरैर्यदस्ति।
कं स्विद्गर्भं प्रथमं दध्र आपो यत्र देवाः समपश्यन्त विश्वे॥ ५॥
तमिद्गर्भं प्रथमं दध्र आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे।
अजस्य नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन्विश्वानि भुवनानि तस्थुः॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न तं विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव।
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप उक्थशासश्चरन्ति॥ ७॥

[८३] त्र्यशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—मन्युस्तापसः॥ देवता—मन्युः॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २ त्रिष्टुप्; ३, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ४ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ निषादः; २-७ धैवतः॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

यस्ते मन्योऽविधद्वज्र सायक सह ओजः पुष्यति विश्वमानुषक्।
साह्याम दासमार्यं त्वया युजा सहस्कृतेन सहसा सहस्वता॥ १॥
मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः।
मन्युं विश ईळते मानुषीर्याः पाहि नो मन्यो तपसा सजोषाः॥ २॥
अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान्तपसा युजा वि जहि शत्रून्।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहा च विश्वा वसून्या भरा त्वं नः॥ ३॥
त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः स्वयंभूर्भामो अभिमातिषाहः।
विश्वचर्षणिः सहुरिः सहावानस्मास्वोजः पृतनासु धेहि॥ ४॥
अभागः सन्नप परेतो अस्मि तव क्रत्वा तविषस्य प्रचेतः।
तं त्वा मन्यो अक्रतुर्जिहीळाहं स्वा तनूर्बलदेयाय मेहि॥ ५॥
अयं ते अस्म्युप मेह्यर्वाङ् प्रतीचीनः सहुरे विश्वधायः।
मन्यो वज्रिन्नभि मामा ववृत्स्व हनाव दस्यूँरुत बोध्यापेः॥ ६॥
अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि।
जुहोमि ते धरुणं मध्वो अग्रमुभा उपांशु प्रथमा पिबाव॥ ७॥

[८४] चतुरशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—मन्युस्तापसः॥ देवता—मन्युः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४, ५ पादनिचृज्जगती; ६ आर्चीस्वराड्जगती; ७ विराड्जगती॥ स्वरः—१-३ धैवतः; ४-७ निषादः॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

त्वया मन्यो सरथमारुजन्तो हर्षमाणासो धृषिता मरुत्वः।
तिग्मेषव आयुधा संशिशाना अभि प्र यन्तु नरो अग्निरूपाः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व सेनानीर्नः सहुरे हूत एधि।
हत्वाय शत्रून्वि भजस्व वेद ओजो मिमानो वि मृधो नुदस्व॥ २॥
सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मे रुजन्मृणन्प्रमृणन्प्रेहि शत्रून्।
उग्रं ते पाजो नन्वा रुरुध्रे वशी वशं नयस एकज त्वम्॥ ३॥
एको बहूनामसि मन्यवीळितो विशंविशं युधये सं शिशाधि।
अकृत्तरुक्त्वया युजा वयं द्युमन्तं घोषं विजयाय कृण्महे॥ ४॥
विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवोऽस्माकं मन्यो अधिपा भवेह।
प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि विद्मा तमुत्सं यत आबभूथ॥ ५॥
आभूत्या सहजा वज्र सायक सहो बिभर्ष्यभिभूत उत्तरम्।
क्रत्वा नो मन्यो सह मेद्येधि महाधनस्य पुरुहूत संसृजि॥ ६॥
संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः।
भियं दधाना हृदयेषु शत्रवः पराजितासो अप नि लयन्ताम्॥ ७॥

सप्तमोऽनुवाकः [८५] पञ्चाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—सूर्या सावित्री॥ देवता—१-५ सोमः; ६-१६ सूर्याविवाहः; १७ देवाः; १८ सोमार्कौ; १९ चन्द्रमाः; २०-२८ नृणां विवाहमन्त्रा आशीःप्रायाः; २९, ३० वधूवासः संस्पर्शनिन्दा; ३१ यक्ष्मनाशिनी दम्पत्योः; ३२-४७ सूर्या॥ छन्दः—१, ३, ८, ११, २५, २८, ३२, ३३, ३८, ४१, ४५ निचृदनुष्टुप्; २, ४, ५, ९, ३०, ३१, ३५, ३९, ४६, ४७ अनुष्टुप्; ६, १०, १३, १६, १७; २९, ४२ विराडनुष्टुप्; ७, १२, १५, २२ पादनिचृदनुष्टुप्; १४, २०, २४, २६, ३७ निचृत्त्रिष्टुप्; १८ पादनिचृज्जगती; १९ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २१, ४४ विराट्त्रिष्टुप्; २३, २७, ३६ त्रिष्टुप्; ३४ उरोबृहती; ४० भुरिगनुष्टुप्; ४३ निचृज्जगती॥ स्वरः—१-१३, १५-१७, २२, २५, २८-३३, ३५, ३८-४२, ४५-४७ गान्धारः; १४, १९-२१, २३, २४, २६, ३६, ३७, ४४ धैवतः; १८, २७, ४३ निषादः; ३४ मध्यमः॥

अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

सत्येनोत्तभिता भूमिः सूर्येणोत्तभिता द्यौः ।
ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अधि श्रितः॥ १॥
सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही ।
अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः ॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमं मन्यते पपिवान्यत्संपिंषन्त्योषधिम् ।
सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन ॥ ३ ॥
आच्छद्विधानैर्गुपितो बार्हतैः सोम रक्षितः ।
ग्रावणामिच्छृण्वन्तिष्ठसि न ते अश्नाति पार्थिवः ॥ ४ ॥
यत्त्वा देव प्रपिबन्ति तत आ प्यायसे पुनः ।
वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः ॥ ५ ॥

अथ एकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

रैभ्यासीदनुदेयी नाराशंसी न्योचनी ।
सूर्याया भद्रमिद्वासो गाथयैति परिष्कृतम् ॥ ६ ॥
चित्तिरा उपबर्हणं चक्षुरा अभ्यञ्जनम् ।
द्यौर्भूमिः कोश आसीद्यदयात्सूर्या पतिम् ॥ ७ ॥
स्तोमा आसन्प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः ।
सूर्याया अश्विना वराग्निरासीत्पुरोगवः ॥ ८ ॥
सोमो वधूयुरभवदश्विनास्तामुभा वरा ।
सूर्यां यत्पत्ये शंसन्तीं मनसा सवितादादात् ॥ ९ ॥
मनो अस्या अनं आसीद् द्यौरासीदुत च्छदिः ।
शुक्रावनड्वाहावास्तां यदयात्सूर्या गृहम् ॥ १० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

ऋक्सामाभ्यामभिहितौ गावौ ते सामनावितः ।
श्रोत्रं ते चक्रे आस्तां दिवि पन्थाश्चराचरः ॥ ११ ॥
शुची ते चक्रे यात्या व्यानो अक्ष आहतः ।
अनो मनस्मयं सूर्यारोहत्प्रयती पतिम् ॥ १२ ॥
सूर्याया वहतुः प्रागात्सविता यमवासृजत् ।
अघासु हन्यन्ते गावोऽर्जुन्योः पर्युह्यते ॥ १३ ॥
यदश्विना पृच्छमानावयातं त्रिचक्रेण वहतुं सूर्यायाः ।
विश्वे देवा अनु तद्वामजानन्पुत्रः पितरावववृणीत पूषा ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदयातं शुभस्पती वरेयं सूर्यामुप ।
क्वैकं चक्रं वामासीत्क्व देष्ट्राय तस्थथुः ॥ १५ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

द्वे ते चक्रे सूर्ये ब्रह्माण ऋतुथा विदुः ।
अथैकं चक्रं यद् गुहा तदद्धातय इद्विदुः ॥ १६ ॥
सूर्यायै देवेभ्यो मित्राय वरुणाय च ।
ये भूतस्य प्रचेतस इदं तेभ्योऽकरं नमः ॥ १७ ॥
पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीळन्तौ परि यातो अध्वरम् ।
विश्वान्यन्यो भुवनाभिचष्ट ऋतूँरन्यो विदधज्जायते पुनः ॥ १८ ॥
नवोनवो भवति जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम् ।
भागं देवेभ्यो वि दधात्यायन्प्र चन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥ १९ ॥
सुकिंशुकं शल्मलिं विश्वरूपं हिरण्यवर्णं सुवृतं सुचक्रम् ।
आ रोह सूर्ये अमृतस्य लोकं स्योनं पत्ये वहतुं कृणुष्व ॥ २० ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

उदीर्ष्वातः पतिवती ह्येषा विश्वावसुं नमसा गीर्भिरीळे ।
अन्यामिच्छ पितृषदं व्यक्तां स ते भागो जनुषा तस्य विद्धि ॥ २१ ॥
उदीर्ष्वातौ विश्वावसो नमसेळामहे त्वा ।
अन्यामिच्छ प्रफर्व्यं१ सं जायां पत्या सृज ॥ २२ ॥
अनृक्षरा ऋजवः सन्तु पन्था येभिः सखायो यन्ति नो वरेयम् ।
समर्यमा सं भगो नो निनीयात्सं जास्पत्यं सुयममस्तु देवाः ॥ २३ ॥
प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य पाशाद्येन त्वाबध्नात्सविता सुशेवः ।
ऋतस्य योनौ सुकृतस्य लोकेऽरिष्टां त्वा सह पत्या दधामि ॥ २४ ॥
प्रेतो मुञ्चामि नामुतः सुबद्धाममुतस्करम् ।
यथेयमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रा सुभगासति ॥ २५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

पूषा त्वेतो नयतु हस्तगृह्याश्विना त्वा प्र वहतां रथेन।
गृहान्गच्छ गृहपत्नी यथासो वशिनी त्वं विदथमा वदासि ॥ २६ ॥
इह प्रियं प्रजया ते समृध्यतामस्मिन्गृहे गार्हपत्याय जागृहि।
एना पत्या तन्वं१ सं सृजस्वाधा जिव्री विदथमा वदाथः ॥ २७ ॥
नीललोहितं भवति कृत्यासक्तिर्व्यज्यते ।
एधन्ते अस्या ज्ञातयः पतिर्बन्धेषु बध्यते ॥ २८ ॥
परा देहि शामुल्यं ब्रह्मभ्यो वि भजा वसु ।
कृत्यैषा पद्वती भूत्वा जाया विशते पतिम् ॥ २९ ॥
अश्रीरा तनूर्भवति रुशती पापयामुया ।
पतिर्यद्ध्वो३ वाससा स्वमङ्गमभिधित्सते ॥ ३० ॥

अथ षड्विंशो वर्गः ॥ २६ ॥

ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं यक्ष्मा यन्ति जनादनु ।
पुनस्तान्यज्ञिया देवा नयन्तु यत आगताः ॥ ३१ ॥
मा विदन्परिपन्थिनो य आसीदन्ति दम्पती ।
सुगेभिर्दुर्गमतीतामपद्रान्त्वरातयः ॥ ३२ ॥
सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत ।
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं वि परेतन ॥ ३३ ॥
तृष्टमेतत् कटुकमेतदपाष्ठवद्विषवन्नैतदत्तवे ।
सूर्यां यो ब्रह्मा विद्यात्स इद्वाधूयमर्हति ॥ ३४ ॥
आशसनं विशसनमथो अधिविकर्तनम् ।
सूर्यायाः पश्य रूपाणि तानि ब्रह्मा तु शुन्धति ॥ ३५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथासः।
भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वादुर्गार्हपत्याय देवाः ॥ ३६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तां पूषञ्छिवतमामेरयस्व यस्यां बीजं मनुष्या३ वपन्ति।
या न ऊरू उशती विश्रयाते यस्यामुशन्तः प्रहराम शेपम्॥ ३७॥
तुभ्यमग्रे पर्यवहन्त्सूर्यां वहतुना सह ।
पुनः पतिभ्यो जायां दा अग्ने प्रजया सह ॥ ३८॥
पुनः पत्नीमग्निरदादायुषा सह वर्चसा ।
दीर्घायुरस्या यः पतिर्जीवाति शरदः शतम् ॥ ३९॥
सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः ।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥ ४०॥

अथाष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

सोमो ददद्गन्धर्वाय गन्धर्वो दददग्नये ।
रयिं च पुत्राँश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम् ॥ ४१॥
इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे ॥ ४२॥
आ नः प्रजां जनयतु प्रजापतिराजरसाय समनक्त्वर्यमा।
अदुर्मङ्गलीः पतिलोकमा विश शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ४३॥
अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः।
वीरसूर्देवकामा स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥ ४४॥
इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां कृणु ।
दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि ॥ ४५॥
सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्वां भव ।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधि देवृषु ॥ ४६॥
समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ।
सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ ॥ ४७॥

इत्यष्टमाष्टके तृतीयोऽध्यायः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथाष्टमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः

[८६] षडशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वृषाकपिरैन्द्र इन्द्राणीन्द्रश्च ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—१, ७, ११, १३, १४, १८, २३ पङ्क्तिः; २, ५ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३, ६, ९, १०, १२, १५, २०-२२ निचृत्पङ्क्तिः; ४, ८, १६, १७, १९ विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

वि हि सोतोरसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत ।
यत्रामदद् वृषाकपिरर्यः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १ ॥
परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः ।
नो अहु प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २ ॥
किमयं त्वां वृषाकपिश्चकार हरितो मृगः ।
यस्मा इरस्यसीदु न्वर्यो वा पुष्टिमद्वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ३ ॥
यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि ।
श्वा न्वस्य जम्भिषदपि कर्णे वराहयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ४ ॥
प्रिया तष्टानि मे कपिर्व्यक्ता व्यदूदुषत् ।
शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

न मत्स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत् ।
न मत्प्रतिच्यवीयसी न सक्थ्युद्यमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ६ ॥
उवे अम्ब सुलाभिके यथेवाङ्ग भविष्यति ।
भसन्मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीव ह्रष्यति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ७ ॥
किं सुबाहो स्वङ्गुरे पृथुष्टो पृथुजाघने ।
किं शूरपत्नि नस्त्वमभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ८ ॥
अवीरामिव मामयं शरारुरभि मन्यते ।
उताहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ९ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संहोत्रं स्म पुरा नारी समनं वाव गच्छति ।
वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम् ।
नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ ११ ॥
नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते ।
यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १२ ॥
वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्नुषे ।
घसत्त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १३ ॥
उक्षणो हि मे पञ्चदश साकं पचन्ति विंशतिम् ।
उताहमद्मि पीव इदुभा कुक्षी पृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १४ ॥
वृषभो न तिग्मशृङ्गोऽन्तर्यूथेषु रोरुवत् ।
मन्थस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

न सेशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३ कपृत् ।
सेदीशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १६ ॥
न सेशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते ।
सेदीशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्या३ कपृद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १७ ॥
अयमिन्द्र वृषाकपिः परस्वन्तं हतं विदत् ।
असिं सूनां नवं चरुमादेधस्यान आचितं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १८ ॥
अयमेमि विचाकशद्विचिन्वन्दासमार्यम् ।
पिबामि पाकसुत्वनोऽभि धीरमचाकशं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ १९ ॥
धन्व च यत्कृन्तत्रं च कति स्वित्ता वि योजना ।
नेदीयसो वृषाकपेऽस्तमेहि गृहाँ उप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २० ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनरेहि वृषाकपे सुविता कल्पयावहै ।
य एष स्वप्नंशनोऽस्तमेषि पथा पुनर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २१ ॥
यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन ।
क्वेयं पुल्वघो मृगः कमगञ्जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २२ ॥
पर्शुर्ह नाम मानवी साकं ससूव विंशतिम् ।
भद्रं भल त्यस्या अभूद्यस्या उदरमामयद्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥ २३ ॥

[८७] सप्ताशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—पायुः ॥ देवता—अग्नी रक्षोहा ॥ छन्दः—१, ८, १२, १७ त्रिष्टुप्; २, ३, २० विराट्त्रिष्टुप्; ४-७, ९-११, १८, १९ निचृत्त्रिष्टुप्; १३-१६ भुरिक्त्रिष्टुप्; २१ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; २२, २३ अनुष्टुप्; २४, २५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-२१ धैवतः; २२-२५ गान्धारः ॥

अथ पञ्चमो वर्गः ॥ ५ ॥

रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि मित्रं प्रथिष्ठमुप यामि शर्म ।
शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ॥ १ ॥
अयोद्रंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानानुप स्पृश जातवेदः समिद्धः ।
आ जिह्वया मूरदेवान्रभस्व क्रव्यादो वृक्त्व्यपि धत्स्वासन् ॥ २ ॥
उभोभयाविन्नुप धेहि दंष्ट्रा हिंस्रः शिशानोऽवरं परं च ।
उतान्तरिक्षे परि याहि राजञ्जम्भैः सं धेह्यभि यातुधानान् ॥ ३ ॥
यज्ञैरिषूः संनममानो अग्ने वाचा शल्याँ अशनिभिर्दिहानः ।
ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान्प्रतीचो बाहून्प्रति भङ्ध्येषाम् ॥ ४ ॥
अग्ने त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंस्राशनिर्हरसा हन्त्वेनम् ।
प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात्क्रविष्णुर्वि चिनोतु वृक्णम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

यत्रेदानीं पश्यसि जातवेदस्तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम् ।
यद्वान्तरिक्षे पथिभिः पतन्तं तमस्ता विध्य शर्वा शिशानः ॥ ६ ॥
उतालब्धं स्पृणुहि जातवेद आलेभानादृष्टिभिर्यातुधानात् ।
अग्ने पूर्वो नि जहि शोशुचान आमादः क्ष्विङ्कास्तमदन्त्वेनीः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्रे यो यातुधानो य इदं कृणोति।
तमा रभस्व समिधा यविष्ठ नृचक्षसश्चक्षुषे रन्धयैनम्॥ ८॥
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः।
हिंस्रं रक्षांस्यभि शोशुचानं मा त्वा दभन्यातुधाना नृचक्षः॥ ९॥
नृचक्षा रक्षः परि पश्य विक्षु तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा।
तस्याग्ने पृष्टीर्हरसा शृणीहि त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च॥ १०॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

त्रिर्यातुधानः प्रसितिं त एत्वृतं यो अग्रे अनृतेन हन्ति।
तमर्चिषा स्फूर्जयञ्जातवेदः समक्षमेनं गृणते नि वृङ्धि॥ ११॥
तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे शफारुजं येन पश्यसि यातुधानम्।
अथर्ववज्ज्योतिषा दैव्येन सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष॥ १२॥
यदग्ने अद्य मिथुना शपातो यद्वाचस्तृष्टं जनयन्त रेभाः।
मन्योर्मनसः शरव्या३ जायते या तया विध्य हृदये यातुधानान्॥ १३॥
परा शृणीहि तपसा यातुधानान्पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि।
परार्चिषा मूरदेवाञ्छृणीहि परासुतृपो अभि शोशुचानः॥ १४॥
पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु प्रत्यगेनं शपथा यन्तु तृष्टाः।
वाचास्तेनं शरव ऋच्छन्तु मर्मन्विश्वस्यैतु प्रसितिं यातुधानः॥ १५॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्व्येन पशुना यातुधानः।
यो अघ्न्याया भरति क्षीरमग्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च॥ १६॥
संवत्सरीणं पय उस्रियायास्तस्य माशीद्यातुधानो नृचक्षः।
पीयूषमग्ने यतमस्तितृप्सात्तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मन्॥ १७॥
विषं गवां यातुधानाः पिबन्त्वा वृश्च्यन्तामादितये दुरेवाः।
परैनान्देवः सविता ददातु परा भागमोषधीनां जयन्ताम्॥ १८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।
अनु दह सहमूरान्क्रव्यादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः ॥ १९ ॥
त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तात्त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात् ।
प्रति ते ते अजरासस्तपिष्ठा अघशंसं शोशुचतो दहन्तु ॥ २० ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात्कविः काव्येन परि पाहि राजन् ।
सखे सखायमजरो जरिम्णेऽग्ने मर्तो अमर्त्यस्त्वं नः ॥ २१ ॥
परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रं सहस्य धीमहि ।
धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावताम् ॥ २२ ॥
विषेण भङ्गुरावतः प्रति ष्म रक्षसो दह ।
अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिर्ऋष्टिभिः ॥ २३ ॥
प्रत्यग्ने मिथुना दह यातुधानाँ किमीदिना ।
सं त्वा शिशामि जागृह्यदब्धं विप्र मन्मभिः ॥ २४ ॥
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति ।
यातुधानस्य रक्षसो बलं वि रुज वीर्यम् ॥ २५ ॥

[८८] अष्टाशीतितमं सूक्तम्

ऋषिः—मूर्धन्वानाङ्गिरसो वामदेव्यो वा ॥ देवता—सूर्यवैश्वानरौ ॥ छन्दः—१-४, ७, १५, १९ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ८ त्रिष्टुप्; ६, ९-१४, १६, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; १८ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

हविष्पान्तमजरं स्वर्विदि दिविस्पृश्याहुतं जुष्टमग्नौ ।
तस्य भर्मणे भुवनाय देवा धर्मणे कं स्वधया पप्रथन्त ॥ १ ॥
गीर्णं भुवनं तमसापगूळ्हमाविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।
तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापोऽरणयन्नोषधीः सख्ये अस्य ॥ २ ॥
देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभिरग्निं स्तोषाण्यजरं बृहन्तम् ।
यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमामाततान रोदसी अन्तरिक्षम् ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो होतासीत्प्रथमो देवजुष्टो यं समाञ्जन्नाज्येना वृणानाः ।
स पत्त्रीत्वरं स्था जगद्यच्छात्रमग्निरकृणोज्जातवेदाः ॥ ४ ॥
यज्जातवेदो भुवनस्य मूर्धन्नतिष्ठो अग्ने सह रोचनेन ।
तं त्वाहेम मतिभिर्गीर्भिरुक्थैः स यज्ञियो अभवो रोदसिप्राः ॥ ५ ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्निस्ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन् ।
मायामू तु यज्ञियानामेतामपो यत्तूर्णिश्चरति प्रजानन् ॥ ६ ॥
दृशेन्यो यो महिना समिद्धोऽरोचत दिवियोनिर्विभावा ।
तस्मिन्नग्नौ सूक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुहवुस्तनूपाः ॥ ७ ॥
सूक्तवाकं प्रथममादिदग्निमादिद्धविरजनयन्त देवाः ।
स एषां यज्ञो अभवत्तनूपास्तं द्यौर्वेद तं पृथिवी तमापः ॥ ८ ॥
यं देवासोऽजनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा ।
सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमामृजूयमानो अतपन्महित्वा ॥ ९ ॥
स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्निमजीजनञ्छक्तिभी रोदसिप्राम् ।
तमू अकृण्वन्त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः ॥ १० ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम् ।
यदा चरिष्णू मिथुनावभूतामादित्प्रापश्यन्भुवनानि विश्वा ॥ ११ ॥
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन् ।
आ यस्ततानोषसो विभातीरपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन् ॥ १२ ॥
वैश्वानरं कवयो यज्ञियासोऽग्निं देवा अजनयन्नजुर्यम् ।
नक्षत्रं प्रत्नममिनच्चरिष्णु यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम् ॥ १३ ॥
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः ।
यो महिम्ना परिबभूवोर्वी उतावस्तादुत देवः परस्तात् ॥ १४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वे स्रुती अशृणवं पितॄणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्।
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च॥ १५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

द्वे समीची बिभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम्।
स प्रत्यङ्विश्वा भुवनानि तस्थावप्रयुच्छन्तरणिर्भ्राजमानः॥ १६॥
यत्रा वदेते अवरः परश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद।
आ शेकुरित्सधमादं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत्॥ १७॥
कत्यग्नयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्यु स्विदापः।
नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विद्मने कम्॥ १८॥
यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपर्ण्योऽ३ वसते मातरिश्वः।
तावद्दधात्युप यज्ञमायन्ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन्॥ १९॥

[८९] एकोननवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—रेणुः॥ देवता—१-४, ६-१८ इन्द्रः; ५ इन्द्रासोमौ॥ छन्दः—१, ४, ६, ७, ११, १२, १५, १८ त्रिष्टुप्; २ आर्चीत्रिष्टुप्; ३, ५, ९, १०, १४, १६, १७ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; १३ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

इन्द्रं स्तवा नृतमं यस्य मह्ना विबबाधे रोचना वि ज्मो अन्तान्।
आ यः पप्रौ चर्षणीधृद्वरोभिः प्र सिन्धुभ्यो रिरिचानो महित्वा॥ १॥
स सूर्यः पर्युरू वरांस्येन्द्रो ववृत्याद्रथ्येव चक्रा।
अतिष्ठन्तमपस्यं न सर्गं कृष्णा तमांसि त्विष्या जघान॥ २॥
समानमस्मा अनपावृदर्च क्षमया दिवो असमं ब्रह्म नव्यम्।
वि यः पृष्ठेव जनिमान्यर्य इन्द्रश्चिकाय न सखायमीषे॥ ३॥
इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रेरयं सगरस्य बुध्नात्।
यो अक्षेणेव चक्रिया शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम्॥ ४॥
आपान्तमन्युस्तृपलप्रभर्मा धुनिः शिमीवाञ्छरुमाँ ऋजीषी।
सोमो विश्वान्यतसा वनानि नार्वागिन्द्रं प्रतिमानानि देभुः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं नाद्रयः सोमो अक्षाः ।
यदस्य मन्युरधिनीयमानः शृणाति वीळु रुजति स्थिराणि ॥ ६ ॥
जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव रुरोज पुरो अरदन्न सिन्धून् ।
बिभेद गिरिं नवमिन्न कुम्भमा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः ॥ ७ ॥
त्वं ह त्यदृणया इन्द्र धीरोऽसिर्न पर्वं वृजिना शृणासि ।
प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जना मिनन्ति मित्रम् ॥ ८ ॥
प्र ये मित्रं प्रार्यमणं दुरेवाः प्र सङ्गिरः प्र वरुणं मिनन्ति ।
न्य१मित्रेषु वधमिन्द्र तुम्रं वृषन्वृषाणमरुषं शिशीहि ॥ ९ ॥
इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्या इन्द्रो अपामिन्द्र इत्पर्वतानाम् ।
इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिराणामिन्द्रः क्षेमे योगे हव्य इन्द्रः ॥ १० ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः प्रान्तरिक्षात्प्र समुद्रस्य धासेः ।
प्र वातस्य प्रथसः प्र ज्मो अन्तात्प्र सिन्धुभ्यो रिरिचे प्र क्षितिभ्यः ॥ ११ ॥
प्र शोशुचत्या उषसो न केतुरसिन्वा ते वर्ततामिन्द्र हेतिः ।
अश्मेव विध्य दिव आ सृजानस्तपिष्ठेन हेषसा द्रोघमित्रान् ॥ १२ ॥
अन्वह मासा अन्विद्वनान्यन्वोषधीरनु पर्वतासः ।
अन्विन्द्रं रोदसी वावशाने अन्वापो अजिहत जायमानम् ॥ १३ ॥
कहि स्वित्सा ते इन्द्र चेत्यासदघस्य यद्भिनदो रक्ष एषत् ।
मित्रक्रुवो यच्छसने न गावः पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते ॥ १४ ॥
शत्रूयन्तो अभि ये नस्ततस्रे महि व्राधन्त ओगणासः इन्द्र ।
अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्तां सुज्योतिषो अक्तवस्ताँ अभि ष्युः ॥ १५ ॥
पुरूणि हि त्वा सवना जनानां ब्रह्माणि मन्दन्गृणतामृषीणाम् ।
इमामाघोषन्नवसा सहूतिं तिरो विश्वाँ अर्चतो याह्यर्वाङ् ॥ १६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एवा ते वयमिन्द्र भुञ्जतीनां विद्याम सुमतीनां नवानाम्।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विश्वामित्रा उत त इन्द्र नूनम्॥ १७॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्॥ १८॥

[९०] नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—नारायणः॥ देवता—पुरुषः॥ छन्दः—१-३, ७, १०, १२, १३ निचृदनुष्टुप्; ४-६, ९, १४, १५ अनुष्टुप्; ८, ११ विराडनुष्टुप्; १६ विराट्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—१-१५ गान्धारः; १६ धैवतः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १॥
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ २॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३॥
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥ ४॥
तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ ६॥
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ ७॥
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम् ।
पशून्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये ॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ९ ॥
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥ १० ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते ॥ ११ ॥
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ॥ १२ ॥
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत ॥ १३ ॥
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ १४ ॥
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम् ॥ १५ ॥
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ १६ ॥

अष्टमोऽनुवाकः [९१] एकनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अरुणो वैतहव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ६ निचृज्जगती; २, ४, ५, ७, ९, १०, १३ विराड्जगती; ८, ११ पादनिचृज्जगती; १२, १४ जगती; १५ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-१४ निषादः; १५ धैवतः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

सं जागृवद्भिर्जरमाण इध्यते दमे दमूना इषयन्निळस्पदे ।
विश्वस्य होता हविषो वरेण्यो विभुर्विभावा सुषखा सखीयते ॥ १ ॥
स दर्शतश्रीरतिथिर्गृहेगृहे वनेवने शिश्रिये तक्ववीरिव ।
जनेजनं जन्यो नाति मन्यते विश आ क्षेति विश्योऽ३ विशंविशम् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुरग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित्।
वसुर्वसूनां क्षयसि त्वमेक इद् द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः ॥ ३ ॥
प्रजानन्नग्ने तव योनिमृत्वियमिळायास्पदे घृतवन्तमासदः ।
आ ते चिकित्र उषसामिवेतयोऽरेपसः सूर्यस्येव रश्मयः ॥ ४ ॥
तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतश्चित्राश्चिकित्र उषसां न केतवः।
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे अन्नमास्ये ॥ ५ ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः।
तमित्समानं वनिनश्च वीरुधोऽन्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा ॥ ६ ॥
वातोपधूत इषितो वशाँ अनु तृषु यदन्ना वेविषद्वितिष्ठसे।
आ ते यतन्ते रथ्यो३ यथा पृथक्शर्धांस्यग्ने अजराणि धक्षतः ॥ ७ ॥
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निं होतारं परिभूतमं मतिम्।
तमिदर्भे हविष्या समानमित्तमिन्महे वृणते नान्यं त्वत् ॥ ८ ॥
त्वामिदत्र वृणते त्वायवो होतारमग्ने विदथेषु वेधसः।
यद्देवयन्तो दधति प्रयांसि ते हविष्मन्तो मनवो वृक्तबर्हिषः ॥ ९ ॥
तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निर्दृतायतः।
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश्च नो दमे ॥ १० ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

यस्तुभ्यमग्ने अमृताय मर्त्यः समिधा दाशदुत वा हविष्कृति।
तस्य होता भवसि यासि दूत्यमुप ब्रूषे यजस्यधरीयसि ॥ ११ ॥
इमा अस्मै मतयो वाचो अस्मदाँ ऋचो गिरः सुष्टुतयः समग्मत।
वसूयवो वसवे जातवेदसे वृद्धासु चिद्वर्धनो यासु चाकनत् ॥ १२ ॥
इमां प्रत्नाय सुष्टुतिं नवीयसीं वोचेयमस्मा उशते शृणोतु नः।
भूया अन्तरा हृद्यस्य निस्पृशे जायेव पत्य उशती सुवासाः ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्षणो वशा मेषा अवसृष्टास आहुताः।
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदा मतिं जनये चारुमग्नये॥ १४॥
अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्वीव सोमः।
वाजसनिं रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्॥ १५॥

[९२] द्विनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—शार्यातो मानवः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ६, १२, १४ निचृत् जगती; २, ५, ८, १०, ११, १५ जगती; ३, ४, ९, १३ विराड्जगती; ७ पादनिचृज्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

यज्ञस्य वो रथ्यं विशपतिं विशां होतारमक्तोरतिथिं विभावसुम्।
शोचञ्छुष्कासु हरिणीषु जर्भुरद् वृषा केतुर्यजतो द्यामशायत॥ १॥
इममञ्जस्पामुभये अकृण्वत धर्माणमग्निं विदथस्य साधनम्।
अक्तुं न यह्वमुषसः पुरोहितं तनूनपातमरुषस्य निंसते॥ २॥
बळस्य नीथा वि पणेश्च मन्महे वया अस्य प्रहुता आसुरत्तवे।
यदा घोरासो अमृतत्वमाशतादिज्जनस्य दैव्यस्य चर्किरन्॥ ३॥
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौरुरु व्यचो नमो मह्यरमतिः पनीयसी।
इन्द्रो मित्रो वरुणः सं चिकित्रिरेऽथो भगः सविता पूतदक्षसः॥ ४॥
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति सिन्धवस्तिरो महीमरमतिं दधन्विरे।
येभिः परिज्मा परियन्नुरु ज्रयो वि रोरुवज्जठरे विश्वमुक्षते॥ ५॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

क्राणा रुद्रा मरुतो विश्वकृष्टयो दिवः श्येनासो असुरस्य नीळयः।
तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमेन्द्रो देवेभिरर्वशेभिरर्वशः॥ ६॥
इन्द्रे भुजं शशमानास आशत सूरो दृशीके वृषणश्च पौंस्ये।
प्र ये न्वस्यार्हणा ततक्षिरे युजं वज्रं नृषदनेषु कारवः॥ ७॥
सूरश्चिदा हरितो अस्य रीरमदिन्द्रादा कश्चिद्भयते तवीयसः।
भीमस्य वृष्णो जठरादभिश्वसो दिवेदिवे सहुरिः स्तन्नबाधितः॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

स्तोमं वो अद्य रुद्राय शिक्वसे क्षयद्वीराय नमसा दिदिष्टन।
येभिः शिवः स्ववाँ एवयावभिर्दिवः सिषक्ति स्वयशा निकामभिः॥ ९॥
ते हि प्रजाया अभरन्त वि श्रवो बृहस्पतिर्वृषभः सोमजामयः।
यज्ञैरथर्वा प्रथमो वि धारयद्वेवा दक्षैर्भृगवः सं चिकित्रिरे॥ १०॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

ते हि द्यावापृथिवी भूरिरेतसा नराशंसश्चतुरङ्गो यमोऽदितिः।
देवस्त्वष्टा द्रविणोदा ऋभुक्षणः प्र रोदसी मरुतो विष्णुरर्हिरे॥ ११॥
उत स्य नः उशिजामुर्विया कविरहिः शृणोतु बुध्न्योऽ३ हवीमनि।
सूर्यामासा विचरन्ता दिविक्षिता धिया शमीनहुषी अस्य बोधतम्॥ १२॥
प्र नः पूषा चरथं विश्वदेव्योऽपां नपादवतु वायुरिष्टये।
आत्मानं वस्यो अभि वातमर्चत तदश्विना सुहवा यामनि श्रुतम्॥ १३॥
विशामासामभयानामधिक्षितं गीर्भिरु स्वयशसं गृणीमसि।
ग्नाभिर्विश्वाभिरदितिमनर्वणमुक्तोर्युवानं नृमणा अधा पतिम्॥ १४॥
रेभदत्र जनुषा पूर्वो अङ्गिरा ग्रावाण ऊर्ध्वा अभि चक्षुरध्वरम्।
येभिर्विहाया अभवद्विचक्षणः पाथः सुमेकं स्वधितिर्वनन्वति॥ १५॥

[९३] त्रिनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—तान्वः पार्ष्यः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ विराट्पङ्क्तिः; २, १३ आर्चीभुरिगनुष्टुप्; ३ पादनिचृदनुष्टुप्; ४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ५ आर्चीभुरिक्पङ्क्तिः; ६, ७, १०, १४ निचृत्पङ्क्तिः; ८ आस्तारपङ्क्तिः; ९ अक्षरपङ्क्तिः; ११ न्यङ्कुसारिणीबृहती; १२ आर्चीपङ्क्तिः; १५ पादनिचृद्बृहती॥ स्वरः—१, ४-१०, १२, १४ पञ्चमः; २, ३, १३ गान्धारः; ११, १५ मध्यमः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

महि द्यावापृथिवी भूतमुर्वी नारी यह्वी न रोदसी सदं नः।
तेभिर्नः पातं सह्यस एभिर्नः पातं शूषणि॥ १॥
यज्ञेयज्ञे स मर्त्यो देवान्त्सपर्यति।
यः सुम्नैर्दीर्घश्रुत्तम आविवासात्येनान्॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वेषामिरज्यवो देवानां वार्महः ।
विश्वे हि विश्वमहसो विश्वे यज्ञेषु यज्ञियाः ॥ ३ ॥
ते घा राजानो अमृतस्य मन्द्रा अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा ।
कद्रुद्रो नृणां स्तुतो मरुतः पूषणो भगः ॥ ४ ॥
उत नो नक्तमपां वृषण्वसू सूर्यामासा सदनाय सध्र्या ।
सचा यत्साद्येषामहिर्बुध्नेषु बुध्न्यः ॥ ५ ॥

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

उत नो देवावश्विना शुभस्पती धामभिर्मित्रावरुणा उरुष्यताम् ।
महः स राय एषतेऽति धन्वेव दुरिता ॥ ६ ॥
उत नो रुद्रा चिन्मृळतामश्विना विश्वे देवासो रथस्पतिर्भगः ।
ऋभुर्वाज ऋभुक्षणः परिज्मा विश्ववेदसः ॥ ७ ॥
ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतो मदु आ ते हरी जूजुवानस्य वाजिना ।
दुष्टरं यस्य साम चिदूधर्यज्ञो न मानुषः ॥ ८ ॥
कृधी नो अह्रयो देव सवितः स च स्तुषे मघोनाम् ।
सहो न इन्द्रो वह्निभिर्न्यृषां चर्षणीनां चक्रं रश्मिं न योयुवे ॥ ९ ॥
ऐषु द्यावापृथिवी धातं महदस्मे वीरेषु विश्वचर्षणि श्रवः ।
पृक्षं वाजस्य सातये पृक्षं रायोत तुर्वणे ॥ १० ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

एतं शंसमिन्द्रास्मयुष्टवं कूचित्सन्तं सहसावन्नभिष्टये सदा
पाह्यभिष्टये । मेदतां वेदता वसो ॥ ११ ॥
एतं मे स्तोमं तना न सूर्ये द्युतद्यामानं वावृधन्त नृणाम् ।
संवननं नाश्व्यं तष्टेवानपच्युतम् ॥ १२ ॥
वावर्त येषां राया युक्तैषां हिरण्ययी ।
नेमधिता न पौंस्या वृथैव विष्टान्ता ॥ १३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र तद्दुःशीमे पृथवाने वेने प्र रामे वोचमसुरे मघवत्सु ।
ये युक्त्वाय पञ्च शतास्मयु पथा विश्राव्येषाम् ॥ १४ ॥
अधीन्ववत्र सप्ततिं च सप्त च ।
सद्यो दिदिष्ट तान्वः सद्यो दिदिष्ट पार्थ्यः सद्यो दिदिष्ट मायवः ॥ १५ ॥

[९४] चतुर्नवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः ॥ देवता—ग्रावाणः ॥ छन्दः—१, ३, ४, १०, ११, १३ विराड्जगती; २, ६, १२ जगती; ८, ९ आर्चीस्वराड्जगती; ५, ७ निचृत् त्रिष्टुप्; १४ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-४, ६, ८-१३ निषादः; ५, ७, १४ धैवतः ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

प्रैते वदन्तु प्र वयं वदाम ग्रावभ्यो वाचं वदता वदद्भ्यः ।
यदद्रयः पर्वताः साकमाशवः श्लोकं घोषं भरथेन्द्राय सोमिनः ॥ १ ॥
एते वदन्ति शतवत्सहस्रवदभि क्रन्दन्ति हरितेभिरासभिः ।
विष्ट्वी ग्रावाणः सुकृतः सुकृत्यया होतुश्चित्पूर्वे हविरद्यमाशत ॥ २ ॥
एते वदन्त्यविदन्नना मधु न्यूङ्खयन्ते अधि पक्व आमिषि ।
वृक्षस्य शाखामरुणस्य बप्सतस्ते सूभर्वा वृषभाः प्रेमरावीषुः ॥ ३ ॥
बृहद्वदन्ति मदिरेण मन्दिनेन्द्रं क्रोशन्तोऽविदन्नना मधु ।
संरभ्या धीराः स्वसृभिरनर्तिषुराघोषयन्तः पृथिवीमुपब्दिभिः ॥ ४ ॥
सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्याखरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः ।
न्यङ्ङिनि यन्त्युपरस्य निष्कृतं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्वितः ॥ ५ ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

उग्राइव प्रवहन्तः समायमुः साकं युक्ता वृषणो बिभ्रतो धुरः ।
यच्छ्वसन्तो जग्रसाना अरावीषुः शृण्व एषां प्रोथथो अर्वतामिव ॥ ६ ॥
दशावनिभ्यो दशकक्ष्येभ्यो दशयोक्त्रेभ्यो दशयोजनेभ्यः ।
दशाभीशुभ्यो अर्चताजरेभ्यो दश धुरो दश युक्ता वहद्भ्यः ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते अद्रयो दशयन्त्रास आशवस्तेषामाधानं पर्येति हर्यतम्।
त ऊं सुतस्य सोम्यस्यान्धसोऽशोः पीयूषं प्रथमस्य भेजिरे॥ ८॥
ते सोमादो हरी इन्द्रस्य निंसतेऽशुं दुहन्तो अध्यासते गवि।
तेभिर्दुग्धं पपिवान्त्सोम्यं मध्विन्द्रो वर्धते प्रथते वृषायते॥ ९॥
वृषा वो अंशुर्न किला रिषाथनेळावन्तः सदमित्स्थनाशिताः।
रैवत्येव महसा चारवः स्थन यस्य ग्रावाणो अजुषध्वमध्वरम्॥ १०॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

तृदिला अतृदिलासो अद्रयोऽश्रमणा अशृथिता अमृत्यवः।
अनातुरा अजराः स्थामविष्णवः सुपीवसो अतृषिता अतृष्णजः॥ ११॥
ध्रुवा एव वः पितरो युगेयुगे क्षेमकामासः सदसो न युञ्जते।
अजुर्यासो हरिषाचो हरिद्रव आ द्यां रवेण पृथिवीमशुश्रवुः॥ १२॥
तदिद्वदन्त्यद्रयो विमोचने यामन्नञ्जस्पाइव घेदुपब्दिभिः।
वपन्तो बीजमिव धान्याकृतः पृञ्चन्ति सोमं न मिनन्ति बप्सतः॥ १३॥
सुते अध्वरे अधि वाचमक्रता क्रीळयो न मातरं तुदन्तः।
वि षू मुञ्चा सुषुवुषो मनीषां वि वर्तन्तामद्रयश्चायमानाः॥ १४॥

इत्यष्टमाष्टके चतुर्थोऽध्यायः॥

अथाष्टमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः

[९५] पञ्चनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३, ६, ८-१०, १२, १४, १७, पुरूरवा ऐळः; २, ४, ५, ७, ११, १३, १५, १६, १८ उर्वशी॥ देवता—१, ३, ६, ८-१०, १२, १४, १७ उर्वशी; २, ४, ५, ७, ११, १३, १५, १६, १८ पुरूरवा ऐळः॥ छन्दः—१, २, १२ त्रिष्टुप्; ३, ४, १३, १६ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ५, १० आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ६-८, १५ विराट्त्रिष्टुप्; ९, ११, १४, १७, १८ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

हये जाये मनसा तिष्ठ घोरे वचांसि मिश्रा कृणवावहै नु।
न नौ मन्त्रा अनुदितास एते मयस्करन्परतरे चनाहन्॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किमेता वाचा कृणवा तवाहं प्राक्रमिषमुषसामग्रियेव ।
पुरूरवः पुनरस्तं परेहि दुरापना वात इवाहमस्मि ॥ २ ॥
इषुर्न श्रिय इषुधेरसना गोषाः शतसा न रंहिः ।
अवीरे क्रतौ वि दविद्युतन्नोरा न मायुं चितयन्त धुनयः ॥ ३ ॥
सा वसु दधती श्वशुराय वय उषो यदि वष्टयन्ति गृहात् ।
अस्तं ननक्षे यस्मिञ्चाकन्दिवा नक्तं शनथिता वैतसेन ॥ ४ ॥
त्रिः स्म माह्नः शनथयो वैतसेनोत स्म मेऽव्यत्यै पृणासि ।
पुरूरवोऽनु ते केतमायं राजा मे वीर तन्वस्तदासीः ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

या सुजूर्णिः श्रेणिः सुम्नआपिर्हृदेचक्षुर्न ग्रन्थिनी चरण्युः ।
ता अञ्जयोऽरुणयो न संस्रुः श्रिये गावो न धेनवोऽनवन्त ॥ ६ ॥
समस्मिञ्जायमान आसत ग्रा उतेमवर्धन्नद्यः स्वगूर्ताः ।
महे यत्त्वा पुरूरवो रणायावर्धयन्दस्युहत्याय देवाः ॥ ७ ॥
सचा यदासु जहतीष्वत्कममानुषीषु मानुषो निषेवे ।
अप स्म मत्तरसन्ती न भुज्युस्ता अत्रसन्रथस्पृशो नाश्वाः ॥ ८ ॥
यदासु मर्तो अमृतासु निस्पृक्सं क्षोणीभिः क्रतुभिर्न पृङ्क्ते ।
ता आतयो न तन्वः शुम्भत स्वा अश्वासो न क्रीळयो दन्दशानाः ॥ ९ ॥
विद्युन्न या पतन्ती दविद्योद्धरन्ती मे अप्या काम्यानि ।
जनिष्टो अपो नर्यः सुजातः प्रोर्वशी तिरत दीर्घमायुः ॥ १० ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय हि दधाथ तत्पुरूरवो म ओजः ।
अशासं त्वा विदुषी सस्मिन्नहन्न म आशृणोः किमभुग्वदासि ॥ ११ ॥
कदा सूनुः पितरं जात इच्छाच्चक्रन्नाश्रु वर्तयद्विजानन् ।
को दम्पती समनसा वि यूयोदध यदग्निः श्वशुरेषु दीदयत् ॥ १२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति ब्रवाणि वर्तयते अश्रु चक्रन्न क्रन्ददाध्ये शिवायै।
प्र तत्ते हिनवा यत्ते अस्मे परेह्यस्तं नहि मूर मापः॥ १३॥
सुदेवो अद्य प्रपतेदनावृत्परावतं परमां गन्तवा उ।
अधा शयीत निर्ऋतेरुपस्थेऽधैनं वृका रभसासो अद्युः॥ १४॥
पुरूरवो मा मृथा मा प्र पप्तो मा त्वा वृकासो अशिवास उ क्षन्।
न वै स्त्रैणानि सख्यानि सन्ति सालावृकाणां हृदयान्येता॥ १५॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

यद्विरूपाचरं मर्त्येष्ववसं रात्रीः शरदश्चतस्रः।
घृतस्य स्तोकं सकृदह्न आश्नां तादेवेदं तातृपाणा चरामि॥ १६॥
अन्तरिक्षप्रां रजसो विमानीमुप शिक्षाम्युर्वशीं वसिष्ठः।
उप त्वा रातिः सुकृतस्य तिष्ठान्नि वर्तस्व हृदयं तप्यते मे॥ १७॥
इति त्वा देवा इम आहुरैळ यथेमेतद्भवसि मृत्युबन्धुः।
प्रजा ते देवान्हविषा यजाति स्वर्ग उ त्वमपि मादयासे॥ १८॥

[९६] षण्णवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—बरुः सर्वहरिर्वैन्द्रः॥ देवता—हरिस्तुतिः॥ छन्दः—१, ७, ८ जगती; २-४, ९, १० निचृज्जगती; ५ आर्चीस्वराड्जगती; ६ विराड्जगती; ११ आर्चीभुरिग्जगती; १२, १३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-११ निषादः; १२, १३ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

प्र ते महे विदथे शंसिषं हरी प्र ते वन्वे वनुषो हर्यतं मदम्।
घृतं न यो हरिभिश्चारु सेचत आ त्वा विशन्तु हरिवर्पसं गिरः॥ १॥
हरिं हि योनिमभि ये समस्वरन्हिन्वन्तो हरी दिव्यं यथा सदः।
आ यं पृणन्ति हरिभिर्न धेनव इन्द्राय शूषं हरिवन्तमर्चत॥ २॥
सो अस्य वज्रो हरितो य आयसो हरिर्निकामो हरिरा गभस्त्योः।
द्युम्नी सुशिप्रो हरिमन्युसायक इन्द्रे नि रूपा हरिता मिमिक्षिरे॥ ३॥
दिवि न केतुरधि धायि हर्यतो विव्यचद्वज्रो हरितो न रंह्या।
तुददहिं हरिशिप्रो य आयसः सहस्त्रशोका अभवद्धरिंभरः॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वंत्वमहर्यथा उपस्तुतः पूर्वेभिरिन्द्र हरिकेश यज्वभिः ।
त्वं हर्यसि तव विश्वमुक्थ्य१मसामि राधो हरिजात हर्यतम् ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो वर्गः ॥ ६ ॥

ता वज्रिणं मन्दिनं स्तोम्यं मद इन्द्रं रथे वहतो हर्यता हरी ।
पुरूण्यस्मै सवनानि हर्यत इन्द्राय सोमा हरयो दधन्विरे ॥ ६ ॥
अरं कामाय हरयो दधन्विरे स्थिराय हिन्वन्हरयो हरी तुरा ।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्जोषमीयते सो अस्य कामं हरिवन्तमानशे ॥ ७ ॥
हरिश्मशारुर्हरिकेश आयससस्तुर स्पेये यो हरिपा अवर्धत ।
अर्वद्भिर्यो हरिभिर्वाजिनीवसुरति विश्वा दुरिता पारिषद्धरी ॥ ८ ॥
स्तुवेव यस्य हरिणी विपेततुः शिप्रे वाजाय हरिणी दविध्वतः ।
प्र यत्कृते चमसे मर्मृजद्धरी पीत्वा मदस्य हर्यतस्यान्धसः ॥ ९ ॥
उत स्म सद्म हर्यतस्य पस्त्योरत्यो न वाजं हरिवाँ अचिक्रदत् ।
मही चिद्धि धिषणार्हर्यदोजसा बृहद्धयो दधिषे हर्यतश्चिदा ॥ १० ॥

अथ सप्तमो वर्गः ॥ ७ ॥

आ रोदसी हर्यमाणो महित्वा नव्यंनव्यं हर्यसि मन्म नु प्रियम् ।
प्र पस्त्यमसुर हर्यतं गोराविष्कृधि हरये सूर्याय ॥ ११ ॥
आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो जनानां रथे वहन्तु हरिशिप्रमिन्द्र ।
पिबा यथा प्रतिभृतस्य मध्वो हर्यन्यज्ञं सधमादे दशोणिम् ॥ १२ ॥
अपाः पूर्वेषां हरिवः सुतानामथो इदं सवनं केवलं ते ।
ममद्धि सोमं मधुमन्तमिन्द्र सत्रा वृषञ्जठर आ वृषस्व ॥ १३ ॥

[९७] सप्तनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—भिषगाथर्वणः ॥ देवता—ओषधीस्तुतिः ॥ छन्दः—१, २, ४-७, ११, १७ अनुष्टुप्; ३, ९, १२, २२, २३ निचृदनुष्टुप्; ८, १०, १३-१६, १८-२१ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा ।
मनै नु बभ्रूणामहं शतं धामानि सप्त च ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतं वो अम्ब धामानि सहस्त्रमुत वो रुहः ।
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत ॥ २ ॥
ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वाइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥ ३ ॥
ओषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरुप ब्रुवे ।
सनेयमश्वं गां वासं आत्मनं तवं पूरुष ॥ ४ ॥
अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

यत्रौषधीः समग्मत राजानः समिताविव ।
विप्रः स उच्यते भिषग्रक्षोहामीवचातनः ॥ ६ ॥
अश्वावतीं सोमावतीमूर्जयन्तीमुदोजसम् ।
आविवित्सि सर्वा ओषधीरस्मा अरिष्टतातये ॥ ७ ॥
उच्छुष्मा ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते ।
धनं सनिष्यन्तीनामात्मानं तवं पूरुष ॥ ८ ॥
इष्कृतिर्नाम वो माताथो यूयं स्थ निष्कृतीः ।
सीराः पतत्रिणीः स्थन यदामयति निष्कृथ ॥ ९ ॥
अति विश्वाः परिष्ठाः स्तेनइव व्रजमक्रमुः ।
ओषधीः प्राचुच्यवुर्यत्किं च तन्वोऽरपः ॥ १० ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

यदिमा वाजयन्नहमोषधीर्हस्त आदधे ।
आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा ॥ ११ ॥
यस्यौषधीः प्रसर्पथाङ्गमङ्गं परुष्परुः ।
ततो यक्ष्मं वि बाधध्व उग्रो मध्यमशीरिव ॥ १२ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साकं यक्ष्म प्र पत चाषेण किकिदीविना ।
साकं वातस्य ध्राज्या साकं नश्य निहाकया ॥ १३ ॥
अन्या वो अन्यामवत्वन्यान्यस्या उपावत ।
ताः सर्वीः संविदाना इदं मे प्रावता वचः ॥ १४ ॥
याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥ १५ ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

मुञ्चन्तु मा शपथ्या३दथो वरुण्यादुत ।
अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात् ॥ १६ ॥
अवपतन्तीरवदन्दिव ओषधयस्परि ।
यं जीवमश्नवामहै न स रिष्याति पूरुषः ॥ १७ ॥
या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः ।
तासां त्वमस्युत्तमारं कामाय शं हृदे ॥ १८ ॥
या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः पृथिवीमनु ।
बृहस्पतिप्रसूता अस्यै सं दत्त वीर्यम् ॥ १९ ॥
मा वो रिषत्खनिता यस्मै चाहं खनामि वः ।
द्विपच्चतुष्पदस्माकं सर्वमस्त्वनातुरम् ॥ २० ॥
याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः ।
सर्वीः संगत्य वीरुधोऽस्यै सं दत्त वीर्यम् ॥ २१ ॥
ओषधयः सं वदन्ते सोमेन सह राज्ञा ।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तं राजन्पारयामसि ॥ २२ ॥
त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा उपस्तयः ।
उपस्तिरस्तु सो३ऽस्माकं यो अस्माँ अभिदासति ॥ २३ ॥

[९८] अष्टनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—देवापिरार्ष्टिषेणः ॥ देवता—देवाः ॥ छन्दः—१, ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ६, ८, ११, १२ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, ५ त्रिष्टुप्; ४, १० विराट्त्रिष्टुप्; ९ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

बृहस्पते प्रति मे देवतामिहि मित्रो वा यद्वरुणो वासि पूषा।
आदित्यैर्वा यद्वसुभिर्मरुत्वान्त्स पर्जन्यं शन्तनवे वृषाय ॥ १ ॥
आ देवो दूतो अजिरश्चिकित्वान्त्वद्देवापे अभि मामगच्छत्।
प्रतीचीनः प्रतिः मामा ववृत्स्व दधामि ते द्युमतीं वाचमासन् ॥ २ ॥
अस्मे धेहि द्युमतीं वाचमासन्बृहस्पते अनमीवामिषिराम्।
यया वृष्टिं शन्तनवे वनाव दिवो द्रप्सो मधुमाँ आ विवेश ॥ ३ ॥
आ नो द्रप्सा मधुमन्तो विशन्त्विन्द्र देह्यधिरथं सहस्रम्।
नि षीद होत्रमृतुथा यजस्व देवान्देवापे हविषा सपर्य ॥ ४ ॥
आर्ष्टिषेणो होत्रमृषिर्निषीदन्देवापिर्देवसुमतिं चिकित्वान् ।
स उत्तरस्मादधरं समुद्रमपो दिव्या असृजद्वर्ष्या अभि ॥ ५ ॥
अस्मिन्त्समुद्रे अध्युत्तरस्मिन्नापो देवेभिर्निवृता अतिष्ठन् ।
ता अद्रवन्नार्ष्टिषेणेन सृष्टा देवापिना प्रेषिता मृक्षिणीषु ॥ ६ ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

यद्देवापिः शन्तनवे पुरोहितो होत्राय वृतः कृपयन्नदीधेत् ।
देवश्रुतं वृष्टिवनिं रराणो बृहस्पतिर्वाचमस्मा अयच्छत् ॥ ७ ॥
यं त्वा देवापिः शुशुचानो अग्न आर्ष्टिषेणो मनुष्यः समीधे।
विश्वेभिर्देवैरनुमद्यमानः प्र पर्जन्यमीरया वृष्टिमन्तम् ॥ ८ ॥
त्वां पूर्व ऋषयो गीर्भिरायन्त्वामध्वरेषु पुरुहूत विश्वे ।
सहस्राण्यधिरथान्यस्मे आ नो यज्ञं रोहिदश्वोप याहि ॥ ९ ॥
एतान्यग्ने नवतिर्नव त्वे आहुतान्यधिरथा सहस्रा ।
तेभिर्वर्धस्व तन्वः शूर पूर्वीर्दिवो नो वृष्टिमिषितो रिरीहि ॥ १० ॥
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा सं प्र यच्छ वृष्ण इन्द्राय भागम्।
विद्वान्पथ ऋतुशो देवयानान्प्यौलानं दिवि देवेषु धेहि ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्ने बाधस्व वि मृधो वि दुर्गहापामीवामप रक्षांसि सेध।
अस्मात्समुद्राद् बृहतो दिवो नोऽपां भूमानमुप नः सृजेह॥ १२॥

[९९] नवनवतितमं सूक्तम्

ऋषिः—वप्रो वैखानसः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ७, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ५, ९, १२ त्रिष्टुप्; ३, ६ विराट्त्रिष्टुप्; ४ आसुरीस्वराडार्चीनिचृत्त्रिष्टुप्; ८ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; १० पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चतुर्दशो वर्गः॥ १४॥

कं नश्चित्रमिषण्यसि चिकित्वान्पृथुग्मानं वाश्रं वावृधध्यै।
कत्तस्य दातु शवसो व्युष्टौ तक्षद्वज्रं वृत्रतुरमपिन्वत् ॥ १॥
स हि द्युता विद्युता वेति साम पृथुं योनिमसुरत्वा ससाद ।
स सनीळेभिः प्रसहानो अस्य भ्रातुर्न ऋते सप्तथस्य मायाः॥ २॥
स वाजं यातापदुष्पदा यन्त्स्वर्षाता परि षदत्सनिष्यन् ।
अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो घ्नञ्छिश्नदेवाँ अभि वर्पसा भूत्॥ ३॥
स यह्वयोरऽवनीर्गोष्ववर्वा जुहोति प्रधन्यासु सस्त्रिः ।
अपादो यत्र युज्यासोऽरथा द्रोण्यश्वास ईरते घृतं वाः ॥ ४॥
स रुद्रेभिरशस्तवार ऋभ्वा हित्वी गयमारेअवद्य आगात् ।
वप्रस्य मन्ये मिथुना विवव्री अन्नमभीत्यारोदयन्मुषायन् ॥ ५॥
स इद्दासं तुवीरवं पतिर्दन्षळक्षं त्रिशीर्षाणं दमन्यत् ।
अस्य त्रितो न्वोजसा वृधानो विपा वराहमयोअग्रया हन् ॥ ६॥

अत पञ्चदशो वर्गः॥ १५॥

स द्रुह्वणे मनुष ऊर्ध्वसान आ साविषदर्शसानाय शरुम् ।
स नृतमो नहुषोऽस्मत्सुजातः पुरोऽभिनदर्हन्दस्युहत्यै ॥ ७॥
सो अभ्रियो न यवस उदन्यन्क्षयाय गातुं विदन्नो अस्मे ।
उप यत्सीददिन्दुं शरीरैः श्येनोऽयोपाष्टिर्हन्ति दस्यून् ॥ ८॥
स व्राधतः शवसानेभिरस्य कुत्साय शुष्णं कृपणे परादात् ।
अयं कविर्मनयच्छस्यमानमत्कं यो अस्य सनितोत नृणाम्॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयं दशस्यन्नर्यभिरस्य दस्मो देवेभिर्वरुणो न मायी ।
अयं कनीन ऋतुपा अवेद्यमिमीतारुं यश्चतुष्पात् ॥ १० ॥
अस्य स्तोमेभिरौशिज ऋजिश्वा व्रजं दरयद् बृषभेण पिप्रोः ।
सुत्वा यद्यजतो दीदयद्गीः पुर इयानो अभि वर्पसा भूत् ॥ ११ ॥
एवा महो असुर वक्षथाय वम्रकः पड्भिरुप सर्पदिन्द्रम् ।
स इयानः करति स्वस्तिमस्मा इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः ॥ १२ ॥

नवमोऽनुवाकः [१००] शततमं सूक्तम्

ऋषिः—दुवस्युर्वान्दनः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१-३ जगती; ४, ५, ७, ११ निचृज्जगती; ६, ८, १० विराड्जगती; ९ पादनिचृज्जगती; १२ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-११ निषादः; १२ धैवतः ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १८ ॥

इन्द्र दृह्य मघवन्त्वावदिद्धुज इह स्तुतः सुतपा बोधि नो वृधे ।
देवेभिर्नः सविता प्रावतु श्रुतमा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ॥ १ ॥
भराय सु भरत भागमृत्वियं प्र वायवे शुचिपे क्रन्ददिष्टये ।
गौरस्य यः पयसः पीतिमानश आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ॥ २ ॥
आ नो देवः सविता साविषद्वयं ऋजूयते यजमानाय सुन्वते ।
यथा देवान्प्रतिभूषेम पाकवदा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ॥ ३ ॥
इन्द्रो अस्मे सुमना अस्तु विश्वहा राजा सोमः सुवितस्याध्येतुनः ।
यथायथा मित्रधितानि सन्दधुरा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ॥ ४ ॥
इन्द्र उक्थेन शवसा परुर्दधे बृहस्पते प्रतरीतास्यायुषः ।
यज्ञो मनुः प्रमतिर्नः पिता हि कमा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ॥ ५ ॥
इन्द्रस्य नु सुकृतं दैव्यं सहोऽग्निर्गृहे जरिता मेधिरः कविः ।
यज्ञश्च भूद्विदथे चारुरन्तम आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ॥ ६ ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

न वो गुहा चकृम भूरि दुष्कृतं नाविष्ट्यं वसवो देवहेळनम् ।
माकिर्नो देवा अनृतस्य वर्पस आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपामीवां सविता साविषन्न्य१ग्वरीय इदप सेधन्त्वद्रयः।
ग्रावा यत्र मधुषुदुच्यते बृहदा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे॥ ८॥
ऊर्ध्वो ग्रावा वसवोऽस्तु सोतरि विश्वा द्वेषांसि सनुतर्युयोत।
स नो देवः सविता पायुरीड्य आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे॥ ९॥
ऊर्जं गावो यवसे पीवो अत्तन ऋतस्य याः सदने कोशे अङ्ध्वे।
तनूरेव तन्वो अस्तु भेषजमा सर्वतातिमदितिं वृणीमहे॥ १०॥
क्रतुप्रावा जरिता शश्वतामव इन्द्र इद्भद्रा प्रमतिः सुतावताम्।
पूर्णमूर्धर्दिव्यं यस्य सिक्तय आ सर्वतातिमदितिं वृणीमहे॥ ११॥
चित्रस्तै भानुः क्रतुप्रा अभिष्टिः सन्ति स्पृधो जरणिप्रा अधृष्टाः।
रजिष्ठया रज्या पश्व आ गोस्तूर्षति पर्यग्रं दुवस्युः॥ १२॥

[१०१] एकोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—बुधः सौम्यः॥ देवता—विश्वे देवा ऋत्विजो वा॥ छन्दः—१, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ८ त्रिष्टुप्; ३, १० विराट्त्रिष्टुप्; ४, ६ गायत्री; ५ बृहती; ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९ विराड्जगती; १२ निचृज्जगती॥ स्वरः—१-३, ७, ८, १०, ११ धैवतः; ४, ६ षड्जः; ५ मध्यमः; ९, १२ निषादः॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

उद् बुध्यध्वं समनसः सखायः समग्निमिन्ध्वं बहवः सनीळाः।
दधिक्रामग्निमुषसं च देवीमिन्द्रावतोऽवसे नि ह्वये वः॥ १॥
मन्द्रा कृणुध्वं धिय आ तनुध्वं नावमरित्रपरणीं कृणुध्वम्।
इष्कृणुध्वमायुधारं कृणुध्वं प्राञ्चं यज्ञं प्र णयता सखायः॥ २॥
युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम्।
गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमेयात्॥ ३॥
सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक्। धीरा देवेषु सुम्नया॥ ४॥
निराहावान्कृणोतन सं वरत्रा दधातन।
सिञ्चामहा अवतमुद्रिणं वयं सुषेकमनुपक्षितम्॥ ५॥
इष्कृताहावमवतं सुवरत्रं सुषेचनम्। उद्रिणं सिञ्चे अक्षितम्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

प्रीणीताश्वान्हितं जयाथ स्वस्तिवाहं रथमित्कृणुध्वम् ।
द्रोणाहावमवतमश्मचक्रमंसत्रकोशं सिञ्चता नृपाणम् ॥ ७ ॥
व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणो वर्म सीव्यध्वं बहुला पृथूनि ।
पुरः कृणुध्वमायसीरधृष्टा मा वः सुस्रोच्चमसो दृंहता तम् ॥ ८ ॥
आ वो धियं यज्ञियां वर्त ऊतये देवा देवीं यजतां यज्ञियामिह ।
सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ॥ ९ ॥
आ तू षिञ्च हरिमीं द्रोरुपस्थे वाशीभिस्तक्षताश्मन्मयीभिः ।
परि ष्वजध्वं दश कक्ष्याभिरुभे धुरौ प्रति वह्निं युनक्त ॥ १० ॥
उभे धुरौ वह्निरापिब्दमानोऽन्तर्योनेव चरति द्विजानिः ।
वनस्पतिं वन आस्थापयध्वं नि षू दधिध्वमखनन्त उत्सम् ॥ ११ ॥
कपृन्नरः कपृथमुद्धातन चोदयत खुदत वाजसातये ।
निष्टिग्र्यः पुत्रमा च्यावयोतय इन्द्रं सबाध इह सोमपीतये ॥ १२ ॥

[१०२] द्व्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मुद्गलो भार्म्यश्वः ॥ देवता—द्रुघण इन्द्रो वा ॥ छन्दः—१ पादनिचृद्बृहती; २, ४, ५, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ३, १२ निचृद्बृहती; ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; ७, ८, १० विराट्त्रिष्टुप्; ११ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, १२ मध्यमः; २, ४-११ धैवतः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

प्र ते रथं मिथूकृतमिन्द्रोऽवतु धृष्णुया ।
अस्मिन्नाजौ पुरुहूत श्रवाय्ये धनभक्षेषु नोऽव ॥ १ ॥
उत्स्म वातो वहति वासो अस्या अधिरथं यदजयत्सहस्रम् ।
रथीरभून्मुद्गलानी गविष्टौ भरे कृतं व्यचेदिन्द्रसेना ॥ २ ॥
अन्तर्यच्छ जिघांसतो वज्रमिन्द्राभिदासतः ।
दासस्य वा मघवन्नार्यस्य वा सनुतर्यवया वधम् ॥ ३ ॥
उद्नो ह्रदमपिबज्जर्हृषाणः कूटं स्म तृंहदभिमातिमेति ।
प्र मुष्कभारः श्रव इच्छमानोऽजिरं बाहू अभरत्सिषासन् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यक्रन्दयन्नुपयन्त एनममेहयन्वृषभं मध्य आजेः ।
तेन सूभर्वं शतवत्सहस्त्रं गवां मुद्गलः प्रधने जिगाय ॥ ५ ॥
ककर्दवे वृषभो युक्त आसीदवावचीत्सारथिरस्य केशी ।
दुधेर्युक्तस्य द्रवतः सहानस ऋच्छन्ति ष्मा निष्पदो मुद्गलानीम् ॥ ६ ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

उत प्रधिमुदहन्नस्य विद्वानुपायुनग्वंसगमत्र शिक्षन् ।
इन्द्र उदावत्पतिमघ्न्यानामरंहत पद्याभिः ककुद्मान् ॥ ७ ॥
शुनमष्ट्राव्यचरत्कपर्दी वरत्रायां दार्वानह्यमानः ।
नृम्णानि कृण्वन्बहवे जनाय गाः पस्पशानस्तविषीरधत्त ॥ ८ ॥
इमं तं पश्य वृषभस्य युज्जं काष्ठाया मध्ये द्रुघणं शयानम् ।
येन जिगाय शतवत्सहस्त्रं गवां मुद्गलः पृतनाज्येषु ॥ ९ ॥
आरे अघा को न्वित्था ददर्श यं युज्जन्ति तम्वा स्थापयन्ति ।
नास्मै तृणं नोदकमा भरन्त्युत्तरो धुरो वहति प्रदेदिशत् ॥ १० ॥
परिवृक्तेव पतिविद्यमानट् पीप्याना कूचक्रेणेव सिञ्चन् ।
एषैष्या चिद्रथ्या जयेम सुमङ्गलं सिनवदस्तु सातम् ॥ ११ ॥
त्वं विश्वस्य जगतश्चक्षुरिन्द्रासि चक्षुषः ।
वृषा यदाजिं वृषणा सिषाससि चोदयन्वध्रिणा युजा ॥ १२ ॥

[१०३] त्र्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—१-३, ५-११ इन्द्रः; ४ बृहस्पतिः; १२ अप्वा; १३ इन्द्रो मरुतो वा ॥ छन्दः—१, ३-५, ९, त्रिष्टुप्; २ स्वराट्त्रिष्टुप्; ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; ७, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ८, १०, १२ विराट्त्रिष्टुप्; १३ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-१२ धैवतः; १३ गान्धारः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।
संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥
संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संस्त्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
संसृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥
बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ अपबाधमानः ।
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥ ४ ॥
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमान उग्रः।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥ ५ ॥
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
इमं सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ॥ ६ ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।
दुश्च्यवनः पृतनाषाळयुध्योऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु ॥ ७ ॥
इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ ८ ॥
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम्।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥ ९ ॥
उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मनांसि ।
उद् वृत्रहन्वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥ १० ॥
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु ॥ ११ ॥
अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥ १२ ॥
प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥ १३ ॥

[१०४] चतुरुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अष्टको वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ७, ८, ११ त्रिष्टुप्; ३, ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५, ६, १० निचृत्त्रिष्टुप्; ९ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

असावि सोमः पुरुहूत तुभ्यं हरिभ्यां यज्ञमुप याहि तूयम्।
तुभ्यं गिरो विप्रवीरा इयाना दधन्विर इन्द्र पिबा सुतस्य ॥ १ ॥
अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व।
मिमिक्षुर्यमद्रय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्थवाहः ॥ २ ॥
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयर्मि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्व तुभ्यम्।
इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः ॥ ३ ॥
ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिजः ऋतज्ञाः।
प्रजावदिन्द्र मनुषो दुरोणे तस्थुर्गृणन्तः सधमाद्यासः ॥ ४ ॥
प्रणीतिभिष्टे हर्यश्व सुष्टोः सुषुम्नस्य पुरुरुचो जनासः।
मंहिष्ठामूतिं वितिरे दधानाः स्तोतार इन्द्र तव सूनृताभिः ॥ ५ ॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः ॥ २५ ॥

उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि पीतये सुतस्य।
इन्द्र त्वा यज्ञः क्षममाणमानड् दाश्वाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ॥ ६ ॥
सहस्रवाजमभिमातिषाहं सुतेरणं मघवानं सुवृक्तिम् ।
उप भूषन्ति गिरो अप्रतीतमिन्द्रं नमस्या जरितुः पनन्त ॥ ७ ॥
सप्तापो देवीः सुरणा अमृक्ता याभिः सिन्धुमतर इन्द्र पूर्भित्।
नवतिं स्रोत्या नव च स्रवन्तीर्देवेभ्यो गातुं मनुषे च विन्दः ॥ ८ ॥
अपो महीरभिशस्तेरमुञ्चोऽ जागरास्वधि देव एकः ।
इन्द्र यास्त्वं वृत्रतूर्ये चकर्थ ताभिर्विश्वायुस्तन्वं पुपुष्याः ॥ ९ ॥
वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः सुशस्तिरुतापि धेना पुरुहूतमीट्टे ।
आर्दयद् वृत्रमकृणोदु लोकं ससाहे शक्रः पृतना अभिष्टिः ॥ १० ॥
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ॥ ११ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१०५] पञ्चोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कौत्सः सुमित्रो दुर्मित्रो वा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ पिपीलिकामध्योष्णिक्; २ आर्ची-स्वराडनुष्टुप्; ३ भुरिगुष्णिक्; ४, १० निचृदुष्णिक्; ५, ६, ८, ९ विराडुष्णिक्; ७ विराड् अनुष्टुप्; ११ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१, ३-६, ८-१० ऋषभः; २, ७ गान्धारः; ११ धैवतः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

कदा वसो स्तोत्रं हर्यंत आव शमशा रुधद्वाः ।
दीर्घं सुतं वाताप्याय ॥१॥
हरी यस्य सुयुजा विव्रता वेरर्वन्तानु शेपा ।
उभा रजी न केशिना पतिर्दन् ॥२॥
अप योरिन्द्रः पापज आ मर्तो न शश्रमाणो बिभीवान्।
शुभे यद्युयुजे तविषीवान् ॥३॥
सचायोरिन्द्रश्चर्कृष आँ उपानसः सपर्यन्.
नदयोर्विव्रतयोः शूर इन्द्रः ॥४॥
अधि यस्तस्थौ केशवन्ता व्यचस्वन्ता न पुष्ट्यै ।
वनोति शिप्राभ्यां शिप्रिणीवान् ॥५॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

प्रास्तौदृष्वौजा ऋष्वेभिस्ततक्ष शूरः शवसा ।
ऋभुर्न क्रतुभिर्मातरिश्वा ॥६॥
वज्रं यश्चक्रे सुहनाय दस्यवे हिरीमशो हिरीमान् ।
अरुतहनुरद्रुतं न रजः ॥७॥
अव नो वृजिना शिशीह्यूचा वनेमानृचः ।
नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे ॥८॥
ऊर्ध्वा यत्ते त्रेतिनी भूद्यज्ञस्य धूर्षु सद्मन् ।
सजूर्नावं स्वयशसं सचायोः ॥९॥
श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी भूच्छ्रिये दर्वी रेरेपाः ।
यया स्वे पात्रे सिञ्चस उत् ॥१०॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शतं वा यदसुर्य प्रति त्वा सुमित्र इत्थास्तौदुर्मित्र इत्थास्तौत् ।
आवो यद्स्युहत्यै कुत्सपुत्रं प्रावो यद्स्युहत्यै कुत्सवत्सम् ॥ ११ ॥

इत्यष्टमाष्टके पञ्चमोऽध्यायः ॥

अथाष्टमाष्टके षष्ठोऽध्यायः

[१०६] षडुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भूतांशः काश्यपः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१, ३, ७ त्रिष्टुप्; २, ४, ८-११ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ६ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

उभा उ नूनं तदिदर्थयेथे वि तन्वाथे धियो वस्त्रापसेव ।
सध्रीचीना यातवे प्रेमजीगः सुदिनेव पृक्ष आ तंसयेथे ॥ १ ॥
उष्टारेव फर्वरेषु श्रयेथे प्रायोगेव श्वात्र्या शासुरेथः ।
दूतेव हि ष्ठो यशसा जनेषु माप स्थातं महिषेवावपानात् ॥ २ ॥
साकंयुजा शकुनस्येव पक्षा पश्वेव चित्रा यजुरा गमिष्टम् ।
अग्निरिव देवयोर्दीदिवांसा परिज्मानेव यजथः पुरुत्रा ॥ ३ ॥
आपी वो अस्मे पितरेव पुत्रोग्रेव रुचा नृपतीव तुर्वै ।
इर्येव पुष्ट्यै किरणेव भुज्यै श्रुष्टीवानेव हवमा गमिष्टम् ॥ ४ ॥
वंसगेव पूषर्यी शिम्बाता मित्रेव ऋता शतरा शातपन्ता ।
वाजेवोच्चा वयसा घर्म्येष्ठा मेषेवेषा सपर्या३ पुरीषा ॥ ५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका ।
उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु ॥ ६ ॥
पत्रेव चर्चरं जारं मरायु क्षद्मेवार्थेषु तर्तरीथ उग्रा ।
ऋभू नापत्खरमत्रा खरज्रुर्वायुर्न पर्फरत्क्षयद्रयीणाम् ॥ ७ ॥
घर्मेव मधु जठरे सनेरू भगेविता तुर्फरी फारिवारम् ।
पतरेव चचरा चन्द्रनिर्णिङ् मनत्रङ्गा मनन्या३ न जग्मी ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बृहन्तेव गम्भरेषु प्रतिष्ठां पादेव गाधं तरते विदाथः ।
कर्णेव शासुरनु हि स्मराथोऽश्वेव नो भजतं चित्रमप्नः ॥ ९ ॥
आरङ्गरेव मध्वरेयेथे सारघेव गवि नीचीनबारे ।
कीनारेव स्वेदमासिष्वदाना क्षामेवोर्जा सूयवसात्सचेथे ॥ १० ॥
ऋध्याम स्तोमं सनुयाम वाजमा नो मन्त्रं सरथेहोप यातम् ।
यशो न पक्वं मधु गोष्वन्तरा भूतांशो अश्विनोः काममप्राः ॥ ११ ॥

[१०७] सप्तोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—दिव्यो दक्षिणा वा प्राजापत्या ॥ देवता—दक्षिणा तद्दातारो वा ॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप्; २, ३, ६, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ निचृज्जगती; ८, १० पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-११ धैवतः; ४ निषादः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

आविरभून्महि माघोनमेषां विश्वं जीवं तमसो निरमोचि ।
महि ज्योतिः पितृभिर्दत्तमागादुरुः पन्था दक्षिणाया अदर्शि ॥ १ ॥
उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्वदाः सह ते सूर्येण ।
हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्र तिरन्त आयुः ॥ २ ॥
दैवी पूर्तिर्दक्षिणा देवयज्या न कवारिभ्यो नहि ते पृणन्ति ।
अथा नरः प्रयतदक्षिणासोऽवद्यभिया बहवः पृणन्ति ॥ ३ ॥
शतधारं वायुमर्कं स्वर्विदं नृचक्षसस्ते अभि चक्षते हविः ।
ये पृणन्ति प्र च यच्छन्ति संगमे ते दक्षिणां दुहेत सप्तमातरम् ॥ ४ ॥
दक्षिणावान्प्रथमो हूत एति दक्षिणावान्ग्रामणीरग्रमेति ।
तमेव मन्ये नृपतिं जनानां यः प्रथमो दक्षिणामाविवाय ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

तमेव ऋषिं तमु ब्रह्माणमाहुर्यज्ञन्यं सामगामुक्थशासम् ।
स शुक्रस्य तन्वो वेद तिस्रो यः प्रथमो दक्षिणया रराध ॥ ६ ॥
दक्षिणाश्वं दक्षिणा गां ददाति दक्षिणा चन्द्रमुत यद्धिरण्यम् ।
दक्षिणान्नं वनुते यो न आत्मा दक्षिणां वर्म कृणुते विजानन् ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न भोजा मम्रुर्न न्यर्थमीयुर्न रिष्यन्ति न व्यथन्ते ह भोजाः।
इदं यद्विश्वं भुवनं स्वश्चैतत्सर्वं दक्षिणैभ्यो ददाति॥ ८॥
भोजा जिग्युः सुरभिं योनिमग्रे भोजा जिग्युर्वध्वं१ या सुवासाः।
भोजा जिग्युरन्तःपेयं सुरायां भोजा जिग्युर्ये अहूताः प्रयन्ति॥ ९॥
भोजायाश्वं सं मृजन्त्याशुं भोजायास्ते कन्या३ शुम्भमाना।
भोजस्येदं पुष्करिणीव वेश्म परिष्कृतं देवमानेव चित्रम्॥ १०॥
भोजमश्वाः सुष्ठुवाहो वहन्ति सुवृद्रथो वर्तते दक्षिणायाः।
भोजं देवासोऽवता भरेषु भोजः शत्रून्त्समनीकेषु जेता॥ ११॥

[१०८] अष्टोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१, ३, ५, ७, ९ पणयोऽसुराः; २, ४, ६, ८, १०, ११ सरमा देवशुनी॥ देवता—१, ३, ५, ७, ९ सरमा; २, ४, ६, ८, १०, ११ पणयः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, १० त्रिष्टुप्; ३, ४, ५, ७, ८, ९, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् दूरे ह्यध्वा जगुरिः पराचैः।
कास्मेहितिः का परितक्म्यासीत्कथं रसाया अतरः पयांसि॥ १॥
इन्द्रस्य दूतीरिषिता चरामि महः इच्छन्ती पणयो निधीन्वः।
अतिष्कदो भियसा तन्न आवत्तथा रसाया अतरं पयांसि॥ २॥
कीदृङ्ङिन्द्रः सरमे का दृशीका यस्येदं दूतीरसरः पराकात्।
आ च गच्छान्मित्रमेना दधामाथा गवां गोपतिर्नो भवाति॥ ३॥
नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स यस्येदं दूतीरसरं पराकात्।
न तं गूहन्ति स्रवतो गभीरा हता इन्द्रेण पणयः शयध्वे॥ ४॥
इमा गावः सरमे या ऐच्छः परि दिवो अन्तान्त्सुभगे पतन्ती।
कस्त एना अव सृजादयुध्व्युतास्माकमायुधा सन्ति तिग्मा॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

असेन्या वः पणयो वचांस्यनिषव्यास्तन्वः सन्तु पापीः।
अधृष्टो व एतवा अस्तु पन्था बृहस्पतिर्व उभया न मृळात्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्यृष्टः।
रक्षन्ति तं पणयो ये सुगोपा रेकु पदमलकमा जगन्थ॥ ७॥
एह गमन्नृषयः सोमशिता अयास्यो अङ्गिरसो नवग्वाः।
त एतमूर्वं वि भजन्त गोनामथैतद्वचः पणयो वमन्नित्॥ ८॥
एवा च त्वं सरम आजगन्थ प्रबाधिता सहसा दैव्येन।
स्वसारं त्वा कृणवै मा पुनर्गा अप ते गवां सुभगे भजाम॥ ९॥
नाहं वेद भ्रातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गिरसश्च घोराः।
गोकामा मे अच्छदयन्यदायमपात इत पणयो वरीयः॥ १०॥
दूरमित पणयो वरीय उद्गावो यन्तु मिनतीर्ऋतेन।
बृहस्पतिर्या अविन्दन्निगूळ्हाः सोमो ग्रावाण ऋषयश्च विप्राः॥ ११॥

[१०९] नवोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जुहूर्ब्रह्मजाया, ऊर्ध्वनाभा वा ब्राह्मः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४, ५ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ६, ७ अनुष्टुप्॥ स्वरः—१-५ धैवतः; ६, ७ गान्धारः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

तेऽवदन्प्रथमा ब्रह्मकिल्बिषेऽकूपारः सलिलो मातरिश्वा।
वीळुहरास्तप उग्रो मयोभूरापो देवीः प्रथमजा ऋतेन॥ १॥
सोमो राजा प्रथमो ब्रह्मजायां पुनः प्रायच्छदहृणीयमानः।
अन्वर्तिता वरुणो मित्र आसीदग्निर्होता हस्तगृह्या निनाय॥ २॥
हस्तेनैव ग्राह्य आधिरस्या ब्रह्मजायेयमिति चेदवोचन्।
न दूताय प्रह्ये तस्थ एषा तथा राष्ट्रं गुपितं क्षत्रियस्य॥ ३॥
देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे सप्तऋषयस्तपसे ये निषेदुः।
भीमा जाया ब्राह्मणस्योपनीता दुर्धां दधाति परमे व्योमन्॥ ४॥
ब्रह्मचारी चरति वेविषद्विषः स देवानां भवत्येकमङ्गम्।
तेन जायामन्वविन्दद् बृहस्पतिः सोमेन नीतां जुह्वं न देवाः॥ ५॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनर्वै देवा अददुः पुनर्मनुष्या उत ।
राजानः सत्यं कृण्वाना ब्रह्मजायां पुनर्ददुः ॥ ६ ॥
पुनर्दाय ब्रह्मजायां कृत्वी देवैर्निकिल्बिषम् ।
ऊर्जं पृथिव्या भक्त्वायोरुगायमुपासते ॥ ७ ॥

[११०] दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जमदग्नी रामो वा ॥ देवता—आप्रियः ॥ छन्दः—१, २, ५, १०, ११ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ आर्चीत्रिष्टुप्; ४, ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ६, ७, ९ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः ।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः ॥ १ ॥
तनूनपात्पथ ऋतस्य यानान्मध्वा समञ्जन्त्स्वदया सुजिह्व ।
मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन्देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः ॥ २ ॥
आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्चा याह्यग्ने वसुभिः सजोषाः ।
त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान्यक्षीषितो यजीयान् ॥ ३ ॥
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम् ।
व्युं प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम् ॥ ४ ॥
व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः ।
देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः ॥ ५ ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ ।
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने ॥ ६ ॥
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै ।
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता ॥ ७ ॥
आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विळा मनुष्वदिह चेतयन्ती ।
तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु ॥ ८ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंशद्भुवनानि विश्वा।
तमद्य होतरिषितो यजीयान्देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्॥ ९॥
उपावसृज त्मन्या समञ्जन्देवानां पाथ ऋतुथा हवींषि।
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन॥ १०॥
सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।
अस्य होतुः प्रदिशयृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः॥ ११॥

[१११] एकादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अष्टादंष्ट्रो वैरूपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २, ४ त्रिष्टुप्; ३, ६, १० विराट्त्रिष्टुप्; ५, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ दशमो वर्गः॥ १०॥

मनीषिणः प्र भरध्वं मनीषां यथायथा मतयः सन्ति नृणाम्।
इन्द्रं सत्यैरेरयामा कृतेभिः स हि वीरो गिर्वणस्युर्विदानः॥ १॥
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत्सं गार्ष्टेयो वृषभो गोभिरानट्।
उदतिष्ठत्तविषेणा रवेण महान्ति चित्सं विव्याचा रजांसि॥ २॥
इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य वेद स हि जिष्णुः पथिकृत्सूर्याय।
आन्मेनां कृण्वन्नच्युतो भुवद्गोः पतिर्दिवः सनजा अप्रतीतः॥ ३॥
इन्द्रो महा महतो अर्णवस्य व्रतामिनादङ्गिरोभिर्गृणानः।
पुरूणि चिन्नि ततानारजांसि दाधार यो धरुणं सत्यताता॥ ४॥
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं पृथिव्या विश्वा वेद सवना हन्ति शुष्णम्।
महीं चिद् द्यामातनोत्सूर्येण चास्कम्भ चित्कम्भनेन स्कभीयान्॥ ५॥

अथ एकादशो वर्गः॥ ११॥

वज्रेण हि वृत्रहा वृत्रमस्तरदेवस्य शूशुवानस्य मायाः।
वि धृष्णो अत्र धृषता जघन्थाथाभवो मघवन्बाह्वोजाः॥ ६॥
सचन्त यदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो रामविन्दन्।
आ यन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो नकिरद्धा नु वेद॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरं किल प्रथमा जग्मुरासामिन्द्रस्य याः प्रसवे सस्रुरापः।
क्व स्विदग्रं क्व बुध्न आसामापो मध्यं क्व वो नूनमन्तः॥ ८॥
सृजः सिन्धूँरहिना जग्रसानाँ आदिदेताः प्र विविज्रे जवेन।
मुमुक्षमाणा उत या मुमुच्रेऽधेदेता न रमन्ते नितिक्ताः॥ ९॥
सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन्त्सनाज्जार आरितः पूर्भिदासाम्।
अस्तमा ते पार्थिवा वसून्यस्मे जग्मुः सूनृता इन्द्र पूर्वीः॥ १०॥

[११२] द्वादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—नभःप्रभेदनो वैरूपः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ७, ८ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४-६, ९, १० निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ द्वादशो वर्गः॥ १२॥

इन्द्र पिब प्रतिकामं सुतस्य प्रातःसावस्तव हि पूर्वपीतिः।
हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रूनुक्थेभिष्टे वीर्या३ प्र ब्रवाम॥ १॥
यस्ते रथो मनसो जवीयानेन्द्र तेन सोमपेयाय याहि।
तूयमा ते हरयः प्र द्रवन्तु येभिर्यासि वृषभिर्मन्दमानः॥ २॥
हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य श्रेष्ठै रूपैस्तन्वं स्पर्शयस्व।
अस्माभिरिन्द्र सखिभिर्हुवानः सध्रीचीनो मादयस्वा निषद्य॥ ३॥
यस्य त्यत्ते महिमानं मदेष्विमे मही रोदसी नाविविक्ताम्।
तदोक आ हरिभिरिन्द्र युक्तैः प्रियेभिर्याहि प्रियमन्नमच्छ॥ ४॥
यस्य शश्वत्पपिवाँ इन्द्र शत्रूननानुकृत्या रण्या चकर्थ।
स ते पुरन्धिं तविषीमियर्ति स ते मदाय सुत इन्द्र सोमः॥ ५॥

अथ त्रयोदशो वर्गः॥ १३॥

इदं ते पात्रं सनवित्तमिन्द्र पिबा सोममेना शतक्रतो।
पूर्णं आहावो मदिरस्य मध्वो यं विश्व इदभिहर्यन्ति देवाः॥ ६॥
वि हि त्वामिन्द्र पुरुधा जनासो हितप्रयसो वृषभ ह्वयन्ते।
अस्माकं ते मधुमत्तमानीमा भुवन्त्सवना तेषु हर्य॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र त इन्द्र पूर्व्याणि प्र नूनं वीर्या वोचं प्रथमा कृतानि।
सतीनमन्युरश्रथायो अद्रिं सुवेदनामकृणोर्ब्रह्मणे गाम् ॥ ८ ॥
नि षु सीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम्।
न ऋते त्वत्क्रियते किं चनारे महामर्कं मघवञ्चित्रमर्च ॥ ९ ॥
अभिख्या नो मघवन्नाधमानान्त्सखे बोधि वसुपते सखीनाम्।
रणं कृधि रणकृत्सत्यशुष्माभक्ते चिदा भजा राये अस्मान् ॥ १० ॥

दशमोऽनुवाकः [११३] त्रयोदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शतप्रभेदनो वैरूपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ५ जगती; ३ निचृज्जगती; ४ पादनिचृज्जगती; ६, ९ विराड्जगती; ७, ८ आर्चीस्वराड्जगती; १० पाद-निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-९ निषादः; १० धैवतः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

तमस्य द्यावापृथिवी सचेतसा विश्वेभिर्देवैरनु शुष्ममावताम्।
यदैत्कृण्वानो महिमानमिन्द्रियं पीत्वी सोमस्य क्रतुमाँ अवर्धत ॥ १ ॥
तमस्य विष्णुर्महिमानमोजसांशुं दधन्वान्मधुनो वि रप्शते।
देवेभिरिन्द्रो मघवा सयावभिर्वृत्रं जघन्वाँ अभवद्वरेण्यः ॥ २ ॥
वृत्रेण यदहिना बिभ्रदायुधा समस्थिथा युधये शंसमाविदे।
विश्वे ते अत्र मरुतः सह त्मनावर्धन्नुग्र महिमानमिन्द्रियम् ॥ ३ ॥
जज्ञान एव व्यबाधत स्पृधः प्रापश्यद्वीरो अभि पौंस्यं रणम्।
अवृश्चदद्रिमव सस्यदः सृजदस्तभ्नान्नाकं स्वपस्यया पृथुम् ॥ ४ ॥
आदिन्द्रः सत्रा तविषीरपत्यत वरीयो द्यावापृथिवी अबाधत।
अवाभरद् धृषितो वज्रमायसं शेवं मित्राय वरुणाय दाशुषे ॥ ५ ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ ५ ॥

इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो विरप्शिन ऋघायतो अरंहयन्त मन्यवे।
वृत्रं यदुग्रो व्यवृश्चदोजसापो बिभ्रतं तमसा परीवृतम् ॥ ६ ॥
या वीर्याणि प्रथमानि कर्त्वी महित्वेभिर्यतमानौ समीयतुः।
ध्वान्तं तमोऽव दध्वसे हत इन्द्रो मह्ना पूर्वहूतावपत्यत ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वे देवासो अध वृष्ण्यानि तेऽवर्धयन्त्सोमवत्या वचस्यया।
रुद्धं वृत्रमहिमिन्द्रस्य हन्मनाग्निर्न जम्भैस्तृष्वन्नमावयत्॥ ८॥
भूरि दक्षैभिर्वचनेभिर्ऋक्वभिः सख्येभिः सख्यानि प्र वोचत।
इन्द्रो धुनिं च चुमुरिं च दम्भयञ्छ्रुद्धामनस्या शृणुते दभीतये॥ ९॥
त्वं पुरुण्या भरा स्वश्व्या येभिर्मंसै निवचनानि शंसन्।
सुगेभिर्विश्वा दुरिता तरेम विदो षु णो उर्विया गाधमद्य॥ १०॥

[११४] चतुर्दशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सधिर्वैरूपो घर्मो वा तापसः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ५, ७ त्रिष्टुप्; २, ३, ६ भुरिक्त्रिष्टुप्; ४ जगती; ८, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; १० पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-३, ५-१० धैवतः; ४ निषादः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

घर्मा समन्ता त्रिवृतं व्यापतुस्तयोर्जुष्टिं मातरिश्वा जगाम।
दिवस्पयो दिधिषाणा अवेषन्विदुर्देवाः सहसामानमर्कम्॥ १॥
तिस्रो देष्ट्राय निर्ऋतीरुपासते दीर्घश्रुतो वि हि जानन्ति वह्नयः।
तासां नि चिक्युः कवयो निदानं परेषु या गुह्येषु व्रतेषु॥ २॥
चतुष्कपर्दा युवतिः सुपेशा घृतप्रतीका वयुनानि वस्ते।
तस्यां सुपर्णा वृषणा नि षेदतुर्यत्र देवा दधिरे भागधेयम्॥ ३॥
एकः सुपर्णः स समुद्रमा विवेश स इदं विश्वं भुवनं वि चष्टे।
तं पाकेन मनसापश्यमन्तितस्तं माता रेळिह स उ रेळिह मातरम्॥ ४॥
सुपर्णं विप्राः कवयो वचोभिरेकं सन्तं बहुधा कल्पयन्ति।
छन्दांसि च दधतो अध्वरेषु ग्रहान्त्सोमस्य मिमते द्वादश॥ ५॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

षट्त्रिंशाँश्च चतुरः कल्पयन्तश्छन्दांसि च दधत आद्वादशम्।
यज्ञं विमाय कवयो मनीष ऋक्सामाभ्यां प्र रथं वर्तयन्ति॥ ६॥
चतुर्दशान्ये महिमानो अस्य तं धीरा वाचा प्र णयन्ति सप्त।
आप्रानं तीर्थं क इह प्र वोचद्येन पथा प्रपिबन्ते सुतस्य॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहस्रधा पञ्चदशान्युक्था यावद् द्यावापृथिवी तावदित्तत्।
सहस्रधा महिमानः सहस्रं यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्॥ ८॥
कश्छन्दसां योगमा वेद धीरः को धिष्ण्यां प्रति वाचं पपाद।
कमृत्विजामष्टमं शूरमाहुर्हरी इन्द्रस्य नि चिकाय कः स्वित्॥ ९॥
भूम्या अन्तं पर्येके चरन्ति रथस्य धूर्षु युक्तासो अस्थुः।
श्रमस्य दायं वि भजन्त्येभ्यो यदा यमो भवति हर्म्ये हितः॥ १०॥

[११५] पञ्चदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, २, ४, ७ विराड्जगती; ३ जगती; ५ आर्चीभुरिग्जगती; ६ निचृज्जगती; ८ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ९ पादनिचृच्छक्वरी॥
स्वरः—१-७ निषादः; ८, ९ धैवतः॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावप्येति धातवे।
अनूधा यदि जीजनदधा च नु ववक्ष सद्यो महि दूत्यं१ चरन्॥ १॥
अग्निर्ह नाम धायि दन्नपस्तमः सं यो वना युवते भस्मना दता।
अभिप्रमुरा जुह्वा स्वध्वर इनो न प्रोथमानो यवसे वृषा॥ २॥
तं वो विं न द्रुषदं देवमन्धस इन्दुं प्रोथन्तं प्रवपन्तमर्णवम्।
आसा वह्निं न शोचिषा विरप्शिनं महिव्रतं न सरजन्तमध्वनः॥ ३॥
वि यस्य ते जरयसानस्यजर धक्षोर्न वाताः परि सन्त्यच्युताः।
आ रण्वासो युयुधयो न सत्वनं त्रितं नशन्त प्र शिषन्त इष्टये॥ ४॥
स इदग्निः कण्वतमः कण्वसखार्यः परस्यान्तरस्य तरुषः।
अग्निः पातु गृणतो अग्निः सूरीनग्निर्ददातु तेषामवो नः॥ ५॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

वाजिन्तमाय सह्यसे सुपित्र्य तृषु च्यवानो अनु जातवेदसे।
अनुद्रे चिद्यो धृषता वरं सते महिन्तमाय धन्वनेदविष्यते॥ ६॥
एवाग्निर्मर्तैः सह सूरिभिर्वसु ष्टवे सहसः सूनरो नृभिः।
मित्रासो न ये सुधिता ऋतायवो द्यावो न द्युम्नैरभि सन्ति मानुषान्॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्जो नपात्सहसावन्निति त्वोपस्तुतस्य वन्दते वृषा वाक्।
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः॥ ८॥
इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य पुत्रा उपस्तुतास ऋषयोऽवोचन्।
ताँश्च पाहि गृणतश्च सूरीन्वषड्वषळित्यूर्ध्वासो अनक्षन्नमो
नम इत्यूर्ध्वासो अनक्षन् ॥ ९॥

[११६] षोडशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्नियुतः स्थौरोग्नियूपो वा स्थौरः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ८, ९ त्रिष्टुप्; २ पादनिचृत् त्रिष्टुप्; ३, ४ निचृत्त्रिष्टुप्; ५, ७ विराट्त्रिष्टुप्; ६ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥
अथ विंशो वर्गः॥ २०॥

पिबा सोमं महत इन्द्रियाय पिबा वृत्राय हन्तवे शविष्ठ ।
पिब राये शवसे हूयमानः पिब मध्वस्तृपदिन्द्रा वृषस्व॥ १॥
अस्य पिब क्षुमतः प्रस्थितस्येन्द्र सोमस्य वरमा सुतस्य।
स्वस्तिदा मनसा मादयस्वावार्चीनो रेवते सौभगाय ॥ २॥
ममत्तु त्वा दिव्यः सोम इन्द्र ममत्तु यः सूयते पार्थिवेषु।
ममत्तु येन वरिवश्चकर्थ ममत्तु येन निरिणासि शत्रून्॥ ३॥
आ द्विबर्ही अमिनो यात्विन्द्रो वृषा हरिभ्यां परिषिक्तमन्धः।
गव्या सुतस्य प्रभृतस्य मध्वः सत्रा खेदामरुशहा वृषस्व॥ ४॥
नि तिग्मानि भ्राशयन्भ्राश्यान्यव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम्।
उग्राय ते सहो बलं ददामि प्रतीत्या शत्रून्विगदेषु वृश्च॥ ५॥
अथ एकविंशो वर्गः॥ २१॥

व्यार्य इन्द्र तनुहि श्रवांस्योजः स्थिरेव धन्वनोऽभिमातीः।
अस्मद्र्यग्वावृधानः सहोभिरनिभृष्टस्तन्वं वावृधस्व ॥ ६॥
इदं हविर्मघवन्तुभ्यं रातं प्रति समुाळहृणानो गृभाय।
तुभ्यं सुतो मघवन्तुभ्यं पक्वोऽद्रीन्द्र पिब च प्रस्थितस्य॥ ७॥
अब्द्रीदिन्द्र प्रस्थितेमा हवींषि चनो दधिष्व पचतोत सोमम्।
प्रयस्वन्तः प्रति हर्यामसि त्वा सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः॥ ८॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्यामियर्मि सिन्धाविव प्रेरयं नावमर्कैः।
अर्याइव परि चरन्ति देवा ये अस्मभ्यं धनदा उद्भिदश्च॥ ९॥

[११७] सप्तदशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भिक्षुः॥ देवता—धनान्नदानप्रशंसा॥ छन्दः—१ निचृज्जगती; २ पादनिचृज्जगती; ३, ७, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, ६ त्रिष्टुप्; ५ विराट्त्रिष्टुप्; ८ भुरिक्त्रिष्टुप्॥
स्वरः—१-२ निषादः; ३-९ धैवतः॥

अथ द्वाविंशो वर्गः॥ २२॥

न वा उ देवाः क्षुधमिद्वधं ददुरुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोप दस्यत्युतापृणन्मर्डितारं न विन्दते॥ १॥
य आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्नवान्त्सन्रफिताय जग्मुषे।
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित्स मर्डितारं न विन्दते॥ २॥
स इद्भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम्॥ ३॥
न स सखा यो न ददाति सख्ये सचाभुवे सचमानाय पित्वः।
अपास्मात्प्रेयान्न तदोको अस्ति पृणन्तमन्यमरणं चिदिच्छेत्॥ ४॥
पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त राय॥ ५॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः॥ २३॥

मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य।
नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी॥ ६॥
कृषन्नित्फाल आशितं कृणोति यन्नध्वानमप वृङ्क्ते चरित्रैः।
वदन्ब्रह्मावदतो वनीयान्पृणन्नापिरपृणन्तमभि ष्यात्॥ ७॥
एकपाद्भूयो द्विपदो वि चक्रमे द्विपात्त्रिपादमभ्येति पश्चात्।
चतुष्पादेति द्विपदामभिस्वरे संपश्यन्पङ्क्तीरुपतिष्ठमानः॥ ८॥
समौ चिद्धस्तौ न समं विविष्टः संमातरा चिन्न समं दुहाते।
यमयोश्चित्न समा वीर्याणि ज्ञाती चित्सन्तौ न समं पृणीतः॥ ९॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[११८] अष्टादशोत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उरुक्षय आमहीयवः॥ देवता—अग्नी रक्षोहा॥ छन्दः—१ पिपीलिका-मध्यागायत्री; २, ५ निचृद्गायत्री; ३, ८ विराड्गायत्री; ४, ९ गायत्री; ६, ७ पादनिचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः॥ २४॥

अग्ने हंसि न्यत्रिणं दीद्यन्मर्त्येष्वा। स्वे क्षये शुचिव्रत॥ १॥
उत्तिष्ठसि स्वाहुतो घृतानि प्रति मोदसे। यत्त्वा स्रुचः समस्थिरन्॥ २॥
स आहुतो वि रोचतेऽग्निरीळेन्यो गिरा। स्रुचा प्रतीकमज्यते॥ ३॥
घृतेनाग्निः समज्यते मधुप्रतीक आहुतः। रोचमानो विभावसुः॥ ४॥
जरमाणः समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन। तं त्वा हवन्त मर्त्याः॥ ५॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

तं मर्ता अमर्त्यं घृतेनाग्निं सपर्यत। अदाभ्यं गृहपतिम्॥ ६॥
अदाभ्येन शोचिषाग्ने रक्षस्त्वं दह। गोपा ऋतस्य दीदिहि॥ ७॥
स त्वमग्ने प्रतीकेन प्रत्योष यातुधान्यः। उरुक्षयेषु दीद्यत्॥ ८॥
तं त्वा गीर्भिरुरुक्षयो हव्यवाहं समीधिरे। यजिष्ठं मानुषे जने॥ ९॥

[११९] एकोनविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—लब ऐन्द्रः॥ देवता—आत्मस्तुतिः॥ छन्दः—१-५, ७-१० गायत्री; ६, १२, १३ निचृद्गायत्री; ११ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

इति वा इति मे मनो गामश्वं सनुयामिति। कुवित्सोमस्यापामिति॥ १॥
प्र वातइव दोधत उन्मा पीता अयंसत। कुवित्सोमस्यापामिति॥ २॥
उन्मा पीता अयंसत रथमश्वाइवाशवः। कुवित्सोमस्यापामिति॥ ३॥
उप मा मतिरस्थित वाश्रा पुत्रमिव प्रियम्। कुवित्सोमस्यापामिति॥ ४॥
अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम्। कुवित्सोमस्यापामिति॥ ५॥
नहि मे अक्षिपच्यनाच्छान्त्सुः पञ्च कृष्टयः। कुवित्सोमस्यापामिति॥ ६॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥ २७॥

नहि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन प्रति। कुवित्सोमस्यापामिति॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि द्यां महिना भुवमभी३मां पृथिवीं महीम्। कुवित्सोमस्यापामिति॥ ८॥
हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा। कुवित्सोमस्यापामिति॥ ९॥
ओषमित्पृथिवीमहं जङ्घनानीह वेह वा। कुवित्सोमस्यापामिति॥ १०॥
दिवि मे अन्यः पक्षो३ऽधो अन्यमचीकृषम्। कुवित्सोमस्यापामिति॥ ११॥
अहमस्मि महामहो३ऽभिनभ्यमुदीषितः। कुवित्सोमस्यापामिति॥ १२॥
गृहो याम्यरंकृतो देवेभ्यो हव्यवाहनः। कुवित्सोमस्यापामिति॥ १३॥

इत्यष्टमाष्टके षष्ठोऽध्यायः॥

अथाष्टमाष्टके सप्तमोऽध्यायः

[१२०] विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—बृहद्दिव आथर्वणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्; २, ३, ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ७, ८ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ प्रथमो वर्गः॥ १॥

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः॥ १॥
वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति।
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु॥ २॥
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः॥ ३॥
इति चिद्धि त्वा धना जयन्तं मदेमदे अनुमदन्ति विप्राः।
ओजीयो धृष्णो स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन्यातुधाना दुरेवाः॥ ४॥
त्वया वयं शाशदमहे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि।
चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि॥ ५॥

अथ द्वितीयो वर्गः॥ २॥

स्तुषेय्यं पुरुवर्पसमृभ्वमिनतममाप्त्यमाप्त्यानाम्।
आ दर्षते शवसा सप्त दानून्प्र साक्षते प्रतिमानानि भूरि॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि तद्दधिषेऽवरं परं च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे ।
आ मातरा स्थापयसे जिगत्नू अत इनोषि कर्वरा पुरूणि ॥ ७ ॥
इमा ब्रह्म बृहद्दिवो विवक्तीन्द्राय शूषमंग्रियः स्वर्षाः ।
महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजो दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ॥ ८ ॥
एवा महान्बृहद्दिवो अथर्वावोचत्स्वां तन्वं१मिन्द्रमेव ।
स्वसारो मातरिभ्वरीररिप्रा हिन्वन्ति च शवसा वर्धयन्ति च ॥ ९ ॥

[१२१] एकविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—हिरण्यगर्भः प्राजापत्यः ॥ देवता—कः ॥ छन्दः—१, ३, ६, ८, ९ त्रिष्टुप्; २, ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ४, १० विराट्त्रिष्टुप्; ७ स्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ १ ॥
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ २ ॥
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ३ ॥
यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः ।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ४ ॥
येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं येन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ५ ॥

अथ चतुर्थो वर्गः ॥ ४ ॥

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने ।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ६ ॥
आपो ह यद् बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम् ।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्।
यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ८॥
मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान।
यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ९॥
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥ १०॥

[१२२] द्वाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—चित्रमहा वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ जगती; ३, ८ पादनिचृज्जगती; ४, ६ निचृज्जगती; ५ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ आर्चीस्वराड्जगती॥ स्वरः—१, ५ धैवतः; २-४, ६-८ निषादः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

वसुं न चित्रमहसं गृणीषे वामं शेवमतिथिमद्विषेण्यम्।
स रासते शुरुधो विश्वधायसोऽग्निर्होता गृहपतिः सुवीर्यम्॥ १॥
जुषाणो अग्ने प्रति हर्य मे वचो विश्वानि विद्वान्वयुनानि सुक्रतो।
घृतनिर्णिग्ब्रह्मणे गातुमेरय तव देवा अजनयन्ननु व्रतम्॥ २॥
सप्त धामानि परियन्नमर्त्यो दाशद्दाशुषे सुकृते मामहस्व।
सुवीरेण रयिणाग्ने स्वाभुवा यस्त आनट् समिधा तं जुषस्व॥ ३॥
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं हविष्मन्त ईळते सप्त वाजिनम्।
शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं पृणन्तं देवं पृणते सुवीर्यम्॥ ४॥
त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः स हूयमानो अमृताय मत्स्व।
त्वां मर्जयन्मरुतो दाशुषो गृहे त्वां स्तोमेभिर्भृगवो वि रुरुचुः॥ ५॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

इषं दुहन्त्सुदुघां विश्वधायसं यज्ञप्रिये यजमानाय सुक्रतो।
अग्ने घृतस्नुस्त्रिर्ऋतानि दीद्यद्वर्तिर्यज्ञं परियन्त्सुक्रतूयसे॥ ६॥
त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना अयजन्त मानुषाः।
त्वां देवा महयाय्याय वावृधुराज्यमग्ने निमृजन्तो अध्वरे॥ ७॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नि त्वा वसिष्ठा अहन्त वाजिनं गृणन्तो अग्ने विदथेषु वेधसः।
रायस्पोषं यजमानेषु धारय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ ८॥

[१२३] त्रयोविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वेनः॥ देवता—वेनः॥ छन्दः—१, ५, ७ निचृत्त्रिष्टुप्; २-४, ६, ८ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने।
इममपां संगमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति॥ १॥
समुद्रादूर्मिमुदियर्ति वेनो नभोजाः पृष्ठं हर्यतस्य दर्शि।
ऋतस्य सानावधि विष्टपि भ्राट् समानं योनिमभ्यनूषत व्राः॥ २॥
समानं पूर्वीरभि वावशानास्तिष्ठन्वत्सस्य मातरः सनीळाः।
ऋतस्य सानावधि चक्रमाणा रिहन्ति मध्वो अमृतस्य वाणीः॥ ३॥
जानन्तो रूपमकृपन्त विप्रा मृगस्य घोषं महिषस्य हि ग्मन्।
ऋतेन यन्तो अधि सिन्धुमस्थुर्विदद्गन्धर्वो अमृतानि नाम॥ ४॥
अप्सरा जारमुपसिष्मियाणा योषा बिभर्ति परमे व्योमन्।
चरत्प्रियस्य योनिषु प्रियः सन्त्सीदत्पक्षे हिरण्यये स वेनः॥ ५॥

अथाष्टमो वर्गः॥ ८॥

नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम्॥ ६॥
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात्प्रत्यङ् चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि।
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वर्ण नाम जनत प्रियाणि॥ ७॥
द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति पश्यन्गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन्।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि॥ ८॥

[१२४] चतुर्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१, ५-९ अग्निवरुणसोमानां निहवः; २-४ अग्निः॥ देवता—१-४ अग्निः; ५, ६, ७, ८ यथानिपातम्; ९ इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३, ८ त्रिष्टुप्; २, ४, ९ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ विराट् त्रिष्टुप्; ६ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ७ जगती॥ स्वरः—१-६, ८, ९ धैवतः; ७ निषादः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

इमं नो अग्न उप यज्ञमेहि पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् ।
असो हव्यवाळुत नः पुरोगा ज्योगेव दीर्घं तम आशयिष्ठाः ॥ १ ॥
अदेवाद्देवः प्रचता गुहा यन्प्रपश्यमानो अमृतत्वमेमि ।
शिवं यत्सन्तमशिवो जहामि स्वात्सख्यादरणीं नाभिमेमि ॥ २ ॥
पश्यन्नन्यस्या अतिथिं वयाया ऋतस्य धाम वि मिमे पुरूणि ।
शंसामि पित्रे असुराय शेवमयज्ञियाद्यज्ञियं भागमेमि ॥ ३ ॥
बह्वीः समा अकरमन्तरस्मिन्निन्द्रे वृणानः पितरं जहामि ।
अग्निः सोमो वरुणास्ते च्यवन्ते पर्यावर्द्राष्ट्रं तदवाम्यायन् ॥ ४ ॥
निर्मीया उ त्ये असुरा अभूवन्त्वं च मा वरुण कामयासै ।
ऋतेन राजन्ननृतं विविञ्चन्ममं राष्ट्रस्याधिपत्यमेहि ॥ ५ ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

इदं स्वरिदमिदास वाममयं प्रकाश उर्वन्तरिक्षम् ।
हनाव वृत्रं निरेहि सोम हविष्ट्वा सन्तं हविषा यजाम ॥ ६ ॥
कविः काव्वित्वा दिवि रूपमासजदप्रभूती वरुणो निरपः सृजत् ।
क्षेमं कृण्वाना जनयो न सिन्धवस्ता अस्य वर्णं शुचयो भरिभ्रति ॥ ७ ॥
ता अस्य ज्येष्ठमिन्द्रियं सचन्ते ता ईमा क्षेति स्वधया मदन्तीः ।
ता ईं विशो न राजानं वृणाना बीभत्सुवो अप वृत्रादतिष्ठन् ॥ ८ ॥
बीभत्सूनां सयुजं हंसमाहुरपां दिव्यानां सख्ये चरन्तम् ।
अनुष्टुभमनु चर्चूर्यमाणमिन्द्रं नि चिक्युः कवयो मनीषा ॥ ९ ॥

[१२५] पञ्चविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वागाम्भृणी ॥ देवता—वागाम्भृणी ॥ छन्दः—१, ३, ७, ८ विराट्त्रिष्टुप्; २ पाद-निचृज्जगती; ४, ५ त्रिष्टुप्; ६ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३-८ धैवतः; २ निषादः ॥

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः ।
अहं मित्रावरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनोभा ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहं सोममाहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् ।
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये३ यजमानाय सुन्वते ॥ २ ॥
अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम् ।
तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ॥ ३ ॥
मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ।
अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥ ४ ॥
अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः ।
यं कामये तंतमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥ ५ ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ ।
अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥ ६ ॥
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्व१न्तः समुद्रे ।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वोतामूं द्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ॥ ७ ॥
अहमेव वात इव प्र वाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा ।
परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव ॥ ८ ॥

[१२६] षड्विंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुल्मलबर्हिषः शैलूषिरंहोमुग्वा वामदेव्यः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ५, ६ निचृद्बृहती; २-४ विराड्बृहती; ७ बृहती; ८ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-७ मध्यमः; ८ धैवतः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयन्ति वरुणो अति द्विषः ॥ १ ॥
तद्धि वयं वृणीमहे वरुण मित्रार्यमन् ।
येना निरंहसो यूयं पाथ नेथा च मर्त्यमति द्विषः ॥ २ ॥
ते नूनं नोऽयमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।
नयिष्ठा उ नो नेषणि पर्षिष्ठा उ नः पर्षण्यति द्विषः ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूयं विश्वं परि पाथ वरुणो मित्रो अर्यमा ।
युष्माकं शर्मणि प्रिये स्याम सुप्रणीतयोऽति द्विषः ॥ ४ ॥
आदित्यासो अति स्रिधो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
उग्रं मरुद्धीं रुद्रं हुवेमेन्द्रमग्निं स्वस्तयेऽति द्विषः ॥ ५ ॥
नेतार ऊ षु णस्तिरो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
अति विश्वानि दुरिता राजानश्चर्षणीनामति द्विषः ॥ ६ ॥
शुनमस्मभ्यमूतये वरुणो मित्रो अर्यमा ।
शर्म यच्छन्तु सप्रथ आदित्यासो यदीमहे अति द्विषः ॥ ७ ॥
यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः ।
एवो ष्वस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः ॥ ८ ॥

[१२७] सप्तविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुशिकः सौभरो रात्रिर्वा भारद्वाजी ॥ देवता—रात्रिस्तवः ॥ छन्दः—१, ३, ६ विराड्गायत्री; २ पादनिचृद्गायत्री; ४, ५, ८ गायत्री; ७ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः । विश्वा अधि श्रियोऽधित ॥ १ ॥
ओर्वप्रा अमर्त्या निवतो देव्युद्वतः । ज्योतिषा बाधते तमः ॥ २ ॥
निरु स्वसारमस्कृतोषसं देव्यायती । अपेदु हासते तमः ॥ ३ ॥
सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि । वृक्षे न वसतिं वयः ॥ ४ ॥
नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः । नि श्येनासश्चिदर्थिनः ॥ ५ ॥
यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्म्ये । अथा नः सुतरा भव ॥ ६ ॥
उप मा पेपिशत्तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित । उष ऋणेव यातय ॥ ७ ॥
उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः । रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ॥ ८ ॥

[१२८] अष्टाविंशत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विहव्यः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, ३ विराट्त्रिष्टुप्; २, ५, ८ त्रिष्टुप्; ३, ६ निचृत्त्रिष्टुप्; ७ भुरिक्त्रिष्टुप्; ९ पादनिचृज्जगती ॥ स्वरः—१-८ धैवतः; ९ निषादः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम ।
महां नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम ॥ १ ॥
मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः ।
ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु महां वातः पवतां कामे अस्मिन् ॥ २ ॥
मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः ।
दैव्या होतारो वनुषन्त पूर्वेऽरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः ॥ ३ ॥
महां यजन्तु मम यानि हव्याकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु ।
एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवासो अधि वोचता नः ॥ ४ ॥
देवीः षळुर्वीरुरु नः कृणोत विश्वे देवास इह वीरयध्वम् ।
मा हास्महि प्रजया मा तनूभिर्मा रधाम द्विषते सोम राजन् ॥ ५ ॥

अथ षोडशो वर्गः ॥ १६ ॥

अग्ने मन्युं प्रतिनुदन्परेषामदब्धो गोपाः परि पाहि नस्त्वम् ।
प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्तेऽमैषां चित्तं प्रबुधां वि नेशत् ॥ ६ ॥
धाता धातॄणां भुवनस्य यस्पतिर्देवं त्रातारमभिमातिषाहम् ।
इमं यज्ञमश्विनोभा बृहस्पतिर्देवाः पान्तु यजमानं न्यर्थात् ॥ ७ ॥
उरुव्यचा नो महिषः शर्म यंसदस्मिन्हवे पुरुहूतः पुरुक्षुः ।
स नः प्रजायै हर्यश्व मृळयेन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः ॥ ८ ॥
ये नः सपत्ना अप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव बाधामहे तान् ।
वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन् ॥ ९ ॥

[१२९] एकोनत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजापतिः परमेष्ठी ॥ देवता—भाववृत्तम् ॥ छन्दः—१-३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४-६ त्रिष्टुप्; ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ सप्तदशो वर्गः ॥ १७ ॥

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योमा परो यत् ।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्नम्भः किमासीद्गहनं गभीरम् ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न मृत्युरासीदमृतं न तर्हि न रात्र्या अह्न आसीत्प्रकेतः ।
आनीदवातं स्वधया तदेकं तस्माद्धान्यन्न परः किं चनास ॥ २ ॥
तम आसीत्तमसा गूळ्हमग्रेऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम् ।
तुच्छ्येनाभ्वपिहितं यदासीत्तपसस्तन्महिनाजायतैकम् ॥ ३ ॥
कामस्तदग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् ।
सतो बन्धुमसति निरविन्दन्हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा ॥ ४ ॥
तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी३दुपरि स्विदासी३त् ।
रेतोधा आसन्महिमान आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात् ॥ ५ ॥
को अद्धा वेद क इह प्र वोचत्कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः ।
अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाथा को वेद यत आबभूव ॥ ६ ॥
इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न ।
यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद ॥ ७ ॥

[१३०] त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—यज्ञः प्राजापत्यः ॥ देवता—भाववृत्तम् ॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २ भुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ६, ७ त्रिष्टुप्; ४ विराट्त्रिष्टुप्; ५ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ निषादः; २-७ धैवतः ॥

अथाष्टादशो वर्गः ॥ १८ ॥

यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभिस्तत एकशतं देवकर्मेभिरायतः ।
इमे वयन्ति पितरो य आययुः प्र वयापं वयेत्यासते तते ॥ १ ॥
पुमाँ एनं तनुत उत्कृणत्ति पुमान्वि तत्ने अधि नाके अस्मिन् ।
इमे मयूखा उप सेदुरू सदः सामानि चक्रुस्तसराण्योतवे ॥ २ ॥
कासीत्प्रमा प्रतिमा किं निदानमाज्यं किमासीत्परिधिः क आसीत् ।
छन्दः किमासीत्प्रउगं किमुक्थं यद्देवा देवमयजन्त विश्वे ॥ ३ ॥
अग्रेगीयत्र्यभवत्सयुग्वोष्णिहया सविता सं बभूव ।
अनुष्टुभा सोम उक्थैर्महस्वान्बृहस्पतेर्बृहती वाचमावत् ॥ ४ ॥
विराण्मित्रावरुणयोरभिश्रीरिन्द्रस्य त्रिष्टुबिह भागो अह्नः ।
विश्वान्देवाञ्जगत्या विवेश तेन चाकॢप्र ऋषयो मनुष्याः ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाक्लृप्रे तेन ऋषयो मनुष्या यज्ञे जाते पितरो नः पुराणे।
पश्यन्मन्ये मनसा चक्षसा तान्य इमं यज्ञमयजन्त पूर्वे ॥ ६ ॥
सहस्तोमाः सहछन्दस आवृतः सहप्रमा ऋषयः सप्त दैव्याः।
पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीरा अन्वालेभिरे रथ्योऽ३ न रश्मीन् ॥ ७ ॥

[१३१] एकत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुकीर्तिः काक्षीवतः ॥ देवता—१-३, ६, ७ इन्द्रः; ४, ५ अश्विनौ ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्; ५, ६, ७ पादनिचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ५-७ धैवतः; ४ गान्धारः ॥

अथैकोनविंशो वर्गः ॥ १९ ॥

अप प्राचः इन्द्र विश्वाँ अमित्रानपापाचो अभिभूते नुदस्व।
अपोदीचो अप शूराधराचः उरौ यथा तव शर्मन्मदेम ॥ १ ॥
कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय ।
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः ॥ २ ॥
नहि स्थूर्यृतुथा यातमस्ति नोत श्रवो विविदे संगमेषु।
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ॥ ३ ॥
युवं सुरामंमश्विना नमुचावासुरे सचा ।
विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम् ॥ ४ ॥
पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दंसनाभिः ।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥ ५ ॥
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥ ६ ॥
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम।
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु ॥ ७ ॥

[१३२] द्वात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शकपूतो नार्मेधः ॥ देवता—१ लिङ्गोक्ताः; २-७ मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—१ बृहती; २, ४ पादनिचृत्पङ्क्तिः; ३ पङ्क्तिः; ५, ६ विराट्पङ्क्तिः; ७ महासतोबृहती ॥ स्वरः—१, ७ मध्यमः; २-६ पञ्चमः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

ईजानमिद् द्यौर्गूर्तावसुरीजानं भूमिरभि प्रभूषणि ।
ईजानं देवावश्विनावभि सुम्नैरवर्धताम् ॥ १ ॥
ता वां मित्रावरुणा धारयत्क्षिती सुषुम्नेषितत्वता यजामसि ।
युवोः क्राणाय सख्यैरभि ष्याम रक्षसः ॥ २ ॥
अधा चिन्नु यद्दिधिषामहे वामभि प्रियं रेक्णः पत्यमानाः ।
दद्वाँ वा यत्पुष्यति रेक्णः सम्वारन्नकिरस्य मघानि ॥ ३ ॥
असावन्यो असुर सूयत द्यौस्त्वं विश्वेषां वरुणासि राजा ।
मूर्धा रथस्य चाकन्नतावतैनसान्तकधुक् ॥ ४ ॥
अस्मिन्त्स्वे३ तच्छकपूत एनो हिते मित्रे निगतान्हन्ति वीरान् ।
अवोर्वा यद्धात्तनूष्ववः प्रियासु यज्ञियास्ववी ॥ ५ ॥
युवोर्हि मातादितिर्विचेतसा द्यौर्न भूमिः पयसा पुपूतनि ।
अव प्रिया दिदिष्टन सूरो निनिक्त रश्मिभिः ॥ ६ ॥
युवं ह्यप्राजावसीदतं तिष्ठद्रथं न धूर्षदं वनर्षदम् ।
ता नः कणूकयन्तीर्नृमेधस्तत्रे अंहसः सुमेधस्तत्रे अंहसः ॥ ७ ॥

[१३३] त्रयस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुदाः पैजवनः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ शक्वरी; ४-६ महापङ्क्तिः; ७ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-३, ७ धैवतः; ४-६ पञ्चमः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

प्रो ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत ।
अभीके चिदु लोककृत्संगे समत्सु वृत्रहास्माकं बोधि चोदिता
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ १ ॥
त्वं सिन्धूँरवासृजोऽधराचो अहन्नहिम् ।
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि षु विश्वा अरातयोऽर्यो नशन्त नो धियः ।
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति या ते रातिर्ददिर्वसु
नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ३ ॥
यो न इन्द्राभितो जनो वृकायुरादिदेशति ।
अधस्पदं तमीं कृधि विबाधो अंसि सासहिर्नभन्तामन्यकेषां
ज्याका अधि धन्वसु ॥ ४ ॥
यो न इन्द्राभिदासति सनाभिर्यश्च निष्ट्यः ।
अव तस्य बलं तिर महीव द्यौरध त्मना नभन्तामन्यकेषां
ज्याका अधि धन्वसु ॥ ५ ॥
वयमिन्द्र त्वायवः सखित्वमा रभामहे ।
ऋतस्य नः पथा नयाति विश्वानि दुरिता नभन्तामन्यकेषां
ज्याका अधि धन्वसु ॥ ६ ॥
अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र तां शिक्ष या दोहते प्रति वरं जरित्रे ।
अच्छिद्रोध्नी पीपयद्यथा नः सहस्रधारा पयसा मही गौः ॥ ७ ॥

[१३४] चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१-६[1] मान्धाता यौवनाश्वः; ६[2], ७ गोधा ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—१-६ महापङ्क्तिः; ७ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषाइव ।
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनां
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ १ ॥
अव स्म दुर्हणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम् ।
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ आदिदेशति
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अव॒ त्या बृ॑हतीरिषो॑ वि॒श्वश्च॑न्द्रा अमित्रहन् ।
शची॑भिः शक्र धूनुहीन्द्र॒ विश्वा॑भिरू॒तिभि॑र्दे॒वी
जनि॑त्र्यजीजनद्भ॒द्रा जनि॑त्र्यजीजनत् ॥ ३ ॥
अव॒ यत्त्वं श॑तक्रत॒विन्द्र॒ विश्वा॑नि धूनुषे ।
र॒यिं न सु॑न्व॒ते सचा॑ सहस्त्रिणी॑भिरू॒तिभि॑र्दे॒वी
जनि॑त्र्यजीजनद्भ॒द्रा जनि॑त्र्यजीजनत् ॥ ४ ॥
अव॒ स्वेदा॑इवा॒भितो॒ विष्व॑क्पतन्तु दि॒द्यवः॑ ।
दू॒वी॑याइव॒ तन्त॑वो॒ व्य॑१॒॑स्मदे॑तु दुर्म॒तिर्दे॒वी
जनि॑त्र्यजीजनद्भ॒द्रा जनि॑त्र्यजीजनत् ॥ ५ ॥
दी॒र्घं ह्य॑ङ्कु॒शं यथा॒ शक्ति॑ं बिभ॑र्षि मन्तुमः ।
पूर्वे॑ण मघवन्प॒दाजो॒ व॒यां यथा॑ यमो दे॒वी
जनि॑त्र्यजीजनद्भ॒द्रा जनि॑त्र्यजीजनत् ॥ ६ ॥
नकि॑र्देवा मिनीमसि॒ नकि॒रा यो॑पयामसि मन्त्र॒श्रुत्यं॑ चरामसि ।
प॒क्षेभि॑रपिक॒क्षेभि॒रत्रा॒भि सं र॑भामहे ॥ ७ ॥

[१३५] पञ्चत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कुमारो यामायनः ॥ देवता—यमः ॥ छन्दः—१-३, ५, ६ अनुष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्; ७ भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

यस्मि॑न्वृ॒क्षे सु॑प॒लाशे॑ दे॒वैः स॒म्पिब॑ते य॒मः ।
अत्रा॑ नो वि॒श्पति॑ः पि॒ता पु॑रा॒णाँ अनु॑ वेनति ॥ १ ॥
पु॒रा॒णाँ अनु॑वेनन्तं॒ चर॑न्तं पापया॒मुया ।
अ॒सू॒यन्न॒भ्यचाकशं॒ तस्मा॑ अस्पृहयं पुनः ॥ २ ॥
यं कु॑मार॒ नव॑ं रथं॒मच॒क्रं म॑न॒साकृ॑णोः ।
एके॑षं वि॒श्वत॒ः प्राञ्च॒मप॑श्यन्न॒धि ति॑ष्ठसि ॥ ३ ॥
यं कु॑मार॒ प्रावर्तयो॒ रथं॒ विप्रे॑भ्य॒स्परि॑ ।
तं सामा॑नु॒ प्रावर्तत॒ समि॑तो॒ नाव्याहि॑तम् ॥ ४ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कः कुमारमजनयद्रथं को निरवर्तयत् ।
कः स्वित्तद्‌द्य नो ब्रूयादनुदेयी यथाभवत् ॥ ५ ॥
यथाभवदनुदेयी ततो अग्रमजायत ।
पुरस्ताद् बुध्न आततः पश्चान्निरयणं कृतम् ॥ ६ ॥
इदं यमस्य सादनं देवमानं यदुच्यते ।
इयमस्य धम्यते नाळीरयं गीर्भिः परिष्कृतः ॥ ७ ॥

[१३६] षट्त्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मुनयो वातरशनाः । १ जूतिः; २ वातजूतिः; ३, विप्रजूतिः; ४ वृषाणकः; ५ करिक्रतः; ६ एतशः; ७ ऋष्यशृङ्गः ॥ देवता—केशिनः ॥ छन्दः—१ विराड् अनुष्टुप्; २-४, ७ अनुष्टुप्; ५, ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

केश्यग्निं केशी विषं केशी बिभर्ति रोदसी ।
केशी विश्वं स्वर्दृशे केशीदं ज्योतिरुच्यते ॥ १ ॥
मुनयो वातरशनाः पिशङ्गा वसते मला ।
वातस्यानु ध्राजिं यन्ति यद्देवासो अविक्षत ॥ २ ॥
उन्मदिता मौनेयेन वाताँ आ तस्थिमा वयम् ।
शरीरेदस्माकं यूयं मर्तासो अभि पश्यथ ॥ ३ ॥
अन्तरिक्षेण पतति विश्वा रूपावचाकशत् ।
मुनिर्देवस्यदेवस्य सौकृत्याय सखा हितः ॥ ४ ॥
वातस्याश्वो वायोः सखाथो देवेषितो मुनिः ।
उभौ समुद्रावा क्षेति यश्च पूर्व उतापरः ॥ ५ ॥
अप्सरसां गन्धर्वाणां मृगाणां चरणे चरन् ।
केशी केतस्य विद्वान्त्सखा स्वादुर्मदिन्तमः ॥ ६ ॥
वायुरस्मा उपामन्थत्पिनष्टि स्मा कुनन्नमा ।
केशी विषस्य पात्रेण यद्रुद्रेणापिबत्सह ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१३७] सप्तत्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सप्त ऋषय एकर्चाः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, ४, ६ अनुष्टुप्; २, ३, ५, ७ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः ।
उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः ॥ १ ॥
द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः ।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः ॥ २ ॥
आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः ।
त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे ॥ ३ ॥
आ त्वागमं शन्तातिभिरथो अरिष्टतातिभिः ।
दक्षं ते भद्रमाभार्षं परा यक्ष्मं सुवामि ते ॥ ४ ॥
त्रायन्तामिह देवास्त्रायतां मरुतां गणः ।
त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ॥ ५ ॥
आप इद्वा उ भेषजीरापो अमीवचातनीः ।
आपः सर्वस्य भेषजीस्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ॥ ६ ॥
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां जिह्वा वाचः पुरोगवी ।
अनामयित्नुभ्यां त्वा ताभ्यां त्वोप स्पृशामसि ॥ ७ ॥

[१३८] अष्टात्रिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अङ्ग औरवः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ४, ६ पादनिचृज्जगती; २ निचृज्जगती; ३, ५ विराड्जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

तव त्य इन्द्र सख्येषु वह्नय ऋतं मन्वाना व्यदर्दिरुर्वलम् ।
यत्रा दशस्यन्नुषसो रिणन्नपः कुत्साय मन्मन्नह्यश्च दंसयः ॥ १ ॥
अवासृजः प्रस्वः श्वञ्चयो गिरीनुदाज उस्रा अपिबो मधु प्रियम् ।
अवर्धयो वनिनो अस्य दंससा शुशोच सूर्य ऋतजातया गिरा ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि सूर्यो मध्ये अमुचद्रथं दिवो विदद्दासाय प्रतिमानमार्यः।
दृळ्हानि पिप्रोरसुरस्य मायिन इन्द्रो व्यास्यच्चक्रवाँ ऋजिश्वना॥ ३॥
अनाधृष्टानि धृषितो व्यास्यन्निधींरदेवाँ अमृणद्यास्यः ।
मासेव सूर्यो वसु पुर्यमा ददे गृणानः शत्रूँरशृणाद्विरुक्मता॥ ४॥
अयुद्धसेनो विभ्वा विभिन्दता दाशद् वृत्रहा तुज्यानि तेजते।
इन्द्रस्य वज्रादबिभेदभिश्नथः प्राक्रामच्छुन्ध्यूरजहादुषा अनः॥ ५॥
एता त्या ते श्रुत्यानि केवला यदेक एकमकृणोरयज्ञम्।
मासां विधानमदधा अधि द्यवि त्वया विभिन्नं भरति प्रधिं पिता॥ ६॥

[१३९] एकोनचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वावसुर्देवगन्धर्वः॥ देवता—१-३ सविता; ४-६ विश्वावसुः॥ छन्दः—१, २, ४-६ त्रिष्टुप्; ३ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तविंशो वर्गः॥

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाँ अजस्रम् ।
तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्त्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः॥ १॥
नृचक्षा एष दिवो मध्य आस्त आपप्रिवान्रोदसी अन्तरिक्षम्।
स विश्वाचीरभि चष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम्॥ २॥
रायो बुध्नः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभि चष्टे शचीभिः।
देव इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे धनानाम् ॥ ३॥
विश्वावसुं सोम गन्धर्वमापौ ददूशुषीस्तदृतेना व्यायन् ।
तद्न्ववैदिन्द्रो रारहाण आसां परि सूर्यस्य परिधींरपश्यत्॥ ४॥
विश्वावसुरभि तन्नो गृणातु दिव्यो गन्धर्वो रजसो विमानः।
यद्वा घा सत्यमुत यन्न विद्म धियो हिन्वानो धिय इन्नो अव्याः॥ ५॥
सस्त्रिमविन्दच्चरणे नदीनामपावृणोदुरो अश्मव्रजानाम् ।
प्रासां गन्धर्वो अमृतानि वोचदिन्द्रो दक्षं परि जानादहीनाम्॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१४०] चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निः पावकः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१, ३, ४, निचृत्पङ्क्तिः; २ भुरिक्पङ्क्तिः; ५ संस्तारपङ्क्तिः; ६ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-५ पञ्चमः; ६ धैवतः॥

अथाष्टाविंशो वर्गः॥ २८॥

अग्ने॒ तव॒ श्रवो॒ वयो॒ महि॑ भ्राजन्ते अ॒र्चयो॑ विभावसो।
बृह॑द्भानो॒ शव॑सा॒ वाज॑मुक्थ्यं॑ दधासि दा॒शुषे॑ कवे ॥ १॥
पा॒व॒कव॑र्चाः शु॒क्रव॑र्चा॒ अनू॑नवर्चा॒ उदि॑यर्षि भा॒नुना॑ ।
पु॒त्रो मा॒तरा॑ वि॒चर॒न्नुपा॑वसि पृणक्षि॒ रोद॑सी उ॒भे ॥ २॥
ऊर्जो॑ नपाज्जातवेदः सु॒शस्ति॑भि॒र्मन्द॑स्व धी॒तिभि॒र्हि॑तः।
त्वे इ॒षः सं द॑धु॒र्भूरि॑वर्पसश्चि॒त्रोत॑यो वा॒मजा॑ताः ॥ ३॥
इ॒र॒ज्यन्न॑ग्ने प्रथयस्व ज॒न्तुभि॑र॒स्मे रायो॑ अमर्त्य ।
स द॑र्श॒तस्य॒ वपु॑षो॒ वि रा॑जसि पृणक्षि॒ सान॑सिं क्र॒तुम्॥ ४॥
इ॒ष्क॒र्तार॑मध्व॒रस्य॒ प्रचे॑तसं क्षय॒न्तं राध॑सो म॒हः ।
रा॒तिं वा॒मस्य॑ सु॒भगां॑ म॒हीमि॒षं दधा॑सि सान॒सिं र॒यिम्॥ ५॥
ऋ॒ता॒वा॑नं महि॒षं वि॒श्वद॑र्शतम॒ग्निं सु॒म्नाय॑ दधिरे पु॒रो जना॑ः।
श्रुत्क॑र्णं स॒प्रथ॑स्तमं त्वा गि॒रा दैव्यं॑ मानु॒षा यु॒गा ॥ ६॥

[१४१] एकचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अग्निस्तापसः॥ देवता—विश्वे देवाः॥ छन्दः—१, २ निचृदनुष्टुप्; ३, ६ विराडनुष्टुप्; ४, ५ अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ एकोनत्रिंशो वर्गः॥ २९॥

अग्ने॒ अच्छा॑ वदे॒ह नः॑ प्र॒त्यङ् नः॑ सु॒मना॑ भव।
प्र नो॑ यच्छ विशस्पते धन॒दा अ॑सि न॒स्त्वम्॥ १॥
प्र नो॑ यच्छत्वर्य॒मा प्र भग॒ः प्र बृ॒ह॒स्पति॑ः।
प्र दे॒वाः प्रोत सू॒नृता॑ रा॒यो दे॒वी द॑दातु नः॥ २॥
सोम॑ं राजा॒न॒मव॑से॒ऽग्निं गी॒र्भिर्ह॑वामहे ।
आ॒दि॒त्यान्विष्णु॑ं सू॒र्य॑ं ब्र॒ह्माणं॑ च॒ बृ॒ह॒स्पति॑म्॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रवायू बृहस्पतिं सुहवेह हवामहे ।
यथा नः सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असत् ॥ ४ ॥
अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय ।
वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम् ॥ ५ ॥
त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।
त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ॥ ६ ॥

[१४२] द्विचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शार्ङ्गाः=१, २ जरिता; ३, ४ द्रोणः; ५, ६ सारिसृक्वः; ७, ८ स्तम्बमित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-२ निचृज्जगती; ३, ४, ६ त्रिष्टुप्; ५ आर्चीस्वराट् त्रिष्टुप्; ७ निचृदनुष्टुप्; ८ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, २ निषादः; ३-६ धैवतः; ७, ८ गान्धारः ॥

अथ त्रिंशो वर्गः ॥ ३० ॥

अयमग्ने जरिता त्वे अभूदपि सहसः सूनो नह्यन्यदस्त्याप्यम् ।
भद्रं हि शर्म त्रिवरूथमस्ति त आरे हिंसानामप दिद्युमा कृधि ॥ १ ॥
प्रवत्ते अग्ने जनिमा पितूयतः साचीव विश्वा भुवना न्यृञ्जसे ।
प्र सप्तयः प्र सनिषन्त नो धियः पुरश्चरन्ति पशुपाइव त्मना ॥ २ ॥
उत वा उ परि वृणक्षि बप्सद्बहोरग्र उलपस्य स्वधावः ।
उत खिल्या उर्वराणां भवन्ति मा ते हेतिं तविषीं चुक्रुधाम ॥ ३ ॥
यदुद्वतो निवतो यासि बप्सत्पृथगेषि प्रगर्धिनीव सेना ।
यदा ते वातो अनुवाति शोचिर्वप्तेव श्मश्रु वपसि प्र भूम ॥ ४ ॥
प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्र एकं नियानं बहवो रथासः ।
बाहू यदग्ने अनुमर्मृजानो न्यङ्ङुत्तानामन्वेषि भूमिम् ॥ ५ ॥
उत्ते शुष्मा जिहतामुत्ते अर्चिरुत्ते अग्ने शशमानस्य वाजाः ।
उच्छ्वञ्चस्व नि नम वर्धमान आ त्वाद्य विश्वे वसवः सदन्तु ॥ ६ ॥
अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम् ।
अन्यं कृणुष्वेतः पन्थां तेन याहि वशाँ अनु ॥ ७ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यने ते परायणे दूर्वी रोहन्तु पुष्पिणीः ।
हृदाश्च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे ॥ ८ ॥

इत्यष्टमाष्टके सप्तमोऽध्यायः ॥

अथाष्टमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः

[१४३] त्रिचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अत्रिः साङ्ख्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—१-५ अनुष्टुप्; ६ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ प्रथमो वर्गः ॥ १ ॥

त्यं चिदत्रिमृतजुरमर्थमश्वं न यातवे ।
कक्षीवन्तं यदी पुना रथं न कृणुथो नवम् ॥ १ ॥
त्यं चिदश्वं न वाजिनमरेणवो यमत्नत ।
दृळ्हं ग्रन्थिं न वि ष्यतमत्रिं यविष्ठमा रजः ॥ २ ॥
नरा दंसिष्ठावत्रये शुभ्रा सिषासतं धियः ।
अथा हि वां दिवो नरा पुनः स्तोमो न विशसे ॥ ३ ॥
चिते तद्वां सुराधसा रातिः सुमतिरश्विना ।
आ यन्नः सदने पृथौ समने पर्षथो नरा ॥ ४ ॥
युवं भुज्युं समुद्र आ रजसः पार ईङ्खितम् ।
यातमच्छा पतत्रिभिर्नासत्या सातये कृतम् ॥ ५ ॥
आ वां सुम्नैः शंयूइव मंहिष्ठा विश्ववेदसा ।
समस्मे भूषतं नरोत्सं न पिप्युषीरिषः ॥ ६ ॥

[१४४] चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुपर्णस्तार्क्ष्यपुत्र ऊर्ध्वकृशनो वा यामायनः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, ३ निचृद्गायत्री; २ आर्चीस्वराड्बृहती; ४ भुरिग्गायत्री; ५ सतोबृहती; ६ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ३, ४ षड्जः; २, ५ मध्यमः; ६ पञ्चमः ॥

अथ द्वितीयो वर्गः ॥ २ ॥

अयं हि ते अमर्त्य इन्दुरत्यो न पत्यते ।
दक्षो विश्वायुर्वेधसे ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयमस्मासु काव्य ऋभुर्वज्रो दास्वते ।
अयं बिभर्त्यूर्ध्वकृशनं मदमृभुर्न कृत्व्यं मदम् ॥ २ ॥
घृषुः श्येनाय कृत्वन आसु स्वासु वंसगः ।
अव दीधेदहीशुवः ॥ ३ ॥
यं सुपर्णः परावतः श्येनस्य पुत्र आभरत् ।
शतचक्रं योऽ३ऽ ह्यो वर्तनिः ॥ ४ ॥
यं ते श्येनश्चारुमवृकं पदाभरदरुणं मानमन्धसः ।
एना वयो वि तार्यायुर्जीवस एना जागार बन्धुता ॥ ५ ॥
एवा तदिन्द्र इन्दुना देवेषु चिद्धारयाते महि त्यजः ।
क्रत्वा वयो वि तार्यायुः सुक्रतो क्रत्वायमस्मदा सुतः ॥ ६ ॥

[१४५] पञ्चचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्राणी ॥ देवता—उपनिषत्सपत्नीबाधनम् ॥ छन्दः—१, ५ निचृदनुष्टुप्; २, ४ अनुष्टुप्; ३ आर्चीस्वराडनुष्टुप्; ६ निचृत्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-५ गान्धारः; ६ पञ्चमः ॥

अथ तृतीयो वर्गः ॥ ३ ॥

इमां खनाम्योषधिं वीरुधं बलवत्तमाम् ।
यया सपत्नीं बाधते यया संविन्दते पतिम् ॥ १ ॥
उत्तानपर्णे सुभगे देवजूते सहस्वति ।
सपत्नीं मे परा धम पतिं मे केवलं कुरु ॥ २ ॥
उत्तराहमुत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः ।
अथा सपत्नी या ममाधरा साधराभ्यः ॥ ३ ॥
नह्यस्या नाम गृभ्णामि नो अस्मिन्रमते जने ।
परामेव परावतं सपत्नीं गमयामसि ॥ ४ ॥
अहमस्मि सहमानाथ त्वमसि सासहिः ।
उभे सहस्वती भूत्वी सपत्नीं मे सहावहै ॥ ५ ॥
उप तेऽधां सहमानामभि त्वाधां सहीयसा ।
मामनु प्र ते मनो वत्सं गौरिव धावतु पथा वारिव धावतु ॥ ६ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१४६] षट्चत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—देवमुनिरैरम्मदः॥ देवता—अरण्यानी॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ भुरिग् अनुष्टुप्; ३, ५ निचृदनुष्टुप्; ४, ६ अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ चतुर्थो वर्गः॥ ४॥

अरण्यान्यरण्यान्यसौ य प्रेव नश्यसि ।
कथा ग्रामं न पृच्छसि न त्वा भीरिव विन्दतीꣳ॥ १॥
वृषारवाय वदते यदुपावति चिच्चिकः ।
आघाटिभिरिव धावयन्नरण्यानिर्महीयते ॥ २॥
उत गाव इवादन्त्युत वेश्मेव दृश्यते ।
उतो अरण्यानिः सायं शकटीरिव सर्जति॥ ३॥
गामङ्गैष आ ह्वयति दार्वङ्गैषो अपावधीत् ।
वसन्नरण्यान्यां सायमक्रुक्षदिति मन्यते ॥ ४॥
न वा अरण्यानिर्हन्त्यन्यश्चेन्नाभिगच्छति ।
स्वादोः फलस्य जग्ध्वाय यथाकामं नि पद्यते॥ ५॥
आञ्जनगन्धिं सुरभिं बह्वन्नामकृषीवलाम् ।
प्राहं मृगाणां मातरमरण्यानिमशंसिषम् ॥ ६॥

[१४७] सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सुवेदाः शैरीषिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराड्जगती; २ आर्चीभुरिग्जगती; ३ जगती; ४ पादनिचृज्जगती; ५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१-४ निषादः; ५ धैवतः॥

अथ पञ्चमो वर्गः॥ ५॥

अत्तेर्दधामि प्रथमाय मन्यवेऽहन्यद् वृत्रं नर्यं विवेरपः ।
उभे यत्त्वा भवतो रोदसी अनु रेजते शुष्मात्पृथिवी चिदद्रिवः॥ १॥
त्वं मायाभिरनवद्य मायिनं श्रवस्यता मनसा वृत्रमर्दयः ।
त्वामिन्नरो वृणते गविष्टिषु त्वां विश्वासु हव्यास्विष्टिषु॥ २॥
एषु चाकन्धि पुरुहूत सूरिषु वृधासो ये मघवन्नानशुर्मघम्।
अर्चन्ति तोके तनये परिष्टिषु मेधसाता वाजिनमह्ये धने॥ ३॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स इन्नु रायः सुभृतस्य चाकन्नन्मदं यो अस्य रंह्यं चिकेतति।
त्वावृधो मघवन्दाश्वध्वरो मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः॥ ४॥
त्वं शर्धाय महिना गृणान उरु कृधि मघवञ्छग्धि रायः।
त्वं नो मित्रो वरुणो न मायी पित्वो न दस्म दयसे विभक्ता॥ ५॥

[१४८] अष्टचत्वारिंशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पृथुर्वैन्यः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ३, ५ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ४ आर्चीस्वराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षष्ठो वर्गः॥ ६॥

सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा ससवांसश्च तुविनृम्ण वाजम्।
आ नो भर सुवितं यस्य चाकन्मना तना सनुयाम त्वोताः॥ १॥
ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर जातो दासीर्विशः सूर्येण सह्याः।
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हमप्सु बिभृमसि प्रस्रवणे न सोमम्॥ २॥
अर्यो वा गिरो अभ्यर्च विद्वानृषीणां विप्रः सुमतिं चकानः।
ते स्याम ये रणयन्त सोमैरेनोत तुभ्यं रथोळ्ह भक्षैः॥ ३॥
इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं शंसि दा नृभ्यो नृणां शूर शवः।
तेभिर्भव सक्रतुर्येषु चाकन्नुत त्रायस्व गृणत उत स्तीन्॥ ४॥
श्रुधी हवमिन्द्र शूर पृथ्या उत स्तवसे वेन्यस्यार्कैः।
आ यस्ते योनिं घृतवन्तमस्वारूर्मिर्न निम्नैर्वयन्त वक्वाः॥ ५॥

[१४९] एकोनपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अर्चन्हैरण्यस्तूपः॥ देवता—सविता॥ छन्दः—१, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; २, ५ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ सप्तमो वर्गः॥ ७॥

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णादस्कम्भने सविता द्यामदृंहत्।
अश्वमिवाधुक्षद्धुनिमन्तरिक्षमतूर्ते बद्धं सविता समुद्रम्॥ १॥
यत्रा समुद्रः स्कभितो व्यौनदपां नपात्सविता तस्य वेद।
अतो भूरत आ उत्थितं रजोऽतो द्यावापृथिवी अप्रथेताम्॥ २॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चेदमन्यदभवद्यजत्रममर्त्यस्य भुवनस्य भूना ।
सुपर्णो अङ्ग सवितुर्गरुत्मान्पूर्वो जातः स उ अस्यानु धर्मा ॥ ३ ॥
गावइव ग्रामं यूयुधिरिवाश्वान्वाश्रेव वत्सं सुमना दुहाना ।
पतिरिव जायामभि नो न्येतु धर्ता दिवः सविता विश्ववारः ॥ ४ ॥
हिरण्यस्तूपः सवितर्यथा त्वाङ्गिरसो जुह्वे वाजे अस्मिन् ।
एवा त्वार्चन्नवसे वन्दमानः सोमस्येवांशुं प्रति जागराहम् ॥ ५ ॥

[१५०] पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—मृळीको वासिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, २ बृहती; ३ निचृद्बृहती; ४ उपरिष्टाज्ज्योतिर्नाम जगती वा; ५ उपरिष्टाज्ज्योतिः ॥ स्वरः—१-३ मध्यमः; ४, ५ निषादः ॥

अथाष्टमो वर्गः ॥ ८ ॥

समिद्धश्चित्समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन ।
आदित्यै रुद्रैर्वसुभिर्न आ गहि मृळीकाय न आ गहि ॥ १ ॥
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि ।
मर्तासस्त्वा समिधान हवामहे मृळीकाय हवामहे ॥ २ ॥
त्वामु जातवेदसं विश्ववारं गृणे धिया ।
अग्ने देवाँ आ वह नः प्रियव्रतान्मृळीकाय प्रियव्रतान् ॥ ३ ॥
अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरोहितोऽग्निं मनुष्या३ ऋषयः समीधिरे ।
अग्निं महो धनसातावहं हुवे मृळीकं धनसातये ॥ ४ ॥
अग्निरत्रिं भरद्वाजं गविष्ठिरं प्रावन्नः कण्वं त्रसदस्युमाहुवे ।
अग्निं वसिष्ठो हवते पुरोहितो मृळीकाय पुरोहितः ॥ ५ ॥

[१५१] एकपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—श्रद्धा कामायनी ॥ देवता—श्रद्धा ॥ छन्दः—१, ४, ५ अनुष्टुप्; २ विराडनुष्टुप्; ३ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ नवमो वर्गः ॥ ९ ॥

श्रद्धयाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः ।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचसा वेदयामसि ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रियं श्रद्धे ददतः प्रियं श्रद्धे दिदासतः ।
प्रियं भोजेषु यज्वस्विदं म उदितं कृधि ॥ २ ॥
यथा देवा असुरेषु श्रद्धामुग्रेषु चक्रिरे ।
एवं भोजेषु यज्वस्वस्माकमुदितं कृधि ॥ ३ ॥
श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते ।
श्रद्धां हृदय्या[1]याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु ॥ ४ ॥
श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि ।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥ ५ ॥

द्वादशोऽनुवाकः [१५२] द्विपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शासो भारद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ दशमो वर्गः ॥ १० ॥

शास इत्था महाँ असि मित्रखादो अद्भुतः ।
न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदा चन ॥ १ ॥
स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी ।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अभयंकरः ॥ २ ॥
वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज ।
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः ॥ ३ ॥
वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।
यो अस्माँ अभिदासत्यधरं गमया तमः ॥ ४ ॥
अपेन्द्र द्विषतो मनोऽप जिज्यासतो वधम् ।
वि मन्योः शर्म यच्छ वरीयो यवया वधम् ॥ ५ ॥

[१५३] त्रिपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—इन्द्रमातरो देवजामयः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २-५ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथैकादशो वर्गः ॥ ११ ॥

ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। भेजानासः सुवीर्यम् ॥ १ ॥
त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं वृषन्वृषेदसि ॥ २ ॥
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमतिरः। उद् द्यामस्तभ्ना ओजसा ॥ ३ ॥
त्वमिन्द्र सजोषसमर्कं बिभर्षि बाह्वोः। वज्रं शिशान ओजसा ॥ ४ ॥
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा। स विश्वा भुव आभवः ॥ ५ ॥

[१५४] चतुःपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—यमी ॥ देवता—भाववृत्तम् ॥ छन्दः—१, ३, ४ अनुष्टुप्; २, ५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ द्वादशो वर्गः ॥ १२ ॥

सोम एकेभ्यः पवते घृतमेक उपासते ।
येभ्यो मधु प्रधावति ताँश्चिदेवापि गच्छतात् ॥ १ ॥
तपसा ये अनाधृष्यास्तपसा ये स्वर्ययुः ।
तपो ये चक्रिरे महस्ताँश्चिदेवापि गच्छतात् ॥ २ ॥
ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये तनूत्यजः ।
ये वा सहस्रदक्षिणास्ताँश्चिदेवापि गच्छतात् ॥ ३ ॥
ये चित्पूर्व ऋतसाप ऋतावान ऋतावृधः ।
पितॄन्तपस्वतो यम ताँश्चिदेवापि गच्छतात् ॥ ४ ॥
सहस्रणीथाः कवयो ये गोपायन्ति सूर्यम् ।
ऋषीन्तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात् ॥ ५ ॥

[१५५] पञ्चपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शिरिम्बिठो भारद्वाजः ॥ देवता—१, ४ अलक्ष्मीघ्नम्; २, ३ ब्रह्मणस्पतिः; ५ विश्वे देवाः ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३ अनुष्टुप्; ५ विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ त्रयोदशो वर्गः ॥ १३ ॥

अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे।
शिरिम्बिठस्य सत्वभिस्तेभिष्ट्वा चातयामसि ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चत्तो इतश्चत्तामुतः सर्वा भ्रूणान्यारुषी ।
अराय्यं ब्रह्मणस्पते तीक्ष्णशृङ्गोदृषन्निहि ॥ २ ॥
अदो यद्दारु प्लवते सिन्धोः पारे अपूरुषम् ।
तदा रभस्व दुर्हणो तेन गच्छ परस्तरम् ॥ ३ ॥
यद्ध प्राचीरजगन्तोरो मण्डूरधाणिकीः ।
हता इन्द्रस्य शत्रवः सर्वे बुद्बुदयाशवः ॥ ४ ॥
परीमे गामनेषत पर्यग्निमहृषत ।
देवेष्वक्रत श्रवः क इमाँ आ दधर्षति ॥ ५ ॥

[१५६] षट्पञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—केतुराग्नेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५ गायत्री; २, ४ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ चतुर्दशो वर्गः ॥ १४ ॥

अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु । तेन जेष्म धनंधनम् ॥ १ ॥
यया गा आकरामहे सेनयाग्ने तवोत्या । तां नो हिन्व मघत्तये ॥ २ ॥
आग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम् । अङ्धि खं वर्तया पणिम् ॥ ३ ॥
अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्यं रोहयो दिवि । दधज्ज्योतिर्जनेभ्यः ॥ ४ ॥
अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत् । बोधा स्तोत्रे वयो दधत् ॥ ५ ॥

[१५७] सप्तपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—भुवन आप्त्यः साधनो वा भौवनः ॥ देवता—विश्वे देवाः ॥ छन्दः—द्विपदात्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ पञ्चदशो वर्गः ॥ १५ ॥

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥ १ ॥
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह चीक्लृपाति ॥ २ ॥
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्माकं भूत्वविता तनूनाम् ॥ ३ ॥
हत्वाय देवा असुरान्यदायन्देवा देवत्वमभिरक्षमाणाः ॥ ४ ॥
प्रत्यञ्चमर्कमनयञ्छचीभिरादित्स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१५८] अष्टपञ्चाशदुत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—चक्षुः सौर्यः॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराड्गायत्री; २ स्वराड्गायत्री; ३ गायत्री; ४ निचृद्गायत्री; ५ विराड्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षोडशो वर्गः॥ १६॥

सूर्यो नो दिवस्पातु वातो अन्तरिक्षात्। अग्निर्नः पार्थिवेभ्यः ॥ १॥
जोषा सवितर्यस्य ते हरः शतं सवाँ अर्हति। पाहि नो दिद्युतः पतन्त्याः॥ २॥
चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः। चक्षुर्धाता दधातु नः॥ ३॥
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे चक्षुर्विख्यै तनूभ्यः। सं चेदं वि च पश्येम॥ ४॥
सुसन्दृशं त्वा वयं प्रति पश्येम सूर्य। वि पश्येम नृचक्षसः॥ ५॥

[१५९] एकोनषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शची पौलोमी॥ देवता—शची पौलोमी॥ छन्दः—१-३, ५ निचृदनुष्टुप्; ४ पादनिचृदनुष्टुप्; ६ अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथ सप्तदशो वर्गः॥ १७॥

उदसौ सूर्यो अगादुदयं मामको भगः ।
अहं तद्विद्वला पतिमभ्यसाक्षि विषासहिः ॥ १॥
अहं केतुरहं मूर्धाहमुग्रा विवाचनी ।
ममेदनु क्रतुं पतिः सेहानाया उपाचरेत् ॥ २॥
मम पुत्राः शत्रुहणोऽथो मे दुहिता विराट् ।
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः॥ ३॥
येनेन्द्रो हविषा कृत्व्यभवद् द्युम्न्युत्तमः ।
इदं तदक्रि देवा असपत्ना किलाभुवम् ॥ ४॥
असपत्ना सपत्नघ्नी जयन्त्यभिभूवरी ।
आवृक्षमन्यासां वर्चो राधो अस्थेयसामिव ॥ ५॥
समजैषमिमा अहं सपत्नीरभिभूवरी ।
यथाहमस्य वीरस्य विराजानि जनस्य च ॥ ६॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१६०] षष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पूरणो वैश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, ३ त्रिष्टुप्; २ पादनिचृत्त्रिष्टुप्; ४, ५ विराट्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथाष्टादशो वर्गः॥ १८॥

तीव्रस्याभिवयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरी इह मुञ्च।
इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमन्तुभ्यमिमे सुतासः॥ १॥
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वासस्त्वां गिरः श्वात्र्या आ ह्वयन्ति।
इन्द्रेदमद्य सवनं जुषाणो विश्वस्य विद्वाँ इह पाहि सोमम्॥ २॥
य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति।
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति॥ ३॥
अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान्न सुनोति सोमम्।
निररत्नौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः॥ ४॥
अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोपगन्तवा उ।
आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम॥ ५॥

[१६१] एकषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—यक्ष्मनाशनः प्राजापत्यः॥ देवता—राजयक्ष्मघ्नम्॥ छन्दः—१, ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ५ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१-४ धैवतः; ५ गान्धारः॥

अथैकोनविंशो वर्गः॥ १९॥

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय कमज्ञातयक्ष्मादुत राजयक्ष्मात्।
ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्॥ १॥
यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव।
तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्थादस्पार्षमेनं शतशारदाय॥ २॥
सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषाहार्षमेनम्।
शतं यथेमं शरदो नयातीन्द्रो विश्वस्य दुरितस्य पारम्॥ ३॥
शतं जीव शरदो वर्धमानः शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्।
शतमिन्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेमं पुनर्दुः॥ ४॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आहार्षं त्वाविदं त्वा पुनरागाः पुनर्नव ।
सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ॥ ५ ॥

[१६२] द्विषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—रक्षोहा ब्राह्मः ॥ देवता—गर्भसंस्रावे प्रायश्चित्तम् ॥ छन्दः—१, २, ४ निचृदनुष्टुप्; ३, ५, ६ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ विंशो वर्गः ॥ २० ॥

ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः ।
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये ॥ १ ॥
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये ।
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत् ॥ २ ॥
यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्स्नुं यः सरीसृपम् ।
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ ३ ॥
यस्त ऊरू विहरत्यन्तरा दम्पती शये ।
योनिं यो अन्तरारेळिह तमितो नाशयामसि ॥ ४ ॥
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ ५ ॥
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि ॥ ६ ॥

[१६३] त्रिषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विवृहा काश्यपः ॥ देवता—यक्ष्मघ्नम् ॥ छन्दः—१, ६ अनुष्टुप्; २-५ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथैकविंशो वर्गः ॥ २१ ॥

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया वि वृहामि ते ॥ १ ॥
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् ।
यक्ष्मं दोषण्यं मंसाभ्यां बाहुभ्यां वि वृहामि ते ॥ २ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोर्हृदयादधि ।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां यक्नः प्लाशिभ्यो वि वृहामि ते ॥ ३ ॥
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद्भ्यां पार्ष्णीभ्यां प्रपदाभ्याम् ।
यक्ष्मं श्रोणिभ्यां भासदाद्भंससो वि वृहामि ते ॥ ४ ॥
मेहनाद्वनंकरणाल्लोमभ्यस्ते नखेभ्यः ।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते ॥ ५ ॥
अङ्गादङ्गाल्लोम्नोलोम्नो जातं पर्वणिपर्वणि ।
यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं वि वृहामि ते ॥ ६ ॥

[१६४] चतुःषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रचेताः ॥ देवता—दुःस्वप्नघ्नम् ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ आर्चीभुरिक्त्रिष्टुप्; ४ विराडनुष्टुप्; ५ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः; ३ धैवतः; ५ पञ्चमः ॥

अथ द्वाविंशो वर्गः ॥ २२ ॥

अपेहि मनसस्पतेऽप क्राम परश्चर ।
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मनः ॥ १ ॥
भद्रं वै वरं वृणते भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम् ।
भद्रं वैवस्वते चक्षुर्बहुत्रा जीवतो मनः ॥ २ ॥
यदाशसा निःशसाभिशसोपारिम जाग्रतो यत्स्वपन्तः ।
अग्निर्विश्वान्यप दुष्कृतान्यजुष्टान्यारे अस्मद्दधातु ॥ ३ ॥
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पतेऽभिद्रोहं चरामसि ।
प्रचेता न आङ्गिरसो द्विषतां पात्वंहसः ॥ ४ ॥
अजैष्माद्यासनाम चाभूमानागसो वयम् ।
जाग्रत्स्वप्नः सङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ॥ ५ ॥

[१६५] पञ्चषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—कपोतो नैर्ऋतः ॥ देवता—कपोतापहतौ प्रायश्चित्तं वैश्वदेवम् ॥ छन्दः—१ स्वराट्त्रिष्टुप्; २, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; ४ भुरिक्त्रिष्टुप्; ५ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ त्रयोविंशो वर्गः ॥ २३ ॥

देवाः कपोत इषितो यदिच्छन्दूतो निर्ऋत्या इदमाजगाम।
तस्मा अर्चाम कृणवाम निष्कृतिं शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥ १ ॥
शिवः कपोत इषितो नो अस्त्वनागा देवाः शकुनो गृहेषु।
अग्निर्हि विप्रो जुषतां हविर्नः परि हेतिः पक्षिणी वृणक्तु ॥ २ ॥
हेतिः पक्षिणी न दभात्यस्मानाष्ट्र्यां पदं कृणुते अग्निधाने।
शं नो गोभ्यश्च पुरुषेभ्यश्चास्तु मा नो हिंसीदिह देवाः कपोतः ॥ ३ ॥
यदुलूको वदति मोघमेतद्यत्कपोतः पदमग्नौ कृणोति।
यस्य दूतः प्रहित एष एतत्तस्मै यमाय नमो अस्तु मृत्यवे ॥ ४ ॥
ऋचा कपोतं नुदत प्रणोदमिषं मदन्तः परि गां नयध्वम्।
संयोपयन्तो दुरितानि विश्वा हित्वा न ऊर्जं प्र पतात्पतिष्ठः ॥ ५ ॥

[१६६] षट्षष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ऋषभो वैराजः शाक्वरो वा ॥ देवता—सपत्नघ्नम् ॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३, ४ निचृदनुष्टुप्; ५ महापङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-४ गान्धारः; ५ पञ्चमः ॥

अथ चतुर्विंशो वर्गः ॥ २४ ॥

ऋषभं मा समानानां सपत्नानां विषासहिम् ।
हन्तारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम् ॥ १ ॥
अहमस्मि सपत्नहेन्द्र इवारिष्टो अक्षतः ।
अधः सपत्ना मे पदोरिमे सर्वे अभिष्ठिताः ॥ २ ॥
अत्रैव वोऽपि नह्याम्युभे आर्त्नीइव ज्यया ।
वाचस्पते नि षेधेमान्यथा मदधरं वदान् ॥ ३ ॥
अभिभूरहमागमं विश्वकर्मेण धाम्ना ।
आ वश्चित्तमा वो व्रतमा वोऽहं समितिं ददे ॥ ४ ॥
योगक्षेमं व आदायाहं भूयासमुत्तम आ वो मूर्धानमक्रमीम्।
अधस्पदान्म उद्वदत मण्डूकाइवोदकान्मण्डूका उदकादिव ॥ ५ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१६७] सप्तषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विश्वामित्रजमदग्नी॥ देवता—१, २, ४ इन्द्रः; ३ लिङ्गोक्ताः॥ छन्दः—१ आर्चीस्वराड्-जगती; २, ४ विराड्जगती; ३ जगती॥ स्वरः—निषादः॥

अथ पञ्चविंशो वर्गः॥ २५॥

तुभ्येदमिन्द्र परि षिच्यते मधु त्वं सुतस्य कलशस्य राजसि।
त्वं रयिं पुरुवीरामु नस्कृधि त्वं तपः परितप्याजयः स्वः॥ १॥
स्वर्जितं महि मन्दानमन्धसो हवामहे परि शक्रं सुताँ उप।
इमं नो यज्ञमिह बोध्या गहि स्पृधो जयन्तं मघवानमीमहे॥ २॥
सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मणि।
तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातर्विधातः कलशाँ अभक्षयम्॥ ३॥
प्रसूतो भक्षमकरं चरावपि स्तोमं चेमं प्रथमः सूरिरुन्मृजे।
सुते सातेन यद्यागमं वां प्रति विश्वामित्रजमदग्नी दमे॥ ४॥

[१६८] अष्टषष्ट्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अनिलो वातायनः॥ देवता—वायुः॥ छन्दः—१, ३ निचृत्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ षड्विंशो वर्गः॥ २६॥

वातस्य नु महिमानं रथस्य रुजन्नेति स्तनयन्नस्य घोषः।
दिविस्पृग्यात्यरुणानि कृण्वन्नुतो एति पृथिव्या रेणुमस्यन्॥ १॥
सं प्रेरते अनु वातस्य विष्ठा एनं गच्छन्ति समनं न योषाः।
ताभिः सयुक्सरथं देव ईयतेऽस्य विश्वस्य भुवनस्य राजा॥ २॥
अन्तरिक्षे पथिभिरीयमानो न नि विशते कतमच्चनाहः।
अपां सखा प्रथमजा ऋतावा क्व स्विज्जातः कुत आ बभूव॥ ३॥
आत्मा देवानां भुवनस्य गर्भो यथावशं चरति देव एषः।
घोषा इदस्य शृण्विरे न रूपं तस्मै वाताय हविषा विधेम॥ ४॥

[१६९] एकोनसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—शबरः काक्षीवतः॥ देवता—गावः॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २, ४ त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सप्तविंशो वर्गः ॥ २७ ॥

मयोभूर्वातो अभि वातूस्रा ऊर्जस्वतीरोषधीरा रिशन्ताम् ।
पीवस्वतीर्जीवधन्याः पिबन्त्ववसाय पद्वते रुद्र मृळ ॥ १ ॥
याः सरूपा विरूपा एकरूपा यासामग्निरिष्ट्या नामानि वेद ।
या अङ्गिरस्तपसेह चक्रुस्ताभ्यः पर्जन्य महि शर्म यच्छ ॥ २ ॥
या देवेषु तन्वमैरयन्त यासां सोमो विश्वा रूपाणि वेद ।
ता अस्मभ्यं पयसा पिन्वमानाः प्रजावतीरिन्द्र गोष्ठे रिरीहि ॥ ३ ॥
प्रजापतिर्मह्यमेता रराणो विश्वैर्देवैः पितृभिः संविदानः ।
शिवाः सतीरुप नो गोष्ठमाकस्तासां वयं प्रजया सं सदेम ॥ ४ ॥

[१७०] सप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—विभ्राट् सूर्यः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—१, ३ विराड्जगती; २ जगती; ४ आस्तारपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-३ निषादः; ४ पञ्चमः ॥

अथाष्टाविंशो वर्गः ॥ २८ ॥

विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविंहुतम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति ॥ १ ॥
विभ्राड् बृहत्सुभृतं वाजसातमं धर्मन्दिवो धरुणे सत्यमर्पितम् ।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहंतमं ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा ॥ २ ॥
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद्धनजिदुच्यते बृहत् ।
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम् ॥ ३ ॥
विभ्राजञ्ज्योतिषा स्वरगच्छो रोचनं दिवः ।
येनेमा विश्वा भुवनान्याभृता विश्वकर्मणा विश्वदेव्यावता ॥ ४ ॥

[१७१] एकसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—इटो भार्गवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री; २, ४ विराड्गायत्री; ३ पादनिचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथैकोनत्रिंशो वर्गः ॥ २९ ॥

त्वं त्यमिटतो रथमिन्द्र प्रावः सुतावतः । अशृणोः सोमिनो हवम् ॥ १ ॥
त्वं मखस्य दोधतः शिरोऽव त्वचो भरः । अगच्छः सोमिनो गृहम् ॥ २ ॥
त्वं त्यमिन्द्र मर्त्यमास्त्रबुध्नाय वेन्यम् । मुहुः श्रथ्ना मनस्यवे ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं त्यमिन्द्र सूर्यं पश्चा सन्तं पुरस्कृधि। देवानां चित्तिरो वशम्॥ ४॥

[१७२] द्विसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—संवर्तः॥ देवता—उषाः॥ छन्दः—द्विपदा विराट्॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ त्रिंशो वर्गः॥ ३०॥

आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः॥ १॥
आ याहि वस्व्या धिया मंहिष्ठो जार्यन्मखः सुदानुभिः॥ २॥
पितुभृतो न तन्तुमित्सुदानवः प्रति दध्मो यजामसि ॥ ३॥
उषा अप स्वसुस्तमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ॥ ४॥

[१७३] त्रिसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ध्रुवः॥ देवता—राज्ञःस्तुतिः॥ छन्दः—१, ३-५ अनुष्टुप्; २ भुरिगनुष्टुप्; ६ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथैकत्रिंशो वर्गः॥ ३१॥

आ त्वाहार्षमन्तरेधि ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः ।
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत्॥ १॥
इहैवैधि माप च्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः।
इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठेह राष्ट्रमु धारय ॥ २॥
इममिन्द्रो अदीधरद् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ।
तस्मै सोमो अधि ब्रवत्तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः॥ ३॥
ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे ।
ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्॥ ४॥
ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः ।
ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम् ॥ ५॥
ध्रुवं ध्रुवेण हविषाभि सोमं मृशामसि ।
अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्॥ ६॥

[१७४] चतुःसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अभीवर्तः॥ देवता—राज्ञःस्तुतिः॥ छन्दः—१, ५ निचृदनुष्टुप् २, ३ विराडनुष्टुप्; ४ पादनिचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वात्रिंशो वर्गः ॥ ३२ ॥

अभीवर्तेन हविषा येनेन्द्रो अभिवावृते ।
तेनास्मान्ब्रह्मणस्पतेऽभि राष्ट्राय वर्तय ॥ १ ॥
अभिवृत्य सपत्नानभि या नो अरातयः ।
अभि पृतन्यन्तं तिष्ठाभि यो न इरस्यति ॥ २ ॥
अभि त्वा देवः सविताभि सोमो अवीवृतत् ।
अभि त्वा विश्वा भूतान्यभीवर्तो यथाससि ॥ ३ ॥
येनेन्द्रो हविषा कृत्व्यभवद् द्युम्न्युत्तमः ।
इदं तदक्रि देवा असपत्नः किलाभुवम् ॥ ४ ॥
असपत्नः सपत्नहाभिराष्ट्रो विषासहिः ।
यथाहमेषां भूतानां विराजानि जनस्य च ॥ ५ ॥

[१७५] पञ्चसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—ऊर्ध्वग्रावार्बुदः ॥ देवता—ग्रावाणः ॥ छन्दः—१, २, ४ गायत्री; ३ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रयस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३३ ॥

प्र वो ग्रावाणः सविता देवः सुवतु धर्मणा । धूर्षु युज्यध्वं सुनुत ॥ १ ॥
ग्रावाणो अप दुच्छुनामप सेधत दुर्मतिम् । उस्राः कर्तन भेषजम् ॥ २ ॥
ग्रावाण उपरेष्वा महीयन्ते सजोषसः । वृष्णे दधतो वृष्ण्यम् ॥ ३ ॥
ग्रावाणः सविता नु वो देवः सुवतु धर्मणा । यजमानाय सुन्वते ॥ ४ ॥

[१७६] षट्सप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सूनुरार्भवः ॥ देवता—१ ऋभवः; २-४ अग्निः ॥ छन्दः—१, ४ विराडनुष्टुप्; २ निचृद्गायत्री; ३ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४ गान्धारः; २ षड्जः ॥

अथ चतुस्त्रिंशो वर्गः ॥ ३४ ॥

प्र सूनवे ऋभूणां बृहन्नवन्त वृजना ।
क्षामा ये विश्वधायसोऽशन्धेनुं न मातरम् ॥ १ ॥
प्र देवं देव्या धिया भरता जातवेदसम् ।
हव्या नो वक्षदानुषक् ॥ २ ॥
अयमु ष्य प्र देवयुर्होता यज्ञाय नीयते ।
रथो न योरभीवृतो घृणीवाञ्चेतति त्मना ॥ ३ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयमग्निरुरुष्यत्यमूताादिव जन्मनः ।
सहसश्चित्सहीयान्देवो जीवातवे कृतः ॥ ४ ॥

[१७७] सप्तसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—पतङ्गः प्राजापत्यः ॥ देवता—मायाभेदः ॥ छन्दः—१ जगती; २ विराट्त्रिष्टुप्; ३ निचृत्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ निषादः; २, ३ धैवतः ॥

अथ पञ्चत्रिंशो वर्गः ॥ ३५ ॥

पतङ्गमक्तमसुरस्य मायया हृदा पश्यन्ति मनसा विपश्चितः ।
समुद्रे अन्तः कवयो वि चक्षते मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः ॥ १ ॥
पतङ्गो वाचं मनसा बिभर्ति तां गन्धर्वोऽवदद्गर्भे अन्तः ।
तां द्योतमानां स्वर्यं मनीषामृतस्य पदे कवयो नि पान्ति ॥ २ ॥
अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम् ।
स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः ॥ ३ ॥

[१७८] अष्टसप्तत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अरिष्टनेमिस्तार्क्ष्यः ॥ देवता—तार्क्ष्यः ॥ छन्दः—१ विराट्त्रिष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथ षट्त्रिंशो वर्गः ॥ ३६ ॥

त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहावानं तरुतारं रथानाम् ।
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये तार्क्ष्यमिहा हुवेम ॥ १ ॥
इन्द्रस्येव रातिमाजोहुवानाः स्वस्तये नावमिवा रुहेम ।
उर्वी न पृथ्वी बहुले गभीरे मा वामेतौ मा परेतौ रिषाम ॥ २ ॥
सद्यश्चिद्यः शवसा पञ्च कृष्टीः सूर्य इव ज्योतिषापस्ततान ।
सहस्रसाः शतसा अस्य रंहिर्न स्मा वरन्ते युवतिं न शर्याम् ॥ ३ ॥

[१७९] एकोनाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१ शिबिरौशीनरः; २ प्रतर्दनः काशिराजः; ३ वसुमना रौहिदश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ निचृदनुष्टुप्; २ निचृत्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २, ३ धैवतः ॥

अथ सप्तत्रिंशो वर्गः ॥ ३७ ॥

उत्तिष्ठताव पश्यतेन्द्रस्य भागमृत्वियम् ।
यदि श्रातो जुहोतन यद्यश्रातो ममत्तन ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रातं हविरो ष्विन्द्र प्र याहि जगाम् सूरो अध्वनो विमध्यम्।
परि त्वासते निधिभिः सखायः कुलपा न व्राजपतिं चरन्तम्॥ २॥
श्रातं मन्य ऊधनि श्रातमग्नौ सुश्रातं मन्ये तदृतं नवीयः।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य दध्नः पिबेन्द्र वज्रिन्पुरुकृज्जुषाणः॥ ३॥

[१८०] अशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—जयः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१, २ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथाष्टात्रिंशो वर्गः॥ ३८॥

प्र ससाहिषे पुरुहूत शत्रूञ्ज्येष्ठस्ते शुष्म इह रातिरस्तु।
इन्द्रा भर दक्षिणेना वसूनि पतिः सिन्धूनामसि रेवतीनाम्॥ १॥
मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः।
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताळ्हि वि मृधो नुदस्व॥ २॥
इन्द्र क्षत्रमभि वाममोजोऽजायथा वृषभ चर्षणीनाम्।
अपानुदो जनममित्रयन्तमुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम्॥ ३॥

[१८१] एकाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—१ प्रथो वासिष्ठः; २ सप्रथो भारद्वाजः; ३ घर्मः सौर्यः॥ देवता—विश्वे देवाः॥
छन्दः—१ निचृत्त्रिष्टुप्; २ त्रिष्टुप्; ३ पादनिचृत्त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथैकोनचत्वारिंशो वर्गः॥ ३९॥

प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामानुष्टुभस्य हविषो हविर्यत्।
धातुर्द्युतानात्सवितुश्च विष्णोः रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः॥ १॥
अविन्दन्ते अतिहितं यदासीद्यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत्।
धातुर्द्युतानात्सवितुश्च विष्णोर्भरद्वाजो बृहदा चक्रे अग्नेः॥ २॥
तेऽविन्दन्मनसा दीध्याना यजुःष्कृन्नं प्रथमं देवयानम्।
धातुर्द्युतानात्सवितुश्च विष्णोरा सूर्यादभरन्घर्ममेते॥ ३॥

[१८२] द्व्यशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—तपुर्मूर्धा बार्हस्पत्यः॥ देवता—बृहस्पतिः॥ छन्दः—१ भुरिक्त्रिष्टुप्;
२ विराट्त्रिष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

अथ चत्वारिंशो वर्गः॥ ४०॥

बृहस्पतिर्नयतु दुर्गहा तिरः पुनर्नेषद्यशंसाय मन्म।
क्षिपदश्स्तिमप दुर्मतिं हन्नथा करद्यजमानाय शं योः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नराशंसो नोऽवतु प्रयाजे शं नो अस्त्वनुयाजो हवेषु ।
क्षिपदश॑स्तिमप दुर्मतिं हन्नथा कर॒द्यज॑मानाय॒ शं योः ॥ २ ॥
तपुर्मूर्धा तपतु रक्षसो ये ब्रह्मद्विषः शरवे॒ हन्त॒वा उ॑ ।
क्षिपदश॑स्तिमप दुर्मतिं हन्नथा कर॒द्यज॑मानाय॒ शं योः ॥ ३ ॥

[१८३] त्र्यशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—प्रजावान्प्राजापत्यः ॥ देवता—अन्वृचं यजमानयजमानपत्नीहोत्राशिषः ॥
छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २, ३ विराट्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

अथैकचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४१ ॥

अप॑श्यं त्वा॒ मन॑सा॒ चेकि॑तान॒ं तप॑सो जा॒तं तप॑सो॒ विभू॑तम् ।
इ॒ह प्र॒जामि॒ह र॒यिं रराण॒ः प्र जा॑यस्व प्र॒जया॑ पुत्रकाम ॥ १ ॥
अप॑श्यं त्वा॒ मन॑सा॒ दीध्या॑नां॒ स्वायां॑ त॒नू ऋत्व्ये॒ नाध॑मानाम् ।
उप॒ मामुच्चा यु॑व॒तिर्भू॑या॒ः प्र जा॑यस्व प्र॒जया॑ पुत्रकामे ॥ २ ॥
अ॒हं गर्भ॑मदधा॒मोष॑धीष्व॒हं विश्वे॑षु भुव॒नेष्व॒न्तः ।
अ॒हं प्र॒जा अ॑जनयं पृथि॒व्याम॒हं जनि॑भ्यो अप॒रीषु॑ पु॒त्रान् ॥ ३ ॥

[१८४] चतुरशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—त्वष्टा गर्भकर्ता विष्णुर्वा प्राजापत्यः ॥ देवताः—लिङ्गोक्ताः (गर्भार्थाशीः) ॥
छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ निचृदनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

अथ द्वाचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४२ ॥

विष्णु॒र्योनिं॑ कल्पयतु त्वष्टा॑ रू॒पाणि॑ पिंशतु ।
आ सि॑ञ्चतु प्र॒जाप॑तिर्धा॒ता गर्भं॑ दधातु ते ॥ १ ॥
गर्भं॑ धेहि सिनीवालि॒ गर्भं॑ धेहि सरस्वति ।
गर्भं॑ ते अ॒श्विनौ॑ दे॒वावा धत्ता॑ं पुष्करस्र॒जा ॥ २ ॥
हि॒र॒ण्ययी॑ अ॒रणी॒ यं नि॒र्मन्थ॑तो अ॒श्विना॑ ।
तं ते॒ गर्भं॑ हवामहे दश॒मे मा॒सि सू॒तवे॑ ॥ ३ ॥

[१८५] पञ्चाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सत्यधृतिर्वारुणिः ॥ देवता—अदितिः (स्वस्त्ययनम्) ॥ छन्दः—१, ३ विराड्गायत्री; २ निचृद्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

अथ त्रिचत्वारिंशो वर्गः ॥ ४३ ॥

महि॑ त्री॒णामवो॑ऽस्तु द्यु॒क्षं मि॒त्रस्यार्य॒म्णः । दु॒राध॑र्षं॒ वरु॑णस्य ॥ १ ॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु। ईशे रिपुरघशंसः॥ २॥
यस्मै पुत्रासो अदितेः प्र जीवसे मर्त्याय। ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्॥ ३॥

[१८६] षडशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—उलो वातायनः॥ देवता—वायुः॥ छन्दः—१, २ गायत्री;
३ निचृद्गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ चतुश्चत्वारिंशो वर्गः॥ ४४॥

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे। प्र ण आयूँषि तारिषत्॥ १॥
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि॥ २॥
यददो वात ते गृहेऽमृतस्य निधिर्हितः। ततो नो देहि जीवसे॥ ३॥

[१८७] सप्ताशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—वत्स आग्नेयः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री;
२-५ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ पञ्चचत्वारिंशो वर्गः॥ ४५॥

प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम्। स नः पर्षदति द्विषः॥ १॥
यः परस्याः परावतस्तिरो धन्वातिरोचते। स नः पर्षदति द्विषः॥ २॥
यो रक्षांसि निजूर्वति वृषा शुक्रेण शोचिषा। स नः पर्षदति द्विषः॥ ३॥
यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति। स नः पर्षदति द्विषः॥ ४॥
यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत। स नः पर्षदति द्विषः॥ ५॥

[१८८] अष्टाशीत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—श्येन आग्नेयः॥ देवता—अग्निर्जातवेदाः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ षट्चत्वारिंशो वर्गः॥ ४६॥

प्र नूनं जातवेदसमश्वं हिनोत वाजिनम्। इदं नो बर्हिरासदे॥ १॥
अस्य प्र जातवेदसो विप्रवीरस्य मीळ्हुषः। महीमियर्मि सुष्टुतिम्॥ २॥
या रुचो जातवेदसो देवत्रा हव्यवाहनीः। ताभिर्नो यज्ञमिन्वतु॥ ३॥

[१८९] एकोननवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—सार्पराज्ञी॥ देवता—सार्पराज्ञी सूर्यो वा॥ छन्दः—१ निचृद्गायत्री;
२ विराड्गायत्री; ३ गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

अथ सप्तचत्वारिंशो वर्गः॥ ४७॥

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ १॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्॥ २॥
त्रिंशद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः॥ ३॥

[१९०] नवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—अघमर्षणो माधुच्छन्दसः॥ देवता—भाववृत्तम्॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ पादनिचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

अथाष्टचत्वारिंशो वर्गः॥ ४८॥

ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥ १॥
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ २॥
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥ ३॥

[१९१] एकनवत्युत्तरशततमं सूक्तम्

ऋषिः—संवननः॥ देवता—१ अग्निः; २-४ संज्ञानम्॥ छन्दः—१ विराडनुष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ त्रिष्टुप्; ४ निचृदनुष्टुप्॥ स्वरः—१, २, ४ गान्धारः; ३ धैवतः॥

अथैकोनपञ्चाशो वर्गः॥ ४९॥

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥ १॥
सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥ २॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥ ३॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥ ४॥

इत्यष्टमाष्टकेऽष्टमोऽध्यायः॥
इति दशमं मण्डलम्॥
इति ऋग्वेदसंहिता॥

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

ऋग्वेद-मन्त्रानुक्रम-सूची

अकर्म ते स्वपसो	४.२.१९	अग्निना तुर्वशं यदुं	१.३६.१८	अग्निर्देवो देवानामभवत्	१०.१५०.४
अकर्मा दस्युरभि	१०.२२.८	अग्निना रयिमश्नवत्	१.१.३	अग्निर्द्यावापृथिवी	३.२५.३
अकारि त इन्द्र	१.६३.९	अग्निनेन्द्रेण वरुणेन	८.३५.१	अग्निर्धिया स चेतति	३.११.३
अकारि ब्रह्म	४.६.११	अग्निमग्निं वःसमिधा	६.१५.६	अग्निर्न ये भ्राजसा	१०.७८.२
अकारि वामन्थसो	६.६३.३	अग्निमग्निं वो अश्विगुं	८.६०.१७	अग्निर्न यो वन आ	९.८८.५
अक्रन्ददग्निः स्तनयन्	१०.४५.४	अग्निमग्निं हवीमभिः	१.१२.२	अग्निर्न शुष्कं वनं	६.१८.१०
अक्रविहस्ता सुकृते	५.६२.६	अग्निमच्छा देवयतां	५.१.४	अग्निर्नेता भगइव	३.२०.४
अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे	९.९७.४०	अग्निमस्तोश्यृग्मियं	८.३९.१	अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु	५.११.४
अक्रो न बभ्रिः	३.१.१२	अग्निमिन्धानो मनसा	८.१०२.२२	अग्निर्मूर्धा दिवः	८.४४.१६
अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः	१०.७१.७	अग्निमीळिष्वावसे	८.७१.१४	अग्निर्वन्ने सुवीर्यम्	१.३६.१७
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव	१.८२.२	अग्निमीळेन्यं कविम्	५.१४.५	अग्निर्वृत्राणि जङ्घनत्	६.१६.३४
अक्षानहो नह्यतनोत	१०.५३.७	अग्निमीळे पुरोहितम्	१.१.१	अग्निर्ह त्यं जरतः	१०.८०.३
अक्षास इदङ्कुशिनः	१०.३४.७	अग्निमीळे भुजां	१०.२०.२	अग्निर्ह नाम धायि	१०.११५.२
अक्षितोतिः सनेदिमं	१.५.९	अग्निमुक्थैर्ऋषयः	१०.८०.५	अग्निर्हि जानि पूर्व्यः	८.७.३६
अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां	१०.१६३.१	अग्निमुषसमश्विना	३.२०.१	अग्निर्हि वाजिनं	५.६.३
अक्षेत्रवित्क्षेत्रविदं	१०.३२.७	अग्निरत्रिं भरद्वाजम्	१०.१५०.५	अग्निर्हि विद्मना	६.१४.५
अक्षैर्मा दीव्यः	१०.३४.१३	अग्निरप्सामृतीषहं	६.१४.४	अग्निर्होता कविक्रतुः	१.१.५
अक्षोदयच्छवसा क्षाम	४.१९.४	अग्निरस्मि जन्मना	३.२६.७	अग्निर्होता गृहपतिः	६.१५.१३
अक्षो न चक्र्योः	६.२४.३	अग्निरिद्धि प्रचेता	६.१४.२	अग्निर्होता दास्वतः	५.९.२
अक्ष्णश्चिद्गातुवित्तरा	८.२५.९	अग्निरिन्द्रो वरुणो	१०.६५.१	अग्निर्होता नो अध्वरे	४.१५.१
अगच्छतं कृपमाणं	१.११९.८	अग्निरिव मन्यो	१०.८४.२	अग्निर्होता न्यसीदत्	५.१.६
अगच्छदु विप्रतमः	३.३१.७	अग्निरिषां सख्ये ददातु	८.७१.१३	अग्निर्होता पुरोहितो	३.११.१
अगन्निन्द्र श्रवो बृहत्	३.३७.१०	अग्निरीशे बृहतः क्षत्रियस्य	४.१२.३	अग्निश्च यन्मरुतो	५.६०.७
अगन्म महा नमसा	७.१२.१	अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्य	७.११.४	अग्निश्रियो मरुतो	३.२६.५
अगव्यूति क्षेत्रमागन्म	६.४७.२०	अग्निरीशे वसव्यस्य	४.५५.८	अग्निष्वात्ताः पितरः	१०.१५.११
अगस्त्यः खनमानः	१.१७९.६	अग्निरुक्थे पुरोहितः	८.२७.१	अग्निस्तिग्मेन शोचिषा	६.१६.२८
अगस्त्यस्य नद्भ्यः	१०.६०.६	अग्निर्ऋषिः पवमानः	९.६६.२०	अग्निस्तुविश्रवस्तमं	५.२५.५
अगोरुधाय गविषे	८.२४.२०	अग्निर्जज्ञे जुह्वा३ रेजमानः	३.३१.३	अग्निस्त्रीणि त्रिधातूनि	८.३९.९
अग्र आ याहि	६.१६.१०	अग्निर्जागारः तमृचः	५.४४.१५	अग्निं घृतेन वावृधुः	५.१४.६
अग्र आ याह्यग्निभिः	८.६०.१	अग्निर्जाता देवानां	८.३९.६	अग्निं तं मन्ये यो	५.६.१
अग्र आयूंषि पवसे	९.६६.१९	अग्निर्जातो अथर्वणः	१०.२१.५	अग्निं दूतं पुरो	८.४४.३
अग्न इळा समिध्यसे	३.२४.२	अग्निर्जातो अरोचतः	५.१४.४	अग्निं दूतं प्रति	१.१६१.३
अग्र इन्द्र वरुण	५.४६.२	अग्निर्जुषत नो गिरः	५.१३.३	अग्निं दूतं वृणीमहे	१.१२.१
अग्र इन्द्रश्च दाशुषो	३.२५.४	अग्निर्ददाति सत्पतिं	५.२५.६	अग्निं देवासो अग्रियं	६.१६.४८
अग्र ओजिष्ठमा	५.१०.१	अग्निर्दाद् द्रविणं	१०.८०.४	अग्निं देवासो मानुषीषु	२.४.३
अग्नये ब्रह्म ऋभवः	१०.८०.७	अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च	३.३.६	अग्निं द्वेषो योतवै नो	८.७१.१५
अग्रा यो मर्त्यो	६.१४.१	अग्निर्देवेषु राजति	५.२५.४	अग्निं धीभिर्मणीषिणः	८.४३.१९
अग्निनाग्निः समिध्यते	१.१२.६.	अग्निर्देवेषु संवसुः	८.३९.७	अग्निं न मा मथितं	८.४८.६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निं नरो दीधितिभिः ७.१.१
अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं ८.४३.३१
अग्निं मन्ये पितरम् १०.७.३
अग्निं यन्तुरम् ३.२७.११
अग्निं वर्धन्तु नो गिरः ३.१०.६
अग्निं वः पूर्व्यं गिरा ८.३१.१४
अग्निं वः पूर्व्यं हुवे ८.२३.७
अग्निं विश ईळते १०.८०.६
अग्निं विश्वा अभि १.७१.७
अग्निं विश्वायुवेपसं ८.४३.२५
अग्निं वो देवमग्निभिः ७.३.१
अग्निं वो देवयज्यया ८.७१.१२
अग्निं वो वृधन्तं ८.१०२.७
अग्निं सुदीतिं सुदृशं ३.१७.४
अग्निं सुम्नाय दधिरे ३.२.५
अग्निं सनूं सनश्रुतं ३.११.४
अग्निं सूनूं सहसो ८.७१.११
अग्निं स्तोमेन योधय ५.१४.१
अग्निं हिन्वन्तु नो १०.१५६.१
अग्निं होतारमीळते १.१२८.८
अग्निं होतारं प्र वृणे ३.१९.१
अग्निं होतारं मन्ये १.१२७.१
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिः १.१.२
अग्निः प्रत्नेन मन्मना ८.४४.१२
अग्निः शुचिव्रततमः ८.४४.२१
अग्निः सनोति वीर्याणि ३.२५.२
अग्निः ससिं वाजं १०.८०.१
अग्नीपर्जन्याववतं ६.५२.१६
अग्नी रक्षांसि सेधति ७.१५.१०
अग्नीषोमा चेति तद् १.९३.४
अग्नीषोमा पिपृतम् १.९३.१२
अग्नीषोमा य आहुतिं १.९३.३
अग्नीषोमा यो अद्य वां १.९३.२
अग्नीषोमावनेन १.९३.१०
अग्नीषोमाविमं १.९३.१
अग्नीषोमाविमानि नो १.९३.११
अग्नीषोमा वृषणा १०.६६.७
अग्नीषोमा सवेदसा १.९३.९
अग्नीषोमा हविषः १.९३.७
अग्ने अच्छा वदेह नः १०.१४१.१
अग्ने अपां समिध्यसे ३.२५.५
अग्ने कदा त आनुषक् ४.७.२
अग्ने कविर्वेधा असि ८.६०.३
अग्ने केतुर्विशामसि १०.१५६.५
अग्ने घृतस्य धीतिभिः ८.१०२.१६
अग्ने चिकिद्ध्यस्य ५.२२.४
अग्ने जरस्व स्वपत्य ३.३.७
अग्ने जरितर्विश्पतिः ८.६०.१९
अग्ने जुषस्व नो हविः ३.२८.१
अग्ने जुषस्व प्रति १.१४४.७
अग्ने तमद्याश्वं न ४.१०.१
अग्ने तव त्यदुक्थ्यम् १.१०५.१३
अग्ने तव त्ये अजर ८.२३.११
अग्ने तव श्रवो १०.१४०.१
अग्ने तृतीये सवने हि ३.२८.५
अग्ने त्री ते वाजिना ३.२०.२
अग्ने त्वचं यातुधानस्य १०.८७.५
अग्ने त्वमस्मद्युयोधि १.१८९.३
अग्ने त्वं नो अन्तमः ५.२४.१
अग्ने त्वं पारया नव्यः १.१८९.२
अग्ने त्वं यशा ८.२३.३०
अग्ने दा दाशुषे ३.२४.५
अग्ने दिवः सूनुरसि ३.२५.१
अग्ने दिवो अर्णमच्छा ३.२२.३
अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानः १.१२.३
अग्ने देवाँ इहा वह सादया १.१५.४
अग्ने द्युम्नेन जागृवे ३.२४.३
अग्ने धृतव्रताय ते ८.४४.२५
अग्ने नक्षत्रमजरं १०.१५६.४
अग्ने नय सुपथा १.१८९.१
अग्ने नि पाहि नस्त्वं ८.४४.११
अग्ने नेमिरराँइव ५.१३.६
अग्ने पत्नीरिहा वह १.२२.९
अग्ने पवस्व स्वपाः ९.६६.२१
अग्ने पावक रोचिषा ५.२६.१
अग्ने पूर्वा अनूषसो १.४४.१०
अग्ने बाधस्व वि १०.९८.१२
अग्ने भव सुषमिधा ७.१७.१
अग्ने भूरीणि तव ३.२०.३
अग्ने भ्रातः सहस्कृत ८.४३.१६
अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं ८.३९.३
अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् १०.१२८.६
अग्ने मरुद्भिः शुभयद्भिः ५.६०.८
अग्ने माकिष्टे देवस्य ८.७१.८
अग्ने मळ महाँ असि ४.९.१
अग्ने यजस्व हविषा २.९.४
अग्ने यजिष्ठो अध्वरे ३.१०.७
अग्ने यत्ते दिवि वर्चः ३.२२.२
अग्ने यदद्य विशो ६.१५.१४
अग्ने यं यज्ञमध्वरं १.१.४
अग्ने याहि दूत्यं ७.९.५
अग्ने याहि सुशस्तिभिः ८.२३.६
अग्ने युक्ष्वा हि ये ६.१६.४३
अग्ने रक्षा णो ७.१५.१३
अग्नेरप्रसः समिदस्तु १०.८०.२
अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य २.८.६
अग्नेर्गायत्र्यभवत् १०.१३०.४
अग्नेर्वर्म परिगोभिः १०.१६.७
अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां १.२४.२
अग्ने वाजस्य गोमतः १.७९.४
अग्ने विवस्वदुषसः १.४४.१
अग्ने विश्वानि वार्या ३.११.९
अग्ने विश्वेभिः स्वनीक ६.१५.१६
अग्ने विश्वेभिरग्निभिः ३.२४.४
अग्ने विश्वेभिरा गहि ५.२६.४
अग्ने वीहि पुरोळाशं ३.२८.३
अग्ने वीहि हविषा ७.१७.३
अग्ने वृधान आहुतिं ३.२८.६
अग्ने शकेम ते वयं ३.२७.३
अग्ने शर्धन्तमा गणं ५.५६.१
अग्ने शर्ध महते सौभगाय ५.२८.३
अग्ने शुक्रेण शोचिषा १.१२.१२
अग्ने शुक्रेण शोचिषोरु १०.२१.८
अग्ने स क्षेषदृतपा ६.३.१
अग्ने सहन्तमा भर ५.२३.१
अग्ने सहस्व पृतना ३.२४.१
अग्ने सुखतमे रथे १.१३.४
अग्ने सुतस्य पीतये ५.५१.१
अग्ने स्तोमं जुषस्व ८.४४.२
अग्ने हंसि न्यत्रिणं १०.११८.१
अग्नेः पूर्वे भ्रातरो १०.५१.६
अग्नेः स्तोमं मनामहे ५.१३.२
अग्रं पिबा मधूनां ४.४६.१
अग्रेगो राजाप्यस्त ९.८६.४५
अग्रे बृहन्नुषसामूर्ध्वो १०.१.१
अग्रे सिन्धूनां पवमानः ९.८६.१२
अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि १०.८५.४४
अघ्नते विष्णवे वयं ८.२५.१२
अङ्गादङ्गाल्लोम्नो १०.१६३.६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्गिरसो नः पितरः १०.१४.६
अङ्गिरस्वन्ता उत विष्णु ८.३५.१४
अङ्गिरोभिरा गहि १०.१४.५
अचिकित्वाञ्चिकितुषः १.१६४.६
अचिक्रदद् वृषा हरिः ९.२.६
अचित्ती यच्चकृमा ४.५४.३
अचेति दस्रा व्युना १.१३९.४
अचेति दिवो दुहिता ७.७८.४
अचेत्यग्निश्चिकितुः ८.५६.५
अचोदसो नो धन्वन्तु ९.७९.१
अच्छ ऋषे मारुतं ५.५२.१४
अच्छा कविं नृमणो ४.१६.९
अच्छा कोशं मधुः ९.६६.११
अच्छा गिरो मतयो ७.१०.३
अच्छा च त्वैना नमसा ८.२१.६
अच्छा नः शीरशोचिषं ८.७१.१०
अच्छा नृचक्षा असरत् ९.९२.२
अच्छा नो अङ्गिरस्तमं ८.२३.१०
अच्छा नो मित्रमहो देव ६.२.११
६.१४.६
अच्छा नो याह्या ६.१६.४४
अच्छा म इन्द्रं १०.४३.१
अच्छा मही बृहती ५.४३.८
अच्छायं वो मरुतः ७.३६.९
अच्छा यो गन्ता ४.२९.४
अच्छा वद तवसं ५.८३.१
अच्छा वदा तना १.३८.१३
अच्छा विवक्मि ३.५७.४
अच्छा वो अग्निम् ५.२५.१
अच्छा वोचेय शुशुचानं ४.१.१९
अच्छा वो देवीम् ३.६१.५
अच्छा समुद्रमिन्दवः ९.६६.१२
अच्छा सिन्धुं मातृतमां ३.३३.३
अच्छा हि त्वा सहसः ८.६०.२
अच्छा हि सोमः ९.८१.२
अच्छिद्रा शर्म जरितः ३.१५.५
अच्छिद्रा सूनो सहसो १.५८.८
अच्युता चिद्वो अज्मन्ना ८.२०.५
अजा अन्यस्य वह्नयः ६.५७.३
अजातशत्रुमजरा स्वर्वती ५.३४.१
अजा वृत्त इन्द्र १.१७४.३
अजाश्वः पशुपा ६.५८.२
अजिरासस्तदप ईयमाना ५.४७.२
अजिरासो हरयो ८.४९.८
अजीजनन्नमृतं ३.२९.१३
अजीजनो अमृत ९.११०.४
अजीजनो हि पवमान ९.११०.३
अजीतयेऽहतये ९.९६.४
अजैष्माद्यासनाम--- उषो ८.४७.१८
अजैष्माद्यासनाम---जाग्रत् १०.१६४.५
अजो न क्षां दाधार १.६७.३
अजो भागस्तपसा १०.१६.४
अजोहवीदश्विना तौग्र्यो १.११७.१५
अजोहवीदश्विना वर्तिका १.११७.१६
अजोहवीन्नासत्या १.११६.१३
अज्येष्ठासो अकनिष्ठासः ५.६०.५
अञ्जे चिदस्मै कृणुथा ८.२७.१८
अञ्जते व्यञ्जते ८.८६.४३
अञ्जन्ति त्वामध्वरे ३.८.१
अञ्जन्ति यं प्रथयन्तो ५.४३.७
अञ्जन्त्येनं मध्वो ९.१०९.२०
अत उ त्वा पितुभृतः १०.१.४
अतप्यमाने अवसावन्ती १.१८५.४
अतश्चिदिन्द्र ण उपा ८.९२.१०
अतस्त्वा रयिमभि ९.४८.३
अतः परिज्मन्ना गहि १.६.९
अतः समुद्रमुद्वतः ८.६.२९
अतः सहस्रनिर्णिजा ८.८.११
अतारिषुर्भरता गव्यवः ३.३३.१२
अतारिष्म तमसस्पारमस्य १.१८३.६
१.१८४.६
अतारिष्म तम---प्रति स्तोमं ७.७३.१
अतारिष्म तमसस्पारमस्योषा १.९२.६
अतितृष्टं ववक्षिथा ३.९.३
अति त्री सोम रोचना ९.१७.५
अतिथिं मानुषाणां ८.२३.२५
अतिद्रव सारमेयौ १०.१४.१०
अति नः सश्चतो १.४२.७
अति नो विषिता ८.८३.३
अति वा यो मरुतो ६.५२.२
अति वायो ससतो १.१३५.७
अति वारान्पवमानो ९.६०.३
अतिविद्धा विथुरेणा ८.९६.२
अति विश्वाः परि १०.९७.१०
अति श्रिती तिरश्चता ९.१४.६
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां १.३२.१०
अतीदु शुक्र ओहत ८.६९.१४
अतीयाम निदस्तिरः ५.५३.१४
अतीहि मन्युषाविणं ८.३२.२१
अतृष्णुवन्तं वियतम् ४.१९.३
अतो देवा अवन्तु १.२२.१६
अतो न आ नूनतिथीन् ५.५०.३
अतो वयमन्तमेभिः १.१६५.५
अतो विश्वान्यद्भुता १.२५.११
अत्यं मृजन्ति कलशे ९.८५.७
अत्यं हविः सचते ५.४४.३
अत्यायातमश्विना ५.७५.२
अत्या वृधस्नू रोहिता ४.२.३
अत्यासो न ये ७.५६.१६
अत्या हियाना न ९.९३.६
अत्यू पवित्रमक्रमीत् ९.४५.४
अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः ९.१७.३
अत्यो न हियानो ९.८६.३
अत्रा ते रूपं १.१६३.७
अत्र वि नेमिरेषां ८.३४.३
अत्राह गोरमन्वत १.८४.१५
अत्राह तद् वहेथे १.१३५.८
अत्राह ते हरिवः ४.२२.७
अत्रिमनु स्वराज्यं २.८.५
अत्रिर्यद् वामवरोहन् ५.७८.४
अत्रीणां स्तोममद्रिवो ८.३६.६
अत्रेदु मे मंससे १०.२७.१०
अत्रेरिव शृणुतं ८.३५.१९
अत्रैव वोऽपि १०.१६६.३
अथा ते अङ्गिरस्तमा १.७५.२
अथा ते अन्तमानाम् १.४.३
अथा न उभयेषां १.२६.९
अदत्रया दयते ५.४९.३
अददा अर्भां महते १.५१.१३
अदब्ध इन्दो पवसे ९.८५.३
अदब्धस्य स्वधावतः ८.४४.२०
अदब्धेभिस्तव गोपाभिः ६.८.७
अदब्धेभिः सवितः ६. ७१.३
अददर्रुत्समसृजो वि खानि ५.३२.१
अदर्शि गातुरुरवे १.१३६.२
अदर्शि गातुवित्तमः ८.१०३.१
अदान्मे पौरुकुत्स्यः ८.१९.३६
अदाभ्यःपुरएता ३.११.५
अदाभ्येन शोचिषा १०.११८.७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अदाभ्यो भुवनानि ४.५३.४
अदितिर्द्यावापृथिवी १०.६६.४
अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षं १.८९.१०
अदितिर्न उरुष्यतु ८.४७.९
अदितिर्नो दिवा ८.१८.६
अदितिर्ह्यजनिष्ट १०.७२.५
अदिते मित्र वरुण २.२७.१४
अदित्सन्तं चिदाघृणे ६.५३.३
अदिद्युतत्स्वपाको ६.११.४
अदृश्रमस्य केतवः १.५०.३
अदृष्टान्हन्त्यायती १.१९१.२
अदेदिष्ट वृत्रहा ३.३१.२१
अदेवाद्देवः प्रचता १०.१२४.२
अदेवेन मनसा २.२३.१२
अदो यद्दारु प्लवते १०.१५५.३
अद्धीदिन्द्र प्रस्थितेमा १०.११६.८
अद्भिः सोम पपृचानस्य ९.७४.९
अद्या चिन्नू चित्तदपो ६.३०.३
अद्या दूतं वृणीमहे १.४४.३
अद्या देवा उदिता १.११५.६
अद्याद्या श्वः श्वः ८.६१.१७
अद्या नो देव सवितः ५.८२.४
अद्या मुरीय यदि ७.१०४.१५
अद्येदु प्राणीदममन्निमा १०.३२.८
अद्रिणा ते मन्दिनः १०.२८.३
अद्रिभिः सुतः पवते ९.७१.३
अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र ९.८६.२३
अद्रिभिः सुतो मतिभिः ९.७५.४
अद्रोघमा वहोशतो ८.६०.४
अद्रोघ सत्यं तव ३.३२.९
अद्वेषो अद्य बर्हिषः १०.३५.९
अद्वेषो नो मरुतो ५.८७.८
अध क्रत्वा मघवन् ५.२९.५
अध क्षपा परिष्कृतः ९.९९.२
अध ग्मन्ता नहुषो १.१२२.११
अधग्मन्तोशना पृच्छेते वां १०.२२.६
अध जिह्वा पापतीति ६.६.५
अध ज्मो अध ८.१.१८
अध ते विश्वमनु १.५७.२
अध त्यं द्रप्सं १०.११.४
अध त्वमिन्द्र विद्धि १०.६१.२२
अध त्वष्ट ते ६.१७.१०
अध त्वा विश्वे ६.१७.८
अध त्विषीमाँ अभ्योजसा २.२२.२
अध द्युतानः पित्रोः ४.५.१०
अध द्यौश्चित्ते अपसा ६.१७.९
अध द्रप्सो अंशुमत्या ८.९६.१५
अध धारया मध्वा ९.९७.११
अध प्र जज्ञे तरणिः १.१२१.६
अध प्रियमिषिराय ८.४६.२९
अध प्लायोगिरति ८.१.३३
अध यच्चारथे गणे ८.४६.३१
अध यदिमे पवमान ९.११०.९
अध यद्राजाना गविष्टौ १०.६१.२३
अध श्रुतं कवषं वृद्धं ७.१८.२२
अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तमा४.२७.५
अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तं ९.७४.८
अध स्म यस्यार्चयः ५.९.५
अध स्मा ते चर्षणयो ६.२५.७
अध स्मा न उदवता २.३१.२
अध स्मा नो वृधे ६.४६.११
अध स्मास्य पनयन्ति ६.१२.५
अध स्या योषणा ८.४६.३३
अध स्वनादुत बिभ्युः १.९४.११
अध स्ववान्मरुतां १.३८.१०
अध स्वप्नस्य निर्विदे १.१२०.१२
अधः पश्यस्व ८.३३.१९
अधाकृणोः पृथिवीं २.१३.५
अधा कृणोः प्रथमं वीर्यं २.१७.३
अधा गाव उपमातिं १०.६१.२१
अधा चिन्नु यद्दिधिषा १०.१३२.३
अधा ते अप्रतिष्कुतं ८.९३.१२
अधा त्वं हि नस्करः ८.८४.६
अधा नरो न्योहते ५.५२.११
अधा नो विश्वसौभग १.४२.६
अधा न्वस्य जेन्यस्य १०.६१.२४
अधा न्वस्य सन्दृशं ७.८८.२
अधा मन्ये बृहदसुर्यम् ६.३०.२
अधा मन्ये श्रत्ते अस्मा १.१०४.७
अधा मही न आयस्यना ७.१५.१४.
अधा मातुरुषसः सप्त ४.२.१५
अधा यथा नः पितरः ४.२.१६
अधायि धीतिरससृग्रं १०.३१.३
अधा यो विश्वा भुवनाभिः २.१७.४
अधाय्यग्निर्मानुषीषु विक्षु ३.५.३
अधारयतं पृथिवीं ५.६२.३
अधारयन्त वह्नयः १.२०.८
अधासु मन्द्रो अरतिः १०.६१.२०
अधा ह यद्वयमग्ने ४.२.१४
अधा ह यन्तो अश्विना ७.७४.५
अधा हि काव्या युवं ५.६६.४
अधा हिन्वान इन्द्रियं ९.४८.५
अधा हि विक्ष्वीड्यो ६.२.७
अधा हीन्द्र गिर्वणः ८.९८.७
अधा होता न्यसीदो ६.१.२
अधा ह्यग्र एषां ५.१६.४
अधा ह्यग्रे क्रतोः ४.१०.२
अधा ह्यग्ने महा निषद्या १०.६.७
अधि द्यामस्थाद् वृषभो ९.८५.९
अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं १.८३.३
अधि न इन्द्रैषां ८.८३.७
अधि पुत्रोपमश्रवः १०.३३.७
अधि पेशांसि वपते १.९२.४
अधि बृबुः पणीनां ६.४५.३१
अधि यदस्मिन्वाजिनीव ९.९४.१
अधि यस्तस्थौ केश १०.१०५.५
अधि या बृहतो ८.२५.७
अधि श्रियं नि दधुः १.७२.१०
अधि श्रिये दुहिता ६.६३.५
अधि सानौ नि जिघ्नते १.८०.६
अंधीन्वत्र सप्तिं १०.९३.१५
अधीव यद्रिरीणां ८.७.१४
अधीवासं परि मातू १.१४०.९
अधुक्षत प्रियं मधु ९.२.३
अधुक्षत् पिप्युषीमिषम् ८.७२.१६
अधेनुं दस्रा स्तर्यं १.११७.२०
अध्वर्यवश्चकृवांसो मधूनि ५.४३.३
अध्वर्यवः कर्तना २.१४.९
अध्वर्यवः पयसोधर्यथा २.१४.१०
अध्वर्यवा तु हि ८.३२.२४
अध्वर्यवोऽप इता १०.३०.३
अध्वर्यवो भरतेन्द्राय २.१४.१
अध्वर्यवो य उरणं २.१४.४
अध्वर्यवो यन्नरः २.१४.८
अध्वर्यवो यः शतमा २.१४.७
अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य २.१४.६
अध्वर्यवो यः स्वश्नं २.१४.५
अध्वर्यवो यो अपो २.१४.२
अध्वर्यवो यो दिव्यस्य २.१४.११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्वर्यवो यो दृभीकम् २.१४.३
अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धम् ७.९८.१
अध्वर्यवो हविष्मन्तो १०.३०.२
अध्वर्युभिः पञ्चभिः ३.७.७
अध्वर्यं वा मधुपाणिं १०.४१.३
अध्वर्यो अद्रिभिः ९.५१.१
अध्वर्यो द्रावया ८.४.११
अध्वर्यो वीर प्र महे ६.४४.१३
अनच्छ्ये तुरगातु १.१६४.३०
अनप्समप्सु दुष्टुरं ९.१६.३
अनमीवा उषस १०.३५.६
अनमीवास इळया ३.५९.३
अनर्वाणं वृषभं १.१९०.१
अनर्वाणो ह्येषां ८.१८.२
अनर्शरातिं वसुदामुप ८.९९.४
अनवद्यैरभि द्युभिः १.६.८
अनवस्ते रथमश्वाय ५.३१.४
अनश्वो जातो अनभिशुरर्वा १.१५२.५
अनश्वो जातो अनभीशुरुक्थ्यो ४.३६.१
अनस्वन्ता सत्पतिर्मामहे मे ५.२७.१
अनागसो अदितये ५.८२.६
अनाधृष्टानि धृषितः १०.१३८.४
अनानुदो वृषभो जग्मिः २.२३.११
अनानुदो वृषभो दोधतः २.२१.४
अनायतो अनिबद्धः कथायं ४.१३.५
४.१४.५
अनारम्भणे तदवीरयेथाम् १.११६.५
अनिरेण वचसा ४.५.१४
अनुकामं तर्पयेथां १.१७.३
अनु कृष्णे वसुधिती जिहाते ३.३१.१७
अनु कृष्णे वसुधिती येमाते ४.४८.३
अनु तदुर्वी रोदसी ७.३४.२४
अनु तन्नो जास्पतिः ७.३८.६
अनु ते दायि मह ६.२५.८
अनु ते शुष्मं तुरयन्तं ८.९९.६
अनुत्तमा ते मघवन् १.१६५.९
अनु त्रितस्य युध्यतः ८.७.२४
अनु त्वा मही पाजसी १.१२१.११
अनु त्वा रथो अनु १.१६३.८
अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्ष ८.७६.११
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं ८.६.३८
अनु त्वाहिग्ने अध ६.१८.१४
अनु द्यावापृथिवी ६.१८.१५
अनु द्रप्सास इन्दवः ९.६.४
अनु द्वा जहिता नयः ४.३०.१९
अनु पूर्वाण्योक्या ८.२५.१७
अनु प्रत्नस्यौकसः प्रिय ८.६९.१८
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे १.३०.९
अनु प्रत्नास आयवः ९.२३.२
अनु प्र येजे जन ६.३६.२
अनु यदीं मरुतो मन्द ५.२९.२
अनुव्रताय रन्धयन् १.५१.९
अनु श्रुताममतिं वर्धत् ५.६२.५
अनुस्पष्टो भवत्येषः १०.१६०.४
अनु स्वधामक्षरन्नापो १.३३.११
अनु हि त्वा सुतं सोम ९.११०.२
अनूनोदत्र हस्तयतो ५.४५.७
अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः ९.१०७.९
अनृक्षरा ऋजवः १०.८५.२३
अनेनो वो मरुतः ६.६६.७
अनेहसं प्रतरणं विवक्षणं ८.४९.४
अनेहसं वो हवमानम् ८.५०.४
अनेहो दात्रमदितेः १.१८५.३
अनेहो न उरु व्रजे ८.६७.१२
अनेहो मित्रार्यमन् ८.१८.२१
अन्तरिक्षप्रां रजसो १०.९५.१७
अन्तरिक्षेण पतति १०.१३६.४
अन्तरिक्षे पथिभिः १०.१६८.३
अन्तरिच्छन्ति तं जने ८.७२.३
अन्तरैश्चक्रैस्तनयाय ६.६२.१०
अन्तर्दूतो रोदसी दस्म ३.३.२
अन्तर्यच्छ जिघांसतः १०.१०२.३
अन्तर्ह्यग्र ईयसे २.६.७
अन्तश्च प्रागा अदितिः ८.४८.२
अन्तश्चरति रोचना १०.१८९.२
अन्ति चित् सन्तमह ८.११.४
अन्तिवामा दूरे अमित्रम् ७.७७.४
अन्यदद्य कर्वरमन्यदु ६.२४.५
अन्यमस्मद्भिया इयम् ८.७५.१३
अन्यमू षु त्वं यम्यन्यः १०.१०.१४
अन्यव्रतममानुषं ८.७०.११
अन्यस्या वत्सं रिहति ३.५५.१३
अन्या वो अन्यामवतु १०.९७.१४
अन्ये जायां परिमृशन्त्यस्य १०.३४.४
अन्यो अन्यमनु गृभ्णाति ७.१०३.४
अन्वपां खान्यतृन्तम् ७.८२.३
अन्वस्य स्थूरं ददृशे ८.१.३४
अन्वह मासा अन्विद्वनानि १०.८९.१३
अन्वेको वदति यद् २.१३.३
अपघ्नन्तो अराव्णः ९.१३.९
अपघ्नन्तोसोम रक्षसः ९.६३.२९
अपघ्नन्नेषि पवमान ९.९६.२३
अपघ्नन् पवते मृधः ९.६१.२५
अपघ्नन् पवसे मृधः ९.६३.२४
अप ज्योतिषा तमो १०.६८.५
अप त्यं परिपन्थिनं १.४२.३
अप त्यं वृजिनं रिपुं ६.५१.१३
अप त्या अस्थुरनिरा ८.४८.११
अप त्ये तायवो यथा १.५०.२
अप द्वारा मतीनां ९.१०.६
अप नः शोशुचदघं १.९७.१
अप प्राच इन्द्र विश्वान् १०.१३१.१
अप योरिन्द्रः पापजे १०.१०५.३
अपश्चिदेष विभ्वो दमूनाः ३.३१.१६
अपश्यमस्य महतः १०.७९.१
अपश्यं गोपामनिपद्य १.१६४.३१
१०.१७७.३
अपश्यं ग्रामं वहमानं १०.२७.१९
अपश्यं त्वा मनसा चेकि १०.१८३.१
अपश्यं त्वा मनसा दीध्यानां १०.१८३.२
अप स्वसुरुषसो नग्जिहीते ७.७१.१
अप हत रक्षसो भङ्गुरावतः १.७६.४
अपागूहन्नमृतां १०.१७.२
अपाङ् प्राङेति स्वधया १.१६४.३८
अपादहस्तो अपृतन्यत् १.३२.७
अपादित उदु नश्चित्र ६.३८.१
अपादिन्द्रो अपादग्निः ८.६९.११
अपादु शिप्रयन्धसः ८.९२.४
अपादेति प्रथमा पद् १.१५२.३
अपाद्धोत्रादुत पोत्रादमत्त २.३७.४
अपाधमदभिशस्तीः ८.८९.२
अपानदेत्यभ्यन्यदेति १.१२३.७
अपामतिष्टद्धरुणह्वरं १.५४.१०
अपाम सोममृताः ८.४८.३
अपामिदं न्ययनं १०.१४२.७
अपामिवेदूर्मयः ९.९५.३
अपामीवामप विश्वां १०.६३.१२
अपामीवामप स्निधं ८.१८.१०
अपामीवां सविता १०.१००.८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपामुपस्थे महिषा ६.८.४
अपामूर्मिर्मदन्निव ८.१४.१०
अपाय्यस्यान्धसः २.१९.१
अपारो वो महिमा ५.८७.६
अपां गर्भं दर्शतम् ३.१.१३
अपां नपातमवसे १.२२.६
अपां नपादा ह्यस्थाद् २.३५.९
अपां पेरुं जीवधन्यं १०.३६.८
अपां फेनेन नमुचेः ८.१४.१३
अपां मध्ये तस्थिवांसम् ७.८९.४
अपाः पूर्वेषां हरिवः १०.९६.१३
अपाः सोममस्तमिन्द्र ३.५३.६
अपि पन्थामगन्महि ६.५१.१६
अपिबत्कद्रुवः सुतम् ८.४५.२६
अपि वृश्च पुराणवत् ८.४०.६
अपि ष्टुतः सविता ७.३८.३
अपूर्व्या पुरुतमानि ६.३२.१
अपेत वीत वि च १०.१४.९
अपेन्द्र द्विषतो मनः १०.१५२.५
अपेहि मनसस्पते १०.१६४.१
अपो देवीरुपह्वये १.२३.१८
अपो महीरभिशस्तेः १०.१०४.९
अपो यदद्रिं पुरुहूत ४.१६.८
अपो वसानः परि ९.१०७.२६
अपो वृत्रं वव्रिवांसं ४.१६.७
अपोषा अनसः ४.३०.१०
अपो षु ण इयं ८.६७.१५
अपो सुम्यक्ष वरुण २.२८.६
अपो ह्येषामजुषन्त ४.३३.९
असूर्ये मरुत आपिः ३.५१.९
अप्रस्वतीमश्विना १.११२.२४
अप्रक्षितं वसु बिभर्षि १.५५.८
अप्रतीतो जयति सं ४.५०.९
अप्रयुच्छन्प्रयुच्छद्भिः १.१४३.८
अप्रामिसत्य मघवन् ८.६१.४
अप्सरसां गन्धर्वाणां १०.१३६.६
अपसरा जारमुप १०.१२३.५
अप्सा इन्द्राय वायवे ९.६५.२०
अप्सु त्वा मधुमत्तमं ९.३०.५
अप्सु धूतस्य हरिवः १०.१०४.२
अप्सु मे सोमो अब्रवीत् १.२३.२०
१०.९.६
अप्स्वग्ने सधिष्टव ८.४३.९
अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजं १.२३.१९
अबुध्ने राजा वरुणो १.२४.७
अबुध्रमु त्य इन्द्रवन्तः १०.३५.१
अबोधि जार उषसां ७.९.१
अबोधि होता यजथाय ५.१.२
अबोध्यग्निर्ज्म उदेति १.१५७.१
अबोध्यग्निः समिधा ५.१.१
अब्जामुक्थैरहिं ७.३४.१६
अभागः सन्नप परेतः १०.८३.५
अभि कण्वा अनूषत ८.६.३४
अभि क्रत्वेन्द्र भूरध ७.२१.६
अभि क्रन्दन्कलशं ९.८६.११
अभि क्रन्द स्तनयं ५.८३.७
अभि क्षिपः समग्मत ९.१४.७
अभि ख्या नो मघवन् १०.११२.१०
अभिगन्धर्वमतृणत् ८.७७.५
अभि गव्यानि वीतये ९.६२.२३
अभि गावो अधन्विषुः ९.२४.२
अभि गावो अनूषत ९.३२.५
अभि गोत्राणि सहसा १०.१०३.७
अभि जैत्रीरसचन्त ३.३१.४
अभि तष्टेव दीधया ३.३८.१
अभि ते मधुना पयः ९.११.२
अभि त्यं गावः पयसा ९.८४.५
अभि त्यं पूर्व्यं मदम् ९.६.३
अभि त्यं मद्यं मदम् ९.६.२
अभि त्यं मेषं पुरुहूतं १.५१.१
अभि त्यं वीरं गिर्वणसं ६.५०.६
अभि त्रिपृष्ठं वृषणं ९.९०.२
अभि त्वा गोतमा गिरा जात १.७८.१
अभि त्वा गोतमा गिरानूषत ४.३२.९
अभि त्वा देव सवितः १.२४.३
अभि त्वा देवः सविताभि १०.१७४.३
अभि त्वा नक्तीरुषसः २.२.२
अभि त्वा पाजो रक्षसः ६.२१.७
अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र ८.३.७
अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि १.१९.९
अभि त्वा योषणो ९.५६.३
अभि त्वा वृषभा ८.४५.२२
अभि त्वा शूर नोनुमः ७.३२.२२
अभि त्वा सिन्धो शिशुं १०.७५.४
अभि द्यां महिना भुवं १०.११९.८
अभि द्युम्नं बृहद्यशः ९.१०८.९
अभि द्युम्नानि वनिनः ३.४०.७
अभि द्रोणानि बभ्रवः ९.३३.२
अभि द्विजन्मा त्रिवृद् १.१४०.२
अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि १.१४९.४
अभि न इळा यूथस्य ६.४१.१९
अभि नक्षन्तो अभि २.२४.६
अभि नो देवीरवसा १.२२.११
अभि नो नर्यं वसु ६.५३.२
अभि नो वाजसातमं ९.९८.१
अभि प्र गोपतिं गिरा ९.६९.४
अभि प्र दद्रुर्जनयो ४.१९.५
अभि प्र भर धृषता ८.८९.४
अभि प्रयांसि वाहसा ३.११.७
अभि प्रयांसि सुधितानि ६.१५.१५
अभि प्रवन्त समनेव ४.५८.८
अभि प्र वः सुराधसम् ८.४९.१
अभि प्र स्थाताहेव ७.३४.५
अभि प्रियाणि काव्या ९.५७.२
अभि प्रयाणि पवते चनो ९.७५.१
अभि प्रियाणि पवते पुनानः ९.९७.१२
अभि प्रिया दिवस्पदं ९.१०.९
अभि प्रिया दिवस्पदा ९.१२.८
अभि प्रिया मरुतो ८.२७.६
अभि प्रेहि दक्षिणतः १०.८३.७
अभि ब्रह्मीरनूषत ९.३३.५
अभि भुवेऽभिभङ्गाय २.२१.२
अभिभूरहमागमं १०.१६६.४
अभि यज्ञं गृणीहि नः १.१५.३
अभि यं देवी निर्ऋतिः ७.३७.७
अभि यं देव्यदितिः ७.३८.४
अभि ये त्वा विभावरि ५.७९.४
अभि ये मिथो वनुषः ७.३८.५
अभि यो महिमा दिवम् ३.५९.७
अभि वस्त्रा सुवसनानि ९.९७.५०
अभि वह्नय ऊतये ८.१२.१५
अभि वह्निरमर्त्यः ९.९.६
अभि वायुं वीत्यर्षा ९.९७.४५
अभि वां नूनमश्विना ७.६७.३
अभि विप्रा अनूषत गावः ९.१२.२
अभि विप्रा अनूषत मूर्धन् ९.१७.६
अभि विश्वानि वार्या ९.४२.५
अभिवृत्य सपत्नान् १०.१७४.२
अभि वेना अनूषत ९.६४.२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभि वो अर्चे पोष्या ५.४१.८
अभि वो देवीं धियम् ७.३४.९
अभि वो वीरमन्धसो ८.४६.१४
अभि व्ययस्य खदिरस्य ३.५३.१९
अभि व्रजं न तत्लिषे ८.६.२५
अभिव्लग्या चिदद्रिवः १.१३३.२
अभि श्यावं न कृशनेभिः १०.६८.११
अभिष्टने ते अद्रिवः १.८०.१४
अभिष्टये सदावृधं ८.६८.५
अभि सिध्मो अजिगात १.३३.१३
अभि सुवानास इन्दवः ९.१७.२
अभि सूयवसं नय १.४२.८
अभि सोमास---अभि ९.२३.४
अभि सोमास---समुद्रस्य ९.१०७.१४
अभि स्वपूभिर्मिथः ७.५६.३
अभि स्वरन्तु ये तव ८.१३.२८
अभि स्ववृष्टिं मदे १.५२.५
अभि हि सत्य सोमपाः ८.९८.५
अभीक आसां पदवीः ३.५६.४
अभी३दमेकमेकः १०.४८.७
अभी न आ ववृत्स्व ४.३१.४
अभी नवन्ते अद्रुहः ९.१००.१
अभी नो अग्र उक्थम् १.१४०.१३
अभी नो अर्ष दिव्या ९.९७.५१
अभी३ममघ्न्या उत ९.१.९
अभीमवन्वन्त्स्वभिष्टिम् १.५१.२
अभीमृतस्य दोहना १.१४४.२
अभीमृतस्य विष्टपं ९.३४.५
अभीवर्तेन हविषा १०.१७४.१
अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं १.३५.४
अभी षतस्तदाभर ७.३२.२४
अभी षु णस्त्वं रयिं ८.९३.२१
अभी षु णः सखीनां ४.३१.३
अभीष्व१र्यः पौंस्यैः १०.५९.३
अभीहि मन्यो तवसः १०.८३.३
अभुत्सु प्र देव्या ८.९.१६
अभूदिदं वयुनमो षु १.१८२.१
अभूदु पारमेतवे १.४६.११
अभूदु भा उ अंशवे १.४६.१०
अभूदु वो विधते रत्नधेयं ४.३४.४
अभूदुषा इन्द्रतमा मघोनी ७.७९.३
अभूदुषा रुशत्पशुः ५.७५.९
अभूद्देवः सविता ४.५४.१
अभूरु वीर गिर्वणः ६.४५.१३
अभूरेको रयिपते ६.३१.१
अभूर्वौक्षीर्व्यु१ आयुः १०.२७.७
अभ्यभि हि श्रवसा ९.११०.५
अभ्यर्च नभाकवत् ८.४०.४
अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यम् ४.५८.१०
अभ्यर्ष बृहद्यशः ९.२०.४
अभ्यर्ष महानां ९.१.४
अभ्यर्ष विचक्षण ९.५१.५
अभ्यर्ष सहस्रिणम् ९.६३.१२
अभ्यर्ष स्वायुध ९.४.७
अभ्य१र्षानपच्युतः ९.४.८
अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते ५.१९.१
अभ्यारमिदद्रयः ८.७२.११
अभ्यूर्णोति यन्नग्नं ८.७९.२
अभ्रप्रुषो न वाचा १०.७७.१
अभ्राजि शर्धो मरुतः ५.५४.६
अभ्रातरो न योषणः ४.५.५
अभ्रातृव्यो अना त्वं ८.२१.१३
अभ्रातेव पुंस एति १.१२४.७
अमन्थिष्टां भारता ३.२३.२
अमन्दन्मा मरुत १.१६५.११
अमन्दान्स्तोमान्प्र भरेम १.१२६.१
अमन्महीदनाशवः ८.१.१४
अमाजुरश्चिद् भवथो १०.३९.३
अमाजूरिव पित्रोः २.१७.७
अमादेषां भियसा ५.५९.२
अमाय वो मरुतः ८.२०.६
अमित्रहा विचर्षणिः ९.११.७
अमित्रायुधो मरुतामिव ३.२९.१५
अमिनती दैव्यानि १.१२४.२
अभी य ऋक्षा निहितासः १.२४.१०
अभी ये देवाः स्थन १.१०५.५
अमी ये पञ्चोक्षणः १.१०५.१०
अमी ये सप्त रश्मयः १.१०५.९
अमीवहा वास्तोष्पते ७.५५.१
अमीषां चित्तं प्रति १०.१०३.१२
अमूरः कविरदितिः ७.९.३
अमूरा विश्वा वृषणा ७.६१.५
अमूरो होता न्यसादि ४.६.२
अमूर्या उप सूर्ये १.२३.१७
अमृक्तेन रुशता ९.६९.५
अमृतं जातवेदसं ८.७४.५
अमेव नः सुहवा २.३६.३
अम्बयो यन्त्यध्वभिः १.२३.१६
अम्बितमे नदीतमे २.४१.१६
अम्यक्सा त इन्द्र १.१६९.३
अयमकृणोदुषसः ६.४४.२३
अयमग्निरुरुष्यति १०.१७६.४
अयमग्निर्वध्र्यश्वस्य १०.६९.१२
अयमग्निः सहस्रिणः ८.७५.४
अयमग्निः सुवीर्यस्येशे ३.१६.१
अयमग्ने जरिता त्वे १०.१४२.१
अयमग्ने त्वे अपि ८.४४.२८
अयमस्मान्वनस्पतिः ३.५३.२०
अयमस्मासु काव्यः १०.१४४.२
अयमस्मि जरितः ८.१००.४
अयमिन्द्र वृषाकपिः १०.८६.१८
अयमिन्द्रो मरुत्सखा ८.७६.२
अयमिह प्रथमो धायि ४.७.१
अयमु ते समतसि १.३०.४
अयमु ते सरस्वति ७.९५.६
अयमु त्वा विचर्षणे ८.१७.७
अयमु वां पुरुतमो ३.६२.२
अयमुशानः पर्यद्रिं ६.३९.२
अयमु ष्य प्र देवयुः १०.१७६.३
अयमु ष्य सुमहाँ ७.८.२
अयमेक इत्था पुरूरु ८.२५.१६
अयमेमि विचाकशत् १०.८६.१९
अयं कविरकविषु ७.४.४
अयं कृत्नुरगृभीतः ८.७९.१
अयं घ स तुरो १०.२५.१०
अयं चक्रमिषणत् ४.१७.१४
अयं जायत मनुषो १.१२८.१
अयं त आ घृणे ९.६७.१२
अयं त इन्द्र सोमः ८.१७.११
अयं त एमि तन्वा ८.१००.१
अयं ते अस्तु हर्यतः ३.४४.१
अयं ते अस्म्युप मेह्यर्वाङ् १०.८३.६
अयं ते मानुषे जने ८.६४.१०
अयं ते योनिर्ऋत्वियः ३.२९.१०
अयं ते शर्यणावति ८.६४.११
अयं ते स्तोमो अग्रियः १.१६.७
अयं दक्षाय साधनः ९.१०५.३
अयं दशस्यन्नर्येभिः १०.९९.१०
अयं दिव इयर्ति ९.६८.९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अयं दीर्घाय चक्षसे ८.१३.३०
अयं देवः सहसा ६.४४.२२
अयं देवानामपसामपस्तमो १.१६०.४
अयं देवाय जन्मने १.२०.१
अयं देवेषु जागृविः ९.४४.३
अयं द्यावापृथिवी ६.४४.२४
अयं द्योतयदद्युतः ६.३९.३
अयं नाभा वदति १०.६२.४
अयं निधिः सरमे १०.१०८.७
अयं नो विद्वान् ९.७७.४
अयं पन्था अनुवित्ताः ४.१८.१
अयं पुनान उषसः ९.८६.२१
अयं पूषा रयिर्भगः ९.१०१.७
अयं भराय सानसिः ९.१०६.२
अयं मतवाञ्छकुनः ९.८६.१३
अयं मातायं पिता १०.६०.७
अयं मित्रस्य वरुणस्य १.९४.१२
अयं मित्राय वरुणाय १.१३६.४
अयं मित्रो नमस्यः ३.५९.४
अयं मे पीत उदियर्ति ६.४७.३
अयं मे हस्तो भगवान् १०.६०.१२
अयं यज्ञो देवया १.१७७.४
अयं यथा न आभुवत् ८.१०२.८
अयं यः सृञ्जये पुरः ४.१५.४
अयं योनिश्चकृमायं ४.३.२
अयं यो वज्रः १०.२७.२१
अयं यो होता किरु १०.५२.३
अयं रोचयदरुचः ६.३९.४
अयं वामद्रिभिः सुतः ८.२२.८
अयं वां कृष्णो अश्विना ८.८५.३
अयं वां घर्मो अश्विना ८.९.४
अयं वां परि षिच्यते ४.४९.२
अयं वां भागो निहितः ८.५७.४
अयं वां मधुमत्तमः १.४७.१
अयं वां मित्रावरुणा २.४१.४
अयं विचर्षणिर्हितः ९.६२.१०
अयं विदच्चित्रदृशीकं ६.४७. ५
अयं विप्राय दाशुषे १०. २५.११
अयं विश्वा अभि श्रियः ८.१०२.९
अयं विश्वानि तिष्ठति ९. ५४. ३
अयं वृतश्चातयते ४. १७. ९
अयं वेनश्चोदयत् १०.१२३. १
अयं वो यज्ञ ऋभवः ४.३४.३
अयं शृण्वे अध जयन् ४.१७.१०
अयं समह मा १.१२०.११
अयं स यस्य शर्मन् १०.६.१
अयं स यो दिवस्परि ९.३९.४
अयं स यो वरिमाणं ६.४७.४
अयं स शिक्ते १.१६४.२९
अयं सहस्रमृषिभिः ८.३.४
अयं स होता यो १.१४९.५
अयं सु तुभ्यं वरुण ७.८६.८
अयं सूर्यइवोपदृक् ९.५४.२
अयं सो अग्निराहुतः ७.१.१६
अयं सो अग्निर्यस्मिन् ३.२२.१
अयं सोम--- सुन्व आ ७.२९.१
अयं सोम--- सुन्वे तुभ्यं ९.८८.१
अयं सोमश्चमू सुतो ५.५१.४
अयं सोमः कपर्दिने ९.६७.११
अयं स्तुतो राजा वन्दि १०.६१.१६
अयं स्वादुरिह मदिष्ठः ६.४७.२
अयं ह यद्वां देवया ७.६८.४
अयं ह येन वा इदम् ८.७६.४
अयं हि ते अमर्त्यः १०.१४४.१
अयं हि नेता वरुणः ७.४०.४
अयं होता प्रथमः ६.९.४
अया चित्तो विपानया ९.६५.१२
अया ते अग्ने विधेमोर्जे २.६.२
अया ते अग्ने समिधा ४.४.१५
अया धिया च गव्यया ८.९३.१७
अया निजघ्निरोजसा ९.५३.२
अया पवस्व देवयुः ९.१०६.१४
अया पवस्व धारया ९.६३.७
अमा पवा पवस्वैना ९.९७.५२
अयाम धीवतो धियः ८.९२.११
अयामि घोष इन्द्र ७.२३.२
अयामि ते नमउक्तिं ३.१४.२
अया रुचा हरिण्या ९.१११.१
अया वाजं देवहितं ६.१७.१५
अया वीति परि स्रव ९.६१.१
अया सोमः सुकृत्यया ९.४७.१
अया ह त्यं मायया ६.२२.६
अयांसमग्ने सुक्षितिं २.३५.१५
अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः १.५०.९
अयुक्त सप्त हरितः ७.६०.३
अयुक्त सूर एतशं ९.६३.८
अयुजो असमो नृभिः ८.६२.२
अयुज्रन्त इन्द्र विश्व १.१६९.२
अयुद्ध इद्युधा वृतं ८.४५.३
अयुद्धसेनो विभ्वा १०.१३८.५
अयुयुत्सन्ननवद्यस्य १.३३.६
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा १०.८७.२
अयोद्धेव दुर्मद आ हि १.३२.६
अरण्यान्यरण्यानि १०.१४६.१
अरण्योर्निहितो जातवेदाः ३.२९.२
अरमतिरनर्वणो ८.३१.१२
अरममाणो अत्येति ९.७२.३
अरमयः सरपसः २.१३.१२
अरमश्वाय गायति ८.९२.२५
अरश्मानो येऽरथा ९.९७.२०
अरं कामाय हरयः १०.९६.७
अरं कृण्वन्तु वेदिं १.१७०.४
अरं क्षयाय नो महे ८.१५.१३
अरं त इन्द्र कुक्षये ८.९२.२४
अरं दासो न मीळ्हुषे ७.८६.७
अरं म उस्रयाम्ण ४.३२.२४
अरं मे गन्तं हवमानाय ६.६३.२
अरं हि ष्मा सुतेषु ८.९२.२६
अराइवेदचरमा ५.५८.५
अराधि होता निषदा १०.५३.२
अरायि काणे विकटे १०.१५५.१
अरावीदंशुः सचमानः ९.७४.५
अरित्रं वां दिवस्पृथु १.४६.८
अरिष्टः स मर्त्तो १०.६३.१३
अरुणप्सुरुषा अभूत् ८.७३.१६
अरुणो मा सकृद् १.१०५.१८
अरुषस्य दुहितरा ६.४९.३
अरुषो जनयन् गिरो ९.२५.५
अरूरुचदुषसः पृश्निः ९.८३.३
अरोरवीद् वृष्णो २.११.१०
अर्चत प्रार्चत ८.६९.८
अर्चद् वृषा वृषभिः १.१७३.२
अर्चन्त एके महि ८.२९.१०
अर्चन्तस्त्वा हवामहे ५.१३.१
अर्चन्ति नारीरपसो १.९२.३
अर्चा दिवे बृहते १.५४.३
अर्चामि ते सुमतिं ४.४.८
अर्चामि वां वर्धायापो १०.१२.४
अर्चा शक्राय शाकिने १.५४.२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्णांसि चित्पप्रथाना ७.१८.५
अर्थमिद्वा उ अर्थिन १. १०५. २
अर्थिनो यन्ति चेदर्थं ८. ७९. ५
अर्धं वीरस्य शृतपां ७.१८.१६
अर्भको न कुमारकः ८.६९.१५
अर्यमणं बृहस्पतिं १०.१४१.५
अर्यमणं वरुणं ४.२.४
अर्यमा णो अदितिः ३.५४.१८
अर्यम्यं वरुण मित्र्यं ५.८५.७
अर्यो वा गिरो अभ्यर्च १०.१४८.३
अर्यो विशां गातुरेति १०.२०.४
अर्वद्भिरग्ने अर्वतो १.७३ .९
अर्वन्तो न श्रवसो ७.९०.७, ९१.७
अर्वाग्रथं विश्वारं ६.३७.१
अर्वाग्रन्थं नि यच्छतं ८.३५.२२
अर्वाङेहि सोमकामं १.१०४.९
अर्वाङ् त्रिचक्रो मधु १.१५७.३
अर्वाङ् नरा दैव्येनावसा ७.८२.८
अर्वाचीनं सु ते मनः ३.३७.२
अर्वाचीनो वसो ४.३२.१४
अर्वाची सुभगे भव ४.५७.६
अर्वाञ्चं त्वा पुरुष्टुत ८.६.४५,३२.३०
अर्वाञ्चं त्वा सुखे ३.४१.९
अर्वाञ्चं दैव्यं जनम् १.४५.१०
अर्वाञ्चमद्य यय्यं २.३७.५
अर्वाञ्चा वां सप्तयो १.४७.८
अर्वाञ्चो अद्या भवता २.२९.६
अर्वावतो न आ गहि ३.४०.८
अर्वावतो न आ गह्यथो ३.३७.११
अर्वाँइव श्रवसे सातिं ९.९७.२५
अर्षा णः सोम ९.६१.१५
अर्षा सोम द्युमत्तमो ९.६५.१९
अर्हन्तो ये सुदानवः ५.५२.५
अर्हन्बिभर्षि सायकानि २.३३.१०
अलातृणो वल इन्द्र ३.३०.१०
अलाय्यस्य परशुर्न ९.६७.३०
अवक्रक्षिणं वृषभं ८.१.२
अव क्रन्द दक्षिणतो २.४२.३
अव क्षिप दिवो २.३०.५
अव चष्ट ऋचीषमो ८.६२.६
अव ते हेळो वरुण १.२४.१४
अव त्मना भरते १.१०४.३
अव त्या बृहतीरिषो १०.१३४.३
अव त्वे इन्द्र प्रवतो ६.४७.१४
अवद्यमिव मन्यमाना ४.१८.५
अव द्युतानाः कलशाँ ९.७५.३
अव द्रप्सो अंशुमतीम् ८.९६.१३
अव द्रुग्धानि पित्र्या ७.८६.५
अव द्वके अव त्रिका १०.५९.९
अव नो वृजिना १०.१०५.८
अवन्तमत्रये गृहं ८.७३.७
अवन्तु नः पितरः १.१०६.३
अवन्तु मामुषसो ६.५२.४
अवपतन्तीरवदन् १०.९७.१७
अव यच्छ्येनो अस्वनीद् ४.२७.३
अव यत्त्वं शतक्रतविन्द्र १०.१३४.४
अव यत्स्वे सदस्थे ८.७९.९
अवर्त्या शुन आन्त्राणि ४.१८.१३
अवर्धयन् सुभगं सप्त ३.१.४
अवर्महे इन्द्र दादृहि १.१३३.६
अवर्षीर्वर्षमुदु ५.८३.१०
अवविद्धं तौग्र्यमप्सु १. १८२. ६
अव वेदिं होत्राभिः ७. ६०. ९
अव सिन्धुं वरुणो ७. ८७. ६
अव सृजन्नुप त्मना १. १४२. ११
अवसृज पुनरग्ने १०. १६. ५
अव सृजा वनस्पते १. १३. ११
अवसृष्टा परा पत ६. ७५. १६
अव स्पृधि पितरं ५. ३. ९
अव स्म दुर्हणायतः १०. १३४.२
अव स्म यस्य वेषणे ५.७.५
अवस्यते स्तुवते १.११६.२३
अव स्य शूराध्वनो ४.१६.२
अव स्यूमेव चिन्वती ३.६१.४
अव स्वयुक्ता दिव १.१६८.४
अव स्वराति गर्गरो ८.६९.९
अव स्वेदाइवाभितो १०.१३४.५
अवंशे द्यामस्तभायद् २.१५.२
अवः परेण पर एना १.१६४.१७
अवः परेण पितरं १.१६४.१८
अवा कल्पेषु नः ९.९.७
अवा चचक्षं पदमस्य ५.३०.२
अवा नु कं ज्यायान् १०.५०.५
अवा नो अग्न ऊतिभिः १.७९.७
अवा नो वाजयुं रथं ८.८०.६
अवावशन्त धीतयो ९.१९.४
अवासां मघवञ्जहि १.१३३.३
अवासृजन्त जिव्रयो ४.१९.२
अवासृजः प्रश्वः १०.१३८.२
अविता नो अजाश्वः ९.६७.१०
अवितासि सुन्वतो ८.३६.१
अविदद्दक्षं मित्रो ६.४४.७
अविन्दद्दिवो निहितं १.१३०.३
अविन्दन् ते अतिहितं १०:१८१.२
अविप्रे चिद्वयो दधत् ६.४५.२
अविप्रो वा यदविधत् ८.६१.९
अविष्टं धीष्वश्विना ७.६७.६
अविष्टो अस्मान्विश्वासु ७.३४.१२
अवीन्नो अग्निर्हव्यान् ७.३४.१४
अवीरामिव मामयं १०.८६.९
अवीवृधद्वो अमृता ८.८०.१०
अवीवृधन्त गोतमा ४.३२.१२
अवेयमश्वैद्युवतिः १.१२४.११
अवोचाम कवये ५.१.१२
अवोचाम नमो अस्मा १.११४.११
अवोचाम निवचनानि १.१८९.८
अवोचाम महते सौभगाय ८.५९.५
अवोचाम रहूगणा १.७८.५
अवो द्वाभ्यां परः १०.६७.४
अवोरित्था वां छर्दिषः ६.६७.११
अवोर्वां नूनमश्विना ७.६७.४
अव्ये पुनानं परि वारं ९.८६.२५
अव्ये वधूयुः पवते ९.६९.३
अव्यो वारे परि प्रियं ९.५०.३
अव्यो वारे परि प्रियो ९.७.६
अव्यो वारेभिः पवते ९.१०१.१६
अशोच्यग्निः समिधानो ७.६७.२
अश्नापिनद्धं मधु १०.६८.८
अश्मन्वती रीयते १०.५३.८
अश्मास्यमवतं ब्रह्मणः २.२४.४
अश्याम तं काममग्ने ६.५.७
अश्याम ते सुमतिं देव १.११४.३
अश्रवं हि भूरिदावत्तरा १.१०९.२
अश्रीरा तनूर्भवति १०.८५.३०
अश्वत्थे वो निषदनं १०.९७.५
अश्वमिद् गां रथप्रां ८.७४.१०
अश्वस्यात्र जनिमास्य २.३५.६
अश्वं न गीर्भी रथ्यं ८.१०३.७
अश्वं न गूळ्हमश्विना १.११७.४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्वं न त्वा वारवन्तं १.२७.१
अश्वाइवेदरुषासः ५.५९.५
अश्वादियायेति यद्वन्ति १०.७३.१०
अश्वा न या वाजिना ६.६७.४
अश्वायन्तो गव्यन्तो १०.१६०.५
अश्वावति प्रथमो गोषु १.८३.१
अश्वावतीर्गोमतीर्न ७.४१.७,८०.३
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्ववारा १.१२३.१२
अश्वावतीर्गोमतीर्विश्व सुविदो १.४८.२
अश्वावतीं सोमावतीं १०.९७.७
अश्वावन्तं रथिनं वीर १०.४७.५
अश्वासो न ये १०.७८.५
अश्वासो ये वामुप ७.७४.४
अश्विना परि वामिषः ३.५८.८
अश्विना पिबतं मधु १.१५.११
अश्विना पुरुदंससा १.३.२
अश्विना मधुमत्तमं १.४७.३
अश्विना मधुषुत्तमो ३.५८.९
अश्विना यज्वरीरिषः १.३.१
अश्विना यद्ध कर्हिचित् ५.७४.१०
अश्विना यामहूतमा ७.७३.६
अश्विना वर्तिरस्मदा १.९२.१६
अश्विना वाजिनीवसू ५.७८.३
अश्विना वायुना युवं ३.५८.७
अश्विनावेह गच्छतं---तिर ५.७५.७
अश्विनावेह गच्छतं---हंसा ५.७८.१
अश्विना सु विचाकशत् ८.७३.१७
अश्विना स्वृषे स्तुहि ८.२६.१०
अश्विना हरिणाविव ५.७८.२
अश्विनोरसनं रथं १.१२०.१०
अश्वी रथी सुरूप इत् ८.४.९
अश्वेव चित्रारुषी ४.५२.२
अश्वो न क्रदो वृषभिः ९.९७.२८
अश्वो न क्रन्दञ्जनिभिः ३.२६.३
अश्वो न चक्रदो वृषा ९.६४.३
अश्वो वोळ्हा सुखं ९.११२.४
अश्व्यस्य त्मना रथ्यस्य ४.४१.१०
अश्व्यो वारो अभवः १.३२.१२
अषाळ्हं युत्सु १.९१.२१
अषाळ्हमुग्रं पृतनासु ८.७०.४
अषाळ्हो अग्ने वृषभो ३.१५.४
अष्ट महो दिवः १.१२१.८
अष्टौ पत्रासो अदितेः १०.७२.८
अष्टौ व्यख्यत् ककुभः १.३५.८
असच्च सच्च परमे १०.५.७
असत्सु मे जरितः १०.२७.१
असदत्र सुवीर्यं ८.३१.१८
असन्नित्त्वे आहवनानि ७.८.५
असपत्नः सपत्नहा १०.१७४.५
असपत्ना सपत्नघ्नी १०.१५९.५
असमं क्षत्रमसमा मनीषा १.५४.८
असमातिं नितोशनं १०.६०.२
असर्जि कलशाँ अभि ९.१०६.१२
असर्जि रथ्यो ९.३६.१
असर्जिवक्वा रथ्ये ९.९१.१
असर्जि वाजी तिरः ९.१०९.१९
असर्जि वां स्थविरा १.१८१.७
असर्जि स्कम्भो दिव ९.८६.४६
असश्चतः शतधारा ९.८६.२७
असश्चता मघवद्भ्यो ७.६७.९
असश्चन्ती भूरिधारे ६.७०.२
असंमृष्टो जायसे ५.११.३
असादि वृतो वह्निः ७.७.५
असाम यथा सुषखाय १.१७३.९
असामि हि प्रयज्यवः १.३९.९
असाम्योजो बिभृथा १.३९.१०
असावन्यो असुर १०.१३२.४
असावि ते जुजुषाणाय ५.४३.५
असावि देवं गोऋजीकं ७.२१.१
असावि सोम इन्द्र ते १.८४.१
असावि सोमः पुरुहूत १०.१०४.१
असावि सोमो अरुषो ९.८२.१
असाव्यंशुर्मदायाप्सु ९.६२.४
असिक्न्यां यजमानो ४.१७.१५
असि यमो अस्यादित्यः १.१६३.३
असि हि वीर सेन्यो १.८१.२
असुनीते पुनरस्मासु १०.५९.६
असुनीते मनो अस्मासु १०.५९.५
असुन्वन्तं समं जहि १.१७६.४
असुन्वामिन्द्र संसदं ८.१४.१५
असूत पूर्वो वृषभो ३.३८.५
असूत पृश्निर्महते १.१६८.९
असृक्षत प्र वाजिनो ९.६४.४
असृग्रन्देववीतये ९.४६.१
असृग्रन्देववीतये वाज ९.६७.१७
असृग्रमिन्दवः पथा ९.७.१
असृग्रमिन्द्र ते गिरः १.९.४
असेन्या वः पणयो १०.१०८.६
असौ च या न उर्वरा ८.९१.६
असौ य एषि वीरको ८.९१.२
असौ यः पन्था आदित्यो १.१०५.१६
अस्तभ्नाद् द्यामसुरो ८.४२.१
अस्तावि मन्म पूर्व्यं ८.५२.९
अस्ताव्यग्निर्नरां सुशेवो १०.४५.१२
अस्ताव्यग्निः शिमीवद्भिः १.१४१.१३
अस्ति देवा अंहोरुः ८.६७.७
अस्ति सोमो अयं ८.९४.४
अस्ति हि वः सजात्यं ८.२७.१०
अस्ति हि वामिह स्तोता ५.७४.६
अस्ति हि ष्मा मदाय १.३७.१५
अस्तीदमधिमन्थनं ३.२९.१
अस्तु श्रौषट् पुरो १.१३९.१
अस्तेव सु प्रतरं १०.४२.१
अस्तोढ्वं स्तोम्या १.१२४.१३
अस्थुरु चित्रा उषसः ४.५१.२
अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुः ९.२.९
अस्मभ्यं गातुवित्तमः ९.१०६.६
अस्मभ्यं तद्दिवो अद्भ्यः २.३८.११
अस्मभ्यं तद्वसो दानाय २.१३.१३
२.१४.१२
अस्मभ्यं ताँ अपा ४.३१.१३
अस्मभ्यं त्वा वसुविदं ९.१०४.४
अस्मभ्यं रोदसी रयिं ९.७.९
अस्मभ्यं वाजिनीवसू ८.५.१२
अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र तां १०.१३३.७
अस्मभ्यं सु वृषण्वसू ८.२६.१५
अस्माअस्मा इदन्धसो ६.४२.४
अस्मा इत्काव्यं वचः ५.३९.५
अस्मा इदु ग्राश्चित् १.६१.८
अस्मा इदु त्यदनु १.६१.१५
अस्मा इदु त्यमुपमं १.६१.३
अस्मा इदु त्वष्टा १.६१.६
अस्मा इदु प्र तवसे १.६१.१
अस्मा इदु प्र भरा १.६१.१२
अस्मा इदु प्रयइव १.६१.२
अस्मा इदु सप्तिमिव १.६१.५
अस्मा इदु स्तोमं १.६१.४
अस्मा उक्थाय पर्वतस्य ५.४५.३
अस्मा उ ते महि महे ६.१.१०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्मा उषास आतिरन्त ८.९६.१
अस्मा ऊ षु प्रभूतये ८.४१.१
अस्मा एतद्दिव्य१ चैंव ६.३४.४
अस्मा एतन्मह्याङ्गूषम् ६.३४.५
अस्माकमग्ने अध्वरं ५.४.८
अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिहि १.१४०.१०
अस्माकमग्ने मघवत्सु धारया ६.८.६
अस्माकमत्र पितरस्ते ४.४२.८
अस्माकमत्र पितरो मनुष्याः ४.१.१३
अस्माकमद्य वामयं ८.५.१८
अस्माकमद्यान्तमं ८.३३.१५
अस्माकमायुर्वर्धय ३.६२.१५
अस्माकमित्सु शृणुहि ४.२२.१०
अस्माकमिन्द्र दुष्टरं ५.३५.७
अस्माकमिन्द्र भूतु ते ६.४५.३०
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु १०.१०३.११
अस्माकमिन्द्रावरुणा ७.८२.९
अस्माकमिन्द्रेहि नो ५.३५.८
अस्माकमुत्तमं कृधि ४.३१.१५
अस्माकमूर्जा रथं १०.२६.९
अस्माकं जोष्यध्वरं ४.९.७
अस्माकं त्वा मतीनां ४.३२.१५
अस्माकं त्वा सुताँ उप ८.६.४२
अस्माकं देवा उभयाय १०.३७.११
अस्माकं धृष्णुया रथो ४.३१.१४
अस्माकं मित्रावरुणा २.३१.१
अस्माकं व इन्द्रमुश्मसि १.१२९.४
अस्माकं शिप्रिणीनां १.३०.११
अस्माकं सु रथं ८.४५.९
अस्माकेभिः सत्वभिः २.३०.१०
अस्मादहं तविषादीषमाणः १.१७१.४
अस्मान्त्समर्ये पवमान ९.८५.२
अस्मान्त्सु तत्र चोदय १.९.६
अस्माँ अवन्तु ते शतं ४.३१.१०
अस्माँ अविड्ढि ४.३१.१२
अस्माँ इहा वृणीष्व ४.३१.११
अस्मिन्त्समुद्रे अध्युत्तर १०.९८.६
अस्मिन्त्स्वे३ तच्छकपूत १०.१३२.५
अस्मिन्न इन्द्र पृत् १०.३८.१
अस्मिन्पदे परमे २.३५.१४
अस्मिन्यज्ञे अदाभ्या ५.७५.८
अस्मे आ वहतं रयिं ८.५.१५
अस्मे इन्द्र सचा सुते ८.९७.८
अस्मे इन्द्राबृहस्पती ४.४९.४
अस्मे इन्द्रावरुणा विश्व ७.८४.४
अस्मे इन्द्रो वरुणो ७.८२.१०,७.८३.१०
अस्मे ऊ षु वृषणा १.१८४.२
अस्मे तदिन्द्रावरुणा ३.६२.३
अस्मे ता त इन्द्र १०.२२.१३
अस्मे धेहि द्युमतीं १०.९८.३
अस्मे धेहि द्युमद्यशो ९.३२.६
अस्मे धेहि श्रवो बृहत् १.९.८
अस्मे प्र यन्धि मघवन् ३.३६.१०
अस्मे रयिं न स्वर्थं १.१४१.११
अस्मे रायो दिवेदिवे ४.८.७
अस्मे रुद्रा मेहना ८.६३.१२
अस्मे वत्सं परिषन्तं १.७२.२
अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ४.२२.९
अस्मे वसूनि धारय ९.६३.३०
अस्मे वीरो मरुतः ७.५६.२४
अस्मे श्रेष्ठेभिर्भानुभिः ७.७७.५
अस्मे सा वां माध्वी १.१८४.४
अस्मे सोम श्रियमधि १.४३.७
अस्मै तिस्रो अव्यथ्याय २.३५.५
अस्मै ते प्रतिहर्यते ८.४३.२
अस्मै बहूनामवमाय २.३५.१२
अस्मै भीमाय नमसा १.५७.३
अस्मै वयं यद्वावान ६.२३.५
अस्य क्रत्वा विचेतसो ५.१७.४
अस्य घा वीर ईवतो ४.१५.५
अस्य ते सख्ये वयमिय ९.६६.१४
अस्य ते सख्ये वयं तव ९.६१.२९
अस्य त्रितः क्रतुना १०.८.७
अस्य त्वेषा अजरा १.१४३.३
अस्य देवस्य मीळ्हुषा ७.४०.५
अस्य देवस्य संसदि ७.४.३
अस्य पिब क्षुमतः १०.११६.२
अस्य पिबतमश्विना ८.५.१४
अस्य पिब यस्य जज्ञान ६.४०.२
अस्या पीत्वा मदानां देवो ८.९२.६
अस्या पीत्वा मदानामिन्द्रो ९.२३.७
अस्य पीत्वा शतक्रतो १.४.८
अस्य प्र जातवेदसो १०.१८८.२
अस्य प्रजावती गृहे ८.३१.४
अस्य प्रत्नामनु द्युतं ९.५४.१
अस्य प्रेषा हेमना ९.९७.१
अस्य मदे पुरु वर्पांसि ६.४४.१४
अस्य मदे स्वर्यं दा १.१२१.४
अस्य मन्दानो मध्वो २.१९.२
अस्य मे द्यावापृथिवी २.३२.१
अस्य यामासो बृहतो १०.३.४
अस्य रण्वा स्वस्येव २.४.४
अस्य वामस्य पलितस्य १.१६४.१
अस्य वासा उ अर्चिषा ५.१७.३
अस्य वीरस्य बर्हिषि १.८६.४
अस्य वृष्णो व्योदन ८.६३.९
अस्य वो ह्यवसा ९.९८.८
अस्य व्रतानि नाधृषे ९.५३.३
अस्य व्रते सजोषसो ९.१०२.५
अस्य शासुरुभयासः १.६०.२
अस्य शुष्मासो ददृशानपवेः १०.३.६
अस्य श्रवो नद्यः सप्त १.१०२.२
अस्य श्रिये समिधानस्य ४.५.१५
अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य ४.१.६
अस्य श्रोषन्त्वा भुवः १.८६.५
अस्य श्लोको दिवीयते १.१९०.४
अस्य सुवानस्य मन्दिनः २.११.२०
अस्य स्तुषे महिमघस्य १.१२२.८
अस्य स्तोमेभिरौशिजः १०.९९.११
अस्य स्तोमे मघोनः ५.१६.३
अस्य हि स्वयशस्तरं ५.८२.२
अस्य हि स्वयशस्तरः ५.१७.२
अस्या ऊ षु ण उप १.१३८.४
अस्याजरासो दमाम् १०.४६.७
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं ९.१०६.३
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा विश्वा ९.१.१०
अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं ८.३.८
अस्येदु त्वेषसा १.६१.११
अस्येदु प्र ब्रूहि १.६१.१३
अस्येदु भिया गिरयश्च १.६१.१४
अस्येदु मातुः सवनेषु १.६१.७
अस्येदेव प्र रिरिचे १.६१.९
अस्येदेव शवसा शुषन्तं १.६१.१०
अस्येदेषा सुमतिः १०.३१.६
अस्वप्नजस्तरणयः ४.४.१२
अस्वापयद्भीतये ४.३०.२१
अहन्नहिं परिशयानं ३.३२.११
अहन्नहिं पर्वते शिश्रियानं १.३२.२
अहन्निद्रो अदहदग्निः ४.२८.३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहन्वृत्रमृचीषमः ८.३२.२६
अहन्वृत्रं वृत्रतरं १.३२.५
अहमत्कं कवये १०.४९.३
अहमपो अपिन्वम् ४.४२.४
अहमस्मि महामहो १०.११९.१२
अहमस्मि सपत्नहेन्द्र १०.१६६.२
अहमस्मि सहमाना १०.१४५.५
अहमिद्धि पितुष्परि ८.६.१०
अहमिन्द्रो न परा जिग्य १०.४८.५
अहमिन्द्रो रोधो वक्षो १०.४८.२
अहमिन्द्रो वरुणस्ते ४.४२.३
अहमेतं गव्ययमश्व्यं १०.४८.४
अहमेताञ्छाश्वसतो १०.४८.६
अहमेव वातइव १०.१२५.८
अहमेव स्वयमिदं १०.१२५.५
अहश्च कृष्णमहरर्जुनं ६.९.१
अहस्ता यदपदी १०.२२.१४
अहं केतुरहं मूर्धा १०.१५९.२
अहं गर्भमदधां १०.१८३.३
अहं गुङ्गुभ्यो अतिथिग्वं १०.४८.८
अहं च त्वं च वृत्रहन् ८.६२.११
अहं चन तत्सूरिभिः ६.२६.७
अहं तदासु धारयं १०.४९.१०
अहं तष्टेव वन्धुरं १०.११९.५
अहं ता विश्वा चकरं ४.४२.६
अहं दां गृणते पूर्व्यं १०.४९.१
अहं पितेव वेतसूं १०.४९.४
अहं पुरो मन्दसानो ४.२६.३
अहं प्रत्नेन मन्मना ८.६.११
अहं भुवं वसुनः १०.४८.१
अहं भूमिमददामार्याय ४.२६.२
अहं मनुरभवं सूर्यः ४.२६.१
अहं रन्धयं मृगयं १०.४९.५
अहं राजा वरुणो मह्यं ४.४२.२
अहं राष्ट्री संगमनी १०.१२५.३
अहं रुद्राय धनुरा १०.१२५.६
अहं रुद्रेभिर्वसुभिः १०.१२५.१
अहं सप्त स्रवतो १०.४९.९
अहं सप्तहा नहुषो १०.४९.८
अहं स यो नववास्त्वं १०.४९.६
अहं सुवे पितरमस्य १०.१२५.७
अहं सूर्यस्य परि यामि १०.४९.७
अहं सो अस्मि यः पुरा १.१०५.७
अहं सोममाहनसं १०.१२५.२
अहं हि ते हरिवो ८.५३.८
अहं हुवान आर्क्षे ९.७४.१३
अहं होता न्यसीदं १०.५२.२
अहानि गृध्राः पर्या १.८८.४
अहा यदिन्द्र सुदिना ७.३०.३
अहाव्यग्ने हविरास्ये १०.९१.१५
अहितेन चिदर्वता ८.६२.३
अहिरिव भोगैः ६.७५.१४
अहेळता मनसा २.३२.३
अहेळमान उप याहि ६.४१.१
अहेम यज्ञं पथामुराणा ७.७३.३
अहेर्यातारं कमपश्य १.३२.१४
अंशुं दुहन्ति ९.७२.६
अंसेषु व ऋष्टयः ५.५४.११
अंसेष्वा मरुतः ७.५६.१३
अंहोयुवस्तन्वस्तन्वते ५.१५.३

आ

आकरे वसोर्जरिता ३.५१.३
आ कलशा अनूषत ९.६५.१४
आ कलशेषु धावति पवित्रे ९.१७.४
आ कलशेषु धावति श्येनः ९.६७.१४
आकीं सूर्यस्य रोचनात् १.१४.९
आ कृष्णेन रजसा १.३५.२
आकेनिपासो अहभिः ४.४५.६
आ क्रन्दय बलमोजो ६.४७.३०
आक्षित्पूर्वास्वपरा ३.५५.५
आ क्षोदो महि वृत्तं ६.१७.१२
आक्ष्णयावानो वहन्ति ८.७.३५
आगधिता परिगधिता १.१२६.६
आ गन्ता मा रिषण्यत ८.२०.१
आगन्देव ऋतुभिर्वर्धतु ४.५३.७
अगन्नृभूणामिह ४.३५.२
आगन्म वृत्रहन्तमं ८.७४.४
आ गावो अग्मन् ६.२८.१
आ गोमता नासत्या ७.७२.१
आ ग्रा अग्र इहावसे १.२२.१०
आग्निरगामि भारतो ६.१६.१९
आग्निं न स्ववृक्तिभिः १०.२१.१
आग्ने गिरो दिव ७.३९.५
आग्ने याहि मरुत्सखा ८.१०३.१४
आग्ने वह वरुणं १०.७०.११
आग्ने वह हविरद्याय ७.११.५
आग्ने स्थूरं रयिं भर १०.१५६.३
आग्मन्नाप उशतीर्बर्हिः १०.३०.१५
आग्रावभिरहन्येभिः ५.४८.३
आ घ त्वावान् त्मना १.३०.१४
आ घा गमद्यदि श्रवत् १.३०.८
आ घा ता गच्छानुत्तरा १०.१०.१०
आ घा ये अग्निम् ८.४५.१
आ घा योषेव सूनरी १.४८.५
आ च त्वामेता वृषणा ३.४३.४
आ चन त्वा चिकित्सामो ८.९१.३
आ च नो बर्हिः सदता ७.५९.६
आ चर्षणिप्रा वृषभो १.१७७.१
आ च वहासि ताँ इह १.७४.६
आ चष्ट आसां पाथो ७.३४.१०
आ चिकितान सुक्रतू ५.६६.१
आच्छद्विधानैर्गुपितः १०.८५.४
आच्या जानु दक्षिणतो १०.१५.६
आ जङ्घन्ति सान्वेषां ६.७५.१३
आ जनं त्वेषसंदृशं १०.६०.१
आ जनाय द्रुह्वणे ६.२२.८
आ जागृविर्विप्र ऋता ९.९७.३७
आ जातं जातवेदसि ६.१६.४२
आ जामिरत्के अव्यत ९.१०१.१४
आजासः पूषणं ६.५५.६
आजितुरं सत्पतिं ८.५३.६
आजिपते नृपते त्वम् ८.५४.६
आ जुहोता दुवस्यता ५.२८.६
आ जुहोता स्वध्वरं ३.९.८
आ जुह्वान ईड्यो वन्द्यः १०.११०.३
आ जुह्वानो न ईड्यो १.१८८.३
आञ्जनगन्धिं सुरभिं १०.१४६.६
आ त इन्दो मदाय ९.६२.२०
आ त इन्द्र माहिमानं ८.६५.४
आ त एता वचोयुजा ८.४५.३९
आ त एतु मनः पुनः १०.५७.४
आ तक्षत सातिमस्मभ्यं १.१११.३
आ तत्त इन्द्रायवः १०.७४.४
आ तत्ते दस्र मन्तमः १.४२.५
आ तं भज सौश्रवेषु १०.४५.१०
आ तिष्ठतं सुवृतं यो रथः १:१८३.३
आ तिष्ठन्तं परि विश्वे ३.३८.४
आ तिष्ठ रथं वृषणं १.१७७.३
आ तिष्ठ वृत्रहन् १.८४.३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ तू गहि प्र तु ८.१३.१४
आ तू न इन्दो शतदातु ९.७२.९
आ तू न इन्द्र कौशिक १.१०.११
आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं ८.८१.१
आ तू न इन्द्र मद्र्यक् ३.४१.१
आ तू न इन्द्र वृत्रहन् ४.३२.१
आ तू भर माकिरेतत् ३.३६.९
आ तू षिञ्च कण्वमन्तं ८.२.२२
आ तू षिञ्च हरिमीं १.१०१.१०
आ तू सुशिप्र दम्पते ८.६९.१६
आ ते अग्न इधीमहि ५.६.४
आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्र ५.६.५
आ ते अग्न ऋचा हविर्हृदा ६.१६.४७
आ ते कारो शृण्वामा ३.३३.१०
आ ते दक्षं मयोभुवं ९.६५.२८
आ ते दक्षं वि रोचना ९.९३.२६
आ ते दधामीन्द्रियं ८.९३.२७
आ तेन यातं मनसो १०.३९.१२
आ ते पितर्मरुतां २.३३.१
आ ते मह इन्द्रोत्युग्र ७.२५.१
आ ते रथस्य पूषन् १०.२६.८
आ ते रुचः पवमानस्य ९.९६.२४
आ ते वत्सो मनो ८.११.७
आ ते वृषन् वृषणो ६.४४.२०
आ तेऽवो वरेण्यं ५.३५.३
आ ते शुष्मो वृषभ ६.१९.९
आ ते सपर्यू जवसे ३.५०.२
आ ते सिञ्चामि कुक्ष्योः ८.१७.५
आ ते सुपर्णा अमिनन्तँ १.७९.२
आ ते स्वस्तिमीमह ६.५६.६
आ ते हनू हरिवः ५.३६.२
आत्मन्वन्नभो दुह्यते ९.७४.४
आत्मा ते वातो रज ७.८७.२
आत्मा देवानां भुवनस्य १०.१६८.४
आत्मानं ते मनसा १.१६३.६
आत्मा पितुस्तनूर्वासः ८.३.२४
आत्मा यज्ञस्य रंह्या ९.६.८
आ त्व१द्य सधस्तुतिं ८.१.१६
आ त्व१द्य सबदुर्घां ८.१.१०
आ त्वशत्रवा गहि ८.८२.४
आ त्वा कण्वा अहूषत १.१४.२
आ त्वा कण्वा इहावसे ८.३४.४
आ त्वागमं शन्तातिभिः १०.१३७.४
आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः ८.९५.१
आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं ८.६५.३
आ त्वा गोभिरिव व्रजं ८.२४.६
आ त्वा ग्रावा वदन्निह ८.३४.२
आ त्वा जुवो रारहाणा १.१३४.१
आ त्वा बृहन्तो हरयो ३.४३.६
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी ८.१७.२
आ त्वा मदच्युता हरी ८.३४.९
आ त्वा रथं यथोतये ८.६८.१
आ त्वा रथे हिरण्यये ८.१.२५
आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ८.४५.२०
आ त्वा वहन्तु हरयो १.१६.१
आ त्वा विप्रा अचुच्यवुः १.४५.८
आ त्वा विशन्त्वाशवः १.५.७
आ त्वा विशन्त्विन्दवः ८.९२.२२
आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः ८.९५.२
आ त्वा सहस्रमा शतं ८.१.२४
आ त्वा सुतास इन्दवः ८.४९.३
आ त्वा हरयो वृषणो ६.४४.१९
आ त्वा हर्यन्तं प्रयुजो १०.९६.१२
आ त्वाहार्षमन्तरेधि १०.१७३.१
आ त्वा होता मनुर्हितो ८.३४.८
आ त्वेता नि षीदत १.५.१
आत्सोम इन्द्रियो रसो ९.४७.३
आथर्वणायाश्विना १.११७.२२
आ दक्षिणा सृज्यते ९.७१.१
आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे १.८३.४
आ दधिक्राः शवसा ४.३८.१०
आ दशभिर्विवस्वत ८.७२.८
आदस्य ते ध्वसयन्तो १.१४०.५
आदस्य शुष्मिणो रसे ९.१४.३
आ दस्युघ्ना मनसा ४.१६.१०
आदह स्वधामनु १.६.४
आदाय श्येनो अभरत् ४.२६.७
आदारो वां मतीनां १.४६.५
आदित्ते अस्य वीर्यस्य १.१३१.५
आदित्ते विश्वे क्रतुं १.६८.३
आदित्पश्चा बुबुधाना ४.१.१८
आदित्प्रत्नस्य रेतसो ८.६:३०
आदित्या अव हि ८.४७.११
आदित्यानां वसूनां १०.४८.११
आदित्यानामवसा ७.५१.१
आदित्या रुद्रा वसवः ३.८.८
आदित्या रुद्रा वसवो ७.३५.१४
आदित्या विश्वे मरुतश्च ७.५१.३
आदित्यासो अति स्रिधो १०.१२६.५
आदित्यासो अदितयः ७.५२.१
आदित्यासो अदितिः ७.५१.२
आदित्यैरिन्द्रः सगणो १०.१५७.३
आदित्सास्य चर्किरन् ८.५५.५
आदिद्ध नेम इन्द्रियं ४.२४.५
आदिद्धोतारं वृणते १.१४१.६
आदिन्द्रः सत्रा तविषीः १०.११३.५
आदिन्मातृराविशद् १.१४१.५
आ दिवस्पृष्ठमश्वयुः ९.३६.६
आदीमश्वं न हेतारो ९.६२.६
आदीं के चित्पश्य ९.११०.६
आदीं त्रितस्य योषणो ९.३२.२
आदीं शवस्यब्रवीद् ८.७७.२
आदीं हंसो यथा गणम् ९.३२.३
आदू नु ते अनु क्रतुं ८.६३.५
आदू मे निवरो भुवत् ८.९३.१५
आदृध्नोति हविष्कृतिं १.१८.८
आ देवानामग्रयावेह १०.७०.२
आ देवानामपि पन्थां १०.२.३
आ देवानामभवः केतुः ३.१.१७
आ देवो ददे बुध्न्यां ७.६.७
आ देवो दूतो अजिरः १०.९८.२
आ देवो यातु सविता ७.४५.१
आ दैव्यानि पार्थिवानि ५.४१.१४
आ दैव्या वृणीमहे ७.९७.२
आद्य रथं भानुमो ५.१.११
आ द्यां तनोषि रश्मिभिः ४.५२.७
आद्रोदसी वितरं वि ५.२९.४
आ द्वाभ्यां हरिभ्यां २.१८.४
आ द्विबर्हा अमिनो १०.११६.४
आ धर्णसिर्बृहद्दिवो ५.४३.१३
आ धावता सुहस्त्यः ९.४६.४
आधीषमाणायाः पतिः १०.२६.६
आ धूर्ष्वस्मै दधाता ७.३४.४
आ धेनवः पयसा ५.४३.१
आ धेनवो धुनयन्तां ३.५५.१६
आ धेनवो मामतेयं १.१५२.६
आध्रेण चित्तद्वेकं ७.१८.१७
आ न इळाभिर्विदथे १.१८६.१
आ न इन्दो महीमिषं ९.६५.१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ न इन्दो शतग्विनं गवां ९.६५.१७
आ न इन्दो शतग्विनं रयिं ९.६७.६
आ न इन्द्र पृक्षसे १०.२२.७
आ न इन्द्र महीमिषम् ८.६.२३
आ न इन्द्राबृहस्पती ४.४९.३
आ न इन्द्रो दूरादा ४.२०.१
आ न इन्द्रो हरिभिर्या ४.२०.२
आ न ऊर्जं वहतमश्विना १.१५७.४
आ नपातः शवसो ४.३४.६
आ नस्तुजं रयिं ३.४५.४
आ नस्ते गन्तु मत्सरः १.१७५.२
आ नः पवस्व धारया ९.३५.१
आ नः पवस्व वसुमद् ९.६९.८
आ नः पूषा पवमानः ९.८१.४
आ नः प्रजां जनयतु १०.८५.४३
आ नः शुष्मं वृषाह्यं ९.३०.३
आ नः सहस्रशो भरा ८.३४.१५
आ नः सुतास इन्दवः ९.१०६.९
आ नः सोम पवमानः ९.८१.३
आ नः सोम सहो जवो ९.६५.१८
आ नः सोम संयतं ९.८६.१८
आ नः सोमं पवित्र आ ९.६२.२१
आन नः सोमे स्वध्वर ८.५०.५
आ नः स्तुत उप वाजेभिः ४.२९.१
आ नः स्तोममुप द्रवत् ८.५.७
आ न स्तोममुप द्रवद्धियानो ८.४९.५
आ नामभिर्मरुतो वक्षि ५.४३.१०
आ नार्यस्य दक्षिणा ८.२४.२९
आ नासत्या गच्छतं १.३४.१०
आ नासत्या त्रिभिः १.३४.११
आ निरेकमुत प्रियं ८.२४.४
आ निवर्तन वर्तय १०.१९.८
आ निवर्त नि वर्तय पुनः १०.१९.६
आ नूनमश्विना युवं ८.९.१
आ नूनमश्विनोर्ऋषिः ८.९.७
आ नूनं यातमश्विना रथेन ८.८.२
आ नूनं यातमश्विनाश्वेभिः ८.८७.५
आ नूनं यातमश्विनेमा ८.९.१४
आ नूनं रघुवर्तनिं ८.९.८
आ नो अग्ने रयिं भर १.७९.८
आ नो अग्ने वयोवृधं ८.६०.११
आ नो अग्ने सुचेतुना १.७९.९
आ नो अद्य समनसो ८.२७.५
आ नो अश्वावदश्विना ८.२२.१७
आ नो अश्विना त्रिवृता १.३४.१२
आ नो गन्तं मयोभुवा ८.८.१९
आ नो गन्तं रिशादसा ५.७१.१
आ नो गन्तं रिशादसेमां ८.८.१७
आ नो गव्यान्यश्व्या ८.३४.१४
आ नो गव्येभिरश्व्यैः ८.७३.१४
आ नो गव्येभिरश्व्यैर्वसव्यैः ६.६०.१४
आ नो गहि सख्येभिः ३.१.१९
आ नो गोत्रा दर्दृहि गोपते ३.३०.२१
आ नो गोमन्तमश्विना ८.५.१०
आ नो दधिक्राः पथ्यां ७.४४.५
आ नो दिव आ पृथिव्या ७.२४.३
आ नो दिवो बृहतः ५.४३.११
आ नो देव शवसा ७.३०.१
आ नो देवः सविता त्राय ६.५०.८
आ नो देवः सविता सावि १०.१००.३
आ नो देवानामुप वेतु १०.३१.१
आ नो देवेभिरुप देवहूतिं ७.१४.३
आ नो देवेभिरुप यातं ७.७२.२
आ नो द्युम्नैरा श्रवोभिः ८.५.३२
आ नो द्रप्सा मधुमन्तो १०.९८.४
आ नो नावा मतीनां १.४६.७
आ नो नियुद्भिः शतिनी ७.९२.५
आ नो नियुद्भिः शतिनीभिः १.१३५.३
आ नो बर्हिः सधमादे १०.३५.१०
आ नो बर्ही रिशादसो १.२६.४
आ नो बृहन्ता बृहतीभिः ४.४१.११
आ नो ब्रह्माणि मरुतः २.३४.६
आ नो भज परमेषु १.२७.५
आ नो भ्रद्राः क्रतवो यन्तु १.८९.१
आ नो भर दक्षणेनाभि ८.८१.६
आ नो भर भगमिन्द्र ३.३०.१९
आ नो भर वृषणं ६.१९.८
आ नो भर व्यञ्जनं ८.७८.२
आ नो मखस्य दावने ८.७.२७
आ नो महीमरमतिं ५.४३.६
आ नो मित्र सुदीतिभिः ५.६४.५
आ नो मित्रावरुणा घृतैः ३.६२.१६
आ नो मित्रावरुणा हव्यजुष्टिं ७.६५.४
आ नो यज्ञं दिविस्पृशं ८.१०१.९
आ नो यज्ञं नमोवृधं ३.४३.३
आ नो यज्ञं भारती १०.११०.८
आ नो यज्ञाय तक्षत १.१११.२
आ नो यातमुपश्रुति ८.८.५
आ नो यातं दिवस्परि ८.८.४
आ नो यातं दिवो अच्छा ४.४४.५
आ नो याहि परावतः ८.६.३६
आ नो याहि महेमते ८.३४.७
आ नो याहि सुतावतो ८.१७.४
आ नो याह्युपश्रुति ८.३४.११
आ नो रत्नानि बिभ्रता ५.७५.३
आ नो रयिं मदच्युतं ८.७.१३
आ नो राधांसि सवितः ७.३७.८
आ नो रुद्रस्य सूनवो ६.५०.४
आ नो वायो महे तने ८.४६.२५
आ नो विश्व आस्क्राः १.१८६.२
आ नो विश्वान्यश्विना ८.८.१३
आ नो विश्वाभिरूतिभिरश्विव ८.८.१
आ नो विश्वाभिररूतिभिः सजो ७.२४.४
आ नो विश्वासु हव्य ८.९०.१
आ नो विश्वेषां रसं ८.५३.३
आ नो विश्वे सजोषसो ८.५४.३
आ नोऽवोभिर्मरुतो १.१६७.२
आन्त्रेभ्यस्ते १०.१६३.३
आन्यं दिवो मातरिश्वा १.९३.६
आप इद्वा उ भेषजी १०.१३७.६
आ पक्थासो भलानसो ७.१८.७
आपथयो विपथयो ५.५२.१०
आ पप्राथ महिना ८.७०.६
आपप्रुषी पार्थिवान्युरु ६.६१.११
आपप्रुषी विभावरि ४.५२.६
आ पप्रौ पार्थिवं १.८१.५
आ परमाभिरुत ६.६२.११
आ पर्वतस्य मरुतां ४.५५.५
आ पवमान धारय ९.१२.९
आ पवमान नो भरार्यो ९.२३.३
आ पवमान सुष्टुतिं ९.६५.३
आ पवस्व गविष्टये ९.६६.१५
आ पवस्व दिशां पत ९.११३.२
आ पवस्व मदिन्तम ९.२५.६,९.५०.४
आ पवस्व महीमिषं ९.४१.४
आ पवस्व--- रयिं गोमन्तं ९.६२.१२
आ पवस्व--- रयिं सोम ९.६३.१
आ पवस्व सुवीर्यं ९.६५.५
आ पवस्व हिरण्यवद् ९.६३.१८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ पशुं गासि पृथिवीं ८.२७.२
आ पश्चातान्नासत्या ७.७२.५,७३.५
आपश्चित्पिप्युः स्तर्यो ७.२३.४
आपश्चिदस्मै पिन्वन्त ७.३४.३
आपश्चिद्धि स्वयशसः ७.८५.३
आपः पृणीत भेषजं १.२३.२१,१०.९.७
आपानासो विवस्वतो ९.१०.५
आपान्तमन्युस्तृपलप्रभर्मा १०.८९.५
आपी वो अस्मे पितरेव १०.१०६.४
आ पुत्रासो न मातरं ७.४३.३
आ पूर्णो अस्य कलशः ३.३२.१५
आ पूषञ्चित्रबर्हिषं १.२३.१३
आपो अद्यान्वचारिषं १.२३.२३,१०.९.९
आपो अस्मान्मातरः १०.१७.१०
आपो न देवीरुप यन्ति १.८३.२
आपो न सिन्धुमभि यत् १०.४३.७
आपो भूयिष्ठा इत्येको १.१६१.९
आपो यं वः प्रथमं ७.४७.१
आपो रेवतीः क्षयथा १०.३०.१२
आपो ह यद् बृहतीर्विश्व १०.१२१.७
आपो हि ष्ठा मयोभुवः १०.९.१
आ प्यायस्व मदिन्तम १.९१.१७
आ प्यायस्व समेतु १.९१.१६,९.३१.४
आ प्र द्रव परावतो ८.८२.१
आ प्र द्रव हरिवो ५.३१.२
आ प्र यात मरुतो ८.२७.८
आप्रा रजांसि दिव्यानि ४.५३.३
आप्रुषायन्मधुनः १०.६८.४
आ बुन्दं वृत्रहा ८.४५.४
आ भन्दमाने उपाके १.१४२.७
आ भन्दमाने उषसा ३.४.६
आ भरतं शिक्षतं वज्रबाहू १.१०९.७
आ भात्यग्निरुषसां ५.७६.१
आ भानुना पार्थिवानि ६.६.६
आ भारती भारतीभिः ३.४.८, ७.२.८
आभिर्विधेमाग्नये ८.२३.२३
आभिष्टे अद्य गीर्भिः ४.१०.४
आभिः स्पृधो मिथतीः ६.२५.२
आभूत्या सहजा वज्र १०.८४.६
आभूषेण्यं वो मरुतो ५.५५.४
आभोगयं प्र १.११०.२
आ मध्वो अस्मा असिचन् १०.२९.७
आ मनीषामन्तरिक्षस्य १.११०.६
आ मन्द्रमा वरेण्यं ९.६५.२९
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो ३.२.४
आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिः ३.४५.१
आ मन्येथामा गतं ३.५८.४
आ मा पूषन्नुप द्रव ६.४८.१६
आमासु पक्वमैरय ८.८९.७
आ मां मित्रावरुणेह ७.५०.१
आ मित्रावरुणा भगं ९.७.८
आ मित्रे वरुणे वयं ५.७२.१
आमूरज प्रत्यावर्तये ६.४७.३१
आ मे अस्य प्रतीव्यं ८.२६.८
आ मे वचांस्युद्यता ८.१०१.७
आ मे हवं नासत्याश्विना ८.८५.१
आयजी वाजसातमा १.२८.७
आ यज्ञैर्देव मर्त्य ५.१७.१
आ यत्पतन्त्येन्यः ८.६९.१०
आ यत्साकं यशसो ७.३६.६
आ यदश्वान्वनन्वतः ८.१.३१
आ यदिन्द्रश्च दद्वहे ८.३४.१६
आ यदिषे नृपतिं तेज १.७१.८
आ यद् दुवस्याद् दुवसे १.१६५.१४
आ यद् दुवः शतक्रत १.३०.१५
आ यद्धरी इन्द्र विव्रता १.६३.२
आ यद्योनिं हिरण्यमाशुः ९.६४.२०
आ यद्योनिं हिरण्ययं वरुण ५.६७.२
आ यद्वहाव वरुणश्च ७.८८.३
आ यद्वज्रं बह्वोरिन्द्र धत्से ८.९६.५
आ यद्वामीयचक्षसा ५.६६.६
आ यद्वां योषणा रथं ८.८.१०
आ यद्वां सूर्या रथं ५.७३.५
आयने ते परायणे १०.१४२.८
आयन्तारं महि स्थिरं ८.३२.१४
आ यन्नः पत्नीर्गमन् ७.३४.२०
आ यन्मा वेना अरुहन् ८.१००.५
आ यन्मे अध्वं २.४.५
आयमद्य सुकृतं प्रातरिच्छ १.१२५.३
आ ययोस्त्रिंशतं तना ९.५८.४
आ यस्ततन्थ रोदसी ६.१.११
आ यस्तस्थौ भुवनानि ९.८४.२
आ यस्ते अग्न इधते ७.१.८
आ यस्ते सर्पिरासुते ५.७.९
आ यस्मिन्ते स्वपाके ६.१२.२
आ यस्मिन्त्सप्त २.५.२
आ यस्मिन्हस्ते नर्या ६.२९.२
आ यस्य ते महिमानं ८.४६.३
आयं गौः पृश्नीरक्रमीत् १०.१८९.१
आयं जना अभिचक्षे ५.३१.१२
आ यं नरः सुदानवो ५.५३.६
आ यं पृणन्ति दिवि १.५२.४
आ यं हस्ते न खादिनं ६.१६.४०
आ यः पप्रौ जायमान ६.१०.४
आ यः पप्रौ भानुना ६.४८.६
आ यः पुरं नार्मिणीम् १.१४९.३
आ यः सोमेन जठरं ५.३४.२
आ यः स्वर्ण भानुना २.८.४
आ यात मरुतो दिव ५.५३.८
आ यातमुप भूषतं ७.७४.३
आ यातं नहुषस्परि ८.८.३
आ यातं मित्रावरुणा जुषाणा ७.६६.१९
आ यातं मित्रावरुणा सुशस्ति ६.६७.३
आ यात्विन्द्रः स्वपतिः १०.४४.१
आ यात्विन्द्रो दिव आ ४.२१.३
आ यात्विन्द्रोऽवस उप ४.२१.१
आ याहि कृणवाम त ८.६२.४
आ याहि पर्वतेभ्यः ८.३४.१३
आ याहि पूर्वीरति ३.४३.२
आ याहि वनसा सह १०.१७२.१
आ याहि वस्व्या धिया १०.१७२.२
आ याहि शश्वदुशत ६.४०.४
आ याहि सुषुमा हि ८.१७.१
आ याहीम इन्दवो ८.२१.३
आ याह्यग्ने पथ्या ७.७.२
आ यह्यग्ने समिधानो ३.४.११,७.२.११
आ याह्यद्रिभिः सुतं ५.४०.१
आ याह्यर्य आ परि ८.३४.१०
आ याह्यर्वाङ् उप ३.४३.१
आयुर्विश्वायुः परि १०.१७.४
आ युवानः कवयो ६.४९.११
आ यूथेव क्षुमति पश्वो ४.२.१८
आ ये तन्वन्ति रश्मिभिः १.१९.८
आ ये तस्थुः पृषतीषु ५.६०.२
आ ये रजांसि तविषीभिः १.१६६.४
आ ये विश्वा पार्थिवानि ८.९४.९
आ ये विश्वा स्वपत्यानि १.७२.९
आ यो गोभिः सृज्यत ९.८४.३
आ योनिमग्निर्घृतवन्तम् ३.५.७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ योनिमरुणो रुहत् ९.४०.२
आ यो मूर्धानं पित्रोः १०.८.३
आ यो योनिं देवकृतं ७.४.५
आ यो वना तातृषाणो २.४.६
आ यो विवाय सचथाय १.१५६.५
आ यो विश्वानि वार्या ९.१८.४
आरङ्गरेव मध्वे १०.१०६.१०
आ रयिमा सुचेतुनं ९.६५.३०
आराच्छत्रुमप बाधस्व १०.४२.७
आ राजाना मह ऋतस्य ७.६४.२
आ रिख किकिरा ६.५३.७
आ रुक्मैरा युधा ५.५२.६
आ रुद्रास इन्द्रवन्तः ५.५७.१
आरे अघा को१ न्वित्था १०.१०२.१०
आरे अस्मदमतिमारे ४.११.६
आरे ते गोघ्नमुत १.११४.१०
आरे सावः सुदानवो १.१७२.२
आरोकाइव घेदहं ८.४३.३
आ रोदसी अपृणदा स्वः ३.२.७
आ रोदसी अपृणा जायमान ३.६.२
आ रोदसी अपृणादोत १०.५५.३
आ रोदसी बृहती वेविदानाः १.७२.४
आ रोदसी हर्यमाणो १०.९६.११
आरोहतायुर्जरसं १०.१८.६
आर्चन्नत्र मरुतः १.५२.१५
आर्ष्टिषेणो होत्रम् १०.९८.५
आलाक्ता या रुरुशीर्ष्णी ६.७५.१५
आ व इन्द्रं क्रिविं यथा १.३०.१
आ व ऋञ्जस ऊर्जां १०.७६.१
आ वक्षि देवाँ इह विप्र २.३६.४
आ वच्यस्व महि प्सरो ९.२.२
आ वच्यस्व सुदक्ष ९.१०८.१०
आवदंस्त्वं शकुने भद्रमा २.४३.३
आवदिन्द्रं यमुना ७.१८.१९
आववृततीरध नु १०.३०.१०
आवहन्ती पोष्या वार्याणि १.११३.१५
आवहन्त्यरुणीर्ज्योतिषा ४.१४.३
आ वहेथे पराकात् ८.५.३१
आ वंसते मघवा वीरवत् ८.१०३.९
आवः कुत्समिन्द्र यस्मिन् १.३३.१४
आवः शमं वृषभं १.३३.१५
आ वाजा यातोप ४.३४.५
आ वात वाहि भेषजं १०.१३७.३
आ वातस्य ध्रजतो ७.३६.३
आ वामगन्त्सुमतिर्वा १०.४०.१२
आ वामश्वासः शुचयः १.१८१.२
आ वामश्वासः सुयुजो ५.६२.४
आ वामश्वासो अभिमाति ६.६९.४
आ वामुपस्थमद्रुहा २.४१.२१
आ वामृताय केशिनीरनुषत १.१५१.६
आ वायो भूष शुचिपा ७.९२.१
आ वां ग्रावाणो ८.४२.४
आ वां दानाय १.१८०.५
आ वां धियो ववृत्युः १.१३५.५
आ वां नरा मनोयुजो ५.७५.६
आ वां भूषन्क्षितयो १.१५१.३
आ वां मित्रावरुणा १.१५२.७
आ वां येष्ठाश्विना ५.४१.३
आ वां रथमवमस्यां ७.७१.३
आ वां रथं दुहिता १.११६.१७
आ वां रथं पुरुमायं १.११९.१
आ वां रथं युवतिः १.११८.५
आ वां रथो अश्विना १.११८.१
आ वां रथो नियुत्वान्वक्षद १.१३५.४
आ वां रथो रथानां ५.७४.८
आ वां रथो रोदसी ७.६९.१
आ वां रथोऽवनिर्न १.१८१.३
आ वां राजानावध्वरे ७.८४.१
आ वां वयोऽश्वासो ६.६३.७
आ वां वहिष्ठा इह ते ४.१४.४
आ वां वाहिष्ठो अश्विना ८.२६.४
आ वां विप्र इहावसे ८.८.९
आ वां विश्वाभिरुतिभिः ८.८७.३
८.८.१८
आ वां श्येनासो अश्विना १.११८.४
आ वां सहस्रं हरय ४.४६.३
आ वां सुम्ने वरिमन् ६.६३.११
आ वां सुम्नैः शंयूइव १०.१४३.६
आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः १.८८.१
आ विबाध्या परिरापः २.२३.३
आविरभून्महि माघोनं १०.१०७.१
आ विवासन्परावतो ९.३९.५
आविशन्कलशं सुतो ९.६२.१९
आ विश्वतः प्रत्यञ्चा २.१०.५
आ विश्वदेवं सत्पतिं ५.८२.७
आ विश्ववाराश्विना ७.७०.१
आ विष्ट्यो वर्धते १.९५.५
आ विंशत्या त्रिंशता २.१८.५
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः ६.६०.३
आ वृषस्व पुरूवसो ८.६१.३
आ वृषस्व महामह ८.२४.१०
आ वेधसं नीलपृष्ठं ५.४३.१२
आ वो धियं यज्ञियां १०.१०१.९
आ वो मक्षू तनाय कं १.३९.७
आ वो यक्ष्यमृतत्वं १०.५२.५
आ वो यन्तूदवाहासो ५.५८.३
आ वो यस्य द्विबर्हसो १.१७६.५
आ वो राजानमध्वरस्य ४.३.१
आ वो रुवण्युमौशिजो १.१२२.५
आ वो वहन्तु सप्तयो १.८५.६
आ वो वाहिष्ठो वहतु ७.३७.१
आ वो होता जोहवीति ७.५६.१८
आ शर्म पर्वतानामोतापां ८.१८.१६
आ शर्म पर्वतानां वृणीमहे ८.३१.१०
आशसनं विशसनं १०.८५.३५
आशीत्या नवत्याया २.१८.६
आशुभिश्चिद्यान्वि २.३८.३
आ शुभ्रा यातमश्विना ७.६८.१
आशुरर्ष बृहन्मते ९.३९.१
आशुं दधिक्रां तमु नु ४.३९.१
आशुं दूतं विवस्वतो ४.७.४
आशुः शिशानो वृषभो १०.१०३.१
आशृण्वते अदृपिता ४.३.३
आ श्येनस्य जवसा १.११८.११
आशुत्कर्ण श्रुधी हवं १.१०.९
आश्विनावश्वावत्येषा १.३०.१७
आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो ५.१९.३
आ स एतु य ईवदाँ ८.४६.२१
आ सखायः सबर्दुघां ६.४८.११
आ सत्यो यातु मघवाँ ४.१६.१
आ सवं सवितुर्यथा ८.१०२.६
आसस्राणासः शवसानं ६.३७.३
आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र ६.१८.११
आसंयतमिन्द्र णः ६.२२.१०
आसां पूर्वासामहसु १.१२४.९
आसीनासो अरुणीनां १०.१५.७
आ सीमरोहत्सुयमा ३.७.३
आ सुग्म्याय सुग्म्यं ८.२२.१५
आ सुते सिञ्चत श्रियं ८.७२.१३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ सुष्टुती नमसा ५.४३.२
आसु ष्मा णो मघवन् ६.४४.१८
आ सुष्वयन्ती यजते १०.११०.६
आ सूर्ये न रश्मयो १.५९.३
आ सूर्यो अरुहच्छुक्रं ५.४५.१०
आ सूर्यो न भानुमद्भिः ६.४.६
आ सूर्यो यातु सप्ताश्वः ५.४५.९
आ सोता परिषिञ्चिता ९.१०८.७
आ सोम सुवानो ९.१०७.१०
आ स्तुतासो मरुतो ७.५७.७
आस्थापयन्त युवतिं १.१६७.६
आस्नो वृकस्य वर्तिकां १.११६.१४
आ स्मा रथं वृषपाणेषु १.५१.१२
आस्मिन्पिशङ्गमिन्दवो ९.२१.५
आ स्वमद्म युवमानो १.५८.२
आ हरयः ससृज्रिरे ८.६९.५
आ हर्यताय धृष्णवे ९.९९.१
आ हर्यतो अर्जुने ९.१०७.१३
आहं पितॄन्सुविदत्राँ १०.१५.३
आहं सरस्वतीवतोः ८.३८.१०
आहार्षं त्वाविदं त्वा १०.१६१.५
आ हि द्यावापृथिवी १०.१.७
आ हि रुहतमश्विना ८.२२.९
आ हि ष्मा याति नर्यः ४.२९.२
आ हि ष्मा सूनवे १.२६.३
आ होता मन्द्रो ३.१४.१

इ

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः ३.३०.१
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं ८.२.१८
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः १.८४.१४
इळामग्ने पुरुदंसं ३.१.२३,५.११
६.११,७.११,१५.७,२२.५,२३.५
इळायास्त्वा पदे वयं ३.२९.४
इळा सरस्वती मही १.१३.९, ५.५.८
इत ऊती वो अजरम् ८.९९.७
इति चिद्धि त्वा धना १०.१२०.४
इति चिन्नु प्रजायै ५.४१.१७
इति चिन्मन्युमध्रिजः ५.७.१०
इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य १०.११५.९
इति त्वा देवा इम १०.९५.१८
इति वा इति मे मनो १०.११९.१
इति स्तुतासो असथा ८.३०.२
इतो वा सातिमीमहे १.६.१०
इत्थाधीवन्तमद्रिवः ८.२.४०
इत्था यथा त ऊतये ५.२०.४
इत्था हि सोम इन्मदे १.८०.१
इदमकर्म नमो १०.६८.१२
इदमग्ने सुधितं १.१४०.११
इदमापः प्र वहत १.२३.२२,१०.९.८
इदमित्था रौद्रं १०.६१.१
इदमु त्युत्पुरुत्तमं ४.५१.१
इदमु त्यन्महि महां ४.५.९
इदमुदकं पिबतेति १.१६१.८
इदं कवेरादित्यस्य २.२८.१
इदं त एकं पर ऊ त १०.५६.१
इदं ते पात्रं सनवित्तं १०.११२.६
इदं ते सोम्यं मधु ८.६५.८
इदं त्यत्पात्रमिन्द्रपानं ६.४४.१६
इदं द्यावापृथिवी सत्यं १.१८५.११
इदं नमो वृषभाय १.५१.१५
इदं पितृभ्यो नमो अस्तु १०.१५.२
इदं पित्रे मरुतां १.११४.६
इदं मे अग्ने कियते ४.५.६
इदं यमस्य सादनं १०.१३५.७
इदं वचः पर्जन्याय ७.१०१.५
इदं वचः शतसाः ७.८.६
इदं वपुर्निवचनं ५.४७.५
इदं वसो सुतमन्धः ८.२.१
इदं वामास्ये हविः ४.४९.१
इदं वां मदिरं मधु ८.३८.३
इदं विष्णुर्वि चक्रमे १.२२.१७
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरा १.११३.१
इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरु १०.१७०.३
इदं सु मे जरितः १०.२८.४
इदं स्वरिदमिद् १०.१२४.६
इदं ह नूनमेषां ८.१८.१
इदं हविर्मघवन् १०.११६.७
इदं हि वां प्रदिवि ५.७६.४
इदं ह्यन्वोजसा ३.५१.१०
इदा हि त उषो ६.६५.५
इदा हि ते वेविषतः ६.२१.५
इदा हि व उपस्तुतिं ८.२७.११
इदा हि वो विधते ६.६५.४
इदाहः पीतिं ४.३३.११
इध्मं यस्ते जभर ४.१२.२
इध्मेनाग्न इच्छमानो ३.१८.३
इनोत पृच्छ ३.३८.२
इनो राजन्नरतिः १०.३.१
इनो वाजानां १०.२६.७
इन्दविन्द्राय बृहते ९.६९.१०
इन्दुरत्यो न वाजसृत् ९.४३.५
इन्दुरिन्द्राय तोशते ९.१०९.२२
इन्दुरिन्द्राय पवते ९.१०१.५
इन्दुर्देवानामुप सख्यं ९.९७.५
इन्दुर्वाजी पवते ९.९७.१०
इन्दुर्हिन्वानो अर्षति ९.६७.४
इन्दुर्हियानः सोतृभिः ९.३०.२
इन्दुं रिहन्ति महिषा ९.९७.५७
इन्दुः पविष्ट चारुर्मदाय ९.१०९.१३
इन्दुः पविष्ट चेतनः ९.६४.१०
इन्दुः पुनानः प्रजां ९.१०९.९
इन्दुः पुनानो अति ९.८६.२६
इन्दो यथा तव ९.५५.२
इन्दो यदद्रिभिः सुतः ९.२४.५
इन्दो व्यव्यमर्षसि ९.६७.५
इन्दो समुद्रमीखय ९.३५.२
इन्द्र आशाभ्यस्परि २.४१.१२
इन्द्र आसां नेता १०.१०३.८
इन्द्र इत्सोमपा ८.२.४
इन्द्रि इद्धर्यो: १.७.२
इन्द्र इन्नो महानां ८.९२.३
इन्द्र इषे ददातु नः ८.९३.३४
इन्द्र उक्थेन शवसा १०.१००.५
इन्द्र ऋभुभिर्वाजवद्भिः ३.६०.५
इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभिः ३.६०.७
इन्द्र ऋभुमान्वाजवान् ३.६०.६
इन्द्र ओषधीरसनो ३.३४.१०
इन्द्र क्रतुं न आ भर ७.३२.२६
इन्द्र क्रतुविदं सुतं ३.४०.२
इन्द्र क्षत्रमभि वामं १०.१८०.३
इन्द्र क्षत्रासमातिषु १०.६०.५
इन्द्र गृणीष उ स्तुषे ८.६५.५
इन्द्र जहि पुमांसं ७.१०४.२४
इन्द्र जामय उत ये ६.२५.३
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरँ ६.४६.५
इन्द्रज्येष्ठान् बृहद्भ्यः ४.५४.५
इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणाः १.२३.८,२.४१.१५
इन्द्रतमा हि धिष्ण्या १.१८२.२
इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवो १.८०.७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन् ६.४४.१०
इन्द्र त्रिधातु शरणं ६.४६.९
इन्द्र त्वमवितेदसी ८.१३.२६
इन्द्र त्वा वृषभं वयं ३.४०.१
इन्द्र त्वोतास आ वयं १.८.३
इन्द्र दृह्य मघवन् १०.१००.१
इन्द्र दृह्य यामकोशा ३.३०.१५
इन्द्र दृह्यस्व पूरसि ८.८०.७
इन्द्र नेदीय एदिहि ८.५३.५
इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो ६.४०.१
इन्द्र पिब प्रतिकामं १०.११२.१
इन्द्र पिब वृषधूतस्य ३.४३.७
इन्द्र पिब स्वधया ३.३५.१०
इन्द्र प्र णः पुरएतेव ६.४७.७
इन्द्र प्र णो धितावानं ३.४०.३
इन्द्र प्र णो रथमव ८.८०.४
इन्द्रप्रसूता वरुणप्रशिष्टा १०.६६.२
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वम् ८.१७.९
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा ५.२९.१५
इन्द्रमग्निं कविच्छदा ३.१२.३
इन्द्रमच्छ सुता इमे ९.१०६.१
इन्द्र मरुत्व इह ३.५१.७
इन्द्रमित्केशिना हरी ८.१४.१२
इन्द्रमित्था गिरो ३.४२.३
इन्द्र मिद्गाथिनो बृहत् १.७.१
इन्द्रमिद्देवतातय ८.३.५
इन्द्रमिद्धरी वहतो १.८४.२
इन्द्रमिद्विमहीनां ८.६.४४
इन्द्रमिवेदुभये ४.३९.५
इन्द्रमीशानमोजसाभि १.११.८
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ८.६.३५
इन्द्र मृळ महां ६.४७.१०
इन्द्रमेव धिषणा ६.१९.२
इन्द्र य उ नु ८.८१.८
इन्द्र यथा ह्यस्ति ८.२४.९
इन्द्र यस्ते नवीयसीं ८.९५.५
इन्द्र वाजेषु नोऽव १.७.४
इन्द्रवायू अयं सुतः ४.४६.६
इन्द्रवायू इमे सुता १.२.४
इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निम् १.१४.३
इन्द्रवायू बृहस्पतिं सुहवहे १०.१४१.४
इन्द्रवायू मनोजुवा १.२३.३
इन्द्र शविष्ट सत्पते ८.१३.१२
इन्द्र शुद्धो न आ गहि ८.९५.८
इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं ८.९५.९
इन्द्रश्च मृळयाति नः २.४१.११
इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां ५.५१.६
इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां ४.४७.२
इन्द्रश्च सोमं पिबतं ४.५०.१०
इन्द्रश्चिद्धा तदब्रवीत् ८.३३.१७
इन्द्र श्रुधि सु मे ८.८२.६
इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि २.२१.६
इन्द्र सोममिमं पिब १०.२४.१
इन्द्र सोमं पिब ऋतुना १.१५.१
इन्द्र सोमं सोमपते ३.३२.१
इन्द्र सोमाः सुता इमे तव ३.४०.४
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान् ३.४२.५
इन्द्रस्तुजो बर्हणा ३.३४.५
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य ९.१०९.२
इन्द्र स्थातर्हरीणां ८.२४.१७
इन्द्रस्य कर्म सुकृता ३.३२.८
इन्द्रस्य दूतीरिषिता १०.१०८.२
इन्द्रस्य नु वीर्याणि १.३२.१
इन्द्रस्य नु सुकृतं १०.१००.६
इन्द्रस्य वज्र आयसो ८.९६.३
इन्द्रस्य वज्रो मरुतां ६.४७.२८
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य १०.१०३.९
इन्द्रस्य सख्यमृभवः ३.६०.३
इन्द्रस्य सोम पवमानः ९.७६.३
इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो ९.८.३
इन्द्रस्य सोम राधसे शं ९.६०.४
इन्द्रस्य हार्दि ९.१०८.१६
इन्द्रस्याङ्गिरसां चेष्टौ १.६२.३
इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यः १०.११३.६
इन्द्रस्येव रातिमा १०.१७८.२
इन्द्रं कामा वसूयन्तो ४.१६.१५
इन्द्रं कुत्सो वृत्रहणं १.१०६.६
इन्द्रं तं शुम्भ ८.७०.२
इन्द्रं नरो नेमधिता ७.२७.१
इन्द्रं नो अग्रे वसुभिः ७.१०.४
इन्द्रं परेऽवरे ४.२५.८
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना ८.७६.६
इन्द्रं प्रातर्हवामहे १.१६.३
इन्द्रं मतिर्हद आ ३.३९.१
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमा १.१६४.४६
इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमूतये १.१०६.१
इन्द्रं वयं महाधन १.७.५
इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर ८.१३.१६
इन्द्रं वर्धन्तो असुरः ९.६३.५
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युम् ७.३१.१२
इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् १.११.१
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ८.१२.२२
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतं ३.३७.५
इन्द्रं वो नरः सख्याय ६.२९.१
इन्द्रं वो विश्वतस्परि १.७.१०
इन्द्रं सोमस्य पीतये ३.४२.४
इन्द्रं स्तवा नृतमं १०.८९.१
इन्द्रः किल श्रुत्या १०.१११.३
इन्द्रः पूर्भिरातिरद् ३.३४.१
इन्द्रः स दामने कृत ८.९३.८
इन्द्रः समत्सु यजमानं १.१३०.८
इन्द्रः सहस्रदाव्नां १.१७.५
इन्द्रः सीतां नि ४.५७.७
इन्द्रः सुतेषु सोमेषु ८.१३.१
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ ६.४७.१२
१०.१३१.६
इन्द्रः सु पूषा वृषणा ३.५७.२
इन्द्रः सुशिप्रो मघवा ३.३०.३
इन्द्रः सूर्यस्य रश्मिभिः ८.१२.९
इन्द्रः स्पळुत वृत्रहा ८.६१.१५
इन्द्रः स्वर्षा जनयन् ३.३४.४
इन्द्रः स्वाहा पिबतु ३.५०.१
इन्द्राकुत्सा वहमाना ५.३१.९
इन्द्रा को वां वरुणा ४.४१.१
इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप ३.१२.७
इन्द्राग्नी अपादियं ६.५९.६
इन्द्राग्नी अवसागतं ७.९४.७
इन्द्राग्नी आ गतं सुतं ३.१२.१
इन्द्राग्नी आ हि तन्वते ६.५९.७
इन्द्राग्नी उक्थवाहसा ६.५९.१०
इन्द्राग्नी को अस्य वां ६.५९.५
इन्द्राग्नी जरितुः सचा ३.१२.२
इन्द्राग्नी तपन्ति माघा ६.५९.८
इन्द्राग्नी तविषाणि वां ३.१२.८
इन्द्राग्नी नवतिं पुरो ३.१२.६
इन्द्राग्नी मित्रावरुणादितिं ५.४६.३
इन्द्राग्नी यमवथ उभा ५.८६.१
इन्द्राग्नी युवं सु नः ८.४०.१
इन्द्राग्नी युवामिमे ६.६०.७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्राग्नी युवोरपि ६.५९.९
इन्द्राग्नी रोचना दिवः ३.१२.९
इन्द्राग्नी वृत्रहत्येषु १०.६५.२
इन्द्राग्नी शतदाव्नि ५.२७.६
इन्द्राग्नी शृणुतं हवं ६.६०.१५
इन्द्राणीमासु नारिषु १०.८६.११
इन्द्रा नु पूषणा वयम् ६.५७.१
इन्द्रापर्वता बृहता ३.५३.१
इन्द्राबृहस्पती वयं ४.४९.५
इन्द्राय गाव आशिरं ८.६९.६
इन्द्राय गिरो अनिशित १०.८९.४
इन्द्राय नूनमर्चतो १.८४.५
इन्द्राय पवते मदः ९.१०७.१७
इन्द्राय मद्वने सुतं ८.९२.१९
इन्द्राय वृषणं मदं ८.१०६.५
इन्द्राय साम गायत ८.९८.१
इन्द्राय सु मदिन्तमं ८.१.१९
इन्द्राय सोम परि ९.७८.२
इन्द्राय सोम पवसे ९.२३.६
इन्द्राय सोम पातवे नृभिः ९.१०८.१५
इन्द्राय सोम पातवे मदाय ९.११.८
इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने ९.९८.१०
इन्द्राय सोम सुषुतः ९.८५.१
इन्द्राय सोमाः प्र दिवो ३.३६.२
इन्द्राय हि द्यौरसुरो १.१३१.१
इन्द्रा याहि चित्रभानो १.३.४
इन्द्रा याहि तूतुजानः १.३.६
इन्द्रा याहि धियेषितो १.३.५
इन्द्रा युवं वरुणा दिद्युम् ४.४१.४
इन्द्रा युवं वरुणा भूतं ४.४१.५
इन्द्रायेन्दुं पुनीतनो ९.६२.२९
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते ९.६४.२२
इन्द्रावरुण नू नु वां १.१७.८
इन्द्रावरुणयोरहं १.१७.१
इन्द्रावरुण वामहं १.१७.७
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य ६.६८.११
इन्द्रावरुणा यदिमानि ७.८२.५
इन्द्रावरुणा यदृषिभ्यो ८.५९.६
इन्द्रावरुणा युवमध्वराय ७.८२.१
इन्द्रावरुणा वधनाभिरप्रति ७.८३.४
इन्द्रावरुणावभ्या तपन्ति ७.८३.५
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं ६.६८.१०
इन्द्रावरुणा सौमनसं ८.५९.७
इन्द्राविष्णू तत्पनयाय्यं ६.६९.५
इन्द्राविष्णू दृंहिताः ७.९९.५
इन्द्राविष्णू पिबतं ६.६९.७
इन्द्राविष्णू मदपती ६.६९.३
इन्द्राविष्णू हविषा ६.६९.६
इन्द्रासोमा तपतं रक्ष ७.१०४.१
इन्द्रासोमा दुष्कृतो ७.१०४.३
इन्द्रासोमा पक्वामामासु ६.७२.४
इन्द्रासोमा परि वां ७.१०४.६
इन्द्रासोमा महि तद्वां ६.७२.१
इन्द्रासोमा युवमङ्ग ६.७२.५
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्परि ७.१०४.५
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो ७.१०४.४
इन्द्रासोमावहिमपः ६.७२.३
इन्द्रासोमा वासयथ ६.७२.२
इन्द्रासोमा समघशंसं ७.१०४.२
इन्द्रा ह यो वरुणा ४.४१.२
इन्द्रा ह रत्नं वरुणा ४.४१.३
इन्द्रियाणि शतक्रतो ३.३७.९
इन्द्रे अग्ना नमो ७.९४.४
इन्द्रेण याथ सरथं ३.६०.४
इन्द्रेण युजा निः १०.६२.७
इन्द्रेण रोचना ८.१४.९
इन्द्रेण सं हि दृक्षसे १.६.७
इन्द्रेणैते तृत्सवो ७.१८.१५
इन्द्रे भुजं शशमानासः १०.९२.७
इन्द्रे विश्वानि वीर्या ८.६३.६
इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे ३.३३.२
इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो १.९.१
इन्द्रो अंग महद्भ्य २.४१.१०
इन्द्रो अश्रायि सुध्यो १.५१.१४
इन्द्रो अस्माँ अरदद्वज्रबाहुः ३.३३.६
इन्द्रो अस्मे सुमना १०,१००.४
इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिः ३.५३.२१
इन्द्रो दधीचो अस्थभिः १.८४.१३
इन्द्रो दिव इन्द्र इशे १०.८९.१०
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं १०.१११.५
इन्द्रो दीर्घाय चक्षसे १.७.३
इन्द्रो न यो महा कर्माणी ९.८८.४
इन्द्रो नेदिष्ठमवसा ६.५२.६
इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिः ८.१६.७
इन्द्रो मदाय वावृधे १.८१.१
इन्द्रो मधु संभृतम् ३.३९.६
इन्द्रो महां सिन्धुम् २.११.९
इन्द्रो महा महतो---वि १०.६७.१२
इन्द्रो महा महतो---व्रता १०.१११.४
इन्द्रो महा रोदसी ८.३.६
इन्द्रो यज्वने पृणते ६.२८.२
इन्द्रो यातुनामभवत् ७.१०४.२१
इन्द्रो यातोऽवसितस्य १.३२.१५
इन्द्रो रथाय प्रवतं ५.३१.१
इन्द्रो राजा जगतः ७.२७.३
इन्द्रो वलं रक्षितारं १०.६७.६
इन्द्रो वसुभिः परि पातु १०.६६.३
इन्द्रो वा घेदियन्मघं ८.२१.१७
इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य ६.३७.५
इन्द्रो विश्वैर्वीर्यैः ३.५४.१५
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः ३.३४.३
इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं १.८०.१०
इन्द्रो वृत्रस्य दोधतः १.८०.५
इन्द्रो हरी युयुजे १.१६१.६
इन्द्रो हर्यतमर्जुनं ३.४४.५
इन्धन्वभिर्धेनुभिः २.३४.५
इन्धानो अग्निं वनवत् २.२५.१
इन्धे राजा समर्यो ७.८.१
इम आ यातमिन्दवः १.१३७.२
इम इन्द्र भरतस्य ३.५३.२४
इम इन्द्राय सुन्विरे ७.३२.४
इम उ त्वा पुरुशाक ६.२१.१०
इम उ त्वा वि चक्षते ८.४५.१६
इममग्ने चमसं १०.१६.८
इममञ्जस्पामुभये १०.९२.२
इममिन्द्र गवाशिरं ३.४२.७
इममिन्द्र सुतं पिब १.८४.४
इममिन्द्रो अदीधरत् १०.१७३.३
इममु त्यमथर्ववद् ६.१५.१७
इममू षु त्वमस्माकम् १.२७.४
इममू षु वो अतिथिं ६.१५.१
इमं कामं मन्दया ३.३०.२०,३.५०.४
इमं घा वीरो अमृतं ८.२३.१९
इमं च नो गवेषणं ६.५६.५
इमं जीवेभ्यः १०.१८.४
इमं जुषस्व गिर्वणः ८.१२.५
इमं तं पश्य वृषभस्य १०.१०२.९
इमं त्रितो भूर्यविन्दत् १०.४६.३
इमं नरः पर्वताः ३.३५.८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमं नरो मरुतः सश्चतानु ७.१८.२५
इमं नरो मरुतः सश्चता वृधं ३.१६.२
इमं नु मायिनं हुवे ८.७६.१
इमं नु सोममन्तितो १.१७९.५
इमं नो अग्न उप १०.१२४.१
इमं नो अग्ने अध्वरं जुषस्व ७.४२.५
इमं नो अग्ने अध्वरं होतः ६.५२.१२
इमं नो यज्ञममृतेषु ३.२१.१
इमं बिभर्मि सुकृतं ते १०.४४.९
इमं महे विदथ्याय ३.५४.१
इमं म गङ्गे यमुने १०.७५.५
इमं मे वरुण श्रुधी १.२५.१९
इमं मे स्तोमम् ८.८५.२
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण १०.१५०.२
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण १.९१.१०
इमं यज्ञं चनो धा ६.१०.६
इमं यज्ञं त्वमस्माकं ४.२०.३
इमं यज्ञं सहसावन् ३.१.२२
इमं यम प्रस्तरमा १०.१४.४
इमं रथमधि ये सप्त १.१६४.३
इमं विधन्तो अपां २.४.२
इमं विधन्तो अपां सधस्थे १०.४६.२
इमं स्तोममभिष्टये ८.१२.४
इमं स्तोममर्हते जातवेदसे १.९४.१
इमं स्तोमं रोदसी ३.५४.१०
इमं स्तोमं सक्रतवो २.२७.२
इमं स्वस्मै हृद आ २.३५.२
इमा अग्ने मतयः १०.७.२
इमा अभि प्र णोनुमो ८.६.७
इमा अस्मै मतयो १०.९१.१२
इमा अस्य प्रतूर्तयः ८.१३.२९
इमा इन्द्रं वरुणं मे ४.४१.९
इमा उ त्वा पस्पृधानासो ७.१८.३
इमा उ त्वा पुरुतमस्य ६.२१.१
इमा उ त्वा पुरुशाक ६.२१.१०
इमा उ त्वा पुरूवसो ८.३.३
इमा उ त्वा शतकतो ६.४५.२५
इमा उ त्वा सुतेसुते ६.४५.२८
इमा उ वः सुदानवो ८.७.१९
इमा उ वां दिविष्टयः ७.७४.१
इमा उ वां भृमयो ३.६२.१
इमा गावः सरमे १०.१०८.५
इमा गिर आदित्येभ्यो २.२७.१
इमा गिरः सवितारं ७.४५.४
इमा जुषेथां सवना ८.३८.५
इमा जुह्वाना युष्मदा नमोभिः ७.९५.५
इमा ते वाजिन्नव १.१६३.५
इमा धाना घृतस्नुवो १.१६.२
इमा नारीरविधवाः १०.१८.७
इमानि त्रीणि विष्टपा ८.९१.५
इमानि वां भागधेयानि ८.५९.१
इमा नु कं भुवना १०.१५७.१
इमा ब्रह्म बृहद्दिवो १०.१२०.८
इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः ३.४१.३
इमा ब्रह्म सरस्वति २.४१.१८
इमा ब्रह्माणि वर्धना ५.७३.१०
इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं १०.१४८.४
इमामग्ने शरणिं १.३१.१६
इमामु षु सोमसुतिमुप ७.९३.६
इमामू नु कवितमस्य ५.८५.६
इमामू षु प्रभृतिं ३.३६.१
इमामू ष्वासुरस्य ५.८५.५
इमा रुद्राय तवसे १.११४.१
इमा रुद्राय स्थिरधन्वने ७.४६.१
इमास्त इन्द्र पृश्नयो ८.६.१९
इमां खनाम्योषधिं १०.१४५.१
इमां गायत्रवर्तनिं ८.३८.६
इमां च नः पृथिवीं ३.५५.२१
इमां त इन्द्र सुष्टुतिं ८.१२.३१
इमां ते धियं प्र भरे १.१०२.१
इमां ते वाचं वसूयन्त १.१३०.६
इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः १०.८५.४५
इमां धियं शिक्षमाणस्य ८.४२.३
इमां धियं सप्तशीर्ष्णीम् १०.६७.१
इमां प्रत्नाय सुष्टुतिं १०.९१.१३
इमां म इन्द्र सुष्टुतिम् ८.६.३२
इमां मे अग्ने समिधमिमां २.६.१
इमां मे अग्ने समिधं जुषस्व १०.७०.१
इमां मे मरुतो गिरं ८.७.९
इमां वा मित्रावरुणा ७.३६.२
इमां सुपूर्व्यां धियं ८.६.४३
इमे चित्तव मन्यवे १.८०.११
इमे चेतारो अनृतस्य ७.६०.५
इमे जीवा वि मृतैः १०.१८.३
इमे त इन्द्र ते वयं १.५७.४
इमे त इन्द्र सोमाः ८.२.१०
इमे तुरं मरुत्तो ७.५६.१९
इमे दिवो अनिमिषा ७.६०.७
इमे नरो वृत्रहत्येषु ७.१.१०
इमे भोजा अङ्गिरसो ३.५३.७
इमे मा पीता यशसः ८.४८.५
इमे मित्रो वरुणो ७.६०.६
इमे यामासस्त्वद्रिग् ५.३.१२
इमे ये ते सु वायो १.१३५.९
इमे ये नार्वाङ् १०.७१.९
इमे रभ्रं चिन्मरुतो ७.५६.२०
इमे वां सोमा अप्स्वा १.१३५.६
इमे विप्रस्य वेधसो ८.४३.१
इमे सोमास इन्दवः १.१६.६
इमे हि ते कारवो ८.३.१८
इमे हि ते ब्रह्मकृतः ७.३२.२
इमो अग्ने वीततमानि ७.१.१८
इमौ देवौ जायमानौ जुषन्त २.४०.२
इयत्तकः कुषुम्भकः १.१९१.१५
इयत्तिका शकुन्तिका १.१९१.११
इयमददाद्रभसं ६.६१.१
इयमिन्द्रं वरुणमष्टमे ७.८४.५, ८५.५
इयमु ते अनुष्टुतिः ८.६३.८
इयमेषाममृतानाम् १०.७४.३
इयं त इन्द्र गिर्वणो ८.१३.४
इयं त ऋत्वियावती ८.१२.१०
इयं ते नव्यसी मतिः ८.७४.७
इयं ते पूषन्नाघृणे ३.६२.७
इयं देव पुरोहितिर्युवभ्यां ७.६०.१२
७.६१.७
इयं न उस्रा प्रथमा १०.३५.४
इयं मद्वां प्र स्तृणीते ६.६७.२
इयं मनीषा इयम् ७.७०.७, ७१.६
इयं मनीषा बृहती बृहन्ता ७.९९.६
इयं मे नाभिरिह १०.६१.१९
इयं या नीच्यर्किणी ८.१०१.१३
इयं वामस्य मन्मन ७.९४.१
इयं वामह्वे शृणुतं १०.३९.६
इयं वां ब्रह्मणस्पते ७.९७.९
इयं विसृष्टिर्यत १०.१२९.७
इयं वेदिः परो अन्तः १.१६४.३५
इयं शुष्मेभिर्बिसखाः ६.६१.२
इयं सा भूया उषसामिव १०.३१.५
इयं सा वो अस्मे दीधितिः १.१८६.११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व १०.१४०.४
इरावती धेनुमती ७.९९.३
इरावतीर्वरुण धेनवो ५.६९.२
इषमूर्जमभ्यर्षा ९.९४.५
इषमूर्जं च पिन्वस ९.६३.२
इषमूर्जं पवमान ९.८६.३५
इषं तोकाय नो दधत् ९.६५.२१
इषं दुहन्त्सुदुघां १०.१२२.६
इषा मन्दस्वादु ८.८२.३
इषिरेण ते मनसा ८.४८.७
इषुर्न धन्वन्प्रति ९.६९.१
इषुर्न श्रिय इषुधेः १०.९५.३
इषे पवस्व धारया ९.६४.१३
इष्कर्तारमध्वरस्य १०.१४०.५
इष्कर्तारमनिष्कृतं ८.९९.८
इष्कृताहावमवतं १०.१०१.६
इष्कृतिर्नाम वो माता १०.९७.९
इष्टा होत्रा असृक्षत ८.९३.२३
इष्यन्वाचमुप वक्तेव ९.९५.५
इह त्या पुरुभूतमा देवा ८.२२.३
इह त्या पुरुभूतमा पुरू ५.७३.२
इह त्या सधमाद्या युजानः ८.१३.२७
इह त्या सधमाद्या हरी ८.३२.२९
८.९३.२४
इह त्वष्टारमग्रियं १.१३.१०
इह त्वं सूनो सहसो ४.२.२
इह त्वा गोपरीणसा ८.४५.२४
इह त्वा भूर्या चरेदुप ४.४.९
इह प्रजामिह रयिं ४.३६.९
इह प्र ब्रूहि यतमः १०.८७.८
इह प्रयाणमस्तु वां ४.४६.७
इह प्रियं प्रजया १०.८५.२७
इह ब्रवीतु य ईमङ्ग १.१६४.७
इह श्रुत इन्द्रो अस्मे १०.२२.२
इहा गतं वृषण्वसू ८.७३.१०
इहि तिस्रः परावत ८.३२.२२
इहेन्द्रग्नी उप ह्वये १.२१.१
इहेन्द्राणीमुप ह्वये १.२२.१२
इहेव शृण्व एषां १.३७.३
इहेह जाता समवावशीतां १.१८१.४
इहेह यद्वां समना ४.४३.७, ४४.७
इहेह वः स्वतवसः ५.५९.११
इहेह वो मनसा ३.६०.१
इहैव स्तं मा वि यौष्टं १०.८५.४२
इहैवैधि माप च्योष्ठाः १०.१७३.२
इहोप यात शवसो ४.३५.१

ई

ईक्षे रायः क्षयस्य ४.२०.८
ईङ्खयन्तीरपस्युवो १०.१५३.१
ईजानमिद् द्यौर्गूर्तावसुः १०.१३२.१
ईजे यज्ञेभिः शशमे ६.३.२
ईळते त्वामवस्यवः १.१४.५
ईळानायावस्यवे २.६.६
ईळितो अग्न आ ---इयं १.१४२.४
ईळितो अग्न आ---सुखैः ५.५.३
ईळितो अग्ने मनसा नः २.३.३
ईळिष्वा हि प्रतीव्यं ८.२३.१
ईळे अग्निं विपश्चितम् ३.२७.२
ईळे अग्निं स्ववसं ५.६०.१
ईळे गिरा मनुर्हितं ८.१९.२१
ईळे च त्वा यजमानो ३.१.१५
ईळे द्यावापृथिवी १.११२.१
ईळेन्यं वो असुरं ७.२.३
ईळेन्यः पवमानो ९.५.३
ईळेन्यो नमस्यः ३.२७.१३
ईळेन्यो वो मनुषो ७.९.४
ईयिवांसमति स्रिधः ३.९.४
ईयुरर्थं न न्यर्थं ७.१८.९
ईयुर्गावो न यवसाद् ७.१८.१०
ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन् १.११३.११
ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमा १.१६३.१०
ईर्मान्यद्वपुषे वपुः ५.७३.३
ईशान इमा भुवनानि ९.८६.३७
ईशानकृतो धुनयो १.६४.५
ईशानाय प्रहुतिं ७.९०.२
ईशाना वार्याणां १०.९.५
ईशानासो ये दधते ७.९०.६
ईशिषे वार्यस्य ८.४४.१८
ईशे यो विश्वस्या १०.६.३
ईशे ह्यग्निरमृतस्य ७.४.६

उ

उक्थउक्थे सोम इन्द्रं ७.२६.२
उक्थभृतं सामभृतं ७.३३.१४
उक्थमिन्द्राय शंस्यं १.१०.५
उक्थवाहसे विभ्वे ८.९६.११
उक्थं चन शस्यमानं ८.२.१४
उक्थेभिरर्वागवसे १.४७.१०
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा ७.९४.११
उक्थेष्विन्नु शूरं येषु २.११.३
उक्षन्ते अश्वाँ इत्या २.३४.३
उक्षान्नाय वशान्नाय ८.४३.११
उक्षा महाँ अभि ववक्ष १.१४६.२
उक्षा मिमाति प्रति ९.६९.४
उक्षा समुद्रो अरुषः ५.४७.३
उक्षेव यूथा परियन् ९.७१.९
उक्ष्णो हि मे पञ्चदश १०.८६.१४
उग्रबाहुर्म्रक्षकृत्वा ८.६१.१०
उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजा ३.४८.४
उग्रं न वीरं नमसोप ८.४९.६
उग्रं युयुज्म पृतनासु ८.६१.१२
उग्रं व ओजः स्थिरा ७.५६.७
उग्राइव प्रवहन्तः १०.९४.६
उग्रा विघनिना मृध ६.६०.५
उग्रा सन्ता हवामहे १.२१.४
उग्रेष्विन्नु शूर २.११.१७
उग्रो जज्ञे वीर्याय ७.२०.१
उग्रो वां ककुहो ५.७३.७
उचथ्ये वपुषि यः ८.४६.२८
उच्चा ते जातमन्धसो ९.६१.१०
उच्चा दिवि दक्षिणा १०.१०७.२
उच्छन्ती या कृणोति ७.८१.४
उच्छन्तीरद्य चितयन्त ४.५१.३
उच्छन्त्यां मे यजता ५.६४.७
उच्छन्नुषसः सुदिना ७.९०.४
उच्छा दिवो दुहितः ६.६५.६
इच्छिष्टं चम्वोर्भर १.२८.९
उच्छुष्मा ओषधीनां १०.९७.८
उच्छोचिषा सहसस्पुत्र ३.१८.४
उच्छ्रयस्व वनस्पते ३.८.३
उच्छ्वञ्चमाना पृथिवि १०.१८.११
उच्छ्वञ्चस्व पृथिवी १०.१८.१२
उज्जातमिन्द्र ते शव ८.६२.१०
उज्जायतां परशुः १०.४३.९
उत ऋतुभिर्ऋतुपाः ३.४७.३
उत कण्वं नृषदः १०.३१.११
उत गावइवादन्ति १०.१४६.३
उत ग्रा अग्निरध्वर ४.९.४
उत ग्रा व्यन्तु देवपत्नीः ५.४६.८
उत घा नेमो अस्तुतः ५.६१.८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत घा स रथीतमः ६.५६.२
उत ते सुष्टुता हरी ८.१३.२३
उत त्यदाश्वश्व्यं ८.६.२४
उत त्यद्वां जुरते ७.६८.६
उत त्यन्नो मारुतं ५.४६.५
उत त्यं चमसं १.२०.६
उत त्यं पुत्रमग्नुवः ४.३०.१६
उत त्यं भुज्युमश्विना ७.६८.७
उत त्यं वीरं धनसाम् ८.८६.४
उत त्या तुर्वशायदू ४.३०.१७
उत त्या दैव्या भिषजा ८.१८.८
उत त्या मे यशसा १.१२२.४
उत त्या मे रौद्रावर्चि १०.६१.१५
उत त्या मे हवमा ६.५०.१०
उत त्या यजता हरी ४.१५.८
उत त्या सद्य आर्या ४.३०.१८
उय त्या हरितो दश ९.६३.९
उत त्ये देवी सुभगे २.३१.५
उत त्ये नः पर्वतासः ५.४६.६
उत त्ये नो मरुतो ७.३६.७
उत त्ये मा ध्वन्यस्य ५.३३.१०
उत त्ये मा पौरुकुत्सस्य ५.३३.८
उत त्ये मा मारुताश्वस्य ५.३३.९
उत त्वं मघवञ्छृणु ८.४५.६
उत त्वं सख्ये १०.७१.५
उत त्वं सूनो सहसो ६.५०.९
उत त्वः पश्यन्न १०.७१.४
उत त्वाग्ने मम स्तुतो ८.४३.१७
उत त्वा धीतयो मम ८.४४.२२
उत त्वा नमसा ८.४३.१२
उत त्वा बधिरं ८.४५.१७
उत त्वा भृगुवच्छुचे ८.४३.१३
उत त्वामदिते महि ८.६७.१०
उत त्वामरुणं वयं ९.४५.३
उत त्वा स्त्री शशीयसी ५.६१.६
उत दासस्य वर्चिनः ४.३०.१५
उत दासं कौलितरं ४.३०.१४
उत दासा परिविषे १०.६२.२
उत देवा अवहितं १०.१३७.१
उत द्यावापृथिवी क्षत्रम् ६.५०.३
उत द्युमत्सुवीर्यं १.७४.९
उत द्वार उशतीः ७.१७.२
उत न ईं त्वष्टा गन्त्वच्छा १.१८६.६
उत न ईं मतयो ऽश्व १.१८६.७
उत न ईं मरुतो वृद्धसेनाः १.१८६.८
उत न एना पवया ९.९७.५३
उत न एषु नृषु ७.३४.१८
उत नः कर्णशोभना ८.७८.३
उत नः पितुमा भर ८.३२.८
उत नः प्रिया प्रियासु ६.६१.१०
उत नः सिन्धुरपां ८.२५.१४
उत नः सुत्रात्रो ६.६८.७
उत नः सुद्योत्मा १.१४१.१२
उत नः सुभगाँ अरिः १.४.६
उत नूनं यदिन्द्रियं ४.३०.२३
उत नो गोमतस्कृधि ८.३२.९
उत नो गोमतीरिष आ ५.७९.८
उत नो गोमतीरिष उत ८.५.९
उत नो गोमतीरिषो ९.६२.२४
उत नो गोविदश्ववित् ९.५५.३
उत नो गोषणिं धियं ६.५३.१०
उत नो दिव्या इष ८.५.२१
उत नो देव देवान् ८.७५.२
उत नो देवावश्विना १०.९३.६
उत नो देव्यदितिः ८.२५.१०
उत नो धियो गोअग्राः १.९०.५
उत नो नक्तमपां १०.९३.५
उत नो ब्रह्मन्नविष ३.१३.६
उत नो रुद्रा चिन्मृळत १०.९३.७
उत नो वाजसातये ९.१३.४
उत नो विष्णुरुत वातो ५.४६.४
उत नोऽहिर्बुध्न्यः ६.५०.१४
उत नोऽहिर्बुध्न्योऽ मयस्कः १.१८६.५
उत प्रधिमुदहन्नस्य १०.१०२.७
उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्यायाः ९.९३.३
उत प्रहामतिदीव्या १०.४२.९
उत ब्रह्मण्या वयं ८.६.३३
उत ब्रह्माणो मरुतो ५.२९.३
उत ब्रवन्तु जन्तव १.७४.३
उत ब्रवन्तु नो निदो १.४.५
उत म ऋज्रे पुर ६.६३.९
उत मन्ये पितुरद्रुहो १.१५९.२
उत माता बृहद्दिवा १०.६४.१०
उत माता महिषमन्ववेन ४.१८.११
उत मे प्रियियोर्वयियोः ८.१९.३७
उत मेऽ रपद्युवतिः ५.६१.९
उत मे वोचतादिति ५.६१.१८
उत यासि सवितस्त्रीणि ५.८१.४
उत यो मानुषेष्वा १.२५.१५
उत योषणे दिव्ये मही ७.२.६
उत वः शंसमुशिजा २.३१.६
उत वा उ परि वृणक्षि १०.१४२.३
उत वाजिनं पुरुनिष्षिध्वानं ४.३८.२
उत वात पितासि नः १०.१८६.२
उत वा यस्य वाजिनो १.८६.३
उत वा यः सहस्य १.१४७.५
उत वा यो नो मंर्चयाद् २.२३.७
उत वां विक्षु मद्यास्वन्धो १.१५३.४
उत व्रतानि सोम ते १०.२५.३
उत शुष्णस्य धृष्णुया ४.३०.१३
उत सखास्यश्विनोः ४.५२.३
उत सिन्धुं विबाल्यं ४.३०.१२
उत सु त्ये पयोवृधा ८.२.४२
उत स्तुतासो मरुतो ७.५७.६
उत स्म ते परुष्ण्यां ५.५२.९
उत स्म ते वनस्पते १.२८.६
उत स्म दुर्गृभीयसे ५.९.४
उत स्म यं शिशुं ५.९.३
उत स्म राशिं परि ९.८७.९
उत स्म सद्म हर्यतस्य १०९६.१०
उत स्मा सद्य इत्परि ४.३१.८
उत स्मासु प्रथमः ४.३८.६
उत स्मास्य तन्यतोरिव ४.३८.८
उत स्मास्य द्रवतस्तुर ४.४०.३
उत स्मास्य पनयन्ति ४.३८.९
उत स्मा हि त्वामाहुः ४.३१.७
उत स्मैनं वस्त्रमथिं ४.३८.५
उत स्य देवः सविता ६.५०.१३
उत स्य देवो भुवनस्य २.३१.४
उत स्य न इन्द्रो २.३१.३
उत स्य न उशिजामुर्विया १०.९२.१२
उत स्य वाजी क्षिपणिं ४.४०.४
उत स्य वाजी सहुरिर्ऋतावा ४.३८.७
उत स्य वाज्यरुषः ५.५६.७
उत स्या नः सरस्वती घोरा ६.६१.७
उत स्या नः सरस्वतो जुषाणो ७.९५.४
उत स्या नो दिवा ८.१८.७
उत स्या वां मधुमन्मक्षि १.११९.९
उत स्या वां रुशतो १.१८१.८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत स्या श्वेतयावरी ८.२६.१८
उत स्वया तन्वा३ सं वदे ७.८६.२
उत स्वराजे अदितिः ८.१२.१४
उत स्वराजो अदितिः ७.६६.६
उत स्वस्या अरात्याः ९.७९.३
उत स्वानासो दिवि ५.२.१०
उतादः परुषे गवि ६.५६.३
उताभये पुरुहूत श्रवोभिः ३.३०.५
उतायातं सङ्गवे प्रातः ५.७६.३
उतालब्धं स्पृणुहि १०.८७.७
उताशिष्टा अनु शृण्वन्ति २.२४.१३
उतासि मैत्रावरुणो ७.३३.११
उताहं नक्तमुत सोम ९.१०७.२०
उतेदानीं भगवन्तः ७.४१.४
उतेशिषे प्रसवस्य ५.८१.५
उतो घा ते पुरुष्या ७.२९.४
उतो न अस्य कस्यचित् ५.३८.४
उतो नो अस्या उषसो १.१३१.६
उतो न्वस्य जोषमाँ ८.९४.६
उतो न्वस्य यत्पदं ८.७२.१८
उतो न्वस्य यन्महत् ८.७२.६
उतो पतिर्य उच्यते ८.१३.९
उतो पितृभ्यां प्रविदानु ३.७.६
उतो स मह्यमिन्दुभिः १.२३.१५
उतो सहस्रभर्णसं ९.६४.२६
उतो हि वां दात्रा ४.३८.१
उतो हि वां पूर्व्या ३.५४.४
उतो हि वां रत्नधेयानि ७.५३.३
उत्तराहमुत्तरे १०.१४५.३
उत्तानपर्णे सुभगे १०.१४५.२
उत्तानायामजनयन् २.१०.३
उत्तानायामव भरा ३.२९.३
उत्तिष्ठताव पश्यत १०.१७९.१
उत्तिष्ठ नूनमेषां ५.५६.५
उत्तिष्ठन्नोजसा सह ८.७६.१०
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते १.४०.१
उत्तिष्ठसि स्वाहुतो १०.११८.२
उत्ते बृहन्तो अर्चयः ८.४४.४
उत्ते वयश्चिद्वसतेरपप्तन् १.१२४.१२
६.६४.६
उत्ते शतान्मघवन्नुच्च १.१०२.७
उत्ते शुष्मा जिहतां १०.१४२.६
उत्ते शुष्मास ईरते ९.५०.१
उत्ते शुष्मासो अस्थुः ९.५३.१
उत्ते स्तभ्नामि पृथिवीं १०.१८.१३
उत्त्वा मन्दन्तु स्तोमाः ८.६४.१
उत्पुरस्तात्सूर्य १.११९.८
उत्पूषणं युवामहे ६.५७.६
उत्सूर्यो बृहदर्चीष्यश्रेत् ७.६२.१
उत्स्म वातो वहति १०.१०२.२
उदगादयमादित्यो १.५०.१३
उदग्ने तव तद् घृतात् ८.४३.१०
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व ४.४.४
उदग्ने भारत द्युमत् ६.१६.४५
उदग्ने शुचयस्तव ८.४४.१७
उदपप्तदसौ सूर्यः १.११९.९
उदपप्तन्नरुणा भानवो १.९२.२
उदप्रुतो न वयो १०.६८.१
उदभ्राणीव स्तनयन् ६.४४.१२
उदसौ सूर्यो अगात् १०.१५९.१
उदस्तम्भीत्समिधा ३.५.१०
उदस्य बाहू शिथिरा ७.४५.२
उदस्य शुष्माद् भानुः ७.३४.७
उदस्य शोचिरस्थादाजुह्वा ७.१६.३
उदस्य शोचिरस्थाद् दीदियुषः ८.२३.४
उदातैर्जिहते बृहद् ९.५.५
उदानट् ककुहो दिवं ८.६.४८
उदावता त्वक्षसा ६.१८.९
उदिता यो निदिता ८.१०३.११
उदिन्वस्य रिच्यते ७.३२.१२
उदीरतामवर उत् १०.१५.१
उदीरतां सूनृता उत १.१२३.६
उदीरय कवितमं कवी ५.४२.३
उदीरयथा मरुतः ५.५५.५
उदीरयन्त वायुभिः ८.७.३
उदीरय पितरा १०.११.६
उदीराथामृतायते ८.७३.१
उदीर्ध्वं जीवो असुः १.११३.१६
उदीर्ध्व नार्यभि १०.१८.८
उदीर्ष्वातः पतिवती १०.८५.२१
उदीर्ष्वातो विश्वावसो १०.८२.२२
उदु ज्योतिरमृतं ७.७६.१
उदु तिष्ठ सवितः श्रुधि ७.३८.२
उदु तिष्ठ स्वध्वर ८.२३.५
उदुत्तमं मुमुग्धि नो १.२५.२१
उदुत्तमं वरुण १.२४.१५
उदु त्यच्चक्षुर्मही ६.५१.१
उदु त्यद्दर्शतं वपुः ७.६६.१४
उदु त्यं जातवेदसं १.५०.१
उदु त्ये अरुणप्सव ८.७.७
उदु त्ये मधुमत्तमा ८.३.१५
उदु त्ये सूनवो गिरः १.३७.१०
उदु ब्रह्माण्यैरत ७.२३.१
उदुश्रिय उषसो ६.६४.१
उदु ष्टुतः समिधा यह्वो ३.५.९
उदु ष्य देवः सविता दमूना ६.७१.४
उदु ष्य देवः सविता ययाम ७.३८.१
उदु ष्य देवः सविता सवाय २.३८.१
उदु ष्य देवः सविता हिरण्यया ६.७१.१
उदु ष्य वः सविता ८.२७.१२
उदु ष्य शरणे दिवो ८.२५.१९
उदु स्तोमासो अश्विनोः ७.७२.३
उदु स्त्रियाः सृजते सूर्यः ७.८१.२
उदु स्वानेभिरीरत ८.७.१७
उदू अयाँ उपवक्तेव ६.७१.५
उदू षु णो वसो महे ८.७०.९
उद्गा आजदङ्गिरोभ्य ८.१४.८
उद्गातेव शकुने २.४३.२
उद् गो हृदमपिबज्जर्हृषाणः १०.१०२.४
उद्धेदभि श्रुतामघं ८.९३.१
उद् द्यामिवेत् तृष्णजो ७.३३.५
उद्धर्षय मघवन् १०.१०३.१०
उद् बुध्यध्वम् १०.१०१.१
उद्यत सहः सहस ५.३१.३
उद्यदिन्द्रो महते दानवाय ५.३२.७
उद्यद् ब्रध्नस्य विष्टपं ८.६९.७
उद्यन्नद्य मित्रमह १.५०.११
उद्यंयमीति १.९५.७
उद्यस्य ते नवजातस्य ७.३.३
उद्व ऊर्मिः शम्या ३.३३.१३
उद्वत्स्वस्मा अकृणोतना १.१६१.११
उद्वन्दनमैरतम् १.११८.६
उद्वयं तमसस्परि १.५०.१०
उद्वां चक्षुर्वरुण ७.६१.१
उद्वां पृक्षासो मधुमन्त ४.४५.२
उद्वां पृक्षासो मधुमन्तो अस्थुः ७.६०.४
उद् वृहा रक्षः सह ३.३०.१७
उद्वेति प्रसवीता जनानां ७.६३.२
उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः ७.६३.१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनत्ति भूमिं पृथिवीं ५.८५.४
उन्मदिता मौनेयेन १०.१३६.३
उन्मध्व ऊर्मिर्वनना ९.८६.४०
उन्मा पीता अयंसत १०.११९.३
उन्मा ममन्द वृषभो २.३३.६
उप क्रमस्वा भर ८.८१.७
उप क्षत्रं पृञ्चीत १.४०.८
उप क्षरन्ति सिन्धवो १.१२५.४
उपक्षेतारस्तव सुप्रणीते ३.१.१६
उप च्छायामिव घृणे ६.१६.३८
उप ते गाइवाकरं १०.१२७.८
उप तेऽधां सहमाना १०.१४५.६
उप ते स्तोमान्पशुपा १.११४.९
उप त्मन्या वनस्पते १.१८८.१०
उप त्या वह्नी गमतो ७.७३.४
उप त्रितस्य पाष्यो ९.१०२.२
उप त्वा कर्मन्नूतये ८.२१.२
उप त्वाग्ने दिवेदिवे १.१.७
उप त्वा जामयो गिरो ८.१०२.१३
उप त्वा जुह्वो३मम ८.४४.५
उप त्वा रण्वसंदृशं ६.१६.३७
उप त्वा सातये नरो ७.१५.९
उप नः पितवा चर १.१८७.३
उप नः सवना गहि १.४.२
उप नः सुतमा गतम् ५.७१.३
उत नः सुतमा गहि सोमं ३.४२.१
उप नः सुतमा गहि हरिभिः १.१६.४
उप नः सूनवो गिरः ६.५२.९
उप नो देवा अवसा १.१०७.२
उप नो यातमश्विना ८.२६.७
उप नो वाजा अध्वरं ४.३७.१
उप नो वाजिनीवसू ८.२२.७
उप नो हरिभिः सुतं ८.९३.३१
उप प्र जिन्वन्नुशतीः १.७१.१
उप प्रयन्तो अध्वरं १.७४.१
उप प्रागाच्छसनं वाज्यर्वा १.१६३.१२
उप प्रागात्परमं यत्सधस्थं १.१६३.१३
उप प्रागात्सुमन्मे धायि १.१६२.७
उप प्रियं पनिप्रतं ९.६७.२९
उप प्रेत कुशिकाश्चेतयध्वं ३.५३.११
उप ब्रध्नं त्रावाता ८.४.१४
उप ब्रह्माणि हरिवो १०.१०४.६
उपमं त्वा मघोनां ८.५३.१
उप मा पेपिषत्तमः १०.१२७.७
उप मा मतिरस्थित १०.११९.४
उप मा श्यावाः स्वनयेन १.१२६.३
उप मा षड् द्वाद्वा ८.६८.१४
उप यमेति युवतिः ७.१.६
उप यो नमो नमसि ४.२१.५
उप व एषे नमसा १.१८६.४
उप व एषे वन्द्येभिः ५.४१.७
उप शिक्षापतस्थुषः ९.१९.६
उप श्वासय पृथिवीं ६.४७.२९
उपसद्याय मीळ्हुषः ७.१५.१
उप सर्प मातरं भूमिं १०.१८.१०
उपस्तुतिरौचथ्यमुरुष्येन् १.१५८.४
उपस्तुतिं नमस उद्यतिं १.१९०.३
उप स्तुहि प्रथमं रत्नधेयं ५.४२.७
उपस्तृणीतमत्रये ८.७३.३
उपस्थाय मातरमन्न ३.४८.३
उपस्थायं चरति यत्समा १.१४५.४
उपस्रक्वेषु बप्सतः ८.७२.१५
उपहूताः पितरः सोम्यासः १०.१५.५
उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां १.१६४.२६
उप ह्वये सुहवं मारुतं १०.३६.७
उपह्वरे गिरीणां ८.६.२८
उपह्वरेषु यदचिध्वं १.८७.२
उपाजिरा पुरुहूताय ३.३५.२
उपायातं दाशुषे मर्त्याय ७.७१.२
उपावसृज त्मन्या १०.११०.१०
उपास्मै गायता नरः ९.११.१
उपेदमुपपर्चनं ६.२८.८
उपेदहं धनदामप्रतीतं १.३३.२
उपेमसृक्षि वाजयुः २.३५.१
उपो अदर्शि शुन्ध्युवो १.१२४.४
उपो नयस्व वृषणा ३.३५.३
उपोप मे परामृश १.१२६.७
उपो मतिः पृच्यते ९.६९.२
उपो रथेषु पृषतीः १.३९.६
उपो रुरुचे युवतिर्न ७.७७.१
उपो षु जातमप्तुरं ९.६१.१३
उपो षु शृणुहि १.८२.१
उपो ह यद्विदथं वाजिनो ७.९३.३
उपो हरीणां पतिम् ८.२४.१४
उभयतः पवमानस्य ९.८६.६
उभयं ते न क्षीयते २.९.५
उभयं शृणवच्च ८.६१.१
उभयासो जातवेदः २.२.१२
उभा उ नूनं तदिदर्थं १०.१०६.१
उभा जिग्यथुर्न परा ६.६९.८
उभा देवा दिवि १.२३.२
उभा देवा नृचक्षसा ९.५.७
उभा पिबतमश्विना १.४६.१५
उभाभ्यां देव सवितः ९.६७.२५
उभा वामिन्द्राग्नी ६.६०.१३
उभा शंसा नर्या मामविष्ठा १.१८५.९
उभा हि दस्रा भिषजा ८.८६.१
उभे अस्मै पीपयतः २.२७.१५
उभे चिदिन्द्र रोदसी ७.२०.४
उभे द्यावापृथिवी ९.८१.५
उभे धुरौ वह्निरापिब्द १०.१०१.११
उभे पुनामि रोदसी १.१३३.१
उभे भद्रे जोषयेते १.९५.६
उभे यत्ते महिना ७.९६.२
उभे यदिन्द्र रोदसी १०.१३४.१
उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो ५.६.९
उभे सोमावचाकशत् ९.३२.४
उभोभयाविन्नुप धेहि १०.८७.३
उरु गव्यूतिरभयानि ९.९०.४
उरु णस्तन्वे३तने ८.६८.१२
उरु ते ज्रयः पर्येति १.९५.९
उरु वां रथः परि नक्षति ४.४३.५
उरुव्यचसा महिनी १.१६०.२
उरुव्यचसे महिने ७.३१.११
उरुव्यचा नो महिषः १०.१२८.८
उरुशंसा नमोवृधा ३.६२.१७
उरुष्या णो अभिशस्तेः १.९१.१५
उरुष्या णो मा परा दाः ८.७१.७
उरुं गभीरं जनुषा ३.४६.४
उरुं नृभ्य उरुं गव ८.६८.१३
उरुं नो लोकमनु ६.४७.८
उरुं यज्ञाय चक्रथुरु ७.९९.४
उरुं हि राजा वरुणश्चकार १.२४.८
उरूणसावसुतृपौ १०.१४.१२
उरोष्ट इन्द्र राधसो ५.३८.१
उरौ देवा अनिबाधे स्याम ५.४२.१७
५.४३.१६
उरौ महाँ अनिबाधे ३.१.११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरौ वा ये अन्तरिक्षे ३.६.८
उर्वी पृथिवी बहुले १.१८५.७
उर्वी सद्मनी बृहती १.१८५.६
उलूकयातुं शुशुलूकयातुं ७.१०४.२२
उवाच मे वरुणो ७.८७.४
उवासोषा उच्छाच्च १.४८.३
उवे अम्ब सुलाभिके १०.८६.७
उवोचिथ हि मघवन् ७.३७.३
उशना काव्यस्त्वा ८.२३.१७
उशना यत्परावत ८.७.२६
उशना यत्सहस्यैः ५.२९.९
उशन्तस्त्वा नि धीमहि १०.१६.१२
उशन्ता दूता न दभाय ७.९१.२
उशन्ति घा ते अमृतास १०.१०.३
उशन्नु षु णः सुमना ४.२०.४
उशिक्पावको अरतिः १०.४५.७
उशिक्पावको वसुर्मा १.६०.४
उष आ भाहि भनुना १.४८.९
उषउषो हि वसो १०.८.४
उषसः पूर्वा अध यत् ३.५५.१
उषसां न केतवो १०.७८.७
उषस्तच्चित्रमा भरा १.९२.१३
उषस्तमश्यां यशसं १.९२.८
उषः प्रतीची भुवनानि ३.६१.३
उषा अप स्वसुस्तमः १०.१७२.४
उषा उच्छन्ती समिधाने १.१२४.१
उषासानक्ता बृहती २०.३६.१
उषो अद्येह गोमति १.९२.१४
उषो देव्यमर्त्या ३.६१.२
उषो न जारः पृथुपाजो ७.१०.१
उषो न जारो विभावोस्रः १.६९.५
उषो भद्रेभिरा गहि १.४९.१
उषो मघोन्या वह ४.५५.९
उषो यदग्निं समिधे १.११३.९
उषो यदद्य भानुना १.४८.१५
उषो ये ते प्र यामेषु १.४८.४
उषो वाजं हि वंस्व १.४८.११
उषो वाजेन वाजिनि ३.६१.१
उष्टारेव फर्वरेषु १०.१०६.२
उस्रा वेद वसूनां ९.५८.२

ऊ

ऊती देवानां वयम् १.१३६.७
ऊती शचीवस्तव १०.१०४.४
ऊरुभ्यां ते अष्ठीवद् १०.१६३.४
ऊर्जं गावो यवसे १०.१००.१०
ऊर्जं नो द्यौश्च पृथिवी ६.७०.६
ऊर्जा देवाँ अवस्योजसा ८.३६.३
ऊर्जो नपाज्जातवेदः १०.१४०.३
ऊर्जो नपातमध्वरे ३.२७.१२
ऊर्जो नपातमा हुवे ८.४४.१३
ऊर्जो नपातं स हिनायं ६.४८.२
ऊर्जे नपातं सुभगं ८.१९.४
ऊर्जो नपात्सहसावन् १०.११५.८
ऊर्णम्रदा वि प्रथस्वाभ्य ५.५.४
ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये १.३६.१३
ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य ४.६.१
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये १.३०.६
ऊर्ध्वं केतुं सविता ४.१४.२
ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं १.८५.१०
ऊर्ध्वं भानुं सविता ४.१३.२
ऊर्ध्वा धीतिः प्रत्यस्य १.११९.२
ऊर्ध्वा यत्ते त्रेतिनी १०.१०५.९
ऊर्ध्वासस्त्वा न्विन्दवः ७.३१.९
ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे ८.४५.१२
ऊर्ध्वो अग्निः सुमतिं ७.३९.१
ऊर्ध्वो गन्धर्वो ---चित्रा १०.१२३.७
ऊर्ध्वो गन्धर्वो ---विश्वा ९.८५.१२
ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदग्निः १०.७०.७
ऊर्ध्वो ग्रावा वसवो १०.१००.९
ऊर्ध्वो नः पाह्यंहसो १.३६.१४
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्या ४.४.५
ऊर्ध्वो वामग्निरध्वरेषु ६.६३.४
ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे ३.४.४
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षे २.३०.३
ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ ९.६४.११

ऋ

ऋक्सामाभ्यामभिहितौ १०.८५.११
ऋचा कपोतं नुदत १०.१६५.५
ऋचां त्वः पोषमास्ते १०.७१.११
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् १.१६४.३९
ऋजिप्य ईमिन्द्रावतो ४.२७.४
ऋजीते परि वृङ्धि ६.७५.१२
ऋजीत्येनी रुशती १०.७५.७
ऋजीपी श्येनो ददमानो ४.२६.६
ऋजीषी वज्री वृषभः ५.४०.४
ऋजुनीती नो वरुणो १.९०.१
ऋजुरिच्छंसो वनवत् २.२६.१
ऋजुः पवस्व वृजिनस्य ९.९७.४३
ऋज्रमुक्षण्यायने ८.२५.२२
ऋज्राविन्द्रोत आ ददे ८.६८.१५
ऋतज्येन क्षिप्रेण २.२४.८
ऋतधीतय आ गत ५.५१.२
ऋतमृतेन सपन्तेषिरं ५.६८.४
ऋतस्य गोपा न दभाय ९.७३.८
ऋतस्य गोपावधि ५.६३.१
ऋतस्य जिह्वा पवते ९.७५.२
ऋतस्य तन्तुर्विततः ९.७३.९
ऋतस्य दृळ्हा धरुणानि ४.२३.९
ऋतस्या देवा अनु व्रता १.६५.२
ऋतस्य पथि वेधा ६.४४.८
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य १.६८.३
ऋतस्य बुध्न उषसाम् ३.६१.७
ऋतस्य रश्मिमनुयच्छ १.१२३.१३
ऋतस्य वा केशिना ३.६.६
ऋतस्य वो रथ्यः ६.५१.९
ऋतस्य हि धेनवो वाव १.७३.६
ऋतस्य हि प्रसितिर्द्यौः १०.९२.४
ऋतस्य हि वर्तनयः १०.५.४
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति ४.२३.८
ऋतस्य हि सदसो १०.१११.२
ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् १०.१९०.१
ऋतं चिकित्व ऋतमित् ५.१२.२
ऋतं दिवे तदवोचं १.१८५.१०
ऋतं देवाय कृण्वते २.३०.१
ऋतं येमान ऋतमिद्वनो ४.२३.१०
ऋतं वदन्नृतद्युम्न ९.११३.४
ऋतं वोचे नमसा पृच्छ्य ४.५.११
ऋतं शंसन्त ऋजुदीध्यानाः १०.६७.२
ऋतायिनी मायिनी १०.५.३
ऋतावरी दिवो अर्कैः ३.६१.६
ऋतावान ऋतजाता ७.६६.१३
ऋतावानमृतायवो ८.२३.९
ऋतावानं महिषं १०.१४०.६
ऋतावानं यज्ञियं ३.२.१३
ऋतावानं विचेतसं ४.७.३
ऋतावानः प्रतिचक्ष्या २.२४.७
ऋतावाना नि षेदतुः ८.२५.८
ऋतावा यस्य रोदसी ३.१३.२
ऋतुर्जनित्री तस्या २.१३.१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋतेन ऋतमपिहितं ५.६२.१
ऋतेन ऋतं धरुणं ५.१५.२
ऋतेन ऋतं नियतम् ४.३.९
ऋतेन देवः सविता ८.८६.५
ऋतेन देवीरमृता ४.३.१२
ऋतेन मित्रावरुणा १.२.८
ऋतेन यावृतावृधा १.२३.५
ऋतेन हि ष्मा वृषभः ४.३.१०
ऋतेनाद्रिं व्यसन्भिदन्तः ४.३.११
ऋते स विन्दते युधः ८.२७.१७
ऋदूदरेण सख्या संचेय ८.४८.१०
ऋधक्सा वो मरुतो ७.५७.४
ऋधक्सोम स्वस्तये ९.६४.३०
ऋधगित्था स मर्त्यः ८.१०१.१
ऋधद्यस्ते सुदानवे ६.२.४
ऋध्याम स्तोमं सनुयाम १०.१०६.११
ऋभुक्षणं न वर्तव ८.४५.२९
ऋभुक्षणामिन्द्रमा हुवे १.१११.४
ऋभुक्षणो वाजा ७.४८.१
ऋभुतो रयिः प्रथमश्रवः ४.३६.५
ऋभुमन्ता वृषणा वाज ८.३५.१५
ऋभुमृभुक्षणो रयिं ४.३७.५
ऋभुर्ऋभुक्षा ऋभुर्विधतः १०.९३.८
ऋभुर्ऋभुभिरभि वः ७.४८.२
ऋभुर्न इन्द्रः शवसान १.११०.७
ऋभुर्न रथ्यं नवं ९.२१.६
ऋभुर्भराय सं शिशातु १.१११.५
ऋभुर्विभ्वा वाज इन्द्रो ४.३४.१
ऋभुश्चक्र ईड्यं चारु नाम ३.५.६
ऋश्यो न तृष्यन्नव ८.४.१०
ऋषभं मा समानानां १०.१६६.१
ऋषिमना य ऋषिकृत् ९.९६.१८
ऋषिर्विप्रः पुरएता ९.८७.३
ऋषिर्हि पूर्वजा असि ८.६.४१
ऋषिं नरावंहसः पांचजन्यं १.११७.३
ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः ९.११४.२
ऋष्टयो वो मरुतो ५.५७.६
ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर जातः १०.१४८.२
ऋष्वा ते पादा प्र १०.७३.३

ए

एक एवाग्निर्बहुधा ८.५८.२
एकपाद् भूयो द्विपदो १०.११७.८
एकया प्रतिधापिबत् ८.७७.४
एकराळस्य भुवनस्य ८.३७.३
एकस्त्वष्टुरश्वस्याविशस्ता १.१६२.१९
एकस्मिन् योगे भुरणा ७.६७.८
एकस्य चिन्मे विभ्वस्त्वोजः १.१६५.१०
एकस्या वस्तोरावतं १.११६.२१
एकं चमसं चतुरः १.१६१.२
एकं च यो विंशतिं ७.१८.११
एकं नु त्वा सत्पतिं ५.३२.११
एकं वि चक्र चमसं ४.३६.४
एकः समुद्रो धरुणः १०.५.१
एकः सुपर्णः स समुद्रं १०.११४.४
एकाचेतत्सरस्वती ७.९५.२
एको द्वे वसुमती समीची ३.३०.११
एकोबहूनामसि मन्यवीळितो १०.८४.४
एत उ त्ये अवीवशन् ९.२१.७
एत उ त्ये पतयन्ति ७.१०४.२०
एत उ त्ये प्रत्यदृश्रन् १.१९१.५
एतच्चन त्वो विचिकेत १.१५२.२
एतत्त इन्द्र वीर्यम् ८.५४.१
एतत्यत्त इन्द्र वृष्ण १.१००.१७
एतत्यत्त इन्द्रियं ६.२७.४
एतत्यत्र योजनमचेति १.८८.५
एतदस्या अनः शये ४.३०.११
एतद्धेदुत वीर्यं ४.३०.८
एतद्वचो जरितर्मापि ३.३३.८
एतमु त्यं---मृजन्ति सप्त ९.१५.८
एतमु त्यं ---मृजन्ति सिन्धु ९.६१.७
एतमु त्यं मदच्युतं ९.१०८.११
एतं ते स्तोमं तुविजात ५.२.११
एतं त्यं हरितो दश ९.३८.३
एतं त्रितस्य योषणो ९.३८.२
एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणे ९.१५.७
एतं मृजन्ति मर्ज्यं पवमानं ९.४६.६
एतं मे स्तोममूर्म्ये ५.६१.१७
एतं मे स्तोमं तना १०.९३.१२
एतं वां स्तोममश्विनौ १०.३९.१४
एतं शर्धं धाम यस्य सूरेः १.१२२.१२
एतं शंसमिद्रास्मयुष्टवं १०.९३.११
एता अग्न आशुषाणास ७.९३.८
एता अर्षन्ति हृद्यात् ४.५८.५
एता अर्षन्त्यलला ४.१८.६
एता उ त्या उषसः १.९२.१
एता उ त्याः प्रत्यदृश्रन् ७.७८.३
एता च्यौत्नानि ते कृता ८.७७.९
एता ते अग्न ---जुष्टानि १.७३.१०
एता ते अग्न ---वोचाम ४.२.२०
एता ते अग्ने जनिमा ३.१.२०
एता त्या ते श्रुत्यानि १०.१३८.६
एता धियं कृणवामा ५.४५.६
एतानि धीरो निण्या ७.५६.४
एतानि भद्रा कलश १०.३२.९
एतानि वामश्विना वर्धनानि २.३९.८
एतानि वामश्विना वीर्या १.११७.२५
एतानि वां श्रवस्या १.११७.१०
एतानि सोम पवमानो ९.७८.५
एता नो अग्ने सौभगा ७.३.१०,४.१०
एतान्यग्ने नवतिर्नव १०.९८.१०
एतान्यग्ने नवतिं सहस्रा १०.९८.११
एतायामोप गव्यन्त १.३३.१
एतावतश्चिदेषां ८.७.१५
एतावतस्त ईमह इन्द्र ८.४९.९
एतावतस्ते वसो विद्याम ८.५०.९
एतावद्वां वृषण्वसू ८.५.२७
एतावद्वेदुषस्त्वम् ५.७९.१०
एतावानस्य महिमा १०.९०.३
एता विश्वा चकृवाँ ५.२९.१४
एता विश्वा विदुषे ४.३.१६
एता विश्वा सवना १०.५०.६
एता वो वश्म्युद्यता २.३१.७
एति प्र होता व्रतमस्य १.१४४.१
एते असृग्रमाशवो ९.६३.४
एते असृग्रमिन्दवः ९.६२.१
एते त इन्द्र जन्तवो १.८१.९
एते त्ये भानवो ७.७५.३
एते त्ये वृथगग्रयः ८.४३.५
एते द्युम्नेभिर्विश्वं ७.७.६
एते धामान्यार्या ९.६३.१४
एते धावन्तीन्दवः ९.२१.१
एते नरः स्वपसो १०.७६.८
एतेनाग्ने ब्रह्मणा १.३१.१८
एते पूता ---विपा ९.२२.३
एते पूता ---सूर्यासो ९.१०१.१२
एते पृष्ठानि रोदसोः ९.२२.५
एते मृष्टा अमर्त्याः ९.२२.४
एते वदन्ति शतवत् १०.९४.२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एते वदन्त्यविदन्ना १०.९४.३
एते वाता इवोरवः ९.२२.२
एते विश्वानि वार्या ९.२१.४
एते शमीभिः सुशमी १०.२८.१२
एते सोमा अति वारा ९.८८.६
एते सोमा अभि गव्या ९.८७.५
एते सोमा अभि प्रियं ९.८.१
एते सोमा असृक्षत ९.६२.२२
एते सोमास आशवो ९.२२.१
एके सोमास इन्दवः ९.४६.३
एते सोमाः पवमानास ९.६९.९
एते स्तोमा नरां नृतम ७.१९.१०
एतो न्वद्य सुध्यो ५.४५.५
एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धम् ८.९५.७
एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखायः ८.२४.१९
एतो न्विन्द्रं स्तवाममेशानं ८.८१.४
एतौ मे गावौ प्रमरस्य १०.२७.२०
एदं मरुतो अश्विना ५.२६.९
एदु मध्वो मदिन्तरं ८.२४.१६
एनाङ्गूषेण वयमिन्द्रवन्तो १.१०५.१९
एना मन्दानो जहि शूर ६.४४.१७
एना वयं पयसा ३.३३.४
एना विश्वान्यर्य आ ९.६१.११
एना वो अग्निं नमसो ७.१६.१
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत ८.२४.१३
एन्दो पार्थिवं रयिं ९.२९.६
एन्द्र नो गधि प्रियः ८.९८.४
एन्द्र याहि पीतये ८.३३.१३
एन्द्र याहि मत्स्व ८.१.२३
एन्द्र याहि हरिभिः ८.३४.१
एन्द्र याह्युप नः १.१३०.१
एन्द्रवाहौ नृपतिं १०.४४.३
एन्द्र सानसिं रयिं १.८.१
एन्द्रस्य कुक्षा पवते ९.८०.३
एन्द्रो बर्हिः सीदतु १०.३६.५
एभिर्द्युभिः सुमना १.५३.४
एभिर्न इन्द्राहभिः ७.२८.४
एभिर्नृभिरिन्द्र त्वायुभिः ४.१६.१९
एभिर्नो अर्कैर्भवा ४.१०.३
एभिर्भव सुमना अग्ने ४.३.१५
एमा अग्मन्रेवतीः १०.३०.१४
एमाशुमाशवे १.४.७
एमेनं प्रत्येतन ६.४२.२
एमेनं सृजता १.९.२
एवा कविस्तुवीरवाँ १०.६४.१६
एवाग्निं सहस्यं ७.४२.६
एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा १.७७.५
एवाग्निर्मन्दैः सह १०.११५.७
एवा च त्वं सरम १०.१०८.९
एवा जज्ञानं सहसे ६.३८.५
एवा त इन्दो सुभ्वम् ९.७९.५
एवा त इन्द्रोचथमहेम २.१९.७
एवा तदिन्द्र इन्दुना १०.१४४.६
एवा तमाहुरुत ७.२६.४
एवा ता विश्वा चकृ ६.१७.१३
एवा ते अग्ने विमदो १०.२०.१०
एवा ते अग्ने सुमतिं ५.२७.३
एवा ते गृत्समदाः २.१९.८
एवा ते वयमिन्द्र १०.८९.१७
एवा ते हारियोजना १.६१.१६
एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र ४.१९.१
एवा देव देवताते ९.९७.२७
एवा देवाँ इन्द्रो विव्ये १०.४९.११
एवा न इन्दो अभि ९.९७.२१
एवा न इन्द्र वार्यस्य ७.२४.६, २५.६
एवा न इन्द्रोतिभिरव ५.३३.७
एवा न इन्द्रो मघवा ४.१७.२०
एवा नपातो मम तस्य ६.५०.१५
एवा नः सोम परिसच्यमान ९.९७.३६
एवा नः सोम परिषिच्यमानो ९.६८.१०
एवा नः स्पृधः समजा ६.२५.९
एवा नूनमुप स्तुहि ८.२४.२३
एवा नृभिरिन्द्रः सुश्रवस्या १.१७८.४
एवा नो अग्ने अमृतेषु २.२.९
एवा नो अग्ने विक्ष्वा ७.४३.५
एवा नो अग्ने समिधा १.९५.११
१.९६.९
एवा पतिं द्रोणसाचं १०.४४.४
एवा पवस्व मदिरो ९.९७.१५
एवा पाहि प्रत्नथा ६.१७.३
एवा पित्रे विश्वदेवाय ४.५०.६
एवा पुनान इन्द्रयुः ९.६.९
एवा पुनानो अपः स्वः ९.९१.६
एवा प्लतेः सुनुरवीवृधद्वः १०.६३.१७
१०.६४.१७
एवा बभ्रो वृषभ २.३३.१५
एवा महस्तुविजातः १.११९०.८
एवा महान्बृहद्दिवो १०.१२०.९
एवा महो असुर १०.९९.१२
एवामृताय महे क्षयाय ९.१०९.३
एवा राजेव क्रतुमाँ ९.९०.६
एवा रातिस्तुवीमघ ८.९२.२९
एवारे वृषभा सुते ८.४५.३८
एवा वन्दस्व वरुणं बृहन्तं ८.४२.२
एवा वसिष्ठ इन्द्रं ७.२६.५
एवा वस्व इन्द्र सत्यः ४.२१.१०
एवा वामह्व ---इन्द्राग्नी ८.३८.९
एवा वामह्व ---नासत्या ८.४२.६
एवा सत्यं मघवाना युवं ४.२८.५
एवा हि ते विभूतय १.८.९
एवा हि ते शं सवना १.१७३.८
एवा हि त्वामृतुथा ५.३२.१२
एवा हि मां तवसं जज्ञुः १०.२८.७
एवा हि मां तवसं वर्धयन्ति १०.२८.६
एवा ह्यसि वीरयुः ८.९२.२८
एवा ह्यस्य काम्या १.८.१०
एवा ह्यस्य सूनृता १.८.८
एवाँ अग्निमजुर्यमुः ५.६.१०
एवाँ अग्निं वसूयवः ५.२५.९
एवेदिन्द्रं वृषणं ७.२३.६
एवेदिन्द्रः सुते अस्तावि ६.२३.१०
एवेदिन्द्रः सुहव ६.२९.६
एवेदिन्द्राय वृषभाय ४.१६.२०
एवेदेते प्रति मा १.१६५.१२
एवेदेष तुविकूर्मिः ८.२.३१
एवेदेषा पुरुतमा दृशे कं १.१२४.६
एवेद्यूने युवतयो नमन्त १०.३०.६
एवेन सद्यः पर्येति १.१२८.३
एवेन्द्राग्निभ्यामहावि ५.८६.६
एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन् ८.४०.१२
एवेन्द्राग्नी पपिवांसा १.१०८.१३
एवेन्नु कं सिन्धुमेभिः ७.३३.३
एवैवापागपरे १०.४४.७
एष इन्द्राय वायवे ९.२७.२
एष उ स्य पुरुव्रतो ९.३.१०
एष उ स्य वृषा रथो ९.३८.१
एष एतानि चकारेन्द्रो ८.२.३४
एष कविरभिष्टुतः ९.२७.१
एष क्षेति रथवीतिः ५.६१.१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एष गव्युरचिक्रदत् ९.२७.४
एष ग्रावेव जरिता ५.३६.४
एष च्छागः पुरो १.१६२.३
एष तुन्नो अभिष्टुतः ९.६७.२०
एष ते देव नेता ५.५०.५
एष दिवं वि धावति ९.३.७
एष दिवं व्यासरत् ९.३.८
एष देवः शुभायते ९.२८.३
एष देवो अमर्त्यः ९.३.१
एष देवो रथर्यति ९.३.५
एष देवो विपन्युभिः ९.३.३
एष देवो विपा कृतो ९.३.२
एष द्रुप्सो वृषभो ६.४१.३
एष धिया यात्यण्व्या ९.१५.१
एष नृभिर्वि नीयते ९.२७.३
एष पवित्रे अक्षरत् ९.२८.२
एष पुनानो मधुमाँ ९.११०.११
एष पुरू धियायते ९.१५.२
एष प्र कोशे मधुमाँ ९.७७.१
एष प्रत्नेन जन्मना ९.३.९
एष प्रत्नेन मन्मना ९.४२.२
एष प्रत्नेन वयसा ९.९७.४७
एष प्र पूर्वीरव १.५६.१
एष रुक्मिभिरीयते ९.१५.५
एष वसूनि पिब्दना ९.१५.६
एष वः स्तोमो मरुत इयं १.१६५.१५, १६६.१५, १६७.११, १६८.१०
एष वः स्तोमो मरुतो नम १.१७१.२
एष वाजी हितो नृभिः ९.२८.१
एष वां देवावश्विना ४.१५.९
एष वां स्तोमो अश्विना १.१८४.५
एष विप्रैरभिष्टुतो ९.३.६
एष विश्ववित्पवते ९.९७.५६
एष विश्वानि वार्या ९.३.४
एष वृषा कनिक्रदत् ९.२८.४
एष वृषा वृषव्रतः ९.६२.११
एष शुष्म्यदाभ्यः ९.२८.६
एष शुष्म्यसिष्यदत् ९.२७.६
एष शृङ्गाणि दोधुवत् ९.१५.४
एष सुवानः परि सोमः ९.८७.७
एष सूर्यमरोचयत् ९.२८.५
एष सूर्येण हासते ९.२७.५
एष सोमो अधि त्वचि ९.६६.२९
एष स्तोमो इन्द्र तुभ्यम् ९.१७३.१३
एष स्तोमो अचिक्रदद् ७.२०.९
एष स्तोमो मह उग्राय ७.२४.५
एष स्तोमो मारुतं ५.४२.१५
एष स्तोमो वरुण मित्र ७.६४.५
७.६५.५
एष स्य कारुर्जरते ७.६८.९
एष स्य ते तन्वो २.३६.५
एष स्य ते पवत ९.९७.४६
एष स्य ते मधुमाँ ९.८७.४
एष स्य धारया सुतो ९.१०८.५
एष स्य परि षिच्यते ९.६२.१३
एष स्य पीतये सुतो ९.३८.६
एष स्य भानुरुदियर्ति ४.४५.१
एष स्य मद्यो रसो ९.३८.५
एश स्य मानुषीष्वा ९.३८.४
एष स्य मित्रावरुणा ७.६०.२
एष स्य वां पूर्वगत्वेव ७.६७.७
एष स्य सोमः पवते ९.८४.४
एष स्य सोमो मतिभिः ९.९६.१५
एष हितो वि नीयते ९.१५.३
एषा गोभिररुणेभिः ५.८०.३
एषा जनं दर्शता बोधयन्ती ५.८०.२
एषा दिवो ---ज्योतिः १.१२४.३
एषा दिवो ---व्युच्छन्ती १.११३.७
एषा नेत्री राधसः ७.७६.७
एषा प्रतीची दुहिता ५.८०.६
एषा ययौ परमादन्तः ९.८७.८
एषायुक्त परावतः १.४८.७
एषा व्येनी भवति ५.८०.४
एषा शुभ्रा न तन्वो ५.८०.५
एषा स्या नव्यमायुर्दधाना ७.८०.२
एषा स्या नो दुहिता ६.६५.१
एषा स्या युजाना ७.७५.४
एषा स्या वो मरुतो १.८८.६
एषो उषा अपूर्व्या १.४६.१
एह गमन्नृषयः सोम १०.१०८.८
एह देवा मयोभुवा १.९२.१८
एह वां प्रुषितप्सवो ८.५.३३
एह हरी ब्रह्मयुजा ८.२.२७
एहि प्रेहि क्षयो दिव्या ८.६४.४
एहि मनुर्देवयुः १०.५१.५
एहि वां विमुचो ६.५५.१
एहि स्तोमाँ अभि स्वराभिः १.१०.४
एह्यग्र इह होता नि १.७६.२
एह्यू षु ब्रवाणि ६.१६.१६

ऐ

ऐच्छाम त्वा बहुधा १०.५१.३
ऐतान्रथेषु तस्थुषः ५.५३.२
ऐतु पूषा रयिर्भगः ८.३१.११
ऐभिरग्ने दुवो गिरो १.१४.१
ऐभिरग्ने सरथं ३.६.९
ऐभिर्ददे वृष्ण्या पौंस्यानि १०.५५.७
ऐषु चाकन्धि पुरुहूत १०.१४७.३
ऐषु चेतद् वृषण्वती ८.६८.१८
ऐषु द्यावापृथिवी १०.९३.१०
ऐषु धा वीरवद्यशः ५.७९.६

ओ

ओकिवांसा सुते सचाँ ६.५९.३
ओ चित्सखायं सख्या १०.१०.१
ओजस्तदस्य तित्विषे ८.६.५
ओ जिष्ठं ते मध्यतो ३.२१.५
ओ त्यमह्व आ रथं ८.२२.१
ओ त्ये नर इन्द्रमूतये १.१०४.२
ओमानमापो मानुषी ६.५०.७
ओमासश्चर्षणीधृतो १.३.७
ओर्वप्रा अमर्त्या १०.१२७.२
ओ श्रुष्टिर्विदथ्या ७.४०.१
ओषधयः सं वदन्ते १०.९७.२२
ओषधीः प्रति मोदध्वं १०.९७.३
ओषधीरिति मातरः १०.९७.४
ओषमित्पृथिवीमहं १०.११९.१०
ओ षु घृष्विराधसो ७.५९.७
ओ षु प्र याहि वाजेभिः ८.२.१९
ओ षु वृष्णः प्रयज्यून् ८.७.३३
ओ षु स्वसारः कारवे ३.३३.९
ओ षू णो अग्ने शृणुहि त्वं १.१३९.७
ओष्ठाविव मध्वास्ने वदन्ता २.३९.६
ओ सुष्टुत इन्द्र याहि १.१७७.५

औ

औच्छत्सा रात्री परितक्म्या ५.३०.१४
और्वभृगुवच्छुचिम् ८.१०२.४

क

क इमं दशभिर्ममं ४.२४.१०
क इमं वो निण्यमा चिकेत १.९५.४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क ईषते तुज्यते १.८४.१७
क ईं वेद सुते सचा ८.३३.७
क ईं व्यक्ता नरः सनीळाः ७.५६.१
क ईं स्तवत्कः पृणात्को ६.४७.१५
क उ नु ते महिमनः १०.५४.३
क उ श्रवत्कतमो ४.४३.१
ककर्दवे वृषभो युक्त १०.१०२.६
ककुहं चित्त्वा कवे ८.४५.१४
ककुहः सोम्यो रस ९.६७.८
कङ्कतो न कङ्कतो १.१९१.१
कण्वा इन्द्रं यदक्रत ८.६.३
कण्वाइव भृगवः ८.३.१६
कण्वास इन्द्र ते मतिं ८.६.३१
कण्वेभिर्धृष्णवा धृषत् ८.३३.३
कतरा पूर्वा कतरा परायोः १.१८५.१
कत्यग्नयः कति सूर्यासः १०.८८.१८
कथा कदस्या उषसो ४.२३.५
कथा कविस्तुवीरवान्कया १०.६४.४
कथा त एतदहमा १०.२८.५
कथा ते अग्ने शुचयन्त १.१४७.१
कथा दाशेम नमसा ५.४१.१६
कथा दाशेमाग्नये १.७७.१
कथा देवानां कतमस्य १०.६४.१
कथा नूनं वां विमना ८.८६.२
कथा महामवृधत्कस्य ४.२३.१
कथा महे पुष्टिंभरायः ४.३.७
कथा महे रुद्रियाय ५.४१.११
कथा राधाम सखायः १.४१.७
कथा शर्धाय मरुतामृताय ४.३.८
कथा शृणोति हूयमानमिन्द्रः ४.२३.३
कथा सबाधः शशमानो ४.२३.४
कथा ह तद्वरुणाय त्वमग्ने ४.३.५
कथा नु ते परिचराणि ५.२९.१३
कदत्विषन्त सूरयः ८.९४.७
कदा क्षत्रश्रियं नरं १.२५.५
कदा गच्छाथ मरुतः ८.७.३०
कदा चन प्र युच्छस्युभे ८.५२.७
कदा चन स्तरीरसि ८.५१.७
कदा त इन्द्र गिर्वण ८.१३.२२
कदा भुवन्रथक्षयाणि ६.३५.१
कदा मर्तमराधसं १.८४.८
कदा वसो स्तोत्रं हर्यत १०.१०५.१
कदा वां तौग्र्यो विधत् ८.५.२२
कदा सूनुः पितरं जात १०.९५.१२
कदित्था नृँः पात्रं देवयतां १.१२१.१
कदु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो १०.२९.४
कदु प्रियाय धाम्ने मनामहे ५.४८.१
कदु प्रेष्ठविषां रयीणां १.१८१.१
कदु स्तुवन्त ऋतयन्त ८.३.१४
कदू न्व१स्याकृतं ८.६६.९
कदू महीरधृष्टा अस्य ८.६६.१०
कद्ध नूनं कधप्रियः १.३८.१
कद्ध नूनं कधप्रियो यद् ८.७.३१
कद्धिष्ण्यासु वृधसानो ४.३.६
कद्रुद्राय प्रचेतसे १.४३.१
कद्व ऋतस्य धर्णसि १.१०५.६
कद्वो अद्य महानां ८.९४.८
कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाणः २.४२.१
कनिक्रदत्कलशे गोभिरज्यसे ९.८५.५
कनिक्रददनु पन्थामृतस्य ९.९७.३२
कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः ९.९५.१
कनीनकेव विद्रधे ४.३२.२३
कन्नव्यो अतसीनां ८.३.१३
कन्याइव वहतुं ४.५८.९
कन्या वारवायती ८.९१.१
कन्येव तन्वा३ शासदानाँ १.१२३.१०
कपृन्नरः कपृथमुद्दधातन १०.१०१.१२
कमु ष्विदस्य सेनयाग्नेः ८.७५.७
कमेतं त्वं युवते कुमारं ५.२.२
कया तच्छृण्वे शच्या ४.२०.९
कया ते अग्ने अङ्गिरः ८.८४.४
कया त्वं न ऊत्याभि ८.९३.१९
कया नश्चित्र आ भुवदूती ४.३१.१
कया नो अग्न ऋतयन्नृतेन ५.१२.३
कया नो अग्ने वि वसः ७.८.३
कया शुभा सवयशः १.१६५.१
करम्भ ओषधे भव १.१८७.१०
कर्णगृह्या मघवा शौरदेव्यः ८.७०.१५
कर्हि स्वित्तदिन्द्र यज्जरित्रे ६.३५.३
कर्हि स्वित्तदिन्द्र यन्नृभिर्नॄन् ६.३५.२
कर्हि स्वित्सा त इन्द्र १०.८९.१४
कविमग्निमुप स्तुहि १.१२.७
कविमिव प्रचेतसं ८.८४.२
कविर्न निण्यम् ४.१६.३
कविर्नृचक्षा अभि षीमचष्ट ३.५४.६
कविर्वेधस्या पर्येषि ९.८२.२
कविं केतुं धासिं भानुः ७.६.२
कविं मृजन्ति मर्ज्यं ९.६३.२०
कविं शशासुः कवयो ४.२.१२
कविः कवित्वा दिवि १०.१२४.७
कवी नो मित्रावरुणा १.२.९
कश्छन्दसां योगं १०.११४.९
कस्त उषः कधप्रिये १.३०.२०
कस्तमिन्द्र त्वावसुं ७.३२.१४
कस्ते जामिर्जनानां १.७५.३
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो १०.२९.३
कस्ते मातरं विधवामचिक्रत् ४.१८.१२
कस्त्वा सत्यो मदानां ४.३१.२
कस्मा अद्य सुजाताय ५.५३.१२
कस्य नूनं कतमस्यामृतानां १.२४.१
कस्य नूनं परीणसो ८.८४.७
कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवा १.१६५.२
कस्य वृषा सुते सचा ८.९३.२०
कस्य स्वित्सवनं वृषा ८.६४.८
कं ते दाना असक्षत ८.६४.९
कं नश्चित्रमिषण्यसि १०.९९.१
कं याथः कं ह गच्छथ ५.७४.३
कः कुमारमजनयत् १०.१३५.५
कः स्विद् वृक्षो १.१८२.७
का त उपेतिर्मनसो १.७६.१
का ते अस्यरंकृतिः ७.२९.३
का मर्यादा वयुना ४.५.१३
कामस्तदग्रे समवर्ततााधि १०.१२९.४
कायमानो वना त्वं ३.९.२
का राधद्धोत्राश्विना १.१२०.१
कारुरहं ततोऽभिषक् ९.११२.३
का वां भूदुपमातिः ४.४३.४
काव्येभिरदाभ्या ७.६६.१७
कासीत्प्रमा प्रतिमा १०.१३०.३
का सुष्टुतिः शवसः ४.२४.१
कितवासो यद्रिरिपुर्न ५.८५.८
किमङ्ग त्वा ब्रह्मणः सोम ६.५२.३
किमङ्ग त्वा मघवन्भोजमाहुः १०.४२.३
किमङ्ग रध्रचोदनः ८.८०.३
किमत्र दस्रा कृणुथः १.१८२.३
किमन्ये पर्यासते ८.८.८
किमयं त्वां वृषाकपिः १०.८६.३
किमस्य मदे किम्वस्य ६.२७.१
किमाग आस वरुण ज्येष्ठं ७.८६.४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किमादमत्रं सख्यं सखिभ्यः ४.२३.६
किमादुतासि वृत्रहन् ४.३०.७
किमिच्छन्ती सरमा १०.१०८.१
किमित्ते विष्णो परिचक्षि ७.१००.६
किमिदं वां पुराणवत् ८.७३.११
किमु श्रेष्ठः किं यविष्ठो १.१६१.१
किमु ष्विदस्मै निविदो ४.१८.७
किमू नु वः कृणवामा २.२९.३
किमेता वाचा कृणवा १०.९५.२
कियती योषा मर्यतो १०.२७.१२
कियत्स्विदिन्द्रो अध्येति ४.१७.१२
कियात्या यत्समया १.११३.१०
किं ते कृण्वन्ति कीकटेषु ३.५३.१४
किं देवेषु त्यज एनश्चकर्थ १०.७९.६
किं न इन्द्र जिघांससि १.१७०.२
किं नो अस्य द्रविणं कद्धं ४.५.१२
किं नो भ्रातरगस्त्य १.१७०.३
किं भ्रातासद्यदनाथं भवाति १०.१०.११
किंमयः श्विच्चमस एष आस ४.३५.४
किं स ऋधक् कृणवद्य ४.१८.४
किं सुबाहो स्वङ्गुरे १०.८६.८
किं स्विदासीदधिष्ठानमारंभ १०.८१.२
किं स्विद्वनं ---मनीषिणो १०.८१.४
किं स्विद्वनं ---सन्तस्थाने १०.३१.७
किं स्वित्नो राजा जगृहे १०.१२.५
कीदृङ्निन्द्रः सरमे १०.१०८.३
कीरिश्चिद्धि त्वामवसे ७.२१.८
कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः १.१६५.३
कुत्राचिद्यस्य समृतौ ५.७.२
कुत्सा एते हर्यश्वाय ७.२५.५
कुत्साय शुष्णमशुषं ४.१६.१२
कुमारश्चित्पितरं २.३३.१२
कुमारं माता युवति ५.२.१
कुरुश्रवणमावृणि १०.३३.४
कुर्मस्त आयुरजरं १०.५१.७
कुविच्छकत्कुवित्करत् ८.९१.४
कुवित्स देवीः सनयो ४.५१.४
कुवित्सस्य प्र हि व्रजं ६.४५.२४
कुवित्सु नो गविष्टये ८.७५.११
कुविदङ्ग नमसा ये वृधासः ७.९१.१
कुविदङ्ग प्रति यथा १०.६४.१३
कुविदङ्ग यवमन्तो १०.१३१.२
कुविद् वृषण्यन्तीभ्यः ९.१९.५
कुवित्नो अग्निरुचथस्य १.१४३.६
कुविन्मा गोपां करसे ३.४३.५
कुषुम्भकस्तदब्रवीत् १.१९१.१६
कुह त्या कुह न श्रुता ५.७४.२
कुह यान्ता सुष्टुतिं १.११७.१२
कुह श्रुत इन्द्रः कस्मिन् १०.२२.१
कुह स्थः कुह जग्मथुः ८.७३.४
कुह स्विद्दोषा कुह वस्तो १०.४०.२
कूचिज्जायते सनयासु १०.४.५
कूष्ठो देवावश्विनाद्या ५.७४.१
कृणुष्व पाजः प्रसितिं ४.४.१
कृणोत धूमं वृषणं ३.२९.९
कृणोत्यस्मै वरिवो ४.२४.६
कृण्वन्तो वरिवो गवे ९.६२.३
कृतं चिद्धि ष्मा सनेमि ४.१०.७
कृतं न श्वघ्नी वि चिनोति १०.४३.५
कृतं नो यज्ञं विदथेषु ७.८४.३
कृतानीदस्य कर्त्वा ९.४७.२
कृते चिदत्र मरुतो रणन्त ७.५७.५
कृधि रत्नं यजमानाय ७.१६.६
कृधि रत्नं सुसनितः ३.१८.५
कृधी नो अह्नयो देव १०.९३.९
कृषन्नित्फाल आशितम् १०.११७.७
कृष्णपृतौ वेविजे अस्य १.१४०.३
कृष्णं त एम रुशतः ४.७.९
कृष्णं नियानं हरयः १.१६४.४७
कृष्णः श्वेतोऽरुषो १०.२०.९
कृष्णा यद्गोष्वरुणीषु १०.६१.४
कृष्णा रजांसि पत्सुतः ८.४३.६
कृष्णां यदेनीमभि १०.३.२
केतुं कृण्वन्दिवस्परि ९.६४.८
केतुं कृण्वन्नकेतवे १.६.३
केतुं यज्ञानां विदथस्य ३.३.३
के ते अग्ने रिपवे ५.१२.४
के ते नर इन्द्र १०.५०.३
केतेन शर्मन्त्सचते ८.६०.१८
के मे मर्यकं वि यवन्त ५.२.५
केश्य ग्निं केशी १०.१३६.१
के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा ५.६१.१
को अग्निमीट्टे हविषा १.८४.१८
को अद्धा वेद---वोचत १०.१२९.६
को अद्धा वेद---अच्छ ३.५४.५
को अद्य नर्यो देवकामः ४.२५.१
को अद्य युङ्क्ते १.८४.१६
को अस्य वीरः ४.२३.२
को अस्य वेद प्रथमस्याह्नः १०.१०.६
को अस्य शुष्मं ५.३२.९
को ददर्श प्रथमं १.१६४.४
को देवयन्तमश्नवत् १.४०.७
को देवानामवो अद्या ४.२५.३
को नानाम वचसा ४.२५.२
कोऽनु मर्या अमिथितः ८.४५.३७
को नु वां मित्रावरुणावृतायन् ५.४१.१
को नु वां मित्रास्तुतो ५.६७.५
को न्वत्र मरुतो १.१६५.१३
को मा ददर्श कतमः १०.५१.२
को मृळाति कतम ४.४३.२
को वः स्तोमं राधति १०.६३.६
को वस्त्राता वसवः ४.५५.१
को वामद्य पुरूणां ५.७४.७
को वामद्या करते ४.४४.३
को वां दाशत्सुमतये १.१५८.२
को वेद जानमेषां ५.५३.१
को वेद नूनमेषां ५.६१.१४
को वोऽन्तर्मरुत १.१६८.५
को वो महान्ति महता ५.५९.४
को वो वर्षिष्ठ आ नरो १.३७.६
क्रतुप्रावा जरिता १०.१००.११
क्रतूयन्ति क्रतवो १०.६४.२
क्रतूयन्ति क्षितयो १०.२४.४
क्रत्व इत्पूर्णमुदरं ८.७८.७
क्रत्वः समह दीनता ७.८९.३
क्रत्वा दक्षस्य तरुषो ३.२.३
क्रत्वा दक्षस्य रथ्यं ९.१६.२
क्रत्वा दा अस्तु श्रेष्ठः ६.१६.२६
क्रत्वा महाँ अनुष्वधं १.८१.४
क्रत्वा यदस्य तविषीषु १.१२८.५
क्रत्वा शुक्रेभिरक्षभिः ९.१०२.८
क्रत्वा हि द्रोणे अज्यसे ६.२.८
क्रत्वे दक्षाय नः कवे ९.१००.५
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि १०.१६.९
क्राणा रुद्रा मरुतो १०.९२.६
क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः १.५८.३
क्राणा शिशुर्महीनां ९.१०२.१
क्रीळन्त्यस्य सूनृता ८.१३.८
क्रीळन्नो रश्म आ ५.१९.५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रीळं वः शर्धो १.३७.१
क्रीळुर्मखो ९.२०.७
क्व१ त्यानि नौ सख्या ७.८८.५
क्व१ त्या वल्गू पुरु ६.६३.१
क्व त्री चक्रा त्रिवृतो १.३४.९
क्व नूनं कद्वो अर्थं १.३८.२
क्व नूनं सुदानवो ८.७.२०
क्व वः सुम्ना नव्यांसि १.३८.३
क्व१ वो अश्वाः क्रा३भीशवः ५.६१.२
क्व१ स्य ते रुद्रः २.३३.७
क्व१ स्य वीरः को अपश्यद् ५.३०.१
क्व१ स्य वृषभो युवा ८.६४.७
क्व१ स्या वो मरुतः १.१६५.६
क्वस्विदद्य कतमास्व १०.४०.१४
क्व स्विदस्य रजसो १.१६८.६
क्व स्विदासां कतमा पुराणी ४.५१.६
क्वेयथ क्रेदसि ८.१.७
क्षत्रं जिन्वतमुत ८.३५.१७
क्षत्राय त्वमवसि ८.३७.६
क्षत्राय त्वं श्रवसे १.११३.६
क्षप उस्रश्च दीदिहि ७.१५.८
क्षपो राजन्नुत १.७९.६
क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं ४.१७.१३
क्षेति क्षेमेभिः साधुभिः ८.८४.९
क्षेत्रमिव वि ममुः १.११०.५
क्षेत्रस्य पतिना वयं ४.५७.१
क्षेत्रस्य पते मधुमन्तं ४.५७.२
क्षेत्रादपश्यं सनुतः ५.२.४
क्षेमस्य च प्रयुजश्च ८.३७.५

ख

खे रथस्य खेऽनसः ८.९१.७

ग

गच्छतं दाशुषो गृहं ८.८५.६
गणानां त्वा गणपतिं २.२३.१
गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः ५.८७.९
गन्तारा हि स्थोऽवसे १.१७.२
गन्तेयान्ति सवना ६.२३.४
गन्धर्व इत्था पदमस्य ९.८३.४
गमद्वाजं वाजयन्निन्द्र ७.३२.११
गमन्नस्मे वसून्या १०.४४.५
गम्भीराँ उदधीँरिव ३.४५.३
गम्भीरेण न उरुणा ६.२४.९
गयस्फानो अमीवहा १.९१.१२
गर्भं धेहि सिनीवालि १०.१८४.२
गर्भे नु नौ जनिता १०.१०.५
गर्भे नु सन्नन्वेषामवेद ४.२७.१
गर्भे मातुः पितुष्पिता ६.१६.३५
गर्भे योषामदधुः १०.५३.११
गर्भो यज्ञस्य देवयुः ८.१२.११
गर्भो यो अपां गर्भः १.७०.२
गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं ५.५९.३
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र ३.३२.२
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय ४.१७.१६
गव्यो षु णो यथा पुरा ८.४६.१०
गाथपतिं मेधपतिं १.४३.४
गाथश्रवसं सत्पतिं ८.२.३८
गामङ्गैष आ ह्वयति १०.१४६.४
गायत्रेण प्रति मिमीते १.१६४.२४
गायत्साम नभन्यं १.१७३.१
गायन्ति त्वा गायत्रिणो १.१०.१
गार्हपत्येन सन्त्य १.१५.१२
गावइव ग्रामं यूयुधिः १०.१४९.४
गाव उपावतावतं ८.७२.१२
गावश्चिद्धा समन्यवः ८.२०.२१
गावो न यूथमुप यन्ति ८.४६.३०
गावो भगो गाव इन्द्रो ६.२८.५
गावो यवं प्रयुता १०.२७.८
गिरयश्चित्रि जिहते ८.७.३४
गिरश्च यास्ते गिर्वाहः ८.२.३०
गिरस्त इन्द्र ओजसा ९.२.७
गिरा जात इह स्तुत ९.६२.१५
गिरा य एता युनजद्धरी ७.३६.४
गिरा यदी सबन्धवः ९.१४.२
गिरा वज्रो न संभृतः ८.९३.९
गिरिर्न यः स्वतवाँ ४.२०.६
गिरीँरज्राम्रेजमानाँ १०.४४.८
गिरो जुषेथामध्वरं जुषेथां ८.३५.६
गिर्वणः पाहि नः सुतं ३.४०.६
गीर्णं भुवनं तमसाप १०.८८.२
गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान ७.९३.४
गुहा शिरो निहितमृधगक्षी १०.७९.२
गुहा सतीरुप त्मना ८.६.८
गुहा हितं गुह्यं गूळ्हं २.११.५
गूहता गुह्यं तमो १.८६.१०
गृणाना जमदग्निना ३.६२.१८
गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्म १.६२.५
गृणे तदिन्द्र ते ८.६२.८
गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हाः ७.२४.२
गृभ्णामि ते सौभगत्वाय १०.८५.३६
गृष्टिः ससूव स्थविरं ४.१८.१०
गृहंगृहमहना यात्यच्छा १.१२३.४
गृहमेधास आ गत ७.५९.१०
गृहो याम्यरंकृतो १०.११९.१३
गोजिता बाहू अमितक्रतुः १.१०२.६
गोजिन्नः सोमो रथजिद् ९.७८.४
गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं १०.१०३.६
गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे ३.५०.३
गोभिर्यदीमन्ये अस्मत् ८.२.६
गोभिर्वाणो अज्यते सोभरी ८.२०.८
गोभिष्टरेमामति दुरेवां १०.४२.१०
४३.१०, ४४.१०
गोमदश्वावद्रथवत्सुवीरं ५.५७.७
गोमदू षु नासत्या २.४१.७
गोमद्धिरण्यवद्वसु ७.९४.९
गोमन्न इन्दो अश्ववत् ९.१०५.४
गोमन्नः सोम वीरवद् ९.४२.६
गोमातरो यच्छुभयन्ते १.८५.३
गोमायुरदादजमायुरदाद् १.१०३.१०
गोमायुरेको अजमायुरेकः ७.१०३.६
गोमाँ अग्नेऽविमाँ अश्वी ४.२.५
गोवित्पवस्व वसविद्धिरण्य ९.८६.३९
गोषा इन्दो नृषा ९.२.१०
गोषु प्रशस्तिं वनेषु धिषे १.७०.५
गौरमीमेदनु वत्सं १.१६४.२८
गौरीर्मिमाय सलिलानि १.१६४.४१
गौर्धयति मरुतां ८.९४.१
ग्राश्च यन्नरश्च वावृधन्त ६.६८.४
ग्रन्थिनं न वि ष्य ९.९७.१८
ग्रावाण उपरेष्वा १०.१७५.३
ग्रावाणः सविता नु वो १०.१७५.४
ग्रावाणः सोम नो ६.५१.१४
ग्रावाणेव तदिदर्थं २.३९.१
ग्रावाणो अप दुच्छुनां १०.१७५.२
ग्रावाणो न सूरयः १०.७८.६
ग्रावा वदन्नप रक्षांसि १०.३६.४
ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः ९.६७.१९
ग्राव्णो ब्रह्मा युयुजानः ५.४०.८
ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः १०.१६३.२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घ

घनेव विष्वग्वि जह्य १.३६.१६
घर्मा समन्ता त्रिवृतं १०.११४.१
घर्मेव मधु जठरे सनेरू १०.१०६.८
घृतपृष्ठा मनोयुजो १.१४.६
घृतप्रतीकं व ऋतस्य १.१४३.७
घृतप्रुषः सौम्या ८.५९.४
घृतमग्रेर्वध्र्यश्वस्य वर्धन १०.६९.२
घृतवती भुवनानामभिश्रि ६.७०.१
घृतवन्तमुप मासि १.१४२.२
घृतवन्तः पावक ते ३.२१.२
घृतं न पूतं तनूरेपाः ४.१०.६
घृतं पवस्व धारया ९.४९.३
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य २.३.११
घृताहवन दीदिवः १.१२.५
घृताहवन सन्त्येमा १.४५.५
घृतेन द्यावापृथिवी ६.७०.४
घृतेनाग्निः समज्यते १०.११८.४
घृषुं पावकं वनिनं १.६४.१२
घृषुः श्येनाय कृत्वने १०.१४४.३
घ्नन्तो वृत्रमतरन्रोदसी १.३६.८
घ्नन्मृध्राण्यप द्विषो ८.४३.२६

च

चकार ता कृण्वन् ७.२६.३
चकृवांस ऋभवस्तदपृच्छत १.१६१.४
चक्रं न वृत्तं पुरहूत ५.३६.३
चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तं १०.७३.९
चक्राणासः परीणहं पृथिव्या १.३३.८
चक्राथे हि सध्यङ् १.१०८.३
चक्रिर्दिवः पवते कृत्वो ९.७७.५
चक्रिर्यो विश्वा भुवना ३.१६.४
चक्षुर्नो देवः सविता १०.१५८.३
चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे १०.१५८.४
चक्षुषः पिता मनसा १०.८२.१
चतस्र ईं घृतदुहः ९.८९.५
चतुरश्चिद्ददमानात् १.४१.९
चतुर्दशान्ये महिमानो १०.११४.७
चतुर्भिः साकं नवतिं च १.१५५.६
चतुष्कपर्दा युवतिः १०.११४.३
चतुस्त्रिंशद्वाजिनो देव १.१६२.१८
चतुः सहस्रं गव्यस्य ५.३०.१५
चत्तो इतश्चत्तामुतः १०.१५५.२
चत्वार ईं बिभ्रति ५.४७.४
चत्वारि ते असुर्याणि १०.५४.४
चत्वारि वाक्परिमिता १.१६४.४५
चत्वारि शृंगा त्रयो ४.५८.३
चत्वारिंशद्दशरथस्य १.१२६.४
चत्वारो मा पैजवनस्य ७.१८.२३
चत्वारो मा मशर्शारस्य १.१२२.१५
चनिष्टं देवा ओषधीषु ७.७०.४
चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं ३.३.५
चन्द्रमा अप्स्वन्तरा १.१०५.१
चन्द्रमा मनसो जातः १०.९०.१३
चमूषच्छ्येनः शकुनो ९.९६.१९
चरन्वत्सो रुशन्निह ८.७२.५
चरित्रं हि वेरिवाच्छेदि १.११६.१५
चरुर्न यस्तमीङ्खय ९.५२.३
चर्कृत्यं मरुतः पृत्सु १.६४.१४
चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्यं ३.५१.१
चाक्लृप्रे तेन ऋषयो १०.१३०.६
चिकित्विन्मनसं ५.२२.३
चिते तद्वां सुराधसा १०.१४३.४
चित्तिमचित्तिं चिनवद् ४.२.११
चित्तिरा उपबर्हणं १०.८५.७
चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य १०.११५.१
चित्र इद्राजा राजका ८.२१.१८
चित्रस्ते भानुः क्रतुपा १०.१००.१२
चित्रं तद्वो मरुतो २.३४.१०
चित्रं देवानामुदगादनीकं १.११५.१
चित्रं ह यद्वां भोजनं ७.६८.५
चित्रा वा येषु दीधितिः ५.१८.४
चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे १.६४.४
चित्रो वोऽस्तु यामः १.१७२.१
चोदयतं सूनृताः पिन्वतं १०.३९.२
चोदयित्री सूनृतानां १.३.११

छ

छन्दस्तुभः कुभन्यवः ५.५२.१२
छर्दिर्यन्तमदाभ्यं ८.८५.५

ज

जगता सिन्धुं दिव्यस्तभाय १.१६४.२५
जगृभ्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं १०.४७.१
जघने चोद एषां ५.६१.३
जघन्वाँ इन्द्र मित्रेरूञ्चोद १.१७४.६
जघन्वाँ उ हरिभिः १.५२.८
जघान वृत्रं स्वधितिर्वनेव १०.८९.७
जघ्निर्वृत्रममित्रियं ९.६१.२०
जज्ञान एव व्यबाधत १०.११३.४
जज्ञानं सप्तमातरो ९.१०२.४
जज्ञानः सोमं सहसे ७.९८.३
जज्ञानो नु शतक्रतुः ८.७७.१
जज्ञानो हरितो वृषा ३.४४.४
जज्ञिष इत्था गोपीथ्याय १०.९५.११
जनयन्नोचना दिवो ९.४२.१
जनस्य गोपा अजनिष्ट ५.११.१
जनं वज्रिन्महि चिन् ६.१९.१२
जनाय चिद्य ईवते ६.७३.२
जनासो अग्निं दधिरे १.३६.२
जनासो वृक्तबर्हिषो ८.५.१७
जनिता दिवो जनिता ८.३६.४
जनिताश्वानां जनिता ८.३६.५
जनिष्ट योषा पतयत्कनीनक १०.४०.९
जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्नां ५.१.५
जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय १०.७३.१
जनिष्वा देववीतये ६.१५.१८
जनीयन्तो न्वग्रवः ७.९६.४
जनूश्चिद्वो मरुतस्त्वेष्येण ७.५८.२
जनो यो मित्रावरुणा १.१२२.९
जन्मञ्जन्मन्निहितो जातवेदा ३.१.२१
जम्भयतमभितो १.१८२.४
जयं च प्र स्तुतं ८.३५.११
जयतामिव तन्यतुः १.२३.११
जयेम कारे पुरुहूत कारिणः ८.२१.१२
जरतीभिरोषधीभिः ९.११२.२
जरमाणः समिध्यसे १०.११८.५
जराबोध तद्विविड्ढि १.२७.१०
जातवेदसे सुनवाम १.९९.१
जातो अग्नी रोचते ३.२९.७
जातो जायते सुदिनत्वे ३.८.५
जातो यदग्रे भुवना ७.१३.३
जानत्यह्नः प्रथमस्य १.१२३.९
जानन्ति वृष्णो अरुषस्य ३.७.५
जानन्तो रूपमकृपन्त १०.१२३.४
जामिः सिन्धूनां भ्रातेव १.६५.४
जाम्यतीतपे धनुः ८.७२.४
जाया तप्यते कितवस्य १०.३४.१०
जायेदस्तं मघवन्त्सेदु ३.५३.४
जायेव पत्यावधि शेव ९.८२.४
जिघर्म्यग्निं हविषा २.१०.४
जिह्मं नुनुद्रेऽवतं तया १.८५.११

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिह्मश्ये चरितवे मघोनी १.११३.५
जिह्वाभिरह नन्नमद ८.४३.८
जीमूतस्येव भवति ६.७५.१
जीवं रुदन्ति वि मयन्ते १०.४०.१०
जीवात्नो अभि धेतना ८.६७.५
जुजुरुषो नासत्योत वव्रिं १.११६.१०
जुषद्धव्या मानुषस्य १०.२०.५
जुषस्व नः समिधमग्ने ७.२.१
जुषस्व सप्रथस्तमं १.७५.१
जुषस्वाग्न इळया सजोषाः ५.४.४
जुषाणो अग्ने प्रति हर्य मे १०.१२२.२
जुषाणो अङ्गिरस्तमेमा ८.४४.८
जुषेथां यज्ञमिष्टये ८.३८.४
जुषेथां यज्ञं बोधतं---विश्व ८.३५.४
जुषेथां यज्ञं बोधतं---सत्तो २.३६.६
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः ९.१३.८
जुष्टी नरो ब्रह्मणा ७.३३.४
जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोणे ५.४.५
जुष्टो मदाय देवतात ९.९७.१९
जुष्टो हि दूतो असि १.४४.२
जुष्ट्वी न इन्द्रो सुपथा ९.९७.१६
जुहुराणा चिदश्विना ८.२६.५
जुहुरे वि चितयन्तो ५.१९.२
जेतानृभिरिन्द्रः पृत्सु १.१७८.३
जोषद्यदीमसूर्या सचध्यै १.१६७.५
जोषा सवितर्यस्य ते १०.१५८.२
जोष्यग्ने समिधं जोष्याहुतिं २.३७.६
जोहूत्रो अग्निः प्रथमः २.१०.१
ज्ञेया भागं सहसा नो २.१०.६
ज्मया अत्र वसवो ७.३९.३
ज्यायांसमस्य यतुनस्य ५.४४.८
ज्येष्ठ आह चमसा द्वा करेति ४.३३.५
ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय सोमं ८.२.२३
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते ९.८६.१०
ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु ३.३९.८
ज्योतिर्वृणीत तमसो ३.३९.७
ज्योतिष्मतीमदितिं धारयत् १.१३६.३
ज्योतिष्मन्तं केतुमन्तं ८.५८.३

त

त आदित्या---सर्वतातये १.१०६.२
त आदित्या--सर्वतातये वृधे १०.३५.११
त आदित्यास उरवो २.२७.३
त आयजन्त द्रविणं समस्या १०.८२.४
त इदुग्राः शवसा ६.६६.६
त इद्देवानां सधमाद ७.७६.४
त इद्वेदिं सुभग ८.१९.१८
त इन्निण्यं हृदयस्य ७.३३.९
इन्वस्य मधुमद्वि ३.३२.४
त उक्षितासो महिमानं १.८५.२
त उग्रास वृषण ८.२०.१२
त ऊ षु णो महो यजत्राः १०.६१.२७
तक्षद्यत्त उशना १.५१.१०
तक्षद्यदी मनसो ९.९७.२२
तक्षन्नासत्याभ्यां १.२०.३
तक्षन्रथं सुवृतं १.१११.१
तच्चक्षुर्देवहितं ७.६६.१६
तच्चित्रं राध आ भरोषो ७.८१.५
ततं मे अपस्तदु १.११०.१
ततुरिर्वीरो नर्यो विचेताः ६.२४.२
ततृदानाः सिन्धवः ५.५३.७
तत्त इन्द्रियं परमं १.१०३.१
तत्तदग्निर्वयो दधे ८.३९.४
तत्तदिदश्विनोः १.४६.१२
तत्तदिदस्य पौस्यं १.१५५.४
तत्तु प्रयः प्रत्नथा ते १.१३२.३
तत्ते भद्रं यत् १.९४.१४
तत्ते यज्ञो अजायत ८.८९.६
तत्ते सहस्व ईमहे ८.४३.३३
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा १.२४.११
तत्त्वा यामि सुवीर्यम् ८.३.९
तत्रो अपि प्राणीयत ८.५६.४
तत्सविता वोऽमृतत्वं १.११०.३
तत्सवितुर्वरेण्यम् ३.६२.१०
तत्सवितुर्वृणीमहे वयं ५.८२.१
तत्सु नः शर्म यच्छता ८.१८.१२
तत्सु नः सविता ---इन्द्रो ४.५५.१०
तत्सु नः सविता ---शर्म ८.१८.३
तत्सु नो नव्यं सन्यस ८.६७.१८
तत्सु नो विश्वे ---बृबुम् ६.४५.३३
तत्सु नो विश्वे ---मरुतः ८.९४.३
तत्सु वां मित्रावरुणा ५.६२.२
तत्सूर्यस्य देवत्वं १.११५.४
तत्सूर्यं रोदसी उभे ८.२५.२१
तथा तदस्तु सोमपाः १.३०.१२
तदग्ने चक्षुः प्रति १०.८७.१२
तदग्ने द्युम्नमा भर ८.१९.१५
तदद्य वाचः प्रथमं १०.५३.४
तदद्या चित्त उक्थिनो ८.१५.६
तदन्नाय तदपसे ८:४७.१६
तदस्तु मित्रावरुणा ५.४७.७
तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वद् २.१७.१
तदस्य प्रियमभि १.१५४.५
तदस्यानीकमुत चारु २.३५.११
तदस्येदं पश्यता १.१०३.५
तदित्सधस्थमभि चारु १०.३२.४
तदित्समानमाशाते १.२५.६
तदिदास भुवनेषु १०.१२०.१
तदिद्धयस्य सवनं विवेरपः १०.७६.३
तदिद्रुदस्य चेतति ८.१३.२०
तदिद्वदन्त्यद्रयो विमोचने १०.९४.१३
तदिन्द्र प्रेव वीर्यं १.१०३.७
तदिन्द्राव आ भर ८.२४.२५
तदिन्नक्तं तद्दिवा मह्यमाहुः १.२४.१२
तदिन्नु ते करणं ५.३१.७
तदिन्वस्य परिषद्वानो १०.६१.१३
तदिन्वस्य वृषभस्य ३.३८.७
तदिन्वस्य सवितुः ३.३८.८
तदिन्मे च्छन्त्सद्वपुषो १०.३२.३
तदु प्रयक्षतमस्य १.६२.६
तदु श्रेष्ठं सवनं १०.७६.२
तदूचुषे मानुषेमा १.१०३.४
तदू षु वामेना कृतं ५.७३.४
तदृतं पृथिवि बृहत् ५.६६.५
तद्दधाना अवस्यवो ८.६३.१०
तद्देवस्य सवितुर्वार्यं ४.५३.१
तद्देवानां देवतमाय २.२४.३
तद्धि वयं वृणीमहे १०.१२६.२
तद् बन्धुः सूरिर्दिवि १०.६१.१८
तद् भद्रं तव दंसना ३.९.७
तद्राधो अद्य सवितुर्वरेण्यं १.१५९.५
तद्व उक्थस्य बर्हणे ६.४४.६
तद्वः सुजाता मरुतो १.१६६.१२
तद्वामृतं रोदसी १०.७९.४
तद्वार्यं वृणीमहे ८.२५.१३
तद्वां नरा नासत्यावनुष्यात् १.१८२.८
तद्वां नरा शंस्यं पज्रियेन १.११७.६
तद्वां नरा शंस्यं राध्यं १.११६.११
तद्वां नरा सनये १.११६.१२
तद्विप्रासो विपन्यवो १.२२.२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तद्विविड्डि यत्त इन्द्रो ८.९६.१२
तद्विष्णोः परमं पदं १.२२.२०
तद्वीर्यं वो मरुतो ५.५४.५
तद्वो अद्य मनामहे ७.६६.१२
तद्वो गाय सुते सचा ६.४५.२२
तद्वो जामित्वं मरुतः १.१६६.१३
तद्वो दिवो दुहितरो ४.५१.११
तद्वो यामि द्रविणं ५.५४.१५
तद्वो वाजा ऋभवः ४.३६.३
तनूत्यजेव तस्करा १०.४.६
तनूनपात्पथ ऋतस्य १०.११०.२
तनूनपात्पवमानः ९.५.२
तनूनपादुच्यते ३.२९.११
तनूनपादृतं यते १.१८८.२
तनूष्टे वाजिन्तन्वं १०.५६.२
तन्तुं तन्वन्रजसो १०.५३.६
तन्तुं तन्वानमुत्तमं ९.२२.६
तत्र इन्द्रस्तद्वरुणः १.१०७.३
तत्र इन्द्रो वरुणो ७.३४.२५,५६.२५
तत्रः प्रत्नं सख्यं ६.१८.५
तत्रस्तुरीपमद्भुतं १.१४२.१०
तत्रस्तुरीपमध ३.४.९, ७.२.९
तत्नु वोचाम रभसाय १.१६६.१
तत्नु सत्यं पवमान ९.९२.५
तत्नो अनर्वा सविता ५.४९.४
तत्नो देवा यच्छत १०.३५.१२
तत्नो रायः पर्वताः ७.३४.२३
तत्नो वातो मयोभु १.८९.४
तत्नो वि वोचो यदि ६.२२.४
तत्नोऽहिर्बुध्न्यो अद्भिः ६.४९.१४
तत्न ऋतमिन्द्र शूर ८.९७.१५
तत्मित्रस्य वरुणस्याभि १.११५.५
तपन्ति शत्रुं स्वर्ण ७.३४.१९
तपसा ये अनाधृष्याः १०.१५४.२
तपुर्जम्भो वन आ १.५८.५
तपुर्मूर्धा तपतु रक्षसो १०.१८२.३
तपोष्पवित्रं विततं ९.८३.२
तपो ष्वग्ने अन्तराँ ३.१८.२
तम आसीत्तमसा १०.१२९.३
तमग्निमस्ते वसवो ७.१.२
तमग्ने पास्युत ६.१५.११
तमग्ने पृतनाषहं ५.२३.२
तमग्नुवः केशिनीः १.१४०.८
तमङ्गिरस्वन्नमसा ३.३१.१९
तमद्य राधसे महे ८.६४.१२
तमध्वरेष्वीळते ५.१४.२
तमप्सन्त शवस उत्सवेषु १.१००.८
तममृक्षन्त वाजिनं ९.२६.१
तमर्केभिस्तं सामभिः ८.१६.९
तमर्वन्तं न सानसिं ८.१०२.१२
तमर्वन्तं न सानसिमरुषं ४.१५.६
तमस्मेरा युवतयो २.३५.४
तमस्य द्यावापृथिवी १.११३.१
तमस्य पृक्षमुपरासु १.१२७.५
तमस्य मर्जयामसि ९.९९.३
तमस्य राजा वरुणः १.१५६.४
तमस्य विष्णुर्महिमानमोज १०.११३.२
तमह्मन् भुरिजोर्धिया ९.२६.४
तमह्वे वाजसातय ८.१३.३
तमागन्म सोभरयः ८.१९.३२
तमानूनं व्रजनमन्यथा ६.३५.५
तमा नो अर्कममृताय ७.९७.५
तमिच्च्यौत्नैरार्यन्ति ८.१६.६
तमित्पृच्छन्ति न सिमो १.१४५.२
तमित्सखित्व १.१०.६
तमित्सुहव्यमङ्गिरः १.७४.५
तमिद्गच्छन्ति जुह्वस्तमर्वतीः १.१४५.३
तमिद्गर्भं प्रथमं दध्र आपः १०.८२.६
तमिद्दोषा तमुषसि यविष्ठं ७.३.५
तमिद्धनेषु हितेषु ८.१६.५
तमिद्व इन्द्रं सुहवं हुवेम ४.१६.१६
तमिद्वर्धन्तु नो गिरो ९.६१.१४
तमिद्विप्रा अवस्यवः ८.१३.१७
तमिद्वोचेमा विदथेषु १.४०.६
तमिन्द्र मदमा गहि ३.४२.२
तमिद्रं जोहवीमि ८.९७.१३
तमिन्द्रं दानमीमहे ८.४६.६
तमिन्द्रं वाजयामसि ८.९३.७
तमिन्नरो वि ह्वयन्ते ४.२४.३
तमिन्वेऽव समना ४.५.७
तमीमण्वीः समर्य ९.१.७
तमीमह इन्द्रमस्य रायः ६.२२.३
तमीमहे पुरुहुतं ८.१३.२४
तमी मृजन्त्यायवो ९.६३.१७
तमीळत प्रथमं यज्ञसाधं १.९६.३
तमीळिष्व य आहुतो ८.४३.२२
तमीळिष्व यो अर्चिषा ६.६०.१०
तमीशानं जगतः १.८९.५
तमीं हिन्वन्ति धीतयो १.१४४.५
तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो ९.१.८
तमीं होतारमानुषक् ४.७.५
तमुक्षमाणमव्यये ९.९९.५
तमुक्षमाणं राजसि २.२.४
तमु ज्येष्ठं नमसा ९.९७.३
तमु त्वा गोतमा १.७८.२
तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः ६.१६.१४
तमु त्वा नूनमसुर ८.९०.६
तमु त्वा नूममीमहे ८.२४.२६
तमु त्वा पाथ्यो वृषा ६.१६.१५
तमु त्वा यः पुरासिथ ६.४५.११
तमु त्वा वाजसातमं १.७८.३
तमु त्वा वाजिनं नरो ९.१७.७
तमु त्वा वृत्रहन्तमं १.७८.४
तमु त्वा सत्यसोमपा ६.४५.१०
तमु द्युमः पुर्वणीक ६.१०.२
तमु नः पूर्वे पितरो ६.२२.२
तमु नूनं तविषीमन्तमेषां ५.५८.१
तमु ष्टवाम य इमा ८.९६.६
तमु ष्टवाम यं गिर ८.९५.६
तमु ष्टुहि यः स्विषुः ५.४२.११
तमु ष्टुहि यो अभिभूत्योजाः ६.१८.१
तमु ष्टुहीन्द्रं यो १.१७३.५
तमु स्तुष इन्द्रं तं २.२०.४
तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानः ६.२१.२
तमु स्तोतारः पूर्व्यं १.१५६.३
तमुस्रामिन्द्रं न १०.६.५
तमूतयो रणयञ्छूरसातौ १.१००.७
तमूर्मिमापो ७.४७.२
तमूषु समना गिरा ८.४१.२
तमृत्विया उप वाचः १.१९०.२
तमेव ऋषिं तमु १०.१०७.६
तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं १०.९१.६
तम्वभि प्र गायत ८.१५.१
तम्वभि प्रार्चतेन्द्रं ८.९२.५
तया पवस्व धारया यया गाव ९.४९.२
तया पवस्व धारया यया पीतो ९.४५.६
तयोरिदमवच्छवः ५.८६.३
तयोरिदवसा वयं १.१७.६
तयोरिद् घृतवत्पयः १.२२.१४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरणिरित्सिषासति ७.३२.२०
तरणिर्विश्वदर्शतो १.५०.४
तरणिं वो जनानां ८.४५.२८
तरत्स मन्दी धावति १.५८.१
तरत्समुद्रं पवमान ९.१०७.१५
तरोभिर्वो विदद्वसुं ८.६६.१
तव क्रत्वा तव तद्दंसनाभिः ६.१७.६
तव क्रत्वा तवोतिभिः ९.४.६
तव क्रत्वा सनेयं ८.१९.२९
तव च्यौत्नानि वज्रहस्त ७.१९.५
तव त्य इन्दो अन्धसो ९.५१.३
तव त्य इन्द्र सख्येषु वह्नयः १०.१३८.१
तव त्यदिन्द्रियं बृहत् ८.१५.७
तव त्यन्नर्यं नृतोऽप २.२२.४
तव त्ये अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो ५.१०.५
तव ते अग्ने अर्चयो महि ५.६.७
तव त्ये अग्ने हरितो ४.६.९
त्व त्ये पितो ददतः १.१८७.५
तव त्ये पितो रसा १.१८७.४
तव त्ये सोम पवमान ९.९२.४
तव त्ये सोम शक्तिभिः १०.२५.५
तव त्रिधातु पृथिवी ७.५.४
तव त्विषो जनिम ४.१७.२
तव द्युमन्तो अर्चयो ५.२५.८
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं ८.१५.८
तव द्रप्सा उदप्रुत ९.१०६.८
तव द्रप्सो नीलवान् ८.१९.३१
तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान् ७.२८.३
तव प्रत्नेभिरध्वभिः ९.५२.२
तव प्र यक्षि सन्दृशं ६.१६.८
तव प्रयाजा अनुयाजाश्च १०.५१.९
तव भ्रमास आशुया ४.४.२
तव वायवृतस्पते ८.२६.२१
तव विश्वे सजोषसो ९.१८.३
तव व्रते सुभगासः २.२८.२
तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् १.१६३.११
तव शुक्रासो अर्चयो दिवः ९.६६.५
तव श्रिया सुदृशो ५.३.४
तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त ५.३.३
तव श्रिये व्यजिहीत २.२३.१८
तव श्रियो वर्ष्यस्येव १०.९१.५
तव स्याम पुरुवीरस्य २.२८.३
तव स्वादिष्ठाग्ने ४.१०.५
तव ह त्यदिन्द्र विश्वमाजौ ६.२०.१३
तवाग्ने होत्रं तव २.१.२,१०.९१.१०
तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् ३.३५.६
तवाहमग्न ऊतिभिर्नेदिष्ठाभिः ८.१९.२८
तवाहमग्न ऊतिभिर्मित्रस्य ५.९.६
तवाहं शूर रातिभिः १.११.६
तवाहं सोम रारण ९.१०७.१९
तवेदं विश्वमभितः पशव्यं ७.९८.६
तवेदिन्द्र प्रणीतिषूत ८.६.२२
तवेदिन्द्रावमं वसु ७.३२.१६
तवेदिन्द्राहमाशसा ८.७८.१०
तवेदु ताः सुकीर्तयो ८.४५.३३
तवेमाः प्रजा दिव्यस्य ९.८६.२८
तवेमे सप्त सिन्धवः ९.६६.६
तवोतिभिः सचमाना ५.४२.८
तस्मा अग्निर्भारतः ४.२५.४
तस्मा अरं गमाम वो १०.९.३
तस्मा अर्षन्ति दिव्या २.२५.४
तस्मा इदास्ये हविः ७.१०२.३
तस्मा इद्विश्वे धुनयन्त २.२५.५
तस्मादश्वा अजायन्त १०.९०.१०
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः १०.९०.९
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं १०.९०.८
तस्माद्विराळजायत १०.९०.५
तस्मिन्ना वेशया गिरो १.१७६.२
तस्मिन्हि सन्त्यूतयो ८.४६.७
तस्मै तवस्य१मनु २.२०.८
तस्मै नूनमभिद्यवे ८.७५.६
तस्य ते वाजिनो वयं ९.६५.९
तस्य द्युमाँ असद्रथो ८.३१.३
तस्य वज्रः क्रन्दति १.१००.१३
तस्य वयं सुमतौ ६.४७.१३
१०.१३१.७
तस्याः समुद्रा १.१६४.४२
तस्येदर्वन्तो रंहयन्त ८.१९.६
तस्येदिह स्तवथ वृष्ण्यानि ४.२१.२
तं गाथया पुराण्या ९.९९.४
तं गावो अभ्यनूषत ९.२६.२
तं गीर्भिर्वाचमीङ्खयम् ९.३५.५
तं गूर्तयो नेमन्निषः १.५६.२
तं गूर्धया स्वर्णरं ८.१९.१
तं गोभिर्वृषणं रसं ९.६.६
तं घेमित्था ---अर्थम् ८.६९.१७
त्वं घेमित्था ---होत्राभिः १.३६.७
तं तमिद्राधसे महे ८.६८.७
तं ते मदं गृणीमसि ८.१५.४
तं ते यवं यथा गोभिः ८.२.३
तं ते सोतारो रसं मदाय ९.१०९.११
तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे ९.६२.१७
तं त्वा गीर्भिरुरुक्षया १०.११८.९
तं त्वा गीर्भिर्गिर्वणसं २.६.३
तं त्वा घृतस्नवीमहे ५.२६.२
तं त्वाजनन्त मातरः ८.१०२.१७
तं त्वा दूतं कृण्महे ७.१६.४
तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं ९.८०.४
तं त्वा धर्तारमोण्योः ९.६५.११
तं त्वा नरो दम आ १.७३.४
तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं ९.४८.१
तं त्वामज्मेषु ८.४३.२०
तं त्वा मदाय घृष्वय ९.२.८
तं त्वा मरुत्वती परि ७.३१.८
तं त्वा मर्ता अगृभ्णत ३.९.६
तं त्वा यज्ञेभिरीमहे ८.६८.१०
तं त्वा वयं पतिमग्ने १.६०.५
तं त्वा वयं पितो १.१८७.११
तं त्वा वयं विश्ववारा १.३०.१०
तं त्वा वयं सुध्यो ६.१.७
तं त्वा वयं हवामहे ८.४३.२३
तं त्वा वाजेषु वाजिनम् १.४.९
तं त्वा विप्रा वचोविदः ९.६४.२३
तं त्वा विप्रा विपन्यवो ३.१०.९
तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो ६.१६.११
तं त्वा सहस्रचक्षसं ९.६०.२
तं त्वा सुतेष्वाभुवो ९.६५.२७
तं त्वा हविष्मतीः ८.६.२७
तं त्वा हस्तिनो मधुमन्तं ९.८०.५
तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः ९.२६.६
तं दुरोषमभी नरः ९.१०१.३
तं देवा बुध्ने रजसः २.२.३
तं नव्यसी हृद आ १.६०.३
तं नाकमर्यो ५.५४.१२
तं नेमिमृभवो यथा ८.७५.५
तं नो अग्ने अभि नरो ५.९.७
तं नो अग्ने मघवद्भ्यः ७.५.९
तं नो दात मरुतो २.३४.७
तं नो द्यावापृथिवी १०.३३.६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं नो वाजा ऋभुक्षण ४.३७.८
तं नो विश्वा अवस्युवो ९.४३.२
तं पृच्छता स १.१४५.१
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं ६.२२.५
तं पृच्छन्तोऽवरासः ६.२१.६
तं प्रत्नथा पूर्वथा ५.४४.१
तं मर्जयन्त सुक्रतुम् ८.८४.८
तं मर्ता अमर्त्यं १०.११८.६
तं मर्मृजानं महिषं ९.९५.४
तं यज्ञसाधमपि १.१२८.२
तं यज्ञं बर्हिषि १०.९०.७
तं युञ्जाथां मनसो १.१८३.१
तं युवं देवावश्विना ४.१५.१०
तं व इन्द्रं चतिनं ६.१९.४
तं व इन्द्रं न सुक्रतुम् ६.४८.१४
तं वर्धयन्तो मतिभिः १०.६७.९
तं वश्चराथा १.६६.५
तं वः शर्धं मारुतं २.३०.११
तं वः शर्धं रथानाम् ५.५३.१०
तं वः शर्धं रथेशुभम् ५.५६.९
तं वः सखायः सं ६.२३.९
तं वः सखायो मदाय ९.१०५.१
तं वां रथं वय ---पृथु ४.४४.१
तं वां रथं वय ---स्तोमैः १.१८०.१०
तं वृधन्तं मारुतं ६.६६.११
तं वेधां मेधयाह्यन् ९.२६.३
तं वो दस्ममृतीषहम् ८.८८.१
तं वो दीर्घायुशोचिषं ५.१८.३
तं वो धिया नव्यस्या ६.२२.७
तं वो धिया परमया ६.३८.३
तं वो महो महाय्यम् ८.७०.८
तं वो वाजानां पतिं ८.२४.१८
तं वो विं न द्रुषदम् १०.११५.३
तं शग्मासो अरुषासो ७.९७.६
तं शश्वतीषु मातृषु ४.७.६
तं शिशीता सुवृक्तिभिः ८.४०.१०
तं शिशीता स्वध्वरम् ८.४०.११
तं शुभ्रमग्निमवसे ३.२६.२
तं सखायः पुरोरुचम् ९.९८.१२
तं सध्रीचीरूतयो ६.३६.३
तं सबाधो यतस्रुच ३.२७.६
तं सानावधि जामयो ९.२६.५
तं सिन्धवो मत्सरं १०.३०.९
तं सुप्रतीकं सुदृशम् ६.१५.१०
तं सुष्टुत्या विवासे ८.१६.३
तं सोतारो धनस्पृतं ९.६२.१८
तं स्मा रथं मघवन् १.१०२.३
तं हिन्वन्ति मदच्युतं ९.५३.४
तं हि शश्वन्त ईळते ५.१४.३
तं हि स्वराजं वृषभं ८.६१.२
तं हुवेम यतस्रुचः ८.२३.२०
तं होतारमध्वरस्य ७.१६.१२
ता अलत वयुनं ५.४८.२
ता अभि सन्तमस्तृतं ९.९.५
ता अस्य ज्येष्ठमिन्द्रियं १०.१२४.८
ता अस्य नमसा सहः १.८४.१२
ता अस्य पृशनायुवः १.८४.११
ता अस्य वर्णमायुवो २.५.५
ता अस्य सूददोहसः ८.६९.३
ता आ चरन्ति समना ४.५१.८
ता इन्वेऽव समना ४.५१.९
ता ईं वर्धन्ति मह्यस्य १.१५५.३
ता कर्माषतरास्मै १.१७३.४
ता गृणीहि नमस्येभिः ६.६८.३
ता घा ता भद्रा उषसः ४.५१.७
ता जिह्वया सदमेदं ६.६७.८
ता तू त इन्द्र महतो ४.२२.५
ता तू ते सत्या तुवि ४.२२.६
ता ते गृणन्ति वेधसो ४.३२.११
ता न आ वोळ्हमश्विना २.४१.९
ता नव्यसो जरमाणस्य ६.६२.४
ता नः शक्तं पार्थिवस्य ५.६८.३
ता नः स्तिपा तनूपा ७.६६.३
तानीदहानि बहुलान्यासन् ७.७६.३
ता नृभ्या आ सौश्रवसा ६.१३.५
ता नो अद्य वनस्पती १.२८.८
ता नो रासन्रातिषाचो ७.३४.२२
ता नो वाजवतीरिष ६.६०.१२
तान्पूर्वया निविदा १.८९.३
तान्यजत्राँ ऋतावृधो १.१४.७
तान्वन्दस्व मरुतस्ताँ ८.२०.१४
तान्वो महो मरुत २.३४.११
ता बाहवा सुचेतुना ५.६४.२
ताभिरा गच्छतं नरो ६.६०.९
ताभिरा यातमूतिभिः ८.५.२४
ताभिरा यातं वृषणोप ८.२२.१२
ता भुज्युं विभिरद्भ्यः ६.६२.६
ता भूरिपाशावनृतस्य ७.६५.३
ताभ्यां विश्वस्य राजसि ९.६६.२
तामग्रे अस्मे इषं ७.५.८
ता मन्दसाना मनुषो १०.४०.१३
तामस्य रीतिं ५.४८.४
ता महान्ता सदस्पती १.२१.५
ता माता विश्ववेदसा ८.२५.३
ता मित्रस्य प्रशस्तये १.२१.३
ता मे अश्विना सनीनां ८.५.३७
ता मे अश्व्यानां ८.२५.२३
ता यज्ञमा शुचिभिश्चक्रमाणा ६.६२.२
ता यज्ञेषु प्र शंसते १.२१.२
ता योधिष्टमभि गा ६.६०.२
ता राजाना शुचिव्रता ६.१६.२४
ता वज्रिणं मन्दिनं १०.९६.६
तावदुषो राधो अस्मभ्यं ७.७९.४
ता वर्तिर्यातं जयुषा १०.३९.१३
ता वल्गू दस्रा पुरु ६.६२.५
ता वामद्य तावपरं १.१८४.१
ता वामद्य हवामहे ८.२६.३
ता वामियानोऽवसे ५.६५.३
ता वामेषे रथानामिन्द्रा ५.८६.४
ता वामेषे रथानामुर्वीं ५.६६.३
ता वां गीर्भिर्विपन्यवः ७.९४.६
ता वां धियोऽवसे ४.४१.८
ता वां नरा स्ववसे १.११८.१०
ता वां मित्रावरुणे १०.१३२.२
ता वां वास्तून्युश्मसि १.१५४.६
ता वां विश्वस्य गोपा ८.२५.१
ता वां सम्यगद्रुह्वाणे ५.७०.२
ता विग्रं धैथे ६.६७.७
ताविदा चिदहानां ८.२२.१३
ताविद् दुःशंसं मर्त्यं ७.९४.१२
ताविद्दोषा ता उषसि ८.२२.१४
ता विद्वांसा हवामहे वा १.१२०.३
ता वृधन्तावनु द्यून् ५.८६.५
ता सम्राजा घृतासुती २.४१.६
ता सानसी शवसाना ७.९३.२
ता सुजिह्वा उप ह्वये १.१३.८
आ सुदेवाय दाशुषे ८.५.६
ता ह त्यद्वर्तिर्यद् ६.६२.३
ता हि क्षत्रमविहुतं ५.६६.२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता हि क्षत्रं धारयेथे ६.६७.६
ता हि देवानामसुरा ता ७.६५.२
ता हि मध्यं भराणां ८.४०.३
ता हि शश्वन्त ईळत ७.९४.५
ता हि श्रेष्ठवर्चसा ५.६५.२
ता हि श्रेष्ठा देवताता ६.६८.२
ता हुवे ययोरिदं ६.६०.४
ताँ आ रुद्रस्य माळ्हुषो ७.५८.५
ताँ आशिरं पुरोळाशं ८.२.११
ताँ इयानो महि २.३४.१४
ताँ उशतो वि बोधय १.१२.४
तां जुषस्व गिरं मम ३.६२.८
तां पूषञ्छिवतमाम् १०.८५.३७
तां पूष्णः सुमतिं वयं ६.५७.६
तां वां धेनुं न १.१३७.३
तां वो देवाः सुमतिं ५.४१.१८
तां सु ते कीर्तिम् १०.५४.१
तिग्मजम्भाय तरुणाय ८.१९.२२
तिग्ममायुधं मरुतां ८.९६.९
तिग्ममेको बिभर्ति ८.२९.५
तिग्मं चिदेम ६.३.४
तिग्मा यदन्तरशनिः ४.१६.१७
तिग्मायुधौ तिग्महेती ६.७४.४
तिरश्चीनो विततो १०.१२९.५
तिरः पुरू चिदश्विना ३.५८.५
तिष्ठा सु कं मघवन् ३.५३.२
तिष्ठा हरी रथ आ ३.३५.१
तिस्रः क्षपस्त्रिः १.११६.४
तिस्रो देवीर्बर्हिरिदं १०.७०.८
तिस्रो देष्ट्राय १०.११४.२
तिस्रो द्यावः सवितुः १.३५.६
तिस्रो द्यावो निहिता ७.८७.५
तिस्रो भूमीर्धारयन् २.२७.८
तिस्रो मातॄस्त्रीन्पितॄन् १.१६४.१०
तिस्रो यदग्ने शरदः १.७२.३
तिस्रो यह्वस्य समिधः ३.२.९
तिस्रो वाच ईरयति ९.९७.३४
तिस्रो वाच उदीरते ९.३३.४
तिस्रो वाचः प्र वद ७.१०१.१
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा १०.८७.९
तीव्रस्याभिवयसो १०.१६०.१
तीव्रान्घोषान्कृण्वते ६.७५.७
तीव्राः सोमास आगहि ८.८२.२
तीव्राः सोमास आ गह्याशीः १.२३.१
तीव्रो वो मधुमाँ अयं २.४१.१४
तुग्रो ह भुज्युमश्विनो १.११६.३
तुचे तनाय तत्सु नो ८.१८.१८
तुजे नस्तेन पर्वताः ५.४१.९
तुञ्जेतुञ्जे य १.७.७
तुभ्यमग्ने पर्यवहन् १०.८५.३८
तुभ्यमुषासः शुचयः १.१३४.४
तुभ्यं गावो घृतं ९.३१.५
तुभ्यं घेत्ते जना ८.४३.२९
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम ८.४३.१८
तुभ्यं दक्ष कविक्रतो ३.१४.७
तुभ्यं पयो यत् १.१२१.५
तुभ्यं ब्रह्माणि गिर ३.५१.६
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो ५.१.१०
तुभ्यं वाता अभिप्रियः ९.३१.३
तुभ्यं शुक्रासः शुचयस्तु १.१३४.५
तुभ्यं श्चोतन्त्यध्रिगो ३.२१.४
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु १०.१६०.२
तुभ्यं सोमाः सुता इमे ८.९३.२५
तुभ्यं स्तोका घृत ३.२१.३
तुभ्यं हिन्वानो वसिष्ठ २.३६.१
तुभ्यायमद्रिभिः सुतो ८.८२.५
तुभ्यायं सोमः परिपूतो १.१३५.२
तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं ५.११.५
तुभ्येदमिन्द्र परि षिच्यते १०.१६७.१
तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते ८.७६.८
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्ये ३.४२.८
तुभ्येदिमा सवना ७.२२.७
तुभ्येदेते बहुला १.५४.९
तुभ्यदेते मरुतः ५.३०.६
तुभ्येमा भुवना कवे ९.६२.२७
तुरण्यवोऽङ्गिरसो ७.५२.३
तुरण्यवो मधुमन्तं ८.५१.१०
तुरीयं नाम यज्ञियं ८.८०.९
तुविक्षं ते सुकृतं ८.७७.११
तुविग्रीवो वपोदरः ८.१७.८
तुविग्रीवो वृषभो वावृधानो ५.२.१२
तुविशुष्म तुविक्रतो ८.६८.२
तूतुजानो महेमते ८.१३.११
तूर्वन्नोजीयान् ६.२०.३
तृणस्कन्दस्य नु विशः १.१७२.३
तृतीये धानाः सवने ३.५२.६
तृदिला अतृदिलासो १०.९४.११
तृषु यदन्ना तृषुणा ४.७.११
तृष्टमेतत्कटुकमेतत् १०.८५.३४
तृष्टामया प्रथमं १०.७५.६
ते अज्येष्ठा अकनिष्ठास ५.५९.६
ते अद्रयो दशयन्त्रास १०.९४.८
ते अस्मभ्यं शर्म १.९०.३
ते अस्य सन्तु केतवो ९.७०.३
ते आचरन्ती समनेव ६.७५.४
ते क्षोणीभिररुणेभिः २.३४.१३
ते गव्यता मनसा ४.१.१५
ते घा राजानो अमृतस्य १.९३.४
ते घेदग्ने स्वाध्यो ये त्वा ८.१९.१७
ते घेदग्ने स्वाध्योऽहा विश्वा ८.४३.३०
ते चिद्धि पूर्वीरभि ७.४८.३
ते जज्ञिरे दिव ऋष्वास १.६४.२
ते जानत स्वमोक्यं ८.७२.१४
तेजिष्ठया तपनी २.२३.१४
तेजिष्ठा यस्यारतिः ६.१२.३
ते ते अग्ने त्वोता ७.१६.२७
ते ते देव नेतः ५.५०.२
ते ते देवाय दाशतः ७.१७.७
ते त्वा मदा अमदन् १. ५३.६
ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु ६.२३.५
ते त्वा मदा बृहदिन्द्र ६.१७.४
ते दशग्वाः प्रथमा २.३४.१२
ते न आस्रो वृकाणां ८.६७.१४
ते न इन्द्रः पृथिवी ६.५१.११
तेन नासत्या गतं १.४७.९
तेन नो वाजिनीवसू परावतः ८.५.३०
तेन नो वाजिनीवसू पश्वे ८.५.२०
तेन सत्येन जागृतम् १.२१.६
तेन स्तोतृभ्य आ भर ८.७७.८
ते नस्त्राध्वं ते ८.३०.३
ते नः पूर्वास उपरास ९.७७.३
ते नः सन्तु युजः सदा ८.८३.२
ते नः सहस्रिणं रयिं ९.१३.५
ते नूनं नोऽयमूतये १०.१२६.३
ते नो अर्वन्तो हवन १०.६४.६
ते नो गृणाने महिनी १.१६०.५
ते नो गोपा अपाच्याः ८.२८.३
ते नो नावमुरुष्यत ८.२५.११
ते नो भद्रेण शर्मणा ८.१८.१७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते नो मित्रो वरुणो अर्यमा ५.४१.२
ते नो रत्नानि धत्तन १.२९.७
ते नो रायो द्युमतो वाजवतः ६.५०.११
ते नो रुद्रः सरस्वती ६.५०.१२
ते नो वसूनि काम्या ५.६१.१६
ते नो वृष्टिं दिवस्परि ९.६५.२४
ते प्रत्नासो व्युष्टिषु ९.९८.११
तेभ्यो गोधा अयथं १०.२८.११
तेभ्यो द्युम्नं बृहद्यशः ५.७९.७
ते म आहुर्य आययुः ५.५३.३
ते मन्वत प्रथमं नाम ४.१.१६
ते मर्मृजत ददृवांसो ४.१.१४
ते मायिनो ममिरे १.१५९.४
ते राया ते सुवीर्यैः ४.८.६
तेऽरुणेभिर्वरमा पिशङ्गैः १.८८.२
ते रुद्रासः सुमखा ५.८७.७
तेऽवदन् प्रथमा १०.१०९.१
तेऽवर्धन्त स्वतवसो १.८५.७
तेऽविन्दन्मनसा १०.१८१.३
ते विश्वा दाशुषे वसु ९.६४.६
ते वो हृदे मनसे ४.३७.२
तेषां हि चित्रमुक्थ्यं ८.६७.३
तेषां हि मह्ना महतां १०.६५.३
ते सत्येन मनसा गोपतिं १०.६७.८
ते सत्येन मनसा दीध्यानाः ७.९०.५
ते सीषपन्त जोषम् ७.४३.४
ते सुतासो मदिन्तमाः ९.६७.१८
ते सूनवः स्वपसः १.१५९.३
ते सोमादो हरी १०.९४.९
ते स्पन्द्रासो नोक्षणो ५.५२.३
ते स्याम देव वरुण ७.६६.९
ते स्याम ये अग्नये ४.८.५
ते हि द्यावापृथिवी भूरि १०.९२.११
ते हि द्यावापृथिवी मातरा १०.६४.१४
ते हि द्यावापृथिवी विश्व १.१६०.१
ते हिन्विरे अरुणं ८.१०१.६
ते हि पुत्रसो अदितेः ८.१८.५
ते हि प्रजाया अभरन्त १०.९२.१०
ते हि यज्ञेषु ---आदित्येन १०.७७.८
ते हि यज्ञेषु ---सधस्थम् ७.३९.४
ते हि वस्वो वसवानाः १.९०.२
ते हि श्रेष्ठवर्चसः ६.५१.१०
ते हि ष्मा वनुषो ८.२५.१५
ते हि सत्या ऋतस्पृश ५.६७.४
ते हि स्थिरस्य शवसः ५.५२.२
तोके हिते तनये ४.४१.६
तोशा वृत्रहणा हुवे ३.१२.४
तोशासा रथयावाना ८.३८.२
त्मना समत्सु हिनोत ७.३४.६
त्यमु वः सत्रासाहं ८.९२.७
त्यमु वो अप्रहणं ६.४४.४
त्यमू षु वाजिनं १०.१७८.१
त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य ५.३२.३
त्यं चित्पर्वतं गिरिं ८.६४.५
त्यं चिदत्रिमृतजुरं १०.१४३.१
त्यं चिदर्णं मधुपं ५.३२.८
त्यं चिदश्वं न वाजिनं १०.१४३.२
त्यं चिदस्य क्रतुभिः ५.३२.५
त्यं चिदित्था कत्पयं ५.३२.६
त्यं चिदेषां स्वधया ५.३२.४
त्यं चिद्घा दीर्घं १.३७.११
त्यं नु मारुतं गणं ८.९४.१२
त्यं सु मेषं महया १.५२.१
त्यान्नु क्षत्रियाँ ८.६७.१
त्यान्नु पूतदक्षसो ८.९४.१०
त्यान्नु ये वि रोदसी ८.९४.११
त्या न्व१श्विना हुवे ८.१०.३
त्रय इन्द्रस्य सोमाः ८.२.७
त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु ७.३३.७
त्रयः केशिन १.१६४.४४
त्रयः कोशासः श्चोतन्ति ८.२.८
त्रयः पवयो मधुवाहने १.३४.२
त्राता नो बोधि ददृशान ४.१७.१७
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं ६.४७.११
त्रातारं त्वा तनूनां २.२३.८
त्रातारो देवा अधि वोचता ८.४८.१४
त्रायन्तामिह देवाः १०.१३७.५
त्रिकद्रुकेभिः पतति १०.१४.१६
त्रिकद्रुकेषु -- नो गिरः ८.९२.२१
त्रिकद्रुकेषु --नो गिरः सदा ८.१३.१८
त्रिकद्रुकेषु महिषो २.२२.१
त्रितः कूपेऽ वहितो १.१०५.१७
त्रिधा हितं पणिभिः ४.५८.४
त्रिपञ्चाशः क्रीळति १०.३४.८
त्रिपाजस्यो वृषभो ३.५६.३
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः १०.९०.४
त्रिभिः पवित्रैरपुपोद् ३.२६.८
त्रिभिष्ट्वं देव सवितः ९.६७.२६
त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिं १.१४६.१
त्रिरन्तरिक्षं सविता ४.५३.५
त्रिरश्विना सिन्धुभिः १.३४.८
त्रिरस्मै सप्त धेनवो ९.७०.१
त्रिरस्य ता परमा ४.१.७
त्रिरा दिवः सवितर्वार्याणि ३.५६.६
त्रिरा दिवः सविता सोषवीति ३.५६.७
त्रिरुत्तमा दूणशा ३.५६.८
त्रिर्देवः पृथिवी ७.१००.३
त्रिर्नो अश्विना दिव्यानि १.३४. ६
त्रिर्नो अश्विना यजता १.३४.७
त्रिर्नो रयिं वहतमश्विना १.३४.५
त्रिर्यातुधानः प्रसितिं १०.८७.११
त्रिर्वर्तिर्यातं त्रिरनुव्रते १.३४.४
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेन १.११८.२
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता रथेना यातं ८.८५.८
त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुपेशसा १.४७.२
त्रिविष्टिधातु प्रतिमानं १.१०२.८
त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुः ७.११.३
त्रिश्चिन्नो अद्या १.३४.१
त्रिषधस्था सप्तधातुः ६.६१.१२
त्रिषधस्थे बर्हिषि २.४७.४
त्रिंशच्छतं वर्मिण ६.२७.६
त्रिंशद्धाम वि राजति १०.१८९.३
त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो ८.९६.८
त्रिः सप्त मयूर्यः १.१९१.१४
त्रिः सप्त यद्गुह्यानि १.७२.६
त्रिः सप्त विष्पुलिङ्गका १.१९१.१२
त्रिः सप्त सस्रा नद्यो १०.६४.८
त्रिः स्मा माहः १०.९५.५
त्रीणि जाना परि १.९५.३
त्रीणि त आहुर्दिवि १.१६३.४
त्रीणि त्रितस्य धारया ९.१०२.३
त्रीणि पदान्यश्विनोः ८.८.२३
त्रीणि पदा वि चक्रमे १.२२.१८
त्रीणि राजाना विदथे ३.३८.६
त्रीणि शता त्री सहस्राणि ३.९.९
१०.५२.६
त्रीणि शतान्यर्वतां ८.६.४७
त्रीणि सरांसि पृश्नयो ८.७.१०
त्रीण्यायूंषि तव ३.१७.३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रीण्येक उरुगायो ८.२९.७
त्री यच्छता महिषाणाम् ५.२९.८
त्री रोचना दिव्या धारयन्त २.२७.९
त्री रोचना वरुण ५.६९.१
त्री षधस्था सिन्धवः ३.५६.५
त्र्यम्बकं यजामहे ७.५९.१२
त्र्यर्यमा मनुषो ५.२९.१
त्र्युदायं देवहितं ४.३७.३
त्वदग्ने काव्या ४.११.३
त्वद्धि पुत्र सहसो ३.१४.६
त्वद्भिया विश आयन्नसि ७.५.३
त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि ६.३१.२
त्वद्वाजी वाजंभरो ४.११.४
त्वद्विप्रो जायते ६.७.३
त्वद्विश्वा सुभगा ६.१३.१
त्वमग्न इन्द्रो वृषभः २.१.३
त्वमग्न ईळितो जातवेदो १०.१५.१२
त्वमग्न उरुशंसाय १.३१.१४
त्वमग्न ऋभुराके २.१.१०
त्वमग्ने अदितिर्देव २.१.११
त्वमग्ने गृहपतिः ७.१६.५
त्वमग्ने त्वष्टा विधते २.१.५
त्वमग्ने द्युभिस्त्वमा २.१.१
त्वमग्ने द्रविणोदा अरं २.१.७
त्वमग्ने पररूपो ५.८.५
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः १.३१.२
त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा १.३१.१
त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन १.३१.३
त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं १.३१.१०
त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं १.३१.१५
त्वमग्ने बृहद्भयो ८.१०२.१
त्वमग्ने मनवे द्याम् १.३१.४
त्वमग्ने यज्ञानां ६.१६.१
त्वमग्ने यज्यवे पायुः १.३१.१३
त्वमग्ने राजा वरुणो २:१.४
त्वमग्ने रुद्रो असुरो २.१.६
त्वमग्ने वनुष्यतो ६.१५.१२,७.४.९
त्वमग्ने वरुणो जायसो ५.३.१
त्वमग्ने वसूँरिह १.४५.१
त्वमग्ने वाघते सुप्रणीतिः ४.२.१३
त्वमग्ने वीरवद्यशो ७.१५.१२
त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं १.३१.६
त्वमग्ने वृषभः पुष्टिवर्धनः १.३१.५
त्वमग्ने व्रतपा असि ८.११.१
त्वमग्ने शशमानाय १.१४१.१०
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचानः ७.१३.२
त्वमग्ने सप्रथा असि ५.१३.४
त्वमग्ने सहसा सहन्तमः १.१२७.९
त्वमग्ने सुभृत उत्तमं २.१.१२
त्वमग्ने सुहवो रण्वसंदृक् ७.१.२१
त्वमङ्ग जरितारम् ५.३.११
त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः १.८४.१९
त्वमध प्रथमं जायमानः ४.१७.७
त्वमध्वर्युरुत होतासि १.९४.६
त्वमपामपिधानावृणोरपा १.५१.४
त्वमपो यदवे तुर्वशाय ५.३१.८
त्वमपो यद्ध वृत्रं जघन्वानाँ ३.३२.६
त्वमपो वि दुरो ६.३०.५
त्वमर्यमा भवसि यत् ५.३.२
त्वमसि प्रशस्यो ८.११.२
त्वमस्माकमिन्द्र विश्वध १.१७४.१०
त्वमस्य पारे रजसो १.५२.१२
त्वमायसं प्रति १.१२१.९
त्वमाविथ नर्यं तुर्वशं १.५४.६
त्वमाविथ सुश्रवसं १.५३.१०
त्वमित्सप्रथा अस्य ८.६०.५
त्वमिन्दो परि स्रव ९.६२.९
त्वमिन्द्र नर्यो याँ १.१२१.१२
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिषु ८.९९.५
त्वमिन्द्र बलादधि १०.१५३.२
त्वमिन्द्र यशा असि ८.९०.५
त्वमिन्द्र सजोषसं १०.१५३.४
त्वमिन्द्र स्नवितवा अपस्कः ७.२१.३
त्वमिन्द्र स्वयशा ऋभुक्षाः ७.३७.४
त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यं ८.९८.२
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा १०.१५३.५
त्वमिन्द्राय विष्णवे ९.५६.४
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा १०.१५३.३
त्वमिमा ओषधीः सोम १.९१.२२
त्वमिमा वार्या पुरु ६.१६.५
त्वमीशिषे वसुपते वसूनां १.१७०.५
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र ८.६४.३
त्वमुत्तमास्योषधे १०.९७.२३
त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्बधानाँ ५.३२.२
त्वमेकस्य वृत्रहन् ६.४५.५
त्वमेतदधारयः कृष्णासु ८.९३.१३
त्वमेताञ्जनराज्ञो द्विर्दशा १.५३.९
त्वमेतानि पप्रिषे १०.७३.८
त्वमेतान्रुदतो जक्षतः १.३३.७
त्वया मन्यो सरथं १०.८४.१
त्वया यथा गृत्समदासो २.४.९
त्वया वयमुत्तमं २.२३.१०
त्वया वयं पवमानेन सोम ९.९७.५८
त्वया वयं मघवन्निन्द्र १.१७८.५
त्वया वयं मघवन्पूर्व्ये १.१३२.१
त्वया वयं शाशद्महे १०.१२०.५
त्वया वयं सधन्य१स्त्वोताः ४.४.१४
त्वया वयं सुवृधा २.२३.९
त्वया वीरेण वीरवो ९.३५.३
त्वया ह स्विद्युजा वयं चोदि८.१०२.३
त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति ८.२१.११
त्वया हितमप्यमप्सु २.३८.७
त्वया हि नः पितरः ९.९६.११
त्वया ह्यग्ने वरुणो धृतव्रतो १.१४१.९
त्वयेदिन्द्र युजा वयं ७.९२.३२
त्वष्टा दुहित्रे वहतुं १०.१७.१
त्वष्टा माया वेदपसा १०.५३.९
त्वष्टा यद्वज्रं सुकृतं १.८५.९
त्वष्टारमग्रजां गोपां ९.५.९
त्वष्टारं वायुमृभवो १०.६५.१०
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः १.१८८.९
त्वष्टुर्जामातरं वयं ८.२६.२२
त्वं करञ्जमुत १.५३.८
त्वं कविं चोदयो ६.२६.३
त्वं कुत्सं शुष्णहत्येषु १.५१.६
त्वं कुत्सेनाभि शुष्णं ६.३१.३
त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्यो १.५१.३
त्वं च सोम नो वशो १.९१.६
त्वं चित्ती तव दक्षैः ८.७९.४
त्वं चित्रः शम्या ४.३.४
त्वं जघन्थ नमुचिं १०.७३.७
त्वं जामिर्जनानां १.७५.४
त्वं जिगेथ न धना १.१०२.१०
त्वं तदुक्थमिन्द्र ६.२६.५
त्वं तमग्ने अमृतत्व १.३१.७
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न १.५५.३
त्वं तमिन्द्र पर्वतं महां १.५७.६
त्वं तमिन्द्र मर्त्यम् ५.३५.५
त्वं तमिन्द्र वावृधानो १.१३१.७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं तस्य द्वयाविनो	१.४२.४
त्वं तं देव जिह्वया	६.१६.३२
त्वं तं ब्रह्मणस्पते	१.१८.५
त्वं ताँ अग्न उभयान्वि	१.१८९.७
त्वां ताँ इन्द्रोभयाँ	६.३३.३
त्वं तान्त्सं च प्रति	२.१.१५
त्वं तान्वृत्रहत्ये	१०.२२.१०
त्वं तू न इन्द्रं तं	१.१६९.४
त्वं त्यत्यपणीनां विदो	९.१११.२
त्वं त्यमिटतो रथं	१०.१७१.१
त्वं त्यमिन्द्र मर्त्यम्	१०.१७१.३
त्वं त्यमिन्द्र सूर्यं	१०.१७१.४
त्वं त्या चिदच्युताग्ने	६.२.९
त्वं त्या चिद्वातस्याश्वा	१०.२२.५
त्वं त्यां न इन्द्र देव	१.६३.८
त्वं त्योभिरा गहि	१.३०.२२
त्वं त्वमहर्यथा	१०.९६.५
त्वं दाता प्रथमो	८.९०.२
त्वं दिवो धरुणं धिष	१.५६.६
त्वं दिवो बृहतः सानु	१.५४.४
त्वं दूतः प्रथमो	१०.१२२.५
त्वं दूतस्त्वमु नः	२.९.२
त्वं दूतो अमर्त्य आ	६.१६.६
तं देवि सरस्वत्यवा	६.६१.६
त्वं द्यां च महिव्रत	९.१००.९
त्वं धियं मनोयुजं	९.१००.३
त्वं धनुरिन्द्र धुनिमतीः	१.१७४.९
	६.२०.१२
त्वं धृष्णो धृषता	७.१९.३
त्वं न इन्द्र ऋतयुः	८.७०.१०
त्वं न इन्द्र त्वाभिरूती	२.२०.२
त्वं न इन्द्र राया तरूषसो	१.१२९.१०
त्वं न इन्द्र राया परीणसा	१.१२९.९
त्वं न इन्द्र वाजयुः	७.३१.३
त्वं न इन्द्र शूर	१०.२२.९
त्वं न इन्द्रा भरँ ओजो	८.९८.१०
त्वं न इन्द्रासां हस्ते	८.७०.१२
त्वं नश्चित्र ऊत्या	६.४८.९
त्वं नः पश्चादधराद्	८.६१.१६
त्वं नः पाह्यंहसो जातवेदो	६.१६.३०
त्वं नः पाह्यंहसो दोषा	७.१५.१५
त्वं नः सोम विश्वतो गोपा	१०.२५.७
त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा	२.९१.८
त्वं नः सोम विश्वतो वयो	८.४८.१५
त्वं नः सोम सुक्रतुः	१०.२५.८
त्वं नृचक्षा असि सोम	९.८६.३८
त्वं नृचक्षा वृषभानु	३.१५.३
त्वं नृभिर्नृमणो	७.१९.४
त्वं नो अग्न आयुषु	८.३९.१०
त्वं नो अग्न एषां	५.१०.३
त्वं नो अग्ने अग्निभिः	१०.१४१.६
त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः	५.१०.७
त्वं नो अग्ने अद्भुत	५.१०.२
त्वं नो अग्ने अधराद्	१०.८७.२०
त्वं नो अग्ने तव देव	१.३१.१२
त्वं नो अग्ने पित्रोरुपस्थे	१.३१.९
त्वं नो अग्ने महोभिः	८.७१.१
त्वं नो अग्ने वरुणस्य	४.१.४
त्वं नो अग्ने सनये	१.३१.८
त्वं नो असि भारताग्ने	२.७.५
त्वं नो अस्या अमतेरुत	८.६६.१४
त्वं नो अस्या इन्द्र	१.१२१.१४
त्वं नो अस्या उषसो	३.१५.२
त्वं नो गोपाः पथिकृद्	२.२३.६
त्वं नो वायवेषामपूर्व्यः	१.१३४.६
त्वं नो वृत्रहन्तमे	१०.२५.९
त्वं पवित्रे रजसो	९.८६.३०
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो	१.१७१.६
त्व पिप्रुं मृगयं	४.१६.१३
त्वं पुर इन्द्र चिकिद्	८.९७.१४
त्वं पुरं चरिष्ण्वं	८.१.२८
त्वं पुरूण्या भरा	१०.११३.१०
त्वं पुरू सहस्राणि	८.६१.८
त्वं भगो न आ हि	६.१३.२
त्वं भुवः प्रतिमानं	१.५२.१३
त्वं मखस्य दोधतः	१०.१७१.२
त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं	४.१७.१
त्वं महाँ इन्द्र यो	१.६३.१
त्वं महीमवनिं विश्वधेनां	४.१९.६
त्वं मानेभ्य इन्द्र	१.१६९.८
त्वं मायाभिरनवद्य	१०.१४७.२
त्वं मायाभिरप	१.५१.५
त्वं यविष्ठ दाशुषो	८.८४.३
त्वं रथं प्र भरो	६.२६.४
त्वं रयिं पुरुवीरं	८.७१.६
त्वं राजेन्द्र ये च	१.१७४.१
त्वं राजेव सुव्रतो	९.२०.५
त्वं वरुण उत मित्रो	७.१२.३
त्वं वरो सुषाम्णे	८.२३.२८
त्वं वर्मासि सप्रथः	७.३१.६
त्वं वलस्य गोमतो	१.११.५
त्वं विक्षु प्रदिवः सीद	६.५.३
त्वं विप्रस्त्वं कविः	९.१८.२
त्वं विशवस्य जगतश्चक्षुः	१०.१०२.१२
त्वं विश्वस्य धनदा	७.३२.१७
त्वं विश्वस्य मेधिरः	१.२५.२०
त्वं विश्वा दधिषे	१०.५४.५
त्वं विश्वेषां वरुणासि	२.२७.१०
त्वं विष्णो सुमतिं विश्व	७.१००.२
त्वं वृथा नद्य इन्द्र	१.१३०.५
त्वं वृध इन्द्र पूर्व्यो	६.२०.११
त्वं वृषा जनानां	८.१५.१०
त्वं शतान्यव शम्बरस्य	६.३१.४
त्वं शर्धाय महिना	१०.१४७.५
त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः	६.२६.६
त्वं सत्य इन्द्र धृष्णुरेता	१.६३.३
त्वं सद्यो अपिबो जात	३.३२.१०
त्वं समुद्रिया अपो	९.६२.२६
त्वं समुद्रो असि विश्ववित्	९.८६.२९
त्वं सिन्धूँरवासृजो	१०.१३३.२
त्वं सुतस्य पीतये	१.५.६
त्वं सुतो नृमादनो	९.६७.२
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिः	९.६७.३
त्वं सूकरस्य दर्दृहि	७.५५.४
त्वं सूरो हरितो रामयो	१.१२१.१३
त्वं सूर्ये न आ भज	९.४.५
त्वं सोम क्रतुभिः	१.९१.२
त्वं सोम तनूकृद्भ्यो	८.७९.३
त्वं सोम नृमादनः	९.२४.४
त्वं सोम पणिभ्य आ	९.२२.७
त्वं सोम पवमानो	९.५९.३
त्वं सोम पितृभिः संविदानो	८.४८.१३
त्वं सोम प्र चिकितो	१.९१.१
त्वं सोम महे	१.९१.७
त्वं सोम विपश्चितं तना	९.१६.८
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो	९.६४.२५
त्वं सोम सूर एषस्तोकस्य	९.६६.१८
त्वं सोमासि धारयुः	९.६७.१
त्वं सोमासि सत्पतिः	१.९१.५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं ह त्यत्सप्तभ्यो जायमानो ८.९६.१६
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजः ८.९६.१७
त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः ७.१९.२
त्वं ह त्यदिन्द्र चोदीः १.६३.४
त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त १.६३.७
त्वं ह त्यदिन्द्रा रिषण्यन् १.६३.५
त्वं ह त्यदृणया इन्द्र १०.८९.८
त्वं ह त्यद् वृषभ ८.९६.१८
त्यं ह नु त्यददमायो ६.१८.३
त्यं ह यद्यविष्ठ्य ८.७५.३
त्वं हि क्षैतवद्यशो ६.२.१
त्वं हि नस्तन्वः ४.४८.९
त्वं हि नः पिता वसो ८.९८.११
त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः १०.८३.४
त्वं हि मानुषे जने ५.२१.२
त्वं हि राधस्पते ८.६१.१४
त्वं हि विश्वतोमुख १.९७.६
त्वं हि वृत्रहन्नेषां ८.९३.३३
त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र ८.९८.६
त्वं हि शूरः सनिता १.१७५.३
त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युता ३.३०.४
त्वं हि सत्यो मघवन्ननानतः ८.९०.४
त्वं हि सुप्रतूरसि ८.२३.२९
त्वं हि सोम वर्धयन् ९.५१.४
त्वं हि स्तोमवर्धन ८.१४.११
त्वं होता मनुर्हितोऽग्ने १.१४.११
त्वं होता मनुर्हितो वह्निः ६.१६.९
त्वं होता मन्द्रतमो ६.११.२
त्वं ह्यग्ने अग्निना ८.४३.१४
त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य १.१४४.६
त्वं ह्यग्ने प्रथमो ६.१.१
त्वं ह्या१ङ्ग दैव्या ९.१०८.३
त्वं ह्योक ईशिषे ४.३२.७
त्वं ह्योहि चेरवे ८.६१.७
त्वा दत्तेभी रुद्र शन्तमेभिः २.३३.२
त्वामग्न आदित्यासः २.१.१३
त्वामग्न ऋतायवः समीधिरे ५.८.१
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा ५.११.६
त्वामग्ने अतिथिं पूर्व्यं ५.८.२
त्वामग्ने दम आ विश्पतिं २.१.८
त्वामग्ने धर्णसिं विश्वधा ५.८.४
त्वामग्ने पितरमिष्टिभिः २.१.९
त्वामग्ने पुष्करादधि ६.१६.१३
त्वामग्ने प्रथममायुम् १.३१.११
त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो ४.११.५
त्वामग्ने प्रदिव आहुतं ५.८.७
त्वामग्ने मनीषिणस्त्वाम् ८.४४.१९
त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं ३.१०.१
त्वामग्ने मानुषीरीळते ५.८.३
त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून १०.४५.११
त्वामग्ने वसुपतिं वसूनां ५.४.१
त्वामग्ने वाजसातमं ५.१३.५
त्वामग्ने समिधानं यविष्ठ्य ५.८.६
त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो ७.९.६
त्वामग्ने स्वाध्यो ३ मर्तासो ६.१६.७
त्वामग्ने हरितो ७.५.५
त्वामग्ने हविष्मन्तो ५.९.१
त्वामच्छा चरामसि ९.१.५
त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे ५.३.८
त्वामिच्छवसस्पते ८.६.२१
त्वामिदत्र वृणते त्वायवः १०.९१.९
त्वामिदस्या उषसो व्युष्टि १०.१२२.७
त्वामिदा ह्यो नरो ८.९९.१
त्वामिद्धि त्वायवो ८.९२.३३
त्वामिद्धि सहसस्पुत्र १.४०.२
त्वामिद्धि हवामहे साता ६.४६.१
त्वामिद्यवयुर्मम ८.७८.९
त्वामिद् वृत्रहन्त ---उग्रम् ५.३५.६
त्वामिद् वृत्रहन्त ---सुतावन्तो ८.९३.३०
त्वामिद् वृत्रहन्त ---हवन्ते ८.६.३७
त्वामीळते अजिरं ७.११.२
त्वामीळे अध द्विता ६.१६.४
त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं ६.४६.६
त्वामु जातवेदसं १०.१५०.३
त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं ७.१७.६
त्वामु ते स्वाभुवः १०.२१.२
त्वा युजा तव तत्सोम सख्यः ४.२८.१
त्वा युजा नि खिदत्सूर्यस्य ४.२८.२
त्वायेन्द्र सोमं सुषुमा १.१०१.९
त्वावतः पुरूवसो ८.४६.१
त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे ७.२५.४
त्वां चित्रश्रवस्तम १.४५.६
त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र १०.४२.४
त्वां दूतमग्ने अमृतं ६.१५.८
त्वां देवेषु प्रथमं हवामहे १.१०२.९
त्वां पूर्व ऋषयो १०.९८.९
त्वां मृजन्ति दश ९.६८.७
त्वां यज्ञेभिरुक्थैः १०.२४.२
त्वां यज्ञेष्वीळते १०.२१.६
त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने ३.१०.२
त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुं १०.२१.७
त्वां यज्ञैरवीवृधन् ९.४.९
त्वां रिहन्ति मातरो ९.१००.७
त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्या ६.१.५
त्वां वाजी हवते वाजिनेयो ६.२६.२
त्वां विश्वे अमृत जायमानं ६.७.४
त्वां विश्वे सजोषसो ५.२१.३
त्वां विष्णुर्बृहन्क्षयो ८.१५.९
त्वां शुष्मिन्पुरुहूत वाजयं ८.९८.१२
त्वां सुतस्य पीतये ३.४२.९
त्वां सोम पवमानं स्वाध्यः ९.८६.२४
त्वां स्तोमा अवीवृधन् १.५.८
त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ १.६३.६
त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैः ६.४.७
त्वां हि ष्मा चर्षणयो ६.२.२
त्वां हि सत्यमद्रिवो ८.४६.२
त्वां हि सुष्परस्तमं ८.२६.२४
त्वां हीन्द्रावसे विवाचो ६.३३.२
त्वां ह्यग्ने सदमित्समन्यवः ४.१.१
त्विषीमन्तो अध्वरस्येव ६.६६.१०
त्वे अग्न आहवनानि ७.१.१७
त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो २.१.१४
त्वे अग्ने सुमतिं भिक्ष १.७३.७
त्वे अग्ने स्वाहुत ७.१६.७
त्वे असुर्यं वसवो ७.५.६
त्वे इदग्ने सुभगे १.३६.६
त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा २.११.१२
त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति १०.१२०.३
त्वे धर्माण आसते १०.२१.३
त्वे धेनुः सुदुघा १०.६९.८
त्वे पितो महानां १.१८७.६
त्वे राय इन्द्र तोशतमाः १.१६९.५
त्वे वसूनि पुर्वणीक ६.५.२
त्वे वसूनि संगता ८.७८.८
त्वे विश्वा तविषी १.५१.७
त्वे विश्वा सरस्वती २.४१.१७
त्वेषमित्था समरणं शिमी १.१५५.२
त्वेषस्ते धूम ऋण्वति ६.२.६
त्वेषं गणं तवसं ५.५८.२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत् १.९५.८
त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य ९.७१.८
त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं १.११४.४
त्वेषं शर्धो न मारुतं ६.४८.१५
त्वेषासो अग्नेरमवन्तो १.३६.२०
त्वे सु पुत्र शवसो ८.९२.१४
त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषः ९.११०.७
त्वे ह यत्पितरश्चिन् ७.१८.१
त्वोतासस्तवावसा ९.६१.२४
त्वोतासस्त्वा युजाप्सु ८.६८.९
त्वोतासो मघवन्निन्द्र विप्राः ४.२९.५
त्वोतो वाज्यह्वयो १.७४.८

द

दक्षस्य वादिते जन्मनि १०.६४.५
दक्षिणावतामिदिमानि १.१२५.६
दक्षिणावान्प्रथमो १०.१०७.५
दक्षिणाश्वं दक्षिणा १०.१०७.७
दण्डाइवेद्गोअजनास ७.३३.६
ददानमिन्न ददभन्त १.१४८.२
ददी रेक्णस्तन्वे ददिर्वसु ८.४६.१५
दधन्नृतं धनयन्नस्य १.७१.३
दधन्वे वा यदीमनु २.५.३
दधानो गोमदश्ववत् ८.४६.५
दधामि ते मधुनो ८.१००.२
दधामि ते सुतानां ८.३४.५
दधिक्रामग्निमुषसं ३.२०.५
दधिक्रामु नमसा ७.४४.२
दधिक्रावाणं बुबुधानो ७.४४.३
दधिक्रावा प्रथमो वाज्यर्वा ७.४४.४
दधिक्राव्ण इदु नु ४.४०.१
दधिक्राव्ण इष ऊर्जो ४.३९.४
दधिक्राव्णो अकारिषं ४.३९.६
दधिक्रां वः प्रथम ७.४४.१
दधिष्वा जठरे सुतं ३.४०.५
दधुष्टवा भृगवो मानुषे १.५८.६
दध्यङ् ह मे जनुषं १.१३९.९
दनो विश इन्द्र १.१७४.२
दभ्रं चिद्धि त्वावतः ८.४५.३२
दभ्रेभिश्चिच्छशीयांसं ४.३२.३
दमूनसो अपसो ये सुहस्ताः ५.४२.१२
दर्शन्वत्र शृतपाँ अनिद्रान् १०.२७.६
दर्शं नु विश्वदर्शतं १.२५.१८
दविद्युतत्या रुचा ९.६४.२८
दश क्षिपः पूर्व्यं सीम् ३.२३.३
दश क्षिपो युञ्जते बाहू ५.४३.४
दश ते कलशानां ४.३२.१९
दश मह्यं पौतक्रतः ८.५६.२
दश मासाञ्छशयानः ५.७८.९
दश रथान् प्रष्टिमतः ६.४७.२४
दश राजानः समिता ७.८३.७
दश रात्रीरशिवेना १.११६.२४
दश श्यावा ऋधद्रयो ८.४६.२३
दशस्यन्ता मनवे पूर्व्यं ८.२२.६
दशस्यन्तो नो मरुतो ७.५६.१७
दशस्या नः पुर्वणीक ६.११.६
दशानामेकं कपिलं १०.२७.१६
दशावनिभ्यो दशकक्षेभ्यः १०.९४.७
दशाश्वान्दश कोशान् ६.४७.२३
दशेमं त्वष्टुर्जनयन्त गर्भं १.९५.२
दस्मो हि ष्मा वृषणं १.१२९.३
दस्यूञ्छिम्यूँश्च पुरुहूत १.१००.१८
दस्रा युवाकवः सुता १.३.३
दस्रा हि विश्वमानुषङ् ८.२६.६
दाता मे पृषतीनां ८.६५.१०
दादृहाणो वज्रमिन्द्रो १.१३०.४
दाधार क्षेममोको न १.६६.२
दाना मृगो न वारणः ८.३३.८
दानाय मनः सोमपावन् १.५५.७
दानासः पृथुश्रवसः ८.४६.२४
दा नो अग्ने धिया रयिं ७.१.५
दा नो अग्ने बृहतो दाः २.२.७
दामानं विश्वचर्षणे ८.२३.२
दाशराज्ञे परियत्ताय विश्व ७.८३.८
दाशेम कस्य मनसा ८.८४.५
दासपत्नीरहिगोपा १.३२.११
दिदृक्षन्त उषसो ३.३०.१३
दिदृक्षेण्यः परि काष्ठासु १.१४६.५
दिवक्षसो अग्निजिह्वा १०.६५.७
दिवक्षसो धेनवो ३.७.२
दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदः १.५९.५
दिवश्चिदस्य वरिमा १.५५.१
दिवश्चिदा ते रुचयन्त ३.६.७
दिवश्चिदा पूर्व्या ३.३९.२
दिवश्चिदा वोऽमवत्तरेभ्यो १०.७६.५
दिवश्चिद् घा दुहितरं ४.३०.९
दिवश्चिद्रोचनादधि ८.८.७
दिवस्कण्वास इन्दवो १.४६.९
दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निः १०.४५.१
दिवस्पृथिव्या अधि भवेन्दो ९.३१.२
दिवस्पृथिव्या पर्योज ६.४७.२७
दिवस्पृथिव्योरव आ १०.३५.२
दिवः पीयूषमुत्तमं ९.५१.२
दिवः पीयूषं पूर्व्यं ९.११०.८
दिवा चित्तमः कृण्वन्ति १.३८.९
दिवा यान्ति मरुतो १.१६१.१४
दिवि क्षयन्ता रजसः ७.६४.१
दिवि ते नाभा परमो ९.७९.४
दिवि न केतुरधि १०.९६.४
दिवि मे अन्यः पक्षो १०.११९.११
दिविस्पृशं यज्ञमस्माकं १०.३६.६
दिवि स्वनो यतते १०.७५.३
दिवेदिवे सदृशीरन्यमर्धं ६.४७.२१
दिवो धर्ता भुवनस्य ४.५३.२
दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः ९.१०९.६
दिवो धामभिर्वरुण ७.६६.१८
दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र ६.२०.२
दिवो न यस्य रेतसो १.१००.३
दिवो न यस्य विधतो ६.३.७
दिवो न सर्गा असृग्रमह्नां ९.९७.३०
दिवो न सानु पिप्युषी ९.१६.७
दिवो न सानु स्तनयन्न ९.८६.९
दिवो नाके मधुजिह्वा ९.८५.१०
दिवो नाभा विचक्षणो ९.१२.४
दिवो नो वृष्टिं मरुतो ५.८३.६
दिवो मानं नोत्सदन् ८.६३.२
दिवो यः स्कम्भो धरुणः ९.७४.२
दिवो रुक्म उरुचक्षा ७.६३.४
दिवो वराहमरुषं १.११४.५
दिवो वा सानु १०.७०.५
दिव्यन्यः सदनं २.४०.४
दिव्यं सुपर्णं वायसं १.१६४.५२
दिव्यः सुपर्णोऽवचक्षि ९.९७.३३
दिव्या आपो अभि यदेनम् ७.१०३.२
दिशः सूर्यो न मिनाति ३.३०.१२
दीदिवांसमपूर्व्यं ३.१३.५
दीर्घतन्तुर्बृहदुक्षायमग्निः १०.६९.७
दीर्घतमा मामतेयो १.१५८.६
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो ८.१७.१०
दीर्घं ह्यङ्कुशं १०.१३४.६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुराध्यो अदितिं स्रेवयन्तो ७.१८.८
दुरो अश्वस्य १.५३.२
दुरोकशोचिः क्रतुर्न १.६६.३
दुर्गे चित्रः सुगं कृधि ८.९३.१०
दुर्मन्त्वत्रामृतस्य नाम १०.१२.६
दुहन्ति सप्तैकामुप ८.७२.७
दुहान ऊधर्दिव्यं ९.१०७.५
दुहानः प्रत्नमित्पय ९.४२.४
दुहीयन्मित्रधितये युवाकुः १.१२०.९
दूणाशं सख्यं तव ६.४५.२६
दूतं वो विश्ववेदसं ४.८.१
दूरमित पणयो वरीयः १०.१०८.११
दूरं किल प्रथमा १०.१११.८
दूराच्चिदा वसतो ६.३८.२
दूरादिन्द्रमनयन्ना ७.३३.२
दूरादिहेव यत्सत्य ८.५.१
दूरे तन्नाम गुह्यं पराचैः १०.५५.१
दृतेरिव तेऽवृकमस्तु ६.४८.१८
दृशानोरुक्म उर्विया १०.४५.८
दृशेन्यो यो महिना १०.८८.७
दृळ्हा चिदस्मा अनु दुः १.१२७.४
दृळ्हा चिद्या वनस्पतीन् ५.८४.३
देव त्वष्टर्यद्ध १०.७०.९
देव बर्हिर्वर्धमानं २.३.४
देवयन्तो यथा मतिं १.६.६
देवस्त्वष्टा सविता विश्वरूपः ३.५५.१९
देवस्य वयं सवितुः सवीमनि ६.७१.२
देवस्य सवितुर्वयं ३.६२.११
देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य ७.१०३.९
देवंदेवं राधसे चोदयन्ति ७.७९.५
देवंदेवं वोऽवस इन्द्रमिन्द्रं ८.१२.१९
देवंदेवं वोऽवसे देवंदेवं ८.२७.१३
देवं नरः सवितारं ३.६२.१२
देवं वो अद्य सवितारमेषे ५.४९.१
देवं वो देवयज्यया ५.२१.४
देवा एतस्यामवदन्त पूर्वे १०.१०९.४
देवानामिदवो महत् ८.८३.१
देवानां चक्षुः सुभगा ७.७७.३
देवानां दूतः पुरुध ३.५४.१९
देवानां नु वयं जाना १०.७२.१
देवानां पत्नीरुशतीरवन्तु ५.४६.७
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजू १.८९.२
देवानां माने प्रथमातिष्ठ १०.२७.२३
देवानां युगे प्रथमे १०.७२.३
देवान्वसिष्टो अमृतान् १०.६५.१५
१०.६६.१५
देवान्वा यच्चकृमा १.१८५.८
देवान्हुवे बृहच्छ्रवसः १०.६६.१.
देवाव्यो नः परिषिच्यमानाः ९.९७.२६
देवाश्चित्ते अमृता जातवेदः १०.६९.९
देवाश्चित्ते असुर्यं २.२३.२
देवाश्चित्ते असुर्याय पूर्वे ७.२१.७
देवास आयन् परशूँरबिभ्रन् १०.२८.८
देवासो हि ष्मा मनवे ८.२७.१४
देवास्त्वा वरुणो मित्रो १.३६.४
देवाः कपोत इषितो १०.१६५.१
देवी दिवो दुहितरा १०.७०.६
देवी देवस्य रोदसी ७.९७.८
देवी देवेभिर्यजते ४.५६.२
देवी यदि तविषी १.५६.४
देवीर्द्वारो विश्रयध्वम् ५.५.५
देवीं वाचमजनयन्त देवाः ८.१००.११
देवीः षळुर्वीरुरु नः कृणोत १०.१२८.५
देवेन नो मनसा देव १.९१.२३
देवेभिर्देव्यदिते ८.१८.४
देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभिः १०.८८.३
देवेभ्यस्त्वा मदाय ९.८.५
देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसे ९.१०९.२१
देवेभ्यः कमवृणीत मृत्युं १०.१३.४
देवेभ्यो हि प्रथमं ४.५४.२
देवैर्नो देव्यदिति ---तन्नो १.१०६.७
देवैर्नो देव्यदिति ---नहि ४.५५.७
देवो देवानामसि मित्रो १.९४.१३
देवो देवान्परिभूर्ऋतेन १०.१२.२
देवो देवाय धारयेन्द्राय ९.६.७
देवो न यः पृथिवीं १.७३.३
देवो न यः सविता १.७३.२
देवो भगः सविता रायो ५.४२.५
देवो वो द्रविणोदाः ७.१६.११
दैवी पूर्तिर्दक्षिणा १०.१०७.३
दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे ३.४.७
३.७.८
दैव्या होतारा प्रथमा पुरो १०.६६.१३
दैव्या होतारा प्रथमा विदु २.३.७
दैव्या होतारा प्रथमा सुवा १०.११०.७
दोहेन गामुप शिक्षा १०.४२.२
द्यामिन्द्रो हरिधायसं ३.४४.३
द्यावा चिदस्मै पृथिवी २.१२.१३
द्यावा नः पृथिवी इमं २.४१.२०
द्यावा नो अद्य पृथिवी १०.३५.३
द्यावापृथिवी जनयन्नभि १०.६६.९
द्यावाभूमी अदिते ७.६२.४
द्यावा यमग्निं पृथिवी १०.४६.९
द्यावा ह क्षामा प्रथमे १०.१२.१
द्यावो न यस्य पनयन्ति ६.४.३
द्यावो न स्तृभिश्चितयन्त २.३४.२
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं ८.८८.२
द्युतद्यामानं बृहतीमृतेन ५.८०.१
द्युतानं वो अतिथिं स्वर्णरं ६.१५.४
द्युभिरक्तुभिः परिपातम १.११२.२५
द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं १०.७.५
द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे ६.४४.९
द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना ८.८७.१
द्युम्नेषु पृतनाज्ये ३.३७.७
द्यौर्न य इन्द्राभि भूमाः ६.२०.१
द्यौर्मे पिता जनिता नाभिः १.१६४.३३
द्यौर्वः पिता पृथिवी १.१९१.६
द्यौश्च त्वा पृथिवी यज्ञियासः ३.६.३
द्यौश्च नः पृथिवी १०.३६.२
द्यौश्चिदस्यामवाँ अहेः १.५२.१०
द्यौष्पितः पृथिवि मातः ६.५१.५
द्रप्समपश्यं विषुणे चरन्तं ८.९६.१४
द्रप्सश्चस्कन्द प्रथमाँ १०.१७.११
द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगा १०.१२३.८
द्रवतां त उषसा ३.१४.३
द्रविणोदा ददातु नो १.१५.८
द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य १.९६.८
द्रविणोदा द्रविणसो ग्रावा १.१५.७
द्रविणोदाः पिपीषति १.१५.९
द्रापिं वसानो यजतो दिवि ९.८६.१४
द्रुहं जिघांसन्ध्वरसम ४.२३.७
द्रुहो निषत्ता पृशनी चिदेवः १०.७३.२
द्रुवत्नः सर्पिरा सुतिः २.७.६
द्वयाँ अग्रे रथिनो ६.२७.८
द्वादश द्यून्यदगोह्यस्य ४.३३.७
द्वादश प्रधयश्चक्र १.१६४.४८
द्वादशारं नहि तज्जराय १.१६४.११
द्वाविमौ वातौ वातः १०.१३७.२
द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया १.१६४.२०

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विता यदीं कीस्तासो १.१२७.७
द्विताय मृक्तवाहसे ५.१८.२
द्विता यो वृत्रहन्तमो ८.९३.३२
द्विता वि वव्रे सनजा १.६२.७
द्विता व्यूर्ण्वन्नमृतस्य ९.९४.२
द्विधा सूनवोऽसुरं स्वर्विदं १०.५६.६
द्विमाता होता विदथेषु ३.५५.७
द्विर्यं पञ्च जीजनन्त्संवसा ४.६.८
द्विर्यं पञ्च स्वयशसं ९.९८.६
द्विषो नो विश्वतोमुखा १.९७.७
द्वे इदस्य क्रमणे स्वर्दृशो १.१५५.५
द्वे ते चक्रे सूर्ये १०.८५.१६
द्वे नप्तुर्देववतः ७.१८.२२
द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे १.९५.१
द्वेष्टि श्वश्रूरप जाया १०.३४.३
द्वे समीची बिभृतश्चरन्तं १०.८८.१६
द्वे स्रुती अशृणवं पितृणां १०.८८.१५

ध

धनं न स्पन्द्रं बहुलं १०.४२.५
धनुर्हस्तादाददानो १०.१८.९
धन्या चिद्धि त्वे धिषणा ६.११.३
धन्व च यत्कृन्तत्रं च १०.८६.२०
धन्वना गा धन्वनाजिं ६.७५.२
धन्वन्स्रोतः कृणुते गातुं १.९५.१०
धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसः ९.७६.१
धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट ३.४९.४
धर्तारो दिव ऋभवः १०.६६.१०
धर्मणा मित्रावरुणा ५.६३.७
धाता धातृणां भुवनस्य १०.१२८.७
धानावन्तं करम्भिणं ३.५२.१
धामन्ते विश्वं भुवनमधि ४.५८.११
धायोभिर्वा यो युज्येभिरर्कैः ६.३.८
धारयन्त आदित्यासो २.२७.४
धारावरा मरुतो २.३४.१
धासिं कृण्वान ओषधीः ८.४३.७
धियं पूषा जिन्वतु २.४०.६
धियं वो अप्सु दधिषे स्वर्षां ५.४५.११
धिया चक्रे वरेण्यो ३.२७.९
धिषा यदि धिषण्यन्तः ४.२१.६
धिष्व वज्रं गभस्त्यो ६.४५.१८
धिष्वा शवः शूर ये नः २.११.१८
धीभिरर्वद्भिरर्वतो ६.४५.१२
धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं ९.१०६.११
धीभिः सातानि काण्वस्य ८.४.२०
धीरा त्वस्य महिना ७.८६.१
धीरासः पदं कवयो १.१४६.४
धीरो ह्यस्यद्मसद् ८.४४.२९
धुनेतयः सुप्रकेतं ४.५०.२
धूनुथ द्यां पर्वतान् ५.५७.३
धृतव्रता आदित्या २.२९.१
धृतव्रताः क्षत्रिया १०.६६.८
धृतव्रतो धनदाः ६.१९.५
धृषतश्चिद् धृषन्मनः ८.६२.५
धृषत्पिब कलशे ६.४७.६
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता ८.१४.३
धेनुं न त्वा सुयवसे ७.१८.४
धेनुः प्रत्नस्य काम्यं ३.५८.१
धेनुर्जिन्वतमुत ८.३५.१८
ध्रुवं ज्योतिर्निहितं ६.९.५
ध्रुवं ते राजा वरुणो १०.१७३.५
ध्रुवं ध्रुवेण हविषा १०.१७३.६
ध्रुवा एव वः पितरो १०.९४.१२
ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा १०.१७३.४
ध्रुवासु त्वासु क्षितिषु ७.८८.७
ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योः ९.५८.३

न

नकिरस्य शचीनां ८.३२.१५
नकिरस्य सहन्त्य १.२७.८
नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो ४.३०.१
नकिरेषां निन्दिता मर्त्येषु ३.३९.४
नकिर्देवा मिनीमसि १०.१३४.७
नकिर्ह्येषां जनूंषि ७.५६.२
नकिष्ट एता व्रता १.६९.४
नकिष्टं कर्मणा नशद् ८.७०.३
नकिष्टं कर्मणा नशन्न प्र ८.३१.१७
नकिष्ट्वद्रथीतरो १.८४.६
नकिः परिष्टिर्मघवन् ८.८८.६
नकिः सुदासो रथं ७.३२.१०
नकीमिन्द्रो निकर्तवे ८.७८.५
नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे ८.२१.१४
नकीं वृधीक इन्द्र ते ८.७८.४
नक्तोषासा वर्णमामेम्याने १.९६.५
नक्तोषासा सुपेशसास्मिन् १.१३.७
नक्षद्धवमरुणीः पूर्व्यं राट् १.१२१.३
नक्षद्धोता परि सद्म १.१७३.३
नक्षन्त इन्द्रमवसे ८.५४.२
न क्षोणीभ्यां परिभ्वे २.१६.३
न घा त्वद्रिगप १०.४३.२
न घा राजेन्द्र आ दभन्नः १.१७८.२
न घा वसुर्नि यमते ६.४५.२३
न घा स मामप जोषं जभार ४.२७.२
न घेमन्यदा पपन ८.२.१७
न जामये तान्वो रिक्थमा ३.३१.२
न त इन्द्र सुमतयो न रायः ७.१८.२०
न तद्दिवा न पृथिव्या ६.५२.१
न तमग्ने अरातयो ८.७१.४
न तमश्नोति कश्चन १०.६२.९
न तमंहो न दुरितं कुतः २.२३.५
न तमंहो न दुरितं देवासो १०.१२६.१
न तमंहो न दुरितानि ७.८२.७
न तस्य मायया चन ८.२३.१५
न तस्य विद्म तदु षु १०.४०.११
न तं जिनन्ति बहवो ४.२५.५
न तं तिग्मं चन त्यजो ८.४७.७
न तं राजानावदिते १०.३९.११
न तं विदाथ य इमा जजान १०.८२.७
न ता अर्वा रेणुककाटो ६.२८.४
न ता नशन्ति न दभाति ६.२८.३
न ता मिनन्ति मायिनो ३.५६.१
न तिष्ठन्ति न नि किषन्ति १०.१०.८
न ते अदेवः प्रदिवो १०.३७.३
न ते अन्तः शवसो ६.२९.५
न ते गिरो अपि मृष्ये ७.२२.५
न ते त इन्द्राभ्यस्मदृष्वा ५.३३.३
न ते दूरे परमा ३.३०.२
न ते वर्तास्ति राधस ८.१४.४
न ते विष्णो जायमानो ७.९९.२
न ते सखा सख्यं १०.१०.२
न ते सव्यं न दक्षिणं ८.२४.५
न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने ५.३.५
न त्वा गभीरः पुरुहूत ३.३२.१६
न त्वा देवास आशत ८.९७.९
न त्वा बृहन्तो अद्रयो ८.८८.३
न त्वा रासीयाभिशस्तये ८.१९.२६
न त्वा वरन्ते अन्यथा ४.३२.८
न त्वावाँ अन्यो दिव्यो ७.३२.२३
न त्वा शतं चन ह्रुतो ९.६१.२७
न दक्षिणा वि चिकिते १.२७.११
नदस्य मा रुधतः काम १.१७९.४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदं न भिन्नममुया १.३२.८
नदं व ओंदतीनां ८.६९.२
न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते ७.३२.२१
न देवानामति व्रतं १०.३३.९
न देवानामपि ह्रुतः ८.३१.७
न द्याव इन्द्रमोजसा ८.६.१५
न नूनमस्ति नो श्वः १.१७०.१
न नूनं ब्रह्मणामृणं ८.३२.१६
न पञ्चभिर्दशभिः ५.३४.५
न पर्वता न नद्यो ५.५५.७
नपाता शवसो महः ८.२५.५
नपातो दुर्गहस्य मे ८.६५.१२
न पापासो मनामहे ८.६१.११
न पूषणं मेथामसि १.४२.१०
नसीभिर्यो विवस्वतः ९.१४.५
न प्रमिये सवितुर्दैव्यस्य ४.५४.४
न भोजा मम्रुर्न १०.१०७.८
नम इदुग्रं नम आ विवासे ६.५१.८
न म इन्द्रेण सख्यं २.१८.८
न मत्स्त्री सुभसत्तरा १०.८६.६
नमसेदुप सीदत ९.११.६
नमस्ते अग्न ओजसे ८.७५.१०
नमस्यत हव्यदातिं ३.२.८
नमः पुरा ते वरुणोत २.२८.८
न मा गरन्नद्यो मातृतमा १.१५८.५
न मा तमन्न श्रमन्नोत २.३०.७
न मा मिमेथ न जिहीळे १०.३४.२
न मृत्युरासीदमृतं न १०.१२९.२
न मृषा श्रान्तं यदवन्ति १.१७९.३
नमो दिवे बृहते १.१३६.६
नमो महद्भ्यो नमो १.२७.१३
नमो मित्रस्य वरुणस्य १०.३७.१
नमोवाके प्रस्थिते ८.३५.२३
न य ईषन्ते जनुषो ६.६६.४
न यजमान रिष्यसि ८.३१.१६
न यत्परो नान्तर २.४१.८
न यत्पुरा चकृमा कद्ध नूनं १०.१०.४
नयसीद्वति द्विषः ६.४५.६
न यस्य ते शवसान ८.६८.८
न यस्य देवा देवता १.१००.१५
न यस्य द्यावापृथिवी अनु १.५२.१४
न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व १०.८९.६
न यस्य वर्ता जनुषा ४.२०.७
न यस्य सातुर्जनितो ४.६.७
न यस्येन्द्रो वरुणो २.३८.९
न यं जरन्ति शरदो ६.२४.७
न यं दिप्सन्ति १.२५.१४
न यं दुध्रा वरन्ते ८.६६.२
न यं रिपवो न रिषण्यवो १.१४८.५
न यं विविक्तो रोदसी ८.१२.२४
न यं शुक्रो न दुराशी ८.२.५
न यं हिंसन्ति धीतयो ६.३४.३
न यः संपृच्छे न पुनः ८.१०१.४
न यातव इन्द्र जूजुवुर्नः ७.२१.५
न युष्मे वाजबन्धवो ८.६८.१९
न ये दिवः पृथिव्या १.३३.१०
न योरुपब्दिरश्व्यः १.७४.७
न यो वराय मरुतां १.१४३.५
नरा गौरेव विद्युतं ७.६९.६
नरा दंसिष्ठावत्रये १०.१४३.३
नरा वा शंसं पूषणमगोह्यं १०.६४.३
नराशंसमिह प्रियं १.१३.३
नराशंसस्य महिमानमेषां ७.२.२
नराशंसं वाजिनं वाजयन्निह १.१०६.४
नराशंसं सुधृष्टमं १.१८.९
नराशंसः प्रतिधामानि २.३.२
नराशंसः सुषूदति ५.५.२
नराशंसो नोऽवतु १०.१८२.२
न रेवता पणिना सख्यमिन्द्रः ४.२५.७
नरो ये के चास्मदा १०.२०.८
नवग्वासः सुतसोमास ५.२९.१२
नव यदस्य नवतिं ५.२९.६
नव यो नवतिं पुरो ८.९३.२
नवं नु स्तोममग्नये ७.१५.४
न वा अरण्यानिर्हन्ति १०.१४६.५
न वा उ एतन्म्रियसे १.१६२.२१
न वा उ ते तन्वा तन्वं १०.१०.१२
न वा उ देवाः क्षुधम् १०.११७.१
न वा उ मां वृजने १०.२७.५
न वा उ सोमो वृजिनं ७.१०४.१३
नवानां नवतीनां १.१९१.१३
नवा नो अग्न आ भर ५.६.८
न वि जानामि यदिवेदम् १.१६४.३७
न वीळवे नमते न ६.२४.८
न वेपसा न तन्यतेन्द्रम् १.८०.१२
न वो गुहा चकृम १०.१००.७
नवोनवो भवति १०.८५.१९
नव्यं तदुक्थ्यं हितं १.१०५.१२
न स जीयते मरुतो ५.५४.७
न स राजा व्यथते यस्मिन् ५.३७.४
न स सखा यो न ददाति १०.११७.४
न स स्वो दक्षो वरुण ७.८६.६
न संस्कृतं प्र मिमीतो ५.७६.२
न सायकस्य चिकिते ३.५३.२३
न सीमदेव आपदिषं ८.७०.७
न सेशे यस्य रम्बते १०.८६.१६
न सेशे यस्य रोमशं १०.८६.१७
न सोम इन्द्रमसुतो ७.२६.१
नहि ग्रभायारणः सुशेवः ७.४.८
नहि ते अग्ने वृषभ ८.६०.१४
नहि ते क्षत्रं न सहो १.२४.६
न हि ते पूर्तमक्षिपत् ६.१६.१८
नहि ते शूर राधसो ८.४६.११
नहि तेषाममा चन १०.१८५.२
नहि त्वा रोदसी उभे १.१०.८
नहि त्वा शूर देवा ८.८१.३
नहि त्वा शूरो न ६.२५.५
नहि देवो न मर्त्यो १.१९.२
नहि नु ते महिमनः ६.२७.३
नहि नु यादधीमसि १.८०.१५
नहि मन्युः पौरुषेय ८.७१.२
नहि मे अक्षिपच्चन १०.११९.६
नहि मे अस्त्यघ्न्या ८.१०२.१९
नहि मे रोदसी उभे १०.११९.७
नहि व ऊतिः पृतनासु ७.५९.४
नहि वश्चरमं चन ७.५९.३
नहि वः शत्रुर्विविदे १.३९.४
नहि वामस्ति दूरके १.२२.४
नहि वां वव्रयामहे ८.४०.२
नहि वो अस्त्यर्भको ८.३०.१
नहि षस्तव नो मम ८.३३.१६
नहि ष्म यद्ध वः पुरा ८.७.२१
नहि ष्मा ते शतं चन ४.३१.९
नहि स्थूर्तृतुथा यात १०.१३१.३
नही नु वो मरुतो १.१६७.९
नह्यङ्ग नृतो त्वत् ८.२४.१२
नह्यङ्ग पुरा चन ८.२४.१५
नह्यन्यं बळाकरं ८.८०.१
नह्यस्या नाम गृभ्णामि १०.१४५.४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाकस्य पृष्ठे अधि १.१२५.५
नाके सुपर्णमुपपप्तिवांसं ९.८५.११
नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं १०.१२३.६
नाना चक्राते यम्या ३.५५.११
नानानं वा उ नो धियो ९.११२.१
नाना हि त्वा हवमाना १.१०२.५
नाना ह्यग्रेऽवसे ६.१४.३
नानौकांसि दुर्यो २.३८.५
नापाभूत न वो ४.३४.११
नाभा नाभिं न आ ददे ९.१०.८
नाभा पृथिव्या धरुणः ९.७२.७
नाभिं यज्ञानां सदनं ६.७.२
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं १०.९०.१४
नामानि ते शतक्रतो ३.३७.३
नावा न क्षोदः प्रदिशः १०.५६.७
नावेव नः पारयन्तं २.३९.४
नासत्याभ्यां बर्हिरिव १.११६.१
नासत्या मे पितरा ३.५४.१६
नासदासीन्नो १०.१२९.१
नास्माकमस्ति तत्तरः ८.६७.१९
नास्मै विद्युन्न तन्यतुः १.३२.१३
नास्य वर्ता न तरुता ६.६६.८
नाहमतो निरया ४.१८.२
नाहमिन्द्राणि रारण १०.८६.१२
नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं ६.९.२
नाहं तं वेद दभ्यं १०.१०८.४
नाहं तं वेद य इति १०.२७.३
नाहं वेद भ्रातृत्वं नो १०.१०८.१०
नि काव्या वेधसः १.७२.१
निक्रमणं निषदनं १.१६२.१४
निखातं चिद्यः पुरुसंभृतं ८.६६.४
नि गव्यता मनसा सेदुः ३.३१.९
नि गव्यवोऽनवो द्रुह्यवश्च ७.१८.१४
नि गावो गोष्ठे असदन् १.१९१.४
नि ग्रामासो अविक्षत १०.१२७.५
निचेतारो हि मरुतो ७.५७.२
नि तद्दधिषेऽवरं परं च १०.१२०.७
नितिक्ति यो वारणमन्त्रम् ६.४.५
नि तिग्ममभ्यंशुं ८.७२.२
नि तिग्मानि भ्राशयन् १०.११६.५
नित्यश्चाक्रन्यात्स्वपतिर्दमू १०.३१.४
नित्यस्तोत्रो वनस्पतिः ९.१२.७
नित्यं न सूनुं मधु बिभ्रतः १.१६६.३
नित्ये चिन्नु यं सदने १.१४८.३
नि त्वा दधे वर आ ३.२३.४
नि त्वा दधे वरेण्यं ३.२७.१०
नि त्वा नक्ष्य विश्पते ७.१५.७
नि त्वामग्ने मनुर्दधे १.३६.१९
नि त्वा यज्ञस्य साधनं १.४४.११
नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त १०.१२२.८
नि त्वा होतारमृत्विजं १.४५.७
नि दुरोणे अमृतो ३.१.१८
नि दुर्ग इन्द्र श्नथिह्यमित्रान् ७.२५.२
निधीयमानमपगूळ्हमप्सु १०.३२.६
नि नो होता वरेण्यः १.२६.२
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन् २.११.८
नि पस्त्यासु त्रित स्तभूयन् १०.४६.६
निमिषश्चिज्जवीयसा ८.७३.२
नि यद्यामाय वो गिरिः ८.७.५
नि यद्युवेथे नियुतः १.१८०.६
नि यद् वृणक्षि १.५४.५
नियुत्वन्तो ग्रामजितो ५.५४.८
नियुत्वान्वायवा गहि २.४१.२
नियुवाना नियुतः ७.९१.५
नि येन मुष्टिहत्यया १.८.२
नि ये रिणन्त्योजसा ५.५६.४
निरग्नयो रुरुचुर्निरु सूर्यः ८.३.२०
निराविध्यद्गिरिभ्य आ ८.७७.६
निराहावान्कृणोतन १०.१०१.५
निरिणानो वि धावति ९.१४.४
निरिन्द्र बृहतीभ्यो ८.३.१९
निरिन्द्र भूम्या अधि १.८०.४
निरु स्वसारमस्कृतोषसं १०.१२७.३
निर्मथितः सुधित ३.२३.१
निर्माया उ त्ये असुरा १०.१२४.५
निर्यत्पूतेव स्वधितिः शुचि ७.३.९
निर्यदीं बुध्नान्महिषस्य १.१४१.३
निर्युवाणो अशस्ती ४.४८.२
नि वर्तध्वं मानु गाता १०.१९.१
नि वेवेति पलितो ३.५५.९
नि वो यामाय मानुषो १.३७.७
नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं ९.१९.७
नि शुष्ण इन्द्र धर्णसिं ८.६.१४
नि शुष्ममिन्दवेषां ९.५२.४
निश्चर्मण ऋभवो १.११०.८
निश्चर्मणो गामरिणीत १.१६१.७
नि षसाद धृतव्रतो १.२५.१०
नि षीमिदत्र गुह्या ३.३८.३
नि षु ब्रह्म जनानां ८.५.१३
नि षु सीद गणपते १०.११२.९
नि षू नमातिमतिं १.१२९.५
निष्कं वा घा कृणवते ८.४७.१५
नि ष्वापया मिथूदृशा १.२९.३
निष्षिध्वरीरोषधीराप ८.५९.२
निष्षिध्वरीस्त ओषधीरुता ३.५५.२२
नि सर्वसेन इषुधीं १.३३.३
नि सामनामिषिरामिन्द्र ३.३०.९
नि होता होतृषदने २.९.१
नीचावया अभवद् १.३२.९
नीचा वर्तन्त उपरि १०.३४.९
नीचीनबारं वरुणः ५.८५.३
नीललोहितं भवति १०.८५.२८
नू अन्यत्रा चिदद्रिवः ८.२४.११
नू इत्था ते पूर्वथा च १.१३२.४
नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी ७.२७.५
नू इन्द्र शूर स्तवमान ७.१९.११
नू गृणानो गृणते ६.३९.५
नू च पुरा च सदनं १.९६.७
नू चित्स भ्रेषते जनो ७.२०.६
नू चित्सहोजा अमृतो १.५८.१
नू चिन्न इन्द्रो मघवा ७.२७.४
नू चिन्नू ते मन्यमानस्य ७.२२.८
नू त आभिरभिष्टिभिः ५.३८.५
नू ते पूर्वस्यावसो २.४.८
नूत्ना इदिन्द्र ते वयं ८.२१.७
नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठाः ७.७.७, ८.७
नू देवासो वरिवः ७.४८.४
नू न इद्धि वार्यमासा ५.१७.५
नू न इन्द्रावरुणा ६.६८.८
नू न एहि वार्यमग्ने ५.१६.५
नूनमर्च विहायसे ८.२३.२४
नू नव्यसे नवीयसे ९.९.८
नू नश्चित्रं पुरुवाजाभिरूती ६.१०.५
नू नस्त्वं रथिरो देव सोम ९.९७.४८
नूनं तदिन्द्र दद्धि ८.१३.५
नूनं न इन्द्रापराय ६.३३.५
नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रव ९.१०७.२
नूनं सा ते प्रति वरं २.११.२१,१५.१०
१६.९,१७.९,१८.९,१९.९,२०.९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नू नो अग्र ऊतये ५.१०.६
नू नो अग्नेऽवृकेभिः ६.४.८
नू नो गोमद्वीरवद्धेहि ७.७५.८
नू नो रयिमुप मास्व ९.९३.५
नू नो रयिं पुरुवीरं ४.४४.६
नू नो रयिं महामिन्दो ९.४०.३
नू नो रयिं रथ्यम् ६.४९.१५
नू नो रास्व सहस्रवत् ३.१३.७
नू म आ वाचमुप याहि ६.२१.११
नू मन्वान एषां ५.५२.१५
नू मर्तो दयते सनिष्यन् ७.१००.१
नू मित्रो वरुणो ७.६२.६, ६३.६
नू मे गिरो नासत्याश्विना ८.८५.९
नू मे ब्रह्माण्यग्न ७.१.२०, २५
नू मे हवमा शृणुतं ७.६७.१०, ६९.८
नू रोदसी अभिष्टुते ७.३९.७, ४०.७
नू रोदसी अहिना ४.५५.६
नू रोदसी बृहद्भिर्नो ४.५६.४
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणानः ४.१६.२१
१७.२१,१९.११,२०.११
२१.११,२२.११,२३.११,२४.११
नू ष्ठिरं मरुतो वीरवन्तं १.६४.१५
नू सद्मानं दिव्यं ६.५१.१२
नृचक्षसं त्वा वयं ९.८.९
नृचक्षसो अनिमिषन्तो १०.६३.४
नृचक्षसा एष दिवो १०.१३९.२
नृचक्षा रक्षः परि पश्य १०.८७.१०
नृणामु त्वा नृतमं ३.५१.४
नृधूतो अद्रिषुतो ९.७२.४
नृबाहुभ्यां चोदितो ९.७२.५
नृभिर्धूतः सुतो ८.२.२
नृभिर्यमानो हर्यतो ९.१०७.१६
नृवत्त इन्द्र नृतमाभिरूती ६.१९.१०
नृवद्दस्रा मनोयुजा ८.५.२
नृवद्वसो सदमिद्धेह्यस्मे ६.१.१२
नेतार ऊ षु णस्तिरो १०.१२६.६
नेमिं नमन्ति चक्षसा ८.९७.१२
नेशत्तमो दुधितं ४.१.१७
नेह भद्रं रक्षस्विने ८.४७.१२
नैतावदन्ये मरुतो ७.५७.३
नैतावदेना परो अन्यत् १०.३१.८
न्यक्रतून् ग्रथिनो ७.६.३
न्यक्रन्दयन्नुपयन्त १०.१०२.५
न्यग्निं जातवेदसं दधाता ५.२२.२
न्यग्निं जातवेदसं होत्रवाहं ५.२६.७
न्यग्ने नव्यसा वचः ८.३९.२
न्यग्वातोऽव वाति १०.६०.११
न्यघ्न्यस्य मूर्धनि १.३०.१९
न्युर्बुदस्य विष्टपं ८.३२.३
न्यस्मै देवी स्वधितिर्जिहीत ५.३२.१०
न्याविध्यदिलीबिशस्य १.३३.१२
न्यु प्रियो मनुषः ७.७३.२
न्यूञ्षु वाचं प्र महे १.५३.१

प

पञ्चेव चर्चरं जारं १०.१०६.७
पञ्च जना मम होत्रं १०.५३.५
पञ्च पदानि रुपो १०.१३.३
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं १.१६४.१२
पञ्चारे चक्रे परिवर्तमाने १.१६४.१३
पतङ्गमक्तमसुरस्य १०.१७७.१
पतङ्गो वाचं मनसा १०.१७७.२
पताति कुण्डृणाच्या १.२९.६
पतिर्भव वृत्रहन्त्सूनृतानां ३.३१.१८
पतिर्ह्यध्वराणां १.४४.९
पत्तो जगार प्रत्यञ्चं १०.२७.१३
पत्नीवन्तः सुता इमे ८.९३.२२
पत्नीव पूर्वहूतिं १.१२२.२
पथ एकः पीपाय ८.२९.६
पथस्पथः परिपतिं ६.४९.८
पदं देवस्य नमसा ६.१.४
पदं देवस्य मीळ्हुषो ८.१०२.१५
पदापणीँरराधसो ८.६४.२
पदेइव निहिते ३.५५.१५
पदेपदे मे जरिमा ५.४१.१५
पद्या वस्ते पुरुरूपाः ३.५५.१४
पनाय्यं तदश्विना ८.५७.३
पन्य आ दर्दिरच्छता ८.३२.१८
पन्य इदुप गायत ८.३२.१७
पन्यंपन्यमित्सोतारः ८.२.२५
पन्यांसं जातवेदसं ८.७४.३
पपृक्षेण्यमिन्द्र त्वे ह्योजः ५.३३.६
पप्राथ क्षां महि ६.१७.७
पयस्वतीरोषधयः १०.१७.१४
पर ऋणा सावीरध २.२८.९
परशुं चिद्धि तपति ३.५३.२२
परस्या अधि संवतो ८.७५.१५
परं मृत्यो अनु १०.१८.१
परः सो अस्तु तन्वा ७.१०४.११
पराकात्ताच्चिदद्रिवः ८.९२.२७
परा गावो यवसं कश्चिद् ८.४.१८
परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्र १.३३.५
परा णुदस्व मघवन्नमित्रान् ७.३२.२५
परा देहि शामुल्यं १०.८५.२९
पराद्य देवा वृजिनं १०.८७.१५
परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति ६.४७.१७
परा मे यन्ति धीतयो १.२५.१६
परायतीनामन्वेति पाथः १.११३.८
परायतीं मातरं ४.१८.३
परा याहि मघवन् ३.५३.५
परावतं नासत्या २.११६.९
परावतो ये दिधिषन्त १०.६३.१
परा वीरास एतन ५.६१.४
परा व्यक्तो अरुषो ९.७१.७
परा शुभ्रा अयासो १.१६७.४
परा शृणीहि तपसा १०.८७.१४
परा ह यत्स्थिरं १.३९.३
परा हिं मे विमन्यवः १.२५.४
परा हीन्द्र धावसि १०.८६.२
परि कोशं मधुश्चुतं ९.१०३.३
परिक्षिता पितरा १०.६५.८
परि चिन्मर्तो द्रविणं १०.३१.२
परि णः शर्मयन्त्या ९.४१.६
परि णेता मतीनां ९.१०३.४
परि णो अश्वमश्ववित् ९.६१.३
परि णो देववीतये ९.५४.४
परि णो याह्यस्मयुः ९.६४.१८
परि णो वृणजन्नघा ८.४७.५
परि णो हेती रुद्रस्य २.३३.१४
परि तृन्धि पणीनां ६.५३.५
परि ते जिग्युषो ९.१००.४
परि ते दूळभो ४.९.८
परि त्मना मितद्रुरेति ४.६.५
परि त्यं हर्यतं हरिं ९.९८.७
परि त्रिधातुरध्वरं ८.७२.९
परि त्रिविष्ट्यध्वरं ४.१५.२
परि त्वा गिर्वणो १.१०.१२
परि त्वाग्ने पुरं वयं १०.८७.२२
परि दिव्यानि मर्मृशत् ९.१४.८
परि दैवीरनु स्वधा ९.१०३.५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परि द्युक्षं सहसः ९.७१.४
परि द्युक्षः सनद्रयिः ९.५२.१
परि धामनि यानि ते ९.६६.३
परि पूषा पुरस्तात् ६.५४.१०
परि प्र धन्वेन्द्राय ९.१०९.१
परिप्रयन्तं वय्यं ९.६८.८
परि प्र सोम ते रसो ९.६७.१५
परि प्रासिष्यदत्कविः ९.१४.१
परि प्रियः कलशे ९.९६.९
परि प्रिया दिवः कविः ९.९.१
परि यत्कविः काव्या ९.९४.३
परि यत्काव्या कविः ९.७.४
परि यदिन्द्र रोदसी १.३३.९
परि यो रश्मिना दिवो ८.२५.१८
परि यो रोदसी उभे ९.१८.६
परि वाजपतिः कविः ४.१५.३
परि वाजे न वाजयुं ९.६३.१९
परि वाराण्यव्यया गोभिः ९.१०३.२
परि विश्वानि चेतसा ९.२०.३
परि विश्वानि सुधिताग्नेः ३.११.८
परिविष्टं जाहुषं विश्वतः १.११६.२०
परि वृक्तेव पतिविद्य १०.१०२.११
परि वो विश्वतो दध १०.१९.७
परिषद्यं ह्यरणस्य ७.४.७
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं ९.३९.२
परिष्कृतास इन्दवो योषेव ९.४६.२
परि ष्य सुवानो अक्षाः ९.९८.३
परि ष्य सुवानो अव्ययं ९.९८.२
परि सद्मेव पशुमान्ति ९.९२.६
परि सस्निर्न वाजयुः ९.१०३.६
परि सुवानश्चक्षसे ९.१०७.३
परि सुवानास इन्दवो ९.१०.४
परि सुवानो गिरिष्ठाः ९.१८.१
परि सुवानो हरिरंशुः ९.९२.१
परि सोम ऋतं बृहत् ९.५६.१
परि सोम प्र धन्वा ९.७५.५
परि स्पशो वरुणस्य ७.८७.३
परि हि ष्मा पुरहूतो ९.८७.६
परिह्वृतेदना जनो ८.४७.६
परीतो वायवे सुतं ९.६३.१०
परीतो षिञ्चता सुतं ९.१०७.१
परीमे गामनेषत १०.१५५.५
परीं घृणा चरति १.५२.६
परेयिवांसं प्रवतो १०.१४.१
परेहि विग्रमस्तृतं १.४.४
परो दिवा पर एना १०.८२.५
परो मात्रमृचीषमं ८.६८.६
परो मात्रया तन्वा ७.९९.१
परो यत्त्वं परम ५.३०.५
परो हि मर्त्यैरसि ६.४८.१९
पर्जन्यवाता वृषभा ६.४९.६
पर्जन्यवृद्धं महिषं ९.११३.३
पर्जन्यः पिता महिषस्य ९.८२.३
पर्जन्याय प्र गायत ७.१०२.१
पर्जन्यावाता वृषभा १०.६५.९
पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये ९.११०.१
पर्वतश्चिन्महि वृद्धो ५.६०.३
पर्शुर्ह नाम मानवी १०.८६.२३
पर्षि तोकं तनयं ६.४८.१०
पर्षि दीने गभीर ८.६७.११
पवते हर्यतो हरिरति ९.१०६.१३
पवते हर्यतो हरिर्गृणानो ९.६५.२५
पवन्ते वाजसातये ९.१३.३
पवमान ऋतं बृहत् ९.६६.२४
पवमान ऋतः कविः ९.६२.३०
पवमान धिया हितो ९.२५.२
पवमान नि तोशसे ९.६३.२३
पवमानमवस्यवो ९.१३.२
पवमान महि श्रवश्चित्रेभिः ९.१००.८
पवमान महि श्रवो गाम् ९.९.९
पवमान मह्यर्णो ९.८६.३४
पवमान रसस्तव ९.६१.१८
पवमान रुचारुचा ९.६५.२
पवमान विदा--दुष्टरम् ९.६३.११
पवमान विदा --सुश्रियं ९.४३.४
पवमान सुवीर्यं ९.११.९
पवमानस्य जङ्घ्नतो ९.६६.२५
पवमानस्य ते कवे ९.६६.१०
पवमानस्य ते रसो ९.६१.१७
पवमानस्य ते वयं ९.६१.४
पवमानस्य विश्ववित् ९.६४.७
पवमान स्वर्विदो ९.५९.४
पवमानः सुतो नृभिः ९.६२.१६
पवमानः सो अद्य नः ९.६७.२२
पवमाना असृक्षत पवित्रं ९.१०७.२५
पवमाना असृक्षत सोमाः ९.६३.२५
पवमाना दिवस्परि ९.६३.२७
पवमानास आशवः ९.६३.२६
पवमानास इन्दवः ९.६७.७
पवमानो अजीजनद् ९.६१.१६
पवमानो अति स्रिधो ९.६६.२२
पवमानो अभि स्पृधो ९.७.५
पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्यम् ९.८५.८
पवमानो असिष्यदद्रक्षांसि ९.४९.५
पवमानो रथीतमः ९.६६.२६
पवमानो व्यश्नवत् ९.६६.२७
पवस्व गोजिदश्वजित् ९.५९.१
पवस्व जनयन्निषो ९.६६.४
पवस्व दक्षसाधनो ९.२५.१
पवस्व देवमादनो ९.८४.१
पवस्व देववीतय इन्दो ९.१०६.७
पवस्व देववीरति ९.२.१
पवस्व देवायुषग् ९.६३.२२
पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय ९.१०८.१
पवस्व वाचो अग्रियः ९.६२.२५
पवस्व वाजसातमः ९.१००.६
पवस्व वाजसातयेऽभि ९.१०७.२३
पवस्व वाजसातये विप्र २.४३.६
पवस्व विश्वचर्षणे ९.६६.१
पवस्व वृत्रहन्तमोक्थेभिः ९.२४.६
पवस्व वृष्टिमा सु नो ९.४९.१
पवस्व सोम क्रतुविन्न ९.८६.४८
पवस्व सोम क्रत्वे दक्षाय ९.१०९.१०
पवस्व सोम दिव्येषु ९.८६.२२
पवस्व सोम देववीतये ९.७०.९
पवस्व सोम द्युम्नी ९.१०९.७
पवस्व सोम मधुमाँ ९.९६.१३
पवस्व सोम मन्दयन् ९.६७.१६
पवस्व सोम महान्त्समुद्रः ९.१०९.४
पवस्वाद्भ्यो अदाभ्यः ५.५९.२
पवस्वेन्दो पवमानो ९.९६.२१
पवस्वेन्दो वृषा सुतः ९.६१.२८
पवित्रं ते विततं ९.८३.१
पवित्रवन्तः परि वाचं ९.७३.३
पवित्रेभिः पवमानो ९.९७.२४
पवीतारः पुनीतन ९.४.४
पशुं नः सोम रक्षसि १०.२५.६
पशून्न चित्रा सुभगा १.९२.१२
पश्चात्पुरस्तादधरात् १०.८७.२१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चेदमन्यदभवत् १०.१४९.३
पश्यन्नन्यस्या अतिथिं १०.१२४.३
पश्वा न तायुं गुहा १.६५.१
पश्वा यत्पश्चा वियुता १०.६१.१२
पाकत्रा स्थन देवा ८.१८.१५
पाकः पृच्छामि मनसा १.१६४.५
पातं नो रुद्रा पायुभिः ५.७०.३
पाता वृत्रहा सुतं ८.२.२६
पाता सुतमिन्द्रो ---प्रणेनीः ६.२३.३
पाता सुतमिन्द्रो ---हन्ता ६.४४.१५
पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं ३.५.५
पान्तमा वो अन्धसः ८.९२.१
पान्ति मित्रावरुणाववद्यात् १.१६७.८
पारावतस्य रातिषु ८.३४.१८
पार्षद्वाणः प्रस्कण्वं ८.५१.२
पावकया यश्चितयन्त्या ६.१५.५
पावकवर्चाः शुक्रवर्चाः १०.१४०.२
पावकशोचे तव हि क्षयं ३.२.६
पावका नः सरस्वती १.३.१०
पावमानीर्यो अध्येति ९.६७.३२
पावीरवी कन्या चित्रायुः ६.४९.७
पावीरवी तन्यतुरेकपादजो १०.६५.१३
पाहि गायान्धसो मदे ८.३३.४
पाहि न इन्द्र सुष्टुत १.१२९.११
पाहि नो अग्न एकया ८.६०.९
पाहि नो अग्ने पायुभि १.१८९.४
पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि १.३६.१५
पाहि नो अग्ने रक्षसो ७.१.१३
पाहि विश्वस्माद्रक्षसो ८.६०.१०
पिता यज्ञानामसुरो ३.३.४
पिता यस्त्वां दुहितरं १०.६१.७
पितुभृतो न तन्तुमित् १०.१७२.३
पितुर्न पुत्रः सुभृतो ८.१९.२७
पितुर्न पुत्राः क्रतुं १.६८.५
पितुर्मातुरध्या ये ९.७३.५
पितुश्च गर्भं जनितुश्च ३.१.१०
पितुश्चिदूधर्जनुषा ३.१.९
पितुं नु स्तोषं महो १.१८७.१
पितुः प्रत्नस्य जन्मना १.८७.५
पितेव पुत्रमबिभः १०.६९.१०
पित्रे चिच्चक्रुः सदनं ३.३१.१२
पिन्वन्त्यपो मरुतः सुदान १.६४.६
पिपर्तु नो अदिती राजपुत्रा २.२७.७
पिपर्तु मा तदृतस्य १०.३५.८
पिपीळे अंशुर्मद्यो न ४.२२.८
पिप्रीहि देवाँ उशतो १०.२.१
पिबतं घर्मं मधुमन्तम् ८.८७.२
पिबतं च तृप्णुतं च ८.३५.१०
पिबतं सोमं मधुमन्तं ८.८७.४
पिबन्ति मित्रो अर्यमा ८.९४.५
पिबन्त्यस्य विश्वे देवासो ९.१०९.१५
पिब स्वधैनवानां ८.३२.२०
पिबा त्वस्य गिर्वणः ८.१.२६
पिबापिबेदिन्द्र ---मन्दन्तु २.११.११
पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा १०.२२.१५
पिबा वर्धस्व तव घा सुतासः ३.३६.३
पिबा सुतस्य रसिनो ८.३.१
पिबा सोममभि यमुग्र ६.१७.१
पिबा सोममिन्द्र मन्दतु ७.२२.१
पिबा सोममिन्द्र सुवानं १.१३०.२
पिबा सोमं मदाय कं ८.९५.३
पिबा सोमं महत १०.११६.१
पिबेदिन्द्र मरुत्सखा ८.७६.९
पिशङ्गभृष्टिमम्भृणं १.१३३.५
पिशङ्गरूपः सुभरो २.३.९
पीपाय धेनुरदितिः १.१५३.३
पीपाय स श्रवसा मर्त्येषु ६.१०.३
पीपिवांसं सरस्वत ७.९६.६
पीवानं मेषमपचन्त १०.२७.१७
पीवोअन्नाँ रयिवृधः ७.९१.३
पीवोअश्वाः शुचद्रथा ४.३७.४
पुत्रमिव पितरौ १०.१३१.५
पुत्रिणा ता कुमारिणा ८.३१.८
पुत्रो न जातो रण्वो १.६९.३
पुनन्तु ता देवजनाः ९.६७.२७
पुनरेता नि वर्तन्ताम् १०.१९.३
पुनरेना नि वर्तय १०.१९.२
पुनरेहि वृषाकपे १०.८६.२१
पुनर्दाय ब्रह्मजायां १०.१०९.७
पुनर्नः पितरो मनो १०.५७.५
पुनर्नो असुं पृथिवी १०.५९.७
पुनर्ये चक्रुः पितरा युवाना ४.३३.३
पुनर्वै देवा अददुः १०.१०९.६
पुनः पत्नीमग्निरदाद् १०.८५.३९
पुनः पुनर्जायमाना १.९२.१०
पुनः समव्यद्विततं २.३८.४
पुनाता दक्षसाधनं ९.१०४.३
पुनाति ते परिस्रुतं ९.१.६
पुनान इन्दवा ---वसूनि ९.१००.२
पुनान इन्दवा ---वृषन् ९.४०.६
पुनान इन्दवेषां पुरुहूत ९.६४.२७
पुनानश्चमू जनयन् ९.१०७.१८
पुनानः कलशेष्वा ९.८.६
पुनानः सोम जागृविः ९.१०७.६
पुनानः सोम धारयापो ९.१०७.४
पुनानः सोम धारयेन्दो ९.६३.२८
पुनानासश्चमूषदो ९.८.२
पुनाने तन्वा मिथः ४.५६.६
पुनानो अक्रमीदभि ९.४०.१
पुनानो देववीतय ९.६४.१५
पुनानो याति हर्यतः ९.४३.३
पुनानो रूपे अव्यये ९.१६.६
पुनानो वरिवस्कृधि ९.६४.१४
पुनीषे वामरक्षसं ७.८५.१
पुमाँ एनं तनुत उत् १०.१३०.२
पुरंदरा शिक्षतं १.१०९.८
पुरं न धृष्णवा रुज ८.७३.१८
पुरः सद्य इत्थाधिये ९.६१.२
पुराग्ने दुरितेभ्यः ८.४४.३०
पुराणमोकः सख्यम् ३.५८.६
पुराणा वां वीर्या १०.३९.५
पुराणाँ अनुवेनन्तं १०.१३५.२
पुरा यत्सूरस्तमसो १.१२१.१०
पुरा संबाधादभ्यावृतस्व २.१६.८
पुरां भिन्दुर्युवा कविः १.११.४
पुरीष्यासो अग्नयः ३.२२.४
पुरुकुत्सानी हि वामदाशत् ४.४२.९
पुरुत्रा चिद्धि वां नरा ८.५.१६
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि ८.११.८,४३.२१
पुरु त्वा दाश्वान्वोचे १.१५०.१
पुरुद्रप्सा अञ्जिमन्तः ५.५७.५
पुरुप्रिया ण ऊतये ८.५.४
पुरुमन्द्रा पुरूवसू ८.८.१२
पुरुष एवेदं सर्वं १०.९०.२
पुरुष्टुतस्य धामभिः ३.३७.४
पुरु हि वां पुरुभुजा ६.६३.८
पुरुहूतं पुरुष्टुतं ८.९२.२
पुरुहूतो यः पुरुगूर्तः ६.३४.२
पुरूणि दस्मो नि रिणाति १.१४८.४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरूणि हि त्वा १०.८९.१६
पुरूण्यग्रे पुरुधा त्वाया ६.१.१३
पुरूतमं पुरूणामीशानं १.५.२
पुरूतमं पुरूणां स्तोतृणां ६.४५.२९
पुरू यत्त इन्द्र सन्त्युक्था ५.३३.४
पुरूरवो मा मृथा १०.९५.१५
पुरूरुणा चिद्ध्यस्ति ५.७०.१
पुरू वर्पांस्यश्विना दधाना १.११७.९
पुरोगा अग्निर्देवानां १.१८८.११
पुरोजिती वो अन्धसः ९.१०१.१
पुरोळा अग्ने पचतः ३.२८.२
पुरोळा इत्तुर्वशो ७.१८.६
पुरोळाशं च नो घसो ३.५२.३
४.३२.१६
पुरोळाशं नो अन्धस ८.७८.१
पुरोळासं पचत्यं ३.५२.२
पुरोळाशं यो अस्मै सोमं ८.३१.२
पुरोळाशं सनश्रुत ३.५२.४
पुरो वो मन्द्रं दिव्यं ६.१०.१
पुष्टिर्न रण्वा क्षितिर्न १.६५.३
पुष्यात्क्षेमे अभियोगे ५.३७.५
पूर्वापरं चरतो १०.८५.१८
पूर्वापुषं सुहवं पुरुस्पृहं ८.२२.२
पूर्वामनु प्रदिशं ९.१११.३
पूर्वामनु प्रयतिम् १.१२६.५
पूर्वा विश्वस्माद् भुवनाद् १.१२३.२
पूर्वीभिर्हि ददाशिम १.८६.६
पूर्वीरस्य निष्षिधो ३.५१.५
पूर्वीरहं शरदः शश्रमाणा १.१७९.१
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो १.११.३
पूर्वीरुषसः शरदश्च ४.१९.८
पूर्वीश्चिद्धि त्वे तुविकूर्मिन् ८.६६.१२
पूर्वीष्ट इन्द्रोपमातयः ८.४०.९
पूर्वे अर्धे रजसो १.१२४.५
पूर्वो देवा भवतु १.९४.८
पूर्व्य होतरस्य नो १.२६.५
पूषणं न्वजाश्वं ६.५५.४
पूषण्वते ते चकृमा ३.५२.७
पूषण्वते मरुत्वते १.१४२.१२
पूषन्तव व्रते वयं ६.५४.९
पूषन्ननु प्र गा इहि ६.५४.६
पूषा गा अन्वेतु नः ६.५४.५
पूषा त्वेतश्च्यावयतु १०.१७.३
पूषा त्वेतो नयतु १०.८५.२६
पूषा राजानमाघृणिः १.२३.१४
पूषा विष्णुर्हवनं मे ८.५४.४
पूषा सुबन्धुर्दिव ६.५८.४
पूषेमा आशा अनु वेद १०.१७.५
पूष्णश्चक्रं न रिष्यति ६.५४.३
पृक्षप्रयजो द्रविणः ३.७.१०
पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य ६.८.१
पृक्षे ता विश्वा भुवना २.३४.४
पृक्षो वपुः पितुमान् १.१४१.२
पृच्छामि त्वा परमन्तं १.१६४.३४
पृच्छें तदेनो वरुण ७.८६.३
पृणीयादिन्नाधमानाय १०.११७.५
पृथक्प्रायन्प्रथमा १०.४४.६
पृथुपाजा अमर्त्यो ३.२७.५
पृथू करस्ना बहुला ६.१९.३
पृथू रथो दक्षिणाया १.१२३.१
पृदाकुसानुर्यजतो गवेषणः ८.१७.१५
पृषदश्वा मरुतः पृश्नि १.८९.७
पृषध्रे मेध्ये मातरिश्वनि ८.५२.२
पृष्टो दिवि धाय्यग्निः ७.५.२
पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः १.९८.२
पौरं चिद्ध्युदप्रुतं ५.७४.४
पौरो अश्वस्य पुरुकृद् ८.६१.६
प्र ऋभुभ्यो दूतमिव ४.३३.१
प्र कविर्देववीतये ९.२०.१
प्र कारवो मनना ३.६.१
प्र काव्यमुशनेव ९.९७.७
प्र कृतान्यृजीषिणः ८.३२.१
प्र कृष्टिहेव शूष एति ९.७१.२
प्र केतुना बृहता यात्यग्निः १०.८.१
प्र क्षोदसा धायसा ७.९५.१
प्र गायताभ्यर्चाम ९.९७.४
प्र गायत्रेण गायत ९.६०.१
प्र घा न्वस्य महतो २.१५.१
प्र चक्रे सहसा सहो ८.४.५
प्र चर्षणिभ्यः पृतना १.१०९.६
प्र चित्रमर्कं गृणते ६.६६.९
प्रचेतसं त्वा कवे ८.१०२.१८
प्र च्यवानाच्युजुरुषो ५.७४.५
प्रजानन्नग्ने तव योनिं १०.९१.४
प्रजापतिर्मह्यमेता १०.१६९.४
प्रजापते न त्वदेता १०.१२१.१०
प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त २.१३.४
प्रजामृतस्य पिप्रतः ८.६.२
प्रजावता वचसा १.७६.४
प्रजावतीः सूयवसं ६.२८.७
प्रजा ह तिस्रो अत्यायम् ८.१०१.१४
प्र जिह्वया भरते वेपो १०.४६.८
प्र ण इन्दो महे तन ९.४४.१
प्र ण इन्दो महे रण ९.६६.१३
प्रणीतिभिष्टे हर्यश्व १०.१०४.५
प्र णु त्यं विप्रमध्वरेषु ५.१.७
प्रणेतारं वस्यो अच्छा ८.१६.१०
प्र णो देवी सरस्वती ६.६१.४
प्र णो धन्वन्त्विन्दवो ९.७९.२
प्र त आशवः पवमान ९.८६.१
प्र त आश्विनीः पवमान ९.८६.४
प्र त इन्द्र पूर्व्याणि १०.११२.८
प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट ७.१००.५
प्र तत्ते अद्या करणम् ६.१८.१३
प्र तद्दुःशीमे पृथवाने १०.९३.१४
प्र तद् विष्णुः स्तवते १.१५४.२
प्र तद्वोचेयं भव्याये १.१२९.६
प्र तमिन्द्र नशीमहि ८.६.९
प्र तव्यसीं नव्यसीं १.१४३.१
प्र तव्यसो नमउक्तिं तुरस्य ५.४३.९
प्र तं विविक्मि १.१६७.७
प्र तार्यायुः प्रतरं १०.५९.१
प्र ताँ अग्निर्बभसत् ४.५.४
प्रति केतवः प्रथमा अदृश्रन् ७.७८.१
प्रति घोराणामेतानाम् १.१६९.७
प्रति चक्ष्व वि चक्ष्व ७.१०४.२५
प्रति ते दस्यवे वृक ८.५६.१
प्रति त्यं चारुमध्वरं १.१९.१
प्रति त्वा दुहितर्दिवः ७.८१.३
प्रति त्वाद्य सुमनसो ७.७८.५
प्रति त्वा शवसी वदत् ८.४५.५
प्रति त्वा स्तौमैरीळते ७.७६.६
प्रति द्युतानामरुषासो ७.७५.६
प्रति धाना भरत ३.५२.८
प्रति नः स्तोमं त्वष्टा ७.३४.२१
प्रति प्रयाणमसुरस्य ५.४९.२
प्रति प्र याहीन्द्र मीळ्हुषः १.१६९.६
प्रति प्राशव्याँ इतः ८.३१.६
प्रति प्रियतमं रथं ५.७५.१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति ब्रवाणि वर्तयते १०.९५.१३
प्रति भद्रा अदृक्षत ४.५२.५
प्रति मे स्तोममदिति ५.४२.२
प्रति यत्स्या नीथा दर्शि १.१०४.५
प्रति यदापो अदृश्रं १०.३०.१३
प्रति वा एना नमसाहम् १.१७१.१
प्रति वां रथं नृपती ७.६७.१
प्रति वां सूर उदिते मित्रं ७.६६.७
प्रति वां सूर उदिते सूक्तैः ७.६५.१
प्रति वो वृषदञ्जयो ८.२०.९
प्रति श्रुताय वो धृषत् ८.३२.४
प्रति षीमग्निर्जरते समिद्धः ७.७८.२
प्रति ष्टोभन्ति सिन्धवः १.१६८.८
प्रति ष्या सूनरी जनी ४.५२.१
प्रति स्तोमेभिरुषसं वसिष्ठाः ७.८०.१
प्रति स्पशो वि सृज ४.४.३
प्रति स्मरेथां तुजयद्भिरेवैः ७.१०४.७
प्रतीचीने मामहनी १०.१८.१४
प्र तु द्रव परि कोशं ९.८७.१
प्र तुविद्युम्नस्य स्थविरस्य ६.१८.१२
प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो वरं ७.१.४
प्र ते अग्ने हविष्मतीं ३.१९.२
प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः ३.५१.१२
प्र ते अस्या उषसः १०.२९.२
प्र ते दिवो न वृष्टयो ९.६२.२८
प्र ते धारा अत्यण्वानि ९.८६.४७
प्र ते धारा असश्चतो ९.५७.१
प्र ते धारा मधुमतीः ९.९७.३१
प्र ते नावं न समने २.१६.७
प्र ते पूर्वाणि करणानि विप्रा ४.१९.१०
प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं ५.३१.६
प्र ते बभ्रू विचक्षण ४.३२.२२
प्र ते मदासो मदिरास ९.८६.२
प्र ते महे विदथे शंसिषं १०.९६.१
प्र ते यक्षि प्र त इयर्मि १०.४.१
प्र ते रथं मिथूकृतं १०.१०२.१
प्र तेऽरदद्वरुणो यातवे १०.७५.२
प्र ते वोचाम वीर्या ४.३२.१०
प्र ते सोतार ओण्योः ९.१६.१
प्रत्नवज्जनया गिरः ८.१३.७
प्रत्नं रयीणां युजं ६.४५.१९
प्रत्नं होतारमीड्यं ८.४४.७
प्रत्नान्मानादध्या ये ९.७३.६
प्रत्नो हि कमीड्यो अध्वरेषु ८.११.१०
प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानो ३.५.१
प्रत्यग्निरुषसामग्रम् ४.१३.१
प्रत्यग्निरुषसो जातवेदा ४.१४.१
प्रत्यग्ने मिथुना दह १०.८७.२४
प्रत्यग्ने हरसा हरः १०.८७.२५
प्रत्यङ् देवानां विशः १.५०.५
प्रत्यञ्चमर्कमनयन् १०.१५७.५
प्रत्यर्चीरुशदस्या १.९२.५
प्रत्यर्धिर्यज्ञानां १०.२६.५
प्रत्यस्मै पिपीषते ६.४२.१
प्रत्यस्य श्रेणयो ददृश्रे १०.१४२.५
प्रत्यु अदर्श्यायती ७.८१.१
प्रत्वक्षसः प्रतवसो १.८७.१
प्र त्वा दूतं वृणीमहे १.३६.३
प्र त्वा नमोभिरिन्दव ९.१६.५
प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य १०.८५.२४
प्रथमभाजं यशसं ६.४९.९
प्रथमं जातवेदसमग्निं ८.२३.२२
प्रथमा हि सुवाचसा १.१८८.७
प्रथश्च यस्य सप्रथश्च १०.१८१.१
प्रथिष्ट यस्य वीरकर्म १०.६१.५
प्रथिष्ट यामन्पृथिवी ५.५८.७
प्रदक्षिणिदभि गृणन्ति २.४३.१
प्र दानुदो दिव्यो दानु ९.९७.२३
प्र दीधितिर्विश्ववारा ३.४.३
प्र देवत्रा ब्रह्मणे १०.३०.१
प्र देवमच्छा मधुमन्त ९.६८.१
प्र देवं देववीतये ६.१६.४१
प्र देवं देव्या धियां १०.१७६.२
प्र दैवोदासो अग्निः ८.१०३.२
प्र द्यावा यज्ञैः पृथिवी ऋता १.१५९.१
प्र द्यावा यज्ञैः पृथिवी नमो ७.५३.१
प्र द्युम्नाय प्र शवसे ८.९.२०
प्र धन्वा सोम जागृविः ९.१०६.४
प्र धारा अस्य शुष्मिणो ९.३०.१
प्र धारा मध्वो अग्रियो ९.७.२
प्र नव्यसा सहसः सूनुम् ६.६.१
प्र नः पूषा चरथं १०.९२.१३
प्र निम्नेनेव सिन्धवो ९.१७.१
प्र नु यदेषां महिना १.१८६.९
प्र नु वयं सुते या ५.३०.३
प्र नु वोचा सुतेषु वां ६.५९.१
प्र नूनं जातवेदसं १०.१८८.१
प्र नूनं जायतामयं १०.६२.८
प्र नूनं धावता पृथक् ८.१००.७
प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिः १.४०.५
प्र नू महित्वं वृषभस्य १.५९.६
प्र नू स मर्तः शवसा १.६४.१३
प्र नेमस्मिन्ददृशे १०.४८.१०
प्र नो यच्छत्वर्यमा १०.१४१.२
प्रपथे पथामजनिष्ट १०.१७.६
प्र पर्वतानामुशती ३.३३.१
प्र पवमान धन्वसि ९.२४.३
प्र पस्त्यामदितिं सिन्धुम् ४.५५.३
प्र पीपय वृषभ जिन्व ३.१५.६
प्र पुनानस्य चेतसा ९.१६.४
प्र पुनानाय वेधसे ९.१०३.१
प्र पूतास्तिग्मशोचिषे १.७९.१०
प्र पूर्वजे पितरा नव्यसीभिः ७.५३.२
प्र पूषणं वृणीमहे ८.४.१५
प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व ९.६७.२८
प्रप्र क्षयाय पन्यसे ९.९.२
प्रप्र पूष्णस्तुविजातस्य १.१३८.१
प्र प्र वस्त्रिष्टुभं ८.६९.१
प्रप्रायमग्निर्भरतस्य ७.८.४
प्रप्रा वो अस्मे १.१२९.८
प्र बभ्रवे वृषभाय २.३३.८
प्र बाहवा सिसृतं ७.६२.५
प्र बुन्ध्या व ईरते ७.५६.१४
प्र बोधयोषः पृणतो १.१२४.१०
प्र बोधयोषो अश्विना ८.९.१७
प्र ब्रह्माणि नभाकवद् ८.४०.५
प्र ब्रह्माणो अङ्गिरसो ७.४२.१
प्र ब्रह्मैतु सदनादृतस्य ७.३६.१
प्रभङ्गं दुर्मतीनां ८.४६.१९
प्रभङ्गी शूरो मघवा ८.६१.१८
प्रभर्ता रथं गव्यन्त ८.२.३५
प्र भूजर्यन्तं महाँ १०.४६.५
प्र भ्रातृत्वं सुदानवो ८.८३.८
प्र मन्दिने पितुमदर्चता १.१०१.१
प्र मंहिष्ठाय गायत ८.१०३.८
प्र मंहिष्ठाय बृहते १.५७.१
प्र मन्महे शवसानाय १.६२.१
प्र मातुः प्रतरं गुह्यं १०.७९.३
प्र मात्राभी रिरिचे ३.४६.३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र मा युयुज्रे प्रयुजो १०.३३.१
प्र मित्रयोर्वरुणयो ७.६६.१
प्र मित्राय प्रार्यम्णे ८.१०१.५
प्र मे नमी साप्य १०.४८.९
प्र मे पन्था देवयाना ७.७६.२
प्र मे विविक्वाँ अविदन् ३.५७.१
प्र य आरुः शितिपृष्ठस्य ३.७.१
प्र यज्ञ एतु हेत्वो ७.४३.२
प्र यज्ञं एत्वानुषक् ५.२६.८
प्र यज्यवो मरुतो ५.५५.१
प्र यत्ते अग्ने सूरयो १.९७.४
प्र यत्पितुः परमान् १.१४१.४
प्र यत्सिन्धवः प्रसवं ३.३६.६
प्र यदग्नेः सहस्वतो १.९७.५
प्र यदित्था परावतः १.३९.१
प्र यदित्था महिना १.१७३.६
प्र यद्धन्दिष्ठ एषां १.९७.३
प्र यद्रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं १.८५.५
प्र यद्वित्स्रिष्टुभमिषं ८.७.१
प्र यद्वहध्वे मरुतः १०.७७.६
प्र यद्वहेथे महिना १.१८०.९
प्र यद्वां मित्रावरुणा ६.६७.९
प्र यन्तमित्परि जारं १.१५२.४
प्र यन्ति यज्ञं विपयन्ति ७.२१.२
प्र यन्तु वाजास्तविषीभिः ३.२६.४
प्र यमन्तर्वृषसवासो १०.४२.८
प्र यं राये निनीषसि ८.१०३.४
प्र या घोषे भृगवाणे १.१२०.५
प्रयाजान्मे अनुयाजाँश्च १०.५१.८
प्र या जिगाति खर्गलेव ७.१०४.१७
प्र यात शीममाशुभिः १.३७.१४
प्र याभिर्यासि दाश्वांसम् ७.९२.३
प्र या महिम्ना महिमासु ६.६१.१३
प्र याः सिस्रते सूर्यस्य १०.३५.५
प्र युजो वाचो अग्रियो ९.७.३
प्र युञ्जती दिव एति ५.४७.१
प्र ये गावो न भूर्णयः ९.४१.१
प्र ये गृहादममदुस्त्वाया ७.१८.२१
प्र ये जाता महिना ५.८७.२
प्र ये दिवः पृथिव्या १०.७७.३
प्र ये दिवो बृहतः ५.८७.३
प्र ये धामानि पूर्व्याण्यर्चान् ४.५५.२
प्र ये मित्रं प्रार्यमणं १०.८९.९
प्र ये मे बन्ध्वेषे ५.५२.१६
प्र ये ययुरवृकांसो रथाइव ७.७४.६
प्र ये वसुभ्य ईवदा ५.४९.५
प्र ये शुम्भन्ते जनयो १.८५.१
प्र यो ननक्षे अभ्योजसा ८.५१.८
प्र यो वां मित्रावरुणाजिरो ८.१०१.३
प्र राजा वाचं जनयन् ९.७८.१
प्र रुद्रेण ययिना यन्ति १०.९२.५
प्र रेभ एत्यति वारं ९.८६.३१
प्र व इन्द्राय बृहते ८.८९.३
प्र व इन्द्राय मादनं ७.३१.१
प्र व उग्राय निष्टुरे ८.३२.२७
प्र व एको मिमय २.२९.५
प्र व एते सुयुजो ५.४४.४
प्रवता हि क्रतूनां ४.३१.५
प्रवत्ते अग्ने जनिमा १०.१४२.२
प्रवत्वतीयं पृथिवी ५.५४.९
प्रवद्यामना सुवृता १.११८.३
प्र वर्तय दिवो अश्मानमिन्द्र ७.१०४.१९
प्र वः पान्तमन्धसो १.१५५.१
प्र वः पान्तं रघुमन्यवो १.१२२.१
प्र वः शर्धाय घृष्वये १.३७.४
प्र वः शंसाम्यद्रुहः ८.२७.१५
प्र वः शुक्राय भानवे ७.४.१
प्र वः सखायो अग्नये ६.१६.२२
प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय २.१६.१
प्र वः स्पळक्रन्त्सुविताय ५.५९.१
प्र वाचमिन्दुरिष्यति ९.१२.६
प्र वाच्यं वचसः ४.५.८
प्र वाच्यं शश्वधा वीर्यं तत् ३.३३.७
प्र वाजमिन्दुरिष्यति ९.३५.४
प्र वाज्यक्षाः सहस्ररेता ९.१०९.१७
प्र वाताइव दोधत १०.११९.२
प्र वाता वान्ति पतयन्ति ५.८३.४
प्र वामन्धांसि मद्यान्यस्थुः ७.६८.२
प्र वामर्चन्त्युक्थिनो ३.१२.५
प्र वामवोचमश्विना ४.४५.७
प्र वामश्नोतु सुष्टुतिः १.१७.९
प्र वायुमच्छा बृहती ६.४९.४
प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषां ७.३९.२
प्र वां दंसांस्यश्विना वोचं १.११६.२५
प्र वां निचेरुः कुकुहो वशां १.१८१.५
प्र वां महि द्यवि ४.५६.५
प्र वां रथो मनोजवा ७.६८.३
प्र वां शरद्वान्वृषभो १.१८१.६
प्र वां स मित्रावरुणावृतावा ७.६१.२
प्र वां स्तोमाः सुवृक्तयो ८.८.२२
प्र विश्वसामन् ५.२२.१
प्र विष्णवे शूषमेतु १.१५४.३
प्र वीरमुग्रं विविचिं ८.५०.६
प्र वीरया शुचयो दद्रिरे ७.९०.१
प्र वीराय प्र तवसे ६.४९.१२
प्रवृण्वन्तो अभियुजः ९.२१.२
प्र वेधसे कवये वेद्याय ५.१५.१
प्र वेपयन्ति पर्वतान् १.३९.५
प्र वो ग्रावाणः सविता १०.१७५.१
प्र वोऽच्छा रिरिचे देवयुः १०.३२.५
प्र वो दैवं चित्सहसानमग्निं ७.७.१
प्र वो देवायाग्नये ३.१३.१
प्र वो धियो मन्द्रयुवो ९.८६.१७
प्र वो भ्रियन्त इन्दवो १.१४.४
प्र वो मरुतस्तविषा ५.५४.२
प्र वो महीमरमतिं कृणुध्वं ७.३६.८
प्र वो महे मतयो ५.८७.१
प्र वो महे मन्दमानायान्धसः १०.५०.१
प्र वो महे महि नमो १.६२.२
प्र वो महे महिवृधे भरध्वं ७.३१.१०
प्र वो महे सहसा १.१२७.१०
प्र वो मित्राय गायत ५.६८.१
प्र वो यज्ञेषु देवयन्तो अर्चन् ७.४३.१
प्र वो यह्वं पुरूणां १.३६.१
प्र वो रयिं युक्ताश्वं भरध्वं ५.४१.५
प्र वो वाजा अभिद्यवो ३.२७.१
प्र वो वायुं रथयुजं कृणुध्वं ५.४१.६
प्र वो वायुं रथयुजं पुरंधिं १०.६४.७
प्र शन्तमा वरुणं ५.४२.१
प्र शर्ध आर्त प्रथमं ४.१.१२
प्र शर्धाय मारुताय ५.५४.१
प्रशंसमानो अतिथिर्न ८.१९.८
प्र शंसा गोष्वघ्न्यं १.३७.५
प्र शुक्रासो वयोजुवो ९.६५.२६
प्र शुक्रैतु देवी मनीषा ७.३४.१
प्र शुन्ध्युवं वरुणाय ७.८८.१
प्र शोशुचत्या उषसो १०.८९.१२
प्र श्यावाश्व धृष्णुया ५.५२.१
प्र श्येनो न मदिरं ६.२०.६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र सक्षणो दिव्यः ५.४१.४
प्र स क्षयं तिरते ८.२७.१६
प्र सद्यो अग्ने अत्येष्यन्यान् ५.१.९
प्र सप्तगुमृतधीतिं १०.४७.६
प्र सप्तवध्रिराशसा ८.७३.९
प्र सप्त होता सनकादरोचत् ३.२९.१४
प्र स मित्र मर्तो अस्तु ३.५९.२
प्र सम्राजं चर्षणीनां ८.१६.१
प्र सम्राजे बृहते मन्म नु ६.६८.९
प्र सम्राजे बृहदर्चा गभीरं ५.८५.१
प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्तिं ७.६.१
प्रसवे त उदीरते ९.५०.२
प्र ससाहिषे पुरुहूत १०.१८०.१
प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय ७.५८.१
प्र सा क्षितिरसुर १.१५१.४
प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोनां ७.५८.६
प्र सीमादित्यो असृजत् २.२८.४
प्र सु ग्मन्ता धियसानस्य १०.३२.१
प्र सु ज्येष्ठं निचिराभ्यां १.१३६.१
प्र सुन्वानस्यान्धसो ९.१०१.१३
प्र सुमेधा गातुवित् ९.९२.३
प्र सु व आपो महिमानं १०.७५.१
प्र सुवान इन्दुरक्षाः ९.६६.२८
प्र सुवानो अक्षाः सहस्र ९.१०९.१६
प्र सुवानो धारया ९.३४.१
प्र सु विश्वान्रक्षसो १.७६.३
प्र सु श्रुतं सुराधसं ८.५०.१
प्र सु ष विभ्यो मरुतो ४.२६.४
प्र सुष्टुतिः स्तन्यन्तं ५.४२.१४
प्र सु स्तोमं भरत ८.१००.३
प्र सू त इन्द्र प्रवता ३.३०.६
प्रसूतो भक्षमकरं १०.१६७.४
प्र सू न एत्वध्वरो ८.२७.३
प्र सूनव ऋभूणां १०.१७६.१
प्र सू महे सुशरणाय ५.४२.१३
प्र सेनानीः शूरो अग्रे ९.९६.१
प्र सो अग्ने तवोतिभिः ८.१९.३०
प्र सोता जीरो अध्वरेषु ७.९२.२
प्र सोम देववीतये ८.१०७.१२
प्र सोम मधुमत्तमो ९.६३.१६
प्र सोम याहि धारया ९.६६.७
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा ९.१०९.१८
प्र सोमस्य पवमानस्योर्मयः ९.८१.१
प्र सोमाय व्यश्ववत् ९.६५.७
प्र सोमासः स्वाध्यः ९.३१.१
प्र सोमासो अधन्विषुः ९.२४.१
प्र सोमासो मदच्युतः ९.३२.१
प्र सोमासो विपश्चितो ९.३३.१
प्र सोमो अति धारया ९.३०.४
प्र स्कम्भदेष्णा अनवभ्र १.१६६.७
प्रस्तुतिर्वां धाम १.१५३.२
प्रस्तोक इन्नु राधसस्त ६.४७.२२
प्र स्तोषदुप गासिषत् ८.८१.५
प्र स्वानासो रथा ९.१०.१
प्र हंसासस्तृपलं मन्युं ९.९७.८
प्र हि क्रतुं वृहथो २.३०.६
प्र हि त्वा पूषन् १.१३८.२
प्र हिन्वानास इन्दवो ९.६४.१६
प्र हिन्वानो जनिता ९.९०.१
प्र हि रिरिक्ष ओजसा ८.८८.५
प्र होता जातो महान् १०.४६.१
प्र होत्रे पूर्व्यं वचो ३.१०.५
प्र ह्यच्छा मनीषाः १०.२६.१
प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र १०.८९.११
प्राग्नये तवसे भरध्वम् ७.५.१
प्राग्नये बृहते यज्ञियाय ५.१२.१
प्राग्नये वाचमीरय १०.१८७.१
प्राग्नये विश्वशुचे धियं ७.१३.१
प्राग्रुवो नभन्वो ४.१९.७
प्राचीनं बर्हिरोजसा १.१८८.४
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा १०.११०.४
प्राचीनो यज्ञः सुधितं ७.७.३
प्राचीमु देवाश्विना धियं ७.६७.५
प्राञ्चं यज्ञं चकृम ३.२.१
प्रातरग्निः पुरुप्रियो ५.१८.१
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं ७.४१.१
प्रातर्जरेथे जरणेव १०.४०.३
प्रातर्जितं भगमुग्रं ७.४१.२
प्रातर्देवीमदितिं जोहवीमि ५.६९.३
प्रातर्यजध्वमश्विना ५.७७.२
प्रातर्यावभिरा गतं ८.३८.७
प्रातर्यावाणा प्रथमा यजध्वं ५.७७.१
प्रातर्यावाणा रथ्येव २.३९.२
प्रातर्याव्णः सहस्कृत १.४५.९
प्रातर्युजं नासत्याधि १०.४१.२
प्रातर्युजा वि बोधय १.२२.१
प्रातः सुतमपिबो ४.३५.७
प्राता रत्नं प्रातरित्वा १.१२५.१
प्राता रथो नवो २.१८.१
प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य ५.२९.१०
प्राव स्तोतारं मघवन्नव ८.३६.२
प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं ९.९६.७
प्रावेपा मा बृहतो १०.३४.१
प्रास्तौदृष्वौजा ऋष्वेभिः १०.१०५.६
प्रास्मा ऊर्जं घृतश्चुतं ८.८.१६
प्रास्मै गायत्रमर्चत ८.१.८
प्रास्मै हिनोत मधुमन्तं १०.३०.८
प्रास्य धारा अक्षरन् ९.२९.१
प्रास्य धारा बृहतीः ९.९६.२२
प्रियमेधवदत्रिवत् १.४५.३
प्रियं दुग्धं न काम्यं ५.१९.४
प्रियं श्रद्धे ददतः १०.१५१.२
प्रिया तष्टानि मे कपिः १०.८६.५
प्रिया वो नाम हुवे ७.५६.१०
प्रियास इत्ते मघवन्नभिष्टौ ७.१९.८
प्रियो नो अस्तु विश्पतिः १.२६.७
प्रीणीताश्वान्हितं जयाथ १०.१०१.७
प्रेता जयता नरः १०.१०३.१३
प्रेतां यज्ञस्य शम्भुवा २.४१.१९
प्रेतो मुञ्चामि नामुतः १०.८५.२५
प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ ८.३७.१
प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो ७.१.३
प्रेद्धग्निर्वावृधे स्तोमेभिः ३.५.२
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा ७.९८.५
प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्यां १०.११६.९
प्रेरय सूरो अर्थं न १०.२९.५
प्रेष्ठमु प्रियाणां ८.१०३.१०
प्रेष्ठं वो अतिथिं गृणीषे १.१८६.३
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे ८.८४.१
प्रेहिप्रेहि पथिभिः १०.१४.७
प्रेह्यभीहि धृष्णुहि १.८०.३
प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः १.४०.३
प्रैते वदन्तु प्र वयं १०.९४.१
प्रैषः स्तोमः पृथिवीमन्तरिक्षं५.४२.१६
प्रैषामज्मेषु विथुरेव १.८७.३
प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य ९.८६.१६
प्रो अश्विनाववसे १.१८६.१०
प्रो अस्मा उपस्तुतिं ८.६२.१
प्रोग्रां पीतिं वृष्ण १०.१०४.३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोतये वरुणं मित्रमिन्द्रं ६.२१.९
प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु ५.६.६
प्रोथदश्वो न यवसे ७.३.२
प्रो द्रोणे हरयः ६.३७.२
प्रोरोर्मित्रावरुणा ७.६१.३
प्रोष्ठेशया वह्येशया ७.५५.८
प्रो ष्वस्मै पुरोरथं १०.१३३.१
प्रो स्य वहिः पथ्याभिः ९.८९.१

ब

बट् सूर्य श्रवसा ८.१०१.१२
बण्महाँ असि सूर्य ८.१०१.११
बतो बतासि १०.१०.१३
बभ्रवे नु स्वतवसे ९.११.४
बभ्राणः सूनो सहसो ३.१.८
बभ्रुरेको विषुणः ८.२९.१
बर्हिर्वा यत्स्वपत्याय १.८३.६
बर्हिषदः पितर ऊति १०.१५.४
बर्हिः प्राचीनमोजसा ९.५.४
बलविज्ञाय स्थविरः १०.१०३.५
बलं धेहि तनूषु नो ३.५३.१८
बहवः सूरचक्षसो ७.६६.१०
बह्वीनां पिता ६.७५.५
बह्वीः समा अकरमन्तः १०.१२४.४
बळस्य नीथा वि १०.९२.३
बळित्था तद्वपुषे १.१४१.१
बळित्था देव निष्कृतं ५.६७.१
बळित्था पर्वतानां ५.८४.१
बळित्था महिमा वां ६.५९.२
बळित्थायाय धाम्न ८.६३.११
बाधसे जनान्वृषभेव मन्युना ६.४६.४
बिभया हि त्वावतः ८.४५.३५
बिभर्ति चार्विन्द्रस्य ९.१०९.१४
बिभ्रद् द्रापिं हिरण्ययं १.२५.१३
बीभत्सूनां सुयजं हंसं १०.१२४.९
बृबदुक्थं हवामहे ८.३२.१०
बृहतीइव सूनवे रोदसी १.५९.४
बृहत्सुम्नः प्रसवीता निवेश ४.५३.६
बृहत्स्वश्चन्द्रममत्रद्य १.५२.९
बृहदिन्द्राय गायत ८.८९.१
बृहदु गायिषे वचो सूर्या ७.९६.१
बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः ६.४८.७
बृहद्वदन्ति मदिरेण १०.९४.४
बृहद्वयो बृहते तुभ्यमग्ने ५.४३.१५
बृहद्वयो मघवद्भ्यो ७.५८.३
बृहद्वयो हि भानवे ५.१६.१
बृहद्वरूथं मरुतां ८.१८.२०
बृहन्त इद्भानवो ३.१.१४
बृहन्त इन्नु ये ते २.११.१६
बृहन्तेव गम्भरेषु १०.१०६.९
बृहन्नच्छायो अपलाशः १०.२७.१४
बृहन्निदिध्म एषां ८.४५.२
बृहस्पत इन्द्र वर्धतं ४.५०.११
बृहस्पतिरमत हि त्यत् १०.६८.७
बृहस्पतिर्नयतु दुर्गहा १०.१८२.१
बृहस्पतिर्नः परि पातु १०.४२.११
४३.११, ४४.११
बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो ४.५०.४
बृहस्पतिः समजयद्वसूनि ६.७३.३
बृहस्पते अति यदर्यो २.२३.१५
बृहस्पते जुषस्व नो ३.६२.४
बृहस्पते तपुषाश्नेव २.३०.४
बृहस्पते परि दीया १०.१०३.४
बृहस्पते प्रति मे देवताम् १०.९८.१
बृहस्पते प्रथमं वाचो १०.७१.१
बृहस्पते या परमा परावत् ४.५०.३
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च ७.९७.१०
७.९८.७
बृहस्पते सदमित्नः १.१०६.५
बोधद्यन्मा हरिभ्यां ४.१५.७
बोधा मे अस्य वचसो १.१४७.२
बोधा सु मे मघवन्वाचमेमां ७.२२.३
बोधिन्मनसा रथ्ये ५.७५.५
बोधिन्मना इदस्तु नो ८.९३.१८
ब्रह्म गामश्वं जनयन्त १०.६५.११
ब्रह्म च ते जातवेदो १०.४.७
ब्रह्मचारी चरति १०.१०९.५
ब्रह्म जिन्वतमुत जिन्वतं ८.३५.१६
ब्राह्मणस्पतिरेता १०.७२.२
ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता २.२३.१९
२.२४.१६
ब्रह्मणस्पतेरभवद्यथा २.२४.१४
ब्रह्मणस्पते सुयमस्य २.२४.१५
ब्रह्मणाग्निः संविदानो १०.१६२.१
ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा ३.३५.४
ब्रह्मन्वीर ब्रह्मकृतिं ७.२९.२
ब्रह्म प्रजावदा भर ६.१६.३६
ब्रह्मा कृणोति वरुणो १.१०५.१५
ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि ७.२८.१
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा ८.१७.३
ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं ६.४५.७
ब्रह्माणि मे मतयः ५.१६५.४
ब्रह्माणि हि चकृषे वर्धनानि ६.२३.६
ब्रह्मा त इन्द्र गिर्वणः ८.९०.३
ब्रह्मा देवानां पदवीः ९.९६.६
ब्राह्मणादिन्द्र राधसः १.१५.५
ब्राह्मणासः पितरः ६.७५.१०
ब्राह्मणासः सोमिनो वच ७.१०३.८
ब्राह्मणासो अतिरात्रे ७.१०३.७
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् १०.९०.१२

भ

भग एव भगवाँ ७.४१.५
भग प्रणेतर्भग सत्य ७.४१.३
भगभक्तस्य ते वयं १.२४.५
भगस्य स्वसा वरुणस्य १.१२३.५
भगं धियं वाजयन्तः २.३८.१०
भद्रमिदं रुशमा अग्ने ५.३०.१२
भद्रमिद्भद्रा ७.९६.३
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम १.८९.८
भद्रं ते अग्ने सहसिन् ४.११.१
भद्रं नो अपि वातय १०.२०.१
भद्रं नो अपि वातय मनो १०.२५.१
भद्रंभद्रं न आ भर ८.९३.२८
भद्रं मनः कृष्णुष्व वृत्रतूर्ये ८.१९.२०
भद्रं वै वरं वृणते १०.१६४.२
भद्रा अग्नेर्वध्यश्वस्य १०.६९.१
भद्रा अश्वा हरितः १.११५.३
भद्रा ते अग्ने स्वनीक ४.६.६
भद्रा ते हस्ता सुकृतोत ४.२१.९
भद्रा ददृक्ष उर्विया ६.६४.२
भद्रा वस्त्रा समन्या ९.९७.२
भद्रो नो अग्निराहुतो ८.१९.१९
भद्रो भद्रया सचमान १०.३.३
भरद्यदि विरतो ४.२६.५
भरद्वाजाय सप्रथः ६.१६.३३
भरद्वाजायाव धुक्षत ६.४८.१३
भरामेध्मं कृणवा १.९४.४
भराय सु भरत भागं १०.१००.२
भरेषु हव्यो नमसोप २.२३.१३
भरेष्विन्द्रं सुहवं १०.६३.९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर्गो ह नामोत १०.६१.१४
भवा द्युम्नी वाध्र्यश्वोत १०.६९.५
भवा नो अग्नेऽवितोत १०.७.७
भवा नो अग्ने सुमना ३.१८.१
भवा मित्रो न शेव्यो १.१५६.१
भवा वरूथं गृणते १.५८.९
भवा वरूथं मघवन्मघोनां ७.३२.७
भारती पवमानस्य ९.५.८
भारतीळे सरस्वति १.१८८.८
भास्वती नेत्री सूनृतानां १.९२.७
भास्वती नेत्री सूनृतानामचेति १.११३.४
भिनत्पुरो नवतिमिन्द्र १.१३०.७
भिनद्गिरिं शवसा ४.१७.३
भिनद्बलमङ्गिरोभिः २.१५.८
भिन्धि विश्वा अप द्विषः ८.७५.४०
भीताय नाधमानाय ५.७८.६
भीमो विवेषायुधेभिरेषां ७.२१.४
भुज्युमंहसः पिपृथो १०.६५.१२
भुरन्तु नो यशसः १०.७६.६
भुवत्त्रितस्य मर्ज्यो ९.३४.४
भुवनस्य पितरं गीर्भिराभिः ६.४९.१०
भुवश्चक्षुर्महः ऋतस्य १०.८.५
भुवस्त्वमिन्द्र ब्रह्मणा १०.५०.४
भुवो जनस्य दिव्यस्य ६.२२.९
भुवो यज्ञस्य रजसश्च १०.८.६
भुवोऽविता वामदेवस्य ४.१६.१८
भूम्या अन्तं पर्येके १०.११४.१०
भूय इद्वावृधे वीर्या ६.३०.१
भूयसा वस्नमचरत् ४.२४.९
भूयाम ते सुमतौ ८.३.२
भूयामो षु त्वावतः ४.३२.६
भूरिकर्मणे वृषभाय १.१०३.६
भूरि चकर्थ युज्येभिः १.१६५.७
भूरि चक्र मरुतः पित्र्याणि ७.५६.२३
भूरि त इन्द्र वीर्यं १.५७.५
भूरि दक्षेभिर्वचनेभिः १०.११३.९
भूरिदा भूरि देहि ४.३२.२०
भूरिदा ह्यसि श्रुतः ४.३२.२१
भूरि नाम वन्दमानो ५.३.१०
भूरिभिः समह ऋषिभिः ८.७०.१४
भूरि हि ते सवना ७.२२.६
भूरिं द्वे अचरन्ती चरन्तं १.१८५.२
भूरीणि भद्रा नर्येषु १.१६६.१०
भूरीणि हि त्वे दधिरे ३.१९.४
भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्त १०.८.९
भूरीदिन्द्रस्य वीर्यं ८.५५.१
भूर्जज्ञ उत्तानपदः १०.७२.४
भूषन्न योऽधि बभ्रूषु १.१४०.६
भृमिश्चिद्वासि तूतुजिः ४.३२.२
भोजमश्वाः सुष्ठुवाहः १०.१०७.११
भोजं त्वामिन्द्र २.१७.८
भोजा जिग्युः सुरभिं १०.१०७.९
भोजायाश्वं समृजन्ति १०.१०७.१०

म

मक्षू कनायाः सख्यं १०.६१.१०
मक्षू कनायाः सख्यं नवीयो १०.६१.११
मक्षू ता त इन्द्र दानाप्रस १०.२२.११
मक्षू देववतो रथः ८.३१.१५
मक्षू न येषु दोहसे ६.६६.५
मक्षू न वह्निः प्रजाया १०.६१.९
मक्षू हि ष्मा गच्छथ ४.४३.३
मखस्य ते तविषस्य ३.३४.२
मघोन आ पवस्व नो ९.८.७
मघोनः स्म वृत्रहत्येषु ७.३२.१५
मतयः सोमपामुरुं ३.४१.५
मती जुष्टो धिया हितः ९.४४.२
मत्सि नो वस्य इष्टये १.१७६.१
मत्सि वायुमिष्टये ९.९७.४२
मत्सि सोम वरुणं ९.९०.५
मत्स्यपायि ते महः १.१७५.१
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः १.९.३
मत्स्वा सुशिप्र हरिवस्तदीम ८.९९.२
मथीद्यर्दीं विभृतो १.७१.४
मथीद्यर्दीं विष्टो मा १.१४८.१
मदच्युत्क्षेति सादने ९.१२.३
मदेनेषितं मदं ८.१.२१
मदेमदे हि नो ददिः १.८१.७
मधु नक्तमुतोषसो १.९०.७
मधु नो द्यावापृथिवी ६.७०.५
मधुपृष्ठं घोरमयासं ९.८९.४
मधुमतीरोषधीर्द्याव आपः ४.५७.३
मधुमन्तं तनूनपाद् १.१३.२
मधुमन्मे परायणं १०.२४.६
मधुमान्नो वनस्पतिः १.९०.८
मधु वाता ऋतायते १.९०.६
मधोर्धारामनु क्षर ९.१७.८
मध्या यत्कर्त्वमभवत् १०.६१.६
मध्ये होता दुरोणे बर्हिषो ६.१२.१
मध्व ऊ षु मधूयुवा ५.७३.८
मध्वः पिबतं मधुपेभिरास ४.४५.३
मध्वः सूदं पवस्व ९.९७.४४
मध्वः सोमस्याश्विना १.११७.१
मध्वो वो नाम मारुतं ७.५७.१
मनीषिणः प्र भरध्वं १०.१११.१
मनीषिभिः पवते पूर्व्यः ९.८६.२०
मनुष्वत्त्वा नि धीमहि ५.२१.१
मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरः १.३१.१७
मनुष्वदिन्द्र सवनं जुषाणः ३.३२.५
मनो अस्या अन आसीत् १०.८५.१०
मनोजवसा वृषणा मदच्युता ८.२२.१६
मनोजवा अयमान ८.१००.८
मनो न येषु हवनेषु १०.६१.३
मनो न योऽध्वनः १.७१.९
मनो न्वा हुवामहे १०.५७.३
मन्त्रमखर्वं सुधितं ७.३२.१३
मन्थता नरः कविमद्वयन्तं ३.२९.५
मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवः ८.४.४
मन्दन्तु त्वा मन्दिनो १.१३४.२
मन्दमान ऋतादधि १०.७३.५
मन्दस्व होत्रादनु जोषमन्धसः २.३७.१
मन्दस्वा सु स्वर्णर ८.६.३९
मन्दामहे दशतयस्य १.१२२.१३
मन्दिष्ट यदुशने काव्ये १.५१.११
मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणिः १.१४२.८
मन्द्रया सोम धारया ९.६.१
मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य ६.३९.१
मन्द्रस्य रूपं विविदुः ९.६८.६
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः १०.४६.४
मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठं ७.१०.५
मन्द्रं होतारमृत्विजम् ८.४४.६
मन्द्रं होतारं शुचिमद्वया ३.२.१५
मन्द्रा कृणुध्वं धिय १०.१०१.२
मन्द्रो होता गृहपतिः १.३६.५
मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास १०.८३.२
मन्ये त्वा यज्ञियं ८.९६.४
ममच्चन ते मघवन् ४.१८.९
ममच्चन त्वा युवतिः ४.१८.८
ममत्तु त्वा दिव्यः सोमः १०.११६.३
ममत्तु नः परिज्मा १.१२२.३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम त्वा सूर उदिते ८.१.२९
मम देवा विहवे १०.१२८.२
मम द्विता राष्ट्रं क्षत्रियस्य ४.४२.१
मम पुत्राः शत्रुहणो १०.१५९.३
मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छ २.१८.७
ममाग्ने वर्चो विहवेषु १०.१२८.१
मया सो अन्नमत्ति १०.१२५.४
मयि देवा द्रविणम् १०.१२८.३
मयो दधे मेधिरः ३.१.३
मयोभूर्वातो अभि १०.१६९.१
मरुतः पिबत ऋतुना १.१५.२
मरुतो मारुतस्य ८.२०.२३
मरुतो यद्ध वो दिवः ८.७.११
मरुतो यद्ध वो बलं १.३७.१२
मरुतो यस्य हि क्षये १.८६.१
मरुतो वीळुपाणिभिः १.३८.११
मरुत्वतो अप्रतीतस्य ५.४२.६
मरुत्वन्तमृजीषिणं ८.७६.५
मरुत्वन्तं वृषभं ३.४७.५,६.१९.११
मरुत्वन्तं हवामहे १.२३.७
मरुत्वाँ इन्द्र मीढ्वः ८.७६.७
मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो ३.४७.१
मरुत्सु वो दधीमहि ५.५२.४
मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य १.१०१.११
मर्तश्चिद्वो नृतवो रुक्मवक्ष ८.२०.२२
मर्ता अमर्त्यस्य ते ८.११.५
मर्माणि ते वर्मणा ६.७५.१८
मर्मृजानास आयवो ९.६४.१७
मर्यो न शुभ्रस्तन्वं ९.९६.२०
मह उग्राय तवसे ८.९६.१०
महत्तत्सोमो महिषः ९.९७.४१
महत्तदुल्बं स्थविरं १०.५१.१
महत्तद्वः कवयः ३.५४.१७
महत्तन्नाम गुह्यं १०.५५.२
महदद्य महतामा वृणीमहे १०.३६.११
महश्चर्कर्म्यर्वतः क्रतुपाः ४.३९.२
महश्चित्त्वमिन्द्र यत एतान् १.१६९.१
महश्चिदग्न एनसो ४.१२.५
महः स राय एषते २.१४९.१
महः सु वो अरमिषे ८.४६.१७
महाँ अमत्रो वृजने ३.३६.४
महाँ असि महिष ३.४६.२
महाँ असि सोम ज्येष्ठ ९.६६.१६
महाँ अस्यध्वरस्य ७.११.१
महाँ आदित्यो नमसोप ३.५९.५
महाँ इन्द्रः परश्च नः १.८.५
महाँ इन्द्रो नृवदा ६.१९.१
महाँ इन्द्रो य ओजसा ८.६.१
महाँ उग्रो वावृधे ३.३६.५
महाँ उतासि यस्य ते ७.३१.७
महाँ ऋषिर्देवजा ३.५३.९
महान्तं कोशमुदचा ५.८३.८
महान्तं त्वा महीरनु ९.२.४
महान्तं महिना वयं ८.१२.२३
महान्ता मित्रावरुणा ८.२५.४
महान्तो मह्ना विभ्वो १.१६६.११
महान्त्सधस्थे ध्रुव ३.६.४
महिकेरव ऊतये १.४५.४
महि क्षेत्रं पुरु श्चन्द्रं ३.३१.१५
महि ज्योतिर्निहितं ३.३०.१४
महि ज्योतिर्बिभ्रतं १०.३७.८
महि त्रीणामवोऽस्तु १०.१८५.१
महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्तीरजुर्यं ३.७.४
महि द्यावापृथिवी भूतं १०.९३.१
महि प्सरः सुकृतं ९.७४.३
महि महे तवसे ५.३३.१
महि महे दिवे ३.५४.२
महिम्न एषां पितरः १०.५६.४
महि राधो विश्वजन्यं ६.४७.२५
महि वो महतामवो वरुण मित्र ८.४७.१
महि वो महतामवो वरुण मित्रा ८.६७.४
महिषासो मायिनश्चित्र १.६४.७
मही अत्र महिना १.१५१.५
मही त्रीणामवोऽस्तु १०.१८५.१
मही द्यावापृथिवी ४.५६.१
मही द्यौः पृथिवी च नः १.२२.१३
मही मित्रस्य साधथः ४.५६.७
महीमे अस्य वृषनाम ९.९७.५४
मही यदि धिषणा शिश्नथे ३.३१.१३
महीरस्य प्रणीतयः---नास्य ६.४५.३
महीरस्य प्रणीतयः--वसूनि ८.१२.२१
मही वामूतिरश्विना मयोभू १.११७.१९
मही समैरच्चम्वा ३.५५.२०
महे चन त्वामद्रिवः ८.१.५
महे नो अद्य बोधयोषो ५.७९.१
महे नो अद्य सुविताय ७.७५.२
महे यत्पित्र ईं रसं १.७१.५
महे शुल्काय वरुणस्य ७.८२.६
महो अग्नेः समिधानस्य १०.३६.१२
महो अर्णः सरस्वती १.३.१२
महो देवान्यजसि यक्ष्यानु ६.४८.४
महो द्रुहो अप विश्वायु ६.२०.५
महो नो अग्ने सुवितस्य ७.१.२४
महो नो राय आ भर ९.६१.२६
महो महानि पनयन्त्यस्य ३.३४.६
महो यस्पतिः शवसो १०.२२.३
महो रुजामि बन्धुता ४.४.११
महो विश्वाँ अभि षतो ८.२३.२६
मह्ना त्वष्टा वज्रमतक्षत् १०.४८.३
मह्ना यजन्तु मम १०.१२८.४
मह्ना ते सख्यं ३.३१.१४
मंसीमहि त्वा वयं १०.२६.४
मंहिष्ठं वो मघोनां ५.३९.४
मंहिष्ठा वाजसातमेषा ८.५.५
मा कस्मै धातमभ्यमित्रिणे १.१२०.८
मा कस्य नो अररुषो ७.९४.८
मा कस्य यक्षं सदमित् ४.३.१३
मा कस्याद्भुतक्रतू ५.७०.४
मा काकम्बीरमुद् वृहो ६.४८.१७
माकिरेना पथा गात् ८.५.३९
माकिर्न एना सख्या १०.२३.७
माकिर्नेशन्माकीं ६.५४.७
माकुध्यगिन्द्र शूर वस्वीः १०.२२.१२
मा चिदन्यद्वि शंसत ८.१.१
मा च्छेद्म रश्मींरिति १.१०९.३
मा जस्वने वृषभ ६.४४.११
मातली कव्यैर्यमो १०.१४.३
मात च यत्र दुहिता ३.५५.१२
माता देवानामदितेः १.११३.१९
माता पितरमृत आ भज १.१६४.८
माता रुद्राणां दुहिता ८.१०१.१५
मातुर्दिधिषुम् ६.५५.५
मातुष्पदे परमे ५.४३.१४
मा ते अमाजुरो यथा ८.२१.१५
मा ते अस्यां सहसावन्परि ७.१९.७
मा ते गोदत्र निरराम ८.२१.१६
मा ते राधांसि १.८४.२०
मातेव यद् भरसे ५.१५.४
मा ते हरी वृषणा ३.३५.५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात्र पूषन्नाघृण	७.४०.६	मा नो रक्ष आ वेशीद्	८.६०.२०	मित्रस्तन्नो वरुणो देवो	७.६४.३
मात्रे नु ते सुमिते	१०.२९.६	मा नो रक्षो अभि नड्यातु	७.१०४.२३	मित्रस्तन्नो वरुणो मामहन्त	७.५२.२
मा त्वाग्निर्ध्वनयीद् धूम	१.१६२.१५	मा नो वधाय हत्नवे	१.२५.२	मित्रस्तन्नो वरुणो रोदसी	७.४०.२
मा त्वा तपत्प्रिय	१.१६२.२०	मा नो वधीरिन्द्र मा	१.१०४.८	मित्रस्य चर्षणीधृतो	३.५९.६
मा त्वा मूरा अविष्यवो	८.४५.२३	मा नो वधी रुद्र मा	७.४६.४	मित्रं कृणुध्वं खलु	१०.३४.१४
मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा	२.३३.४	मा नो वधैर्वरुण	२.२८.७	मित्रं न यं शिम्या	१.१५१.१
मा त्वा श्येन उद्वधीन्	२.४२.२	मा नो वृकाय वृक्ये	६.५१.६	मित्रं न यं सुधितं	६.१५.२
मा त्वा सोमस्य गल्दया	८.१.२०	मा नोऽहिर्बुध्न्यो रिषेधात्	७.३४.१७	मित्रं वयं हवामहे	१.२३.४
मादयस्व सुते सचा	१.८१.८	मा नो हिंसीज्जनिता	१०.१२१.९	मित्रं हुवे पूतदक्षं	१.२.७
मादयस्व हरिभिः	१.१०१.१०	मा नो हृणीतामतिथिर्वसु	८.१०३.१२	मित्रा तना न रथ्या	८.२५.२
माध्यन्दिनस्य सवनस्य	३.५२.५	मा नो हेतिर्विवस्वत	८.६७.२०	मित्राय पञ्च येमिरे	३.५९.८
माध्यन्दिने सवने	३.२८.४	मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी	७.९४.३	मित्राय शिक्ष वरुणाय	१०.६५.५
मा न इन्द्र परा	८.९७.७	मा पृणन्तो दुरितम्	१.१२५.७	मित्रावरुणवन्ता उत	८.३५.१३
मा न इन्द्र पीयत्नवे	८.२.१५	मा प्र गाम पथो वयं	१०.५७.१	मित्रो अग्निर्भवति यत्	३.५.४
मा न इन्द्राभ्यादिशः	८.९२.३१	मा भूम निष्ट्याइव	८.१.१३	मित्रो अंहोश्चिदादुरु	५.६५.४
मा न एकस्मिन्नागसि	८.४५.३४	मा भेम मा श्रमिष्मो	८.४.७	मित्रो जनान्यातयति	३.५९.१
मा नस्तोके तनये	१.११४.८	मा मामिमं तव	५.४०.७	मित्रो देवेष्वायुषु	३.५९.९
मा नः शंसो अररुषो	१.१८.३	मायाभिरिन्द्र मायिनं	१.११.७	मित्रो नो अत्यंहतिं	८.६७.२
मा नः समस्य दूढ्यः	८.७५.९	मायाभिरुत्सिसृप्सत	८.१४.१४	मिमाति बर्ह्यिेतशः	९.६४.१९
मा नः सेतुः सिषेदयं	८.६७.८	माया वां मित्रावरुणा	५.६३.४	मिमातु द्यौरदितिर्वीतये	५.५९.८
मा नः सोम परिबाधो	१.४३.८	मारे अस्मद्वि मुमुचो	३.४१.८	मिमीहि श्लोकमास्ये	१.३८.१४
मा नः सोम सं वीविजो	८.७९.८	मार्जाल्यो मृज्यते स्वे	५.१.८	मिम्यक्ष येषु रोदसी	६.५०.५
मा नः स्तेनेभ्यो ये अभि	२.२३.१६	मा व एनो अन्यकृतं	६.५१.७	मिम्यक्ष येषु सुधिता	१.१६७.३
मा निन्दत य इमां	४.५.२	मा वां वृको मा वृकीः	१.१८३.४	मिहः पावकाः प्रतता	३.३१.२०
मा नो अग्ने दुर्भृतये	७.१.२२	मा विदन्परिपन्थिनो	१०.८५.३२	मीळ्हुष्मतीव पृथिवी	३.५६.३
मा नो अग्नेऽमतये	३.१६.५	मा वो घ्नन्तं मा शपन्तं	१.४१.८	मुञ्चन्तु मा शपथ्याद्	१०.९७.१६
मा नो अग्नेऽवसृजो	१.१८९.५	मा वो दात्रान्मरुतो	७.५६.२१	मुञ्चामि त्वा हविषा	१०.१६१.१
मा नो अग्नेऽवीरते	७.१.१९	मा वो मृगो न यवसे	१.३८.५	मुनयो वातरशनाः	१०.१३६.२
मा नो अग्ने सख्या	१.७१.१०	मा वो रसानितभा	५.५३.९	मुमुक्ष्वो मनवे	१.१४०.४
मा नो अज्ञाता वृजना	७.३२.२७	मा वो रिषत्खनिता	१०.९७.२०	मुमोद गर्भो वृषभः	१०.८.२
मा नो अरातिरीशत	२.७.२	मा शूने अग्ने नि षदाम	७.१.११	मुषाय सूर्यं कवे	१.१७५.४
मा नो अस्मिन्मघवन्	१.५४.१	मा सख्युः शूनमा विदे	८.४५.३६	मूरा अमूरा न वयं	१०.४.४
मा नो अस्मिन्महाधने	८.७५.१२	मा सा ते अस्मत्सुमतिर्विद	१.१२१.१५	मूर्धा दिवो नाभिरग्निः	१.५९.२
मा नो गव्येभिरश्व्यैः	८.७३.१५	मा सीमवद्य आ भाग्	८.८०.८	मूर्धानं दिवो अरतिं	६.७.१
मा नो गुह्या रिप	२.३२.२	मा स्रेधत सोमिनो	७.३२.९	मूर्धा भुवो भवति नक्तं	१०.८८.६
मा नो देवानां विशः	८.७५.८	माहं मघोनो वरुण	२.२७.१७, २८.११,२९.७	मूषो न शिश्ना व्यदन्ति	१०.३३.३
मा नो निदे च वक्तवे	७.३१.५			मृगो न भीमः कुचरो	१०.१८०.२
मा नो मर्ता अभिद्रुहन्	१.५.१०	मां चत्वार आशवः	८.७४.१४	मृजन्ति त्वा दश क्षिपो	९.८.४
मा नो मर्ताय रिपवे	८.६०.८	मां देवा दधिरे	१०.५२.४	मृजन्ति त्वा समग्रुवो	९.६६.९
मा नो मर्धीरा भरा	४.२०.१०	मां धुरिन्द्रं नाम देवता	१०.४९.२	मृजानो वारे पवमानो	९.१०७.२२
मा नो महान्तमुत	१.११४.७	मां नरः स्वश्वा वाजयन्तः	४.४२.५	मृज्यमानः सुहस्त्य	९.१०७.२१
मा नो मित्रो वरुणो	१.१६२.१	मित्रश्च तुभ्यं वरुणः	३.१४.४	मृत्योः पदं योपयन्तो	१०.१८.२
मा नो मृचा रिपूणां	८.६७.९	मित्रश्च नो वरुणश्च	५.७२.३	मृळत नो मरुतो मा वधि	५.५५.९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृळा नो रुद्रोत १.११४.२
मेद्यन्तु ते वह्नयो २.३७.३
मेधाकारं विदथस्य १०.९१.८
मेहनाद्वनं करणात् १०.१६३.५
मैनमग्ने वि दहो १०.१६.१
मोघमन्नं विन्दते १०.११७.६
मो ते रिषन्ये अच्छोक्तिभिः ८.१०३.१३
मो षु णः परापरा १.३८.६
मो षु णः सोम मृत्यवे १०.५९.४
मो षु त्वा वाघतश्चनारे ७.३२.१
मो षु देवा अदः स्वरः १.१०५.३
मो षु ब्रह्मेव ८.९२.३०
मो षु वरुण मृन्मयं ७.८९.१
मो षु वो अस्मदभि १.१३९.८
मो षू ण इन्द्रात्र १.१७३.१२
मो षू णो अत्र जुहुरन्त ३.५५.२
मो ष्वद्य दुर्हणावान् ८.२.२०

य

य आत्मदा बलदा १०.१२१.२
य आध्राय चकमानाय १०.११७.२
य आनयत्परावतः ६.४५.१
य आपिर्नित्यो वरुण प्रियः ७.८८.६
य आयुं कुत्समतिथिग्व ८.५३.२
य आर्जीकेषु कृत्वसु ९.६५.२३
य आस्ते यश्च चरति ७.५५.६
य आस्वत्क आशये ८.४१.७
य इद्ध आविवासति ६.६०.११
य इन्दोः पवमानस्यानु ९.११४.१
य इन्द्र चमसेष्वा ८.८२.७
य इन्द्र यतयस्त्वा ८.६.१८
य इन्द्र शुष्मो मघवन्ते ७.२७.२
य इन्द्र सस्त्यव्रतो ८.९७.३
य इन्द्र सोमपातमो ८.१२.१
य इन्द्राग्री चित्रतमो १.१०८.१
य इन्द्राग्री सुतेषु ६.५९.४
य इन्द्राय वचोयुजा १.२०.२
य इन्द्राय सुनवत् ४.२४.७
य इमा विश्वा जातानि ५.८२.९
य इमा विश्वा भुवनानि १०.८१.१
य इमे उभे अहनी ५.८२.८
य इमे द्यावापृथिवी १०.११०.९
य इमे रोदसी उभे ३.५३.१२
य इमे रोदसी मही समीची ८.६.१७
य इमे रोदसी मही सं ९.१८.५
य ईङ्खयन्ति पर्वतान् १.१९.७
य ईशिरे भुवनस्य १०.६३.८
य ईं चकार न सो १.१६४.३२
य ईं चिकेत गुहा १.६७.४
य ईं राजानवृतुथा ६.६२.९
य ईं वहन्त आशुभिः ५.६१.११
य उक्था केवला दधे ८.५२.३
य उक्थेभिर्न विन्धते ८.५१.३
य उग्रइव शर्यहा ६.१६.३९
य उग्रः सन्ननिष्टृतः ८.३३.९
य उग्रा अर्कमानृचुः १.१९.४
य उग्रेभ्यश्चिदोजियान् ९.६६.१७
य उदाजन्पितरो १०.६२.२
य उदानड् व्ययनं १०.१९.५
य उदृचि यज्ञे अध्वरेष्ठा १०.७७.७
त उदृचीन्द्र देवगोपाः १.५३.११
य उद्नः फलिगं भिनत् ८.३२.२५
य उशता मनसा सो १०.१६०.३
य उ श्रिया दमेष्वा २.८.३
य उस्रिया अप्या अन्तः ९.१०८.६
य ऋक्षादंहसो मुचत् ८.२४.२७
य ऋज्रा महां मामहे ८.१.३२
य ऋज्रा व्रातरंहसो ८.३४.१७
य ऋते चिदभिश्रिषः ८.१.१२
य ऋते चिद् गास्पदेभ्यः ८.२.३९
य ऋतेन सूर्यमारोहयन् १०.६२.३
य ऋष्वः श्रावयत्सखा ८.४६.१२
य ऋष्वा ऋष्टिविद्युतः ५.५२.१३
य एक इच्च्यावयति ४.१७.५
य एक इत्तमु ष्टुहि ६.४५.१६
य एक इद्धव्यश्चर्षणीनां ६.२२.१
य एक इद्वि दयते १.८४.७
य एकश्चर्षणीनाम् १.७.९
य एको अस्ति दंसना ८.१.२७
य एनमाददेशति ६.५६.१
य ओजिष्ठ इन्द्र तं ६.३३.१
य ओजिष्ठस्तमा भर ९.१०१.९
य ओहते रक्षसो देववीतौ ५.४२.१०
यच्च गोषु दुष्वप्न्यं ८.४७.१४
यच्चित्रमप्न उषसो १.११३.२०
यच्चिद्धि ते अपि ८.४५.१९
यच्चिद्धि ते गणा ५.७९.५
यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा ४.१२.४
यच्चिद्धि ते विशो १.२५.१
यच्चिद्धि त्वं गृहेगृहे १.२८.५
यच्चिद्धि त्वा जना इमे ८.१.३
यच्चिद्धि वां पुर ऋषयो ८.८.६
यच्चिद्धि शश्वता तना १.२६.६
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र ४.३२.१३
८.६५.७
यच्चिद्धि सत्य सोमपा १.२९.१
यच्छक्रासि परा---अतस्त्वा ८.९७.४
यच्छक्रासि परावति---यद्वा ८.१३.१५
यच्छल्मलौ भवति ७.५०.३
यच्छुश्रूया इमं हवं ८.४५.१८
यजध्वैनं प्रियमेधा ८.२.३७
यजन्ते अस्य सख्यम् ७.३६.५
यजमानाय सुन्वत आग्रे ५.२६.५
यजस्व वीर प्र विहि २.२६.२
यजस्व होतरिषितो ६.११.१
यजा नो मित्रावरुणा १.७५.५
यजाम इन्नमसा ३.३२.७
यजामह इन्द्रं वज्र १०.२३.१
यजामहे वां महः १.१५३.१
यजिष्ठं त्वा यजमाना १.१२७.२
यजिष्ठं त्वा ववृमहे ८.१९.३
यज्जातवेदो भुवनस्य १०.८८.५
यज्जायथा अपूर्व्य ८.८९.५
यज्जायथास्तदहरस्य ३.४८.२
यज्ञ इन्द्रमवर्धयत् ८.१४.५
यज्ञस्य केतुं प्रथमं --नरः ५.११.२
यज्ञस्य केतुं प्रथमं --हवि १०.१२२.४
यज्ञस्य केतुः पवते ९.८६.७
यज्ञस्य वो रथ्यं विश्पतिं १०.९२.१
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा ८.३८.१
यज्ञं च नस्तन्वं च १०.१५७.२
यज्ञं पृच्छमि १.१०५.४
यज्ञानां रथ्ये वयं ८.४४.२७
यज्ञायज्ञा वः समना १.१६८.१
यज्ञायज्ञा वो अग्नये ६.४८.१
यज्ञासाहं दुव इषे १०.२०.७
यज्ञे दिवो नृषदने ७.९७.१
यज्ञेन गातुमप्तुरो २.२१.५
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः १.१६४.५०
१०.९०.१६

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञेन वर्धत जातवेदसम् २.२.१
यज्ञेन वाचः पदवीयं १०.७१.३
यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे ३.३२.१३
यज्ञेभिरद्भुतक्रतुं ८.२३.८
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं ८.१२.२०
यज्ञेयज्ञे स मर्त्यो १०.९३.२
यज्ञैरथर्वा प्रथमः १.८३.५
यज्ञैरिषूः संनममानः १०.८७.४
यज्ञैर्वा यज्ञवाहसो १.८६.२
यज्ञैः सम्मिश्लाः पृषतीभिः २.३६.२
यज्ञो देवानां प्रत्येति १.१०७.१
यज्ञो हि त इन्द्र ३.३२.१२
यज्ञो हि ष्मेन्द्रं १.१७३.११
यज्ञो हीळो वो अन्तर ८.१८.१९
यत इन्द्र भयामहे ८.६१.१३
यता सुजूर्णी रातिनी ४.६.३
यत् किं चेदं वरुण ७.८९.५
यत्तुदत्सूर एतशं ८.१.११
यत्तृतीयं सवनं रत्नधेयं ४.३५.९
यत्ते अपो यदोषधीः १०.५८.७
यत्ते कृष्णः शकुन १०.१६.६
यत्ते गात्रादग्निना १.१६२.११
यत्ते चतस्रः प्रदिशो १०.५८.४
यत्ते दित्सु प्राध्यं ५.३९.३
यत्ते दिवं यत्पृथिवीं १०.५८.२
यत्ते पराः परावतो १०.५८.११
यत्ते पर्वतान्बृहतो १०.५८.९
यत्ते पवित्रमर्चिवत् ९.६७.२४
यत्ते पवित्रमर्चिषि ९.६७.२३
यत्ते भूतं च भव्यं च १०.५८.१२
यत्ते भूमिं चतुर्भृष्टिं १०.५८.३
यत्ते मनुर्यदनीकं १०.६९.३
यत्ते मरीचीः प्रवतो १०.५८.६
यत्ते यमं वैवस्वतं १०.५८.१
यत्ते राजञ्छृतं हविः ९.११४.४
यत्ते विश्वमिदं जगत् १०.५८.१०
यत्ते समुद्रमर्णवम् १०.५८.५
यत्ते सादे महसा १.१६२.१७
यत्ते सूर्य यदुषसं १०.५८.८
यत्ते सोम गवाशिरो १.१८७.९
यत्वा तुरीयमृतुभिः १.१५.१०
यत्वा देव प्रपिबन्ति १०.८५.५
यत्वा पृच्छादीजानः ८.२४.३०
यत्वा यामि दद्धि तन्नः १०.४७.८
यत्वा सूर्य स्वर्भानुः ५.४०.५
यत्वा होतारमनजन् ३.१९.५
यत्वेषया मा नदयन्त १.१६६.५
यत्पर्जन्य कनिक्रदत् ५.८३.९
यत्पाकत्रा मनसा १०.२.५
यत्पाञ्चजन्यया विशेन्द्रं ८.६३.७
यत्पुरुषं व्यदधुः १०.९०.११
यत्पुरुषेण हविषा १०.९०.६
यत्पूर्व्यं मरुतो यच्च नूतन ५.५५.८
यत्प्रायासिष्ट पृषतीभिरश्वैः ५.५८.६
यत्र कामा निकामाश्च ९.११३.१०
यत्र क्व च ते मनो ६.१६.१७
यत्र ग्रावा पृथुबुध्न १.२८.१
यत्र ज्योतिरजस्रं ९.११३.७
यत्र देवाँ ऋघायतो ४.३०.५
यत्र द्वाविव जघना १.२८.२
यत्र नार्यपच्यवं १.२८.३
यत्र बाणाः सम्पतन्ति ६.७५.१७
यत्र ब्रह्मा पवमान ९.११३.६
यत्र मन्थां वि बध्नते १.२८.४
यत्र राजा वैवस्वतो ९.११३.८
यत्र वह्निरभिहितो ५.५०.४
यत्र वेत्थ वनस्पते ५.५.१०
यत्र शूरासस्तन्वो ६.४६.१२
यत्रा चक्रुरमृता गातु० ७.६३.५
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च ९.११३.११
यत्रा नरः समयन्ते ७.८३.२
यत्रानुकामं चरणं ९.११३.९
यत्रा वदेते अवरः १०.८८.१७
यत्रा समुद्रः स्कभितो १०.१४९.२
यत्रा सुपर्णा अमृतस्य १.१६४.२१
यत्रेदानीं पश्यसि १०.८७.६
यत्रोत बाधितेभ्यः ४.३०.४
यत्रोत मर्त्याय कं ४.३०.६
यत्रौषधीः समग्मत १०.९७.६
यत्संवत्समृभवो गाम् ४.३३.४
यत्सानोः सानुमारुहत् १.१०.२
यत्सिन्धौ यदसिक्त्यां ८.२०.२५
यत्सोम आ सुते नर ७.९४.१०
यत्सोम चित्रमुक्थ्यं ९.१९.१
यत्सोममिन्द्र विष्णवि ८.१२.१६
यत्सोमो वाजमर्षति ९.५६.२
यत्स्थो दीर्घप्रसद्मनि ८.१०.१
यथा कण्वे मघवन्त्रसदस्य ८.४९.१०
यथा कण्वे मघवन्मेधे ८.५०.१०
यथा कलां यथा शफं ८.४७.१७
यथा गौरो अपा कृतं ८.४.३
यथा चित्कण्वमावतं ८.५.२५
यथा चिद् वृद्धमतसं ८.६०.७
यथा चिन्मन्यसे हृदा ५.५६.२
यथा देवा असुरेषु १०.१५१.३
यथा नो अदितिः करत् १.४३.२
यथा नो मित्रो अर्यमा ८.३१.१३
यथा नो मित्रो वरुणो १.४३.३
यथापवथा मनवे ९.९६.१२
यथा पूर्वेभ्यः शतसा ९.८२.५
यथा पूर्वेभ्यो जरितृभ्यः १.१७५.६
१.१७६.६
यथा भवदनुदेयी १०.१३५.६
यथा मनौ विवस्वति ८.५२.१
यथा मनौ सांवरणौ ८.५१.१
यथायजो होत्रमग्ने ३.१७.२
यथा युगं वरत्रया १०.६०.८
यथा रुद्रस्य सूनवो ८.२०.१७
यथा वरो सुषाम्ने ८.२४.२८
यथा वशन्ति देवास्तथेदसत् ८.२८.४
यथा वः स्वाहा अग्नये ७.३.७
यथा वातः पुष्करिणीं ५.७८.७
यथा वातो यथा वनं ५.७८.८
यथा वामत्रिरश्विना ८.४२.५
यथा विद्वाँ अरं करत् २.५.८
यथा विप्रस्य मनुषो १.७६.५
यथा ह त्यद्वसवो ४.१२.६,१०.१२६.८
यथाहान्यनुपूर्वं १०.१८.५
यथा होतर्मनुषो देवताता ६.४.१
यथेयं पृथिवी मही १०.६०.९
यथोत कृत्व्ये धने ८.५.२६
यदक्रन्दः प्रथमं जायमानः १.१६३.१
यदग्न एषा समितिः १०.११.८
यदग्ने अद्य मिथुना १०.८७.१३
यदग्ने कानि कानि चित् ८.१०२.२०
यदग्ने दिविजा असि ८.४३.२८
यदग्ने मर्त्यस्त्वं ८.१९.२५
यदग्ने स्यामहं त्वं ८.४४.२३
यदङ्ग तविषीयवो ८.७.२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदङ्ग तविषीयस ८.६.२६
यदङ्ग त्वा भरता: ३.३३.११
यदङ्ग दाशुषे त्वं १.१.६
यदचरस्तन्वा वावृधानो १०.५४.२
यदज्ञातेषु वृजनेषु १०.२७.४
यदत्त्युपजिह्विका ८.१०२.२१
यददो दिवो अर्णव ८.२६.१७
यददो पितो अजगन् १.१८७.७
यददो वात ते गृहे १०.१८६.३
यदद्भि: परिषिच्यसे ९.६५.६
यदद्य कच्च वृत्रहन् ८.९३.४
यदद्य कर्हि कर्हि चित् ८.७३.५
यदद्य त्वा पुरुष्टुत ६.५६.४
यदद्य त्वा प्रयति ३.२९.१६
यदद्य भागं विभजासि १.१२३.३
यदद्य वां नासत्योक्थै: ८.९.९
यदद्य सूर उदितेऽनागा ७.६६.४
यदद्य सूर उदिते यन् ८.२७.२१
यदद्य सूर्य उद्यति ८.२७.१९
यदद्य सूर्य ब्रवो ७.६०.१
यदद्य स्थ: परावति ५.७३.१
यदद्याश्विनावपाक् ८.१०.५
यदद्याश्विनावहम् ८.९.१३
यदध्रिगावो अध्रिगू ८.२२.११
यदन्तरा परावतम् ३.४०.९
यदन्तरिक्षे पतथ: पुरुभुजा ८.१०.६
यदन्तरिक्षे यद्दिवि ८.९.२
यदन्ति यच्च दूरके ९.६७.२१
यदन्यासु वृषभो ३.५५.१७
यदपामोषधीनां १.१८७.८
यदप्सु यद्वनस्पतौ ८.९.५
यदब्रवं प्रथमं वां वृणान: १.१०८.६
यदयातं दिवोदासाय वर्ति: १.११६.१८
यदयातं शुभस्पती १०.८५.१५
यदयुक्था अरुषा १.९४.१०
यदर्जुन सारमेय ७.५५.२
यदश्वस्य क्रविषो मक्षिका १.१६२.९
यदश्वान्धूर्षु पृषतीरयुग्ध्वं ५.५५.६
यदश्वाय वास उपस्तृणन्ति १.१६२.१६
यदश्विना पृच्छमानाव १०.८५.१४
यदस्य धामनि प्रिये ८.१२.३२
यदस्य मन्युरध्वनीत् ८.६.१३
यदाजिं यात्याजिकृत् ८.४५.७
यदा ते मारुतीर्विश: ८.१२.२९
यदा ते विष्णुरोजसा ८.१२.२७
यदा ते हर्यता हरी ८.१२.२८
यदादीध्ये न दविषाणि १०.३४.५
यदापीतासो अंशवो ८.९.१९
यदारमक्रन्नृभव: पितृभ्यां ४.३३.२
यदा वज्रं हिरण्यमित् १०.२३.३
यदा वलस्य पीयतो १०.६८.६
यदा वाजमसनत् १०.६७.१०
यदाविर्यदपीच्यं ८.४७.१३
यदा वीरस्य रेवतो ७.४२.४
यदा वृत्रं नदीवृतं ८.१२.२६
यदाशसा नि:शसा १०.१६४.३
यदा समर्यं व्यचेद् ४.२४.८
यदासु मर्तो अमृतासु १०.९५.९
यदा सूर्यममुं दिवि ८.१२.३०
यदि क्षितायुर्यदि वा १०.१६१.२
यदिन्द्र चित्र मेहनास्ति ५.३९.१
यदिन्द्र ते चतस्रो ५.३५.२
यदिन्द्र दिवि पार्ये यदृधक् ६.४०.५
यदिन्द्र नाहुषीष्वाँ ६.४६.७
यदिन्द्र पूर्वो अपराय ७.२०.७
यदिन्द्र पृतनाज्ये ८.१२.२५
यदिन्द्र प्रागपागु ---आ याहि ८.६५.१
यदिन्द्र प्रागपागु ---सिमा ८.४.१
यदिन्द्र ब्रह्मणस्पते १०.१६४.४
यदिन्द्र मन्मशस्त्वा ८.१५.१२
यदिन्द्र यावतस्त्वं ७.३२.१८
यदिन्द्र राधो अस्ति ८.५४.५
यदिन्द्र सर्गे अर्वत: ६.४६.१३
यदिन्द्राग्नी अवमस्यां १.१०८.९
यदिन्द्राग्नी उदिता १.१०८.१२
यदिन्द्राग्नी जना इमे ८.४०.७
यदिन्द्राग्नी दिवि ष्ठो १.१०८.११
यदिन्द्राग्नी परमस्यां १.१०८.१०
यदिन्द्राग्नी मदथ: १.१०८.७
यदिन्द्राग्नी यदुषु १.१०८.८
यदिन्द्राहन्प्रथमजामहीनां १.३२.४
यदिन्द्राहं यथा त्वं ८.१४.१
यदिन्द्रेण सरथं याथो ८.९.१२
यदिन्द्रो अनयद्रितो ६.५७.४
यदिन्विन्द्र पृथिवी १.५२.११
यदि प्रवृद्ध सत्पते ८.१२.८
यदिमा वाजयन्नहं १०.९७.११
यदि मे रारण: सुत ८.३२.६
यदि मे सख्यमावर ८.१३.२१
यदि वाहमनृतदेव ७.१०४.१४
यदि स्तुतस्य मरुतो ७.५६.१५
यदि स्तोमं मम श्रवत् ८.१.१५
यदी घृतेभिराहुतो ८.१९.२३
यदीदहं युधये १०.२७.२
यदी मथ्नन्ति बाहुभि: ३.२९.६
यदी मातुरुप स्वसा २.५.६
यदीमिन्द्र श्रवाय्यं ५.३८.२
यदीमृतस्य पयसा १.७९.३
यदीमेनाँ उशतो ७.१०३.३
यदीशीयामृतानां १०.३३.८
यदी सुतेभिरिन्दुभि: ६.४२.३
यदीं गणस्य रशनामजीग: ५.१.३
यदीं सुतास इन्दवो ८.५०.३
यदीं सोमा बभ्रुधूता ५.३०.११
यदुत्तमे मरुतो ५.६०.६
यदुदञ्चो वृषाकपे १०.८६.२२
यदुदीरत आजयो १.८१.३
यदुद्वतो निवतो यासि १०.१४२.४
यदुलूको वदति मोघं १०.१६५.४
यदुष औच्छ: प्रथमा १०.५५.४
यदुषो यासि भानुना ८.९.१८
यदूवध्यमुदरस्य १.१६२.१०
यददेनमदधुर्यज्ञियासो १०.८८.११
यदेमि प्रस्फुरन्निव ७.८९.२
यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं ७.१०३.५
यदेषां पृषती रथे ८.७.२८
यद् गायत्रे अधि गायत्रं १.१६४.२३
यद् गोपावददिति: ७.६०.८
यद्धिषे प्रदिवि चार्वन्नं ७.९८.२
यद्धिषे मनस्यसि ८.४५.३१
यद्देवा अद: सलिले १०.७२.६
यद्देवानां मित्रमह: १.४४.१२
यद्देवापि: शंतनवे १०.९८.७
यद्देवा यतयो यथा १०.७२.७
यद्देवा: शर्म शरणं ८.४७.१०
यद् द्याव इन्द्र ते शतम् ८.७०.५
यद्ध त्यद्वां पुरुमीळ्हस्य १.१५१.२
यद्ध त्यन्मित्रावरुणा १.१३९.२
यद्ध नूनं परावति ८.५०.७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे ८.४९.७
यद्ध प्राचीरजगन्तोरो १०.१५५.४
यद्ध यान्ति मरुतः १.३७.१३
यद्धविष्यमृतुशो देवयानं १.१६२.४
यद्ध स्या त इन्द्र १.१७८.१
यद्युञ्जते मरुतो रुक्मवक्षसः २.३४.८
यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना १.१५७.२
यद्यूयं पृश्निमातरो १.३८.४
यद्योधया महतो मन्यमानः ७.९८.४
यद्रोदसी प्रदिवो अस्ति ६.६२.८
यद्वंहिष्ठं नातिविधे ५.६२.९
यद्वः श्रान्ताय सुन्वते ८.६७.६
यद्वा उ विश्पतिः ८.२३.१३
यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि ८.१००.१०
यद्वाजिनो दाम १.१६२.८
यद्वा तृक्षौ मघवन् ६.४६.८
यद्वा दिवि पार्ये सुष्विमिन्द्र ६.२३.२
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते ८.९३.५
यद्वा प्रस्रवणे दिवो ८.६५.२
यद्वाभिपित्वे असुरा ८.२७.२०
यद्वा मरुत्वः परमे सधस्थे १.१०१.८
यद्वा यज्ञं मनवे संमिमिक्ष ८.१०.२
यद्वा रुमे रुशमे ८.४.२
यद्वावन्थ पुरुष्टुत ८.६६.५
यद्वावान पुरुतमं १०.७४.६
यद्वा शक्र परावति ८.१२.१७
यद्वासि रोचने दिवः ८.९७.५
यद्वासि सुन्वतो वृधो ८.१२.१८
यद्वाहिष्ठं तदग्नये ५.२५.७
यद्वां कक्षीवाँ उत ८.९.१०
यद्विजामन्परुषि ७.५०.२
यद्विरूपाचरं मर्त्येषु १०.९५.१६
यद्वीळाविन्द्र यत्स्थिरे ८.४५.४१
यद् वृत्रं तव चाशनिं १.८०.१३
यद्वो देवाश्चकृम १०.३७.१२
यद्वो वयं प्रमिनाम १०.२.४
यत्र इन्द्रो जुजुषे ४.२२.१
यत्रासत्या पराके अर्वाके ८.९.१५
यत्रासत्या परावति ---अध्य ८.८.१४
यत्रासत्या परावति ---तुर्वशे १.४७.७
यत्रासत्या भुरण्यथो ८.९.६
यत्रियानं न्ययनं १०.१९.४
यत्रिर्णिजा रेक्णसा १.१६२.२
यत्रीक्षणं मांस्पचन्या १.१६२.१३
यत्नूनमश्यां गतिं ५.६४.३
यत्नूनं धीभिरश्विना ८.९.२१
यन्मन्यसे वरेण्यं ५.३९.२
यन्मरुतः सरभसः ५.५४.१०
यमग्निं मेध्यातिथिः १.३६.११
यमग्ने पृत्सु मर्त्यम् १.२७.७
यमग्ने मन्यसे रयिम् १०.२१.४
यमग्ने वाजसातम ५.२०.१
यमत्यमिव वाजिनं ९.६.५
यमश्विना ददथुः १.११६.६
यमश्वी नित्यमुपयाति ७.१.१२
यमस्य मा यम्यं १०.१०.७
यमा चिदत्र यमसूरसूत ३.३९.३
यमादहं वैवस्वतात् १०.६०.१०
यमादित्यासो अद्रुहः ८.१९.३४
यमापो अद्रयो वना ६.४८.५
यमाय घृतवद्धविः १०.१४.१४
यमाय मधुमत्तमं १०.१४.१५
यमाय सोमं सुनुत १०.१४.१३
यमासा कृपनीळं १०.२०.३
यमिन्द्र दधिषे ८.९७.२
यमिमं त्वं वृषाकपिं १०.८६.४
यमी गर्भमृतावृधो ९.१०२.६
यमीं द्वा सवयसा १.१४४.४
यमु पूर्वमहुवे २.३७.२
यमृत्विजो बहुधा ७.५८.१
यमेइव यतमाने १०.१३.२
यमेन दत्तं त्रित १.१६३.२
यमेरिरे भृगवो १.१४३.४
यमैच्छाम मनसा सो १०.५३.१
यमो नो गातुं प्रथमः १०.१४.२
यया गा आकरामहे १०.१५६.२
यया रध्रं पारयथा २.३४.१५
ययोरधि प्र यज्ञा ८.१०.४
यवंयवं नो अन्धसा ९.५५.१
यवं वृकेणाश्विना १.११७.२१
यश्चिकेत स सुक्रतुः ५.६५.१
यश्चिदापो महिना १०.१२१.८
यश्चिद्धि त इत्था १.२४.४
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्यः १.८४.९
यस्त इध्मं जभरत्सि ४.२.६
यस्त इन्द्र प्रियो जनो ७.२०.८
यस्त इन्द्र महीरपः ८.६.१६
यस्त ऊरू विहरति १०.१६२.४
यस्तस्तम्भ सहसा ४.५०.१
यस्ता चकार सह कुह ६.२१.४
यस्तिग्मशृङ्गो ७.१९.१
यस्तित्याज सचिविदं १०.७१.६
यस्तुभ्यमग्ने अमृताय दाशद् ४.२.९
यस्तुभ्यमग्ने अमृताय मर्त्यः १०.९१.११
यस्ते अग्ने नमसा ५.१२.६
यस्ते अग्ने सुमतिं मर्तो १०.११.७
यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचे १०.४५.९
यस्ते अनु स्वधामसत् ३.५१.११
यस्ते गर्भममीवा १०.१६२.२
यस्ते चित्रश्रवस्तमो ८.९२.१७
यस्ते द्रप्सः स्कन्दति १०.१७.१२
यस्ते द्रप्सः स्कन्नो १०.१७.१३
यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र ८.९२.१६
यस्ते भरादन्नियते ४.२.७
यस्ते मदः पृतनाषाळ् ६.१९.७
यस्ते मदो युज्यश्चारुः ७.२२.२
यस्ते मदो वरेण्यस्तेना ९.६१.१९
यस्ते मदो वरेण्यो य ८.४६.८
यस्ते मन्योऽविधद्वज्र १०.८३.१
यस्ते यज्ञेन समिधा ६.५.५
यस्ते रथो मनसो १०.११२.२
यस्ते रेवाँ अदाशुरिः ८.४५.१५
यस्ते शृङ्गवृषो ८.१७.१३
यस्ते साधिष्ठोऽवस इन्द्र ५.३५.१
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ते स्याम ८.५३.७
यस्ते सूनो सहसो ६.१३.४
यस्ते स्तनः शशयो १.१६४.४९
यस्ते हन्ति पतयन्तम् १०.१६२.३
यस्त्वद्धोता पूर्वो ३.१७.५
यस्त्वा देवि सरस्वति ६.६१.५
यस्त्वा दोषा य उषसि ४.२.८
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा १०.१६२.५
यस्त्वामग्न इनधते ४.१२.१
यस्त्वामग्ने हविष्पतिः १.१२.८
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा १०.१६२.६
यस्त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो ४.४.१०
यस्त्वा हृदा करिणा ५.४.१०
यस्पतिर्वार्याणामसि १०.२४.३
यस्मा अन्ये दश प्रति ८.३.२३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यस्मा अरासत क्षयं ८.४७.४
यस्मा अर्कं ससृशीर्षाणम् ८.५१.४
यस्मा ऊमासो अमृता १.१६६.३
यस्मादिन्द्राद् बृहतः २.१६.२
यस्मादृते न सिध्यति १.१८.७
यस्माद्रेजन्त कृष्टयः ८.१०३.३
यस्मान्न ऋते विजयन्ते २.१२.९
यस्मिन्देवा मन्मनि १०.१२.८
यस्मिन्देवा विदथे १०.१२.७
यस्मिन्नश्वास ऋषभासः १०.९१.१४
यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति ८.१६.२
यस्मिन्वयं दधिमा १०.४२.६
यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो ८.९२.२०
यस्मिन्विश्वानि काव्या ८.४१.६
यस्मिन्विश्वानि भुवनानि ७.१०१.४
यस्मिन्विश्वाश्चर्षणयः ८.२.३३
यस्मिन्वृक्षे मध्वदः १.१६४.२२
यस्मिन्वृक्षे सुपलाशे १०.१३५.१
यस्मै त्वमायजसे १.९४.२
यस्मै त्वं मघवन्निन्द्र ८.५२.८
यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे ८.५२.६
यस्मै त्वं वसो दानाय शिक्षसि ८.५१.६
यस्मै त्वं सुकृते ५.४.११
यस्मै त्वं सुद्रविणो १.९४.१५
यस्मै धायुरदधा ३.३०.७
यस्मै पुत्रासो अदितेः १०.१८५.३
यस्य गा अन्तरश्मनो ६.४३.३
यस्य गावावरुषा ६.२७.७
यस्य तीव्रसुतं मदम् ६.४३.२
यस्य ते अग्ने अन्ये ८.१९.३३
यस्य ते द्युम्नवत्पयः ९.६६.३०
यस्य ते नू चिदादशम् ८.९३.११
यस्य ते पीत्वा वृषभो ९.१०८.२
यस्य ते पूषन्सख्ये १.१३८.३
यस्य ते मद्यं रसम् ९.६५.१५
यस्य ते महिना महः ८.६८.३
यस्य ते विश्वमानुषो ८.४५.४२
यस्य ते विश्वा भुवनानि १०.३७.९
यस्य ते स्वादु सख्यम् ८.६८.११
यस्य त्यच्छम्बरं मदे ६.४३.१
यस्य त्यत्ते महिमानं १०.११२.४
यस्य त्यन्महित्वं वाताप्यं १०.२६.२
यस्य त्रिधात्ववृतं ८.१०२.१४
यस्य त्री पूर्णा मधुना १.१५४.४
यस्य त्वमग्ने अध्वरम् ४.२.१०
यस्य त्वमिन्द्र स्तोमेषु ८.५२.४
यस्य त्वमूर्ध्वो अध्वराय ८.१९.१०
यस्य दूतो असि क्षये १.७४.४
यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यं १.१०१.३
यस्य द्विबर्हसो बृहत् ८.१५.२
यस्य न इन्द्रः पिबाद्यस्य ९.१०८.१४
यस्य प्रयाणमन्वन्य ५.८१.३
यस्य प्रस्वादसो गिर १०.३३.६
यस्य मन्दानो अन्धसो ६.४३.४
यस्य मा परुषाः शतं ५.२७.५
यस्य मा हरितो रथे १०.३३.५
यस्य वर्णं मधुश्चुतम् ९.६५.८
यस्य वा यूयं प्रति ८.२०.१६
यस्य वायोरिव द्रवत् ६.४५.३२
यस्य विश्वानि हस्तयोः पञ्च १.१७६.३
यस्य विश्वानि हस्तयोरूचुः ६.४५.८
यस्य व्रते पृथिवी ५.८३.५
यस्य शर्मन्नुप विश्वे ७.६.६
यस्य शश्वत्पपिवाँ १०.११२.५
यस्य श्रवो रोदसि ७.१८.२४
यस्य श्वेता विचक्षणा ८.४१.९
यस्य संस्थे न वृण्वते १.५.४
यस्या अनन्तो अह्रुतः ६.६१.८
यस्याग्निर्वपुर्गृहे ८.१९.११
यस्याजस्रं शवसा १.१००.१४
यस्याजुषन्नमस्विनः ८.७५.१४
यस्या देवा उपस्थे ८.९४.२
यस्यानक्षा दुहिता १०.२७.११
यस्यानाप्तः सूर्यस्येव १.१००.२
यस्यानूना गभीरा ८.१६.४
यस्यामितानि वीर्या ८.२४.२१
यस्यायं विश्व आर्यो ८.५१.९
यस्या रुशन्तो १.४८.१३
यस्यावधीत्पितरं ५.३४.४
यस्याश्वासः प्रदिशि २.१२.७
यस्येक्ष्वाकुरुप व्रते १०.६०.४
यस्येमे हिमवन्तो १०.१२१.४
यस्यौषधीः प्रसर्पथा १०.९७.१२
यं कुमार नवं रथं १०.१३५.३
यं कुमार प्रावर्तयो १०.१३५.४
यं क्रन्दसी अवसा १०.१२१.६
यं क्रन्दसी संयती २.१२.८
यं जनासो हविष्मन्तो ८.७४.२
यं ते श्येनश्चारुमवृकं १०.१४४.५
यं ते श्येनः पदाभरत् ८.८२.९
यं त्रायध्व इदमिदं ७.५९.१
यं त्वमग्ने समदहः १०.१६.१३
यं त्वं रथमिन्द्र मेधसातये १.१२९.१
यं त्वं विप्र मेधसातौ ८.७१.५
यं त्वा गोपवनो गिरा ८.७४.११
यं त्वा जनास इन्धते ८.४३.२७
यं त्वा जनास ईळते ८.७४.१२
यं त्वा जनासो अभि संचरन्ति १०.४.२
यं त्वा देवा दधिरे १०.४६.१०
यं त्वा देवापिः शुशुचानो १०.९८.८
यं त्वा देवासो मनवे १.३६.१०
यं त्वा द्यावापृथिवी १०.२.७
यं त्वा पूर्वमीळितो १०.६९.४
यं त्वा वाजिन्नध्न्या ९.८०.२
यं देवासस्त्रिरहन् ३.४.२
यं देवासोऽजनयन्ताग्निं १०.८८.९
यं देवासोऽवथ--त्रायध्वे १०.३५.१४
यं देवासोऽवथ--शूरसाता १०.६३.१४
यं नु नकिः पृतनासु ३.४९.५
यं बाहुतेव पिप्रति १.४१.२
यं मर्त्यः पुरुस्पृहं ५.७.६
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः ८.३.२१
यं यज्ञं नयथा नरः १.४१.५
यं युवं दाश्वध्वराय देवा ६.६८.६
यं रक्षन्ति प्रचेतसो १.४१.१
यं वर्धयन्तीद्गिरः ६.४४.५
यं विप्रा उक्थवाहसो ८.१२.१३
यं वै सूर्यं स्वर्भानुः ५.४०.९
यं सीमकृण्वन्तमसे ४.१३.३
यं सीमनु प्रवतेव ४.३८.३
यं सुपर्णः परावतः १०.१४४.४
यं सोममिन्द्र पृथिवी ३.४६.५
यं स्मा पृच्छन्ति कुह २.१२.५
यः ककुभो नि धारयः ८.४१.४
यः कुक्षिः सोमपातमः १.८.७
यः कृन्तदिद्वि योन्यं ८.४५.३०
यः पञ्चचर्षणीरभि ७.१५.२
यः परस्याः परावतः १०.१८७.२
यः पावमानीरध्येति ९.६७.३१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

य: पुष्पिणीश्च २.१३.७
य: पूर्व्याय वेधसे १.१५६.२
य: पृथिवीं व्यथमानाम् २.१२.२
य: पौरुषेयेण क्रविषा १०.८७.१६
य: प्राणतो निमिषतो १०.१२१.३
य: शक्रो मृक्षो अश्व्य: ८.६६.३
य: शग्मस्तुविशग्म ते ६.४४.२
य: शम्बरं पर्वतेषु २.१२.११
य: शश्वतो महोनो २.१२.१०
य: शुक्रइव सूर्यो १.४३.५
य: शूरेभिर्हव्यो १.१०१.६
य: श्वेताँ अधिनिर्णिज: ८.४१.१०
य: सत्राहा विचर्षणि ६.४६.३
य: सप्तरश्मिर्वृषभ: २.१२.१२
य: समिधा य आहुती ८.१९.५
य: संस्थे चिच्छतक्रतु: ८.३२.११
य: सुनीथो ददाशुषे २.८.२
य: सुन्वते पचते २.१२.१५
य: सुन्वन्तमवति य: २.१२.१४
य: सुषव्य: सुदक्षिण: ८.३३.५
य: सृविन्दमनर्शनिं ८.३२.२
य: सोम: कलशेष्वाँ ९.१२.५
य: सोम सख्ये तव १.९१.१४
य: स्रीहितीषु पूर्व्य: १.७४.२
य: स्मारुन्धानो ४.३८.४
या आपो दिव्या ७.४९.२
या इन्द्र प्रस्वस्त्वासा ८.६.२०
या इन्द्र भुज आभर: ८.९७.१
या ओषधी: पूर्वा १०.९७.१
या ओषधी: सोमराज्ञीर्बह्वी: १०.९७.१८
या ओषधी: सोमराज्ञीर्विष्ठि: १०.९७.१९
या गुङ्गूर्या सिनीवाली २.३२.८
या गोमतीरुषस: १.११३.१८
या गौर्वर्तनिं पर्येति १०.६५.६
या जामयो वृष्ण ३.५७.३
या त ऊतिरमित्रहन् ६.४५.१४
या त ऊतिरवमा ६.२५.१
यातं छर्दिष्पा उत न: ८.९.११
याति देव: प्रवता १.३५.३
या ते अग्ने पर्वतस्येव ३.५७.६
या ते अष्ट्रा गोओपशा ६.५३.९
या ते काकुत्सुकृता यावरि ६.४१.२
या ते जिह्वा मधुमती ३.५७.५
या ते दिद्युदवसृष्टा ७.४६.३
या ते धामानि दिवि १.९१.४
या ते धामानि परमाणि १०.८१.५
या ते धामानि हविषा १.९१.१९
या ते भीमान्यायुधा ९.६१.३०
या दम्पती समनसा ८.३१.५
या दस्रा सिन्धुमातरा १.४६.२
यादृगेव ददृशे तादृगुच्यते ५.४४.६
या देवेषु तन्वमैरयन्त १०.१६९.३
याद्राध्यं वरुणो २.३८.८
या धर्तारा रजसो ५.६९.४
या धारयन्त देवा: ७.६६.२
या न: पीपरदश्विना १.४६.६
यानि स्थानान्यश्विना ७.७०.३
यानीन्द्राग्नी चक्रथुर्वीर्या १.१०८.५
या नु श्वेतावहो ८.४०.८
यान्राये मर्तान्त्सुषूदो १.७३.८
यान्वो नरो देवयन्तो ३.८.६
या पृतनासु दुष्टरा ५.८६.२
याभिरङ्गिरो मनसा १.११२.१८
याभिरन्तकं जसमानम् १.११२.६
याभिर्नरं गोषुयुधं १.११२.२२
याभिर्नरा त्रसदस्युं ८.८.२१
याभिर्नरा शयवे याभि: १.११२.१६
याभिर्महामतिथिग्वं १.११२.१४
याभिर्वभ्रं विपिपानं १.११२.१५
याभिर्विश्पलां धनसां १.११२.१०
याभि: कण्वमभिष्टिभि: १.४७.५
याभि: कण्वं मेधातिथिं ८.८.२०
याभि: कुत्समार्जुनेयं १.११२.२३
याभि: कृशानुमसने १.११२.२१
याभि: पक्थमवथो ८.२२.१०
याभि: पठर्वा जठरस्य १.११२.१७
याभि: पत्नीर्विमदाय १.११२.१९
याभि: परिज्मा तनयस्य १.११२.४
याभि: शचीभिर्वृषणा १.११२.८
याभि: शचीभिश्चमसाँ ३.६०.२
याभि: शंताती भवथो १.११२.२०
याभि: शुचन्तिं धनसां १.११२.७
याभि सिन्धुमवथ याभि ८.२०.२४
याभि: सिन्धुं मधुमन्तं १.११२.९
याभि: सुदानू औशिजाय १.११२.११
याभि: सूर्यं परियाथ: १.११२.१३
याभि: सोमो मोदते १०.३०.५
याभी रसां क्षोदसो १.११२.१२
याभी रेभं निवृतं १.११२.५
यामथर्वा मनुष्पिता १.८०.१६
यामं येष्ठा: शुभा शोभिष्ठा: ७.५६.६
या रुचो जातवेदसो १०.१८८.३
यावत्तरस्तन्वो ७.९१.४
यावदिदं भुवनं विश्वम् १.१०८.२
यावन्मात्रमुषसो १०.८८.१९
यावयद् द्वेषसं त्वा ४.५२.४
यावयद् द्वेषा ऋतपा १.११३.१२
यावया वृक्यं वृकं १०.१२७.६
या व: शर्म शशमानाय १.८५.१२
या वा ते सन्ति दाशुषे ७.३.८
या वां कशा मधुमति १.२२.३
या वां शतं नियुतो या: ७.९१.६
या वां सन्ति पुरु ---अस्मे ४.४७.४
या वां सन्ति पुरु ---इन्द्राग्नी ६.६०.८
यावित्था श्लोकमादिवो १.९२.१७
या विश्वासां जनितारा ६.६९.२
या वीर्याणि प्रथमानि १०.११३.७
या वृत्रहा परावति ८.४५.२५
या वो भेषजा मरुत: २.३३.१३
या वो माया अभिद्रुहे २.२७.१६
या शर्धाय मारुताय ६.४८.१२
याश्चेदमुपशृण्वन्ति १०.९७.२१
यासां तिस्र: पञ्चाशतो १.१३३.४
यासां राजा वरुणो ७.४९.३
यासि कुत्सेन सरथं ४.१६.११
या सुजूर्णि: श्रेणि: १०.९५.६
या सुनीथे शौचद्रथे ५.७९.२
या सुबाहु: स्वङ्गुरि: २.३२.७
या सुरथा रथीतमोभा १.२२.२
यासु राजा वरुणो यासु ७.४९.४
यास्ते धारा मधुश्चुतो ९.६२.७
यास्ते पूषन्नावो ६.५८.३
यास्ते प्रजा अमृतस्य १.४३.९
यास्ते राके सुमतय: २.३२.५
यॉं आभजो मरुत ३.३५.९
यां त्वा दिवो दुहित: ७.७७.६
यां पूषन्ब्रह्मचोदनीम् ६.५३.८
यां मे धियं मरुत १०.६४.१२
या: प्रवतो निवता ७.५०.४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या: फलिनीर्या १०.९७.१५
या: सरूपा विरूपा: १०.१६९.२
या: सूर्यो रश्मिभिरा ततान ७.४७.४
युक्तस्ते अस्तु दक्षिण १.८२.५
युक्ता मातासीद् धुरि दक्षि १.१६४.९
युक्तो ह यद्वां तौग्र्याय १.१५८.३
युङ्क्ष्वा हि केशिना हरी १.१०.३
युक्ष्वा हि त्वं रथासहा ८.२६.२०
युक्ष्वा हि देवहूतमाँ ८.७५.१
युक्ष्वा हि वाजिनीवती १.९२.१५
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम ८.३.१७
युक्ष्वा ह्यरुषी रथे १.१४.१२
युगेयुगे विदथ्यं गृणद्भ्य: ६.८.५
युङ्ग्ध्वं ह्यरुषी रथे ५.५६.६
युजं हि मामकृथा आदिदि ५.३०.८
युजा कर्माणि जनयन् १०.५५.८
युजानो अश्वा वातस्य १०.२२.४
युजानो हरिता रथे ६.४७.१९
युजे रथं गवेषणं हरिभ्यां ७.२३.३
युजे वां ब्रह्म पूर्व्यम् १०.१३.१
युञ्जते मन उत युञ्जते ५.८१.१
युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषम् १.६.१
युञ्जन्ति हरी इषिरस्य ८.९८.९
युञ्जन्त्यस्य काम्या १.६.२
युञ्जाथां रासभं रथे ८.८५.७
यथा युधमुप घेदेषि १.५३.७
युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार ३.३४.७
युध्मं सन्तमनर्वाणं ८.९२.८
युध्मस्य ते वृषभस्य ३.४६.१
युध्मो अनर्वा खजकृत् ७.२०.३
युनक्त सीरा वि युगा १०.१०१.३
युनज्मि ते ब्रह्मणा १.८२.६
युयूषत: सवयसा १.१४४.३
युयोता शरुमस्मदाँ ८.१८.११
युयोप नाभिरुपरस्यायो: १.१०४.४
युवमत्यस्याव नक्षथो १.१८०.२
युवमत्रयेऽवनीताय तप्तं १.११८.७
युवमेतं चक्रथु: सिन्धुषु प्लवं १.१८२.५
युवमेतानि दिवि १.९३.५
युवं कण्वाय नासत्या ८.५.२३
युवं कवी ष्ठ: पर्यश्विना १०.४०.६
युवं चित्रं ददथुर्भोजनं ७.७४.२
युवं च्यवाममश्विना १.११७.१३
युवं च्यवानं जरसो ७.७१.५
युवं च्यवानं सनयं १०.३९.४
युवं तमिन्द्रपर्वता १.१३२.६
युवं तासां दिव्यस्य १.११२.३
युवं तुग्राय पूर्व्येभिरेवै: १.११७.१४
युवं दक्षं धृतव्रता ८.१५.६
युवं देवा क्रतुना ८.५७.१
युवं धेनुं शयवे १.११८.८
युवं नरा स्तुवते कृष्णियाय १.११७.७
युवं नरा स्तुवते पज्रियाय १.११६.७
युवं नो येषु वरुण ५.६४.६
युवं पय उस्रियायामधत्तं १.१८०.३
युवं पेदवे पुरुवारमश्विना १.११९.१०
युवं प्रत्नस्य साधथो ३.३८.९
युवं भुज्युमवविद्धं ७.६९.७
युवं भुज्युं भुरमाणं १.११९.४
युवं भुज्युं समुद्र १०.१४३.५
युवं मित्रेमं जनं ५.६५.६
युवं मृगं जागृवांसं ८.५.३६
युवं रथेन विमदाय १०.३९.७
युवं रेभं परिषूतेरुरुष्यथ: १.११९.६
युवं वन्दनं निर्ऋतं १.११९.७
युवं वरो सुषाम्णे ८.२६.२
युवं वस्त्राणि पीवसा १.१५२.१
युवं विप्रस्य जरणां १०.३९.८
युवं शक्रा मायाविना १०.२४.४
युवं श्यावाय रुशतीमदत्तं १.११७.८
युवं श्रियमश्विना देवताता ४.४४.२
युवं श्रीभिर्दर्शताभि: ६.६३.६
युवं श्वेतं पेदव इन्द्रजूतं १.११८.९
युवं श्वेतं पेदवेऽश्विना १०.३९.१०
युवं सुराममश्विना १०.१३१.४
युवं ह कृशं युवमश्विना १०.४०.८
युवं ह गर्भं जगतीषु १.१५७.५
युवं ह घर्मं मधुमन्तमत्रये १.१८०.४
युवं ह भुज्युं युवमश्विना १०.४०.७
युवं ह रेभं वृषणा १०.३९.९
युवं ह स्थो भिषजा १.१५७.६
युवं हि ष्मा पुरुभुजेममेधतुं ८.८६.३
युवं हि स्थ: स्वर्पती ९.१९.२
युवं ह्यप्रराजावसीदतं १०.१३२.७
युवं ह्यास्तं महो रन्युवं १.१२०.७
युवाकु हि शचीनां १.१७.४
युवादत्तस्य धिष्ण्या ८.२६.१२
युवानं विश्पतिं कविं ८.४४.२६
युवाना पितरा पुन: १.२०.४
युवानो रुद्रा अजरा १.६४.३
युवाभ्यां देवी धिषणा १.१०९.४
युवाभ्यां मित्रावरणोपमं ५.६४.४
युवाभ्यां वाजिनीवसु ८.५.३
युवामिद्धयवसे पूर्व्याय ४.४१.७
युवामिद्युत्सु पृतनासु ७.८२.४
युवामिन्द्राग्री वसुनो १.१०९.५
युवा स मारुतो गण: ५.६१.१३
वा सुवासा: परिवीत ३.८.४
युवां गोतम: पुरुमीळ्हो १.१८३.५
युवां चिद्धि ष्माश्विनावनु १.१८०.८
युवां देवास्त्रय ८.५७.२
युवां नरा पश्यमानास: ७.८३.१
युवां पूषेवाश्विना १.१८१.९
युवां मृगेव वारणा १०.४०.४
युवां यज्ञै: प्रथमा १.१५१.८
युवां स्तोमेभिर्देवयन्तो १.१३९.३
युवां ह घोषा पर्यश्विना १०.४०.५
युवां हवन्त उभयास ७.८३.६
युवो: श्रियं परि योषा ७.६९.४
युवो रजांसि सुयमासो १.१८०.१
युवोरत्रिश्चिकेतति ५.७३.६
युवो रथस्य परि ८.२२.४
युवोरश्विना वपुषे १.११९.५
युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति द्यौ: ७.८४.२
युवोरुषा अनु श्रियं १.४६.१४
युवोरु षू रथं हुवे ८.२६.१
युवोर्ऋतं रोदसी ३.५४.३
युवोर्दानाय सुभरा १.११२.२
युवोर्यदि सख्यायास्मे १०.६१.२५
युवोर्हि मातादिति: १०.१३२.६
युष्माकं देवा अवसाहनि ७.५९.२
युष्माकं बुध्ने अपां १०.७७.४
युष्माकं स्मा रथाँ ५.५३.५
युष्मादत्तस्य मरुतो ५.५४.१३
युष्माँ उ नक्तं ८.७.६
युष्मे देवा अपि ष्मसि ८.४७.८
युष्मेषितो मरुतो १.३९.८
युष्मोतो विप्रो मरुत: ७.५८.४
यून ऊ षु नविष्ठया ८.२०.१९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूपव्रस्का उत ये १.१६२.६
यूयमस्मभ्यं धिषणाभ्यः ४.३६.८
यूयमस्मान्नयत वस्यो ५.५५.१०
यूयं गावो मेदयथा कृशं ६.२८.६
यूयं तत्सत्यशवस १.८६.९
यूयं देवाः प्रमतिर्यूयं २.२९.२
यूयं धूर्षु प्रयुजो न १०.७७.५
यूयं न उग्रा मरुतः १.१६६.६
यूयं मर्तं विपन्यवः ५.६१.१५
यूयं रयिं मरुतः ५.५४.१४
यूयं राजानः कं चिच्चर्षणी ८.१९.३५
यूयं राजानमिर्यं जनाय ५.५८.४
यूयं विश्वं परि पाथ १०.१२६.४
यूयं ह रत्न मघवत्सु ७.३७.२
यूयं हि देवीर्ऋतयुग्भिरश्वैः ४.५१.५
यूयं हि ष्ठा सुदा---अधा चिद् ८.८३.९
यूयं हि ष्ठा सुदा---कर्ता ६.५१.१५
यूयं हि ष्ठा सुदानवो रुद्रा ८.७.१२
ये अग्नयो न शोशुचन् ६.६६.२
ये अग्निदग्धा ये अनग्नि १०.१५.१४
ये अग्ने चन्द्र ते गिरः ५.१०.४
ये अग्ने नेरयन्ति ते ५.२०.२
ये अग्नेः परि जज्ञिरे १०.६२.६
ये अञ्जिषु ये वाशीषु ५.५३.४
ये अर्वाञ्चस्ताँ १.१६४.१९
ये अश्विना ये पितरा ४.३४.९
ये अंस्या ये अङ्ग्या १.१९१.७
ये के च ज्मा महिनो ६.५२.१५
ये गव्यता मनसा शत्रुम् ६.४६.१०
ये गोमन्तं वाजवन्तं सुवीरं ४.३४.१०
ये च पूर्व ऋषयो ये ७.२२.९
ये चाकनन्त चाकनन्त ५.३१.१३
ये चार्हन्ति मरुतः सुदानवः ८.२०.१८
ये चित्पूर्व ऋतसाप १०.१५४.४
ये चिद्धि त्वामृषयः पूर्वे १.४८.१४
ये चिद्धि पूर्व ऋतसाप १.१७९.२
ये चिद्धि मृत्युबन्धव ८.१८.२२
ये चेह पितरो ये १०.१५.१३
ये तातृषुर्देवत्रा १०.१५.९
ये ते त्रिरहन्त्सवितः ४.५४.६
ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासः १.३५.११
ये ते पवित्रमूर्मयो ९.६१.५
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः १०.५०.७
ये ते वृषणो वृषभासः १.१७७.२
ये ते शुक्रासः शुचयः ६.६.४
ये ते शुष्मं ये तविषीम् ३.३२.३
ये ते सन्ति दशग्विनः ८.१.९
ये ते सरस्व ऊर्मयो ७.९६.५
ये त्रिंशति त्रयस्परो ८.२८.१
ये त्वा देवोस्निकं मन्ये १.१९०.५
ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुः ८.६.१२
ये त्वाहिहत्ये मघवन् ३.४७.४
ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां ७.३५.१५
ये देवास इह स्थन विश्वे ८.३०.४
ये देवासो अभवता सुकृत्या ४.३५.८
ये देवासो दिव्येकादश १.१३९.११
ये द्रप्साइव रोदसी ८.७.१६
येन चष्टे वरुणो मित्रो ८.१९.१६
येन ज्योतींष्यायवे ८.१५.५
येन तोकाय तनयाय ५.५३.१३
येन दीर्घं मरुतः १.१६६.१४
येन द्यौरुग्रा पृथिवी १०.१२१.५
येन मानासश्चितयन्त १.१७१.५
येन वंसाम पृतनासु ८.६०.१२
येन वृद्धो न शवसा ६.४४.३
येन सिन्धुं महीरपो ८.१२.३
येन सूर्य ज्योतिषा १०.३७.४
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासो १०.१५.८
ये नः सपत्ला अप ते १०.१२८.९
ये नाकस्याधि रोचने १.१९.६
येना दशग्वमध्रिगुं ८.१२.२
येना नवग्वो दध्यङ् ९.१०८.४
येना पावक चक्षसा १.५०.६
येनाव तर्वशं यदुं ८.७.१८
येना समुद्रमसृजो ८.३.१०
येनेन्द्रो हविषा --असपत्नः १०.१७४.४
येनेन्द्रो हविषा --असपत्ना १०.१५९.४
येनेमा विश्वा च्यवना २.१२.४
ये पाकशंसं विहरन्त ७.१०४.९
ये पातयन्ते अज्मभिर्गिरीणां ८.४६.१८
ये पायवो मामतेयं १.१४७.३,४.४.१३
ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः १.३७.२
येभिस्तिस्रः परावतो ८.५.८
येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानः ६.१७.५
येभ्यो माता मधुमत् १०.६३.३
येभ्यो होत्रां प्रथमां १०.६३.७
ये महो रजसो विदुः १.१९.३
ये मूर्धानः क्षितीनां ८.६७.१३
ये मे पञ्चाशतं ददुः ५.१८.५
ये यजत्रा य ईड्याः १.१४.८
ये यज्ञेन दक्षिणया १०.६२.१
ये युध्यन्ते प्रधनेषु १०.१५४.३
ये राधांसि ददत्यश्व्या ७.१६.१०
ये वध्वश्चन्द्रं वहतुं १०.८५.३१
ये वाजिनं परिपश्यन्ति १.१६२.१२
ये वायव इन्द्रमादनास ७.९२.४
ये वावृधन्त पार्थिवा ५.५२.७
ये वां दंसांस्यश्विना ८.९.३
ये वृक्णासो अधि क्षमि ३.८.७
ये शुभ्रा घोरवर्पसः १.१९.५
येषामज्मेषु पृथिवी १.३७.८
येषामर्णो न सप्रथो ८.२०.१३
येषामाबाध ऋग्मिय ८.२३.३
येषामिळा घृतहस्ता ७.१६.८
येषां श्रियाधि रोदसी ५.६१.१२
ये सत्यासो हविरदो १०.१५.१०
ये सवितुः सत्यसवस्य १०.३६.१३
ये सोमासः परा---ये वादः ९.६५.२२
ये सोमासः परा---सर्वास्ताँ ८.९३.६
ये स्तोतृभ्यो गोअग्राम् २.१.१६
२.२.१३
ये स्या मनोर्यज्ञियास्ते १०.३६.१०
ये ह त्ये ते सहमानाः ४.६.१०
ये हरी मेधयोक्था ४.३३.१०
यो अग्निं तन्वो दमे ८.४४.१५
यो अग्निं देववीतये १.१२.९
यो अग्निं हव्यदातिभिः ८.१९.१३
यो अग्निः कव्यवाहनः १०.१६.११
या अग्निः क्रव्यात्प्रविवेश १०.१६.१०
यो अग्निः ससमानुषः ८.३९.८
यो अग्नीषोमा हविषा १.९३.८
यो अत्यइव मृज्यते ९.४३.१
यो अदधाज्ज्योतिषि १०.५४.६
यो अद्रिभित्प्रथमजा ६.७३.१
यो अध्वरेषु शन्तम १.७७.२
यो अनिध्मो दीदयत् १०.३०.४
यो अपाचीने तमसि ७.६.४
यो अप्सु चन्द्रमाइव ८.८२.८
यो अप्स्वा शुचिना दैव्येन २.३५.८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यो अर्यो मर्तभोजनं १.८१.६
यो अश्वस्य दधिक्राव्णो ४.३९.३
यो अश्वानां यो गवां गोपति १.१०१.४
यो अश्वेभिर्वहते ८.४६.२६
यो अस्मा अन्नं तृषु १०.७९.५
यो अस्मै भ्रंस उत वा ५.३४.३
यो अस्मै हविषाविधन् ४.५४.४
यो अस्मै हव्यदातिभिः ८.२३.२१
यो अस्मै हव्यैर्घृत २:२६.४
यो अस्य पारे रजसः १०.१८७.५
योगक्षेमं व आदायाहं १०.१६६.५
यो गर्भमोषधीनां ७.१०२.२
यो गृणतामिदासिथापिः ६.४५.१७
योगेयोगे तवस्तरं १.३०.७
यो जज्ञान्महिषाँइवा १०.६०.३
यो जागार तमृचः ५.४४.१४
यो जात एव प्रथमो २.१२.१
यो जिनाति न जीयते ९.५५.४
यो दभ्रेभिर्हव्यो यश्च १०.३८.४
यो दुष्टरो विश्ववार ८.४६.९
यो देवो देवतमो ४.२२.३
यो देह्योऽ अनमयद्वधस्नैः ७.६.५
योद्धासि क्रत्वा शवसो ८.८८.४
यो धर्ता भुवनानां ८.४१.५
यो धारया पावकया ९.१०१.२
यो धृषितो योऽवृतो ८.३३.६
यो न आगो अभ्येनो ५.३.७
यो न इदमिदं पुरा ८.२१.९
यो न इन्दुः पितरो ८.४८.१२
यो न इन्द्राभितो जनो १०.१३३.४
यो न इन्द्राभिदासति १०.१३३.५
यो नन्त्वान्यनमन् २.२४.२
यो नः कश्चिद्रिरिक्षति ८.१८.१३
यो नः पिता जनिता १०.८२.३
यो नः पूषन्नघो वृकः १.४२.२
यो नः शश्वत्पुराविथा ८.८०.२
यो नः सनुत्य उत २.३०.९
यो नः सनुत्यो अभिदासत् ६.५.४
यो नः स्वो अरणो ६.७५.१९
यो नार्मरं सहवसुं २.१३.८
योनिमेक आ ससाद ८.२९.२
योनिष्ट इन्द्र निषदे १.१०४.१
योनिष्ट इन्द्र सदने ७.२४.१
यो नो अग्ने अररिवाँ १.१४७.४
यो नो अग्ने दुरेव आ ६.१६.३१
यो नो अग्नेऽभिदासति १.७९.११
यो नो दाता वसूनां ८.५१.५
यो नो दाता स नः पिता ८.५२.५
यो नो दास आर्यो वा १०.३८.३
यो नो देवः परावतः ८.१२.६
यो नो मरुतो अभि दुर्हृणायुः ७.५९.८
यो नो मरुतो वृकतति २.३४.९
यो नो रसं दिप्सति ७.१०४.१०
यो ब्रह्मणे सुमतिमायजाते ७.६०.११
यो भानुभिर्विभावा १०.६.२
यो भूयिष्ठं नासत्याभ्यां ५.७७.४
यो भोजनं च दयसे २.१३.६
यो म इति प्रवोचति ५.२७.४
यो म इमं चिदु त्मना ८.४६.२७
यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा ४.२.१
यो मा पाकेन मनसा ७.१०४.८
यो मायातुं यातुधानेत्याह ७.१०४.१६
यो मित्राय वरुणायाविधत् १.१३६.५
यो मृळयाति चक्रुषे ७.८७.७
यो मे धेनूनां शतं ५.६१.१०
यो मे राजन् युज्यो २.२८.१०
यो मे शता च विंशतिं ५.२७.२
यो मे हिरण्यसंदृशो ८.५.३८
यो यजाति यजात ८.३१.१
यो यज्ञस्य प्रसाधनः १०.५७.२
यो यज्ञो विश्वतस्तन्तुभिः १.१३०.१
यो रक्षांसि निजूर्वति १०.१८७.३
यो रजांसि विममे ६.४९.१३
यो रध्रस्य चोदिता २.१२.६
यो रयिवो रयिन्तमो ६.४४.१
यो राजभ्य ऋतनिभ्यो २.२७.१२
यो राजा चर्षणीनां ८.७०.१
यो रायो--- तमिन्द्रम् ८.३२.१३
यो रायो--- तस्मा इन्द्राय १.४.१०
यो रेवान्यो अमीवहा १.१८.२
यो रोहितौ वाजिनौ ५.३६.६
योऽवरे वृजने विश्वथा २.२४.११
यो वर्धन ओषधीनां ७.१०१.२
यो वः शिवतमो रसः १०.९.२
यो वः सुनोत्यभिपित्वे ४.३५.६
यो वः सेनानीर्महतो १०.३४.१२
यो वाघते ददाति सूनरं १.४०.४
यो वाचा विवाचो १०.२३.५
यो वामश्विना मनसो १.११७.२
यो वामुरुव्यचस्तमं ८.२६.१४
यो वामृजवे क्रमणाय ६.७०.३
यो वां गर्तं मनसा ७.६४.४
यो वां नासत्यावृषि ८.८.१५
यो वां परिज्मा सुवृत् १०.३९.१
यो वां यज्ञेभिरावृतो ८.२६.१३
यो वां यज्ञैः शशमानो १.१५१.७
यो वां यज्ञो नासत्या ७.७०.६
यो वां रजांस्यश्विना ८.७३.१३
यो वां रथो नृपती ७.७१.४
यो विश्वतः सुप्रतीकः १.९४.७
यो विश्वस्य जगतः १.१०१.५
यो विश्वा दयते ८.१०३.६
यो विश्वान्यभि व्रता ८.३२.२८
यो विश्वाभि---स नः पर्षत् १०.१८७.४
यो विश्वाभि---स नः पूषा ३.६२.९
यो वृत्राय सिनमत्राभिः २.३०.२
यो वेदिष्ठो अव्यथिषु ८.२.२४
यो वो देवा घृतस्नुना ६.५२.८
यो वो वृताभ्यो अकृणोत् १०.३०.७
यो व्यतीँरफाणयत् ८.६९.१३
यो व्यंसं जाह्षाणेन १.१०१.२
यो हत्वाहिमरिणात् २.१२.३
यो ह वां मधुनो दृतिः ८.५.१९
यो हव्यान्यैरयता मनुर्हितः ८.१९.२४
यो ह स्य वां रथिरा ७.६९.५
यो होतासीत्प्रथमो १०.८८.४
यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ १०.१४.११

र

रक्षा णो अग्ने तव ४.३.१४
रक्षा सु नो अररुषः ९.२९.५
रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्मि १०.८७.१
रक्षोहा विश्वचर्षणिः ९.१.२
रण्वः संदृष्टौ पितुमाँ १०.६४.११
रथवाहनं हविरस्य ६.७५.८
रथं नु मारुतं वयं ५.५६.८
रथं यान्तं कुह १०.४०.१
रथं युञ्जते मरुतः ५.६३.५
रथं ये चक्रुः सुवृतं नरेष्ठां ४.३३.८
रथं ये चक्रुः सुवृतं सुचेतसो ४.३६.२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रथं वामनुगायसं ८.५.३४
रथं हिरण्यवन्धुरमिन्द्रवायू ४.४६.४
रथं हिरण्यवन्धुरं हिरण्याभी ८.५.२८
रथानां न येऽरा: १०.७८.४
रथाय नावमुत नो १.१४०.१२
रथिरासो हरयो ८.५०.८
रथीतमं कपर्दिनं ६.५५.२
रथीव कशयाश्वाँ ५.८३.३
रथे तिष्ठन्नयति ६.७५.६
रथेन पृथुपाजसा ४.४६.५
रथेष्ठायाध्वर्यव: ८.४.१३
रथो न यात: शिक्वभि: १.१४१.८
रथो यो वां त्रिवन्धुरो ८.२२.५
रदत्पथो वरुण: ७.८७.१
रपत्कविरिन्द्रार्कसातौ १.१७४.७
रपद्गन्धर्वीरप्या १०.११.२
रमध्वं मे वचसे ३.३३.५
रयिर्न चित्रा सूरो १:६६.१
रयिर्न य: पितृवित्तो १.७३.१
रयिं दिवो दुहितरो ४.५१.१०
रयिं नश्चित्रमश्विनं ९.४.१०
रयिं सुक्षत्रं स्वपत्यं १.११६.१९
ररे हव्यं मतिभिर्यज्ञियानां ७.३९.६
रश्मीँरिव यच्छतमध्वराँ ८.३५.२१
रसं ते मित्रो अर्यमा ९.६४.२४
रसाय्य: पयसा पिन्वमान ९.९७.१४
राकामहं सुहवां सुष्टुती २.३२.४
राजन्तमध्वराणां १.१.८
राजानावनभिद्रुहा २.४१.५
राजानो न प्रशस्तिभि: ९.१०.३
राजा मेधाभिरीयते ९.६५.१६
राजा राष्ट्रानां पेशो नदीनां ७.३४.११
राजा समुद्रं नद्यो ९.८६.८
राजा सिन्धूनामवसिष्ट ९.८९.२
राजा सिन्धूनां पवते ९.८६.३३
राजेव हि जनिभि: ७.१८.२
राज्ञो नु ते वरुणस्य १.९१.३,९.८८.८
रातिं यद्वामरक्षसं ८.१०१.८
रात्रीभिरस्मा अहभि: १०.१०.९
रात्री व्यख्यदायती १०.१२७.१
रायस्कामो वज्रहस्तं ७.३२.३
रायस्पूर्धि स्वधावो १.३६.१२
राय: समुद्राँश्चतुरो ९.३३.६
राया वयं ससवांसो ४.४२.१०
राया हिरण्यया मति: ७.६६.८
राये नु यं जज्ञतू ७.९०.३
रायो धारास्याघृणे ६.५५.३
रायो बुध्न:---यज्ञस्य १.९६.६
रायो बुध्न:---विश्वा रूपाभि १०.१३९.३
रारन्धि सवनेषु ण ३.४१.४
रासि क्षयं रासि मित्र २.११.१४
रिशादस: सत्पतीँरदब्धा ६.५१.४
रुजा दृळ्हा चिद्रक्षस: ९.९१.४
रुद्रस्य ये मीळ्हुष: ६.६६.३
रुद्राणामेति प्रदिशा १.१०१.७
रुवति भीमो वृषभ: ९.७०.७
रुशद्वत्सा रुशती १.११३.२
रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव ६.४७.१८
रूपंरूपं मघवा ३.५३.८
रेभदत्र जनुषा पूर्व: १०.९२.१५
रेवतीर्न: सधमाद १.३०.१३
रेवद्वयो दधाथे १.१५१.९
रेवाँ इद्रेवत: स्तोता ८.२.१३
रैभ्यासीदनुदेयी १०.८५.६
रोदसी आ वदता १.६४.९
रोहिच्छ्यावा १.१००.१६
रोहितं मे पाकस्थामा ८.३.२२

व

वक्ष्यन्तीवेदा ६.७५.३
वचो दीर्घप्रसद्मनीशे ८.२५.२०
वचोविदं वाचमुदीरयन्तीं ८.१०१.१६
वच्यन्ते वां ककुहासो १.४६.३
वज्रमेको बिभर्ति ८.२९.४
वज्रं यश्चक्रे सुहनाय १०.१०५.७
वज्रेण हि वृत्रहा वृत्रं १०.१११.६
वद्या सूनो सहसो ६.१३.६
वद्या हि सूनो अस्य ६.४.४
वधीदिन्द्रो वरशिखस्य ६.२७.५
वधीर्हि दस्युं धनिनं १.३३.४
वधीं वृत्रं मरुत १.१६५.८
वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति ५.३७.३
वधेन दस्युं प्र हि ५.४.६
वधैर्दु:शंसाँ अप १.९४.९
वनस्पतिरवसृजन्नुप २.३.१०
वनस्पतिं पवमान ९.५.१०
वनस्पते रशनया नियूया १०.७०.१०
वनस्पतेऽवसृजोप देवान् ३.४.१०
७.२.१०
वनस्पते वीड्वंगो हि भूया: ६.४७.२६
वनस्पते शतवल्शो ३.८.११
वनीवानो मम दूतास १०.४७.७
वने न वा यो न्यधायि १०.२९.१
वनेम तद्धोत्रया १.१२९.७
वनेम पूर्वीरर्यो १.७०.१
वनेषु जायुर्मर्तेषु १.६७.१
वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान ५.८५.२
वनोति हि सुन्वन् १.१३३.७
वन्दस्व मारुतं गणम् १.३८.१५
वन्वन्नवातो अभि ९.८९.७
वपन्ति मरुतो मिहं ८.७.४
वपुर्न तच्चिकितुषे ६.६६.१
वप्रीभि: पुत्रमग्रुवो ४.१९.९
वयमग्ने अर्वता २.२.१०
वयमग्ने वनुयाम ५.३.६
वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा १.१६७.१०
वयमिद्ध: सुदानव: ८.८३.६
वयमिन्द्र त्वायव: सखित्वं १०.१३३.६
वयमिन्द्र त्वायवोऽभि ७.३१.४
वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो ३.४१.७
वयमिन्द्र त्वे सचा ४.३२.४
वयमु त्वा गृहपते ६.१५.१९
वयमु त्वा तदिदर्था ८.२.१६
वयमु त्वा दिवा ८.६४.६
वयमु त्वा पथस्पते ६.५३.१
वयमु त्वामपूर्व्य ८.२१.१
वयमु त्वा शतक्रतो ८.९२.१२
वयमेनमिदा ह्योऽ पीपेमेह ८.६६.७
वयश्चित्ते पतत्रिणो १.४९.३
वयं घ त्वा सुतावन्त: ८.३३.१
वयं घा ते अपि ष्मसि ८.३२.७
वयं घा ते अपूर्व्येन्द्र ८.६६.११
वयं घा ते त्वे इत् ८.६६.१३
वयं चिद्धि वां जरितार: १.१८०.७
वयं जयेम त्वया युजा १.१०२.४
वयं त इन्द्र स्तोमेभि: ८.५४.८
वयं त एभि: पुरुहूत ६.१९.१३
वयं तद्व: समाज ८.२७.२२
वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम ५.४.७
वयं ते अग्ने समिधा ७.१४.२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वयं ते अद्य ररिमा ३.१४.५
वयं ते अस्य वृत्रहन् वसो ९.९८.५
वयं ते अस्य वृत्रहन् विद्याम ८.२४.८
वयं ते अस्यामिन्द्र ६.२६.८
वयं ते त इन्द्र ये च देव ७.३०.४
वयं ते त इन्द्र ये च नरः ५.३३.५
वयं ते वय इन्द्र २.२०.१
वयं नाम प्र ब्रवामा ४.५८.२
वयं मित्रस्यावसि ५.६५.५
वयं वो वृक्तबर्हिषो ८.२७.७
वयं शूरेभिरस्तृभिः १.८.४
वयं सोम व्रते तव १०.५७.६
वयं हि ते अमन्महि १.३०.२१
वयं हि त्वा बन्धुमन्तं ८.२१.४
वयं हि वां हवामह उक्ष ८.३६.९
वयं हि वां हवामहे विपन्यवो ८.८७.६
वयः सुपर्णाः उप सेदुः १०.७३.११
वया इदग्ने अग्नयस्ते १.५९.१
वयो न ये श्रेणीः ५.५९.७
वयो न वृक्षं सुपलाशं १०.४३.४
वराइवेद्रैवतासो हिरण्यैः ५.६०.४
वरिवोधातमो भव ९.१.३
वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे ६.४७.९
वरिष्ठो अस्य दक्षिणां ६.३७.४
वरुणं वो रिशादसं ५.६४.१
वरुणः प्राविता भुवन् १.२३.६
वरुणो मित्रो अर्यमा ८.२८.२
वरेथे अग्निमातपो ८.७३.८
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत ८.१३.२५
वर्धाद्यं यज्ञ उत ६.३८.४
वर्धान्यं पूर्वीः क्षपो १.७०.४
वर्धान्यं विश्वे मरुतः ६.१७.११
वर्षिष्ठ क्षत्रा उरुचक्षसा ८.१०१.२
ववक्ष इन्द्रो अमितं ४.१६.५
ववक्षुरस्य केतवो ८.१२.७
वव्राजा सीमनदतीः ३.१.६
वव्रासो न ये स्वजाः १.१६८.२
वषट् ते विष्णवास ७.९९.७,१००.७
वसां राजानं वसतिं ५.२.६
वसिष्ठं ह वरुणो ७.८८.४
वसिष्ठासः पितृवत् १०.६६.१४
वसिष्वा हि मियेध्य १.२६.१
वसुरग्निर्वसुश्रवा ५.२४.२
वसुर्वसुपतिर्हि कं ८.४४.२४
वसुं न चित्रमहसं १०.१२२.१
वसूनां वा चर्कृष १०.७४.१
वसू रुद्रा पुरुमन्तू १.१५८.१
वसोरिन्द्रं वसुपतिं १.९.९
वस्याँ इन्द्रासि मे पितुः ८.१.६
वस्वी ते अग्ने संदृष्टिः ६.१६.२५
वह कुत्समिन्द्र यस्मिन् १.१७४.५
वहन्ति सीमरुणासो ६.६४.३
वहन्तु त्वा मनोयुजा ४.४८.४
वहन्तु त्वा रथेष्ठां ८.३३.१४
वहिष्ठेभिर्विहरन् ४.१३.४
वह्निं यशसं विदथस्य १.६०.१
वंसगेव पूषर्या १०.१०६.५
वंस्व विश्वा वार्याणि ७.१७.५
वंस्वा नो वार्या पुरु ८.२३.२७
वाचमष्टापदीमहं ८.७६.१२
वाचस्पतिं विश्वकर्माणं १०.८१.७
वाचं सु मित्रावरुणाविरावतीं ५.६३.६
वाचो जन्तुः कवीनां ९.६७.१३
वाजयन्निव नू रथान् २.८.१
वाजिनीवती सूर्यस्य यो ७.७५.५
वाजिन्तमाय सह्यसे १०.११५.६
वाजी वाजेषु धीयते ३.२७.८
वाजेभिर्नो वाजसातौ १.११०.९
वाजेवाजेऽवत वाजिनो ७.३८.८
वाजेषु सासहिर्भव ३.३७.६
वाजो नु ते शवसस्पात्वन्तं ५.१५.५
वाज्यसि वाजिनेना १०.५६.३
वात आ वातु भेषजं १०.१८६.१
वातत्विषो मरुतो वर्षनिः ५.५७.४
वातस्य नु महिमानं १०.१६८.१
वातस्य पत्मन्नीळिता ५.५.७
वातस्य युक्तान्त्सुयुजश्चिद् ५.३१.१०
वातस्याश्वो वायोः सखा १०.१३६.५
वातासो न ये धुनयो १०.७८.३
वातेवाजुर्या नद्येव रीतिः २.३९.५
वातोपधूत इषितो १०.९१.७
वाममद्य सवितः ६.७१.६
वामस्य हि प्रचेतसो ८.८३.५
वामं नो अस्त्वर्यमन् ८.८३.४
वामंवामं त आदुरे ४.३०.२४
वामी वामस्य धूतयः ६.४८.२०
वाय उक्थेभिर्जरन्ते १.२.२
वायवा याहि दर्शतेमे १.२.१
वायवा याहि वीतये ५.५१.५
वायविन्द्रश्च चेतथः १.२.५
वायविन्द्रश्च शुष्मिणा ४.४७.३
वायविन्द्रश्च सुन्वत १.२.६
वायुरस्मा उपामन्थत् १०.१३६.७
वायुर्न यो नियत्वाँ ९.८८.३
वायुर्युङ्क्ते रोहिता १.१३४.३
वायो तव प्रपृञ्चती १.२.३
वायो याहि शिवा दिवो ८.२६.२३
वायो ये ते सहस्रिणो २.४१.१
वायो शतं हरीणां ४.४८.५
वायो शुक्रो अयामि ते ४.४७.१
वार्ण त्वा यव्याभिः ८.९८.८
वार्त्रहत्याय शवसे ३.३७.१
वावर्त एवां राया १०.९३.१३
वावसान विवस्वती १.४६.१३
वावृधान उप द्यवि ८.६.४०
वावृधानस्य ते वयं ८.१४.६
वावृधानः शवसा १०.१२०.२
वावृधानाय तूर्वये ९.४२.३
वावृधाना शुभस्पती ८.५.११
वावृधानो मरुत्सखेन्द्रो ८.७६.३
वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो ५.५७.२
वाशीमेको बिभर्ति ८.२९.३
वाश्रा अर्षन्तीन्दवो ९.१३.७
वाश्रेव विद्युन्मिमाति १.३८.८
वासयसीव वेधसस्त्वं नः ७.३७.६
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणा ८.१७.१४
वास्तोष्पते प्रतरणो ७.५४.२
वास्तोष्पते प्रति जानीहि ७.५४.१
वास्तोष्पते शग्मया संसदा ७.५४.३
वाहिष्ठो वां हवानां ८.२६.१६
वि क्रोशनासो १०.२७.१८
वि घ त्वावाँ ऋतजात १.१८९.६
विघ्नन्तो दुरिता पुरु ९.६२.२
वि चक्रमे पृथिवीमेष ७.१००.४
वि चिद् वृत्रस्य दोधतो ८.६.६
वि चेदुच्छन्त्यश्विना ७.७२.४
वि जनाञ्छ्यावाः १.३५.५
वि जयुषा रथ्या यातम् ६.६२.७
वि जानीह्यार्यान् १.५१.८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वि जिहीष्व वनस्पते ५.७८.५
विजेषकृदिन्द्रइव १०.८४.५
वि ज्योतिषा बृहता भाति ५.२.९
वि तद्ययुररुणयुग्भिरश्वैः ६.६५.२
वि तन्वते धियो अस्मा अपांसि ५.४७.६
वि तर्तूर्यन्ते मघवन् ८.१.४
वि तिष्ठध्वं मरुतो ७.१०४.१८
वि ते वज्रासो अस्थिरन् १.८०.८
वि ते विष्वग्वातजूतासो ६.६.३
वित्वक्षणः समृतौ चक्रमास ५.३४.६
वि त्वदापो न पर्वतस्य ६.२४.६
वि त्वा ततस्रे मिथुना १.१३१.३
विदद्यत्पूर्व्यं नष्टं ८.७९.६
विदद्यदी सरमा ३.३१.६
विदा चिन्नु महान्तो ५.४१.१३
विदा दिवो विष्यन्नद्रिमुं ५.४५.१
विदा देवा अघानां ८.४७.२
विदानासो जन्मनो ४.३४.२
वि दुर्गा वि द्विषः पुरः १.४१.३
विदुष्टे अस्य वीर्यस्य १.१३१.४
विदुष्टे विश्वा भुवनानि ४.४२.७
विदुः पृथिव्या दिवो ७.३४.२
विदृळ्हानि चिदद्रिवो ६.४५.९
विद्मा ते अग्ने त्रेधा १०.४५.२
विद्मा सखित्वमुत ८.२१.८
विद्मा हि ते पुरा वयं ८.७५.१६
विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं ८.८१.२
विद्मा हि त्वा धनंजयमिन्द्र ८.४५.१३
विद्मा हि त्वा धनञ्जयं ३.४२.६
विद्मा हि त्वा वृषन्तमं १.१०.१०
विद्मा हि यस्ते अद्रिवः ८.९२.१८
विद्मा हि रुद्रियाणां ८.२०.३
विद्मा ह्यस्य वीरस्य ८.२.२१
विद्यामादित्या अवसो २.२७.५
वि द्यामेषि रजस्पृथु १.५०.७
विद्युतो ज्योतिः परि ७.३३.१०
विद्युद्धस्ता अभिद्यवः ८.७.२५
विद्युद्रथा मरुत ३.५४.१३
विद्युन्न या पतन्ती १०.९५.१०
विद्युन्महसो नरो ५.५४.३
विद्वाँ अग्ने वयुनानि १.७२.७
विद्वांसाविदुरः पृच्छेत् १.१२०.२
वि द्वीपानि पापतन् ८.२०.४
वि द्वेषांसीनुहि वर्धयेळां ६.१०.७
विधुं दद्राणं समने १०.५५.५
विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने २.९.३
वि न इन्द्र मृधो जहि १०.१५२.४
वि नः पथः सुविताय १.९०.४
वि नः सहस्रं शुरुधो ७.६२.३
वि नो देवासो अद्रुहो ८.२७.९
वि नो वाजा ऋभुक्षणः ४.३७.७
वि पथो वाजसातये ६.५३.४
विपश्चिते पवमानाय ९.८६.४४
वि पाजसा पृथुना ३.१५.१
वि पिप्रोरहिमायस्य दृळ्हाः ६.२०.७
वि पूषन्नारया तुद ६.५३.६
वि पृक्षो अग्ने मघवानो १.७३.५
वि पृच्छामि पाक्या १.१२०.४
वि प्रथतां देवजुष्टं १०.७०.४
विप्रस्य वा स्तुवतः ८.१९.१२
विप्रं विप्रासोऽवसे ८.११.६
विप्रं होतारमद्रुहं ८.४४.१०
विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु ७.२.७
विप्रासो न मन्मभिः १०.७८.१
विप्रेभिर्विप्र सन्त्य ५.५१.३
विभक्तारं हवामहे १.२२.७
विभक्तासि चित्रभानो १.२७.६
विभावा देवः सुरणः ३.३.९
विभिद्या पुरं शयथा १०.६७.५
विभिर्द्रुं चरत ८.२९.८
विभु प्रभु प्रथमं मेहनां २.२४.१०
विभूतरातिं विप्र ८.१९.२
विभूषन्नग्र उभयाँ ६.१५.९
विभ्राजञ्ज्योतिषा---देवास्त ८.९८.३
विभ्राजञ्ज्योतिषा---येनेमा १०.१७०.४
विभ्राजमान उषसामुपस्थात् ७.६३.३
विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं १०.१७०.१
विभ्राड् बृहत्सुभृतं १०.१७०.२
वि मच्छ्रथाय रशनाम् २.२८.५
वि मृळीकाय ते मनो १.२५.३
वि मे कर्णा पतयतो ६.९.६
वि मे पुरुत्रा पतयन्ति ३.५५.३
वि यत्तिरो धरुणमच्युतं १.५६.५
वि यदस्थाद्यजतो १.१४१.७
वि यदहेरध त्विषो ८.९३.१४
वि यद्वरांसि पर्वतस्य ४.२१.८
वि यद्वाचं कीस्तासो ६.६७.१०
वि यस्य ते ज्रयसानस्या १०.११५.४
वि यस्य ते पृथिव्यां ७.३.४
वि या जानाति जसुरिं ५.६१.७
वि या सृजति समनं १.४८.६
वि ये ते अग्ने भेजिरे ७.१.९
वि ये दधुः शरदं ७.६६.११
वि ये भ्राजन्ते सुमखास १.८५.४
वि यो ममे यम्या ९.६८.३
वि यो रजांस्यमिमीत ६.७.७
वि यो ररप्श ऋषिभिः ४.२०.५
वि यो वीरुत्सु रोध १.६७.५
वि रक्षो वि मृधो जहि १०.१५२.३
विराट् सम्राड्विभ्वीः १.१८८.५
विराण्मित्रावरुणयोः १०.१३०.५
विरूपास इदृषयः १०.६२.५
वि वातजूतो अतसेषु १.५८.४
वि वृक्षान्हन्त्युत हन्ति ५.८३.२
वि वृत्रं पर्वशो ययुः ८.७.२३
विवेष यन्मा धिषणा ३.३२.१४
विव्यक्थ महिना वृषन् ८.९२.२३
विशंविशं मघवा परि १०.४३.६
विशामासामभयानां १०.९२.१४
विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां ५.४.३
विशां कविं विश्पतिं मानुषीः ३.२.१०
विशां कविं विश्पतिं शश्वतीनां ६.१.८
विशां गोपा अस्य चरन्ति १.९४.५
विशां राजानमद्भुतं ८.४३.२४
विशोविश ईड्यमध्वरेषु ६.४९.२
विशोविशो वो अतिथिं ८.७४.१
विश्पतिं यह्वमतिथिं नरः ३.३.८
वि श्रयन्तामुर्विया २.३.५
वि श्रयन्तामृतावृधः प्रयै १.१४२.६
वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो १.१३.६
विश्वकर्मन् हविषा १०.८१.६
विश्वकर्मा विमना १०.८२.२
विश्वजिते धनजिते २.२१.१
विश्वतश्चक्षुरुत १०.८१.३
विश्वदानीं सुमनसः ६.५२.५
विश्वमस्या नानाम १.४८.८
विश्वमित्सवनं सुतं १.१६.८
विश्ववेदसो रयिभिः १.६४.१०
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय १०.८८.१२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास्मा इत्स्वर्दृशे ९.४८.४
विश्वस्मात्सीमधमाँ ४.२८.४
विश्वस्मान्नो अदितिः १०.३६.३
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य १०.४५.६
विश्वस्य राजा पवते ९.७६.४
विश्वस्य हि प्रचेतसा ५.७१.२
विश्वस्य हि प्राणनं १.४८.१०
विश्वस्य हि प्रेषितो १०.३७.५
विश्वस्य हि श्रुष्टये २.३८.२
विश्वं पश्यन्तो बिभृथा ८.२०.२६
विश्वं प्रतीची सप्रथा ७.७७.२
विश्वं सत्यं मघवाना २.२४.१२
विश्वा अग्नेऽप दहारातीः ७.१.७
विश्वा उत त्वया वयं २.७.३
विश्वा द्वेषांसि जहि ८.५३.४
विश्वा धामानि विश्वचक्ष ९.८६.५
विश्वानरस्य वस्पतिं ८.६८.४
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि ५.८२.५
विश्वानि देवी भुवना १.९२.९
विश्वानि नो दुर्गहा ५.४.९
विश्वानि भद्रा मरुतो १.१६६.९
विश्वानि विश्वमनसो ८.२४.७
विश्वानि शुक्रो नर्याणि ४.१६.६
विश्वान्देवान्हवामहे १.२३.१०
विश्वान्देवाँ आ वह १.४८.१२
विश्वान्यन्यो भुवना २.४०.५
विश्वाभिर्धीभिर्भुवनेन ८.३५.२
विश्वामित्रा अरासत ३.५३.१३
विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते ५.८१.२
विश्वा रूपाण्याविशन् ९.२५.४
विश्वा रोधांसि ४.२२.४
विश्वावसुरभि तन्नो १०.१३९.५
विश्वावसुं सोमगन्धर्वम् १०.१३९.४
विश्वा वसूनि संजयन् ९.२९.४
विश्वासां गृहपतिर्विशाम् ६.४८.८
विश्वासां त्वा विशां १.१२७.८
विश्वा सोम पवमानं ९.४०.४
विश्वाहा त्वा सुमनसः १०.३७.७
विश्वा हि मर्त्यत्वना ८.९२.१३
विश्वा हि वो नमस्यानि १०.६३.२
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता १.१००.१९, १.१०२.११
विश्वाँ अर्यो विपश्चितो ८.६५.९
विश्वाः पृतना अभिभूतरं ८.९७.१०
विश्वे अद्य मरुतो विश्वे १०.३५.१३
विश्वे अस्या व्युषि ५.४५.८
विश्वे चनेदना त्वा ४.३०.३
विश्वे त इन्द्र वीर्यं ८.६२.७
विश्ववेत्ता ते सवनेषु ८.१००.६
विश्वेत्ता विष्णुराभरत् ८.७७.१०
विश्वेदनु रोधना २.१३.१०
विश्वेदेते जनिमा ३.५४.८
विश्वे देवा अकृपन्त १०.२४.५
विश्वे देवा अनमस्यन् ६.९.५
विश्वे देवा ऋतावृध ६.५२.१०
विश्वे देवा नो अद्या ५.५१.१३
विश्वे देवा मम शृन्वन्तु ६.५२.१४
विश्वे देवास आ गत २.४१.१३
६.५२.७
विश्वे देवासो अध १०.११३.८
विश्वे देवासो असुरः १.३.८
विश्वे देवासो अस्रिध १.३.९
विश्वे देवाः शास्तन मा १०.५२.१
विश्वे देवाः शृणुतेमम् ६.५२.१३
विश्वे देवाः सह धीभिः १०.६५.१४
विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं ९.५.११
विश्वेभिरग्ने अग्निभिः १.२६.१०
विश्वेभिः सोम्यं १.१४.१०
विश्वेभ्यो हि त्वा भुवनेभ्यः २.२३.१७
विश्वे यजत्रा अधि १०.६३.११
विश्वे यद्वां मंहना ६.६७.५
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां ४.१.२०
विश्वेषामिरज्यन्तं वसूनां ८.४६.१६
विश्वेषामिरज्यवो १०.९३.३
विश्वेषामिह स्तुहि ८.१०२.१०
विश्वेषां वः सतां ज्येष्ठतमा ६.६७.१
विश्वेषां ह्यध्वराणामनीकं १०.२.६
बिश्वेषु हि त्वा सवनेषु १.१३१.२
विश्वे हि त्वा--- जनासो ५.२३.३
विश्वे हि त्वा--- देवासो ८.२३.१८
विश्वे हि विश्ववेदसो ५.६७.३
विश्वे हि ष्मा मनवे ८.२७.४
विश्वे ह्यस्मै यजताय २.१६.४
विश्वैर्देवैस्त्रिभिरेकादशैः ८.३५.३
विश्वो देवस्य नेतुः ५.५०.१
विश्वो यस्य व्रते जनो ९.३५.६
विश्वो विहाया अरतिः १.१२८.६
विश्वो ह्यन्यो अरिराज १०.२८.१
विषं गवां यातुधानाः १०.८७.१८
वि षा होत्रा विश्वं १०.६४.१५
विषाह्यग्ने गृणते ४.११.२
वि षु द्वेषो व्यंहतिं ८.६७.२१
वि षु विश्वा अभियुजो ८.४५.८
वि षु विश्वा अरातयो १०.१३३.३
वि षू चर स्वधा अनु ८.३२.१९
विषूचो अश्वान्युयुजे १०.७९.७
वि षू मृधो जनुषा ५.३०.७
विषूवृदिन्द्रो अमतेः १०.४३.३
विषेण भङ्गुरावतः १०.८७.२३
विष्टम्भो दिवो धरुणः ९.८९.६
विष्ट्वी शमी तरणित्वेन १.११०.४
विष्णुरित्था परममस्य १०.१.३
विष्णुर्गोपाः परमं ३.५५.१०
विष्णुर्योनिं कल्पयतु १०.१८४.१
विष्णुं सतोमासः पुरुदस्मं ३.५४.१४
विष्णोर्नु कं वीर्याणि १.१५४.१
विष्णोः कर्माणि पश्यत १.२२.१९
विष्पर्धसो नरां न शंसैः १.१७३.१०
वि सद्यो विश्वा ७.१८.१३
विसर्माणं कृणुहि वित्तम् ५.४२.९
वि सुपर्णो अन्तरिक्षाण्यस्थ १.३५.७
वि सूर्यो अमतिं न श्रियं ५.४५.२
वि सूर्यो मध्ये अमुचत् १०.१३८.३
वि हि त्वामिन्द्र पुरुधा १०.११२.७
वि हि सोतोरसृक्षत १०.८६.१
विहि होत्रा अवीता ४.४८.१
वि ह्यख्यं मनसा १.१०९.१
वीतिहोत्रं त्वा कवे ५.२६.३
वीतिहोत्रा कृतद्वसू ८.३१.९
वीती जनस्य दिव्यस्य ९.९१.२
वीती यो देवं मर्तो ६.१६.४६
वीन्द्र यासि दिव्यानि १०.३२.२
वीरस्य नु स्वश्व्यं ३.५५.१८
वीरेण्यः क्रतुरिन्द्रः १०.१०४.१०
वीरेभिर्वीरान्वनवद् २.२५.२
वीळु चिदारुजत्नुभिः १.६.५
वीळु चिद् दृळ्हा पितरो १.७१.२
वीळुपत्मभिराशुहेमभिर्वा १.११६.२
वीळुपविभिर्मरुत ८.२०.२

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीळौ सतीरभि धीरा ३.३१.५
वृकश्चिदस्य वारण ८.६६.८
वृकाय चिज्जसमानाय ७.६८.८
वृक्षाश्चिन्मे अभिपित्वे ८.४.२१
वृक्षेवृक्षे नियता १०.२७.२२
वृज्याम ते परि द्विषो ८.४५.१०
वृञ्जे ह यन्नमसा बर्हिरग्नौ ६.११.५
वृतेव यन्तं बहुर्भिर्वसव्यैः ६.१.३
वृत्रखादो वलंरुजः ३.४५.२
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा ८.९६.७
वृत्राण्यन्यः समिथेषु ७.८३.९
वृत्रेण यदहिना बिभ्रत् १०.११३.३
वृथा क्रीळन्त इन्दवः ९.२१.३
वृषणश्वेन मरुतो ८.२०.१०
वृषणस्ते अभीशवो ८.३३.११
वृषणं त्वा वयं वृषन् ३.२७.१५
वृषणं धीभिरसुरं ९.६३.२१
वृषन्निन्द्र वृषपाणास १.१३९.६
वृषभं चर्षणीनां ३.६२.६
वृषभो न तिग्मशृङ्गो १०.८६.१५
वृषंकपायि रेवति १०.८६.१३
वृषा ग्रावा--- वृषन्निन्द्र ५.४०.३
वृषा ग्रावा--- वृषा यज्ञो ८.१३.३२
वृषा जजान वृषणं रणाय ७.२०.५
वृषाणं वृषभिर्यतं ९.३४.३
वृषा ते वज्र उत ते २.१६.६
वृषा त्वा वृषणं वर्धतु ५.३६.५
वृषा त्वा वृषणं--- वावन्थ ८.१३.३३
वृषा त्वा वृषणं--- वृषन्निन्द्र ५.४०.३
वृषा न क्रुद्धः पतयत् १०.४३.८
वृषा पवस्व धारया ९.६५.१०
वृषा पुनान आयुषु ९.१९.३
वृषा मतीनां पवते ९.८६.१९
वृषा मद इन्द्रे श्लोक ६.२४.१
वृषा यज्ञो वृषणः १०.६६.६
वृषायन्ते महे अत्याय ३.७.९
वृषायमाणोऽवृणीत सोमं १.३२.३
वृषायमिन्द्र ते रथ ८.१३.३१
वृषा यूथेव वंसगः १.७.८
वृषा रवाय वदते १०.१४६.२
वृषा वि जज्ञे जनयन् ९.१०८.१२
वृषा वृषन्धिं चतुरः ४.२२.२
वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा १०.११.१
वृषा वृष्णे रोरुवद् ९.९१.३
वृषा वो अंशुर्न किला १०.९४.१०
वृषा शोणो अभिकनिक्रदद् ९.९७.१३
वृषासि दिवो वृषभो ६.४४.२१
वृषा सोता सुनोतु ते ८.३३.१२
वृषा सोम द्युमाँ असि ९.६४.१
वृषा ह्यग्ने अजरो ६.४८.३
वृषा ह्यसि भानुना ९.६५.४
वृषा ह्यसि राधसे ५.३५.४
वृषेव यूथा परि कोशं ९.७६.५
वृषो अग्निः समिध्यते ३.२७.१४
वृष्टिद्यावा रीत्यापेषः ५.६८.५
वृष्टिं दिवः परि स्रव ९.८.८
वृष्टिं दिवः शतधारः ९.९६.१४
वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां ९.९७.१७
वृष्णः कोशः पवते २.१६.५
वृष्णस्ते वृष्ण्यंशवो ९.६४.२
वृष्णे यत्ते वृषणो ५.३१.५
वृष्णे शर्धाय सुमखाय १.६४.२
वृष्णो अस्तोषि भूम्यस्य ५.४१.१०
वेत्था हि निर्ऋतीनां ८.२४.२४
वेत्था हि वेधो अध्वनः ६.१६.३
वेत्यग्नुर्जनिवान्वा ५.४४.७
वेत्यध्वर्युः पथिभी रजिष्ठैः ८.१०१.१०
वेद मासो धृतव्रतो १.२५.८
वेद यस्त्रीणि विदथान्येषां ६.५१.२
वेद वातस्य वर्तनिं १.२५.९
वेदा यो वीनां पदं १.२५.७
वेदिषदे प्रियधामाय १.१४०.१
वेधा अदृप्तो अग्निः १.६९.३
वेमि त्वा पूषन्नृञ्जसे ८.४.१७
वेरध्वरस्य दूत्यानि ४.७.८
वेषि होत्रमुत पोत्रं जनानां १०.२.२
वेषि ह्यध्वरीयतामग्ने ६.२.१०
वेषि ह्यध्वरीयतामुपवक्ता ४.९.५
वेषीद्वस्य दूत्यं ४.९.६
वैयश्वस्य श्रुतं नरोतो ८.२६.११
वैश्वानर तव तत्सत्यमस्तु १.९८.३
वैश्वानर तव तानि व्रतानि ६.७.५
वैश्वानर तव धामान्या ३.३.१०
वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो ३.३.११
वैश्वानरस्य विमितानि ६.७.६
वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम १.९८.१
वैश्वानरं कवयो यज्ञि १०.८८.१३
वैश्वानरं मनसाग्निं ३.२६.१
वैश्वानरं विश्वहा १०.८८.१४
वैश्वानरः प्रत्नथा नाकम् ३.२.१२
वैश्वानराय धिषणाम् ३.२.१
वैश्वानराय पृथुपाजसे ३.३.१
वैश्वानाराय मीळ्हुषे ४.५.१
वैश्वानरो महिम्ना १.५९.७
वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं ७.२८.५
२९.५,३०.५
व्यकृणोत चमसं चतुर्धा ४.३५.३
व्यकृन्नुद्रा व्यहानि ५.५४.४
व्यचस्वतीरुर्विया १०.११०.५
व्यञ्जते दिवो अन्तेष्वक्तून् ७.७९.२
व्यञ्जिभिर्दिव आतास्व १.११३.१४
व्यनिनस्य धनिनः १.१५०.२
व्यन्तरिक्षमतिरन् ८.१४.७
व्यन्त्विन्नु येषु मन्दसानः २.११.१५
व्यर्य इन्द्र तनुहि श्रवांसि १०.११६.६
व्यर्यमा वरुणश्चेति पन्थां ४.५५.४
व्यश्वस्त्वा वसुविदम् ८.२३.१६
व्यस्तभ्नाद्रोदसी मित्रो ६.८.३
व्यस्मे अधि शर्म तत् ८.४७.३
व्यानळिन्द्रः पृतनाः १०.२९.८
व्युच्छन्ती हि रश्मिभिः १.४९.४
व्युच्छा दुहितर्दिवो ७.७९.९
व्युषा आवः पथ्या ७.७९.१
व्युषा आवो दिविजा ७.७५.१
व्यूर्ण्वती दिवो अन्ताँ १.९२.११
व्येतु दिद्युद् द्विषाम् ७.३४.१३
व्रजं कृणुध्वं १०.१०१.८
व्रता ते अग्ने महतो ३.६.५
व्रतेन स्थो ध्रुवक्षेमा ५.७२.२
व्रातंव्रातं गणंगणम् ३.२६.६

श

शकमयं धूममारादपथ्यं १.१६४.४३
शकेम त्वा समिधं १.९४.३
शग्धि पूर्धि प्र यंसि १.४२.९
शग्धि वाजस्य सुभग ३.१६.६
शग्धी न इन्द्र यत्त्वा ८.३.११
शग्धी नो अस्य यद्ध ८.३.१२
शग्ध्यू षु शचीपत ८.६१.५
शचीभिर्नः शचीवसू १.१३९.५

CC-0:Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शचीव इन्द्र पुरुकृद् १.५३.३
शचीव इन्द्रमवसे १०.७४.५
शचीवतस्ते पुरुशाक ६.२४.४
शच्याकर्त पितरा युवाना ४.३५.५
शतक्रतुमर्णवं शाकिनं ३.५१.२
शतधारमुत्समक्षीयमाणं ३.२६.९
शतधारं वायुमर्कं १०.१०७.४
शतपवित्राः स्वधया ७.४७.३
शतब्रध्न इषुस्तव ८.७७.७
शतभुजिभिस्तमभिहुते १.१६६.८
शतमश्मन्मयीनां ४.३०.२०
शतमहं तिरिन्दिरे ८.६.४६
शतमिन्नु शरदो १.८९.९
शतं जीव शरदो १०.१६१.४
शतं ते राजन् भिषजः १.२४.९
शतं ते शिप्रिन्नूतयः ७.२५.३
शतं दासे बल्बूथे ८.४६.३२
शतं धारा देवजाताः ९.९७.२९
शतं न इन्द्र ऊतिभिः ९.५२.५
शतं मे गर्दभानां ८.५६.३
शतं मेषान्वृक्ये चक्षदानं १.११६.१६
शतं मेषान्वृक्ये मामहानं १.११७.१७
शतं राज्ञो नाधमानस्य १.१२६.२
शतं वा यदसुर्य १०.१०५.११
शतं वा यस्य दश २.१३.९
शतं वा यः शुचीनां १.३०.२
शतं वेणूञ्छतं शुनः ८.५५.३
शतं वो अम्ब धामानि १०.९७.२
शतं श्वेतास उक्षणो ८.५५.२
शतानीका हेतयो अस्य ८.५०.२
शतानीकेव प्र जिगाति ८.४९.२
शतेना नो अभिष्टिभिः ४.४६.२
शतैरपद्रन्पणय ६.२०.४
शत्रूयन्तो अभि ये नः १०.८९.१५
शनैश्चिद्यन्तो अद्रिवो ८.४५.११
शमग्निरग्निभिः करत् ८.१८.९
शमू षु वां मधू युवा ५.७४.९
शयुः परस्तादध नु ३.५५.६
शरस्य चिदार्चत्कस्या १.११६.२२
शरासः कुशरासो १.१९१.३
शर्धंशर्धं व एषां ५.५३.११
शर्धो मारुतमुछंस ५.५२.८
शर्यणावति सोमं इन्द्रः ९.११३.१
शवसा ह्यसि श्रुतो ८.२४.२
शविष्ठं न आ भर ६.१९.६
शशमानस्य वा नरः १.८६.८
शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं १०.२८.९
शश्वत्तममीळते दूत्याय १०.७०.३
शश्वत्पुरोषा व्युवास १.११३.१३
शश्वदग्निर्वध्र्यश्वस्य १०.६९.११
शश्वदिन्द्रः पोप्रुथद्भिः १.३०.१६
शश्वद्धि वः सुदानव ८.६७.१६
शश्वन्तं हि प्रचेतसः ८.६७.१७
शश्वन्तो हि शत्रवो ७.१८.१८
शं न इन्द्राग्नी भवता ७.३५.१
श न इन्द्रो वसुभिर्देवो ७.३५.६
शं नः करत्यर्वते १.४३.६
शं नः सत्यस्य पतयो ७.३५.१२
शं नः सूर्य उरुचक्षा ७.३५.८
शं नः सोमो भवतु ७.३५.७
शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको ७.३५.४
शं नो अजं एकपादेवो ७.३५.१३
शं नो अदितिर्भवतु ७.३५.९
शं नो देवः सविता ७.३५.१०
शं नो देवा विश्वदेवा ७.३५.११
शं नो देवीरभिष्टय १०.९.४
शं नो द्यावापृथिवी ७.३५.५
शं नो धाता शमु ७.३५.३
शं नो भगः शमु ७.३५.२
शं नो भव चक्षसा १०.३७.१०
शं नो भवन्तु वाजिनो ७.३८.७
शं नो भव हृद ८.४८.४
शं नो मित्रः शं वरुणः १.९०.९
शं रोदसी सुबन्धवे १०.५९.८
शंसा महामिन्द्रं ३.४९.१
शंसा मित्रस्य वरुणस्य ७.६१.४
शंसावाध्वर्यो ३.५३.३
शंसेदुक्थं सुदानव ७.३१.२
शाक्मना शाको अरुणः १०.५५.६
शाचिगो शाचिपूजना० ८.१७.१२
शास इत्था महाँ असि १०.१५२.१
शासद्वह्निर्दुहितुर्नप्त्यम् ३.३१.१
शिक्षा ण इन्द्र राय ८.९२.९
शिक्षा विभिन्दो अस्मै ८.२.४१
शिक्षेयमस्मै दित्सेयम् ८.१४.२
शिक्षेयमिन् महयते ७.३२.१९
शिप्रिन्वाजानां पते १.२९.२
शिवस्त्वष्टरिहा गहि ५.५.९
शिवः कपोत इषितो नो १०.१६५.२
शिवा नः सख्या सन्तु ४.१०.८
शिशानो वृषभो यथाग्निः ८.६०.१३
शिशुं जज्ञानं हरिं ९.९०९.१२
शिशुं जज्ञानं हर्यतं ९.९६.१७
शिशुनं न त्वा जेन्यं १०.४.३
शिशुर्न जातोऽव ९.७४.१
शीतिके शीतिकावति १०.१६.१४
शीरं पावकशोचिषम् ८.१०२.११
शीर्ष्णःशीर्ष्णो जगतः ७.६६.१५
शुकेषु मे हरिमाणं १.५०.१२
शुक्रस्याद्य गवाशिर २.४१.३
शुक्रं ते अन्यद्यजन्तं ६.५८.१
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः ९.१०९.५
शुक्रः शुशुक्वाँ उषो न १.६९.१
शुक्रेभिरङ्गै रज आ ३.१.५
शुचिमर्कैर्बृहस्पतिं ३.६२.५
शुचिरपः सूयवसा २.२७.१३
शुचिरसि पुरुनिःष्ठाः ८.२.९
शुचिर्देवेष्वर्पिता १.१४२.९
शुचिं न यामन्निषिरं ३.२.१४
शुचिं नु स्तोमं नवजातम् ७.९३.१
शुचिः पावक उच्यते ९.२४.७
शुचिः पावक वन्द्योऽग्ने २.७.४
शुचिः पावको अद्भुतो १.१४२.३
शुचिः पुनानस्तन्वं ९.७०.८
शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत् ५.७.८
शुची ते चक्रे १०.८५.१२
शुची वो हव्या मरुतः ७.५६.१२
शुनमन्धाय भरमह्वयत्सा १.११७.१८
शुनमष्ट्रा व्यचरत् १०.१०२.८
शुनमस्मभ्यमूतये १०.१२६.७
शुनश्चिच्छेपं ५.२.७
शुनं नः फाला ४.५७.८
शुनं वाहाः शुनं नरः ४.५७.४
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रं ३.३०.२२
३१.२२,३२.१७,३४.११,३५.११,
३६.११,३८.१०,३९.९,४३.८,४८.५,
४९.५,५०.५,१०.८९.१८,१०४.११
शुनः शेपो ह्यह्वद् गृभीतः १.२४.१३
शुनासीराविमां वाचं जुषे ४.५७.५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभ्रमन्धो देववातं ९.६२.५
शुभ्रं नु ते शुष्मं २.११.४
शुभ्रो वः शुष्मः क्रुध्मी ७.५६.८
शुम्भमान ऋतायुभिः ९.३६.४
शुम्भमाना ऋतायुभिः ९.६४.५
शुश्रुवांसा चिदश्विना ७.७०.५
शुष्णं पिप्रुं कुयवं वृत्रमिन्द्र १.१०३.८
शुष्मासो ये ते अद्रिवो ५.३८.३
शुष्मिन्तमं न ऊतये ३.३७.८
शुष्मिन्तमो हि ते मदो १.१७५.५
शुष्मी शर्धो न मारुतं ९.८८.७
शूरग्रामः सर्ववीरः ९.९०.३
शूरस्येव युध्यतो ३.५५.८
शूराइवेद्युयुधयो १.८५.८
शूरो न धत्त आयुधा ९.७६.२
शूरो वा शूरं वनते ६.२५.४
शूषेभिर्वृधो जुषाणो १०.६.४
शृङ्गाणीवेच्छृङ्गिणां ३.८.१०
शृङ्गेव नः प्रथमा २.३९.३
शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्री ७.९४.२
शृणुतं जरितुर्हवं कृष्णस्य ८.८५.४
शृणोतु न ऊर्जां पतिर्गिरः ५.४१.१२
शृण्वन्तं पूषणं वयं ६.५४.८
शृण्वन्तु नो वृषणः ३.५४.२०
शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः १.४४.१४
शृण्वे वीर उग्रमुग्रं ६.४७.१६
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः ९.४१.३
शृतं यदा करसि १०.१६.२
शेवारे वार्या ८.१.२२
शेषन्नु त इन्द्र सस्मिन्योनौ १.१७४.४
शेषे वनेषु मात्रोः ८.६०.१५
शोचा शोचिष्ठ दीदिहि ८.६०.६
श्नथद् वृत्रमुत सनोति ६.६०.१
श्यावाश्वस्य रेभतस्तथा ८.३७.७
श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा ८.३६.७
श्वावाश्वस्य सुन्वतोऽत्रीणां ८.३८.८
श्येन आसामदितिः ५.४४.११
श्येनाविव पतथो ८.३५.९
श्येनो न योनिं सदनं ९.७१.६
श्रत्ते दधामि प्रथमाय १०.१४७.१
श्रद्धयाग्निः समिध्यते १०.१५१.१
श्रद्धां देवा यजमाना १०.१५१.४
श्रद्धां प्रातर्हवामहे १०.१५१.५
श्रवच्छुत्कर्ण ईयते ७.३२.५
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं ७.८१.६
श्रवो वाजमिषमूर्जं ६.६५.३
श्रातं मन्य ऊधनि १०.१७९.३
श्रातं हविरोष्विन्द्र १०.१७९.२
श्रायन्तइव सूर्यं ८.९९.३
श्रावयेदस्य कर्णा ४.२९.३
श्रियसे कं भानुभिः १.८७.६
श्रिये कं वो अधि १.८८.३
श्रिये जातः श्रिय आ ९.९४.४
श्रिये ते पादा दुव ६.२९.३
श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी १०.१०५.१०
श्रिये पूषन्निषुकृतेव १.१८४.३
श्रिये मर्यासो अञ्जीं १०.७७.२
श्रिये सुदृशीरुपरस्य ५.४४.२
श्रीणन्नुप स्थाद्दिवं १.६८.१
श्रीणामुदारो १०.४५.५
श्रुतं गायत्रं तकवानस्याहं १.१२०.६
श्रुतं मे मित्रावरुणा १.१२२.६
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं ८.९३.१६
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिः १.४४.१३
श्रुधी न इन्द्र ह्वयामसि ६.२६.१
श्रुधी नो अग्ने सदने १०.११.९, १२.९
श्रुधी हवमिन्द्र मा रिषण्यः २.११.१
श्रुधी हवमिन्द्र शूर १०.१४८.५
श्रुधी हवं तिरश्च्या ८.९५.४
श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेः ७.२२.४
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे १.४५.२
श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः ६.६८.१
श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे ८.२३.१४
श्रूया अग्निश्चित्रभानु २.१०.२
श्रेष्ठं नो अद्य सविता १०.३५.७
श्रेष्ठं यविष्ठ भारताग्ने २.७.१
श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं १.४४.४
श्रेष्ठं वः पेशो अधि ४.३६.७
श्रेष्ठो जातस्य रुद्रा २.३३.३
श्रोणामेक उदकं १.१६१.१०
श्वसित्यप्सु हंसो न १.६५.५
श्वित्यञ्चो मा दक्षिणत ७.३३.१
श्वेतं रूपं कृणुते ९.७४.७

ष

षट्त्रिंशांशच चतुरः १०.११४.६
षड्भारॉं एको अचरन् ३.५६.२
षळश्वाँ अतिथिग्व ८.६८.१७
षष्टिं सहस्राश्वस्य ८.४६.२२

स

स आ गमदिन्द्रो यो वसूनां ५.३६.१
स आ नो योनिं ७.९७.४
स आ वक्षि महि न १०.३.७
स आहुतो वि रोचते १०.११८.३
स इज्जनेन स विशा २.२६.३
स इत्क्षेति सुधितः ४.५०.८
स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं ६.९.३
स इत्तमोऽवयुनं ततन्वत् ६.२१.३
स इत्सुदानुः स्ववाँ ६.६८.५
स इत्स्वपा भुवनेष्वास ४.५६.३
स इदग्निः कण्वतमः १०.९१५.५
स इदस्तेव प्रति धाद् ६.३.५
स इद्दानाय दभ्याय १०.६१.२
स इद्वसं तुवीरवं १०.९९.६
स इन्द्रोजो यो गृहवे १०.११७.३
स इद्राजा प्रतिजन्यानि ४.५०.७
इ इद्वने नमस्युभिर्वचस्यते १.५५.४
स इधान उषसो राम्या २.२.८
स इधानो वसुष्कविः १.७९.५
स इन्नु रायः सुभृतस्य १०.१४७.४
स इन्महानि समिथानि १.५५.५
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिः १०.१०३.३
स ईं पाहि य ऋजीषी ६.१७.२
स ईं महीं धुनिं २.१५.५
स ईं मृगो अप्यो १.१४५.५
स ईं रथो न भुरिषाट् ९.८८.२
स ईं रेभो न प्रति वस्त ६.३.६
स ईं वृषा जनयत्तासु २.३५.१३
स ईं वृषा न फेनमस्य १०.६१.८
स ईं सत्येभिः सखिभिः १०.६७.७
स ईं स्पृधो वनते अप्रतीतः ६.२०.९
सकृद्ध द्यौरजायत ६.४८.२२
स केतुरध्वराणां ३.१०.४
सक्तुमिव तितउना १०.७१.२
स क्षपः परि षस्वजे ८.४१.३
सखाय आ नि षीदत पुनानाय ९.१०४.१
सखाय आ नि षीदत सविता १.२२.८
सखाय आ शिषामहि ८.२४.१
सखायस्त इन्द्र विश्वह ७.२१.९
सखायस्ते विषुणा ५.१२.५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखायस्त्वा ववृमहे ३.९.१
सखायः क्रतुमिच्छत ८.७०.१३
सखायः सं वः सम्यञ्च ५.७.१
सखायो ब्रह्मवाहसे ६.४५.४
सखा सख्ये अपचत्तूयमग्निः ५.२९.७
सखा ह यत्र सखिभिर्नवग्वैः ३.३९.५
सखीयतामविता बोधि ४.१७.१८
सखे विष्णो वितरं ८.१००.१२
सखे सखायमभ्या ४.१.३
सख्ये त इन्द्र वाजिनो १.११.२
स गृणानो अद्भिर्देववान् १०.६१.२६
स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिद् ७.४.२
स गोमघा जरित्रे ६.३५.४
स गोरश्वस्य वि व्रजं ८.३२.५
स ग्रामेभिः सनिता १.१००.१०
स घा तं वृषणं १.८२.४
स घा नः सूनुः १.२७.२
स घा नो देवः सविता ७.४५.३
स घा नो योग आ भुवत् १.५.३
स घा यस्ते ददाशति ३.१०.३
स घा राजा सत्पतिः १.५४.७
स घा वीरो न रिष्यति १.१८.४
स घेदुतासि वृत्रहन् ४.३०.२२
स चक्रमे महतो ५.८७.४
सचन्त यदुषसः १०.१११.७
स चन्द्रो विप्र मर्त्यो १.१५०.३
सचस्व नायमवसे ६.२४.१०
सचा यदासु जहतीषु १०.९५.८
सचायोरिन्द्रश्चर्कृषे १०.१०५.४
सचा सोमेषु पुरुहूत ८.६६.६
स चिकेत सहीयसाग्निः ८.३९.५
स चित्रचित्रं चितयन्तमस्मे ६.६.७
स चेतयन्मनुषो ४.१.९
स जातूभर्मा श्रद्दधाने १.१०३.३
स जातेभिर्वृत्रहा ३.३१.११
स जातो गर्भो असि १०.१.२
स जामिभिर्यत्समजाति १.१००.११
स जायत प्रथमः ४.१.११
स जायमानः---व्रतानि ६.८.२
स जायमानः---व्योमन्याविः १.१४३.२
स जायमानः---व्योमन् वायुर्न ७.५.७
स जिन्वते जठरेषु ३.२.११
स जिह्मया चतुरनीक ५.४८.५
सजूरादित्यैर्वसुभिः ५.५१.१०
सजूर्देवेभिरपां नपातं ७.३४.१५
सजूर्मित्रावरुणाभ्यां ५.५१.९
सजूर्विश्वेभिर्देवेभिः ५.५१.८
सजोषस आदित्यैर्मादयध्वं ४.३४.८
सजोषस्त्वा दिवो नरो ६.२.३
सजोषा इन्द्र वरुणेन ४.३४.७
सजोषा इन्द्र सगणो ३.४७.२
स तत्कृधीषितस्तूयमग्ने ६:५.६
सतःसतः प्रतिमानं ३.३१.८
स तुर्वणिर्महाँ अरेणु १.५६.३
स तु वस्त्राण्यध पेशनानि १०.१.६
स तु श्रुधि श्रुत्या यो ६.३६.५
स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य ६.२१.८
स तू नो अग्निर्नयतु ४.१.१०
स तू पवस्व---राजः स्तोत्रे ९.७२.८
स तू पवस्व---रजो दिव्या ९.१०७.२४
स ते जानाति सुमतिं ४.४.६
स तेजीयसा मनसा ३.१९.३
सतो नूनं कवयः सं १०.५३.१०
सत्तो होता न ऋत्वियः ३.४१.२
सत्तो होता मनुष्वदा १०.१०५.१४
सत्यमित्तन्न त्वावाँ ६.३०.४
सत्यमित्त्वा महेनदि ८.७४.१५
सत्यमित्था वृषेदसि ८.३३.१०
सत्यमिद्वा उ अश्विना ५.७३.९
सत्यमिद्वा उ तं वयं ८.६२.१२
सत्यमुग्रस्य बृहतः ९.११३.५
सत्यमूचुर्नर एवा हि चक्रुः ४.३३.६
सत्यं ततुर्वशे यदौ ८.४५.२७
सत्यं तदिन्द्रावरुणा ८.५९.३
सत्यं त्वेषा अमवन्तो १.३८.७
सत्यामाशिषं कृणुता १०.६७.११
सत्या सत्येभिर्मरुती ७.७५.७
सत्येनोत्तभिता भूमिः १०.८५.१
सत्रा ते अनु कृष्टयो ४.३०.२
सत्रा त्वं पुरुष्टुतँ ८.१५.११
सत्रा मदासस्तव ६.३६.१
सत्रा यदीं भार्वरस्य ४.२१.७
सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ३.३४.८
सत्रासाहो जनभक्षो २.२१.३
सत्रा सोमा अभवन् ४.१७.६
सत्राहणं दाधृषिं ४.१७.८
स त्रितस्याधि सानवि ९.३७.४
सत्रे ह जाता विषिता ७.३३.१३
स त्वमग्ने प्रतीकेन १०.११८.८
स त्वमग्ने विभावसुः ८.४३.३२
स त्वमग्ने सौभगत्वस्य १.९४.१६
स त्वमस्मदप द्विषो ८.११.३
स त्वं दक्षस्यावृको ६.१५.३
स त्वं न इन्द्र धियसानो ५.३३.२
स त्वं न इन्द्र वाजेभिः ८.१६.१२
स त्वं न इन्द्र सूर्ये १.१०४.६
स त्वं न इन्द्राकवाभिः ६.३३.४
स त्वं न ऊर्जां पते ८.२३.१२
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त ६.४६.२
स त्वं नो अग्नेऽवमो ४.१.५
स त्वं नो अर्वन्निदाया ६.१२.६
स त्वं नो देव मनसा ८.२६.२५
स त्वं नो रायः शिशीहि ३.१६.३
स त्वं विप्राय दाशुषे ८.४३.१५
स त्वा भरिषो गविषो ४.४०.२
स त्वामदद् वृषा मदः १.८०.२
स दर्शतश्रीरतिथिः १०.९१.२
सदसस्पतिमद्भुतं १.१८.६
सदस्य मदे सद्वस्य ६.२७.२
सदा कवी सुमतिमाचके १.११७.२३
सदापृणो यजतो वि द्विषो ५.४४.१२
सदासि रण्वो यवसेव १०.११.५
सदा सुगः पितुमाँ ३.५४.२१
सदिद्धि ते तुविजातस्य ६.१८.४
स दूतो विश्वेदभि वृष्टि ४.१.८
स दृळ्हे चिदभि तृणत्ति ८.१०३.५
सदृशीरद्य सदृशीरिदु १.१२३.८
स देवः कविनेषितो ९.३७.६
सदो द्वा चक्राते उप ८.२९.९
सद्येव प्राचो विमिमाय २.१५.३
सद्यश्चिद्यः शवसा १०.१७८.३
सद्यश्चिद्यस्य चर्कृतिः ६.४८.२१
सद्यश्चिन्नु ते मघवन्नभिष्टौ ७.१९.९
सद्यो अध्वरे रथिरं ७.७.४
सद्यो जात ओषधीभिः ३.५.८
सद्यो जातस्य ददृशानं ४.७.१०
सद्यो जातो व्यमिमीत १०.११०.११
सद्योजुवस्ते वाजा ८.८१.९
सद्यो ह जातो वृषभः ३.४८.१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स द्वह्वणे मनुष १०.९९.७
स द्विबन्धुर्वैतरणो १०.६१.१७
स धारयत्पृथिवीं १.१०३.२
सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिव १०.१११.१०
सध्रीमा यन्ति परि २.१३.२
स न इन्द्र त्वयताया ७.२०.१०,२१.१०
स न इन्द्रः शिवः सखा ८.९३.३
स न इन्द्राय यज्यवे ९.६१.१२
स न ईळानया सह ८.१०२.२
स न ऊर्जे व्यव्ययं ९.४९.४
सनत्साश्व्यं पशुं ५.६१.५
सनद्वाजं विप्रवीरं १०.४७.४
स नश्चित्राभिरद्रिवो ४.३२.५
स नः क्षुमन्तं सदने १०.३८.२
स नः पप्रिः पारयति ८.१६.११
स नः पवस्व वाजयुः ९.४४.४
स नः पवस्व शं गवे ९.११.३
स नः पावक दीदिवो १.१२.१०
स नः पावक दीदिहि ३.१०.८
स नः पितेव सूनवे १.१.९
स नः पुनान--- वीरवतीम् ९.६१.६
स नः पुनान --- स्तोत्रे ९.४०.५
स नः पृथु श्रवाय्यं ६.१६.१२
स नः शक्रश्चिदाशकन् ८.३२.१२
स नः शर्माणि वीतये ३.१३.४
स नः सिन्धुमिव नावयाति १.९७.८
स नः सोमेषु सोमपाः ८.९७.६
स नः स्तवान--- गायत्रेण १.१२.११
स नः स्तवान--- रयिं ८.२४.३
सना च सोम जेषि ९.४.१
सना ज्योतिः सना स्वः ९.४.२
सना ता का चिद्भुवना २.२४.५
सना ता त इन्द्र नव्या १.१७४.८
सना त त इन्द्र भोजनानि ७.१९.६
सनात्सनीळा अवनीरवाता १.६२.१०
सना दक्षमुत क्रतुं ९.४.३
सनादग्ने मृणसि यातुधानान् १०.८७.१९
सनादेव तव रायो १.६२.१२
सनाद्दिवं परि भूमा १.६२.८
सना पुराणमध्येमि ३.५४.९
सनामाना चिद् ध्वसयो १०.७३.६
सनायेत गोतम इन्द्र १.६२.१३
सनायुवो नमसा नव्यो १.६२.११
सनितः सुसनितरुग्र ८.४६.२०
सनिता विप्रो अर्वद्भिः ८.२.३६
सनितासि प्रवतो दाशुषे ७.३७.५
सनर्मित्रस्य पप्रथः ८.१२.१२
स नीव्याभिर्जरितारम् ६.३२.४
सनेम तत्सुसनिता १०.३६.९
सनेम तेऽवसा नव्य इन्द्र ६.२०.१०
सनेम ये त ऊतिभिः २.११.१९
सनेमि कृध्यास्मदा ९.१०४.६
सनेमि चक्रपजरं १.१६४.१४
सनेमि त्वमस्मदाँ अदेवं ९.१०५.६
सनेमि सख्यं त्वपस्यमानः १.६२.९
सनेम्यस्मद्युयोत दिद्युं ७.५६.९
स नो अद्य वसुत्तये ९.४४.६
स नो अर्ष पवित्र आ ९.६४.१२
स नो अर्षाभि दूत्यं ९.४५.२
स नो ज्योतींषि पूर्व्य ९.३६.३
स नो दूराच्चासाच्च १.२७.३
स नो देव देवताते ९.९६.३
स नो देवेभिः पवमान ९.९३.४
स नो धीती वरिष्ठया ५.२५.३
स नो नव्येभिर्वृषकर्मन् १.१३०.१०
स नो नियुद्भिः पुरुहूत ६.२२.११
स नो नियुद्भिरा पृण ६.४५.२१
स नो नृणां नृतमो १.७७.४
स नो नेदिष्ठं ददृशान १.१२७.११
स नो बोधि पुरएता ६.२१.१२
स नो बोधि पुरोळाशं ६.२३.७
स नो बोधि श्रुधी हवं ५.२४.२
स नो बोधि सहस्य २.२.११
स नो भगाय वायवे पूष्णे ९.६१.९
स नो भगाय वायवे विप्रवीरः ९.४४.५
स नो मदानां पत ९.१०४.५
स नो मन्द्राभिरध्वरे ६.१६.२
स नो महाँ अनिमानो १.२७.११
स नो मित्रमहस्त्वं ८.४४.१४
स नो युवेन्द्रो जोहूत्रः २.२०.३
स नो राधांस्या भरे ७.१५.११
स नो रेवत्समिधानः २.२.६
स नो वस्व उप मासि ८.७१.९
स नो वाजाय श्रवस ६.१७.१४
स नो वाजेष्वविता ८.४६.१३
स नो विभावा चक्षणीः ६.४.२
स नो विश्वा दिवो ९.५७.४
स नो विश्वान्या भर ८.९३.२९
स नो विश्वाहा सुक्रतुः १.२५.१२
स नो विश्वेभिर्देवेभिः ८.७१.३
स नो वृषन्त्सनिष्ठया ८.९२.१५
स नो वृषन्नमुं चरुं १.७.६
स नो वृष्टिं दिवस्परि २.६.५
स नो वेदो अमात्यं ७.१५.३
स नो हरीणां पत ९.१०५.५
सन्ति ह्यर्य आशिष ८.५४.७
स पत्यत उभयोर्नृम्णमयोः ६.२५.६
स पप्रथानो अभि पञ्च ७.६९.२
सपर्यवो भरमाणा ७.२.४
सपर्येण्यः स प्रियो ६.१.६
स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः १.५२.२
स पवस्व धनञ्जय ९.४६.५
स पवस्व मदाय कं ९.४५.१
स पवस्व मदिन्तम ९.५०.५
स पवस्व य आविथेन्द्रं ९.६१.२२
स पवस्व विचर्षण ९.४१.५
स पवस्व सहमानः ९.११०.१२
स पवित्रे विचक्षणो ९.३७.२
स पिन्व्याण्यायुधानि १०.८.८
स पुनान उप सूरे न ९.९७.३८
स पुनानो मदिन्तमः ९.९९.६
स पूर्वया निविदा १.९६.२
स पूर्व्यः पवते ९.७७.२
स पूर्व्यो महानां ८.६३.१
स पूर्व्यो वसुविज्जायमानो ९.९६.१०
सप्त क्षरन्ति शिशवे १०.१३.५
सप्त त्वा हरितो रथे १.५०.८
सप्त दिशो नानासूर्याः ९.११४.३
सप्त धामानि परियन् १०.१२२.३
सप्तभिः पुत्रैरदितिः १०.७२.९
सप्त मर्यादाः कवयः १०.५.६
सप्त मे सप्त शाकिनः ५.५२.१७
सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रं १.१६४.२
सप्त वीरासो अधरात् १०.२७.१५
सप्त स्वसारो अभि मातरः ९.८६.३६
सप्त स्वसॄररुषीर्वावशानः १०.५.५
सप्त होतारस्तमिदीळते ८.६०.१६
सप्त होत्राणि मनसा ३.४.५
सप्तानां सप्त ऋष्टयः ८.२८.५

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सप्तापो देवीः सुरणा १०.१०४.८
सप्तार्धगर्भा भुवनस्य रेतः १.१६४.३६
सप्तास्यासन्परिधयः १०.९०.१५
सप्तिं मृजन्ति वेधसो ९.२९.२
सप्ती चिद्धा मदच्युता ८.३३.१८
स प्रकेत उभयस्य ७.३३.१२
स प्रत्नथा कविवृधः ८.३६.४
स प्रत्नथा सहसा १.९६.१
स प्रत्नवन्नवीयसा ६.१६.२१
स प्रत्नवन्नव्यसे ९.९१.५
स प्रथमे व्योमनि ८.१३.२
स प्रवोळ्हून् परिगत्या २.१५.४
स प्राचीनान्पर्वतान् २.१७.५
स बाधो यं जना इमे ८.७४.६
स बोधि सूरिर्मघवा २.६.४
स भन्दना उदियर्ति ९.८६.४१
सभामेति कितवः १०.३४.६
स भिक्षमाणो अमृतस्य ९.७०.२
स भूतु यो ह प्रथमाय २.१७.२
स भ्रातरं वरुणमग्र ४.१.२
समजैषमिमा अहं १०.१५९.६
समज्मना जनिम मानुषा ६.१८.७
समज्रया पर्वत्या वसूनि १०.६९.६
समञ्जन्तु विश्वे देवाः १०.८५.४७
समत्र गावोऽभितो ५.३०.१०
स मत्सरः पृत्सु वन्वन् ९.९६.८
समत्सु त्वा शूर सतामुराणं १.१७३.७
समत्स्वग्निमवसे ८.११.९
समध्वरायोषसो ७.४१.६
समना तूर्णिरुप यासि १०.७३.४
समनेव वपुष्यतः ८.६२.९
स मन्दस्वा ह्यनुजोषम् ६.२३.८
स मन्दस्वा ह्यन्धसो ३.४१.६
६.४५.२७
स मन्द्रया च जिह्वया ७.१६.९
समन्या यन्त्युप २.३५.३
स मन्युमीः समदनस्यक १.१००.६
स मन्युं मर्त्यानां ८.७८.६
स मर्तो अग्ने ७.१.२३
स मर्मृजान आयुभिः ९.६६.२३
स मर्मृजान आयुभिरिभो ९.५७.३
स मर्मृजान इन्द्रियाय ९.७०.५
समश्विनोरवसा ५.४२.१८,४३.१७
समश्विनोरवसा ७६.५,७७.५
समस्मिञ्जायमान १०.९५.७
समस्य मन्यवे विशो ८.६.४
समस्य हरिं हरयो ९.९६.२
स मह्ना विश्वा दुरितानि ७.१२.२
स मातरा न ददृशान ९.७०.६
स मातरा विचरन् ९.६८.४
स मातरा सूर्येण ६.३२.२
स मातरिश्वा पुरुवार १.९६.४
समान ऊर्वे अधि संगतासः ७.७६.५
समानमञ्ज्येषां ८.२०.११
समानमस्मा अनपावृत् १०.८९.३
समानमु त्यं पुरुहूतं १०.४१.१
समानमेतदुदकं १.१६४.५१
समानयोजनो हि वाँ १.३०.१८
समानं नीळं वृषणो १०.५.२
समानं पूर्वीरभि १०.१२३.३
समानं वत्समभि १.१४६.३
समानं वां सजात्यं ८.७३.१२
समानी व आकूतिः १०.१९१.४
स मानुषीषु दूळभो ४.९.२
स मानुषे वृजने १.१२८.७
समाने अहन्त्रिरवद्यगोहना १.३४.३
समानो अध्वा स्वस्रोरनन्तः १.११३.३
समानो मन्त्रः समितिः १०.१९१.३
समानो राजा विभृतः ३.५५.४
समान्या वियुते दूरे ३.५४.७
स मामृजे तिरो ९.१०७.११
समाववर्ति विष्ठितो २.३८.६
स माहिन इन्द्रो २.१९.३
समित्तमघमश्नवत् ८.१८.१४
समित्तान्वृत्रहाखिदद् ८.७७.३
समित्समित्सुमना ३.४.१
समिद्धमग्निं समिधा ६.१५.७
समिद्धश्चित्समिध्यसे १०.१५०.१
समिद्धस्य प्रमहसो ५.२८.४
समिद्धस्य श्रयमाणः ३.८.२
समिद्धाग्निर्वनवत्स्तीर्ण ५.३७.२
समिद्धे अग्नौ सुत ६.४०.३
समिद्धेष्वग्निष्वानजाना १.१०८.४
समिद्धो अग्र आ वह १.१४२.१
समिद्धो अग्र आहुत ५.२८.५
समिद्धो अग्निर्दिवि ५.२८.१
समिद्धो अग्निर्निहितः २.३.१
समिद्धो अद्य मनुषो १०.११०.१
समिद्धो अद्य राजसि १.१८८.१
समिद्धो विश्वतस्पतिः ९.५.१
समिधाग्निं दुवस्यत ८.४४.१
समिधा जातवेदसे ७.१४.१
समिधान उ सन्त्य ८.४४.९
समिधानः सहस्रजित् ५.२६.६
समिधा यस्त आहुतिं ६.२.५
समिधा यो निशिती ८.१९.१४
समिध्यमानः प्रथमानु ३.१७.१
समिध्यमानो अध्वरेऽग्निः ३.२७.४
समिध्यमानो अमृतस्य ५.२८.२
समिन्द्र गर्दभं १.२९.५
समिन्द्र णो मनसा ५.४२.४
समिन्द्र राया समिषा १.५३.५
समिन्द्रेणोत वायुना ९.६१.८
समिन्द्रेरय गामनड्वाहं १०.५९.१०
समिन्द्रो गा अजयत् ४.१७.११
समिन्द्रो रायो बृहती ८.५२.१०
समीचीना अनूषत ९.३९.६
समीचीनास आसते ९.१०.७
समीचीने अभि त्मना ९.१०२.७
समी रथं न भुरिजोः ९.७१.५
समी वत्सं न मातृभिः ९.१०४.२
समी सखायो अस्वरन् ९.४५.५
समीं पणेरजति ५.३४.७
समीं रेभासो अस्वरन् ८.९७.११
समु त्ये महतीरपः ८.७.२२
समु त्वा धीभिरस्वरन् ९.६६.८
समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य ७.४९.१
समुद्रमासामव तस्थे ५.४४.९
समुद्रः सिन्धू रजो १०.६६.११
समुद्रादर्णवादधि १०.१९०.२
समुद्रादूर्मिमुदियर्ति १०.१२३.२
समुद्रादूर्मिर्मधूमाँ ४.५८.१
समुद्रिया अप्सरसो ९.७८.३
समुद्रे अन्तः शयत ८.१००.९
समुद्रेण सिन्धवो ३.३६.७
समुद्रे त्वा नृमणा १०.४५.३
समुद्रो अप्सु मामृजे ९.२.५
समु पूष्णा गमेमहि ६.५४.२
समु प्र यन्ति धीतयः १०.२५.४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समु प्रिया अनूषत ९.१०१.८
समु प्रियो मृज्यते ९.९७.३
समु वां यज्ञं महयं नमोभिः ७.६१.६
समु वो यज्ञं महयन्नमोभिः ७.४२.३
स मृज्यते सुकर्मभिः ९.९९.७
स मृज्यमानो दशभिः ९.७०.४
समेनमह्रुता इमा ९.३४.६
स मे वपुश्छदयदश्विनोर्यः ६.४९.५
समोहे वा य आशत १.८.६
समौ चिद्धस्तौ १०.११७.९
सम्यक्सम्यञ्चो महिषा ९.७३.२
सम्यक्स्रवन्ति सरितो ४.५८.६
सम्राजा उग्रा वृषभादिव ५.६३.३
सम्राजा या घृतयोनी ५.६८.२
सम्राजावस्य भुवनस्य ५.६३.२
सम्राजो ये सुवृधो यज्ञं १०.६३.५
सम्राज्ञी श्वसुरे भव १०.८५.४६
सम्राळन्यः स्वराळन्य ७.८२.२
स यन्ता विप्र एषां ३.१३.३
स यह्वयोऽवनीर्गोष्वर्वा १०.९९.४
स युध्मः सत्वा खजकृत् ६.१८.२
स योजते अरुषा विश्वभोजसा ७.१६.२
स यो न मुहे न मिथू ६.१८.८
स यो वृषा नरां १.१४९.२
स यो वृषा वृष्ण्येभिः १.१००.१
स यो व्यस्थादभि २.४.७
स रत्नं मर्त्यो वसु १.४१.६
स रथेन रथीतमो ६.४५.१५
स रन्धयत्सदिवः २.१९.६
सरस्वति त्वमस्माँ २.३०.८
सरस्वति देवनिदो ६.६१.३
सरस्वति या सरथं १०.१७.८
सरस्वती सरयुः १०.६४.९
सरस्वती साधयन्ती २.३.८
सरस्वतीं देवयन्तो १०.१७.७
सरस्वतीं यां पितरो १०.१७.९
सरस्वत्यभि नो नेषि ६.६१.१४
सरस्वान्धीभिर्वरुणः १०.६६.५
स रंहत उरुगायस्य ९.९७.९
स राजसि पुरुष्टुतँ ८.१५.३
स रायस्कामुप सृजा ६.३६.४
स रुद्रेभिरशस्तवार १०.९९.५
सरूपैरा सु नो गहि ८.३४.१२
स रेतोधा वृषभः ७.१०१.६
स रेवाँइव विश्पतिः १.२७.१२
स रोचयज्जनुषा ३.२.२
स रोरुवदभि पूर्वा ९.६८.२
स रोरुवद् वृषभः १०.२८.२
सर्गाइव सृजतं ८.३५.२०
सर्वं परिक्रोशं जहि १.२९.७
सर्वे नन्दन्ति यशसा १०.७१.१०
स वज्रभृद्दस्युहा १.१००.१२
स वर्धिता वर्धनः ९.९७.३९
स वह्निः पुत्रः १.१६०.३
स वह्निः सोम जागृविः ९.३६.२
स वह्निभिर्ऋक्वभिः ६.३२.३
स वह्निरप्सु दुष्टरो ९.२०.६
स वां यज्ञेषु मानवी ९.९८.९
स वाजं यातापदुष्पदा १०.११.३
स वाजं विचर्षणिः १.२७.९
स वाजी रोचना दिवः ९.३७.३
स वाज्यक्षाः सहस्ररेताः ९.१०९.९
स वाज्यर्वा स ऋषिर्वचस्यया ४.३६.६
स वावृधे नर्यो ७.९५.३
सविता पश्चातात्सविता १०.३६.१४
सविता यन्त्रैः पृथिवीं १०.१४९.१
सवितारमुषसमश्विना १.४४.८
स विद्वाँ अङ्गिरोभ्य इन्द्रो ८.६३.३
स विद्वाँ अपगोहं २.१५.७
स विद्वाँ आ च पिप्रयो २.६.८
स विपश्चर्षणीनां ४.८.८
स विश्वा दाशुषे वसु ९.३६.५
स वीरो अप्रतिष्कुत ७.३२.६
स वीरो दक्षसाधनो ९.१०१.१५
स वृत्रहत्ये हव्यः ४.२४.२
स वृत्रहा वृषा सुतो ९.३७.५
स वृत्रहेन्द्र ऋभुक्षाः ८.९६.२१
स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः २.२०.७
स वृत्रहेन्द्रश्चर्षणीधृत् ८.९६.२०
स वेतसुं दशमायं ५.२०.८
स वेद देव आनमं ४.८.३
स वेद सुष्टुतीनां १०.२६.३
स वायुमिन्द्रमश्विना ९.७.७
स वावशान इह पाहि ३.५१.८
सव्यामनु स्फिग्यं ८.४.८
स व्राधतः शवसानेभिः १०.९९.९
स व्राधतो नहुषो १.१२२.१०
स शुष्मी कलशेष्वा ६.१८.७
स शेवृधमधि धा १.५४.११
स श्रुधी यः स्मा पृतनासु १.१२९.२
स श्वितानस्तन्यतू ६.६.२
स संस्तिरो विष्टरः १.१४०.७
स सत्पतिः शवसा ६.१३.३
स सत्यसत्वन्महते ६.३१.५
स सद्म परि णीयते ४.९.३
ससन्तु त्या अरातयो १.२९.४
स संनयः स विनयः २.२४.९
स सप्त धीतिभिर्हितो ९.९.४
स समुद्रो अपीच्यः ८.४१.८
स सर्गेण शवसा ६.३२.५
ससर्परीरभरत् ३.५३.१६
ससर्परीरमतिं ३.५३.१५
स सव्येन यमति व्राधतः ९.१००.९
ससस्य यद्वियुता ४.७.७
ससानात्याँ उत सूर्य ३.३४.९
स सुक्रतुः पुरोहितो १.१२८.४
स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु ७.८५.४
स सुक्रतुर्यो वि दुरः पणीनां ७.९.२
स सुक्रतू रणिता यः सुतेषु ८.९६.१९
स सुतः पीतये वृषा ९.३७.१
स सुन्वत इन्द्रः सूर्य २.१९.५
स सुन्वे यो वसूनां ९.१०८.१३
स सुष्टुभा स ऋक्वता ४.५०.५
स सुष्टुभा स स्तुभा १.६२.४
स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋभ्वा १.१००.५
स सूनुर्मातरा शुचिः ९.९.३
स सूर्यः पर्युरू वरांसि १०.८९.२
स सूर्य प्रति पुरो ७.६२.२
स सूर्यस्य रश्मिभिः ९.८६.३२
ससृवांसमिव त्मना ३.९.५
स सोम आमिश्लतमः ६.२९.४
सस्तु माता सस्तु पिता ७.५५.५
स स्तोम्यः स हव्यः ८.१६.८
सस्थावाना यवयसि ८.३७.४
सस्निमविन्दच्चरणे १०.१३९.६
स स्मा कृणोति केतुमा ५.७.४
सस्वश्चिद्धि तन्वः ७.५९.७
सस्वश्चिद्धि समृतिस्त्वेष्ये ७.६०.१०
सहदानुं पुरुहूत ३.३०.८

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सह वामेन न उषो १.४८.१
स ह व्यवाळमर्त्यः ३.११.२
स ह श्रुत इन्द्रो २.२०.६
सहस्तोमाः सहच्छन्दसः १०.१३०.७
सहस्रं व्यतीनां ४.३२.१७
सहस्रं साकमर्चत १.८०.९
सहस्रणीथः शतधारो ९.८५.४
सहस्रणीथाः कवयो १०.१५४.५
सहस्रदां ग्रामणीः १०.६२.११
सहस्रदा पञ्चदशानि १०.११४.८
सहस्रधारं वृषभं ९.१०८.८
सहस्रधारः पवते ९.१०१.६
सहस्रधारेऽव ता ९.७४.६
सहस्रधारेऽव ते सं ९.७३.४
सहस्रधारे वितते ९.७३.७
सहस्रं त इन्द्रोतयो ९.१६७.१
सहस्रवाजमभिमातिषाहं १०.१०४.७
सहस्रशीर्षा पुरुषः १०.९०.१
सहस्रशृङ्गो वृषभो ७.५५.५
सहस्रसामाग्निवेशिं ५.३४.९
सहस्राक्षेण शतशारदेन १०.१६१.३
सहस्राक्षो विचर्षणिः १.७९.१२
सहस्रा ते शता वयं ४.३२.१८
सहस्रेणेव सचते यवीयुधा ८.४.६
सहस्रे पृषतीनां ८.६५.११
सहस्रोतिः शतामघो ९.६२.१४
सहस्व मन्यो अभिमातिं १०.८४.३
सहावा पृत्सु तरणिः ३.४९.३
स हि क्रतुः स मर्यः १.७७.३
स हि क्षत्रस्य मनसस्य ५.४४.१०
स हि क्षपावाँ अग्नी १.७०.३
स हि क्षयेण क्षम्यस्य ७.४६.२
स हि क्षेमो हविर्यज्ञः १०.२०.६
स हि त्वं देव ९.९८.४
स हि द्युता विद्युता १०.९९.२
स हि द्युभिर्जनानां ५.१६.२
स हि द्वरो द्वरिषु १.५२.३
स हि धीभिर्हव्यो ६.१८.६
स हि पुरू चिदोजसा १.१२७.३
स हि यो मानुषा युगा ६.१६.२३
स हि रत्नानि दाशुषे ५.८२.३
स हि विश्वाति पार्थिवा ६.१६.२०
स हि विश्वानि पार्थिवाँ ६.४५.२०
स हि वेदा वसुधितिं ४.८.२
स हि शर्धो न मारुतं १.१२७.६
स हि शुचिः शतपत्रः ७.९७.७
स हि श्रवस्युः सदनानि १.५५.६
स हि ष्मा जरितृभ्य ९.२०.२
स हि ष्मा धन्वाक्षितं ५.७.७
स हि ष्मा विश्वचर्षणिः ५.२३.४
स हि सत्यो यं पूर्वे ५.२५.२
स हि स्वसृत्पृषदश्वो १.८७.४
स होता यस्य रोदसी ३.६.१०
स होता विश्वं परि २.२.५
स होता सेदु ४.८.४
सहोभिर्विश्वं परि १०.५६.५
सहो षु णो वज्रहस्तैः ८.७.३२
संक्रन्दनेनानिमिषेण १०.१०३.२
सं गच्छध्वं सं वदध्वं १०.१९१.२
संगच्छमाने युवती १.१८५.५
सं गच्छस्व पितृभिः १०.१४.८
सं गोभिराङ्गिरसो १०.६८.२
सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे १.९.७
सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रै ३.३०.१६
सं च त्वे जगमुर्गिर ६.३४.१
सं चोदय चित्रमर्वाग्राध १.९.५
संजर्भुराणस्तरुभिः ५.४४.५
सं जागृवद्भिर्जरमाण १०.९१.१
संजानाना उप सीदन् १.७२.५
सं ते पयांसि समु १.९१.१८
सं त्री पवित्रा विततता ९.९७.५५
सं दक्षेण मनसा ९.६८.५
सं देवैः शोभते वृषा ९.२५.३
सं नः शिशीहि भुरिजोरिव ८.४.१६
सं नु वोचावहै पुनर्यतो १.२५.१७
सं नो राया बृहता १.४८.१६
संपश्यमाना अमदन्नभि ३.३१.१०
सं पूषन्नध्वनस्तिर १.४२.१
सं पूषन्विदुषा नय ६.५४.१
सं प्रेरते अनु वातस्य १०.१६८.२
सं भानुना यतते ५.३७.१
सं भूम्या अन्ता ध्वसिरा ७.८३.३
सं माग्ने वर्चसा सृज १.२३.२४
सं मा तपन्त्यभितः---नि १०.३३.२
सं मा तपन्त्यभितः---मूषो १.१०५.८
सं मातृभिर्न शिशु ९.९३.२
संमिश्लो अरुषो भव ९.६१.२१
संमील्य यद्भुवना १.१६१.१२
सं यं स्तुभोऽवनयो १.१९०.७
सं यज्जनान् ऋतुभिः १.१३२.५
सं यज्जनौ सुधनौ ५.३४.८
सं यत्त इन्द्र मन्यव ४.३१.६
सं यदिषो वनामहे ५.७.३
सं यद्धनन्त मन्युभिः ७.५६.२२
सं यद्वयं यवसादो १०.२७.९
सं यन्मदाय शुष्मिण १.३०.३
सं यन्मही मिथती ७.९३.५
सं यन्मिथः पस्पृधानासो १.११९.३
सं यस्मिन्विश्वा वसूनि १०.६.६
सं या दानूनि येमथु ८.२५.६
सं वत्सइव मातृभि ९.१०५.२
संवत्सरं शशयाना ७.१०३.१
संवत्सरीणं पय १०.८७.१७
सं वां कर्मणा समिषा ६.६९.१
सं वां शता नासत्या ६.६३.१०
संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं ९.४८.२
सं वो मदासो अग्मते १.२०.५
संसमिद्युवसे वृषन् १०.१९१.१
सं सीदस्व महाँ असि १.३६.९
संसृष्टं धनमुभयं १०.८४.७
संहोत्रं स्म पुरा नारी १०.८६.१०
साकं यक्ष्म प्र पत १०.९७.१३
साकंयुजा शकुनस्येव १०.१०६.३
साकं वदन्ति बहवो ९.७२.२
साकं हि शुचिना शुचिः २.५.४
साकं जातः क्रतुना २.२२.३
साकं जाताः सुभ्वः ५.५५.३
साकंजानां सप्तथमाहुः १.१६४.१५
साकमुक्षो मर्जयन्त ९.९३.१
सातिर्न वोऽमवती १.१६८.७
सा ते अग्ने शंतमा ८.७४.८
सा ते जीवातुरुत १०.२७.२४
सा द्युभ्रैर्द्युम्निनी ८.७४.९
साधुर्न गृध्नुरस्तेव १.७०.६
साध्वपांसि सनता २.३.६
साध्वर्या अतिथिनीः १०.६८.३
साध्वीमकर्देववीतिं १०.५३.३
सा नो अद्य यस्या १०.१२७.४
सा नो अद्या भरद्वसुः ५.७९.३

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा नो विश्वा अति द्विषः ६.६१.९
सांतपना इदं हविः ७.५९.९
साम द्विबर्हा महि ४.५.३
सामन्नु राये निधिमत् १०.५९.२
सा मा सत्योक्तिः परि पातु १०.३७.२
सा वसु दधती श्वशुराय १०.९५.४
सा वह योक्षभिः ६.६४.५
सा विट् सुवीरा मरुद्भिरस्तु ७.५६.३
सास्मा अरं प्रथमं २.१८.२
सास्मा अरं बाहुभ्यां २.१७.६
सास्माकेभिरेतरी ६.१२.४
साहा ये सन्ति मुष्टिहेव ८.२०.२०
साह्वान्विश्वा अभियुजः ३.११.६
सिंहं नसन्त मध्वो ९.८९.३
सिंहाइव नानदति १.६४.८
सिञ्चन्ति नमसावतं ८.७२.१०
सिध्रा अग्ने धियो १०.७.४
सिनीवालि पृथुष्टुके २.३२.६
सिन्धुर्न क्षोदः शिमीवाँ २.२५.३
सिन्धुर्ह वां रसया ४.४३.६
सिन्धूरिव प्रवण आशुया ६.४६.१४
सिन्धोरिव प्रवणे ९.६९.७
सिन्धोरिव प्राध्वने ४.५८.७
सिषक्ति सा वां सुमति ७.७०.२
सिषक्तु न ऊर्जव्यस्य ५.४१.२०
सिषासतू रयीणां ९.४७.५
सीदन्तस्ते वयो यथा ८.२१.५
सीद होतः स्व उ लोके ३.२९.८
सीरा युञ्जन्ति कवयो १०.१०१.४
सुकर्माणः सुरुचो ४.२.१७
सुकिंशुकं शल्मलिं १०.८५.२०
सुकृत्सुपाणिः स्ववाँ ३.५४.१२
सुक्षेत्रिया सुगातुया १.९७.२
सुखं रथं युयुजे १०.७५.९
सुगः पन्था अनृक्षरः १.४१.४
सुगव्यं नो वाजी १.१६२.२२
सुगस्ते अग्ने सनवित्तो ७.४२.२
सुगुरसत्सुहिरण्यः १.१२५.२
सुगोत ते सुपथा ६.६४.४
सुगो हि वो अर्यमन् २.२७.६
सुज्योतिषः सूर्य दक्षपितृन् ६.५०.२
सुत इत्त्वं निमिश्ल ६.२३.१
सुत इन्दो पवित्र आ ९.९९.८
सुत इन्द्राय वायवे ९.३४.२
सुत इन्द्राय विष्णवे ९.६३.३
सुत एति पवित्र आ ९.३९.३
सुतः सोमो असुतादिन्द्र ६.४१.४
सुतपाव्ने सुता इमे १.५.५
सुतंभरो यजमानस्य ५.४४.१३
सुता अनु स्वमारजो ९.६३.६
सुता इन्द्राय वज्रिणे ९.६३.१५
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय ९.३३.३
सुता इन्द्राय वायवे सोमासो ५.५१.७
सुतावन्तस्त्वा वयं ८.६५.६
सुतासो मधुमत्तमाः ९.१०१.४
सुते अध्वरे अधि वाचं १०.९४.१४
सुतेसुते न्योकसे १.९.१०
सुत्रामाणं पृथिवीं १०.६३.१०
सुदक्षो दक्षैः क्रतुना १०.९१.३
सुदासे दस्रा वसु १.४७.६
सुदेवः समहासति ५.५३.१५
सुदेवाः स्थ काण्वायना ८.५५.४
सुदेवो अद्य प्रपतेद् १०.९५.१४
सुदेवो असि वरुण ८.६९.१२
सुनिर्मथा निर्मथितः ३.२९.१२
सुनीतिभिर्नयसि २.२३.४
सुनीथो घा स मर्त्यो ८.४६.४
सुनोता मधुमत्तमं ९.३०.६
सुनोता सोमपाव्ने ७.३२.८
सुन्वन्ति सोमं रथिरासों १०.७६.७
सुपर्ण इत्था १०.२८.१०
सुपर्ण वस्ते मृगो ६.७५.११
सुपर्ण विप्राः कवयो १०.११४.५
सुपर्णा एत आसते १.१०५.११
सुपर्णा वाचमक्रतोप १०.९४.५
सुपेशसं सुखं रथं १.४९.२
सुपेशसं माव ५.३०.१३
सुप्रतीके वयोवृधा ५.५.६
सुप्रवाचनं तव वीर २.१३.११
सुप्रावर्गं सुवीर्यं ८.२२.१८
सुप्रावीरस्तु स क्षयः ७.६६.५
सुप्राव्यः प्राशुषाळ ४.२५.६
सुप्रैतुः सूयवसो १.१९०.६
सुब्रह्माणं देववन्तं १०.४७.३
सुभगः स प्रयज्यवो १.८६.७
सुभगः स व ऊतिषु ८.२०.१५
सुभगात्रो देवाः कृणुत १०.७८.८
सुमङ्गलीरियं वधूः १०.८५.३३
सुयुग्भिरश्वैः सुवृता ३.५८.३
सुयुग्वहन्ति प्रति ३.५८.२
सुरथाँ आतिथिग्वे ८.६८.१६
सुरुक्मे हि सुपेशसाधि १.१८८.६
सुरूपकृत्नुमूतये १.४.१
सुविज्ञानं चिकितुषे ७.१०४.१२
सुवितस्य मनामहेऽति ९.४१.२
सुविवृतं सुनिरजं १.१०.७
सुवीरं रयिमा भर ६.१६.२९
सुवीरस्ते जनिता मन्यत ४.१७.४
सुवीरासो वयं धना ९.६१.२३
सुवीर्यं स्वश्व्यं ८.१२.३३.
सुवृद्रथो वर्तते १.१८३.२
सुशंसो बोधि गृणते १.४४.६
सुशिल्पे बृहती मही ९.५.६
सुशेवो नो मृळयाकुः ८.७९.७
सुषहा सोम तानि ९.२९.३
सुषुप्वांस ऋभव ९.१६१.१३
सुषुप्वांसं न निर्ऋतेरुपस्थे १.११७.५
सुषुमा यातमद्रिभिः १.१३७.१
सुषोमे शर्यणावति ८.७.२९
सुष्टुभो वां वृषण्वसू ५.७५.४
सुष्ठामा रथः सुयमा १०.४४.२
सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि १०.१४८.१
सष्वाणासो व्यद्रिभिः ९.१०१.११
सुसंकाशा मातृमृष्टेव १.१२३.११
सुसन्दृक्ते स्वनीक प्रतीकं ७.३.६
सुसन्दृशं त्वा वयं प्रति पश्ये १०.१५८.५
सुसन्दृशं त्वा वयं मघवन् १.८२.३
सुसमिद्धाय शोचिषे ५.५.१
सुसमिद्धो न आ वह १.१३.१
सूक्तवाकं प्रथमम् १०.८८.८
सूक्तेभिर्वो वचोभिः ५.४५.४
सूनोर्मानेनाश्विना गृणा १.११७.११
सूयवसाद्भगवती १.१६४.४०
सूर उपाके तन्वं दधानो ४.१६.१४
सूरश्चक्रं प्र वृहत् १.१३०.९
सूरश्चिदा हरितो अस्य १०.९२.८
सूरश्चिद्रथं परितक्म्यायां ५.३१.११
सूरो न यस्य दृशतिररेपाः ६.३.३
सूर्यरश्मिर्हरिकेशाः १०.१३९.१

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो ९.६९.६
सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां ७.३३.८
सूर्यं चक्षुर्गच्छतु १०.१६.३
सूर्याचन्द्रमसौ धाता १०.१९०.३
सूर्याया वहतुः प्रागात् १०.८५.१३
सूर्यायै देवेभ्यो १०.८५.१७
सूर्ये विषमा सजामि १.१९१.१०
सूर्यो देवीमुषसं रोचमानां १.११५.२
सूर्यो नो दिवस्पातु १०.१५८.१
सूर्यो रश्मिं यथा सृजा ८.३२.२३
सृजन्ति रश्मिमोजसा ८.७.८
सृजः सिन्धूँरहिना १०.१११.९
सृजो महीरिन्द्र या २.११.२
सृण्येव जर्भरी १०.१०६.६
सेदग्निरग्नीँरत्यस्त्वन्या ७.१.१४
सेदग्निर्यो वनुष्यतो ७.१.१५
सेदग्ने अस्तु सुभगः ४.४.७
सेदुग्रो अस्तु मरुतः ७.४०.३
सेदृभवो यमवथ ४.३७.६
सेनेव सृष्टमं दधा १.६६.४
सेमं नः काममा पृण १.१६.९
सेमं नः स्तोममागहि १.१६.५
सेमामविड्ढि प्रभृतिं २.२४.१
सेमां वेतु वषट्कृतिम् ७.१५.६
सेहान उग्र पृतना ८.३७.२
सैनानीकेन सुविदत्रो २.९.६
सो अग्न ईजे शशमे ६.१.९
सो अग्न एना नमसा ७.९३.७
सो अग्निर्यो वसुर्गृणे ५.६.२
सो अग्ने अह्नां हरिः ९.८६.४२
सो अङ्गिरसमुचथा २.२०.५
सो अङ्गिरोभिः १.१००.४
सो अद्धा दाश्वध्वरो ८.१९.९
सो अप्रतीनि मनवे २.१९.४
सो अभ्रियो न यवस १०.९९.८
सो अर्णवो न नद्यः १.५५.२
सो अर्षेन्द्राय पीतये ९.६२.८
सो अस्य वज्रो हरितो १०.९६.३
सो अस्य विशे महि शर्म ९.८६.१५
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती १०.११.३
सो चिन्नु वृष्टिर्यूथ्या १०.२३.४
सो चिन्नु सख्या १०.५०.२
सोता हि सोममद्रिभिः ८.१.१७
सोदञ्चं सिन्धुमरिणान् २.१५.६
सोम इद्वः सुतो अस्तु ८.६६.१५
सोम उ षुवाणः सोतृभिः ९.१०७.८
सोम एकेभ्यः पवते १०.१५४.१
सोम गीर्भिष्ट्वा वयं १.९१.११
सोममन्य उपासदत् ६.५७.२
सोममिन्द्राबृहस्पती ४.४९.६
सोम यास्ते मयोभुव १.९१.९
सोम राजन्मृळया नः ८.४८.८
सोम रारन्धि नो हृदि १.९१.१३
सोमस्य धारा पवते ९.८०.१
सोमस्य मा तवसं ३.१.१
सोमस्य मित्रावरुणोदिता ८.७२.१७
सोमस्य राज्ञो वरुणस्य १०.१६७.३
सोमं गावो धेनवो ९.९७.३५
सोमं मन्यते पपिवान् १०.८५.३
सोमं राजानमवसे १०.१४१.३
सोमः पवते जनिता ९.९६.५
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यो ९.१०६.१०
सोमः पुनानो अर्षति ९.१३.१
सोमः पूनानो अव्यये ९.११०.१०
सोमः प्रथमो विविदे १०.८५.४०
सोमः सुतो धारयात्यो ९.९७.४५
सोमा असृग्रमाशवो ९.२३.१
सोमा असृग्रमिन्दवः ९.१२.१
सोमानं स्वरणं १.१८.१
सोमापूषणा जनना २.४०.१
सोमापूषणा रजसो २.४०.३
सोमारुद्रा धारयेथाम् ६.७४.१
सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे ६.७४.३
सोमारुद्रा वि वृहतं ६.७४.२
सोमासो न ये सुताः १.१६८.३
सोमाः पवन्त इन्दवो ९.१०१.१०
सोमेनादित्या बलिनः १०.८५.२
सोमो अर्षति धर्णसिः ९.२३.५
सोमो अस्मभ्यं द्विपदे ३.६२.१४
सोमो जिगाति गातुवित् ३.६२.१३
सोमो ददद्गन्धर्वाय १०.८५.४१
सोमो देवो न सूर्यो ९.६३.१३
सोमो धेनुं सोमो १.९१.२०
सोमो मीढ्वान्पवते ९.१०७.७
सोमो राजा प्रथमो १०.१०९.२
सोमो वधूयुरभवत् १०.८५.९
सोषामविन्दत्स स्वः १०.६८.९
स्तम्भीद्ध द्यां १.१२१.२
स्तरीरु त्वद् भवति ७.१०१.३
स्तरीर्यत्सूत १०.३१.१०
स्तवा नु त इन्द्र २.११.६
स्तविष्यामि त्वामहं १.४४.५
स्तीर्णं ते बर्हिः सुत ३.३५.७
स्तीर्णं बर्हिरुप नो १.१३५.१
स्तीर्णा अस्य संहतो ३.१.७
स्तीर्णे बर्हिषि---अग्ना ऊर्ध्वो ४.६.४
स्तीर्णे बर्हिषि---अग्नौ सूक्तेन ६.५२.१७
स्तुत इन्द्रो मघवा ४.१७.१९
स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति ८.२.२९
स्तुतासो नो मरुतो १.१७१.३
स्तुष उ वो मह ऋतस्य ६.५१.३
स्तुषे जनं सुव्रतं ६.४९.१
स्तुषे नरा दिवो ६.६२.१
स्तुषेय्यं पुरुवर्पसं १०.१२०.६
स्तुषे सा वां वरुण १.१२२.७
स्तुहि भोजान्स्तुवतो ५.५३.१६
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं २.३३.११
स्तुहि श्रुतं विपश्चितं ८.१३.१०
स्तुहि स्तुहीदेते ८.१.३०
स्तुहीद्रं व्यश्ववद् ८.२४.२२
स्तृणानासो यतस्रुचो १.१४२.५
स्तृणीत बर्हिरानुषक् १.१३.५
स्तेगो न क्षामत्येति १०.३१.९
स्तेनं राय सारमेय ७.५५.३
स्तोता यत्ते अनुव्रत ८.१३.१९
स्तोता यत्ते विचर्षणिः ८.१३.६
स्तोत्रमिन्द्राय गायत ८.४५.२१
स्तोत्रमिन्द्रो मरुद्गणः ६.५२.११
स्तोत्रं राधानां पते १.३०.५
स्तोत्रे राये हरिरर्षा ९.९७.६
स्तोमं जुषेथां युवशेव ८.३५.५
स्तोमं त इन्द्र विमदा १०.२३.६
स्तोमं वो अद्य रुद्राय १०.९२.९
स्तोमा आसन् प्रतिधयः १०.८५.८
स्तोमासस्त्वा विचारिणी ५.८४.२
स्तोमेन हि दिवि देवासो १०.८८.१०
स्त्रियं दृष्ट्वाय कितवं १०.३४.११
स्त्रियः स्तीस्ताँ १.१६४.१६
स्त्रियो हि दास आयुधानि ५.३०.९

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थिरं मनश्चकृषे ५.३०.४
स्थिरं हि जानमेषां १.३७.९
स्थिरा वः सन्तु नेमयो १.३८.१२
स्थिरा वः सन्त्वायुधा १.३९.२
स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप २.३३.९
स्थिरौ गावौ भवतां ३.५३.१७
स्थूरस्य रायो बृहतो ४.२१.४
स्थूरं राधः शताश्वं ८.४.१९
स्पर्धन्ते वा उ देवहूये ७.८५.२
स्पार्हा यस्य श्रियो दृशे ७.१५.५
स्मत्पुरन्धिर्न आ गहि ८.३४.६
स्मदभीशू कशावन्ता ८.२५.२४
स्मदेतया सुकीर्त्या ८.२६.१९
स्याम ते त इन्द्र २.११.१३
स्याम वो मनवो १०.६६.१२
स्यूमना वाच उदियर्ति १.११३.१७
स्योना पृथिवी भवा १.२२.१५
स्रक्वे द्रप्सस्य धमतः ९.७३.१
स्रुवेव यस्य हरिणी १०.९६.९
स्व आ दमे सुदुघा २.३५.७
स्व आ यस्तुभ्यं दम १.७१.६
स्वग्नयो वो अग्निभिः ८.१९.७
स्वग्नयो हि वार्यं १.२६.८
स्वदस्व हव्या समिषो ३.५४.२२
स्वधामनु श्रियं नरो ८.२०.७
स्वध्वरा करति जातवेदा ७.१७.४
स्वध्वरासो मधुमन्तो ४.४५.५
स्वना न यस्य भामासः १०.३.५
स्वनो न वोऽमवान्रेजयद् ५.८७.५
स्वप्नेनाभ्युप्या चुमुरिं २.१५.९
स्वयं कविर्विधर्तरि ९.४७.४
स्वयं चित्स मन्यते ८.४.१२
स्वयं दधिध्वे तविषीं ५.५५.२
स्वयं यजस्व दिवि देव १०.७.६
स्वयुरिन्द्र स्वराळसि ३.४५.५
स्वरन्ति त्वा सुते ८.३३.२
स्वर्जितं महि मन्दानं १०.१६७.२
स्वर्जेषे भर आप्रस्य १.१३२.२
स्वर्णरमन्तरिक्षाणि १०.६५.४
स्वर्१ण वस्तोरुषसाम् ७.१०.२
स्वर्भानोरध यदिन्द्र मायाः ५.४०.६
स्वर्षद्वेदि सुदृशीकं ४.१६.४
स्ववृजं हि त्वामहमिन्द्र १०.३८.५
स्वश्वा यशसा यातमर्वाङ् ७.६९.३
स्वश्वा सिन्धुः सुरथा १०.७५.८
स्वसा स्वस्रे ज्यायस्यै १.१२४.८
स्वस्तये वाजिभिश्च ३.३०.१८
स्वस्तये वायुमुप ब्रवामहै ५.५१.१२
स्वस्तिदा विशस्पतिः १०.१५२.२
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः १.८९.६
स्वस्ति नः पथ्यासु १०.६३.१५
स्वस्ति नो दिवो अग्ने १०.७.१
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना ५.५१.११
स्वस्ति पन्थामनु चरेम ५.५१.१५
स्वस्ति मित्रावरुणा ५.५१.१४
स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा १०.६३.१६
स्वः स्वाय धायसे २.५.७
स्वादवः सोमा आ याहि ८.२.२८
स्वादिष्ठया मदिष्ठया ९.१.१
स्वादुषंसदः पितरो ६.७५.९
स्वादुष्किलायं मधुमाँ ६.४७.१
स्वादुष्टे अस्तु संसुदे ८.१७.६
स्वादुः पवस्व दिव्याय ९.८५.६
स्वादो पितो मधो १.१८७.२
स्वादोरभक्षि वयसः ८.४८.१
स्वादोरित्था विषूवतो १.८४.१०
स्वाध्यो दिव आ सप्त १.७२.८
स्वाध्यो वि दुरो ७.२.५
स्वायुधस्य ते सतो ९.३१.६
स्वायुधं स्ववसं १०.४७.२
स्वायुधः पवते देव ९.८७.२
स्वायुधः सोतृभिः ९.९६.१६
स्वायुधास इष्मिणः ७.५६.११
स्वावृग्देवस्यामृतं यदी १०.१२.३
स्वाहाकृतस्य तृम्पतं ८.३५.२४
स्वाहा कृतान्यागह्युप १.१४२.१३
स्वाहाग्रये वरुणाय ५.५.११
स्वाहा यज्ञं कृणोतने १.१३.२
स्विध्मा यद्वनधिति १.१२१.७

ह

हत वृत्रं सुदानव १.२३.९
हतं च शत्रून्यततं च ८.३५.१२
हतो वृत्राण्यार्या ६.६०.६
हत्वाय देवा असुरान् १०.१५७.४
हनामैनाँ इति त्वष्टा १.१६१.५
हन्ता वृत्रमिन्द्रः ७.२०.२
हन्ता वृत्रं दक्षिणेनेन्द्रः ८.२.३२
हन्ताहं पृथिवीमिमां १०.११९.९
हन्तो नु किमाससे ८.८०.५
हये जाये मनसा १०.९५.१
हये देवा यूयमिद् २.२९.४
हये नरो मरुतो ५.५७.८, ५८.८
हयो न विद्वाँ अयुजि ५.४६.१
हरयो धूमकेतवो ८.४३.४
हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य १०.११२.३
हरिश्मशारुर्हरि १०.९६.८
हरिं मृजन्त्यरुषो न ९.७२.१
हरिं हि योनिमभि १०.९६.२
हरिः सृजानः पथ्याम् ९.९५.२
हरी नु कं रथ इन्द्रस्य २.१८.३
हरी नु त इन्द्र वाजयन्ता २.११.७
हरी न्वस्य या वने १०.२३.२
हरी यस्य सुयुजा विव्रता १०.१०५.२
हर्यन्नुषसमर्चयः ३.४४.२
हरयश्वं सत्पतिं ८.२१.१०
हव एषामसुरो १०.७४.२
हवन्त उ त्वा हव्यं ७.३०.२
हवं त इन्द्र महिमा ७.२८.२
हविर्हविष्मो महि ९.८३.५
हविषा जारो अपां १.४६.४
हविष्कृणुध्वमा गमत् ८.७२.१
हविष्पान्तमजरं १०.८८.१
हवीमभिर्हवते यो हविर्भिः २.३३.५
हवे त्वा सूर उदिते ८.१३.१३
हव्यवाळग्निरजरः ५.४.२
हस्काराद्विद्युतस्पर्यतो १.२३.१२
हस्तच्युतेभिरद्रिभिः ९.११.५
हस्ताभ्यां दशशाखाभ्यां १०.१३७.७
हस्ते दधानो नृम्णा १.६७.२
हस्तेनैव ग्राह्य १०.१०९.३
हस्तेव शक्तिमभि २.३९.७
हंसः शुचिषद्वसु ४.४०.५
हंसाइव कृणुथ श्लोकम् ३.५३.१०
हंसाइव श्रेणिशो ३.८.९
हंसाविव पतथो ८.३५.८
हंसासो ये वां मधुमन्तो ४.४५.४
हंसैरिव सखिभिः १०.६७.३
हारिद्रवेव पतथो वनेदुप ८.३५.७
हिङ्कृण्वती वसुपत्नी १.१६४.२७

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हितो न ससिरभि ९.७०.१०
हिनोता नो अध्वरं १०.३०.११
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं ९.६७.९
हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वरासो ९.६५.१
हिन्वानासो रथाइव ९.१०.२
हिन्वानो वाचमिष्यसि ९.६४.९
हिन्वानो हेतृभिर्यत ९.६४.२९
हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथां १.११६.८
हिमेव पर्णा मुषिता वनानि १०.६८.१०
हिरण्यकर्णं मणिग्रीवं १.१२२.१४
हिरण्यकेशो रजसो १.७९.१
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे १०.१२१.१
हिरण्यत्वङ्मधुवर्णो ५.७७.३
हिरण्यदन्तं शुचिवर्णं ५.२.३
हिरण्यनिर्णिगयो अस्य ५.६२.७
हिरण्यपाणिमूतये १.२२.५
हिरण्यपाणिः--- विचर्षणिः १.३५.९
हिरण्यपाणिः--- सुजिह्वः ३.५४.११
हिरण्ययी अरणी १०.१८४.३
हिरण्ययी वां रभिः ८.५.२९
हिरण्ययेन पुरुभू ४.४४.४
हिरण्ययेन रथेन द्रवत् ८.५.३५
हिरण्ययेभिः पविभिः १.६४.११
हिरण्यरूपमुषसो व्युष्टौ ५.६२.८
हिरण्यरूपः स हिण्यसंदृग् २.३५.१०
हिरण्यशृङ्गोऽयो अस्य १.१६३.९
हिरण्यस्तूपः सवितर्यथा १०.१४९.५
हिरण्यहस्तमश्विना १.११७.२४
हिरण्यहस्तो असुरः १.३५.१०
हुवे वः सुद्योत्मानं २.४.१
हुवे वः सूनुं सहसो ६.५.१
हुवे वातस्वनं कविं ८.१०२.५
हुवे वो देवीमदितिं ६.५०.१
हृणीयमानो अप हि ५.२.८
हृत्सु पीतासो युध्यन्ते ८.२.१२
हृदा तष्टेषु मनसो १०.७१.८
हृदिस्पृशस्त आसते १०.२५.२
हेतिः पक्षिणी १०.१६५.३
होताजनिष्ट चेतनः २.५.१
होता देवो अमर्त्यः ३.२७.७
होताध्वर्युरावया १.१६२.५
होता निषत्तो मनोरपत्ये १.६८.४
होता यदक्षद्वनिनो १.१३९.१०
होतारं चित्ररथं १०.१.५
होतारं त्वा वृणीमहे ५.२०.३
होतारं विश्ववेदसं १.४४.७
होतारं सप्तजुह्वो यजिष्ठं १.५८.७
होत्रादहं वरुण बिभ्यदायं १०.५१.४
हृदं न हि त्वा न्यृषन्त्यूर्मयः १.५२.७
हृदाइव कुक्षयः ३.३६.८
ह्वयामसि त्वेन्द्र याहि ६.४१.५
ह्वयामि देवाँ अयातुः ७.३४.८
ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये १.३५.१

—०—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2451

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2451

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.